आयतें-7 **सूरह-1. अल-फातिहह** **रुकूअ-1**

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहमवाला है। सब तारीफ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का मालिक है। बहुत महरबान निहायत रहम वाला है। इंसाफ के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखा। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फज्ल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए।

बंदे के लिए किसी काम की सबसे बेहतर शुरूआत यह है कि वह अपने काम को अपने रब के नाम से शुरू करे। वह हस्ती जो तमाम रहमतों का ख़ज़ाना है और जिसकी रहमतें हर वक्त उबलती रहती हैं। उसके नाम से किसी काम को प्रारम्भ करना गोया उससे यह दुआ करना है कि तू अपनी अपार रहमतों के साथ मेरी मदद पर आ जा और मेरे काम को ख़ैर व ख़ूबी के साथ मुकम्मल कर दे। यह बंदे की तरफ से अपनी बंदगी (दासता) का एतराफ है और इसी के साथ उसकी कामयाबी की इलाही (ईश्वरीय) ज़मानत भी।

क़ुरआन की यह विशेषता है कि वह मोमिन के दिली एहसासात के लिए सबसे सही अल्फाज़ प्रयुक्त करता है। 'बिस्मिल्लाह' और सूरह फातिहा इस प्रकार के दुआ के कलाम हैं। सच्चाई को पा लेने के बाद फित्तरी तौर पर आदमी के अंदर जो जज्बा उभरता है उसी जज्बे को इन लफ़्ज़ों में मुजस्सम (साक्षात) कर दिया गया है।

आदमी का वजूद उसके लिए अल्लाह की एक बहुत बड़ी देन है। इसकी अज्मत (महानता) का अंदाज़ा इससे किया जा सकता है कि अगर किसी आदमी से कहा जाए कि तुम अपनी दोनों आँखों को निकलवा दो या दोनों पैरों को कटवा दो, इसके बाद तुम्हें मुल्क की बादशाही दे दी जाएगी। तो कोई भी व्यक्ति इसके लिए तैयार न होगा। गोया कि ये प्रारंभिक क़ुदरती देनें भी बादशाह की बादशाही से ज्यादा कीमती हैं। इसी तरह जब आदमी अपने आसपास की दुनिया को देखता है तो यहाँ हर तरफ ख़ुदा की मालकियत (स्वामित्व) और रहीमियत (दयालुता) उबलती हुई दिखाई देती है। उसे हर तरफ असाधारण व्यवस्था और एहतमाम नज़र आता है। उसे दिखाई देता है कि दुनिया की तमाम चीज़ें हैरतअंगेज़ तौर पर इंसानी ज़िंदगी के अनुकूल बना दी गई हैं। यह अवलोकन उसे बताता है कि कायनात की यह विशाल कारख़ाना बेमक्सद नहीं हो सकती। लाज़िमी तौर पर ऐसा दिन आना चाहिए जब नाशुक्रों से उनकी नाशुक्रगुज़ार ज़िंदगी की बाज़पुर्स (पूछगछ) की जाए और शुक्रगुज़ारों को उनकी शुक्रगुज़ार ज़िंदगी का इनाम दिया जाए। वह बेइख़्तियार कह उठता है कि ख़ुदाया तू फैसले के दिन का मालिक है। मैं अपने आपको तेरे आगे डालता हूँ और तुझसे मदद चाहता हूँ। तू मुझे अपने साए में ले ले। ख़ुदाया हमें वह रास्ता दिखा जो तेरे नज़दीक सच्चा रास्ता है। हमें उस रास्ते पर चलने की तौफ़ीक दे, जो तेरे मकबूल (प्रिय) बंदों का रास्ता है। हमें उस रास्ते से बचा जो भटके हुए लोगों का रास्ता है या उन लोगों का जो अपने ढिठाई की वजह से तेरे ग़ज़ब (प्रकोप) का शिकार हो जाते हैं।

अल्लाह का मत्लूब (अपेक्षित) बंदा वह है जो इन एहसासात और कैफियतों के साथ दुनिया में जी रहा हो। सूरह फातिहा इस मोमिन बंदे की छोटी तस्वीर है और बाकी क़ुरआन इस मोमिन बंदे की बड़ी तस्वीर।

سورة البقرة مدنية وهي مائتان وست وثمانون آية وأربعون ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

الم ﴿١﴾ ذلك الكتب لا ريب فيه هدى للمتقين ﴿٢﴾ الذين يؤمنون بالغيب و يقيمون الصلوة ومما رزقنهم ينفقون ﴿٣﴾ والذين يؤمنون بما انزل اليك وما انزل من قبلك وبالاخرة هم يوقنون ﴿٤﴾ اولئك على هدى من ربهم واولئك هم المفلحون ﴿٥﴾

आयतें-286 सूरह-2. अल-बक़रह रुकूअ-40

(मदीना में नाज़िल हुई)
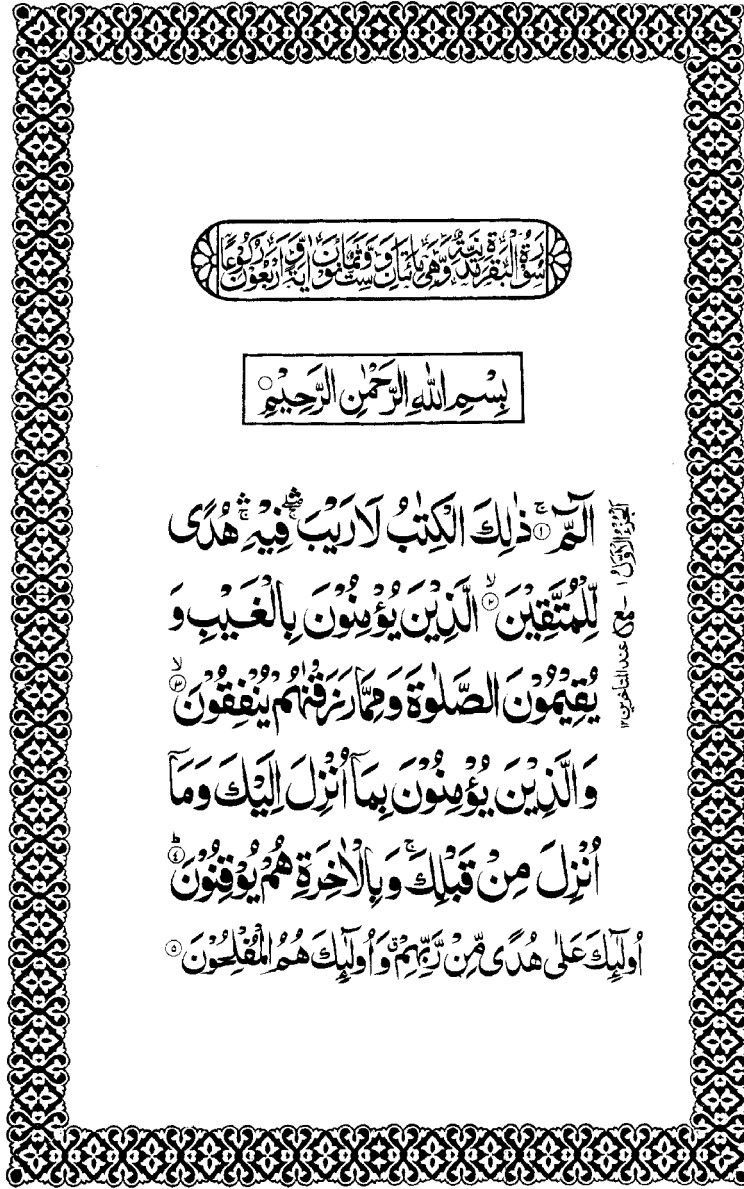
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। यह अल्लाह की किताब है। इसमें कोई शक नहीं। राह दिखाती है डर रखने वालों को। जो यकीन करते हैं बिन देखे और नमाज़ कायम करते हैं। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। और जो ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतरा और जो तुमसे पहले उतारा गया। और वे आख़िरत (परलोक) पर यकीन रखते हैं। इन्हीं लोगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं। (1-5)

इसमें शक नहीं कि क़ुरआन हिदायत (मार्गदर्शन) की किताब है। मगर वह हिदायत की किताब उसके लिए है जो वाकई हिदायत को जानने के मामले में संजीदा हो, जो इसकी परवाह और खटक रखता हो। सच्ची तलब (चाहत) जो फितरत (सहज प्रकृति) की ज़मीन पर उगती है वह ख़ुद पाने ही की एक शुरूआत होती है। सच्ची चाहत और सच्ची प्राप्ति दोनों एक ही सफर के पिछले और अगले मरहले हैं। यह गोया ख़ुद अपनी फितरत के बंद पन्नों को खोलना है। जब आदमी इसका सच्चा इरादा करता है तो फौरन फितरत की अनुकूलता और अल्लाह की मदद उसका साथ देने लगती है। उसे अपनी फितरत की अस्पष्ट पुकार का स्पष्ट जवाब मिलना शुरू हो जाता है।

एक आदमी के अंदर सच्ची तलब का जागना आलमे ज़ाहिर के पीछे आलमे बातिन (छुपे) को देखने की कोशिश करना है। यह तलाश जब प्राप्ति के मरहले में पहुँचती है तो वह ईमान बिलग़ैब (अप्रकट, अदृश्य पर ईमान) बन जाती है। वही चीज़ जो इब्तिदाई मरहले में एक बरतर हकीकत के आगे अपने को डाल देने की बेकरारी का नाम होता है वह बाद के मरहले में अल्लाह का नमाज़ी बनने के रूप में ढल जाता है। वही जज्बा जो शुरू में अपने को ख़ैरे आला (परम कल्याण) के लिए वक्फ कर देने के समानार्थी होता है वह बाद के मरहले में अल्लाह की राह में अपनी सम्पत्ति ख़र्च करने का रूप धार लेता है। वही खोज जो ज़िंदगी के हंगामों के आगे उसका आख़िरी अंजाम मालूम करने की सूरत में किसी के अंदर उभरती है, वह आख़िरत पर यकीन की सूरत में अपने सवाल का जवाब पा लेती है।

सच्चाई को पाना गोया अपने शुऊर (चेतना) को हकीकते आला (परम सत्य) के समस्तर कर लेना है। जो लोग इस तरह हक (सत्य) को पा लें वे हर प्रकार की मनोवैज्ञानिक गुत्थियों से आज़ाद हो जाते हैं। वे सच्चाई को उसके विशुद्ध रूप में देखने लगते हैं। इसलिए सच्चाई जहाँ भी हो और जिस ख़ुदा के बंदे की ज़बान से भी उसका एलान किया जा रहा हो, वे फौरन उसे पहचान लेते हैं और उस पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहते हैं। कोई जुमूद (जड़ता) कोई तक्लीद (अनुसरण), कोई तअस्सुबाती (विद्वेषवादी) दीवार उनके लिए हक के एतराफ (स्वीकार) में रुकावट नहीं बनती। जिन लोगों के अंदर यह विशेषताएँ हों, वे अल्लाह के साए में आ जाते हैं। अल्लाह का बनाया हुआ निज़ाम (विधान) उन्हें क़ुबूल कर लेता है। उन्हें दुनिया में उस सच्चे रास्ते पर चलने की तौफीक मिल जाती है जिसकी आख़िरी मंज़िल यह है कि आदमी आख़िरत की अबदी (चिरस्थाई) नेमतों में दाख़िल हो जाए।

हक को वही पा सकता है जो इसे ढूंढने वाला है। और जो ढूंढने वाला है वह ज़रूर इसे पाता है। यहाँ ढूंढने और पाने के दर्मियान कोई फ़ासला नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٦ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝٧

जिन लोगों ने इंकार किया, उनके लिए समान है डराओ, या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है। और उनकी आँखों पर पर्दा है। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। (6-7)

एक व्यक्ति अपनी आँख को बंद कर ले तो आँख रखते हुए भी वह सूरज को नहीं देखेगा। कोई व्यक्ति अपने कान में रूई डाल ले तो कान रखते हुए भी वह बाहर की आवाज़ को नहीं सुनेगा। ऐसा ही कुछ मामला हक (सत्य) का भी है। हक का एलान चाहे कितनी ही वाज़ेह सूरत में हो रहा हो मगर किसी के लिए वह काबिले फ़हम या काबिले कुबूल उस वक्त बनता है जबकि वह इसके लिए अपने दिल के दरवाज़े खुले रखे। जो शख़्स अपने दिल के दरवाज़े बंद कर ले उसके लिए कायनात में ख़ुदा की ख़ामोश पुकार और दाओ (आह्वानकर्ता) की ज़बान से उसका लफ़्ज़ी एलान दोनों निरर्थक साबित होंगे।

हक की दावत (आह्वान) जब अपने विशुद्ध रूप में उठती है तो वह इतनी ज्यादा हकीकत पर आधारित और इतनी स्वाभाविक होती है कि कोई व्यक्ति उसकी नौइयत को समझने में असमर्थ नही रह सकता। जो शख़्स भी खुले ज़ेहन से उसे देखेगा उसका दिल गवाही देगा कि यह ऐन हक है। मगर उस वक्त अमली सूरतेहाल यह होती है कि एक तरफ वक्त का ढाँचा होता है जो सदियों के अमल से एक ख़ास शक्ल में कायम हो जाता है। इस ढाँचे के तहत कुछ मज़हबी या ग़ैर मज़हबी आसन बन जाते हैं जिन पर कुछ लोग बैठे हुए होते हैं। कुछ इज़्ज़त और शोहरत की सूरतें राइज हो जाती हैं जिनके झंडे उठा कर कुछ लोग वक्त के बड़े लोगों का मकाम हासिल किए हुए होते हैं। कुछ कारोबार और मफ़ादात (हित) कायम हो जाते हैं, जिनके साथ अपने को जोड़ कर बहुत-से लोग इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ार रहे होते हैं।

इन हालात में जब एक अपरिचित कोने से अल्लाह अपने एक बंदे को खड़ा करता है और उसकी ज़बान से अपनी मर्ज़ी का एलान कराता है तो अक्सर ऐसा होता है कि इस किस्म के लोगों को अपनी बनी बनाई दुनिया भंग होती नज़र आती है। हक के पैग़ाम की तमामतर सदाकत (सच्चाई) के बावजूद दो चीज़ें उनके लिए इसे सही तौर पर समझने के लिए रुकावट बन जाती हैं। एक किब्र (अहं, बड़ाई) दूसरे दुनियापरस्ती। जो लोग प्रचलित ढाँचे में उच्च स्थान पर बैठे हुए हों उन्हें एक 'छोटे आदमी' की बात मानने में अपनी इज़्ज़त ख़तरे में पड़ती हुई नज़र आती है। यह एहसास उनके अंदर घमंड की नफ़्सियात जगा देता है। दाओ (आह्वानकर्ता) को वह अपने मुकाबले में हकीर (तुच्छ) समझ कर उसके आह्वान को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। इसी तरह दुनियावी हितों का सवाल भी हक को कुबूल करने में रुकावट बन जाता है। क्योंकि हक का दाओ राइज ढाँचे का नुमाइंदा नहीं होता। वह एक नई और अपरिचित आवाज़ को लेकर उठता है। इसलिए उसे मानने की स्थिति में लोगों को अपने हितों का ढाँचा टूटता हुआ नज़र आता है।

यही वह बाधक कैफ़ियत है जिसे कुरआन में मुहर लगाने से परिभाषित किया गया है। जो लोग दावते हक के मामले को संजीदा मामला न समझें जो घमंड और दुनियापरस्ती की नफ़्सियात में मुब्तला हों उनके ज़ेहन के ऊपर ऐसे ग़ैर महसूस पर्दे पड़ जाते हैं जो हक बात को उनके ज़ेहन में दाख़िल नहीं होने देते। किसी चीज़ के बारे में आदमी के अंदर मुख़ालिफ़ाना (विरोधपरक) नफ़्सियात जाग उठे तो इसके बाद वह इसकी माकूलियत को समझ नहीं पाता। चाहे इसके पक्ष में कितनी ही स्पष्ट दलीलें पेश की जा रही हों।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝٨ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝٩ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝١٠ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝١١ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۝١٢ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝١٣ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ۝١٤ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝١٥ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝١٦

और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं। वे अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं। मगर वे सिर्फ अपने आपको धोखा दे रहे हैं और वे इसका शुऊर नहीं रखते। उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। इस वजह से कि वे झूठ कहते थे। और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फसाद (उपद्रव, बिगाड़) न करो तो वे जवाब देते हैं हम तो सुधार करने वाले है। जान लो, यही लोग फसाद करने वाले हैं, मगर वे नहीं समझते। और जब उनसे कहा जाता है तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह अन्य लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं। जान लो, कि मूर्ख यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते। और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे महज हंसी करते हैं। अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दे रहा है। वे भटकते फिर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही ख़रीदी तो उनकी

तिजारत फायदेमंद नहीं हुई, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले। (8-16)

जो लोग फायदों और मस्लेहतों को अव्वलीन अहमियत दिए हुए होते हैं उनके नज़दीक यह नादानी की बात होती है कि कोई शख़्स निःसंकोच अपने आपको पूरे तौर पर हक के हवाले कर दे। ऐसे लोगों की हकीकी वफ़ादारियाँ अपने दुनियावी मफ़ादात (हितों) के साथ होती हैं। अलबत्ता इसी के साथ वे हक से भी अपना एक ज़ाहिरी रिश्ता कायम कर लेते हैं। इसे वे अक्लमंदी समझते हैं। वे समझते हैं कि इस तरह उनकी दुनिया भी महफूज़ है और इसी के साथ उन्हें हकपरस्ती का तमग़ा भी हासिल है। मगर यह एक ऐसी ख़ुशफ़हमी है जो सिर्फ आदमी के अपने दिमाग़ में होती है। उसके दिमाग़ के बाहर कहीं इसका वजूद नहीं होता। आज़माइश का प्रत्येक अवसर उन्हें सच्चे दीन (धर्म) से कुछ और दूर और अपने स्वार्थपरक दीन से कुछ और करीब कर देता है। इस तरह गोया उनके निफ़ाक (पाखंड) का रोग बढ़ता रहता है। ऐसे लोग जब सच्चे मुसलमानों को देखते हैं तो उन्हें एहसास यह होता है कि वे व्यर्थ में सच्चाई की ख़ातिर अपने को बर्बाद कर रहे हैं। इसके मुकाबले अपने तरीके को वह इस्लाह (सुधार) का तरीका कहते हैं। क्योंकि उन्हें नज़र आता है कि इस तरह किसी से झगड़ा मोल लिए बग़ैर अपने सफर को कामयाबी के साथ तै किया जा सकता है। मगर यह सिर्फ बेशुऊरी की बात है। यदि वे गहराई के साथ सोचें तो उन पर यह प्रकट होगा कि इस्लाह (सुधार) यह है कि बंदे सिर्फ अपने रब के हो जाएँ। इसके विपरीत फसाद (उपद्रव, बिगाड़) यह है कि ख़ुदा और बंदे के संबंध को दुरुस्त करने के लिए जो तहरीक चले उसमें रोड़े अटकाए जाएँ। उनका यह बज़ाहिर फायदे का सौदा हकीकत में घाटे का सौदा है। क्योंकि वे विशुद्ध सत्य को छोड़ कर मिलावटी सत्य को अपने लिए पसंद कर रहे हैं जो किसी के कुछ काम आने वाला नहीं है। अपने दुनियावी मामलों में होशियार होना और आख़िरत के मामले में सरसरी उम्मीदों को काफी समझना गोया ख़ुदा के सामने झूठ बोलना है। जो लोग ऐसा करें उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि इस किस्म की झूठी ज़िंदगी आदमी को अल्लाह के यहाँ अज़ाब के सिवा किसी और चीज़ का हक्दार नहीं बनाती।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ
وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾ أَوْ كَصَيِّبٍ
مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ
الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ
أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने आग जलाई। जब आग ने उसके इर्द-गिर्द

को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ता। वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं। अब ये लौटने वाले नहीं हैं। या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज-चमक भी। वे कड़क से डर कर मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस रहे हों। हालाँकि अल्लाह इंकार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है। करीब है कि बिजली उनकी निगाहों को उचक ले। जब भी उन पर बिजली चमकती है उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आंखों को छीन ले। अल्लाह यकीनन हर चीज़ पर कादिर है। (17-20)

किसी कमरे में काली और सफेद चीज़ें हों तो जब तक अंधेरा है वे अंधेरे में गुम रहेंगी। मगर रोशनी जलाते ही काली चीज़ काली और सफेद चीज़ सफेद दिखाई देने लगेगी। यही हाल अल्लाह की तरफ से उठने वाली नुबुव्वत की दावत (आह्वान) का है। यह ख़ुदाई रोशनी जब ज़ाहिर होती है तो उसके उजाले में हिदायत और ज़लालत (पथभ्रष्टता) साफ-साफ दिखाई देने लगती हैं। नेक अमल क्या है और उसके समरात (प्रतिफल) क्या हैं, बुरा अमल क्या है और उसके समरात क्या हैं, सब खुल कर ठीक-ठीक सामने आ जाता है। मगर जो लोग अपने आपको हक (सत्य) के ताबेअ (अधीन) करने के बजाए हक को अपना ताबेअ बनाए हुए थे वे इस सूरतेहाल को देखकर घबरा उठते हैं। उनका छुपा हुआ हसद (ईर्ष्या) और घमंड जीवंत होकर उन्हें अपनी लपेट में ले लेता है। ख़ुदाई आइने में अपना चेहरा देखते ही उनकी नकारात्मक मानसिकता उभर आती है। उनके भीतरी तअस्सुबात (विद्वेष) उनके हवास पर इस तरह छा जाते हैं कि आंख, कान, ज़बान रखते हुए भी वे ऐसे हो जाते हैं गोया कि वे अंधे, बहरे और गूंगे हैं। अब वे न तो किसी पुकारने वाले की पुकार को सुन सकते हैं, न उसकी पुकार का जवाब दे सकते हैं। न किसी किस्म की निशानी से रहनुमाई हासिल कर सकते हैं। उनके लिए सही रवैया यह था कि वे पुकारने वाले की पुकार पर ग़ौर करते। मगर इसके बजाए उन्होंने इससे बचने का सादा इलाज यह खोजा है कि उसकी बात को सिरे से सुना ही न जाए, उसे कोई अहमियत ही नहीं दी जाए।

इसी तरह एक और नफ़्सियात (मानसिकता) है जो हक को कुबूल करने में रुकावट बनती है। यह डर की नफ़्सियात है। बारिश अल्लाह तआला की एक बहुत बड़ी नेमत है। मगर बारिश जब आती है तो अपने साथ कड़क और गरज भी ले आती है जिससे कमज़ोर लोग भयभीत हो जाते हैं। इसी तरह जब अल्लाह की तरफ से हक की दावत उठती है तो एक तरफ अगर वह इंसानों के लिए अज़ीम कामरानियों (कामयाबियों) के इमकानात खोलती है तो दूसरी तरफ इसमें कुछ वक्ती अंदेशे भी दिखाई देते हैं। इसे मान लेने की स्थिति में अपनी बड़ाई का ख़ात्मा, ज़िंदगी के बने बनाए नक्शे को बदलने की ज़रूरत, परम्परागत ढांचे से टकराव की समस्याएं, आख़िरत (परलोक) के बारे में ख़ुशख़्यालियों के बजाए हकीकतों पर भरोसा करना। इस किस्म के अंदेशों को देख कर वे भी रुक जाते हैं और कभी दुविधा के साथ कुछ कदम आगे बढ़ते

हैं मगर ये एहतियातें उनके कुछ काम आने वाली नहीं हैं क्योंकि ख़ुदाई पुकार के लिए अपने को खुले दिल से पेश न करके वे ज्यादा शदीद तौर पर अपने को ख़ुदा की नज़र में क़ाबिले सज़ा बना रहे हैं।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ۝ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَاۗءَ بِنَاۗءً ۠ وَّاَنْزَلَ مِنَ
السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا
وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰي عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ
مِّثْلِهٖ ۠ وَادْعُوْا شُهَدَاۗءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا
وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُھَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ښ اُعِدَّتْ
لِلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَھُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا ھٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا
مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۭ وَلَھُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ڎ
وَّھُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम दोज़ख़ (नर्क) से बच जाओ। वह जात जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए फल तुम्हारी ग़िज़ा के लिए। पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ, हालांकि तुम जानते हो। अगर तुम इस कलाम के संबंध में शक में हो जो हमने अपने बंदे के ऊपर उतारा है तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने हिमायतियों को भी अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर तुम यह न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे आदमी और पत्थर। वह तैयार की गई है हक़ (सत्य) का इंकार करने वालों के लिए। और ख़ुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए, इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था। और मिलेगा उन्हें एक-दूसरे से मिलता-जुलता। और उनके लिए वहां साफ़-सुथरी औरतें होंगी। और वे इसमें हमेशा रहेंगे। (21-25)

इंसान और उसके अलावा जो कुछ ज़मीन व आसमान में है सबका पैदा करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। उसने पूरी कायनात को निहायत हिक्मत (तत्त्वदर्शिता, सूझबूझ) के साथ क़ायम किया है। वह हर क्षण उनकी परवरिश कर रहा है। इसलिए इंसान के लिए सही रवैया सिर्फ़ यह है कि वह अल्लाह को बग़ैर किसी शिर्कत (साझेदारी) के ख़ालिक़ (रचयिता), मालिक और राज़िक़ (अन्नदाता) तस्लीम करे। वह उसे अपना सब कुछ बना ले। मगर चूंकि ख़ुदा नज़र नहीं आता, इसलिए अक्सर ऐसा होता है कि आदमी किसी नज़र आने वाली चीज़ को अहम समझ कर उसे ख़ुदाई के मक़ाम पर बिठा लेता है। वह एक मख़्लूक़ (ईश्वरीय रचना) को आंशिक या पूर्ण रूप से ख़ालिक़ (रचयिता) के बराबर ठहरा लेता है। कभी उसे ख़ुदा का नाम देकर और कभी ख़ुदा का नाम दिए बग़ैर।

यही इंसान की अस्ल गुमराही है। पैग़म्बर की दावत (आह्वान) यह होती है कि आदमी सिर्फ़ एक ख़ुदा को बड़ाई का मक़ाम दे। इसके अलावा जिस-जिस को उसने ख़ुदाई अज़्मत (महानता) के मक़ाम पर बैठा रखा है उसे अज़्मत के मक़ाम से उतार दे। जब ख़ालिस ख़ुदापरस्ती की दावत उठती है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर इसकी ज़द (प्रहार) पड़ती हुई महसूस करने लगते हैं जिनका दिल ख़ुदा के सिवा कहीं और अटका हुआ हो। जिन्होंने ख़ुदा के सिवा किसी और के लिए भी अज़्मत को ख़ास कर रखा हो। ऐसे लोगों को अपने फ़र्ज़ी माबूदों (पूज्यों) से जो शदीद ताल्लुक़ हो चुका होता है इसकी वजह से उनके लिए यह यक़ीन करना मुश्किल होता है कि वे बेहक़ीक़त हैं और हक़ीक़त सिर्फ़ उस पैग़ाम की है जो आदमियों में से एक आदमी की ज़बान से सुनाया जा रहा है।

जो दावत (आह्वान) ख़ुदा की तरफ़ से उठे उसके अंदर लाज़िमी तौर पर ख़ुदाई शान शामिल हो जाती है। इसकी अद्वितीय शैली और इसकी विलक्षण तार्किकता इस बात की खुली अलामत होती है कि वह ख़ुदा की तरफ़ से है। इसके बावजूद जो लोग इंकार करें उन्हें ख़ुदा के विधान में जहन्नम के सिवा कहीं और पनाह नहीं मिल सकती। अलबत्ता जो लोग ख़ुदा के कलाम में ख़ुदा को पा लें उन्होंने गोया आज की दुनिया में कल की दुनिया को देख लिया। यही लोग हैं जो आख़िरत (परलोक) के बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ
اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۭ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا
الْفٰسِقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ
اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या इससे भी किसी छोटी चीज़ की। फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक (सत्य) है उनके रब की जानिब से। और जो इंकार करने वाले हैं वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है। अल्लाह इसके ज़रिए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को इससे राह (सम्मार्ग) दिखाता है। और वह गुमराह करता है उन लोगों को जो नाफरमानी (अवज्ञा) करने वाले हैं। जो अल्लाह के अहद (वचन) को उसके बांधने के बाद तोड़ते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं। यही लोग हैं नुक्सान उठाने वाले। तुम किस तरह अल्लाह का इंकार करते हो, हालांकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िंदगी अता की। फिर वह तुम्हें मौत देगा। फिर ज़िंदा करेगा। फिर उसी की तरफ लौटाए जाओगे। वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है। फिर आसमान की तरफ तवज्जोह की और सात आसमान दुरुस्त किए। और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (26-29)

किसी बंदे के ऊपर अल्लाह का सबसे पहला हक यह है कि वह अब्दियत (दासता, बंदा होने) के उस अहद (वचन) को निभाए जो पैदा करने वाले और पैदा किए जाने वाले के दर्मियान अव्वल रोज़ से कायम हो चुका है। फिर इंसानों के दर्मियान वह इस तरह रहे कि उन तमाम रिश्तों और ताल्लुकात को पूरी तरह निभाए हुए हो जिन्हें निभाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। तीसरी चीज़ यह कि जब ख़ुदा अपने एक बंदे की ज़बान से अपने पैग़ाम का एलान कराए तो उसके ख़िलाफ बेबुनियाद बातें निकाल कर ख़ुदा के बंदों को उससे बिदकाया न जाए। हक की दावत देना दरअस्ल लोगों को हालते फितरी (सहज स्वाभाविक स्थिति) पर लाने की कोशिश करना है। इसलिए जो व्यक्ति लोगों को इससे रोकता है, वह ज़मीन पर फसाद (उपद्रव, बिगाड़) फैलाने का मुजरिम बनता है।

अल्लाह का यह एहसान कि वह आदमी को अदम से वजूद में ले आया। यह अल्लाह का इतना बड़ा एहसान है कि आदमी को पूर्णरूपेण उसके सामने समर्पण कर देना चाहिए। फिर अल्लाह ने इंसान को पैदा करके यू हीं नहीं छोड़ दिया, बल्कि उसे रहने के लिए ऐसी ज़मीन दी जो उसके लिए अत्यंत अनुकूल बनाई गई थी। फिर बात सिर्फ इतनी ही नहीं है बल्कि इससे बहुत आगे की है। इंसान हर वक्त इस नाज़ुक संभावना के किनारे खड़ा हुआ है कि उसकी मौत आ जाए और अचानक वह कायनात के मालिक के सामने हिसाब-किताब के लिए पेश कर दिया जाए। इन बातों का तकाज़ा है कि आदमी पूर्ण रूप से अल्लाह का हो जाए। उसकी

याद और उसकी इताअत (आज्ञापालन) में ज़िंदगी गुज़ारे। सारी उम्र वह उसका बंदा बना रहे।

पैग़म्बराना दावत (आह्वान) के सुस्पष्ट और तार्किक होने के बावजूद क्यों बहुत-से लोग इसे कुबूल नहीं कर पाते। इसकी सबसे बड़ी वजह शोशे निकालने (आलोचना) का फितना है। आदमी के भीतर नसीहत स्वीकारने का ज़ेहन न हो तो वह किसी बात को गंभीरता से नहीं लेता। ऐसे आदमी के सामने जब भी कोई दलील आती है तो उसे सतही तौर देखकर एक शोशा निकाल लेता है। इस तरह वह यह ज़ाहिर करता है कि यह दावत कोई माकूल दावत नहीं है। अगर वह कोई माकूल दावत होती तो कैसे मुमकिन था कि उसमें इस किस्म की बेवज़न बातें शामिल हों। मगर जो नसीहत पकड़ने वाले ज़ेहन हैं, जो बातों पर गंभीरता से ग़ौर करते हैं उन्हें हक को पहचानने में देर नहीं लगती, चाहे हक को 'मच्छर' जैसे मिसालों में ही बयान किया गया हो।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ۭ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاۗءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَاۗءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَي الْمَلٰۗئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِــُٔـوْنِىْ بِاَسْمَاۗءِ هٰٓؤُلَاۗءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْـهُمْ بِاَسْمَاۗىِٕهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَھُمْ بِاَسْمَاۗىِٕهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफा बनाने वाला हूं। फरिश्तों ने कहा : क्या तू ज़मीन में ऐसे लोगों को बसाएगा जो इसमें फसाद करें और ख़ून बहाएं। और हम तेरी हम्द (स्तुति, गुणगान) करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने कहा मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते, और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम, फिर उन्हें फरिश्तों के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। फरिश्तों ने कहा कि तू पाक है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमें बताया। बेशक तू ही इल्म वाला और हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है। अल्लाह ने कहा ऐ आदम उन्हें बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताए उन्हें उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा : क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि आसमानों और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूं। और मुझे मालूम है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (30-33)

ख़लीफा .ी मअना हैं किसी के बाद उसकी जगह लेने वाला जानशीन (उत्तराधिकारी)। विरासती इक्तेदार (सत्ता) के ज़माने में यह लफ्ज़ बहुलता से शासकों के लिए इस्तेमाल हुआ जो एक के बाद दूसरे की जगह सत्तासीन होते थे। इस तरह इस्तेमाली मफहूम में 'ख़लीफा' लफ्ज़ 'सत्ताधारी' के समानार्थी हो गया।

अल्लाह तआला ने जब इंसान को पैदा किया तो यह भी फैसला फरमाया कि वह एक बाइख़्तियार (साधिकार) मख़्लूक की हैसियत से ज़मीन पर आबाद होगा। फरिश्तों को अंदेशा हुआ कि इख़्तियार और इक्तेदार पाकर इंसान बिगड़ न जाए और ज़मीन में खूंरेज़ी करने लगे। फरिश्तों का यह अंदेशा ग़लत नहीं था। अल्लाह को भी इस संभावना का पूरा इल्म था। मगर अल्लाह की नज़र इस बात पर थी कि इंसानों में अगर बहुत-से लोग आज़ादी पाकर बिगड़ेंगे तो एक काबिले लिहाज़ तादाद उन लोगों की भी होगी जो आज़ादी और इख़्तियार के बावजूद अपनी हैसियत को और अपने रब के मकाम को पहचानेंगे और किसी दबाव के बग़ैर खुद अपने इरादे से तस्लीम व इताअत का तरीका अपनाएंगे। ये दूसरी किस्म के लोग अगरचे अपेक्षाकृत कम तादाद में होंगे मगर वे फस्ल के दानों की तरह कीमती होंगे। फस्ल में लकड़ी और भुस की मात्रा हमेशा बहुत.ज्यादा होती है। मगर दाने कम होने के बावजूद इतने कीमती होते हैं कि उनकी ख़ातिर लकड़ी और भुस के ढेर को भी उगने और फैलने का मौका दे दिया जाता है।

अल्लाह ने अपनी कुदरत से आदम की सारी संतति को एक ही वक्त में उनके सामने कर दिया। फिर फरिश्तों से कहा कि देखो यह है औलादे आदम। अब बताओ कि इनमें कौन-कौन और कैसे-कैसे लोग हैं। फरिश्ते अज्ञानतावश बता न सके। अल्लाह तआला ने आदम को उनके नामों, दूसरे शब्दों में शख़्सियतों से आगाह किया और फिर कहा कि फरिश्तों के सामने उनका परिचय कराओ। जब आदम ने परिचय कराया तो फरिश्तों को मालूम हुआ कि आदम की औलाद में फसादियों और बुरे लोगों के अलावा कैसे-कैसे सुल्हा (सज्जन) और मुत्तकीन (ईश परायण) होंगे। इंसान का सबसे बड़ा जुर्म, रब के इंकार के बाद, ज़मीन में फसाद (उपद्रव, बिगाड़) करना और रक्तपात है। किसी व्यक्ति या समूह के लिए जाइज़ नहीं कि वह ऐसी कार्रवाइयां करे जिसके नतीजे में ज़मीन पर खुदा का कायम किया हुआ फितरी निज़ाम बिगड़ जाए। इंसान, इंसान की जान मारने लगे। ऐसा हर कार्य आदमी को खुदा की रहमतों से महरूम कर देता है। ज़मीन पर खुदा के बनाए हुए फितरी निज़ाम का कायम रहना उसका सुधार है, और ज़मीन के फितरी निज़ाम को बिगाड़ना इसका फसाद।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ
الْكَٰفِرِينَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ
شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّٰلِمِينَ ﴿٣٥﴾ فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَٰنُ عَنْهَا
فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقَّىٰٓ ءَادَمُ مِن رَّبِّهِۦ كَلِمَٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ

التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ
هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَٰتِنَآ أُولَٰٓئِكَ
أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٣٩﴾

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया। उसने इंकार किया और घमंड किया और मुंकिरों में से हो गया। और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से खाओ खुले रूप में जहां से चाहो। और उस दरख़्त (वृक्ष) के नज़दीक मत जाना वर्ना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रिए दोनों को लग़ज़िश (ग़लती) में मुब्तला कर दिया और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहां से। तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है एक मुद्दत तक। फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ बोल तो अल्लाह उस पर मुतवज्जह हुआ। बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। हमने कहा तुम सब यहां से उतरो। फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ से कोई हिदायत तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उनके लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग इंकार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाऐंगे तो वही लोग दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (34-39)

आदम को अल्लाह तआला ने फरिश्तों और इब्लीस के दर्मियान खड़ा किया और सज्दे की परीक्षा के ज़रिए आदम को व्यावहारिक रूप से बताया कि उनके लिए ज़मीन पर दो मुमकिन राहें होंगी। एक, फरिश्तों की तरह हुक्मे इलाही के सामने झुक जाना, चाहे इसका मतलब अपने से कमतर एक बंदे के आगे झुकना क्यों न हो। दूसरा, इब्लीस की तरह अपने को बड़ा समझना और दूसरे के आगे झुकने से इंकार कर देना। इंसान की पूरी ज़िंदगी इसी परीक्षा का स्थल है। यहां हर वक्त आदमी को दो रवैयों में से किसी एक रवैये का चुनाव करना होता है। एक मलकूती रवैया यानी दुनिया की ज़िंदगी में जो मामला भी पेश आए, अल्लाह के हुक्म की तामील में आदमी हक और इंसाफ के आगे झुक जाए। दूसरा शैतानी रवैया, यानी जब कोई मामला पेश आए तो आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफ्सियात जाग उठे और वह उसके प्रभाव में आकर साहिबे मामला के आगे झुकने से इंकार कर दे।

निषिद्ध वृक्ष का मामला भी इसी किस्म का व्यावहारिक सबक है। इससे मालूम होता है कि इंसान के भटकने का प्रारंभ यहां से होता है कि वह शैतान के वरग़लाने में आ जाए। और उस हद में कदम रख दे जिसमें जाने से अल्लाह ने मना किया है। 'मना किए हुए फल' को खाते ही आदमी अल्लाह की मदद, दूसरे शब्दों में जन्नत के अधिकार से महरूम हो जाता है।

ताहम यह महरूमी ऐसी नहीं है जिसकी तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) न हो सकती हो। यह संभावना आदमी के लिए फिर भी खुली रहती है कि वह दुबारा अपने रब की ओर लौटे और अपने रवैये को दुरुस्त करते हुए अल्लाह से माफ़ी का तलबगार हो। जब बंदा इस तरह पलटता है तो अल्लाह भी उसकी तरफ़ पलट आता है और उसे इस तरह पाक कर देता है गोया उसने गुनाह ही नहीं किया था।

किसी इंसानी आबादी में अल्लाह की दावत का उठना भी इसी किस्म की एक सख़्त परीक्षा है। हक का दाई (आह्वानकर्ता) भी गोया एक 'आदम' होता है जिसके सामने लोगों को झुक जाना है। अगर वह अपने घमंड और अपने तअस्सुब (विद्वेष) की वजह से उसका एतराफ़ न करें तो गोया कि उन्होंने शैतान की पैरवी की। ख़ुदा इस दुनिया में खुले रूप में सामने नहीं आता वह अपने निशानियों के ज़रिए लोगों को जांचता है। जिसने ख़ुदा की निशानी में ख़ुदा को पाया, उसी ने ख़ुदा को पाया और जिसने ख़ुदा की निशानी में ख़ुदा को नहीं पाया वह ख़ुदा से महरूम रहा।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ
بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝ وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا
اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا
مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝

ऐ बनी इस्राईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया। और मेरे अहद (वचन) को पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा। और मेरा ही डर रखो। और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है। तस्दीक़ (पुष्टि) करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है। और तुम सबसे पहले इसका इंकार करने वाले न बनो। और न लो मेरी आयतों पर मोल थोड़ा। और मुझ से डरो। और सही में ग़लत को न मिलाओ और सच को न छुपाओ हालांकि तुम जानते हो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालांकि तुम किताब की तिलावत करते हो, क्या तुम समझते नहीं। और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं। जो गुमान रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। (40-46)

किसी समुदाय पर अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम यह है कि वह उसके पास अपना पैग़म्बर भेजे और उसके ज़रिए उस समुदाय के लिए अबदी फ़लाह (चिरस्थाई सफलता एवं उद्धार) का रास्ता खोल दे। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बेअसत (अल्लाह के दूत के रूप में प्रकटन) से पहले यह नेमत बनी इस्राईल (यहूदी समुदाय) को दी गई थी। मगर मुद्दत गुज़रने के बाद उनका दीन (धर्म) उनके लिए एक किस्म की तक़लीदी रस्म (परम्परागत अनुकरण) बन गया था न कि शुऊरी फ़ैसले के तहत अपनाई गई एक चीज़। मुहम्मद (सल्ल०) की बेअसत ने हक़ीक़त खोल दी। इनमें से जिन लोगों का शुऊर ज़िंदा था वे फ़ौरन आपकी सदाक़त (सत्यवादिता) को पहचान गए और आपके साथी बन गए। और जिन लोगों के लिए उनका धर्म परम्परागत रीति-रिवाज बन चुका था उन्हें आपकी आवाज़ अपरिचित आवाज़ महसूस हुई। वे बिदक गए और आपके विरोधी बन कर खड़े हो गए।

अगरचे मुहम्मद (सल्ल०) की नुबुव्वत (ईशदूतत्व) के बारे में तौरात में इतनी वाज़ेह अलामतें थीं कि यहूद के लिए आपकी सदाक़त को समझना मुश्किल न था। मगर दुनियावी मफ़ाद और मस्लेहतों की ख़ातिर उन्होंने आपको मानने से इंकार कर दिया। सदियों के अमल से उनके यहां जो मज़हबी ढांचा बन गया था उसमें उन्हें सरदारी हासिल हो गई थी। वे अपने पूर्वजों के आसनों पर बैठ कर जनसाधारण के नायक बने हुए थे। मज़हब के नाम पर तरह-तरह के नज़राने (चढ़ावे आदि) साल भर उन्हें मिलते रहते थे। उन्हें नज़र आया कि अगर उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को सच्चा मान लिया तो उनकी मज़हबी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी। मफ़ादात (स्वार्थों) का सारा ढांचा टूट जाएगा। यहूद को चूंकि उस वक़्त अरब में मज़हब की नुमाइंदगी का मक़ाम हासिल था, लोग उनसे मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में पूछते। वे मासूमाना अंदाज़ में कोई ऐसी शोशे की बात (आलोचनात्मक बात) कह देते जिससे पैग़म्बर का व्यक्तित्व और मिशन लोगों की निगाह में मुशतबह (संदिग्ध) हो जाएं। अपने वअज़ों (प्रवचनों) में वे लोगों से कहते कि हक़परस्त बनो और हक़ (सत्य) का साथ दो। मगर अमलन जब ख़ुद उनके लिए हक़ का साथ देने का वक़्त आया तो वे हक़ का साथ न दे सके।

ख़ुदा की पुकार पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहना जब इस कीमत पर हो कि आदमी को अपनी ज़िंदगी का ढांचा बदलना पड़े, मान-सम्मान के आसनों से अपने को उतारना हो तो यह वक़्त उन लोगों के लिए बड़ा सख़्त होता है जो इन्हीं सांसारिक वैभवों में अपना धार्मिक स्थान बनाए हुए हों। मगर वे लोग जो ख़ुशूअ (निष्ठा) की सतह पर जी रहे हों उनके लिए ये चीज़ें रुकावट नहीं बनतीं। वे अल्लाह की याद में, अल्लाह के लिए ख़र्च करने में, अल्लाह के हुक्म के आगे झुक जाने में और अल्लाह के लिए सब्र करने में वे चीज़ें पा लेते हैं जो दूसरे लोग दुनिया के तमाशों में पाते हैं। वे ख़ूब जानते हैं कि डरने की चीज़ अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) है न कि दुनियावी अंदेशे।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا
يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ

بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ
وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ
فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً
فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी। और डरो उस दिन से कि कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी। न उसकी तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जाएगा और न उनकी कोई मदद की जाएगी। और जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुड़ाया। वे तुम्हें बड़ी तकलीफ़ देते थे। तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से भारी आज़माइश थी। और जब हमने दरिया को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुम्हें और डुबा दिया फ़िरऔन के लोगों को और तुम देखते रहे। और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रात का। फिर तुमने इसके बाद बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिम थे। फिर हमने इसके बाद तुम्हें माफ़ कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब हमने मूसा को किताब दी और फ़ैसला करने वाली चीज़ ताकि तुम राह पाओ। और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है। अब अपने पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह हो और अपने मुजरिमों को अपने हाथों से क़त्ल करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है। तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमाई। बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला

है। और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठाया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नुक़्सान नहीं किया, वे अपना ही नुक़्सान करते रहे। (47-57)

यहूद को अल्लाह तआला ने तमाम दुनिया पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी। यानी उन्हें अपने उस ख़ास काम के लिए चुना था कि उनके पास अपनी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजे, और उनके ज़रिए दूसरी क़ौमों को अपनी मर्ज़ी से बाख़बर करे। फिर इस मंसब (पद) के अनुरूप उन्हें बहुत-सी नेमतें और सहूलतें दी गईं अपने दुश्मनों पर ग़लबा, वक़्ती लग़ज़िशों (ग़लतियों) से दरगुज़र, असाधारण हालात में असाधारण मदद और 'ख़ुदावंद की तरफ़ से उनके लिए जीविका का इंतज़ाम' आदि। इससे यहूद की अगली नस्लें इस ग़लतफ़हमी में पड़ गईं कि हम अल्लाह की ख़ास उम्मत (समुदाय) हैं। हम हर हाल में आख़िरत (परलोक) की कामयाबी हासिल करेंगे। मगर ख़ुदा के इस तरह के मामलात किसी के लिए पुश्तैनी (पैतृक) नहीं होते। किसी समुदाय के अगले लोगों का फ़ैसला उनके पिछले लोगों की बुनियाद पर नहीं किया जाता, बल्कि हर फ़र्द का अलग-अलग फ़ैसला होता है। ख़ुदा के इंसाफ़ का दिन इतना सख़्त होगा कि वहां अपने अमल के सिवा कोई भी दूसरी चीज़ किसी के काम आने वाली नहीं।

सच्ची दीनदारी यह है कि आदमी अल्लाह के सिवा किसी को माबूद (पूज्य) न बनाए। अल्लाह को देखे बग़ैर अल्लाह पर यक़ीन करे। आख़िरत के हिसाब से डर कर ज़िंदगी गुज़ारे। पाक रोज़ी से अपनी ज़रूरतें पूरी करे। जिन लोगों पर उसे अधिक इख़्तियार हासिल है उन्हें जुर्म करने से रोक दे।

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ
السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ
بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ
يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ

الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

और जब हमने कहा कि दाख़िल हो जाओ इस शहर में और खाओ उसमें से जहां से चाहो खुले रूप में और दाख़िल हो दरवाज़े में सिर झुकाए हुए और कहो कि ऐ रब! हमारी ख़ताओं को बख़्श दे। हम तुम्हारी ख़ताओं को बख़्श देंगे और नेकी करने वालों को ज्यादा भी देंगे। तो उन्होंने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने ज़ुल्म किया है उनकी नाफरमानी के सबब से आसमान से अज़ाब (प्रकोप) उतारा। और जब मूसा ने अपनी कौम के लिए पानी मांगा तो हमने कहा अपना असा (डंडा) पत्थर पर मारो तो उससे फूट निकले बारह चश्मे (जलस्रोत)। हर गिरोह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क से और न फिरो ज़मीन में फसाद मचाने वाले बन कर। और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम एक ही किस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते। अपने रब को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से साग, ककड़ी, गेहूं, मसूर, प्याज़। मूसा ने कहा कि क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक अदना (तुच्छ) चीज़ लेना चाहते हो। किसी शहर में उतरो तो तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम मांगते हो। और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक हो गए। यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते थे और नबियों को नाहक क़त्ल करते थे। यह इस वजह से कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद पर न रहते थे। (58-61)

यहूद पर अल्लाह तआला ने खुसूसी इनामात किए। इसका नतीजा यह होना चाहिए था कि वे खुदा के शुक्रगुज़ार बंदे बनते। मगर उन्होंने इसके विपरीत अमल किया। एक बड़ा शहर उन्हें दे दिया गया और कहा गया कि इसमें दाख़िल हो तो फातेहाना तमकनत (विजयी अहंकार) से नहीं बल्कि इज्ज़ (विनम्रता) के साथ और अल्लाह से माफी मांगते हुए। मगर वे इसके बजाए तफरीही बातें कहने लगे। उन्हें 'मन' और 'सलवा' की कुदरती ग़िज़ाएं दी गईं ताकि वे जीविका की जद्दोजेहद से मुक्त होकर अल्लाह के हुक्मों के पालन में ज्यादा से ज्यादा मशग़ूल हों। मगर उन्होंने चटपटे और मसालेदार खानों की मांग शुरू कर दी। उन्होंने दुनिया में जरूरत पर कनाअत (संतोष) न करके लज़्ज़त (भोग-विलास) की तलाश की। उनकी बेहिसी इतनी बढ़ी

कि अल्लाह की खुली-खुली निशानियां भी उनके दिलों को पिघलाने के लिए काफी साबित न हुई। उनकी तंबीह (सचेत करने) के लिए जो अल्लाह के बंदे उठे उनको उन्होंने ठुकराया यहां तक कि मार डाला। यहूद में यह ढिठाई इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने समझ लिया कि वे नजातयाफ्ता (मोक्ष-प्राप्त) समुदाय हैं। मगर ख़ुदा के यहां नस्ल और वर्ण के आधार पर कोई फैसला होने वाला नहीं है। एक यहूदी को भी उसी खुदाई कानून से जांचा जाएगा, जिससे एक ग़ैर-यहूदी को जांचा जाएगा। जन्नत उसी के लिए है जो जन्नत वाले अमल करे, न कि किसी विशेष नस्ल या समुदाय के लिए।

ज़मीन के ऊपर शुक्र, सब्र, तवाज़ोअ (विनम्रता) और कनाअत (संतोष) के साथ रहना ज़मीन की इस्लाह (सुधार) है। इसके विपरीत नाशुक्री, बेसब्री, घमंड और हिर्स के साथ रहना ज़मीन में फसाद बरपा करना है। क्योंकि इससे ख़ुदा का कायम किया हुआ फ़ितरी निज़ाम (सहज-स्वाभाविक व्यवस्था) टूटता है। यह हद से निकल जाना है, जबकि ख़ुदा यह चाहता है कि हर एक अपनी हद के अंदर अमल करे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

यूं है कि जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी, इनमें से जो शख़्स ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और उसने नेक काम किया तो उसके लिए उसके रब के पास अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (62)

आयत में चार समूहों का ज़िक्र है। एक मुसलमान जो मुहम्मद (सल्ल०) की उम्मत (अनुयायी समुदाय) हैं। दूसरे, यहूद जो अपने को मूसा (अलैहिस्सलाम) की उम्मत कहते हैं। तीसरे, नसारा (ईसाई) जो मसीह (अलैहिस्सलाम) की उम्मत होने के दावेदार हैं। चौथे, साबी जो अपने को याहिया (अलैहिस्सलाम) की उम्मत बताते थे और क़दीम ज़माने में इराक के इलाके में आबाद थे। वे अहले किताब थे (यानी जिनके पास पहले खुदाई कलाम आ चुका था) और काबे की तरफ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे। मगर अब साबी समुदाय ख़त्म हो चुका है। दुनिया में अब इसका कहीं वजूद नहीं।

यहां मुसलमानों को अलग नहीं किया है। बल्कि उनका और दूसरे पैग़म्बरों से निस्बत रखने वाली उम्मतों का ज़िक्र एक साथ किया गया है। इसका मतलब यह है कि समूह होने के एतबार से अल्लाह के नज़दीक सब समान दर्जा रखते हैं। समूह के एतबार से एक समूह और दूसरे समूह में कोई फर्क नहीं। सबकी नजात (मुक्ति, मोक्ष) का एक ही अटल उसूल है और वह है ईमान और अमले सालेह (सत्कर्म)। कोई समूह अपने को चाहे मुसलमान कहता हो या वह

अपने को यहूदी या मसीही या साबी कहे, इनमें से कोई भी महज़ एक विशेष समूह होने के आधार पर ख़ुदा के यहां कोई विशेष दर्जा नहीं रखता। दर्जे का एतबार इस पर है कि किसने ख़ुदा की मंशा के मुताबिक अपनी अमली (व्यावहारिक) ज़िंदगी को ढाला।

नबी (ईशदूत) के ज़माने में जब उसके मानने वालों का समूह बनता है तो उसकी बुनियाद हमेशा ईमान और अमले सालेह (सत्कर्म) पर होती है। उस वक्त ऐसा होता है कि नबी की पुकार को सुनकर कुछ लोगों के अंदर ज़ेहनी और फ़िक्री (वैचारिक) इंकिलाब आता है। उनके भीतर एक नया अज़्म (संकल्प) जागता है। उनकी ज़िंदगी का नक्शा जो अब तक ज़ाती ख़्वाहिशों की बुनियाद पर चल रहा था, वह ख़ुदाई तालीमात की बुनियाद पर कायम होता है। यही लोग हकीकी मअनों में नबी की उम्मत होते हैं। उनके लिए नबी की ज़बान से आख़िरत की नेमतों की बशारत (शुभ सूचना) दी जाती है।

मगर बाद की नस्लों में सूरतेहाल बदल जाती है। अब ख़ुदा का दीन (धर्म) उनके लिए एक किस्म की कौमी रिवायत (जातीय परम्परा) बन जाता है। जो बशारतें ईमान और अमल की बुनियाद पर दी गई थीं उन्हें महज़ गिरोही (समूहगत) ताल्लुक का नतीजा समझ लिया जाता है। वे गुमान कर लेते हैं कि उनके गिरोह का अल्लाह से कोई ख़ास रिश्ता है जो दूसरे गिरोहों से नहीं है। जो व्यक्ति इस विशेष गिरोह से संबंध रखे चाहे अकीदा (आस्था, विश्वास) और अमल के एतबार से वह कैसा ही हो बहरहाल उसकी नजात (मुक्ति) होकर रहेगी। जन्नत उसके अपने गिरोह के लिए और जहन्नम दूसरे गिरोहों के लिए है।

मगर अल्लाह का किसी गिरोह से विशेष रिश्ता नहीं। अल्लाह के यहां जो कुछ एतबार है वह सिर्फ़ इस बात का है कि आदमी अपनी सोच और अमल में कैसा है। आख़िरत में आदमी के अंजाम का फ़ैसला उसके हकीकी किरदार (चरित्र-आचरण) की बुनियाद पर होगा। न कि गिरोही संबंधों के आधार पर।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

और जब हमने तुमसे तुम्हारा अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बचो। इसके बाद तुम इससे फिर गए। अगर अल्लाह का

फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते। और उन लोगों का हाल तुम जानते हो जो सब्त (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए तो हमने उनको कहा कि तुम लोग ज़लील बंदर बन जाओ। फिर हमने इसे इबरत बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके रूबरू थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आए। और इसमें हमने नसीहत रख दी डर वालों के लिए। (63-66)

बाइबल की रिवायतें बताती हैं कि मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में जब यहूद से यह अहद (वचन) लिया गया कि वे ख़ुदाई तालीमात (शिक्षाओं) पर ठीक-ठीक अमल करेंगे तो ख़ुदा ने पहाड़ को उनके ऊपर उलट कर औंधा कर दिया और उनसे कहा कि तौरात को या तो कुबूल करो वर्ना यहीं तुम सब को हलाक कर दिया जाएगा। (तालमूद) यही मामला हर उस शख़्स का है जो अल्लाह पर ईमान लाता है। ईमान लाना गोया अल्लाह से यह अहद करना है कि आदमी का जीना और मरना ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक होगा। यह एक बेहद गंभीर इकरार है। इसमें एक तरफ़ आजिज़ बंदा होता है और दूसरी तरफ़ वह ख़ुदा होता है जिसके हाथ में ज़मीन व आसमान की ताकतें हैं। अगर बंदा अपने अहद पर पूरा उतरे तो उसके लिए ख़ुदा की लाज़वाल नेमतें हैं। और अगर वह अहद करके उससे फिर जाए तो उसके लिए यह शदीद ख़तरा है कि उसका ख़ुदा उसे जहन्नम में डाल दे जहां वह इस तरह जलता रहे कि इससे निकलने का कोई रास्ता उसके लिए बाकी न हो।

ईमानी अहद (वचन) के वक्त मूसा (अलैहि०) की कौम पर जो कैफ़ियत गुज़री थी वही हर मोमिन बंदे से मत्लूब (अपेक्षित) है। हर शख़्स जो अपने आप को अल्लाह के साथ ईमान की रस्सी में बांधता है, उसे इसकी संगीनी से इस तरह कांपना चाहिए गोया कि उसने अगर इस अहद के ख़िलाफ़ किया तो ज़मीन और आसमान उसके ऊपर गिर पड़ेंगे।

एक गिरोह जिसे अल्लाह की तरफ़ से शरीअत दी जाए उसकी गुमराही की एक सूरत यह होती है कि वह अमलन उसके ख़िलाफ़ चले और तावीलों (हीलों-बहानों) के ज़रिए यह ज़ाहिर करे कि वह ऐन ख़ुदा के हुक्म पर कायम है। यहूद को यह हुक्म था कि वे सनीचर के दिन को रोज़ा और इबादत के लिए मख़सूस रखें। इस दिन किसी किस्म का कोई दुनियावी काम न करें। मगर उन्होंने इस हुरमत (मनाही) को बाकी नहीं रखा। वे दूसरे दिनों की तरह सनीचर के दिन भी अपने दुनियावी कारोबार करने लगे। अलबत्ता वे तरह-तरह की लफ़्ज़ी तावीलों से ज़ाहिर करते कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह ऐन ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक है। उनकी यह ढिठाई अल्लाह को इतनी नापसंद हुई कि वे बंदर बना दिए गए। जब भी आदमी शरीअत से हटता है तो वह अपने आपको जानवरों की सतह पर ले जाता है जो किसी अख़्लाकी ज़ाब्ते (नैतिक विधान) के पाबंद नहीं हैं। इसलिए जो लोग शरीअत के साथ इस किस्म का खेल करें उन्हें डरना चाहिए कि ख़ुदा का कानून उन्हें उसी हैवानी ज़िल्लत में मुब्तला न कर दे जिसमें यहूद अपने इसी किस्म के फेअल (कृत्य) की वजह से मुब्तला हुए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا
هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ
لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ ۖ عَوَانٌ بَيْنَ
ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ
لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي
الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا
يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ
تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ
آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

ع

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहा : क्या तुम हमसे हंसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसा नादान बनूं। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, उनके बीच की हो। अब कर डालो जो हुक्म तुमको मिला है। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो, वह बयान करे कि उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है वह सुनहरे रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान कर दे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमें शुबह पड़ गया है और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे। मूसा ने कहा अल्लाह फरमाता है कि वह ऐसी गाय हो कि महनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सालिम हो, उसमें कोई दाग़ न हो। उन्होंने कहा : अब तुम स्पष्ट बात लाए। फिर उन्होंने उसे ज़बह किया। और वे ज़बह करते नज़र न आते थे। और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला फिर एक-दूसरे पर इसका इल्ज़ाम डालने लगे। हालांकि अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो कुछ तुम

छुपाना चाहते थे। पस हमने हुक्म दिया कि मारो उस मुर्दे को इस गाय का एक टुकड़ा। इस तरह ज़िंदा करता है अल्लाह मुर्दों को। और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझो। (67-73)

मूसा (अलैहि०) के ज़माने में बनी इस्राईल में कत्ल की एक घटना घटी। कातिल का पता लगाने के लिए अल्लाह तआला ने नबी के वास्ते से उन्हें यह हुक्म दिया कि एक गाय ज़बह करो। और उसका गोश्त मृतक पर मारो। मृतक अल्लाह के हुक्म से कातिल का नाम बता देगा। यह एक मौजज़ाती (चमत्कारपूर्ण) तदबीर थी जो निम्न उद्देश्यों के लिए अपनाई गई

1. मिस्र में लंबी मुद्दत तक कयाम करने की वजह से बनी इस्राईल मिस्री तहज़ीब (सभ्यता) और रीति-रिवाजों से प्रभावित हो गए। मिस्री कौम गाय को पूजती थी। अतः मिस्रियों के असर से बनी इस्राईल में भी गाय के मुकद्दस (पवित्र) होने का ज़ेहन पैदा हो गया। जब उक्त घटना घटी तो अल्लाह ने चाहा कि इस घटना के माध्यम से उनके ज़ेहन से गाय की पवित्रता की धारणा को तोड़ा जाए। अतः कातिल का पता लगाने के लिए गाय के ज़िब्ह की तदबीर अपनाई गई।

2. इसी तरह बनी इस्राईल ने यह ग़लती की थी कि फिक्ह (आचार-शास्त्र) की बारीकियों और बहस के नतीजों में ख़ुदा के सादा दीन को एक बोझल दीन बना डाला था। अतः उक्त घटना के माध्यम से उन्हें यह सबक दिया गया कि अल्लाह की तरफ से जो हुक्म आए उसे सादा अर्थों में लेकर फौरन उसकी तामील में लग जाओ। खोद-कुरेद का तरीका न अपनाओ। अगर तुमने ऐसा किया कि हुक्म की तफ़्सील जानने और उसकी हदों को सुनिश्चित करने के लिए मुशिगाफियां (कुतर्क) करने लगे तो सख़्त आज़माइश में पड़ जाओगे। इस तरह एक सादा हुक्म शर्तों का इज़ाफ़ा होते-होते एक सख़्त हुक्म बन जाएगा जिसकी तामील (पालन) तुम्हारे लिए बेहद मुश्किल हो।

3. इस वाकये के ज़रिए बनी इस्राईल को बताया गया है कि दूसरी ज़िंदगी उसी तरह एक मुमकिन ज़िंदगी है जैसे पहली ज़िंदगी। अल्लाह हर आदमी को मरने के बाद ज़िंदा कर देगा और उसे दुबारा एक नई दुनिया में उठाएगा।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ
الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए। पस वे पत्थर की तरह हो गए या इससे भी ज्यादा सख़्त। पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं। कुछ

पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है। और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह इससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

ख़ुदा के हुक्म के बारे में जो लोग बहसें और तावीलें करें उनके अंदर धीरे-धीरे बेहिसी (संवेदनहीनता) का मर्ज़ पैदा हो जाता है। उनके दिल सख़्त हो जाते हैं। ख़ुदा का नाम सबसे बड़ी हस्ती का नाम है। आदमी के अंदर ईमान ज़िंदा हो तो ख़ुदा का नाम उसे हिला देता है। बोलने से ज्यादा उसे चुप लग जाती है। मगर जब दिलों में जुमूद (जड़ता) और बेहिसी आती है तो ख़ुदा की बातों में भी उसी किस्म की बहसें और तावीलें शुरू कर दी जाती हैं जो आम इंसानी कलाम में की जाती हैं। इस किस्म का अमल उनकी बेहिसी में और इज़ाफ़ा करता चला जाता है। यहां तक कि उनके दिल पत्थर की तरह सख़्त हो जाते हैं। अब ख़ुदा का तसव्वुर (अवधारण) उनके दिलों को नहीं पिघलाता, वह उनके अंदर तड़प नहीं पैदा करता। वह उनकी रूह के भीतर कंपन पैदा करने का सबब नहीं बनता।

पत्थरों का ज़िक्र यहां तमसील (उदाहरण) के रूप में किया गया है। ख़ुदा ने अपनी कायनात को इस तरह बनाया है कि वह आदमी के लिए इबरत और नसीहत का सामान बन गई है। यहां की हर चीज़ ख़ामोश मिसाल की ज़बान में उसी रब की मर्ज़ी का अमली निशान है जो रब की मर्ज़ी क़ुरआन में अल्फ़ाज़ (शब्दों) के ज़रिए बयान की गई है।

पत्थरों के ज़रिए ख़ुदा ने अपनी दुनिया में जो तमसीलात कायम की हैं उनमें से तीन चीज़ों की तरफ इस आयत में इशारा किया गया है।

पहाड़ों पर एक चीज़ यह देखने को मिलती है कि पत्थरों के अंदर से पानी के स्रोत बहते रहते हैं जो अंततः मिलकर नदी का रूप अपना लेते हैं। यह उस इंसान की तमसील है जिसके दिल में अल्लाह का डर बसा हुआ हो और वह आंसुओं के रूप में उसकी आंखों से बह पड़ता हो।

दूसरी मिसाल उस पत्थर की है जो बज़ाहिर सूखी चट्टान मालूम होता है। मगर जब तोड़ने वाले उसे तोड़ते हैं तो मालूम होता है कि उसके नीचे पानी का बड़ा ज़ख़ीरा (भंडार) मौजूद था। ऐसी चट्टानों को तोड़कर कुवें बनाए जाते हैं। यह उस इंसान की तमसील है जो बज़ाहिर ख़ुदा से दूर मालूम होता था। इसके बाद उस पर एक हादसा गुज़रा। इस हादसे ने उसकी रूह को हिला दिया। वह आंसुओं के सैलाब के साथ ख़ुदा की तरफ दौड़ पड़ा।

पत्थरों की दुनिया में तीसरी मिसाल भू-स्खलन (Landslide) की है। यानी पहाड़ों के ऊपर से पत्थर के टुकड़ों का लुढ़क कर नीचे आ जाना। यह उस इंसान की तमसील है जिसने किसी इंसान के मुकाबले में ग़लत रवैया अपनाया। इसके बाद उसके सामने ख़ुदा का हुक्म पेश किया गया। ख़ुदा का हुक्म सामने आते ही वह ढह पड़ा। इंसान के सामने वह झुकने के लिए तैयार न था। मगर जब इंसान का मामला ख़ुदा का मामला बन गया तो वह आजिज़ाना तौर पर (समर्पण भाव से) उसके आगे गिर पड़ा।

أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾

क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे। हालांकि इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे बदल डालते थे समझने के बाद, और वे जानते हैं। जब वे ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं। और जब आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे तुम्हारे रब के पास तुमसे हुज्जत करें। क्या तुम समझते नहीं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। (75-77)

मदीने के लोग जो मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाए थे, उनके इतने जल्दी आप को पहचान लेने और आपको मान लेने का एक सबब यह था कि वह अपने यहूदी पड़ोसियों से अक्सर सुनते रहते थे कि एक आख़िरी नबी आने वाले हैं। इस कारण मुहम्मद (सल्ल०) के आने की ख़बर उनके लिए एक मानूस (परिचित) ख़बर थी। ये मुसलमान स्वाभाविक रूप से इस उम्मीद में थे कि जिन यहूदियों की बातें सुनकर उनके दिल के अंदर इस्लाम क़ुबूल करने का इब्तिदाई जज्बा उभरा था, वे यकीनन ख़ुद भी आगे बढ़कर इस पैग़म्बर का साथ देंगे। अतः वे पुरजोश तौर पर इन यहूदियों के पास इस्लाम का पैग़ाम लेकर जाते और उनका आह्वान करते कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाकर आप (सल्ल०) का साथ देने वाले बनें।

मगर मुसलमानों को उस वक्त सख़्त धक्का लगता जब वे देखते कि उनकी उम्मीदों के विपरीत यहूद उनके आह्वान को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। इसके नतीजे में एक और नज़ाकत पैदा हो रही थी। जो लोग मुहम्मद (सल्ल०) से दुश्मनी और द्वेष रखते थे वे मुसलमानों से कहते कि पैग़म्बरे इस्लाम का मामला इतना यकीनी नहीं जितना तुम लोगों ने समझ लिया है। यदि वह इतना यकीनी होता तो ये यहूदी उलेमा (विद्वान) ज़रूर उनकी ओर दौड़ पड़ते। क्योंकि वे आसमान की किताबों (दिव्य ग्रंथों) के बारे में तुमसे ज्यादा जानते हैं।

मगर किसी बात को क़ुबूल करने के लिए उस बात का जानना काफ़ी नहीं है। बल्कि उस बात के बारे में गंभीर होना ज़रूरी है। यहूद का हाल यह था कि उन्होंने ख़ुद अपने पास की उन किताबों में तब्दीलियां कर डालीं जिन्हें वे आसमानी किताबें मानते थे। अपनी

मुक़द्दस किताबों (धर्म ग्रंथों) में वे जिस बात को अपनी ख़्वाहिश के ख़िलाफ देखते उसमें संशोधन या परिवर्तन करके उसे अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक बना लेते। वे अपने दीन (धर्म) को अपने सांसारिक हितों के अधीन बनाए हुए थे। जो लोग अपने अमल से इस क़िस्म की ग़ैर-संजीदगी का सुबूत दे रहे हों, वे अपने से बाहर किसी हक को मानने पर कैसे राज़ी हो जाएंगे।

कोई बात चाहे कितनी ही बरहक (सत्यवादी) हो अगर आदमी उसका इंकार करना चाहे तो वह इसके लिए कोई न कोई तावील (हीला-बहाना) ढूंढ लेगा। इस तावील के आख़िरी रूप का नाम तहरीफ (संशोधन परिवर्तन) है। इस तर्ज़ेअमल का नतीजा यह होता है कि अल्लाह के मामले की संगीनी आदमी के दिल से निकल जाती है। वह ख़ुदा के हुक्म को सुनता है मगर लफ़्ज़ी तावील करके मुतमइन (संतुष्ट) हो जाता है कि उसका अपना मामला इस हुक्म की ज़द में नहीं आता। वह ख़ुदा को मानता है मगर उसकी बेहिसी (संवेदनहीनता) उसे ऐसे कामों के लिए ढीठ बना देती है जो कोई ऐसा आदमी ही कर सकता है जो न ख़ुदा को मानता हो और न यह जानता हो कि उसका ख़ुदा उसे देख रहा है और उसकी बातों को सुन रहा है।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتٰبَ إِلَّآ أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِأَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّآ أَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ أَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّأَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾

और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को मगर आरज़ुएं। इनके पास गुमान के सिवा और कुछ नहीं। पस ख़राबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है। ताकि इसके ज़रिए थोड़ी-सी पूंजी हासिल कर लें। पस ख़राबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी। और उनके लिए ख़राबी है अपनी इस कमाई से। और वे कहते हैं हमें दोज़ख़ की आग नहीं छुऐगी मगर गिनती के कुछ दिन। कहो क्या तुमने अल्लाह के

पास से कोई अहद (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने अहद के ख़िलाफ नहीं करेगा। या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते। हां जिसने कोई बुराई की और उसके गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया। तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। (78-82)

आरज़ुओं (अमानी) से आशय वे झूठे किस्से-कहानियां हैं जो यहूद ने अपने धर्म के बारे में गढ़ रखी थीं और जो अपनी ज़ाहिर फरेबी की वजह से अवाम में ख़ूब फैल गई थीं। इन किस्से कहानियों का खुलासा यह था कि जहन्नम की आग यहूद के लिए नहीं है। उनमें अपने पूर्वजों से जोड़कर ऐसी बातें मिलाई गई थीं जिससे यह साबित हो कि बनी इस्राईल अल्लाह के ख़ास बंदे हैं। वे जिस धर्म को मानते हैं उसमें ऐसे जादुई गुण छुपे हुए हैं कि उसकी मामूली-मामूली चीज़ें भी आदमी को जहन्नम की आग से बचाने और जन्नत के बाग़ों में पहुंचा देने के लिए काफ़ी हैं।

सस्ती नजात (मुक्ति) के ये पवित्र नुस्ख़े अवाम के लिए बहुत कशिश रखते थे। क्योंकि इसमें उन्हें अपनी इस ख़ुशख़्याली की तस्दीक मिल रही थी कि उन्हें अपनी ग़ैर-ज़िम्मेदाराना ज़िंदगी पर रोक लगाने की ज़रूरत नहीं। वे किसी जद्दोजेहद के बग़ैर मात्र टोने-टोटके की बरकत से जन्नत में पहुंच जाएंगे। अतः जो यहूदी विद्वान पूर्वजों के हवाले से यह ख़ुशकुन कहानियां सुनाते थे उन्हें लोगों के बीच ज़बरदस्त मकबूलियत हासिल हुई। आख़िरत (परलोक) के मामले को आसान बनाना उनके लिए शानदार दुनियावी तिजारत का ज़रिया बन गया। उनके पास अवाम की भीड़ जमा हो गई। उनके ऊपर नज़रानों (चढ़ावों) की बारिश होने लगी। वे लोगों को मुफ्त जन्नत हासिल करने का रास्ता बताते थे। लोगों ने इसके बदले में उनके लिए अपनी तरफ से मुफ्त दुनिया फ़राहम कर दी।

यही हर दौर में धर्म-ग्रंथों की धारक कौमों का रोग रहा है। जो लोग इस किस्म के लज़ीज़ ख़्वाबों में जी रहे हों, जो यह समझ बैठे हों कि कुछ रस्मी आमाल (कर्मकांडों) के सिवा उन पर किसी ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं है, जो इस ख़ुशगुमानी में मुब्तला हों कि उनके सारे हुकूक ख़ुदा के यहां हमेशा के लिए महफूज़ हो चुके हैं, ऐसे लोग सच्चे दीन के आह्वान को कभी गवारा नही करते। क्योंकि ऐसी बातें उन्हें अपनी मीठी नींद को ख़राब करती हुई नज़र आती हैं। वे उन्हें ज़िंदगी की खुली हकीक़तों के सामने खड़ा कर देती हैं।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ إِلَّا اللّٰهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और नेक सुलूक करोगे मां-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ,

यतीमों और मिस्कीनों के साथ। और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो। फिर तुम इससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के। और तुम इकरार करके इससे हट जाने वाले लोग हो। (83)

इंसान के ऊपर अल्लाह का पहला हक यह है कि वह अल्लाह का इबादतगुज़ार बने और उसके साथ किसी को शरीक न करे। दूसरा हक बंदों के साथ हुस्ने सुलूक (सद्व्यवहार) है। इस हुस्ने सुलूक का आग़ाज़ अपने मां-बाप से होता है और फिर रिश्तेदारों और पड़ोसियों से गुज़रकर उन तमाम इंसानों तक पहुंच जाता है जिनसे अमली ज़िंदगी में संबंध बनते हैं। एक इंसान और दूसरे इंसान के दर्मियान जब भी कोई मामला पड़े तो वहां एक ही बर्ताव अपने भाई के साथ दुरुस्त है। और वह वही है जो इंसाफ और ख़ैरख़्वाही (परहित) के मुताबिक हो।

इस मामले मे आदमी का अस्ल इम्तहान 'यतीमों और मिस्कीनों' या दूसरे शब्दों में कमज़ोर लोगों के साथ होता है। क्योंकि जो ताकतवर है उसका ताकतवर होना खुद इस बात की ज़मानत है कि लोग उसके साथ हुस्ने सुलूक करें। मगर कमज़ोर आदमी के साथ हुस्ने सुलूक के लिए इस किस्म का कोई अतिरिक्त प्रेरक नहीं है। इसलिए सबसे ज्यादा हुस्ने सुलूक जहां अपेक्षित है वे कमज़ोर लोग हैं। हकीकत यह है कि जहां हर चीज़ की नफ़ी (अभाव) हो जाती है वहां खुदा होता है। ऐसे आदमी के साथ वही शख़्स हुस्ने सुलूक करेगा जो वाकई अल्लाह की खुशनूदी के लिए ऐसा कर रहा हो। क्योंकि वहां कोई दूसरा मुहर्रिक (प्रेरक) मौजूद ही नहीं।

जब मामला कमज़ोर आदमी से हो तो विभिन्न कारणों से हुस्ने सुलूक का शुऊर दब जाता है। कमज़ोर आदमी को मदद दी जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि पाने वाले के मुकाबले में देने वाला अपने को कुछ ऊंचा समझने लगता है। यह नफ्सियात कमज़ोर आदमी की इज़्ज़ते नफ्स (स्वाभिमान) को मलहूज़ रखने में रुकावट बन जाती है। कमज़ोर की तरफ से अपेक्षित विनम्रता प्रकट न हो तो फौरन उसे अयोग्य समझ लिया जाता है और इसका प्रदर्शन विभिन्न तकलीफदेह सूरतों में होता रहता है। एक-दो बार मदद करने के बाद यह ख़्याल होता है कि यह शख़्स मुस्तकिल तौर पर मेरे सर न हो जाए। इसलिए उससे छुट्टी पाने के लिए उसके साथ ग़ैर-शरीफाना अंदाज़ अपनाया जाता है। वग़ैरह

भली बात बोलना तमाम आमाल का खुलासा (सार) है। एक हकीकी ख़ैरख़्वाही का कलिमा (बोल) कहना आदमी के लिए हमेशा सबसे ज्यादा दुश्वार होता है। आदमी अच्छी-अच्छी तकरीरें करता है। मगर जब एक अच्छी बात किसी दूसरे के एतराफ (स्वीकार) के समानार्थी हो तो आदमी ऐसी अच्छी बात मुंह से निकालने के लिए सबसे ज्यादा कंजूस होता है। सामने का आदमी यदि कमज़ोर है तो उसके लिए शराफत के अल्फ़ाज़ बोलना भी वह ज़रूरी नहीं समझता। अगर किसी से शिकायत या नाराज़गी पैदा हो जाए तो आदमी समझ लेता है कि वह इंसाफ के हर खुदाई हुक्म से उसे मुस्तसना (अपवाद) करने में हक बजानिब है।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ
تُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاِنْ
يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ
الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾

और जब हमने तुमसे यह अहद (वचन) लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे। और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे। फिर तुमने इकरार किया और तुम इसके गवाह हो। फिर तुम ही वे हो कि अपनों को कत्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनकी बस्तियों से निकालते हो। इनके मुकाबले में इनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ। फिर अगर वे तुम्हारे पास कैद होकर आते हैं तो तुम फिदया (अर्थदण्ड) देकर उन्हें छुड़ाते हो। हालांकि ख़ुद इनका निकालना तुम्हारे ऊपर हराम था। क्या तुम किताबे इलाही के एक हिस्से को मानते हो और एक हिस्से का इंकार करते हो। पस तुममें से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुस्वाई हो और कियामत के दिन इन्हें सख़्त अज़ाब में डाल दिया जाए। और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी। पस न इनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न इन्हें मदद पहुंचेगी। (84-86)

प्राचीन मदीने के चारों तरफ यहूद के तीन कबीले आबाद थे बनूनज़ीर, बनूकुरैज़ा और बनूकैनुकाअ। ये सब मूसवी शरीअत को मानते थे। मगर उनके जाहिली तअस्सुबात (विद्वेष) ने उन्हें अलग-अलग गिरोहों में बांट रखा था। अपनी दुनियावी सियासत के तहत वे मदीने के मुशरिक (बहुदेववादी) कबीलों औस और ख़ज़रज के साथ मिल गए थे। बनूनज़ीर और बनूकुरैज़ा ने कबीला औस का साथ पकड़ लिया था। बनूकैनुकाअ कबीला ख़ज़रज का सहयोगी बना हुआ था। इस तरह दो गिरोह बन कर वे आपस में लड़ते रहते थे। जंग बिआस इसी किस्म की एक जंग थी जो हिजरते नबवी (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मदीना प्रस्थान) से पांच साल पहले हुई थी। इन लड़ाइयों में यहूद मुशरिक कबीलों के साथ मिल कर दो मोर्चे बना लेते। एक

मोर्चे में शामिल होने वाले यहूदी दूसरे मोर्चे में शामिल होने वाले यहूदियों को क़त्ल करते और उन्हें उनके घरों से बेघर कर देते। फिर जब जंग ख़त्म हो जाती तो वे तौरात का हवाला देकर अपने सहधर्मियों से चंदे की अपीलें करते ताकि अपने गिरफ्तार भाइयों को, फिदया (हर्जाना) देकर मुशरिक कबीलों के हाथ से छुड़ाया जा सके। इंसान के जान व माल के एहतराम के बारे में वे ख़ुदा के हुक्म को तोड़ते और फिर अपनी ज़ालिमाना सियासत का शिकार होने वालों के साथ दिखावटी हमदर्दी करके ज़ाहिर करते कि वे बहुत धार्मिक हैं।

यह ऐसा ही है जैसे एक शख़्स को नाहक क़त्ल कर दिया जाए और उसके बाद शरअी तरीके पर उसकी नमाज जनाजा पढ़ी जाए। शरीअत के अस्ली और असासी (आधारभूत) अहकाम आदमी से जाहिली जिंदगी छोड़ने के लिए कहते हैं। वह उसकी ख़्वाहिशे नफ़्स (मनोइच्छाओं) से टकराते हैं। वह उसकी दुनियादाराना सियासत पर रोक लगाते हैं। इसलिए आदमी इन अहकाम को नजरअंदाज करता है। वह हकीकी दीनदारी के जुए में अपने को डालने को तैयार नहीं होता। अलबत्ता कुछ मामूली और नुमाइशी चीजों की धूम मचाकर यह जाहिर करता है कि वह ख़ुदा के दीन पर पूरी तरह कायम है। मगर वह ख़ुदा के दीन का ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) एडीशन तैयार करना है। यह दीन के उख़रवी (परलोकवादी) पहलू को नजरअंदाज करना है और दीन के कुछ वे पहलू जो अपने अंदर दुनियावी रौनक और शोहरत रखते हैं उनमें दीनदारी का कमाल दिखाना है। दीन में इस किस्म की जसारत (दुस्साहस) आदमी को अल्लाह के ग़जब का मुस्तहिक बनाती है न कि अल्लाह के इनाम का।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِن بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۖ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُكُمُ
اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَل
لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا
جَاءَهُم مَّا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۚ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ
أَن يَكْفُرُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَن يُنَزِّلَ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ ۖ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩٠﴾

और हमने मूसा को किताब दी और इसके बाद पे दरपे रसूल भेजे। और ईसा बिन मरयम को खुली-खुली निशानियां दीं और रूहे पाक से उसकी ताईद की। तो जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने घमंड किया। फिर एक जमाअत को झुठलाया और एक जमाअत को मार डाला।

और यहूद कहते हैं कि हमारे दिल महफूज (सुरक्षित) हैं। नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार की वजह से उन पर लानत कर दी है। इसलिए वे बहुत कम ईमान लाते हैं। और जब आई अल्लाह की तरफ से उनके पास एक किताब जो सच्चा करने वाली है उसे जो उनके पास है और वे पहले से मुंकिरों पर फतह मांगा करते थे। फिर जब आई उनके पास वह चीज जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने इसका इंकार कर दिया। पस अल्लाह की लानत है इंकार करने वालों पर। कैसी बुरी है वह चीज जिसमें उन्होंने अपनी जानों का मोल किया कि वे इंकार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस जिद की बुनियाद पर कि अल्लाह अपने फज्ल से अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे। पस वे ग़ुस्से पर ग़ुस्सा कमा कर लाए और इंकार करने वालों के लिए जिल्लत का अजाब है। (87-90)

तौरात अल्लाह की किताब थी जो यहूद (यहूदी जाति) पर उतरी थी। मगर धीरे-धीरे तौरात की हैसियत उनके यहाँ कौमी तबर्रुक (जातीय शुभ वस्तु) की हो गई। कौमी अज्मत और नजात की अलामत के तौर पर यहूद अब भी उसे सीने से लगाए हुए थे। मगर रहनुमा किताब के मकाम से उसे उन्होंने हटा दिया था। मूसा (अलैहि०) के बाद बार-बार इनके दर्मियान अंबिया (ईशदूत) उठते, मसूलन यूशअ नबी, दाऊद नबी, जकरिया नबी, याहिया नबी वग़ैरह। उनके आख़िरी नबी ईसा (अलैहि०) थे। ये तमाम अंबिया यहूद को यह नसीहत देने के लिए आए कि तौरात को अपनी अमली जिंदगियों में शामिल करो। मगर तौरात की पवित्रता पर ईमान रखने के बावजूद यह आवाज उनके लिए तमाम आवाजों से ज्यादा असहनीय साबित हुई। वे ख़ुदा के नबियों को नबी मानने से इंकार करते, यहां तक कि उन्हें क़त्ल कर डालते। इसकी वजह यह थी कि तौरात के नाम पर वे जिस जिंदगी को अपनाए हुए थे वह हकीकत में नफ्सानियत (मनोइच्छाओं) और दुनियापरस्ती की एक जिंदगी थी जिसके ऊपर उन्होंने ख़ुदा की किताब का लेबल लगा लिया था। ख़ुदा के नबी जब बेआमेज हक (विशुद्ध सत्य) की दावत पेश करते तो उन्हें नजर आता कि यह दावत उनकी मजहबी हैसियत को नकार रही है। अब उनके अंदर घमंड की नफ्सियात जाग उठतीं। वे नबियों के एतराफ के बजाए उन्हें ख़त्म करने के दरपे हो जाते।

यही मामला अरब के यहूद ने मुहम्मद (सल्ल०) के साथ किया। वे अपनी धार्मिक पुस्तकों में आख़िरी रसूल की भविष्यवाणी को देखकर कहते कि जब वह नबी आएगा तो हम उसके साथ मिलकर मुंकिरों और मुशरिकों को परास्त करेंगे। मगर उनकी यह बात महज एक झूठी तकरीर थी जो अपने को धर्म का संरक्षक जाहिर करने के लिए वे करते थे। अतः 'वह नबी' आया तो उनकी हकीकत खुल गई। उनके जाहिली तअस्सुबात (विद्वेष) अपने गिरोह से बाहर के एक नबी का एतराफ करने में रुकावट बन गए। क़ुरआन में आपकी सदाकत (सच्चाई) के बारे में जो वाजेह दलीलें दी जा रही थीं उनके जवाब से वे आजिज थे। इसलिए वे कहने लगे कि तुम्हारी जाहिर-फरेब बातों से प्रभावित होकर हम अपने पूर्वजों का दीन नहीं छोड़ सकते।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾ قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

और जब उनसे कहा जाता है उस कलाम पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है। और वे इसका इंकार करते हैं जो इसके पीछे आया है। हालांकि वह हक है और सच्चा करने वाला है उसे जो इनके पास है। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले क्यों कत्ल करते रहे हो। और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियां लेकर आया। फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम जुल्म करने वाले हो। और जब हमने तुमसे अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया जो हुक्म हमने तुम्हें दिया है उसे मजबूती के साथ पकड़ो और सुनो। उन्होंने कहा : हमने सुना और हमने नहीं माना। और उनके कुफ़्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है। कहो, अगर अल्लाह के यहां आख़िरत का घर ख़ास तुम्हारे लिए है, तो दूसरों को छोड़कर तुम मरने की आरजू करो अगर तुम सच्चे हो। मगर वे कभी इसकी आरजू नहीं करेंगे, इस सबब से वे जो अपने आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ख़ूब जानता है जालिमों को। और तुम उन्हें जिंदगी का सबसे ज्यादा हरीस (लालसा रखने वाला) पाओगे, उन लोगों से भी ज्यादा जो मुशरिक हैं। इनमें से हर एक यह चाहता है कि हजार वर्ष की उम्र पाए। हालांकि इतना जीना भी उसे अजाब से बचा नहीं सकता। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (91-96)

यहूद जो कुरआन की दावत (आह्वान) को मानने के लिए तैयार न हुए, इसकी वजह उनका यह एहसास था कि वे पहले से हक पर हैं और हकपरस्तों की सबसे बड़ी जमाअत (बनी इस्राईल) से संबंध रखते हैं। मगर यह दरअस्ल गिरोहपरस्ती थी जिसे उन्होंने हकपरस्ती के हम-मअना समझ रखा था। वे गिरोही हक को ख़ालिस हक का मकाम दिए हुए थे। यही वजह है कि हक (सत्य) जब अपने विशुद्ध रूप में जाहिर हुआ तो वे उसे लेने के लिए आगे न बढ़ सके। अगर ख़ालिस हक उनका मक्सूद होता तो उनके लिए यह जानना मुश्किल न होता कि कुरआन का आना ख़ुद उनकी मुक़द्दस किताब तौरात की भविष्यवाणियों के मुताबिक है। और यह कि कुरआन के नज़ूल (अवतरण) के बाद अब कुरआन ही किताबे हक (दिव्य ग्रंथ) है न कि उनका अपना गिरोही धर्म।

उनका मामला दरहकीकत हकपरस्ती का मामला नहीं। इसका सुबूत उनके अपने इतिहास में यह है कि उन्होंने ख़ुद अपने गिरोह के नबियों (मसलन हजरत जकरिया, हजरत याहिया) को कत्ल किया जिन्होंने उनकी जिंदगियों पर तंकीद (आलोचना) की, जो उनके ख़िलाफ गवाही देते थे ताकि उन्हें ख़ुदा की तरफ बुलाएं। (तहमियाह 26 : 9)। हजरत मूसा ने जो मौजिजे (चमत्कार) पेश किए इसके बाद उनकी नुबुव्वत में कोई शुबह नहीं रह गया था। मगर कोहेतूर के चालीस दिनों के कयाम (वास) के जमाने में जब हजरत मूसा का शख़्सी दबाव उनके सामने न रहा तो उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। उनके सर पर पहाड़ खड़ा कर दिया गया, तब भी सिर्फ वक्ती तौर पर जान बचाने के लिए उन्होंने कह दिया कि हां हमने सुना। मगर इसके बाद उनकी अक्सरियत (बहुलसंख्या) बदस्तूर नाफ़रमानी की जिंदगी पर कायम रही। अगर वे सचमुच ख़ुदापरस्त होते तो उनकी सारी तवज्जोह ख़ुदा की उस दुनिया की तरफ लग जाती जो मौत के बाद आने वाली है। मगर उनका हाल यह है कि वे सबसे ज्यादा मौजूदा दुनिया की मुहब्बत में डूबे हुए हैं।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

कहो कि जो कोई जिब्रील का मुख़ालिफ है तो उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह सच्चा करने वाला है उसे जो उसके आगे है और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए। जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे मुंकिरों का दुश्मन है। और हमने तुम्हारे ऊपर वाजेह निशानियां उतारीं और कोई इनका इंकार नहीं करता मगर वही लोग जो फासिक (अवज्ञाकारी) हैं। क्या जब भी वे कोई अहद (वचन) बाधेंगे तो उनका एक गिरोह उसे तोड़ फेंकेगा। बल्कि उनमें से अक्सर ईमान नहीं रखते। और जब उनके पास अल्लाह की तरफ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज का जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया गोया वे इसे जानते ही नहीं। (97-101)

प्राचीन काल में यहूद की सरकशी के नतीजे में बार-बार उन्हें सख़्त सजाएं दी गईं। अल्लाह के तरीके के मुताबिक हर सजा से पहले पैग़म्बरों की जबान से उसकी पेशगी ख़बर दी जाती। यह ख़बर अल्लाह की तरफ से जिब्रील फरिश्ते के जरिए पैग़म्बर के पास आती और वह इससे अपनी कौम को आगाह करते। इस किस्म के वाकियात में अस्ली सबक यह था कि आदमी को चाहिए कि वह अल्लाह की नाफरमानी से बचे ताकि वह अजाबे इलाही की जद में न आ जाए। मगर यहूद इन वाकियात से इस किस्म का सबक न ले सके। इसके बजाए वे कहने लगे, जिब्रील फरिश्ता हमारा दुश्मन है वह हमेशा आसमान से हमारे ख़िलाफ अहकाम लेकर आता है। जब मुहम्मद (सल्ल०) ने एलान किया कि अल्लाह ने जिब्रील के ज़रिए मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी का उतरना) की है तो यहूद ने कहना शुरू किया जिब्रील तो हमारा पुराना दुश्मन है। यही वजह है कि नुबुव्वत जो सिर्फ इस्राईली गिरोह का हक था, इसे उसने एक अन्य कबीले के व्यक्ति तक पहुंचा दिया।

इस किस्म की निरर्थक बातें सिर्फ वही लोग करते हैं जो फिस्क (उद्दंडता) और बेकैदी (उन्मुक्ता) की जिंदगी गुजार रहे हों। यहूद का हाल यह था कि वे नफ्सपरस्ती, आबाई तक़लीद (पूर्वजों का अंधानुकरण), नस्ली और कौमी विद्वेष की सतह पर जी रहे थे और कुछ नुमाइशी किस्म के मजहबी काम करके जाहिर करते थे कि वे ऐन दीने ख़ुदावंदी पर कायम हैं। जो लोग इस किस्म की झूठी दीनदारी में मुब्तला हों, वे सच्चे और विशुद्ध धर्म का आह्वान सुन कर हमेशा बिगड़ जाते हैं। क्योंकि ऐसा आह्वान उन्हें उनके गर्व और अहंकार के स्थान से उतारने के समानार्थी नजर आता है। वे उत्तेजनापूर्ण मानसिकता के तहत ऐसी बातें बोलने लगते हैं जो अभिव्यक्ति के एतबार से दुरुस्त होने के बावजूद हकीकत के एतबार से बिल्कुल अर्थहीन होती हैं। जाहिर है कि फरिश्तों का आना और रसूलों का मबऊस होना सब मुकम्मल तौर पर ख़ुदाई मंसूबे के तहत होता है। ऐसी हालत में जब दलीलें यह जाहिर कर रही हों कि पैग़म्बरे अरबी (सल्ल०) के पास वही चीज आई है जो इब्राहीम, मूसा और ईसा पर आई थी और वह पिछले आसमानी सहीफों (दिव्य ग्रंथों) की भविष्यवाणियों के ऐन मुताबिक है तो यह स्पष्ट रूप से इस

बात का सुबूत है कि वह अल्लाह की तरफ से है। आदमी बहुत-सी बातें यह जाहिर करने के लिए बोलता है कि वह ईमान पर कायम है। हालांकि वे बातें सिर्फ इस बात का सुबूत होती हैं कि आदमी का ईमान और ख़ुदापरस्ती से कोई ताल्लुक नहीं है।

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ
الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۗ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا
تَكْفُرْ ۗ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۗ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ
بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۗ وَلَقَدْ عَلِمُوْا
لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۗ
لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۗ
لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

और वे उस चीज के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की सल्तनत पर लगा कर पढ़ते थे। हालांकि सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ्र किया वे लोगों को जादू सिखाते थे। और वे उस चीज में पड़ गए जो बाबिल में दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई, जबकि उनका हाल यह था कि जब भी किसी को अपना यह फन (कला) सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आजमाइश के लिए हैं। पस तुम मुंकिर न बनो। मगर वे उनसे वह चीज सीखते जिससे मर्द और उसकी औरत के दर्मियान जुदाई डाल दें। हालांकि वे अल्लाह के इज़्न (आज्ञा) के बग़ैर इससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। और वे ऐसी चीज सीखते जो उन्हें नुक्सान पहुंचाए और नफा न दे। और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज का ख़रीदार हो, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। कैसी बुरी चीज है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला। काश वे इसे समझते। और अगर वे मोमिन बनते और तकवा (ईशभय) इख़्तियार करते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, काश वे इसे समझते। (102-103)

आसमानी किताब के धारक किसी गिरोह का बिगाड़ हमेशा सिर्फ एक होता है। आख़िरत की नजात जो कि पूरी तरह नेक आमाल पर निर्भर है उसका राज बेअमली में तलाश कर लेना। अल्लाह का कलाम हकीकत में अमल की पुकार है। मगर जब कौम पर जवाल आता है तो उसके लोग मुकद्दस (पवित्र) कलाम को लिख लेने या जबान से बोल देने को हर किस्म की

बरकतों का रहस्यमयी नुस्ख़ा समझ लेते हैं। यही वह मनोवैज्ञानिक धरातल है जिसके ऊपर जादू, तंत्र-मंत्र और अमलियात वजूद में आते हैं। फिर तंत्र-मंत्र जैसी चीजों से जन्नत हासिल करने वाले दुनिया को भी छू-मंतर के जरिए हासिल करने की कोशिश में लग जाते हैं। बुज़ुर्गों से अक़ीदत (श्रद्धा) को नजात का जरिया समझने वाले रूहों से तअल्लुक़ क़ायम करके अपने दुनियावी मसाइल हल करने लगते हैं। विर्द और वज़ाइफ़ (तप-जप आदि) के तिलिस्माती असरात पर यकीन करने वाले सियासी चमत्कार दिखा कर मिल्लत की तामीर और दीन के अह्या (पुनरुत्थान) का मंसूबा बनाते हैं।

यहूद अपने ज़वाल (पतन) के बाद जब बेअमली और तोहमपरस्ती (अंधविश्वास) की इस कैफियत में मुब्तला हुए तो उनके दर्मियान ऐसे लोग पैदा हुए जो सहर और कहानत (जादू और तंत्र-मंत्र) की दुकान लगा कर बैठ गए। इन ज़ालिमों ने अपने कारोबार को चमकाने के लिए अपने इस फन (कला) को सुलैमान (अलैहि०) की तरफ मंसूब कर दिया। उन्होंने कहना शुरू किया कि सुलैमान को जिन्नों और हवाओं पर जो असाधारण वर्चस्व प्राप्त था वह सब इल्मे सहर की बुनियाद पर था और यह सुलैमानी इल्म कुछ जिन्नों के जरिए हमें हासिल हो गया है। इस तरह सुलैमान की तरफ मंसूब होकर अमलियात का फन यहूद के अंदर बड़े पैमाने पर फैल गया।

लूत (अलैहि०) की कौम समलैंगिकता की बुराई में मुब्तला थी। इसलिए उनके यहां ख़ूबसूरत लड़कों के रूप में फरिश्ते आए। इसी तरह यहूद की आजमाइश के लिए बाबिल में दो फरिश्ते भेजे गए जो दुरवेशों के भेष में अमलियात सिखाते थे। ताहम वे कहते रहते थे कि यह तुम्हारा इम्तहान है। मगर इस तंबीह के बावजूद वे इस फन पर टूट पड़े। यहां तक कि उन्होंने इसे नाजाइज उद्देश्यों में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ
مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾ مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنْسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾ أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا
رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾

ऐ ईमान वालो तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंज़ुरना' कहो और सुनो। और कुफ्र करने वालों के लिए दर्दनाक सजा है। जिन लोगों ने इंकार किया, चाहे अहले किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से कोई भलाई उतरे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है। अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। हम जिस आयत को मौक़ूफ़ (निरस्त) करते हैं या भुला देते हैं तो इससे बेहतर या इस जैसी दूसरी लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखता है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार। क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किए गए। और जिस शख़्स ने ईमान को कुफ्र से बदल दिया वह यकीनन सीधी राह से भटक गया। (104-108)

किसी को ख़ुदा की तरफ से सच्चाई मिले और वह उसका दाओ (आह्वानकर्ता) बन कर खड़ा हो जाए तो लोग उसके मुख़ालिफ बन जाते हैं। क्योंकि उसके आह्वान में लोगों को अपनी हैसियत का नकार दिखाई देने लगता है। यहूद के लिए विरोध का यह सबब और भी शिद्दत के साथ मौजूद था। क्योंकि वे पैग़म्बरी को अपना कौमी हक समझते थे। उनके लिए यह बात असहनीय थी कि उनके गिरोह के सिवा किसी और गिरोह में ख़ुदा का पैग़म्बर आए। यहूद मुहम्मद (सल्ल०) की दावत (आह्वान) के बारे में तरह-तरह की मजहबी बहसें छेड़ते ताकि लोगों को इस शुबह में डाल दें कि आप जो कुछ पेश कर रहे हैं वह महज एक शख़्स की अपनी उपज है। वह ख़ुदा की तरफ से आई हुई चीज नहीं है। इनमें से एक यह था कि क़ुरआन में कुछ कानूनी अहकाम तौरात से भिन्न थे। इन्हें देखकर वे कहते कि क्या ख़ुदा भी हुक्म देने में ग़लती करता है कि एक बार एक हुक्म दे और इसके बाद उसी मामले में दूसरा हुक्म भेजे। इसी तरह के शुब्हात यहूद ने इतनी अधिकता से फैलाए कि ख़ुद मुसलमानों में कुछ सादा-मिजाज लोग उनके बारे में अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से सवालात करने लगे। इसके अलावा यह कि, जब यहूद आपकी मज्लिस में बैठते तो ऐसे अल्फ़ाज बोलते जिससे आपका बेवक़्अती होना जाहिर होता। मसलन 'हमारी तरफ तवज्जोह कीजिए' के लिए अरबी भाषा में एक ख़ास शब्द 'उंज़ुरना' था, मगर वे इसे छोड़कर 'राइना' कहते। क्योंकि थोड़ा-सा ख़ीचकर इसे 'राईना' कह दिया जाए तो इसका अर्थ 'हमारे चरवाहे' हो जाता है। इसी तरह कभी अलिफ को दबाकर वे इसे 'राइन' कहते जिसका अर्थ 'अहमक' (मूर्ख) होता है।

हिदायत की गई कि (1) गुफ़्तुगू में साफ अल्फ़ाज इस्तेमाल करो। मुश्तबह (संदिग्ध) अल्फ़ाज मत बोलो जिसमें कोई बुरा पहलू निकल सकता हो। (2) जो बात कही जाए उसे ग़ौर से सुनो और उसे समझने की कोशिश करो। (3) सवाल की कसरत (बहुलता) आदमी को सीधे रास्ते से भटका देती है। इसलिए सवाल-जवाब के बजाए इबरत और नसीहत का जेहन पैदा करो। (4) अपने ईमान की हिफ़ाजत करो, ऐसा न हो कि किसी ग़लती की बुनियाद पर तुम अपने ईमान ही से महरूम (वंचित) हो जाओ। (5) दुनिया में किसी के पास कोई ख़ैर देखो

तो हसद (ईर्ष्या) में मुब्तला न हो। क्योंकि यह अल्लाह की एक देन है, जो उसके फैसले के तहत उसके एक बंदे को पहुंचा है।

وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمٰنِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِندِ
أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتّٰى يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَءَاتُوا الزَّكٰوةَ ۚ وَمَا
تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾
وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصٰرٰى ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا
بُرْهٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١١١﴾ بَلٰى مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾

बहुत से अहले किताब दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुम्हें मुंकिर बना दें, अपने हसद (ईर्ष्या) की वजह से, बावजूद यह कि हक उनके सामने वाज़ेह हो चुका है। पस माफ करो और दरगुजर करो यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ जाए। बेशक अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। और नमाज कायम करो और जकात अदा करो। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यकीनन उसे देख रहा है। और वे कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ वही लोग जाऐंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह महज उनकी आरज़ुए हैं। कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह मुख़्लिस भी है तो ऐसे शख़्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, इनके लिए न कोई डर है और न कोई ग़म। (109-112)

कुरआन की आवाज़ बहुत-से लोगों के लिए नामानूस (अपरिचित) आवाज थी ताहम इन्हीं में ऐसे लोग भी थे जो इसे अपने दिल की आवाज पाकर इसके दायरे में दाख़िल होते जा रहे थे। यह सूरतेहाल यहूद के लिए असहनीय बन गई, क्योंकि यह एक ऐसी चीज की तरक्की के समान थी जिसे वे बेहकीकत समझ कर नजरअंदाज किए हुए थे। उन्होंने यह किया कि एक तरफ मुशरिकों को उभार कर उन्हें इस्लाम के ख़िलाफ जंग पर आमादा कर दिया, दूसरी तरफ वे नए इस्लाम कुबूल करने वालों को तरह-तरह के शुब्हात और मुग़ालतों (भ्रमों) में डालते, ताकि वे कुरआन और कुरआन पेश करने वाले से बदजन हो जाएं और दुबारा अपने आबाई (पैतृक) मजहब की तरफ वापस चले जाएं। इसके नतीजे में मुसलमानों के अंदर यहूद के ख़िलाफ

इश्तेआल (आक्रोश) पैदा होना फ़ितरी था। मगर अल्लाह ने इससे उन्हें मना फरमा दिया। हुक्म हुआ कि यहूद से बहस या उनके ख़िलाफ कोई आक्रामक कार्रवाई मौजूदा मरहले में हरगिज न की जाए। इस मामले में तमामतर अल्लाह पर भरोसा किया जाए और उस वक्त का इंतजार किया जाए जब अल्लाह तआला हालात में ऐसी तब्दीली कर दे कि उनके ख़िलाफ कोई फैसलाकुन कार्रवाई करना मुमकिन हो जाए। बरवक्त मुसलमानों को चाहिए कि वे सब्र करें और नमाज और जकात पर मजबूती से कायम हो जाएं। सब्र आदमी को इससे बचाता है कि वह रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफ्सियात के तहत मनफी (नकारात्मक) कार्रवाइयां करने लगे। नमाज आदमी को अल्लाह से जोड़ती है और अपने माल में से दूसरे भाइयों को हकदार बनाना वह चीज है जिससे आपसी ख़ैरख़्वाही और इत्तेहाद की फज़ा पैदा होती है।

नए इस्लाम लाने वालों से वे कहते कि तुम्हें अपना पैतृक धर्म छोड़ना है तो यहूदियत अपना लो या फिर ईसाई बन जाओ। क्योंकि जन्नत तो यहूदियों और ईसाइयों के लिए है जो हमेशा से नबियों और बुज़ुर्गों की जमाअत रही है। फरमाया कि किसी गिरोह से वाबस्तगी किसी को जन्नत का हकदार नहीं बनाती। जन्नत का फैसला आदमी के अपने अमल की बुनियाद पर किया जाता है न कि गिरोही फजीलत की बुनियाद पर। एहसान के मअना हैं किसी काम को अच्छी तरह करना। इस्लाम में अच्छा होना यह है कि अल्लाह के लिए आदमी की हवालगी इतनी कामिल हो कि हर दूसरी चीज की अहमियत उसके ज़ेहन से मिट जाए। गिरोही तअस्सुबात शख़्सी वफादारियां और दुनियावी हित-स्वार्थ कोई भी चीज उसके लिए अल्लाह की आवाज की तरफ दौड़ पड़ने में रुकावट न बने।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَىْءٍ وَقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ
الْيَهُودُ عَلٰى شَىْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُۥ وَسَعٰى فِى
خَرَابِهَآ ۚ أُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَآ إِلَّا خَآئِفِينَ ۚ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا
خِزْىٌ وَلَهُمْ فِى الْءَاخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا
تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحٰنَهُۥ ۖ
بَل لَّهُۥ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُۥ قٰنِتُونَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضٰىٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾

और यहूद ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज पर नहीं। और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं। इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं, उन्हीं का सा कौल। पस अल्लाह कियामत के दिन इस बात का फैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे। और उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोके कि वहां अल्लाह के नाम की याद की जाए और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे। उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए दाख़िल हों। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए भारी सजा है। और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए है। तुम जिधर रुख़ करो उसी तरफ अल्लाह है। यकीनन अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, इल्म वाला है। और कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह इससे पाक है। बल्कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है। उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे। वह आसमानों और जमीन को वुजूद में लाने वाला है। वह जब किसी काम को करना तै कर लेता है तो बस उसके लिए फरमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (113-117)

यहूद ने नबियों और बुज़ुर्गों से वाबस्तगी (संबंध स्थापना) को हक का मेयार (मापदंड) बनाया। इस वजह से उन्हें अपनी कौम हक (सत्य) पर और दूसरी कौम बातिल (असत्य) पर नजर आई। ईसाइयों ने अपने अंदर यह विशिष्टता देखी कि अल्लाह ने अपना 'इकलौता बेटा' उनके पास भेजा। मक्का के मुशरिकीन अपनी यह विशिष्टता समझते थे कि वे अल्लाह के मुकद्दस (पवित्र) घर के पासबान हैं। इस तरह हर गिरोह ने अपने हस्बेहाल हक व सदाकत का एक स्वनिर्मित मेयार बना रखा था और जब इस मेयार की रोशनी में देखता तो लामुहाला उसे अपनी जात बरसरेहक और दूसरों की बरसरे बातिल नजर आती। मगर उनकी अमली हालत जिस चीज का सुबूत दे रही थी वह इसके बिल्कुल बरअक्स (विपरीत) थी। वे गिरोह-गिरोह बने हुए थे। उनमें से किसी को जब भी मौका मिलता, वह इबादत के लिए बने हुए ख़ुदा के घर को अपने गिरोह के अलावा दूसरे गिरोह के लिए बंद कर देता। और इस तरह ख़ुदा के घर की वीरानी का सबब बनता। इबादतख़ाना तो वह मकाम है जहां इंसान अल्लाह से डरते हुए और कांपते हुए दाख़िल हो। अगर ये लोग वाकई ख़ुदा वाले होते तो कैसे मुमकिन था कि वे इबादत के लिए आने वाले किसी बंदे को रोकें या उसे सताएं। वे तो अल्लाह की अज्मत के एहसास से दबे हुए होते। फिर उनमें इस किस्म की सरकशी कैसे हो सकती थी।

उन्होंने अल्लाह को इंसान के ऊपर कयास किया। एक इंसान अगर मशरिक में हो तो उसी वक्त वह मगरिब में नहीं होगा। वे समझते हैं कि ख़ुदा भी इसी तरह किसी ख़ास दिशा में मौजूद है। यकीनन अल्लाह ने अपनी इबादत के लिए रुख़ का निर्धारण किया है मगर वह इबादत की तंजीमी जरूरत की बुनियाद पर है, न इसलिए कि ख़ुदा इसी ख़ास रुख़ में मिलता है। इसी तरह इंसानों पर कयास करते हुए उन्होंने ख़ुदा का बेटा मान्य कर लिया। हालांकि ख़ुदा इस किस्म की चीजों से बुलंद और बरतर है। जो लोग इस तरह ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को ख़ुदा का दीन बताएं, उनके लिए ख़ुदा के यहां रुस्वाई और अजाब के सिवा और कुछ नहीं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾ وَلَنْ
تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ
هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ
مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ
اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने कहा : अल्लाह क्यों नहीं कलाम करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह उनके अगले भी उन्हीं की-सी बात कह चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश कर दी हैं निशानियां उन लोगों के लिए जो यकीन करने वाले हैं। हमने तुम्हें ठीक बात लेकर भेजा है, ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर। और तुम से दोजख़ में जाने वालों की बाबत कोई पूछ नहीं होगी। और यहूद और नसारा हरगिज तुमसे राजी नहीं होंगे जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लगो। तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही अस्ल राह है। और अगर बाद उस इल्म के जो तुम तक पहुंच चुका है तुमने उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी की तो अल्लाह के मुकाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार। जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इसे पढ़ते हैं जैसा कि हक है पढ़ने का। यही लोग ईमान लाते हैं इस पर। और जो इसका इंकार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं। (118-121)

अल्लाह के वे बंदे जो अल्लाह की तरफ से उसके दीन (धर्म) का एलान करने के लिए आए, उन्हें हर जमाने में एक ही किस्म की प्रतिक्रिया का सामना हुआ। 'अगर तुम ख़ुदा के नुमाइंदे हो तो तुम्हारे साथ दुनिया के ख़जाने क्यों नहीं।' यह शुबह उन लोगों को होता है जो अपने दुनियापरस्ताना मिजाज की वजह से माद्दी (भौतिक) बड़ाई को बड़ाई समझते थे। इसलिए वे ख़ुदा की नुमाइंदगी करने वाले में भी यही बड़ाई देखना चाहते थे। जब हक के दाओ (आवाहक) की जिंदगी में उन्हें इस किस्म की बड़ाई दिखाई न देती तो वे इसका इंकार कर देते। उनकी समझ में न आता कि एक 'मामूली आदमी' क्यों कर वह शख़्स हो सकता है जिसे जमीन व आसमान के मालिक ने अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए चुना हो। अल्लाह के इन बंदों की जिंदगी

और उनके कलाम में अल्लाह अपनी निशानियों की सूरत में शामिल होता। दूसरे शब्दों में सार्थक बड़ाइयां पूरी तरह उनके साथ होतीं। मगर इस किस्म की चीजें लोगों को नजर न आतीं। इसलिए वे उन्हें 'बड़ा' मानने के लिए भी तैयार न होते। दलील अपनी कामिल सूरत में मौजूद होकर भी उनके जेहन का जुज न बनती, क्योंकि वह उनके मिजाजी ढांचे के मुताबिक न होती।

यहूद और नसारा (ईसाई) कदीम जमाने में आसमानी मजहब के नुमाइंदे थे। मगर जवाल का शिकार होने के बाद दीन उनके लिए एक गिरोही तरीका होकर रह गया था। वे अपने गिरोह से जुड़े रहने को दीन समझते और गिरोह से अलग हो जाने को बेदीनी। उनके गिरोह में शामिल होना या न होना ही उनके नजदीक हक और नाहक का मेयार बन गया था। जब दीन अपनी बेआमेज सूरत (विशुद्ध रूप) में उनके सामने आया तो उनका गिरोही दीनदारी का मिजाज इसे कुबूल न कर सका। हकीकत यह है कि बेआमेज दीन को वही अपनाएगा जिसने अपनी फितरत को जिंदा रखा है। जिनकी फितरत की रोशनी बुझ चुकी है उनसे किसी किस्म की कोई उम्मीद नहीं। दीन को ऐसे लोगों के लिए काबिले कुबूल बनाने के लिए दीन को बदला नहीं जा सकता।

يٰبَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفٰعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذِ ابْتَلَىٰٓ إِبْرٰهِيمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ۖ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۖ قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۖ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِينَ ﴿١٢٤﴾

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम कौमों पर फजीलत दी। और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आयेगा और न किसी की तरफ से कोई मुआवजा कुबूल किया जायेगा और न किसी को कोई सिफारिश फायदा देगी और न कहीं से उन्हें कोई मदद पहुंचेगी। और जब इब्राहीम को उसके रब ने कई बातों में आजमाया तो उसने पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने कहा मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम बनाऊंगा। इब्राहीम ने कहा : और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने कहा : मेरा अहद (वचन) जालिमों तक नहीं पहुंचता। (122-124)

बनी इस्राईल को इस ख़ास काम के लिए चुना गया था कि वह दुनिया की तमाम कौमों को अल्लाह की तरफ बुलायें और उन्हें इस हकीकत से आगाह करें कि उनके आमाल के बारे में उनका मालिक उनसे सवाल करने वाला है। इस काम की रहनुमाई के लिए उनके दर्मियान मुसलसल पैगम्बर आते रहे। इब्राहीम, याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलैमान, जकरिया, याहिया, ईसा,

अलैहिमुस्सलाम वग़ैरह। मगर बाद के जमाने में जब बनी इस्राईल पर जवाल आया तो उन्होंने इस मंसबी फजीलत को नस्ली और गिरोही फजीलत के मअना में ले लिया और इस तरह इस की बाबत अपने इस्तहकाक (पात्रता) को खो दिया। इस्माईली ख़ानदान में नबीए अरबी का आना दरअस्ल बनी इस्राईल की फजीलत के मकाम से माजूली और इसकी जगह बनी इस्माईल की नियुक्ति का एलान था। बनी इस्राईल में जो लोग वाकई ख़ुदापरस्त थे उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) जो कलाम पेश कर रहे हैं वह ख़ुदा की तरफ से आया हुआ कलाम है। मगर जो लोग गिरोही तअस्सुबात (विद्वेष) को दीन बनाए हुए थे उनके लिए अपने से बाहर किसी फजीलत का एतराफ करना मुमकिन न हो सका।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जरिए उन्हें सचेत किया गया कि याद रखो आख़िरत में हकीकी ईमान और सच्चे अमल के सिवा किसी भी चीज की कोई कीमत न होगी। दुनिया में एक शख़्स दूसरे शख़्स का भार अपने सिर ले लेता है। किसी मामले में किसी की सिफारिश काम आ जाती है। कभी मुआवजा देकर आदमी छूट जाता है। कभी कोई मददगार मिल जाता है जो पुश्तपनाही करके बचा लेता है। मगर आख़िरत में इस किस्म की कोई चीज किसी के काम आने वाली नहीं। आख़िरत किसी गिरोह की नस्ली विरासत नहीं, वह अल्लाह के बेलाग इंसाफ का दिन है। इब्राहीम (अलैहि०) को जो फजीलत का दर्जा मिला इसका फैसला उस वक्त किया गया जब वह कड़ी जांच में ख़ुदा के सच्चे फरमांबरदार साबित हुए। अल्लाह की यही सुन्नत उनकी नस्ल के बारे में भी है कि जो अमल मे पूरा उतरेगा वह इस इलाही वादे में शरीक होगा। और जो अमल की तराजू पर अपने को सच्चा साबित न कर सके उसका वही अंजाम होगा जो इस किस्म के दूसरे मुजरिमों के लिए अल्लाह के यहां मुकर्रर है। हजरत इब्राहीम (अलैहि०) को निहायत कड़ी आजमाइशों के बाद पेशवाई का मकाम दिया गया। इससे मालूम हुआ कि इमामत और कयादत के मंसब का इस्तहकाक (पात्रता) कुर्बानियों के जरिए हासिल होता है। कुर्बानी की कीमत पर किसी मकसद को अपनाने वाला उस मकसद की राह में सबसे आगे होता है। इसलिए कुदरती तौर पर वही उसका कायद (प्रमुख, नायक) बनता है।

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرٰهِيمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْمٰعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَالْعٰكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُۥ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُم بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۖ قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُۥ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُۥٓ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾

और जब हमने काबे को लोगों के इज्तिमाअ की जगह और अम्न का मकाम ठहराया और हुक्म दिया कि मकामे इब्राहीम को नमाज पढ़ने की जगह बना लो। और इब्राहीम

और इस्माईल को ताकीद की कि मेरे घर को तवाफ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ करने वालों और रुकूअ व सज्दे करने वालों के लिए पाक रखो। और जब इब्राहीम ने कहा के ऐ मेरे रब इस शहर को अम्न का शहर बना दे। और इसके बाशिंदों को, जो इनमें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखें, फलों की रोजी अता फरमा। अल्लाह ने कहा जो इंकार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों फायदा दूंगा। फिर उसे आग के अजाब की तरफ धकेल दूंगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (125-126)

सारी दुनिया के अहले ईमान हर साल अपने वतन को छोड़कर बैतुल्लाह (काबा) आते हैं। यहां किसी के लिए किसी जीहयात (जीव) पर ज्यादती करना जाइज नहीं। हरमे काबा को दाइमी (स्थाई) तौर पर इबादत की जगह बना दिया गया है। इस मकाम को हर किस्म की आलूदगियों (गंदगियों) से पाक रखा जाता है। काबे का तवाफ (परिक्रमा) किया जाता है। दुनिया से अलग होकर अल्लाह की याद की जाती है। और अल्लाह के लिए रुकूअ और सिज्दे किए जाते हैं। कदीम जमाने में यह दुनिया का सबसे ज्यादा ख़ुश्क इलाका था, जहां रेतीली जमीनों और पथरीली चट्टानों की वजह से कोई फस्ल पैदा नहीं होती थी। इसके अलावा यह कि वह इंतिहाई तौर पर असुरक्षित था। चार हजार वर्ष पहले हजरत इब्राहीम (अलैहि०) को हुक्म हुआ कि अपने ख़ानदान को इस इलाके में ले जाओ और उसे वहां बसा दो। हजरत इब्राहीम (अलैहि०) ने बिना किसी संकोच के इस हुक्म का पालन किया। और जब ख़ानदान को इस निर्जन स्थान पर पहुंचा चुके तो दुआ की कि ख़ुदाया मैंने तेरे हुक्म की तामील कर दी। अब तू अपने बंदे की पुकार सुन ले और इस बस्ती को अम्न व अमान की बस्ती बना दे। और इस ख़ुश्क जमीन पर इनके लिए ख़ुसूसी रिज्क का इंतजाम फरमा। दुआ कुबूल हुई और इसी का यह नतीजा है कि यह इलाका आज तक अम्न और रिज्क की कसरत (बहुलता) का नमूना बना हुआ है।

मोमिन को दुनिया में इस तरह रहना है कि वह बार-बार याद करता रहे कि वह चाहे दुनिया के किसी गोशे में हो उसे बहरहाल लौट कर एक दिन ख़ुदा के पास जाना है। वह जिन इंसानों के दर्मियान रहे बेजरर (अहानिकारक) बन कर रहे। वह जमीन को ख़ुदा की इबादत की जगह समझे और इसे अपनी गन्दगियों से पाक रखे। उसकी पूरी जिंदगी ख़ुदा के गिर्द घूमती हो। वह बजाहिर दुनिया में रहे मगर उसका दिल अपने रब में अटका हुआ हो। वह हमहतन (पूर्णरूपेण) अल्लाह के आगे झुक जाये। फिर यह कि दीन जिस चीज का तकाजा करे चाहे वो एक चटयल मैदान में बीवी बच्चों को ले जाकर डाल देना हो, बंदा पूरी वफादारी के साथ इसके लिए राजी हो जाये। और जब हुक्म की तामील कर चुके तो ख़ुदा से मदद की दरख़्वास्त करे। अजब नहीं कि ख़ुदा अपने बंदे की ख़ातिर चटयल बयाबान में रिज्क के चश्मे जारी कर दे।

दुनिया की रौनक चाहे किसी को दीन के नाम पर मिले, इस बात का सुबूत नहीं है कि अल्लाह ने उसको इमामत और पेशवाई के मंसब के लिए कुबूल कर लिया है। दुनिया की चीजें सिर्फ आजमाइश के लिए हैं जो सबको मिलती हैं। जबकि इमामत यह है कि किसी बंदे को कौमों के दर्मियान ख़ुदा की नुमाइंदगी के लिए चुन लिया जाये।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرٰهِمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمٰعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (١٢٧) رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ (١٢٨) رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (١٢٩)

और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे : ऐ हमारे रब, कुबूल कर हमसे, यकीनन तू ही सुनने वाला जानने वाला है। ऐ हमारे रब हमें अपना फरमांबरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फरमांबरदार उम्मत उठा और हमें हमारे इबादत के तरीके बता और हमको माफ फरमा, तू माफ करने वाला रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब और इनमें इन्हीं में का एक रसूल उठा जो इन्हें तेरी आयतें सुनाये और इन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे और इनका तज्किया (पवित्रीकरण, शुद्धीकरण) करे। बेशक तू जबरदस्त है हिक्मत वाला है। (127-129)

अल्लाह का यह फैसला था कि वह हिजाज (अरब) को इस्लाम की दावत का आलमी मर्कज बनाये। इस मर्कज के कयाम और इंतिजाम के लिए हजरत इब्राहीम और उनकी औलाद को चुना गया। बैतुल्लाह की तामीर के वक्त इब्राहीम (अलैहि०) और इस्माईल (अलैहि०) की जबान से जो कलिमात निकल रहे थे वह एक एतबार से दुआ थे और दूसरे एतबार से वह दो रूहों का अपने आप को अल्लाह के मंसूबे में दे देने का एलान था। ऐसी दुआ ख़ुद मतलूबे इलाही होती है। चुनांचे वह पूरी तरह कुबूल हुई। अरब के ख़ुश्क बियाबान से इस्लाम का अबदी चश्मा फूट निकला। बनी इस्माईल के दिल अल्लाह तआला ने ख़ास तौर पर अपने दीन की ख़िदमत के लिए नर्म कर दिये। उनके अंदर से एक ताकतवर इस्लामी दावत बरपा हुई। इनके जरिये से अल्लाह ने अपने बंदों को वह तरीके बताये जिनसे वह ख़ुश होता है और अपनी रहमत के साथ उनकी तरफ मुतवज्जह होता है। फिर उन्हीं के अंदर से उस आख़िरी रसूल की बेअसत हुई जिसने तारीख़ में पहली बार यह किया कि कारे नुबुव्वत को एक मुकम्मल तारीख़ी नमूने की सूरत में कायम कर दिया।

नबी का पहला काम आयतों की तिलावत है। आयत के मअना निशानी के हैं। यानी वह चीज जो किसी चीज के ऊपर दलील बने। इंसान की फित्रत में और बाहर की दुनिया में अल्लाह तआला ने अपनी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) की बेशुमार निशानियां रख दी हैं। ये इशारों की सूरत में हैं। पैग़म्बर इन इशारों को खोलता है। वह आदमी को वह निगाह देता है जिससे वह हर चीज में अपने रब का जलवा देखने लगे। किताब से मुराद कुरआन है। नबी का दूसरा काम यह है कि वह अल्लाह की 'वही' (ईश्वरीयवाणी) का वाहक बनता है और उसे ख़ुदा से लेकर इंसानों तक

पहुंचाता है। 'हिक्मत' का मतलब है तत्वदर्शिता, सूझबूझ। जब आदमी ख़ुदा की निशानियों को देखने की नजर पैदा कर लेता है, जब वह अपने जेहन को क़ुरआन की तालीमात (शिक्षाओं) में ढाल लेता है तो उसके अंदर एक फ़िक्री (वैचारिक) रोशनी जल उठती है। वह अपने आपको हक़ीक़ते आला (परम सत्य) के हमशुऊर (समचेतन) बना लेता है। वह हर मामले में उस सही फ़ैसले तक पहुंच जाता है जो अल्लाह तआला को मत्लूब (अपेक्षित) है। 'तज्किया' का मतलब है किसी चीज को प्रतिकूल तत्वों से शुद्ध कर देना ताकि वह अनुकूल वातावरण में अपनी स्वाभाविक उत्कृष्टता तक पहुंच सके। नबी की आख़िरी कोशिश यह होती है कि ऐसे इंसान तैयार हों जिनके सीने अल्लाह की अक़ीदत (श्रद्धा) के सिवा हर अक़ीदत से ख़ाली हों। ऐसी रूहें वजूद में आएं जो नफ़्सियाती पेचीदगियों से आजाद हों। ऐसे अफ़राद पैदा हों जो कायनात से वह रब्बानी रिज़्क़ पा सकें जो अल्लाह ने अपने मोमिन बंदों के लिए रख दिया है।

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي
الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ
اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِىَّ اِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ۭ
قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰــهًا وَّاحِدًا ښ
وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ
وَلَا تُسْــَٔــلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसंद न करे मगर वह जिसने अपने आपको अहमक़ (मूर्ख) बना लिया हो। हालांकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आख़िरत में वह स्वालेहीन (सत्यवादी लोगों) में से होगा। जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको हवाले कर दो तो उसने कहा : मैंने अपने आपको सारे जहान के रब के हवाले किया। और इसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी औलाद को और इसी की नसीहम की याक़ूब ने अपनी औलाद को। ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है। पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए। क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का वक्त आया। जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। उन्होंने कहा : हम उसी ख़ुदा की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके बुज़ुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ करते आए

हैं। वही एक माबूद है और हम उसके फ़रमांबरदार हैं। यह एक जमाअत थी जो गुज़र गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (130-134)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की दावत ऐन वही थी जो हजरत इब्राहीम (अलैहि०) की दावत थी। मगर यहूद जो इब्राहीम (अलैहि०) का पैरो होने पर फ़ख़्र करते थे, आपकी दावत के सबसे बड़े मुख़ालिफ बन गए। इसकी वजह यह थी कि पैगम्बरे अरबी (सल्ल०) जिस इब्राहीमी दीन की तरफ लोगों को बुलाते थे वह 'इस्लाम' था। यानी अल्लाह के लिए कामिल हवालगी और सुपुर्दगी (पूर्ण समर्पण)। क़ुरआन के मुताबिक यही इब्राहीम (अलैहि०) का दीन था और अपनी औलाद को उन्होंने इसी की वसीयत की। इसके विपरीत यहूद ने इब्राहीम (अलैहि०) की तरफ जो दीन मंसूब कर रखा था उसमें हवालगी और सुपुर्दगी (पूर्ण समर्पण) का कोई सवाल नहीं था। इसमें आजादाना जिंदगी गुजारते हुए महज घटिया परिकल्पनाओं के तहत जन्नत की जमानत हासिल हो जाती थी। मुहम्मद (सल्ल०) के लाए हुए दीन में निजात का दारोमदार तमामतर अमल पर था। जबकि यहूद ने 'अल्लाह के प्रिय बंदों' की जमाअत से वाबस्तगी और अक़ीदत को नजात के लिए काफी समझ लिया था। मुहम्मद (सल्ल०) के नजदीक दीन आसमानी हिदायत का नाम था और यहूद के नजदीक महज एक गिरोही मज्मूअे का नाम था जो नस्ली रिवायतों और कौमी परिकल्पनाओं के तहत एक ख़ास सूरत में बन गया था।

माजी (अतीत) या हाल के बुज़ुर्गों से अपने को मंसूब करके यह इत्मीनान हासिल होता है कि हमारा अंजाम भी इन्हीं के साथ होगा। हमारे अमल की कमी इनके अमल की ज्यादती से पूरी हो जाएगी। यहूद इस ख़ुशफ़हमी को यहां तक ले गए कि उन्होंने 'नजाते मुतावारिस' (पैतृक मुक्ति) का अक़ीदा गढ़ लिया। इन्होंने अपनी तमाम उम्मीदें बुज़ुर्गों की पवित्रता पर क़ायम कर लीं। मगर यह नफ़्सियाती फ़रेब के सिवा कुछ नहीं। हर एक के आगे वही आएगा जो उसने किया। एक से न दूसरे के जुर्मों की पूछ होगी और न एक को दूसरे की नेकियों में से कुछ हिस्सा मिलेगा। हर एक अपने किए के मुताबिक अल्लाह के यहां बदला पाएगा। 'तुम न मरना मगर इस्लाम पर' यानी अपने आपको अल्लाह के हवाले करने में रुकावटें आएंगी। तुम्हारी तमन्नाओं की इमारत गिरेगी, फिर भी तुम आख़िरी वक्त तक इस पर क़ायम रहना।

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ۭ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى
اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى
وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ لَهٗ

مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنتُم بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا
هُمْ فِي شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾ صِبْغَةَ اللَّهِ ۖ وَ
مَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ
رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾
أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ
كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ قُلْ أَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن
كَتَمَ شَهَادَةً عِندَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ
قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ
عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

और कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे। कहो कि नहीं, बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो अल्लाह की तरफ यकसू (एकाग्रचित्त) था और वह शरीक करने वालों में न था। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर ईमान लाए जो हमारी तरफ उतारी गई है। और उस पर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब और उसकी औलाद पर उतारी गई और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब नबियों को उनके रब की तरफ से। हम इनमें से किसी के दर्मियान फ़र्क नहीं करते और हम अल्लाह ही के फरमांबरदार हैं। फिर अगर वे ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो बेशक वे राह पा गए और अगर वे फिर जाएं तो अब वे जिद पर हैं। पस तुम्हारी तरफ से अल्लाह इनके लिए काफी है और वह सुनने वाला जानने वाला है। कहो हमने लिया अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। कहो क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो। हालांकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम ख़ालिस उसके लिए हैं। क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उसकी औलाद सब यहूदी या ईसाई थे। कहो कि तुम ज्यादा जानते हो या अल्लाह। और उससे बड़ा जालिम और कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो अल्लाह की तरफ से उसके पास आई हुई है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (135-141)

मुहम्मद (सल्ल०) जिस दीन की तरफ बुलाते थे वह वही इब्राहीमी दीन था जिससे यहूद और ईसाई अपने को मंसूब किए हुए थे। फिर वे आपके विरोधी क्यों हो गए। वजह यह थी कि मुहम्मद (सल्ल०) की दावत के मुताबिक दीन यह था कि आदमी अपनी जिंदगी को अल्लाह के रंग में रंग ले, वह हर तरफ से यकसू होकर अल्लाह वाला बन जाए। इसके विपरीत यहूद के यहां दीन बस एक कौमी फ़ख़्र के निशान के तौर पर बाकी रह गया था। मुहम्मद (सल्ल०) की दावत उनकी फ़ख़्र की नफ्सियात पर जद पड़ती थी, इसलिए वे आपके दुश्मन बन गए।

जो लोग गिरोही फजीलत की नफ्सियात में मुब्तला हों, वे अपने से बाहर किसी सदाकत (सच्चाई) को मानने को तैयार नहीं होते। वे अपने गिरोह के ख़ुदा के पैग़म्बरों को तो मानेंगे मगर उसी ख़ुदा का एक पैग़म्बर उनके गिरोह से बाहर आए तो वे इसका इंकार कर देंगे। दीन के नाम पर वे जिस चीज से वाकिफ हैं वह सिर्फ गिरोहपरस्ती है। इसलिए वही शख़्सियतें उन्हें शख़्सियतें नजर आती हैं जो उनके अपने गिरोह से तअल्लुक रखती हों। मगर जिस शख़्स के लिए दीन ख़ुदापरस्ती का नाम हो वह ख़ुदा की तरफ से आने वाली हर आवाज को पहचान लेगा और उस पर लब्बैक कहेगा। यहूद के उलमा (विद्वानों) के लिए यह समझना मुश्किल न था कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। और उनकी दावत (आह्वान) सच्ची ख़ुदापरस्ती की दावत है। मगर अपनी बड़ाई को कायम रखने की ख़ातिर इन्होंने लोगों के सामने एक ऐसी हकीकत का एलान नहीं किया जिसका एलान करना उनके ऊपर ख़ुदा की तरफ से फर्ज किया गया था।

'पिछले लोगों को उनकी कमाई का बदला मिलेगा और अगले लोगों को उनकी कमाई का।' इसका मतलब यह है कि हक (सत्य) के मामले में विरासत नहीं। यहूद इस ग़लतफ़हमी में मुब्तला थे कि उनके पिछले बुजुर्गों की नेकियों का सवाब उनके बाद के लोगों को भी पहुंचता है। इसी तरह ईसाइयों ने यह समझ लिया कि गुनाह पिछली नस्ल से अगली नस्ल को विरासतन मुंतकिल होता है। मगर इस तरह के अकीदे बिल्कुल निराधार हैं। ख़ुदा के यहां हर आदमी को जो कुछ मिलेगा, अपने जाती अमल की बुनियाद पर मिलेगा न कि किसी दूसरे के अमल की बुनियाद पर।

'अगर वे इस तरह ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो वे राहयाब हो गए।' गोया सहाबा किराम (मुहम्मद सल्ल० के साथी) अपने जमाने में जिस ढंग पर ईमान लाए थे वही वह ईमान है जो अल्लाह के यहां असलन मोतबर है। सहाबा किराम के जमाने में सूरतेहाल यह थी कि एक तरफ पहले के नबी थे जिनकी हैसियत ऐतिहासिक तौर पर प्रमाणित हो चुकी थी, दूसरी तरफ मुहम्मद (सल्ल०) थे जो अभी अपने इतिहास के प्रारंभ में थे। आपकी जात के गिर्द अभी तक तारीख़ी अज्मतें जमा नहीं हुई थीं। इसके बावजूद उन्होंने आपको पहचाना और आप पर ईमान लाए। गोया अल्लाह के नजदीक हक का वह एतराफ (स्वीकार) मोतबर है जबकि आदमी ने हक को मुजर्रद (प्रत्यक्षशः) सतह पर देख कर उसे माना हो। हक जब कौमी विरासत बन जाए या तारीख़ी अमल के नतीजे में इसके गिर्द अज्मत के मीनार खड़े हो चुके हों तो हक को मानना, हक को मानना नहीं होता बल्कि ऐसी चीज को मानना होता है जो कौमी फ़ख़्र और तारीख़ी तकाज़ा बन चुकी हो।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ۭ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۭ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۭ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ۭ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

अब बेवकूफ़ लोग कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज ने उनके किबले से फेर दिया। कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। और इस तरह हमने तुम्हें बीच की उम्मत बना दिया ताकि तुम हो बताने वाले लोगों पर और रसूल हो तुम पर बताने वाला। और जिस किबले पर तुम थे, हमने उसे सिर्फ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उससे उल्टे पांव फिर जाता है। और बेशक यह बात भारी है मगर उन लोगों पर जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को जाये (विनष्ट) कर दे। बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफ़क्त (स्नेह) करने वाला महरबान है। (142-43)

किबले का तअल्लुक़ मजाहिरे इबादत (इबादत के प्रतीकों) से है न कि हक़ीक़ते इबादत से। किबले का अस्ल मक्सद इबादत की तंजीम के लिए एक सामान्य रुख़ का निर्धारण करना है। हर सम्त (दिशा) अल्लाह की सम्त है। वह अपने बंदों के लिए जो सम्त भी मुकर्रर कर दे वही उसकी पसंदीदा इबादती सम्त होगी, चाहे वह मशरिक की तरफ हो या मग़रिब की तरफ। मगर लंबी मुद्दत तक बैतुल मक्दिस की तरफ रुख़ करके इबादत करने की वजह से किबल-ए-अव्वल को तक़द्दुस (पवित्रता) हासिल हो गया था। अतः सन् 2 हिजरी में जब किबले की तब्दीली का एलान हुआ तो बहुत से लोगों के लिए अपने जेहन को उसके मुताबिक बनाना मुश्किल हो गया। यहूद ने इसे बहाना बनाकर आपके (सल्ल०) ख़िलाफ तरह-तरह की बातें फैलाना शुरू कर दीं। बैतुल मक्दिस हमेशा से नबियों का किबला रहा है। फिर इसका विरोध क्यों, इससे जाहिर होता है कि यह सारी तहरीक यहूद की जिद में चलाई जा रही है। कोई कहता कि यह रिसालत के दावेदार ख़ुद अपने मिशन के बारे में संशय और असमंजस में हैं। कभी काबे की तरफ रुख़ करके इबादत करने को कहते हैं और कभी बैतुल मक्दिस की तरफ। किसी ने कहा : अगर काबा ही अस्ल किबला है तो इसका मतलब यह है कि इससे पहले जो मुसलमान बैतुल मक्दिस की तरफ रुख़ करके नमाज पढ़ते रहे उनकी नमाजें बेकार

गईं, वग़ैरह। मगर जो सच्चे ख़ुदापरस्त थे जो मजाहिर (प्रतीकों) में अटके हुए नहीं थे, उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि अस्ल चीज किबले की सम्त नहीं अस्ल चीज ख़ुदा का हुक्म है। अल्लाह की तरफ से जिस वक्त जो हुक्म आ जाए वही उस वक्त का किबला होगा। रिवायतों में आता है कि हिजरत के तकरीबन 17 महीने बाद जब किबले की तब्दीली का हुक्म आया तो अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथियों की एक जमाअत के साथ मदीना में नमाज अदा कर रहे थे। हुक्म मालूम होते ही आपने और मुसलमानों ने ऐन हालते नमाज में अपना रुख़ बैतुल मक्दिस से काबा की तरफ कर लिया। यानी शुमाल (उत्तर) से जुनूब (दक्षिण) की तरफ।

किबले की तब्दीली एक अलामत थी जिसका मतलब यह था कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को इमामत (नेतृत्व) से माजूल करके उम्मते मुहम्मदी को उसकी जगह मुकर्रर कर दिया है। अब कियामत तक बैतुल मक्दिस के बजाए काबा ख़ुदा के दीन की दावत और ख़ुदापरस्तों की आपसी एकता का मर्कज होगा। 'वस्त' का अर्थ 'मध्य' (बीच) है। इसका मतलब यह है कि मुसलमान अल्लाह के पैग़ाम को उसके बंदों तक पहुंचाने के लिए दर्मियानी वसीला हैं। अल्लाह का पैग़ाम रसूल के जरिए उन्हें पहुंचा है। अब इस पैग़ाम को इन्हें कियामत तक तमाम कौमों तक पहुंचाते रहना है। इसी पर दुनिया में भी उनका मुस्तकबिल (भविष्य) निर्भर है और इसी पर आख़िरत भी निर्भर है।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۭ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝

हम तुम्हारे मुंह का बार-बार आसमान की तरफ उठना देख रहे हैं। पस हम तुम्हें उसी किबले की तरफ फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो। अब अपना रुख़ मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ फेर दो। और तुम जहां कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की तरफ करो। और अहले किताब ख़ूब जानते हैं कि यह हक है और उनके रब की जानिब से

है। और अल्लाह बेख़बर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं। और अगर तुम इन अहले किताब के सामने तमाम दलीलें पेश कर दो तब भी वे तुम्हारे किबले को नहीं मानेंगे। और न तुम उनके किबले की पैरवी कर सकते हो। और न वे ख़ुद एक-दूसरे के किबले को मानते हैं। और इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में हो जाओगे। जिन्हें हमने किताब दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। और उनमें से एक गिरोह हक को छुपा रहा है हालांकि वह उसे जानता है। हक वह है जो तेरा रब कहे। पस तुम हरगिज शक करने वालों में से न बनो। (144-147)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की सुन्नत यह थी कि जिन मामलों में अभी 'वही' (ईशवाणी) न आई हो उनमें आप पिछले नबियों के तरीके की पैरवी करते थे। इसी बुनियाद पर आपने शुरू में बैतुल मक्दिस को किबला बना लिया था जो सुलैमान (अलैहि०) के जमाने से बनी इस्राईल के पैग़म्बरों का किबला रहा है। यहूद को जब अल्लाह ने दीन की इमामत और पेशवाई से माजूल किया तो इसके बाद यह भी जरूरी हो गया कि दीन को यहूद की रिवायतों से जुदा कर दिया जाए। ताकि ख़ुदा का दीन हर एतबार से अपनी ख़ालिस शक्ल में नुमायां हो सके। इसी मस्लेहत की बुनियाद पर मुहम्मद (सल्ल०) को किबले की तब्दीली के हुक्म का इंतजार रहता था। अतः हिजरत के दूसरे साल यह हुक्म आ गया। यहूद के अंबिया जो यहूद को ख़बरदार करने आए, वे पहले ही इस इलाही फैसले के बारे में यहूद को बता चुके थे और उनके उलमा इस मामले को अच्छी तरह जानते थे। ताहम इनमें सिर्फ कुछ लोग (जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम और मिख़ीरीक रजि०) ऐसे निकले जिन्होंने आपकी तस्दीक की। और इस बात का इक़रार किया कि आपके जरिए अल्लाह ने अपने सच्चे दीन को जाहिर किया है। यहूद के न मानने की वजह महज उनकी ख़्वाहिशपरस्ती थी। वे जिन गिरोही ख़ुशख़्यालियों में जी रहे थे, उनसे वे निकलना नहीं चाहते थे। जो इंकार महज ख़्वाहिशपरस्ती की बुनियाद पर पैदा हो उसे तोड़ने में कभी कोई दलील कामयाब नहीं होती। ऐसा आदमी दलीलों के इंकार से अपने लिए वह रिज्क हासिल करने की कोशिश करता है जो उसके ख़ालिक ने सिर्फ दलीलों के एतराफ (स्वीकार) में रखा है।

अल्लाह की तरफ से जब किसी हक के हुक्म का एलान होता है तो वह ऐसी कतई दलीलों के साथ होता है कि कोई अल्लाह का बंदा इसकी सदाकत (सच्चाई) को पहचानने से आजिज न रहे। ऐसी हालत में जो लोग शुबह में पड़े वे सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि वे ख़ुदा से आशना न थे। इसलिए वे ख़ुदा की बोली को पहचान न सके। इसी तरह वे लोग जो हक के ख़िलाफ कुछ अल्फ़ाज बोल कर समझते हैं कि उन्होंने हक का एतराफ न करने के लिए मजबूत तार्किक सहारे खोज लिए हैं, बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि वे महज फर्जी सहारे थे जो उनके नफ़्स ने अपनी झूठी तस्कीन के लिए गढ़ लिए थे।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ
جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۴۸﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۹﴾
وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا
وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِىْ ۗ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِىْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ
رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ فَاذْكُرُوْنِىْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِىْ وَلَا
تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾

हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुंह करता है। पस तुम भलाइयों की तरफ दौड़ो। तुम जहां कहीं होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा। बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ करो। बेशक यह हक है, तुम्हारे रब की तरफ से है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ करो और तुम जहां भी हो अपना रुख़ को उसी की तरफ रखो ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत बाकी न रहे, सिवाए उन लोगों के जो इनमें बेइंसाफ हैं। पस तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो। और ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूं। और ताकि तुम राह पा जाओ। जिस तरह हमने तुम्हारे दर्मियान एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब की और हिकमत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ) की तालीम देता है और तुम्हें वे चीजें सिखा रहा है जिन्हें तुम नहीं जानते थे। पस तुम मुझे याद रखो मैं तुम्हें याद रखूंगा। और मेरा एहसान मानो, मेरी नाशुक्री मत करो। (148-152)

काबे को किबला मुकर्रर किया गया तो यहूदियों और ईसाइयों ने इस किस्म की बहसें छेड़ दीं कि मग़रिब (पश्चिम) की दिशा ख़ुदा की दिशा है या मशरिक (पूर्व) की दिशा। वे इस मसले को बस रुख़बंदी के मसले की हैसियत से देख रहे थे। मगर यह उनकी नासमझी थी। काबे को किबला मुकर्रर करने का मामला सादा तौर पर एक इबादती रुख़ मुकर्रर करने का मामला नहीं था, बल्कि यह एक अलामत थी कि अल्लाह के बंदों के लिए उस सबसे बड़े ख़ैर

(कल्याण) के उतरने का वक्त आ गया है जिसका फैसला बहुत पहले किया जा चुका था। यह इब्राहीम व इस्माईल (अलैहि०) की दुआ के मुताबिक मुहम्मद (सल्ल०) का ज़ुहूर (प्रकटन) है। अब वह आने वाला आ गया है जो इंसान के ऊपर अल्लाह की अबदी (चिरस्थाई, जीवंत) हिदायत का रास्ता खोले और उसकी हिदायत की नेमत को आख़िरी हद तक कामिल (पूर्ण) कर दे। जो दीन अल्लाह की तरफ से बार-बार भेजा जाता रहा मगर इंसानों की ग़फलत और सरकशी से जाये (विनष्ट) होता रहा, उसे उसकी पूरी सूरत में हमेशा के लिए महफूज़ (सुरक्षित) कर दे। ख़ुदा का दीन जो अब तक महज रिवायती अफ्साना बना हुआ था, उसे एक हकीकी वाक्या की हैसियत से इंसानी इतिहास में शामिल कर दे। वह दीन जिसका कोई मुस्तकिल नमूना कायम नहीं हो सका था, उसे एक जिंदा अमली नमूने की हैसियत से लोगों के सामने रख दे। यह इलाही हिदायत की तकमील (पूर्णता) का मामला है न कि विभिन्न दिशाओं में से कोई 'पवित्र दिशा' निर्धारित करने का।

काबे की तामीर के वक्त ही यह सुनिश्चित हो चुका था कि आख़िरी रसूल के जरिए जिस दीन का ज़ुहूर (प्रकटन) होगा उसका मर्कज काबा होगा। पिछले अंबिया मुसलसल लोगों को इसकी ख़बर देते रहे। इस तरह अल्लाह की तरफ से काबे को तमाम कौमों के लिए किबला मुकर्रर करना गोया मुहम्मद (सल्ल०) की हैसियत को साबितशुदा बनाना था। अब जो संजीदा लोग हैं उनके लिए अल्लाह का यह एलान आख़िरी हुज्जत है। और जो आख़िरत से बेख़ौफ हैं उनकी जबान को कोई भी चीज रोकने वाली साबित नहीं हो सकती। जो लोग अल्लाह से डरने वाले हैं वही हिदायत का रास्ता पाते हैं। अल्लाह को याद रखना ही किसी को इसका हकदार बनाता है कि अल्लाह उसे याद रखे। अल्लाह से ख़ौफ रखना ही इस बात की जमानत है कि अल्लाह उसे दूसरी तमाम चीजों से बेख़ौफ कर दे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۟ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

ऐ ईमान वालो, सब्र और नमाज से मदद हासिल करो। यकीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वे जिंदा हैं मगर तुम्हें ख़बर नहीं। और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से। और साबित कदम रहने वालों

को ख़ुशख़बरी दे दो जिनका हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो वे कहते हैं : हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियां हैं और रहमत है। और यही लोग हैं जो राह पर हैं। (153-157)

दीन यह है कि आदमी अपने ख़ालिक (रचयिता) को इस तरह पा ले कि उसकी याद में और उसकी शुक्रगुजारी में उसके सुबह व शाम बसर होने लगें। इस किस्म की जिंदगी ही तमाम ख़ुशियों और लज्जतों का ख़जाना है। मगर ये ख़ुशियां और लज्जतें अपनी हकीकी सूरत में सिर्फ आख़िरत में मिलेंगी। मौजूदा दुनिया को अल्लाह तआला ने इनाम के लिए नहीं बनाया बल्कि इम्तेहान के लिए बनाया है, यहां ऐसे हालात रखे गए हैं कि ख़ुदापरस्ती की राह में आदमी के लिए रुकावटें पड़ें ताकि मालूम हो कि कौन अपने ईमान के इज्हार में संजीदा है और कौन संजीदा नहीं। नफ्स के प्रेरक तत्व, बीवी-बच्चों के तकाजे, दुनिया की मस्लेहतें, शैतान के वसवसे, समाजी हालात का दबाव, ये चीजें फितने की सूरत में आदमी को घेरे रहती हैं। आदमी के लिए जरूरी हो जाता है कि वह इन फितनों को पहचाने और इनसे अपने आपको बचाते हुए जिक्र व शुक्र के तकाजे पूरा करे।

इन इम्तेहानी मुश्किलों के मुकाबले मे कामयाबी का वाहिद (एक मात्र) जरिया नमाज और सब्र है। यानी अल्लाह से लिपटना और हर किस्म की नाख़ुशगवारियों को बर्दाश्त करते हुए पक्के इरादे से हक के रास्ते पर जमे रहना। जो लोग प्रतिकूल हालात सामने आने के बावजूद न बिदकें और बजाहिर ग़ैर-अल्लाह में नफा देखते हुए अल्लाह के साथ अपने को बांधे रहें वही वे लोग हैं जो सुन्नते इलाही के मुताबिक कामयाबी की मंजिल तक पहुंचेंगे।

हक की राह में मुश्किलों और मुसीबतों का दूसरा सबब मोमिन का दावती किरदार (आह्वानपरक भूमिका) है। तब्लीग़ व दावत (आह्वान) का काम नसीहत और तंकीद (आलोचना) का काम है। और नसीहत व तंकीद हमेशा आदमी के लिए भड़काऊ चीज रही है, इनमें भी नसीहत सुनने के लिए सबसे ज्यादा हस्सास (संवेदनशील) वे लोग होते हैं जो अपने दुनिया के कारोबार को दीन के नाम पर कर रहे हैं। दाओी (आह्वानकर्ता) की जात और उसके पैग़ाम में ऐसे तमाम लोगों को अपनी हैसियत की नफी (नकार) नजर आने लगती है। दाओी का वजूद एक ऐसी तराजू बन जाता है जिस पर हर आदमी तुल रहा हो। इसका नतीजा यह होता है कि दाओी बनना भिड़ के छत्ते में हाथ डालने के समान बन जाता है। ऐसा आदमी अपने माहौल के अंदर बेजगह कर दिया जाता है। उसकी आर्थिक हैसियत तबाह हो जाती है, उसकी तरक्कियों के दरवाजे बंद हो जाते हैं। यहां तक कि उसकी जान तक ख़तरे में पड़ जाती है। मगर वही आदमी राह पर है जिसे बेराह बता कर सताया जाए। वही पाता है जो अल्लाह की राह में खोए। वही जी रहा है जो अल्लाह की राह में अपनी जान दे दे। आख़िरत की जन्नत उसी के लिए है जो अल्लाह की ख़ातिर दुनिया की जन्नत से महरूम (वंचित) हो गया हो।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿١٦٢﴾

सफा और मरवह बेशक अल्लाह की यादगारों में से हैं। पस जो शख़्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो उस पर कोई हरज नहीं कि वह इनका तवाफ (परिक्रमा) करे ओर जो कोई शौक से कुछ नेकी करे तो अल्लाह क़द्र करने वाला है, जानने वाला है। जो लोग छुपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम इसे लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और उन पर लानत करने वाले लानत करते हैं। अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इस्लाह कर ली और बयान किया तो उन्हें मैं माफ कर दूंगा और मैं हूं माफ करने वाला, महरबान। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की, फरिश्तों की और आदमियों की सबकी लानत है। उसी हाल में वे हमेशा रहेंगे। उन पर से अजाब हल्का नहीं किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी। (158-162)

हजरत इब्राहीम (अलै०) का वतन इराक था। अल्लाह के हुक्म से वह अपनी बीवी हाजरा और छोटे बच्चे इस्माईल को लाकर उस मकाम पर छोड़ गए जहां आज मक्का है। उस वक्त यहां न कोई आबादी थी और न पानी। प्यास का तकाजा हुआ तो हाजरा पानी की तलाश में निकलीं। परेशानी के आलम में वह सफा और मरवह नाम की पहाड़ियों के दर्मियान दौड़ती रहीं। सात चक्कर लगाने के बाद नाकाम लौटीं तो देखा कि उनके निवास-स्थल के पास एक चश्मा फूट निकला है। यह चश्मा बाद को जमजम के नाम से मशहूर हुआ। यह एक अलामती वाकया है जो बताता है कि अल्लाह का मामला अपने बंदों से क्या है। अल्लाह का कोई बंदा अगर अल्लाह की राह में बढ़ते हुए उस हद तक चला जाए कि उसके कदमों के नीचे रेगिस्तान और बियाबान के सिवा कुछ न रहे तो अल्लाह अपनी कुदरत से रेगिस्तान

में उसके लिए रिज्क के चश्मे जारी कर देगा। हज और उमरा में सफा और मरवाह के दर्मियान 'सऔ' का मक्सद उसी तारीख़ की याद को ताजा करना है।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की जिंदगी और तालीमात में अल्लाह की निशानियां इतनी स्पष्ट थीं कि यह समझना मुश्किल न था कि आपकी जबान पर अल्लाह का कलाम जारी हुआ है। मगर यहूदी उलमा (विद्वानों) ने आपका इकरार नहीं किया। उन्हें अंदेशा था कि अगर वे मुहम्मद (सल्ल०) को मान लें तो उनकी मजहबी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी। उनकी जमी हुई तिजारतें उजड़ जाऐंगी। अपनी कामयाबी का राज उन्होंने हक को छुपाने में समझा। हालांकि उनकी कामयाबी का राज हक के एलान में था। हक की तरफ बढ़ने में वे अपने आपको बेजमीन होता हुआ देख रहे थे। मगर वे भूल गए कि यही वह चीज है जो अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा मत्लूब है। जो बंदा हक की ख़ातिर बेजमीन हो जाए वह सबसे बड़ी जमीन को पा लेता है। यानी अल्लाह रब्बुल आलमीन की नुसरत (मदद) को।

ताहम अल्लाह की रहमत का दरवाजा आदमी के लिए हर वक्त खुला रहता है। इब्तिदाई तौर पर ग़लती करने के बाद अगर आदमी को होश आ जाए और वह पलट कर सही रवैया अपना ले, वह उस हक का एलान करे जिसे अल्लाह चाहता है कि उसका एलान किया जाए तो अल्लाह उसे माफ कर देगा। मगर जो लोग एतराफ न करने पर अड़े रहें और इसी हाल में मर जाऐं तो वे अल्लाह की रहमतों से दूर कर दिए जाऐंगे।

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बड़ा महरबान है, निहायत रहम वाला है। बेशक आसमानों और जमीन की बनावट में और रात और दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीजें लेकर समुद्र में चलती हैं और उस पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा जमीन को जिंदगी बख़्शी, और उसने जमीन में सब क़िस्म के जानवर फैला दिए। और हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो आसमान और जमीन के दर्मियान हुक्म के ताबेअ हैं, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक्ल से काम लेते हैं। (163-164)

इंसान का ख़ुदा एक ही ख़ुदा है और वही इस काबिल है कि वह इंसान की तवज्जोहात का मर्कज बने। हमारा वजूद और वह सब कुछ जो हमें जमीन पर हासिल है वह इसीलिए है कि हमारा यह ख़ुदा रहमतों और महरबानियों का ख़ज़ाना है। आदमी को चाहिए कि उसे

मअनों में अपना माबूद बनाये। वह उसी के लिए जिये और उसी के लिए मरे और अपनी तमाम उम्मीदों और तमन्नाओं को हमेशा के लिए उसी के साथ वाबस्ता कर दे। जिस तरह एक छोटा बच्चा अपना सब कुछ सिर्फ अपनी मां को समझता है, इसी तरह ख़ुदा इंसान के लिए उसका सब कुछ बन जाये।

हमारे सामने फैली हुई कायनात अल्लाह का एक अजीमुश्शान तआरुफ है। जमीन और आसमान की सूरत में एक अथाह कारख़ाने का मौजूद होना जाहिर करता है कि जरूर इसका कोई बनाने वाला है। तरह-तरह की जाहिरी भिन्नताओं और अन्तर्विरोधों के बावजूद तमाम चीजों का हर दर्जा सामंजस्य के साथ काम करना साबित करता है कि इसका ख़ालिक और मालिक सिर्फ एक है। कायनात की चीजों में नफ़ाबख़्शी की सलाहियत (क्षमता) होना गोया इस बात का एलान है कि उसकी मंसूबाबंदी कामिल शुऊर के तहत बिलइरादा की गई है। बजाहिर बेजान चीजों में क़ुदरती अमल से जान और ताज़गी का आ जाना बताता है कि कायनात में मौत महज आरजी है, यहां हर मौत के बाद लाजिमन दूसरी जिंदगी आती है। एक ही पानी और एक ही ख़ुराक से किस्म-किस्म के जीवों का अनगिनत तादाद में पाया जाना अल्लाह की बेहिसाब कुदरत का पता देता है। हवा का मुकम्मल तौर पर इंसान को अपने घेरे में लिए रहना बताता है कि इंसान पूरी तरह अपने ख़ालिक (रचयिता) के क़ब्जे में है। कायनात की तमाम चीजों का इंसानी जरूरत के मुताबिक सधा हुआ होना साबित करता है कि इंसान का ख़ालिक एक बेहद महरबान हस्ती है। वह उसकी जरूरतों का एहतेमाम उस वक्त से कर रहा होता है जबकि उसका वजूद भी नहीं होता।

कायनात में इस किस्म की निशानियां गोया मख़्लूक़ात (सृष्टि) के अंदर ख़ालिक की झलकियां हैं। वह अल्लाह की हस्ती का, उसके एक होने का, उसके तमाम सिफाते कमाल का जामेअ (परिपूर्ण) होने का इतने बड़े पैमाने पर इज्हार कर रही हैं कि कोई आंख वाला इसे देखने से महरूम न रहे और कोई अक्ल वाला इसे पाने से आजिज न हो। दलीलों को वही शख़्स पाता है जो दलीलों पर ग़ौर करता हो। वह सच्चाई को जानने के मामले में संजीदा हो। वह मस्लेहतों से ऊपर उठ कर राय क़ायम करता हो। वह जाहिरी चीजों में उलझ कर न रह गया हो बल्कि जाहिरी चीजों के पीछे छुपी हुई भीतरी हक़ीक़त को जानने का इच्छुक हो।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके बराबर ठहराते हैं। उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए। और जो ईमान वाले हैं वे सबसे ज्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं। और अगर ये जालिम उस वक्त को देख लें जबकि वे अजाब को देखेंगे कि जोर सारा का सारा अल्लाह का है और अल्लाह बड़ा सख़्त अजाब देने वाला है। जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से अलग हो जाएंगे जो इनके कहने पर चलते थे। अजाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ के रिश्ते टूट चुके होंगे। वे लोग जो पीछे चले थे कहेंगे काश हमें दुनिया की तरफ लौटना मिल जाता तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गए। इस तरह अल्लाह इनके आमाल को उन्हें हसरत बना कर दिखाएगा और वे आग से निकल नहीं सकेंगे। (165-167)

आदमी अपनी फ़ितरत और अपने हालात के लिहाज से एक ऐसी मख़्लूक़ है जो हमेशा एक वाह्य सहारा चाहता है, एक ऐसी हस्ती जो उसकी कमियों की तलाफी (क्षतिपूर्ति) करे और उसके लिए एतमाद और यकीन की बुनियाद हो। किसी को इस हैसियत से अपनी जिंदगी में शामिल करना उसे अपना माबूद बनाना है। जब आदमी किसी हस्ती को अपना माबूद बनाता है उसके बाद लाजिमी तौर पर ऐसा होता है कि आदमी के मुहब्बत और अक़ीदत (श्रद्धा) के जज्बात उसके लिए ख़ास हो जाते हैं। आदमी ऐन अपनी फ़ितरत के लिहाज से मजबूर है कि किसी से हुब्बे शदीद (अति प्रेम) करे और जिससे कोई हुब्बे शदीद करे वही उसका माबूद (पूज्य) है। मौजूदा दुनिया में चूंकि ख़ुदा नजर नहीं आता इसलिए जाहिरपरस्त इंसान आमतौर पर नजर आने वाली हस्तियों में से किसी हस्ती को वह मक़ाम दे देता है जो दरअस्ल ख़ुदा को देना चाहिए। ये हस्तियां अक्सर वे सरदार और पेशवा होते हैं जो किसी जाहिरी विशेषता के आधार पर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। आदमी की फ़ितरत की रिक्तता जो हक़ीक़त में इसलिए थी कि उसे रब्बुल आलमीन से भरा जाए वहां वह किसी सरदार या पेशवा को बिठा लेता है।

ऐसा इसलिए होता है कि किसी इंसान के गिर्द कुछ जाहिरी रौनक देख कर लोग उसे 'बड़ा' समझ लेते हैं। कोई अपने ग़ैर मामूली शख़्सी औसाफ (गुणों) से लोगों को मुतास्सिर कर लेता है। कोई किसी गद्दी पर बैठ कर सैकड़ों साल की रिवायतों (परम्पराओं) का वारिस बन जाता है। किसी के यहां इंसानों की भीड़ देख कर लोगों को ग़लतफहमी हो जाती है कि वह आम इंसानों से बुलंदतर कोई इंसान है। किसी के गिर्द रहस्यमयी कहानियों का हाला तैयार हो जाता है और समझ लिया जाता है कि वह ग़ैर-मामूली कुव्वतों का हामिल (धारक) है। मगर हक़ीक़त यह है कि ख़ुदा की इस कायनात में ख़ुदा के सिवा किसी को कोई जोर या बड़ाई हासिल नहीं। इंसान को ख़ुदा का दर्जा देने का कारोबार उसी वक़्त तक है, जब तक ख़ुदा जाहिर नहीं होता। ख़ुदा के जाहिर होते ही सूरतेहाल इतनी बदल जाएगी कि बड़े अपने छोटों से भागना चाहेंगे और छोटे अपने बड़ों से। वह वाबस्तगी (संबंध) जिस पर आदमी दुनिया में फख़्र करता था, जिससे वफ़ादारी और शेफ़्तगी (स्नेह) दिखा कर आदमी समझता था

कि उसने सबसे बड़ी चट्टान को पकड़ रखा है वह आख़िरत के दिन इस तरह बेमअना साबित होगी जैसे उसकी कोई हक़ीक़त ही न हो। आदमी अपनी गुज़री हुई ज़िंदगी को हसरत के साथ देखेगा और कुछ न कर सकेगा।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۱﴾

लोगो! ज़मीन की चीज़ों में से हलाल और सुथरी चीज़ें खाओ और शैतान के क़दमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। वह तुमको सिर्फ़ बुरे काम और बेहयाई की तलक़ीन करता है और इस बात की कि तुम अल्लाह की तरफ़ वे बाते मंसूब करो जिनके बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या उस सूरत में भी कि उनके बाप दादा न अक़्ल रखते हों और न सीधी राह जानते हों। और इन मुंकिरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के सिवा और कुछ नहीं सुनता। ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं। वे कुछ नहीं समझते। (168-171)

शिर्क क्या है, उबूदियत (दासता, भक्ति) के जज़्बात की तस्कीन के लिए ख़ुदा के सिवा कोई दूसरा मर्कज़ बना लेना। ख़ुदा इंसान की सबसे बड़ी और लाज़िमी ज़रूरत है। ख़ुदा की तलब इंसानी फ़ितरत में इस तरह बसी हुई है कि कोई शख़्स ख़ुदा के बग़ैर रह नहीं सकता। इंसान की गुमराही ख़ुदा को छोड़ना नहीं है बल्कि असली ख़ुदा की जगह किसी फ़र्ज़ी ख़ुदा को अपना ख़ुदा बना लेना है। इसलिए शरीअत में हर उस चीज़ को हराम क़रार दिया गया है जो किसी भी दर्जे में आदमी की फ़ितरी तलब को अल्लाह के सिवा किसी और तरफ़ मोड़ देने वाली हो।

बुतपरस्त क़ौमें बुतों के नाम पर जानवर छोड़ती हैं और इन जानवरों को खाना या इनसे नफ़ा उठाना हराम समझती हैं। जदीद तहज़ीब (आधुनिक सभ्यता) में भी यह रस्म 'राष्ट्रीय पक्षी' और 'राष्ट्रीय पशु' जैसी सूरतों में राइज है। इस तरह किसी चीज़ को अपने लिए हराम कर लेना महज़ एक सादा क़ानूनी मामला नहीं है बल्कि यह अल्लाह के साथ शिर्क करना है।

क्योंकि जब एक चीज़ को इस तरह हराम ठहराया जाता है तो इसकी वजह यह होती है कि किसी स्वनिर्मित आस्था की वजह से इसे पवित्र समझ लिया जाता है। यह ख़ुदा के अधिकारों में ग़ैर ख़ुदा को साझी बनाना है, यह सम्मान और पवित्रता के उन फ़ितरी जज़्बात को बांटना है जो सिर्फ़ ख़ुदा के लिए हैं और जिन्हें सिर्फ़ ख़ुदा ही के लिए होना चाहिए। शैतान इस क़िस्म के रीति-रिवाज इसलिए डालता है ताकि आदमी के अंदर छुपे हुए सम्मान और पवित्रता के जज़्बात को विभिन्न दिशाओं में बांट कर अल्लाह के साथ उसके तअल्लुक़ को कमज़ोर कर दे।

एक बार जब किसी ग़ैर अल्लाह को मुक़द्दस (पवित्र) मान लिया जाए तो इंसान की तवहमपरस्ती (अंधविश्वास) उसमें नयी-नयी बुराइयां पैदा करती रहती है। एक 'जानवर' को उन रहस्यमयी गुणों का धारक मान लिया जाता है जो सिर्फ़ ख़ुदा के लिए ख़ास हैं। इसे ख़ुदा की क़ुरबत (समीपता) हासिल करने का ज़रिया समझ लिया जाता है। उससे बरकत और काम बनने की उम्मीद की जाती है। यह चीज़ जब अगली नस्लों तक पहुंचती है तो वह इसे पूर्वजों की मुक़द्दस सुन्नत (पवित्र तरीक़ा) समझ कर इस तरह पकड़ लेती हैं कि अब इस पर किसी क़िस्म का ग़ौर व फ़िक्र मुमकिन नहीं होता। यहां तक कि वह वक़्त आता है जबकि लोग दलील की ज़बान समझने में इतने असमर्थ हो जाते हैं गोया कि उनके पास न आंख और न कान हैं जिनसे वे देखें और सुनें और न उनके पास दिमाग़ है जिससे वे किसी बात को समझें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍ ۢ بَعِيْدٍ ﴿۱۷۶﴾

ऐ ईमान वालो हमारी दी हुई पाक चीज़ों को खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो। अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सिर्फ़ मुर्दार को और ख़ून को और सुअर के गोश्त को। और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए, वह न ख़्वाहिशमंद हो और

न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। जो लोग उस चीज को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और इसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ आग भर रहे हैं। कियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही का सौदा किया और बख़्शिश के बदले अजाब का, तो कैसी सहार है उन्हें आग की। यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा मगर जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे जिद में दूर जा पड़े।(172-176)

खाने-पीने की चीजों को इस्तेमाल करते हुए जो एहसासात आदमी के अंदर उभरने चाहिएं वे शुक्र और इताअते इलाही (ईश आज्ञापालन) के एहसासात हैं। यानी यह कि 'हम अल्लाह की दी हुई चीज को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक खा रहे हैं।' यह एहसास आदमी के अंदर ख़ुदापरस्ती का जज्बा उभारता है। मगर ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तौर पर जो अकीदे (आस्था, विश्वास) बनाए जाते हैं उसमें यह नफ्सियात बदल जाती है। अब इंसान की तवज्जोह चीजों की काल्पनिक विशेषताओं की तरफ लग जाती है। जिन चीजों को पाकर अल्लाह के शुक्र का जज्बा उभरता उनसे ख़ुद इन चीजों के एहतराम और तकद्दुस (पवित्रता) का जज्बा उभरता है। आदमी मख़्लूक को ख़ालिक (रचयिता) का दर्जा दे देता है। किसी चीज के हराम होने की बुनियाद उसकी काल्पनिक पवित्रता या उसके बारे में तोहमाती अकाइद (अंधविश्वास) नहीं हैं। बल्कि इसके कारण बिल्कुल दूसरे हैं। यह कि वे चीजें नापाक हों और शरीअत ने उनकी नापाकी की तस्दीक (पुष्टि) की हो। जैसे मुर्दार, ख़ून, सुअर। या ख़ुदा के पैदा किए हुए जानवर को ख़ुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह करना आदि। मजबूरी की हालत में आदमी हराम को खा सकता है, जबकि भूख या बीमारी या हालात का कोई दबाव आदमी को इसके इस्तेमाल पर मजबूर कर दे। ताहम यह जरूरी है कि आदमी हराम चीज को रग़बत (पसंदीदगी) से न खाए और न उसे वाक़ई जरूरत से ज्यादा ले।

इस किस्म के अंधविश्वास जब अवामी मजहब बन जाएं तो उलमा (विद्वानों) का हाल यह हो जाता है कि इसके बारे में अल्लाह का हुक्म जानते हुए भी वे इसके एलान से डरने लगते हैं। क्योंकि उन्हें अंदेशा होता है कि इस तरह वे अवाम से कट जाएंगे जिनके दर्मियान मकबूलियत हासिल करके वे 'बड़े' बने हुए हैं। गुमराह अवाम से मुसालेहत (समझौता) अगरचे दुनिया में उन्हें इज़्ज़त और दौलत देती है मगर अल्लाह की नजर में ऐसे लोग बदतरीन मुजरिम हैं। हक को मस्लेहत (स्वार्थ) की ख़ातिर छुपाना उन ग़लतियों में से नहीं है जिनसे आख़िरत में अल्लाह दरगुजर फरमाए। ये वे जराइम हैं जो आदमी को अल्लाह की इनायत की नजर से महरूम कर देते हैं। इनमें भी ज्यादा बुरे वे लोग हैं जिनके सामने हक पेश किया जाए और वे एतराफ करने के बजाए उसमें बेमअना बहसें निकालने लगें। ऐसे लोगों के अंदर जिद की नफ्सियात पैदा हो जाती है और अंततः वे हक से इतना दूर हो जाते हैं कि कभी उसकी तरफ नहीं लौटते।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى
حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ
وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي
الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۭ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۭ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुंह पूर्व और पश्चिम की तरफ कर लो। बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फरिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर। और माल दे अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफिरों को और मांगने वालों को और गर्दनें छुड़ाने में। और नमाज क़ायम करे और ज़कात अदा करे और जब अहद कर लें तो उसे पूरा करें। और सब्र करने वाले सख़्ती और तकलीफ में और लड़ाई के वक्त। यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले। (177)

यहूद ने पश्चिम को अपना इबादत का किबला बनाया था और ईसाइयों ने पूर्व को। दोनों अपनी-अपनी दिशाओं को पवित्र समझते थे। दोनों को भरोसा था कि उन्होंने ख़ुदा की पवित्र दिशा को अपना क़िबला बनाकर ख़ुदा के यहां अपना दर्जा महफूज़ कर लिया है। मगर ख़ुदापरस्ती यह नहीं है कि आदमी किसी 'मुकद्दस सुतून' (पवित्र स्तंभ) को थाम ले। ख़ुदापरस्ती यह है कि आदमी ख़ुद अल्लाह के दामन को पकड़ ले। दीनी अमल की अगरचे एक जाहिरी सूरत होती है। मगर हकीक़त के एतबार से वह उस अल्लाह को पा लेता है जो जमीन और आसमान का नूर है, जो आदमी की शहरग से ज्यादा करीब है। अल्लाह के यहां जो चीज किसी को मक़बूल बनाती है वह किसी किस्म की जाहिरी चीजेंनहीं बल्कि वह अमल है जो आदमी अपने पूरे वुजूद के साथ ख़ालिस अल्लाह के लिए करता है। अल्लाह का मकबूल बंदा वह है जो अल्लाह को इस तरह पा ले कि अल्लाह उसकी पूरी हस्ती में उतर जाए। वह आदमी के शुऊर में शामिल हो जाए। वह उसकी कमाइयों का मालिक बन जाए। वह उसकी यादों में समा जाए। वह उसके किरदार पर छा जाए। आदमी अपने रब को इस तरह पकड़ ले कि सख़्ततरीन वक्तों में भी उसकी रस्सी उसके हाथ से छूटने न पाए। अल्लाह का हक उसकी सच्ची वफ़ादारी से अदा होता है न कि महज इधर या उधर रुख़ कर लेने से।

अल्लाह पर ईमान लाना यह है कि आदमी अल्लाह को अपना सब कुछ बना ले। आख़िरत के दिन पर ईमान यह है कि आदमी दुनिया के बजाए आख़िरत को जिंदगी का अस्ल मसला समझने लगे। फरिश्तों पर ईमान यह है कि वह ख़ुदा के उन कारिंदों को माने जो

ख़ुदा के हुक्म के तहत दुनिया का इंतिजाम चला रहे हैं। किताब पर ईमान यह है कि आदमी यह यकीन करे कि अल्लाह ने इंसान के लिए अपना हिदायतनामा भेजा है जिसकी उसे लाजिमन पाबंदी करनी है। पैग़म्बरों पर ईमान यह है कि अल्लाह के उन बंदों को अल्लाह का नुमाइंदा तस्लीम किया जाए जिन्हें अल्लाह ने अपना पैग़ाम पहुंचाने के लिए चुना। फिर ये ईमानियात आदमी के अंदर इतनी गहरी उतर जाएं कि वह अल्लाह की मुहब्बत और शौक में अपना माल जरूरतमंदों को दे और इंसानों को मुसीबत से छुड़ाए। नमाज क़ायम करना अल्लाह के आगे हमहतन (पूर्णरूपेण) झुक जाना है। जकात अदा करना अपने माल में ख़ुदा के मुस्तकिल (स्थाई) हिस्से का इकरार करना है। ऐसा बंदा जब कोई अहद करता है तो इसके बाद वह इससे फिरना नहीं जानता। क्योंकि वह हर अहद को ख़ुदा से किया हुआ अहद समझता है। उसे अल्लाह के ऊपर इतना भरोसा हो जाता है कि तंगी और मुसीबत हो या जंग की नौबत आ जाए, हर हाल में वह ख़ुदापरस्ती के रास्ते पर जमा रहता है। ये औसाफ (गुण) जिसके अंदर पैदा हो जाएं वही सच्चा मोमिन है। और सच्चा मोमिन अल्लाह से अंदेशा रखने वाला होता है, न कि किसी झूठे सहारे पर एतमाद करके उससे निडर हो जाने वाला।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى ۖ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنثَىٰ بِالْأُنثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ۗ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٨﴾ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧٩﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾ فَمَن بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾ فَمَنْ خَافَ مِن مُّوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨٢﴾

ऐ ईमान वालो तुम पर मक़्तूलों (मारे जाने वालों) का किसास (समान बदला) लेना फर्ज किया जाता है। आजाद के बदले आजाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले औरत। फिर जिसे उसके भाई की तरफ से कुछ माफी हो जाए तो उसे चाहिए कि मारूफ (सामान्य तरीका) की पैरवी करे और ख़ूबी के साथ उसे अदा करे। यह तुम्हारे रब की तरफ से एक आसानी और महरबानी है। अब इसके बाद भी जो शख़्स ज्यादती करे

उसके लिए दर्दनाक अजाब है। और ऐ अक्ल वालो, किसास में तुम्हारे लिए जिंदगी है ताकि तुम बचो। तुम पर फर्ज किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक्त आ जाए और वह अपने पीछे, माल छोड़ रहा हो तो वह मारूफ के मुताबिक वसीअत कर दे अपने मां-बाप के लिए और अपने रिश्तेदारों के लिए। यह जरूरी है ख़ुदा से डरने वालों के लिए। फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसे बदल डाले तो इसका गुनाह उसी पर होगा जिसने इसे बदला, यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अलबत्ता जिसे वसीयत करने वाले के बारे में यह अंदेशा हो कि उसने जानिबदारी या हक्तलफी की है और वह आपस में सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (178-182)

क़त्ल के मामले में इस्लाम में 'किसास' का उसूल मुक़र्रर किया गया है। यानी क़ातिल के साथ वही किया जाए जो उसने मक़्तूल (क़त्ल होने वाले) के साथ किया है। इस तरह एक तरफ आइंदा के लिए क़त्ल की हौसलाशिकनी (हतोत्साहन) होती है। क्योंकि अपनी जान का ख़ौफ आदमी को दूसरे की जान लेने से रोकता है और इसके नतीजे में सबकी जानें महफूज हो जाती हैं। क़ातिल के क़त्ल से पूरे समाज के लिए जिंदगी की जमानत पैदा हो जाती है। दूसरी तरफ मक्तूल के वारिसों का इंतक़ामी जज्बा ठंडा हो कर समाज में किसी नई तख़रीबी (हिंसक) कार्रवाई के इम्कान को ख़त्म कर देता है। ताहम किसास का मामला इस्लाम में क़ाबिले राज़ीनामा है। मक्तूल के वारिस चाहें तो क़ातिल को क़त्ल कर सकते हैं चाहें तो दियत (माली मुआवजा) ले सकते हैं और चाहें तो माफ कर सकते हैं। इस गुंजाइश का ख़ास मक्सद यह है कि इस्लामी समाज में एक-दूसरे को भाई समझने की फजा बाक़ी रहे, एक-दूसरे को हरीफ (प्रतिरोधी) समझने की फजा किसी हाल में पैदा न हो। साथ ही ख़ूनबहा (आर्थिक हर्जाना) के उसूल का एक ख़ास फ़ायदा यह है कि इसके जरिये से मक्तूल के वारिसों को अपने चले जाने वाले ख़ानदान के फर्द का एक माली बदल मिल जाता है।

जब कोई मर जाता है तो यह मसला भी पैदा होता है कि उसकी विरासत का क्या किया जाए। इस सिलसिले में इस्लाम का उसूल यह है कि उसकी विरासत को उसके रिश्तेदारों में मारूफ तरीके से तक़्सीम कर दिया जाए। यह गोया माल का तक़्वा है। जब मरने वालों के रिश्तेदारों तक हिस्सा ब हिस्सा उसका छोड़ा हुआ माल पहुंच जाए तो इससे समाज में यह फज़ा बनती है कि हक़ के मुताबिक जिसको जो दिया जाना चाहिए वह दिया जा चुका है। इस तरह ख़ानदान के अंदर छोड़े गये माल और जायदाद को हासिल करने के लिए आपसी विवाद पैदा नहीं होता। ख़ानदान का जो शख़्स क़ानूनी एतबार से वारिस न करार पाता हो, मगर अख़्लाक़ी एतबार से वह मुस्तहिक हो तो मरने वालो को चाहिए कि वसीयत के जरिए इस ख़ला (रिक्तता) को पुर कर दे। (यहां विरासत के बारे में मारूफ के मुताबिक [समुचित रूप से] वसीयत करने का हुक्म है। आगे सूरह निसा में हर एक के हिस्से को कानूनी तौर पर सुनिश्चित कर दिया गया है।)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾ أَيَّامًا مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى ٱلَّذِينَ يُطِيقُونَهُۥ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُۥ ۚ وَأَن تَصُومُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلْقُرْءَانُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا۟ ٱلْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا۟ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़ा फर्ज किया गया जिस तरह तुम से अगलों पर फर्ज किया गया था ताकि तुम परहेजगार बनो। गिनती के कुछ दिन। फिर जो कोई तुममें बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले। और जिनको ताकत है तो एक रोज़े का बदला एक मिस्कीन का खाना है। जो कोई मजीद (अतिरिक्त) नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है। और तुम रोजा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो। रमजान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया, हिदायत है लोगों के लिए और खुली निशानियां रास्ते की और हक व बातिल के दर्मियान फैसला करने वाला। पस तुस में से जो कोई इस महीने को पाए वह इसके रोजे रखे। और जो बीमार हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता। और इसलिए कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई करो इस पर कि उसने तुम्हें राह बताई और ताकि तुम उसके शुक्रगुजार बनो। (183-185)

रोजा एक ही वक्त में दो चीजों की तर्बियत है। एक शुक्र, दूसरे तक्वा। खाना और पीना अल्लाह की बहुत बड़ी नेमतें हैं। मगर आम हालात में आदमी को इसका अंदाजा नहीं होता। रोजे में जब वह दिन भर इन चीजों से रुका रहता है और सूरज डूबने के बाद शदीद भूख प्यास की हालत में खाना खाता है और पानी पीता है तो उस वक्त उसे मालूम होता है कि यह खाना और पानी अल्लाह की कितनी बड़ी नेमतें हैं। इस तजर्बे से उसके अंदर अपने रब के शुक्र का बेपनाह जज्बा पैदा होता है। दूसरी तरफ यही रोजा आदमी के लिए तक्वा की तर्बियत भी है। तक्वा यह है कि आदमी दुनिया की जिंदगी में ख़ुदा की मना की हुई चीजों से बचे। वह उन चीजों से रुका रहे जिनसे ख़ुदा ने रोका है। और वही करे

जिसके करने की ख़ुदा ने इजाजत दी है। रोजे में सिर्फ रात को खाना और दिन में खाना-पीना छोड़ देना गोया ख़ुदा को अपने ऊपर निगरां बनाने की मश्क है। मोमिन की पूरी जिंदगी एक क़िस्म की रोज़ेदार जिंदगी है। रमजान के महीने में वक्ती तौर पर कुछ चीजों को छुड़ाकर आदमी को तर्बियत दी जाती है कि वह सारी उम्र उन चीजों को छोड़ दे जो उसके रब को नापसंद हैं। कुरआन बंदे के ऊपर अल्लाह का इनाम है और रोजा बंदे की तरफ से इस इनाम का अमली एतराफ। रोजे के जरिए बंदा अपने आपको अल्लाह की शुक्रगुजारी के काबिल बनाता है। और यह सलाहियत पैदा करता है कि वह कुरआन के बताए हुए तरीके के मुताबिक दुनिया में तक्वे की जिंदगी गुजार सके।

रोजे से दिलों के अंदर नर्मी और शिकस्तगी (कोमलता) आती है। इस तरह रोजा आदमी के अंदर यह सलाहियत पैदा करता है कि वह उन कैफियतों को महसूस कर सके जो अल्लाह को अपने बंदों से मत्लूब हैं। रोजे की मशक्कत (श्रम) वाली तर्बियत आदमी को इस काबिल बनाती है कि अल्लाह की शुक्रगुजारी में उसका सीना तड़पे और अल्लाह के ख़ौफ से उसके अंदर कपकपी पैदा हो। जब आदमी इस नफ्सियाती हालत को पहुंचता है, उसी वक्त वह इस काबिल बनता है कि वह अल्लाह की नेमतों पर ऐसा शुक्र अदा करे जिसमें उसके दिल की धड़कनें शामिल हों। वह ऐसे तकवे का तजुर्बा करे जो उसके बदन के रोंगटे खड़े कर दे। वह अल्लाह को ऐसे बड़े की हैसियत से पाए जिसमें उसका अपना वुजूद बिल्कुल छोटा हो गया हो।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِى عَنِّى فَإِنِّى قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا۟ لِى وَلْيُؤْمِنُوا۟ بِى لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾ أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ ٱلصِّيَامِ ٱلرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَٱلْـَٰٔنَ بَٰشِرُوهُنَّ وَٱبْتَغُوا۟ مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ ٱلْخَيْطُ ٱلْأَبْيَضُ مِنَ ٱلْخَيْطِ ٱلْأَسْوَدِ مِنَ ٱلْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا۟ ٱلصِّيَامَ إِلَى ٱلَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَٰشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَٰكِفُونَ فِى ٱلْمَسَٰجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ

ٱللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾ وَلَا تَأْكُلُوٓا۟ أَمْوَٰلَكُم بَيْنَكُم بِٱلْبَٰطِلِ وَتُدْلُوا۟ بِهَآ إِلَى ٱلْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا۟ فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ بِٱلْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें तो मैं नजदीक हूं, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूं जबकि वह मुझे पुकारता है। तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर यकीन रखें ताकि वे हिदायत पाएं। तुम्हारे लिए रोजे की रात में अपनी बीवियों के पास जाना जाइज किया गया। वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से ख़ियानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम्हें माफ कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ और पियो यहां तक कि सुबह की सफेद धारी काली धारी से अलग जाहिर हो जाए। फिर पूरा करो रोजा रात तक। और जब तुम मस्जिद में एतकाफ में हो तो बीवियों से ख़लवत (संभोग) न करो। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनके नजदीक न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है ताकि वे बचें। और तुम आपस में एक-दूसरे के माल को नाहक तौर पर न खाओ और उन्हें हाकिमों तक न पहुंचाओ ताकि दूसरों के माल का कोई हिस्सा गुनाह के तौर पर खा जाओ। हालांकि तुम इसे जानते हो। (186-188)

रोजा अपनी नौइयत के एतबार से सब्र का अमल है। और सब्र, यानी हुक्मे इलाही की तामील में मुश्किलों को बर्दाश्त करना ही वह चीज है जिससे आदमी उस कल्बी (हार्दिक) हालत को पहुंचता है जो उसे ख़ुदा के करीब करे और उसकी जबान से ऐसे कलिमात निकलवाए जो कुबूलियत को पहुंचने वाले हों। अल्लाह को वही पाता है जो अपने आपको अल्लाह के हवाले करे, अल्लाह तक उसी शख़्स के अल्फाज पहुंचते हैं जिसने अपनी रूह के तारों को अल्लाह से मिला रखा हो।

शरीअत आदमी के ऊपर कोई ग़ैर फितरी पाबंदी आयद नहीं करती। रोजे में दिन के वक्त में इज्दवाजी (वैवाहिक) तअल्लुक मम्नूअ (निषिद्ध) होने के बावजूद रात के वक्त में इसकी इजाजत, इफ्तार और सहर के वक्त जानने के लिए जंतरी का पाबंद करने के बजाए आम मुशाहिदा (अवलोकन) को बुनियाद करार देना इसी किस्म की चीजें हैं। अंशों की तफ्सीलात में बंदों को गुंजाइश देते हुए अल्लाह ने सामान्य हदें स्पष्ट कर दी हैं। आदमी को चाहिए कि वह निर्धारित हदों का पूरी तरह पाबंद रहे और तफ्सीली अंशों में उस रविश को अपनाए जो तक्वा की रूह के मुताबिक है।

रोजे के हुक्म के फौरन बाद यह हुक्म कि 'नाजाइज माल न खाओ' यह बताता है कि रोजा की हकीकत क्या है। रोजा का अस्ली मक्सद आदमी के अंदर यह सलाहियत (क्षमता) पैदा करना है कि जहां ख़ुदा की तरफ से रुकने का हुक्म हो वहां आदमी रुक जाए, यहां तक कि हुक्म हो तो जाइज चीज से भी, जैसा कि रोजा में होता है। अब जो शख़्स ख़ुदा के हुक्म की बुनियाद पर हलाल कमाई तक से रुक जाए वह उसी ख़ुदा के हुक्म की बुनियाद पर हराम कमाई से क्यों न अपने आपको रोके रखेगा।

मोमिन की जिंदगी एक किस्म की रोजादार जिंदगी है। उसे सारी उम्र कुछ चीजों से 'इफ्तार' करना है और कुछ चीजों से मुस्तकिल (स्थाई) तौर पर 'रोजा' रख लेना है। रमजान

का महीना इसी की तर्बियत है। फिर रोजा की मोहतात (एहतियात भरी) जिंदगी और उसका पुरमशक्कत अमल यह सबक देता है कि अल्लाह का इबादतगुजार बंदा वह है जो तक्वा की सतह पर अल्लाह की इबादत कर रहा हो। अल्लाह को पुकारने वाला सिर्फ वह है जो कुर्बानियों की सतह पर अल्लाह की नजदीकी हासिल करे।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۭ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۭ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ
تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِھَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ
اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوْھُمْ
حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْھُمْ وَاَخْرِجُوْھُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ
الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْھُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ
فَاقْتُلُوْھُمْ ۭ كَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾
وَقٰتِلُوْھُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا
عُدْوَانَ اِلَّا عَلَي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

वे तुम से चांदों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वे औकात (समय) हैं लोगों के लिए और हज के लिए। और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से। बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेजगारी करे। और घरों में उनके दरवाजों से आओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे। और ज्यादती न करो। अल्लाह ज्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता। और कत्ल करो उन्हें जिस जगह पाओ, और निकाल दो उन्हें जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है। और फितना सख़्ततर है कत्ल से। और उनसे मस्जिदे हराम के पास न लड़ो जब तक कि वे तुमसे इसमें जंग न छेड़ें। पस अगर वे तुमसे जंग छेड़ें तो उन्हें कत्ल करो। यही सजा है इंकार करने वालों की। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और उनसे जंग करो यहां तक कि फितना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो इसके बाद सख़्ती नहीं है मगर जालिमों पर। (189-193)

चांद का घटना बढ़ना तारीख़ जानने के लिए है न कि तवहमपरस्तों के ख़्याल के मुताबिक इसलिए कि बढ़ते चांद के दिन मुबारक (शुभ) हैं और घटते चांद के दिन मंहूस। यह

आसमान पर जाहिर होने वाली कुदरती जंतरी है ताकि इसे देखकर लोग अपने मामलात और अपनी इबादतों का निज़ाम मुकर्रर करें। इसी तरह बहुत से लोग जाहिरी रस्मों को दीनदारी समझ लेते हैं। प्राचीनकालीन अरबों ने यह मान लिया था कि हज का एहराम बांधने के बाद अपने और आसमान के दर्मियान किसी चीज का हायल (बाधा) होना एहराम के आदाब के ख़िलाफ है। इस मान्यता के सबब वे ऐसा करते कि जब एहराम बांधकर घर से बाहर आ जाते तो दुबारा दरवाजे के रास्ते से घर में न जाते बल्कि दीवार के ऊपर से चढ़कर सेहन में दाख़िल होते। मगर इस किस्म के जाहिरी आदाब का नाम दीनदारी नहीं। दीनदारी यह है कि आदमी अल्लाह से डरे और जिंदगी में उसकी मुकर्रर की हुई हदों की पाबंदी करे।

मोमिन को दीन का आमिल (अमल करने वाला) बनने के साथ दीन का मुजाहिद भी बनना है। यहां जिस जिहाद का जिक्र है यह वह जिहाद है जो मुहम्मद (सल्ल०) के जमाने में पेश आया। अरब के मुशरिकीन हुज्जत पूरी होने के बावजूद रिसालत की दावत (आह्वान) से इंकार करके अपने लिए जिंदगी का हक खो चुके थे। साथ ही उन्होंने जारिहियत (आक्रमकता) का आग़ाज करके अपने ख़िलाफ फौजी कार्रवाई को दुरुस्त साबित कर दिया था। इस वजह से उसके ख़िलाफ तलवार उठाने का हुक्म हुआ। 'और उनसे लड़ो यहां तक कि फितना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए' का मतलब यह है कि अरब की सरजमीन से शिर्क (बहुदेववाद) का ख़ात्मा हो जाए और तौहीद के दीन (एकेश्वरवादी धर्म) के सिवा कोई दीन वहां बाकी न रहे। इस हुक्म के जरिए अल्लाह तआला ने अरब को तौहीद का दाइमी (स्थाई) मर्कज बना दिया।

अहले ईमान को जंग की इजाज़त सिर्फ उस वक्त है जबकि प्रतिपक्ष की तरफ से हमला शुरू हो चुका हो। दूसरे यह कि जब अहले ईमान ग़लबा (वर्चस्व) पा लें तो इसके बाद माजी (अतीत) पर किसी के लिए कोई सजा नहीं। हथियार डालते ही माजी के जराइम माफ कर दिए जाएंगे। इसके बाद सजा का पात्र सिर्फ वह व्यक्ति होगा जो आइंदा कोई काबिले सजा जुर्म करे। आम हालत में कत्ल का हुक्म और है और जंगी हालात में कत्ल का हुक्म और।

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

हुरमत (प्रतिष्ठा) वाला महीना हुरमत वाले महीने का बदला है और हुरमतों का भी किसास (समान बदला) है। पस जिसने तुम पर ज्यादती की तुम भी उस पर ज्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज्यादती की है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेजगारों के साथ है। और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और

अपने आपको हलाकत में न डालो। और काम अच्छी तरह करो। बेशक अल्लाह पसंद करता है अच्छी तरह काम करने वालों को। (194-195)

हराम महीनों (मुहर्रम, रजब, जीकअदह, जिलहिज्जह) में या हरमे मक्का की हदों में लड़ाई गुनाह है। मगर जब इस्लाम विरोधी तुम्हारे ख़िलाफ कार्रवाई करने के लिए उसकी हुरमत को तोड़ दें तो तुम को भी हक है कि किसास (समान बदला) के तौर पर उनकी हुरमत का लिहाज न करो। मगर दुश्मन के साथ दुश्मनी में तुम्हें अल्लाह से बेख़ौफ न हो जाना चाहिए। किसी हद को तोड़ने में तुम अपनी तरफ से इब्तदा न करो और न कोई ऐसा इक्दाम करो जो जरूरी हद से ज्यादा हो। अल्लाह की मदद किसी को उसी वक्त मिलती है जबकि वह इश्तेआल (उत्तेजना) के वक्त में भी अल्लाह की निर्धारित की हुई हदों का पाबंद बना रहे।

किसास और जुल्म में यह फर्क है कि किसास दूसरे पक्ष की तरफ से की हुई ज्यादती के बराबर होता है। जबकि जुल्म इन हदबंदियों से बाहर निकल जाने का नाम है। एक शख़्स को किसी से तकलीफ पहुंचे तो वह दूसरे शख़्स को उतनी ही तकलीफ पहुंचा सकता है जितनी उसे पहुंची है। इससे ज्यादा की इजाज़त नहीं। नसीहत बुरी लगे तो गाली और मजाक से उसका जवाब देना या जबान व कलम की शिकायत के बदले में आक्रमकता दिखाना तक्वा के सरासर ख़िलाफ है। इसी तरह माली नुक्सान के बदले जानी नुक्सान, मामूली चोट के बदले ज्यादा बड़ी चोट, एक कत्ल के बदले बहुत से आदमियों का कत्ल, इस किस्म की तमाम चीजें जुल्म की परिभाषा में आती हैं। मुसलमान के लिए बराबर का बदला (किसास) जाइज है। मगर जुल्म किसी हाल में जाइज नहीं।

अल्लाह की राह में जद्दोजेहद सबसे ज्यादा जिस चीज का तकाजा करती है वह माल है। और माल की कुर्बानी बिला शुबह आदमी के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल चीज है। इसलिए हुक्म दिया कि अल्लाह के काम को अपना काम समझ कर उसकी राह में ख़ूब माल ख़र्च करो और इस काम को उसकी बेहतर से बेहतर सूरत में पूरा करो। 'अपने आपको हलाकत में न डालो' से मुराद बुख़्ल (कंजूसी) है यानी ऐसा न हो कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च न करो, क्योंकि ख़र्च में दिल तंग होना दुनिया व आख़िरत की बर्बादी है। आदमी माल ख़र्च कर देने को हलाकत समझता है मगर हकीकत यह है कि माल को अल्लाह की राह में ख़र्च न करना हलाकत है। आदमी के पास जो कुछ है अगर वह उसे अल्लाह के हवाले न करे तो अल्लाह के पास जो कुछ है वह क्यों उसे आदमी के हवाले करेगा।

आदमी अपनी दौलत का इस्तेमाल सिर्फ यह समझता है कि इसको अपने आप पर या अपने बीवी बच्चों पर ख़र्च करे। मगर इस जेहन को कुरआन हलाकत बताता है। इसके बजाए दौलत का सही इस्तेमाल यह है कि इसको ज्यादा से ज्यादा दीन की जरूरतों में ख़र्च किया जाए। माल को सिर्फ अपने जाती हौसलों की पूर्ति में ख़र्च करना फर्द और मुआशिरा (व्याक्ति और समाज) को ख़ुदा के ग़जब का मुस्तहिक बनाता है इसके बरअक्स जब माल को दीन की राह में ख़र्च किया जाए तो फर्द और जमाअत दोनों अल्लाह की रहमतों और नुसरतों के मुस्तहिक बनते हैं। ख़र्च करने वाले को इसका फायदा बेशुमार सूरतों में दुनिया में भी हासिल होता है और आख़िरत में भी।

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए। फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो कुर्बानी का जानवर मयस्सर हो वह पेश कर दो और अपने सरों को न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए। तुममें से जो बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ हो तो वह अर्थदण्ड फ़िद्या दे रोज़ा या सदक़ा या क़ुर्बानी का। जब अम्न की हालत हो और कोई हज तक उमरा का फायदा हासिल करना चाहे तो वह कुर्बानी पेश करे जो उसे मयस्सर आए। फिर जिसे मयस्सर न आए तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोजे रखे और सात दिन के रोजे जबकि तुम घरों को लौटो। ये पूरे दस हुए। यह उस शख़्स के लिए है जिसका ख़ानदान मस्जिदे हराम के पास आबाद न हो। अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अजाब देने वाला है। हज के निर्धारित महीने हैं। पस जिसने हज का अज़्म कर लिया तो फिर उसे हज के दौरान न कोई फहेश (अश्लील) बात करनी चाहिए और न गुनाह की और न लड़ाई झगड़े की। और जो नेक काम तुम करोगे अल्लाह उसे जान लेगा। और तुम जादेराह (यात्रा-सामग्री) लो। बेहतरीन जादेराह तक़्वा का जादेराह है। और ऐ अक्ल वालो मुझ से डरो। (196-197)

जाहिलियत के जमाने के अरबों में भी हज का रिवाज था। मगर वह उनके लिए गोया एक कौमी रस्म या तिजारती मेला था न कि एक अल्लाह की इबादत। मगर हज व उमरा हो या कोई और इबादत, उनकी अस्ल कीमत उसी वक्त है जबकि वह ख़ालिसतन अल्लाह के लिए अदा की जाएं। जो शख़्स अपनी रोजाना जिंदगी में अल्लाह का परस्तार बना हुआ हो जब वह अल्लाह की इबादत के लिए उठता है तो उसकी सारी नफ्सियात सिमट कर उसी के ऊपर

लग जाती है। वह एक ऐसी इबादत का तजर्बा करता है जो जाहिरी तौर पर देखने में तो आदाब व मनासिक (रस्मों) का एक मज्मूआ होती है, मगर अपनी अंदरूनी रूह के एतबार से वह एक ऐसी हस्ती का अपने आपको अल्लाह के आगे डाल देना होता है जो अल्लाह से डरता हो और आख़िरत की पकड़ का अंदेशा जिसकी जिंदगी का सबसे बड़ा मसला बना हुआ हो।

मोमिन वह है जो शहवत (वासना) के लिए जीने के बजाए मक्सद के लिए जीने लगे। वह अपने मामलात में ख़ुदा की नाफरमानी से बचने वाला हो और इज्तिमाई (सामूहिक) जिंदगी में आपस के लड़ाई-झगड़े से बचा रहे। हज का सफर इन अख़्लाकी औसाफ की तर्बियत के लिए बहुत मौजूं (उपयुक्त) है। इसलिए इसमें ख़ासतौर पर इनकी ताकीद की गई है। इसी तरह हज में सफर का पहलू लोगों को सफर के सामान के एहतेमाम में लगा देता है। मगर अल्लाह के मुसाफिर की सबसे बड़ी जादेराह (यात्रा सामग्री) तक़्वा है। एक शख़्स सफर के सामान के पूरे एहतेमाम के साथ निकले, दूसरा शख़्स अल्लाह पर एतमाद (भरोसा) का सरमाया (पूंजी) लेकर निकले तो सफर के दौरान दोनों की नफ्सियात एक जैसी नहीं हो सकतीं।

'ऐ अक्ल वालो मेरा तक़्वा इख़्तियार करो।' से मालूम हुआ कि तक़्वा एक ऐसी चीज है जिसका तअल्लुक़ अक्ल से है। तक़्वा किसी जाहिरी स्वरूप का नाम नहीं है, यह अक्ल या शुऊर की एक हालत है। इंसान जब शुऊर की सतह पर अपने रब को पा लेता है तो उसका जेहन इसके बाद ख़ुदा के जलाल व जमाल (प्रताप एवं सौंदर्य) से भर जाता है। उस वक्त रूह की लतीफ सतह पर जो कैफियतें पैदा होती हैं इन्हीं का नाम तक़्वा है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٩﴾ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज्ल भी तलाश करो। फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस हो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नजदीक। और उसे याद करो जिस तरह अल्लाह ने बताया है। इससे पहले यकीनन तुम राह भटके हुए लोगों में थे। फिर तवाफ को चलो जहां से सब लोग चलें और अल्लाह से माफी मांगों। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि इससे भी ज्यादा। पस कोई आदमी कहता है : ऐ हमारे रब हमें इसी दुनिया में दे दे और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। और कोई आदमी है जो कहता है कि हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अजाब से बचा। इन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। और अल्लाह को याद करो मुकर्रर दिनों में। फिर जो शख़्स जल्दी करके दो दिन में मक्का वापस आ जाए उस पर कोई गुनाह नहीं और जो शख़्स ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे। और तुम अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे। (198-203)

अस्ल चीज अल्लाह का तकवा है। किसी के अंदर यह मत्लूब (अपेक्षित) हालत मौजूद हो तो इसके बाद हज के दौरान आर्थिक जरूरत के तहत उसका कुछ कारोबार कर लेना या कुछ हज की रस्मों की अदायगी में किसी का आगे या किसी का पीछे हो जाना कोई हर्ज नहीं पैदा करता। हज के दौरान जो फिजा जारी रहनी चाहिए वह है अल्लाह का ख़ौफ, अल्लाह की याद, अल्लाह की नेमतों का शुक्र, अल्लाह के लिए हवालगी (समर्पण) का जज्बा। हज के दौरान कोई ऐसा फेअल (कृत्य) नहीं होना चाहिए जो इन कैफियतों के ख़िलाफ हो। मसलन किसी शख़्स या गिरोह के लिए इबादत की अदायगी में इम्तियाज (विशिष्टता), पूर्वजों के कारनामे बयान करना जो गोया परोक्ष रूप से अपने को नुमायां करने की एक सूरत है। ये चीजें एक ऐसी इबादत के साथ बेजोड़ हैं जो यह बताती हो कि तमाम इंसान समान हैं, जिसमें इस बात का एलान किया जाता हो कि तमाम बड़ाई सिर्फ अल्लाह के लिए है। हज के जमाने में भी अगर आदमी इन चीजों की तर्बियत हासिल न करे तो जिंदगी के बाकी लम्हात में वह किस तरह इन पर कायम हो सकेगा।

दुआएं, ख़ास तौर पर हज की दुआएं, आदमी की अंदरूनी हालत का इज्हार हैं। कोई शख़्स आख़िरत की अज्मतों को अपने दिल में लिए हुए जी रहा हो तो हज के मकामात पर उसके दिल से आख़िरत वाली दुआएं उबलेंगी। इसके बरअक्स जो शख़्स दुनिया की चीजों में अपना दिल लगाए हुए हो, वह हज के मौके पर अपने ख़ुदा से सबसे ज्यादा जो चीज मांगेगा वह वही होगी जिसकी तड़प लिए हुए वह वहां पहुंचा था। और सबसे बेहतर दुआ तो यह है कि आदमी अपने रब से कहे कि ख़ुदाया दुनिया में तेरे नजदीक जो चीज बेहतर हो वह मुझे दुनिया में दे दे और आख़िरत में तेरे नजदीक जो चीज बेहतर हो वह मुझे आख़िरत में दे दे और अपने एताब (प्रकोप) से मुझको बचा ले।

'तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे' यह हज का सबसे बड़ा सबक है जो अरफ़ात के मैदान में दुनिया भर के लाखो इंसानों को एक ही वक्त जमा करके दिया जाता है। अरफ़ात का इज्तिमा कयामत के इज्तिमा की एक तम्सील है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

और लोगों में से कोई है कि उसकी बात दुनिया की जिंदगी में तुम्हें ख़ुश लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है। हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि जमीन में फसाद फैलाए और खेतियों और जानवरों को हलाक करे। हालांकि अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो वकार (प्रतिष्ठा) उसे गुनाह पर जमा देता है। पस ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और लोगों में कोई है कि अल्लाह की ख़ुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत महरबान है। (204-207)

जो शख़्स मस्लेहत को अपना दीन बनाए उसकी बातें हमेशा लोगों को बहुत भली मालूम होती हैं। क्योंकि वह लोगों की पसंद को देखकर उसके मुताबिक बोलता है न कि यह देखकर कि हक क्या है और नाहक क्या। उसके सामने कोई मुस्तकिल मेयार नहीं होता। इसलिए वह मुख़ातब (संबोधित वर्ग) की रिआयत से हर वह अंदाज अपना लेता है जो मुख़ातब पर असर डालने वाला हो। हक का वफादार न होने की वजह से उसके लिए यह मुश्किल नहीं रहता कि दिल में कोई हकीकी जज्बा न होते हुए भी वह जबान से ख़ूबसूरत बातें करे।

ऐसा क्यों होता है कि बात के स्टेज पर वह मुस्लेह (सुधारक) के रूप में नजर आता है और अमल के मैदान में उसकी सरगर्मियां फसाद का सबब बन जाती हैं। इसकी वजह उसका तजाद (अन्तर्विरोध) है। अमली नताइज हमेशा अमल से पैदा होते हैं न कि अल्फ़ाज से। वह अगरचे जबान से हकपरस्ती के अल्फाज बोलता है, मगर अमल के एतबार से वह जिस सतह पर होता है वह सिर्फ जाती मफाद है। यह चीज उसके कौल व अमल में फर्क पैदा कर देती है। बात के मकाम से हटकर जब वह अमल के मकाम पर आता है तो उसके मफाद (हित) का तकाजा खींचकर उसे ऐसी सरगर्मियों की तरफ ले जाता है जो सिर्फ तख़रीब (विध्वंस) पैदा

करने वाली हैं। यहां वह अपने जाती फायदे की ख़ातिर दूसरों का इस्तहसाल (शोषण) करता है। वह अवामी मकबूलियत हासिल करने के लिए लोगों को जज्बाती बातों की शराब पिलाता है। वह अपनी क़यादत क़ायम करने की ख़ातिर पूरी कौम को दांव पर लगा देता है। वह तामीर (रचनात्मक कार्यों) की सियासत करने के बजाए तख़रीब (विध्वंस) की सियासत चलाता है। क्योंकि इस तरह ज्यादा आसानी से अवाम की भीड़ अपने गिर्द इकट्ठा की जा सकती है। ये वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया के मफ़ाद और मस्लेहत के साथ अपनी जिंदगी का सौदा किया। हक वाजेह हो जाने के बाद भी वे इसे कुबूल करने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि इसमें उन्हें वकार (प्रतिष्ठा) का बुत टूटता हुआ नजर आता है। जाहिरी तौर पर नर्म बातों के पीछे उनकी घमंड भरी नफ्सियात उन्हें एक ऐसे हक के दाओ के सामने झुकने से रोक देती है जिसे वे अपने से छोटा समझते हैं।

दूसरे लोग वे हैं जो अल्लाह की रिजा (ख़ुशी) के साथ अपनी जिंदगी का सौदा करते हैं। ऐसा शख़्स अपनी आदतों (व्यवहार) और ख़्यालात को छोड़कर ख़ुदा की बातों को कुबूल करता है। वह अपने माल को ख़ुदा के हवाले करके इसके बदल बे-माल बन जाने को गवारा कर लेता है। वह रिवाजी दीन को रद्द करके ख़ुदा के बेआमेज (विशुद्ध) दीन को लेता है चाहे इसकी वजह से उसे ग़ैर-मक्बूलियत पर राजी होना पड़े। वह मस्लेहतपरस्ती के बजाए हक के एलान को अपना शेवा (कार्य नियम) बनाता है। अगरचे इसके नतीजे में वह लोगों के एताब (प्रकोप) का शिकार होता रहे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ سَلْ بَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰھُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। अगर तुम फिसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाजेह दलीलें आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। क्या लोग इस इंतजार में हैं कि अल्लाह बादल के सायबानों

में आए और फरिश्ते भी आ जाएं और मामले का फैसला कर दिया जाए और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ फेरे जाते हैं। बनी इस्राईल से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियां दीं। और जो शख़्स अल्लाह की नेमत को बदल डाले जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह यकीनन सख़्त सजा देने वाला है। ख़ुशनुमा कर दी गई है दुनिया की जिंदगी उन लोगों की नजर में जो मुंकिर हैं और वे ईमान वालों पर हंसते हैं, हालांकि जो परहेजगार हैं वे कियामत के दिन उनके मुकाबले में ऊंचे होंगे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोजी देता है। (208-212)

इस्लाम को अपनाने की एक सूरत यह है कि तहफ्फुज़ात और मस्लेहतों का लिहाज किए बग़ैर इसे अपनाया जाए। इस्लाम जिस चीज को करने को कहे उसे किया जाए। और जिस चीज को छोड़ने को कहे उसे छोड़ दिया जाए। यह किसी आदमी का पूरे का पूरा इस्लाम में दाख़िल होना है। दूसरी सूरत यह है कि आदमी इस्लाम को उसी हद तक अपनाए जिस हद तक इस्लाम उसकी जिंदगी से टकराता न हो। वह उस इस्लाम को ले ले जो उसके लिए मुफीद और या कम से कम नुक्सानदेह न हो। और उस इस्लाम को छोड़े रहे जो उसके महबूब अकाइद, उसकी पसंदीदी आदतों, उसके दुनियावी फायदे, उसके शख़्सी वकार, उसकी कायदाना मस्लेहतों को मजरूह करता हो। आदमी शुरू में पूरी तरह इरादा करके इस्लाम को अपनाता है। मगर जब वह वक्त आता है कि वह अपने फिक्री (वैचारिक) ढांचे को तोड़े या अपने मफ़ाद को नजरअंदाज करके इस्लाम का साथ दे तो वह फिसल जाता है। वह ऐसे इस्लाम पर ठहर जाता है जिसमें उसके मफादात (हित) भी मजरूह न हों और इस्लाम का तमग़ा भी हाथ से जाने न पाए।

इस्लाम के पैग़ाम की सदाकत पर यकीन करने के लिए अगर वे दलीलें चाहते हैं तो दलीलें पूरी तरह दी जा चुकी हैं। अगर वे चाहते कि उन्हें मोजिजात (चमत्कार) दिखाए जाएं तो जो शख़्स खुली-खुली दलीलों को न माने उसे चुप करने के लिए मोजिजात भी नाकाफी साबित होंगे। इसके बाद आख़िरी चीज जो बाकी रहती है वह यह कि ख़ुदा अपने फरिश्तों के साथ सामने आ जाए। मगर जब ऐसा होगा तो वह किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह फैसले का वक्त होगा न कि अमल करने का। इंसान का इम्तेहान यही है कि वह देखे बग़ैर महज दलीलों की बुनियाद पर मान ले। अगर उसने देखकर माना तो इस मानने की कोई कीमत नहीं।

वे लोग जो मस्लेहतों को नजरअंदाज करके इस्लाम को अपनाएं और वे लोग जो मस्लेहतों की रिआयत करते हुए मुसलमान बनें, दोनों के हालात यकसां (समान) नहीं होते। पहला गिरोह अक्सर दुनियावी अहमियत की चीजों से ख़ाली हो जाता है जबकि दूसरे गिरोह के पास हर किस्म की दुनियावी रौनकें जमा हो जाती हैं। यह चीज दूसरे गिरोह को ग़लतफहमी में डाल देती है। वह अपने को बरतर ख़्याल करता है और पहले गिरोह को हकीर (तुच्छ) समझने लगता है। मगर यह सूरतेहाल इंतिहाई आरजी है। मौजूदा दुनिया को तोड़कर जब नया बेहतर निजाम बनेगा तो वहां आज के बड़े पस्त कर दिए जाएंगे और वही लोग बड़ाई के मकाम पर नजर आएंगे जिन्हें आज छोटा समझ लिया गया था।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَ
اَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا
اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ
فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ
يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ
مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى
يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ۝

लोग एक उम्मत थे। उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) किया तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले। और उनके साथ उतारी किताब हक के साथ ताकि वह फैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग इख़्तेलाफ कर रहे हैं। और ये इख़्तेलाफ उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें हक दिया गया था, बाद इसके कि उनके पास खुली-खुली हिदायतें आ चुकी थीं, आपस की जिद की वजह से। पस अल्लाह ने अपनी तौफीक से हक के मामले में ईमान वालों को राह दिखाई जिसमें वे झगड़ रहे थे और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह दिखा देता है। क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि अभी तुम पर वे हालात गुजरे ही नहीं जो तुम्हारे अगलों पर गुजरे थे। उन्हें सख़्ती और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। याद रखो, अल्लाह की मदद करीब है। (213-214)

दीन में इख़्तेलाफ (मतभेद) ताबीर और तशरीह (भाष्य एवं व्याख्या) के इख़्तेलाफ से शुरू होता है। हर एक अपने जेहनी सांचे के मुताबिक ख़ुदा के दीन का एक तसव्वुर (अवधारणा) कायम कर लेता है। एक ही हिदायत की किताब को मानते हुए भी लोगों की राए अलग-अलग हो जाती हैं। उस वक्त अल्लाह अपने चुने हुए बंदे के जरिए हक का एलान कराता है। यह आवाज अगरचे इंसान की जबान में होती है और बजाहिर आम आदमियों जैसे एक आदमी के जरिए बुलंद की जाती है। ताहम जो सच्चे हक को तलाश करने वाले हैं, वे उसके अंदर शामिल ख़ुदाई गूंज को पहचान लेते हैं और अपने इख़्तेलाफ को भूल कर फौरन उसकी आवाज पर लब्बैक कहते हैं। दूसरी तरफ वह तबका है जो अपने ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन के साथ अपने को इतना ज्यादा वाबस्ता कर चुका होता है कि उसके अंदर यह जज्बा उभर आता है कि मैं दूसरे की बात क्यों मानूं। उसके अंदर जिद की नफ्सियात पैदा हो जाती है। यहां तक कि वह उसी चीज का इंकार कर देता है जिसका वह अपने ख़्याल के मुताबिक अलमबरदार बना हुआ था।

हक जब रोशन दलीलों के साथ आ जाए और इसके बावजूद आदमी इसका साथ न दे तो इसकी वजह हमेशा यह होती है कि आदमी को नजर आता है कि इसका साथ देने में उसकी ख़ुशगुमानियों का महल ढह जाएगा। उसके मफादात का निजाम टूट जाएगा। उसकी आसूदा (तृप्त, संतुष्ट) जिंदगी ख़तरे में पड़ जाएगी। उसका वकार बाकी नहीं रहेगा। मगर यही वह चीज है जो अल्लाह को अपने वफादार बंदों से मत्लूब है। जिस रास्ते की दुश्वारियों से घबरा कर आदमी उस पर आना नहीं चाहता यही वह रास्ता है जो जन्नत की तरफ ले जाने वाला है। जन्नत की वाहिद (एकमात्र) कीमत आदमी का अपना वजूद है। आदमी अपने वजूद को फिक्र व अमल के जिन नक्शों के हवाले किए हुए है वहां से उखाड़कर जब वह उसे ख़ुदा के नक्शे में लाना चाहता है तो उसकी पूरी शख़्सियत हिल जाती है। इसमें उस वक्त और ज्यादा इजाफा हो जाता है जबकि इसके साथ वह ख़ुदा के दीन का दाओ बनकर खड़ा हो जाए। दाओ (आह्वानकर्ता) बनना दूसरे शब्दों में दूसरों के ऊपर नासेह (नसीहत करने वाला) और नाकिद (आलोचक) बनना है और अपने ख़िलाफ नसीहत और तंकीद (आलोचना) को सुनना हर जमाने में इंसान के लिए सबसे असहनीय बात रही है। इसके नतीजे में संबोधित वर्ग की तरफ से इतनी शदीद प्रतिक्रिया सामने आती है जो दाओ के लिए एक भूचाल से कम नहीं होती।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝
كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

लोग तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो माल तुम ख़र्च करो तो उसमें हक है तुम्हारे मां-बाप का और रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफिरों का। और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को मालूम है। तुम पर लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम्हें भार महसूस होती है। हो सकता है कि तुम एक चीज को नागवार समझो और वह तुम्हारे लिए भली हो। और हो सकता है कि तुम एक चीज को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (215-216)

इंसान यह समझता है कि उसके जान और माल के इस्तेमाल का बेहतरीन मसरफ उसके बीवी-बच्चे हैं। वह अपनी पूंजी को अपने जाती हौसलों और तमन्नाओं में लुटाकर ख़ुश होता है। इसके विपरीत शरीअत यह कहती है कि अपने जान और माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करो। ये दोनों मदें एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। एक ख़ुद अपने ऊपर ख़र्च करना है और दूसरा ग़ैरों के ऊपर। एक अपनी ताकत को दुनिया की जाहिरी चीजों की प्राप्ति पर लगाना है और दूसरा आख़िरत की नजर न आने वाली चीजों पर। मगर इंसान को जो चीज नापसंद है वही

अल्लाह की नजर में भलाई है। क्योंकि वह उसकी अगली व्यापक जिंदगी में उसे नफा देने वाली है। और इंसान को जो चीज पसंद है वह अल्लाह की नजर में बुराई है। क्योंकि इसका जो कुछ फायदा है इसी आरजी दुनिया में है, आख़िरत में इससे किसी को कुछ मिलने वाला नहीं।

यही उसूल जिंदगी के तमाम मामलों के लिए सही है। आदमी आजाद और बेकैद (उन्मुक्त) जिंदगी को पसंद करता है, हालांकि उसकी भलाई इस में है कि वह अपने आपको अल्लाह की रस्सी में बांध कर रखे। आदमी अपनी तारीफ करने वालों को दोस्त बनाता है, हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर यह है कि वह उस शख़्स को अपना दोस्त बनाए, जो उसकी ग़लतियों को उसे बताता हो। आदमी एक हक को मानने से इंकार करता है और ख़ुश होता है कि इस तरह उसने लोगों की नजर में अपने वकार (प्रतिष्ठा) को बचा लिया। हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर यह था कि वह अपनी इज़्ज़त को ख़तरे में डालकर खुले दिल से हक का एतराफ कर ले। आदमी महनत और कुर्बानी वाले दीन से बेरग़बत (उदासीन) रहता है और उस दीन को ले लेता है जिसमें मामूली बातों पर जन्नत की खुशख़बरी मिल रही हो। हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर था कि वह महनत और कुर्बानी वाले दीन को अपनाता। आदमी 'जिंदगी' के मसाइल को अहमियत देता है, हालांकि ज्यादा बड़ी अक्लमंदी यह है कि आदमी 'मौत' के मसाइल को अहमियत दे।

'अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।' का मतलब यह है कि अल्लाह उन सतही जज्बात और प्रेरकों से बुलंद है जिनसे बुलंद न होने की वजह से इंसान की राय प्रभावित राय बन जाती है और वह सही रुख़ को छोड़कर ग़लत रुख़ की तरफ मुड़ जाता है। अल्लाह का फैसला हर किस्म की असंबंधित चीजों की मिलावट से पाक है। वह विशुद्ध फैसला है। इसलिए इसके बरहक होने में शुबह नहीं। इंसान के फैसले तरह-तरह की नफ्सियाति पेचीदगियों से प्रभावित रहते हैं। वह घटिया प्रेरकों के जेरे असर राय कायम करता है। इसलिए इंसान की राय प्रायः हक पर आधारित नहीं होती है और न हालात के अनुकूल होती है। ख़ुदा जो कहे उसी को तुम हक समझो और उसके मुकाबले में अपने ख़्याल को छोड़ दो।

يَسْئَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۖ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۚ وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

लोग तुमसे हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले महीने की बाबत पूछते हैं कि इसमें लड़ना कैसा है। कह दो कि इसमें लड़ना बहुत बुरा है। मगर अल्लाह के रास्ते से रोकना और इसका इंकार करना और मस्जिदे हराम से रोकना और उसके लोगों को इससे निकालना, अल्लाह के नजदीक इससे भी ज्यादा बुरा है। और फ़ितना क़त्ल से भी ज्यादा बड़ी बुराई है। और ये लोग तुमसे निरंतर लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर काबू पाएं। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ्र की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के अमल जाए (विनष्ट) हो गए दुनिया में और आख़िरत में। और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (217-218)

रजब 2 हिजरी में यह वाकया पेश आया कि मुसलमानों के एक दस्ता और कुरैश के मुशरिकीन की एक जमाअत के दर्मियान टकराव हो गया। यह वाकया मक्का और तायफ के दर्मियान नख़ला में पेश आया। कुरैश का एक आदमी मुसलमानों के हाथ से मारा गया। मुसलमानों का ख़्याल था कि यह जमादि उस सानी की 30 तारीख़ है। मगर चांद 29 का हो गया था और वह रजब की पहली तारीख़ थी। रजब का महीना माह हराम में शुमार होता है और सदियों के रवाज से इस मामले में अरबों के जज्बात बहुत शदीद थे। इस तरह विरोधियों को मौका मिल गया कि वे मुसलमानों को और मुहम्मद (सल्ल०) को बदनाम करें कि ये लोग हकपरस्ती से इतना दूर हैं कि हराम महीनों की हुरमत का भी ख़्याल नहीं करते। जवाब में कहा गया कि माह हराम में लड़ना यकीनन गुनाह है। मगर मुसलमानों से यह कृत्य तो भूल से और संयोगवश हो गया और तुम लोगों का हाल यह है कि जानबूझ कर और मुस्तकिल तौर पर तुम इससे कहीं ज्यादा बड़े जुर्म कर रहे हो। तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की पुकार बुलंद हुई है मगर तुम इसे मानने से इंकार कर रहे हो और दूसरों को भी इसे अपनाने से रोकते हो। तुम्हारी जिद और एनाद (ईर्ष्या) का यह हाल है कि अल्लाह के बंदों के ऊपर अल्लाह के घर का दरवाजा बंद करते हो, उन्हें उनके अपने घरों से निकलने पर मजबूर करते हो। यहां तक कि जो लोग अल्लाह के दीन की तरफ बढ़ते हैं उन्हें तरह-तरह से सताते हो ताकि वे इसे छोड़ दें। हालांकि किसी को अल्लाह के रास्ते से हटाना उसे कत्ल कर देने से भी ज्यादा बुरा है। अल्लाह के नजदीक यह बहुत बड़ा जुर्म है कि आदमी ख़ुद बड़ी-बड़ी बुराइयों में मुब्तला हो और दूसरे की एक मामूली ख़ता को पा जाए तो इसे प्रचारित करके उसे बदनाम करे।

विरोधों का यह नतीजा होता है कि अहले ईमान को अपने घरों को छोड़ना पड़ता है। दीन पर कायम रहने के लिए उन्हें जिहाद की हद तक जाना पड़ता है। मगर मौजूदा दुनिया में ऐसा होना जरूरी है। यह एक दोतरफा अमल है जो ख़ुदापरस्तों और ख़ुदा दुश्मनों को एक-दूसरे से अलग करता है। इस तरह एक तरफ यह साबित होता है कि वे कौन लोग हैं जो अल्लाह के नहीं बल्कि अपनी जात के पुजारी हैं। जो अपने जाती मफाद के लिए अल्लाह से बेख़ौफ होकर अल्लाह के बंदों को सताते हैं। दूसरी तरफ इसी वाकया के दर्मियान ईमान और हिजरत और जिहाद की नेकियां प्रकट होती हैं। इससे मालूम होता है कि वे कौन लोग

हैं जिन्होंने हालात की शिद्दत के बावजूद अल्लाह पर अपने भरोसे को बाकी रखा और किसने इसे खो दिया।

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۭ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَ
اِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۭ وَيَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ڛ قُلِ الْعَفْوَ ۭ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَيَسْئَلُوْنَكَ
عَنِ الْيَتٰمٰى ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

लोग तुमसे शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इन दोनों चीजों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फायदे भी हैं। और इनका गुनाह बहुत ज्यादा है इनके फायदे से। और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो हाजत (जरूरत) से ज्यादा हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम को बयान करता है ताकि तुम ध्यान करो दुनिया और आख़िरत के मामलों में। और वे तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि जिसमें उनकी बहबूद (बेहतरी) हो वह बेहतर है। और अगर तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह को मालूम है कि कौन ख़राबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुश्किल में डाल देता। अल्लाह जबरदस्त है तदबीर वाला है। (219-120)

कुछ सवालों का जवाब देते हुए यहां कुछ बुनियादी उसूल बता दिए गए हैं। (1) किसी चीज का नुक़्सान अगर उसके फायदे से ज्यादा हो तो छोड़ देने योग्य है। (2) अपनी वाक़ई जरूरत से ज्यादा जो माल हो उसे अल्लाह की राह में दे देना चाहिए। (3) आपसी मामलों में उन तरीकों से बचना जो किसी बिगाड़ का सबब बन सकते हों और उन तरीकों को अपनाना जो सुधार पैदा करने वाले हों।

शराब पीकर आदमी को सुरूर हासिल होता है। जुवा खेलने वाले को कभी महनत के बग़ैर काफी दौलत हाथ आ जाती है। इस एतबार से इन दोनों चीजों में नफे का पहलू है। मगर दूसरे एतबार से इनके अंदर दीनी और अख़्लाकी नुक्सानात हैं और ये नुक्सानात इनके नफा से बहुत ज्यादा हैं। इसलिए इनसे मना कर दिया गया। किसी चीज को लेने या न लेने का यही मेयार जिंदगी के दूसरे मामलों के लिए भी है। मसलन वे तमाम सियासी और ग़ैर सियासी सरगर्मियों, वे तमाम समारोह और जलसे त्याग देने योग्य हैं जिनके बारे में दीनी और आर्थिक जायज बताए कि इनमें फायदा कम है और नुक़्सान ज्यादा है।

मुसलमान वह है जो आख़िरत को अपनी मंजिल बनाए, जो इस तड़प के साथ अपनी सुबह व शाम कर रहा हो कि उसका ख़ुदा उससे राजी हो जाए। ऐसे शख़्स के लिए दुनिया का साज व सामान जिंदगी की जरूरत है न कि जिंदगी का मक्सद। वह माल हासिल करता है, वह दुनिया के कामों में मशग़ूल रहता है। मगर यह सब कुछ उसके लिए हाजत और जरूरत के दर्जे मे होता है न कि मक्सद के दर्जे में। उसके असासे (सम्पत्ति) की जो चीज उसकी हकीकी जरूरत से ज्यादा हो, उसका बेहतरीन मसरफ उसके नजदीक यह होता है कि वह उसे अपने रब की राह में दे दे, ताकि वह उससे राजी हो और उसे अपनी रहमतों के साए में जगह दे। उसकी हर चीज हाजत के बराबर अपने लिए होती है और हाजत से जो ज्यादा हो वह दीन के लिए।

आपसी मामलात और कारोबार के अक्सर मसाइल इतने पेचीदा होते हैं कि इनके बारे में सिर्फ बुनियादी हिदायतें दी जा सकती हैं, इनकी तमाम अमली तफ्सीलात को कानून के अल्फाज में निर्धारित नहीं किया जा सकता। इस सिलसिले में यह उसूल निर्धारित कर दिया गया कि अपनी नियत को दुरुस्त रखो और जो कार्रवाई करो यह सोच कर करो कि वह किसी बिगाड़ का सबब न बने। बल्कि साहिबे मामला के हक में बेहतरी पैदा करने वाली हो। अगर तुम दूसरे को अपना भाई समझते हुए उसके हित की पूरी रिआयत रखोगे और तुम्हारा मक्सद सिर्फ सुधार और दुरुस्तगी होगा तो अल्लाह के यहां तुम्हारी पकड़ नहीं।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ
اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ
وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَيَسْئَلُوْنَكَ
عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا
تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ
اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝ نِسَاۗؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ
فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۡ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ
مُّلٰقُوْهُ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न लाएं और मोमिन कनीज (दासी) बेहतर है एक मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुम्हें अच्छी मालूम हो। और अपनी

औरतों को मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वे ईमान न लाएं, मोमिन ग़ुलाम बेहतर है एक आजाद मुशरिक से, अगरचे वह तुम्हें अच्छा मालूम हो। ये लोग आग की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ और अपनी बख़्शिश की तरफ बुलाता है। वह अपने अहकाम लोगों के लिए खोलकर बयान करता है ताकि वे नसीहत पकड़ें। और वे तुमसे हैज (मासिक धर्म) का हुक्म पूछते हैं। कह दो कि वह एक गंदगी है, इसमें औरतों से अलग रहो। और जब तक वे पाक न हो जाएं उनके करीब न जाओ। फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएं तो उस तरीके से उनके पास जाओ जिसका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है। अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और वह दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें जरूर उससे मिलना है। और ईमान वालो को ख़ुशख़बरी दे दो। (221-223)

मर्द और औरत जब निकाह के जरिए एक-दूसरे के साथी बनते हैं तो इसका अस्ल मक्सद शहवतरानी (यौन तृप्ति) नहीं होता बल्कि यह उसी किस्म का एक बामक्सद तअल्लुक है जो किसान और खेत के दर्मियान होता है। इसमें आदमी को इतना ही संजीदा होना चाहिए जितना खेती का मंसूबा बनाने वाला संजीदा होता है। इस सिलसिले में कुछ बातों का लिहाज जरूरी है।

एक यह कि जोड़े के चुनाव में सबसे ज्यादा जिस चीज को देखा जाए वह ईमान है। मियां-बीवी का तअल्लुक बेहद नाज़ुक तअल्लुक है। इसके बहुत से नफ़्सियाती, ख़ानदानी और समाजी पहलू हैं। इस किस्म का तअल्लुक दो शख़्सों के दर्मियान अगर एतकादी (आस्थागत) समानता के बग़ैर हो तो अंततः वह दो में से किसी एक की बर्बादी का सबब होगा। एक मोमिन अपने ग़ैर-मोमिन जोड़े से एतकादी समझौता कर ले तो इसका मतलब यह है कि उसने अपने दीन को बर्बाद कर लिया। और अगर वह समझौता न करे तो इसके बाद दोनों में जो कशमकश होगी इसके नतीजे में उसका घर बर्बाद हो जाएगा। दूसरी चीज यह कि दो सिनफ़ों का यह तअल्लुक ख़ुदा की बनावट के मुताबिक अपने फ़ित्री ढंग पर कायम हो। फ़ितरत भी ख़ुदा का हुक्म है। कुरआन के शाब्दिक आदेशों की पाबंदी जिस तरह जरूरी है उसी तरह उस फ़ित्री निजाम की पाबंदी भी जरूरी है जो ख़ुदा ने तख़्लीकी (रचनात्मक) तौर पर हमारे लिए बना दिया है। तीसरी चीज यह कि हर मरहले में आदमी के ऊपर अल्लाह का ख़ौफ़ ग़ालिब रहे। वह जो भी रवैया अपनाए यह सोच कर अपनाए कि अंततः उसे रब्बुल आलमीन के पास जाना है जो खुले और छुपे हर चीज से बाख़बर है। 'और अपने लिए आगे भेजो।' का मतलब यह है कि अपनी आख़िरत के लिए नेक आमाल भेजो। यानी जो कुछ करो यह समझ कर करो कि तुम्हारा कोई काम सिर्फ दुनियावी काम नहीं है बल्कि हर काम का एक उख़रवी (आख़िरत संबंधी) पहलू है। मरने के बाद तुम अपने इस उख़रवी पहलू से दो-चार होने वाले हो। तुम्हें इस मामले में हद दर्जा होशियार रहना चाहिए कि तुम्हारा अमल आख़िरत के पैमाने में सालेह (नेक) अमल करार पाए न कि ग़ैर-सालेह।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ
النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ
يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۲۵﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ
مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲۶﴾ وَ
اِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۷﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ
بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ
اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ
اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۸﴾

और अल्लाह को अपनी कसमों का निशाना न बनाओ कि तुम भलाई न करो और परहेजगारी न करो और लोगों के दर्मियान सुलह न करो। अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह तुम्हारी बेइरादा कसमों पर तुम को नहीं पकड़ता, मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिल करते हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (धैर्य) वाला है। जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की कसम खा लें उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। फिर अगर वे रुजूअ कर लें तो अल्लाह माफ करने वाला, महरबान है। और अगर वे तलाक का फ़ैसला करें तो यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। और तलाक दी हुई औरतें अपने आपको तीन हैज तक रोके रखें। और अगर वे अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जाइज नहीं कि वे उस चीज को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में। और इस दौरान में उनके शौहर उन्हें फिर लौटा लेने का हक रखते हैं अगर वे सुलह करना चाहें। और इन औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक उसी तरह हुक़ूक़ हैं जिस तरह दस्तूर के मुताबिक उन पर जिम्मेदारियां हैं। और मर्दों का उनके मुकाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है। और अल्लाह जबरदस्त है, तदबीर वाला है। (224-228)

जिद और ग़ुस्से में कभी एक आदमी कसम खा लेता है कि मैं फ़लाँ आदमी के साथ कोई नेक सलूक नहीं करूंगा। कदीम जमाने में अरबों में इस तरह की कसमों का बहुत रवाज था। वे एक भलाई का काम या एक इस्लाह (सुधार) का काम न करने की कसम खा लेते और जब उन्हें इस नौइयत के काम के लिए पुकारा जाता तो कह देते कि हम तो इसे न करने की

कसम खा चुके हैं। यह कहना कि मैं भलाई का काम न करूंगा, यूं भी एक ग़लत बात है और इसे ख़ुदा के नाम की कसम खाकर कहना और भी ज्यादा बुरा है। क्योंकि ख़ुदा तो वह हस्ती है जो सरापा रहमत और ख़ैर है। फिर ऐसे ख़ुदा का नाम लेकर अपने को रहमत और ख़ैर के कामों से अलग करना क्यूं कर दुरुस्त हो सकता है। बिगाड़ हर हाल में बुरा है। लेकिन अगर बिगाड़ को ख़ुदा या उसके दीन का नाम लेकर किया जाए तो इसकी बुराई बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।

कुछ लोग कसम को तकिया कलाम बना लेते हैं और ग़ैर इरादी तौर पर कसम के अल्फाज बोलते रहते हैं। यह घटिया बात है और हर आदमी को इससे बचना चाहिए, ताहम मियां-बीवी के तअल्लुक की नजाकत की वजह से इस तरह के मामलात में ऐसी कसम को कानूनी तौर पर अप्रभावी करार दिया गया। अलबत्ता वह कलाम जो आदमी सोच समझ कर मुंह से निकाले और जिसके साथ कलबी इरादा शामिल हो जाए उसकी नौइयत बिल्कुल दूसरी होती है। इसलिए अगर कोई शख़्स इरादतन यह कसम खाले कि मैं अपनी औरत के पास न जाऊंगा तो इसे काबिले लिहाज करार देकर इसे एक कानूनी मसला बना दिया गया और इसके अहकाम मुकर्रर किए गए।

ख़ानदानी निजाम में, चाहे मर्द हो या औरत, हर एक के हुकूक भी हैं और हर एक की जिम्मेदारियां भी। हर फर्द को चाहिए कि दूसरे से अपना हक लेने के साथ दूसरे को उसका हक भी पूरी तरह अदा करे। कोई शख़्स इत्तेफाकी हालात या अपनी फितरी बालादस्ती (प्राकृतिक शक्ति) से फायदा उठा कर अगर दूसरे के साथ नाइंसाफी करेगा तो वह ख़ुदा की पकड़ से अपने आपको बचा नहीं सकता।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ
تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ
فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ طَلَّقَهَا
فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ

ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ؗ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

तलाक दो बार है। फिर या तो कायदे के मुताबिक रख लेना है या ख़ुशउस्लूबी के साथ रुख़्सत कर देना। और तुम्हारे लिए यह बात जाइज नहीं कि तुमने जो कुछ इन औरतों को दिया है उसमें से कुछ ले लो मगर यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे। फिर अगर तुम्हें यह डर हो कि दोनों अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में जिसे औरत फिदये में दे। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनसे बाहर न निकलो। और जो शख़्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो वही लोग जालिम हैं। फिर अगर वह उसे तलाक दे दे तो इसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे। फिर अगर वह मर्द उसे तलाक दे दे तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जाएं बशर्ते कि उन्हें अल्लाह की हदों पर कायम रहने की उम्मीद हो। ये ख़ुदावंदी हदें (सीमाएं) हैं जिन्हें वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो दानिशमंद हैं। और जब तुम औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत तक पहुंच जाएं तो उन्हें या तो कायदे के मुताबिक रख लो या कायदे के मुताबिक रुख़्सत कर दो। और तकलीफ पहुंचाने की ग़र्ज से न रोको ताकि उन पर ज्यादती करो। और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया। और अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ। और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को और उस किताब व हिक्मत (तत्वदर्शिता) को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए उतारी है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (229-231)

तलाक एक ग़ैर-मामूली वाकया है जो ग़ैर-मामूली हालात में पेश आता है मगर इस इंतिहाई जज्बाती मामले में भी तकवा और एहसान (शालीनता, सद्व्यवहार) पर कायम रहने का हुक्म दिया गया है। इससे अंदाजा किया जा सकता है कि दुनिया की जिंदगी में मोमिन से किस किस्म का सुलूक अल्लाह तआला को मत्लूब है।

निकाह के रिश्ते को एक ही वक्त में तोड़ने के बजाए इसे तीन मरहलों में अंजाम देने का हुक्म हुआ है जो कुछ महीनों में पूरा होता है। एक इंतिहाई हैजानी मामले में इस किस्म का संजीदा तरीका मुकर्रर करके बताया गया कि इख़्तेलाफ (मतभेद) के वक्त मोमिन का रवैया कैसा होना चाहिए। अपने मुख़ालिफ फरीक (पक्ष) के साथ उसका सुलूक ग़ैर-जज्बाती अंदाज में सोचा हुआ साबिराना फैसला हो न कि इश्तेआल (उत्तेजना) के तहत जाहिर होने वाला अचानक फैसला। इसी तरह तलाक के जितने आदाब मुकर्रर किए गए हैं सबमें जिंदगी का बहुत गहरा सबक मौजूद है। अलाहिदगी (अलग होने) का इरादा करने के बाद भी आदमी

एक मुद्दत तक दुबारा इत्तेहाद के इम्कान पर ग़ौर करता है। तअल्लुकात के ख़ात्मे की नौबत आ जाए तब भी वह उसे इंसानियत के हुक़ूक़ के ख़ात्मे के हममअना न बनाए। आपसी सुलूक के लिए अल्लाह का जो कानून है उसकी मुकम्मल पाबंदी की जाए। शरीअत के किसी हुक्म को कानूनी बहानों के ज़रिए रद्द न किया जाए। कानून की तामील में सिर्फ कानून के अल्फाज को न देखा जाए बल्कि उसकी हिक्मत (कानून की मूल भावना) को भी सामने रखा जाए। अलाहिदगी से पहले अपने साबका (पूर्व) साथी को जो कुछ दिया था उसे अलाहिदगी के बाद वापस लेने की कोशिश न की जाए। जिस तरह तअल्लुक के जमाने को ख़ुशउस्लूबी के साथ गुजारा था उसी तरह अलाहिदगी के जमाने को भी ख़ुशउस्लूबी के साथ गुजारा जाए।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ
أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ۖ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ
يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ
نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا
سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

और जब तुम अपनी औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन्हें न रोको कि वे अपने शोहरों से निकाह कर लें। जबकि वे दस्तूर (सामान्य नियम) के अनुसार आपस में राजी हो जाएं। यह नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुममें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यकीन रखता हो। यह तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा और सुथरा तरीका है। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएं उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों। और जिसका बच्चा है उसके जिम्मे है इन मांओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक। किसी को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफ़िक़। न किसी मां को उसके बच्चे के सबब से तकलीफ दी जाए। और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से। और यही जिम्मेदारी वारिस पर भी है। फिर अगर दोनों आपसी

रजामंदी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चे को किसी और से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। बशर्ते कि तुम कायदे के मुताबिक वह अदा कर दो जो तुमने उन्हें देना ठहराया था। और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (232-233)

एक औरत को उसके ख़ाविंद ने तलाक दे दी और इद्दत के जमाने में रजअत (मिलन) न की। जब इद्दत ख़त्म हो चुकी तो दूसरे लोगों के साथ पहले शौहर ने भी निकाह का पैग़ाम दिया। औरत ने अपने पहले शौहर से दुबारा निकाह करना मंजूर कर लिया मगर औरत का भाई ग़ुस्से में आ गया और निकाह को रोक दिया। इस पर यह हुक्म उतरा की जब दोनों दुबारा वैवाहिक संबंध कायम करने पर राजी हैं तो रुकावट न डालो।

तलाक के बाद भी अक्सर बहुत से मसाइल बाकी रहते हैं। कभी पहले शौहर से दुबारा निकाह का मामला होता है। कभी तलाकशुदा औरत किसी दूसरे मर्द से शादी करना चाहती है। ऐसे मौकों पर मुश्किलें पैदा करना दुरुस्त नहीं। कभी तलाकशुदा औरत बच्चे वाली होती है और साबका (पूर्व) शौहर के बच्चे के दूध पिलाने का मसला होता है। ऐसी हालत में एक-दूसरे को तकलीफ देने से मना किया गया और हुक्म दिया गया कि इस मामले को जज्बात का सवाल न बनाओ। इसे आपसी मशवरे और रजामंदी से तै कर लो। इससे अंदाजा होता है कि इख़्तेलाफ और अलाहिदगी के वक्त मामले को निपटाने का मोमिनाना तरीका क्या है। वह यह कि दोनों पक्षों की जानिब जो मसाइल बाकी रह गए हों उन्हें एक-दूसरे को परेशान करने का जरिया न बनाया जाए बल्कि उन्हें ऐसे ढंग से तै किया जाए जो दोनों जानिब के लिए बेहतर और काबिले कबूल हो। ईमान रूह की पाकीजगी है फिर जिसकी रूह पाक हो चुकी हो वह अपने मामलात में नापाकी का तरीका कैसे अपना सकता है।

नसीहत किसी के लिए सिर्फ इस बुनियाद पर काबिले क़ुबूल नहीं हो जाती कि वह बरहक है। जरूरी है कि सुनने वाला अल्लाह पर यकीन रखता हो और उसकी पकड़ से डरने वाला हो। वह समझे कि नसीहत करने वाले की नसीहत को रद्द करने के लिए आज अगर मैंने कुछ अल्फाज पा लिए तो इससे अस्ल मसला ख़त्म नहीं हो जाता। क्योंकि मामला बिलआख़िर अल्लाह की अदालत में पेश होना है। और वहां किसी किस्म का जोर और कोई लफ़्ज़ी हुज्जत काम आने वाली नहीं।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ
وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ
مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ

وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ
النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ
تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ
وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَاِنْ
طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ
مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ
تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

और तुममें से जो लोग मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वे बीवियां अपने आप को चार महीने दस दिन तक इंतजार में रखें। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंचें तो जो कुछ वे अपने बारे में क़ायदे के मुवाफ़िक़ करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बाख़बर है। और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन औरतों को पैग़ाम देने में कोई बात इशारे में कहो या अपने दिल में छुपाए रखो। अल्लाह को मालूम है कि तुम जरूर इनका ध्यान करोगे। मगर छुपकर इनसे वादा न करो, तुम इनसे सिर्फ़ दस्तूर के मुताबिक कोई बात कह सकते हो। और निकाह का इरादा उस वक्त तक न करो जब तक निर्धारित मुद्दत पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। पस उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (संयम) वाला है। अगर तुम औरतों को ऐसी हालत में तलाक दो कि न इन्हें तुमने हाथ लगाया है और इनके लिए कुछ महर मुकर्रर किया है तो इनके महर का तुम पर कुछ मुवाख़िज़ा (देय) नहीं। अलबत्ता उन्हें दस्तूर के मुताबिक कुछ सामान दे दो, वुस्अत वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक, यह नेकी करने वालों पर लाजिम है। और अगर तुम उन्हें तलाक दो इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुकर्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुकर्रर किया हो उसका आधा अदा करो। यह और बात है कि वे माफ कर दें या वह मर्द माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है। और तुम्हारा माफ कर देना ज्यादा क़रीब है तक़्वा से। और आपस में एहसान करने से ग़फ़लत मत करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (234-237)

निकाह और तलाक के क़ानून बयान करते हुए बार-बार तक़्वा और एहसान की नसीहत की जा रही है। इससे मालूम हुआ कि किसी हुक्म को उसकी अस्ल रूह के साथ जेरेअमल लाने के लिए जरूरी है कि मआशरे (समाज) के अफ़राद ख़ालिस क़ानूनी मामला करने वाले न हों बल्कि एक-दूसरे के साथ हुस्ने सुलूक का जज्बा रखते हों। इसी के साथ उन्हें यह खटका लगा हुआ हो कि दूसरे के साथ बेहतर सुलूक न करना ख़ुद अपने बारे में बेहतर सुलूक न किए जाने का ख़तरा मोल लेना है क्योंकि बिलआख़िर सारा मामला ख़ुदा के यहां पेश होना है और वहां न लफ़्जी तावीलें किसी के काम आएंगी और न किसी के लिए यह मुमकिन होगा कि वह मामले से मुतअल्लिक किसी बात को छुपा सके।

अगर निकाह के वक्त औरत का महर मुक़र्रर हुआ और तअल्लुक़ क़ायम होने से पहले तलाक हो गई तो क़ानून के एतबार से आधा महर देना लाजिम किया गया है। मगर ख़ैरख़्वाही का तक़ाजा है कि दोनों इस मामले में क़ानूनी बर्ताव के बजाए फ़य्याजाना (उदारता, सहृदयतापूर्ण) बर्ताव करना चाहें। औरत के अंदर यह मिजाज हो कि जब तअल्लुक क़ायम नहीं हुआ तो मैं आधा महर छोड़ दूं। मर्द के अंदर यह जज्बा उभरे कि अगरचे क़ानूनन मेरे ऊपर सिर्फ़ आधे की जिम्मेदारी है मगर फ़य्याज़ी का तक़ाजा है कि मैं पूरा का पूरा अदा कर दूं। फ़य्याज़ी और वुस्अते जर्फ़ (सहृदयता) का यही मिजाज तमाम मामलों में मत्लूब है। वही मआशरा मुस्लिम मआशरा है जिसके अफ़राद का यह हाल हो कि हर एक-दूसरे को देना चाहे न यह कि हर एक-दूसरे से लेने का हरीस बना हुआ हो। साथ ही यह भी कि वुस्अते जर्फ़ का यह मामला दुश्मनी के वक्त भी हो न कि सिर्फ़ दोस्ती के वक्त।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝ فَاِنْ خِفْتُمْ
فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ
غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ
مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की। और खड़े हो अल्लाह के सामने आजिज बने हुए। अगर तुम्हें अंदेशा हो तो पैदल या सवारी पर पढ़ लो। फिर जब अमन की हालत आ जाए तो अल्लाह को उस तरीके से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे। और तुममें से जो लोग वफात पा जाएं और बीवियां छोड़ रहे हों वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत कर दें कि एक साल तक उन्हें

घर में रखकर ख़र्च दिया जाए। फिर अगर वे ख़ुद से घर छोड़ दें तो जो कुछ वे अपने मामले में दस्तूर के मुताबिक करें उसका तुम पर कोई इल्जाम नहीं। अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। और तलाक दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक ख़र्च देना है, यह लाजिम है परहेजगारों के लिए। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम खोलकर बयान करता है ताकि तुम समझो। (238-242)

नमाज गोया दीन का ख़ुलासा है। नमाज मोमिनाना जिंदगी की वह मुख़्तसर तस्वीर है जो फैलती है तो मुकम्मल इस्लामी ज़िन्दगी बन जाती है। यहां एक छोटे से जुमले में नमाज के तीन अहमतरीन अजजा (टुकड़ों) को बयान कर दिया गया है (1) नमाज का पांच वक्त के लिए फर्ज होना। (2) नमाज का एक काबिले एहतेमाम चीज होना। (3) यह बात कि नमाज की अस्ल हकीकत इज्ज (विनय भाव) है।

'पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की।' इससे मालूम हुआ कि नमाजों में एक बीच की नमाज है और फिर इसके दोनों तरफ नमाजें हैं। इस जुमले में अतराफ की 'नमाजों' से कम से कम चार की तादाद मान लेना जरूरी है। क्योंकि अरबी ज़बान में 'सलवात' (नमाजों) का इतलाक तीन या इससे ज्यादा के अदद के लिए होता है। पहला मुमकिन अदद जिसमें 'नमाजों' के दर्मियान एक 'बीच की' नमाज बन सके, चार ही है। इस तरह एक नमाज बीच की नमाज होकर इसके दोनों तरफ दो-दो नमाजें हो जाती हैं। 'बीच की नमाज' से मुराद अस्र की नमाज है। जैसा कि रिवायत से साबित है। नमाज के दूसरे पहलू को बताने के लिए 'मुहाफिज़त' (संरक्षा) का लफ्ज इस्तेमाल हुआ है। गोया नमाज उसी तरह हिफाज़त की एक चीज है जिस तरह माल आदमी के लिए हिफाज़त की चीज होता है। नमाज के वक्तों का पूरा लिहाज, उसके बताए हुए तरीके पर अदा करने का एहतेमाम, ऐसी चीजों से पक्के इरादे से बचना जो आदमी की नमाज में कोई ख़राबी पैदा करने वाली हों, वगैरह, मुहाफिज़ते नमाज में शामिल हैं। नमाज का तीसरा पहलू इज्ज है। यह नमाज की अस्ल रूह है, नमाज बंदे का अल्लाह के सामने खड़ा होना है। इसलिए जरूरी है कि नमाज के वक्त आदमी के ऊपर वह कैफियत तारी हो जो सबसे बड़े के आगे खड़े होने की सूरत में सबसे छोटे के ऊपर तारी होती है।

मआशरत (सामाजिकता) के अहकाम बताते हुए यह कहना कि 'यह हक है मुत्तकियों के ऊपर' शरीअत के एक अहम पहलू को जाहिर करता है। आपसी मामलों में कुछ हुकूक वे हैं जिन्हें कानून ने सुनिश्चित कर दिया है। मगर एक आदमी पर दूसरे के हुकूक की हदें यहीं ख़त्म नहीं हो जातीं। सुनिश्चित हुकूक के अलावा भी कुछ हुकूक हैं। ये हुकूक वे हैं जिन्हें आदमी का तकवा उसे महसूस कराता है। और आदमी का मुत्तक़याना एहसास जितना शदीद हो उतना ही ज्यादा वह इसे अपने ऊपर लाजिम समझता है। अंदर का यह जोर अगर मौजूद न हो तो आदमी कभी सही तौर पर दूसरों के हुकूक अदा नहीं कर सकता।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से भाग खड़े हुए मौत के डर से, और वे हजारों की तादाद में थे। तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ। फिर अल्लाह ने इन्हें जिंदा किया। बेशक अल्लाह लोगों पर फज्ल करने वाला है। मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। कौन है जो अल्लाह को कर्जे हसन दे कि अल्लाह इसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे। और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी। और तुम सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (243-245)

मक्का से तंग आकर मुसलमान मदीना चले आए। मदीना में अपने दीन के मुताबिक रहने के लिए निस्बतन (अपेक्षाकृत) आजादाना माहौल था। मगर इस्लाम के विरोधियों ने अब भी उन्हें न छोड़ा। उन्होंने फौजी हमले शुरू कर दिए ताकि मदीना से मुसलमानों का ख़ात्मा कर दें। उस वक्त हुक्म हुआ कि उनसे मुकाबला करो। विरोधियों की अपेक्षा इस वक्त मुसलमानों की ताकत बहुत कम थी। इसलिए कुछ लोगों के अंदर बेहिम्मती पैदा हुई। यहां बनी इस्राईल के इतिहास का एक वाकया याद दिला कर बताया गया कि जिंदगी के मोर्चे में शिकस्त से डरने ही का नाम शिकस्त है।

बनी इस्राईल की एक पड़ोसी कौम फिलिस्ती ने उन पर हमला कर दिया। बनी इस्राईल हार गए। फिलिस्तियों ने दो हमलों में इनके चौंतीस हजार आदमी मार डाले। बनी इस्राईल इतना डरे कि अपने घरों को छोड़कर भाग गए। बाइबल के अल्फाज में 'हशमत (प्रताप) बनी इस्राईल के हाथों से जाती रही।' बनी इस्राईल का सारा घराना ख़ौफ में मुब्तला होकर विलाप करने लगा। इसी हाल में इन्हें बीस साल गुजर गए। फिर इन्होंने सोचा कि फिलिस्तियों के सामने उन्हें शिकस्त क्यों हुई। उनके नबी समूईल ने कहा कि शिकस्त की वजह ख़ुदा में तुम्हारे यकीन का कमजोर हो जाना है। उन्होंने इस्राईल के सारे घराने से कहा कि अगर तुम अपने सारे दिल से ख़ुदावंद की तरफ रुजूअ लाते हो तो अजनबी देवताओं को अपने बीच से दूर कर दो। और ख़ुदावंद के लिए अपने दिलों को मुस्तइद (एकाग्र) करके सिर्फ उसी की इबादत करो। ख़ुदा फिलिस्तियों के हाथ से तुम्हें रिहाई देगा। तब इस्राईल ने अजनबी देवताओं को अपने से दूर किया और फक्त ख़ुदावंद की इबादत करने लगे। अब जब दुबारा फिलिस्तियों

और इस्राईलियों मे जंग हुई तो बाइबल के अल्फाज में 'ख़ुदावंद फिलिस्तियों के ऊपर उस दिन बड़ी कड़क के साथ गरजा और उन्हें घबरा दिया और उन्होंने इस्राईलियों के आगे शिकस्त खाई।' (1 समूईल, आ० 7)। अल्लाह पर एतमाद के रास्ते को छोड़कर उन पर मिल्ली (समुदायगत) मौत हुई थी। अल्लाह पर एतमाद के रास्ते को अपनाने के बाद उन्हें मिल्ली जिंदगी हासिल हो गई।

कर्जेहसन के मअना हैं अच्छा कर्ज। यहां इससे मुराद वह इंफ़ाक़ (ख़र्च करना) है जो ख़ुदा के दीन की राह में किया जाए। यह इंफाक ख़ालिस अल्लाह के लिए होता है जिसमें कोई दूसरा मफाद शामिल नहीं होता। इसलिए ख़ुदा ने इसे अपने जिम्मे कर्ज करार दिया। और चूंकि वह बहुत ज्यादा इजाफे के साथ इसे लौटाएगा इसलिए इसे कर्जेहसन फरमाया।

मोमिन की राह में मुश्किलात का पेश आना कोई महरूमी की बात नहीं। यह अल्लाह के फज़्ल का नया दरवाजा खुलना है। इसके बाद वह अपने जान व माल को अल्लाह के लिए ख़र्च करके अल्लाह की उन इनायतों का मुस्तहिक बनता है जो आम हालात में किसी को नहीं मिलतीं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

क्या तुमने बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा मूसा के बाद, जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुकर्रर कर दीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें। नबी ने जवाब दिया : ऐसा न हो कि तुम्हें लड़ाई का हुक्म दिया जाए तब तुम न लड़ो। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में। हालांकि

हमें अपने घरों से निकाला गया है और अपने बच्चों से जुदा किया गया है। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए। और अल्लाह जालिमों को ख़ूब जानता है। और उनके नबी ने उनसे कहा : अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुकर्रर किया है। उन्होंने कहा कि उसे हमारे ऊपर बादशाही कैसे मिल सकती है। हालांकि उसके मुक़ाबले में हम बादशाही के ज्यादा हक्दार हैं। और उसे ज्यादा दौलत भी हासिल नहीं। नबी ने कहा अल्लाह ने तुम्हारे मुकाबले में उसे चुना है और इल्म और जिस्म में उसे ज्यादती दी है। और अल्लाह अपनी सल्तनत जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ी वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। और उनके नबी ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह संदूक आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे लिए तस्कीन है। और मूसा के समुदाय और हारून के समुदाय की छोड़ी हुई यादगारें हैं। इस संदूक को फरिश्ते ले आएंगे इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, अगर तुम यकीन रखने वाले हो। (246-248)

मूसा (अलै०) के तकरीबन तीन सौ साल बाद बनी इस्राईल अपने पड़ोस की मुश्रिक कौमों से मग़लूब (परास्त) हो गए। इसी हालत में तकरीबन चौथाई सदी गुजारने के बाद उन्हें एहसास हुआ कि वे अपने पिछले दौर को वापस लाएं। अब अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए उन्हें एक अमीरे लश्कर (सेनापति) की जरूरत थी। उनके नबी समूईल (1100-1020 ई० पू०) ने इनके लिए एक शख़्स की नियुक्ति की जिसका नाम कुरआन में तालूत और बाइबल में साऊल आया है। जाती औसाफ (निजी गुणों) के एतबार से वह एक उपयुक्त शख़्स था। मगर बनी इस्राईल उसकी सरदारी कुबूल करने के बजाए इस किस्म के एतराज निकालने लगे कि वह तो छोटे ख़ानदान का आदमी है। उसके पास माल व दौलत नहीं। मगर इस तरह की मतभेदपूर्ण बहसें किसी कौम के जवालयाफ्ता (पतित) होने की अलामतें हैं। अल्लाह के फैसले व्यापकता और इल्म की बुनियाद पर होते हैं। इसलिए वही बंदा अल्लाह का महबूब बंदा है जो ख़ुद भी व्यापक दृष्टिकोण का तरीका अपनाए और जो भी फैसला करे तथ्यों के आधार पर करे न कि तअस्सुबात और मस्लेहतों की बुनियाद पर। ताहम संदूक को वापस लाकर अल्लाह ने तालूत की नियुक्ति की एक असाधारण पुष्टि भी कर दी।

बनी इस्राईल के यहां एक मुक़द्दस (पवित्र) संदूक था जो मिस्र से विस्थापन के जमाने से इनके यहां चला आ रहा था। इसमें तौरात की तख़्तियां और दूसरी शुभ वस्तुएं थीं। बनी इस्राईल इसे अपने लिए फतह और कामयाबी का निशान समझते थे। फिलिस्ती इस संदूक को उनसे छीन कर उठा ले गए थे। मगर इसे उन्होंने जिस-जिस बस्ती में रखा वहां-वहां वबाएं (महामारी) फूट पड़ीं। इससे उन्होंने बुरा शगुन लिया और संदूक को एक बैलगाड़ी में रख कर हांक दिया। वे इसे लेकर चलते रहे यहां तक कि यहूदियों की आबादी में पहुंच गए। अल्लाह अपने किसी बंदे की सदाकत (सच्चाई) को जाहिर करने के लिए कभी उसके गिर्द ऐसी असाधारण चीजें जमा कर देता है जो आम इंसानों के साथ जमा नहीं होतीं।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

फिर जब तालूत फौजों को लेकर चला तो उसने कहा : अल्लाह तुम्हें एक नदी के जरिए आजमाने वाला है। पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसे न चखा वह मेरा साथी है। मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। तो उन्होंने इसमें से ख़ूब पिया सिवाए थोड़े आदमियों के। फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर कायम रहे थे दरिया पार कर चुके तो वे लोग बोले कि आज हमें जालूत और उसकी फौजों से लड़ने की ताकत नहीं। जो लोग यह जानते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा कि कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जब जालूत और उसकी फौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा : कि ऐ हमारे रब हमारे ऊपर सब्र डाल दे और हमारे कदमों को जमा दे और इन मुंकिरों के मुकाबले में हमारी मदद कर। फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी। और दाऊद ने जालूत को कत्ल कर दिया। और अल्लाह ने दाऊद को बादशाहत और दानाई (सूझबूझ) अता की और जिन चीजों का चाहा इल्म बख़्शा। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के जरिए हटाता न रहे तो जमीन फसाद से भर जाए। मगर अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फज़्ल फरमाने वाला है। (249-251)

मूसा के तक़रीबन तीन सौ साल बाद और हजरत मसीह से तक़रीबन एक हजार साल पहले

ऐसा हुआ कि फिलिस्तियों ने बनी इस्राईल पर हमला किया और फिलिस्तीन के अक्सर इलाके उनसे छीन लिए। एक अर्से के बाद बनी इस्राईल ने चाहा कि वे फिलिस्तियों के ख़िलाफ इकदाम करें और अपने इलाके उनसे वापिस लें, उस वक्त उनके दर्मियान एक नबी थे जिनका नाम समूईल था वह शाम के एक कदीम शहर रामह में रहते थे और बनी इस्राईल के सामूहिक मामलों के जिम्मेदार थे। बनी इस्राईल का एक वफ्द (प्रतिनिधिमण्डल) उनसे मिला। और कहा कि आप अब बूढ़े हो चुके हैं, इसलिए आप हममें से किसी को हमारे ऊपर बादशाह मुकर्रर कर दें, ताकि हम उसकी रहनुमाई में जंग कर सकें। तौरात के अल्फाज में 'और हमारा बादशाह हमारी अदालत करे और हमारे आगे-आगे चले और हमारी लड़ाई करे।'

हजरत समूईल अगरचे यहूद के किरदार के बारे में अच्छी राय न रखते थे ताहम उनकी मांग की बुनियाद पर उन्होंने कहा कि अच्छा मैं तुम्हारे लिए एक बादशाह मुकर्रर कर दूंगा। अतः उन्होंने कबीला बिन यमीन के एक बहादुर नौजवान साऊल (तालूत) को उनका बादशाह (सरदार) मुक़र्रर कर दिया।

साऊल (तालूत) बनी इस्राईल का लश्कर लेकर दुश्मन की तरफ बढ़े, रास्ते में यरदन नदी पड़ती थी इसे पार करके दुश्मन के इलाके में पहुंचना था। क्योंकि तालूत को बनी इस्राईल की कमजोरियों का इल्म था उन्होंने उनकी जांच के लिए एक सादा तरीका इस्तेमाल किया। नदी को पार करते हुए उन्होंने एलान किया कि कोई शख़्स पानी न पिए। अलबत्ता एक आध चुल्लू ले ले तो कोई हर्ज नहीं। बनी इस्राईल की बड़ी तादाद इस इम्तेहान में पूरी न उतरी। ताहम इस मुक़ाबले में अल्लाह तआला ने उन्हें कामयाबी दी। हजरत दाऊद उस वक्त सिर्फ एक नौजवान थे, उन्होंने इस जंग में फैसलाकुन किरदार अदा किया। फिलिस्तियों की फौज का जबरदस्त पहलवान जालूत उनके हाथ से कत्ल हुआ। इसके बाद फिलिस्तियों ने इस्राईल के मुकाबले में हथियार डाल दिए।

मुक़ाबले में कामयाबी हासिल करने के लिए जरूरी है कि अफ़राद के अंदर मुश्किलात पर जमने और सरदार की इताअत (आज्ञापालन) करने का माद्दा हो। तालूत का अपने साथियों को पानी पीने से मना करना इसी क्षमता की जांच की एक सादा सी तदबीर थी। बाइबल के बयान के मुताबिक इनमें से सिर्फ छः सौ आदमी ऐसे निकले जिन्होंने रास्ते में आने वाली नदी का पानी नहीं पिया। जिन लोगों ने पानी पिया उन्होंने गोया अपनी अख़्लाकी कमजोरियों को और पुख़्ता कर लिया। इसलिए दुश्मन का बजाहिर ताकतवर होना अब उन्हें और ज्यादा महसूस होने लगा। दूसरी तरफ जिन लोगों ने पानी नहीं पिया था उनके इस फेअ्ल (कार्य) से उनका सब्र और इताअत का मिजाज और ज्यादा मजबूत हो गया। उन्हें वह हक़ीक़त और ज्यादा वाज़ेह सूरत में दिखाई देने लगी जिसे बाइबल के बयान के मुताबिक तालूत के एक साथी ने इन लफ्जों में बयान किया था : 'और यह सारी जमाअत जान ले कि ख़ुदावंद तलवार और भाले के जरिए से नहीं बचाता। इस लिए कि जंग तो ख़ुदावंद की है और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।' (1-समूईल, 48 : 17)

सत्ता जिसके पास हो वह कुछ दिनों बाद घमंड में पड़ कर जुल्म करने लगता है। इसलिए सत्ता किसी के पास स्थाई रूप से जमा हो जाए तो उसके जुल्म व फसाद से जमीन भर जाए। इसकी तलाफी का इन्तेजाम अल्लाह ने इस तरह किया है कि वह सत्ताधारियों को बदलता रहता हैं। वह सत्ताहीन लोगों में से एक गिरोह को उठाता है और उसके जरिए से सत्ताधारी को हटा कर उसके मंसब पर दूसरे को बैठा देता है। इसका मतलब यह है कि जब किसी सत्ताधारी वर्ग का जुल्म बढ़ जाए तो यह उसके ख़िलाफ उठने वाले गिरोह के लिए ख़ुदाई मदद का वक्त होता है। अगर वह सब्र और इताअत की शर्त को पूरा करते हुए अपने आप को ख़ुदाई मंसूबे में शामिल कर दे तो बजाहिर कम होने के बावजूद वह ख़ुदा की मदद से ज्यादा के ऊपर ग़ालिब आ जाएगा। ख़ुदा का ख़ौफ महज एक मंफ़ी (नकारात्मक) चीज नहीं वह एक इल्म है जो आदमी के जेहन को इस तरह रोशन कर देता है कि वह हर चीज को उसके असली और हकीकी रूप में देख सके।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَٰكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सुनाते हैं ठीक-ठीक। और बेशक तू पैग़म्बरों में से है इन पैग़म्बरों में से कुछ को हमने कुछ पर फजीलत दी। इनमें से कुछ से अल्लाह ने कलाम किया। और कुछ के दर्जे बुलंद किए। और हमने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां दीं और हमने उसकी मदद की रूहुल कुदुस से। अल्लाह अगर चाहता तो इनके बाद वाले साफ हुक्म आ जाने के बाद न लड़ते मगर उन्होंने मतभेद किया। फिर इनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इंकार किया। और अगर अल्लाह चाहता तो वे न लड़ते। मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (252-253)

अल्लाह की तरफ से कोई पुकारने वाला जब लोगों को पुकारता है तो उसकी पुकार में ऐसी निशानियां शामिल होती हैं कि लोगों को यह समझने में देर न लगे कि वह ख़ुदा की तरफ से है। इसके बावजूद लोग इसका इंकार कर देते हैं और ये इंकार करने वाले सबसे पहले वे लोग होते हैं जो रिसालत को मानते चले आ रहे थे। इसकी वजह यह होती है कि वे जिस रसूल को मान रहे होते हैं उसकी कुछ ख़ुसूसियात की बुनियाद पर वह उसकी अफजलियत का तसव्वुर कायम कर लेते हैं। वे समझते हैं कि जब हमारा रसूल इतना अफजल है और उसे

हम मान रहे हैं तो अब किसी और को मानने की क्या जरूरत।

हर पैग़म्बर मुख़्तलिफ हालात में आता है और अपने मिशन की तक्मील के लिए हर एक को अलग-अलग चीजों की जरूरत होती है। इस एतबार से किसी पैग़म्बर को एक फजीलत (ख़ास चीज) दी जाती है और किसी को दूसरी फजीलत। बाद के दौर में पैग़म्बर की यही फजीलत उसके उम्मतियों के लिए फितना बन जाती है। वे अपने नबी को दी जाने वाली फजीलत को ताईदी फजीलत के बजाए मुतलक फजीलत के मअना में ले लेते हैं। वे समझते हैं कि हम सबसे अफजल पैग़म्बर को मानते हैं। इसलिए अब हमें किसी और को मानने की जरूरत नहीं। मूसा (अलै०) को मानने वालों ने मसीह (अलै०) का इंकार किया क्योंकि वे समझते थे उनका नबी इतना अफजल है कि ख़ुदा बराहेरास्त उससे हमकलाम हुआ। हजरत मसीह के मानने वालों ने मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार किया। क्योंकि उन्होंने समझा कि वह ऐसी हस्ती को मान रहे हैं जिसकी फजीलत इतनी ज्यादा है कि ख़ुदा ने उसे बाप के बग़ैर पैदा किया। इसी तरह अल्लाह के वे बंदे जो उम्मते मुहम्मदी की इस्लाह व तजदीद के लिए उठे उनका भी लोगों ने इंकार किया। क्योंकि उनके मुख़ातिबीन की नफ्सियात यह थी कि हम बुजुर्गों के वारिस हैं, हम बड़ों का दामन थामे हुए हैं फिर हमें किसी और की क्या जरूरत। उम्मतों के जवाल (पतन) के जमाने में ऐसा होता है कि लोग दुनिया के रास्ते पर चल पड़ते हैं। इसी के साथ वे चाहते हैं कि उनकी जन्नत भी महफूज रहे। उस वक्त यह अकीदा उनके लिए एक नफ्सियाती सहारा बन जाता है। वे अपनी मुकद्दस शख़्सियतों की अफजलियत के तसव्वुर में यह तस्कीन पा लेते हैं कि दुनिया में चाहे वे कुछ भी करें उनकी आख़िरत कभी ख़तरे में नहीं पड़ेगी।

यही ग़लत एतमाद है जो लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की मुख़ालिफत पर अड़ा देता है। अल्लाह के लिए यह मुमकिन था कि वह लोगों की हिदायत और रहनुमाई के लिए कोई दूसरा निजाम कायम करता जिसमें किसी के लिए इख़्तेलाफ (मतभेद) की गुंजाइश न हो। मगर यह दुनिया इम्तेहान की जगह है। यहां तो इसी बात की आजमाइश हो रही है कि आदमी ग़ैब (अदृश्य) की हालत में ख़ुदा को पाए। इंसान की जबान से बुलंद होने वाली ख़ुदाई आवाज को पहचाने। जाहिरी पर्दों से गुजर कर सच्चाई को उसके बातिनी (भीतरी) रूप में देख ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَدْ تَبَيَّنَ

الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾

ऐ ईमान वालो ख़र्च करो उन चीजों से जो हमने तुम्हें दिया है उस दिन के आने से पहले जिसमें न ख़रीद-फरोख़्त है और न दोस्ती है और न सिफारिश। और जो इंकार करने वाले हैं वही हैं जुल्म करने वाले। अल्लाह, इसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह जिंदा है, सबको थामने वाला। उसे न ऊंघ आती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कौन है जो उसके पास उसकी इजाजत के बग़ैर सिफारिश करे। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके इल्म में से किसी चीज का इहाता (ग्रहण) नहीं कर सकते, मगर जो वह चाहे। उसकी हुकूमत आसमानों और जमीन में छाई हुई है। वह थकता नहीं इनके थामने से। और वही है बुलंद मर्तबा, बड़ा। दीन के मामले में कोई जबरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है। पस जो शख़्स शैतान का इंकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने मजबूत हल्का पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह काम बनाने वाला है ईमान वालों का, वह उन्हें अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ लाता है, और जिन लोगों ने इंकार किया उनके दोस्त शैतान हैं, वे उन्हें उजाले से निकाल कर अंधेरों की तरफ ले जाते हैं। ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (254-257)

ख़ुदा को वही पाता है जो इंफ़ाक (ख़ुदा की राह में ख़र्च करना) की कीमत देकर ख़ुदा को इख़्तियार करे। और कोई आदमी जब ख़ुदा को पा लेता है तो वह एक ऐसी रोशनी को पा लेता है जिसमें वह भटके बग़ैर चलता रहे। यहां तक कि जन्नत में पहुंच जाए। इसके बरअक्स जो शख़्स इंफ़ाक की कीमत दिए बग़ैर ख़ुदा को इख़्तियार करे वह हमेशा अंधेरे में रहता है, जहां शैतान उसे बहका कर ऐसे रास्तों पर चलाता है जिसकी आख़िरी मंजिल जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं।

इंफ़ाक से मुराद अपने आपको और अपने असासे (धन-सम्पत्ति) को दीन की राह में ख़र्च करना है। अपनी मस्लेहतों को कुर्बान करके दीन की तरफ आगे बढ़ना है। आदमी जब किसी अकीदे (आस्था, विश्वास) को इंफ़ाक की कीमत पर अपनाए तो इसका मतलब यह होता है कि वह इसे अपनाने में संजीदा (Sincere) है। यह संजीदा होना बेहद अहम है। किसी मामले में संजीदा होना ही वह चीज है जो आदमी पर इस मामले के भेदों को खोलता है। संजीदा होने के बाद ही यह इम्कान पैदा होता है कि आदमी और उसके मक्सद के दर्मियान हक़ीक़ी ताल्लुक कायम हो और मक्सद के तमाम पहलू उस पर वाज़ेह हों। इसके बरअक्स

मामला उस शख़्स का है जो अपनी हस्ती की हवालगी की कीमत पर दीन को न अपनाए। ऐसा शख़्स कभी दीन के मामले में संजीदा नहीं होगा और इस बिना पर वह आख़िरत के मामले को एक आसान मामला मान लेगा। वह समझेगा कि बुजुर्गों की सिफारिश या दीन के नाम पर कुछ रस्मी और जाहिरी कार्रवाइयां आख़िरत की नजात के लिए काफी हैं। आख़िरत के मामले में संजीदा न होने की वजह से वह इस राज को न समझेगा कि आख़िरत तो मालिके कायनात की अज़्मत व जलाल (प्रताप) के ज़ुहूर का दिन है। एक ऐसे दिन के बारे में महज सरसरी चीजों पर कामयाबी की उम्मीद कर लेना ख़ुदा की ख़ुदाई का कमतर अंदाजा करना है जो ख़ुदा के यहां आदमी के जुर्म को बढ़ाने वाला है न कि वह उसकी मकबूलियत का सबब बने। ख़ुदा की बात आदमी के सामने दलील की जबान में आती है और वह कुछ अल्फ़ाज बोलकर उसे रद्द कर देता है। यही शैतानी वसवसा है। हिदायत उसे मिलती है जो शैतान के वसवसे से अपने को बचाए और ख़ुदाई दलील को पहचान कर उसके आगे झुक जाए।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत की। क्योंकि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। वह बोला कि मैं भी जिलाता हूं और मारता हूं। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूर्व से निकालता है तुम उसे पश्चिम से निकाल दो। तब वह मुंकिर हैरान रह गया। और अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। (258)

मौजूदा जमाने में अवामी ताईद से हुकूमत की पात्रता हासिल होती है। मगर जम्हूरियत के दौर से पहले अक्सर बादशाह लोगों को यह यकीन दिलाकर उनके ऊपर हुकूमत करते थे कि वे ख़ुदा के इंसानी पैकर हैं। प्राचीन इराक के बादशाह नमरूद का मामला यही था जो हजरत इब्राहीम का समकालीन था। उसकी कौम सूरज को देवताओं का सरदार मानती थी। और उसकी पूजा करती थी। नमरूद ने कहा कि वह सूर्य-देवता का प्रकट रूप है, इसलिए वह लोगों के ऊपर हुकूमत करने का ख़ुदाई हक रखता है। हजरत इब्राहीम ने उस वक्त के इराक में जब तौहीद (एकेश्वरवाद) की आवाज बुलंद की तो इसका सियासत और हुकूमत से बराहेरास्त कोई ताल्लुक न था। आप लोगों से सिर्फ यह कह रहे थे कि तुम्हारा ख़ालिक और मालिक सिर्फ एक अल्लाह है। कोई नहीं जो ख़ुदाई में उसका शरीक हो। इसलिए तुम उसी की इबादत करो। उसी से डरो और उसी से उम्मीदें कायम करो। ताहम इस ग़ैर-सियासी दावत में नमरूद को अपनी सियासत पर जद पड़ती हुई नजर आई। ऐसा अकीदा जिसमें सूरज को एक शक्तिहीन रचना बताया गया हो वह गोया उस आस्थागत आधार ही को ढा रहा था जिसके ऊपर नमरूद ने

अपना सियासी तख़्त बिछा रखा था। इस वजह से आपका दुश्मन हो गया।

इब्राहीम (अलै०) ने नमरूद से जो गुफ्तुगू की उससे नबियों की दावत (आह्वान) का तरीका मालूम होता है। नमरूद के सवाल के जवाब में आपने फरमाया कि मेरा रब वह है जिसके इख़्तियार में ज़िन्दगी और मौत है। नमरूद ने मुनाजिराना (शास्त्रार्थ) अंदाज अपनाते हुए कहा कि मौत और जिंदगी पर तो मैं भी इख़्तियार रखता हूं। जिसे चाहूं मरवा डालूं और जिसे चाहूं जिंदा रहने दूं। आप नमरूद का जवाब दे सकते थे। मगर आपने गुफ्तुगू को मुनाजिराना बनाना पसंद नहीं किया। इसलिए आपने फौरन दूसरी मिसाल पेश कर दी जिसके जवाब में नमरूद उस किस्म की बात न कह सकता था जो उसने पहली मिसाल के जवाब में कही। हजरत इब्राहीम के लिए नमरूद हरीफ (प्रतिपक्षी) न था बल्कि मदऊ (संबोधित व्यक्ति) की हैसियत रखता था। इसलिए उन्हें यह समझने में देर न लगी कि इस्तदलाल (तर्क) का कौन-सा हकीमाना अंदाज उन्हें अपनाना चाहिए।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। इसलिए इसे इस तरह बनाया गया है कि एक ही चीज को आदमी दो भिन्न अर्थों में ले सके। मसलन एक शख़्स के पास दौलत और सत्ता आ जाए तो वह इसे ऐसे रुख़ से देख सकता है कि उसकी कामयाबी उसे अपनी क्षमताओं का नतीजा नजर आए। इसी तरह यह भी मुमकिन है कि वह इसे ऐसे रुख़ से देखे कि उसे महसूस हो कि जो कुछ उसे मिला है वह सरासर ख़ुदा का इनाम है। पहली सूरत जुल्म की सूरत है और दूसरी शुक्र की सूरत। जिस शख़्स के अंदर जालिमाना मिजाज हो उसके लिए मौजूदा दुनिया सिर्फ गुमराही की ख़ुराक होगी। उसे हर वाकये में घमंड और ख़ुदपसंदी की ग़िजा मिलेगी। इसके विपरीत जिसके अंदर शुक्र का मिजाज होगा उसके लिए हर वाकये में हिदायत का सामान होगा। ख़ुदा की दुनिया अपनी तमाम वुस्अतों (व्यापकताओं) के साथ उसके लिए ईमानी रिज़्क का दस्तरख़्वान बन जाएगी।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ
يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ
لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ ۖ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ
كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ
قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ
ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ
اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

या जैसे वह शख़्स जिसका गुजर एक बस्ती पर से हुआ। और वह अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उसने कहा : हलाक हो जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को दुबारा कैसे जिंदा करेगा। फिर अल्लाह ने उस पर सौ वर्षों तक के लिए मौत तारी कर दी। फिर उसे उठाया। अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर इस हालत में रहे। उसने कहा एक दिन या एक दिन से कुछ कम। अल्लाह ने कहा नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो। अब तुम अपने खाने पीने की चीजों को देखो कि वे सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो। और ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों की तरफ देखो, किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं। फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं। पस जब उस पर वाजेह हो गया तो कहा मैं जानता हूं कि बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखता है। और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह जिंदा करेगा। अल्लाह ने कहा, क्या तुमने यकीन नहीं किया। इब्राहीम ने कहा क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाए। फरमाया तुम चार परिंदे लो और उन्हें अपने से हिला लो। फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें बुलाओ। वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे। और जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (259-260)

यहां मौत के बाद दुबारा जिंदा किए जाने के जिन दो तजुर्बों का जिक्र है इनका तअल्लुक़ नबियों से है। पहला तजुर्बा संभवतः उज़ैर (अलै०) के साथ गुजरा जिनका जमाना पांचवीं सदी ईसा पूर्व का है। और दूसरा तजुर्बा इब्राहीम (अलै०) से तअल्लुक रखता है। जिनका जमाना 2160-1985 ई० पू० के दर्मियान है। अंबिया ख़ुदा की तरफ से इसलिए मुक़र्रर होते हैं कि लोगों को ग़ैबी हकीक़तों से बाख़बर करें। इसलिए उन्हें वे ग़ैबी चीजें खोल करके दिखा दी जाती हैं जिन पर दूसरों के लिए असबाब का पर्दा डाल दिया गया है। नबियों के साथ यह ख़ास मामला इसलिए होता है ताकि वे इन चीजों के जाती मुशाहिद (प्रत्यक्षदर्शी) बनकर इनके बारे में लोगों को बाख़बर कर सकें। वे लोगों को जिन ग़ैबी हकीक़तों की ख़बर दें उनके बारे में कह सकें कि हम एक देखी हुई चीज से तुम्हें बाख़बर कर रहे हैं न कि महज सुनी हुई चीज से।

नबियों को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत दी जाती है। नुबुव्वत से पहले उनकी पूरी जिंदगी लोगों के सामने इस तरह गुजरती है कि इनमें से किसी शख़्स को झूठ का तजुर्बा नहीं होता। तकरीबन आधी सदी तक माहौल के अंदर अपने सच्चे होने का सुबूत देने के बाद वह वक्त आता है कि अल्लाह तआला उन्हें लोगों के सामने उन ग़ैबी हकीक़तों के एलान के लिए खड़ा करे जिन्हें आजमाइश की मस्लेहत के सबब लोगों से छुपा दिया गया है। माहौल के ये सबसे ज्यादा सच्चे लोग एक तरफ अपने मुशाहिदे (प्रत्यक्ष अवलोकन) से लोगों को बाख़बर करते हैं। और दूसरी तरफ अक्ल और फ़ित्तरत के शवाहिद (प्रमाणों) से इसे मुदल्लल (तर्क पूर्ण) करते हैं। साथ ही यह कि नबियों को हमेशा शदीदतरीन हालात से साबका पेश आता है। इसके बावजूद वे अपने कौल से फिरते नहीं, वे इंतिहाई साबितकदमी के साथ अपनी बात पर जमे रहते हैं। इस तरह यह साबित हो जाता है कि वे जो कुछ कहते हैं उसमें वे पूरी तरह

संजीदा हैं। फर्जी तौर पर उन्होंने कोई बात नहीं गढ़ ली है। क्योंकि गढ़ी हुई बात को पेश करने वाला कभी इतने सख़्त हालात में अपनी बात पर कायम नहीं रह सकता। और न उसकी बात ख़ारजी (वाह्य) कायनात से इतनी ज्यादा मुताबिक हो सकती है कि वह सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बन जाए।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿۲۶۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶۴﴾

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिससे सात बालें पैदा हों, हर बाली में सौ दानें हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए चाहता है। और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। जो लोग अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ पहुंचाते हैं उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मग़ीन होंगे। मुनासिब बात कह देना और दरगुजर (क्षमा) करना उस सदके से बेहतर है जिसके पीछे सताना हो। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तहम्मुल (संयम) वाला है। ऐ ईमान वालो एहसान रख कर और सता कर अपने सदके को जाया न करो, जिस तरह वह शख़्स जो अपना माल दिखावे के लिए ख़र्च करता है और वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर जोर की बारिश हो जो उसे बिल्कुल साफ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ नहीं लगेगी। और अल्लाह इंकार करने वालों को राह नहीं दिखाता। (261-264)

हर अमल जो आदमी करता है वह गोया एक बीज है जो आदमी 'जमीन' में डालता है। अगर उसका अमल इसलिए था कि लोग उसे देखें तो उसने अपना बीज दुनिया की जमीन

में डाला ताकि यहां की जिंदगी में अपने किए का फल पा सके। और अगर उसका अमल इसलिए था कि अल्लाह उसे 'देखे' तो उसने आख़िरत की जमीन में अपना बीज डाला जो अगली दुनिया में अपने फूल और फल की बहारें दिखाए। दुनिया में एक दाने से हजार दाने पैदा होते हैं। यही हाल आख़िरत के खेत में दाना डालने का भी है। दुनिया के फायदे या दुनिया की शोहरत व इज्जत के लिए ख़र्च करने वाला इसी दुनिया में अपना मुआवजा लेना चाहता है ऐसे आदमी के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। मगर जो शख़्स अल्लाह के लिए ख़र्च करे उसका हाल यह होता है कि वह किसी पर एहसान नहीं जताता, उसने जब अल्लाह के लिए ख़र्च किया है तो इंसान पर उसका क्या एहसान। उसकी रकम ख़र्च होकर जिन लोगों तक पहुंचती है उनकी तरफ से उसे अच्छा जवाब न मिले तो वह नराजगी का इज्हार नहीं करता। उसे तो अच्छा जवाब अल्लाह से लेना है, फिर इंसानों से मिलने या न मिलने का उसे क्या ग़म। अगर किसी साइल (सवाल करने वाला) को वह नहीं दे सकता तो वह उससे बुरी बात नहीं कहता बल्कि नर्मी के साथ माअजरत कर देता है। क्योंकि वह जानता है कि वह जो कुछ बोल रहा है ख़ुदा के सामने बोल रहा है। ख़ुदा का ख़ौफ उसे इंसान के सामने जबान रोकने पर मजबूर कर देता है।

पत्थर की चट्टान के ऊपर कुछ मिट्टी जम जाए तो बजाहिर वह मिट्टी दिखाई देगी। मगर बारिश का झोंका आते ही मिट्टी की ऊपरी तह बह जाएगी और अंदर से ख़ाली पत्थर निकल आएगा। ऐसा ही हाल उस इंसान का होता है जो बस ऊपरी दीनदारी लिए हुए हो। दीन उसके अंदर तक दाख़िल न हुआ हो। ऐसे आदमी से अगर कोई साइल बेढंगे अंदाज से सवाल कर दे या किसी की तरफ से कोई बात सामने आ जाए जो उसकी अना (अहंकार) पर चोट लगाने वाली हो तो वह बिफर कर इंसाफ की हदों को तोड़ देता है। ऐसा एक वाकया एक ऐसा तूफान बन जाता है जो उसकी ऊपरी मिट्टी को बहा ले जाता है और फिर उसका अंदर का इंसान सामने आ जाता है जिसे वह दीन के जाहिरी लबादे के पीछे छुपाए हुए था। अल्लाह के लिए अमल करना गोया देखे पर अनदेखे को तरजीह देना। जो इस बुलंद नजरी का सुबूत दे वही वह शख़्स है जिस पर ख़ुदा की छुपी हुई मअरफत के दरवाजे खुलते हैं।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۶۶﴾ ع

और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए और अपने नफ़्स में पुख़्तगी के लिए ख़र्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो। उस पर ज़ोर की बारिश पड़ी तो वह दुगना फल लाया। और अगर ज़ोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी काफी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। उसमें उसके लिए हर किस्म के फल हों। और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमजोर हों। तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो। फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियां बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो। (265-266)

आदमी जब किसी चीज के लिए अमल करता है तो इसी के साथ वह उसके हक में अपनी कुव्वते इरादी (इच्छाशक्ति) को मजबूत करता है। अगर वह अपनी ख़्वाहिश के तहत अमल करे तो उसने अपने दिल को अपनी ख़्वाहिश पर जमाया। इसके बरअक्स आदमी अगर वहां अमल करे जहां ख़ुदा चाहता है कि अमल किया जाए तो उसने अपने दिल को ख़ुदा पर जमाया। दोनों राहों में ऐसा होता है कि कभी आसान हालात में अमल करना होता है और कभी मुश्किल हालात में। ताहम हालात जितने शदीद हों, आदमी को जितना ज्यादा मुश्किलों का मुकाबला करते हुए अपना अमल करना पड़े उतना ही ज्यादा वह अपने पेशेनजर मक्सद के हक में अपने इरादे को मुस्तहकम (दृढ़) करेगा। आम हालात में अल्लाह की राह में अपने असासे को ख़र्च करना भी बाइसे सवाब है। मगर जब मुख़ालिफ असबाब की वजह से ख़ुसूसी कुव्वते इरादी को इस्तेमाल करके आदमी अल्लाह की राह में अपना असासा दे तो इसका सवाब अल्लाह के यहां बहुत ज्यादा है। जिस मद में ख़र्च करना दुनियावी एतबार से बेफ़ायदा हो उसमें अल्लाह की रिजा के लिए ख़र्च करना, जिसको देने का दिल न चाहे उसे अल्लाह के लिए देना, जिससे अच्छे व्यवहार पर तबीयत अमादा न हो उससे अल्लाह की ख़ातिर अच्छा व्यवहार करना, वे चीजें हैं जो आदमी को सबसे ज्यादा ख़ुदापरस्ती पर जमाती हैं और उसे ख़ुदा की ख़ुसूसी रहमत व नुसरत का मुस्तहिक बनाती हैं।

आदमी जवानी की उम्र में बाग़ लगाता है ताकि बुढ़ापे की उम्र में उसका फल खाए। फिर वह शख़्स कैसा बदनसीब है जिसका हरा भरा बाग़ उसकी आख़िर उम्र में ऐन उस वक्त बर्बाद हो जाए जबकि वह सबसे ज्यादा उसका मोहताज हो और उसके लिए वह वक्त भी ख़त्म हो चुका हो जबकि वह दोबारा नया बाग़ लगाए और उसे नए सिरे से तैयार करे। ऐसा ही हाल उन लोगों का है जिन्होंने दीन का काम दुनियावी इज्जत और फायदे के लिए किया, वे बजाहिर नेकी और भलाई का काम करते रहे। मगर उनका काम सिर्फ देखने में ही दुनियादार ों से अलग था हकीकत के एतबार से दोनों में कोई फर्क न था। आम दुनियादार जिस दुनियावी तरक्की और नामवरी के लिए दुनियावी नक्शों में दौड़ धूप कर रहे थे उसी दुनियावी तरक्की और नामवरी के लिए उन्होंने दीनी नक्शों में दौड़ धूप जारी कर दी। जो शोहरत व इज्जत दूसरे लोग दुनिया की इमारत में अपना असासा ख़र्च करके हासिल कर रहे थे, उसी शोहरत व इज्जत को उन्होंने दीन की इमारत में अपना असासा ख़र्च करके हासिल करना चाहा। ऐसे लोग जब मरने के बाद आख़िरत के आलम में पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए कुछ न होगा। उन्होंने जो कुछ किया इसी दुनिया के लिए किया। फिर वे अपने किए का फल अगली दुनिया में किस तरह पा सकते हैं। ख़ुदा की निशानियां हमेशा जाहिर होती हैं मगर वे खामोश जबान में होती हैं। इनसे वही सबक ले सकता है जो अपने अंदर सोचने की सलाहियत पैदा कर चुका हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۠ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۔ اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاۗءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۚ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۭ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ

ऐ ईमान वालो ख़र्च करो उम्दा चीज को अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए जमीन में से पैदा किया है। और घटिया चीज का इरादा न करो कि उसमें से ख़र्च करो। हालांकि तुम कभी इसे लेने वाले नहीं, यह और बात है कि चश्मपोशी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है। शैतान तुम्हें मोहताजी से डराता है और बुरी बात पर उभारता है और अल्लाह वादा देता है अपनी बख़्शिश का और फज्ल का और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, जानने वाला है। वह जिसे चाहता है हिक्मत दे देता है और जिसे हिक्मत मिली उसे बड़ी दौलत मिल गई। और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। (267-269)

आदमी दुनिया में जो कुछ कमाता है उसे ख़र्च करने की दो सूरतें हैं। एक यह कि उसे शैतान के बताए हुए रास्ते में ख़र्च किया जाए। दूसरे यह कि उसे अल्लाह के बताए हुए रास्ते में ख़र्च किया जाए। शैतान यह करता है कि आदमी के जाती तकाजों की अहमियत उसके दिल में बिठाता है। वह उसे सिखाता है कि तुमने जो कुछ कमाया है उसका बेहतरीन मसरफ यह है कि इसे अपनी जाती जरूरतों को पूरा करने में लगाओ। फिर जब शैतान देखता है कि आदमी के पास उसकी हकीकी जरूरत से ज्यादा है तो वह उसके अंदर एक और जज्बा भड़का देता है। यह नुमूद व नुमाइश (दिखावे) का जज्बा है। अब वह अपनी दौलत को नुमाइशी कामों में ख़ूब बहाने लगता है और ख़ुश होता है कि उसने अपनी दौलत को बेहतरीन मसरफ में लगाया।

आदमी को चाहिए कि अपने माल को अपनी जाती चीज न समझे बल्कि अल्लाह की चीज समझे। वह अपनी कमाई में से अपनी हकीकी जरूरत के बराबर ले ले और उसके बाद जो कुछ है उसे बुलंदतर मकासिद में लगाए। वह ख़ुदा के कमजोर बंदों को दे और ख़ुदा के दीन की जरूरतों में ख़र्च करे। आदमी जब अल्लाह के कमजोर बंदों पर अपना माल ख़र्च करता है तो गोया वह अपने रब से इस बात का उम्मीदवार बन रहा होता है कि आख़िरत में जब वह ख़ाली हाथ ख़ुदा के सामने हाजिर हो तो उसका ख़ुदा उसे अपनी रहमतों से महरूम न करे। इसी तरह

जब वह दीन की जरूरतों में अपना माल देता है तो वह अपने आपको ख़ुदा के मिशन में शरीक करता है। वह अपने माल को ख़ुदा के माल में शामिल करता है। ताकि उसकी हकीर (तुच्छ) पूंजी ख़ुदा के बड़े ख़ज़ाने में मिलकर ज्यादा हो जाए।

जो शख़्स अपने माल को अल्लाह के बताए हुए तरीके के मुताबिक ख़र्च करता है वह इस बात का सुबूत देता है कि उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ, विवेकशीलता) और दानाई (प्रबुद्धता) में से हिस्सा मिला है। सबसे बड़ी नादानी यह है कि आदमी माल की मुहब्बत में मुब्तला हो और उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से रुक जाए और सबसे बड़ी दानाई यह है कि आर्थिक मफ़ादात आदमी के लिए अल्लाह की राह में बढ़ने में रुकावट न बनें। वह अपने आपको ख़ुदा में इतना मिला दे कि ख़ुदा को अपना और अपने को ख़ुदा का समझने लगे। जो शख़्स जाती मस्लेहतों के ख़ोल में जीता है उसके अंदर वह निगाह पैदा नहीं हो सकती जो बुलंदतर हकीक्तों को देखे और आला कैफियतों का तजुर्बा करे। इसके विपरीत जो शख़्स जाती मस्लेहतों को नजरअंदाज करके ख़ुदा की तरफ बढ़ता है वह अपने आपको सीमित दायरे से ऊपर उठाता है। वह अपने शुऊर को उस ख़ुदा के सम-स्तर कर लेता है जो ग़नी (सर्वसम्पन्न), हमीद (प्रशंसित), वसीअ (सर्वांगीण) और अलीम (सर्वज्ञ) है। वह चीजों को उनके अस्ली रूप में देखने लगता है। क्योंकि वह उन हदबंदियों के पार हो जाता है जो आदमी के लिए किसी चीज को उसके अस्ली रूप में देखने में रुकावट बनती हैं। कोई बात चाहे कितनी ही सच्ची हो मगर उसकी सच्चाई किसी आदमी पर उसी वक्त खुलती है जबकि वह उसे खुले जेहन से देख सके।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۭ وَمَا
لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَ
تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَاۗءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ
اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝ لِلْفُقَرَاۗءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ۡ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَاۗءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ
تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْــَٔـلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ
اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً
فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

और तुम जो ख़र्च करते हो या जो नज़्र (मन्नत) मानते हो उसे अल्लाह जानता है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। अगर तुम अपने सदकात जाहिर करके दो तब भी अच्छा है और अगर तुम उन्हें छुपाकर मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाकिफ है। उन्हें हिदायत पर लाना तुम्हारा जिम्मा नहीं। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो माल तुम ख़र्च करोगे अपने ही लिए करोगे। और तुम न ख़र्च करो मगर अल्लाह की रिजा चाहने के लिए। और तुम जो माल ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे लिए इसमें कमी नहीं की जाएगी। ये उन हाजतमंदों के लिए हैं जो अल्लाह की राह में घिर गए हों, जमीन में दौड़ धूप नहीं कर सकते। नावाकिफ आदमी उन्हें ग़नी ख़्याल करता है उनके न मांगने की वजह से। तुम उन्हें उनकी सूरत में पहचान सकते हो। वे लोगों से लिपट कर नहीं मांगते। और जो माल तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह को मालूम है। जो लोग अपने मालों को रात और दिन, छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, उनके लिए उनके रब के पास अज्र है। और उनके लिए न ख़ौफ है और न वे ग़मगीन होंगे। (270-274)

अल्लाह की राह में ख़र्च करने की सबसे बड़ी मद यह है कि उन दीनी ख़ादिमों की माली मदद की जाए जो दीन की जद्दोजहद में अपने को पूरी तरह लगा देने की वजह से बेरोजगार हो गए हों। एक कामयाब व्यापारी के पास किसी दूसरे काम के लिए वक्त नहीं रहता। ठीक यही मामला ख़िदमते दीन का है। जो शख़्स यकसूई के साथ अपने आपको दीन की ख़िदमत में लगाए उसके पास मआशी (आर्थिक) जद्दोजहद के लिए वक्त नहीं रहेगा। साथ ही यह कि हर काम की अपनी एक फ़ितरत है और अपनी फ़ितरत के लिहाज से वह आदमी का जेहन एक ख़ास ढंग पर बनाता है। जो शख़्स तिजारत में लगता है उसके अंदर धीरे-धीरे तिजारती मिजाज पैदा हो जाता है। तिजारत की राह की बारीकियां फौरन उसकी समझ में आ जाती हैं। जबकि वही आदमी दीन के रास्ते की बातों को गहराई के साथ पकड़ नहीं पाता। यही मामला इसके विपरीत ख़ादिमे दीन का होता है। अब इसका हल क्या हो। क्योंकि किसी समाज में दोनों किस्म के कामों का होना जरूरी है। इस मसले का हल यह है कि जिन लोगों के पास आर्थिक साधन जमा हो गए हैं उसमें वे उन लोगों का हिस्सा लगाएं जो दीनी मसरूफियत (व्यस्तता) की वजह से अपना रोजगार हासिल न कर सके। यह गोया एक तरह का ख़ामोश विभाजन है जो पक्षों के दर्मियान ख़ालिस अल्लाह की रिजा के लिए होता है। ख़ादिमे दीन ने अपने आपको अल्लाह के लिए यकसू किया था, इसलिए वह इंसान से नहीं मांगता और न पाने का उम्मीदवार रहता है। दूसरी तरफ साहिबे मआश यह सोचता है कि मेरे पास मआशी वसाइल (आर्थिक साधन) इस कीमत पर आए हैं कि मैं ख़िदमते दीन की राह में वह न कर सका जो मुझे करना चाहिए। इसलिए इसकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) यह है कि मैं अपने माल में अपने उन भाइयों का हिस्सा लगाऊं जो गोया मेरी कमी की तलाफी ख़ुदा के यहां कर रहे हैं।

जब दीन की जद्दोजहद उस मरहले में हो कि दीन के नाम पर रोजगार के अवसर न मिलते हों, जब दीन की राह में लगने वाला आदमी बेरोजगार हो जाए, उस वक्त दीन के ख़ादिमों को अपना माल देना बजाहिर माहौल के एक ग़ैर-अहम तबके से अपना रिश्ता जोड़ना है। ऐसे लोगों पर ख़र्च करना मज्लिसों में काबिले जिक्र नहीं होता। वह आदमी की हैसियत और नामवरी में इजाफ़ा नहीं करता। मगर यही वह ख़र्च है जो आदमी को सबसे ज्यादा अल्लाह की रहमतों का मुस्तहिक बनाता है।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَوٰا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَٰنُ
مِنَ الْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوٓا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَوٰا ۗ وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ
وَحَرَّمَ الرِّبَوٰا ۚ فَمَنْ جَآءَهُۥ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهِۦ فَانْتَهَىٰ فَلَهُۥ مَا سَلَفَ وَ
أَمْرُهُۥٓ إِلَى اللَّهِ ۖ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ
اللَّهُ الرِّبَوٰا وَيُرْبِي الصَّدَقَٰتِ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا الزَّكَوٰةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾

जो लोग सूद खाते हैं वे कियामत में न उठेंगे मगर उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने छूकर ख़बती बना दिया हो। यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हराम किया है। फिर जिस शख़्स के पास उसके रब की तरफ से नसीहत पहुंची और वह इससे रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका वह उसके लिए है। और उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो शख़्स फिर वही करे तो वही लोग दोज़ख़ी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को घटाता है और सदकात को बढ़ाता है। और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनाहगारों को। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए और नमाज की पाबंदी की और ज़कात अदा की, उनके लिए उनका अज्र है उनके रब के पास। उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (275-277)

बंदों के दर्मियान आपस में जो मआशी (आर्थिक) तअल्लुकात मत्लूब हैं उनकी अलामत ज़कात है। ज़कात में एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के हुक़ूक़ का एतराफ यहां तक करता है कि वह ख़ुद अपनी कमाई का एक हिस्सा निकाल कर अपने भाई को देता है। जो दीन हुक़ूक़ शनासी का ऐसा माहौल बनाना चाहता हो वह सूद के ज़रपरस्ताना (धन लोलुपतापूर्ण) तरीके को किसी तरह कुबूल नहीं कर सकता। ऐसे समाज में आपसी लेन देन तिजारत के उसूल पर होता है न कि सूद के उसूल पर। तिजारत में भी आदमी नफा लेता है। मगर तिजारत का जो नफा है वह आदमी की महनत और उसके जोखिम उठाने की कीमत होता है। जबकि सूद का नफा महज़ ख़ुदगर्जी और ज़रअंदोज़ी का नतीजा है।

सूद का कारोबार करने वाला अपनी दौलत दूसरे को इसलिए देता है कि वह इसके जरिए अपनी दौलत को और बढ़ाए। वह यह देखकर ख़ुश होता है कि उसका सरमाया यकीनी शरह (दर) से बढ़ रहा है। मगर इस अमल के दौरान वह ख़ुद अपने अंदर जो इंसान तैयार करता है वह एक ख़ुदगर्जी और दुनियापरस्त इंसान है। इसके बरअक्स जो आदमी अपनी कमाई में से सदका करता है, जो दूसरों की जरूरतमंदी को अपने लिए तिजारत का सौदा नहीं बनाता

बल्कि उसके साथ अपने को शरीक करता है, ऐसा शख़्स अपने अमल के दौरान अपने अंदर जो इंसान तैयार कर रहा है वह पहले से बिल्कुल मुख़्तलिफ (भिन्न) इंसान है। यह वह इंसान है जिसके दिल में दूसरों की ख़ैरख़्वाही है। जो जाती दायरे से ऊपर उठकर सोचता है।

दुनिया में आदमी इसलिए नहीं भेजा गया है कि वह यहां अपनी कमाई के ढेर लगाए। आदमी के लिए ढेर लगाने की जगह आख़िरत है। दुनिया में आदमी को इसलिए भेजा गया है कि यह देखा जाए कि इनमें कौन है जो अपनी ख़ुसूसियतों के एतबार से इस काबिल है कि उसे आख़िरत की जन्नती दुनिया में बसाया जाए। जो लोग इस सलाहियत का सुबूत देंगे उन्हें ख़ुदा जन्नत का बाशिंदा बनने के लिए चुन लेगा। और बाकी तमाम लोग कूड़ा करकट की तरह जहन्नम में फेंक दिए जाऐंगे। सदका की रूह (मूल भावना) हाजतमंद को अपना माल ख़ुदा के लिए देना है और सूद की रूह इस्तहसाल (शोषण) के लिए देना है। सदका इस बात की अलामत है कि आदमी आख़िरत में अपने लिए नेमतों का ढेर देखना चाहता है। इसके मुकाबले में सूद इस बात की अलामत है कि वह इसी दुनिया के लिए ढेर लगाने का ख़्वाहिशमंद है। ये दो अलग-अलग इंसान हैं और यह मुमकिन नहीं कि ख़ुदा के यहां दोनों का अंजाम एक जैसा करार पाए। दुनिया उसी को मिलती है जिसने दुनिया के लिए महनत की हो। इसी तरह आख़िरत उसी को मिलेगी जिसने आख़िरत के लिए अपना असासा (धन-सम्पत्ति) कुर्बान किया।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَوٰٓا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾
فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ۖ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ
رُءُوسُ أَمْوَٰلِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾ وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ
إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا
تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जो सूद बाकी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से लड़ाई के लिए ख़बरदार हो जाओ। और अगर तुम तौबा कर लो तो अस्ल रकम के तुम हकदार हो, न तुम किसी पर जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए। और अगर एक शख़्स तंगी वाला है तो उसकी फराख़ी तक मोहलत दो। और अगर माफ कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो। और उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ पूरा-पूरा मिल जाएगा। और उन पर जुल्म न होगा। (278-281)

मुआशिरे की इस्लाह का बुनियादी उसूल यह है कि मुआशिरे का कोई फर्द न किसी दूसरे के ऊपर ज्यादती करे और न दूसरा कोई उसके ऊपर ज्यादती करे। न कोई किसी के ऊपर जालिम बने और न कोई किसी को मज्लूम बनाए। सूदख़ोरी एक खुला हुआ मआशी

(आर्थिक) जुल्म है, इसलिए इस्लाम ने इसे हराम ठहराया। यहां तक कि इस्लामी शासन के तहत सूदी कारोबार को फौजदारी जुर्म करार दिया। ताहम एक सूदख़ोर को जिस तरह दूसरे के साथ जालिमाना कारोबार करने की इजाजत नहीं है उसी तरह किसी दूसरे को भी यह हक नहीं है कि वह सूदख़ोर को अपने जुल्म का निशाना बनाए। किसी का मुजरिम होना उसे उसके दीगर हुकूक़ से महरूम नहीं करता। सूदख़ोर के ख़िलाफ जब कार्रवाई की जाएगी तो सिर्फ उसके सूदी इजाफे को साक़ित किया जाएगा। अपनी अस्ल रक़म को वापस लेने का वह फिर भी हकदार होगा। ताहम सामान्य कानून के साथ इस्लाम इंसानी कमजोरियों की भी आख़िरी हद तक रिआयत करता है। इसलिए हुक्म दिया गया कि कोई कर्ज़दार अगर वक्त पर तंगदस्त है तो उसे उस वक्त तक मोहलत दी जाए जब तक वह अपने जिम्मे की रक़म अदा करने के क़ाबिल हो जाए। इसी के साथ यह तलक़ीन भी की गई कि कोई शख़्स कर्ज की रक़म अदा करने के क़ाबिल न रहे तो उसके जिम्मे की रक़म को सिरे से माफ कर देने का हौसला पैदा करो। माफ करने वाला ख़ुदा के यहां अज्र का मुस्तहिक बनता है और दुनिया में इसका यह फायदा है कि मुआशिरे के अंदर आपसी रिआयत और हमदर्दी की फिज़ा पैदा हो जाती है जो बिलआख़िर सबके लिए मुफीद है।

ताहम सिर्फ कानून का निफ़ाज़ (लागू करना) मुआशिरे की इस्लाह और फ़लाह का ज़ामिन नहीं। हक़ीक़ी इस्लाह के लिए ज़रूरी है कि मुआशिरे में तक़्वा की फ़िज़ा मौजूद हो। इसलिए कानूनी हुक्म बताते हुए ईमान, तक़वा और आख़िरत का एहतेमाम के साथ ज़िक्र किया गया है। जिस तरह एक सेक्युलर निजाम उसी वक्त कामयाबी के साथ चलता है जबकि नागरिकों के अंदर उसके मुताबिक कौमी किरदार (राष्ट्रीय चरित्र) मौजूद हो। इसी तरह इस्लामी निज़ाम उसी वक़्त सही तौर पर वजूद में आता है जबकि अफ़राद के क़ाबिले लिहाज़ हिस्से में तक़्वा की रूह पाई जाती हो। क़ौमी किरदार या तक़्वा दरअस्ल मत्लूब निज़ाम के हक़ में अफ़राद की आमादगी का नाम है। और अफ़राद के अंदर जब तक एक दर्जे की आमादगी न हो, महज क़ानून के जोर पर उसे लागू नहीं किया जा सकता।

साथ ही यह कि इस्लाम के अनुसार मुआशिरे की इस्लाह (समाज-सुधार) ख़ुद में मत्लूब चीज नहीं है। इस्लाम में अस्ल मत्लूब फर्द की इस्लाह है। मुआशिरे की इस्लाह सिर्फ उसका एक सानवी (अतिरिक्त) नतीजा है। क़ुरआन जिस ईमान, तक़वा और फ़िक्रे आख़िरत की तरफ बुलाता है उसका केन्द्र व्यक्ति है न कि कोई सामूहिक ढांचा। इसलिए क़ुरआनी दावत का अस्ल मुख़ातब फर्द है और मुआशिरे की इस्लाह अफ़राद की इस्लाह का इज्तिमाई ज़ुहूर (सामूहिक प्रदर्शन) है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۭ وَلْيَكْتُبْ
بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۠ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ
وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـــًٔا ۭ فَاِنْ كَانَ

الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ
وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۭ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا
رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاۗءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا
فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۭ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۗءُ اِذَا مَا دُعُوْا ۭ وَلَا تَسْــَٔـــمُوْٓا اَنْ
تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا
بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ
كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ڛ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَيُعَلِّمُكُمُ
اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰي سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا
فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ۭ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ۭ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۭ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ۭ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम किसी निर्धारित मुद्दत के लिए उधार का लेनेदेन करो तो उसे लिख लिया करो। और इसे लिखे तुम्हारे दर्मियान कोई लिखने वाला इंसाफ के साथ। और लिखने वाला लिखने से इंकार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया उसी तरह उसे चाहिए कि लिख दे। और वह शख़्स शिऊराए जिस पर अदायगी का हक आता है। और वह डरे अल्लाह से जो उसका रब है और इसमें कोई कमी न करे। और अगर वह शख़्स जिस पर अदायगी का हक आता है बेसमझ हो, या कमजोर हो या ख़ुद लिखवाने की क़ुदरत न रखता हो तो चाहिए कि उसका वली (संरक्षक) इंसाफ के साथ लिखवा दे। और अपने मर्दों में सेमअना आदमियों को गवाह कर लो। और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें, उन लोगों में से जिन्शुऊरतुम पसंद करते हो। ताकि अगर एक औरत भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे। और गवाह इंकार न करें जब वे बुलाए जाएं। और मामला छोटा हो या बड़ा, मीआद (अवधि) के निर्धारण के साथ इसे लिखने में काहिली न करो। यह लिख लेना अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ का तरीक़ा है और गवाही को ज्यादा दुरुस्त रखने वाला है और ज्यादा संभावना है कि तुम शुबह में न पड़ो। लेकिन अगर कोई सौदा नकद हो जिसका तुम आपस में लेनदेन किया करते हो तुम पर कोई इल्जाम नहीं कि तुम उसे न लिखो। मगर जब यह सौदा करो तो गवाह बना

लिया करो। और किसी लिखने वाले को या गवाह को तकलीफ न पहुंचाई जाए। और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी। और अल्लाह से डरो अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम सफर में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो रहन (गिरवी) रखने की चीजें कब्जे में दे दी जाएं। और अगर एक दूसरे का एतबार करता हो तो चाहिए कि जिस पर एतबार किया गया वह एतबार को पूरा करे। और अल्लाह से डरे जो उसका रब है। और गवाही को न छुपाओ और जो शख़्स छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानने वाला है। (282-283)

दो आदमियों के दर्मियान नकद मामला हो तो लेनदेन होकर उसी वक्त मामला ख़त्म हो जाता है। मगर उधार मामले की नौइयत अलग है। उधार मामले में अगर सारी बात जबानी हो तो लिखित सुबूत न होने की वजह से बाद में विवाद पैदा होने की संभावना रहती है। दोनों पक्ष अपने-अपने मुताबिक मामले की तस्वीर पेश करते हैं और कोई ऐसी यकीनी बुनियाद नहीं होती जिसकी रोशनी में सही फैसला किया जा सके। नतीजा यह होता है कि अदायगी के वक्त अक्सर दोनों को एक-दूसरे से शिकायतें पैदा हो जाती हैं। इसका हल तहरीर है। नकद मामले को लिख लिया जाए तो वह भी बेहतर है। मगर उधार मामलात के लिए तो जरूरी है कि उन्हें बाकायदा तहरीर (लिखित) में लाया जाए और इस पर गवाह बना लिए जाएं। विवाद के वक्त यही तहरीर फैसले की बुनियाद होगी। यह मुसलमान के लिए तक्वा और इंसाफ की एक हिफाजती तदबीर है। लिखित शर्तों के मुताबिक वह अपने हुकूक को अदा करके ख़ुदा और ख़ल्क के सामने जिम्मेदारी से बरी हो जाता है।

मुसलमान ख़ुदा के दीन के गवाह हैं। जिस तरह अल्लाह की बात को जानते हुए छुपाना जाइज नहीं, उसी तरह इंसानी मामलात में किसी के पास कोई गवाही हो तो उसे चाहिए कि उसे जाहिर कर दे। गवाही को छुपाना अपने अंदर मुजरिमाना जेहन की परवरिश करना है और मामले के मुंसिफाना फैसले में वह हिस्सा अदा न करना है जो वह कर सकता है। इंसान का जमीर चाहता है कि जब एक चीज हक नजर आये तो उसके हक होने का एतराफ किया जाए। और जब एक चीज नाहक दिखाई दे तो उसके नाहक होने का एलान किया जाए। ऐसी हालत में जो शख़्स अपने वकार और मस्लेहत की ख़ातिर अपनी जबान को बंद रखता है वह गोया ऐसा मुजरिम है जो अपने जुर्म पर ख़ुद ही गवाह बन गया हो।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ
يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَ
قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ
نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟
وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। तुम अपने दिल की बातों को जाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सजा देगा। और अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है। रसूल ईमान लाया है उस पर जो उसके रब की तरफ से उस पर उतरा है। और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं। सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर। हम उसके रसूलों में से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते। और वे कहते हैं कि हमने सुना और माना। हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब। और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी पर जिम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताक़त के मुताबिक। उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया। ऐ हमारे रब हमें न पकड़ अगर हम भूलें या हम ग़लती कर जाएं। ऐ हमारे रब हम पर बोझ न डाल जैसा तूने डाला था हम से अगलों पर। ऐ हमारे रब हमसे वह न उठवा जिसकी ताकत हम में नहीं। और दरगुजर कर हम से। और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर। तू हमारा कारसाज है। पस इंकार करने वालों के मुकाबले में हमारी मदद कर। (284-286)

कायनात की हर चीज अल्लाह के जेरेहुक्म है। जर्रों से लेकर सितारों तक सब ख़ुदा के निर्धारित नक्शे में बंधे हुए हैं। वे उसी रास्ते पर चल रहे हैं जिस पर चलने के लिए ख़ुदा ने इन्हें पाबंद कर दिया है। मगर इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो अपने को ख़ुदमुख़्तार हालत में पाता है। बजाहिर वह आजाद है कि अपनी मर्जी से जो रास्ता चाहे अपनाए। मगर इंसान की आजादी मुतलक नहीं है बल्कि इम्तेहान के लिए है। इंसान को भी कायनात की बाकी चीजों की तरह ख़ुदा की पाबंदी करनी है। जिस पाबंद जिंदगी को बाकी कायनात ने बजोर अपनाया है वही पाबंद जिंदगी इंसान को अपने इरादे से अपनानी है। इंसान को जाहिरी सूरतेहाल से धोखा खाकर यह न समझना चाहिए कि उसके आगे पीछे कोई नहीं। हकीकत यह है कि आदमी हर वक्त मालिके कायनात की नजर में है, वह उसकी हर छोटी-बड़ी बात की निगरानी कर रहा है। चाहे वह उसके अंदर हो या उसके बाहर।

वह कौन सा इंसान है जो अल्लाह को मत्लूब है। वह ईमान और इताअत (आज्ञापालन) वाला इंसान है। ईमान से मुराद आदमी की शुऊरी हवालगी है और इताअत से मुराद उसकी अमली हवालगी। शुऊर के एतबार से यह मत्लूब है कि आदमी अल्लाह को अपने ख़ालिक और मालिक की हैसियत से अपने अंदर उतार ले। वह इस हकीकत को पा गया हो कि कायनात

का निजाम कोई बेरूह मशीनी निजाम नहीं है बल्कि एक जिंदा निजाम है जिसे ख़ुदा अपने फरमांबरदार कारिंदों के जरिए चला रहा है। उसने ख़ुदा के बंदों में से उन बंदों को पहचान लिया हो जिन्हें ख़ुदा ने अपना पैग़ाम पहुंचाने के लिए चुना। ख़ुदा ने इंसानों की हिदायत के लिए जो किताब उतारी है उसे वह हकीकी मअनों में अपनी सोच-विचार का हिस्सा बना चुका हो। रिसालत और पैग़म्बरी उसे पूरी इंसानी तारीख़ में एक मुसलसल वाकया की सूरत में नजर आने लगे। ईमानियात को इस तरह अपने दिल व दिमाग़ में बिठा लेने के बाद वह अपनी जिंदगी पूरी तरह उसके नक्शे पर ढाल दे।

फिर यह ईमान और इताअत उसके लिए कोई रस्मी और जाहिरी मामला न हो बल्कि वह उसकी रूह को इस तरह घुला दे कि वह अल्लाह को पुकारने लगे। उसका वजूद ख़ुदा की याद में ढल जाए। उसकी जिंदगी तमामतर ख़ुदा के ऊपर निर्भर हो जाए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۟ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ۗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

आयतें-200 **सूरह-3. आले-इमरान** रुकूअ-20

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं, जिंदा और सबका थामने वाला। उसने तुम पर किताब उतारी हक के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज को जो उसके आगे है और उसने तौरात और इंजील उतारी इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और अल्लाह ने फ़ुरकान उतारा। बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया उनके लिए सख़्त अजाब है और अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। बेशक अल्लाह से कोई चीज छुपी हुई नहीं न जमीन में और न आसमान में। वही तुम्हारी सूरत बनाता है मां के पेट में जिस तरह चाहता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1-6)

कायनात का ख़ालिक व मालिक कोई मशीनी ख़ुदा नहीं बल्कि एक जिंदा और बाशुऊर ख़ुदा है। उसने हर जमाने में इंसान के लिए रहनुमाई भेजी। इन्हीं में से वे किताबें थीं जो तौरात व इंजील की सूरत में पिछले नबियों पर उतारी गईं। मगर इंसान हमेशा यह करता रहा

कि उसने अपनी तावील व तशरीह से ख़ुदा की तालीमात को तरह-तरह के मअना पहनाए और ख़ुदा के एक दीन को कई दीन बना डाला। आख़िर अल्लाह ने अपने तैशुदा मंसूबे के मुताबिक आख़िरी किताब (कुरआन) उतारी जो इंसानों के लिए सही हिदायतनामा भी है और इसी के साथ वह कसौटी भी जिससे हक और बातिल के दर्मियान फैसला किया जा सके। कुरआन बताता है कि अल्लाह का सच्चा दीन क्या है। और वह दीन कौन-सा है जो लोगों ने अपनी ख़ुद की गढ़ी हुई तशरीहात (व्याख्याओं) के जरिए बना रखा है। अब जो लोग ख़ुदा की किताब को न मानें या अपनी राए और ताबीरों के तहत गढ़े हुए दीन को न छोड़ें वे सख़्त सजा के मुस्तहिक हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें ख़ुदा ने आंख दी मगर रोशनी आ जाने के बावजूद उन्होंने नहीं देखा। जिन्हें ख़ुदा ने अक्ल दी मगर दलील आ जाने के बाद भी उन्होंने न समझा। अपनी झूठी बड़ाई की ख़ातिर वे हक के आगे झुकने पर तैयार न हुए।

अल्लाह अपनी जात व सिफ़ात के एतबार से कैसा है, इसका हकीकी तआरुफ़ ख़ुद वही करा सकता है। उसकी हस्ती का दूसरी मौजूदात से क्या तअल्लुक है, इसे भी वह ख़ुद ही सही तौर पर बता सकता है। ख़ुदा ने अपनी किताब में इसे इतनी वाजेह सूरत में बता दिया है कि जो शख़्स जानना चाहे वह जरूर जान लेगा। यही मामला इंसान के लिए हिदायतनामा मुकर्रर करने का है। इंसान की हकीकत क्या है और वह कौन-सा रवैया है जो इंसान की कामयाबी का जामिन है, इसे बताने के लिए पूरी कायनात का इल्म दरकार है। इंसान के लिए सही रवैया वही हो सकता है जो बाकी कायनात से हमआहंग (अंतरंग) हो और दुनिया के वसीअतर (व्यापक) निजाम से पूरी तरह मुताबिकत रखता हो। इंसान के लिए सही राहेअमल का निर्धारण वही कर सकता है जो न सिर्फ इंसान को जन्म से मौत तक जानता हो बल्कि उसे यह भी मालूम हो कि जन्म से पहले क्या है और मौत के बाद क्या। ऐसी हस्ती ख़ुदा के सिवा कोई दूसरी नहीं हो सकती। इंसान के लिए हकीकतपसंदी यह है कि इस मामले में वह ख़ुदा पर भरोसा करे और उसकी तरफ से आई हुई हिदायत को पूरे यकीन के साथ पकड़ ले।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ۗ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

वही है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। इसमें कुछ आयतें मोहकम (सुदृढ़, सुस्पष्ट) हैं, वे किताब की अस्ल हैं। और दूसरी आयतें मुताशाबह (संदेहास्पद, अस्पष्ट) हैं। पस जिनके दिलों में टेढ़ है वे मुताशाबह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं फितने की तलाश में

और इनके अर्थों की तलाश में। हालांकि इनका अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो लोग पुख़्ता इल्म वाले हैं वे कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाए। सब हमारे रब की तरफ से है। और नसीहत वही लोग क़ुबूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। ऐ हमारे रब, हमारे दिलों को न फेर जबकि तू हमें हिदायत दे चुका। और हमें अपने पास से रहमत दे। बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है। ऐ हमारे रब, तू जमा करने वाला है लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुबह नहीं। बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ नहीं करता। (7-9)

कुरआन में दो तरह के मजामीन हैं। एक वे जो इंसान की मालूम दुनिया से संबंधित हैं। जैसे ऐतिहासिक घटनाएं, कायनाती निशानियां, दुनियावी जिंदगी के अहकाम आदि। दूसरे वे जिनका तअल्लुक उन ग़ैबी (अदृश्य) मामलों से है जो आज के इंसान के लिए समझ से बाहर हैं। मसलन ख़ुदा की सिफ़ात, जन्नत व दोज़ख़ के अहवाल वग़ैरह। पहली किस्म की बातों को कुरआन में मोहकम अंदाज, दूसरे शब्दों में प्रत्यक्ष शैली में बयान किया गया है। दूसरी किस्म की बातें इंसान की नामालूम दुनिया से संबंधित हैं, वे इंसानी भाषा की गिरफ्त में नहीं आतीं। इसलिए उन्हें मुताशाबह अंदाज यानी रूपकों और उपमा की शैली में बयान किया गया है। मसलन इंसान का हाथ कहा जाए तो यह प्रत्यक्षतः भाषा की मिसाल है और अल्लाह का हाथ रूपकों की भाषा की मिसाल। जो लोग इस फर्क को नहीं समझते वे मुताशाबह आयतों का भावार्थ भी उसी तरह सुनिश्चित करने लगते हैं जिस तरह मोहकम आयतों का भावार्थ सुनिश्चित किया जाता है। यह अपने फ़ित्तरी दायरे से बाहर निकलने की कोशिश है। इस किस्म की कोशिश का अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं कि आदमी हमेशा भटकता रहे और कभी मंजिल पर न पहुंचे। क्योंकि 'इंसान के हाथ' को सुनिश्चित तौर पर समझा जा सकता है, मगर 'ख़ुदा के हाथ' को मौजूदा अक्ल के साथ सुनिश्चित तौर पर समझना सभंव नहीं।

मुताशाबिहात के सिलसिले में सही इल्मी और अक्ली मौकिफ़ यह है कि आदमी अपनी असमर्थता को स्वीकारे। जिन बातों को वह सुनिश्चित रूप से अपने हवास की गिरफ्त में नहीं ला सकता उनकी संक्षिप्त अवधारणा पर संतोष करे। जब हवास की असमर्थता की वजह से इंसान के लिए इन वास्तविकताओं का पूरी तरह ज्ञान मुमकिन नहीं है तो हकीकतपसंदी यह है कि इन मामलों में सुनिश्चितता की बहस न छेड़ी जाए। इसके बजाए अल्लाह से दुआ करना चाहिए कि वह आदमी को इस किस्म की बेनतीजा बहसों में उलझने से बचाए। वह आदमी को ऐसी अक्ले सलीम दे जो अपने मकाम को पहचाने और इन हकीकतों के मुजमल (संक्षिप्त) यकीन पर राजी हो जाए। एक दिन ऐसा आने वाला है जबकि ये हकीकतें अपनी तफ्सीली सूरत में खुलकर सामने आ जाएं। मगर आदमी जब तक इम्तेहान की दुनिया में है ऐसा होना मुमकिन नहीं।

जिस तरह रास्ते की फिसलन होती है, उसी तरह अक्ल के सफर की भी फिसलन होती है। और अक्ल की फिसलन यह है कि किसी मामले को आदमी उसके सही रुख़ से न देखे। किसी चीज की हकीकत आदमी उसी वक्त समझता है जबकि वह उसे उस रुख़ से देखे जिस रुख़ से उसे देखना चाहिए। अगर वह किसी और रुख़ से देखने लगे तो ऐन मुमकिन है कि वह सही राय

कायम न कर सके और ग़लतफहमियों में पड़ कर रह जाए। सबसे बड़ी समझदारी यह है कि आदमी इस राज को जान ले कि किसी चीज को देखने का सहीतरीन रुख़ क्या है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ
وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُل
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ
كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ
يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١٣﴾

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आएंगे और यही लोग आग के ईंधन बनेंगे। इनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा फिरऔन वालों का और इनसे पहले वालों का हुआ। उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। इस पर अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। इंकार करने वालों से कह दो कि अब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ जमा करके ले जाए जाओगे और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है। बेशक तुम्हारे लिए निशानी है उन दो गिरोहों में जिनमें (बद्र में) मुठभेड़ हुई। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुंकिर था। ये मुंकिर खुली आंखों से उन्हें दुगना देखते थे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी मदद का जोर दे देता है। इसमें आंख वालों के लिए बड़ा सबक है। (10-13)

हक की दावत (आह्वान) जब भी उठती है तो वह लोगों को एक ग़ैर-अहम आवाज मालूम होती है। एक तरफ वक्त का माहौल होता है जिसके कब्जे में हर किस्म के माद्दी वसाइल (भौतिक संसाधन) होते हैं। दूसरी तरफ हक का काफ़िला होता है जिसे अभी माहौल में कोई जमाव हासिल नहीं होता। इसके साथ माद्दी मफादात (हित) जुड़े नहीं होते। इन हालात में हक की तरफ बढ़ना माहौल से कटने और मफ़ादात से महरूम होने के हममअना बन जाता है। नतीजा यह होता है कि आदमी अपने मफ़ादात को बचाने की ख़ातिर हक को नहीं मानता। अपने साथियों और रिश्तेदारों को छोड़कर एक तंहा दाओ (आह्वानकर्ता) की सफ में आने के लिए तैयार नहीं होता। मगर ये चीजें जो इंसान को आज अहम नजर आती हैं वे फैसले के दिन किसी के कुछ काम न आएंगी। इन चीजों की जो कुछ अहमियत है सिर्फ उस वक्त तक है जबकि मामला इंसान और इंसान के दर्मियान है। जब कियामत का पर्दा उठेगा और मामला इंसान और ख़ुदा के दर्मियान हो जाएगा तो ये चीजें इतनी बेकीमत हो जाएंगी

जैसे कि इनका कोई वजूद ही नहीं था। दाओी इस दुनिया में बजाहिर बेजोर दिखाई देता है मगर हकीकत में वही जोर वाला है। क्योंकि उसके पीछे ख़ुदा है। मुंकिर बजाहिर इस दुनिया में ताक़तवर दिखाई देता है। मगर वह बिल्कुल बेताक़त है। क्योंकि उसकी ताक़त एक वक़्ती फ़रेब के सिवा और कुछ नहीं है।

नुबुव्वत के चौदहवें साल बद्र का मअरका (मोर्चा) आख़िरत में होने वाले वाकये का एक दुनियावी नमूना था। हक का इंकार करने वाले तादाद और ताक़त में बहुत ज्यादा थे और हक को मानने वाले तादाद और ताकत में बहुत कम थे। इसके बावजूद मुंकिरों को ग़ैर मामूली शिकस्त हुई और हक की पैरवी करने वालों को फ़ैसलाकुन फ़तह हासिल हुई। यह एक वाज़ेह सुबूत है कि अल्लाह हमेशा हक के पैरोकारों की तरफ होता है। इतने ग़ैर-मामूली फ़र्क़ के बावजूद इतनी ग़ैर-मामूली फतह अल्लाह की मदद के बग़ैर नहीं हो सकती। यह ख़ुदा की तरफ से इस बात का एक मुज़ाहिरा है कि हक इस आलम में तंहा नहीं है। इसी के साथ इंकार करने वालों के लिए वह एक जाहिरी दलील भी है जिसमें वे देख सकते हैं कि ख़ुदा की इस दुनिया में वे कितने बेजगह हैं। हक के दाओी के कलाम और उसकी जिंदगी में खुली हुई अलामतें होती हैं कि यह ख़ुदा की तरफ से है। मगर जो सरकश लोग हैं वे इसे रद्द करने के लिए अल्फ़ाज की एक पनाहगाह बना लेते हैं। वे झूठी तौजीहात (कुतर्कों) में जीते रहते हैं, यहां तक कि वे आख़िरत की दुनिया में पहुंच जाते हैं, सिर्फ यह जानने के लिए कि वे जिन अल्फ़ाज का सहारा लिए हुए थे वे हकीक़त के एतबार से कितने बेमअना थे।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۱۵﴾ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾

लोगों के लिए ख़ुशनुमा कर दी गई है मुहब्बत ख़्वाहिशों की औरतें, बेटे, सोने-चांदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती। ये दुनियावी जिंदगी के सामान हैं। और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊं इससे बेहतर चीज। उन लोगों के लिए जो डरते हैं, उनके रब के पास बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे इनमें हमेशा रहेंगे। और सुथरी बीवियां होंगी और अल्लाह की रिजामंदी होगी। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे, जो कहते हैं ऐ हमारे रब, हम ईमान ले आए।

पस तू हमारे गुनाहों को माफ कर दे और हमें आग के अजाब से बचा। वे सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं, फ़रमांबरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को मग़्फ़िरत (क्षमा) मांगने वाले हैं। (14-17)

दुनिया इम्तेहान की जगह है। इसलिए यहां की चीजों में आदमी के लिए जाहिरी कशिश रखी गई है। अब ख़ुदा यह देखना चाहता है कि कौन है जो जाहिरी कशिश से मुतअस्सिर होकर दुनिया की चीजों में खो जाता है। और कौन है जो इससे ऊपर उठकर आख़िरत की अनदेखी चीजों को अपनी तवज्जोह का मर्कज बनाता है। आदमी को दुनिया की चीजों में तस्कीन मिलती है। वह देखता है कि माहौल के अंदर इनके जरिए से वकार कायम होता है। ये चीजें हों तो उसके सब काम बनते चले जाते हैं। वह समझने लगता है कि यही चीजें अस्ल अहमियत की चीजें हैं। उसकी दिलचस्पियां और सरगर्मियां सिमट कर बीवी, बच्चों और माल व जायदाद के गिर्द जमा हो जाती हैं। यही चीज आख़िरत के तकाज़ों की तरफ बढ़ने में सबसे बड़ी रुकावट है। दुनिया की चीजों की अहमियत का एहसास आदमी को आख़िरत की चीजों की तरफ से ग़ाफ़िल कर देता है। दुनिया में अपने बच्चों के मुस्तकबिल (भविष्य) की तामीर में वह इतना मशग़ूल होता है कि उसे याद नहीं रहता कि दुनिया से आगे भी कोई 'मुस्तकबिल' है जिसकी तामीर की उसे फ़िक्र करनी चाहिए। दुनिया में अपने घर को आबाद करना उसके लिए इतना महबूब बन जाता है कि उसे कभी ख़्याल नहीं आता कि इसके सिवा भी कोई 'घर' है जिसे आबाद करने में उसे लगना चाहिए। दुनिया में दौलत समेटना और जायदाद बनाना उसे इतने ज्यादा कीमती मालूम होते हैं कि वह सोच नहीं पाता कि इसके सिवा भी कोई 'दौलत' है जिसे हासिल करने के लिए वह अपने को वक़्फ़ करे। मगर इस क़िस्म की तमाम चीजें सिर्फ मौजूदा आरजी जिंदगी की रौनक हैं। अगली तवीलतर (दीर्घ) जिंदगी में वे किसी के कुछ काम आने वाली नहीं।

जो शख़्स आख़िरत की मुस्तकिल जिंदगी को अपनी तवज्जोहात का मर्कज बनाए उसकी जिंदगी कैसी जिंदगी होगी। दुनिया की रौनकें उसकी नजर में हक़ीर (तुच्छ) बन जाएंगी। वह इस यकीन से भर जाएगा कि आख़िरत का मामला तमामतर अल्लाह के इख़्तियार में है। इसका नतीजा यह होगा कि वह सबसे ज्यादा अल्लाह से डरेगा और सबसे ज्यादा आख़िरत का ख़्वाहिशमंद बन जाएगा। मामलात में वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे नहीं चलेगा बल्कि अल्लाह की अदालत को सामने रख कर अपना रवैया तै करेगा। उसके कौल व अमल में फ़र्क़ नहीं होगा। उसका माल अपना माल नहीं रहेगा बल्कि ख़ुदा के लिए वक़्फ़ हो जाएगा। अल्लाह की राह में चलने में चाहे कितनी ही मुश्किलें पेश आएं वह पूरी इस्तेकामत (दृढ़ता) के साथ उस पर कायम रहेगा। क्योंकि उसे यकीन होगा कि अल्लाह को छोड़ने के बाद कोई नहीं है जो उसका सहारा बने। उसका दिल अल्लाह की याद से इस तरह पिघल उठेगा कि वह बेताब होकर उसे पुकारने लगेगा। उसकी तंहाइयां अपने रब की सोहबत (सान्निध्य) में बसर होने लगेंगी। अल्लाह की अज़्मत और कमाल के आगे उसे अपना वुजूद सिर से पैर तक ग़लती नजर आएगा। उसके पास कहने के लिए इसके सिवा और कुछ न होगा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ कर दे।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًاۢ بِالْقِسْطِ ؕ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۟ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ
يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ
وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ
فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ
يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۲﴾

अल्लाह की गवाही है और फरिश्तों की और अहलेइल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह कायम रखने वाला है इंसाफ का। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। दीन अल्लाह के नजदीक सिर्फ इस्लाम है। और अहले किताब ने इसमें जो इख़्तेलाफ (मतभेद) किया वह आपस की जिद की वजह से किया, बाद इसके कि उन्हें सही इल्म पहुंच चुका था। और जो अल्लाह की आयतों का इंकार करे तो अल्लाह यकीनन जल्द हिसाब लेने वाला है। फिर अगर वे तुम से इस बारे में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना रुख़ अल्लाह की तरफ कर चुका। और जो मेरे पैरोकार हैं वे भी। और अहले किताब से और अनपढ़ों से पूछो, क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो। अगर वे इस्लाम लाएं तो उन्होंने राह पा ली। और अगर वे फिर जाएं तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे। जो लोग अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हैं और पैग़म्बरों को नाहक कत्ल करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसाफ की दावत लेकर उठते हैं, इन्हें एक दर्दनाक सजा की ख़ुशख़बरी दे दो। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में जाये (विनष्ट) हो गए और उनका मददगार कोई नहीं। (18-22)

कायनात का ख़ुदा एक ही ख़ुदा है और वह अद्ल व किस्त्थ(न्याय) को पसंद करता है। तमाम आसमानी किताबें अपनी सही सूरत में इसी का एलान कर रही हैं। फैली हुई कायनात, जो इसका मालिक अपने ग़ैर-मरई (अनदेखी) कारिंदों (फरिश्तों) के जरिए चला रहा है वह कामिल तौर पर वैसी ही है जैसा कि उसे होना चाहिए। साबितशुदा इंसानी इल्म के मुताबिक कायनात एक हददर्जा वहदानी निजाम (एकीय व्यवस्था) है। इससे स्पष्ट होता है कि

कायनात का व्यवस्थापक सिर्फ एक है। इसी तरह कायनात की हर चीज का अपने उपयुक्त स्थल पर होना इस बात का सुबूत है कि उसका ख़ुदा अद्ल (न्याय, सुव्यवस्था) को पसंद करने वाला है न कि बेइंसाफी को पसंद करने वाला। फिर जो ख़ुदा वसीअतर कायनात में मुसलसल अद्ल को कायम किए हुए हो वह इंसान के मामले में अद्ल के ख़िलाफ बातों पर कैसे राजी हो जाएगा।

कायनात का हर जुज (अवयय) कामिल तौर पर 'मुस्लिम' है। यानी अपनी सरगर्मियों को अल्लाह के मुकर्रर किए हुए नक्शे के मुताबिक अंजाम देता है। ठीक यही रवैया इंसान से भी मत्लूब है। इंसान को चाहिए कि वह अपने रब को पहचाने और उसके मत्लूब नक्शे के मुताबिक अपनी जिंदगी को ढाल ले। अल्लाह के सिवा किसी और को अपनी तवज्जोह का मर्कज बनाना या यह ख़्याल करना कि अल्लाह का फैसला अद्ल के सिवा किसी और बुनियाद पर हो सकता है, ऐसी बेअस्ल बात है जिसके लिए मौजूदा कायनात में कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन की दावत (आह्वान) इसी सच्चे इस्लाम की दावत है। जो लोग इसमें इख़्तेलाफ कर रहे हैं इसकी वजह यह नहीं है कि इसका हक होना उन पर वाजेह नहीं है। इसकी वजह जिद है। इसे मानना उन्हें कुरआन के दाओ (आह्वानकर्ता) की फिक्री बरतरी (वैचारिक श्रेष्ठता) तस्लीम करना महसूस होता है, और उनकी हसद और किब्र (घमंड) की नफ्सियात इस किस्म का एतराफ करने पर राजी नहीं। सीधी तरह हक को मान लेने के बजाए वे चाहते हैं कि उस जबान ही को बंद कर दें जो हक का एलान कर रही है। ताहम ख़ुदा की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। हक के दाओ की जबान को बंद करने के लिए उनका हर मंसूबा नाकाम होगा और जब ख़ुदा के अद्ल का तराजू खड़ा होगा तो वे देख लेंगे कि उनके वे आमाल कितने बेकीमत थे जिनके बल पर वे अपनी नजात और कामयाबी का यकीन किए हुए थे। सच्ची दलील ख़ुदा की निशानी है। जो शख़्स दलील के सामने नहीं झुकता वह गोया ख़ुदा के सामने नहीं झुकता। ऐसे लोग कियामत में इस तरह उठेंगे कि वे सबसे ज्यादा बेसहारा होंगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ
تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۪ وَّغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾
فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۟ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ
مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ ۫ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें अल्लाह की किताब का एक हिस्सा दिया गया था। उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ बुलाया जा रहा है कि वह उनके दर्मियान फैसला करे। फिर उनका एक गिरोह मुंह फेर लेता है बेरुख़ी करते हुए। यह इस सबब से कि वे लोग कहते हैं कि हमें हरगिज आग न छुऐगी सिवाए गिने हुए कुछ दिनों के। और उनकी बनाई हुई बातों ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल दिया है। फिर उस वक्त क्या होगा जब हम उन्हें जमा करेंगे एक दिन जिसके आने में कोई शक नहीं। और हर शख़्स को जो कुछ उसने किया है, इसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। तुम कहो, ऐ अल्लाह, सल्तनत के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले। और तू जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील करे। तेरे हाथ में है सब ख़ूबी। बेशक तू हर चीज पर कादिर है। तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और तू बेजान से जानदार को निकालता है और तू जानदार से बेजान को निकालता है। और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क देता है। (23-27)

अल्लाह की हिदायत एक ही हिदायत है जो विभिन्न कौमों की भाषा में उनके पैग़म्बरों पर उतारी जाती रही है। वही कुरआन के रूप में मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारी गई है। इस एकरूपता की वजह से आसमानी किताबों को जानने और मानने वालों के लिए कुरआन की दावत को पहचानना मुश्किल नहीं। कुरआन की दावत और पिछली आसमानी तालीमात में अगर कुछ फर्क है तो सिर्फ यह कि कुरआन की दावत उनकी अपनी मिलावटों से ख़ुदा के दीन को पाक कर रही है। इसके बावजूद क्यों ऐसा है कि बहुत से लोग कुरआन की दावत का इंकार कर रहे हैं। इसकी वजह यह है कि कुरआन की दावत को वे अपने लिए कोई संजीदा मामला नहीं समझते। अपने स्वनिर्मित अकीदों (आस्था, विश्वास) की बुनियाद पर उन्होंने अपने को जहन्नम की आग से महफूज मान लिया है। अपनी इस नफ्सियात के तहत वे समझते हैं कि अगर वे इस हक को न स्वीकारें तो इससे उनकी नजात (मुक्ति) ख़तरे में पड़ने वाली नहीं। मगर जब ख़ुदा के इंसाफ का तराजू खड़ा होगा उस वक्त उन्हें मालूम होगा कि वे महज ख़ुशख़्यालियों के अंधेरे में पड़े हुए थे।

हर किस्म की इज्जत व ताकत अल्लाह के इख़्तियार में है। वक्त के बड़े जिसे बेहकीकत समझ लें, ख़ुदा चाहे तो उसी के हक में इज्जत व सरबुलंदी का फैसला कर दे। इल्म की गद्दियों पर बैठने वाले जिसके बारे में जहल (अज्ञान) का फतवा दें, ख़ुदा चाहे तो उसी के जरिए इल्म का चश्मा (स्रोत) जारी कर दे। ख़ुदा की नजर में अगर कोई इज्जत व ताकत का मुस्तहिक हो सकता है तो वह जो इसे ख़ालिस ख़ुदा की चीज समझे और ख़ुदा की नजर में इसका सबसे ज्यादा ग़ैर-मुस्तहिक अगर कोई है तो वह जो इसे अपनी जाती मिल्कियत समझता हो। ख़ुदा वसीअतर कायनात में रोजाना बहुत बड़े पैमाने पर यह करिश्मा दिखा रहा है कि वह तारीकी (अंधकार) को रोशनी के ऊपर ओढ़ा देता है और रोशनी को तारीकी के

ऊपर डाल देता है। वह मुर्दा अनासिर (तत्वों) से जिंदगी वजूद में लाता है और जिंदा चीजों को मुर्दा अनासिर में तब्दील करता है। ख़ुदा की यही क़ुदरत अगर इतिहास में जाहिर हो तो इसमें ताज्जुब की क्या बात है। जो लोग हक के नाम पर नाहक का कारोबार कर रहे हों वे हमेशा सच्ची हक की दावत के मुख़ालिफ हो जाते हैं। ऐसे दाओ को बेघर किया जाता है। उसके आर्थिक साधन बर्बाद किए जाते हैं। मगर ऐसा शख़्स प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की सरपरस्ती में होता है। वह उसके लिए ख़ुसूसी रिज़्क का इंतजाम करता है। दूसरों को उनकी मआशी (आर्थिक) मेहनत के हिसाब से रिज़्क दिया जाता है और ऐसे शख़्स को बेहिसाब।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ
نَفْسَهُ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ
اللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ
تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ
بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ
إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर हक का इंकार करने वालों को दोस्त न बनाएं। और जो शख़्स ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई ताल्लुक नहीं। मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है। कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसे छुपाओ या जाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है। और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसे भी। उस दिन हर आदमी यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महरबान है। कहो, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा। अल्लाह बड़ा माफ करने वाला, बड़ा महरबान है। कहो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की। फिर अगर वे मुंह मोड़ें तो अल्लाह हक का इंकार करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (28-32)

मोमिन तमाम इंसानों के साथ नेकी और इंसाफ का सुलूक करने वाला होता है। इसमें मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का कोई विभेद नहीं। मगर जब ग़ैर-मुस्लिमों के साथ दोस्ती मुसलमानों के मफाद (हित) की कीमत पर हो तो ऐसी दोस्ती मुसलमानों के लिए जाइज नहीं। ताहम बचाव की तदबीर के तौर पर अगर किसी वक्त एक मुसलमान या किसी मुस्लिम गिरोह को ग़ैर-मुस्लिमों से वक्ती तअल्लुक कायम करना पड़े तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अल्लाह नीयत को देखता है और जब नीयत दुरुस्त हो तो वह किसी को उसके अमल पर नहीं पकड़ता। तमाम मामलात में अस्ल काबिले लिहाज चीज अल्लाह का ख़ौफ है। आदमी किसी मामले में जो रवैया अपनाए, उसे अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि अल्लाह उसका हिसाब लेगा। और उसके इंसाफ के तराज़ू में जो ग़लत ठहरेगा वह उसकी सजा पाकर रहेगा। अल्लाह से किसी इंसान की कोई बात ओझल नहीं चाहे वह उसने छुपकर की हो या एलानिया की हो। जब इम्तेहान का पर्दा हटेगा और आख़िरत का आलम सामने आएगा तो आदमी के आमाल की पूरी खेती उसके सामने होगी। यह मंजर इतना हौलनाक होगा कि वे चीजें जो दुनिया में उसके नफ़्स की लज्जत बनी हुई थीं, वह चाहेगा कि वे उससे बहुत दूर चली जाएं।

अल्लाह किसी के इस्लाम को जहां देखता है वह उसका कल्ब (हृदय) है। मोमिन वही है जिसका अल्लाह से तअल्लुक कल्बी मुहब्बत की हद तक कायम हो जाए। ऐसे ही लोग हैं जो अल्लाह की मुहब्बत व तवज्जोह के मुस्तहिक बनते हैं। और जो शख़्स अल्लाह से इस तरह तअल्लुक कायम कर ले उससे अगर कोताहियां भी होती हैं तो अल्लाह इससे दरगुजर फरमाता है। अल्लाह सरकशों के लिए बहुत सख़्त है। मगर जो लोग आजिजी का रवैया इख़्तियार करें वह उनके लिए नर्म पड़ जाता है।

यह एक नफ्सियाती हकीकत है कि जिस सीने में किसी की मुहब्बत मौजूद हो उसी सीने में महबूब के दुश्मन की मुहब्बत जमा नहीं हो सकती। इसी के साथ यह भी एक हकीकत है कि महबूब अगर ऐसी हस्ती हो जो आदमी के लिए आका और मालिक का दर्जा रखती हो तो उसके साथ मुहब्बत सिर्फ मुहब्बत की हद तक न रहेगी बल्कि लाजिमन इताअत (आज्ञापालन) और फरमांबरदारी का जज्बा पैदा करेगी। ख़ुदा की जिस मुहब्बत के बाद ख़ुदा के दुश्मनों से कल्बी तअल्लुक ख़त्म न हो या उसकी इताअत व फरमांबरदारी का जज्बा पैदा न हो वह झूठी मुहब्बत है। ऐसे शख़्स का शुमार अल्लाह के यहां इंकार करने वालों में होगा न कि मानने वालों में। रसूल वह शख़्स है जिसके कामिल ख़ुदापरस्त होने की गवाही ख़ुद ख़ुदा ने दी है, इसलिए ख़ुदापरस्ताना जिंदगी के लिए रसूल का नमूना ही मौजूदा दुनिया में वाहिद मुस्तनद (एकमात्र प्रमाणित) नमूना है।

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً
بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ

الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ
هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ
الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾
قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ
اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۖ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ
ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۗ وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَإِذْ
قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَىٰ
نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ﴿٤٢﴾ يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾
ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ
أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٤﴾

बेशक अल्लाह ने आदम को और नूह को और आले इब्राहीम को और आले इमरान को सारे आलम के ऊपर मुंतख़ब किया है। ये एक-दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब मैंने नज़्र (अर्पित) कियमअनारे लिए जो मेरे पेट में है वह आजाद रखा जाएगा। पस तू मुझसे कुबूल कर बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। फिर जब उसने बच्चा जन्मा तो उसने कहा ऐ मेरे रब मैंने तो लड़की को जन्मा है और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्मा है और लड़का नहीं होता लड़की की मानिंद। और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूं। पस उसके रब ने उसे अच्छी तरह कुबूल किया और उसे उम्दा तरीके से परवान चढ़ाया और जकरिया को उसका सरपरस्त बनाया। जब कभी जकरिया उनके पास हुजरे में आता तो वहां रिज्क पाता। उसने पूछा ऐ मरयम ये चीज तुम्हें कहां से मिलती है मरयम ने कहा यह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज्क दे देता है। उस वक्त जकरिया ने अपने रब को पुकारा। उसने कहा ऐ मेरे रब मुझे अपना पास से पाकीजा औलाद अता कर बेशक तू दुआ का सुनने वाला है। फिर फरिश्तों ने उसे

आवाज दी जबकि वह हुजरे में खड़ा हुआ नमाज पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझे याहिया की ख़ुशख़बरी देता है जो अल्लाह के कलिमे की तस्दीक करने वाला होगा और सरदार होगा और अपने नफ्स को रोकने वाला होगा और नबी होगा नेकों में से। जकरिया ने कहा ऐ मेरे रब मेरे लड़का किस तरह होगा हालांकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी औरत बांझ है। फरमाया उसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी मुकर्रर कर दे। कहा तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और अपने रब को कसरत से याद करते रहो और शाम व सुबह उसकी तस्बीह करो। और जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम अल्लाह ने तुम्हें मुंतख़ब किया और तुम्हें पाक किया और तुम्हें दुनिया भर की औरतों के मुकाबले में मुंतख़ब किया है (चुना है)। ऐ मरयम अपने रब की फरमांबरदारी करो और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। यह ग़ैब की ख़बरे हैं जो हम तुम्हें 'वही' (अवतरित) कर रहे हैं और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वे अपने क़ुरअे डाल रहे थे कि कौन मरयम की सरपरस्ती करे और न तुम उस वक्त उनके पास मौजूद थे जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (33-44)

अल्लाह ने हज़रत जकरिया को बुढ़ापे में औलाद दी, हजरत मरयम को हुजरे में रिज्क पहुंचाया, हजरत मसीह को बग़ैर बाप के पैदा किया, आले इब्राहीम ने ऐसे सुलहा (महापुरुष) पैदा किए जिन्हें ख़ुदा की पैग़म्बरी के लिए चुना जाए। अल्लाह ने अपने इन बंदों को ये इनामात यूं ही नही दिए बल्कि उन्हें इसका मुस्तहिक पाकर ऐसा किया। ये वे लोग थे जिन्होंने अपनी औलाद से आर्थिक उम्मीदें कायम नहीं कीं इनकी ख़ुशी इसमें थी कि इनकी औलाद अल्लाह की राह में सरगर्म हो। ये वे लोग थे जिन्होंने अपने अंदर इस तमन्ना की परवरिश की कि उनकी औलाद शैतान से बची रहे, वह नेक बंदों की जमाअत में शामिल हो जाए। किसी के अंदर भलाई देख कर वे हसद और जलन में मुब्तला नहीं हुए। उनके नेक जज्बात के असर से उनकी औलाद भी ऐसी हुई जो दुनिया की जिंदगी में अपने नफ्स पर काबू रखने वाली हो, वह अल्लाह को याद करे। बदी और नेकी के दर्मियान वह नेकी के रास्ते को अपनाए। यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह अपने ख़ास रिज्क से खिलाता पिलाता है और उन्हें अपनी ख़ुसूसी रहमत के लिए कुबूल कर लेता है।

إِذْ قَالَتِ الْمَلَٰٓئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى
ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ
وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّٰلِحِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ
قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَىٰٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَىٰةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِيٓ

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَىٰةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِيٓ
إِسْرَٰٓءِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ أَنِّيٓ أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ
كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَ
الْأَبْرَصَ وَأُحْيِ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي
بُيُوتِكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَىٰةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُم
بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٥٠﴾ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ
هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम, अल्लाह तुम्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ से एक कलिमे की। उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया और आख़िरत में मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के मुकर्रब बंदों में होगा। वह लोगों से बातें करेगा जब मां की गोद में होगा और जब पूरी उम्र का होगा। और वह सालेहीन (सज्जनों) में से होगा। मरयम ने कहा ऐ मेरे रब, मेरे किस तरह लड़का होगा जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया। फरमाया उसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो उसे कहता है कि हो जा और वह हो जाता है। और अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखाएगा और वह रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लेकर आया हूं। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की आकृति बनाता हूं, फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से वाकई परिंदा बन जाती है। और मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूं। और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को जिंदा करता हूं। और मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या जख़ीरा करते हो। बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। और मैं तस्दीक करने वाला हूं तौरात की जो मुझ से पहले की है और मैं इसलिए आया हूं कि कुछ उन चीजों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊं जो तुम पर हराम कर दी गई हैं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से निशानी लेकर आया हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी। पस उसकी इबादत करो, यही सीधी राह है। (45-51)

यहूद की नस्ल को अल्लाह ने इस ख़ास मंसब के लिए चुन लिया था कि उन पर अपनी हिदायत उतारे ताकि वे ख़ुद अल्लाह के रास्ते पर चलें और दूसरों को उससे आगाह करें। मगर बाद के जमाने में यहूद के अंदर बिगाड़ आ गया। यहां तक कि अल्लाह की नजर में वे इस

काबिल न रहे कि आसमानी हिदायत के अमीन (धारक) बन सकें। अब अल्लाह का फ़ैसला यह हुआ कि यह अमानत उनसे छीन कर आले इब्राहीम की दूसरी शाख़ (बनी इस्माईल) को दे दी जाए। इस फैसले को लागू करने से पहले यहूद पर इत्मामे हुज्जत (हुज्जत पूरी करना) जरूरी था। हजरत मसीह इसी इत्मामे हुज्जत के लिए भेजे गए। आपका असामान्य जन्म और आपको ग़ैर-मामूली मोजिजात (पैग़म्बरों के चमत्कार) का दिया जाना इसीलिए था कि यहूद को इस बारे में कोई शुबह न रहे कि आप ख़ुदा के भेजे हुए हैं और ख़ुदा की तरफ से बोल रहे हैं। हज़रत मसीह अपने साथ न सिर्फ़ फ़ौक़ुल फ़ितरी (दिव्य असामान्य) निशानियां रखते थे बल्कि वह इतने मुअस्सर और मुदल्लल अंदाज में बोलते थे कि उनके जमाने में कोई इस तरह बोलने पर कादिर न था। पहली बार जब आपने यरोशलम के हैकल में तकरीर की तो यहूदी विद्वान आपकी बातों को सुनकर दंग रह गए। (लूका 47 : 2)। यह उनकी मोजिजनुमा शख़्सियत और उनके मब्हूत कर देने वाले कलाम ही का असर था कि अगरचे आप बग़ैर बाप के पैदा हुए थे मगर आपके सामने किसी को जुर्रत न हो सकी कि इस पहलू से आपको मतऊन (लांछित) करे। ताहम यहूद इतने बेहिस और इतने सरकश हो चुके थे कि इंतिहाई खुली-खुली दलीलें सामने आ जाने के बावजूद उन्होंने आपको मानने से इंकार कर दिया। 'इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए' यानी जो दलील पेश की जा रही है वह ख़ुद में मुकम्मल है। मगर वह उसी शख़्स के लिए दलील बनेगी जो मानने का मिजाज रखता हो। जिसके अंदर यह सलाहियत हो कि अपने ख़्यालात के कोहरे से बाहर आकर दलील पर ग़ौर करे। जिसकी फ़ितरत इस हद तक ज़िंद्दी हो कि ज़ाती वक़ार का सवाल उसके लिए हक़ को क़ुबूल करने में रुकावट न बने।

فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ ٱلْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ قَالَ ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَٱشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ ءَامَنَّا بِمَآ أَنزَلْتَ وَٱتَّبَعْنَا ٱلرَّسُولَ فَٱكْتُبْنَا مَعَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوا۟ وَمَكَرَ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَٰكِرِينَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَىٰٓ إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَجَاعِلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوكَ فَوْقَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ۖ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥٧﴾ ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ ٱلْءَايَٰتِ وَٱلذِّكْرِ ٱلْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

फिर जब ईसा ने उनका इंकार देखा तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता है अल्लाह की राह में। हवारियों ने कहा कि हम हैं अल्लाह के मददगार। हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फरमांबरदार हैं। ऐ हमारे रब हम ईमान लाए उस पर जो तूने उतारा, और हमने रसूल की पैरवी की। पस तू लिख ले हमें गवाही देने वालों में। और उन्होंने ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने भी ख़ुफ़िया तदबीर की। और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा मैं तुम्हें वापस लेने वाला हूं और तुम्हें अपनी तरफ उठा लेने वाला हूं और जिन लोगों ने इंकार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूं। और जो तुम्हारे पैरोकार हैं उन्हें कियामत तक उन लोगों पर ग़ालिब करने वाला हूं जिन्होंने तुम्हारा इंकार किया है। फिर मेरी तरफ होगी सबकी वापसी। पस मैं तुम्हारे दर्मियान उन चीजों के बारे में फैसला करूंगा जिनमें तुम झगड़ते थे। फिर जो लोग मुंकिर हुए उन्हें सख़्त अजाब दूंगा दुनिया में और आख़िरत में और उनका कोई मददगार न होगा। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें अल्लाह उनका पूरा अज्र देगा और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। यह हम तुम्हें सुनाते हैं अपनी आयतें और हिकमत भरी बातें। (52-58)

बनी इस्राईल के बड़ों ने हजरत मसीह को मानने से इंकार कर दिया। बड़ों के हाथ में हर क़िस्म के वसाइल (संसाधन) होते हैं। साथ ही यह कि मजहब की गद्दियों पर क़ाबिज होने की वजह से अवाम की नजर में वही मजहब के नुमाइंदे होते हैं। इसलिए वे जिसे रद्द कर दें वह न सिर्फ जिंदगी के वसाइल से महरूम हो जाता है बल्कि हक की ख़ातिर सब कुछ खोने के बाद भी लोगों की नजर में बददीन ही बना रहता है। ऐसे वक्त में हक के दाओ का साथ देना इंतिहाई मुश्किल काम है। यह शुबहात और मुख़ालिफ़तों की आम फिजा में उसकी सदाकत पर गवाह बनना है। यह हक की जानिब उस वक्त खड़ा होना है जबकि हक तंहा रह गया हो।

हक जब अपनी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में उठता है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर इसकी जद पड़ती हुई महसूस करते हैं जो अपनी हक के ख़िलाफ़ जिंदगी पर हक का लेबल लगाकर लोगों के दर्मियान इज्जत का मकाम हासिल किए हुए थे। वे दाओ को जेर (परास्त) करने के लिए उठ खड़े होते हैं। वे तरह-तरह के शोशे निकाल कर अवाम को इसके ख़िलाफ भड़काते हैं। और बिलआख़िर ताक़त के जरिए उसे मिटा देने का मंसूबा बनाते हैं। मगर अल्लाह की नुसरत (मदद) हमेशा दाओ के साथ होती है, इसलिए कोई मुख़ालिफ़त (विरोध) उसकी आवाज को दबाने में कामयाब नहीं होती। मुख़ालिफ़तों के बावजूद वह अपने मिशन को मुकम्मल करता है। जो लोग हक की दावत के मुख़ालिफ बनें वे अल्लाह की नजर में मुफ़सिद (उपद्रवी) हैं। क्योंकि वे लोगों को जन्नत की तरफ जाने से रोकते हैं। इससे बड़ा कोई फसाद नहीं हो सकता कि ख़ुदा के बंदों को ख़ुदा की जन्नत की तरफ जाने से रोका जाए।

हजरत मसीह यहूद कौम में पैदा हुए मगर यहूद ने आपकी नुबुव्वत नहीं मानी। उन्होंने आपको ख़त्म करने के लिए आपके ख़िलाफ झूठा मुकदमा बनाया और आपको फ़िलिस्तीन की

रूमी अदालत में ले गए। अदालत से आपको सूली पर चढ़ाने का फैसला हो गया। मगर अल्लाह तआला ने आपको उठा लिया और रूमी सिपाहियों ने एक अन्य आदमी को आपके हमशक्ल पाकर उसे सूली दे दी। यहूद के इस जुर्म पर ख़ुदा ने यह फैसला कर दिया कि हजरत मसीह को मानने वाली कौम कियामत तक यहूदी कौम पर ग़ालिब रहेगी। यह यहूद और मसीही दोनों के साथ ख़ुदा का दुनियावी मामला है। आख़िरत का मामला इसके अलावा है जो ख़ुदा की आम सुन्नत के तहत होगा।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٦١﴾ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नजदीक आदम की-सी है। अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया। फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। हक बात है तेरे रब की तरफ से। पस तुम न हो शक करने वालों में। फिर जो तुमसे इस बारे में हुज्जत करे बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ, हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को। और हम और तुम ख़ुद भी जमा हों। फिर हम मिलकर दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो। बेशक यह सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अगर वे कुबूल न करें तो अल्लाह फसाद करने वालो को जानता है। (59-63)

मसीही लोगों का अकीदा है कि हजरत मसीह (अलै०) ख़ुदा के बेटे हैं। इनका कहना है कि हजरत मसीह आम इंसानों से बिल्कुल भिन्न हैं। उनका जन्म प्रजनन के आम नियम के विपरीत बाप के बग़ैर हुआ, फिर आपको आम इंसानों की तरह एक इंसान कैसे कहा जा सकता है। आपके जन्म की प्रक्रिया ख़ुद बताती है कि वह बशर (आम इंसान) से मावरा थे। वह इंसान के बेटे नहीं बल्कि ख़ुदा के बेटे थे। कहा गया कि तुम्हारे सवाल का जवाब अव्वल इंसान (आदम) की तख़्लीक में मौजूद है। तुम ख़ुद यह मानते हो कि आदम सबसे पहले बशर हैं। वह मारूफ तरीके के मुताबिक मर्द और औरत के तअल्लुक से वजूद में नहीं आए। बल्कि बराहेरास्त ख़ुदा के हुक्म के तहत वजूद मे आए। फिर बाप के बगैर पैदा होने की बुनियाद पर जब आदम ख़ुदा के बेटे नहीं हैं तो इसी तरह बाप के बग़ैर पैदा होने की बुनियाद पर मसीह कैसे ख़ुदा के बेटे हो जाऐंगे।

नजरान (यमन) कुरआन के नाज़िल होने के जमाने मे मसीही मजहब का बहुत बड़ा

मर्कज था। उनके उलमा और पेशवाओं का एक वफ्द सन् 9 हिजरी में मदीना आया और अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से मसीही अकाइद के बारे में बहस की। आपने मुख़्तलिफ दलीलें उनके सामने पेश कीं। मसलन आपने फरमाया कि मसीह ख़ुदा के बेटे कैसे हो सकते हैं जबकि ख़ुदा एक जिंदा हस्ती है, उस पर कभी मौत आने वाली नहीं। मगर ईसा पर मौत और फना आने वाली है। आपकी दलीलों का उन के पास कोई जवाब नहीं था मगर वे बराबर कजबहसी करते रहे। जब आपने देखा कि वे दलील से मानने वाले नहीं हैं तो आपने उन्हें एक आख़िरी चैलेंज दिया। आपने फरमाया कि अगर तुम अपने को बरहक समझते हो तो मुबाहिला (एक-दूसरे पर लानत की बददुआ) के लिए तैयार हो जाओ।

अगले दिन सुबह को आप बाहर निकले। आपके साथ आपके दोनों नवासे हसन और हुसैन थे। इनके पीछे हजरत फातिमा और इनके पीछे हजरत अली। नजरानी ईसाई यह देखकर मरऊब हो गए और आपस में मश्विरे की मोहलत मांगी। अकेले मश्विरे में उनके एक आलिम ने कहा : तुम जानते हो कि अल्लाह ने बनी इस्माईल में पैग़म्बर भेजने का वादा किया है। हो सकता है कि यह वही पैग़म्बर हों। फिर एक पैग़म्बर से मुबाहिला और मुलाइना (मलऊन करना) करने का नतीजा यही निकल सकता है कि तुम्हारे छोटे और बड़े सब हलाक हो जाएं और नस्लों तक इसका असर बाकी रहे। ख़ुदा की कसम मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर ये दुआ करें तो पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाएंगे। इसलिए बेहतर यह है कि हम उनसे सुलह करके अपनी बस्तियों की तरफ रवाना हो जाएं।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنجِيلُ إِلَّا مِن بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾ هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُم بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾ إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۗ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾ وَدَّت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾

कहो ऐ अहले किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान मुसल्लम (साझी) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं। और हममें से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। फिर अगर वे इससे मुंह मोड़ें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम फरमांबरदार हैं। ऐ अहले किताब, तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। हालांकि तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं। क्या तुम इसे नहीं समझते। तुम वे लोग हो कि तुम उस बात के बारे में झगड़े जिसका तुम्हें कुछ इल्म था। अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी था और न नसरानी। बल्कि सिर्फ अल्लाह का ही रहने वाला मुस्लिम था और वह शिर्क करने वालों में से न था। लोगों में ज्यादा मुनासिबत इब्राहीम से उन्हें है जिन्होंने उसकी पैरवी की और यह पैग़म्बर और जो उस पर ईमान लाए। और अल्लाह ईमान वालों का साथी है। अहले किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दे। हालांकि वे नहीं गुमराह करते मगर ख़ुद अपने आपको। मगर वे इसका एहसास नहीं करते। ऐ अहले किताब, अल्लाह की निशानियों का क्यों इंकार करते हो हालांकि तुम गवाह हो। ऐ अहले किताब, तुम क्यों सही में ग़लत को मिलाते हो और हक को छुपाते हो, हालांकि तुम जानते हो। (64-71)

तौहीद न सिर्फ पैग़म्बरों की अस्ल तालीम है बल्कि तौरात और इंजील के मौजूदा ग़ैर-मुस्तनद (अप्रमाणिक) नुस्ख़ों में भी वह एक मुसल्लम हकीकत के तौर पर मौजूद है। इस मुसल्लमा मेयार (मापदंड) पर जांचा जाए तो इस्लाम ही कामिल तौर पर सही दीन साबित होता है न कि यहूदियत और नसरानियत। तौहीद का मतलब यह है कि अल्लाह को एक माना जाए। सिर्फ उसी की इबादत की जाए। उसके साथ किसी को शरीक न ठहराया जाए। किसी इंसान को वह मकाम न दिया जाए जो कायनात के मालिक के लिए ख़ास है। यह तौहीद अपनी ख़ालिस सूरत में सिर्फ कुरआन और इस्लाम में महफूज़ है। दूसरे मजहबों ने नजरी तौर पर तौहीद का इकरार करते हुए अमली तौर पर वह सब कुछ इख़्तियार कर लिया जो तौहीद के सरासर ख़िलाफ था। जबान से ख़ुदा को रब कहते हुए उन्होंने अपने नबियों और बुजुर्गों को अमलन रब का दर्जा दे दिया।

मक्का के मुशरिकीन अपने मजहब को इब्राहीमी मजहब कहते थे। यहूद व नसारा भी अपने मजहबी इतिहास को हजरत इब्राहीम के साथ जोड़ते थे। हर जमाने के लोग इसी तरह अपने नबियों और बुजुर्गों के नाम को अपनी बिदआत (कुरीतियों) और तहरीफात (संशोधनों, परिवर्तनों) के लिए इस्तेमाल करते रहे हैं। जमाना गुजरने के बाद इनका बनाया हुआ मजहब अवाम के जेहनों में इस तरह छा जाता है कि वे उसी को अस्ल मजहब समझने लगते हैं। इन हालात में जब सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत उठती है तो उसके विरोधी इसे बेएतबार साबित करने के लिए सबसे आसान तरीका यह समझते हैं कि अवाम में यह मशहूर कर दें कि यह अस्लाफ (पूर्वजों) के दीन के ख़िलाफ है। वह शख़्स जो अस्लाफ के दीन का हकीकी नुमाइंदा होता है उसे ख़ुद अस्लाफ ही के नाम पर रद्द कर दिया जाता है। यह गोया

हक के ऊपर बातिल (असत्य) का पर्दा डालना है। यानी ऐसी बातें कहना जो अपनी मूल प्रकृति में बेहकीकत हों मगर अवाम तज्जिया (विश्लेषण) न कर सकने की वजह से इसे दुरुस्त समझ लें और हक से दूर हो जाएं। 'मुस्लिम हनीफ' वह है जो तौहीद के रास्ते पर यकसू होकर चले और ग़ैर-हनीफ वह है जो दाएं या बाएं की पगडंडियों पर मुड़ जाए। कोई एक जेली पहलू (उप पहलू) को लेकर इतना बढ़ाए कि उसी को सब कुछ बना दे। कोई दूसरे जेली पहलू को लेकर उस पर इतने तशरीही (व्याख्यागत) इजाफे करे कि वही सारी हकीकत नजर आने लगे। लोग दीन के जेली पहलुओं को कुल दीन समझ लें और तौहीद की सीधी शाहराह को छोड़कर इधर-उधर के रास्तों में दौड़ने लगें।

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ ءَامِنُوا بِالَّذِىٓ أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوٓا ءَاخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوٓا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ أَنْ يُؤْتٰىٓ أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَآجُّوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْأُمِّيّٖنَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنْ أَوْفٰى بِعَهْدِهِ وَاتَّقٰى فَإِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾

और अहले किताब के एक गिरोह ने कहा कि मुसलमानों पर जो चीज उतारी गई है उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इंकार कर दो, शायद कि मुसलमान भी इससे फिर जाएं। और यकीन न करो मगर सिर्फ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर। कहो हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे। और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए जो तुम्हें दिया गया था। या वे तुमसे तुम्हारे रब के यहां हुज्जत करें। कहो बड़ाई अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बड़ा वुस्अत वाला है, इल्म वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है। और अल्लाह बड़ा फज्ल वाला है। और अहले किताब में कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसे तुम्हें अदा कर दे। और इनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुम्हें अदा न करे इल्ला यह कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वे कहते हैं कि ग़ैर-अहले किताब के बारे में हम पर कोई इल्जाम नहीं। और वे अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं

हालांकि वे जानते हैं। बल्कि जो शख़्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह ऐसे मुत्तक़ियों को दोस्त रखता है। (72-76)

एक गिरोह जिसमें अंबिया और सुलहा (महापुरुष) पैदा हुए हों, जिसके दर्मियान अर्से तक दीन का चर्चा रहे, अक्सर वह इस ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है कि वह और हक दोनों एक हैं। वह हिदायत को एक गिरोही चीज समझ लेता है न कि एक उसूली चीज। यहूद का मामला यही था। उनका जेहन, तारीख़ी रिवायतों के असर से यह बन गया था कि जो हमारे गिरोह में है वह हिदायत पर है और जो हमारे गिरोह से बाहर है वह हिदायत से ख़ाली है। जो लोग हक को इस तरह गिरोही चीज समझ लें वे ऐसी सदाक़त (सच्चाई) को मानने के लिए तैयार नहीं होते जो उनके गिरोह के बाहर जाहिर हुई हो। वे भूल जाते हैं कि हक वह है जो अल्लाह की तरफ से आए न कि वह जो किसी शख़्स या गिरोह की तरफ से मिले। वे अगरचे ख़ुदा के दीन का नाम लेते हैं मगर उनका दीन हकीकत में गिरोहपरस्ती होता है न कि ख़ुदापरस्ती। उनका यह मिजाज उनकी आंख पर ऐसा पर्दा डाल देता है कि अपने गिरोह से बाहर किसी का फ़ज़्ल व कमाल उन्हें दिखाई नहीं देता। खुली-खुली दलीलें सामने आने के बाद भी वे इसे शुबह की नजर से देखते हैं। वे अपने हलके से बाहर उठने वाली हक की दावत के शदीद मुख़ालिफ बन जाते हैं। दोअमली का तरीका अपना कर वे इसे ख़त्म करने की कोशिश करते हैं। बेबुनियाद बातें मशहूर करके वे लोगों को इसकी सदाकत के बारे में मुशतबह (भ्रमित) करते हैं। शरीअते ख़ुदावंदी के सरासर ख़िलाफ वे इसे अपने लिए जाइज कर लेते हैं कि वे अख़्लाक के दो मेयार बनाएं, एक ग़ैरों के लिए और दूसरा अपने गिरोह के लिए।

किसी को अपने दीन की नुमाइंदगी के लिए कुबूल करना अल्लाह की ख़ुसूसी रहमत है। इसका फैसला गिरोही बुनियाद पर नहीं होता। यह सआदत उसे मिलती है जिसे अल्लाह अपने इल्म के मुताबिक पसंद करे। और अल्लाह उस शख़्स को पसंद करता है जो अल्लाह के साथ अपने को इस तरह वाबस्ता कर ले कि वह उसका निगरां (संरक्षक) बन जाए, जिससे वह डरे, वह उसका आका बन जाए जिसके साथ किए हुए इताअत के अहद को वह कभी नजरअंदाज न कर सके। अल्लाह के मकबूल बंदे वे हैं जो अमानत को पूरा करने वाले हों और अहद (वचन) के पाबंद हों। ऐसे ही लोगों पर अल्लाह की रहमतें उतरती हैं। इसके बरअक्स जो लोग अमानत की अदायगी के मामले में बेपरवाह हों और अहद को पूरा करने में हस्सास न रहें वे अल्लाह के यहां बेकीमत हैं। ऐसे लोग अल्लाह की रहमतों और नुसरतों (मदद) से दूर कर दिए जाते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ
فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾ وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ
مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ

عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ
يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ
تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ
بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾

जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी कसमों को थोड़ी कीमत पर बेचते हैं उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ देखेगा कियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा। और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी जबानों को किताब में मोड़ते हैं ताकि तुम उसे किताब में से समझो हालांकि वह किताब में से नहीं। और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है हालांकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं। और वे जान कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबुव्वत दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ। बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, इस वास्ते कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और ख़ुद भी उसे पढ़ते हो। और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फरिश्तों और पैग़म्बरों को रब बनाओ। क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा, बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो। (77-80)

एक शख़्स जब ईमान लाता है तो वह अल्लाह से इस बात का अहद करता है कि वह उसकी फरमांबरदारी करेगा और बंदों के दर्मियान जिंदगी गुजारते हुए उन तमाम जिम्मेदारियों को पूरा करेगा जो ख़ुदा की शरीअत की तरफ से उस पर आयद होती हैं। यह एक पाबंद जिंदगी है जिसे अहद (वचन, प्रतिज्ञा, प्रतिबद्धता) की जिंदगी से ताबीर किया जा सकता है। इस जिंदगी पर कायम होने के लिए नफ्स की आजादियों को ख़त्म करना पड़ता है, बार-बार अपने फायदों और मस्लेहतों की कुर्बानी देनी पड़ती है। इसलिए इस अहद की जिंदगी को वही शख़्स निभा सकता है जो नफा नुक्सान से बेनियाज होकर इसे अपनाए। जिस शख़्स का हाल यह हो कि नफ्स पर चोट पड़े या दुनिया का मफाद ख़तरे में नजर आए तो वह ख़ुदा के अहद को नजरअंदाज कर दे और अपने फायदों और मस्लेहतों की तरफ झुक जाए, उसने गोया आख़िरत को देकर दुनिया ख़रीदी। जब आख़िरत के पहलू और दुनिया के पहलू में से किसी एक को लेने का सवाल आया तो उसने दुनिया के पहलू को तरजीह दी। जो शख़्स आख़िरत को इतनी बेकीमत चीज समझ ले वह आख़िरत में अल्लाह की इनायतों का हकदार किस तरह हो सकता है।

जो लोग आख़िरत को अपनी दुनिया का सौदा बनाएं वे दीन या आख़िरत के मुंकिर नहीं हो जाते बल्कि दीन और आख़िरत के पूरे इकरार के साथ ऐसा करते हैं। फिर इन दो मुतजाद (परस्पर विरोधी) रवैयों को वे किस तरह एक-दूसरे के मुताबिक बनाते हैं। इसका जरिया

तहरीफ (संशोधन, परिवर्तन) है। यानी आसमानी तालीमात को ख़ुदसाख़्ता मअना पहनाना। ऐसे लोग अपनी दुनियापरस्ताना रविश को आख़िरतपसंदी और ख़ुदापरस्ती साबित करने के लिए दीनी तालीमात को अपने मुताबिक ढाल लेते हैं। कभी ख़ुदा के अल्फ़ाज को बदल कर और कभी ख़ुदा के अल्फ़ाज की अपने मुफ़ीदे मतलब तशरीह करके। वे अपने आप को बदलने की बजाए किताबे इलाही को बदल देते हैं ताकि जो चीज किताबे इलाही में नहीं है उसे ऐन किताबे इलाही की चीज बना दें, अपनी बेख़ुदा जिंदगी को बाख़ुदा जिंदगी साबित कर दिखाएं। अल्लाह के नजदीक यह बदतरीन जुर्म है कि आदमी अल्लाह की तरफ ऐसी बात मंसूब करे जो अल्लाह ने न कही हो।

किसी तालीम की सदाकत की सादा और यकीनी पहचान यह है कि वह अल्लाह के बंदों को अल्लाह से मिलाए, लोगों के ख़ौफ व मुहब्बत के जज्बात को बेदार करके उन्हें अल्लाह की तरफ मोड़ दे। इसके बरअक्स जो तालीम शख़्सियतपरस्ती या और कोई परस्ती पैदा करे, जो इंसान के नाज़ुक जज्बात की तवज्जोह का मर्कज किसी ग़ैर-ख़ुदा को बनाती हो, उसके बारे में समझना चाहिए की वह सरासर बातिल (असत्य) है चाहे बजाहिर अपने ऊपर उसने हक का लेबल क्यों न लगा रखा हो।

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّنَ لَمَا اٰتَيْتُكُمْ مِنْ كِتٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ
رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۚ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ
عَلٰى ذٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ
الشّٰهِدِينَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ
اللّٰهِ يَبْغُونَ وَلَهٗٓ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ
يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ عَلٰٓى إِبْرٰهِيمَ
وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسٰى وَعِيسٰى
وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾
وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ
الْخٰسِرِينَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوٓا أَنَّ
الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿٨٦﴾
أُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾

خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوا ۛ فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٨٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ
الضَّآلُّونَ ﴿٩٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ
الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۗ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
وَمَا لَهُمْ مِنْ نّٰصِرِينَ ﴿٩١﴾

ع 17

और जब अल्लाह ने पैग़म्बरों का अहद लिया कि जो कुछ मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत दी, फिर तुम्हारे पास पैग़म्बर आए जो सच्चा साबित करे उन पेशेनगोइयों (भविष्यवाणियों) को जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे। अल्लाह ने कहा क्या तुमने इकरार किया और उस पर मेरा अहद कुबूल किया। उन्होंने कहा हम इकरार करते हैं। फरमाया अब गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूं। पस जो शख़्स फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं। हालांकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और जमीन में है, ख़ुशी से या नाख़ुशी से और सब उसी की तरफ लौटाए जाएंगे। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर इस्माईल पर इस्हाक पर और याकूब पर और याकूब की औलाद पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ से। हम इनके दर्मियान फर्क नहीं करते। और हम उसी के फरमांबरदार हैं। और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज कुबूल नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में नामुरादों में से होगा। अल्लाह क्योंकर ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए। हालांकि वे गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक है और उनके पास रोशन निशानियां आ चुकी हैं। और अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। ऐसे लोगों की सजा यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फरिश्तों की और सारे इंसानों की लानत होगी। वे इसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अजाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। अलबत्ता जो लोग इसके बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबा हरगिज कुबूल न की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और इंकार की हालत में मर गए, अगर वे जमीन भर सोना भी फिदये में दें तो कुबूल नहीं किया जाएगा। उनके लिए दर्दनाक अजाब है और उनका कोई मददगार न होगा। (81-91)

अल्लाह को पाना एक अबदी (शाश्वत) हकीकत को पाना है, यह पूरी कायनात का हमसफर बनना है। जो लोग इस तरह अल्लाह को पा लें वे हर किस्म के तअस्सुबात (विद्वेषों) से ऊपर उठ जाते हैं। वे हक को हर हाल में पहचान लेते हैं चाहे उसका पैग़ाम 'इस्राईली पैग़म्बर' की जबान से बुलंद हो या 'ईस्माईली पैग़म्बर' की जबान से। मगर जो लोग गिरोहपरस्ती की सतह पर जी रहे हों, हक उन्हें हक की सूरत में सिर्फ उस वक्त नजर आता है जबकि वह उनके अपने गिरोह के किसी फर्द की तरफ से आए। अल्लाह अगर इनके गिरोह से बाहर किसी शख़्स को अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए उठाए तो ऐसा पैग़ाम उनके जेहन का जुज नहीं बनता। यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि उनका दिल उसके हक व सदाक्त होने की गवाही दे रहा हो। ऐसे लोग चाहे अपने को मानने वालों में शुमार करें मगर अल्लाह के यहां इनका नाम न मानने वालों में लिखा जाता है। क्योंकि उन्होंने हक को अपने गिरोह की निस्बत से जाना न कि अल्लाह की निस्बत से। ऐसे हक का इकरार न करना जिसके हक होने पर आदमी के दिल ने गवाही दी हो अल्लाह के नजदीक बदतरीन जुर्म है। ऐसे लोग आख़िरत में इतने जलील होंगे कि अल्लाह और उसकी तमाम मख़्लूकात उन पर लानत करेगी। अपने से बाहर जाहिर होने वाले हक का एतराफ न करना बजाहिर अपने ईमान को बचाना है। मगर हकीकत में यह अपने ईमान को बर्बाद करना है। अल्लाह का मोमिन बंदा अल्लाह के मुसलसल फैजान में जीता है। फिर जो शख़्स अपने को ख़ुदपरस्ती और गिरोहपरस्ती के ख़ोल में बंद कर ले उसके अंदर अल्लाह का फैजान किस रास्ते से दाख़िल होगा। और अल्लाह के फैजान से महरूमी के बाद वह क्या चीज होगी जो उसके ईमान की परवरिश करे।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ
اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ۝ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ
اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ
فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝ فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ
حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ
بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬ وَ
مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ
سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ۝ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰی مَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ یٰۤاَهْلَ

الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ
شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

तुम हरगिज नेकी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकते जब तक तुम उन चीजों में से ख़र्च न करो जिन्हें तुम महबूब रखते हो। और जो चीज भी तुम ख़र्च करोगे उससे अल्लाह बाख़बर है। सब खाने की चीजें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए उसके जो इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था इससे पहले कि तौरात उतरे। कहो कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो। इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधें वही जालिम हैं। कहो अल्लाह ने सच कहा। अब इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हनीफ था और वह शिर्क करने वाला न था। बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हिदायत का मर्कज। इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मकामे इब्राहीम है, जो इसमें दाख़िल हो जाए वह मामून (सुरक्षित) है। और लोगों पर अल्लाह का यह हक है कि जो इस घर तक पहुंचने की ताकत रखता हो वह इसका हज करे और जो कोई मुंकिर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज है। कहो ऐ अहले किताब तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हो। हालांकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। कहो ऐ अहले किताब तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो। तुम उसमें ऐब ढूंढते हो। हालांकि तुम गवाह बनाए गए हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। (92-99)

यहूद के उलमा ने ख़ुद से जो फिक्ह बना रखी थी उसमें ऊंट और ख़रगोश का गोश्त खाना हराम था जबकि इस्लाम में वह जाइज था। अब यहूद यह कहते कि इस्लाम अगर ख़ुदा का उतारा हुआ दीन है तो इसमें भी हराम व हलाल के मसाइल वही क्यों नहीं जो पिछले जमाने में उतारे हुए ख़ुदा के दीन में थे। इसी तरह वे कहते कि बैतुल मक्दिस अब तक तमाम नबियों की इबादत का किबला रहा है। फिर यह कैसे हो सकता है कि ख़ुदा ऐसा दीन उतारे जिसमें इसे छोड़कर काबा को किबला करार दिया गया हो।

हक की दावत जब अपनी ख़ालिस शक्ल में उठती है तो उन लोगों पर इसकी जद पड़ने लगती है जो ख़ुदा के दीन के नाम पर अपना एक दीन अवाम में राइज किए हुए हों। ऐसे लोग इसके मुख़ालिफ हो जाते हैं और लोगों को हक की दावत से फेरने के लिए तरह-तरह के एतराज निकालते हैं। उनके ख़ुदासाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन में दीन के असासयात (मूल आधारों) पर जोर बाकी नहीं रहता। इसके बजाए दीन के जुज्यात (अमौलिक चीजों) में मूशिगाफियों से दीनदारी का एक जाहिरी ढांचा बन जाता है। आदमी की हकीकी जिंदगी कैसी ही हो, नेकी और तक्वा का कमाल यह समझा जाने लगता है कि वह इस जाहिरी ढांचे का ख़ूब एहतेमाम करे। वह 'ख़रगोश' को यह कहकर न खाए कि हमारे अकाबिर (पूर्ववर्ती पूर्वज) इससे बचते थे। दूसरी तरफ वह कितनी ही हराम चीजों को अपने लिए जाइज किए हुए हो। वह बैतुल मक्दिस की तरफ रुख़ करने में कुतुबनुमा की सूई की तरह सीधा हो जाना जरूरी समझता हो।

मगर सुबह व शाम की सरगर्मियों को ख़ुदा रुख़ी बनाने में उसे दिलचस्पी न हो। मगर नेकी का दर्जा किसी को कुर्बानी से मिलता है न कि सस्ती जाहिरदारियों से। ख़ुदा का नेक बंदा वह है जो अपनी मुहब्बत का हदिया अपने रब को पेश करे, जिसके लिए अल्लाह के मुक़ाबले में दुनिया की कोई चीज अजीज़तर न रहे। हक़ को मानने के लिए जब वक़ार (प्रतिष्ठा) की कीमत देनी हो, अल्लाह के रास्ते में बढ़ने के लिए जब माल ख़र्च करना हो और बच्चों के मुस्तकबिल को ख़तरे में डालना पड़े, उस वक्त वह अल्लाह की ख़ातिर सब कुछ गवारा कर ले। ऐसे नाज़ुक मौक़ों पर जो शख़्स अपनी महबूब चीजों को देकर अल्लाह को ले ले वही नेक और ख़ुदापरस्त बना।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

ऐ ईमान वालो अगर तुम अहले किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान के बाद फिर मुंकिर बना देंगे। और तुम किस तरह इंकार करोगे हालांकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दर्मियान उसका रसूल मौजूद है। और जो शख़्स अल्लाह को मजबूती से पकड़ेगा तो वह पहुंच गया सीधी राह पर। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए। और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो। और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और फूट न डालो। और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फत डाल दी। पस तुम उसके फज़्ल से भाई-भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां बयान करता है ताकि तुम राह पाओ। (100-103)

दुनिया आजमाइश की जगह है। यहां हर वक्त यह ख़तरा है कि शैतान आदमी के ईमान को उचक ले जाए और फरिश्ते उसकी रूह इस हाल में कब्ज करें कि वह ईमान से ख़ाली हो।

इसलिए जरूरी है कि आदमी हर वक्त बाहोश रहे, वह अपने आप पर निगरां बन जाए। ईमान से दूर होने की एक सूरत वह है जबकि दीन के अजजा (अंगों) में तब्दीली करके अहम को ग़ैर-अहम और ग़ैर-अहम को अहम बना दिया जाए। दीन की अस्ल रस्सी तकवा है। यानी अल्लाह से डरना और मरते दम तक अपने हर मामले में वही रवैया अपनाना जो अल्लाह के सामने जवाबदही के तसव्वुर (धारणा) से बनता हो, यही सिराते मुस्तकीम (सीधा-सच्चा रास्ता, सन्मार्ग) है। इससे हटना यह है कि 'तकवा' के बजाए, किसी और चीज को दीन का मदार समझ लिया जाए और उस पर इस तरह जोर दिया जाए जिस तरह ख़ुदा के ख़ौफ और आख़िरत की फ़िक्र पर दिया जाता है। जब भी दीन में इस क़िस्म की तब्दीली की जाती है तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि मिल्लत के दर्मियान इख़्तेलाफ (मतभेद) पड़ जाता है। कोई एक जिमनी (उप, पूरक) चीज पर जोर देता है कोई दूसरी जिमनी चीज पर, और इस तरह मिल्लत फ़िरक़े-फ़िरक़े में बंट कर रह जाती है। ऊपर वर्णित पहले से एक अल्लाह तवज्जोह का मर्कज बनता है और दूसरे से विविध मसाइल तवज्जोह के मर्कज बन जाते हैं। जब दीन में सारा जोर और ताकीद तकवा (अल्लाह से डरना) पर दिया जाए तो इससे आपस में इत्तेहाद वजूद में आता है और जब इसके सिवा दूसरी चीजों पर जोर दिया जाने लगे तो इससे आपसी इख़्तेलाफ (मतभेद) की वह बुराई पैदा होती है जो लोगों को जहन्नम के किनारे पहुंचा देती है। किसी गिरोह के अंदर इख़्तेलाफ दुनिया में भी अजाब है और आख़िरत में भी अजाब।

इस्लाम से पहले मदीने में दो कबीले थे। औस और ख़जरज। ये दोनों अरब कबीले थे मगर वे आपस में लड़ते रहते थे। इन आपसी लड़ाइयों ने उन्हें कमजोर कर दिया था। जब वे इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुए तो उनकी लड़ाइयां ख़त्म हो गईं, वे भाई-भाई की तरह मिलकर रहने लगे।

इसकी वजह यह है कि ग़ैर-इस्लाम में हर आदमी अपना वफादार रहता है और इस्लाम में सिर्फ एक अल्लाह का। जिस समाज में लोग अपने या अपने गिरोह के वफ़ादार हों वहां कुदरती तौर पर कई वफ़ादारियां वजूद में आती हैं। और कई वफ़ादारियों के अमली नतीजे ही का नाम इख़्तेलाफ और टकराव है। इसके बरअक्स जिस समाज में तमाम लोग एक ख़ुदा के वफ़ादार बन जाएं वहां सबका रुख़ एक मर्कज की तरफ हो जाता है, सब एक रस्सी से बंध जाते हैं। इस तरह आपसी इख़्तेलाफ और टकराव के असबाब अपने आप ही ख़त्म हो जाते हैं।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاَمَّا

الذين ابيضت وجوههم ففي رحمة الله هم فيها خلدون ۝ تلك
ايت الله نتلوها عليك بالحق وما الله يريد ظلما للعلمين ۝ ولله ما
في السموت وما في الارض والى الله ترجع الامور ۝

और जरूर है कि तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फिरकों में बंट गए और आपस में इख़्तेलाफ (मतभेद) कर लिया बाद इसके कि उनके पास वाजेह हुक्म आ चुके थे। और उनके लिए बड़ा अजाब है। जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा क्या तुम अपने ईमान के बाद मुंकिर हो गए, तो अब चखो अजाब अपने कुफ्र के सबब से। और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें हक के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म नहीं चाहता। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह के लिए है और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाएंगे। (104-109)

'तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके' यह इर्शाद एक साथ दो बातों को बता रहा है। एक का तअल्लुक ख़्वास (विशिष्टजनों) से है और दूसरी का तअल्लुक अवाम (जनसाधारण) से। उम्मत के ख़्वास के अंदर यह रूह होनी चाहिए कि वे उम्मत के अंदर बुराई को बर्दाशत न करें, वे नेकी और भलाई के लिए तड़पने वाले हों उनका यह इस्लाह का जज्बा उन्हें मजबूर करेगा कि वे लोगों के अहवाल से ग़ैर-मुतअल्लिक न रहें वे अपने भाइयों को नेकी की राह पर चलने के लिए उकसाएं और उन्हें बुराई से बचने की तलकीन करें।

ताहम इस अमल की कामयाबी के लिए उम्मत के अवाम के अंदर इताअत (आज्ञापालन) का जज्बा होना भी लाजिमन जरूरी है। अवाम को चाहिए कि वे अपने ख़्वास का एहतेराम करें। वे उनके कहने से चलें और जहां वे रोकें वहां वे रुक जाएं। वे अपने आपको अपनी दीनी जिम्मेदारियों के हवाले कर दें। जिस मुस्लिम गिरोह में ख़्वास और अवाम का यह हाल हो वही फ़लाह पाने वाला गिरोह है। समअ और ताअत (आज्ञापालन और अनुशासन) की इस फिज़ा ही में किसी समाज के अंदर वे औसाफ (गुण) जन्म लेते हैं जो उसे दुनिया में ताक़तवर और आख़िरत में नजातयाफ्ता बनाते हैं।

ख़्वास के अंदर इस रूह के जिंदा होने का यह फायदा है कि उनकी सारी तवज्जोह ख़ैर, दूसरे अल्फ़ाज में दीन की बुनियादों पर केंद्रित रहती है। अमौलिक मसाइल में मूशिगाफियां करने का उनके पास वक्त ही नहीं होता। जो लोग ख़ुदा की अज़्मतों के नकीब बनें और आख़िरत की कामयाबी की बशारत (शुभ सूचना) देने वाले बन कर उठें उनके पास इतना वक्त ही नहीं होता कि जाहिरी मसाइल के जुज्यात (अमौलिक अंशों) में अपनी महारत दिखाएं। इसके साथ 'अम्र बिल मारूफ व नही अनिल मुंकर' (नेकियों का हुक्म देना, बुराइयों

से रोकना) का काम उन्हें हक़ीक़ी मसाइल के हल में लगा देता है। फर्ज़ी और क्यासी (काल्पनिक) मसाइल में जेहनी वरजिश करना उन्हें उसी तरह बेमअना और बेफायदा मालूम होने लगता है जिस तरह एक किसान को शतरंज का खेल।

अवाम को इस निजामे इताअत पर अपने को राजी करने का यह फ़ायदा मिलता है कि वे टुकड़ों में बंटने से बच जाते हैं। एक हुक्म के तहत चलने के नतीजे में सब मिलकर एक हो जाते हैं। इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक (एकता-एकजुटता) उनकी आम सिफ्त बन जाती है और बिला शुबह इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक से ज्यादा बड़ी ताक़त इस दुनिया में कोई नहीं।

كنتم خير امة اخرجت للناس تامرون بالمعروف وتنهون عن
المنكر وتؤمنون بالله ولو امن اهل الكتب لكان خيرا لهم منهم
المؤمنون واكثرهم الفسقون ۝ لن يضروكم الا اذى وان يقاتلوكم يولوكم
الادبار ثم لا ينصرون ۝ ضربت عليهم الذلة اين ما ثقفوا الا بحبل من
الله وحبل من الناس وباءو بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة
ذلك بانهم كانوا يكفرون بايت الله ويقتلون الانبياء بغير حق ذلك بما
عصوا وكانوا يعتدون ۝

अब तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता। इनमें से कुछ ईमान वाले हैं और इनमें अक्सर नाफरमान हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर कुछ सताना। और अगर वे तुमसे मुकाबला करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएंगे। फिर उन्हें मदद भी न पहुंचेगी और उन पर मुसल्लत कर दी गई जिल्लत चाहे वे कहीं भी पाए जाएं, सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की तरफ से कोई अहद हो और वे अल्लाह के ग़जब के मुस्तहिक हो गए और उन पर मुसल्लत कर दी गई पस्ती, यह इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते रहे और उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक कत्ल किया। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से निकल जाते थे। (110-112)

यहूद ख़ुदाई दीन के हामिल (धारक) बनाए गए थे। मगर वे इसे लेकर खड़े न हो सके और इसे महफूज़ रखने में भी नाकाम रहे। इसके बाद अल्लाह ने मुहम्मद (सल्ल०) के जरिए अपना दीन उसकी सही सूरत में भेजा। अब मुस्लिम उम्मत लोगों के दर्मियान ख़ुदाई रहनुमाई के लिए खड़ी हुई है। इस मंसब का तकाजा है कि यह उम्मत अल्लाह की सच्ची मोमिन बने। वह दुनिया को भलाई की तल्कीन करे और उन चीजों से बाख़बर करे जो अल्लाह केन्जीक

बुराई की हैसियत रखती हैं। यह काम चूंकि ख़ुदाई काम है इसलिए ख़ुदा ने इसके साथ अपना तहफ्फ़ुज़ाती निजाम (सुरक्षा तंत्र) भी शामिल कर दिया है। जो लोग इस कारेख़ुदावंदी के लिए उठेंगे उनके लिए ख़ुदा की जमानत है कि उनके विरोधी उन्हें मामूली अजियतों (यातनाओं) के सिवा कोई हकीकी नुक्सान न पहुंचा सकेंगे। ताहम यहूद के अंजाम की सूरत में इसकी भी दाइमी (चिरस्थाई) मिसाल क़ायम कर दी गई कि इस हक के मंसब पर सरफ़राज किए जाने के बाद जो लोग बदअहदी (वचन भंग) करें उनकी सजा इसी दुनिया में इस तरह शुरू हो जाती है कि उन्हें जाती इज्जत और सरफ़राजी से महरूम कर दिया जाता है। ख़ुदा की रहमतों से महरूमी की वजह से उनकी बेहिसी (संवेदनहीनता) इतनी बढ़ जाती है कि वे उन लोगों की जान के दरपे हो जाते हैं जो उनकी कोताहियों की तरफ तवज्जोह दिलाने के लिए उठें।

'यहूद पर जिल्लत मुसल्लत कर दी गयी इल्ला यह कि उन्हें अल्लाह की या बंदों की अमान हासिल हो।' यह अल्लाह की एक ख़ास सुन्नत है जिसका तअल्लुक उस कौम से है जिसको ख़ुदा ने अपने दीन का नुमाइंदा बनाया हो। दीन की सच्ची नुमाइंदगी ऐसी कौम के लिए ग़लबे (वर्चस्व) की जमानत होती है। और दीन की सच्ची नुमाइंदगी से हटना उसे मौजूदा दुनिया में मग़लूब (परास्त) करने का सबब बन जाता है। ऐसी कौम अगर ख़ुदा के दीन की नुमाइंदगी से हट जाए तो मौजूदा दुनिया में कभी वह जाती ग़लबा हासिल नहीं कर सकती, किसी दर्जे में अगर कभी उसे इख़्तियार मिल जाए तो वह अपने अलावा किसी दूसरे के बल पर होगा या तो इसलिए कि उसे किसी ख़ुदाई हुकूमत की तरफ से अमान दिया गया है या इसलिए कि किसी ग़ैर कौम की हुकूमत ने उसे अपनी हिमायत व सरपरस्ती में ले लिया है।

कोई कौम जिल्लत की इस सजा की मुस्तहिक उस वक्त बनती है जबकि उसका यह हाल हो जाए कि वह ख़ुदाई निशानियों का इंकार करने लगे। निशानियों का इंकार सच्ची दलीलों का इंकार है। हक हमेशा दलीलों के रूप में जाहिर होता है। इसलिए जो शख़्स सच्ची दलील का इंकार करता है वह ख़ुद ख़ुदा का इंकार कर रहा है।

لَيْسُوْا سَوَآءً ۗ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ
يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ
عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا
صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۗ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾

सब अहले किताब एक जैसे नहीं। इनमें एक गिरोह अहद पर कायम है। वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दा करते हैं। वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं। ये सालेह (नेक) लोग हैं जो नेकी भी वे करेंगे उसकी नाकद्री न की जाएगी और अल्लाह परहेजगारों को ख़ूब जानता है। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया तो अल्लाह के मुकाबले में उनके माल और औलाद उनके कुछ काम न आऐंगे। और वे लोग दोजख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे इस दुनिया की जिंदगी में जो कुछ ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया है फिर वह उसको बर्बाद कर दे। अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (113-117)

नेकियों में सबकत (कल्याण कार्यों में स्पर्धा) से मुराद इस आयत में अहले किताब मोमिनों का यह अमल है कि मुहम्मद (सल्ल०) की जबान से जब ख़ुदाई सच्चाई का एलान हुआ तो उन्होंने फौरन उसे पहचान लिया और उसकी तरफ आजिजाना दौड़ पड़े। उस वक्त एक तरफ हजरत मूसा का दीन था जो तारीख़ी अज्मत और रिवायती तक़द्दुस (पावनता) के जोर पर कायम था। दूसरी तरफ मुहम्मद (सल्ल०) का दीन था जिसकी पुश्त पर अभी तक सिर्फ दलील की ताकत थी, तारीख़ी अज्मत और रिवायती तक़द्दुस का वज़न अभी तक उसके साथ शामिल नहीं हुआ था। अपने दीन और वक्त के नबी के दीन में यह फर्क वक्त के नबी के दीन को मानने में जबरदस्त रुकावट था। मगर वे इस रुकावट को पार करने में कामयाब हो गए और बढ़कर वक्त के नबी के दीन को मान लिया।

माल व औलाद की मुहब्बत आदमी को कुर्बानी वाले दीन पर आने नहीं देती। अलबत्ता नुमाइशी किस्म के आमाल का मुजाहिरा करके वह समझता है कि वह ख़ुदा के दीन पर कायम है। मगर जिस तरह सख़्त ठंडी हवा अचानक पूरी खेती को बर्बाद कर देती है इसी तरह कियामत का तूफ़ान उनके नुमाइशी आमाल को बेकीमत करके रख देगा। यहूद में सिर्फ कुछ लोग थे जो मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाए थे। 'उम्मते कायमा' की हैसियत से इनका मुस्तकिल जिक्र करना जाहिर करता है कि चंद आदमी अगर अल्लाह से डरने वाले हों तो वे भीड़ के मुकाबले में अल्लाह की नजर में ज्यादा कीमती होते हैं।

नजात के लिए सिर्फ यह काफी नहीं कि किसी पैग़म्बर के नाम पर जो नस्ली उम्मत बन गयी है आदमी उस उम्मत में शामिल रहे। बल्कि अस्ल जरूरत यह है कि वह अहद का पाबंद बने। अहद से मुराद ईमान है। ईमान बंदे और ख़ुदा के दर्मियान एक अहद है। ईमान लाकर बंदा अपने आपको इसका पाबंद करता है कि वह अपने आपको पूरी तरह अल्लाह का वफ़ादार और इताअतगुजार बनाएगा। दूसरे लफ्जों में, गिरोही निस्बत नहीं बल्कि जाती अमल वह चीज है जो किसी आदमी को ख़ुदा की रहमत और बख़्शिश का मुस्तहिक बनाती है।

इस अहद में तमाम ईमानी जिम्मेदारियां शामिल है। तंहाइयों में अल्लाह की याद, अल्लाह की इबादतगुजारी, आख़िरत को सामने रख कर जिंदगी गुजारना, अपने आसपास जो

अफराद हों उन्हें भलाई पर लाने की कोशिश करना, जो अफराद बुराई करें उन्हें बुराई से हटाने में पूरा जोर लगा देना, ख़ुदा की पसंद के कामों में दौड़ कर हिस्सा लेना। जो लोग ऐसा करें वही रब्बानी अहद पर पूरे उतरे। वे ख़ुदा के मकबूल बंदे हैं। उनका अमल ख़ुदा के इल्म में है, वह उन्हें उनके अमल का बदला देगा और फैसले के दिन उनकी पूरी कद्रदानी फरमाएगा।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا
مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَ
تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ
الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ
وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ ع

ऐ ईमान वालो, अपने ग़ैर को अपना राजदार न बनाओ, वे तुम्हें नुक्सान पहुंचाने में कोई कमी नहीं करते। उन्हें ख़ुशी होती है तुम जितनी तकलीफ पाओ। उनकी अदावत उनकी जबान से निकल पड़ती है जो उनके दिलों में है वह इससे भी सख़्त है, हमने तुम्हारे लिए निशानियां खोल कर जाहिर कर दी हैं अगर तुम अक्ल रखते हो। तुम उनसे मुहब्बत रखते हो मगर वे तुमसे मुहब्बत नहीं रखते। हालांकि तुम सब आसमानी किताबों को मानते हो। और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब आपस में मिलते हैं तो तुम पर ग़ुस्से से उंगलियां काटते हैं। कहो कि तुम अपने ग़ुस्से में मर जाओ। बेशक अल्लाह दिलों की बात को जानता है। अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उन्हें रंज होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे इससे ख़ुश होते हैं। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई तदबीर तुम्हें कोई नुक्सान न पहुंचा सकेगी। जो कुछ वे कर रहे हैं सब अल्लाह के बस में है। (118-120)

मुसलमान उसी ख़ुदाई दीन पर ईमान लाए थे जो पहले के अहले किताब (यहूद) को अपने नबियों के जरिए मिला था। दोनों का दीन अपनी अस्ल हकीक़त के एतबार से एक था। मगर यहूद मुसलमानों के इस कद्र दुश्मन हो गए कि मुसलमान अपनी सारी ख़ुसूसियात के बावजूद उनके नजदीक एक अच्छे बोल के भी हकदार न थे। यहां तक कि मुसलमानों को अगर कोई तकलीफ पहुंच जाती तो वे दिल ही दिल में ख़ुश होते गोया वे उन्हें इंसानी हमदर्दी का मुस्तहिक

भी नहीं समझते थे। इसकी वजह यह थी कि यहूद ने बनी इस्राईल के नबियों की तरफ मंसूब करके एक ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन बना रखा था और इसके बल पर अवाम में कयादत (नेतृत्व) का मकाम हासिल किए हुए थे। ख़ुदा के दीन में सारी तवज्जोह ख़ुदा की तरफ रहती है। जबकि ख़ुदसाख़्ता दीन में लोगों की तवज्जोह उन अफराद की तरफ लग जाती है जो इस ख़ुदसाख़्ता दीन के ख़ालिक और शारेह (व्याख्याकार) हों। ऐसे लोग सच्चे दीन की दावत को कभी गवारा नहीं करते। क्योंकि उन्हें नजर आता है कि वह उन्हें उनके अज़्मत के मकाम से हटा रही है। जब ऐसी सूरत पेश आए तो अल्लाह के सच्चे बंदों का काम यह है कि वे मनफी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचें और मुकम्मल तौर पर सब्र व तकवा पर कायम रहें। सब्र का मतलब है हर हाल में अपने को हक का पाबंद रखना, और तकवा यह है कि फैसलाकुन ताकत सिर्फ अल्लाह को समझा जाए न कि किसी और को। मुसलमान अगर इस किस्म के मुस्बत (सकारात्मक) रवैये का सुबूत दें तो किसी की दुश्मनी उन्हें जरा भी नुक्सान न पहुंचाएगी चाहे वह मिक्दार में कितनी ही ज्यादा हो। ताहम इसके साथ मुसलमानों को हकीकतपसंद भी बनना चाहिए। उन्हें अपने दोस्त और दुश्मन के दर्मियान तमीज करना चाहिए ताकि कोई उनकी साफदिली का नाजाइज फायदा न उठा सके।

मुसलमानों के दिल में यहूद के लिए मुहब्बत होना और यहूद के दिल में मुसलमानों के लिए मुहब्बत न होना जाहिर करता है कि दोनों में से कौन हक पर है और कौन नाहक पर। अल्लाह सरापा रहम और अद्ल है। वह तमाम इंसानों का ख़ालिक और मालिक है इसलिए जो शख़्स हकीकी तौर पर अल्लाह को पा लेता है उसका सीना तमाम ख़ुदा के बंदों के लिए खुल जाता है। उसके लिए तमाम इंसान समान रूप से अल्लाह की संतान बन जाते हैं। वह हर एक के लिए वही चाहने लगता है जो वह ख़ुद अपने लिए चाहता है। मगर जो लोग अल्लाह को हकीकी तौर पर पाए हुए न हों, जिन्होंने अपनी मर्जी को अल्लाह की मर्जी में न मिलाया हो वे सिर्फ अपनी जात की सतह पर जीते हैं। उनकी जिंदगी का सरमाया (पूंजी) अपने फायदे और गिरोही तअस्सुबात होते हैं। उनका यह मिज़ाज उन्हें ऐसे लोगों का दुश्मन बना देता है जो उन्हें अपने मफाद (हित) के ख़िलाफ नजर आएं, जो उनके अपने गिरोह में शामिल न हों। ख़ुदा को मानते हुए वे भूल जाते हैं कि यह दुनिया ख़ुदा की दुनिया है। यहां किसी की कोई तदबीर अल्लाह की मर्जी के बग़ैर मुअस्सर (प्रभावी) नहीं हो सकती।

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ
بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰۤى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ

مِّنْ فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ
فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

जब तुम सुबह को अपने घर से निकले और मुसलमानों को जंग के मकामात पर तैनात किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। जब तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह इन दोनों जमाअतों पर मददगार था। और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा करें। और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र में जबकि तुम कमजोर थे। पस अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुजार रहो। जब तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हजार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अचानक आ पहुंचे तो तुम्हारा रब पांच हजार निशान किए हुए फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। और यह अल्लाह ने इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिल इससे मुतमइन हो जाएं और मदद सिर्फ अल्लाह ही की तरफ से है जो जबरदस्त है, हिक्मत वाला है, ताकि अल्लाह मुंकिरों के एक हिस्से को काट दे या उन्हें जलील कर दे कि वे नाकाम लौट जाएं। तुम्हें इस मामले में कोई दख़ल नहीं। अल्लाह इनकी तौबा क़ुबूल करे या उन्हें अजाब दे, क्योंकि वे जालिम हैं। और अल्लाह ही के इख़्तियार में है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ जमीन में है। वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अजाब दे और अल्लाह ग़फूर व रहीम है। (121-129)

ये आयतें उहुद की जंग (3 हिजरी) के बाद नाजिल हुईं। उहुद की जंग में दुश्मनों की तादात तीन हजार थी। मुसलमानों की तरफ सेएक हज र आदमी मुकाबले के लिए निकले थे। मगर रास्ते में अब्दुल्लाह बिन उबइ अपने तीन सौ साथियों को लेकर अलग हो गया। इस वाकये से कुछ अंसारी (मूल मदीना वासी) मुसलमानों में पस्त हिम्मती पैदा हो गयी मगर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने याद दिलाया कि हम अपने भरोसे पर नहीं बल्कि अल्लाह के भरोसे पर निकले हैं। तो अल्लाह ने इस हकीकत को समझने के लिए इन मुसलमानों के सीने खोल दिये। मोमिन के अंदर अगर हालात की शिद्दत से वक्ती कमजोरी पैदा हो जाए तो ऐसे वक्त में अल्लाह उसे तंहा छोड़ नहीं देता बल्कि उसका मददगार बनकर दुबारा उसे ईमान की हालत पर जमा देता है। अल्लाह की यही मदद इज्तिमाई (सामूहिक) सतह पर इस तरह हुई कि उहुद की

लड़ाई में मुसलमानों की एक कमजोरी से फायदा उठा कर दुश्मन उनके ऊपर ग़ालिब आ गये। अब दुश्मन फौज के लिए पूरा मौका था कि वह शिकस्त के बाद मुसलमानों की ताकत को पूरी तरह कुचल डाले। मगर फौजी तारीख़ का यह हैरतअंगेज वाक्या है कि दुश्मन फौज फतह के बावजूद जंग का मैदान छोड़कर वापस चली गई। यह अल्लाह की ख़ुसूसी मदद थी कि उसने दुश्मन के रुख़ को ‘मदीना’ के बजाए ‘मक्का’ की तरफ मोड़ दिया। यहां तक कि जो मग़लूब (परास्त) थे उन्हीं ने ग़ालिब आने वालों का पीछा किया।

मोमिन का मिजाज यह होना चाहिए कि वह तादाद या असबाब (संसाधनों) की कमी से न घबराए। तादाद कम हो तो यकीन करे कि अल्लाह अपने फरिश्तों को भेजकर तादाद की कमी पूरी कर देगा। सामान कम हो तो वह भरोसा रखे कि अल्लाह अपनी तरफ से ऐसी सूरतें पैदा करेगा जो उसके लिए सामान की कमी की तलाफी बन जाए। कामयाबी का दारोमदार माद्दी असबाब पर नहीं बल्कि सब्र और तकवा पर है। जो लोग अल्लाह से डरें और अल्लाह पर भरोसा रखें उनके हक में अल्लाह की मदद की दो सूरतें हैं। एक, उनके विरोधियों के एक हिस्से को काट लेना। दूसरे, विरोधियों को शिकस्त दे कर उन्हें परास्त करना। पहली कामयाबी दावत की राह से आती है। प्रतिपक्ष के जिन लोगों में अल्लाह कुछ जिंदगी पाता है उनके ऊपर दीन की सच्चाई को रोशन कर देता है, वे बातिल (असत्य) की सफ को छोड़कर हक की सफ में शामिल हो जाते हैं और इस तरह प्रतिपक्ष की कमजोरी और अहले ईमान की कुव्वत का सबब बनते हैं। दूसरी सूरत में अल्लाह अहले ईमान को कुव्वत और हौसला देता है और उनकी ख़ुसूसी मदद करके उन्हें प्रतिपक्ष पर ग़ालिब कर देता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ
وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ الَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ
الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا
فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ
الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ أُولَٰئِكَ
جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ
وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ
فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى
وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ

ऐ ईमान वालो, सूद कई-कई हिस्सा बढ़ाकर न खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और डरो उस आग से जो मुंकिरों के लिए तैयार की गई है। और अल्लाह और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ और उस जन्नत की तरफ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और जमीन जैसी है। वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। जो लोग कि ख़र्च करते हैं फराग़त और तंगी में। वे ग़ुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों से दरगुजर करने वाले हैं। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। और ऐसे लोग कि जब वे कोई खुली बुराई कर बैठें या अपनी जान पर कोई जुल्म कर डालें तो वे अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफी मांगें। अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को माफ करे और वे जानते बूझते अपने किए पर इसरार नहीं करते। ये लोग हैं कि इनका बदला उनके रब की तरफ से मग्फिरत (क्षमा, मुक्ति) है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। इनमें वे हमेशा रहेंगे। कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का। तुमसे पहले बहुत-सी मिसालें गुजर चुकी हैं तो जमीन में चल-फिर कर देखो कि क्या अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है डरने वालों के लिए। (130-138)

सूदी कारोबार दौलतपरस्ती की आख़िरी बदतरीन शक्ल है। जो शख़्स दौलतपरस्ती में मुब्तला हो वह रात-दिन इसी फिक्र में रहता है कि किस तरह उसकी दौलत दोगुना और चौगुना हो। वह दुनिया का माल हासिल करने की तरफ दौड़ने लगता है। हालांकि सही बात यह है कि आदमी आख़िरत की जन्नत की तरफ दौड़े और अल्लाह की रहमत और नुसरत (मदद) का ज्यादा से ज्यादा ख़्वाहिशमंद हो। आदमी अपना माल इसलिए बढ़ाना चाहता है कि दुनिया में इज्जत हासिल हो, दुनिया में उसके लिए शानदार जिंदगी की जमानत हो जाए। मगर मौजूदा दुनिया की इज्जत व कामयाबी की कोई हकीकत नहीं। अस्ल अहमियत की चीज जन्नत है जिसकी ख़ुशियां और लज़्ज़तें बेहिसाब हैं। अक्लमंद वह है जो इस जन्नत की तरफ दौड़े। जन्नत की तरफ दौड़ना यह है कि आदमी अपने माल को ज्यादा से ज्यादा अल्लाह की राह में दे। दुनियावी कामयाबी का जरिया 'माल' को बढ़ाना है और आख़िरत की कामयाबी को हासिल करने का जरिया माल को 'घटाना' है। पहली किस्म के लोगों का सरमाया (पूंजी) अगर माल की मुहब्बत है तो दूसरे लोगों का सरमाया अल्लाह और रसूल की मुहब्बत। पहली किस्म के लोगों को अगर दुनिया के नफे का शौक होता है तो दूसरी किस्म के लोगों को आख़िरत के नफे का। पहली किस्म के लोगों को दुनिया के नुक्सान का डर लगा रहता है और दूसरी किस्म के लोगों को आख़िरत के नुक्सान का।

जो लोग अल्लाह से डरते हैं उनके अंदर 'एहसान' का मिजाज पैदा हो जाता है। यानी जो काम करें इस तरह करें कि वह अल्लाह की नजर में ज्यादा से ज्यादा पसंदीदा करार पाए। वे आजाद जिंदगी के बजाए पाबंद जिंदगी गुजारते हैं। ख़ुदा के दीन की जरूरत को वे अपनी जरूरत बना लेते हैं और इसके लिए हर हाल में ख़र्च करते हैं चाहे उनके पास कम हो या ज्यादा।

उन्हें जब किसी पर ग़ुस्सा आ जाए तो वे उसे अंदर ही अंदर बर्दाश्त कर लेते हैं। किसी से शिकायत हो तो उससे बदला लेने के बजाए उसे माफ कर देते हैं। ग़लतियां इनसे भी होती हैं मगर वे वक्ती होती हैं। ग़लती के बाद वे फौरन चौंक पड़ते हैं और दुबारा अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं। वे बेताब होकर अल्लाह को पुकारने लगते हैं कि वह उन्हें माफ कर दे और उन पर अपनी रहमतों का पर्दा डाल दे। कुरआन में जो बात लफ्जी तौर पर बताई गई है वह तारीख़ में अमल की जबान में मौजूद है। मगर नसीहत वही पकड़ते हैं जो नसीहत की तलब रखते हों।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾ إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾ وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ﴿١٤١﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِن قَبْلِ أَن تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿١٤٣﴾

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम्हें कोई जख़्म पहुंचे तो दुश्मन को भी वैसा ही जख़्म पहुंचा है। और हम इन दिनों को लोगों के दर्मियान बदलते रहते हैं। ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाए और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। और ताकि अल्लाह ईमान वालों को छांट ले और इंकार करने वालों को मिटा दे। क्या तुम ख़्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना नहीं जिन्होंने जिहाद किया और न उन्हें जो साबितकदम रहने वाले हैं। और तुम मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे मिलने से पहले, सो अब तुमने इसे खुली आंखों से देख लिया। (139-143)

ईमान लाना गोया अल्लाह के लिए जीने और अल्लाह के लिए मरने का इकरार करना है। जो लोग इस तरह मोमिन बनें उनके लिए अल्लाह का वादा है कि वे उन्हें दुनिया में ग़लबा और आख़िरत में जन्नत देगा। और उन्हें यह अहमतरीन एज़ाज अता करेगा कि जिन लोगों ने दुनिया में उन्हें रद्द कर दिया था उनके ऊपर उन्हें अपनी अदालत में गवाह बनाए और उनकी गवाही की बुनियाद पर उनके मुस्तकिल अंजाम का फैसला करे। मगर यह मकाम महज लफ्जी इकरार से नहीं मिल जाता। इसके लिए जरूरी है कि आदमी सब्र और जिहाद की सतह पर अपने सच्चे मोमिन होने का सुबूत दे। मोमिन चाहे अपनी जाती जिंदगी को ईमान व इस्लाम पर कायम करे या वह दूसरों के सामने ख़ुदा के दीन का गवाह बन कर खड़ा हो,

हर हाल में उसे दूसरे की तरफ से मुश्किलात और रुकावटें पेश आती हैं। इन मुश्किलात और रुकावटों का मुकाबला करना जिहाद है और हर हाल में अपने इकरार पर जमे रहने का नाम सब्र। जो लोग इस जिहाद और सब्र का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो जन्नत की आबादकारी के काबिल ठहरे। साथ ही, इसी से दुनिया की सरबुलंदी का रास्ता खुलता है। 'जिहाद' उनके मुसलसल और मुकम्मल अमल की जमानत और 'सब्र' इस बात की जमानत है कि वे कभी कोई जज्बाती इकदाम नहीं करेंगे। और ये दो बातें जिस गिरोह में पैदा हो जाएं उसके लिए ख़ुदा की इस दुनिया में कामयाबी इतनी ही यकीनी हो जाती है जितनी मुवाफ़िक़ ज़मीन में एक बीज का बारआवर होना।

एक शख़्स अल्लाह के रास्ते पर चलने का इरादा करता है तो दूसरों की तरफ से तरह-तरह के मसाइल पेश आते हैं। ये मसाइल कभी उसे बेयकीनी की कैफ़ियत में मुब्तला करते हैं कभी मस्लेहतपरस्ती का सबक देते हैं। कभी उसके अंदर नकारात्मक मानसिकता उभारते हैं कभी ख़ुदा के ख़ालिस दीन के मुकाबले में ऐसे अवामी दीन का नुस्ख़ा बताते हैं जो लोगों के लिए काबिले कुबूल हो। यही मौजूदा दुनिया में आदमी का इम्तेहान है। इन अवसरों पर आदमी जो प्रतिक्रिया जाहिर करे उससे मालूम होता है कि वह अपने ईमान के इकरार में सच्चा था या झूठा। अगर उसका अमल उसके ईमान के दावे के मुताबिक हो तो वह सच्चा है और अगर इसके ख़िलाफ हो तो झूठा। शहीद (अल्लाह का गवाह) बनना इस सफर की आख़िरी इंतहा है। अल्लाह का एक बंदा लोगों के दर्मियान हक का दाओी (आहवानकर्ता) बन कर खड़ा हुआ। उसका हाल यह था कि वह जिस चीज की तरफ बुला रहा था, ख़ुद उस पर पूरी तरह कायम था। लोगों ने उसे हकीर (तुच्छ) समझा मगर उसने किसी की परवाह नहीं की। उस पर मुश्किलात आईं मगर वह उसे अपने मकाम से हटाने में कामयाब न हो सकीं। वह न कमजोर पड़ा और न मनफ़ी नफ़्सियात (नकारात्मक मानसिकता) का शिकार हुआ। यहां तक कि उसके जान व माल की बाजी लग गई फिर भी वह अपने दावती मौक़िफ़ से न हटा। यह इम्तेहान हद दर्जा तूफ़ानी इम्तेहान है। मगर इससे गुजरने के बाद ही वह इंसान बनता है जिसे अल्लाह अपने बंदों के ऊपर अपना गवाह करार दे। आदमी जब हर किस्म के हालात के बावजूद अपने दावती अमल पर कायम रहता है तो वह अपने पैग़ाम के हक में अपने यकीन का सुबूत देता है। साथ ही यह कि वह जिस बात की ख़बर दे रहा है वह एक हद दर्जा संजीदा मामला है न कि कोई सरसरी मामला।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا مُؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۗ وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٥﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ نَبِيٍّ قُتِلَ مَعَهُ رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا

لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١٤٧﴾ فَآتَاهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٨﴾

मुहम्मद बस एक रसूल हैं। इनसे पहले भी रसूल गुजर चुके हैं। फिर क्या अगर वह मर जाएं या कत्ल कर दिए जाएं तो तुम उल्टे पैर फिर जाओगे। और जो शख़्स फिर जाए वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्रगुजारों को बदला देगा। और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के। अल्लाह का लिखा हुआ वादा है। और जो शख़्स दुनिया का फायदा चाहता है उसे हम दुनिया में से दे देते हैं और जो आख़िरत का फायदा चाहता है उसे हम आख़िरत में से दे देते हैं। और शुक्र करने वालों को हम उनका बदला जरूर अता करेंगे। और कितने नबी हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की। अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं उनसे न वे पस्तहिम्मत हुए न उन्होंने कमजोरी दिखाई। और न वे दबे। और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। उनकी जबान से इसके सिवा कुछ और न निकला कि ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमसे जो ज्यादती हुई उसे माफ फरमा और हमें साबितकदम रख और मुंकिर कौम के मुकाबले में हमारी मदद फरमा। पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आख़िरत का अच्छा बदला भी। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (144-148)

उहुद की जंग में यह ख़बर मशहूर हो गई कि मुहम्मद (सल्ल०) शहीद हो गए। उस वक्त कुछ मुसलमानों में पस्तहिम्मती पैदा हो गई। मगर अल्लाह के हकीकी बंदे वे हैं जिनकी दीनदारी किसी शख़्स के ऊपर कायम न हो। अल्लाह को वह दीनदारी मत्लूब है जबकि बंदा अपनी सारी रूह और सारी जान के साथ सिर्फ एक अल्लाह के साथ जुड़ जाए। मोमिन वह है जो इस्लाम को उसकी उसूली सदाकत की बुनियाद पर पकड़े न कि किसी शख़्सियत के सहारे की बिना पर। जो शख़्स इस तरह इस्लाम को पाता है उसके लिए इस्लाम एक ऐसी नेमत बन जाता है जिसके लिए उसकी रूह के अंदर शुक्र का दरिया बहने लगे। वह दुनिया के बजाए आख़िरत को सब कुछ समझने लगता है। जिंदगी उसके लिए एक ऐसी नापायदार चीज बन जाती है जो किसी भी लम्हे मौत से दोचार होने वाली हो। वह कायनात को एक ऐसे ख़ुदाई कारख़ाने की हैसियत से देख लेता है जहां हर वाकया ख़ुदा के इज्न के तहत हो रहा है। जहां देने वाला भी वही है और छीनने वाला भी वही है। ऐसे ही लोग अल्लाह की राह के सच्चे मुसाफ़िर हैं। अल्लाह अगर चाहता है तो दुनिया की इज्जत व इक्तेदार (सत्ता) भी उन्हें दे देता है और आख़िरत के अजीम और अबदी (चिरस्थाई) इनामात तो सिर्फ इन्हीं के लिए हैं। ताहम यह दर्जा किसी को सिर्फ उस वक्त मिलता है जबकि वह हर किस्म के इम्तेहान में पूरा उतरे। उसके जाहिरी सहारे खो जाएं तब भी वह अल्लाह पर अपनी नजरें

जमाए रहे। जान का ख़तरा भी उसे पस्तहिम्मत न कर सके। दुनिया बर्बाद हो रही हो तब भी वह पीछे न हटे। उसके सामने कोई नुक्सान आए तो उसे वह अपनी कोताही का नतीजा समझ कर अल्लाह से माफी मांगे। कोई फायदा मिले तो उसे ख़ुदा का इनाम समझ कर शुक्र अदा करे। मोमिन का यह इम्तेहान जो हर रोज लिया जा रहा है कभी उन हिला देने वाले मकामात तक भी पहुंच जाता है जहां जिंदगी की बाजी लगी हुई हो। ऐसे मौक़ों पर भी जब आदमी बुजदिली न दिखाए, न वह बेयकीनी में मुब्तिला हो और न किसी हाल में दीन के दुश्मनों के सामने हार मानने के लिए तैयार हो तो गोया वह इम्तेहान की आख़िरी जांच में भी पूरा उतरा। ऐसे ही लोगों के लिए हर किस्म की सरफ़राज़ियां हैं। तारीख़ में वही लोग सबसे ज्यादा कीमती हैं जिन्होंने इस तरह अल्लाह को पाया हो और अपने आपको इस तरह अल्लाह के मंसूबे में शामिल कर दिया हो। नाज़ुक मौकों पर अहले ईमान का आपस में मुत्तहिद रहना और सब्र के साथ हक पर जमे रहना वे चीजें हैं जो अहले ईमान को अल्लाह की नुसरत का मुस्तहिक बनाती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنقَلِبُوا
خَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ﴿١٥٠﴾ سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا ۖ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۚ
وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُم
بِإِذْنِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّن بَعْدِ
مَا أَرَاكُم مَّا تُحِبُّونَ ۚ مِنكُم مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنكُم مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَىٰ أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي
أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا
أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

ऐ ईमान वालो अगर तुम मुंकिरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उल्टे पैरों फेर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे। बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। हम मुंकिरों के दिलों में तुम्हारा रौब डाल देंगे क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराया जिसके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरी जगह है जालिमों के लिए। और अल्लाह ने तुमसे अपने वादे को सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से कत्ल कर रहे थे। यहां तक कि जब तुम ख़ुद कमजोर पड़ गए और तुमने काम में झगड़ा किया और

तुम कहने पर न चले जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज दिखा दी थी जो कि तुम चाहते थे। तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे और तुममें से कुछ आख़िरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख़ उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी आजमाइश करे और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया और अल्लाह ईमान वालो के हक्र में बड़ा फज़्ल वाला है। जब तुम चढ़े जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था। फिर अल्लाह ने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गई और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े। और अल्लाह ख़बरदार है जो कुछ तुम करते हो। (149-153)

उहुद की जंग में वक्ती शिकस्त से विरोधियों को मौका मिला। उन्होंने कहना शुरू किया कि पैग़म्बर और उनके साथियों का मामला कोई ख़ुदाई मामला नहीं है। कुछ लोग महज बचकाने जोश के तहत उठ खड़े हुए हैं और अपने जोश की सजा भुगत रहे हैं। अगर यह ख़ुदाई मामला होता तो उन्हें अपने दुश्मनों के मुकाबले में शिकस्त क्यों होती। मगर इस तरह के वाकेयात चाहे बजाहिर मुसलमानों की ग़लती से पेश आएं, वे हर हाल में ख़ुदा का इम्तेहान होते हैं। दुनिया की जिंदगी में 'उहुद' का हादसा पेश आना जरूरी है ताकि यह खुल जाए कि कौन अल्लाह पर एतमाद करने वाला था और कौन फिसल जाने वाला। इस किस्म के वाकेयात मोमिन के लिए दोतरफ़ा आजमाइश होते हैं एक यह कि वह लोगों की मुख़ालिफ़ाना बातों से मुतअस्सिर न हो। दूसरे यह कि वह वक्ती तकलीफ से घबरा न जाए। और हर हाल में साबितक़दम रहे।

मुश्किल अवसरों पर अहले ईमान अगर जमे रह जाएं तो बहुत जल्द ऐसा होता है कि ख़ुदा की रोब की मदद नाजिल होती है। जो शख़्स या गिरोह अल्लाह के सच्चे दीन के सिवा किसी और चीज के ऊपर खड़ा हुआ है वह हकीकत में बेबुनियाद जमीन पर खड़ा हुआ है। क्योंकि अल्लाह की उतारी हुई सच्चाई के सिवा इस दुनिया में कोई और हकीकी बुनियाद नहीं। इसलिए जब कोई अल्लाह के दीन के ऊपर खड़ा हो और दृढ़ता का सुबूत दे तो जल्द ही ऐसा होता है कि अहले बातिल (असत्यवादियों) में बिखराव शुरू हो जाता है। दलीलों के एतबार से उनका बेबुनियाद होना उनके लोगों में बेयकीनी की कैफियत पैदा कर देता है। वे अपने को कम और अहले ईमान को ज्यादा देखने लगते हैं। उनकी जेहनी शिकस्त अंततः अमली शिकस्त तक पहुंचती है। वे अहले हक के मुकाबले में नाकाम व नामुराद होकर रह जाते हैं।

मुसलमानों के लिए शिकस्त और कमजोरी का सबब हमेशा एक होता है। और वह है तनाजो फ़िल अम्र। यानी राय के इख़्तेलाफ के सबब अलग-अलग हो जाना। इंसानों के दर्मियान इत्तेफ़ाक कभी इस मअना में नहीं हो सकता कि सबकी राय बिल्कुल एक हो जाएं। इसलिए किसी गिरोह में इत्तेहाद की सूरत सिर्फ यह है कि राय में भिन्नता के बावजूद अमल में एकरूपता हो। जब तक किसी गिरोह में यह बुलंदनजरी पाई जाएगी तो वह मुत्तहिद और इसके नतीजे में ताकतवर रहेगा। और जब राय में विभेद करके लोग अलग-अलग होने लगें तो इसके बाद लाजिमन कमजोरी और इसके नतीजे में शिकस्त होगी।

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِنْكُمْ
وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ
يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ
فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا
قُتِلْنَا هَاهُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾

फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर ग़म के बाद इत्मीनान उतारा यानी ऊंघ कि इसका तुममें से एक जमाअत पर ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वह थी कि उसे अपनी जानों कि फ़िक्र पड़ी हुई थी। वे अल्लाह के बारे में हक़ीक़त के ख़िलाफ़ ख़्यालात, जाहिलियत के ख़्यालात कायम कर रहे थे। वे कहते थे कि क्या हमारा भी कुछ इख़्तियार है। कहो सारा मामला अल्लाह के इख़्तियार में है। वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर जाहिर नहीं करते। वे कहते हैं कि अगर इस मामले में कुछ हमारा भी दख़ल होता तो हम यहां न मारे जाते। कहो अगर तुम अपने घरों में होते तब भी जिनका क़त्ल होना लिख गया था वे अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल पड़ते। यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को आजमाना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानता है सीनों वाली बात को। तुममें से जो लोग फिर गए थे उस दिन कि दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई इन्हें शैतान ने इनके कुछ आमाल के सबब से फिसला दिया था। अल्लाह ने इन्हें माफ कर दिया। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (154-155)

जिंदगी के मोर्चे में सबसे ज्यादा अहमियत इस बात की होती है कि आदमी का चैन उससे रुख़्सत न हो। वह पूरी यकसूई के साथ अपना मंसूबा बनाने के काबिल रहे। अल्लाह पर भरोसे की वजह से अहले ईमान को यह चीज कमाल दर्जे में हासिल होती है। यहां तक कि हिला देने वाले मौक़ों पर जबकि लोगों की नींदें उड़ जाती हैं, उस वक्त भी वे इस काबिल रहते हैं कि एक नींद लेकर दुबारा ताजा दम हो सकें। उहुद के मौके पर इसका एक प्रदर्शन इस तरह हुआ कि शिकस्त के बाद सख़्ततरीन हालात के बावजूद वे सो सके और अगले दिन

हमरा-उल-असद तक दुश्मन का पीछा किया जो मदीना से आठ मील की दूरी पर है। इसके नतीजे में फातेह (विजयी) दुश्मन मरऊब होकर मक्का वापस चला गया। यह सच्चे अहले ईमान का हाल है। मगर जो लोग पूरे मअनों में अल्लाह को अपना वली (सहायक) और सरपरस्त बनाए हुए न हों, उन्हें हर तरफ बस अपनी जान का ख़तरा नजर आता है। दीन की फ़िक्र से ख़ाली लोग अपनी जात की फ़िक्र के पड़े रहते हैं वे अल्लाह की तरफ से इत्मीनान की मदद में से अपना हिस्सा नहीं पाते।

उहुद के मौके पर अब्दुल्लाह बिन उबी की राय थी कि मदीना में रहकर जंग की जाए। मगर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) मुख़्लिस (निष्ठावान) मुसलमानों के मश्विरे पर बाहर निकले और उहुद पहाड़ के दामन में मुकाबला किया। दर्रे पर तैनात दस्ते की ग़लती से जब शिकस्त हुई तो उन लोगों को मौका मिला। उन्होंने कहना शुरू किया कि अगर हमारी बात मानी गई होती और मदीना में रहकर लड़ते तो इस बर्बादी की नौबत नहीं आती। मगर मौत ख़ुदा की तरफ से है और वहीं आकर रहती है जहां वह किसी के लिए लिखी हुई है। एहतियाती तदबीरें किसी को मौत से बचा नहीं सकतीं। इस तरह के वाकेआत, चाहे बजाहिर इनका जो सबब भी नजर आए, वे अल्लाह की तरफ से होते हैं। ताकि अल्लाह के सच्चे बंदे अल्लाह की तरफ रुजूअ करके और भी ज्यादा रहमतों के मुस्तहिक बनें। और जो सच्चे नहीं हैं उनकी हक़ीक्त भी खुलकर सामने आ जाए।

उहुद के दर्रे पर जो पचास तीरअंदाज तैनात थे जब उन्होंने देखा कि मुसलमानों को फतह हो गई है तो इनमें से कुछ लोगों ने इसरार किया कि चलकर माले ग़नीमत लूटें। मगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके कुछ साथियों ने कहा नहीं। हमें हर हाल में यहीं रहना है क्योंकि यही अल्लाह के रसूल का हुक्म है। अंततः ग्यारह को छोड़कर बाकी लोग चले गए। आपसी मतभेद की इस कमजोरी से शैतान ने अंदर दाख़िल होने का रास्ता पा लिया। ताहम जब उन्होंने अपनी ग़लती का एतराफ किया तो अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया और इब्तिदाई नुक्सान के बाद उनकी मदद इस तरह की कि दुश्मनों के दिल में रौब डालकर इन्हें वापस कर दिया। हालांकि उस वक्त वे मदीना से सिर्फ कुछ मील की दूरी पर रह गए थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي
الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ
حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِنْ
قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِمَّا
يَجْمَعُونَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِنَ
اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝ اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इंकार किया। वे अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जबकि वे सफर या जिहाद में निकलते हैं और उन्हें मौत आ जाती है, कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में हसरत का सबब बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है और मारता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फिरत और रहमत उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। और तुम मर गए या मारे गए बहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उनके लिए नर्म हो। अगर तुम तुंदख़ू (कठोर) और सख़्त दिल होते तो ये लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। पस इन्हें माफ कर दो और इनके लिए मग़्फिरत मांगो और मामलात में इनसे मश्विरा लो। फिर जब फैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे। और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को। (156-160)

इस दुनिया में जो कुछ होता है अल्लाह के हुक्म से होता है। ताहम यहां हर चीज पर असबाब का पर्दा डाल दिया गया है। वाकेआत बजाहिर असबाब के तहत होते हुए नजर आते हैं मगर हकीकत में वे अल्लाह के हुक्म के तहत हो रहे हैं। आदमी का इम्तेहान यह है कि वह जाहिरी असबाब में न अटके बल्कि इनके पीछे काम करने वाली ख़ुदाई कुदरत को देख ले। ग़ैर-मोमिन वह है जो असबाब में खो जाए और मोमिन वह है जो असबाब से गुजर कर अस्ल हकीकत को पा ले। एक शख़्स मोमिन होने का दावेदार हो मगर इसी के साथ उसका हाल यह हो कि जिंदगी व मौत और कामयाबी व नाकामी को वह तदबीरों का नतीजा समझता हो तो उसका ईमान का दावा मोअतबर नहीं। ग़ैर-मोमिन के साथ कोई हादसा पेश आए तो वह इस ग़म में मुब्तला हो जाता है कि मैंने फलाँ तदबीर की होती तो मैं इस हादसे से बच जाता। मगर मोमिन के साथ जब कोई हादसा गुजरता है तो वह यह सोचकर मुतमइन रहता है कि अल्लाह की मर्जी यही थी। जो लोग दुनियावी असबाब को अहमियत दें वे अपनी पूरी जिंदगी दुनिया की चीजों को फराहम करने में लगा देते हैं। 'मरने' से ज्यादा 'जीना' उन्हें अजीज हो जाता है। मगर पाने की अस्ल चीज वह है जो आख़िरत में है। यानी अल्लाह की जन्नत व मग़्फिरत (क्षमा, मोक्ष, मुक्ति)। और जन्नत वह चीज है जिसे सिर्फ जिंदगी ही की कीमत पर हासिल किया जा सकता है। आदमी का वजूद ही जन्नत की वाहिद

(एकमात्र) कीमत है। आदमी अगर अपने वजूद को न दे तो वह किसी और चीज के जरिए जन्नत हासिल नहीं कर सकता।

अहले ईमान से साथ जिस इज्तिमाई सुलूक का हुक्म पैग़म्बर को दिया गया है वही आम मुस्लिम सरबराह (प्रमुख, शासक) के लिए भी है। मुस्लिम सरबराह के लिए जरूरी है कि वह नर्म दिल, नर्म गुफ़्तार (शालीन) हो। यह नर्मी सिर्फ रोजमर्रह की आम जिंदगी ही में मत्लूब नहीं है बल्कि ऐसे ग़ैर-मामूली मौकों पर भी मत्लूब है जबकि इस्लाम और ग़ैर-इस्लाम के टकराव के वक्त लोगों से एक हुक्म की नाफरमानी हो और नतीजे में जीती हुई जंग हार में बदल जाए। सरबराह के अंदर जब तक यह वुस्अत और बुलंदी न हो ताकत और इज्तिमाइयत कायम नहीं हो सकती। ग़लती चाहे कितनी ही बड़ी हो, अगर वह सिर्फ एक ग़लती है, शरपसंदी नहीं है तो वह काबिले माफी है। सरबराह को चाहिए कि ऐसी हर ग़लती को भुलाकर वह लोगों से मामला करे। यहां तक कि वह लोगों का इतना ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हो कि उनके हक में उसके दिल से दुआएं निकलने लगें। उसकी नजर में लोगों की इतनी कद्र हो कि मामलात में वह उनसे मश्विरा ले। जब आदमी को यह यकीन हो कि जो कुछ होता है ख़ुदा के किए से होता है तो इसके बाद इंसानी असबाब उसकी नजर में नाकाबिले लिहाज हो जाएंगे।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۭ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَھُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَاۗءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ ھُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْھِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِھِمْ يَتْلُوْا عَلَيْھِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْھِمْ وَيُعَلِّمُھُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

और नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ छुपाए रखे और जो कोई छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज को कियामत के दिन हाजिर करेगा। फिर हर जान को उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ जुल्म न होगा। क्या वह शख़्स जो अल्लाह की मर्जी का ताबेअ (अधीन) है वह उस शख़्स की तरह हो जाएगा जो अल्लाह का ग़जब लेकर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अल्लाह के यहां उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं। अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है। बेशक ये इससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (161-164)

उहुद की दर्रे पर तैनात जिन चालीस लोगों ने नाफरमानी की थी, अल्लाह के रसूल मुहम्मद

(सल्ल०) ने उन्हें माफ कर दिया था। ताहम इन लोगों को यह शुबह था कि आपने शायदसिर्फ ऊपरी तौर पर हमें माफ किया है। दिल में आप अब भी ख़फ़ा हैं और किसी वक्त हमारे ऊपर ख़फ़गी निकालेंगे। फरमाया कि यह पैग़म्बर का तरीक़ा नहीं। पैग़म्बर अंदर और बाहर एक होता है, इससे यह अंदाजा होता है कि मुसलमानों के सरबराह को कैसा होना चाहिए। मुस्लिम सरबराह का दिल ऐसा होना चाहिए कि उसके अंदर बुग्ज, नफरत, कीना और हसद बिल्कुल जगह न पा सके। यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि उसके साथियों से एक भयानक ग़लती हो गई हो। मुस्लिम सरबराह को चाहिए कि बड़ी से बड़ी ग़लती करने वालों के ख़िलाफ भी वह दिल में कोई दुर्भावना छुपाकर न रखे। आज के दिन उनके साथ इस तरह रहे जैसे पिछले दिन उनसे कुछ नहीं हुआ था। इसी तरह यह भी जरूरी है कि मुसलमानों का कोई गिरोह जब एक सरबराह पर एतमाद करके अपने मामलात को उसके सुपुर्द कर दे तो सरबराह को ऐसा भी नहीं करना चाहिए कि उनके जान व माल को वह अपने जाती हौसलों और तमन्नाओं की तकमील पर कुर्बान कर दे। यह अल्लाह के ग़जब से बेख़ौफ होना है। जो शख़्स लोगों को यह बताने के लिए उठा हो कि लोग अल्लाह की मर्जी पर चलें वह ख़ुद क्योंकर इस हाल में अल्लाह से मिलना पसंद करेगा कि वह अल्लाह की मर्जी के ख़िलाफ चला हो।

पैग़म्बर ने अपनी जिंदगी से जो मिसाली नमूना कायम किया है, कियामत तक तमाम मुस्लिहीन (सुधारकों) को उसी के मुताबिक बनना है। इस्लाह के काम के लिए जरूरी है कि आदमी जिन लोगों के दर्मियान काम करने उठे उन्हें हर एतबार से वह 'अपना' नजर आए। उसकी जबान, तर्जे कलाम, रहन-सहन हर चीज अजनबियत से पाक हो। वह अपने और मुख़ातिबीन (संबोधित वर्ग) के दर्मियान ऐसी फजा न बनाए जो किसी पहलू से एक-दूसरे को दूर करने वाली हो या एक को दूसरे के मुक़ाबले में फरीक़ (पक्ष) बनाकर खड़ा कर दे। लोगों के दर्मियान जो काम करना है वह सबसे पहले यह है कि लोगों के अंदर यह सलाहियत पैदा की जाए कि वे उन निशानियों को पढ़ने लगें जो उनकी जात (निजी जीवन) में और बाहर की दुनिया में फैली हुई हैं। वे अल्लाह की दलीलों को जानकर उन्हें अपने जेहन का जुज बनाएं। दूसरा काम 'तज्किया' (आन्तरिक शुद्धिकरण) है। यह मक्सद जबानी गुफ्तगू और सोहबत (सान्निध्य) के जरिए हासिल होता है। आम तहरीर और तकरीर में बात ज्यादातर उसूली अंदाज में होती है जबकि इंफिरादी (व्यक्तिशः) गुफ्तगुओं में बात ज्यादा सुनिश्चित और विस्तृत होती है। साथ ही दाओ (आह्वानकर्ता) का अपना वजूद भी पूरी तरह उसके प्रोत्साहन पर मौजूद रहता है आम कलाम अगर दावत (आह्वान) होता है तो इंफरादी मुलाक़ातें संबोधित व्यक्ति के लिए तज्किया का जरिया बन जाती हैं। तीसरी चीज किताब है। यानी जिंदगी गुजारने की बाबत आसमानी हिदायतों को बताना जिसका दूसरा नाम शरीअत है। और चौथी चीज हिक्मत है। यानी दीन के गहरे भेदों से पर्दा उठाना, पंक्तियों के मध्य छुपी हुई हकीक़तों को स्पष्ट करना।

أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ
عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ
تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ
لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي
قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا
مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾

और जब तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुंची जिसकी दुगनी मुसीबत तुम पहुंचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहां से आ गई। कहो यह तुम्हारे अपने पास से है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और दोनों जमाअतों के मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह अल्लाह के हुक्म से पहुंची और इस वास्ते कि अल्लाह मोमिनों को जान ले और उन्हें भी जान ले जो मुनाफिक (पाखंडी) थे जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ। उन्होंने कहा अगर हम जानते कि जंग होना है तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। ये लोग उस दिन ईमान से ज्यादा कुफ्र के करीब थे। वे अपने मुंह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज को ख़ूब जानता है जिसे वे छुपाते हैं। ये लोग जो ख़ुद बैठे रहे, अपने भाइयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो वे मारे न जाते। कहो तुम अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (165-168)

हक और बातिल के मुक़ाबले में आख़िरी फतह हक की होती है। क्योंकि अल्लाह हमेशा हक के साथ होता है। ताहम यह दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां शरपसंदों को भी अमल की पूरी आजादी है। इसलिए कभी ऐसा होता है कि अहले हक की किसी कमजोरी (मसलन आपसी मतभेदों) से फायदा उठा कर शरपसंद उन्हें वक्ती नुक्सान पहुंचाने में कामयाब हो जाते हैं। ताहम इस तरह के वाकेआत का एक मुफीद पहलू भी है। इसके जरिए ख़ुद मुसलमानों की जमाअत की जांच हो जाती है। प्रतिकूल हालत को देखकर ग़ैर-मुख़्लिस लोग छंट जाते हैं और जो सच्चे मुसलमान हैं वे अल्लाह पर भरोसा करते हुए जमे रहते हैं। इस तरह मालूम हो जाता है कि कौन काबिले एतमाद है और कौन नाक़ाबिले एतमाद। मजीद यह कि इत्तेफाकी ग़लती से नुक्सान उठाने के बाद जब अहले ईमान दुबारा सब्र, इनाबत (कर्तव्यनिष्ठा) और अल्लाह पर भरोसे का सुबूत देते हैं तो अल्लाह की रहमत उनकी तरफ पहले से भी ज्यादा मुतवज्जह हो जाती है।

हक और बातिल के मोर्चे में जो लोग इस तरह शिर्कत करें कि उसी की राह में अपने को मिटा दें, उनके बारे में दुनिया वाले अक्सर अफसोस के साथ कहते हैं कि उन्होंने व्यर्थ में अपने को बर्बाद कर लिया। मगर यह सिर्फ नादानी की बात है। अल्लाह की राह में खोना ही तो सबसे बड़ा पाना है। क्योंकि जो लोग अल्लाह की राह में अपना सब कुछ कुर्बान कर दें वही वे लोग हैं जो सबसे ज्यादा अल्लाह के इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

अल्लाह की राह में जान देने वालों का जिक्र नादान लोग इस तरह करते हैं जैसे दूसरी राहों में अपनी जिंदगियां लगाने वालों पर मौत नहीं आती, जैसे कि सिर्फ अल्लाह की राह के मुजाहिदीन मरते हैं दूसरे लोग मरते ही नहीं। जाहिर है कि यह बात सरासर बेमअनी है। मौत ख़ुदा का एक आम कानून है। वह बहरहाल हर एक के लिए अपने वक्त पर आने वाली है। आदमी चाहे एक रास्ते में चल रहा हो या दूसरे रास्ते में, वह किसी हाल में मौत के अंजाम से बच नहीं सकता।

जो लोग इस किस्म की बातें करते हैं वे कभी अपनी बात में संजीदा नहीं होते। उनका दिल तो एतराफ कर रहा होता है कि हक के लिए कुर्बानी न देकर उन्होंने सख़्त कोताही की है। मगर जबान से कुर्बानी करने वालों को मतऊन (लांछित) करके अपना जाहिरी भरम कायम रखना चाहते हैं। वे अपनी जबान से ऐसे अल्फाज बोलते हैं जिनके बारे में ख़ुद उनका दिल गवाही दे रहा होता है कि ये झूठे अल्फाज हैं इनकी कोई वाकई हकीकत नहीं।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ
يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾ فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ
يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾
يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾
الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾ الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا
لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾ فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ
مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ
عَظِيمٍ ﴿١٧٤﴾ إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो। बल्कि वे ज़िंदा हैं अपने रब के पास, उन्हें रोज़ी मिल रही है। वे ख़ुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फज्ल में

से उन्हें दिया है और ख़ुशख़बरी ले रहे हैं कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहां नहीं पहुंचे हैं उनके लिए भी न कोई ख़ौफ है और न वे ग़मगीन होंगे। वे ख़ुश हो रहे हैं अल्लाह के इनाम और फज्ल पर और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज्र जाये नहीं करता। जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के हुक्म को माना बाद इसके कि उन्हें जख़्म लग चुका था, इनमें से जो नेक और मुत्तकी हैं उनके लिए बड़ा अज्र है जिनसे लोगों ने कहा कि दुश्मन ने तुम्हारे ख़िलाफ बड़ी ताकत जमा कर ली है उससे डरो। लेकिन इस चीज ने उनके ईमान में और इजाफा कर दिया और वे बोले कि अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह बेहतरीन कारसाज है। पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फज्ल के साथ वापस आए। इन लोगों को कोई बुराई पेश न आयी। और वे अल्लाह की रिजामंदी पर चले और अल्लाह बड़ा फज्ल वाला है। यह शैतान है जो तुम्हें अपने दोस्तों के जरिए डराता है। तुम उनसे न डरो बल्कि मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (169-175)

जो लोग इस्लाम के दुश्मनों से लड़े और शहीद हुए उन्हें मुनाफिकीन मौते जियाअ (व्यर्थ की मौत) कहते थे। उनका ख़्याल था कि ये मुसलमान एक शख़्स (मुहम्मद सल्ल०) के बहकावे में आकर अपनी जानें जाया कर रहे हैं। फरमाया कि जिसे तुम मौत समझते हो वही हकीकत में जिंदगी है। तुम सिर्फ दुनिया का नफा नुक्सान जानते हो। यही वजह है कि आख़िरत की राह में जान देना तुम्हें अपने आपको बर्बाद करना मालूम होता है। मगर अल्लाह की राह में मरने वाले तुमसे ज्यादा बेहतर जिंदगी पाए हुए हैं। वे आख़िरत में तुमसे ज्यादा ऐश की हालत में हैं।

शैतान का यह तरीका है कि वह जिन इंसानों को अपने करीब पाता है उन्हें उकसा कर खड़ा कर देता है कि वे दीन की तरफ बढ़ने के ख़ौफनाक नतीजों को दिखा कर लोगों को दीन के महाज से हटा दें। ये लोग विरोधियों की ताकत बढ़ा-चढ़ाकर बयान करते हैं ताकि अहले ईमान मरऊब हो जाएं। मगर इस किस्म की बातें अहले ईमान के हक मे मुफीद साबित होती हैं। क्योंकि उनका यह यकीन नए सिरे से जिंदा हो जाता है के मुश्किल हालात में उनका ख़ुदा उन्हें तंहा नहीं छोड़ेगा।

उहुद की जंग मदीना से तकरीबन दो मील की दूरी पर हुई। जंग के बाद मुंकिरों का लश्कर अबू सुफयान की कयादत में वापस रवाना हुआ। मदीना से आठ मील पर हमरा उल असद पहुंच कर उन्होंने पड़ाव डाला। यहां उनकी समझ में यह बात आयी कि उहुद से वापस होकर उन्होंने ग़लती की है। यह बेहतरीन मौका था कि मदीना तक मुसलमानों का पीछा किया जाता और उनकी ताकत का आख़िरी तौर पर ख़ात्मा कर दिया जाता। इस दर्मियान में उन्हें कबीला अब्दुल कैस का एक तिजारती काफिला मिल गया जो मदीना जा रहा था। मुंकिरों ने इस काफिले को कुछ रकम देकर आमादा किया कि वह मदीना पहुंचकर ऐसी ख़बरें फैलाए जिससे मुसलमान डर जाएं। अतः काफिले वालों ने मदीना पहुंच कर कहना शुरू किया कि हम देख आए हैं कि मक्का वाले भारी लश्कर जमा कर रहे हैं और दुबारा मदीना पर हमला करने

वाले हैं। मगर मुसलमानों का अल्लाह पर भरोसा इस बात की जमानत बन गया कि मुंकिरों की तदबीर उल्टी पड़ जाए। इसका फायदा यह हुआ कि मुसलमान अपने दुश्मनों के इरादे से बाख़बर हो गए। इससे पहले कि मक्का वालों की फौज मदीना की तरफ चले वे ख़ुद पैग़म्बर की रहनुमाई में अपनी टुकड़ी बना कर तेजी से हमरा अल असद की तरफ रवाना हो गए। मक्का वालों को जब यह ख़बर मिली कि मुसलमानों की फौज पहल करके उनकी तरफ आ रही है तो वे समझे कि मुसलमानों को नई कुमक मिल गई है। वे घबरा कर मक्का की तरफ वापस चले गए।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

और वे लोग तुम्हारे लिए ग़म का सबब न बनें जो इंकार में सबकत (तत्परता, जल्दी) कर रहे हैं। वे अल्लाह को हरगिज कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे। उनके लिए बड़ा अजाब है। जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ्र को ख़रीदा है वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और जो लोग कुफ्र कर रहे हैं यह ख़्याल न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं यह उनके हक में बेहतर है। हम तो बस इसलिए मोहलत दे रहे हैं कि वे जुर्म में और बढ़ जाएं और उनके लिए जलील करने वाला अजाब है। अल्लाह वह नहीं कि मुसलमानों को उस हालत पर छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो जब तक कि वह नापाक को पाक से जुदा न कर ले। और अल्लाह यूं नहीं कि तुम्हें ग़ैब से ख़बरदार कर दे। बल्कि अल्लाह छांट लेता है अपने रसूलों में जिसे चाहता है। पस तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। और अगर तुम ईमान लाओ और परहेजगारी अपनाओ तो तुम्हारे लिए बड़ा अज्र है। (176-179)

जिंदगी का अस्ल मसला वह नहीं जो दिखाई दे रहा है, अस्ल मसला वह है जो आंखों से ओझल है। लोग दुनिया की जहन्नम से बचने की फिक्र करते हैं और अपनी सारी तवज्जोह दुनिया

की जन्नत को हासिल करने में लगा देते हैं। मगर ज्यादा अक्लमंदी की बात यह है कि आदमी आख़िरत की जहन्नम से अपने को बचाए और वहां की जन्नत की तरफ दौड़े। दुनिया में पैसे वाला होना और बे पैसे वाला होना, जायदाद वाला होना और बेजायदाद वाला होना, इज्जत वाला होना और बेइज्जत वाला होना, ये सब वे चीजें हैं जो हर आदमी को आंखों से नजर आती हैं। इसलिए वह इन पर टूट पड़ता है, वह अपनी सारी कोशिश इस मक्सद के लिए लगा देता है कि वह यहां महरूम न रहे। मगर इंसान का अस्ल मसला आख़िरत का मसला है जिसे अल्लाह ने इम्तेहान की मस्लेहत से छुपा दिया है और इससे लोगों को ख़बरदार करने के लिए यह तरीक़ा मुकर्रर फरमाया है कि वह अपने कुछ बंदों को ग़ैब की पैग़ामबरी के लिए चुने। उन्हें मौत के उस पार की हकीकतों से ख़बरदार करे और फिर उन्हें मुकर्रर करे कि वे दूसरों को इससे बाख़बर करें। इंसान की अस्ल जांच यह है कि वह ख़ुदा के दाओ की आवाज में सच्चाई की झलकियों को पाले, वह एक लफ्जी पुकार में हकीकत की अमली तस्वीर देख ले। वह अपने जैसे एक इंसान की बातों में ख़ुदाई बात की गूंज सुन ले।

ईमान यह है कि आदमी ख़ुदपसंदी न करे। क्योंकि ख़ुदपसंदी ख़ुदा के बजाए अपने आपको बड़ाई का मकाम देना है। वह दुनिया में ग़र्क न हो। क्योंकि दुनिया में ग़र्क होना जाहिर करता है कि आदमी आख़िरत को अस्ल अहमियत नहीं देता। वह किब्र (बड़ापन, घमंड), बुख़्ल (कंजूसी), नाइंसाफी और ग़ैर अल्लाह की अकीदत व मुहब्बत से अपने को बचाए और इसकी बजाए ख़ुदापरस्ती, तवाजोअ (विनम्रता, सदाशयता), फय्याजी (सहृदयता) और इंसाफपसंदी को अपना शेवा बनाए। ऐसा करना साबित करता है कि आदमी अपने ईमान में संजीदा है। उसने वाकई अपने आपको ख़ुदा और आख़िरत की तरफ लगा दिया है। और ऐसा न करना जाहिर करता है कि वह अपने ईमान में संजीदा नहीं। ईमान के इकरार के बावजूद अमलन वह उसी दुनिया में जी रहा है जहां दूसरे लोग जी रहे हैं। आख़िरत में ख़बीस रूहों और तय्यब (पाक) रूहों की जो तकसीम होगी वह हकीकत के एतबार से होगी न कि महज जाहिरी नुमाइश के एतबार से। दुनिया में बुरे लोगों को जो ढील दी गयी है वह सिर्फ इसलिए है कि वे अपने अंदर की बुराई को पूरी तरह जाहिर कर दें। मगर वे चाहे कितनी ही कोशिश करें वे अहले हक को जेर करने में कामयाब नहीं हो सकते। वे अपनी आजादी को सिर्फ अपने ख़िलाफ इस्तेमाल कर सकते हैं न कि दूसरों के ख़िलाफ।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَهُمْ ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ

حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِىْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِىْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ
فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾
كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ
النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾

और जो लोग बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं उस चीज में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फज़्ल में से दिया है वे हरगिज यह न समझें कि यह उनके हक में अच्छा है। बल्कि यह उनके हक में बहुत बुरा है जिस चीज में वे बुख़्ल कर रहे हैं उसका क़ियामत के दिन उन्हें तौक़ पहनाया जाएगा। और अल्लाह ही वारिस है जमीन और आसमान का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। अल्लाह ने उन लोगों का कौल सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह ग़नी है और हम मोहताज हैं। हम लिख लेंगे उनके इस कौल को और उनके पैग़म्बरों को नाहक मार डालने को भी। और हम कहेंगे कि अब आग का अजाब चखो। यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों के साथ नाइंसाफी करने वाला नहीं। जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है कि हम किसी रसूल को तस्लीम न करें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी पेश न करे जिसे आग खाले, उनसे कहो कि मुझसे पहले तुम्हारे पास रसूल आए खुली निशानियां लेकर और वह चीज लेकर जिसे तुम कह रहे हो फिर तुमने क्यों उन्हें मार डाला, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियां और सहीफे और रोशन किताब लेकर आए थे। हर शख़्स को मौत का मजा चखना है और तुम्हें पूरा अज्र तो बस क़ियामत के दिन मिलेगा। पस जो शख़्स आग से बच जाए और जन्नत में दाख़िल किया जाए वही कामयाब रहा और दुनिया की जिंदगी तो बस धोखे का सौदा है। (180-185)

जाहिरी तौर पर आदमी एक कौल देकर मोमिन बन जाता है मगर अल्लाह की नजर में वह उस वक्त मोमिन बनता है जबकि वह अपनी जान और माल को अल्लाह की राह में दे दे। जान व माल की कुर्बानी के बग़ैर किसी का ईमान अल्लाह के यहां मोतबर नहीं। आदमी अपने माल को इसलिए बचाता है कि वह समझता है कि इस तरह वह अपने दुनियावी मुस्तक़बिल (भविष्य) की सुरक्षा का रहा है। मगर आदमी का हक़ीक़ी मुस्तक़बिल वह है जो आख़िरत में सामने आने वाला है और आख़िरत की दुनिया में ऐसा बचाया हुआ माल आदमी के हक में सिर्फ वबाल साबित होगा। जो माल दुनिया में जीनत और फ़ख़्र का जरिया दिखाई दे रहा है वह आख़िरत में ख़ुदा के हुक्म से सांप का रूप धार लेगा और सदैव उसे डसता रहेगा।

जो लोग कुर्बानी वाले दीन को नहीं अपनाते वे अपने को सही साबित करने के लिए विभिन्न बातें करते हैं। मसलन यह कि यह माल ख़ुदा ने हमारी जरूरत के लिए पैदा किया है फिर क्यों न हम इसे अपनी जरूरतों पर ख़र्च करें और इससे अपने दुनियावी आराम का सामान करें। कभी उनकी बेहिसी उन्हें यहां तक ले जाती है कि वे ख़ुद हक के दाओ (आह्वानकर्ता) को संदिग्ध करने के लिए तरह-तरह के शोशे निकालते हैं ताकि यह साबित कर सकें कि वह शख़्स सच्चा दाओ ही नहीं जिसका ज़ुहूर (प्रकट होना) यह तक़ाजा कर रहा है कि अपनी जिंदगी और अपने माल को कुर्बान करके उसका साथ दिया जाए। इस क़िस्म के लोग जो बातें कहते हैं वे बजाहिर दलील के रूप में होती हैं मगर हक़ीक़त में वे ईमानी तक़ाजों से फरार के लिए हैं। इसलिए चाहे कैसी ही दलील पेश की जाए वे इसे रद्द करने के लिए कुछ न कुछ अल्फाज तलाश कर लेंगे। ये वे लोग हैं जो इस बात को भूल गए हैं कि उनका आख़िरी अंजाम मौत है, और मौत का मरहला सामने आते ही सूरतेहाल बिल्कुल बदल जाएगी। मौत तमाम झूठे सहारों को बातिल कर देगी। इसके बाद आदमी अपने आपको ठीक उस मक़ाम पर खड़ा हुआ पाएगा जहां वह हक़ीक़त में था न कि उस मक़ाम पर जहां वह अपने आपको जाहिर कर रहा था। मौजूदा दुनिया में किसी का तरक़्क़ी करना या मौजूदा दुनिया में किसी का नाकाम हो जाना, दोनों हकीकत के एतबार से एक ही सतह की चीजें हैं। न यहां की नेमतें किसी के बरहक होने का सुबूत हैं और न किसी का यहां मुश्किलों और मुसीबतों में मुब्तला होना उसके बरसरे बातिल (असत्यवादी) होने का सुबूत। क्योंकि दोनों ही इम्तेहान के नक्शे हैं न कि अंजाम की अलामतें।

لَتُبْلَوُنَّ فِىْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۗ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۗ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ
وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۖ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ فَبِئْسَ
مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا
بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨٩﴾ ع

यक़ीनन तुम अपने जान व माल में आजमाए जाओगे। और तुम बहुत सी तकलीफ़देह बातें सुनोगे उनसे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया। और अगर तुम सब्र करो और तक़वा इख़्तियार करो तो यह बड़े हौसले का काम है। और जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम ख़ुदा की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए जाहिर करोगे और उसे नहीं छुपाओगे। मगर उन्होंने इसे पीठ पीछे

डाल दिया और इसे थोड़ी कीमत पर बेच डाला। कैसी बुरी चीज है जिसे वे ख़रीद रहे हैं। जो लोग अपने इन करतूतों पर ख़ुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उस पर उनकी तारीफ हो, उन्हें अजाब से बरी न समझो। उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और अल्लाह ही के लिए है जमीन और आसमान की बादशाही, और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (186-189)

ईमान का सफर आदमी को ऐसी दुनिया में तै करना होता है जहां अपनों और ग़ैरों की तरफ से तरह-तरह के ज़ख़्म लगते हैं। मगर मोमिन के लिए जरूरी होता है कि वह रद्देअमल की नफ्सियात में मुब्तला न हो, वह सूरतेहाल का मुस्बत (सकारात्मक) जवाब देते हुए आगे बढ़ता रहे। लोगों की तरफ से उत्तेजना दिलाने वाले अवसर आते हैं मगर वह पाबंद होता है कि हर किस्म के झटकों को अपने ऊपर सहे और जवाबी जेहन के तहत कोई कार्रवाई न करे। बार-बार ऐसे मामलात सामने आते हैं जबकि दिल कहता है ख़ुदा की हदों को तोड़ कर अपना उद्देश्य हासिल किया जाए, मगर अल्लाह का डर उसके कदमों को रोक देता है। इसी तरह दीन की विभिन्न जरूरतें सामने आती हैं और जान व माल की कुर्बानी का तकाजा करती हैं, ऐसे मौकों पर आसान दीन को छोड़कर मुश्किल दीन अपनाना पड़ता है। यह वाकया ईमान के सफर को हिम्मत और आली हौसलगी का जबरदस्त इम्तेहान बना देता है। हकीकत यह है कि मोमिन बनना अपने आपको सब्र और तकवा के इम्तेहान में खड़ा करना है। जो इस इम्तेहान में पूरा उतरा वह मोमिन बना जिसके लिए आख़िरत में जन्नत के दरवाजे खोले जाएंगे।

आसमानी किताब के हामिल (धारक) जब किसी गिरोह पर जवाल (पतन) आता है तो ऐसा नहीं होता कि वह ख़ुदा और रसूल का नाम लेना छोड़ दे या ख़ुदा की किताब से अपनी बेतअल्लुकी का एलान कर दे। दीन ऐसे गिरोह की नस्ली रिवायत में शामिल हो जाता है। वह उसका पुरफ़ख़्र कौमी असासा (धरोहर) बन जाता है। और जिस चीज से इस तरह का नस्ली और कौमी तअल्लुक कायम हो जाए उससे अलग होना किसी गिरोह के लिए मुमकिन नहीं होता। ताहम इसका यह तअल्लुक महज रस्मी तअल्लुक होता है न कि वास्तव में कोई हकीकी तअल्लुक। वे अपनी दुनियावी सरगर्मियां भी दीन के नाम पर जारी करते हैं। वे बेदीन होकर भी अपने को दीनदार कहलाना चाहते हैं। वे चाहने लगते हैं कि उन्हें उस काम का क्रेडिट दिया जाए जिसे उन्होंने किया नहीं। वे आख़िरत की नजात से बेफिक्र होकर जिंदगी गुजारते हैं और इसी के साथ ऐसे अकीदे बना लेते हैं जिनके मुताबिक उन्हें अपनी नजात बिल्कुल महफूज़ नजर आती है। वे अपने गढ़े हुए दीन पर चलते हैं मगर अपने को ख़ुदाई दीन का अलमबरदार बताते हैं। वे दुनियावी मक्सदों के लिए सरगर्म होते हैं और अपनी सरगर्मियों को आख़िरत का उन्वान देते हैं। वे ख़ुदसाख़्ता सियासत चलाते हैं और उसे ख़ुदाई सियासत साबित करते हैं। वे कौमी मफादात (हितों) के लिए उठते हैं और एलान करते हैं कि वे ख़ैरुल उमम का किरदार अदा करने के लिए खड़े हुए हैं। मगर कोई शख़्स बेदीनी को दीन कहने लगे तो इस बुनियाद पर वह अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकता। आदमी दुनिया की तरफ दौड़े और आख़िरत से बेपरवाह हो जाए तो यह सिर्फ गुमराही है और अगर वह अपने दुनियावी कारोबार को ख़ुदा और रसूल के नाम पर करने लगे तो यह गुमराही पर ढ़िठाई का इजाफा है। क्योंकि यह ऐसे काम पर इनाम चाहना है जिसे आदमी ने किया ही नहीं।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۚ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾

आसमानों और जमीन की पैदाइश और रात दिन के बारी-बारी आने में अक्ल वालों के लिए बहुत निशानियां हैं। जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और जमीन की पैदाइश पर ग़ौर करते रहते हैं। वे कह उठते हैं ऐ हमारे रब तूने यह सब बेमक्सद नहीं बनाया है। तू पाक है, पस हमें आग के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब तूने जिसे आग में डाला उसे तूने वाकई रुसवा कर दिया। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे रब हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ। पस हम ईमान लाए। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगों के साथ कर। ऐ हमारे रब तूने जो वादे अपने रसूलों के जरिए हमसे किए हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और कियामत के दिन हमें रुसवाई में न डाल। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ करने वाला नहीं है। (190-194)

कायनात अपने पूरे वजूद के साथ एक ख़ामोश एलान है। आदमी जब अपने कान और आंख से मसनूई (कृत्रिम) पर्दों को हटाता है तो वह इस ख़ामोश एलान को हर तरफ से सुनने और देखने लगता है। उसे नामुमकिन नजर आता है कि एक ऐसी कायनात जिसके सितारे और सय्यारे (ग्रह) खरबों साल तक भी ख़त्म नहीं होते वहां इंसान अपनी तमाम तमन्नाओं और ख़्वाहिशों को लिए हुए सिर्फ पचास-सौ वर्षों में ख़त्म हो जाए। एक ऐसी दुनिया जहां दरख़्तों का हुस्न और फूलों की लताफत है। जहां हवा और पानी और सूरज जैसी बेशुमार बामअना चीजों का एहतेमाम किया गया है वहां इंसान के लिए हुज्न (अति दुख) और ग़म के सिवा कोई अंजाम न हो। फिर यह भी उसे नामुमकिन नजर आता है कि एक ऐसी दुनिया जहां यह अथाह इम्कान रखा गया है कि यहां एक छोटा सा बीज जमीन में डाला जाए तो उसके अंदर से हरे-भरे दरख़्त की एक पूरी कायनात निकल आए, वहां आदमी नेकी की जिंदगी

इख़्तियार करके भी उसका कोई फल न पाता हो। एक ऐसी दुनिया जहां हर रोज तारीक रात के बाद रोशन दिन आता है वहां सदियां गुजर जाएं और अद्ल व इंसाफ का उजाला अपनी चमक न दिखाए। एक ऐसी दुनिया जिसकी गोद में जलजले और तूफ़ान सो रहे हैं वहां इंसान ज़ुल्म पर ज़ुल्म करता रहे मगर कोई उसका हाथ पकड़ने वाला सामने न आए। जो लोग हक़ीक़तों में जीते हैं और गहराइयों में उतरकर सोचते हैं उनके लिए नाक़ाबिले यकीन हो जाता है कि एक बामअना (सार्थक) कायनात बेमअना (निरर्थक) अंजाम पर ख़त्म हो जाए। वे जान लेते हैं कि हक का दाओ जो पैग़ाम दे रहा है वह शब्दों की जबान में उसी बात का एलान है जो ख़ामोश जबान में सारी कायनात में नश्र हो रहा है। उनके लिए सबसे बड़ा मसला यह बन जाता है कि जब सच्चाई खुले और जब इंसाफ का सूरज निकले तो उस दिन वे नाकाम व नामुराद न हो जाएं। वे अपने रब को पुकारते हुए उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं, वे मफ़ाद और मस्लेहतों की तमाम हदों को तोड़कर हक के दाओ के साथ हो जाते हैं ताकि कायनात का 'उजाला' और कायनात का 'अंधेरा' एक दूसरे से अलग हो जाएं तो कायनात का मालिक उन्हें उजाले में जगह दे। वह उन्हें अंधेरे में ठोकरें खाने के लिए न छोड़े।

अक्ल और बेअक्ली का हक़ीक़ी पैमाना उससे बिल्कुल भिन्न है जो इंसानों ने ख़ुद बना रखा है। यहां अक्ल वाला वह है जो अल्लाह की याद में जिए, जो कायनात के तख़्लीकी (रचनात्मक) मंसूबे में काम आने वाली ख़ुदाई सार्थकता को पा ले। इसके विपरीत बेअक्ल वह है जो अपने दिल व दिमाग़ को अन्य चीजों में अटकाए, जो दुनिया में इस तरह जिंदगी गुजारे जैसे कि उसे कायनात के मालिक के तख़्लीकी मंसूबे (Creation Plan) की ख़बर ही नहीं।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ
بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي
سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾
لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ
جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي
مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ
لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ
وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾

उनके रब ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई कि मैं तुममें से किसी का अमल जाये करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे से हो। पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए उनकी ख़ताएं जरूर उनसे दूर कर दूंगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहां और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है। और मुल्क के अंदर मुंकिरों की सरगर्मियां तुम्हें धोखे में न डालें यह थोड़ा सा फायदा है। फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह की तरफ से उनकी मेजबानी होगी और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए है वही सबसे बेहतर है। और बेशक अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो इससे पहले ख़ुद उनकी तरफ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच नहीं देते। उनका अज्र उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो, सब्र करो और मुकाबले में मजबूत रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होगे। (195-200)

अहले ईमान की जिम्मेदाराना जिंदगी उन्हें नफ़्स की आजादियों से महरूम कर देती है। उनके हक के एलान में बहुत से लोगों को अपने वजूद की तरदीद (निरस्तीकरण) दिखाई देने लगती है और वे उनके दुश्मन बन जाते हैं। यह सूरतेहाल कभी इतनी शदीद हो जाती है कि वे अपने वतन में बेवतन कर दिए जाते हैं उन्हें विरोधियों की जालिमाना कार्रवाइयों के मुक़ाबले में खड़ा होना पड़ता है। अल्लाह के दीन को उन्हें जान व माल की क़ुर्बानी की कीमत पर अपनाना होता है। इन इम्तेहानों में पूरा उतरने के लिए अहले ईमान को जो कुछ करना है वह यह कि वे दुनिया की मस्लेहतों की ख़ातिर आख़िरत की मस्लेहतों को भूल न जाएं। वे मुश्किलों और नाख़ुशगवारियों पर सब्र करें, वे अपने अंदर उभरने वाले मंफ़ी (नकारात्मक) जज्बात को दबाएं और मुतअस्सिर (प्रभावित) जेहन के तहत कार्रवाई न करें। फिर उन्हें बाहर के हरीफ़ों (प्रतिपक्षियों) के मुक़ाबले में साबितक़दम रहना है। यह साबितक़दमी ही वह चीज है जो अल्लाह की नुसरत को अपनी तरफ खींचती है। इसी के साथ जरूरी है कि तमाम अहले ईमान आपस में एक दूसरे के साथ बंधे रहें, वे दीनी जद्दोजेहद के लिए आपस में जुड़ जाएं और एक जान होकर सामूहिक ताक़त से मुख़ालिफ ताक़तों का मुक़ाबला करें। ईमान दरअस्ल सब्र का इम्तेहान है और इस इम्तेहान में वही शख़्स पूरा उतरता है जो अल्लाह से डरने वाला हो।

दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि ख़ुदा से बेख़ौफ और आख़िरत से बेपरवाह लोगों को जोर और ग़लबा हासिल हो जाता है। हर किस्म की इज्जतें और रौनकें उनके गिर्द जमा हो जाती हैं। दूसरी तरफ अहलेईमान अक्सर हालात में बेजोर बने रहते हैं। शान व शौकत का कोई हिस्सा उन्हें नहीं मिलता। मगर यह सूरतेहाल इंतिहाई आरजी (अस्थाई) है। कियामत आते ही हालात बिल्कुल बदल जाएंगे। बेख़ौफी के रास्ते से दुनिया की इज्जतें समेटने वाले रुस्वाई के गढ़े में पड़े होंगे। और ख़ुदा के ख़ौफ की वजह से बेहैसियत हो जाने वाले हर किस्म की अबदी (चिरस्थाई) इज्जतों और कामयाबियों के मालिक होंगे। वे अल्लाह के मेहमान होंगे और अल्लाह की मेहमानी से ज्यादा बड़ी चीज इस जमीन और आसमान के अंदर नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴿١﴾ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُم مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ﴿٣﴾ وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِن طِبْنَ لَكُمْ عَن شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ﴿٤﴾

आयतें-177 | सूरह-4. अन-निसा | रुकूअ-24

सूरह-4. अन-निसा

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

ऐ लोगो अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं। और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और ख़बरदार रहो संबंधियों से। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। और यतीमों का माल उनके हवाले करो। और बुरे माल को अच्छे माल से न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों

के मामले में इंसाफ न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों उन से दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक निकाह कर लो। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम अद्ल (न्याय) न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या जो कनीज (दासी) तुम्हारे अधीन हो। इसमें उम्मीद है कि तुम इंसाफ से न हटोगे। और औरतों को उनके महर ख़ुशदिली के साथ अदा करो। फिर अगर वे इसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी ख़ुशी से तो तुम उसे हंसी-ख़ुशी से खाओ। (1-4)

तमाम इंसान पैदाइश के एतबार से एक हैं। एक ही औरत और एक ही मर्द सबके मां और बाप हैं। इस लिहाज से जरूरी है कि हर आदमी दूसरे आदमी को अपना समझे। सबके सब एक मुश्तरक (साझे) घराने के अफराद की तरह मिलजुल कर इंसाफ और ख़ैरख़्वाही के साथ रहें। फिर इनमें से जो रहमी (ख़ून के) रिश्ते हैं उनमें यह नस्ली इत्तेहाद और ज्यादा करीबी हो जाता है। इसलिए रहमी रिश्तों में हुस्ने सुलूक की अहमियत और ज्यादा बढ़ जाती है। इंसानों के दर्मियान इस आपसी हुस्ने सुलूक की अहमियत सिर्फ अख़्लाकी एतबार से नहीं है बल्कि यह ख़ुद आदमी का अपना जाती मसला है। क्योंकि तमाम इंसानों के ऊपर अजीम व बरतर ख़ुदा है। वह आख़िर में सबसे हिसाब लेने वाला है और दुनिया में उनके अमल के मुताबिक आख़िरत में उनके अबदी मुस्तकबिल का फैसला करने वाला है। इसलिए आदमी को चाहिए कि इंसान के मामले को सिर्फ इंसान का मामला न समझे बल्कि इसे अल्लाह का मामला समझे। वह अल्लाह की पकड़ से डरे और अपने आपको उस अमल का पाबंद बनाए जो उसे अल्लाह के ग़जब से बचाने वाला हो।

हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो शख़्स रहम को जोड़ेगा मैं उससे जुडूंगा और जो शख़्स रहम को काटेगा मैं उससे कटूंगा। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह से तअल्लुक का इम्तेहान बंदों से तअल्लुक के मामले में लिया जाता है। वही शख़्स अल्लाह से डरने वाला है जो बंदों के हुकूक के मामले में अल्लाह से डरे, वही शख़्स अल्लाह से मुहब्बत करने वाला है जो बंदों के साथ मुहब्बत में इसका सुबूत दे। यह बात आम इंसानी तअल्लुकात में भी मत्लूब है। मगर रहमी रिश्तों से हुस्ने सुलूक के मामले में इसकी अहमियत इतनी बढ़ जाती है कि वह सिर्फ ख़ुदा के बाद दूसरे नम्बर पर है।

यतीम लड़के और लड़कियां किसी ख़ानदान या समाज का सबसे ज्यादा कमजोर हिस्सा होते हैं। इसलिए ख़ुदा से डर का सबसे ज्यादा सख़्त इम्तेहान यतीम लड़कों और लड़कियों के बारे में होता है। आदमी को चाहिए कि यतीमों के बारे में वही करे जो इंसाफ और ख़ैरख़्वाही का तकाजा हो और जिसमें यतीमों के हुकूक ज्यादा से ज्यादा महफूज रहने की जमानत हो।

यह बहुत गुनाह की बात है कि मुश्तरका असासा (साझी सम्पत्ति) की ऐसी तकसीम की जाए जिसमें अच्छी चीजें अपने हिस्से में रख ली जाएं और दूसरे के हिस्से में ख़राब चीजें डाल कर गिनती पूरी कर दी जाए।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا
وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٥﴾ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ
فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَ
بِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٦﴾ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ
نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا
مَفْرُوضًا ﴿٧﴾ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُمْ
مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٨﴾ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ
ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٩﴾ إِنَّ
الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ
وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾

और नादानों को अपना वह माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए कियाम का जरिया बनाया है और इस माल में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो। और यतीमों को जांचते रहो, यहां तक कि जब वे निकाह की उम्र को पहुंच जाएं तो अगर उनमें होशियारी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो। और उनका माल अनुचित तरीके से और इस ख़्याल से कि वे बड़े हो जाएंगे न खा जाओ। और जिसे हाजत न हो वह यतीम के माल से परहेज करे और जो शख़्स मोहताज हो वह दस्तूर के मुवाफिक खाए। फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले करो तो उन पर गवाह ठहरा लो और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) में से मर्दों का भी हिस्सा है। और मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके में से औरतों का भी हिस्सा है, थोड़ा हो या ज्यादा हो, एक मुकर्रर किया हुआ हिस्सा। और अगर तक़्सीम के वक्त रिश्तेदार और यतीम और मोहताज मौजूद हों तो इसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो। और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे कमजोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत फिक्र रहती। पस उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें। जो लोग यतीमों का माल नाहक खाते हैं वे लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे। (5-10)

माल न ऐश के लिए है और न फख़्र जाहिर करने के लिए। वह आदमी के लिए जिंदगी का जरिया है। वह दुनिया में उसके कयाम और बका (अस्तित्व) का सामान है। माल का जीवन-साधन होना एक तरफ यह जाहिर करता है कि इसे ही स्वयं उद्देश्य बना लेना दुरुस्त नहीं। दूसरे यह कि यह इंतिहाई जरूरी है कि माल को जाए होने से बचाया जाए और उसे उसके हकदार तक पहुंचाने का पूरा एहतमाम किया जाए। किसी के माल को ठीक-ठीक अदा न करना गोया ख़ुदा के उस इंतजाम में फसाद डालना है जो ख़ुदा ने अपने बंदों को रिज़्क पहुंचाने के लिए किया है। यतीम किसी सामाज का सबसे कमजोर हिस्सा होता है इसलिए उसके माल की हिफाजत और उसके मामले में हर किस्म के जुल्म से अपने को बचाना और भी ज्यादा जरूरी है। यहां तक कि यह भी जरूरी है कि आदमी इंसाफ के मुताबिक उनके साथ जो मामला करे उसे लिख कर उस पर गवाही लेले ताकि सामाज के अंदर शिकायत और विवाद की फजा पैदा न हो और वह लोगों के सामने जिम्मेदारी से बरी हो सके। जब भी आदमी के हाथ में किसी का मामला हो तो उसे यह समझ कर मामला करना चाहिए कि उसकी हर कोताही अल्लाह के इल्म में है। साहिबे मामला अपनी कमजोरी की वजह से चाहे उसके ख़िलाफ कुछ न कर सके मगर ख़ुदा उसे जरूर कियामत के दिन पकड़ेगा और अगर उसने हक के ख़िलाफ मामला किया है तो वह उसे सख़्त सजा देगा और उसके लिए किसी तरह भी ख़ुदा की सजा से बचना मुमकिन न होगा।

दुनिया में कमजोर का हक दबा कर आदमी ख़ुश होता है। मगर हर नाजाइज माल जो आदमी अपने पेट में डालता है वह गोया अपने पेट में आग डाल रहा है। दुनिया में ऐसे माल का आग होना बजाहिर महसूस नहीं होता मगर आख़िरत में यह हकीकत खुल जाएगी। यहां आदमी को अमल की आजादी जरूर दी गयी है मगर नतीजा आदमी के अपने इख़्तियार में नहीं। जो शख़्स अपने को बुरे अंजाम से बचाना चाहता है उसे दूसरों के साथ भी बुरा नहीं करना चाहिए। आदमी को चाहिए कि वह दूसरों के लिए नफाबख़्श बने, वह अपनी क्षमता के मुताबिक दूसरों को दे। अगर कोई शख़्स देने की हैसियत में नहीं है तो आख़िरी इस्लामी दर्जा यह है कि वह दूसरों का दिल न दुखाए, वह अपनी जबान खोले तो सीधी और सच्ची बात कहने के लिए खोले वर्ना ख़ामोश रहे।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَمْ
يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ
السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا
تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا

حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ
وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم ۚ مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِن كَانَ
رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
السُّدُسُ ۚ فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ تِلْكَ
حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ
حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर औरतें दो से ज्यादा हैं तो उनके लिए दो तिहाई है उस माल से जो मूरिस (विरासत छोड़ने वाला) छोड़ गया है और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है। और मय्यत के मां-बाप को दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है उस माल का जो वह छोड़ गया है बशर्ते कि मूरिस के औलाद हो। और अगर मूरिस की औलाद न हो और उसके मां-बाप उसके वारिस हों तो उसकी मां का तिहाई है और अगर उसके भाई बहिन हों तो उसकी मां के लिए छठा हिस्सा है। ये हिस्से वसीयत निकालने के बाद या कर्ज की अदायगी के बाद हैं जो वह कर जाता है। तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा नफा देने वाला कौन है। यह अल्लाह का ठहराया हुआ फरीजा है। बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ें, बशर्ते कि उनके औलाद न हो। और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए बीवियों के तरके का चौथाई है वसीयत निकालने के बाद जिसकी वे वसीयत कर जाएं या कर्ज की अदायगी के बाद। और उन बीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तरके का अगर तुम्हारे औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारे औलाद है तो उनके लिए आठवां हिस्सा है तुम्हारे तरके का वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या कर्ज की अदायगी के बाद। और अगर कोई मूरिस मर्द या औरत ऐसा हो जिसके न औलाद हो और न मां-बाप जिंदा हों, और उसके एक भाई या एक बहिन हो तो दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है। और अगर वे इससे ज्यादा हों तो वे एक तिहाई में

शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत की गयी हो या कर्ज की अदायगी के बाद, बग़ैर किसी को नुक्सान पहुंचाए। यह हुक्म अल्लाह की तरफ से है और अल्लाह अलीम व हलीम है। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा अल्लाह उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसके मुकर्रर किए हुए जाब्तों (नियमों) से बाहर निकल जाएगा उसे वह आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए जिल्लत वाला अजाब है। (11-14)

आदमी जो क़ानून बनाता है उसमें किसी न किसी पहलू की तरफ झुकाव हो जाता है। पुराने क़बाइली दौर में लड़का बहुत अहमियत रखता था। क्योंकि वह क़बीले के लिए ताक़त का जरिया था, इसलिए विरासत में लड़की को महरूम करके सारा हक लड़के को दे दिया गया। मौजूदा जमाने मे इसका रद्देअमल हुआ तो लड़का और लड़की दोनों बराबर कर दिए गए। लेकिन पिछला उसूल अगर ग़ैर-मुंसिफाना था तो मौजूदा उसूल ग़ैर हक़ीक़तपसंदाना है। यह सिर्फ अल्लाह है जिसका इल्म व हिक्मत इस बात की जमानत है कि वह जो क़ानून दे वह हर किस्म की बेएतिदाली से पाक हो। अल्लाह ने इस सिलसिले में जो जाब्ते मुक़र्रर किए हैंवे न सिर्फयह कि समाजी इंसाफ का हक़ीक़ी जरिया हैंबल्कि आख़िरत की जिंदगी से भी इनका गहरा तअल्लुक है। यतीमों के हुक़ूक़ अदा करना, वसीयत की तामील करना, विरासत को उसके वारिसों तक पहुंचाना उन मामलों में से हैं जिन पर आदमी की दोजख़ व जन्नत निर्भर है। एक तिहाई हिस्से में वसीयत करना शरीअत की रु से जाइज है। लेकिन कोई शख़्स ऐसी वसीयत करे जिसका मक्सद हकदार को विरासत से महरूम करना हो तो यह ऐसा गुनाह है जो उसे जहन्नम का मुस्तहिक बना सकता है। इस मामले में आदमी को ख़ुदा के मुक़र्रर किए हुए जाब्ते पर चलना है न कि जाती ख़्वाहिशों और ख़ानदानी मस्लेहतों के ऊपर।

وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِن نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنكُمْ ۖ
فَإِن شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ
لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنكُمْ فَآذُوهُمَا ۖ فَإِن تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا
عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उन पर अपनों में से चार मर्द गवाह करो। फिर अगर वे गवाही दे दें तो इन औरतों को घरों के अंदर बंद रखो, यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे। और तुममें से दो मर्द जो वही बदकारी करें तो उन्हें अज़ियत (यातना) पहुंचाओ। फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें तो उनका ख़्याल छोड़ दो। बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला महरबान है। तौबा जिसे क़ुबूल करना अल्लाह के जिम्मे है वह उन लोगों की है जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं। वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह क़ुबूल करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो बराबर गुनाह करते रहें, यहां तक कि जब मौत उनमें से किसी के सामने आ जाए तब वह कहे कि अब मैं तौबा करता हूं, और न उन लोगों की तौबा है जो इस हाल में मरते हैं कि वे मुंकिर हैं, उनके लिए तो हमने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (15-18)

कोई मर्द या औरत अगर ऐसा फेअल (कृत्य) कर बैठे जो शरीअत के नजदीक गुनाह हो तब भी उसके साथ जो मामला किया जाएगा वह कानून के मुताबिक किया जाएगा न कि कानून से आजाद होकर। कानून के तकाजे पूरे किए बग़ैर किसी को मुजरिम करार देना दुरुस्त नहीं, किसी का मुजरिम होना दूसरे को यह हक नहीं देता कि वह उसके ख़िलाफ जालिमाना कार्रवाई करने लगे। सजा का मक्सद अद्ल (न्याय) का क्याम है और अद्ल का क्याम जुल्म और नाइंसाफी के साथ नहीं हो सकता। और अगर गुनाह करने वाला तौबा करे और अपनी इस्लाह कर ले तो इसके बाद तो लाजिम हो जाता है कि उसके साथ शफ्कत (स्नेह) और दरगुजर (क्षमा) का मामला किया जाए। किसी के माजी (अतीत) की बुनियाद पर उसे मतऊन (लांछित) करना दुरुस्त नहीं। जब अल्लाह तौबा करने वालों की तौबा क़ुबूल करता है और अपनी इस्लाह कर लेने वालों की तरफ दुबारा महरबानी के साथ पलट आता है तो इंसानों को क्या हक है कि ऐसे किसी शख़्स को तंज और मलामत का निशाना बनाएं। ऐसे किसी शख़्स को तंज और मलामत का निशाना बनाकर आदमी ख़ुद अपने आपको मुजरिम साबित कर रहा है, न कि किसी दूसरे आदमी को।

तौबा जबान से 'तौबा' का लफ्ज बोलने का नाम नहीं। यह अपनी गुनाहगारी के शदीद एहसास का नाम है। और आदमी अगर अपनी तौबा में संजीदा हो और वाकई शिद्दत के साथ उसने अपनी गुनाहगारी को महसूस किया हो तो वह आदमी के लिए इतना सख़्त मामला होता है कि तौबा आदमी के लिए अपनी सजा आप देने के हममअना बन जाती है। यह कैफियत आदमी के अंदर अगर अल्लाह के डर से पैदा हुई हो तो अल्लाह जरूर उसे माफ कर देता है। मगर उन लोगों की तौबा की अल्लाह के नजदीक कोई कीमत नहीं जो इतने जरी (हेकड़) हों कि जानबूझ कर अल्लाह की नाफरमानी करते रहें। और तंबीह (चेतावनी) के बावजूद उस पर कायम रहें, अलबत्ता जब दुनिया से जाने का वक्त आ जाए तो कहें कि 'मैंने तौबा की।' इसी तरह उन लोगों की तौबा भी बेफायदा है जो आख़िरत में अजाब को समाने देखकर अपने जुर्म का इकरार करेंगे।

तौबा की हकीक्त बंदे का अपने रब की तरफ पलटना है ताकि उसका रब भी उसकी तरफ पलटे। तौबा उस शख़्स के लिए है जो वक्ती जज्बे से मग़लूब होकर बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके नफ्स का एहतेसाब (परख) जल्द ही उसे अपनी ग़लती का एहसास करा दे वह बुराई को छोड़कर दुबारा नेकी की रविश अपनाए और शरीअत के मुताबिक अपनी जिंदगी की इस्लाह कर ले। ऐसा ही आदमी तौबा करने वाला है और जो शख़्स इस तरह तौबा करे उसकी मिसाल ऐसी ही है जैसा भटका हुआ आदमी दुबारा अपने घर वापस आ जाए।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۹﴾ وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۲۰﴾ وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۲۱﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۲۲﴾

ऐ ईमान वालो तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम औरतों को जबरदस्ती अपनी मीरास में ले लो और न उन्हें इस ग़रज से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो मगर इस सूरत में कि वे खुली हुई बेहयाई करें। और उनके साथ अच्छी तरह गुजर-बसर करो। अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज तुम्हें पसंद न हो मगर अल्लाह ने इसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तुम इसे बोहतान (आक्षेप) लगाकर और सरीह जुल्म करके वापस लोगे। और तुम किस तरह उसे लोगे जबकि एक दूसरे से ख़लवत कर चुका है और वे तुमसे पुख़्ता अहद ले चुकी हैं। और उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका। बेशक यह बेहयाई है और नफरत की बात है और बहुत बुरा तरीका है। (19-22)

मरने वाले के माल में यकीनन बाद वालों को विरासत का हक है। मगर इसका मतलब यह नहीं कि मरने वाले की बीवी को भी बाद के लोग अपनी मीरास समझ लें और जिस तरह चाहें उसको इस्तेमाल करें। माल एक संवेदनहीन और अधीन चीज है और इसमें विरासत चलती है। मगर इंसान एक जिंदा और आजाद हस्ती है। उसे इख़्तियार है कि वह अपनी मर्जी से अपने मुस्तकबिल (भविष्य) का फैसला करे। औरत में अगर कोई जिस्मानी या मिजाजी कमी हो तो उसे बर्दाश्त करते हुए औरत को मौका देना चाहिए कि वह अल्लाह की दी हुई

दूसरी ख़ूबियों के जरिए घर की तामीर में अपना हिस्सा अदा करे। आदमी को चाहिए कि जाहिरी नापसंदीदगी को भूल कर आपसी तअल्लुकात को निभाए। किसी ख़ानदान और इसी तरह किसी समाज की तरक्क़ी और इस्तहकाम का राज यह है कि उसके अफ़राद एक-दूसरे की कमियों को नजरअंदाज करते हुए उनकी ख़ूबियों को बरुएकार आने का मौक़ा दें। जो लोग अल्लाह की ख़ातिर मौजूदा दुनिया में सब्र और बर्दाश्त का तरीक़ा अपनाएं वही वे लोग हैं जो आख़िरत की जन्नतों में दाख़िल किए जाएंगे।

जब आदमी को अपना जीवन साथी नापसंद हो और वह सब्र का तरीक़ा न अपनाकर अलग होने का फ़ैसला करे तो अक्सर ऐसा होता है कि इस अलेहिदगी को हक बजानिब साबित करने के लिए वह दूसरे फरीक़ की ख़ामियों को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करता है। वह उस पर झूठे इल्जाम लगाता है। वह उसके ख़िलाफ़ जालिमाना कार्रवाई करता है ताकि वह घबरा कर ख़ुद ही भाग जाए। इसी तरह जब आदमी किसी से तअल्लुक तोड़ता है तो जिद में आकर दूसरे फरीक़ को दी हुई चीजें उससे वापस छीनने की कोशिश करता है। मगर यह सब अहद की ख़िलाफ़वर्जी है और अहद (वचनबद्धता) अल्लाह की नजर में ऐसी मुक़द्दस चीज है कि अगर वह अलिखित रूप में हो तब भी उसकी पाबंदी उतनी ही जरूरी है जितना कि लिखित अहद की।

'जो हो चुका सो हो चुका' का उसूल सिर्फ़ निकाह से संबंधित नहीं है। बल्कि यह एक आम उसूल है। जिंदगी के निजाम में जब भी कोई तब्दीली आती है, चाहे वह घरेलू जिंदगी में हो या क़ौमी जिंदगी में, तो माजी (अतीत) के बहुत से मामले ऐसे होते हैं जो नए इंक़लाब के मेयार पर ग़लत नजर आते हैं। ऐसे मौक़ों पर माजी को कुरेदना और गुजरी हुई ग़लतियों पर अहकाम जारी करना बेशुमार नए मसाइल पैदा करने का सबब बन जाता है। इसलिए सही तरीक़ा यही है कि माजी को भुला दिया जाए और सिर्फ़ हाल और मुस्तक़बिल की इस्लाह पर अपनी कोशिशें लगा दी जाएं। 'और उनके साथ अच्छे तरीक़े से गुजर-बसर करो । अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि तुम्हें एक चीज पसंद न हो मगर अल्लाह ने उसके अंदर तुम्हारे लिए कोई बड़ी भलाई रख दी हो।' यह जुमला यहां अगरचे मियां-बीवी के तअल्लुक के बारे में आया है, मगर इसके अंदर एक उमूमी तालीम भी है। कुरआन का यह आम उस्लूब (शैली) है कि एक सुनिश्चित मामले का हुक्म बताते हुए उसके दर्मियान एक ऐसी सामान्य हिदायत दे देता है जिसका तअल्लुक आदमी की पूरी जिंदगी से हो।

दुनिया की जिंदगी में इंसान के लिए मिलजुल कर रहना नागुजीर है। कोई शख़्स बिल्कुल अलग-थलग जिंदगी गुजार नहीं सकता। अब चूंकि स्वभाव अलग-अलग हैं, इसलिए जब भी कुछ लोग मिलजुल कर रहेंगे उनके दर्मियान लाजिमन शिकायतें पैदा होंगी। ऐसी हालत में क़ाबिले अमल सूरत सिर्फ़ यह है कि शिकायतों को नजरअंदाज किया जाए और ख़ुशउस्लूबी के साथ तअल्लुक को निभाने का उसूल अपनाया जाए।

अक्सर ऐसा होता है कि अपने साथी की एक ख़राबी आदमी के सामने आती है और वह बस उसी को लेकर अपने साथी से रूठ जाता है। हालांकि अगर वह सोचे तो वह पाएगा कि हर नामुवाफ़िक़ (प्रतिकूल) सूरतेहाल में कोई ख़ैर का पहलू मौजूद है। कभी किसी वाक्ये में आदमी के लिए सब्र की तर्बियत का इम्तेहान होता है। कभी इसके अंदर अल्लाह की तरफ़

रुजूअ और इनाबत की ग़िजा होती है। कभी एक छोटी-सी तकलीफ़ में कोई बड़ा सबक़ छुपा हुआ होता है, आदि।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٣﴾

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۖ كِتَابَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَٰلِكُمْ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ ۚ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٢٤﴾ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ ۚ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَافِحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ ۚ فَإِذَا أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٥﴾

तुम्हारे ऊपर हराम की गईं तुम्हारी माएं, तुम्हारी बेटियां, तुम्हारी बहिनें, तुम्हारी फूफियां, तुम्हारी ख़ालाएं, तुम्हारी भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया, तुम्हारी दूध शरीक बहिनें, तुम्हारी औरतों की माएं और उनकी बेटियां जो तुम्हारी परवरिश में हैं जो तुम्हारी उन बीवियों से हों जिनसे तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। और तुम्हारे सुलबी (तुमसे पैदा) बेटों की बीवियां और यह कि तुम इकट्ठा करो दो बहिनों को मगर जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों मगर यह कि वे जंग में तुम्हारे

हाथ आएं। यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर। इनके अलावा जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं बशर्ते कि तुम अपने माल के जरिए से उनके तालिब बनो, उनसे निकाह करके न कि बदकारी के तौर पर। फिर उन औरतों में से जिन्हें तुम काम में लाए उन्हें उनको तैशुदा महर दे दो। और महर के ठहराने के बाद जो तुमने आपस में राजीनामा किया हो तो इसमें कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और तुममें से जो शख़्स सामर्थ्य न रखता हो कि आजाद मुसलमान औरतों से निकाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन कनीजों (दासियों) में से किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे कब्जे में हों और मोमिना हों। अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है, तुम आपस में एक हो। पस उनके मालिकों की इजाजत से उनसे निकाह कर लो और मारूफ तरीके से उनके महर अदा कर दो, इस तरह कि उनसे निकाह किया जाए न कि आजाद शहवतरानी करें और चोरी छुपे आशनाइयां करें। फिर जब वे निकाह के बंधन में आ जाएं और इसके बाद वे बदकारी करें तो आजाद औरतों के लिए जो सजा है उसकी आधी सजा इन पर है। यह उसके लिए है जो तुममें से बदकारी का अंदेशा रखता हो। और अगर तुम जब्त (संयम) से काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (23-25)

इंसान के अंदर बहुत सी फितरी ख़्वाहिशें हैं। इन्हीं में से एक शहवानी ख़्वाहिश (यौन-इच्छा) है जो औरत और मर्द के दर्मियान पाई जाती है। शरीअत तमाम इंसानी जज्बात की हदबंदी करती है। इसी तरह उसने शहवानी जज्बात के लिए भी हदें और जाब्ते (नियम) मुकर्रर किए हैं। शरीअते इलाही के मुताबिक औरत और मर्द के दर्मियान सिर्फ वही तअल्लुक सही है जो निकाह की सूरत में एक संजीदा समाजी समझौते की हैसियत से कायम हो। फिर यह कि जिस तरह फितरी जज्बात की तस्कीन जरूरी है उसी तरह यह भी जरूरी है कि ख़ानदानी जिंदगी में तकद्दुस (पवित्रता) की फिजा मौजूद रहे। इस मक्सद के लिए नसब (वंश) या रजाअत (दूध का रिश्ता) या मुसाहिरत (पारिवारिक संबंध) के तहत कायम होने वाले कुछ रिश्तों को हराम करार दे दिया गया ताकि बिल्कुल करीबी रिश्तों के दर्मियान का तअल्लुक शहवानी जज्बात से मुक्त रहे।

इंसान की इज्जत और बड़ाई का मेयार वह दिखाई देने वाली चीजें नहीं हैं जिन पर लोग एक-दूसरे की इज्जत व बड़ाई को नापते हैं। बल्कि बड़ाई का मेयार वह न दिखाई देने वाला ईमान है जो सिर्फ अल्लाह के इल्म में होता है। गोया किसी का इज्जत वाला होना या बेइज्जत वाला होना ऐसी चीज नहीं जो आदमी को मालूम हो। यह तमामतर नामालूम चीज है और इसका फैसला आख़िरत में अल्लाह की अदालत में होने वाला है। यह एक ऐसा तसव्वुर है जो आदमी से बरतरी (उच्चता) का अहसास छीन लेता है। और बरतरी का एहसास ही वह चीज है जो अधिकतर समाजी ख़राबियों की अस्ल जड़ है।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ

وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीकों की हिदायत दे जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं वे चाहते हैं कि तुम राहेरास्त से बहुत दूर निकल जाओ। अल्लाह चाहता है कि तुम से बोझ को हल्का करे और इंसान कमजोर बनाया गया है। (26-28)

जिंदगी के तरीके जो कुरआन में बताए गए हैं वे कोई नए नहीं हैं। हर दौर में अल्लाह अपने पैग़म्बरों के जरिए इनका एलान कराता रहा है। हर जमाने के ख़ुदापरस्त लोगों का इसी पर अमल था। मगर कदीम आसमानी किताबों के महफूज न रहने की वजह से ये तरीके गुम हो गए। अब अल्लाह ने अपने आख़िरी रसूल के जरिए इन्हें अरबी भाषा में उतारा और इन्हें हमेशा के लिए महफूज कर दिया। आज जब कोई गिरोह इन तरीकों पर अपनी जिंदगी को ढालता है तो गोया वह सालेहीन (सच्चे लोगों) के उस अबदी काफिले में शामिल हो जाता है जिन्हें अल्लाह की रहमतों में हिस्सा मिला, जो हर जमाने में अल्लाह के उस रास्ते पर चले जिसे अल्लाह ने अपने वफादार बंदों के लिए खोला था।

हर इंसानी गिरोह में ऐसा होता है कि कुछ चीजें सदियों के रवाज से जड़ जमा लेती हैं। वे लोगों के जेहनों पर इस तरह छा जाती हैं कि उनके ख़िलाफ सोचना मुश्किल हो जाता है। जब अल्लाह का कोई बंदा समाज सुधार का काम शुरू करता है तो इस किस्म के लोग चीख़ उठते हैं। अपने मानूस(प्रचलित) तरीकों को छोड़कर नामानूस तरीकों को अपनाना उनके लिए सख़्त दुश्वार हो जाता है। वे ऐसी इस्लाही तहरीक के दुश्मन बन जाते हैं जो उन्हें उनके बाप-दादा के तरीकों से हटाना चाहती हो। इस सिलसिले में मजहबी तबके का रद्देअमल और भी ज्यादा शदीद होता है। जब दीन का अंदरूनी पहलू कमजोर होता है तो ख़ारजी (वाह्य) मूशिगाफियां (कुतर्क) जन्म लेती हैं। अब आदाब और कायदों का एक जाहिरी ढांचा बना लिया जाता है। लोग दीन की अस्ली कैफियतों से ख़ाली होते हैं ओर जाहिरी आदाब और कायदों की पाबंदी करके समझते हैं कि वे ख़ुदा के दीन पर कायम हैं। यह स्वनिर्मित दीन पूर्वजों से मंसूब होकर धीरे-धीरे पवित्र बन जाता है और नौबत यहां तक पहुंचती है कि ख़ुदा का सादा और फितरी दीन इन्हें अजनबी मालूम होता है। और अपना जकड़बंदियों वाला दीन ऐन बरहक नजर आता है। ऐसी हालत में जो तहरीक अस्ली और इब्तिदाई दीन को जिंदा करने के लिए उठे वे इसके शदीद विरोधी हो जाते हैं क्योंकि इसमें उन्हें अपनी दीनदारी की नफी (नकार) होती हुई नजर आती है। मसलन ख़ुदा की शरीअत में हैज़ के दौरान औरत के साथ मुबाशिरत नाजाइज है, इसके अलावा दूसरे तअल्लुकात उसी तरह रखे जा सकते हैं जिस तरह आम दिनों के होते हैं। यहूदियों ने इस सादा हुक्म पर इजाफा करके यह मसला बनाया

कि माहवारी के दिनों में औरत की पकाई हुई चीज को खाना, उसके हाथ का पानी पीना, उसके साथ एक जगह बैठना, उसे अपने हाथ से छूना सब नाजाइज या कम से कम तक़्वा के ख़िलाफ है। इस तरह हैज वाली औरत से मुकम्मल दूरी गोया पारसाई की अलामत बन गई। अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीने में जब ख़ुदा की अस्ली शरीअत को जिंदा किया तो यहूदी बिगड़ गए। वह चीज जिस पर उन्होंने अपनी पारसाई की इमारत खड़ी की थी अचानक गिरती हुई नजर आई। ख़ुदा के सादा दीन को जब भी जिंदा किया जाए तो वे लोग इसके सख़्त मुख़ालिफ हो जाते हैं जो बनावटी दीन के ऊपर अपनी दीनदारी की इमारत खड़ी किए हुए हों। यह उनसे सरदारी छीनने के समान होता है और सरदारी का छिनना कोई बर्दाश्त नहीं करता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾ إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا اللَّهَ مِن فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾

ऐ ईमान वालो, आपस में एक-दूसरे का माल नाहक तौर पर न खाओ। मगर यह कि तिजारत हो आपस की ख़ुशी से। और ख़ून न करो आपस में। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा महरबान है। और जो शख़्स सरकशी और जुल्म से ऐसा करेगा उसे हम जरूर आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है। अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयों को माफ कर देंगे और तुम्हें इज्जत की जगह दाख़िल करेंगे। और तुम ऐसी चीज की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का। और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगो। बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। और हमने वालिदेन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए में से हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं और जिनसे तुमने अहद बांध रखा हो तो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह के रूबरू है हर चीज। (29-33)

एक का माल दूसरे तक पहुंचने की एक सूरत यह है कि एक आदमी दूसरे की जरूरत फराहम करे और उससे अपनी महनत का मुआवजा ले। यह तिजारत है और शरीअत के मुताबिक यही कस्बेमआश (जीविका) का सही तरीका है। इसके बजाए चोरी, धोखा, झूठ, रिश्वत, सूद, जुवा वग़ैरह से जो माल कमाया जाता है वह ख़ुदा की नजर में नजाइज तरीके से कमाया हुआ माल है। यह लूट की विभिन्न किस्में हैं और जो लोग तिजारत के बजाए लूट को अपना मआश का जरिया बनाएं वे दुनिया में चाहे कामयाब रहें मगर आख़िरत में उनके लिए आग का अजाब है। आदमी की जान का मामला भी यही है। आदमी को मारने का हक सिर्फ एक कायमशुदा हुकूमत को है जो ख़ुदा के कानून के तहत बाकायदा इल्जाम साबित होने के बाद उसके ख़िलाफ कार्रवाई करे। इसके सिवा जो शख़्स किसी को उसकी जिंदगी से महरूम करने की कोशिश करता है वह हराम काम करता है जिसके लिए अल्लाह के यहां सख़्त सजा है। अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म उदवान और सरकशी है। यानी हद से निकलना और नाहक किसी को सताना। जो लोग उदवान (दुश्मनी) और जुल्म से अपने को बचाएं उनके साथ अल्लाह यह ख़ुसूसी मामला फरमाएगा कि वे आख़िरत की दुनिया में इस तरह दाख़िल होंगे कि उनकी मामूली कोताहियां और लग़जिशें उनसे दूर की जा चुकी होंगी।

दुनिया में एक आदमी और दूसरे आदमी के दर्मियान फ़र्क रखा गया है। किसी को जिस्मानी और जेहनी कुव्वतों में कम हिस्सा मिला है और किसी को ज्यादा। कोई अच्छे हालात में पैदा होता है और कोई बुरे हालात में। किसी के पास बड़े-बड़े जराए (संसाधन) हैं और किसी के पास मामूली जराए। आदमी जब किसी दूसरे को अपने से बढ़ा हुआ देखता है तो उसके अंदर फौरन उसके ख़िलाफ जलन पैदा हो जाती है। इससे इज्तिमाई जिंदगी में हसद, अदावत और आपसी कशमकश पैदा होती है। मगर इन चीजों के एतबार से अपने या दूसरे को तौलना नादानी है। ये सब दुनियावी अहमियत की चीजें हैं। ये दुनिया में मिली हैं और दुनिया ही में रह जाने वाली हैं। अस्ल अहमियत आख़िरत की कामयाबी की है और आख़िरत की कामयाबी में इन चीजों का कुछ भी दख़ल नहीं। आख़िरत की कामयाबी उस अमल पर निर्भर है जो आदमी इरादे और इख़्तियार से अल्लाह के लिए करता है। इसलिए बेहतरीन अक्लमंदी यह है कि आदमी हसद से अपने आपको बचाए और अल्लाह से तौफ़ीक की दुआ करते हुए अपने आपको आख़िरत के लिए अमल करने में लगा दे।

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَاللَّاتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾ وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾

मर्द औरतों के ऊपर कव्वाम (प्रमुख) हैं। इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इस कारण कि मर्द ने अपने माल ख़र्च किए। पस जो नेक औरतें हैं वे फरमांबरदारी करने वाली, पीठ पीछे निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो उन्हें समझाओ और उन्हें उनके बिस्तरों में तंहा छोड़ दो और उन्हें सजा दो। पस अगर वे तुम्हारी इताअत करें तो उनके ख़िलाफ इल्जाम की राह न तलाश करो। बेशक अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है। और अगर तुम्हें मियां-बीवी के दर्मियान तअल्लुकात बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक मुंसिफ मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक मुंसिफ औरत के रिश्तेदारों में से खड़ा करो। अगर दोनों इस्लाह चाहेंगे तो अल्लाह उनके दर्मियान मुवाफिक़त कर देगा। बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला ख़बरदार है। (34-35)

जहां भी आदमियों का कोई मज्मूआ हो, चाहे वह ख़ानदान की सूरत में हो या राज्य की सूरत में, जरूरी है कि उसके ऊपर सरदार और सरबराह (प्रमुख) हो, और यह सरबराह लाजिमन एक ही हो सकता है। दुनिया के बारे में अल्लाह का बनाया हुआ जो मंसूबा है उसमें ख़ानदान की सरबराही के लिए मर्द को मुतअय्यन किया गया है और इसी के लिहाज से उसकी तख़्लीक़ (रचना) हुई है। मर्द की बनावट और औरत की बनावट में जो जैविक और मनोवैज्ञानिक फर्क़ है वह अल्लाह के इसी तख़्लीक़ी मंसूबे के अनुरूप है। अब अगर कुछ लोग अल्लाह के मंसूबे के ख़िलाफ चलें तो वे सिर्फ बिगाड़ पैदा करने का सबब बनेंगे। क्योंकि ख़ुदा का कारख़ाना तो मर्द और औरत को बदस्तूर अपने मंसूबे के मुताबिक बनाता रहेगा जिसमें 'कव्वामियत' की क्षमताएं मर्द को दी गई होंगी और 'इताअत' की क्षमताएं औरत को। जबकि इनके सामाजिक इस्तेमाल में ख़ुदाई रचना-योजना का पालन नहीं किया जा रहा होगा। ऐसे हर अन्तर्विरोध का नतीजा इस दुनिया में सिर्फ बिगाड़ है।

बेहतरीन औरत वह है जो अल्लाह के तख़्लीक़ी मंसूबे (रचना-योजना) में अपने को शामिल करते हुए मर्द की बरतरी तस्लीम कर ले। इसी तरह बेहतरीन मर्द वह है जो अपनी बरतर हैसियत के सबब इस हक़ीक़त को भूल न जाए कि ख़ुदा उससे भी ज्यादा बरतर है। ख़ुदा की अदालत में औरत मर्द का कोई फर्क़ नहीं, यह फर्क़ तमामतर सिर्फ दुनिया के इंतजाम के एतबार से है न कि आख़िरत में इनामात की तक़्सीम के एतबार से। मर्द को चाहिए कि वह औरत के हक में अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने का पूरा एहतेमाम करे। कोई औरत अगर ऐसी हो जो मर्द की इंतजामी बड़ाई को न माने तो ऐसा हरगिज न होना चाहिए कि मर्द के अंदर इंतिक़ाम का जज्बा उभर आए या वह इल्जामात लगा कर औरत को बदनाम करे। कोई भी बरतरी किसी को इंसाफ की पाबंदी से मुक्त नहीं करती। अलबत्ता ख़ुसूसी हालात में मर्द को यह हक है कि किसी औरत के अंदर अगर वह सरताबी देखे तो वह उसकी इस्लाह की कोशिश करे। यह इस्लाह अव्वलन समझाने बुझाने से शुरू होगी। फिर दबाव डालने के लिए बातचीत न करना और तअल्लुक न रखना अपनाया जा सकता है। आख़िरी दर्जे में मर्द उसे हल्की सजा दे सकता है, जैसे मिस्वाक से मारना।

दो आदमियों में जब आपसी मनमुटाव हो तो दोनों का जेहन एक-दूसरे के बारे में मुतअस्सिर जेहन बन जाता है। दोनों एक-दूसरे के बारे में ख़ालिस वाकेआती अंदाज से सोच

नहीं पाते। ऐसी हालत में मामले को तै करने की बेहतरीन सूरत यह है कि दोनों अपने सिवा किसी दूसरे को हकम (बिचौलिया, मुंसिफ) बनाने पर राजी हो जाएं। दूसरा शख़्स मामले से जाती तौर पर जुड़ा न होने की वजह से ग़ैर-मुतअस्सिर जेहन के साथ सोचेगा और ऐसे फैसले तक पहुंचने में कामयाब हो जाएगा जो वाक़्ये की हक़ीक़त के मुताबिक हो।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۝
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
رِئَاۗءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَمَنْ يَّكُنِ
الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَاۗءَ قَرِيْنًا ۝ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज को उसका शरीक न बनाओ। और अच्छा सुलूक करो मां-बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों और रिश्तेदार पड़ौसी और अजनबी पड़ौसी और पास बैठने वाले और मुसाफिर के साथ और ममलूक (अधीन) के साथ। बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले बड़ाई करने वाले को जोकि कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपने फज़्ल से दे रखा है उसे छुपाते हैं। और हमने मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत बुरा साथी है। उनका क्या नुक्सान था अगर वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करते। और अल्लाह उनसे अच्छी तरह बाख़बर है। बेशक अल्लाह जरा भी किसी की हक़तलफ़ी नहीं करेगा। अगर नेकी हो तो वह उसे दुगना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब देता है। (36-40)

इंसान के पास जो कुछ है सब अल्लाह का दिया हुआ है। इसका तकाजा है कि इंसान अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे, वह उसका इबादतगुजार बन जाए। जब आदमी इस तरह अल्लाह वाला बनता है तो उसके अंदर फितरी तौर पर तवाज़ोअ (विनम्रता, सद्व्यवहार)

का मिजाज पैदा हो जाता है। उसका यह मिजाज उन इंसानों से तअल्लुक़ात में जाहिर होता है जिनके दर्मियान वह जिंदगी गुजार रहा हो। उसका यह मिजाज मां-बाप के मामले में हुस्ने सुलूक की सूरत अपना लेता है। हर शख़्स जिससे उसका वास्ता पड़ता है वह उसे ऐसा इंसान पाता है जैसे वह अल्लाह को अपने ऊपर खड़ा हुआ देख रहा हो। वह हर एक का हक उसके तअल्लुक़ के मुवाफ़िक़ और उसकी जरूरत के मुनासिब अदा करने वाला बन जाता है। जो शख़्स भी किसी हैसियत से उसके संपर्क में आता है उसे नजरअंदाज करना उसे ऐसा लगता है जैसे वह ख़ुद अपने को अल्लाह के यहां नजरअंदाज किए जाने का ख़तरा मोल ले रहा है।

जो शख़्स अपने आपको अल्लाह के हवाले न करे उसके अंदर फख़्र की नफ्सियात उभरती है। उसके पास जो कुछ है उसे वह अपनी महनत और काबलियत का करिश्मा समझता है। इसका नतीजा यह होता है कि वह अपनी कमाई को सिर्फ अपना हक समझता है। कमजोर रिश्तेदारों या मोहताजों से तअल्लुक़ जोड़ना उसे अपने मकाम से नीचे दर्जे की चीज मालूम होती है। वह अपनी मस्लेहतों या ख़्वाहिशों की तस्कीन में ख़ूब माल ख़र्च करता है मगर वे मदें जिनमें ख़र्च करना उसकी अना (अहंकार) को ग़िजा देने वाला न हो वहां ख़र्च करने में दिल तंग होता है। दिखावे के कामों में ख़र्च करने में वह फय्याज होता है और ख़ामोश दीनी कामों में ख़र्च करने में वह बख़ील (कंजूस) होता है। जो लोग ख़ुदा की नेमत से तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए फख़्र की ग़िजा लें, जो ख़ुदा के दिए हुए माल को ख़ुदा की बताई हुई मदों में न ख़र्च करें, अलबत्ता अपने नफ्स के तकाजों पर ख़र्च करने के लिए फय्याज हों, ऐसे लोग शैतान के साथी हैं। शैतान ने उन्हें कुछ सामने का नफा दिखाया तो वे उसकी तरफ दौड़ पड़े और ख़ुदा जिस अबदी नफे का वादा कर रहा था उससे उन्हें दिलचस्पी न हो सकी। उनके लिए ख़ुदा के यहां सख़्त अजाब के सिवा और कुछ नहीं। आदमी ख़ुद जो काम न करे उसे वह ग़ैर-अहम बताता है। यह अपने मामले को नजरियाती मामला बनाना है, यह अपने को हक बजानिब साबित करने की कोशिश है। मगर इस किस्म की कोई भी कोशिश अल्लाह के यहां किसी के काम आने वाली नहीं।

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾
يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ
اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ
تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ
مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ
تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾

फिर उस वक्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और तुम्हें उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। वे लोग जिन्होंने इंकार किया और पैग़म्बर

की नाफरमानी की उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश जमीन उन पर बराबर कर दी जाए, और वे अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे। ऐ ईमान वालो, नजदीक न जाओ नमाज के जिस वक्त कि तुम नशे में हो यहां तक कि समझने लगो जो तुम कहते हो, और न उस वक्त कि ग़ुस्ल की हाजत हो मगर राह चलते हुए, यहां तक कि ग़ुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई शौच से आए या तुम औरतों के पास गए हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। (41-43)

हक का दाऔ (आह्वानकर्ता) जब आता है तो वह एक मामूली इंसान की सूरत में होता है। उसके गिर्द जाहिरी बड़ाइयां और रौनकें जमा नहीं होतीं। इसलिए वक्त के बड़े उसे हकीर (तुच्छ) समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें यकीन नहीं आता कि एक ऐसा शख़्स भी उनसे ज्यादा हक व सदाकत वाला हो सकता है जो दुनियावी शान व शौकत में उनसे कम हो। मगर जब कियामत आएगी और ख़ुदा की अदालत कायम होगी तो वे हैरत के साथ देखेंगे कि वही शख़्स जिसे उन्होंने बेकीमत समझ कर ठुकरा दिया था वह आख़िरत की अदालत में ख़ुदाई गवाह बना दिया गया है। वही वह शख़्स है जिसके बयान पर लोगों के लिए जन्नत और जहन्नम के फ़ैसले हों। ये वहां मुजरिम के मकाम पर खड़े होंगे और वह ख़ुदा की तरफ से बोलने वाले के मकाम पर। यह ऐसा सख़्त और हौलनाक लम्हा होगा कि लोग चाहेंगे कि जमीन फट जाए और वे उनके अंदर समा जाएं। मगर उनकी यह शर्मिंदगी उनके काम न आएगी। ख़ुदा के यहां उनके कौल व अमल से लेकर उनकी सोच तक का रिकार्ड मौजूद होगा। और ख़ुदा उन्हें दिखा देगा कि हक के दाऔ का इंकार जो उन्होंने किया वह नावाकफियत के सबब से न था बल्कि घमंड की वजह से था। उन्होंने अपने को बड़ा समझा और हक के दाऔ को छोटा जाना। हकीकत को सुस्पष्ट रूप में देखने और जानने के बावजूद वे महज इसलिए इसके मुंकिर हो गए कि इसे मानने में उन्हें अपनी बड़ाई ख़त्म होती हुई नजर आती थी।

शरीअत में ग़ैर-मामूली हालात में ग़ैर-मामूली रुख़्सत दी गई है। मर्ज या सफर या पानी का न होना ये तीनों आदमी के लिए ग़ैर-मामूली हालतें हैं। इसलिए इन मौकों पर यह रुख़्सत दी गई कि अगर नुक्सान का अंदेशा हो तो वुजू या ग़ुस्ल के बजाए तयम्मुम का तरीका अपनाया जाए। आम वुजू पानी से होता है। तयम्मुम गोया मिट्टी से वुजू करना है। वुजू का मक्सद आदमी के अंदर पाकी की नफ्सियात पैदा करना है और तयम्मुम, वुजू न करने की सूरत में, इस पाकी की नफ्सियात को बाकी रखने की एक माद्दी तदबीर है। 'नमाज उस वक्त पढ़ो जबकि तुम जानो कि तुम क्या कह रहे हो।' यहां यह आयत शराब का इब्तिदाई हुक्म बताने के लिए आई है। मगर इसी के साथ वह नमाज के बारे में एक अहम हकीकत को भी बता रही है। इससे मालूम होता है कि नमाज एक ऐसी इबादत है जो फहम व शुऊर के तहत अदा की जाती है। नमाज महज इसका नाम नहीं है कि कुछ अल्फ़ाज और कुछ हरकतों को अच्छे ढंग से अदा कर दिया जाए। इसी के साथ नमाज में आदमी के जेहन का हाजिर रहना भी जरूरी है। वह नमाज को जानकर नमाज पढ़े, अपनी जबान और अपने जिस्म

से वह जिस ख़ुदा के सामने झुकने का इज्हार कर रहा है, उसी ख़ुदा के सामने उसकी सोच और उसका इरादा भी झुक गया हो। उसका जिस्म जिस ख़ुदा की इबादत कर रहा है, उसका शुऊर भी उसी ख़ुदा का इबादतगुजार बन जाए।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَٰكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था। वे गुमराही को मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ। अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है। और अल्लाह काफी है हिमायत के लिए और अल्लाह काफी है मदद के लिए। यहूद में से एक गिरोह बात को उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना। और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए। वे अपनी जबान को मोड़ कर कहते हैं राइना, दीन में ऐब लगाने के लिए। और अगर वे कहते कि हमने सुना और माना, और सुनो और हम पर नजर करो तो यह उनके हक़ में ज्यादा बेहतर और दुरुस्त होता। मगर अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उन पर लानत कर दी है। पस वे ईमान न लाऐंगे मगर बहुत कम। (44-46)

अल्लाह की किताब किसी गिरोह को इसलिए दी जाती है कि वह उससे अपनी सोच और अपने अमल को दुरुस्त करे। मगर जब आसमानी किताब की हामिल कोई कौम जवाल का शिकार होती है, जैसा कि यहूद हुए, तो ख़ुदा की किताब से वह हिदायत की बजाए गुमराही की ग़िजा लेने लगती है। ख़ुदा के अहकाम उसके लिए ख़ुश्क निरर्थक बहसों का विषय बन जाते हैं। अब उसके यहां आस्थाओं के नाम पर दार्शनिक किस्म की मोशगाफियां जन्म लेती हैं। वह उसके लिए ऐसी सरगर्मियों की तालीम देने वाली किताब बन जाती है जिसका आख़िरत के मसले से कोई तअल्लुक न हो। ऐसे लोग अपनी रिवायती नफ्सियात की वजह से जरूरी समझते हैं कि वे अपनी हर बात को ख़ुदा की बात साबित करें। वे अपने अमल को दीनी जवाज फराहम करने के लिए ख़ुदा की किताब को बदल देते हैं। ख़ुदा के कलिमात को उसके प्रसंग से हटा कर उसकी अपनी गढ़ी हुई तशरीह करते हैं। वे अल्फाज

में उलट फेर करके उससे ऐसा मफहूम निकालते हैं जिसका अस्ल ख़ुदाई तालीमात से कोई तअल्लुक नहीं होता।

'यहूद को किताब का कुछ हिस्सा मिला था।' का मतलब यह है कि उन्हें ख़ुदा की किताब के अल्फाज तो पढ़ने को मिले मगर ख़ुदा की किताब पर अमल करना जो अस्ल मक्सूद था उससे वे दूर रहे। लफ्ज के मामले में वे हामिले किताब बने रहे मगर अमल के मामले में उन्होंने आम दुनियादार कौमों का रास्ता अपना लिया। साथ ही यह कि आम लोग दुनियादारी को दुनियादारी के नाम पर करते हैं और उन्होंने यह ढिठाई की कि अपनी दुनियादारी के लिए ख़ुदा की किताब से सनद पेश करने लगे।

फिर उनकी गुमराही अपनी जात तक नहीं रुकी। वे अपने को ख़ुदा के दीन का नुमाइंदा समझते थे। इसलिए जब ग़ैर यहूदी अरबों ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देना शुरू किया तो यहूद अपनी दीनदारी का भरम कायम रखने के लिए ख़ुद पैग़म्बर के विरोधी हो गए। उन्होंने आपकी जिंदगी और आपकी तालीमात में तरह-तरह के शोशे निकाल कर लोगों को इस शुबह में मुब्तला करना शुरू किया कि यह ख़ुदा के भेजे हुए नहीं हैं बल्कि महज जाती हौसले के तहत ख़ुदा के दीन के अमलबरदार बन कर खड़े हो गए हैं। मगर इस मअरके में अल्लाह ग़ैर जानिबदार नहीं है। वह अपने दुश्मनों के मुकाबले में अपने वफादारों का साथ देगा और उन्हें कामयाब करके रहेगा।

'लानत' दरअस्ल बेहिसी की आख़िरी सूरत है। आदमी की बेहिसी जब इस नौबत को पहुंच जाए कि उसे हक और नाहक की कोई तमीज न रहे तो इसी को लानत कहते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُم ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٤٩﴾ انظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٠﴾

ऐ वे लोगो जिन्हें किताब दी गई उस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, तस्दीक करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और फिर उन्हें उलट दें पीठ की तरफ या उन पर लानत करें जैसे हमने लानत की सब्त वालों पर। और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहता है। बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाए। लेकिन इसके अलावा जो कुछ है उसे जिसके लिए चाहेगा बख़्श देगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया उसने बड़ा तूफान बांधा। क्या तुमने देखा उन्हें जो अपने आपको पाकीजा कहते हैं। बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसे चाहता है, और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ

बांध रहे हैं और सरीह गुनाह होने के लिए यही काफी है। (47-50)

कभी ऐसा होता है कि आदमी एक बात को सुनता है मगर वह हकीकत में नहीं सुनता। यह उस वक्त होता है जबकि आदमी उस बात को समझने के मामले में संजीदा न हो और उस पर अमल करने में उसे कोई दिलचस्पी न हो। यह मिजाज जब अपने आख़िरी दर्जे में पहुंचता है तो आदमी की नासमझी का हाल ऐसा हो जाता है जैसे उसके चेहरे के निशानात मिटा दिए गए हों और अब वह चीजों को इस तरह देख और सुन रहा हो जैसे कोई शख़्स सर के पिछले हिस्से की तरफ से चीजों को देखे और सुने, जहां न देखने के लिए आंख है और न सुनने के लिए कान। हक बात को समझने के लिए आदमी का इस तरह अंधा बहरा हो जाना इस बात की अलामत है कि हक से साथ मुसलसल बेपरवाही के सबब ख़ुदा ने उसे अपनी तौफीक से महरूम कर दिया है। ख़ुदा ने उसे कान दिया मगर उसने नहीं सुना, ख़ुदा ने उसे आंख दी मगर उसने नहीं देखा तो अब ख़ुदा ने भी उसे वैसा ही बना दिया जैसा उसने ख़ुद से अपने को बना रखा था। बेहिसी जब अपने आख़िरी दर्जे में पहुंचती है तो वह मस्ख़ (विनष्ट) की सूरत अपना लेती है।

यहूद का यह ख़्याल था कि हम पैग़म्बरों की नस्ल से हैं, इस सबब हमारा गिरोह मुकद्दस गिरोह है। उन्होंने बेशुमार रिवायतें और कहानियां गढ़ रखी थीं जो उनके नस्ली शरफ और गिरोही फजीलत की तस्दीक करती थीं। वे इन्हीं ख़ुशख़्यालियों में जी रहे थे। उन्होंने बतौर ख़ुद यह अकीदा कायम कर लिया था कि हर वह शख़्स जो यहूदी है उसकी नजात यकीनी है। कोई यहूदी कभी जहन्नम की आग में नहीं डाला जाएगा।

'वे अपने को पाकीजा ठहराते हैं हालांकि अल्लाह जिसे चाहे पाकीजा ठहराए।' ये जुमला इस ख़्याल की तरदीद (खंडन) है। मतलब यह है कि किसी नस्ल या गिरोह से वाबस्तगी के सबब किसी को फजीलत या शरफ नहीं मिल जाता। बल्कि इसका तअल्लुक ख़ुदा के इंसाफ के कानून से है। जो शख़्स ख़ुदाई कानून के मुताबिक अपने को शरफ का मुस्तहिक साबित करे वह शरफ वाला है और जो शख़्स अपने अमल से अपने को मुस्तहिक साबित न कर सके वह महज किसी गिरोह से वाबस्तगी की बुनियाद पर शरफ का मालिक नहीं बन जाएगा।

गिरोही नजात का अकीदा चाहे यहूदी कायम करें या कोई और ऐसा अकीदा बना ले वह सरासर बातिल है। जो लोग ऐसा अकीदा बनाते हैं वे उसे ख़ुदा की तरफ मंसूब करते हैं। मगर यह ख़ुदा पर झूठ लगाना है। क्योंकि ख़ुदा ने कभी ऐसी तालीम नहीं दी। ख़ुदा अगर एक इंसान और दूसरे इंसान में गिरोही तअल्लुक की बुनियाद पर फर्क करने लगे तो यह जुल्म होगा और ख़ुदा सरासर अद्ल (इंसाफ) है, वह कभी किसी के साथ जुल्म करने वाला नहीं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ
وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ
مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰي مَآ

اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ
مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ
سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ
بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۡ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे जिब्त (झूठी चीजों) और तागूत को मानते हैं और मुंकिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमानवालों से ज्यादा सही रास्ते पर हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत करे तुम उसका कोई मददगार न पाओगे। क्या ख़ुदा के इक्तेदार (संप्रभुत्व) में कुछ इनका भी दख़ल है। फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर भी न दें। क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं इस सबब कि अल्लाह ने उन्हें अपने फज्ल से दिया है। पस हमने आले इब्राहीम को किताब और हिक्मत दी है और हमने उन्हें एक बड़ी सल्तनत भी दे दी। उनमें से किसी ने इसे माना और कोई इससे रुका रहा और ऐसों के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग काफी है। बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इंकार किया उन्हें हम सख़्त आग में डालेंगे। जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी कर देंगे ताकि वे अजाब चखते रहें। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत वाला है। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें हम बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए सुथरी बीवियां होंगी और उन्हें हम घनी छांव में रखेंगे। (51-57)

आसमानी किताब की हामिल किसी कौम पर जब जवाल आता है तो वह अमल के बजाए ख़ुशअकीदगी (सुआस्था) की सतह पर जीने लगती है। इसका नतीजा यह होता है कि उसके दर्मियान तवह्हुमात (अंधविश्वास) ख़ूब फैलते हैं। जो चीज हकीकी अमल के जरिए मिलती है उसे वह अमलियात और फर्जी अकीदों और सिफ्ली आमाल के रास्ते से पाने की कोशिश शुरू कर देती है। ऐसे लोग दीन के मामले को 'पाक कलिमात' और 'बाबरकत निस्बतों' का मामला समझ लेते हैं जिसके महज जबानी अदायगी या रस्मी तअल्लुक से चमत्कार प्रकट होते हों। इसी के साथ उनका यह हाल होता है कि वे जबान से दीन का नाम लेते हुए अपनी अमली जिंदगी को शैतान के हवाले कर देते हैं। वे हकीकी जिंदगी में नफ्स की ख़्वाहिशों और शैतान की तरग़ीबात पर चल पड़ते हैं। मगर इसी के साथ अपने ऊपर दीन का लेबल लगा कर समझते हैं कि जो कुछ वे करने लगें वही ख़ुदा का दीन है। ऐसी हालत

में जब उनके दर्मियान बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत उठती है तो वे सबसे ज्यादा इसके मुख़ालिफ हो जाते हैं। क्योंकि उन्हें महसूस होता है कि वह उनकी दीनी हैसियत को नकार रही है। मुंकिरों का वुजूद उनके लिए इस किस्म का चैलेंज नहीं होता इसलिए मुंकिरों के मामले में वे नर्म होते हैं, मगर हक के दाऔ के लिए उनके दिल में कोई नर्म गोशा नहीं होता। उनके अंदर यह हासिदाना (ईर्ष्यापूर्ण) आग भड़क उठती है कि जब दीन के इजारादार हम थे तो दूसरे किसी शख़्स को दीन की नुमाइंदगी का दर्जा कैसे मिल गया। वे भूल जाते हैं कि ख़ुदा आदमी की कल्बी इस्तेदाद (आन्तरिक क्षमता) की बुनियाद पर किसी को अपने दीन का नुमाइंदा चुनता है न कि नुमाइशी चीजों की बुनियाद पर।

लानत यह है कि आदमी अल्लाह की रहमतों और नुसरतों से बिल्कुल दूर कर दिया जाए। खाना और पानी बंद होने से जिस तरह आदमी की माद्दी जिंदगी ख़त्म हो जाती है उसी तरह ख़ुदा की नुसरत से महरूमी के बाद आदमी की ईमानी जिंदगी का ख़ात्मा हो जाता है। लानतजदा आदमी लतीफ एहसासात के एतबार से इस तरह एक ख़त्मशुदा इंसान बन जाता है कि उसके अंदर हक और नाहक की तमीज बाकी नहीं रहती। खुली-खुली निशानियां सामने आने के बाद भी उसे एतराफ की तौफीक नहीं होती। वह निरर्थक शोशों और सुस्पष्ट दलीलों के दर्मियान फर्क नहीं करता।

إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمنت إلى أهلها وإذا حكمتم بين الناس أن
تحكموا بالعدل إن الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا ﴿٥٨﴾
يأيها الذين ءامنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولي الأمر منكم فإن
تنزعتم في شيء فردوه إلى الله والرسول إن كنتم تؤمنون بالله
واليوم الآخر ذلك خير وأحسن تأويلا ﴿٥٩﴾ ألم تر إلى الذين يزعمون
أنهم ءامنوا بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك يريدون أن يتحاكموا إلى
الطغوت وقد أمروا أن يكفروا به ويريد الشيطن أن يضلهم ضللا
بعيدا ﴿٦٠﴾ وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول رأيت المنفقين
يصدون عنك صدودا ﴿٦١﴾ فكيف إذا أصبتهم مصيبة بما قدمت
أيديهم ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسنا وتوفيقا ﴿٦٢﴾ أولئك
الذين يعلم الله ما في قلوبهم فأعرض عنهم وعظهم وقل لهم في
أنفسهم قولا بليغا ﴿٦٣﴾

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हकदारों को पहुंचा दो। और जब लोगों के दर्मियान फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो। अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुम्हें, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने में अहले इख़्तियार की इताअत करो। फिर अगर तुम्हारे दर्मियान किसी चीज में इख़्तेलाफ (मतभेद) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ लौटाओ, अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। यह बात अच्छी है और इसका अंजाम बेहतर है। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे ईमान लाए हैं उस पर जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ और जो उतारा गया है तुमसे पहले, वे चाहते हैं कि विवाद ले जाएं शैतान की तरफ, हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि उसे न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर बहुत दूर डाल दे। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की तरफ और रसूल की तरफ तो तुम देखोगे कि मुनाफिकीन (पाखंडी) तुमसे कतरा जाते हैं। फिर उस वक्त क्या होगा जब उनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर पहुंचेगी, उस वक्त ये तुम्हारे पास कसमें खाते हुए आएंगे कि ख़ुदा की कसम हमें तो सिर्फ भलाई और मिलाप से ग़रज थी। उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे ख़ूब वाकिफ है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो उनके दिलों में उतर जाए। (58-63)

हर जिम्मेदारी एक अमानत है और उसे ठीक-ठीक अदा करना जरूरी है। इसी तरह जब किसी से मामला पड़े तो आदमी को चाहिए कि वह करे जो इंसाफ का तकाजा हो, चाहे मामला दोस्त का हो या दुश्मन का। अगर अमानतदारी और इंसाफ का तरीका बजाहिर अपने फायदों और मस्लेहतों के ख़िलाफ नजर आए तब भी उसे इंसाफ और सच्चाई ही के तरीके पर कायम रहना है। क्योंकि बेहतरी उसमें है जो अल्लाह बताए न कि उसमें जो हमारे नफ्स को पसंद हो। अगर हुकूमती निजाम के मौके हों तो मुसलमानों को चाहिए कि बाकायदा इस्लामी हुकूमत का कयाम अमल में लाएं। और अगर हुकूमत के अवसर न हों तो अपने अंदर के काबिले एतमाद अफराद को अपना सरबराह (प्रमुख) बना लें और उनकी हिदायतों को लेते हुए दीनी जिंदगी गुजारें। जब किसी मामले में इख़्तेलाफ (मतभेद, विवाद) हो तो हर फरीक (पक्ष) पर लाजिम है कि वह उस बात को मान ले जो अल्लाह और रसूल की तरफ से आ रही हो। हर आदमी को अपनी राय और मत रखने की आजादी है मगर इज्तिमाई (सामूहिक) फैसले को न मानने की आजादी किसी को भी हासिल नहीं। इज्तिमाई निजाम मुस्लिम समाज की इज्तिमाई जरूरत है।

मदीना के इब्तिदाई जमाने में इख़्तिलाफी मामलों में फैसला लेने के लिए एक ही समय में दो अदालतें पाई जाती थीं। एक यहूदी सरदारों की जो पहले से चली आ रही थी। दूसरी अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की जो हिजरत के बाद कायम हुई। मुसलमानों में जो लोग अपने मफाद (हित) की कुर्बानी की कीमत पर दीनदार बनने के लिए तैयार न थे वे ऐसा करते

कि जब उन्हें अंदेशा होता कि उनका मुकदमा कमजोर है और वे अल्लाह के रसूल की अदालत से अपने मुवाफ़िक़ फ़ैसला न ले सकेंगे तो वे कअब बिन अशरफ यहूदी की अदालत में चले जाते। यह बात सरासर ईमान के ख़िलाफ है। आदमी अगर अल्लाह के फ़ैसले पर राजी न हो बल्कि अपनी पसंद का फैसला लेना चाहे तो उसका ईमान का दावा झूठा है, चाहे वह अपने रवैये को हक बजानिब साबित करने के लिए कितने ही ख़ूबसूरत अल्फ़ाज अपने पास रखता हो। ताहम ऐसे लोगों से न उलझते हुए उन्हें मुअस्सिर अंदाज में नसीहत करने का काम फिर भी जारी रहना चाहिए।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا
اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ
بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾
وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا
فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَ
اَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا
مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾
ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾

और हमने जो रसूल भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञापालन) की जाए। और अगर वे जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफी चाहते और रसूल भी उनके लिए माफी चाहता तो यकीनन वे अल्लाह को बख़्शने वाला रहम करने वाला पाते। पस तेरे रब की कसम वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी झगड़े में तुम्हें फैसला करने वाला न मान लें। फिर जो फैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसे ख़ुशी से कुबूल कर लें। और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े ही इस पर अमल करते। और अगर ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर साबित रखने वाली होती। और उस वक्त हम उन्हें अपने पास से बड़ा अज्र देते और उन्हें सीधा रास्ता दिखाते। और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, यानी पैग़म्बर और

सिद्दीक और शहीद और सालेह। कैसी अच्छी है उनकी रिफाक़त। यह फज़्ल है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह का इल्म काफी है। (64-70)

रसूल इसलिए नहीं आता कि लोग बस उसके अकीदतमंद हो जाएं और उसकी बारगाह में अल्फ़ाज के गुलदस्ते पेश करते रहें। रसूल इसलिए आता है कि आदमी उससे अपनी जिंदगी का तरीका मालूम करे और उस पर अमलन कारबंद हो। इस मामले में आदमी को इतना ज्यादा शदीद होना चाहिए कि नाज़ुक मौकों पर भी वह रसूल की इताअत से न हटे। जब दो आदमियों का मफाद एक-दूसरे से टकरा जाए और दो आदमियों के दर्मियान एक-दूसरे के ख़िलाफ तल्ख़ी उभर आए उस वक्त भी आदमी को अपने नफ्स को दबाना है और अपने इरादे से अपने को रसूल वाले तरीके का पाबंद बनाना है। विवाद के अवसर पर जो शख़्स रसूल की रहनुमाई को कुबूल करे वही रसूल को मानने वाला है। यहां तक कि रसूल का तरीका अपने जौक़ और अपनी मस्लेहत के ख़िलाफ हो तब भी वह दिल की रिजामंदी के साथ उसे कुबूल कर ले। वह अपने एहसास को इतना जिंदा रखे कि अगर वक्ती तौर पर कभी उससे ग़लती हो जाए तो वह जल्द ही चौंक उठे। वह जान ले कि रसूल को छोड़कर वह शैतान के पीछे चल पड़ा था। वह फौरन पलटे और माफी का तालिब हो। जो शख़्स नफ्सियाती झटकों के मौकों पर दीन पर कायम न रह सके उससे क्या उम्मीद की जा सकती है कि वह उन शदीदतर मौकों पर साबितकदम रहेगा जबकि वतन को छोड़कर और जान व माल की कुर्बानी देकर आदमी को अपने ईमान का सुबूत देना पड़ता है।

नफ्सपरस्ती और मस्लेहतपसंदी की जिंदगी इख़्तियार करने के नतीजे में आदमी जो सबसे बड़ी चीज खो देता है वह सिराते मुस्तकीम (सीधी-सच्ची राह, सन्मार्ग) है। यानी वह रास्ता जिसे पकड़ कर आदमी चलता रहे यहां तक कि अपने रब तक पहुंच जाए। यह रास्ता ख़ुदा की किताब और रसूल की सुन्नत में वाजेह तौर पर मौजूद है। मगर आदमी जब अपनी सोच को तहफ़्फ़ुजात (संरक्षण) का पाबंद कर लेता है तो वजाहत के बावजूद वह सिराते मुस्तकीम को देख नहीं पाता। वह दीन का मुतालआ (मनन, अध्ययन) अपनी ख़्वाहिशों और मस्लेहतों के जेरेअसर करता है न कि उसकी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में। उसके जेहन में अपने अनुकूल दीन की एक स्वनिर्मित परिकल्पना कायम हो जाती है। वह ईमान का दावेदार होकर भी ईमान से महरूम रहता है। ऐसे लोग उस जन्नत के मुस्तहिक कैसे हो सकते हैं जहां वे लोग बसाए जाएंगे जिन्होंने हर किस्म की मस्लेहतों से ऊपर उठ कर दीन को अपनाया था। वे लोग जो ख़ुदा के अहद को पूरा करने वाले हैं, जो हक की गवाही आख़िरी हद तक देने वाले हैं और जिनकी जिंदगियां हद दर्जा पाकीजा हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ
مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ
اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ
تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾ الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾

ऐ ईमान वालो अपनी एहतियात कर लो फिर निकलो जुदा-जुदा या इकट्ठे होकर। और तुममें कोई ऐसा भी है जो देर लगा देता है। फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ न था। और अगर तुम्हें अल्लाह का कोई फज़्ल हासिल हो तो कहता है, गोया तुम्हारे और उसके दर्मियान कोई मुहब्बत का रिश्ता ही नहींकि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी कामयाबी हासिल करता। पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में वे लोग जो आख़िरत के बदले दुनिया की जिंदगी को बेच देते हैं। और जो शख़्स अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या ग़ालिब हो तो हम उसे बड़ा अज्र देंगे। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम नहीं लड़ते अल्लाह की राह में और उन कमजोर मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि ख़ुदाया हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिंदे जालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई हिमायती पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार खड़ा कर दे। जो लोग ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो मुंकिर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं। पस तुम शैतान के साथियों से लड़ो। बेशक शैतान की चाल बहुत कमजोर है। (71-76)

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है, इसलिए यहां हर एक को अमल की आजादी है। यहां शरीर लोगों को भी मौका है कि वे ख़ुदा के बंदों को अपने जुल्म का निशाना बनाएं और इसी के साथ ख़ुदा के नेक बंदों को अपने ईमान के इकरार का सुबूत इस तरह देना है कि वे शरीर लोगों की तरफ से डाली जाने वाली मुसीबतों के बावजूद साबितकदम रहें। अहले ईमान को ख़ुदा के दुश्मनों के मुकाबलें में हर वक्त चौकन्ना रहना है। पुरअम्न तदबीरों और जंगी तैयारियों से उन्हें पूरी तरह अपने बचाव का इंतजाम करना है। उन्हें अलग-अलग तौर पर भी अपने दुश्मनों का मुकाबला करना है और मिल कर भी। इसी के साथ ख़ुद मुसलमानों की सफ में भी ऐसे लोग होते हैं जैसा कि उहुद की जंग में जाहिर हुआ, जो दुनिया के नुक्सान का ख़तरा मोल लिए बग़ैर आख़िरत का सौदा करना चाहते हों। ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे उन कामों में तो ख़ूब हिस्सा लेते हैं जिनमें दुनियावी फायदे का कोई पहलू हो। मगर ऐसा दीनी काम जिसमें दुनियावी एतबार से नुक्सान का अंदेशा हो उससे अलग होने के लिए ख़ूबसूरत उज़्र तलाश कर लेते हैं। उनकी यह ज़ेहनियत इसलिए है कि इस्लाम कुबूल करने के बावजूद अमलन वे इसी मौजूदा दुनिया की सतह पर जी रहे हैं। अगर उन्हें यकीन हो कि अस्ल अहमियत की चीज आख़िरत है तो दुनिया की कामयाबी व नाकामी उनके लिए नाकाबिले लिहाज बन जाए। अल्लाह की राह का मुजाहिद हकीकत में वह है जो सिर्फ आख़िरत का तालिब हो, जो दुनिया के फायदों और मस्लेहतों को कुर्बान करके अल्लाह की राह में बढ़े। न कि वह जो ऐसे जिहाद का ग़ाजी बनना पसंद करे जिसमें कोई जख़्म लगे बग़ैर बड़े-बड़े क्रेडिट मिलते हों, जिसमें अल्फाज बोलकर शोहरत व इज्जत का मकाम हासिल होता हो।

ख़ुदा की राह की लड़ाई वह है जो उस ख़ुदा के बंदे को पेश आए जो सिर्फ ख़ुदा के लिए उठा हो। वह लोगों को जहन्नम से डराए और लोगों को जन्नत की तरफ बुलाए। किसी से वह माद्दी (भौतिक, सांसारिक) या सियासी झगड़ा न छेड़े। फिर भी शरीर लोग उससे लड़ने के लिए खड़े हो जाएं। और शैतान की राह में लड़ने वाले वे लोग हैं जो किसी ख़ुदा के बंदे से इस सबब लड़ें कि उसकी बातों से उनके अहंकार पर चोट पड़ती है। उसके पैग़ाम के फैलाव में उन्हें अपना आर्थिक या सियासी ख़तरा दिखाई देता है। उसकी दलीलों को तोड़ने के लिए वे आक्रामकता के सिवा और कोई दलील अपने पास नहीं पाते।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾ أَيْنَمَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِ اللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴿٧٨﴾ مَّا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٧٩﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज कायम करो और जकात दो। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक गिरोह इंसानों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या इससे भी ज्यादा। वे कहते हैं ऐ हमारे रब, तूने हम पर लड़ाई क्यों फर्ज कर दी। क्यों न छोड़े

रखा हमें थोड़ी मुद्दत तक। कह दो कि दुनिया का फायदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है उसके लिए जो परहेज़गारी करे, और तुम्हारे साथ ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। और तुम जहां भी होगे मौत तुम्हें पा लेगी अगरचे तुम मज़बूत किलों में हो। अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे सबब से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ से है। इन लोगों का क्या हाल है कि लगता है कि कोई बात ही नहीं समझते। तुम्हें जो भलाई भी पहुंचती है ख़ुदा की तरफ से पहुंचती है और तुम्हें जो बुराई पहुंचती है वह तुम्हारे अपने ही सबब से है। और हमने तुम्हें इंसानों की तरफ पैग़म्बर बना कर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफी है। (77-79)

हिजरत से पहले मक्का में इस्लाम के विरोधी मुसलमानों को बहुत सताते थे। मारना-पीटना, उनके आर्थिक साधन-स्रोतों को तबाह करना, उन्हें मस्जिदे हराम में इबादत से रोकना, उन्हें तब्लीग़ की इजाज़त न देना, उन्हें घर बार छोड़ने पर मजबूर करना, सब कुछ उन्होंने मुसलमानों के लिए जाइज़ कर लिया था। जो शख़्स इस्लाम क़ुबूल करता उस पर वे हर किस्म का दबाव डालते ताकि वह इस्लाम को छोड़कर अपने आबाई मज़हब की तरफ लौट जाए। इस्लाम विरोधियों की इस जारिहियत (आक्रमकता) ने मुसलमानों के लिए उसूलन जाइज़ कर दिया था कि वे उनके ख़िलाफ तलवार उठाएं। अतः वे मुहम्मद (सल्ल०) से बार-बार जंग की इजाज़त मांगते। मगर आप हमेशा यह कहते कि मुझे जंग का हुक्म नहीं दिया गया है। तुम सब्र करो और नमाज़ और ज़कात की अदायगी करते रहो। इसकी वजह यह थी कि वक्त से पहले कोई इक़दाम करना इस्लाम का तरीक़ा नहीं। मक्का में मुसलमानों की इतनी ताक़त नहीं थी कि वे अपने दुश्मनों के ख़िलाफ फ़ैसलाकुन इक़दाम कर सकते। उस वक्त मक्का वालों के मुकाबले में तलवार उठाना अपनी मुसीबतों को और बढ़ाने के समान था। इसका मतलब यह था कि वह ताक़तवर दुश्मन जो अभी तक सिर्फ इंफ़िरादी ज़ुल्म कर रहा है उसे अपनी तरफ से मुकम्मल जंगी कार्रवाई करने का जवाज़ (औचित्य) फराहम कर दिया जाए। अमली इक़दाम हमेशा उस वक्त किया जाता है जबकि उसके लिए ज़रूरी तैयारी कर ली गई हो। इससे पहले अहले ईमान से सिर्फ इंफ़िरादी अहकाम का तक़ाज़ा किया जाता है जो हर हाल में आदमी के लिए ज़रूरी हैं। यानी अल्लाह से तअल्लुक़ जोड़ना, बंदों के हुक़ूक़ अदा करना और दीन की राह में जो मुश्किलें पेश आएं उन्हें बर्दाश्त करना।

क़ुरआन में क़ुर्बानी के अहकाम आए तो मस्लेहतपरस्त लोगों को अपनी ज़िंदगी का नक़्शा बिखरता हुआ नज़र आया। वे अपनी कमज़ोरी को छुपाने के लिए तरह-तरह की बातें करने लगे। उहुद की जंग में शिकस्त हुई तो इसे वह रसूल की बेतदबीरी का नतीजा बता कर रसूल की रहनुमाई के बारे में लोगों को बदज़न करने लगे। फायदे वाली बातों को अल्लाह का फ़ज़्ल बता कर वे अपनी इस्लामियत का प्रदर्शन करते और अमली इस्लाम से बचने के लिए रसूल को ग़लत साबित करते। ख़ुदा को मान कर आदमी के लिए मुमकिन रहता है कि वह अपने नफ़्स पर चलता रहे। मगर ख़ुदा के दाओ (आह्वानकर्ता) को मानने के बाद उसका साथ देना भी ज़रूरी हो जाता है जो आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيْظًا ۝ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ
الَّذِيْ تَقُوْلُ ۭ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۭ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا
فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۭ وَلَوْ
رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ۭ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जो उल्टा फिरा तो हमने उन पर तुम्हें निगरां बना कर नहीं भेजा है ओर ये लोग कहते हैं कि हमें क़ुबूल है। फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गिरोह उसके ख़िलाफ मश्विरा करता है जो वह कह चुका था। और अल्लाह उनकी सरगोशियों (कुकृत्यों) को लिख रहा है। पस तुम उनसे एराज़ (उपेक्षा) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। क्या ये लोग क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो वे इसके अंदर बड़ा इख़्तेलाफ (अन्तर्विरोध) पाते। और जब उन्हें कोई बात अम्न या ख़ौफ की पहुंचती है तो वह उसे फैला देते हैं। और अगर वे उसे रसूल तक या अपने जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाते तो उनमें से जो लोग तहक़ीक़ करने वाले हैं वे उसकी हक़ीक़त जान लेते। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग जाते। (80-83)

ख़ुदा के दाओ को मानना 'अपने जैसे इंसान' को मानना है। यही वजह है कि आदमी ख़ुदा को मान लेता है, मगर वह ख़ुदा के दाओ (आह्वानकर्ता) को मानने पर राज़ी नहीं होता। मगर आदमी का अस्ल इम्तेहान यही है कि वह ख़ुदा के दाओ को पहचाने और उसकी जानिब अपने को खड़ा करे। दाओ के मामले को जब आदमी ख़ुदा का मामला न समझे तो वह इसके बारे में संजीदा भी नहीं होता। सामने वह रस्मी तौर पर हां कर देता है मगर जब अलग होता है तो अपनी पहले की रविश पर चलने लगता है। वह इसके ख़िलाफ ऐसी बातें फैलाता है जिनका फैलाना सरासर ग़ैर-जिम्मेदाराना फेअल हो। जो लोग ख़ुदा के दाओ के साथ इस किस्म की बेपरवाई का सुलूक करें वे ख़ुदा के यहां यह कह कर नहीं छूट सकते कि हम नहीं जानते थे। आदमी अगर ठहर कर सोचे तो दाओ की सदाक़त को जानने के लिए वह कलाम ही काफी है जो ख़ुदा ने उसकी ज़बान पर जारी किया है।

क़ुरआन के कलामे इलाही होने का एक वाज़ेह सुबूत यह है कि इसका कोई बयान किसी

भी मुसल्लमा सदाक़्त के ख़िलाफ नहीं। इसमें कोई ऐसी चीज नहीं जो इंसानी फित्तरत के ख़िलाफ हो। इसमें कोई ऐसा बयान नहीं जो पहले की आसमानी किताबों के जरिए जानी हुई किसी हकीकत से टकराता हो। इसमें कोई ऐसा इशारा नहीं जो प्रयोगात्मक ज्ञानों से प्राप्त किसी घटना के विपरीत हो। यथार्थ से यह पूरी तरह अनुकूलता इस बात का यकीनी सुबूत है कि यह अल्लाह की तरफ से आया हुआ कलाम है। ताहम किसी भी सच्चाई का सच्चाई नजर आना इस पर निर्भर है कि आदमी गंभीरता के साथ उसे समझने की कोशिश करे। कुरआन का इख़्तेलाफे कसीर (अन्तर्विरोधों) से मुक्त होना उस शख़्स को दिखाई देगा जो कुरआन पर 'तदब्बुर' (चिंतन-मनन) करे। जो शख़्स तदब्बुर करना न चाहे उसके लिए बेमअनी एतराजात निकालने का दरवाजा उस वक्त तक खुला हुआ है जब तक कियामत आकर मौजूदा इम्तेहानी हालत का ख़ात्मा न कर दे।

इस्लामी समाज वह है जिसके अफराद इतने ख़ुदशनास (आत्मविश्लेषक) हों कि वे दूसरों के मुकाबले में अपनी नाअहली (अयोग्यता) को जान लें। वे किसी मामले को अहलतर शख़्स के हवाले करके उसकी रहनुमाई पर राजी हो जाएं। यह ख़ुदशनासी ही एक मात्र चीज है जो सामूहिक जीवन में किसी को शैतान के पीछे चल पड़ने से बचाती है। आदमी अगर अपने आपको न जाने तो वह योग्यता न रखते हुए भी नाजुक मामलों में कूद पड़ता है और फिर ख़ुद भी हलाक होता है और दूसरों को भी हलाक कर देता है। इज्तिमाई (सामूहिक) मामलों में बोलने से ज्यादा चुप रहना जरूरी होता है। यह शैतान की मदद करना है कि आदमी जो बात सुने उसे दूसरों के सामने दोहराने लगे।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ
أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ۝ مَنْ يَشْفَعْ
شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ
كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ۝ وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ
مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝

पस लड़ो अल्लाह की राह में। तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की जिम्मेदारी नहीं और मुसलमानों को उभारो। उम्मीद है कि अल्लाह मुंकिरों का जोर तोड़ दे और अल्लाह बड़ा जोर वाला और बहुत सख़्त सजा देने वाला है। जो शख़्स किसी अच्छी बात के हक में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो इसके विरोध में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी दुआ दो उससे बेहतर या उलट कर वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह तुम सब को कियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबह नहीं। और अल्लाह की बात

से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है। (84-87)

दीनदारी की एक सूरत यह है कि आदमी अमली तौर पर जहां है वहीं रहे, वह अपनी हकीकी जिंदगी में कोई तब्दीली न करे। अलबत्ता कुछ ऊपरी मजाहिर का एहतेमाम करके समझे कि मैं दीनदार बन गया हूं। ऐसे दीन से किसी को जिद नहीं होती। लोग उसके विरोध की जरूरत नहीं समझते। मगर जब दीन के ऐसे तकाजे पेश किए जाएं जो कुर्बानी का मुतालबा करते हों, जिसमें आदमी को अपनी बनी बनाई जिंदगी उजाड़ना पड़े तो इसके सामने आने के बाद लोगों में दो पक्ष हो जाते हैं। एक तबका दावत (इस्लामी आह्वान) के विरोधियों का। ये वे लोग हैं जो सस्ते मजाहिर (दिखावटी कर्मकांडों) के जरिए अपनी दीनदारी का सिक्का कायम किए हुए होते हैं। वे कुर्बानी वाले दीन के मुख़ालिफ बन जाते हैं। क्योंकि ऐसे दीन को अपनाना उन्हें बरतरी के मकाम से उतरने के समान नजर आता है। दूसरा तबका वह होता है जिसकी फित्तरत जिंदा होती है। वह चीजों को मफाद और मस्लेहत से ऊपर उठ कर देखता है। एक बात का हक साबित हो जाना ही उसके लिए काफी हो जाता है कि वह उसे कुबूल कर ले। यह सूरतेहाल कभी इतनी संगीन हो जाती है कि हक की ताईद और हिमायत में जबान खोलना जिहाद के समान बन जाता है। इसके विपरीत हक के बारे में ख़ामोशी या विरोध का रवैया अपनाना आदमी को इनाम का हकदार बना देता है। ताहम जहां तक सच्चे अहले ईमान का तअल्लुक है उन्हें हर हाल में यह हुक्म है कि आम समाजी तअल्लुकात को इस मतभेद से प्रभावित न होने दें। और उनके साथ ग़ैर-अख़्लाकी रवैया न अपनाएं। मुसलमान का रवैया दूसरों की प्रतिक्रिया में नहीं बनना चाहिए बल्कि इस किस्म की चीजों को नजरअंदाज करके बनना चाहिए। यह मामला अल्लाह से संबंधित है कि वह किसे क्या बदला दे और किसी के लिए क्या फैसला करे।

नाजुक हालत में हक की दावत को जिंदा रखने की जमानत सिर्फ यह होती है कि कम से कम दाओ (आह्वानकर्ता) अपनी जात की सतह पर यह अज्म रखे कि वह हर हाल में अपने मौकिफ पर कायम रहेगा चाहे कोई ताईद करने वाला हो या न हो। ऐसे हालात में दाओ का अज्म उसे अल्लाह की ख़ास मदद का हकदार बना देता है। इसकी एक मिसाल बद्रे सुगरा की लड़ाई है जो उहुद के सिर्फ एक माह बाद पेश आई। उस वक्त मदीना में ऐसी कैफियत छाई हुई थी कि सिर्फ सत्तर आदमी अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) के साथ निकले। मगर इस छोटे से काफिले को अल्लाह की यह ख़ुसूसी मदद मिली कि मक्का वालों पर ऐसा रौब तारी हुआ कि वे मुकाबले में न आ सके। ख़ुदा की सुन्नत है कि वह मुंकिरों का जोर तोड़े। मगर ख़ुदा की यह सुन्नत उस वक्त जाहिर होती है जबकि दीन के अलमबरदार अपनी बेसरोसामानी के बावजूद ख़ुदा के दुश्मनों का जोर तोड़ने के लिए निकल पड़े हों।

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا
مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝ وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ

كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٨٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ﴿٩٠﴾ سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ فَإِنْ لَمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ﴿٩١﴾

फिर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम मुनाफिकों (पाखंडियों) के मामले में दो गिरोह हो रहे हो। हालांकि अल्लाह ने उनके आमाल के सबब से उन्हें उल्टा फेर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह पर लाओ जिन्हें अल्लाह ने गुमराह कर दिया है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तुम हरगिज उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इंकार किया है तुम भी इंकार करो ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें। फिर अगर वे इसे कुबूल न करें तो उन्हें पकड़ो और जहां कहीं उन्हें पाओ उनको कत्ल करो और उनमें से किसी को साथी और मददगार न बनाओ। मगर वे लोग जिनका तअल्लुक किसी ऐसी कौम से हो जिनके साथ तुम्हारा समझौता है। या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आएं कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी कौम की लड़ाई से। और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर जोर दे देता तो वे जरूर तुमसे लड़ते। पस अगर वे तुम्हें छोड़े रहें और तुमसे जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया रखें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके ख़िलाफ किसी इक्दाम की इजाजत नहीं देता। दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अम्न में रहें और अपनी कौम से भी अम्न में रहें। जब कभी वे फित्ने का मौका पाएं वे उसमें कूद पड़ते हैं। ऐसे लोग अगर तुमसे यकसू न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया न रखें और अपने हाथ न रोकें तो तुम उन्हें पकड़ो और उन्हें कत्ल करो जहां कहीं पाओ। ये लोग हैं जिनके ख़िलाफ हमने तुम्हें खुली हुज्जत दी है। (88-91)

आदमी जब अल्लाह के दीन को अपनाता है तो इसके बाद उसकी जिंदगी में बार-बार ऐसे मरहले आते हैं जहां यह जांच होती है कि वह अपने फैसले में संजीदा है या नहीं। इसी सिलसिले का एक इम्तेहान 'हिजरत' है। यानी दीन की राह में जब दुनिया के फायदे और मस्लेहतें (हित) रुकावट बनें तो फायदों और मस्लेहतों को छोड़कर अल्लाह की तरफ बढ़ जाना। यहां तक कि अगर रिश्तेदार और घर-बार छोड़ने की जरूरत पेश आए तो उसे भी छोड़ देना। ऐसा नाज़ुक मौका पेश आने की सूरत में अगर ऐसा हो कि आदमी अपने फायदों और मस्लेहतों को नजरअंदाज करके हक की तरफ बढ़े तो उसने हक के साथ अपने क़ल्बी तअल्लुक को पुख़्ता किया। इसके विपरीत अगर ऐसा हो कि ऐसे मौके पर आदमी अपने फायदों और मस्लेहतों से लिपटा रहे तो उसने हक के साथ अपने क़ल्बी तअल्लुक को कमजोर किया। जो शख़्स पहली राह पर चले उसके अंदर हक की और भी कुबूलियत का माद्दा पैदा होता है, वह बराबर हक की तरफ बढ़ता रहता है। और जो शख़्स दूसरी राह पर चले उसके अंदर हक की कुबूलियत का माद्दा घटता रहता है यहां तक कि वह इतना बेहिस हो जाता है कि उसके अंदर हक को कुबूल करने की सलाहियत बाकी नहीं रहती।

जब दीन के सख़्त तकाजे सामने आते हैं तो लोगों में विभिन्न गिरोह बन जाते हैं। कोई मुख़्लिस लोगों का होता है कोई विरोधियों का। और कुछ ऐसे लोगों का जो बजाहिर हक से करीब मगर अंदर से उससे दूर होते हैं। ऐसी हालत में जरूरी है कि अहलेईमान हर एक से उसके हस्बेहाल मामला करें। वे फित्ना को मिटाने में सख़्त और अख़्लाकी जिम्मेदारियों को निभाने में नर्म हों। वे कमजोरों के साथ रिआयत का सुलूक करें। दूसरों से मुतअस्सिर होने के बजाए ख़ुद उन्हें मुतअस्सिर करने की कोशिश करें। किसी को अगर अल्लाह ख़ामोश करके बिठा दे तो उससे बिना जरूरत लड़ाई न छेड़ें।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को कत्ल करे मगर यह कि ग़लती से ऐसा हो जाए। और जो शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से कत्ल कर दे तो वह

एक मुसलमान ग़ुलाम को आजाद करे और मक्तूल (मृतक) के वारिसों को ख़ूंबहा (कत्ल का आर्थिक हर्जाना) दे, मगर यह कि वे माफ कर दें। फिर मक्तूल अगर ऐसी कौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह ख़ुद मुसलमान था तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आजाद करे। और अगर वह ऐसी कौम से था कि तुम्हारे और उसके दर्मियान समझौता है तो वह उसके वारिसों को ख़ूंबहा (कत्ल का आर्थिक हर्जाना) दे और एक मुसलमान को आजाद करे। फिर जिसे मयस्सर न हो तो वह लगातार दो महीने के रोजे रखे। यह तौबा है अल्लाह की तरफ से। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और जो शख़्स किसी मुसलमान को जान कर कत्ल करे तो इसकी सजा जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़जब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अजाब तैयार कर रखा है। (92-93)

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के जो हुकूक़ हैं उनमें सबसे बड़ा हक यह है कि वह उसकी जान का एहतराम करे। अगर एक मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को कत्ल कर दे तो उसने सबसे बड़ा समाजी जुर्म किया। एक शख़्स जब दूसरे शख़्स को कत्ल करता है तो वह उसके ऊपर आख़िरी मुमकिन वार करता है। और यह वह जुर्म है जिसके बाद मुजरिम के लिए अपने जुर्म की तलाफी की कोई सूरत बाकी नहीं रहती। यही वजह है कि जानबूझकर कत्ल करने की सजा सदा जहन्नम में रहना है। जो शख़्स किसी मुसलमान को जानबूझ कर मार डाले उससे अल्लाह इतना ग़जबनाक होता है कि उसे मलऊन करार देकर उसे हमेशा के लिए जहन्नम में डाल देता है। अलबत्ता कत्ले ख़ता का जुर्म हल्का है। कोई शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से मार डाले, इसके बाद उसे ग़लती का एहसास हो वह अल्लाह के सामने रोये गिड़गिड़ाए और निर्धारित क़ायदे के मुताबिक उसकी तलाफी करे तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे माफ कर देगा। ग़लती के बाद माल ख़र्च करना या मुसलसल रोजे रखना गोया ख़ुद अपने हाथों अपने आपको सजा देना है। जब आदमी के ऊपर शिद्दत से यह एहसास तारी होता है कि उससे ग़लती हो गई तो वह चाहता है कि अपने ऊपर इस्लाही अमल करे। अल्लाह ने बताया कि ऐसी हालत में आदमी को अपनी इस्लाह के लिए क्या करना चाहिए।

यहां अस्लन कत्ल का हुक्म बताया गया है । ताहम इसी नौइयत को दूसरे समाजी जुर्म भी हैं और मज्कूरा हुक्म से अंदाजा होता है कि उन दूसरी चीजों के बारे में शरीअत का तकाजा क्या है।

एक मुसलमान का फर्ज जिस तरह यह है कि वह अपने भाई को जिंदगी से महरूम करने की कोशिश न करे, इसी तरह एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर यह हक भी है कि वह उसे बेइज्जत न करे। उसका माल न छीने। उसे बेघर न करे। उसके रोजगार में ख़लल न डाले। उसके सुकून को ग़ारत करने का मंसूबा न बनाए। वे चीजें जो उसके लिए जिंदगी के

असासे की हैसियत रखती हैं, उनमें से किसी चीज को उससे छीनने की कोशिश न करे। एक आदमी अगर ग़लती से ऐसा कोई फेअल कर बैठे जिससे उसके मुसलमान भाई को इस किस्म का कोई नुक्सान पहुंच जाए तो उसे फौरन अपनी ग़लती का एहसास होना चाहिए और ग़लती के एहसास का सुबूत यह है कि वह अल्लाह से माफी मांगे और अपने भाई के नुक्सान की तलाफी करे। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि आदमी जानबूझ कर ऐसी कार्रवाई करे जिसका सोचा समझा मक्सद अपने भाई को नुक्सान पहुंचाना और उसे परेशान करना हो तो दर्जे के फर्क के साथ यह उसी नौइयत का जुर्म है जैसा जानबूझकर किया गया कत्ल।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَاتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम सफर करो अल्लाह की राह में तो ख़ूब तहकीक कर लिया करो और जो शख़्स तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। तुम दुनियावी जिंदगी का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सामान हैं। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर फज्ल किया तो तहकीक कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है। बराबर नहीं हो सकते बैठे रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज़्र (विवशता) नहीं और वे मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से। माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निस्बत बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज्रे अजीम में बरतरी दी है। उनके लिए अल्लाह की तरफ से बड़े दर्जे हैं और मग्फिरत (क्षमा) और रहमत है। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (94-96)

अरब के मुख़ालिफ कबीलों में कुछ ऐसे अफराद थे जो अंदर से मुसलमान थे मगर हिजरत करके अभी अपने कबीले से कटे नहीं थे। एक लड़ाई में ऐसा एक शख़्स मुसलमान की तलवार

की जद में आ गया। उसने 'अस्सलामु अलैकुम' कह कर जाहिर किया कि मैं तुम्हारा दीनी भाई हूं। कुछ पुरजोश मुसलमानों ने फिर भी उसको कत्ल कर दिया। उन्होंने समझा कि यह मुसलमान नहीं है और महज अपने को बचाने के ख़ातिर अस्सलामु अलैकुम कह रहा है। मगर अस्सलामु अलैकुम कहने की हद तक भी कोई शख़्स मुसलमान हो तो उस पर हाथ उठाना जाइज नहीं। यहां तक कि जंग के मौके पर भी नहीं जबकि यह अंदेशा हो कि दुश्मन इससे फ़ायदा उठाएगा। किसी मुसलमान का मारा जाना अल्लाह के नजदीक इतना बड़ा हादसा है कि सारी दुनिया का फ़ना हो जाना भी उसके मुक़ाबले में कम है।

जब भी कोई शख़्स इस किस्म का इस्लामी जोश दिखाता है कि वह दूसरे आदमी की इस्लामियत को नाक़ाबिले तस्लीम करार देकर उसे सजा देने पर इसरार करता है तो इसके पीछे हमेशा दुनियावी प्रेरक होते हैं। कभी कोई माद्दी लालच, कभी इंतिकाम (बदले) की आग, कभी अपने किसी हरीफ को मैदान से हटाने का शौक़, बस इस किस्म के जज़्बात हैं जो इसका सबब बनते हैं। अगर आदमी के सीने में अल्लाह से डरने वाला दिल हो तो वह इस्लाम का इज़्हार करने वाले के अल्फ़ाज को क़ुबूल कर लेगा और उसके मामले को अल्लाह के हवाले करके ख़ामोश हो जाएगा।

अमल के लिहाज से मुसलमानों के दो दर्जे हैं। एक वे लोग जो फ़राइज के दायरे में इस्लामी जिंदगी को इख़्तियार करें। वे अल्लाह की इबादत करें और हराम व हलाल के हुदूद का लिहाज करते हुए जिंदगी गुजारें। दूसरे लोग वे हैं जो क़ुर्बानी की सतह पर इस्लाम को इख़्तियार करें। वे ख़ुद इस्लाम को अपनाते हुए दूसरों को भी इस्लाम पर लाने की कोशिश करें और इस राह की मुसीबतों को बर्दाश्त करें। वे इस्लाम के महाज पर अपनी जान व माल को लेकर हाजिर हो जाएं। वे फ़राइज की हुदूद में न ठहरें बल्कि फ़राइज से आगे बढ़कर अपने आपको इस्लाम के लिए पेश कर दें। ये दोनों ही गिरोह मुख़्लिस हैं और दोनों अल्लाह की रहमतों में अपना हिस्सा पाएंगे। मगर दूसरे गिरोह का मामला बुनियादी तौर पर अलग है। उन्होंने नाप कर ख़ुदा की राह में नहीं दिया इसलिए ख़ुदा भी उनको नाप कर नहीं देगा। उन्होंने अपनी जाती मस्लेहतों को नज़रअंदाज़ करके ख़ुदा के मिशन में अपने आपको शरीक किया इसलिए ख़ुदा भी उनकी कमियों को नज़रअंदाज़ करके उन्हें अपनी रहमतों में ले लेगा।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٩٧﴾ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾ فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَن يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾ وَمَن يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَن يَخْرُجْ مِن بَيْتِهِ مُهَاجِرًا

إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٠﴾

जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं जब उनकी जान फरिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे। वे कहेंगे कि हम जमीन में बेबस थे। फरिश्ते कहेंगे क्या ख़ुदा की जमीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़कर वहां चले जाते। ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। मगर वे बेबस मर्द और औरतें और बच्चे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई राह पा रहे हैं, ये लोग उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ कर देगा और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो कोई अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा वह जमीन में बड़े ठिकाने और बड़ी वुस्अत पाएगा और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज्र अल्लाह के यहां मुकर्रर हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (97-100)

मोमिन की फ़ितरत चाहती है कि उसे आजादाना माहौल मिले जहां उसकी ईमानी हस्ती के इज़्हार के लिए खुले मौके हों। जब भी ऐसा न हो तो आदमी को चाहिए कि अपना माहौल बदल दे। इसी का नाम हिजरत है। हिजरत अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से यह है कि आदमी अपने को ग़ैर मुवाफ़िक़ (प्रतिकूल) फ़जा से निकाले और अपने को मुवाफ़िक़ (अनुकूल) फ़जा में ले जाए। एक इदारा (संस्था) है जिसमें कुछ शख़्सियतों का जोर है। वहां रहने वाला एक आदमी महसूस करता है कि मैं यहां शख़्सियतपरस्त बनकर तो रह सकता हूं मगर ख़ुदापरस्त बनकर नहीं रह सकता। अब अगर वह आदमी अपने मफ़ाद की ख़ातिर ऐसे माहौल से समझौता करके उसमें पड़ा रहे और जो चीज उसे हक नजर आए उसके हक होने का एलान न करे, यहां तक कि इसी हाल में मर जाए तो उसने अपनी जान पर जुल्म किया। इसी तरह कोई कौम है जिसका एक कौमी मजहब है। वह उसी शख़्स को एज़ाज अता करती है जो उसके कौमपरस्ताना मजहब को अपनाए। जो शख़्स ऐसा न करे वह उसे क़ुबूल करने से इंकार कर देती है। ऐसी हालत में अगर एक शख़्स उस कौम का साथी बनता है और इसी हाल में उसको मौत आ जाती है तो उसने अपनी जान पर जुल्म किया। इसी तरह एक माहौल में हक की दावत उठती है। उस वक्त जरूरत होती है कि बिखरे हुए अहले ईमान उसकी पुश्त पर जमा हों। वे अपनी सलाहियतों को उसकी ख़िदमत में लगाएं। वे अपने माल से उसकी मदद करें। मगर ईमान वाले अपने फायदों और मस्लेहतों के ख़ोल में पड़े रहते हैं। वे ऐसा नहीं करते कि अपने ख़ोल से बाहर आएं और हक के क़ाफ़िले में शरीक होकर उसकी क़ुव्वत का बाइस बनें। अगर वे इसी हाल में अपनी जिंदगी के दिन पूरे कर देते हैं तो वे ख़ुदा के यहां इस हाल में पहुंचेंगे कि उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था। ताहम वे लोग इससे अपवाद हैं जो इतने मजबूर हों कि उनसे कोई तदबीर न बन रही हो और न बाहर से उनके लिए कोई राह खुल रही हो।

आदमी अपने माहौल में नामुवाफ़िक (प्रतिकूल) हालात को देखकर समझ लेता है कि सारी दुनिया उसके लिए ऐसी ही नामुवाफ़िक होगी। मगर ख़ुदा की वसीअ दुनिया में तरह-तरह के लोग बसते हैं। यहां अगर 'मक्का' है जहां दाओ को पत्थर मारे जाते हैं तो यहां 'यसरिब' (मदीना) भी है जहां दाओ का इस्तकबाल किया जाता है। इसलिए आदमी को माहौल से मुसालिहत के बजाए माहौल की तब्दीली के उसूल को अपनाना चाहिए। ऐन मुमकिन है कि नये मकाम को अपना मैदाने अमल बनाना, उसके लिए नये इम्कानात का दरवाजा खोलने का सबब बन जाए।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ ۖ إِنْ
خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا ﴿١٠١﴾ وَإِذَا
كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا
فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ
عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَ
خُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٠٢﴾ فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ
الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾ وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِنْ تَكُونُوا
تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾

और जब तुम जमीन में सफर करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज में कमी करो, अगर तुम्हें डर हो कि मुंकिर तुम्हें सताएंगे। बेशक मुंकिर लोग तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं। और जब तुम मुसलमानों के दर्मियान हो और उनके लिए नमाज कायम करो तो चाहिए कि उनकी एक जमाअत तुम्हारे साथ खड़ी हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो। पस जब वे सज्दा कर चुकें तो वे तुम्हारे पास से हट जाएं और दूसरी जमाअत आए जिसने अभी नमाज नहीं पढ़ी है और वे तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें। और वे भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहें। मुंकिर लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से किसी तरह ग़ाफ़िल हो जाओ तो

वे तुम पर एकबारगी टूट पड़ें। और तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो और अपने बचाव का सामान लिए रहो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों के लिए रुसवा करने वाला अजाब तैयार कर रखा है। पस जब तुम नमाज अदा कर लो तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और लेटे। फिर जब इत्मीनान हो जाए तो नमाज की इकामत करो। बेशक नमाज अहले ईमान पर मुकर्रर वक्तों के साथ फर्ज है। और कौम का पीछा करने से हिम्मत न हारो। अगर तुम दुख उठाते हो तो वे भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो उम्मीद वे नहीं रखते। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (101-104)

दीन में जितने आमाल बताए गए हैं, चाहे वे नमाज और ज़कात की क़िस्म से हों या तब्लीग़ और जिहाद की किस्म से, सबका आख़िरी मक़्सूद अल्लाह की याद है। तमाम आमाल का अस्ल उद्देश्य यह है कि ऐसा इंसान तैयार हो जो इस तरह जिए कि ख़ुदा उसकी यादों में बसा हुआ हो। जिंदगी का हर मोड़ उसको ख़ुदा की याद दिलाने वाला बन जाए। अंदेशे का मौका उसे अल्लाह से डराए, उम्मीद का मौक़ा उसके अंदर अल्लाह का शौक पैदा करे। उसका भरोसा अल्लाह पर हो। उसकी तवज्जोहात अल्लाह की तरफ लगी हुई हों। जो चीज मिले उसे वह अल्लाह की तरफ से आई हुई जाने और जो चीज न मिले उसे वह अल्लाह के हुक्म का नतीजा समझे। उसकी पूरी अंदरूनी हस्ती अल्लाह के जलाल व जमाल में खोई हुई हो। यह मामला इतना अहम है कि जंग के नाजुकतरीन मौके पर भी किसी न किसी शक्ल में नमाज अदा करने का हुक्म हुआ ताकि मौत के किनारे खड़े होकर इंसान को याद दिलाया जाए कि वह अस्ल चीज क्या है जो बंदे को इस दुनिया से लेकर अपने रब के पास जाना चाहिए।

अहले ईमान का भरोसा अगरचे तमामतर अल्लाह पर होता है। मगर इसी के साथ हुक्म है कि दुश्मनों से अपने बचाव का जाहिरी सामान मुहय्या रखो। इसकी वजह यह है कि अल्लाह की मदद जाहिरी सामान के अंदर से होकर ही आती है। अहले ईमान ने अगर अपने बचाव का मुमकिन इंतिजाम न किया हो तो गोया उन्होंने वह शक्ल ही खड़ी नहीं की जिसके ढांचे में अल्लाह की मदद उतर कर उनकी तरफ आए। मोमिन को दुनिया में जो मुसीबतें पेश आती हैं वे अल्लाह के उस मंसूबे की कीमत हैं कि वह आजमाइशी हालात पैदा करके देखे कि कौन सच्चाई पर क़ायम रहने वाला है और कौन दूसरों को नाहक सताने वाला है।

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम की कशमकश में कभी अहले इस्लाम को शिकस्त और नुक्सान पहुंच जाता है। उस वक्त कुछ लोग पस्तहिम्मत होने लगते हैं। मगर ऐसे हादसात में भी अल्लाह की मस्लेहत शामिल रहती है। वे इसलिए पेश आते हैं कि बंदे के अंदर मजीद इनाबत और तवज्जोह उभरे और इसके नतीजे में वह अल्लाह की मजीद इनायतों का मुस्तहिक बने।

إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٦﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ﴿١٠٧﴾ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾

बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है ताकि तुम लोगों के दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। और बददयानत लोगों की तरफ से झगड़ने वाले न बनो। और अल्लाह से बख़्शिश मांगो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और तुम उन लोगों की तरफ से न झगड़ो जो अपने आप से ख़ियानत कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख़्स को पसंद नहीं करता जो ख़ियानत वाला और गुनाहगार हो। वे आदमियों से शर्माते हैं और अल्लाह से नहीं शर्माते। हालांकि वह उनके साथ होता है जबकि वे सरगोशियां (गुप्त वार्ता) करते हैं उस बात की जिससे अल्लाह राजी नहीं। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (105-108)

इंसान की यह जरूरत है कि वह मिल जुलकर रहे। यही जरूरत कौम या गिरोह को वजूद में लाती है। इज्तिमाइयत से वाबस्ता होकर एक आदमी अपनी ताक़त को हजारों लाखों गुना बड़ा कर लेता है। मगर धीरे-धीरे ऐसा होता है कि जो चीज इज्तिमाइयत के तौर पर बनी थी वह इज्तिमाई मजहब का दर्जा हासिल कर लेती है। वह बजातेख़ुद लोगों का मक्सूद बन जाती है। अब यह जेहन बन जाता है कि 'मेरा गिरोह चाहे वह सही हो या ग़लत। मेरी कौम चाहे वह हक पर हो या बातिल पर' इसका नतीजा यह होता है कि लोगों को अपना हलका अहम दिखाई देता है और दूसरा हलका ग़ैर अहम। अपने हलके का आदमी अगर बातिल (असत्य) पर है तब भी उसकी हिमायत जरूरी समझी जाती है और दूसरे हलके का आदमी अगर हक पर है तब भी उसका साथ नहीं दिया जाता।

किसी गिरोह में यह जेहन बन जाए तो इसका मतलब यह है कि उसने अपनी गिरोही मस्लेहतों (हितों) और जमाअती तअस्सुबात (विद्वेषों) को मेयार का दर्जा दे दिया। हालांकि सही बात यह है कि आदमी अल्लाह की हिदायत को मेयार का दर्जा दे और उसकी रोशनी में अपना रवैया तै करे न कि दुनियावी मस्लेहतों और जमाअती तअस्सुबात के तहत। एक आदमी गलती करे तो उसका हाथ पकड़ा जाए चाहे वह अपना हो। एक आदमी सही बात कहे तो उसका साथ दिया जाए चाहे वह कोई ग़ैर हो। यहां तक कि ऐसा मामला जिसमें एक फरीक अपना हो और एक फरीक बाहर का, तब भी मामले को अपने और ग़ैर की नजर से न देखा जाए बल्कि हक और नाहक की नजर से देखा जाए और हर दूसरी चीज की परवाह किए बग़ैर

अपने को हक की जानिब खड़ा किया जाए।

सच्चाई को छोड़ना, ख़ुद अपने आपको छोड़ने के हममअना है। जब आदमी दूसरे के साथ ख़ियानत करता है तो सबसे पहले वह अपने साथ ख़ियानत कर चुका होता है। क्योंकि हर सीने के अंदर अल्लाह ने अपना एक नुमाइंदा बिठा दिया है। यह इंसान का जमीर है। जब भी आदमी हक के ख़िलाफ जाने का इरादा करता है तो यह अंदर का छुपा हुआ हक का नुमाइंदा उसे टोकता है। इस अंदरूनी आवाज को आदमी दबाता है और उसे नजरअंदाज करता है। इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह इंसाफ के रास्ते को छोड़े और बेइंसाफी के रास्ते पर चल पड़े। मजीद यह कि जब आदमी नाहक में किसी का साथ देता है तो वह इंसान का लिहाज करने की वजह से होता है। दुनियावी तअल्लुकात और मस्लेहतों की वजह से वह एक शख़्स को नजरअंदाज नहीं कर पाता इसलिए वह उसे ग़लत जानते हुए उसका साथी बन जाता है। मगर नाहक (असत्य) के बावजूद एक शख़्स को न छोड़ना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी ख़ुदा को छोड़ दे। ऐन उस वक्त जब कि वह दुनिया में एक शख़्स का साथ देता है, आख़िरत में वह ख़ुदा के साथ से महरूम हो जाता है।

هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾ وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١١٠﴾ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾ وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿١١٢﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَيْءٍ ۚ وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾

तुम लोगों ने दुनिया की जिंदगी में तो उनकी तरफ से झगड़ा कर लिया। मगर कियामत के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका काम बनाने वाला। और जो शख़्स बुराई करे या अपने आप पर जुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला रहम करने वाला पाएगा। और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही हक में करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्व ज्ञान) वाला है। और जो शख़्स कोई गलती या गुनाह करे फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया। और अगर तुम पर अल्लाह का फज्ल और

उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो यह ठान ही लिया था कि तुम्हें बहका कर रहेगा। हालांकि वे अपने आप को बहका रहे हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिक्मत (तत्व ज्ञान) उतारी है और तुम्हें वह चीज सिखाई है जिसे तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फ़ज़्ल है तुम पर बहुत बड़ा। (109-113)

दुनिया आजमाइश की जगह है। यहां हर आदमी से ग़लती हो सकती है। ख़ुदा के मामले में भी और बंदों के मामले में भी। जब किसी से कोई ग़लती हो जाए तो सही तरीका यह है कि आदमी अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा हो। वह अल्लाह की तरफ और ज्यादा तवज्जोह के साथ दौड़े। वह अल्लाह से दरख़्वास्त करे कि वह उसकी ग़लती को माफ कर दे और आइंदा के लिए उसे नेकी की तौफीक दे। जो शख़्स इस तरह अल्लाह की पनाह चाहे तो अल्लाह भी उसे अपनी पनाह में ले लेता है। अल्लाह उसके दीनी एहसास को बेदार करके उसे इस काबिल बना देता है कि वह पहले से ज्यादा मोहतात होकर दुनिया में रहने लगे।

दूसरी सूरत यह है कि आदमी जब ग़लती करे तो वह ग़लती को मानने के लिए तैयार न हो। बल्कि अपनी ग़लती को सही साबित करने की कोशिश में लग जाए। वह अपने साथियों की हिमायत से ख़ुद उन लोगों से लड़ने लगे जो उसकी ग़लती से उसे आगाह कर रहे हैं। जो लोग अपनी ग़लती पर इस तरह अकड़ते हैं और जो लोग उनका साथ देते हैं वे ख़ुदा के नजदीक बदतरीन मुजरिम हैं। वे अपनी ग़लती पर पर्दा डालने के लिए जिन अल्फाज का सहारा लेते हैं वे आख़िरत में बिल्कुल बेमअना साबित होंगे और जिन हिमायतियों के भरोसे पर वे घमंड कर रहे हैं वे बिलआख़िर जान लेंगे कि वे कुछ भी उनके काम आने वाले न थे।

एक शख़्स किसी का माल चुराए और जब पकड़े जाने का अंदेशा हो तो उसे दूसरे के घर में रख कर कहे कि फलाँ ने उसे चुराया था। एक शख़्स किसी औरत को अपनी हवस का निशाना बनाना चाहे और जब वह पाक दामन औरत उसका साथ न दे तो वह झूठे अफसाने गढ़कर उस औरत को बदनाम करे। दो आदमी मिल कर एक काम शुरू करें। इसके बाद एक शख़्स को महसूस हो कि उसकी जाती मस्लेहतें मजरूह हो रही हैं, वह तदबीर करके उस काम को बंद करा दे और उसके बाद मशहूर करे कि इसके बंद होने की जिम्मेदारी दूसरे पक्ष के ऊपर है। ये सब अपना जुर्म दूसरे के सर डालने की कोशिशें हैं। मगर ऐसी कोशिशें सिर्फ आदमी के जुर्म को बढ़ाती हैं, वे उसे जुर्म से मुक्त साबित नहीं करतीं। अल्लाह का सबसे बड़ा फ़ज़्ल यह है कि वह हिदायत के दरवाजे खोले। वह आदमी को समझाए कि ग़लती करने के बाद अपनी ग़लती को मान लो न कि बहस करके अपने को सही साबित करो। किसी से मामला पड़े तो साथियों के बल पर घमंड न करो बल्कि अल्लाह से डर कर तवाज़ोअ (विनम्रता) का अंदाज इख़्तियार करो। किसी के ख़िलाफ कार्रवाई करने का मौक़ा मिल जाए तो अपने को कामयाब समझ कर ख़ुश न हो बल्कि अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हें जालिम बनने से बचाए।

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾ وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾

उनकी अक्सर सरगोशियों (कानाफूसियों) में कोई भलाई नहीं। भलाई वाली सरगोशी सिर्फ उसकी है जो सदका करने को कहे या किसी नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे। जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशी के लिए ऐसा करे तो हम उसे बड़ा अज्र अता करेंगे। मगर जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफत करेगा और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हालांकि उस पर राह वाजेह हो चुकी, तो उसे हम उसी तरफ चलाएंगे जिधर वह ख़ुद फिर गया और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है। (114-115)

हक की बेआमेज (विशुद्ध) दावत जब उठती है तो वह जमीन पर ख़ुदा का तराज़ू खड़ा करना होता है। उसकी मीजान में हर आदमी अपने को तुलता हुआ महसूस करता है। हक की दावत हर एक के ऊपर से उसका जाहिरी पर्दा उतार देती है और हर शख़्स को उसके उस मकाम पर खड़ा कर देती है जहां वह हकीकत के एतबार से था। यह सूरतेहाल इतनी सख़्त होती है कि लोग चीख़ उठते हैं। सारा माहौल दाओ के लिए ऐसा बन जाता है जैसा वह अंगारों के दर्मियान खड़ा हुआ हो।

जो लोग दावते हक की तराज़ू में अपने आप को बेवजन होता हुआ महसूस करते हैं उनके अंदर जिद और घमंड के जज्बात जाग उठते हैं। वे तेजी से मुख़ालिफाना रुख़ पर चल पड़ते हैं। वे चाहने लगते हैं कि ऐसी दावत (आह्वान) को मिटा दें जो उनकी हकपरस्ताना हैसियत को संदिग्ध साबित करती हो। उनके लिए अपनी जबान का इस्तेमाल यह हो जाता है कि वह दावत और दाओ के ख़िलाफ झूठी बातें फैलाएं। उन्हें परास्त करने के मंसूबे बनाएं। वह लोगों को मना करें कि उसकी माली मदद न करो। जो अल्लाह के बंदे अल्लाह की रस्सी के गिर्द मुत्तहिद हो रहे हों उन्हें बदगुमानियों में मुब्तला करके मुंतशिर करें।

इसके बरअक्स जो लोग अपनी फितरत को जिंदा रखे हुए थे उन्हें अल्लाह की मदद से यह तौफीक मिलती है कि वे उसके आगे झुक जाएं, वे उसका साथ दें, वे अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक ढालना शुरू कर दें। ऐसे लोगों के लिए उनकी जबान का इस्तेमाल यह होता है कि वे खुले तौर पर सच्चाई का एतराफ कर लें। वे लोगों से कहें कि यह अल्लाह का काम है इसमें अपना माल और अपना वक्त ख़र्च करो। वे लोगों को प्रेरित करें कि वे अपनी कुव्वतों को नेकी और भलाई के कामों में लगाएं। वे आपस में रंजिशों और शिकायतों को दूर करने की कोशिश करें। हक का एतराफ उनके अंदर जो नफ्सियात जगाता है उसका कुदरती नतीजा है कि वे इस किस्म के कामों में लग जाएं।

अल्लाह के नज़दीक यह एक नाक़ाबिल माफ़ी जुर्म है कि हक़ की दावत की मुख़ालिफ़त की जाए और जो लोग हक की दावत के गिर्द जमा हुए हैं उन्हें अपनी दुश्मनी की आग में जलाने की कोशिश की जाए। दूसरे अक्सर गुनाहों में यह इम्कान रहता है कि वे इंसान की ग़फ़लत या कमजोरी की वजह से हुए हों। मगर दावते हक की मुख़ालिफ़त तमामतर सरकशी की वजह से होती है। और सरकशी किसी आदमी का वह जुर्म है जिसे अल्लाह कभी माफ नहीं करता, इल्ला यह कि वह अपनी ग़लती का इकरार करे और सरकशी से बाज आ जाए। दीन की दावत जब भी अपनी बेआमेज शक्ल में उठती है तो वह एक ख़ुदाई काम होता है जो ख़ुदा की ख़ुसूसी मदद पर शुरू होता है। ऐसे काम की मुख़ालिफ़त करना गोया ख़ुदा के मुकाबले में खड़ा होना है और कौन है जो ख़ुदा के मुकाबले में खड़ा होकर कामयाब हो।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾ وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾

बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसका शरीक ठहराया जाए और इसके सिवा गुनाहों को बख़्श देगा जिसके लिए चाहेगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया वह बहक कर बहुत दूर जा पड़ा। वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं देवियों को और वे पुकारते हैं सरकश शैतान को। उस पर अल्लाह ने लानत की है। और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बंदों से एक मुकर्रर हिस्सा लेकर रहूंगा। मैं उन्हें बहकाऊंगा और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें समझाऊंगा तो वे चौपायों के कान काटेंगे और उन्हें समझाऊंगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे और जो शख़्स अल्लाह के सिवा शैतान को अपना दोस्त बनाए तो वह खुले हुए नुक्सान में पड़ गया। वह उन्हें वादा देता है और उन्हें उम्मीदें दिलाता है और शैतान के तमाम वादे फरेब के सिवा और कुछ नहीं। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे।

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे हमेशा उसमें रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा। (116-122)

जो शख़्स एक अल्लाह को पकड़ ले उसके अमल की जड़ें ख़ुदा में कायम हो जाती हैं। उससे वक्ती लग़्जिश (कोताही) भी होती है। मगर इसके बाद जब वह पलटता है तो दुबारा वह हकीकी सिरे को पा लेता है। और जो शख़्स अल्लाह के सिवा कहीं और अटका हुआ हो वह गोया उस जमीन से महरूम है जो इस कायनात में वाहिद (एक मात्र) हकीकी जमीन है। बजाहिर अगर वह कोई अच्छा अमल करे तब भी वह ख़ुदा के स्रोत से निकला हुआ अमल नहीं होता। बल्कि वह एक ऊपरी अमल होता है जो मामूली झटका लगते ही बातिल (असत्य) साबित हो जाता है। यही वजह है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ किया हुआ अमल आख़िरत में अपना नतीजा दिखाता है और शिर्क (बहुदेववाद) के साथ किया हुआ अमल इसी दुनिया में बर्बाद होकर रह जाता है, वह आख़िरत तक नहीं पहुंचता।

इस दुनिया में आदमी का असली मुकाबला शैतान से है। ताहम शैतान के पास कोई ताकत नहीं। वह इतना ही कर सकता है कि आदमी को लफ़्जी वादों का फरेब दे और फ़र्जी तमन्नाओं में उलझाए। और इस तरह लोगों को हक से दूर कर दे। शैतान की गुमराही की दो ख़ास सूरतें हैं। एक तवह्हुमपरस्ती (अंधविश्वास) और दूसरे ख़ुदा की तख़्लीक (रचनाओं) में फ़र्क करना। तवह्हुमपरस्ती यह है कि किसी चीज से ऐसे नतीजे की उम्मीद कर ली जाए जिस नतीजे का कोई तअल्लुक उससे न हो। मसलन स्वनिर्मित मान्यताओं की बुनियाद पर अल्लाह के सिवा किसी चीज को मामलात में प्रभावकारी मान लेना, हालांकि इस दुनिया में अल्लाह के सिवा किसी के पास कोई ताकत नहीं। या जिंदगी को अमलन दुनिया को हासिल करने में लगा देना और आख़िरत के बारे में फर्जी ख़ुशख़्यालियों की बुनियाद पर यह उम्मीद कायम कर लेना कि वह अपने आप हासिल हो जाएगी। शैतान के बहकावे का दूसरा तरीका अल्लाह के बताए हुए नक्शे को बदलना है। ख़ुदा ने इंसान को इस फ़ितरत पर पैदा किया है कि वह अपनी तमाम तवज्जोह अल्लाह की तरफ लगाए, इस फितरत को बदलना यह है कि इंसान की तवज्जोहात को दूसरी-दूसरी चीजों की तरफ मायल कर दिया जाए। या किसी मक्सद को हासिल करने का जो तरीका फ़ितरी तौर पर मुकर्रर किया गया है उसे बदल कर किसी ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तरीके से उसे हासिल करने की कोशिश की जाए। कायनात के ख़ुदाई नक्शे की मुताबिक्त में इंसान को जिस तरह रहना चाहिए उस नक्शे को तलपट कर दिया जाए।

لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطًا ۝

न तुम्हारी आरज़ुओं (कामनाओं) पर है और न अहले किताब की आरज़ुओं पर। जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पाएगा। और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती और न मददगार। और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। और उससे बेहतर किस का दीन है जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम के दीन पर जो एक तरफ़ का था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था। और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (123-126)

ख़ुदा और आख़िरत को मानने वाले लोग जब दुनियापरस्ती में ग़र्क होते हैं तो वे ख़ुदा और आख़िरत का इंकार करके ऐसा नहीं करते। वे सिर्फ़ यह करते हैं कि आख़िरत के मामले को रस्मी अकीदे के ख़ाने में डाल देते हैं और अमलन अपनी तमाम मेहनतें और सरगर्मियां दुनिया को हासिल करने में लगा देते हैं। दुनिया की इज़्ज़त और दुनिया के फ़ायदे को समेटने के मामले में वे पूरी तरह संजीदा होते हैं। इन्हें पाने के लिए उनके नज़दीक मुकम्मल जद्दोजहद ज़रूरी होती है। मगर आख़िरत की कामयाबी को पाने के लिए सिर्फ़ ख़ुशफ़हमियां उन्हें काफ़ी नज़र आने लगती हैं। किसी बुज़ुर्ग की सिफ़ारिश, किसी बड़े गिरोह से वाबस्तगी, कुछ पाक कलिमात का विर्द (जाप), बस इस किस्म के सस्ते आमाल से यह उम्मीद कायम कर ली जाती है कि वह आदमी को जहन्नम की भड़कती हुई आग से बचाएंगे और उसे जन्नत के पुरबहार बाग़ों में दाख़िल करेंगे। मगर इस किस्म की ख़ुशख़्यालियां चाहे उन्हें कितने ही ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में बयान किया गया हो, वे किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। अल्लाह का निज़ाम हद दर्जा मोहकम निज़ाम है। उसके यहां तमाम फ़ैसले हक़ीक़तों की बुनियाद पर होते हैं न कि महज़ आरज़ुओं की बुनियाद पर। अल्लाह की अदालत में हर आदमी का अपना अमल देखा जाएगा और जैसा जिसका अमल होगा ठीक उसी के मुताबिक उसका फ़ैसला होगा। अल्लाह के इंसाफ़ के कानून के सिवा कोई भी दूसरी चीज़ नहीं जो अल्लाह के यहां फ़ैसले की बुनियाद बनने वाली हो।

अल्लाह का वह बंदा कौन है जिस पर अल्लाह अपनी रहमतों की बारिश करेगा। इसकी एक तारीख़ी मिसाल इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। ये वे बंदे हैं जो दुनिया में अल्लाह के मोमिन बनकर रहें। जो अपने आप को हमहतन अपने रब की तरफ़ यकसू कर लें। जो अपनी वफ़ादारियां पूरी तरह अल्लाह के लिए ख़ास कर दें। उन्होंने दुनिया में अपने मामलात को इस

तरह कायम किया हो कि वे ज़ुल्म और सरकशी से दूर रहने वाले और इंसाफ़ और तवाज़ोअ (विनम्रता) के साथ ज़िंदगी बसर करने वाले हों। चेहरा आदमी के पूरे वजूद का नुमाइंदा होता है। चेहरा ख़ुदा की तरफ़ फेरने का मतलब यह है कि आदमी अपने पूरे वजूद को ख़ुदा की तरफ़ फेर दे।

अल्लाह तमाम कायनात का मालिक है। उसके पास हर किस्म की ताक़तें हैं। मगर मौजूदा दुनिया में अल्लाह ने अपने को ग़ैब (अदृश्य) के पर्दे में छुपा दिया है। दुनिया में जितनी भी ख़राबियां पैदा होती हैं इसीलिए पैदा होती हैं कि आदमी ख़ुदा को नहीं देखता, वह समझ लेता है कि मैं आज़ाद हूं कि जो चाहूं करूं। अगर आदमी यह जान ले कि इंसान के इख़्तियार में कुछ नहीं तो आदमी पर जो कुछ कियामत के दिन बीतने वाला है वह उस पर आज ही बीत जाए।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِى النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ فِىْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِىْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْۤا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ۝

और लोग तुमसे औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और वे आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उन्हें निकाह में ले आओ। और जो आयतें कमज़ोर बच्चों के बारे में हैं और यतीमों के साथ इंसाफ़ करो और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को ख़ूब मालूम है। और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से बदसुलूकी या बेरुख़ी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में कोई सुलह कर लें और सुलह बेहतर है। और हिर्स (लोभ) इंसान की तबीअत में बसी हुई है। और अगर तुम अच्छा सुलूक करो और ख़ुदातरसी (ईश परायणता) से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है। और तुम हरगिज़ औरतों को बराबर नहीं रख सकते अगरचे तुम ऐसा करना

चाहो। पस बिल्कुल एक ही तरफ न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह (सुधार) कर लो और डरो तो अल्लाह बख़्शने वाल महरबान है। और अगर दोनों जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी वुस्अत (सामर्थ्य) से बेएहतियाज (निराश्रित) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अत वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (127-130)

पूछने वालों ने कुछ समाजी मामलों के बारे में शरीअत का आदेश पूछा था। इस सिलसिले में हुक्म बताते हुए ख़ैर (कल्याण) व इंसाफ और परोपकार व तकवा पर जोर दिया गया। इसकी वजह यह है कि कोई भी कानून उसी वक़्त अपने मक्सद को पूरा करता है जब कि उसे अमल में लाने वाला आदमी अल्लाह से डरता हो और फिलवाकेअ इंसाफ का तालिब हो। अगर ऐसा न हो तो क़ानून की जाहिरी तामील के बावजूद हक़ीक़ी बेहतरी पैदा नहीं हो सकती। समाज की वाकई इस्लाह सिर्फ उस वक्त होती है जब कि बुराई करने वाला बुराई से इसलिए डरे कि अस्ल मामला ख़ुदा से है और बुराई करने के बाद मैं किसी तरह उसकी पकड़ से बच नहीं सकता। इसी तरह भलाई करने वाला यह सोचे कि लोगों की तरफ से चाहे मुझे इसका सिला (प्रतिफल) न मिले मगर अल्लाह सब कुछ देख रहा है और वह जरूर मुझे इसका इनाम देगा। जहन्नम का अंदेशा आदमी को जुल्म से रोकता है और जन्नत की उम्मीद उस नुक्सान को बर्दाश्त करने का हौसला पैदा कर देती है जो हकपरस्ताना जिंदगी के नतीजे में लाजिमन सामने आता है।

मियां-बीवी या दो आदमियों के इख़्तेलाफ की वजह हमेशा हिर्स होती है। एक फरीक (पक्ष) दूसरे फरीक का लिहाज किए बग़ैर सिर्फ अपने मुतालबात को पूरा करना चाहता है। यह जेहनियत हर एक को दूसरे की तरफ से ग़ैर मुतमइन बना देती है। सही मिजाज यह है कि दोनों फरीक एक दूसरे की माजूरी को समझें और एक-दूसरे की रिआयत करते हुए किसी आपसी समाधान पर पहुंचने की कोशिश करें। अल्लाह का मुतालबा जिस तरह यह है कि एक इंसान दूसरे इंसान की रिआयत करे, इसी तरह अल्लाह भी अपने बंदों के साथ आख़िरी हद तक रिआयत फरमाता है। अल्लाह के यहां आदमी की पकड़ उसकी फित्री कमजोरियों पर नहीं है बल्कि उसकी उस सरकशी पर है जो वह जान बूझकर करता है। अगर आदमी अल्लाह से डरे और दिल में इस्लाह (सुधार) का जज्बा रखे तो वह नीयत की दुरुस्तगी के साथ जो कुछ करेगा उसके लिए वह अल्लाह के यहां काबिले माफी करार पाएगा। इसी के साथ आदमी को कभी इस ग़लतफहमी में न पड़ना चाहिए कि वह दूसरे का काम बनाने वाला है। हर एक का काम बनाने वाला सिर्फ अल्लाह है, चाहे वह बजाहिर एक तरह के हालात में हो या दूसरी तरह के हालात में।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۗ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾ ع

और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और हमने हुक्म दिया है उन लोगों को जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुम्हें भी कि अल्लाह से डरो। और अगर तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है सब ख़ूबियों वाला है। और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और भरोसे के लिए अल्लाह काफी है। अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए ऐ लोगो, और दूसरों को ले आए। और अल्लाह इस पर कादिर है। जो शख़्स दुनिया का सवाब चाहता हो तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आख़िरत का सवाब भी। और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है। (131-134)

दुनिया में आदमी को जो नेक जिंदगी इख़्तियार करना है वह उसे उसी वक्त इख़्तियार कर सकता है जब कि वह अंदर से अल्लाह वाला बन गया हो। अल्लाह को मालिके कायनात की हैसियत से पा लेना, सिर्फ अल्लाह से डरना और सिर्फ अल्लाह पर भरोसा करना, आख़िरत को अस्ल समझकर उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाना, यही वे चीजें हैं जो किसी आदमी को इस काबिल बनाती हैं कि वह दुनिया में वह सालेह (नेक) जिंदगी गुजारे जो अल्लाह को मत्लूब है और जो उसे आख़िरत की दुनिया में कामयाब करने वाली है। इसीलिए नबियों की तालीमात में हमेशा इसी पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता रहा है।

मौजूदा दुनिया आजमाइश के लिए है। यहां हर आदमी को जांच कर देखा जा रहा है कि कौन अच्छा है और कौन बुरा। इस मक्सद के लिए मौजूदा दुनिया को इस ढंग पर बनाया गया है कि यहां आदमी को हर किस्म के अमल की आजादी हो। यहां तक कि उसे यह मौका भी हासिल हो कि वह अपने स्याह को सफेद कह सके और अपनी बेअमली को अमल का नाम दे। यहां एक आदमी के लिए मुमकिन है कि वह बुराइयों में मुब्तला हो मगर उसे बयान करने के लिए वह बेहतरीन अल्फाज पा ले। यहां यह मुमकिन है कि आदमी एक खुली हुई सच्चाई का इंकार कर दे और अपने इंकार की एक ख़ूबसूरत तौजीह तलाश कर ले। यहां यह मुमकिन है कि आदमी ओहदों की चाहत, शोहरतपसंदी, नफ़ाअंदोजी और मस्लेहत पर अपनी जिंदगी की तामीर करे और इसके बावजूद वह लोगों को यह यकीन दिलाने में कामयाब हो जाए कि वह ख़ालिस हक के लिए काम कर रहा है।

यहां यह मुमकिन है कि एक शख़्स ख़ुदा के दीन को अपने दुनियावी और माद्दी मकासिद के हुसूल का जरिया बनाए और फिर भी वह दुनिया में फलता और फूलता रहे। यहां यह मुमकिन है कि आदमी हलाल को छोड़कर हराम जरियों को इख़्तियार करे, इंसाफ के बजाए वह ज़ुल्म के रास्ते पर चले और इसके बावजूद उसका हाथ पकड़ने वाला कोई न हो। इन मुख़्तलिफ मौकों पर आदमी चाहे तो अपने को हक व सदाकत का पाबंद बना ले और चाहे तो सरकशी और बेइंसाफी की तरफ चल पड़े। हकीकत यह है कि दीन के तमाम अहकाम में अहमियत की चीज यह है कि आदमी अल्लाह से डरता है या नहीं। यह सिर्फ अल्लाह का डर है जो उसे जिम्मेदाराना जिंदगी गुजारने के काबिल बनाता है। अगर अल्लाह का डर न हो तो एक ऐसी दुनिया में किसी को बातिल (असत्य) से रोकने वाली क्या चीज हो सकती है जहां बातिल को भी हक के पैराऐ में बयान किया जा सकता हो और जहां बेइंसाफी की बुनियाद पर भी बड़ी-बड़ी तरक्कियां हासिल की जा सकती हों। जहां हर जालिम को अपने जुल्म को छुपाने के लिए ख़ूबसूरत अल्फाज मिल जाते हों।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاۗءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝

ऐ ईमान वालो, इंसाफ पर ख़ूब कायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे मां-बाप या अजीजों के ख़िलाफ हो। अगर कोई मालदार है या मोहताज तो अल्लाह तुमसे ज्यादा दोनों का ख़ैरख़्वाह है। पस तुम ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि हक से हट जाओ। और अगर तुम कजी (हेर-फेर) करोगे या पहलूतही (अवहेलना) करोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (135)

इज्तिमाई जिंदगी में बार-बार ऐसा होता है कि आदमी के सामने ऐसा मामला आता है जिसमें एक रास्ता अपने मफाद और ख़्वाहिश का होता है और दूसरा हक और इंसाफ का। जो लोग अल्लाह की तरफ से ग़ाफिल होते हैं, जिन्हें यकीन नहीं होता कि अल्लाह हर वक्त उन्हें देख रहा है वे ऐसे मौकों पर अपनी ख़्वाहिश के रुख़ पर चल पड़ते हैं। वे इसे कामयाबी समझते हैं कि हक की परवाह न करें और मामले को अपने मफाद और अपनी मस्लेहत के मुताबिक तै करें। मगर जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जो अल्लाह को अपना निगरां बनाए हुए हैं वे तमामतर इंसाफ के पहलू को देखते हैं और वही करते हैं जो हक व इंसाफ का तकाजा हो। उनकी कोशिश हमेशा यह होती है कि उन्हें मौत आए तो इस हाल में आए कि उन्होंने किसी के साथ बेइंसाफी न की हो, वे अपने आपको मुकम्मल तौर पर न्याय पर कायम किए

हुए हों।

उनकी इंसाफपसंदी का यह जज्बा इतना बढ़ा हुआ होता है कि उनके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वे इंसाफ से हटा हुआ कोई रवैया देखें और उसे बर्दाश्त कर लें। जब भी ऐसा कोई मामला सामने आता है कि एक शख़्स दूसरे के साथ नाइंसाफी कर रहा हो तो वे ऐसे मौके पर हक का एलान करने से बाज नहीं रहते। अगर इंसाफ का एलान करने में उनके करीबी तअल्लुक वालों पर जद पड़ती हो या उनकी अपनी मस्लेहतें प्रभावित होती हों तब भी वे वही कहते हैं जो इंसाफ की रू से उन्हें कहना चाहिए। उनकी जबान खुलती है तो अल्लाह के लिए खुलती है न कि किसी और चीज के लिए। इसी तरह यह बात भी ग़लत है कि साहिबे मामला ताकतवर हो तो उसे उसका हक दिया जाए और अगर साहिबे मामला कमजोर हो तो उसका हक उसे न दिया जाए। मोमिन वह है जो हर आदमी के साथ इंसाफ करे चाहे वह जोरआवर हो या कमजोर।

जब कोई आदमी नाइंसाफी का साथ दे तो वह यह कहकर ऐसा नहीं करता कि मैं नाइंसाफी करने वाले का साथी हूं। बल्कि वह अपनी नाइंसाफी को इंसाफ का रंग देने की कोशिश करता है। ऐसे मौके पर हर आदमी दो में से कोई एक रवैया इख़्तियार करता है। या तो वह यह करता है कि बात को बदल देता है। वह मामले की नौइयत को ऐसे अल्फाज में बयान करता है जिससे जाहिर हो कि यह नाइंसाफी का मामला नहीं बल्कि ऐन इंसाफ का मामला है, जिसके साथ ज्यादती की जा रही है वह इसी का मुस्तहिक है कि उसके साथ ऐसा किया जाए। दूसरी सूरत यह है कि आदमी ख़ामोशी इख़्तियार कर ले। यह जानते हुए कि यहां नाइंसाफी की जा रही है वह कतरा कर निकल जाए और जो कहने की बात है उसे जबान पर न लाए। इस किस्म का तर्जे अमल साबित करता है कि आदमी अपने ऊपर अल्लाह को निगरां नहीं समझता।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ۝ۭ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَۨا ۝ۙ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۝ۭ

ऐ ईमान वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले नाजिल की। और जो शख़्स इंकार करे अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का तो वह बहक कर दूर जा पड़ा। बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर इंकार में बढ़ते गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज नहीं बख़्शेगा और न उन्हें राह दिखाएगा। मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। वे लोग जो मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज्जत की तलाश कर रहे हैं, तो इज्जत सारी अल्लाह के लिए है। (136-139)

'ईमान वालो ईमान लाओ' ऐसा ही है जैसे कहा जाए कि मुसलमानो मुसलमान बनो। अपने को मुसलमान कहना या मुसलमान समझना इस बात के लिए काफी नहीं कि आदमी अल्लाह के यहां भी मुसलमान करार पाए। अल्लाह के यहां सिर्फ वह शख़्स मुसलमान करार पाएगा जो अल्लाह को इस तरह पाए कि वही उसके यकीन व एतमाद का मर्कज बन जाए। जो रसूल को इस तरह माने कि हर दूसरी रहनुमाई उसके लिए बेहकीकत हो जाए। जो आसमानी किताब को इस तरह अपनाए कि उसकी सोच और जज्बात बिल्कुल उसके ताबेअ हो जाएं। जो फरिश्तों के अकीदे को इस तरह अपने दिल में बिठाए कि उसे महसूस होने लगे कि उसके दाएं-बाएं हर वक्त ख़ुदा के चौकीदार खड़े हुए हैं। जो आख़िरत का इस तरह इकरार करे कि वह अपने हर कौल व फेअल (कथनी-करनी) को आख़िरत की मीजान पर जांचने लगे। जो शख़्स इस तरह मोमिन बने वही अल्लाह के नजदीक उस रास्ते पर है जो हिदायत और कामयाबी का रास्ता है। और जो शख़्स इस तरह मोमिन न बने वह एक भटका हुआ इंसान है, चाहे वह अपने नजदीक ख़ुद को कितना ही मोमिन और मुस्लिम समझता हो।

मानने और न मानने का यह मअरका आदमी की जिंदगी में हर वक्त जारी रहता है। जब भी कोई मामला पड़ता है तो आदमी का जेहन दो में से किसी एक रुख़ पर चल पड़ता है। या ख़्वाहिशात की तरफ या हक के तकाजे पूरे करने की तरफ। अगर ऐसा हो कि मामले के वक्त आदमी की सोच और जज्बात ख़्वाहिश की दिशा में चल पड़ें तो गोया ईमान लाने वाले ने ईमान से इंकार किया। इसके बरअक्स अगर वह अपनी सोच और जज्बात को हक का पाबंद बना ले तो गोया ईमान लाने वाला ईमान ले आया। आदमी मुसलमान बन कर दुनिया की जिंदगी में दाख़िल होता है। इसके बाद एक हक बात उसके सामने आती है। अब एक शख़्स वह है जो ऐसे मौके पर तवाजोअ का रवैया इख़्तियार करे और हक का एतराफ कर ले। दूसरा शख़्स वह है जिसके अंदर घमंड की नफ्सियात जाग उठें और वह उसे ठुकरा दे। पहली सूरत ईमान की सूरत है और दूसरी सूरत ईमान का इंकार करने की। जो शख़्स सच्चा मोमिन न हो वह दुनिया की इज्जत व शोहरत को पसंद करता है इसलिए वह उन लोगों की तरफ झुक पड़ता है जिनसे जुड़कर उसकी इज्जत व शोहरत में इजाफा हो, चाहे वे अहले बातिल हों। उसे उन

लोगों से दिलचस्पी नहीं होती जिनसे जुड़ना उसकी इज्जत व शोहरत में इजाफा न करे, चाहे वे अहले हक हों।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۙ الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ۧ

और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इंकार किया जा रहा है और उनका मजाक किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहां तक कि वे दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं। वर्ना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए। अल्लाह मुनाफ़िक़ों को और मुंकिरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है। वे मुनाफ़िक़ तुम्हारे लिए इंतिजार में रहते हैं। अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ से कोई फतह हासिल होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। और अगर मुंकिरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे ख़िलाफ लड़ने पर कादिर (समर्थ) न थे और फिर भी हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया। तो अल्लाह ही तुम लोगों के दर्मियान कियामत के दिन फैसला करेगा और अल्लाह हरगिज मुंकिरों को मोमिनों पर कोई राह नहीं देगा। (140-141)

अल्लाह की पुकार जब भी किसी इंसानी गिरोह में उठती है तो इतनी मजबूत बुनियादों पर उठती है कि दलील के जरिए उसकी काट करना किसी के लिए मुमकिन नहीं रहता। इसलिए जो लोग उसे मानना नहीं चाहते वे उसका मजाक उड़ाकर उसे बेवजन करने की कोशिश करते हैं। जो लोग ऐसा करें वह अपने इस रवैये से यह बता रहे हैं कि वे हक के मामले को कोई संजीदा मामला नहीं समझते और जब आदमी किसी मामले में संजीदा न हो तो उस वक्त उससे बहस करना बिल्कुल बेकार होता है। ऐसे मौके पर सही तरीका यह है कि आदमी चुप हो जाए और उस वक्त का इंतजार करे जब कि गुफ्तुगू का विषय बदल जाए और मुख़ातब इस काबिल हो जाए कि वह बात को सुन सके। जिस मज्लिस में ख़ुदा की दावत का मजाक उड़ाया जाए वहां बैठना यह साबित करता है कि आदमी हक के मामले में ग़ैरतमंद नहीं।

मुनाफ़िक़ इसकी परवाह नहीं करता कि उसूलपसंदी का तक़ाज़ा क्या है बल्कि जिस चीज में फायदा नजर आए उस तरफ झुक जाता है। वह अपने आपको उस हलके के साथ जोड़ता है जिसका साथ देने में उसके दुनियावी हौसले पूरे होते हों, चाहे वह अहले ईमान का हलका हो या ग़ैर अहले ईमान का। वह जिस मज्लिस में जाता है उसे ख़ुश करने वाली बातें करता है। मस्लेहतों की बिना पर कभी उसे सच्चे अहले ईमान के साथ जुड़ना पड़े तब भी वह दिल से उनका ख़ैरख़्वाह नहीं होता। क्योंकि सच्चे अहले ईमान का वजूद किसी मुआशिरे में हक का पैमाना बन जाता है। इसलिए जो लोग झूठी दीनदारी पर खड़े हुए हों वे चाहते हैं कि ऐसे पैमाने टूट जाएं जो उनकी दीनदारी को संदिग्ध साबित करने वाले हैं। मगर अहले ईमान के बदख़्वाह जो कुछ जोर दिखा सकते हैं इसी दुनिया में दिखा सकते हैं। आख़िरत में वे इनके ख़िलाफ कुछ भी न कर सकेंगे।

मुनाफ़िक़ वह है जो बजाहिर दीनदार मगर अंदर से बेदीन हो। ऐसे शख़्स का अंजाम मुंकिर के साथ होना बताता है कि अल्लाह के नजदीक जाहिरी दीनदारी और खुली हुई बेदीनी में कोई फर्क़ नहीं। क्योंकि जाहिर की सतह पर चाहे दोनों मुख़्तलिफ नजर आएं मगर बातिन (भीतर) की सतह पर दोनों एक होते हैं। और अल्लाह के यहां एतबार बातिन का है न कि जाहिर का।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا
كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾ مُذَبْذَبِينَ بَيْنَ
ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ
سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ
أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ﴿١٤٤﴾ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ
الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا
بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۚ
وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) अल्लाह के साथ धोखेबाजी कर रहे हैं। हालांकि अल्लाह ही ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और जब वे नमाज के लिए खड़े होते हैं तो काहिली के साथ खड़े होते हैं महज लोगों को दिखाने के लिए। और वे अल्लाह को कम ही याद करते

हैं। वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर। और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। ऐ ईमान वालो, मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को अपना दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत क़ायम कर लो। बेशक मुनाफ़िक़ीन दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबक़े में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें और अल्लाह को मजबूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें तो ये लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अजाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्रगुजारी करो और ईमान लाओ। अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला है सब कुछ जानने वाला है। (142-147)

जो लोग अपने को अल्लाह के हवाले किए हुए न हों वे अपने को अपने दुनियावी मफाद (हित) के हवाले किए हुए होते हैं। दुनियावी मफाद जिससे वाबस्ता हो वे उसी के साथ हो जाते हैं चाहे वह दीनदार हो या बेदीन। ऐसे लोग जबान से इस्लाम के अल्फ़ाज बोलते हैं और कुछ इस्लामी आमाल भी जाहिरी हद तक अदा करते रहते हैं। मगर उनका अमल अल्लाह के लिए नहीं होता। बल्कि लोगों की नजर में मुसलमान बने रहने के लिए होता है। उनका असली दीन मौक़ापरस्ती होता है मगर लोगों के सामने वे अपने को ख़ुदापरस्त जाहिर करने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग गोया ख़ुदा को धोखा दे रहे हैं। वे ख़ुदा वाले न होकर अपने को ख़ुदा वाला साबित करना चाहते हैं। वे इस्लाम को सच्चा दीन जानते हैं, इसके बावजूद अपने मफादात (हितों) को छोड़ना नहीं चाहते। इसकी वजह से वे दोनों के दर्मियान लटके रहते हैं, न पूरी तरह अपने अक़ीदे के लिए यकसू होते और न पूरी तरह अपने मफादात के। ऐसे लोग अल्लाह की मदद से महरूम रहते हैं। क्योंकि अल्लाह की मदद का मुस्तहिक़ (पात्र) बनने के लिए अल्लाह के रास्ते पर जमना जरूरी है। और यही चीज उनके यहां मौजूद नहीं होती। हक़ को मानने वाले और हक़ का इंकार करने वाले जब अलग-अलग हो चुके हों तो ऐसी हालत में हक़ का इंकार करने वालों का साथ देना अपने ख़िलाफ ख़ुदा की खुली हुज्जत क़ायम करना है। यह किसी के क़ाबिले सजा होने का ऐसा सुबूत है जिसके बाद किसी और सुबूत की जरूरत नहीं।

इस क़िस्म के लोग अपने दिखावे के आमाल की बिना पर ख़ुदा की पकड़ से बच नहीं सकते। इस्लाम की जाहिरी नुमाइश के बावजूद हक़ीक़त के एतबार से वे इस्लाम से दूर थे इसलिए उनका अंजाम भी उनकी हक़ीक़त के एतबार से होगा न कि उनके जाहिर के एतबार से। ताहम किसी की गुमराही की वजह से ख़ुदा उसका दुश्मन नहीं हो जाता। इस क़िस्म के लोग अगर अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा हों, वे अपनी जिंदगी को बदलें, अपनी तवज्जोहात को हर तरफ से मोड़कर अल्लाह की तरफ लगाएं और यकसू होकर दीन के रास्ते पर चलने लगें तो यक़ीनन अल्लाह उन्हें माफ कर देगा।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْۗءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰۗىِٕكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

अल्लाह बदगोई (कुवार्ता) को पसंद नहीं करता मगर यह कि किसी पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। अगर तुम भलाई को जाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दरगुजर करो तो अल्लाह माफ करने वाला कुदरत रखने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इंकार कर रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफरीक (विभेद) करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और वे चाहते हैं कि इसके बीच में एक राह निकालें। ऐसे लोग पक्के मुंकिर हैं और हमने मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी को जुदा न किया उन्हें अल्लाह उनका अज्र देगा और अल्लाह ग़फूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) है। (148-152)

किसी शख़्स के अंदर कोई दीनी या दुनियावी ऐब मालूम हो तो उसे प्रसारित करना अल्लाह को सख़्स नापसंद है। नसीहत का हक हर एक को है। मगर नसीहत या तो किसी का नाम लिए बग़ैर सामान्य रूप में की जानी चाहिए, या संबंधित शख़्स से मिलकर तंहाई में। अल्लाह सुबह व शाम लोगों के जुर्मों को नजरअंदाज करता रहता है। बंदों को भी अपने अंदर यही अख़्लाक पैदा करना है अलबत्ता अगर एक शख़्स मज्लूम हो तो उसके लिए रुख़्सत है कि वह जालिम के जुल्म को लोगों से बयान करे। ताहम अगर मज्लूम सब्र कर ले और जुल्म करने वाले को माफ कर दे तो यह उसके हक में ज्यादा बेहतर है। क्योंकि इस तरह वह साबित करता है कि उसे दुनिया के नुक्सान से ज्यादा आख़िरत के नुक्सान की फिक्र है। जो शख़्स किसी बड़े गम में मुब्तिला हो उसके लिए छोटे ग़म बेहकीकत हो जाते हैं। यही हाल उस शख़्स का होता है जिसके दिल में आने वाले हौलनाक दिन का ग़म समाया हुआ हो।

मक्का के लोग इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत को मानते थे। इसी तरह यहूदी

हजरत मूसा की नुबुव्वत को तस्लीम करते थे और मसीही हजरत ईसा की नुबुव्वत को। मगर इन सबने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत को मानने से इंकार कर दिया। उनमें से हर एक माजी (अतीत) के पैग़म्बर को मानने के लिए तैयार था मगर उनमें से कोई वक्त के पैग़म्बर को मानने के लिए तैयार न हुआ। हालांकि जिन नबियों को वे मान रहे थे वे भी अपने जमाने में उसी किस्म के मुख़ालिफाना रद्देअमल से दो-चार हुए थे जिससे पैग़म्बर अरबी सल्ल० को दो-चार होना पड़ा। इस किस्म की हर कोशिश हकपरस्ती और नफ्सपरस्ती के दर्मियान रास्ता निकालने के लिए होती है ताकि ख़्वाहिशात का ढांचा भी टूटने न पाए और आदमी ख़ुदा की जन्नत तक पहुंच जाए।

अस्ल यह है कि माजी (अतीत) की नुबुव्वत एक मानी हुई नुबुव्वत होती है जबकि वक्त के पैग़म्बर को मानने के लिए आदमी को नया जेहनी सफर तै करना पड़ता है। माजी (अतीत) की नुबुव्वत जमाना गुजरने के बाद एक तस्लीमशुदा नुबुव्वत बन जाती है। वह पैदाइशी तौर पर आदमी के जेहन का जुज बन चुकी होती है। मगर जमाने का पैग़म्बर एक विवादित शख़्सियत होता है, वह देखने वालों को महज 'एक इंसान' दिखाई देता है। इसलिए उसे मानने के लिए जरूरी होता है कि आदमी एक नया जेहनी सफर करे। वह ख़ुदा को दुबारा शुऊर की सतह पर पाए। माजी के पैग़म्बर को मानना तकलीदी (अनुकरणीय) ईमान के तहत होता है और वक्त के पैग़म्बर को मानना इरादी ईमान के तहत। मगर अल्लाह के यहां कीमत इरादी ईमान की है न कि तकलीदी ईमान की।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝

अहले किताब तुमसे यह मुतालबा (मांग) करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक किताब उतार लाओ। पस मूसा से वे इससे भी बड़ी चीज का मुतालबा कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखा दो। पस उनकी इस ज्यादती के सबब उन पर बिजली आ पड़ी। फिर खुली निशानी आ चुकने के बाद उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। फिर हमने उससे दरगुजर किया। और मूसा को हमने खुली हुज्जत अता की। और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया उनसे अहद (वचन) लेने के वास्ते। और हमने उनसे कहा कि दरवाजे में दाख़िल हो सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि सब्त (सनीचर) के मामले में ज्यादती न करना। और हमने उनसे मजबूत अहद लिया। (153-154)

ख़ुदा का पैग़म्बर इंसानों में से एक इंसान होता है। वह आम आदमी की सूरत में लोगों के सामने आता है। इसलिए लोगों की समझ में नहीं आता कि वे एक आम आदमी को किस तरह ख़ुदा का नुमाइंदा मान लें। वे कैसे यकीन कर लें कि सामने का आदमी एक ऐसा शख़्स है जो ख़ुदा की तरफ से बोलने के लिए मुकर्रर हुआ है। चुनांचे वे कहते हैं कि जो कलाम तुम पेश कर रहे हो उसे आसमान से आता हुआ दिखाओ या ख़ुदा ख़ुद तुम्हारी तस्दीक (पुष्टि) के लिए आसमान से उतर पड़े तब हम तुम्हारी बात मानेंगे। मगर इस किस्म का मुतालबा हद दर्जे ग़ैर संजीदा मुतालबा है। क्योंकि इंसान का इम्तेहान तो यह है कि वह देखे बग़ैर माने, वह हकीकतों को उनके अर्थपूर्ण रूप में पा ले। ऐसी हालत में दिखा कर मनवाने का क्या फायदा। साथ ही यह कि अगर कुछ देर के लिए आलम के निजाम को बदल दिया जाए और आदमी को उसके मुतालबे के मुताबिक चीजों को दिखा दिया जाए तब भी वह बेफ़ायदा होगा। क्योंकि यह दिखाना बहरहाल वक़्ती होगा न कि मुस्तकिल। और इंसान की आजादी जो उसे सरकशी की तरफ ले जाती है इसके बाद भी बाकी रहेगी। नतीजा यह होगा कि देखने के वक्त तक वह सहम कर मान लेगा और इसके बाद दुबारा अपनी आजादी का ग़लत इस्तेमाल शुरू कर देगा जैसा कि देखने से पहले कर रहा था। यहूद की मिसाल इसकी ऐतिहासिक पुष्टि करती है।

तूर पहाड़ के दामन में ग़ैर मामूली हालात पैदा करके यहूद से यह अहद लिया गया था कि वे अपने इबादतख़ाने (ख़ुरूज 19 : 16-18) में तवाज़ोअ (विनम्रता, शालीनता) के साथ दाख़िल हों और ख़ुशूअ के साथ अल्लाह की इबादत करें। और यह कि जीविका के लिए जो जद्दोजहद करें वह अल्लाह के हुदूद में रह कर करें न कि उससे आजाद होकर। मगर यहूद ने इस किस्म के तमाम अहदों को तोड़ दिया।

'मूसा को हमने सुल्ताने मुबीन (खुली हुज्जत) दी' अल्लाह का यह मामला हर पैग़म्बर के साथ होता है। पैग़म्बर अगरचे एक आम इंसान की तरह होता है मगर उसके कलाम और उसके अहवाल में ऐसी खुली हुई दलीलें मौजूद होती हैं जो उसकी ख़ुदाई हैसियत को पूरी तरह साबित कर रही होती हैं। मगर जालिम इंसान हर ख़ुदाई निशानी की एक ऐसी तौजीह ढूंढ लेता है जिसके बाद वह उसे रद्द करके अपनी सरकशी की जिंदगी को बदस्तूर जारी रखे।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ
قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ
وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ
مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا
قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾

उन्हें जो सजा मिली वह इस पर कि उन्होंने अपने अहद (वचन) को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया और इस पर कि उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल किया और इस कहने पर कि हमारे दिल तो बंद हैं बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उनके दिलों पर मुहर कर दी है तो वे कम ही ईमान लाते हैं। और उनके इंकार पर और मरयम पर बड़ा तूफ़ान बांधने पर और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह बिन मरयम, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया हालांकि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न सूली दी बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वे इसके बारे में शक में पड़े हुए हैं। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ अटकल पर चल रहे हैं। और बेशक उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (155-158)

यहूद पर आसमानी हिदायत उतारी गई थी जिसमें यह बताया गया था कि वे दुनिया में अल्लाह की मर्जी पर चलें तो आख़िरत में अल्लाह उन्हें जन्नत देगा। उन्होंने पहले हिस्से को भुला दिया अलबत्ता दूसरे हिस्से को अपना पैदाइशी हक समझ लिया। यहूद हर किस्म के बिगाड़ में मुब्तिला (लिप्त) हुए। इसके बावुजूद अपने नजातयाफ़्ता होने के बारे में उनका यकीन इतना बढ़ा हुआ था कि उन्होंने समझ लिया कि अब उन्हें नये नबी को मानने की जरूरत नहीं। वे बतौर तंज (कटाक्ष) कहते 'हमारे दिल तो बंद हैं' उनका यह जुमला रसूल को मानने के बारे में अपनी अक्षमता का इज्हार न था बल्कि इस इत्मीनान का इज्हार था कि वे रसूल के साथ चाहे जो भी सुलूक करें उनकी नजात किसी हाल में संदिग्ध होने वाली नहीं।

जो लोग इस किस्म के झूठे यकीन में मुब्तिला (लिप्त) हों वे हर किस्म के जुर्म पर जरी हो जाते हैं। ख़ुदा पर ईमान उन्हें जिस अहदे ख़ुदावंदी में बांधता है उसे तोड़ना उनके लिए कुछ मुश्किल नहीं होता। अल्लाह की तरफ से जाहिर होने वाली खुली दलीलों के बावुजूद वे उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। हक की तरफ बुलाने वाले जो उनकी ग़ैर ख़ुदापरस्ताना रविश को बेनकाब करते हैं उनके ख़िलाफ आक्रामक कार्रवाई करने से वे नहीं झिझकते। यहां तक कि झूठे आरोप लगाकर दाओ (आहवानकर्ता) को बेइज्जत करने से भी उन्हें कोई चीज नहीं रोक़ती। यहूद ने हज़रत मसीह के ख़िलाफ क़त्ल का इक़दाम किया और इसके बाद फ़ख़्र से कहा कि 'मरयम का बेटा मसीह जो अपने को रसूल कहता था उसे हमने मार डाला।' मगर इस किस्म के लोग अल्लाह के दाअियों के ख़िलाफ जो भी साजिश करें वे कभी कामयाब नहीं हो सकते। अल्लाह की ताक़त और उसका हकीमाना निजाम हमेशा हक के दाअियों की पुश्त पर होता है। हर साजिश और हर मुख़ालिफ़त (विरोध) के बावुजूद वे उस वक्त तक अपना काम जारी रखने की तौफीक पाते हैं जब कि वे अपने हिस्से का काम मुकम्मल कर लें।

जो लोग हक के मुक़ाबले में सरकशी का रवैया इख़्तियार करें अल्लाह उनसे हक को कुबूल करने की सलाहियत छीन लेता है। वे अपनी मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियों को जारी रखते हैं यहां तक कि ख़ुदा के फरिश्ते उन्हें मुजरिम की हैसियत से पकड़ कर ख़ुदा की अदालत में हाजिर हर देते हैं।

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٥٩﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ﴿١٦٠﴾ وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا
وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦١﴾ لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ
يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ ۚ وَالْمُؤْتُونَ
الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٦٢﴾

और अहले किताब में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न ले आए और कियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा। पस यहूद के ज़ुल्म की वजह से हमने वे पाक चीजें उन पर हराम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं। और इस वजह से कि वे अल्लाह की राह से बहुत रोकते थे। और इस वजह से कि वे सूद लेते थे हालांकि इससे उन्हें मना किया गया था और इस वजह से कि वे लोगों का माल बातिल तरीके से खाते थे। और हमने उनमें से मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। मगर उनमें जो लोग इल्म में पुख़्ता और ईमान वाले हैं वे ईमान लाए हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतारी गई और जो तुमसे पहले उतारी गई और वे नमाज के पाबंद हैं और जकात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं। ऐसे लोगों को हम जरूर बड़ा अज्र (प्रतिफल) देंगे। (159-162)

इकरिमा कहते हैं कि कोई यहूदी या ईसाई नहीं मरेगा यहां तक कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए। यहूद व नसारा के पास आसमानी इल्म था ऐसे लोग यह समझने में ग़लती नहीं कर सकते थे कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दावत ख़ालिस ख़ुदाई दावत है। मगर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को मानना और उनके मिशन में अपना माल और अपनी जिंदगी लगाना उन्हें दुनियावी मस्लेहतों के ख़िलाफ नजर आता था। इस वजह से उन्होंने आपका साथ देने से इंकार कर दिया। मगर जब मौत आदमी के सामने आती है तो इस किस्म की तमाम मस्लेहतें बातिल होती हुई नजर आने लगती हैं। उस वक़्त आदमी के जेहन से तमाम मस्नूई (कृत्रिम) पर्दे हट जाते हैं और हक अपनी खुली सूरत में सामने आ जाता है। मौत के दरवाजे पर पहुंच कर आदमी उस चीज का इकरार कर लेता है जिसे वह मौत से पहले मानने के लिए तैयार न था। मगर उस वक्त के इकरार की अल्लाह की नजर में कोई कीमत नहीं।

जब कोई गिरोह ख़ुदाई दीन के बजाए ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को इख़्तियार करता है

तो वह अपनी दीनी हैसियत को जाहिर करने के लिए कुछ ख़ुदसाख़्ता निशानात भी कायम करता है। वह अपने मिजाज और अपने हालात के लिहाज से हराम व हलाल के नये कायदे बनाता है और उनका ख़ुसूसी एहतमाम करके साबित करना चाहता है कि वह दूसरों से ज्यादा दीन पर कायम है। ऐसे लोगों का दीन कुछ जाहिरी चीजों के एहतमाम पर आधारित होता है न कि अल्लाह वाला बनने पर। चुनांचे वह इससे नहीं डरते कि अल्लाह के मना किए हुए तरीकों से दुनियावी फायदे हासिल करें और अल्लाह के लिए होने वाले काम का रास्ता रोकें। ऐसे लोगों का अंजाम अल्लाह के यहां बेदीनों के साथ होगा न कि दीनदारों के साथ।

यहूदियों में कुछ लोग, अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए और आपका साथ दिया। जो लोग इंसानी इजाफ़ों से गुजर कर अस्ल आसमानी दीन से आशना होते हैं, जो विद्वेष, अंधानुकरण और मफ़ादपरस्ती की जेहनियत से आजाद होते हैं उन्हें सच्चाई को समझने और अपने आप को उसके हवाले करने में कोई चीज रुकावट नहीं बनती। वे हर किस्म के जेहनी ख़ोल से बाहर आकर सच्चाई को देख लेते हैं। यही वे लोग हैं जो अल्लाह की जन्नतों में दाख़िल किए जाएंगे।

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ۚ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ
وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ ۚ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ
عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾
رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ
بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और औलादे याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने दाऊद को जबूर दी। और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया। और मूसा से अल्लाह ने कलाम किया। अल्लाह ने रसूलों को ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में कोई हुज्जत बाकी न रहे और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (163-165)

अल्लाह ने इंसान को पैदा किया और फिर जन्नत और जहन्नम बनाई। इसके बाद इंसान को जमीन पर बसाया। यहां इंसान को आजादी है कि वह जो चाहे करे। मगर यह आजादी मुस्तकिल नहीं है बल्कि वक्ती है और इम्तेहान के लिए है। वह इसलिए है ताकि अच्छे और बुरे को छांटा जाए। ख़ुदा यह देख रहा है कि लोगों में कौन वह शख़्स है जो अपनी आजादी

के बावुजूद हकीकतपसंदी का रवैया इख़्तियार करता है और अपने को अल्लाह का बंदा बनाकर रखता है। और कौन वह है जो अपनी आजादी का ग़लत इस्तेमाल करके बताता है कि वह एक सरकश इंसान है। दुनिया में दोनों किस्म के लोग मिले हुए हैं। दोनों को यहां समान रूप से ख़ुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा हासिल है। मगर इम्तेहान की मुक़र्ररह मुद्दत पूरी होने के बाद दोनों गिरोह एक दूसरे से अलग कर दिए जाएंगे। पहले गिरोह को अबदी तौर पर जन्नत के बाग़ों में बसाया जाएगा और दूसरे गिरोह को अबदी तौर पर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

जिंदगी के बारे में अल्लाह का यह मंसूबा इंसान को बड़ी नजाकत में डाल रहा है। क्योंकि इसका मतलब यह है कि दुनिया की छोटी-सी जिंदगी का अंजाम दो इंतहाई सूरतों में सामने आने वाला है, या अबदी (अनंत) राहत या अबदी अजाब। इसलिए अल्लाह ने रहनुमाई के दूसरे फ़ितरी इंतजामात के अलावा पैग़म्बरों और किताबों के भेजने का इंतजाम किया ताकि कोई शख़्स जिंदगी की हकीकत से बेख़बर न रहे और फ़ैसले के दिन यह न कह सके कि हमें इलाही मंसूबे का पता न था कि हम अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक बनाते।

अल्लाह के इस मंसूबे के लाजिम मअना यह हैं कि शुरू से आख़िर तक आने वाले तमाम नबियों का पैग़ाम और मंसबी फरीजा एक हो। जब तमाम इंसान एक ही इम्तेहान की तराजू में खड़े हुए हैं तो उनके इम्तेहान का पर्चा एक दूसरे से मुख़्तलिफ कैसे हो सकता है। हकीकत यह है कि तमाम नबियों का पैग़ाम एक था और इसी एक पैग़ाम से उन्होंने तमाम इंसानों को बाख़बर किया। और वह यह कि हर आदमी एक ऐसे नाजुक मकाम पर खड़ा हुआ है जिसके एक तरफ जन्नत है और दूसरी तरफ जहन्नम। वह एक तरफ चले तो जन्नत में पहुंचेगा और दूसरी तरफ चले तो जहन्नम में जा गिरेगा। तमाम नबियों की दावत एक थी। अलबत्ता देश-काल की जरूरत के एतबार से उन्हें ख़ुदा की ताईद मुख़्तलिफ सूरतों में मिली। अल्लाह की यह सुन्नत आज भी बाकी है। डराने और ख़ुशख़बरी सुनाने का पैग़म्बराना काम करने के लिए आज जो लोग उठेंगे वे अपने हालात के लिहाज से यकीनन अल्लाह की ख़ुसूसी ताईद के मुस्तहिक होंगे। ताकि वे अपनी दावती जिम्मेदारी को प्रभावी रूप से जारी रख सकें।

لَٰكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن رَّبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

मगर अल्लाह गवाह है उस पर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने इसे अपने इल्म के साथ उतारा है और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह गवाही के लिए काफी है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका वे बहक कर बहुत दूर निकल गए। जिन लोगों ने इंकार किया और जुल्म किया उन्हें अल्लाह हरगिज नहीं बख़्शेगा न ही उन्हें जहन्नुम के सिवा कोई रास्ता दिखाएगा जिसमें वे हमेशा रहेंगे। और अल्लाह के लिए यह आसान है। ऐ लोगो, तुम्हारे पास रसूल आ चुका तुम्हारे रब की ठीक बात लेकर। पस मान लो ताकि तुम्हारा भला हो। और अगर न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में और जमीन में है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (166-170)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअसत के वक्त यहूद को आसमानी मजहब के नुमाइंदे की हैसियत हासिल थी। वह मजहब के बड़े-बड़े मनासिब (पदों) पर बैठे हुए थे। उन्हें मंजूर न हुआ कि वे अपने सिवा किसी की बड़ाई तस्लीम करें। उन्होंने यह मानने से इंकार कर दिया कि आप अल्लाह की तरफ से उसके बंदों तक उसका पैग़ाम पहुंचाने के लिए भेजे गए हैं। वे समझते थे कि हम दीन के इजारादार हैं। हम जिस शख़्स की दीनी सदाकत को तस्लीम न करें वह बतौर वाकया भी ग़ैर तस्लीमशुदा बन जाता है। मगर वे भूल गए कि यह कायनात ख़ुदा की कायनात है और इसका निजाम ख़ुदा के फरमांबरदार फ़रिश्ते चला रहे हैं। इसलिए यहां किसी की अस्ल तस्दीक वह है जो ख़ुदा की तरफ से हो और कायनात का पूरा निजाम जिसकी ताईद करे। और यकीनन ख़ुदा और उसकी पूरी कायनात अपने पैग़म्बर के साथ है न कि किसी के स्वनिर्मित आडंबर के साथ।

ख़ुदा की पुकार के मुकाबले में जो लोग यह रद्देअमल दिखाएं कि वे उसकी उपेक्षा व इंकार करें, वे लोगों को उसका साथ देने से रोकें वे सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि वे बंदगी के सही मकाम से भटक कर बहुत दूर निकल गए हैं। वे ऐसी बात कहते हैं जिसकी तरदीद (खंडन) सारी कायनात कर रही है। वे एक ऐसे मंसूबे के ख़िलाफ महाज बना रहे हैं जिसकी पुश्त पर जमीन व आसमान का मालिक खड़ा हुआ है। जाहिर है कि इससे बड़ी नादानी इस दुनिया में और कोई नहीं, ऐसे लोग दीन के नाम पर सबसे बड़ी बेदीनी कर रहे हैं। जो लोग अपने लिए इस क़िस्म का जालिमाना रवैया पसंद करें उनका ज़ेहन एतराफ के बजाए इंकार के रुख़ पर चलने लगता है। वे दिन-ब-दिन हक से दूर होते चले जाते हैं। यहां तक कि अबदी बर्बादी के गढ़े में जा गिरते हैं। ख़ुदा की दावत का इंकार ख़ुद ख़ुदा का इंकार है। ख़ुदा की दावत इतने खुले हुए दलाइल (तर्कों) के साथ होती है कि उसे समझना किसी के लिए मुश्किल न रहे। इसके वाबजूद जो लोग ख़ुदा की दावत का इंकार करें वे गोया ख़ुदा के सामने ढिठाई कर रहे हैं। और ढिठाई अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म है।

अगर आदमी ने अपने दिल की खिड़कियां खुली रखी हों तो अल्लाह की पुकार उसे ऐन अपनी तलाश का जवाब मालूम होगी। उसे महसूस होगा कि वह हक जो इंसानी बातों में ढक कर रह गया था, अल्लाह ने उसकी बेआमेज (विशुद्ध) शक्ल में उसके एलान का इंतजाम

किया है, यह अल्लाह के इल्म और हिक्मत का जुहूर है न कि किसी शख़्स के जाती जोश का कोई मामला।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ انْتَهُوا خَيْرًا لَكُمْ ۚ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ سُبْحَانَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۘ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ﴿١٧٢﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾

ऐ अहले किताब अपने दीन में ग़ुलू (अति) न करो और अल्लाह के बारे में कोई बात हक के सिवा न कहो। मसीह ईसा इब्ने मरयम तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका एक कलिमा हैं जिसे उसने मरयम की तरफ भेजा और उसकी जानिब से एक रूह हैं। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि ख़ुदा तीन हैं। बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे हक में बेहतर है। माबूद तो बस एक अल्लाह ही है। वह पाक है कि उसके औलाद हो। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह ही का कारसाज होना काफी है। मसीह को हरगिज अल्लाह का बंदा बनने से संकोच न होगा और न मुकर्रब (प्रतिष्ठित) फरिश्तों को होगा। और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह जरूर सबको अपने पास जमा करेगा। फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उन्हें वह पूरा-पूरा अज्र देगा और अपने फज़्ल से उन्हें और भी देगा। और जिन लोगों ने संकोच और घमंड किया होगा उन्हे दर्दनाक अजाब देगा और वे अल्लाह के मुकाबले में न किसी को अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार। (171-174)

आदमी की यह कमजोरी है कि किसी चीज में कोई विशिष्ट पहलू देखता है तो उसके बारे में अतिरंजनापूर्ण परिकल्पना कायम कर लेता है। वह उसका मकाम सुनिश्चित करने में हद से आगे निकल जाता है। इसी का नाम 'ग़ुलू' है। शिर्क और शख़्सियतपरस्ती की तमाम किस्में अस्लन इसी ग़ुलू की पैदावार हैं।

दीन में ग़ुलू यह है कि दीन में किसी चीज का जो दर्जा हो उसे उसके वाकई दर्जे पर न रखा जाए बल्कि उसे बढ़ाकर ज्यादा बड़ा दर्जा देने की कोशिश की जाए। अल्लाह अपने एक बंदे को बाप के बग़ैर पैदा करे तो कह दिया जाए कि यह ख़ुदा का बेटा है। अल्लाह किसी को कोई बड़ा मर्तबा दे दे तो समझ लिया जाए कि वह कोई माफौक (अलौकिक) शख़्सियत है और इंसानी ग़लतियों से पाक है। दुनिया की चमक दमक से बचने की ताकीद की जाए तो उसे बढ़ा चढ़ाकर सन्यास तक पहुंचा दिया जाए। जिंदगी के किसी पहलू के बारे में कुछ अहकाम दिए जाएं तो उसमें मुबालग़ा (अतिरंजना) करके उसी की बुनियाद पर एक पूरा दीनी फलसफा बना दिया जाए। इस किस्म की तमाम सूरतें जिनमें किसी दीनी चीज को उसके वाकई मकाम से बढ़ाकर मुबालग़ा आमेज दर्जा दिया जाए वह ग़ुलू की फेहरिस्त में शामिल होगा।

हर किस्म की ताकतें सिर्फ अल्लाह को हासिल हैं। उसके सिवा जितनी चीजें हैं सब आजिज और महकूम हैं। इंसान अपने शुऊर के कमाल दर्जे पर पहुंच कर जो चीज दरयाफ्त करता है वह यह कि ख़ुदा कादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) है और वह उसके मुकाबले में आजिजे मुतलक। पैग़म्बर और फरिश्ते इस शुऊर में सबसे आगे होते हैं इसलिए वे ख़ुदा की कुदरत और अपने इज्ज के एतराफ में भी सबसे आगे होते हैं। यह एतराफ (स्वीकार) ही इंसान का अस्ल इम्तेहान है। जिसे अपने इज्ज का शुऊर हो जाए उसने ख़ुदा के मुकाबले में अपनी निस्बत को पा लिया। और जिसे अपने इज्ज का शुऊर न हो वह ख़ुदा के मुकाबले में अपनी निस्बत को पाने से महरूम रहा। पहला शख़्स आंख वाला है जो कामयाबी के साथ अपनी मंजिल को पहुंचेगा। दूसरा शख़्स अंधा है जिसके लिए इसके सिवा कोई अंजाम नहीं कि वह भटकता रहे यहां तक कि जिल्लत के गढ़े में जा गिरे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे ऊपर एक वाजेह (सुस्पष्ट) रोशनी उतार दी। पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और

उसे उन्होंने मजबूत पकड़ लिया उन्हें जरूर अल्लाह अपनी रहमत और फज़्ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ सीधा रास्ता दिखाएगा। लोग तुमसे हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें कलाला (जिसका कोई वारिस न हो न ही मां बाप) के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई शख़्स मर जाए और उसके कोई औलाद न हो और उसके एक बहिन हो तो उसके लिए उसके तरके का आधा है। और वह मर्द उस बहिन का वारिस होगा अगर उस बहिन के कोई औलाद न हो। और अगर दो बहिनें हों तो उनके लिए उसके तरके का दो तिहाई होगा। और अगर कई भाई-बहिन, मर्द-औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है ताकि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (175-177)

अल्लाह की तरफ से जब उसकी पुकार इंसानों के सामने बुलन्द होती है तो वह ऐसी खुली हुई सूरत में बुलन्द होती है जो तारीकियों को ख़त्म करके हकीकतों को आख़िरी हद तक रोशन कर दे। इसी के साथ वह ऐसी तार्किक होती है जिसका रद्द करना किसी के लिए मुमकिन न हो। वे उसका मज़ाक तो उड़ा सकते हैं मगर दलील की जबान में उसे काट नहीं सकते। ख़ुदा वह है जो सूरज को निकालता है तो रोशनी और तारीकी एक दूसरे से जुदा हो जातीं हैं। ख़ुदा की यही कुदरत उसकी पुकार में भी जाहिर होती है। इसके बाद हक और बातिल एक दूसरे से इस तरह अलग हो जाते हैं कि किसी आंख वाले के लिए इसका जानना नामुमकिन न रहे। ताहम सूरज को देखने के लिए जरूरी है कि आदमी अपनी आंख खोले। इसी तरह ख़ुदा की पुकार से हिदायत लेने के लिए जरूरी है कि आदमी उस पर ध्यान दे। जो शख़्स ध्यान न दे वह ख़ुदा की पुकार के दर्मियान रहकर भी उससे महरूम रहेगा।

इसी के साथ यह भी जरूरी है कि हक को मजबूती के साथ पकड़ा जाए। क्योंकि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां शैतान हर आदमी के पीछे लगा हुआ है जो तरह-तरह के धोखे में डाल कर आदमी को हक से बिदकाता रहता है। अगर आदमी शैतान के वसवसों से लड़ कर हक का साथ देने का फैसला न करे तो यकीनन शैतान उसे दर्मियान में उचक लेगा। ताहम आजमाइश की इस दुनिया में इंसान अकेला नहीं है। जो लोग ख़ुदा की तरफ चलना चाहेंगे उन्हें हर मोड़ पर ख़ुदा की रहनुमाई हासिल होगी। वे ख़ुदा की मदद से मंजिल पर पहुंचने में कामयाब होंगे। जब आदमी का यह हाल हो जाए कि वह सिर्फ हक को अहमियत दे तो अल्लाह की तौफीक से उसके अंदर यह सलाहियत (क्षमता) उभर आती है कि वह ख़ालिस हक पर मजबूती के साथ जमे और दूसरी राहों में भटकने से बचा रहे।

मीरास और तरके का हुक्म बताते हुए यह कहना कि 'अल्लाह अपना हुक्म बयान करता है ताकि तुम गुमराही में न पड़ो' जाहिर करता है कि मीरास और तरके का मसला कोई मामूली मसला नहीं है। यह उन मामलों में से है जिसमें अल्लाह के बताए हुए कायदे की पाबंदी न करना आदमी को गुमराही की ख़न्दक में डाल देता है।

سُوۡرَةُ الۡمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّعِشۡرُوۡنَ اٰيَةً وَّسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوۡعًا

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَوۡفُوۡا بِالۡعُقُوۡدِ ؕ اُحِلَّتۡ لَكُمۡ بَهِيۡمَةُ الۡاَنۡعَامِ اِلَّا مَا
يُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ غَيۡرَ مُحِلِّى الصَّيۡدِ وَاَنۡتُمۡ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحۡكُمُ مَا يُرِيۡدُ ①
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُحِلُّوۡا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهۡرَ الۡحَرَامَ وَلَا الۡهَدۡىَ
وَلَا الۡقَلَآئِدَ وَلَاۤ آٰمِّيۡنَ الۡبَيۡتَ الۡحَرَامَ يَبۡتَغُوۡنَ فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرِضۡوَانًا ؕ
وَاِذَا حَلَلۡتُمۡ فَاصۡطَادُوۡا ؕ وَلَا يَجۡرِمَنَّكُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ اَنۡ صَدُّوۡكُمۡ عَنِ
الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اَنۡ تَعۡتَدُوۡا ۘ وَتَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوۡا
عَلَى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ②

आयात 120 सूरा-5 अल-माइदह रुकूअ 16

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है

ऐ ईमान वालो, अहद व पैमान को पूरा करो। तुम्हारे लिए मवेशी की किस्म के सब जानवर हलाल किए गए सिवा उनके जिनका जिक्र आगे किया जा रहा है। मगर एहराम की हालत में शिकार को हलाल न जानो। अल्लाह हुक्म देता है जो चाहता है। ऐ ईमान वालो, बेहुरमती न करो अल्लाह की निशानियों की और न हुरमत वाले महीनों की और न हरम में कुर्बानी वाले जानवरों की और न पट्टे बंधे हुए नियाज के जानवरों की और न हुरमत वाले घर की तरफ आने वालों की जो अपने रब का फज़्ल और उसकी ख़ुशी ढूंढने निकले हैं। और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो। और किसी कौम की दुश्मनी कि उसने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका है तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम ज्यादती करने लगो। तुम नेकी और तकवा में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज्यादती में एक दूसरे की मदद न करो। अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह सख़्त अजाब देने वाला है। (1-2)

मोमिन की जिदगी एक पाबंद जिंदगी है। वह दुनिया में आजाद है कि जो चाहे करे इसके बावुजूद वह अल्लाह की आकाई का एतराफ करते हुए अपने आपको पाबंद बना लेता है, वह अपने आपको ख़ुद अहद की रस्सी में बांध लेता है। अल्लाह का मामला हो या बंदों का मामला, दोनों किस्म के मामलात में उसने अपने को पाबंद कर लिया है कि वह आजादाना अमल न करे बल्कि ख़ुदा के हुक्म में मुताबिक अमल करे। वह उन्हीं चीजों को अपनी ख़ुराक बनाए जो ख़ुदा ने उसके लिए हलाल की हैं और जो चीजें ख़ुदा ने हराम की हैं उन्हें खाना छोड़ दे। किसी मौके

पर अगर किसी जाइज चीज से भी रोक दिया जाए जैसा कि एहराम की हालत में या हराम महीनों के बारे में हुक्म से वाज़ेह होता है तो उसे भी निसंकोच मान ले। कोई चीज किसी दीनी हकीकत की अलामत बन जाए तो उसका एहतराम करे, क्योंकि ऐसी चीज का एहतराम ख़ुद दीन का एहतराम है। और यह सब कुछ अल्लाह के ख़ौफ से करे न कि किसी और जज्बे से।

आदमी आम हालात में अल्लाह के हुक्मों पर अमल करता है। मगर जब कोई ग़ैर मामूली हालत पैदा होती है तो वह बदल कर दूसरा इंसान बन जाता है। अल्लाह से डरने वाला यकायक अल्लाह से बेख़ौफ इंसान बनकर खड़ा हो जाता है। यह मौका वह है जबकि किसी की कोई मुख़ालिफाना हरकत उसे उत्तेजित कर देती है। ऐसे मौके पर आदमी इंसाफ की हदों को भूल जाता है और यह चाहने लगता है कि जिस तरह भी हो अपने हरीफ (प्रतिपक्ष) को जलील और नाकाम करे। मगर इस किस्म की दुश्मनी भरी कार्रवाई ख़ुदा के नजदीक जाइज नहीं, यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि मस्जिदे हराम की जियारत जैसे पाक काम से किसी ने दूसरे को रोका हो। कोई शख़्स इस किस्म की जालिमाना कार्रवाई करने के लिए उठे और कुछ लोग उसका साथ देने लगें तो यह गुनाह की राह में किसी की मदद करना होगा। जबकि अल्लाह से डरने वालों का शेवह यह होना चाहिए कि वे सिर्फ नेकी के कामों में दूसरे की मदद करें। जो शख़्स हक पर हो उसका साथ देना और जो नाहक पर हो उसका साथ न देना मौजूदा दुनिया का सबसे मुश्किल काम है। मगर इसी मुश्किल काम पर आदमी के उख़रवी अंजाम का फैसला होने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ
وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا
ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ
الْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ
دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ③

तुम पर हराम किया गया मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जो ख़ुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोंटने से या चोट से या ऊंचे से गिर कर या सींग मारने से और वह जिसे दरिंदे ने खाया हो मगर जिसे तुमने जबह कर लिया और वह जो किसी थान पर जबह किया गया हो और यह कि तक़्सीम करो जुए के तीरों से। यह गुनाह का काम है। आज मुंकिर तुम्हारे दीन की तरफ से मायूस हो गए। पस तुम उनसे न डरो, सिर्फ मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया। पस जो भूख से मजबूर हो जाए लेकिन गुनाह पर मायल न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (3)

कुछ जानवर अपने मेडिकल और अख़्लाकी नुक्सानात की वजह से इस काबिल नहीं कि इंसान उन्हें अपनी ख़ुराक बनाए। ख़िंजीर को अल्लाह तआला ने इसी सबब से हराम करार दिया। इसी तरह जानवर के जिस्म में गोश्त के अलावा कई दूसरी चीजें होती हैं जो इंसानी ख़ुराक बनने के काबिल नहीं। इन्हीं में से ख़ून भी है। चुनांचे इस्लाम में जानवर को जबह करने की एक ख़ास सूरत मुकर्रर की गई है ताकि जानवर के जिस्म का ख़ून पूरी तरह बहकर निकल जाए। जबह के सिवा जानवर को मारने के जो तरीके हैं उनमें ख़ून जानवर के गोश्त में जज्ब होकर रह जाता है, वह पूरी तरह उससे अलग नहीं होता। इसी सबब से शरीअत में मुर्दार की तमाम किस्मों को भी हराम कर दिया गया। क्योंकि मुर्दार जानवर का ख़ून फौरन ही उसके गोश्त में जज्ब हो जाता है। इसी तरह ऐसा गोश्त भी हराम कर दिया गया जिसमें किसी तरह मुश्रिकाना अकीदे की आमेजिश हो जाए। मसलन ग़ैर अल्लाह का नाम लेकर जिब्ह करना या ग़ैर अल्लाह के तकर्रुब (आस्था) की ख़ातिर जानवर को कुर्बान करना। ताहम अल्लाह ने अपनी ख़ास रहमत से यह गुंजाइश दे दी कि किसी को भूख की ऐसी मजबूरी पेश आ जाए कि उसे मौत या हराम ख़ुराक में से एक को लेना हो तो वह मौत के मुकाबले में हराम ख़ुराक को इख़्तियार करे।

'आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया।' यानी तुम्हें जो अहकाम दिए जाने थे वे सब दे दिए गए। तुम्हारे लिए जो कुछ भेजना मुकद्दर किया गया वह सब भेजा जा चुका। यहां अललइतलाक (लागू किए जाने के तौर पर) दीन के कामिल किए जाने का जिक्र नहीं है बल्कि उम्मते मुहम्मदी पर जो कुरआन नाजिल होना शुरू हुआ था उसके पूरे होने का एलान है। यह नुजूल की तकमील का जिक्र है न कि दीन की तकमील का। इसलिए अल्फाज ये नहीं हैं कि 'आज मैंने दीन को कामिल कर दिया।' बल्कि यह फरमाया कि 'आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया।' हकीकत यह है कि ख़ुदा का दीन हर जमाने में अपनी कामिल सूरत में इंसान को दिया गया है। ख़ुदा ने कभी नाकिस दीन इंसान के पास नहीं भेजा।

कुरआन को मानने वाली उम्मत को ख़ुदा ने इतनी मजबूत बुनियादों पर कायम कर दिया है कि वह अपनी इम्कानी कुव्वत के एतबार से हर बेरूनी (वाह्य) ख़तरे की जद से बाहर जा चुकी है। अब अगर उसे कोई नुक्सान पहुंचेगा तो अंदरूनी कमजोरियों की वजह से न कि ख़ारजी हमलों की वजह से। और अंदरूनी कमजोरियों से पाक रहने की सबसे बड़ी जमानत यह है कि उसके अफराद अल्लाह से डरने वाले हों।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ
وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ④
الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ
حِلٌّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

वे पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज हलाल की गई है। कहो कि तुम्हारे लिए सुथरी चीजें हलाल हैं। और शिकारी जानवरों में से जिन्हें तुमने सधाया है, तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया। पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें। और उन पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है। आज तुम्हारे लिए सब सुथरी चीजें हलाल कर दी गईं। और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और हलाल हैं तुम्हारे लिए पाक दामन औरतें मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई जब तुम उन्हें उनके महर दे दो इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न एलानिया बदकारी करो और न ख़ुफिया आशनाई करो। और जो शख़्स ईमान के साथ कुफ़्र करेगा तो उसका अमल जाया हो जाएगा और वह आख़िरत में नुक्सान उठाने वालों में से होगा। (4-5)

वे तमाम चीजें जिन्हें फ़ितरत की निगाह पाक और सुथरा महसूस करती है। और वे तमाम जानवर जो अपनी सरिश्त (प्रकृति) के लिहाज से इंसान की सरिश्त से मुनासिबत रखते हैं इंसान के लिए हलाल हैं। अलबत्ता यह शर्त है कि वाहय सबब से उनके अंदर कोई फसाद शरई या तिब्बी (मेडिकल) न पैदा हुआ हो। ताहम इस उसूल को इंसान महज अपनी अक्ल से पूरी तरह सुनिश्चित नहीं कर सकता इसलिए उसे सुनिश्चितता के साथ भी बयान कर दिया गया। सधाए हुए जानवर का शिकार भी इसीलिए हलाल है कि वह शिकार को अपने मालिक के लिए पकड़ कर रखता है। गोया उसने आदमी की प्रवृत्ति सीख ली। ऐसा जानवर गोया शिकार के मामले में ख़ुद आदमी का कायम मकाम बन गया।

हलाल व हराम का कानून चाहे कितनी ही तफ़्सील से बता दिया जाए बिलआख़िर आदमी का अपना इरादा ही है जो उसे किसी चीज से रोकता है और किसी चीज की तरफ ले जाता है। आदमी के ऊपर अस्ल निगरां कानून की दफआत नहीं बल्कि वह ख़ुद है। अगर आदमी ख़ुद न चाहे तो कानून को मानते हुए वह उससे फरार की राहें तलाश कर लेगा। यह सिर्फ अल्लाह का ख़ौफ़ है जो आदमी को पाबंद करता है कि वह कानून को उसकी हकीकी रूह के साथ मल्हूज रखे। इसलिए हराम व हलाल का कानून बनाते हुए कहा गया : अल्लाह से डरो, अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

मुसलमान औरत के लिए किसी हाल में जाइज नहीं कि वह ग़ैर मुस्लिम मर्द से निकाह करे। मगर मुसलमान मर्दों को मख़्सूस शराइत के तहत इजाजत दी गई है कि वह अहले किताब औरतों के साथ निकाह कर सकते हैं। इस गुंजाइश की हिक्मत यह है कि औरत फ़ितरतन तअस्सुरपजीर (प्रभाव स्वीकार करने वाला) मिजाज रखती है। उससे यह उम्मीद की जा सकती है कि वह अमली जिंदगी में आने के बाद अपने मुस्लिम शौहर और मुस्लिम मुआशिरे

का असर कुबूल कर ले और इस तरह निकाह उसके लिए इस्लाम में दाख़िले का जरिया बन जाए।

'जो शख़्स ईमान से इंकार करे तो उसका अमल जाया हो गया' यानी ईमान के बग़ैर अमल की कोई हकीकत नहीं। अमल वही है जो ख़ालिस अल्लाह के लिए किया जाए। जो अमल अल्लाह के लिए न हो वह ख़ुद अपने लिए होता है। फिर अपनी ख़ातिर किए हुए अमल की कीमत अल्लाह क्यों देगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۗءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۭ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम नमाज के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कोहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को टख़्नों तक धोओ और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो ग़ुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई इस्तंजा से आए या तुमने औरत से सोहबत की हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले। बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपनी नेमत तमाम करे ताकि तुम शुक्रगुजार बनो। (6)

नमाज का मक्सद आदमी को बुराइयों से पाक करना है। वुजू इसी की एक ख़ारजी (वाहय) तैयारी है। आदमी जब नमाज का इरादा करता है तो पहले वह पानी के पास जाता है। पानी बहुत बड़ी नेमत है जो आदमी के लिए हर किस्म की गंदगी को धोने का बेहतरीन जरिया है। इसी तरह नमाज भी एक रब्बानी चशमा (स्रोत) है जिसमें नहाकर आदमी अपने आपको बुरे जज्बात और गंदे ख़्यालात से पाक करता है।

आदमी वुजू को शुरू करते हुए अपने हाथों पर पानी डालता है तो गोया अमल की जबान में यह दुआ करता है कि ख़ुदाया मेरे इन हाथों को बुराई से बचा और इनके जरिये जो बुराइयां मुझसे हुई हैं उन्हें धोकर साफ कर दे। फिर वह अपने मुंह में पानी डालता है और अपने चेहरे को धोता है तो उसकी रूह जबाने हाल से कह उठती है कि ख़ुदाया मैंने अपने मुंह में जो ग़लत ख़ुराक डाली हो, मैंने अपनी जबान से जो ग़लत कलिमा निकाला हो, मेरी आंखों ने जो बुरी चीज

देखी हो उन सबको तू मुझसे दूर कर दे। फिर वह पानी लेकर अपने हाथों को सर के ऊपर फेरता है तो उसका वुजूद सरापा इस दुआ में ढल जाता है कि ख़ुदाया मेरे जेहन ने जो बुरी बातें सोची हों और जो ग़लत मंसूबे बनाए हों उनके असरात को मुझसे धो दे और मेरे जेहन को पाक साफ जेहन बना दे। फिर जब वह अपने पैरों को धोता है तो उसका अमल उसके लिए अपने रब के सामने यह दरख़्वास्त बन जाता है कि वह उसके पैरों से बुराई की गर्द को धो दे और उसे ऐसा बना दे कि सच्चाई और इंसाफ के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर वह कभी न चले। इस तरह पूरा वुजू आदमी के लिए गोया इस दुआ की अमली सूरत बन जाता है कि : ख़ुदाया मुझे ग़लती से पलटने वाला बना और मुझे बुराइयों से पाक रहने वाला बना।

आम हालात में पाकी का एहसास पैदा करने के लिए वुजू काफी है। मगर जनाबत की हालत एक ग़ैर मामूली हालत है इसलिए इसमें पूरे जिस्म का धोना (ग़ुस्ल) जरूरी करार दिया गया। वुजू अगर छोटा ग़ुस्ल है तो ग़ुस्ल बड़ा वुजू है। ताहम अल्लाह तआला को यह पसंद नहीं कि वह बंदों को ग़ैर जरूरी मशक्कत में डाले। इसलिए माजूरी की हालत में पाकी के एहसास को ताजा करने के लिए तयम्मुम को काफी करार दिया गया। वुजू और ग़ुस्ल के सादा तरीके अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत हैं। इस तरह तहारते शरई को तहारते तबई (भौतिक शुद्धता) के साथ जोड़ दिया गया है। माजूरी (विवशता) की हालत में तयम्मुम की इजाजत मजीद नेमत है क्योंकि यह ग़ुलू (अतिवाद) से बचाने वाली है जिसमें अधिकतर धर्म मुब्तिला हुए।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا
وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا
تَعْدِلُوا اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ
عَظِيمٌ ﴿٩﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١٠﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ
أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ ع

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके उस अहद को याद करो जो उसने तुमसे लिया है। जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने माना। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह दिलों की बात तक जानता है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह के लिए कायम रहने वाले और इंसाफ के साथ गवाही देने वाले बनो। और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम इंसाफ न करो, इंसाफ करो। यही तक्वा

से ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को ख़बर है जो तुम करते हो। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख़्शिश है और बड़ा अज्र है। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया ऐसे लोग दोजख़ वाले हैं। ऐ ईमान वालो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब एक कौम ने इरादा किया कि तुम पर दस्तदराजी करे तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया। और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (7-11)

ईमान एक अहद है जो बंदे और ख़ुदा के दर्मियान करार पाता है। बंदा यह वादा करता है कि वह दुनिया में अल्लाह से डरकर रहेगा और अल्लाह इसका जामिन होता है कि वह दुनिया व आख़िरत में बंदे का कफील हो जाएगा। बंदे को अपने अहद में पूरा उतरने के लिए दो बातों का सुबूत देना है। एक यह कि वह कव्वामुल्लाह बन जाए। यानी वह ख़ुदा की बातों पर ख़ूब कायम रहने वाला हो। उसका वुजूद हर मौके पर सहीतरीन जवाब पेश करे जो बंदे को अपने रब के लिए पेश करना चाहिए। वह जब कायनात को देखे तो उसका जेहन ख़ुदा की कुदरतों और अज्मतों के तसव्वुर से सरशार हो जाए। वह जब अपने आपको देखे तो उसे अपनी जिंदगी सरापा फज्ल और एहसान नजर आए। उसके जज्बात उमड़ें तो ख़ुदा के लिए उमड़ें। उसकी तवज्जोहात किसी चीज को अपना मर्कज बनाएं तो ख़ुदा को बनाएं। उसकी मुहब्बत ख़ुदा के लिए हो। उसके अंदेशे ख़ुदा से वाबस्ता हों। उसकी यादों में ख़ुदा समाया हुआ हो। वह ख़ुदा की इबादत व इताअत करे। वह ख़ुदा के रास्ते में अपने असासे (पूंजी) को ख़र्च करे। वह अपने आपको ख़ुदा के दीन के रास्ते में लगाकर ख़ुश होता हो।

अहद पर कायम रहने की दूसरी शर्त बंदों के साथ इंसाफ है। इंसाफ का मतलब यह है कि किसी शख़्स के साथ कमी बेशी किए बग़ैर वह सुलूक करना जिसका वह ब-एतबारे वाक्या मुस्तहिक है। मामलात में हक को अपनाना न कि अपनी ख़्वाहिशात को। इस मामले में बंदे को इतना ज्यादा पाबंद बनना है कि वह ऐसे मौकों पर भी अपने को इंसाफ से बांधे रहे जबकि वह दुश्मनों और बातिलपरस्तों से मामला कर रहा हो, जबकि शिकायतें और तल्ख़ यादें उसे इंसाफ के रास्ते से फेरने लगें।

दुनिया में ख़ुदा निशानियों की सूरत में जाहिर होता है। यानी ऐसे दलाइल (तर्कों) की सूरत में जिसकी काट आदमी के पास मौजूद न हो। जब आदमी के सामने ख़ुदा की दलील आए और वह उसे मानने के बजाए लफ्जी तकरार करने लगे तो उसने ख़ुदा की निशानी को झुठलाया। ऐसे लोग ख़ुदा के यहां सख़्त सजा पाएंगे। और जिन लोगों ने उसे मान लिया वे ख़ुदा के इनाम के मुस्तहिक होंगे।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ
نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ

سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾

और अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और हमने उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किए। और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज क़ायम करोगे और जकात अदा करोगे और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को कर्ज़े हसन दोगे तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाह जरूर दूर करूंगा और तुम्हें जरूर ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। पस तुममें से जो शख़्स इसके बाद इंकार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। पस उनकी अहदशिकनी की बिना पर हमने उन पर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया। वे कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं। और जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। और तुम बराबर उनकी किसी न किसी ख़ियानत से आगाह होते रहते हो सिवाए थोड़े लोगों के। उन्हें माफ करो और उनसे दरगुजर करो, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है। (12-13)

बनी इस्राईल से उनके पैग़म्बर के माध्यम से ख़ुदापरस्ताना जिंदगी गुजारने का अहद लिया गया और उनके बारह कबाइल से बारह सरदार उनकी निगरानी के लिए मुक़र्रर किए गए। बनी इस्राईल से जो अहद लिया गया वह यह था कि वे नमाज के जरिये अपने को अल्लाह वाला बनाएं। वे जकात की सूरत में बंदों के हुक़ूक़ अदा करें। पैग़म्बरों का साथ देकर वे अपने को अल्लाह की पुकार की जानिब खड़ा करें और अल्लाह के दीन की जद्दोजहद में अपना असासा (पूंजी) ख़र्च करें। इन कामों की अदायगी और अपने दर्मियान इनकी निगरानी का इज्तिमाई निजाम क़ायम करने के बाद ही वे ख़ुदा की नजर में इसके मुस्तहिक़ थे कि ख़ुदा उनका साथी हो। वह उन्हें पाक साफ करके इस क़ाबिल बनाए कि वे जन्नत की लतीफ फज़ाओं में दाख़िल हो सकें। जन्नत किसी को अमल से मिलती है न कि किसी क़िस्म के नस्ली तअल्लुक़ से।

इस अहद में जिन आमाल का जिक्र है यही दीन के असासी (मूलभूत) आमाल हैं। यह वह शाहराह है जो तमाम इंसानों को ख़ुदा और उसकी जन्नत की तरफ ले जाने वाली है। मगर जब आसमानी किताब की हामिल कौमों में बिगाड़ आता है तो वे इस शाहराह के दाएं बाएं मुड़ जाती हैं। अब यह होता है कि ख़ुदसाख़्ता तशरीहात (व्याख्याओं) के जरिये दीन का तसव्वुर

बदल दिया जाता है। इबादत के नाम पर ग़ैर मुतअल्लिक बहसें शुरू हो जाती हैं। नजात के ऐसे रास्ते तलाश कर लिए जाते हैं जो बंदों के हुक़ूक़ अदा किए बग़ैर आदमी को मंजिल तक पहुंचा दें। दावते हक़ के नाम पर उनके यहां बेमअना क़िस्म के दुनियावी हंगामें जारी हो जाते हैं। वे दुनियावी इख़राजात की बहुत सी मदें बनाते हैं और उन्हीं को दीन के लिए ख़र्च का नाम दे देते हैं। दूसरे शब्दों में वे अपने दुनियावी हितों के मुताबिक एक दीन गढ़ते हैं और उसी को ख़ुदा का दीन कहने लगते हैं। जब कोई गिरोह बिगाड़ की इस नौबत तक पहुंचता है तो ख़ुदा अपनी तवज्जोह उससे हटा लेता है। ख़ुदा की तौफ़ीक़ से महरूम होकर ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे सिर्फ अपनी ख़्वाहिशों की जबान समझते हैं और इसी में मसरूफ रहते हैं। यहां तक कि मौत का फरिश्ता आ जाता है ताकि उन्हें पकड़ कर ख़ुदा की अदालत में पहुंचा दे।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۗ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (ईसाई) हैं, उनसे हमने अहद लिया था। पस जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। फिर हमने कियामत तक के लिए उनके दर्मियान दुश्मनी और बुग्ज़ डाल दिया। और आख़िर अल्लाह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे। (14)

आसमानी किताब की हामिल कौमों पर जब बिगाड़ आता है तो वे दीन के मोहकम हिस्से को छोड़ कर उसके ग़ैर मोहकम हिस्से पर दौड़ पड़ती हैं। इसका नतीजा दुनिया में इख़्तिलाफ की सूरत में जाहिर होता है और आख़िरत में रुस्वाई की सूरत में।

मसीह अलैहिस्सलाम बाप के बग़ैर एक पाकबाज ख़ातून के बत्न से पैदा हुए। पैदाइश के बाद उन्होंने अपनी जबान से अपना जो तआरुफ कराया वह यह था 'मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ अब हजरत मसीह के बारे में राय कायम करने की एक सूरत यह है कि आपने अपने बारे में जो वाज़ेह अल्फ़ाज फरमाए हैं उन्हीं की पाबंदी की जाए और आपको वही समझा जाए जो इन अल्फाज से बराहेरास्त तौर पर मालूम होता है। दूसरी सूरत यह है कि इस मामले में अपने कयास को दख़ल दिया जाए और कहा जाए कि 'इंसान वह है जो किसी बाप का बेटा हो। मसीह किसी बाप के बेटे न थे। इसलिए वह ख़ुदा के बेटे थे' पहली राय की बुनियाद ख़ुद मसीह का मोहकम और मुस्तनद कौल है इसलिए अगर उसे इख़्तियार किया जाए तो उसमें इख़्तिलाफ पैदा न होगा। जबकि दूसरी राय की बुनियाद महज इंसानी कयास पर है। इसलिए जब दूसरी राय को इख़्तियार किया जाएगा तो राय का इख़्तिलाफ शुरू हो जाएगा, जैसा कि मसीह के मानने वालों के साथ बाद के जमाने में हुआ।

आसमानी किताब की हामिल किसी कौम में जब बिगाड़ आता है तो उसके अंदर इसी किस्म की ख़राबियां शुरू हो जाती हैं। वे मोहकम दीन को छोड़कर कयासी दीन पर चल

पड़ती हैं। यहीं से इख़्तिलाफ और फिरकाबंदियों का दरवाजा खुल जाता है। फिक्ह और कलाम, रूहानियत और सियासत में ख़ुदा व रसूल ने जो खुले हुए अहकाम दिए हैं लोग उनके सादा मफहूम पर कानेअ नहीं रहते बल्कि बतौर ख़ुद नई-नई बहसें निकालते हैं। कभी जमाने के ख़्यालात से मुतअस्सिर होकर, कभी अपनी दुनियावी ख़्वाहिशों को दीनी जवाज अता करने के लिए। कभी ख़ुद से ख़ुदा के नाकिस दीन को कामिल बनाने के लिए, अपनी तरफ से ऐसी बातें दीन में दाख़िल कर दी जाती हैं जो हकीकतन दीन का हिस्सा नहीं होतीं। इस तरह नए-नए दीनी एडीशन तैयार हो जाते हैं। कोई रूहानी एडीशन, कोई सियासी एडीशन, कोई और एडीशन। हर एक के गिर्द उसके मुवाफिक़ जौक रखने वाले लोग जमा होते रहते हैं। बिलआख़िर उनका एक फिरका बन जाता है। उनकी बाद की नस्लें इसे असलाफ (पूर्वजों) का वरसा समझकर उसकी हिफाजत शुरू कर देती हैं। यहां तक कि वह वक्त आ जाता है कि वह कियामत तक कभी ख़त्म न हो। क्योंकि इंसान माजी (अतीत) को हमेशा मुकद्दस (पवित्र) समझ लेता है और जो चीज मुकद्दस बन जाए वह कभी ख़त्म नहीं होती। मजहब के नाम पर फिरकाबंदी एक तरफ मुकद्दस होकर अबदी बन जाती है। दूसरी तरफ ख़ुदा का हुक्म बनकर दूसरों के ख़िलाफ नफरत और जारिहियत (आक्रामकता) का इजाजतनामा भी।

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ كَثِيۡرًا مِّمَّا كُنۡتُمۡ تُخۡفُوۡنَ
مِنَ الۡكِتٰبِ وَيَعۡفُوۡا عَنۡ كَثِيۡرٍ ؕ قَدۡ جَآءَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيۡنٌ ۙ
يَّهۡدِىۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوۡرِ بِاِذۡنِهٖ وَيَهۡدِيۡهِمۡ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝ لَقَدۡ كَفَرَ الَّذِيۡنَ
قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡمَسِيۡحُ ابۡنُ مَرۡيَمَ ؕ قُلۡ فَمَنۡ يَّمۡلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا اِنۡ اَرَادَ
اَنۡ يُّهۡلِكَ الۡمَسِيۡحَ ابۡنَ مَرۡيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا ؕ وَلِلّٰهِ
مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ؕ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝

ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है। वह किताबे इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिन्हें तुम छुपाते थे। और वह दरगुजर करता है बहुत सी चीजों से। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से एक रोशनी और एक जाहिर करने वाली किताब आ चुकी है। इसके जरिए से अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रिजा के तालिब हैं और अपनी तौफीक से उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ उनकी रहनुमाई करता है। बेशक उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो

मसीह इब्ने मरयम है। कहो फिर कौन इख़्तियार रखता है अल्लाह के आगे अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह इब्ने मरयम को और उसकी मां को और जितने लोग जमीन में हैं सब को। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है। वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (15-17)

अहले किताब ने अपने दीन में दो किस्म की ग़लतियां कीं। एक यह कि कुछ तालीमात को तावील या तहरीफ (परिवर्तन) के जरिए दीन से ख़ारिज कर दिया। मसलन उन्होंने अपनी किताब में ऐसी तब्दीलियां कीं कि अब उन्हें अपनी नजात के लिए किसी और पैग़म्बर को मानने की जरूरत न थी। अपने आबाई (पैतृक) मजहब से वाबस्तगी उनकी नजात के लिए बिल्कुल काफी थी। दूसरे यह कि उन्होंने दीन के नाम पर ऐसी पाबंदियां अपने ऊपर डाल लीं जो ख़ुदा ने उनके ऊपर न डाली थीं। मिसाल के तौर पर कुर्बानी की अदायगी के वे जुजई (अमौलिक) मसाइल जिनका हुक्म उनके नबियों ने उन्हें नहीं दिया था बल्कि उनके उलमा ने अपनी फिक्ही मूशिगाफियों (कुतर्कों) से बतौर ख़ुद उन्हें गढ़ लिया।

कुरआन उनके लिए एक नेमत बनकर आया। इसने उनके लिए दीने ख़ुदावंदी की 'तजदीद' (नवीनीकरण) की। कुरआन ने उन्हें उस अंधेरे से निकाला कि वे ऐसे रास्ते पर चलते रहें जिसके मुतअल्लिक वह इस ख़ुशफहमी में हों कि वह जन्नत की तरफ जा रहा है, हालांकि वह उन्हें ख़ुदा के ग़जब की तरफ ले जा रहा हो। कुरआन ने एक तरफ उनकी खोई हुई तालीमात को उनकी असली सूरत में पेश किया। दूसरी तरफ कुरआन ने यह किया कि उन्होंने अपने आपको जिन ग़ैर जरूरी दीनी पाबंदियों में मुब्तला कर लिया था उससे उन्हें आजाद किया। अब जो लोग अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करें वे बदस्तूर अंधेरों में भटकते रहेंगे। और जिन्हें अल्लाह की रिजा की तलाश हो वे हक की सीधी राह को पा लेंगे। वे अल्लाह की तौफीक से अपने आपको तारीकी से निकाल कर रोशनी में लाने में कामयाब हो जाएंगे। हक का हक होना और बातिल का बातिल होना अपनी कामिल सूरत में जाहिर किया जाता है। मगर वह हमेशा दलील की जबान में होता है। और दलील उन्हीं लोगों के जेहन का जुज बनती है जो उसके लिए अपने जेहन को खुला रखें।

ख़ुदा को छोड़कर इंसानों ने जो ख़ुदा बनाए हैं उनमें से हर एक का यह हाल है कि वे न कोई चीज बतौर ख़ुद पैदा कर सकते हैं और न किसी चीज को बतौर ख़ुद मिटा सकते हैं। यही वाकया यह साबित करने के लिए काफी है कि एक ख़ुदा के सिवा कोई ख़ुदा नहीं। जो हस्तियां पैदाइश और मौत पर कादिर न हों वे ख़ुदा किस तरह हो सकती हैं।

وَقَالَتِ الۡيَهُوۡدُ وَالنَّصٰرٰى نَحۡنُ اَبۡنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلۡ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمۡ
بِذُنُوۡبِكُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ بَشَرٌ مِّمَّنۡ خَلَقَ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ
وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ؗ وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ۝ يٰۤاَهۡلَ

الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا
مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾

और यहूद व नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे और उसके महबूब हैं। तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सजा क्यों देता है। नहीं बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई मख़्लूक में से एक आदमी हो। वह जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा अजाब देगा। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है और उसी की तरफ लौट कर जाना है। ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह तुम्हें साफ-साफ बता रहा है रसूलों के एक वक्फा के बाद। ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया। पस अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (18-19)

जो कौम किताब और पैग़म्बर की हामिल (धारक) बनाई जाए और वह उसे मानने का सुबूत दे दे तो उस पर ख़ुदा की बहुत सी नेमतें नाजिल होती हैं। मुख़ालिफीन के मुकाबले में ख़ुसूसी नुसरत, जमीन पर इक्तेदार, मग्फिरत और जन्नत का वादा, वग़ैरह। कौम के इब्तिदाई लोगों के लिए यह उनके अमल का बदला होता है। उन्होंने अपने आपको ख़ुदा के हवाले किया इसलिए ख़ुदा ने उन पर अपनी नेमतें बरसाईं। मगर बाद की नस्लों में सूरतेहाल बदल जाती है अब उनके लिए सारा मामला कौमी मामला बन जाता है। अव्वलीन लोगों को जो चीज अमल के सबब से मिली थी, बाद के लोग कौमी और नस्ली तअल्लुक की बिना पर अपने को उसका मुस्तहिक समझ लेते हैं। वे यकीन कर लेते हैं कि वे ख़ुदा के ख़ास लोग हैं और वे चाहे कुछ भी करें ख़ुदा की नेमतें उन्हें मिलकर रहेंगी। हामिले किताब कौमों को इस ग़लतफहमी से निकालने की ख़ातिर ख़ुदा ने उनके लिए यह ख़ुसूसी कायदा मुकर्रर किया है कि उनकी जजा का आग़ाज इसी दुनिया से शुरू हो जाता है। ऐसे लोग इसी मौजूदा दुनिया में देख सकते हैं कि आने वाली दुनिया में उनका ख़ुदा उनके साथ क्या मामला करने वाला है। अगर वे दुनिया में अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ रहे हों तो वे ख़ुदा के मकबूल गिरोह हैं और अगर उनके दुश्मन उन पर ग़लबा पा लें तो वे ख़ुदा के नामकबूल गिरोह हैं। कोई हामिले किताब गिरोह तादाद की अधिकता के बावुजूद अगर दुनिया में मग़्लूब और जलील हो रहा हो तो उसे हरगिज यह उम्मीद न रखना चाहिए कि आख़िरत में वह सरबुलन्द और बाइज्जत रहेगा।

किसी कौम को बहैसियत कौम के ख़ुदा का महबूब समझना सरासर बातिल ख़्याल है। ख़ुदा के यहां फर्द-फर्द का हिसाब होना है न कि कौम-कौम का। हर आदमी जो कुछ करेगा उसी के मुताबिक वह ख़ुदा के यहां बदला पाएगा। हर आदमी अल्लाह की नजर में बस एक इंसान

है, चाहे वह इस कौम से तअल्लुक रखता हो या उस कौम से। हर आदमी के मुस्तकबिल का फैसला इस बुनियाद पर किया जाएगा कि इम्तेहान की दुनिया में उसने किस किस्म की कारकर्दगी का सुबूत दिया है। जन्नत किसी का कौमी वतन नहीं और जहन्नम किसी का कौमी जेलख़ाना नहीं। अल्लाह के फैसले का तरीका यह है कि वह अपनी तरफ से ऐसे अफराद उठाता है जो लोगों को जिंदगी की हकीकत से आगाह करते हैं। उन्हें जहन्नम से डराते हैं और जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं। ख़ुदा के इसी बशीर व नजीर (ख़ुशख़बरी देने और डराने वाला) का साथ देकर आदमी ख़ुदा को पाता है न कि किसी और तरीके से।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ
اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾
يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى
اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا
لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ
رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا
دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ
فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए। और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो दुनिया में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरी कौम, इस पाक जमीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और अपनी पीठ की तरफ न लौटो वर्ना नुक्सान में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा कि वहां एक जबरदस्त कौम है। हम हरगिज वहां न जाएंगे जब तक वे वहां से निकल न जाएं। अगर वे वहां से निकल जाएं तो हम दाख़िल होंगे। दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर अल्लाह ने इनाम किया था, उन्होंने कहा कि तुम उन पर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ। जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे तो तुम ही गालिब होगे और अल्लाह पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा हम कभी वहां दाख़िल न होंगे जब तक वे लोग वहां हैं। पस तुम और तुम्हारा ख़ुदावंद दोनों जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। (20-24)

अल्लाह का यह तरीका है कि वह अपने पैग़ाम को लोगों तक पहुंचाने के लिए किसी गिरोह को चुन लेता है। इस गिरोह के अंदर वह अपने पैग़म्बर और अपनी किताब भेजता है और उसे नियुक्त करता है कि वह इस पैग़ाम को दूसरों तक पहुंचाए। जिस तरह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) एक ख़ास शख़्स पर उतरती है उसी तरह 'वही' का हामिल भी एक ख़ास गिरोह को बनाया जाता है। कदीम (प्राचीन) जमाने में यह ख़ास हैसियत बनी इस्राईल को हासिल थी और आख़िरी नबी मुहम्मद (सल्ल०) के बाद उम्मते मुहम्मदी इस ख़ुसूसी मंसब पर मामूर (नियुक्त) है।

अल्लाह को जिस तरह यह मत्लूब है कि कोई कौम उसके दीन की नुमाइंदगी करे। इसी तरह उसे यह भी मत्लूब है कि जो कौम उसके दीन की नुमाइंदा हो वह दुनिया में बाइज्जत और सरबुलन्द हो ताकि लोगों पर यह बात स्पष्ट हो सके कि कियामत के बाद जो नया और अबदी आलम बनेगा उसमें हर किस्म की सरफ़राज़ियां सिर्फ अहलेहक को हासिल होंगी। बाकी लोग मग़्ज़ूब करके ख़ुदा की रहमतों से दूर फेंक दिए जाएंगे। ताहम इस गिरोह को यह दुनियावी इनाम एकतरफा तौर पर नहीं दिया जाता इसके लिए उसे इस्तहकाक (पात्रता) के इम्तेहान में खड़ा होना पड़ता है। उसे अमली तौर पर यह साबित करना पड़ता है कि वह हर हाल में अल्लाह पर एतमाद करने वाला और सब्र की हद तक उसकी मर्जी पर कायम रहने वाला है।

बनी इस्राईल जब तक इस मेयार पर कायम रहे उन्हें ख़ुदा ने उनकी हरीफ कौमों पर ग़ालिब किया। यहां तक कि एक जमाने तक वे अपने वक्त की मुहज्जब दुनिया में सबसे ज्यादा सरबुलन्द हैसियत रखते थे। मगर हजरत मूसा तशरीफ लाए तो बनी इस्राईल पर जवाल आ चुका था। इम्तेहान के वक्त उनकी अक्सरियत अल्लाह पर एतमाद और सब्र का सुबूत देने के लिए तैयार न हुई। यहां तक कि उनका एक तबका अल्लाह और उसके रसूल के सामने गुस्ताख़ी करने लगा। उनके दिल में अल्लाह से भी ज्यादा दुनिया की ताकतवर कौमों का डर समाया हुआ था। जब ख़ुदा का कोई नुमाइंदा गिरोह ख़ुदा के काम के लिए कुर्बानी न दे तो गोया वह चाहता है कि ख़ुदा ख़ुद जमीन पर उतरे और अपने दीन का काम ख़ुद अंजाम दे, चाहे वह बनी इस्राईल के कुछ लोगों की तरह इस बात को जबान से कह दे या दूसरे लोगों की तरह जबान से न कहे बल्कि सिर्फ अपने अमल से उसे जाहिर करे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝٢٥ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝٢٦

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा इख़्तियार नहीं। पस तू हमारे और इस नाफरमान कौम के दर्मियान जुदाई कर दे। अल्लाह ने कहा : वह मुल्क उन पर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया। ये लोग जमीन में भटकते फिरेंगे। पस तुम इस नाफरमान कौम पर अफसोस न करो। (25-26)

बनी इस्राईल जब हजरत मूसा की कयादत में मिस्र से निकल कर सीना रेगिस्तान में पहुंचे तो उस जमाने में शाम व फिलिस्तीन के इलाके में एक जालिम कौम (अमालिका) की हुकूमत थी। अल्लाह ने बनी इस्राईल से कहा कि ये जालिम लोग अपनी उम्र पूरी कर चुके हैं। तुम इनके मुल्क में दाख़िल हो जाओ, तुम्हें ख़ुदा की मदद हासिल होगी और तुम मामूली मुकाबले के बाद उनके ऊपर कब्जा पा लोगे। मगर बनी इस्राईल पर उस कौम की ऐसी हैबत तारी थी कि वे उनके मुल्क में दाख़िल होने के लिए तैयार न हुए। इसका मतलब यह था कि वे अल्लाह से ज्यादा इंसानों से डरते थे। इसके बाद अल्लाह की नजर में उनकी कोई कीमत न रही। अल्लाह ने उनके बारे में फैसला कर दिया कि वे चालीस साल (1440-1400 ई०पू०) तक फारान और शर्के उरदेन के दर्मियान सहरा में भटकते रहेंगे। यहां तक कि 20 साल से लेकर ऊपर की उम्र तक के सारे लोग ख़त्म हो जाएंगे। इस दौरान उनकी नई नस्ल नए हालात में परवरिश पाकर उठेगी। चुनांचे ऐसा ही हुआ। 40 साल की सहराई जिंदगी में इनके तमाम बड़ी उम्र वाले मर कर ख़त्म हो गए। इसके बाद उनकी नई नस्ल ने योशअ बिन नून की कयादत में शाम व फिलिस्तीन को फतह किया। यह योशअ बिन नून उन दो सालेह इस्राईलियों में से एक हैं जिन्होंने अपनी कौम से कहा था कि तुम अल्लाह पर भरोसा करते हुए अमालिका के मुल्क में दाख़िल हो जाओ।

बनी इस्राईल ने हजरत मूसा से कहा था कि अगर हम इस मुल्म पर हमला करें तो हमें शिकस्त होगी और इसके बाद 'हमारे बच्चे लूट का माल ठहरेंगे' मगर यही बच्चे बड़े होकर अमालिका के मुल्क में दाख़िल हुए और उस पर कब्जा किया। बच्चों में यह ताकत इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने लम्बी मुद्दत तक सहराई (रेगिस्तानी) जिंदगी की मशक्कतों को बर्दाश्त किया था। बच्चों के बाप जिन पुरख़तर हालात को अपने बच्चों के हक में मौत समझते थे उन्हीं पुरख़तर हालात के अंदर दाख़िल होने में उनके बच्चों की जिंदगी का राज छुपा हुआ था।

मुवाफिक हालात में जीना बजाहिर बहुत अच्छा मालूम होता है। मगर हकीकत यह है कि आदमी के अंदर तमाम बेहतरीन औसाफ उस वक्त पैदा होते हैं जबकि उसे हालात का मुकाबला करके जिंदा रहना पड़े। मिस्र में बनी इस्राईल सदियों तक सुरक्षित जिंदगी गुजारते रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि वे एक मुर्दा कौम बन गए। मगर विस्थापन के बाद उन्हें जो सहराई जिंदगी हासिल हुई उसमें जिंदगी उनके लिए सरापा चैलेन्ज थी। इन हालात में जो लोग बचपन से जवानी की उम्र को पहुंचे वे कुदरती तौर पर बिल्कुल दूसरी किस्म के लोग थे। सहराई हालात ने उनके अंदर सादगी, हिम्मत, जफाकशी और हकीकतपसंदी पैदा कर दी थी। और यही वे औसाफ हैं जो किसी कौम को जिंदा कौम बनाते हैं। कोई कौम अगर हालात के नतीजे में मुर्दा कौम बन जाए तो उसे दुबारा जिंदा कौम बनाने के लिए ग़ैर मामूली हालात में डाल दिया जाता है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْۤاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

और उन्हें आदम के दो बेटों का किस्सा हक के साथ सुनाओ। जबकि उन दोनों ने कुर्बानी पेश की तो उनमें से एक की कुर्बानी कुबूल हुई और दूसरे की कुर्बानी कुबूल न हुई। उसने कहा मैं तुझे मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ मुत्तकियों से कुबूल करता है। अगर तुम मुझे कत्ल करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हें कत्ल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मैं डरता हूं अल्लाह से जो सारे जहान का रब है। मैं चाहता हूं की मेरा और अपना गुनाह तू ही ले ले फिर तू आग वालों में शामिल हो जाए। और यही सजा है जुल्म करने वालों की। (27-29)

अल्लाह के लिए जो अमल किया जाए उसका अस्ल बदला तो आख़िरत में मिलता है, ताहम कभी-कभी दुनिया में भी ऐसे वाकेआत जाहिर होते हैं जो बताते हैं कि आदमी का अमल ख़ुदा के यहां मकबूल हुआ या नहीं। आदम के बेटों में से काबील और हाबील के साथ भी ऐसी ही सूरत पेश आई। काबील किसान था और हाबील भेड़-बकरियों का काम करता था, हाबील ने अपनी महनत की कमाई अल्लाह के लिए दी। वह अल्लाह के यहां मकबूल हुई और इसकी बरकत उसकी जिंदगी और उसके काम में जाहिर हुई। काबील ने भी अपनी जराअत (कृषि) में से कुछ अल्लाह के लिए पेश किया मगर वह कुबूल न हुआ और वह ख़ुदा की बरकत पाने से महरूम रहा। यह देखकर काबील के दिल में अपने छोटे भाई हाबील के लिए हसद पैदा हो गया। यह हसद इतना बढ़ा कि उसने हाबील से कहा कि मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा। हाबील ने कहा कि तुम्हारी कुर्बानी कुबूल न होने का सबब यह है कि तुम्हारे दिल में ख़ुदा का ख़ौफ नहीं। तुम्हें मेरे पीछे पड़ने के बजाए अपनी इस्लाह की फिक्र करनी चाहिए। मगर हसद और बुग्ज की आग जब किसी के अंदर भड़कती है तो वह उसे इस काबिल नहीं रखती कि वह अपनी ग़लतियों का जायजा ले। वह बस एक ही बात जानता है : यह कि जिस तरह भी हो अपने काल्पनिक प्रतिपक्षी का ख़ात्मा कर दे।

हाबील ने काबील से कहा कि तुम चाहे मेरे कत्ल के लिए हाथ बढ़ाओ, मैं तुम्हारे कत्ल के लिए हाथ नहीं बढ़ाऊंगा। इसकी वजह यह है कि मुसलमान और मुसलमान की बाहमी लड़ाई को अल्लाह ने सरासर हराम करार दिया है। यहां तक कि अगर एक मुसलमान अपने दूसरे भाई के कत्ल के दरपे हो जाए तो उस वक्त भी अजीमत (उच्चआचरण) यह है कि दूसरा भाई अपने

भाई के ख़ून को अपने लिए हलाल न करे। वह अपनी तरफ से आक्रामक पहल न करके बाहमी टकराव को पहले ही मरहले में ख़त्म कर देगा। इसके बरअक्स अगर वह भी जवाब में जारिहियत करने लगे तो मुस्लिम मुआशिरे के अंदर अमल और रद्देअमल का अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाएगा। लेकिन हमलाआवर अगर ग़ैर मुस्लिम हो तो उस वक्त ऐसा करना दुरुस्त नहीं। इसी तरह जब दीनी दुश्मनों की तरफ से जारिहियत (आक्रामकता) की जाए तो मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का फर्क किए बग़ैर ऐसे लोगों से भरपूर मुकाबला किया जाएगा।

दो मुसलमान जब एक दूसरे की बर्बादी के दरपे हों तो गुनाह दोनों के दर्मियान तक़्सीम हो जाता है। लेकिन अगर ऐसा हो कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की बर्बादी की कार्रवाईयां करे और दूसरा मुसलमान सब्र और दुआ में मशग़ूल हो तो पहला शख़्स न सिर्फ अपने गुनाह का बोझ उठाता है बल्कि दूसरे शख़्स के उस मुमकिन गुनाह का बोझ भी उसके ऊपर डाल दिया जाता है जो सब्र और दुआ के तरीके पर न चलने की सूरत में वह करता।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿۳۱﴾

फिर उसके नफ्स ने उसे अपने भाई के कत्ल पर राजी कर लिया और उसने उसे कत्ल कर डाला। फिर वह नुक्सान उठाने वालों में शामिल हो गया। फिर ख़ुदा ने एक कौवे को भेजा जो जमीन में कुरेदता था ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश को किस तरह छुपाए। उसने कहा कि अफसोस मेरी हालत पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को छुपा देता। पस वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। (30-31)

दुनिया में जो कुछ किसी को मिलता है ख़ुदा की तरफ से मिलता है। इसलिए किसी को अच्छे हाल में देख कर जलना और उसके नुक्सान के दरपे होना गोया ख़ुदा के मंसूबे को बातिल करने की कोशिश करना है। ऐसा आदमी अगरचे मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में एक हद तक अमल करने का मौका पाता है। मगर ख़ुदा की नजर में वह बदतरीन मुजरिम है। हाबील ने अपने बड़े भाई को इस हकीकत की तरफ तवज्जोह दिलाई। इसके बाद उसके दिल में झिझक पैदा हुई। उसे महसूस हुआ कि वह वाकई बिना सबब अपने भाई को मार डालना चाहता है। मगर उसके हसद का जज्बा ठंडा न हो सका। उसने अपने जेहन में ऐसे उज़रात (तर्क) गढ़ लिए जो उसके लिए अपने भाई के कत्ल को जाइज साबित कर सकें। उसकी अंदरूनी कशमकश ने अंततः स्वनिर्मित तौजीहात में अपने लिए तस्कीन तलाश कर ली और उसने अपने भाई को मार डाला। जमीर की आवाज ख़ुदा की आवाज है। जमीर (अन्तरात्मा) के अंदर किसी अमल के बारे में सवाल पैदा होना आदमी का इम्तेहान के मैदान में खड़ा होना है। अगर आदमी अपने जमीर की

आवाज पर लब्बैक कहे तो वह कामयाब हुआ। और अगर उसने झूठे अल्फ़ाज का सहारा लेकर जमीर की आवाज को दबा दिया तो वह नाकाम हो गया।

हदीस में है कि ज्यादती और संबंध तोड़ना ऐसे गुनाह हैं कि उनकी सजा इसी मौजूदा दुनिया से शुरू हो जाती है। क़ाबील ने अपने भाई के साथ जो नाहक़ जुल्म किया था उसकी सजा उसे न सिर्फ आख़िरत में मिली बल्कि इसी दुनिया से उसका अंजाम शुरू हो गया। मुजाहिद और जुबैर ताबई (सहाबा के अनुयायी) से मंक़ूल है कि क़त्ल के बाद क़ाबील का यह हाल हुआ कि उसकी पिंडली उसकी रान से चिपक गई। वह असहाय जमीन पर पड़ा रहता, यहां तक कि इसी हाल में जिल्लत और तकलीफ के साथ मर गया। (इब्ने कसीर)

क़ाबील को कौवे के जरिए यह तालीम दी गई कि वह लाश को जमीन के नीचे दफ़न कर दे। यह इस बात की तरफ इशारा था कि इंसान फितरत के रास्ते को जानने के मामले में जानवर से भी ज्यादा कम अक्ल है। इसके बावुजूद वह अपने जज्बात के पीछे चलता है तो उससे ज्यादा जालिम और कोई नहीं। साथ ही इसमें इस हक़ीक़त की तरफ भी लतीफ इशारा है कि जुर्म से पहले अगर आदमी जुर्म के इरादे को अपने सीने के अंदर दफन कर दे तो उसे शर्मिन्दगी न उठाना पड़े। आदमी को चाहिए कि वह दिल के एहसास को दिल के अंदर दबाए, उसे दिल से बाहर आकर वाकया न बनने दे। बुरे एहसास को दिल के बाहर निकालने से पहले तो सिर्फ एहसास को दफन करना पड़ता है। लेकिन अगर उसने उसे बाहर निकाला तो फिर एक जिंदा इंसान की 'लाश' को दफ़न करने का मसला उसके लिए पैदा हो जाएगा। जो दफ़न होकर भी ख़ुदा के यहां दफ़न नहीं होता।

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

इसी सबब से हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी को कत्ल करे, बग़ैर इससे कि उसने किसी को क़त्ल किया हो या जमीन में फसाद बरपा किया हो तो गोया उसने सारे आदमियों को कत्ल कर डाला और जिसने एक शख़्स को बचाया

तो गोया उसने सारे आदमियों को बचा लिया। और हमारे पैग़म्बर उनके पास खुले अहकाम लेकर आए। इसके बावुजूद उनमें से बहुत से लोग जमीन में ज्यादतियां करते हैं। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और जमीन में फसाद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सजा यही है कि उन्हें कत्ल किया जाए या वे सूली पर चढ़ाए जाएं या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशा से काटे जाएं या उन्हें मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए। यह उनकी रुस्वाई दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अजाब है। मगर जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे काबू पाने से पहले तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (32-34)

कोई शख़्स जब किसी शख़्स को क़त्ल करता है तो वह सिर्फ एक इंसान का क़ातिल नहीं होता बल्कि तमाम इंसानों का कातिल होता है। क्योंकि वह हुरमत (मनाही) के उस कानून को तोड़ता है जिसमें तमाम इंसानों की जिंदगियां बंधी हुई हैं। इसी तरह जब कोई शख़्स किसी को जालिम के जुल्म से नजात देता है तो वह सिर्फ एक शख़्स को नजात देने वाला नहीं होता बल्कि तमाम इंसानों को नजात देने वाला होता है। क्योंकि उसने इस उसूल की हिफ़ाजत की कि तमाम इंसानों की जान मोहतरम (सम्मानीय) है। किसी को किसी के ऊपर हाथ उठाने का हक नहीं। जब कोई शख़्स किसी की इज्जत या उसके माल या उसकी जान पर हमला करे तो इसका मतलब यह है कि मुआशिरे के अंदर हंगामी हालत पैदा हो गई है। मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे किसी एक वाकये को भी इस नजर से देखें गोया सारे लोगों की जान और माल और आबरू ख़तरे में है। किसी मुआशिरे में एक दूसरे के एहतराम की रिवायात लम्बी तारीख़ के नतीजे में बनती हैं। और अगर एक बार ये रिवायतें टूट जाएं तो दुबारा लम्बी तारीख़ के बाद ही उन्हें मुआशिरे के अंदर कायम किया जा सकता है। जो लोग मुआशिरे के अंदर फ़साद की रिवायत क़ायम करें वे मुआशिरे के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

ख़ुदा ने अपनी दुनिया का निजाम जिस उसूल पर कायम किया है वह यह है कि हर एक अपने हिस्सा का फर्ज अंजाम दे। कोई शख़्स दूसरे के दायरे में बेजा मुदाख़लत (हस्तक्षेप) न करे। तमाम जमादात और हैवानात इसी फितरत पर अमल कर रहे हैं। इंसान को भी पैग़म्बरों के जरिये ये हिदायतें वाजेह तौर पर बता दी गई हैं। मगर इंसान जो कि दीगर मख़्लूक़ात के बरअक्स वक्ती तौर पर आजाद रखा गया है, सरकशी करता है और इस तरह फितरत के निजाम में फ़साद पैदा करता है। ऐसे लोग ख़ुदा की नजर में सख़्त मुजरिम हैं। और वे लोग और भी ज्यादा बड़े मुजरिम हैं जो ख़ुदा और रसूल से जंग करें। यानी ख़ुदा अपने बंदों के दर्मियान ऐसी दावत उठाए जो लोगों को मुफ्सिदाना तरीकों से बचने और फितरते ख़ुदावंदी पर जिंदगी गुजारने की तरफ बुलाती हो तो वे उसका रास्ता रोकें और उसके ख़िलाफ तख़रीबी कार्रवाईयां करें। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में इबरतनाक सजा है और आख़िरत में भड़कती हुई आग।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٩﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٠﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और उसका क़ुर्ब (समीपता) तलाश करो और उसकी राह में जद्दोजहद करो ताकि तुम फलाह पाओ। बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया है अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और इतना ही और हो ताकि वे उसे फिदये (अर्थदण्ड) में देकर क़ियामत के दिन के अजाब से छूट जाएं तब भी वह उनसे क़ुबूल न की जाएगी और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएं मगर वे उससे निकल न सकेंगे और उनके लिए एक मुस्तकिल अजाब है। और चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो। यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की तरफ से इबरतनाक सजा। और अल्लाह ग़ालिब और हकीम (तत्वदर्शी) है। फिर जिसने अपने ज़ुल्म के बाद तौबा की और इस्लाह कर ली तो अल्लाह बेशक उस पर तवज्जोह करेगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जमीन और आसमानों की सल्तनत का मालिक है। वह जिसे चाहे सजा दे और जिसे चाहे माफ कर दे। और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। (35-40)

बंदे के लिए सबसे बड़ी चीज अल्लाह की क़ुरबत (समीपता) है। यह क़ुरबत अपनी महसूस और कामिल सूरत में तो आख़िरत में हासिल होगी। ताहम किसी बंदे का अमल जब उसे अल्लाह से करीब करता है तो एक लतीफ एहसास की सूरत में इसका तजर्बा उसे इसी दुनिया में होने लगता है। इस क़ुरबत तक पहुंचने का जरिए तक़्वा और जिहाद है। यानी डरने और जद्दोजहद करने की सतह पर अल्लाह का परस्तार बनना। आदमी की जिंदगी में ऐसे लम्हात आते हैं जबकि वह अपने को हक और नाहक के दर्मियान खड़ा हुआ पाता है। हक की तरफ बढ़ने में उसकी अना (अंहकार) टूटती है। उसकी दुनियावी मस्लेहतों का ढांचा बिखरता हुआ नजर आता है। जबकि नाहक का तरीक़ा इख़्तियार करने में उसकी अना क़ायम रहती है। उसकी मस्लेहतें पूरी तरह महफूज दिखाई देती हैं। ऐसे वक्त में जो शख़्स

ख़ुदा से डरे और तमाम दूसरी बातों को नजरअंदाज करके ख़ुदा को पकड़ ले। और हर मुश्किल और हर नाख़ुशगवारी को झेल कर ख़ुदा की तरफ बढ़े तो यही वह चीज है जो आदमी को ख़ुदा से करीब करती है। और इस क़ुरबत का नक़्द तजुर्बा आदमी को संवेदना की सतह पर एक लतीफ इदराक (अनुभूति) की सूरत में उसी वक्त हो जाता है। इसके बरअक्स जो शख़्स तकवा और जिहाद के रास्ते पर चलने के लिए तैयार न हो उसने ख़ुदा का इंकार किया। वह ख़ुदा से दूर होकर ऐसे अजाब में पड़ जाता है जिससे वह किसी तरह छुटकारा न पा सकेगा।

जजा का मामला तमामतर ख़ुदा के इख़्तियार में है। न तो ऐसा है कि कोई बाद की जिंदगी में इस्लाह कर ले तब भी उसके पिछले आमाल उससे न धुलें और न यह बात है कि यहां कोई और ताक़त है जो सिफ़ारिश या मुदाख़लत (हस्तक्षेप) के जोर पर किसी के अंजाम को बदल सके। सारा मामला एक ख़ुदा के हाथ में है और वही कमाल दर्जे हिक्मत और क़ुदरत के साथ सबका फ़ैसला करेगा।

समाजी जुर्मों के लिए इस्लाम की सजाएं दो ख़ास पहलुओं को सामने रख कर मुक़र्रर की गई हैं। एक, आदमी के जुर्म की सजा। दूसरे यह कि सजा ऐसी इबरतनाक हो कि उसे देख कर दूसरे मुजरिमों की हौसलाशिकनी हो। ताहम मुजरिम अगर जुर्म के बाद अपने किए पर शर्मिन्दा हो। वह अल्लाह से माफ़ी मांगे और आइंदा इस क़िस्म की चीजों को बिल्कुल छोड़ दे तो उम्मीद है कि आख़िरत में अल्लाह उसे माफ कर देगा।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّاعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِن بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾

ऐ पैग़म्बर, तुम्हें वे लोग रंज में न डालें जो कुफ़्र की राह में बड़ी तेजी दिखा रहे हैं। चाहे वे उनमें से हों जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि उनके दिल ईमान नहीं लाए या उनमें से हों जो यहूदी हैं, झूठ के बड़े सुनने वाले, सुनने वाले दूसरे लोगों की ख़ातिर जो तुम्हारे पास नहीं आए। वे कलाम को उसके मकाम से हटा देते हैं। वे लोगों से कहते हैं कि अगर तुम्हें यह हुक्म मिले तो क़ुबूल कर लेना और अगर यह हुक्म न मिले तो उससे बचकर रहना। और जिसे अल्लाह फितने में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुकाबिल उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते। यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने न चाहा कि उनके दिलों को पाक करे। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अजाब है। (41)

मदीना में अंदरूनी तौर पर दो किस्म के लोग इस्लामी दावत की मुख़ालफत कर रहे थे। एक मुनाफ़िक़ीन, दूसरे यहूद। मुनाफ़िक़ीन वे लोग थे जो जाहिरी और नुमाइशी इस्लाम को लिए हुए थे। सच्चे इस्लाम की दावत में उन्हें अपने स्वार्थों व मफादात पर जद पड़ती हुई महसूस होती थी। यहूद वे लोग थे जो मजहब की नुमाइंदगी की गद्दियों पर बैठे हुए थे। उन्हें महसूस होता था कि इस्लामी दावत उन्हें उनके बरतरी के मकाम से नीचे उतार रही है। यह दोनों किस्म के लोग सच्चे इस्लाम की दावत को अपना मुश्तरक (साक्षी) दुश्मन समझते थे। इसलिए इस्लाम के ख़िलाफ मुहिम चलाने में दोनों एक हो गए। उनके 'बड़े' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आना अपनी शान के ख़िलाफ समझते थे। इसलिए वे ख़ुद न आते। अलबत्ता उनके 'छोटे' इस पर लगे हुए थे कि वे आपकी बातों को सुनें और उन्हें अपने बड़ों तक पहुंचाएं। फिर ये लोग उसे उल्टे मअना पहनाते और आपको और आपकी तहरीक को बदनाम करते। उनकी सरकशी ने उन्हें ऐसा ढीठ बना दिया था कि वे अल्लाह के कलाम को उसके परिप्रेक्ष्य से हटा कर उससे अपना मुफ़ीदे मतलब मफ़्हूम निकालने से भी न डरते।

ये वे लोग हैं जो अपने को ख़ुदा व रसूल के ताबेअ नहीं करते। बल्कि उनका जेहन यह होता है कि जो बात अपने जौक़ के मुताबिक हो उसे ले लो और जो बात जौक़ के मुताबिक न हो उसे छोड़ दो। यह मिजाज किसी आदमी के लिए सख़्त फित्ना है। जिन लोगों का यह हाल हो कि वे हक के मुक़ाबले में मफाद और मस्लेहत को तरजीह दें, जो हर हाल में अपने को बड़ाई के मकाम पर देखना चाहें, जो हक को जेर (परास्त) करने के लिए उसके ख़िलाफ तख़रीबी साजिशे करें, यहां तक कि अपने अमल को जाइज साबित करने के लिए ख़ुदा के कलाम को बदल डालें, ऐसे लोगों की नफ्सियात बिलआख़िर यह हो जाती है कि वे हक को कुबूल करने की सलाहित से महरूम हो जाते हैं। उन्होंने ख़ुदा का साथ छोड़ा, इसलिए ख़ुदा ने भी उनका साथ छोड़ दिया। ऐसे लोग ख़ुदा की तौफीक से महरूम होकर बातिल मशग़लों में लगे रहते हैं, यहां तक कि आग की दुनिया में पहुंच जाते हैं।

अल्लाह का जो बंदा अल्लाह के सच्चे दीन का पैग़ाम लेकर उठा हो उसे मुख़ालिफतों की वजह से बेहिम्मत नहीं होना चाहिए। ऐसे लोगों की सरगर्मियां हकीकतन दाअी (आह्वानकर्ता) के ख़िलाफ नहीं बल्कि ख़ुदा के ख़िलाफ हैं। इसलिए वह कभी कामयाब नहीं हो सकतीं। दावती अमल से अल्लाह को जो चीज मत्लूब है वह सिर्फ यह कि अस्ल बात से बख़ूबी तौर पर लोगों को आगाह कर दिया जाए। और यह काम अल्लाह की मदद से लाजिमन अपनी तक्मील तक पहुंच कर रहता है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۭ فَاِنْ جَاۗءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَـيْـــًٔا ۭ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝

वे झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं। अगर वे तुम्हारे पास आएं तो चाहे उनके दर्मियान फैसला करो या उन्हें टाल दो। अगर तुम उन्हें टाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अगर तुम फैसला करो तो उनके दर्मियान इंसाफ के मुताबिक फैसला करो। अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। और वे कैसे तुम्हें हकम (मध्यस्थ) बनाते हैं हालांकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है। और फिर वे उससे मुंह मोड़ रहे हैं। और ये लोग हरगिज ईमान वाले नहीं हैं। (42-43)

हराम (सुहत) से मुराद रिश्वत है। रिश्वत की एक आम शक्ल वह है जो बराहेरास्त इसी नाम पर ली जाती है। चुनांचे यहूदी उलमा (विद्वानों) में ऐसे लोग थे जो रिश्वत लेकर ग़लत मसाइल बताया करते थे। ताहम रिश्वत की एक और सूरत वह है जिसमें बराहेरास्त लेन देन नहीं होता मगर वह तमाम रिश्वतों में ज्यादा बड़ी और ज्यादा कबीह (निकृष्ट) रिश्वत होती है। यह है दीन को अवामी पसंद के मुताबिक बनाकर पेश करना ताकि अवाम के दर्मियान मकबूलियत हो, लोगों का एज़ाज व इकराम मिले, लोगों के चन्दे और नजराने वसूल होते रहें।

दीन को उसकी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में पेश करना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अवाम के अंदर नामकबूल हो जाए। इसके बरअक्स दीन को अगर ऐसी सूरत में पेश किया जाए कि जिंदगी में कोई हकीकी तब्दीली भी न करना पड़े और आदमी को दीन भी हासिल रहे तो ऐसे दीन के गिर्द बहुत जल्द भीड़ की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। वह दीन जिसमें अपनी दुनियापरस्ताना जिंदगी को बदले बग़ैर कुछ सस्ते आमाल के जरिए जन्नत मिल रही हो। वह दीन जो कौमी और माद्दी (भौतिक) हंगामाआराइयों को दीनी जवाज (औचित्य) अता करता हो। वह दीन जिसमें यह मौका हो कि आदमी अपनी जाहपसंदी (मायामोह) के लिए सरगर्म हो, फिर भी वह जो कुछ करे सब दीन के ख़ाने में लिखा जाता रहे। जो लोग इस किस्म का दीन पेश करें वे बहुत जल्द अवाम के अंदर महबूबियत का मकाम हासिल कर लेते हैं।

यहूद के कायदीन (धार्मिक नायक) इसी किस्म का दीन चला कर अवाम के आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। वे अवाम को उनका पसंदीदा दीन पेश कर रहे थे और अवाम इसके मुआवजे में उन्हें माली सहयोग से लेकर एज़ाज व इकराम तक हर चीज निसार कर रहे थे। ऐसी हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चे दीन की आवाज बुलन्द करना उन्हें नाक़ाबिले बर्दाश्त मालूम हुआ। क्योंकि यह उनके मफादात (हितों) के ढांचे को तोड़ने के हममअना (समान) था, आपसे उन्हें इतनी जिद हो गई कि आपके मुतअल्लिक किसी अच्छी ख़बर से उन्हें कोई दिलचस्पी न रही। अलबत्ता अगर वे आपके बारे में कोई बुरी ख़बर सुनते तो उसमें ख़ूब दिलचस्पी लेते और उसमें इजाफा करके उसे फैलाते। जिन लोगों में इस किस्म का बिगाड़ आ जाए उनका हाल यह हो जाता है कि अगर वे दीनी फ़ैसला लेने की तरफ रुजूअ भी होते हैं तो इस उम्मीद में कि फ़ैसला अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक होगा। अगर ऐसा न हो तो यह जानते हुए कि यह ख़ुदा और रसूल का फैसला है उसे मानने से इंकार कर देते हैं। वे भूल जाते हैं कि ऐसा करना महज एक फैसले को न मानना नहीं है बल्कि ख़ुद ईमान व इस्लाम का इंकार करना है।

إِنَّآ أَنزَلْنَا ٱلتَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسْلَمُوا۟ لِلَّذِينَ هَادُوا۟ وَٱلرَّبَّـٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ بِمَا ٱسْتُحْفِظُوا۟ مِن كِتَـٰبِ ٱللَّهِ وَكَانُوا۟ عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا۟ ٱلنَّاسَ وَٱخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِى ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَـٰفِرُونَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ ٱلنَّفْسَ بِٱلنَّفْسِ وَٱلْعَيْنَ بِٱلْعَيْنِ وَٱلْأَنفَ بِٱلْأَنفِ وَٱلْأُذُنَ بِٱلْأُذُنِ وَٱلسِّنَّ بِٱلسِّنِّ وَٱلْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِۦ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُۥ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّـٰلِمُونَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَـٰرِهِم بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ ۖ وَءَاتَيْنَـٰهُ ٱلْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ ٱلْإِنجِيلِ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَـٰسِقُونَ ﴿٤٧﴾

बेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक ख़ुदा के फरमांबरदार अंबिया यहूदी लोगों का फैसला करते थे और उनके दुर्वेश और उलमा (विद्वान) भी। इसलिए कि वे ख़ुदा की किताब पर निगहबान ठहराए गए थे। और वे उसके गवाह थे। पस तुम इंसानों से न डरो मुझसे डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्यों के ऐवज न बेचो। और जो कोई उसके मुवाफिक हुक्म न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग मुंकिर हैं। और हमने उस किताब में उन पर लिख दिया कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों का बदला उनके बराबर। फिर जिसने उन्से माफ कर दिया तो वह उसके लिए कफ्फारा (प्रायश्चित) है। और जो शख़्स उसके मुवाफिक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग जालिम हैं। और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम को भेजा तस्दीक (पुष्टि) करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और वह तस्दीक करने वाली थी अपने से अगली किताब तौरात की और हिदायत और नसीहत डरने वालों के लिए। और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुवाफिक फैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो कोई उसके मुवाफिक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग नाफरमान हैं। (44-47)

ख़ुदा की किताब इसलिए आती है कि वह लोगों को उनकी अबदी फलाह की राह दिखाए। ख़्वाहिशपरस्ती के अंधेरे से निकाल कर उन्हें हकपरस्ती की रोशनी में लाए। जो ख़ुदा से डरने वाले हैं वे ख़ुदा की किताब को ख़ुदा और बंदे के दर्मियान मुकद्दस अहद समझते हैं जिसमें अपनी तरफ से कमी या ज्यादती जाइज़ न हो। वे उसकी तामील इस तरह करते हैं जिस तरह किसी के पास कोई अमानत हो और वह ठीक-ठीक उसकी अदायगी करे। अल्लाह की किताब बंदों के हक में अल्लाह का फैसला होता है। जरूरत होती है कि जिंदगी के मामलात में उसी की हिदायत पर चला जाए और आपसी विवादों में उसी के अहकाम के मुताबिक फैसला किया जाए। ख़ुदा की किताब को अगर यह हाकिमाना हैसियत न दी जाए बल्कि अपने मामलात और विवादों को अपनी दुनियावी मस्लेहतों के ताबेअ रखा जाए जो यह ख़ुदा की किताब से इंकार के हममअना होगा, चाहे तबर्रुक के तौर पर उसका कितना ही ज्यादा जाहिरी एहतराम किया जाता हो। जो लोग अपने को मुस्लिम कहें मगर उनका हाल यह हो कि वे इख़्तियार और आजादी रखते हुए भी अपने मामलात का फैसला अल्लाह की किताब के मुताबिक न करें बल्कि ख़्वाहिशों की शरीअत पर चलें वे अल्लाह की नजर में मुंकिर और जालिम और फासिक (उद्दंड) हैं। वे ख़ुदा की हाकिमाना हैसियत का इंकार करने वाले हैं, वे हक के तल्फ करने वाले हैं, वे इताअते ख़ुदावंदी के अहद से निकल जाने वाले हैं। शरीअत के हुक्म को जान बूझकर नजरअंदाज करने के बाद आदमी की कोई हैसियत ख़ुदा के यहां बाकी नहीं रहती।

किसास (समान दंड) के सिलसिले में शरीअत का तकाजा है कि किसी की हैसियत की परवाह किए बग़ैर उसका निफाज किया जाए। ताहम कभी-कभी आदमी की जारिहियत (आक्रामकता) उसकी शरपसंदी का नतीजा नहीं होती बल्कि वक्ती जज्बे के तहत हो जाती है। ऐसी हालत में अगर मजरूह (पीड़ित) जारह को माफ कर दे तो यह उसकी तरफ से जारह (अत्याचारी) के लिए एक सदका होगा और समाज में वुस्अते जर्फ (उच्चादर्श) की फरोग करने का जरिया।

وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَـٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَـٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَٱحْكُم بَيْنَهُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ ٱلْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَٰحِدَةً وَلَـٰكِن لِّيَبْلُوَكُمْ فِى مَآ ءَاتَىٰكُمْ ۖ فَٱسْتَبِقُوا۟ ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ إِلَى ٱللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٨﴾

और हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी हक के साथ, तस्दीक (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मजामीन पर निगहबान। पस तुम उनके दर्मियान फैसला करो उसके मुताबिक जो अल्लाह ने उतारा। और जो हक तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर

उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। हमने तुममें से हर एक लिए एक शरीअत और एक तरीका ठहराया। और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता। मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी आजमाइश करे। पस तुम भलाइयों की तरफ दौड़ो। आख़िरकार तुम सबको ख़ुदा की तरफ पलटकर जाना है। फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा उस चीज से जिसमें तुम इख़्तिलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे थे। (48)

यहां 'किताब' से मुराद दीन की असली और असासी (मौलिक) तालीमात हैं। अल्लाह की यह किताब एक ही किताब है और वही एक किताब, जबान और तर्तीब के फर्क के साथ, तमाम नबियों की तरफ उतारी गई है। ताहम दीन की हकीक्त जिस जाहिरी ढांचे में निरूपित होती है उसमें विभिन्न अंबिया के दर्मियान फर्क पाया जाता है। इस फर्क की वजह यह नहीं कि दीन के उतारने में कोई इरतकाई (चरणबद्ध) तर्तीब है। यानी पहले कम तरक्कीयाफ्ता और ग़ैर कामिल दीन उतारा गया और इसके बाद ज्यादा तरक्कीयाफ्ता और ज्यादा कामिल दीन उतरा। इस फर्क की वजह ख़ुदा की हिक्मते इब्तिला (आज़माइश) है न कि हिक्मते इरतका। कुरआन के मुताबिक ऐसा सिर्फ इसलिए हुआ कि लोगों को आजमाया जाए। जमाना गुजरने के बाद ऐसा होता है कि दीन की अंदरूनी हकीक्त गुम हो जाती है और रीति-रिवाज मुकद्दस होकर अस्ल बन जाते हैं। लोग इबादत इसे समझ लेते हैं कि एक ख़ास ढांचे को जाहिरी शराइत के साथ दोहरा लिया जाए। इसलिए जाहिरी ढांचे में बार-बार तब्दीलियां की गईं ताकि ढांचे की मकसूदियत का जेहन ख़त्म हो और ख़ुदा के सिवा कोई और चीज तवज्जोह का मर्कज न बनने पाए। इसकी एक मिसाल किबले की तब्दीली है। बनी इस्राईल को हुक्म था कि वे बैतुलमक्दिस की तरफ रुख़ करके इबादत करें। यह हुक्म सिर्फ रुख़बंदी के लिए था। मगर धीरे-धीरे उनका जेहन यह बन गया कि बैतुमलमक्दिस की तरफ रुख़ करने का नाम ही इबादत है। उस वक्त पहले हुक्म को बदल कर काबे का किबला बना दिया गया। अब कुछ लोग पहले की रिवायत से लिपटे रहे और कुछ लोगों ने ख़ुदा की हिदायत को पा लिया। इस तरह तब्दीली किब्ले से यह खुल गया कि कौन दरोदीवार को पूजने वाला था और कौन ख़ुदा को पूजने वाला। (सूरा बकरह, 143)

अब इस किस्म की तब्दीली का कोई इम्कान नहीं। क्योंकि ढांचे को नबी बदलता है और नबी अब आने वाला नहीं। ताहम जहां तक अस्ल मक्सूद का तअल्लुक है वह बदस्तूर बाकी है। अब भी ख़ुदा के यहां उसका सच्चा परस्तार वही शुमार होगा जो जाहिरी ढांचे की पाबंदी के बावुजूद जाहिरी ढांचे को मक्सूदियत का दर्जा न दे, जो जवाहिर से जेहन को आजाद करके ख़ुदा की इबादत करे। पहले यह मक्सद जाहिरी ढांचे को तोड़ कर हासिल होता था अब उसे जेहनी शिकस्त व पराभाव के जरिए हासिल करना होगा।

जवाहिर के नाम पर दीन में जो झगड़े हैं वह सिर्फ इसलिए हैं कि लोगों की ग़फलत ने उन्हें अस्ल हकीक्त से बेख़बर कर दिया है। अगर हकीक्त को वे इस तरह पा लें जिस तरह वह आख़िरत में दिखाई देगी तो तमाम झगड़े अभी ख़त्म हो जाएं।

وَأَنِ احْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَن
يَفْتِنُوكَ عَن بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
أَن يُصِيبَهُم بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾ أَفَحُكْمَ
الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾

और उनके दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो और उन लोगों से बचो कि कहीं वह तुम्हें फिसला दें तुम्हारे ऊपर अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से। पस अगर वे फिर जाएं तो जान लो कि अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों की सजा देना चाहता है। और यकीनन लोगों में से ज्यादा आदमी नाफरमान हैं। क्या ये लोग जाहिलियत का फैसला चाहते हैं। और अल्लाह से बढ़कर किसका फैसला हो सकता है उन लोगों के लिए जो यकीन करना चाहें। (49-50)

कुरआन और दूसरे आसमानी सहीफे अलग-अलग किताबें नहीं हैं। ये सब एक ही किताबे इलाही के मुख़्तलिफ एडीशन हैं जिसे यहां 'अलकिताब' कहा गया है। ख़ुदा की तरफ से जितनी किताबें आईं, चाहे वे जिस दौर में और जिस जबान में आई हों, सबका मुश्तरक मजमून एक ही था। ताहम पिछली किताबों के हामिलीन बाद के जमाने में उन्हें उनकी असली सूरत में महफूज न रख सके। इसलिए ख़ुदा ने एक किताबे मुहैमीन (कुरआन) उतारा। यह ख़ुदा की तरफ से उसकी किताब का मुस्तनद एडीशन है और इस आधार पर वह एक कसौटी है जिस पर जांच कर मालूम किया जाए कि बाकी किताबों का कौन सा हिस्सा असली हालत में है और कौन सा वह है जो बदला जा चुका है।

यहूद ख़ुदा के सच्चे दीन के साथ अपनी बातों को मिलाकर एक ख़ुदसाख़्ता दीन बनाए हुए थे। इस ख़ुदसाख़्ता दीन से उनकी अकीदतें भी वाबस्ता थीं और उनके मफादात भी। इसलिए वह किसी तरह तैयार न थे कि उसे छोड़कर पैग़म्बर के लाए हुए बेआमेज (विशुद्ध) दीन को मान लें। उन्होंने हक के आगे झुकने के बजाए अपने लिए यह तरीका पसंद किया कि वे हक के अलमबरदार को इतना ज्यादा परेशान करें कि वह खुद उनके आगे झुक जाए, वह ख़ुदा के सच्चे दीन को छोड़कर उनके अपने बनाए हुए दीन को इख़्तियार कर ले। ख़ुदा अगर चाहता तो पहले ही मरहले में इन जालिमों का हाथ रोक देता और वे हक के दाओ को सताने में कामयाब न होते। मगर अल्लाह ने उन्हें छूट दी कि वे अपने नापाक मंसूबों को बरूएकार ला सकें। ऐसा इसलिए हुआ ताकि यह बात पूरी तरह खुल जाए कि दीनदारी के ये दावेदार सबसे ज्यादा बेदीन लोग हैं। वे ख़ुदा के परस्तार नहीं हैं बल्कि ख़ुद अपनी जात के परस्तार हैं। अल्लाह की यह सुन्नत अगरचे हक के दाजियों के लिए बड़ा सख़्त इम्तेहान है। मगर यही वह अमल है जिसके जरिए यह फैसला होता है कि कौन जन्नत का मुस्तहिक

है और कौन जहन्नम का।

इंसान की यह कमजोरी है कि वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलना चाहता है, अल्लाह के हुक्म का पाबंद बनकर रहना उसे गवारा नहीं होता। यहां तक कि दीने ख़ुदावंदी की ख़ुदसाख़्ता तशरीह करके वह उसे भी अपनी ख़्वाहिशों के सांचे में ढाल लेता है। ऐसी हालत में बेआमेज (विशुद्ध) दीन को वही लोग कुबूल करेंगे जो चीजों को ख़्वाहिश की सतह पर न देखते हों बल्कि इससे ऊपर उठकर अपनी राय कायम करते हों। अल्लाह की बात बिलाशुबह सहीतरीन बात है। मगर मौजूदा आजमाइशी दुनिया में हर सच्चाई पर एक शुबह का पर्दा डाल दिया गया है। आदमी का इम्तेहान यह है कि वह इस पर्दे का फाड़कर उस पर यकीन करे, वह ग़ैब (अप्रकट) को शुहूद (प्रकट रुप) में देख ले। जो शख़्स जाहिरी शुब्हात में अटक जाए वह नाकाम हो गया और जो शख़्स जाहिरी शुब्हात के ग़ुबार को पार करके सच्चाई को पा ले वह कामयाब रहा।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلْيَهُودَ وَٱلنَّصَٰرَىٰٓ أَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥١﴾
فَتَرَى ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَٰرِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰٓ أَن تُصِيبَنَا
دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَى ٱللَّهُ أَن يَأْتِىَ بِٱلْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِۦ فَيُصْبِحُوا۟ عَلَىٰ مَآ أَسَرُّوا۟
فِىٓ أَنفُسِهِمْ نَٰدِمِينَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُولُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَهَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَقْسَمُوا۟ بِٱللَّهِ
جَهْدَ أَيْمَٰنِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ فَأَصْبَحُوا۟ خَٰسِرِينَ ﴿٥٣﴾

ऐ ईमान वालो, यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ। वे एक दूसरे के दोस्त हैं। और तुममें से जो शख़्स उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है वे उन्हीं की तरफ दौड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि हमें यह अंदेशा है कि हम किसी मुसीबत में न फंस जाएं। तो मुमकिन है कि अल्लाह फ्तह दे दे या अपनी तरफ से कोई ख़ास बात जाहिर करे तो ये लोग उस चीज पर जिसे ये अपने दिलों में छुपाए हुए हैं नादिम होंगे। और उस वक्त अहले ईमान कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो जोर शोर से अल्लाह की कसमें खाकर यकीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके सारे आमाल जाए (नष्ट) हो गए और वे घाटे में रहे। (51-53)

अरब में मुसलमान अभी एक नई ताकत की हैसियत रखते थे। साथ ही यह कि उनके मुख़ालिफीन उन्हें उखाड़ने की कोशिश में रात दिन लगे हुए थे। दूसरी तरफ मुल्क के यहूदी और ईसाई कबीलों का यह हाल था कि मुल्क के अधिकतर आर्थिक साधनों पर उनका कब्जा था। सदियों की तारीख़ ने उनकी अज्मत लोगों के दिलों पर बिठा रखी थी। लोगों को यकीन नहीं था कि ऐसी ताकत को मुल्क से ख़त्म किया जा सकता है। चुनांचे मुसलमानों की जमाअत में जो

कमजोर लोग थे वे चाहते थे कि इस्लाम की जद्दोजहद में इस तरह शरीक न हों कि यहूद व नसारा को अपना दुश्मन बना लें। ताकि यह कशमकश अगर मुसलमानों की शिकस्त पर ख़त्म हो तो यहूद व नसारा की तरफ से उन्हें किसी इंतिकामी कार्रवाई का सामना न करना पड़े। ये लोग मुस्तकबिल के संभावी ख़तरे से बचने के लिए अपने को वक्त के यकीनी ख़तरे में मुब्तला कर रहे थे, और वह उनकी दोहरी वफादारी थी। जो शख़्स हानिरहित मामलात में हकपरस्त बने और हानि का अंदेशा हो तो बतिलपरस्तों का साथ देने लगे, उसका अंजाम ख़ुदा के यहां उन्हीं लोगों में होगा जिनका उसने ख़तरे के मौकों पर साथ दिया।

किसी की जिंदगी में वह वक्त बड़ा नाजुक होता है जबकि इस्लाम पर कायम रहने के लिए उसे किसी किस्म की कुर्बानी देनी पड़े। ऐसे मौके आदमी के इस्लाम की तस्दीक या तरदीद करने के लिए आते हैं। ख़ुदा चाहता है कि आदमी जिस इस्लाम का सुबूत बे-ख़तर हालात में दे रहा था उसी इस्लाम का सुबूत वह उस वक्त भी दे जबकि जज्बात को दबा कर या जान व माल का ख़तरा मोल लेकर आदमी अपने इस्लाम का सुबूत पेश करता है। इस इम्तेहान में पूरा उतरने के बाद ही आदमी इस काबिल बनता है कि उसका ख़ुदा उसे अपने वफादार बंदों में लिख ले। इन मौकों पर इस्लामियत का सुबूत देना ही किसी आदमी के पिछले आमाल को बा-कीमत बनाता है। और अगर वह ऐसे मौकों पर इस्लामियत का सुबूत न दे सके तो इसका मतलब यह है कि उसने अपने पिछले तमाम आमाल को बे-कीमत कर लिया।

दुनिया का हर इम्तेहान इरादे का इम्तेहान है। आदमी को सिर्फ यह करना है कि वह ख़तरात को नजरअंदाज करके इरादे का सुबूत दे दे, वह अल्लाह की तरफ अपना पहला कदम उठा दे। उसके बाद फौरन ख़ुदा की मदद उसका सहारा बन जाती है। मगर जो शख़्स इरादे का सुबूत न दे, जो ख़ुदा की तरफ अपना पहला कदम न उठाए वह अल्लाह की नजर में जालिम है। ऐसे लोगों को ख़ुदा एकतरफा तौर पर अपनी मदद का सहारा नहीं भेजता।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِۦ فَسَوْفَ يَأْتِى ٱللَّهُ بِقَوْمٍ
يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ يُجَٰهِدُونَ فِى
سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ
وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ
ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ
وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ ﴿٥٦﴾

ऐ ईमान वालो, तुममें से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उन्हें महबूब होगा। वे मुसलमानों के लिए नर्म और मुंकिरों के ऊपर सख़्त होंगे। वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और

किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है। वह जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह वुस्अत वाला और इल्म वाला है। तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमान वाले हैं जो नमाज क़ायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही ग़ालिब रहने वाली है। (54-56)

ईमान लाने के बाद जो शख़्स ईमान के तकाजे पूरे न करे वह अल्लाह की नजर में दीन को कुबूल करने के बाद दीन से फिर गया। अल्लाह की नजर में सच्चे ईमान वाले लोग वे हैं जिनके अंदर ईमान इस तरह दाख़िल हो कि उन्हें मुहब्बत की सतह पर अल्लाह से तअल्लुक पैदा हो जाए, उन्हें इस्लामी मकासिद की तकमील इतनी अजीज हो कि जो लोग इस्लाम की राह में उनके भाई बनें उनके लिए उनके दिल में नर्मी और हमदर्दी के सिवा कोई चीज बाकी न रहे। वे मुसलमानों के लिए इस दर्जे शफ़ीक बन जाएं कि उनकी ताक़त और उनकी सलाहियत कभी मुसलमानों के मुकाबले में इस्तेमाल न हो। वे दीन के मामले में इतने पुख़्ता हों कि ग़ैर इस्लामी लोगों के अफ़्कार (विचार) व आमाल से कोई असर कुबूल न करें। उनके जज्बात इस दर्जे उसूल के ताबेअ हो जाएं कि मुसलमानों के लिए वे फूल से ज्यादा नाजुक साबित हों मगर नामुसलमानों के लिए वे पत्थर से ज्यादा सख़्त बन जाएं। कोई नामुसलमान कभी उन्हें अपने मकासिद के लिए इस्तेमाल न कर सके।

इस्लामी जिंदगी एक बामक्सद जिंदगी है और इसी लिए वह जद्दोजहद की जिंदगी है। मुसलमान का मिशन यह है कि वह अल्लाह के दीन को अल्लाह के तमाम बंदों तक पहुंचाए। जहन्नम की तरफ जाती हुई दुनिया को जन्नत के रास्ते पर लाने की कोशिश करे। इस काम के फित्री तकाजे के तौर पर आदमी के सामने तरह-तरह की मुश्किलें और तरह-तरह की मलामतें पेश आती हैं। यहां तक कि दो अलग-अलग गिरोह बन जाते हैं। एक दुनियापरस्तों का और दूसरा आख़िरत के मुसाफिरों का। उनके दर्मियान एक मुस्तकिल कशमकश शुरू हो जाती है। आदमी का इम्तेहान यह है कि इन सारे मौकों पर वह उस इंसान का सुबूत दे जो अल्लाह के भरोसे पर चल रहा है और अल्लाह के सिवा किसी की परवाह किए बग़ैर अपना इस्लामी सफर जारी रखता है। यहां तक की मौत के दरवाजे में दाख़िल होकर ख़ुदा के पास पहुंच जाता है।

इस तरह के लोग किसी मकाम पर जब काबिले लिहाज तादाद में पैदा हो जाएं तो जमीन का ग़लबा भी उन्हीं के लिए मुकद्दर कर दिया जाता है। ये वे लोग हैं जो नमाज कायम करते हैं। यानी उनका मर्कजे तवज्जोह तमामतर अल्लाह बन जाता है। वे जकात अदा करते हैं। यानी उनके बाहमी तअल्लुकात एक दूसरे की ख़ैरख़्वाही पर कायम होते हैं, वे अल्लाह के आगे झुकने वाले होते हैं। यानी दुनिया के मामलात में कोई भी चीज उन्हें अनानियत (अंहकार) पर आमादा नहीं करती बल्कि वे हर मौके पर वही करते हैं जो अल्लाह चाहे। वह तवाजोअ (विनम्रता) इख़्तियार करने वाले होते हैं न कि सरकशी करने वाले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا
أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكَ
مَثُوبَةً عِندَ اللَّهِ ۚ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ
وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾

ऐ ईमान वालो, उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मजाक और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और न मुंकिरों को। और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे मजाक और खेल बना लेते हैं। इसकी वजह यह है कि वे अक्ल नहीं रखते। कहो कि ऐ अहले किताब, तुम हमसे सिर्फ इसलिए जिद रखते हो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतरा। और तुम में से अक्सर लोग नाफरमान हैं। कहो क्या मैं तुम्हें बताऊं वह जो अल्लाह के यहां अंजाम के एतबार से इससे भी ज्यादा बुरा है। वह जिस पर ख़ुदा ने लानत की और जिस पर उसका ग़ज़ब हुआ। और जिनमें से बन्दर और सुअर बना दिए और उन्होंने शैतान की परस्तिश की। ऐसे लोग मकाम के एतबार से बदतर और राहेरास्त से बहुत दूर हैं। (57-60)

वे लोग जो ख़ुदसाख़्ता दीन की बुनियाद पर ख़ुदापरस्ती के इजारेदार बने हुए हों उनके दर्मियान जब सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत उठती है तो उसके ख़िलाफ वे इतनी शदीद नफरत में मुब्तिला होते हैं कि अपनी माकूलियत तक खो बैठते हैं। यहां तक कि ऐसी चीजें जो बिला इख़्तिलाफ काबिले एहतराम हैं उनका भी मजाक उड़ाने लगते हैं। यही मदीना के यहूद का हाल था। चुनांचे वे मुलसमानों की अजान का मजाक उड़ाने से भी नहीं रुकते थे। जो लोग इतने बेहिस और इतने ग़ैर संजीदा हो जाएं उनसे एक मुसलमान का तअल्लुक दावत (आह्वान) का तो हो सकता है मगर दोस्ती का नहीं हो सकता।

उन लोगों की ख़ुदा से बेख़ौफी का यह नतीजा होता है कि वे सच्चे मुसलमानों को मुजरिम समझते हैं और अपने तमाम जराइम के बावुजूद अपने मुतअल्लिक यह यकीन रखते हैं कि उनका मामला ख़ुदा के यहां बिल्कुल दुरुस्त है। जब वे अपनी इस कैफियत की इस्लाह नहीं करते तो बिलआख़िर उनकी बेहिसी उन्हें इस नौबत तक पहुंचाती है कि उनकी अक्ल

हक व बातिल के मामले में कुंद हो जाती है। वे शक्ल के एतबार से इंसान मगर बातिन के एतबार से बदतरीन जानवर बन जाते हैं। वे लतीफ एहसासात जो आदमी के अंदर ख़ुदा के चौकीदार की तरह काम करते हैं, जो उसे बुराइयों से रोकते हैं वे उनके अंदर ख़त्म हो जाते हैं। मसलन हया, शराफ़त, कुरुअते जर्फ़, पाकीज़ा तरीक़ों को पसंद करना, वग़ैरह। इस गिरावट का आख़िरी दर्जा यह है कि आदमी की पूरी जिंदगी शैतानी रास्तों पर चल पड़े। जब कोई गिरोह इस नौबत को पहुंचता है तो वह लानत का मुस्तहिक बन जाता है, वह ख़ुदा की रहमत से आख़िरी हद तक दूर हो जाता है। उसकी इंसानियत मिट जाती है वह फितरत के सीधे रास्ते से भटक कर जानवरों की तरह जीने लगता है।

इंसान को अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलने से जो चीज रोकती है वह अक्ल है। मगर जब आदमी पर जिद और अदावत का ग़लबा होता है तो उसकी अक्ल उसकी ख़्वाहिश के नीचे दबकर रह जाती है। अब वह जाहिर में इंसान मगर बातिन में हैवान होता है। यहां तक कि साहिबे बसीरत आदमी उसे देखकर जान लेता है कि उसके जाहिरी इंसानी ढांचे में अंदर कौन सा हैवान छुपा हुआ है।

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि वे मुंकिर आए थे और मुंकिर ही चले गए। और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज को जिसे वे छुपा रहे हैं। और तुम उनमें से अक्सर को देखोगे कि वे गुनाह और जुल्म और हराम खाने पर दौड़ते हैं। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। उनके मशाइख़ (संत) और उलमा (विद्वान) उन्हें क्यों नहीं रोकते गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। (61-63)

मदीना के यहूदियों में कुछ लोग थे जो इस्लाम से जेहनी तौर पर मरऊब थे। साथ ही इस्लाम का बढ़ता हुआ ग़लबा देखकर खुल्लम खुल्ला उसका हरीफ (प्रतिपक्षी) बनना भी नहीं चाहते थे। ये लोग अगरचे अंदर से अपने आबाई दीन पर जमे हुए थे मगर अल्फाज बोलकर जाहिर करते थे कि वे भी मोमिन हैं। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि अस्ल मामला किसी इंसान से नहीं बल्कि ख़ुदा से है। और ख़ुदा वह है जो दिलों तक का हाल जानता है। वह किसी से जो मामला करेगा हकीकत के एतबार से करेगा न कि उन अल्फ़ाज की बिना पर जो उसने मस्लेहत के तौर पर अपने मुंह से निकाला था।

यहूद के ख़्वास (विशिष्ट जनों) में दो किस्म के लोग थे। एक रिब्बी जिन्हें मशाइख़ (धर्म गुरू) कहा जा सकता है। दूसरे अहबार जो उनके उलमा (विद्वानों) और फुक़हा (आचार शास्त्री) के मानिन्द थे। दोनों किस्म के लोग अगरचे दीन ही को अपना सुबह व शाम का मशगला बनाए हुए थे। दीन के नाम पर उनकी कयादत (नेतृत्व) कायम थी और दीन ही के नाम पर उन्हें बड़ी-बड़ी रकमें मिलती थीं। मगर उनकी कयादत व मकबूलियत का राज अवामपसंद दीन की नुमाइंदगी थी न कि ख़ुदापसंद दीन की नुमाइंदगी। उनका बोलना और उनका चलना बजाहिर दीन के लिए था। मगर हकीकतन वह एक किस्म की दुनियादारी थी जो दीन के नाम पर जारी थी। वे दीन के नाम पर लोगों को वही चीज दे रहे थे जिसे वे दीन के बग़ैर अपने लिए पसंद किए हुए थे।

ख़ुदा का पसंदीदा दीन तकवे का दीन है। यानी यह कि आदमी लोगों के दर्मियान इस तरह रहे कि उसकी जबान गुनाह के कलिमात न बोले, वह अपनी सरगर्मियों में हराम तरीकों से पूरी तरह बचता हो। जिन लोगों से उसका मामला पेश आए उनके साथ वह इंसाफ करने वाला हो न कि जुल्म करने वाला। मगर आदमी का नफ्स हमेशा उसे दुनियापरस्ती के रास्ते पर डाल देता है। वह ऐसी जिंदगी गुजारना चाहता है जिसमें उसे सही और ग़लत न देखना हो बल्कि सिर्फ अपने फायदों और मस्लेहतों को देखना हो। यहूद के अवाम इसी हालत पर थे। अब उनके ख़्वास का काम यह था कि वे उन्हें इससे रोकते। मगर उन्होंने अवाम से एक ख़ामोश मुफ़ाहमत कर ली। वे अवाम के दर्मियान ऐसा दीन तक़्सीम करने लगे जिसमें अपनी हकीकी जिंदगी को बदले बग़ैर नजात की जमानत हो और बड़े-बड़े दरजात तै होते हों। ये ख़्वास अपने अवाम की हकीकी जिंदगियों को न छेड़ते अलबत्ता उन्हें मिल्लते यहूद की फजीलत के झूठे किस्से सुनाते। उनके कौमी हंगामों को दीन के रंग में बयान करते। रस्मी किस्म के आमाल दोहरा देने पर यह बशारत देते कि इनके जरिए से उनके लिए जन्नत के महल तामीर हो रहे हैं। अल्लाह के नजदीक यह बहुत बुरा काम है कि लोगों के दर्मियान ऐसा दीन तक़्सीम किया जाए जिसमें हकीकी अमली जिंदगी को बदलना न हो, अलबत्ता कुछ नुमाइशी चीजों का एहतिमाम करके जन्नत की जमानत मिल जाए।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾

और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बंध जाएं और लानत हो उन्हें इस कहने पर। बल्कि ख़ुदा के दोनों हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से जो कुछ उतरा है वह उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और इंकार को बढ़ा रहा है। और हमने उनके दर्मियान

दुश्मनी और कीना कियामत तक के लिए डाल दिया है। जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे जमीन में फसाद फैलाने में सरगर्म हैं। हालांकि अल्लाह फसाद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता। (64)

कुरआन में जब अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर जोर दिया गया और कहा गया कि अल्लाह को कर्जे हसन दो तो यहूद ने इसे मजाक का विषय बना लिया। वे कहते कि अल्लाह फकीर है और उसके बंदे अमीर हैं। अल्लाह के हाथ आजकल तंग हो रहे हैं। उनकी इस किस्म की बातों का रुख़ ख़ुदा की तरफ नहीं बल्कि रसूल और कुरआन की तरफ होता था। वे जानते थे कि ख़ुदा इससे बरतर है कि उसके यहां किसी चीज की कमी हो। इस तरह की बातें वे दरअस्ल यह जाहिर करने के लिए कहते थे कि रसूल सच्चा रसूल नहीं। और कुरआन ख़ुदा की किताब नहीं। अगर यह कुरआन ख़ुदा की तरफ से होता तो (नऊजुबिल्लाह) ऐसी मजहकाख़ेज बातें इसमें न होतीं। मगर जो लोग इस किस्म की बातें करें वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि वे हकीकी दीनी जज्बे से ख़ाली हैं, वे बेहिसी की सतह पर जी रहे हैं।

मौजूदा इम्तेहानी दुनिया में इंसान को अमल की आजादी है। यहां एक शख़्स यह भी कह सकता है कि 'कुरआन ख़ुदा की किताब है' और अगर कोई शख़्स यह कहना चाहे कि 'कुरआन एक बनावटी किताब है' तो उसे भी अपनी बात कहने के लिए अल्फाज मिल जाएंगे। यही वजह है कि यहां आदमी एक वाकये से हिदायत पकड़ सकता है और उसी वाकये से दूसरा आदमी सरकशी की ग़िजा भी ले सकता है।

यहूद ने जब कुरआन की हिदायत को मानने से इंकार किया तो वह सादा मअनों में महज इंकार न था बल्कि इसके पीछे उनका यह जोम शामिल था कि हम तो नजातयाफ्ता लोग हैं, हमें किसी और हिदायत को मानने की क्या जरूरत। जो लोग इस किस्म की पुरफख़्र नफ्सियात में मुब्तला हों उनके अंदर शदीदतरीन किस्म की अनानियत जन्म लेती है। रोजमर्रह की जिंदगी में जब उनका मामला दूसरों से पड़ता है तो वहां भी वे अपनी 'मैं' को छोड़ने पर राजी नहीं होते। नतीजा यह होता है कि पूरा मुआशिरा आपस के इख़्तेलाफ और एनाद (द्वेष) का शिकार होकर रह जाता है।

पैग़म्बर की दावत यह होती है कि आदमी भी उसी इताअते ख़ुदावंदी के दीन को अपना ले जिसे कायनात की तमाम चीजें अपनाए हुए हैं। यही जमीन की इस्लाह है। अब जो लोग पैग़म्बराना दावत की राह में रुकावट डालें वे ख़ुदा की जमीन में फसाद पैदा करने का काम कर रहे हैं। ताहम इंसान को सिर्फ इतनी ही आजादी हासिल है कि वह अपने अंदर के फसाद को बाहर लाए, दूसरों की किस्मत का मालिक बनने की आजादी किसी को नहीं।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ

مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

और अगर अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम जरूर उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत के बाग़ों में दाख़िल करते। और अगर वे तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी जो उन पर उनके रब की तरफ से उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने कदमों के नीचे से। कुछ लोग उनमें सीधी राह पर हैं। लेकिन ज्यादा उनमें ऐसे हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं। (65-66)

तमाम गुमराहियों का अस्ल सबब आदमी का ढीठ हो जाना है। अगर आदमी अल्लाह से डरे तो उसे यह समझने में देर नहीं लग सकती कि कौन सी बात ख़ुदा की तरफ से आई हुई बात है। डर की नफ्सियात उसके अंदर से दूसरे तमाम मुहर्रिकात को ख़त्म कर देगी और आदमी ख़ुदा की बात को फौरन पहचान कर उसे मान लेगा। जब आदमी इस हद तक अपने आपको ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह कर दे तो इसके बाद वह भी ख़ुदा की तवज्जोह का मुस्तहिक हो जाता है। ख़ुदा उसकी बशरी (इंसानी) कमजोरियों को उससे धो देता है और मरने के बाद उसे जन्नत के नेमत भरे बाग़ों में जगह देता है। आदमी की बुराइयां, बअल्फाजे दीगर उसकी नफ्सियाती कमजोरियां वे चीजें हैं जो उसे जन्नत के रास्ते पर बढ़ने नहीं देतीं। ख़ुदा की तौफीक से जो शख़्स अपनी नफ्सियाती कमजोरियों पर काबू पा लेता है वही जन्नत की मंजिल तक पहुंचता है।

जब भी हक की दावत उठती है तो वे लोग इससे भयभीत हो जाते हैं जो साबिका निजाम के तहत सरदारी का मकाम हासिल किए हुए हों। उन्हें अंदेशा होता है कि इसको कुबूल करते ही उनके मआशी (आर्थिक) मफादात और उनकी कायदाना अज्मतें ख़त्म हो जाएंगी। मगर यह सिर्फ तंगनजरी है। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जिस चीज को वह वहशत की नजर से देख रहे हैं वह सिर्फ उनकी अहलियत को जांचने के लिए जाहिर हुई है। आइंदा वे ख़ुदा के इनामात के मुस्तहिक हों या न हों इसका फैसला उनकी अपनी तहफ्फुजाती (संरक्षण) तदबीरों पर नहीं होगा बल्कि इस पर होगा कि दावते हक के साथ वे क्या रवैया इख़्तियार करते हैं। गोया दावते हक के इंकार के जरिए वे अपनी जिस बड़ाई को बचाना चाहते हैं वही इंकार वह चीज है जो ख़ुदा के नजदीक उनके इस्तेहकाक (पात्रता) को ख़त्म कर रहा है।

आसमानी किताब की हामिल कौमों में हमेशा ऐसा होता है कि अस्ल ख़ुदाई तालीमात में इफरात या तफरीत (बढ़ाकर या घटाकर) वे एक ख़ुदसाख़्ता दीन बना लेती हैं और लम्बी मुद्दत गुजरने के बाद उसके अफराद उससे इस कद्र मानूस हो जाते हैं कि उसी को अस्ल ख़ुदाई मजहब समझने लगते हैं। ऐसी हालत में जब ख़ुदा का सीधा और सच्चा दीन उनके सामने आता है तो वे उसे अपने लिए ग़ैर मानूस पाकर भयभीत होते हैं। यहूद व नसारा का यही हाल था। चुनांचे उनकी बहुत बड़ी अक्सरियत इस्लाम की सदाकत को पाने से कासर रही। सिर्फ चन्द लोग (मसलन नजाशी शाहे हबश, अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह) जो एतदाल की राह पर बाकी थे, उन्हें इस्लाम की सदाकत को समझने में देर नहीं लगी। उन्होंने बढ़कर इस्लाम को इस तरह

अपना लिया जैसे वह पहले से इसी रास्ते पर चल रहे हों और अपने सफ़र के तसलसुल को जारी रखने के लिए मुसलमानों की जमाअत में शामिल हो गए हों।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ ٱلنَّاسِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٦٧﴾

ऐ पैग़म्बर, जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है उसे पहुंचा दो। और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के पैग़ाम को नहीं पहुंचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। अल्लाह यकीनन मुंकिर लोगों को राह नहीं देता। (67)

पैग़म्बरे इस्लाम मुहम्मद (सल्ल०) जब अरब में आए तो ऐसा न था कि वहां दीन का नाम लेने वाला कोई न हो। बल्कि उनका सारा समाज दीन ही के नाम पर कायम था। दीन के नाम पर बहुत से लोग पेशवाई और कयादत का मकाम हासिल किए हुए थे। दीन के नाम पर लोगों को बड़ी-बड़ी रकमें मिलती थीं। दीनी मंसबों का हामिल होना समाज में इज्जत और फ़ख्र की अलामत बना हुआ था। इसके बावुजूद आपको अरब के लोगों की तरफ़ से सख़्ततरीन मुख़ालिफ़त का सामना करना पड़ा। इसकी वजह यह थी कि दीने ख़ुदावंदी के नाम पर उनके यहां एक ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन राइज हो गया था। सदियों की रिवायतों के नतीजे में इस दीन के नाम पर गद्दियां बन गई थीं और मफ़ादात की बहुत सी सूरतें कायम हो गई थीं। ऐसे माहौल में जब पैग़म्बरे इस्लाम ने बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत पेश की तो लोगों को नजर आया कि वह उनकी दीनी हैसियत को बेएतबार साबित कर रही है। उन्हें अंदेशा हुआ कि अगर यह दीन फैला तो उनका वह मजहबी ढांचा ढह जाएगा जिसमें उन्हें बड़ाई का मकाम मिला हुआ है।

यह सूरतेहाल दाऔ के लिए बहुत सख़्त होती है। अपने दावती काम को खुले तौर पर अंजाम देना वक्त की मजहबी ताक़तों से लड़ने के समान बन जाता है। उसे दिखाई देता है कि अगर मैं किसी मुसालेहत के बग़ैर सच्चे दीन की तब्लीग़ करूं तो मुझे सख़्ततरीन रद्देअमल (प्रतिक्रिया) का सामना करना पड़ेगा। मेरा मजाक उड़ाया जाएगा। मुझे बेइज्जत किया जाएगा। मेरी मआशियात तबाह की जाएगी। मेरे ख़िलाफ़ जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयां होंगी। मैं साथियों सहयोगियों से महरूम हो जाऊंगा।

अब उसके सामने दो रास्ते होते हैं। दावती जिम्मेदारियों को अदा करने में दुनियावी मस्लेहतों (हितों) के सिरे हाथ से छूटते हैं। और अगर दुनियावी मस्लेहतों का लिहाज किया जाए तो दावती अमल की पूरी अंजामदेही नामुमकिन नजर आती है। यहां ख़ुदा का वादा दाऔ को यकसू करता है। ख़ुदा का वादा है कि दाऔ अगर अपने आपको ख़ुदा के पैग़ाम की पैग़ामरसानी में लगा दे तो लोगों की तरफ़ से डाली जाने वाली मुश्किलात में ख़ुदा उसके लिए काफ़ी हो जाएगा। दाऔ को चाहिए कि वह सिर्फ़ दावत के तकाज़ों की तकमील में लग जाए और मदऊ (संबोधित) कौम की तरफ़ से डाले जाने वाले मसाइब में वह ख़ुदा पर भरोसा करे।

मुख़ातबीन का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) एक फ़ितरी चीज है और दाऔ को बहरहाल उससे साबिका पेश आता है। मगर उसका असर उसी दायरे तक महदूद रहता है जितना ख़ुदा के कानूने आजमाइश का तकाज़ा है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि मुख़ालिफ़ीन इस हद तक काबूयाफ़्ता हो जाएं कि वह दावती मुहिम को रोक दें या उसे तकमील तक पहुंचने न दें। एक सच्ची दावत का अपने दावती निशाने तक पहुंचना एक ख़ुदाई मंसूबा होता है इसलिए वह लाजिमन पूरा होकर रहता है। इसके बाद मदऊ (संबोधित) गिरोह का मानना उसकी अपनी जिम्मेदारी है जो उसी के बकद्र नतीजाख़ेज़ होती है जितना मदऊ ख़ुद चाहता है।

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَىْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٦٨﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱلَّذِينَ هَادُوا۟ وَٱلصَّٰبِـُٔونَ وَٱلنَّصَٰرَىٰ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾

कह दो, ऐ अहले किताब तुम किसी चीज पर नहीं जब तक तुम कायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ़ से। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा गया है वह यकीनन उनमें से अक्सर की सरकशी और इंकार को बढ़ाएगा। पस तुम इंकार करने वालों के ऊपर अफ़सोस न करो। बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी, जो शख़्स भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत (परलोक) के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (68-69)

यहूद का यह हाल था कि उनके अफ़राद अमलन ख़ुदा के दीन पर कायम न थे। उन्होंने अपने नफ़्स को और अपनी जिंदगी के मामलात को ख़ुदा के ताबेअ नहीं किया था। अलबत्ता ख़ुशगुमानियों के तहत उन्होंने यह अकीदा बना लिया था कि ख़ुदा के यहां उनकी नजात यकीनी है। वे अपनी कौमी फ़ज़ीलत के अफ़सानों और अपने बुज़ुर्गों के तक़द्दुस की दास्तानों में जी रहे थे। मगर अल्लाह के यहां इस किस्म की ख़ुशख़्यालियों की कोई कीमत नहीं। अल्लाह के यहां जो कुछ कीमत है वह सिर्फ़ इस बात की है कि आदमी अल्लाह के अहकाम का पाबंद बने और अपनी हकीकी जिंदगी को ख़ुदा के दीन पर कायम करे।

जो लोग झूठी आरजुओं में जी रहे हों उनके सामने जब यह दावत आती है कि अल्लाह के यहां अमल की कीमत है न कि आरजुओं और तमन्नाओं की तो ऐसी दावत के ख़िलाफ़ वे शदीद रद्देअमल का इज्हार करते हैं। ऐसी दावत में उन्हें अपनी ख़ुशख़्यालियों का महल गिरता हुआ नजर आता है। यह सूरतेहाल उनके लिए आजमाइश बन जाती है। वे ऐसी दावत के सख़्त मुख़ालिफ़ हो जाते हैं। नुमाइशी ख़ुदापरस्ती के अंदर छुपी हुई उनकी ख़ुदपरस्ती

बेपर्दा होकर सामने आ जाती है। जिस दावत से उन्हें रब्बानी ग़िज़ा लेना चाहिए था उससे वे सिर्फ इंकार और सरकशी की ग़िज़ा लेने लगते हैं।

क़दीम ज़माने में जो पैग़म्बर आए उनके मानने वालों की नस्लें धीरे-धीरे मुस्तकिल कौम की सूरत इख़्तियार कर लेती हैं। अब पैग़म्बरों के नमूने पर अमल तो बाकी नहीं रहता। अलबत्ता अपनी अज़्मत और फज़ीलत के क़सीदे क़िस्से कहानियों की सूरत में ख़ूब फैल जाते हैं। हर गिरोह समझने लगता है कि हम सबसे अफ़ज़ल हैं। हमारी नजात यक़ीनी है। अल्लाह के यहां हमारा दर्जा सबसे बढ़ा हुआ है। मगर इस किस्म के गिरोही मज़ाहिब (धर्मों) की ख़ुदा की नज़दीक कोई कीमत नहीं। अल्लाह के यहां हर शख़्स का मुक़दमा इंफ़रादी हैसियत में पेश होगा और उसके मुस्तकबिल की बाबत जो कुछ फैसला होगा वह तमामतर उसके अपने अमल की बुनियाद पर होगा न कि किसी और बुनियाद पर।

ख़ुदा की किताब को कायम करना नाम हैअल्लाह पर यकीन करने का, आख़िरत की पकड़ के अंदेशे को अपने ऊपर तारी करने का और इंसानों के दर्मियान सालेह किरदार के साथ ज़िंदगी गुज़ारने का। यही अस्ल दीन है और हर फ़र्द को यही अपनी ज़िंदगी में इख़्तियार करना है। आसमानी किताब की हामिल कौम की कीमत दुनिया में उसी वक्त है जबकि उसके अफराद उस दीने ख़ुदावंदी पर कायम हों। इससे हटने के बाद वे ख़ुदा की नज़र में बिल्कुल बेकीमत हो जाते हैं, यहां तक कि खुले हुए मुंकिरों और मुश्रिकों से भी ज़्यादा बेकीमत।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَأَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُولٌۢ بِمَا لَا تَهْوَىٰٓ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا۟ وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوٓا۟ أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا۟ وَصَمُّوا۟ ثُمَّ تَابَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا۟ وَصَمُّوا۟ كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और उनकी तरफ बहुत से रसूल भेजे। जब कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होंने झुठलाया और कुछ को क़त्ल कर दिया। और ख़्याल किया कि कुछ ख़राबी न होगी। पस वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह की। फिर उनमें से बहुत से अंधे और बहरे बन गए। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (70-71)

यहूद से अल्लाह ने हज़रत मूसा के ज़रिए ईमान व इताअत का अहद लिया था। वे कुछ दिन उस पर कायम रहे। इसके बाद उनमें बिगाड़ शुरू हो गया। अब अल्लाह ने उनके दर्मियान अपने सुधारक उठाए जो उन्हें अपने अहद की यादिदहानी कराएं। मगर यहूद की बेराही और सरकशी बढ़ती ही चली गई। उन्होंने ख़ुद नसीहत करने वालों की ज़बान बन्द करने की कोशिश की। यहां तक कि कितने लोगों को क़त्ल कर दिया। जब उनकी सरकशी हद को पहुंच गई तो अल्लाह ने बाबिल व नैनवा (इराक) के बादशाह बनू ख़ज़ नस्र को उनके

ऊपर मुसल्लत कर दिया जिसने 586 ई०पू० में यरोशलम पर हमला करके यहूद के मुक़द्दस शहर को ढा दिया और यहूदियों को गिरफ्तार करके अपने मुल्क ले गया ताकि उनसे बेगार ले। इस वाकये के बाद यहूद के दिल नर्म हो गए। उन्होंने अल्लाह से माफी मांगी। अब अल्लाह ने साइरस (शाह ईरान) के ज़रिए उनकी मदद की। साइरस ने 539 ई०पू० में कल्दानियों के ऊपर हमला किया और उन्हें शिकस्त देकर उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद उसने यहूद को जलावतनी (देश निकाला) से नजात दिलाकर उन्हें उनके वतन जाने और वहां दुबारा बसने की इजाज़त दे दी।

अब यहूद को नई ज़िंदगी मिली और उन्हें काफी फराग़ हासिल हुआ। मगर कुछ दिनों के बाद वे दुबारा ग़फलत और सरकशी में मुब्तला हुए। अब फिर नबियों और मुस्लिहीन के ज़रिए अल्लाह ने उन्हें सचेत किया। मगर वे होश में न आए, यहां तक कि उन्होंने हज़रत यहया को क़त्ल कर दिया और (अपनी हद तक) हज़रत मसीह को भी। अब अल्लाह का ग़ज़ब उन पर भड़का और 70 ई० में रूमी शहंशाह टाइटस को उन पर मुसल्लत कर दिया गया। जिसने उनके मुल्क पर हमला करके उन्हें वीरान कर दिया। इसके बाद यहूद कभी अपनी ज़ाती बुनियादों पर खड़े न हो सके।

आसमानी किताब की हामिल कौमों की नफ़्सियात बाद के ज़माने में यह बन जाती है कि वे ख़ुदा के ख़ास लोग हैं। वे जो कुछ भी करें उस पर उनकी पकड़ नहीं होगी। ख़ुदा की तालीमात में इस अक़ीदे के ख़िलाफ खुले खुले बयानात होते हैं। मगर वे उनके बारे में अंधे और बहरे बन जाते हैं। वे अपने गिर्द ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) अक़ीदों और फर्ज़ी क़िस्से कहानियां का ऐसा हाला बना लेते हैं कि ख़ुदा की तंबीहात उन्हें दिखाई और सुनाई नहीं देतीं। यहूद की यह तारीख़ बताती है कि जब भी एक हामिले किताब कौम को उसके 'दुश्मनों के कब्ज़े' में दे दिया जाए तो यह उसके लिए ख़ुदा की तरफ से आज़माइश का वक्त होता है। इसका मतलब यह होता है कि हल्की सज़ा देकर कौम को जगाया जाए। अगर इसके नतीजे में कौम के अफराद में ख़ुदापरस्ताना जज़्बात जाग उठें तो उसके ऊपर से सज़ा उठा ली जाती है। और अगर ऐसा न हो तो ख़ुदा उसे रद्द करके फेंक देता है और फिर कभी उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं होता।

لَقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ ٱلْمَسِيحُ يَٰبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَّقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ ثَالِثُ ثَلَٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّآ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا۟ عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى ٱللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾ مَّا ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۖ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انْظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾ قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

यकीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने मरयम है। हालांकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। जो शख़्स अल्लाह का शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उस पर जन्नत और उसका ठिकाना आग है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। यकीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है। हालांकि कोई माबूद (पूज्य) नहीं सिवाए एक माबूद के। और अगर वे बाज़ न आए उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ्र पर कायम रहने वालों को एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये लोग अल्लाह के आगे तौबा क्यों नहीं करते और उससे माफी क्यों नहीं चाहते। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मसीह इब्ने मरयम तो सिर्फ एक रसूल हैं। उनसे पहले भी बहुत रसूल गुजर चुके हैं। और उनकी मां एक रास्तबाज (नेक) ख़ातून थीं। दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस तरह उनके सामने दलीलें बयान कर रहे हैं। फिर देखो वे किधर उल्टे चले जा रहे हैं। कहो क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक्सान का इख़्तियार रखती है और न नफा का। और सुनने वाला और जानने वाला सिर्फ अल्लाह ही है। (72-76)

हजरत मसीह को अल्लाह तआला ने ग़ैर मामूली मुअजिजे (चमत्कार) दिए। ये मुअजिजे इसलिए थे कि लोग आपके पैग़म्बर होने को पहचानें और आप पर ईमान लाएं। मगर मामला बरअक्स हुआ। ईसाइयों ने आपके मुअजिजात को देखकर यह अकीदा कायम किया कि आप ख़ुदा हैं। आपके अंदर ख़ुदा हुलूल किए हुए है। यहूद ने यह कहकर आपको नजरअंदाज कर दिया कि यह एक शोअबदाबाज और जादूगर हैं। हजरत मसीह अल्लाह की तरफ से लोगों की हिदायत के लिए आए थे। मगर एक गिरोह ने आपसे शिर्क की ग़िजा ली और दूसरे गिरोह ने इंकार की।

माबूद (पूज्य) वही हो सकता है जो ख़ुद बेएहतियाज (निरपेक्ष) हो और दूसरों को नफा नुक्सान पहुंचाने की कुदरत रखे। खाना आदमी के मोहताज होने की आख़िरी अलामत है। जो खाने का मोहताज है वह हर चीज का मोहताज है। जो शख़्स खाना खाता हो वह मुकम्मल तौर पर एक मोहताज हस्ती है। ऐसी हस्ती ख़ुदा किस तरह हो सकती है। यही मामला नफा नुक्सान का है। किसी को नफा मिलना या किसी को नुक्सान पहुंचना ऐसे वाकेयात है जिनके जहूर में आने के लिए पूरी कायनात की मदद दरकार होती है। कोई भी शख़्स इस किस्म के कायनाती असबाब फराहम करने पर कादिर नहीं। इसलिए इंसानों में से किसी इंसान का यह दर्जा भी नहीं हो सकता कि उसे माबूद मान लिया जाए।

जब भी आदमी ख़ुदा के सिवा किसी और को अपनी अकीदत (आस्था) व मुहब्बत का

मर्कज बनाता है तो उसके पीछे यह छुपा हुआ जज्बा होता है कि उसे ख़ुदा की दुनिया में कोई बड़ा दर्जा हासिल है। वह ख़ुदा के यहां उसका मददगार बन सकता है। मगर इस किस्म की तमाम उम्मीदें महज झूठी उम्मीदें हैं। मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों का बेबस होना खुला हुआ नहीं है। इसलिए यहां आदमी ग़लतफहमी में पड़ा हुआ है। मगर आख़िरत में तमाम हकाइक खोल दिए जाएंगे तो आदमी देखेगा कि ख़ुदा के सिवा जिन सहारों पर वह भरोसा किए हुए था वह किस कद्र बेकीमत थे।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

कहो, ऐ अहले किताब अपने दीन में नाहक ग़ुलू (अति) न करो और उन लोगों के ख़्यालात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हुए और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया। और वे सीधी राह से भटक गए। (77)

हजरत मसीह के इब्तिदाई शागिर्दों के नजदीक मसीह 'एक इंसान था जो ख़ुदा की तरफ से था।' वे आपको इंसान और अल्लाह का रसूल समझते थे। मगर आपका दीन जब शाम के इलाके से बाहर निकला तो उसे मिस्र व यूनान के फ़लसफे से साबिका पेश आया। मसीहियत कुबूल करके ऐसे लोग मसीहियत में दाख़िल हुए जो वक्त के फ़लसफ़ियाना अफ्कार से मुतास्सिर थे। इस तरह अंदरूनी असबाब और बाहरी प्रेरकों के तहत मसीहियत में एक नया दौर शुरू हुआ जबकि मसीहियत को वक्त के ग़ालिब फ़लसफ़ियाना उस्लूब में बयान करने की कोशिश शुरू हुई।

उस जमाने की सभ्य दुनिया में मिस्र व यूनान के फ़लसफ़ियों का जोर था। वक्त के जहीन लोग आम तौर पर उन्हीं के अफ्कार (विचारों) की रोशनी में सोचते थे। यूनानी फ़लसफ़ियों ने अपने कयासात के जरिए आलम की एक ख़्याली तस्वीर बना रखी थी। वे हकीकत की ताबीर तीन अक़्नूमों (Hypostases) की सूरत में करते थे। वुजूद, हयात और इल्म। मसीही उलमा जो ख़ुद भी इन अफ्कार से मरऊब थे, साथ ही वक्त के जहीन तबके को मसीहियत की तरफ मायल करना चाहते थे, उन्होंने अपने मजहब को वक्त के ग़ालिब फ़िक्र पर ढालने की कोशिश की। उन्होंने मसीहियत की ऐसी ताबीर की जिसमें ख़ुदा का दीन भी इसी 'तीन' के जामे में ढल जाए और लोग उसे अपने जेहन के मुताबिक पाकर उसे कुबूल कर लें। उन्होंने कहा कि मजहबी हकीकत भी एक तस्लीस (तीन ख़ुदा) की सूरतगरी है। अक़्नूमे वुजूद बाप है। अक़्नूमे हयात बेटा है और अक़्नूमे इल्म रूहुल कुदुस है। इस कलामी मजहब को मुकम्मल करने के लिए और बहुत से ख़्यालात उसमें दाख़िल किए गए। मसलन यह कि हजरत मसीह 'कलाम' का जसदी जुहूर (भौतिक रूप) हैं। आदम के ज़मीन पर उतरने के बाद हर इंसान गुनाहगार हो चुका है और इंसान की नजात (मुक्ति) के लिए ख़ुदा के बेटे को सूली पर चढ़कर इसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) देना पड़ा, वग़ैरह। इस तरह चौथी सदी ईसवी में मिस्री, यूनानी और रूमी विचारों में ढलकर वह चीज तैयार हुई जिसे मौजूदा मसीहियत कहा जाता है।

ख़ुदा के सीधे रास्ते से भटकने की वजह अक्सर यह होती है कि लोग गुमराह कौमों के ख़्यालात से मरऊब होकर दीन को उनके ख़्यालात के सांचे में ढालने लगते हैं। ख़ुदा के दीन को मानते हुए उसकी ताबीर इस ढंग से करते हैं कि वह ग़ालिब अफ्कार के मुताबिक नजर आने लगे। वे ख़ुदा के दीन के नाम पर ग़ैर ख़ुदा के दीन को अपना लेते हैं। नसारा ने अपने दीन को अपने जमाने की मुश्रिक कौमों के अफ्कार में ढाल लिया और उसी को ख़ुदा का मकबूल दीन कहने लगे। यही चीज कभी इस तरह पेश आती है कि दीन को ख़ुद अपने कौमी अजाइम (महत्वाकांक्षाओं) के सांचे में ढाल लिया जाता है। इस दूसरी तहरीफ (परिवर्तन) की मिसाल यहूद हैं। उन्होंने ख़ुदा के दीन की ऐसी ताबीर की कि वह उनकी दुनियावी जिंदगी की तस्दीक करने वाला बन जाए। मुसलमानों के लिए किताबे इलाही के मत्न में इस किस्म की ताबीरात दाख़िल करने का मौका नहीं है। ताहम मत्न (मूल पाठ) के बाहर उन्हें वह सब कुछ करने की आजादी है जो पिछली कौमों ने किया।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾ تَرَىٰ كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨١﴾

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ्र किया उन पर लानत की गई दाऊद और ईसा इब्ने मरयम की जबान से। इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से आगे बढ़ जाते थे। वे एक दूसरे को मना नहीं करते थे बुराई से जो वे करते थे। निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे थे। तुम उनमें बहुत आदमी देखोगे कि कुफ्र करने वालों से दोस्ती रखते हैं। कैसी बुरी चीज है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि ख़ुदा का ग़जब हुआ उन पर और वे हमेशा अजाब में पड़े रहेंगे। अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर और उस पर जो उसकी तरफ उतरा तो वे मुंकिरों को दोस्त न बनाते। मगर उनमें अक्सर नाफरमान हैं। (78-81)

ईमान आदमी को जुल्म और बुराई के बारे में हस्सास (संवेदनशील) बना देता है। वह किसी को जुल्म और बुराई करते देखता है तो तड़प उठता है और चाहता है कि फौरन उसे रोक दे। बुरे लोगों से उसका तअल्लुक जुदाई का होता है न कि दोस्ती का। मगर जब ईमानी जज्बा कमजोर पड़ जाए तो आदमी सिर्फ अपनी जात के बारे में हस्सास होकर रह जाता है। अब उसे सिर्फ वह बुराई बुराई मालूम होती है जिसकी जद उसके अपने ऊपर पड़े। जिस बुराई का रुख़ दूसरों की तरफ हो उसके बारे में वह ग़ैर जानिबदार हो जाता है।

बनी इस्राईल जो इस जवाल का शिकार हुए इसका मतलब यह न था कि उन्होंने अपनी जबान से अच्छी बात बोलना छोड़ दिया था। उनके ख़्वास अब भी ख़ूबसूरत तकरीरें करते थे मगर इस मामले मे वे इतने संजीदा न थे कि जब किसी को जुल्म और बुराई करते देखें तो वहां कूद पड़ें और उसे रोकने की कोशिश करें। हजरत दाऊद अपने जमाने के यहूद के बारे में फरमाते हैं कि उनमें कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं (14)। मगर इसी के साथ आपके कलाम से इसकी तस्दीक होती है कि यहूद अपने हमसायों से सुलह की बातें करते थे जबकि उनके दिलों में बदी होती थी (28)। वे ख़ुदा के आईन (विधान) को बयान करते और ख़ुदा के अहद को जबान पर लाते (50)। हजरत मसीह अपने जमाने के यहूदियों के बारे में फरमाते हैं : ऐ रियाकार फकीहो तुम पर अफसोस, तुम बेवाओं के घरों को दबा बैठे हो और दिखावे के लिए नमाज को लंबा करते हो। तुम पौदीना और सौंफ और जीरे पर तो ज़ोर देते हो पर तुमने शरीअत की ज्यादा भारी बातों यानी इंसाफ, रहम और ईमान को छोड़ दिया है। ऐ अंधे राह बताने वालो मच्छर को छानते हो और ऊंट को निगल जाते हो। ऐ रियाकार फकीहो तुम जाहिर में तो लोगों को रास्तबाज (नेक) दिखाई देते हो मगर अंदर से रियाकारी और बेदीनी से भरे हुए हो। (मत्ता 23)

यहूद ख़ुदा का आईन (विधान) बयान करते थे। वे लम्बी नमाजें पढ़ते और फस्लों में दसवां हिस्सा निकालते। मगर उनकी बातें सिर्फ कहने के लिए होती थीं। वह हानि रहित अहकाम पर नुमाइशी एहतमाम के साथ अमल करते मगर जब साहिबे मामला से इंसाफ करने का सवाल होता, जब एक कमजोर पर रहम का तकाजा होता, जब अपने नफ्स को कुचल कर अल्लाह के हुक्म को मानने की जरूरत होती तो वे फिसल जाते। यहां तक कि अगर कोई ख़ुदा का बंदा उनकी ग़लतियों को बताता तो वे उसके दुश्मन हो जाते। यही चीज थी जिसने उन्हें लानत और ग़जब का मुस्तहिक बना दिया।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾ فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

ईमान वालों के साथ दुश्मनी में तुम सबसे बढ़कर यहूद और मुश्रिकीन को पाओगे। और ईमान वालों के साथ दोस्ती में तुम सबसे ज्यादा उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं। यह इसलिए कि उनमें आलिम और राहिब हैं। और इसलिए कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुम देखोगे कि उनकी आंखों से आंसू जारी हैं इस सबब से कि उन्होंनें हक को पहचान लिया। वे पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए। पस तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और हम क्यों न ईमान लाएं अल्लाह पर और उस हक पर जो हमें पहुंचा है जबकि हम यह आरज़ू रखते हैं कि हमारा रब हमें सालेह (नेक) लोगों में शामिल करे। पस अल्लाह उन्हें इस कौल के बदले में ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यही बदला है नेक अमल करने वालों का। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (82-86)

इस आयत में जन्नत को 'कौल' (कथन) का बदला करार दिया गया है। मगर वह कौल क्या था जिसने उसके कहने वालों को अबदी (चिरस्थाई) जन्नत का मुस्तहिक बना दिया। वह कौल उनकी पूरी हस्ती का नुमाइंदा था। वह उनकी शख़्सियत की फटन की आवाज था। उन्होंने अल्लाह के कलाम को इस तरह सुना कि उसके अंदर जो हक था उसे वह पूरी तरह पा गए। वह उनके दिल व दिमाग़ में उतर गया। इसने उनके अंदर ऐसा इंकिलाब बरपा किया कि उनके हौसलों और तमन्नाओं का मर्कज बदल गया। तअस्सुब और मस्लेहत की तमाम दीवारें ढह पड़ीं। उन्होंने हक के साथ अपने आपको इस तरह शामिल किया कि उससे अलग उनकी कोई हस्ती बाकी न रही। वे इसके गवाह बन गए, और गवाह बनना एक हकीकत का इंसान की सूरत में मुजस्सम होना है। कुरआन अब उनके लिए महज एक किताब न रहा बल्कि मालिके कायनात की जिंदा निशानी बन गया। यह रब्बानी तजर्बा जो उन पर गुजरा बज़ाहिर इसका इज़्हार अगरचे लफ़्ज़ों की सूरत में हुआ था मगर उनके ये अल्फ़ाज अल्फ़ाज न थे बल्कि वह एक जलजला था जिसने उनके पूरे वजूद को हिला दिया। यहां तक कि उनकी आंखों से आंसू बह पड़े।

कौल अपनी हकीकत के एतबार से किसी किस्म के ज़बानी तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) का नाम नहीं। वह आदमी के अमल को मअनवियत (सार्थकता) का रूप देने की आलातरीन सूरत है जिसका इख़्तियार मालूम कायनात में सिर्फ इंसान को हासिल है। एक हकीकी कौल सबसे ज्यादा लतीफ और सबसे ज्यादा बामअना वाक्या है। कौल आदमी की हस्ती का सबसे बड़ा इज़्हार है। कौल बोलने का अमल है। इसलिए जब कोई शख़्स कौल की सतह पर अपनी अबदियत (बंदा होने) का सुबूत दे दे तो वह जन्नत का यकीनी इस्तहकाक (पात्रता) हासिल कर लेता है।

हक को न मानने की सबसे बड़ी वजह हमेशा किब्र होता है। जिनके दिलों में किब्र छुपा हुआ हो वे हक की दावत के मुकाबले में सबसे ज्यादा सख़्त रद्देअमल का इज़्हार करते हैं। और जिन लोगों के अंदर किब्र न हो, चाहे वे दूसरी किसी गुमराही में मुब्तिला हों, वे हक की

मुख़ालिफत में कभी इतना आगे नहीं जा सकते कि उसके जानी दुश्मन बन जाएं। और किसी हाल में उसे कुबूल न करें।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो, उन सुथरी चीजों को हराम न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और हद से न बढ़ो। अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता, और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल चीजें दी हैं उनमें से खाओ। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। अल्लाह तुमसे तुम्हारी बेमअना कसमों पर गिरफ्त नहीं करता। मगर जिन कसमों को तुमने मजबूत बांधा उन पर वह जरूर तुम्हारी गिरफ्त करेगा। ऐसी कसम का कफ्फारा है दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या कपड़ा पहना देना या एक गर्दन आजाद करना। और जिसे मयस्सर न हो वह तीन दिन के रोजे रखे। यह कफ्फारा (प्रायश्चित) है तुम्हारी कसमों का जबकि तुम कसम खा बैठो। और अपनी कसमों की हिफाजत करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र अदा करो। (87-89)

बंदे और ख़ुदा का तअल्लुक एक ज़िंदा तअल्लुक है जो नफ़्सियात की सतह पर कायम होता है। यह तमामतर एक अंदरूनी मामला है। मगर मजहब के जवाल (पतन) के जमाने में जब यह अंदरूनी तअल्लुक कमजोर पड़ता है तो लोगों में यह जेहन उभरता है कि इसे वाह्य साधनों से हासिल करने की कोशिश की जाए। इन्हीं में से दुनियावी लज्जतों को छोड़ना भी है जिसे रहबानियत (सन्यास) कहा जाता है। यह ख़्याल कर लिया जाता है कि माद्दी (सांसारिक) चीजों से दूरी आदमी को ख़ुदा से करीब करने का ज़रिया बनेगी। सहाबा में से कुछ अफराद इस किस्म के रहबानी ख़्यालात से मुतअस्सिर हुए। उन्होंने इरादा किया कि वे गोश्त न खाएं। रातों को न सोएं। अपने आपको ख़सी करा लें। और घरों को छोड़कर दुर्वेशी की जिंदगी इख़्तियार कर लें। यहां तक कि कुछ ने इसकी कसमें भी खा लीं। इस पर उन्हें मना किया गया और कहा गया कि हलाल को हराम करने से कोई शख़्स ख़ुदा की कुरबत हासिल

नहीं कर सकता। आदमी जो कुछ हासिल करता है फितरत की हदों में रहकर हासिल करता है न कि उससे आजाद होकर।

इस्लाम के मुताबिक अस्ल 'रहबानियत' तक्वा और शुक्र है। तक्वा यह है कि आदमी ख़ुदा की मना की हुई चीजों से बचे। उसके अंदर यह ख़्वाहिश उभरती है कि एक हराम चीज से लज्ज़त हासिल करे मगर वह ख़ुदा के डर से रुक जाता है। किसी के ऊपर ग़ुस्सा आ जाता है और वह चाहने लगता है कि उसे तहस नहस कर दे मगर ख़ुदा का डर उसे अपने भाई के ख़िलाफ तख़्रीबी कार्रवाई से रोक देता है। उसका दिल कहता है कि बेकैद जिंदगी गुजारे मगर ख़ुदा की पकड़ का अंदेशा उसे मजबूर करता है कि वह अपने को खुदा की मुकर्रर की हुई हदों का पाबंद बना ले। यही मामला शुक्र का है। आदमी को कोई दुनियावी चीज हासिल होती है। सेहत, दौलत, ओहदा, साजोसामान, मकबूलियत का कोई हिस्सा उसको मिलता है। मगर वह ख़ुदपसंदी और घमंड में मुब्तिला नहीं होता बल्कि हर चीज को ख़ुदा की देन समझ कर उसके एहसान का एतराफ करता है। वह तवाजोअ (विनम्रता) और ममनूनियत (सुशीलता) के जज्बात में ढल जाता है। यही वे चीजे हैं जो आदमी को ख़ुदा से जोड़ती हैं। ख़ुदा से डरने और उसका शुक्र अदा करने से आदमी उसकी कुरबत (समीपता) हासिल करता है। माद्दी (भौतिक) चीजों से दूरी यकीनन मत्लूब है। मगर वह जेहनी व कल्बी (दिली) दूरी है न कि जिस्मानी दूरी।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ
الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ
اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا
عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا
ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

ऐ ईमान वालो, शराब और जुआ और देव-स्थान और पांसे सब गंदे काम हैं शैतान के। पस तुम इनसे बचो ताकि तुम फलाह (कल्याण) पाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुऐ के जरिए तुम्हारे दर्मियान दुश्मनी और बुग्ज (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे। तो क्या तुम इनसे बाज आओगे। और इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और बचो। अगर तुम ऐराज (उपेक्षा) करोगे तो जान लो कि हमारे रसूल के जिम्मे सिर्फ खोल कर पहुंचा देना है। जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन पर उस चीज में कोई गुनाह नहीं जो वे खा चुके। जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किया। फिर डरे और ईमान लाए

फिर डरे और नेक काम किया। और अल्लाह नेक काम करने वालों के साथ मुहब्बत रखता है। (90-93)

शराब और जुआ और वे आस्ताने जो ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे को पूजने या किसी और के नाम पर नज्र और कुर्बानी चढ़ाने के लिए हों और पांसा यानी फालगीरी और कुरआअंदाजी (अनुमान एवं संयोग) के वे तरीके जिनमें ग़ैर-अल्लाह से इस्तआनत (मदद) का अकीदा शामिल हो, ये सब गंदे शैतानी काम हैं। इसकी वजह यह है कि ये चीजें इंसान को जेहनी व अमली पस्ती की तरफ ले जाती हैं। शराब आदमी के अंदर लतीफ इंसानी एहसासात को ख़त्म कर देती है और जुआ बेग़र्जी की नफ्सियात के लिए कातिल है। इसी तरह थान व पांसे वे चीजें हैं जिनकी बुनियाद या तो सतही जज्बात पर कायम होती है या अंधविश्वास पर।

इस्लाम यह चाहता है कि इंसान अल्लाह की याद करने वाला और उसकी इबादत करने वाला बन जाए। वह ख़ुदा की और उसके पैग़म्बर की इताअत में अपने को डाल दे। इन कामों के लिए आदमी का संजीदा होना जरूरी है। मगर मज्कूरा चीजें आदमी के अंदर से सबसे ज्यादा जो चीज ख़त्म करती हैं वह संजीदगी ही है। इस्लाम वह इंसान बनाना चाहता है जो हकीकतों का इदराक (ज्ञान) करे, जबकि शराब आदमी को हकीकतों से ग़ाफिल कर देने वाली चीज है। इस्लाम का मत्लूब इंसान वह है जो माद्दियत (भौतिकवाद) से बुलन्द होकर जिए, जबकि जुआ आदमी को मुजरिमाना हद तक माद्दियत की तरफ मायल कर देता है। इस्लाम वह इंसान बनाना चाहता है जो वाकेआत की बुनियाद पर अपने को खड़ा करे, जबकि आस्ताने और पांसे इंसान को तवह्हुमात (अंधविश्वासों) की वादियों में गुम कर देते हैं।

शराब बढ़ी हुई बेहिसी पैदा करती है और जुआ बढ़ी हुई ख़ुदग़र्जी। और ये दोनों चीजें बाहमी फसाद की जड़ हैं। जो लोग बेहिस हो जाएं वे दूसरे की इज्जत को इज्जत और दूसरे की चीज को चीज नहीं समझते। ऐसे लोग जुल्म, बेइंसाफी, दूसरे को नाहक सताने में आख़िरी हद तक जरी हो जाते हैं। इसी तरह जुआ इस्तहसाल (शोषण) और खुदग़र्जी की बदतरीन सूरत है जबकि एक आदमी यह कोशिश करता है कि वह बहुत से लोगों को लूटकर अपने लिए एक बड़ी कामयाबी हासिल करे। शराबी आदमी दूसरों के दुख दर्द को महसूस करने में असमर्थ होता है और जुऐबाज के लिए दूसरा आदमी सिर्फ शोषण की वस्तु होता है, इन खुसूसियात के लोग जिस समाज में जमा हो जाएं वहां आपस की बेएतमादी, एक दूसरे से शिकायतें, बाहमी टकराव और दुश्मनी के सिवा और क्या चीज परवरिश पाएगी।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَىْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ
وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ
مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًاۢ
بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ

عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह तुम्हें उस शिकार के जरिए से आजमाइश में डालेगा जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और तुम्हारे नेज़ों की जद में होगा ताकि अल्लाह जाने की कौन शख़्स उससे बिना देखे डरता है। फिर जिसने इसके बाद ज्यादती की तो उसके लिए दर्दनाक अजाब है। ऐ ईमान वालो, शिकार को न मारो जबकि तुम हालते एहराम में हो। और तुममें से जो शख़्स उसे जान बूझकर मारे तो इसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है जिसका फैसला तुममें से दो आदिल आदमी करेंगे और यह नजराना काबा पहुंचाया जाए। या इसके कफ्फारे (प्रायश्चित) में कुछ मोहताजों को खाना खिलाना होगा। या इसके बराबर रोजे रखने होंगे, ताकि वह अपने किए की सजा चखे। अल्लाह ने माफ किया जो कुछ हो चुका। और जो शख़्स फिरेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह जबरदस्त है बदला लेने वाला है। (94-95)

हज या उमरे के लिए यह क़ायदा है कि काबा पहुंचने से पहले मुक़र्ररह मक़ामात से एहराम बांध लिया जाता है। इसके बाद काबा तक के सफर में जानवर या चिड़ियां सामने आती हैं जिन्हें बाआसानी शिकार किया जा सकता हो। मगर ऐसे शिकार को हराम करार दिया गया है। आदमी चाहे खुद शिकार करे या दूसरे को शिकार करने में मदद दे, दोनों चीजें एहराम की हालत में नाजाइज हैं। रिवायात के मुताबिक यह आयत हुदैबिया के सफ़र में उतरी जबकि मुसलमानों ने उमरे के इरादे से एहराम बांध रखा था। उस वक्त चिड़ियां और जानवर कसीर तादाद में इतने क़रीब फिर रहे थे कि बाआसानी उन्हें तीर या नेजे से मारा जा सकता था। मुसलमान उस वक्त अपनी आदत और जरूरत के तहत चाहते भी थे कि उनका शिकार करें। मगर हुक्म उतरते ही हर एक ने अपना हाथ रोक लिया। यह हुक्म जो एहराम की हालत में जानवरों के बारे में दिया गया है वही रोज़मर्रह की जिंदगी में आम इंसानों के साथ मत्लूब है।

इस हुक्म का अस्ल मक्सद यह है कि 'अल्लाह जान ले कि कौन है जो अल्लाह को देखे बग़ैर अल्लाह से डरता है।' दुनिया में इंसान को रख कर ख़ुदा उसकी नजरों से ओझल हो गया है। अब वह देखना चाहता है कि लोगों में कौन इतना हक़ीक़त शनास है कि बजाहिर ख़ुदा को न देखते हुए भी इस तरह रहता है जैसे कि वह उसे उसकी तमाम ताकतों के साथ देख रहा है और कौन इतना ग़ाफ़िल है कि ख़ुदा को अपने सामने न पाकर बेख़ौफ हो जाता है और मनमानी कार्रवाइयां करने लगता है। इसका तजर्बा हज के सफर में चन्द दिन और इंसानी तअल्लुक़ात में रोजाना होता है। एक आदमी किसी की जद में इस तरह आता है कि उसके लिए बिल्कुल मुमकिन हो जाता है कि वह उसकी जान पर हमला करे। वह उसे माली नुक्सान पहुंचाए। वह उसके बारे में ऐसी बात कहे जिससे उसकी रुस्वाई होती हो। अब एक शख़्स वह है जो इस तरह काबू पाने के बावजूद ख़ुदा के डर से अपनी जबान और अपने हाथ को उसके मामले में रोक लेता है। दूसरा शख़्स वह है जो किसी पर काबू पाते ही उसे जलील करता है और उसे अपनी ताकत का निशाना बनाता है। इनमें से पहले शख़्स ने यह साबित किया कि वह देखे बग़ैर अल्लाह से डरता है और दूसरे ने अपने बारे में इसके बरअक्स हालत का सुबूत दिया। पहले के लिए ख़ुदा के यहां बेहिसाब इनामात हैं और दूसरे के लिए दर्दनाक अजाब।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾ اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾ مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾ قُل لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾

तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना जाइज किया गया, तुम्हारे फायदे के लिए और काफ़िलों के लिए। और जब तक तुम एहराम में हो ख़ुश्की का शिकार तुम्हारे ऊपर हराम किया गया। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम हाजिर किए जाओगे। अल्लाह ने काबा, हुरमत वाले घर, को लोगों के लिए कयाम का ज़रिया बनाया। और हुरमत वाले महीनों को और कुर्बानी के जानवरों को और गले में पट्टा पड़े हुए जानवरों को भी, यह इसलिए कि तुम जानो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और अल्लाह हर चीज से वाक़िफ़ है। जान लो कि अल्लाह का अजाब सख़्त है और बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। रसूल पर सिर्फ पहुंचा देने की जिम्मेदारी है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। कहो कि नापाक और पाक बराबर नहीं हो सकते, अगरचे नापाक की अधिकता तुम्हें भली लगे। पस अल्लाह से डरो ऐ अक्ल वालो, ताकि तुम फलाह पाओ। (96-100)

हालते एहराम में शिकार हराम है। मगर जो लोग दरिया या समुद्र से बैतुल्लाह (काबा) का सफर कर रहे हों उनके लिए जाइज है कि वे पानी में शिकार करें और उसे खाएं। इसकी वजह यह है कि शिकार की यह मनाही इसके अंदर किसी जाती हुरमत (मनाही) की वजह से न थी बल्कि महज 'आजमाइश' के लिए थी। इंसान को आजमाने के लिए अल्लाह ने अलामती तौर पर कुछ चीजें मुकर्रर कर दीं। इसलिए जहां शारअ (ईश्वरीय विधान) ने महसूस किया कि जो चीज आजमाइश के लिए थी वह बंदों के लिए ग़ैर जरूरी मशक्क़त का सबब बन जाएगी वहां कानून में नर्मी कर दी गई। क्योंकि समुद्र के सफर में अगर जादेराह

(यात्रा सामग्री) न रहे तो आदमी के लिए अपनी जिंदगी को बाकी रखने की इसके सिवा और सूरत नहीं रहती कि वह आबी जानवरों को अपनी ख़ुराक बनाए।

काबा इस्लाम और मिल्लते इस्लाम का दायमी मर्कज है। काबा की तरफ रुख़ करने को नमाज की शर्त ठहरा कर अल्लाह ने दुनिया के एक-एक मुसलमान को काबा की मर्कजियत के साथ जोड़ दिया। फिर हज की सूरत में इसे इस्लाम का अन्तर्राष्ट्रीय इज्तिमागाह बना दिया। जियारते काबा के अन्तर्गत में जो शआइर (प्रतीक) मुकर्रर किए गए हैं उनके एहतराम की वजह उनका कोई जाती तकद्दुस (पवित्रता) नहीं है। इसकी वजह यह है कि वह आदमी के इम्तेहान की अलामत हैं। बंदा जब इन शआइर के बारे में अल्लाह के हुक्म को पूरा करता है तो वह अपने जेहन में इस हकीकत को ताजा करता है कि अल्लाह अगरचे बजाहिर दिखाई नहीं देता मगर वह जिंदा मौजूद है। वह हुक्म देता है, वह बंदों की निगरानी करता है। वह हमारी तमाम हरकतों से बाख़बर है। ये एहसासात आदमी के अंदर अल्लाह का डर पैदा करते हैं और उसे इस काबिल बनाते हैं कि वह जिंदगी के मुख़्तलिफ मौकों पर अल्लाह का सच्चा बंदा बनकर रह सके।

इंसान की यह कमजोरी है कि जिस तरफ भीड़ हो, जिधर जाहिरी साजोसामान की कसरत (बहुलता) हो उसी को अहम समझ लेता है। मगर ख़ुदा के नजदीक सारी अहमियत सिर्फ कैफियत की है। मिक्दार (मात्रा) की उसके यहां कोई कीमत नहीं। जो लोग 'कसरत' की तरफ दौड़ें और 'किल्लत' (कमी) को नजरअंदाज कर दें वे अपने ख़्याल से बड़ी होशियारी कर रहे हैं। मगर हकीकत के एतबार से वे इंतिहाई नादान हैं। कामयाब वह है जो ख़ुदा के डर के तहत अपना रवैया मुतअय्यन करे न कि भौतिक हितों या दुनियावी अंदेशों के तहत।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

ऐ ईमान वालो, ऐसी बातों के मुतअल्लिक सवाल न करो कि अगर वे तुम पर जाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें गिरां गुजरें। और अगर तुम उनके मुतअल्लिक सवाल करोगे ऐसे वक्त

में जबकि कुरआन उतर रहा है तो वे तुम पर जाहिर कर दी जाएंगी। अल्लाह ने उनसे दरगुजर किया। और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (उदारता) वाला है। ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक जमाअत ने पूछीं। फिर वे उनके मुंकिर होकर रह गए। अल्लाह ने बहीरा और साएबा और वसीला और हाम (बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) मुकर्रर नहीं किए। मगर जिन लोगों ने कुफ्र किया वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अक्सर अक्ल से काम नहीं लेते। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ आओ और रसूल की तरफ आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफी है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों। ऐ ईमान वालो, तुम अपनी फिक्र रखो। कोई गुमराह हो तो इससे तुम्हारा कुछ नुक्सान नहीं अगर तुम हिदायत पर हो। तुम सबको अल्लाह के पास लौटकर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। (101-105)

रिवायतों में आता है कि जब हज का हुक्म आया तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बा देते हुए फरमाया : ऐ लोगो तुम पर हज फर्ज किया गया है। यह सुनकर कबीला बनी असद का एक शख़्स उठा और कहा : ऐ ख़ुदा के रसूल क्या हर साल के लिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सुनकर सख़्त ग़जबनाक हुए और फरमाया : उस जात की कसम जिसके कब्जे में मेरी जान है, अगर मैं कह देता हां तो हर साल के लिए फर्ज हो जाता और जब फर्ज हो जाता तो तुम लोग हर साल इसे कर न पाते और फिर तुम कुफ्र करते। पस जो मैं छोड़ूं उसे तुम भी छोड़ दो। जब मैं किसी चीज का हुक्म दूं तो उसे करो और जब मैं किसी चीज से रोकूं तो उससे रुक जाओ। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

ग़ैर जरूरी सवालात में पड़ने की मनाही जो नुजूले कुरआन के वक्त थी वही आज भी मत्लूब है। आज भी सही तरीका यह है कि जो हुक्म जिस तरह दिया गया है उसे उसी तरह रहने दिया जाए। ग़ैर जरूरी सवालात कायम करके उसकी हदों व नियमों को बढ़ाने की कोशिश न की जाए। जो हुक्म मुज्मल (संक्षिप्त) सूरत में है उसे मुफस्सल (विस्तृत) बनाना, जो मुतलक है उसे सशर्त करना और जो चीज अनिश्चित है उसे निश्चित करने के दरपे होना दीन में ऐसा इजाफा है जिससे अल्लाह और रसूल ने मना फरमाया है।

किसी कौम के जो गुजरे हुए बुजुर्ग होते हैं जमाना गुजरने के बाद वे मुकद्दस हैसियत हासिल कर लेते हैं। अक्सर गुमराहियां इन्हीं गुजरे हुए लोगों के नाम पर होती हैं। यहां तक कि अगर वे बकरी और ऊंट की ताजीम का रिवाज कायम कर गए हों तो उसे भी बाद के लोग सोचे समझे बग़ैर दोहराते रहते हैं। जिस बिगाड़ की रिवायात माजी (अतीत) के तकद्दुस (पवित्रता) पर कायम हों उसकी जड़ें इतनी गहरी जमी हुई होती हैं कि उससे लोगों को हटाना सख़्त दुश्वार होता है। इस किस्म की नफ्सियाती पेचीदगियों से ऊपर उठना उसी वक्त मुमकिन होता है जबकि आदमी के अंदर वाकई अर्थों में यह यकीन पैदा हो जाए कि बिलआख़िर उसे ख़ुदा के सामने हाजिर होना है। ऐसा शख़्स आज ही उस हकीकत को मान लेता है जिसे मौत के बाद हर आदमी मानने पर मजबूर होगा मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा।

يا أيها الذين آمنوا شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم أو آخران من غيركم إن أنتم ضربتم في الأرض فأصابتكم مصيبة الموت ۚ تحبسونهما من بعد الصلاة فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشتري به ثمنا ولو كان ذا قربى ۙ ولا نكتم شهادة الله إنا إذا لمن الآثمين ﴿١٠٦﴾ فإن عثر على أنهما استحقا إثما فآخران يقومان مقامهما من الذين استحق عليهم الأوليان فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما وما اعتدينا إنا إذا لمن الظالمين ﴿١٠٧﴾ ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على وجهها أو يخافوا أن ترد أيمان بعد أيمانهم ۗ واتقوا الله واسمعوا ۗ والله لا يهدي القوم الفاسقين ﴿١٠٨﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे दर्मियान गवाही वसीयत के वक्त, जबकि तुममें से किसी की मौत का वक्त आ जाए, इस तरह है कि दो मोतबर (विश्वसनीय) आदमी तुममें से गवाह हों। या अगर तुम सफर की हालत में हो और वहां मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे ग़ैरों में से दो गवाह ले लिए जाएं। फिर अगर तुम्हें शुबह हो जाए तो दोनों गवाहों को नमाज के बाद रोक लो और वे दोनों ख़ुदा की कसम खाकर कहें कि हम किसी कीमत के ऐवज इसे न बेचेंगे चाहे कोई संबंधी ही क्यों न हो। और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे। अगर हम ऐसा करें तो बेशक हम गुनाहगार होंगे। फिर अगर पता चले कि उन दोनों ने कोई हक्तल्फी की है तो उनकी जगह दो और शख़्स उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था। वे ख़ुदा की कसम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज्यादा बरहक है और हमने कोई ज्यादती नहीं की है। अगर हम ऐसा करें तो हम जालिमों में से होंगे। यह करीबतरीन तरीक़ा है कि लोग गवाही ठीक दें। या इससे डरें कि हमारी कसम उनकी कसम के बाद उल्टी पड़ेगी। और अल्लाह से डरो और सुनो। अल्लाह नाफरमानों को सीधी राह नहीं चलाता। (106-108)

एक आदमी सफर करता है और उसके साथ माल है। रास्ते में उसकी मौत का वक्त आ जाता है। अब अगर वह अपने करीब दो मुसलमान पाए तो उन्हें अपना माल दे दे और उसके बारे में उन्हें वसीयत कर दे। अगर दो मुसलमान बरवक्त न मिलें तो ग़ैर मुस्लिमों में से दो आदमियों के साथ यही मामला करे। ये दो साहिबान माल लाकर उसे वारिसों के हवाले करें। इस वक्त वारिसों को अगर उनके बयान के बारे में शुबह हो जाए तो किसी

नमाज के बाद मस्जिद में इन गवाहों को रोक लिया जाए। यह दोनों शख़्स आम मुसलमानों के सामने कसम खाएं कि उन्होंने मरने वाले की तरफ से जो कुछ कहा सही कहा। अगर वारिस उसके हल्फिया बयान पर मुतमइन न हों तो वारिसों में से दो आदमी अपनी बात के हक में कसम खाएं और फिर उनकी कसम के मुताबिक फैसला कर दिया जाए। वारिसों को यह हक देना गोया एक ऐसी रोक कायम करना है कि कोई ख़ियानत करने वाला ख़ियानत करने की जुर्रत न कर सके।

शरीअत में एक मस्लेहत यह मल्हूज रखी गई है कि रोज मर्रह के मामलात में ऐसे अहकाम दिए जाएं जो आदमी की वसीअतर जिंदगी के लिए सबक हों। किसी शख़्स के मरने के बाद उसके माल का हकदारों तक पहुंचना एक ख़ानदानी और मआशी (आर्थिक) मामला है। मगर इसे दो अहम बातों की तर्बियत का जरिया बना दिया गया। एक यह कि लोगों में यह मिजाज बने कि मामलात में वे तअल्लुक और रिश्तेदारी का लिहाज न करें बल्कि सिर्फ हक का लिहाज करें। वे यह देखें कि हक क्या है न यह कि बात किसके मुवाफिक जा रही है और किसके ख़िलाफ। दूसरे यह की हर बात को ख़ुदा की गवाही समझना। कोई बात जो आदमी के पास है वह ख़ुदा की एक अमानत है। क्योंकि आदमी ने उसे ख़ुदा की दी हुई आंख से देखा और ख़ुदा के दिए हुए हाफिजे में उसे महफूज रखा। और अब ख़ुदा की दी हुई जबान से वह उसके मुतअल्लिक एलान कर रहा है। ऐसी हालत में यह अमानत में ख़ियानत होगी कि आदमी बात को उस तरह बयान न करे जैसा कि उसने देखा और जिस तरह उसके हाफिजे ने उसे महफूज रखा।

يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم ۖ قالوا لا علم لنا ۖ إنك أنت علام الغيوب ﴿١٠٩﴾ إذ قال الله يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتي عليك وعلى والدتك إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس في المهد وكهلا ۖ وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ۖ وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذني فتنفخ فيها فتكون طيرا بإذني ۖ وتبرئ الأكمه والأبرص بإذني ۖ وإذ تخرج الموتى بإذني ۖ وإذ كففت بني إسرائيل عنك إذ جئتهم بالبينات فقال الذين كفروا منهم إن هذا إلا سحر مبين ﴿١١٠﴾

जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था। वह कहेंगे हमें कुछ इल्म नहीं, छुपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है। जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा इब्ने मरयम, मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी मां पर किया जबकि मैंने रूहे पाक से तुम्हारी मदद की। तुम लोगों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी। और जब मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और

इंजील की तालीम दी। और जब तुम मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से बनाते थे फिर उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी। और तुम अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे। और जब मैंने बनी इस्राईल को तुमसे रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो उनके मुंकिरों ने कहा यह तो बस एक खुला हुआ जादू है। (109-110)

पैग़म्बरों पर जो लोग ईमान लाए, बाद के जमाने में सबके अंदर बिगाड़ पैदा हुआ। उन्होंने अपने तौर पर एक दीन बनाया और उसे अपने पैग़म्बर की तरफ मंसूब कर दिया। इसके बावजूद हर गिरोह अपने आपको अपने पैग़म्बर की उम्मत शुमार करता रहा। हालांकि पैग़म्बर की अस्ल तालीमात से हटने के बाद उसका पैग़म्बर से कोई तअल्लुक बाकी न रहा था। यहूदी अपने को हजरत मूसा की तरफ मंसूब करते हैं और ईसाई अपने को हजरत ईसा की तरफ। हालांकि उनके प्रचलित दीन का ख़ुदा के इन पैग़म्बरों से कोई तअल्लुक नहीं। यह हकीकत मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में छुपी हुई है। मगर कियामत के दिन वह खोल दी जाएगी। उस दिन ख़ुदा तमाम पैग़म्बरों को और इसी के साथ उनकी उम्मतों को जमा करेगा। उस वक्त उम्मतों के सामने उनके पैगम्बरों से पूछा जाएगा कि तुमने अपनी उम्मतों को क्या तालीम दी और उम्मतों ने तुम्हारी तालीमात को किस तरह अपनाया। इस तरह हर उम्मत पर उसके पैग़म्बर की मौजूदगी में वाजेह किया जाएगा कि उसने ख़ुदा के दीन के मामले में अपने पैग़म्बर की क्या-क्या ख़िलाफ़वर्जी की है और किस तरह ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को उनकी तरफ मंसूब किया है।

इन्हीं पैग़म्बरों में से एक मिसाल हजरत ईसा की है जो ख़ातमुन्नबिय्यीन (अंतिम नबी) और आप से पहले के नबियों की दर्मियानी कड़ी हैं। हजरत ईसा को इंतिहाई ख़ुसूसी मोजिजे (चमत्कार) दिए गए। आप पर ईमान लाने वाले बहुत कम थे और आपके मुख़ालिफीन (यहूद) को हर तरह का दुनियावी जोर हासिल था। इसके बावजूद वे हजरत ईसा का कुछ नुक़्सान न कर सके और न आपके साथियों को ख़त्म करने में कामयाब हुए। इन मोजिजात का नतीजा यह होना चाहिए था कि लोग आपके लाए हुए दीन को मान लेते। मगर अमलन यह हुआ कि आपके मुख़ालिफ़ीन ने यह कह कर आपको नजरअंदाज कर दिया कि वह जो मोजिजे दिखा रहे हैं वह सब जादू का करिश्मा है। और जो लोग आप पर ईमान लाए उन्होंने बाद के जमाने में आपको ख़ुदाई का दर्जा दे दिया। कियामत के दिन आपकी पैरवी का दावा करने वालों के सामने यह हकीकत खोल दी जाएगी कि हजरत ईसा ने जो कमालात दिखाए वे सब ख़ुदा के हुक्म से थे। आपके दुश्मनों ने आपको जिन ख़तरात में डाला उनसे भी अल्लाह ही ने आपको बचाया। जब सूरतेहाल यह थी और हजरत ईसा ख़ुद सामने खड़े होकर इसकी तस्दीक कर रहे हैं तो अब उनके उम्मती बताएं कि उन्होंने आपकी तरफ जो दीन मंसूब किया वह किसने उन्हें दिया था।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ
بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ
رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾
قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا
وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا
مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ وَارْزُقْنَا
وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ
فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾

और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और तू गवाह रह कि हम फरमांबरदार हैं। जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम, क्या तुम्हारा रब यह कर सकता है कि हम पर आसमान से एक ख़्वान (भोजन भरा थाल) उतारे। ईसा ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिल मुतमइन (संतुष्ट) हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाही देने वाले बन जाएं। ईसा इब्ने मरयम ने दुआ कि ऐ अल्लाह, हमारे रब, तू आसमान से हम पर एक ख़्वान उतार जो हमारे लिए एक ईद बन जाए, हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए और तेरी तरफ से एक निशानी हो। और हमें अता कर, तू ही बेहतरीन अता करने वाला है। अल्लाह ने कहा मैं यह ख़्वान जरूर तुम पर उतारूंगा। फिर इसके बाद तुममें से जो शख़्स मुंकिर होगा उसे मैं ऐसी सजा दूंगा जो दुनिया में किसी को न दी होगी। (111-115)

लोगों को हक की तरफ पुकारने का काम अगरचे दाओ (आह्वानकर्ता) अंजाम देता है मगर पुकार पर लब्बैक कहना हमेशा ख़ुदा की तौफ़ीक से होता है। दावत की सदाकत को दलीलों से जान लेने के बाद भी बहुत सी रुकावटें बाकी रहती हैं जो आदमी को उसकी तरफ बढ़ने नहीं देतीं। दाओ का एक आम इंसान की सूरत में दिखाई देना, यह अंदेशा कि दावत (आह्वान) कुबूल करने के बाद जिंदगी का बना बनाया ढांचा टूट जाएगा, यह सवाल कि अगर यह सच्चाई है तो फलां-फलां बड़े लोग क्या सच्चाई से महरूम थे, वग़ैरह। यह एक इंतिहाई नाज़ुक मोड़ होता है जहां आदमी फैसले के किनारे पहुंच कर भी फैसला नहीं कर पाता। यही वह मकाम है जहां ख़ुदा उसकी मदद करता है। जिस शख़्स के अंदर वह कुछ ख़ैर

(भलाई) देखता है उसका हाथ पकड़ कर उसे शुबह की सरहद पार करा देता है और उसे यकीन के दायरे में दाख़िल कर देता है।

ख़ुदा की तरफ से हर वक्त इंसान को रिज़्क फ़राहम किया जा रहा है। यहां तक कि पूरी जमीन इंसान के लिए रिज़्क का दस्तरख़्वान बनी हुई है। मगर मोमिनीने मसीह ने आसमान से खाना उतारने का मुतालबा किया तो उन्हें सख़्त तंबीह की गई। इसकी वजह यह है कि आम हालात में हमें जो रिज़्क मिलता है वह असबाब के पर्दे में मिल रहा है। जबकि मोमिनीने मसीह का मुतालबा यह था कि असबाब का पर्दा हटा कर उनका रिज़्क उन्हें दिया जाए। यह चीज अल्लाह की सुन्नत के ख़िलाफ है। क्योंकि अगर असबाब का जाहिरी पर्दा हटा दिया जाए तो इम्तेहान किस बात का होगा।

हकीकत यह है कि खेत से लहलहाती हुई फ़स्ल का पैदा होना या मिट्टी के अंदर से एक शादाब दरख़्त का निकल कर खड़ा हो जाना भी इसी तरह मोजिजा (चमत्कार) है जिस तरह बादलों में होकर किसी ख़्वान का हमारी तरफ आना। मगर इन वाक़ेयात का मोजिजा होना हमें इसलिए नजर नहीं आता कि वे पर्दे में होकर जाहिर हो रहे हैं। आदमी का इम्तेहान यह है कि वह पर्दे को फाड़कर हकीकत को देख सके। वह 'जमीन' से निकलने वाले रिज़्क को 'आसमान' से उतरने वाले रिज़्क के रूप में पा ले। अगर कोई शख़्स यह मुतालबा करे कि मैं देख कर मानूंगा तो गोया वह कह रहा है कि इम्तेहान से गुजरे बग़ैर मैं ख़ुदा की रहमत में दाख़िल हूंगा। हालांकि ख़ुदा की सुन्नत के मुताबिक ऐसा होना मुमकिन नहीं।

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾ إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) बनालो। वह जवाब देंगे कि तू पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे कोई हक नहीं। अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझे जरूर मालूम होगा। तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है। बेशक तू ही है छुपी बातों का जानने वाला। मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था। यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा भी। और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो उन पर तू ही निगरां था और तू हर चीज पर गवाह है। अगर तू उन्हें सजा दे तो वे तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें माफ कर दे तो तू ही जबरदस्त है हिक्मत वाला है। अल्लाह कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उनका सच काम आएगा। उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही है बड़ी कामयाबी। आसमानों और जमीन में और जो कुछ उनमें है सबकी बादशाही अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज पर कादिर है। (116-120)

क़ियामत जब आएगी तो हकीकतें इस तरह खुल जाएंगी कि आदमी बग़ैर बताए हुए यह जान लेगा कि सच क्या है और ग़लत क्या। लोग अपनी आंखों से देख रहे होंगे कि सारी ताकतें सिर्फ एक अल्लाह को हासिल हैं। ख़ालिक और मालिक, माबूद और मत्लूब होने में कोई भी उसका शरीक नहीं। उसके सिवा किसी को न कोई ताकत हासिल है और न उसके सिवा कोई इस काबिल है कि उसकी इबादत व इताअत की जाए। ऐसी हालत में जब ख़ुदा अपने पैग़म्बरों से पूछेगा कि मैंने तुम्हें क्या पैग़ाम देकर दुनिया में भेजा था तो यह एक ऐसी बात का पूछना होगा जो पहले ही लोगों के लिए मालूम बन चुकी होगी। इस सवाल का जवाब उस वक्त इतना खुला हुआ होगा कि किसी के बोले बग़ैर कियामत का पूरा माहौल इसका जवाब पुकार रहा होगा। यह सवाल व जवाब महज लोगों की रुस्वाई में इजाफ़ा करने के लिए होगा। वह इसलिए होगा कि पैग़म्बरों के सामने खड़ा करके लोगों पर वाजेह किया जाएगा कि पैग़म्बरों के नाम पर जो दीन तुमने बना रखा था वह उनकी हकीकी तालीमात से कोई तअल्लुक नहीं रखता था।

यह दुनिया इम्तेहान के लिए बनाई गई है। इसलिए यहां हर एक को आजादी है। यहां आदमी ख़ुदा व रसूल की तरफ ऐसा दीन मंसूब करके भी फल फूल सकता है जिसका ख़ुदा व रसूल से कोई तअल्लुक न हो। यहां फर्जी उम्मीदों और झूठी आरजुओं पर भी जन्नत को अपना हक साबित किया जा सकता है। यहां यह मुमकिन है कि आदमी अपनी कयादत (नेतृत्व) के हंगामें खड़े करे और यह साबित करे कि जो कुछ वह कर रहा है वही ऐन ख़ुदा का दीन है। मगर क़ियामत में इस क़िस्म की कोई चीज काम आने वाली नहीं। क़ियामत में जो चीज काम आएगी वह सिर्फ यह कि आदमी ख़ुदा की नजर में सच्चा साबित हो। आसमानी किताब की हामिल कौमों का इम्तेहान यह नहीं है कि वे ईमान की दावेदार बनती हैं या नहीं। उनका इम्तेहान यह है कि वे अपने ईमान के दावे को सच्चा साबित करती हैं या नहीं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ؕ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّی عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝

आयतें 165 **सूरह-6. अल-अनआम** रुकूअ 20

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया और तारीकियों और रोशनी को बनाया। फिर भी मुंकिर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते हैं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर एक मुद्दत मुकर्रर की और मुकर्ररह मुद्दत उसी के इल्म में है। फिर भी तुम शक करते हो। और वही अल्लाह आसमानों में है और वही जमीन में। वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

आसमान और जमीन का निजाम अपनी सारी वुस्अतों (व्यापकताओं) के बावजूद इतना मरबूत (सुगठित) और इतना वहदानी (एकीय) है कि वह पुकार रहा है कि उसका ख़ालिक और मुंतजिम एक ख़ुदा के सिवा कोई और नहीं हो सकता। फिर जमीन व आसमान की यह कायनात अपने फैलाव और अपनी हिक्मत व सार्थकता के एतबार से नाकाबिले कयास हद तक अजीम है। सूरज के रोशन ग्रह के गिर्द ख़ला (अंतरिक्ष) में जमीन की हद दर्जा मुनज्जम गर्दिश और उससे जमीन की सतह पर रोशनी और तारीकी और दिन और रात का पैदा होना इंसान के तमाम क्यास व गुमान से कहीं ज्यादा बड़ा वाक्या है। अब जो ख़ुदा इतने बड़े कायनाती कारख़ाने को इतने बाकमाल तरीके पर चला रहा है उसकी जात में वह कौन सी कमी हो सकती है जिसकी तलाफी के लिए वह किसी को अपना शरीक ठहराए। हकीकत यह है कि हमारी दुनिया और उसके अंदर कायमशुदा हैरतनाक निजाम ख़ुद ही इस बात का सुबूत है कि इसका ख़ुदा सिर्फ एक है और यही निजाम इस बात का भी सुबूत है कि यह ख़ुदा इतना अजीमुश्शान है कि उसे अपनी तख़्लीक और इंतजाम में किसी मददगार की जरूरत नहीं।

मौजूदा दुनिया की उम्र महदूद है। यहां दुख से ख़ाली जिंदगी मुमकिन नहीं। यहां हर ख़ुशगवारी के साथ नाख़ुशगवारी का पहलू लगा हुआ है। यहां शर को ख़ैर से और ख़ैर को शर से जुदा नहीं किया जा सकता। ऐसी हालत में आदमी की समझ में नहीं आता कि आख़िरत की अबदी दुनिया जो हर किस्म के दुख-तकलीफ (फातिर 34) से ख़ाली होगी कैसे बन जाएगी।

अगर किसी और माद्दे से आख़िरत की दुनिया बनने वाली हो तो इंसान उससे वाकिफ नहीं और अगर इसी दुनिया के माद्दे से वह दूसरी दुनिया बनने वाली है तो इस दुनिया के अंदर उस किस्म की एक कामिल दुनिया को वजूद में लाने की सलाहियत नहीं।

मगर सवाल करने वाले का ख़ुद अपना वजूद ही इस सवाल का जवाब देने के लिए काफी है इंसान का जिस्म पूरा का पूरा मिट्टी (जमीनी अज्जा) से बना है, मगर उसके अंदर ऐसी मुंफरिद (विशिष्ट) सलाहियतें हैं जिनमें से कोई सलाहियत भी मिट्टी के अंदर नहीं। आदमी सुनता है, वह बोलता है, वह सोचता है, वह तरह-तरह के हैरतनाक अमल अंजाम देता है। हालांकि वह जिस मिट्टी से बना है वह इस किस्म का कोई भी अमल अंजाम नहीं दे सकती। जमीनी अज्जा से हैरतअंगेज तौर पर एक ग़ैर जमीनी मख़्लूक बन कर खड़ी हो गई है। यह एक ऐसा तजर्बा है जो हर रोज आदमी के सामने आ रहा है। ऐसी हालत में कैसी अजीब बात है कि आदमी आख़िरत के वाकेअ (घटित) होने पर शक करे। अगर मिट्टी से जीता जागता इंसान निकल सकता है। अगर मिट्टी से ख़ुशबूदार फूल और जायकेदार फल बरामद हो सकते हैं तो हमारी मौजूदा दुनिया से एक और ज्यादा कामिल और ज्यादा मेयारी दुनिया क्यों जाहिर नहीं हो सकती।

وَمَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ یَاْتِیْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَیْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ۝

और उनके रब की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है वे उससे एराज(उपेक्षा) करते हैं। चुनांचे जो हक उनके पास आया है उसे भी उन्होंने झुठला दिया। पस अनकरीब उनके पास उस चीज की ख़बरें आएंगी जिसका वह मजाक उड़ाते थे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी कौमों को हलाक कर दिया। उन्हें हमने जमीन में जमा दिया था जितना तुम्हें नहीं जमाया। और हमने उन पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाई और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला। और उनके बाद हमने दूसरी कौमों को उठाया। (4-6)

ख़ुदा और आख़िरत की दावत जो ख़ुदा की बराहेरास्त ताईद से उठी हो उसके साथ वाजेह अलामतें होती हैं जो इस बात का एलान कर रही होती हैं कि यह एक सच्ची दावत है और ख़ुदा की तरफ से है। उसका उस फित्ररत के अंदाज पर होना जिस पर ख़ुदा की अबदी दुनिया का निजाम कायम है। उसका ऐसी दलीलों की बुनियाद पर उठना जिसका तोड़ किसी

के लिए मुमकिन न हो। उसकी पुश्त पर ऐसे दाओ (आह्वानकर्ता) का होना जिसकी संजीदगी और इख़्लास पर शुबह न किया जा सकता हो। उसके साथ ऐसे ताईदी वाकेआत का वाबस्ता होना कि मुख़ालिफ़ीन अपनी बरतर कुव्वत के बावजूद इसके ख़िलाफ अपने तख़्रीबी (विध्वंसक) मंसूबों में कामयाब न हुए हों। इस तरह के वाज़ेह क़राइन हैं जो उसके बरहक होने की तरफ खुला इशारा कर रहे होते हैं। इसके बावजूद इंसान उस पर यकीन नहीं करता और उसका साथ देने पर आमादा नहीं होता। इसकी वजह यह है कि ये तमाम ताईदी कराइन अपनी सारी वजाहत के बावजूद हमेशा असबाब के पर्दे में जाहिर होते हैं। आदमी के सामने जब ये कराइन आते हैं तो वह उन्हें मख़्सूस असबाब की तरफ मंसूब करके उन्हें नजरअंदाज कर देता है, उसका जेहन एतराफ के रुख़ पर चलने के लिए आमादा नहीं होता। वह कहता है कि यह दावत अगर ख़ुदा की तरफ से होती तो ख़ुदा और फरिश्ते साक्षात रूप में इसके साथ मौजूद होते। हालांकि यह ख़्याल सरासर बातिल है। क्योंकि ख़ुदा और फरिश्ते जब साक्षात रूप में सामने आ जाएंगे तो वह फैसले का वक्त होता है न कि दावत और तब्लीग़ (आह्वान एवं प्रचार) का।

जिन लोगों को जमीन में जमाव हासिल हो, जिन्होंने अपने लिए मआशी (आर्थिक) साजोसामान जमा कर लिया हो, जिन्हें अपने आस पास अज़्मत और मक्बूलियत के मजाहिर दिखाई देते हों वे हमेशा ग़लतफहमी में पड़ जाते हैं। वे अपने गिर्द जमाशुदा चीजों के मुकाबले में उन चीजों को हकीर समझ लेते हैं जो हक के दाओ के गिर्द ख़ुदा ने जमा की हैं। उनकी यह ख़ुद एतमादी इतना बढ़ती है कि वे ख़ुदा की तरफ से भी बेख़ौफ हो जाते हैं। वे हक के दाओ की उस तंबीह का मजाक उड़ाने लगते हैं कि तुम्हारी सरकशी जारी रही तो तुम्हारी माद्दी तरक्कियां तुम्हें ख़ुदा की पकड़ से न बचा सकेंगी। हक के दाओ को नाचीज समझना उनकी नजर में दाओ की तंबीहात (चेतावनियों) को भी नाचीज बना देता है। माजी के वे तारीख़ी वाकेआत भी उन्हें सबक देने के लिए काफी साबित नहीं होते जबकि बड़े-बड़े माद्दी इस्तहकाम के बावजूद ख़ुदा ने लोगों को इस तरह मिटा दिया जैसे उनकी कोई कीमत ही न थी। जमीन में बार-बार एक कौम का गिरना और दूसरी कौम का उभरना जाहिर करता है कि यहां उत्थान-पतन का कानून नाफिज है। मगर आदमी सबक नहीं लेता। पिछले लोग दुबारा उसी अमल को दोहराते हैं जिसकी वजह से अगले लोग बर्बाद हो गए।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَٰبًا فِى قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ ٱلْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿٨﴾ وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَٰهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ ٱسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِٱلَّذِينَ سَخِرُوا۟ مِنْهُم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾ قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ ثُمَّ ٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

और अगर हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो कागज में लिखी हुई होती और वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते तब भी इंकार करने वाले यह कहते कि यह तो एक खुला हुआ जादू है। और वे कहते हैं कि इस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया। और अगर हम कोई फरिश्ता उतारते तो मामले का फैसला हो जाता फिर उन्हें कोई मोहलत न मिलती। और अगर हम किसी फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते तो उसे भी आदमी बनाते और उन्हें उसी शुबह में डाल देते जिसमें वे अब पड़े हुए हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया तो उनमें से जिन लोगों ने मजाक उड़ाया उन्हें उस चीज ने आ घेरा जिसका वे मजाक उड़ाते थे। कहो, जमीन में चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। (7-11)

दुनिया में आदमी की गुमराही का सबब यह है कि यहां उसे हक के इंकार की पूरी आजादी मिली हुई है। यहां तक कि उसे यह मौका भी हासिल है कि वह अपने अफ्कार की ख़ूबसूरत तौजीह कर सके। इम्तेहान की इस दुनिया में इतनी वुस्अत है कि यहां अल्फाज हर उस मफहूम में ढल जाते हैं जिसमें इंसान उन्हें ढालना चाहे। दाओ अगर एक आम इंसान के रूप में जाहिर हो तो आदमी उसे यह कह कर नजरअंदाज कर सकता है कि यह एक शख़्स का क्यादती (नेतृत्वपरक) हौसला है न कि कोई हक व सदाकत का मामला। इसी तरह अगर आसमान से कोई लिखी लिखाई किताब उतर आए तो उसे रद्द करने के लिए भी वह ये अल्फाज पा लेगा कि यह तो एक जादू है।

मक्का के लोग कहते थे कि पैग़म्बर अगर ख़ुदा की तरफ से उसकी पैग़ाम्बरी के लिए मुकर्रर किया गया है तो उसके साथ ख़ुदा के फरिश्ते क्यों नहीं जो उसकी तस्दीक करें। इस किस्म की बातें आदमी इसलिए कहता है कि वह दावत (आह्वान) के मामले में संजीदा नहीं होता। अगर वह संजीदा हो तो उसे फौरन मालूम हो जाए कि यह दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। इम्तेहान उसी वक्त हो सकता है जबकि ग़ैबी हकीकतों पर पर्दा पड़ा हुआ हो। अगर ग़ैबी हकीकतें खुल जाएं और ख़ुदा और उसके फरिश्ते सामने आ जाएं तो फिर पैग़म्बरी और दावतरसानी का कोई सवाल ही नहीं होगा। क्योंकि इसके बाद किसी को यह जुर्रत ही न होगी कि वह हकीकतों का इंकार कर सके। मौजूदा दुनिया में लोग अपनी जाहिरपरस्ती की वजह से ख़ुदा के दाओ को उसकी बातों की अज़्मत में नहीं देख पाते, वे उसका अंदाजा सिर्फ उसके जाहिरी पहलू के एतबार से करते हैं और जाहिरी एतबार से ग़ैर अहम पाकर उसका इंकार कर देते हैं। यहां तक कि वे उसका मजाक उड़ाने लगते हैं। ख़ुदा के दाओ का मामला उन्हें ऐसा मालूम होता है जैसे एक मामूली आदमी अचानक उठकर बहुत बड़ी हैसियत का दावा करने लगे।

इस दुनिया में दावतरसानी का सारा मामला ख़ुदा के समरूपता के नियम के तहत होता है। यहां हक के ऊपर शुबह का एक पहलू रखा गया है ताकि आदमी इकरार के तर्कों के साथ कुछ इंकार के कारण भी पा सकता हो। आदमी का अस्ल इम्तेहान यह है कि वह इस शुबह के पर्दे को फाड़कर अपने को यकीन के मकाम पर पहुंचाए। वह शुबह के पहलुओं को मिटाकर यकीन के पहलुओं को ले ले। आदमी का अस्ल इम्तेहान यह है कि वह देखे बग़ैर माने। जब हकीकत को दिखा दिया जाए तो फिर मानने की कोई कीमत नहीं।

قُلْ لِمَنْ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلْ لِلّٰهِ ۚ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾ قُلْ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

पूछो कि किसका है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कहो सब कुछ अल्लाह का है। उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। वह जरूर तुम्हें जमा करेगा कियामत के दिन, इसमें कोई शक नहीं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वही हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ दिन में। और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊं जो बनाने वाला है आसमानों और जमीन का। और वह सबको खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता। कहो मुझे हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूं और तुम हरगिज मुश्रिकों में से न बनो। कहो अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। जिस शख़्स से वह उस रोज हटा लिया गया उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम फरमाया और यही खुली कामयाबी है। (12-16)

इंसान खुले हुए हक का इंकार करता है। वह ताकत पाकर दूसरों को जलील करता है। एक इंसान दूसरे इंसान को अपने जुल्म का निशाना बनाता है। ऐसा क्यों है। क्या इंसान को इस दुनिया में मुतलक इक्तेदार (निरंकुश सत्ता) हासिल है। क्या यहां उसका कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं। क्या ख़ुदा के यहां तजाद (अन्तर्विरोध) है कि उसने बाकी दुनिया को रहमत व मअनवियत (सार्थकता) से भर रखा है और इंसान की दुनिया को जुल्म और बेइंसाफी से। ऐसा नहीं है। जो ख़ुदा जमीन व आसमान का मालिक है वही ख़ुदा उस मख़्लूक का मालिक भी है जो दिन को मुतहर्रिक (गतिवान) होती है और रातों को करार पकड़ती है। ख़ुदा जिस तरह बाकी कायनात के लिए सरापा रहमत है उसी तरह वह इंसानों के लिए भी सरापा रहमत है। फर्क यह है कि बाकी दुनिया में ख़ुदा की रहमतों का जुहूर अव्वल दिन से है और इंसान की दुनिया में उसकी रहमतों का कामिल जुहूर कियामत के दिन होगा।

इंसान इरादी मख़्लूक है और उससे इरादी इबादत मत्लूब है। इसी से यह बात निकलती है कि जो लोग अपने इरादे का सही इस्तेमाल न करें वे इस काबिल नहीं कि उन्हें ख़ुदा की

रहमतों में हिस्सेदार बनाया जाए। क्योंकि उन्होंने अपने मक्सदे तख़्लीक को पूरा न किया। आजमाइशी मुद्दत पूरी होने के बाद सारे लोग एक नई दुनिया में जमा किए जाएंगे। उस दिन ख़ुदा उसी तरह दुनिया का निजाम अपने हाथ में लेगा जिस तरह आज वह बाकी कायनात का इंतिजाम अपने हाथ में लिए हुए है। उस रोज ख़ुदा के इंसाफ का तराजू खड़ा होगा। उस दिन वे लोग सरफ़राज (लाभांवित) होंगे जिन्होंने हकीकते वाक्या का एतराफ करके अपने को ख़ुदाई इताअत में दे दिया। और वे लोग घाटे में रहेंगे जिन्होंने हकीकते वाक्या का एतराफ नहीं किया और ख़ुदा की दुनिया में सरकशी और हठधर्मी के तरीके पर चलते रहे।

इंसान जब भी सरकशी करता है किसी बरते (आधार) पर करता है। मगर जिन चीजों के बरते पर इंसान सरकशी करता है उनकी इस कायनात में कोई हकीकत नहीं। यहां हर चीज बेजोर है, जोर वाला सिर्फ एक ख़ुदा है। सब उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं। इसलिए फैसले के दिन वही शख़्स बामुराद होगा जिसने हकीकी सहारे को अपना सहारा बनाया होगा, जिसने हकीकी दीन को अपनी जिंदगी के दीन की हैसियत से इख़्तियार किया होगा।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١٨﴾ قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللّٰهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللّٰهِ آلِهَةً أُخْرٰى ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾

और अगर अल्लाह तुझे कोई दुख पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर अल्लाह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वह हर चीज पर कादिर है। और उसी का जोर है अपने बंदों पर। और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला सबकी ख़बर रखने वाला है, तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है। कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह है और मुझ पर यह कुरआन उतरा है ताकि मैं तुम्हें इससे ख़बरदार कर दूं और उसे जिसे यह पहुंचे। क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ कुछ और माबूद भी हैं। कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता। कहो, वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूं तुम्हारे शिर्क से। (17-19)

हमारे सामने जो अजीम कायनात फैली हुई है उसके मुख़्तलिफ अज्जा आपस में इतने ज्यादा मरबूत (सुव्यवस्थित) हैं कि यहां किसी एक वाकये को जुहूर में लाने के लिए भी पूरी कायनात की कार्य-प्रणाली जरूरी है। इस कारण कोई भी इंसान किसी वाकये को जुहूर में लाने पर कादिर नहीं। क्योंकि कोई भी इंसान कायनात के ऊपर काबूयाफ्ता नहीं। यहां एक छोटी सी चीज भी उस वक्त वजूद में आती है जबकि बेशुमार आलमी असबाब उसकी पुश्त

पर जमा हो गए हों। और ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जो इन असबाब पर हुक्मरां हो। कायनाती असबाब के दर्मियान आदमी सिर्फ एक हक़ीर इरादे का मालिक है। हक़ीक़त यह है कि इस दुनिया में किसी को कोई सुख मिले या किसी को कोई दुख पहुंचे, दोनों ही बराहेरास्त ख़ुदा की इजाजत के तहत होते हैं। ऐसी हालत में किसी का यह सोचना भी हिमाक़त है कि वह किसी को आबाद या बर्बाद कर सकता है। और यह बात भी हास्यास्पद हद तक निरर्थक है कि ख़ुदा के सिवा भी कोई है जिससे आदमी डरे या ख़ुदा के सिवा कोई है जिससे वह अपनी उम्मीदें वाबस्ता करे।

दुनिया में अहले हक और अहले बातिल के दर्मियान जो कशमकश जारी है इसमें फैसलाकुन चीज सिर्फ ख़ुदा की किताब है। ख़ुदा के सिवा किसी को हक़ाइक (यथार्थ) का इल्म नहीं, और ख़ुदा के सिवा किसी को किसी किस्म का जोर हासिल नहीं। इसलिए ख़ुदा ही वह हस्ती है जो इस झगड़े में वाहिद सालिस (मध्यस्थ) है। और ख़ुदा ने कुरआन की सूरत में यह सालिस लोगों के दर्मियान रख दिया है अब आदमी के सामने दो ही रास्ते हैं। अगर वह कुरआन की सदाक़त से बेख़बर है तो वह तहक़ीक़ करके जाने कि क्या वाक़ई वह ख़ुदा की किताब है। और जब वह जान ले कि वह वास्तव में ख़ुदा की किताब है तो उसे लाजिमन उसके फैसले पर राजी हो जाना चाहिए। जो आदमी कुरआन के फैसले पर राजी न हो वह यह ख़तरा मोल ले रहा है कि आख़िरत में रुस्वाई और अजाब की कीमत पर उसे इसके फैसले पर राजी होना पड़े।

कुरआन इसलिए उतारा गया है कि फैसले का वक्त आने से पहले लोगों को आने वाले वक्त से होशियार कर दिया जाए। रसूल ने यही काम अपने जमाने में किया और आपकी उम्मत को यही काम आपके बाद कियामत तक अंजाम देना है। कुरआन इस बात की पेशगी इत्तला है कि आख़िरत की अबदी दुनिया में लोगों का ख़ुदा लोगों के साथ क्या मामला करने वाला है। पहुंचाने वाले उस वक्त अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं जबकि वह उसे पूरी तरह लोगों तक पहुंचा दें मगर सुनने वाले ख़ुदा के यहां उस वक्त मुक्त होंगे जबकि वे उसे मानें और उसे अपनी अमली जिंदगी में इख़्तियार करें। दाओ की जिम्मेदारी 'तब्लीग़' (प्रचार) पर ख़त्म होती है और मदऊ (संबोधित व्यक्ति) की जिम्मेदारी 'इताअत' (आज्ञापालन) पर।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُن فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾ انظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उसे पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वे उसे नहीं मानते। और उस शख़्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुठलाए। यकीनन जालिमों को फलाह (कल्याण) नहीं मिलती। और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम कहेंगे उन शरीक ठहराने वालों से कि तुम्हारे वे शरीक कहां हैं जिनका तुम्हें दावा था। फिर उनके पास कोई फरेब न रहेगा मगर ये कि वे कहेंगे कि अल्लाह अपने रब की कसम, हम शिर्क करने वाले न थे। देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गईं उनसे वे बातें जो वे बनाया करते थे। (20-24)

हक़ीक़त आदमी के लिए जानी पहचानी चीज है। क्योंकि वह आदमी की फ़ितरत में पेवस्त है और कायनात में हर तरफ ख़ामोश जबान में बोल रही है। यहूद व नसारा का मामला इस बाब में और भी ज्यादा आगे था। क्योंकि उनके अंबिया और उनके सहीफे (दिव्यग्रंथ) उन्हें कुरआन और पैग़म्बर आख़िरुज्जमां मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में साफ लफ़्जों में पेशगी ख़बर दे चुके थे, यहां तक कि उनके लिए इसे जानना ऐसा ही था जैसा अपने बेटों को जानना।

इस क़द्र खुला हुआ होने के बावजूद इंसान क्यों हक़ीक़त को तस्लीम नहीं करता। इसकी वजह वक्ती नुक़्सान का अंदेशा है। हक़ीक़त को मानना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अपने को बड़ाई के मकाम से उतारे, वह तक्लीदी (अनुसरणपरक) ढांचे से बाहर आए, वह मिले हुए फायदों को छोड़ दे। आदमी यह कुर्बानी देने के लिए तैयार नहीं होता इसलिए वह हक़ को भी कुबूल नहीं करता। वक्ती फायदे की ख़ातिर वह अपने को अबदी घाटे में डाल देता है।

अपने इस मौकिफ़ पर मुतमइन रहने के लिए यह बात भी उसे धोखे में डालती है कि वह इम्तेहान की इस दुनिया में हमेशा अपने अनुकूल तौजीहात पाने में कामयाब हो जाता है। वह सच्चाई के हक़ में जाहिर होने वाले दलाइल को रद्द करने के लिए झूठे अल्फ़ाज पा लेता है। यहां तक कि यहां उसे यह आजादी भी हासिल है कि हक़ीक़त की ख़ुदसाख़्ता ताबीर करके यह कह सके कि सच्चाई ऐन वही है जिस पर मैं कायम हूं।

जब भी आदमी ख़ुदा को छोड़कर दूसरी चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाता है तो धीरे-धीरे इन चीजों के गिर्द ताईदी बातों का तिलिस्म तैयार हो जाता है। वह ख़्याली आरजुओं और झूठी तमन्नाओं का एक ख़ुदसाख़्ता हाला बना लेता है जो उसे इस फरेब में मुब्तिला रखते हैं कि उसने बड़े मजबूत सहारे को पकड़ रखा है। मगर कियामत में जब तमाम पर्दे फट जाएंगे और आदमी देखेगा कि ख़ुदा के सिवा तमाम सहारे बिल्कुल झूठे थे तो उसके सामने इसके सिवा कोई राह न होगी कि वह ख़ुद अपनी कही हुई बातों की तरदीद (खंडन) करने लगे। गोया इस किस्म के लोग उस वक्त ख़ुद अपने ख़िलाफ झूठे गवाह बन जाएंगे। दुनिया में वे जिन चीजों के हामी बने रहे और जिनसे मंसूब होने को अपने लिए बाइसे फख़्र समझते रहे, आख़िरत में ख़ुद उनके मुंकिर हो जाएंगे। उन्होंने अकाइद और तौजीहात का जो झूठा किला खड़ा किया था वह इस तरह ढह जाएगा जैसे उसका कोई वजूद ही न था।

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِن يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُم مَّا كَانُوا يُخْفُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें। और उनके कानों मे बोझ है। अगर वे तमाम निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएंगे। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते हैं तो वे मुंकिर कहते हैं कि यह तो बस पहले लोगों की कहानियां हैं। वे लोगों को रोकते हैं और ख़ुद भी उससे अलग रहते हैं। वे ख़ुद अपने को हलाक कर रहे हैं मगर वे नहीं समझते। और अगर तुम उन्हें उस वक्त देखो जब वे आग पर खड़े किए जाएंगे और कहेंगे कि काश हम फिर भेज दिए जाएं तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाएं और हम ईमान वालों में से हो जाएं। अब उन पर वह चीज खुल गई जिसे वे इससे पहले छुपाते थे। और अगर वे वापस भेज दिए जाएं तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे। और बेशक वे झूठे हैं। (25-28)

मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में आदमी को यह मौका हासिल है कि वह हर बात की मुफीदे मतलब तौजीह कर सके। इसलिए जो लोग तअस्सुब का जेहन लेकर बात को सुनते हैं उनका हाल ऐसा होता है जैसे उनके कान बंद हों और उनके दिलों पर पर्दे पड़े हुए हों। वे सुनकर भी नहीं सुनते और बताने के बाद भी नहीं समझते। दलाइल (तर्क) अपनी सारी वजाहत के बावजूद उन्हें मुतमइन करने में नाकाम रहते हैं। क्योंकि वे जो कुछ सुनते हैं झगड़े के जेहन से सुनते हैं न कि नसीहत के जेहन से। उनके अंदर बात को सुनने और समझने का कोई इरादा नहीं होता। इसका नतीजा यह होता है कि किसी बात का अस्ल पहलू उनके जेहन की गिरफ्त में नहीं आता। इसके बरअक्स हर बात को उल्टी शक्ल देने के लिए उन्हें कोई न कोई चीज मिल जाती है। दलाइल उनके जेहन का जुज नहीं बनते। अपने मुख़ालिफाना जेहन की वजह से वे हर बात में कोई ऐसा पहलू निकाल लेते हैं जिसे ग़लत मअना देकर वे अपने आपको बदस्तूर मुतमइन रखें कि वे हक पर हैं।

जो लोग यह मिजाज रखते हों उनके लिए तमाम दलाइल बेकार हैं। क्योंकि इम्तेहान की इस दुनिया में कोई भी दलील ऐसी नहीं जो आदमी को इससे रोक दे कि वह इसके रद्द के

लिए कुछ ख़ुदसाख़्ता अल्फाज न पाए। अगर कोई दलील न मिल रही हो तब भी वह हकारत के साथ यह कह कर उसे नजरअंदाज कर देगा 'यह कौन सी नई बात है। यह तो वही पुरानी बात है जो हम बहुत पहले से सुनते चले आ रहे हैं।' इस तरह आदमी उसकी सदाकत को मान कर भी उसे रद्द करने का एक बहाना पा लेगा। ऐसे लोग ख़ुदा के नजदीक दोहरे मुजरिम हैं। क्योंकि वे न सिर्फ ख़ुद हक से रुकते हैं बल्कि एक ख़ुदाई दलील को ग़लत मआना पहना कर आम लोगों की नजर में भी उसे मशकूक (संदिग्ध) बनाते हैं जो इतनी समझ नहीं रखते कि बातों का गहराई के साथ तज्जिया (विश्लेषण) कर सकें।

दुनिया की जिंदगी में इस किस्म के लोग ख़ूब बढ़ बढ़कर बातें करते हैं। दुनिया में हक का इंकार करके आदमी का कुछ नहीं बिगड़ता। इसलिए वह ग़लतफहमी में पड़ा रहता है। मगर कियामत में जब उसे आग के ऊपर खड़ा करके पूछा जाएगा तो उन पर सारी हकीकतें खुल जाएंगी। अचानक वह उन तमाम बातों का इकरार करने लगेगा जिन्हें वह दुनिया में ठुकरा दिया करता था।

وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

और कहते हैं कि जिंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की जिंदगी है। और हम फिर उठाए जाने वाले नहीं। और अगर तुम उस वक्त देखते जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह उनसे पूछेगा : क्या यह हकीकत नहीं है, वे जवाब देंगे हां, हमारे रब की कसम, यह हकीकत है। ख़ुदा फरमाएगा। अच्छा तो अजाब चखो उस इंकार के बदले जो तुम करते थे। यकीनन वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया। यहां तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आएगी तो वे कहेंगे हाय अफसोस, इस बाब में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसे वे उठाएंगे और दुनिया की जिंदगी तो बस खेल तमाशा है और आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिए जो तकवा (ईश-भय) रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते। (29-32)

जब भी कोई आदमी हक का इंकार करता है या नफ्स की ख़्वाहिशात पर चलता है तो ऐसा इस वजह से होता है कि वह यह समझ कर दुनिया में नहीं रहता कि मरने के बाद वह दुबारा उठाया जाएगा और मालिके कायनात के सामने हिसाब किताब के लिए खड़ा किया

जाएगा। दुनिया में आदमी को इख़्तियार मिला हुआ है जिसे वह बेरोक टोक इस्तेमाल करता है। उसे माल व दौलत और दोस्त और साथी हासिल हैं जिन पर वह भरोसा कर सकता है। उसे अक्ल मिली हुई है जिससे वह सरकशी की बातें सोचे और अपने जालिमाना अमल की ख़ूबसूरत तौजीह कर सके। यह चीजें उसे धोखे में डालती हैं। वह ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों पर झूठा भरोसा कर लेता है। वह समझने लगता है कि जैसा मैं आज हूं वैसा ही मैं हमेशा रहूंगा। वह भूल जाता है कि दुनिया में उसे जो कुछ मिला हुआ है वह बतौर इम्तेहान है न कि बतौर इस्तहक़ाक़ (पात्रता)।

इस क़िस्म की जिंदगी चाहे वह आख़िरत का इंकार करके हो या इंकार के अल्फ़ाज बोले बग़ैर हो, आदमी का सबसे बड़ा जुर्म है। जिन दुनियावी चीजों को आदमी अपना सब कुछ समझ कर उन पर टूटता है। आख़िर किस हक की बिना पर वह ऐसा कर रहा है। आदमी जिस रोशनी में चलता है और जिस हवा में सांस लेता है उसका कोई मुआवजा उसने अदा नहीं किया है। वह जिस जमीन से अपना रिज़्क निकालता है उसका कोई भी जुज उसका बनाया हुआ नहीं है। वह तमाम पसंदीदा चीजें जिन्हें हासिल करने के लिए आदमी दौड़ता है उनमें से कोई चीज नहीं जो उसकी अपनी हो। जब ये चीजें इंसान की अपनी पैदा की हुई नहीं हैं तो जो इन तमाम चीजों का मालिक है क्या उसका आदमी के ऊपर कोई हक नहीं। हकीकत यह है कि आदमी का मौजूदा दुनिया को इस्तेमाल करना ही लाजिम कर देता है कि वह एक रोज उसके मालिक के सामने हिसाब के लिए खड़ा किया जाए।

जो लोग दुनिया को ख़ुदा की दुनिया समझ कर जिंदगी गुजारें उनकी जिंदगी तक्वा की जिंदगी होती है। और जो लोग उसे ख़ुदा की दुनिया न समझें उनकी जिंदगी उन्मुक्त जिंदगी होती है। उन्मुक्त जिंदगी चन्द रोज का तमाशा है जो मरने के साथ ख़त्म हो जाएगा। और तक्वा की जिंदगी ख़ुदा के अबदी उसूलों पर क़ायम है इसलिए वह अबदी तौर पर आदमी का सहारा बनेगी। मौजूदा दुनिया में आदमी इन हकीकतों का इंकार करता है मगर इम्तेहान की आजादी ख़त्म होते ही वह उसका इकरार करने पर मजबूर होगा अगरचे उस वक्त का इकरार उसके कुछ काम न आएगा।

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَبَإِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾ وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

हमें मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं उससे तुम्हें रंज होता है। ये लोग तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह जालिम दरअस्ल अल्लाह की निशानियों का इंकार कर रहे हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ पहुंचाने पर सब्र किया यहां तक कि उन्हें हमारी मदद पहुंच गई। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और पैग़म्बरों की कुछ ख़बरें तुम्हें पहुंच ही चुकी हैं। और अगर उनकी बेरुख़ी तुम पर गिरां गुजर रही है तो अगर तुममें कुछ जोर है तो जमीन में कोई सुरंग ढूंढो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ। और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता। पस तुम नादानों में से न बनो। कुबूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसकी तरफ लौटाए जाएंगे। (33-36)

अबू जहल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : 'ऐ मुहम्मद, ख़ुदा की कसम हम तुम्हें नहीं झुठलाते। यकीनन तुम हमारे दर्मियान एक सच्चे आदमी हो। मगर हम उस चीज को झुठलाते हैं जिसे तुम लाए हो।' मक्का के लोग जो ईमान नहीं लाए वे आपको एक अच्छा इंसान मानते थे। मगर किसी के मुतअल्लिक यह मानना कि उसकी जबान पर हक जारी हुआ है उसे बहुत बड़ा ऐज़ाज देना है और इतना बड़ा ऐज़ाज देने के लिए वे तैयार न थे। आपको जब वे 'सच्चा' या 'ईमानदार' कहते तो उन्हें यह नफ्सियाती तस्कीन हासिल रहती कि आप हमारी ही सतह के एक इंसान हैं। मगर इस बात का इकरार कि आपकी जबान पर ख़ुदा का कलाम जारी हुआ है आपको अपने से ऊंचा दर्जा देने के हममअना था। और इस क़िस्म का एतराफ आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है।

मौजूदा दुनिया में ख़ुदा अपनी बराहेरास्त सूरत में सामने नहीं आता, वह दलाइल (तर्कों) और निशानियों की सूरत में इंसान के सामने जाहिर होता है। इसलिए हक के दलाइल को न मानना या उसके हक में जाहिर होने वाली निशानियों की तरफ से आंखें बन्द कर लेना गोया ख़ुदा को न मानना और ख़ुदा के चेहरे की तरफ से आंखें फेर लेना है। ताहम ऐसा नहीं हो सकता कि ख़ुदा मजबूरकुन मोजिजात (चमत्कारों) के साथ सामने आए। मजबूरकुन मोजिजात के साथ ख़ुदा की दावत पेश की जाए तो फिर इख़्तियार की आजादी ख़त्म हो जाएगी और इम्तेहान के लिए आजादाना इख़्तियार का माहौल होना जरूरी है। दाओ को इस बात का ग़म न करना चाहिए कि उसके साथ सिर्फ दलाइल (तर्कों) का वजन है, ग़ैर मामूली किस्म की तस्ख़ीरी (वर्चस्वपरक) कुव्वतें उसके पास मौजूद नहीं। दाओ को इस फ़िक्र में पड़ने के बजाए सब्र करना चाहिए। हक की दावत की जद्दोजहद एक तरफ दाओ के सब्र का इम्तेहान होती है और दूसरी तरफ मुख़ातबीन के लिए इस बात का इम्तेहान कि वे अपने जैसे एक इंसान में ख़ुदा का नुमाइंदा होने की झलक देखें। वे इंसान के मुंह से निकले हुए कलाम में ख़ुदाई कलाम की अज्मतों को पा लें, वे माद्दी (भौतिक) जोर से ख़ाली दलाइल (तर्कों) के आगे इस तरह झुक जाएं जिस तरह वे जोरआवर ख़ुदा के आगे झुकेंगे। जिंदा लोगों के लिए सारी कायनात निशानियों से भरी हुई है। और जिन्होंने अपने एहसासात को मुर्दा कर लिया हो वे कियामत के जलजले के सिवा किसी और चीज से सबक नहीं ले सकते।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी उसके रब की तरफ से क्यों नहीं उतरी। कहो अल्लाह बेशक कादिर है कि कोई निशानी उतारे मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जो भी जानवर जमीन पर चलता है और जो भी परिंदा अपने दोनों बाजुओं से उड़ता है वे सब तुम्हारी ही तरह के समूह हैं। हमने लिखने में कोई चीज नहीं छोड़ी है। फिर सब अपने रब के पास इकट्ठा किए जाएंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया वे बहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है। (37-39)

इन आयात के इख़्तिसार (सार) को खोल दिया जाए तो पूरा मज्मून इस तरह होगा वे कहते हैं कि पैग़म्बर के साथ ग़ैर मामूली निशानी क्यों नहीं जो उसके पैग़ाम के बरहक होने का सुबूत हो। तो अल्लाह हर किस्म की निशानी उतारने पर कादिर है। मगर अस्ल सवाल निशानी का नहीं बल्कि लोगों की बेइल्मी का है। निशानियां तो बेशुमार तादाद में हर तरफ बिखरी हुई हैं जब लोग इन मौजूद निशानियों से सबक नहीं ले रहे हैं तो कोई नई निशानी उतारने से वे क्या फायदा उठा सकेंगे। तरह-तरह के चलने वाले जानवर और मुख़्तलिफ किस्म की उड़ने वाली चिड़ियां जो जमीन में और फजा में मौजूद हैं वे तुम्हारे लिए निशानियां ही तो हैं। इन तमाम जिंदा मख़्लूकात से भी अल्लाह को वही कुछ मत्लूब है जो तुमसे मत्लूब है। और हर एक से जो कुछ मत्लूब है वह ख़ुदा ने उसके लिए लिख दिया है, इंसान को शरई तौर पर और दूसरी मख़्लूकात को जिबिल्ली (स्वभावगत) तौर पर। चिड़ियों और जानवरों जैसी मख़्लूकात ख़ुदा के लिखे पर पूरा-पूरा अमल कर रही हैं। मगर इंसान ख़ुदा के लिखे को मानने के लिए तैयार नहीं। इसलिए यह मामला निशानी का नहीं बल्कि अंधेपन का है, बाकी तमाम मख़्लूकात जो दीन इख़्तियार किए हुए हैं, इंसान के लिए उसके सिवा कोई दीन इख़्तियार करने का जवाज (औचित्य) क्या है। हकीकत यह है कि जिन्हें अमल करना है वे निशानी का मुतालबा किए बग़ैर अमल कर रहे हैं और जिन्हें अमल करना नहीं है वे निशानियों के हुजूम में रहकर निशानियां मांग रहे हैं। ऐसे लोगों का अंजाम यही है कि कियामत में सबको जमा करके दिखा दिया जाए कि हर किस्म के हैवानात किस तरह हकीकतपसंदी का तरीका इख़्तियार करके ख़ुदा के रास्ते पर चल रहे थे। यह सिर्फ इंसान था जो इससे भटकता रहा।

जानवरों की दुनिया मुकम्मल तौर पर मुताबिके फित्रत दुनिया है। उनके यहां रिज़्क की तलाश है मगर लूट और जुल्म नहीं। उनके यहां जरूरत है मगर हिर्स और ख़ुदग़र्जी नहीं। उनके

यहां आपसी तअल्लुकात हैं मगर एक दूसरे की काट नहीं। उनके यहां ऊंच-नीच है मगर हसद और ग़ुरूर नहीं। उनके यहां एक को दूसरे से तकलीफ पहुंचती है मगर बुग्ज व अदावत नहीं। उनके यहां काम हो रहे हैं मगर क्रेडिट लेने का शौक नहीं। मगर इंसान सरकशी करता है। वह ख़ुदाई नक्शे का पाबंद बनने के लिए तैयार नहीं होता। इंसान से जिस चीज का मुतालबा है वह ठीक वही है जिस पर दूसरे हैवानात कायम हैं। फिर इसके लिए मोजिजे (चमत्कार) मांगने की क्या जरूरत। हैवानात की सूरत में चलती फिरती निशानियां क्या आदमी के सबक के लिए काफी नहीं हैं जो ख़ुदाई तरीके अमल का जिंदा नमूना पेश कर रही हैं और इस तरह पैग़म्बर की तालीमात के बरहक होने की अमली तस्दीक करती हैं।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

कहो, यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आए या कियामत आ जाए तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे। बताओ अगर तुम सच्चे हो, बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो। अगर वह चाहता है। और तुम भूल जाते हो उन्हें जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो। (40-41)

अबू जहल के लड़के इकरिमा इस्लाम के सख़्त दुश्मन थे। वह फतहे मक्का तक इस्लाम के मुख़ालिफ बने रहे। फतह मक्का के दिन भी उन्होंने एक मुसलमान को तीर मारकर हलाक कर दिया था। इकरिमा उन लोगों में से थे जिनके मुतअल्लिक फतहे मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह हुक्म दिया था कि जहां मिलें कत्ल कर दिए जाएं।

मक्का जब फतह हो गया तो इकरिमा मक्का छोड़कर जद्दा की तरफ भागे। उन्होंने चाहा कि कश्ती के जरिए बहरे कुलजुम (लाल सागर) पार करके हबश पहुंच जाएं। मगर वह कश्ती में सवार होकर समुद्र में पहुंचे थे कि तुन्द हवाओं ने कश्ती को घेर लिया। कश्ती ख़तरे में पड़ गई। कश्ती के मुसाफिर सब मुश्रिक लोग थे। उन्होने लात और उज्जा वग़ैरह अपने बुतों को मदद के लिए पुकारना शुरू किया। मगर तूफान की शिद्दत बढ़ती रही। यहां तक कि मुसाफिरों को यकीन हो गया कि अब कश्ती डूब जाएगी। अब कश्ती वालों ने कहा कि इस वक्त लात व उज्जा कुछ काम न देंगे। अब सिर्फ एक ख़ुदा को पुकारो, वही तुम्हें बचा सकता है। चुनांचे सब एक ख़ुदा को पुकारने लगे। अब तूफान थम गया और कश्ती वापस अपने साहिल पर आ गई। इकरिमा पर इस वाकये का बहुत असर हुआ। उन्होंने कहा : ख़ुदा की कसम, दरिया में अगर कोई चीज ख़ुदा के सिवा काम नहीं आ सकती तो यकीनन ख़ुश्की में भी ख़ुदा के सिवा कोई दूसरी चीज काम नहीं आ सकती। ख़ुदाया मैं तुझसे वादा करता हूं कि अगर तूने मुझे इससे नजात दे दी जिसमें इस वक्त मैं फंसा हुआ हूं तो मैं जरूर मुहम्मद के यहां जाऊंगा और अपना हाथ उनके हाथ में दे दूंगा और मुझे यकीन है कि मैं उन्हें माफ

करने वाला, दरगुजर करने वाला और और महरबान पाऊंगा। (अबूदाऊद, नसई)

सारी तारीख़ का यह मुशाहिदा है कि इंसान नाजुक लम्हात में ख़ुदा को पुकारने लगता है। यहां तक कि वह शख़्स भी जो आम जिंदगी में ख़ुदा के सिवा दूसरों पर भरोसा किए हो या सिरे से ख़ुदा को मानता न हो। यह ख़ुदा के वजूद और उसके क़ादिरे मुतलक होने की फ़ितरी शहादत है। ग़ैर मामूली हालात में जब जाहिरी पर्दे हट जाते हैं और आदमी तमाम मस्नूई (कृत्रिम) ख़्यालात को भूल चुका होता है उस वक्त आदमी को ख़ुदा के सिवा कोई चीज याद नहीं आती। बअल्फ़ाजे दीगर, मजबूरी के नुक्ते पर पहुंच कर हर आदमी ख़ुदा का इक़रार कर लेता है, क़ुरआन का मुतालबा यह है कि यही इक़रार और इताअत (आज्ञापालन) आदमी उस वक्त करने लगे जबकि बजाहिर मजबूर करने वाली कोई चीज उसके सामने मौजूद न हो।

बाक़ी हैवानात अपनी जिबिल्लत (प्राकृतिक स्वभाव) के तहत हक़ीक़तपसंदाना जिंदगी गुजार रहे हैं। मगर इंसान को जो चीज हक़ीक़तपसंदी और एतराफ़ की सतह पर लाती है वह ख़ौफ़ की नफ़्सियात है। हैवानात की दुनिया में जो काम जिबिल्लत करती है, इंसान की दुनिया में वही काम तक़वा अंजाम देता है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

और तुमसे पहले बहुत सी कौमों की तरफ हमने रसूल भेजे। फिर हमने उन्हें पकड़ा सख़्ती में और तकलीफ में ताकि वे गिड़गिड़ाएं। पस जब हमारी तरफ से उन पर सख़्ती आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाए। बल्कि उनके दिल सख़्त हो गए। और शैतान उनके अमल को उनकी नजर में ख़ुशनुमा करके दिखाता रहा। फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये। यहां तक की जब वे उस चीज़ पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया। उस वक्त वे नाउम्मीद होकर रह गए। पस उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने जुल्म किया था और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, तमाम जहानों का रब। (42-45)

आदमी के सामने एक हक आता है और वह उसे नहीं मानता तो अल्लाह उसे फौरन नहीं पकड़ता। बल्कि उसे माली नुक्सान और जिस्मानी तकलीफ की सूरत में कुछ झटके देता है ताकि उसकी सोचने की सलाहियत बेदार हो और वह अपने रवैये के बारे में नजरेसानी करे, जिंदगी के हादसे महज हादसे नहीं हैं, वे ख़ुदा के भेजे हुए महसूस पैग़ामात हैं जो इसलिए आते हैं ताकि

ग़फलत में सोए हुए इंसान को जगाएं। मगर आदमी अक्सर इन चीजों से नसीहत नहीं लेता। वह यह कहकर अपने को मुतमइन कर लेता है कि ये तो उतार चढ़ाव के वाकेयात हैं और इस किस्म के उतार चढ़ाव जिंदगी में आते ही रहते हैं। इस तरह हर मौके पर शैतान कोई ख़ुशनुमा तौजीह पेश करके आदमी के जेहन को नसीहत की बजाए ग़फलत की तरफ फेर देता है। आदमी जब बार-बार ऐसा करता है तो हक व बातिल और सही व ग़लत के बारे में उसके दिल की हस्सासियत ख़त्म हो जाती है। वह कसावत (बेहिसी) का शिकार होकर रह जाता है।

जब आदमी ख़ुदा की तरफ से आई हुई तंबीहात को नजरअंदाज कर दे तो इसके बाद उसके बारे में ख़ुदा का अंदाज बदल जाता है। अब उसके लिए ख़ुदा का फैसला यह होता है कि उस पर आसानियों और कामयाबियों के दरवाजे खोले जाएं। उस पर ख़ुशहाली की बारिश की जाए। उसकी इज्जत व मक़बूलियत में इजाफ़ा किया जाए। यह दरहक़ीक़त एक सजा है जो इसलिए होती है ताकि उसका अंदरून और ज्यादा बाहर आ जाए। इसका मक्सद यह होता है कि आदमी मुतमइन होकर अपनी बेहिसी को और बढ़ा ले, वह हक को नजरअंदाज करने में और ज्यादा ढीठ हो जाए और इस तरह ख़ुदा की सजा का इस्तहक़ाक (पात्रता) उसके लिए पूरी तरह साबित हो जाए। जब यह मक्सद हासिल हो जाए तो उसके बाद अचानक उस पर ख़ुदा का अजाब टूट पड़ता है। उसे दुनियावी जिंदगी से महरूम करके आख़िरत की अदालत में हाजिर कर दिया जाता है ताकि उसकी सरकशी की सजा में इसके लिए जहन्नम का फैसला हो।

यह दुनिया ख़ुदा की दुनिया है। यहां हर किस्म की बड़ाई और तारीफ का हक सिर्फ एक जात के लिए है। इसलिए जब कोई शख़्स ख़ुदा की तरफ से आए हुए हक को नजरअंदाज कर देता है तो वह दरअस्ल ख़ुदा की नाक़द्री करता है। वह ख़ुदा की अज्मतों की दुनिया में अपनी अज्मत क़ायम करना चाहता है। वह ऐसा जुर्म करता है जिससे बड़ा कोई जुर्म नहीं। वह उस ख़ुदा के सामने गुस्ताख़ी करता है जिसके सामने इज्ज (विनय) के सिवा कोई और रवैया किसी इंसान के लिए दुरुस्त नहीं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ﴿٤٦﴾ قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾ قُل لَّا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

कहो, यह बताओ कि अल्लाह अगर छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो उसे वापस लाए। देखो हम क्योंकर तरह-तरह से निशानियां बयान करते हैं फिर भी वे एराज (उपेक्षा) करते हैं। कहो, यह बताओ अगर अल्लाह का अजाब तुम्हारे ऊपर अचानक या एलानिया आ जाए तो जालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा। और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और अपनी इस्लाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उन्हें अजाब पकड़ लेगा इसलिए कि वे नाफरमानी करते थे। कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूं और न मैं तुमसे कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं। मैं तो बस उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (46-50)

आदमी को कान और आंख और दिल जैसी सलाहियतें देना जाहिर करता है कि उसका ख़ालिक उससे क्या चाहता है। ख़ालिक यह चाहता है कि आदमी बात को सुने और देखे, वह अक्ली दलील से उसे मान ले। अगर आदमी अपनी इन ख़ुदादाद (ईश प्रदत्त) सलाहियतों से वह काम न ले जो उससे मक्सूद है तो गोया वह अपने को इस ख़तरे में डाल रहा है कि उसे नाअहल करार देकर ये नेमतें उससे छीन ली जाएं। किस कद्र महरूम है वह शख़्स जिसे अंधा और बहरा और बेअक्ल बना दिया जाए। क्योंकि ऐसा आदमी दुनिया में बिल्कुल जलील और बेकीमत होकर रह जाता है। फिर इससे भी बड़ी महरूमी यह है कि आदमी के पास बजाहिर कान हों मगर वे हक को सुनने के लिए बहरे हो जाएं। बजाहिर आंख हो मगर वह हक को देखने के लिए अंधी हो। सीने में दिल मौजूद हो मगर वह हक को समझने की इस्तेदाद (सामर्थ्य) से ख़ाली हो जाए। छीनने की यह किस्म पहली किस्म से कहीं ज्यादा संगीन है। क्योंकि वह आदमी को आख़िरत के एतबार से जलील और बेकीमत बना देती है जिससे बड़ी महरूमी कोई दूसरी नहीं।

आदमी को हक के इंकार के अंजाम से डराया जाए तो ढीठ आदमी बेख़ौफी का जवाब देता है। दुनिया में अपने मामलात को दुरुस्त देख कर वह समझता है कि ख़ुदा की पकड़ का अंदेशा उसके अपने लिए नहीं है। यहां तक कि जो ज्यादा ढीठ हैं वे हक के दाओ से कहते हैं कि तुम अगर सच्चे हो तो अजाब को लाकर दिखाओ। वे नहीं समझते कि ख़ुदा का अजाब आया तो वह ख़ुद उन्हीं के ऊपर पड़ेगा न कि किसी दूसरे के ऊपर।

अल्लाह का दाओ आगाह करने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला बनकर आता है। दूसरे शब्दों में, आदमी का इम्तेहान ख़ुदा के यहां जिस बुनियाद पर हो रहा है वह यह है कि आदमी आगाही (विवेक) की जबान में हक को पहचाने और अपनी इस्लाह (सुधार) कर ले। अगर उसने आगाही की जबान में हक को न पहचाना और उसे मानने के लिए रहस्यमयी चीज़ों का मुतालबा किया तो गोया वह अंधेपन का सुबूत दे रहा है और अंधों के लिए ख़ुदा की इस दुनिया में भटकने और बर्बाद होने के सिवा कोई अंजाम नहीं।

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

और तुम इस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से डराओ उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएंगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें। और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी ख़ुशनूदी चाहते हुए। उनके हिसाब में से किसी चीज का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज का बोझ उन पर नहीं कि तुम उन्हें अपने से दूर करके बेइंसाफों में से हो जाओ। और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे से आजमाया है ताकि वे कहें कि क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे दर्मियान अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ है। क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों से ख़ूब वाकिफ़ नहीं। (51-53)

नसीहत हमेशा उन लोगों के लिए कारगर होती है जो अंदेशे की नफ्सियात में जीते हों। जिसे किसी चीज का खटका लगा हुआ हो उसी को उसके ख़तरे से आगाह किया जा सकता है। इसके बरअक्स जो लोग बेख़ौफी की नफ्सियात में जी रहे हों वे कभी नसीहत के बारे में संजीदा नहीं होते, इसलिए वे नसीहत को कुबूल करने के लिए भी तैयार नहीं होते।

बेख़ौफी की नफ्सियात पैदा होने का सबब आमतौर पर दो चीजें होती हैं। एक दुनियापरस्ती, दूसरे अकाबिरपरस्ती (व्यक्ति पूजा)। जो लोग दुनिया की चीजों में गुम हों या दुनिया की कोई कामयाबी पाकर उस पर मुतमइन हो गए हों, यहां तक कि उन्हें यह भी याद न रहता हो कि एक रोज उन्हें मर कर ख़ालिक व मालिक के सामने हाजिर होना है, ऐसे लोग आख़िरत को कोई काबिले लिहाज चीज नहीं समझते, इसलिए आख़िरत की याददिहानी उनके जेहन में अपनी जगह हासिल नहीं करती। उनका मिजाज ऐसी बातों को ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देता है।

दूसरी किस्म के लोग वे हैं जो आख़िरत के मामले को सिफारिश का मामला समझ लेते हैं। वे फर्ज कर लेते हैं कि जिन बड़ों के साथ उन्होंने अपने को वाबस्ता कर रखा है वे आख़िरत में उनके मददगार और सिफारिशी बन जाएंगे और किसी भी नामुवाफिक (प्रतिकूल) सूरतेहाल में उनकी तरफ से काफी साबित होंगे। ऐसे लोग इस भरोसे पर जी रहे होते हैं कि उन्होंने मुक़द्दस

हस्तियों का दामन थाम रखा है, वे ख़ुदा के महबूब व मकबूल गिरोह के साथ शामिल हैं इसलिए अब उनका कोई मामला बिगड़ने वाला नहीं है। यह नफ़्सियात उन्हें आख़िरत के बारे में निडर बना देती है, वे किसी ऐसी बात पर संजीदगी के साथ ग़ौर करने के लिए तैयार नहीं होते जो आख़िरत में उनकी हैसियत को मुश्तबह (संदिग्ध) करने वाली हो।

जो लोग मस्लेहतों की रिआयत करके दौलत व मकबूलियत हासिल किए हुए हों वे कभी हक की बेआमेज (विशुद्ध) दावत का साथ नहीं देते। क्योंकि हक का साथ देना उनके लिए यह मअना रखता है कि अपनी मस्लेहतों के बने बनाए ढांचे को तोड़ दिया जाए। फिर जब वे यह देखते हैं कि हक के गिर्द मामूली हैसियत के लोग जमा हैं तो यह सूरतेहाल उनके लिए और ज्यादा फ़ितना बन जाती है। उन्हें महसूस होता है कि इसका साथ देकर वे अपनी हैसियत को गिरा लेंगे। वे हक को हक की कसौटी पर न देख कर अपनी कसौटी पर देखते हैं और जब हक उनकी अपनी कसौटी पर पूरा नहीं उतरता तो वे उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾

और जब तुम्हारे पास वे लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। बेशक तुममें से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे फिर इसके बाद वह तौबा करे और इस्लाह (सुधार) कर ले तो वह बख़्शने वाला महरबान है। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोल कर बयान करते हैं, और ताकि मुजरिमीन का तरीका जाहिर हो जाए। (54-55)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में एक किस्म के लोग वे थे जो आपकी सदाकत पर मोजिजे (चमत्कार) तलब करके रहे। दूसरे लोग वे थे जो कुरआनी आयतों को सुनकर आपके मोमिन बन गए। यही इम्तेहान हर जमाने में इंसान के साथ जारी है। मौजूदा दुनिया में ख़ुदा ख़ुद सामने नहीं आता, वह दाओ (आह्वानकर्ता) की जबान से अपने दलाइल (तर्कों) का एलान कराता है, वह अपनी सदाकत को लफ़्जों के रूप में ढाल कर इंसान के सामने लाता है। अब जिसकी फ़ितरत जिंदा है वह इन्हीं दलाइल में ख़ुदा का जलवा देख लेता है और उसका इकरार करके उसके आगे झुक जाता है। इसके बरअक्स जिन्होंने अपनी फ़ितरत पर मस्नूई पर्दे डाल रखे हैं वे 'अल्फ़ाज' के रूप में ख़ुदा को पाने में नाकाम रहते हैं। वे ख़ुदा को उसकी इस्तदलाली (तार्किक) सूरत में देख नहीं पाते इसलिए चाहते हैं कि ख़ुदा अपनी मुशाहिदाती सूरत (प्रकट रूप) में उनके सामने आए। मगर मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। यहां वही शख़्स ख़ुदा को पाएगा जो ख़ुदा को हालते ग़ैब

(अप्रकट) में पा ले, जो शख़्स ख़ुदा को हालते शुहूद (साक्षात रूप) में देखने पर इसरार करे, उसका अंजाम ख़ुदा की इस दुनिया में महरूमी के सिवा और कुछ नहीं।

जो लोग अपनी कजी की वजह से हक से दूर रहते हैं वे हक को कुबूल करने वालों पर तरह-तरह के इल्जाम लगाते हैं ताकि उनके मुकाबले में अपने को बेहतर साबित कर सकें। उन्हें अपने जराइम नजर नहीं आते, अलबत्ता हकपरस्तों से अगर कभी कोई ग़लती हो गई तो उसे ख़ूब बढ़ाकर बयान करते हैं ताकि यह जाहिर हो कि जो लोग इस दावत के गिर्द जमा हैं वे काबिले एतबार लोग नहीं हैं। हालांकि अस्ल सूरतेहाल इसके बरअक्स है। जिन लोगों ने नाहक को छोड़कर हक को कुबूल किया है उन्होंने अपने इस अमल से ईमान व इस्लाह (सुधार) के रास्ते पर चलने का सुबूत दिया है। इस तरह वे ख़ुदा के कानून के मुताबिक इसके मुस्तहिक हो गए कि उन्हें इस्लाहे हाल की तौफ़ीक मिले और वे ख़ुदा की रहमतों में अपना हिस्सा पाएं। इसके बरअक्स जो लोग हक से दूर पड़े हुए हैं वे अपने अमल से साबित कर रहे हैं कि वे ईमान व इस्लाह का तरीका इख़्तियार करने से कोई दिलचस्पी नहीं रखते। ऐसे लोग ख़ुदा की तौफ़ीक से महरूम (वंचित) रहते हैं। उनकी ढिठाई कभी ख़त्म नहीं होती और ढिठाई ही ख़ुदा की इस दुनिया में किसी का सबसे बड़ा जुर्म है।

ख़ुदा 'निशानियों' की जबान में बोलता है। निशानियां उस शख़्स के लिए कारआमद होती हैं जो उन्हें पढ़ना चाहे। इसी तरह हिदायत उसी को मिलेगी जो उसका तालिब हो। जो शख़्स हिदायत की तलब न रखता हो उसके लिए ख़ुदा की इस दुनिया में भटकने के सिवा कोई दूसरा अंजाम नहीं।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٥٩﴾

कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता। अगर मैं ऐसा करूं तो मैं बेराह हो जाऊंगा और मैं राह पाने वालों में से न रहूंगा। कहो मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूं और तुमने उसे झुठला दिया है। वह चीज मेरे पास

नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। फ़ैसले का इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को है। वही हक़ को बयान करता है और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। कहो, अगर वह चीज मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान मामले का फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ख़ूब जानता है जालिमों को। और उसी के पास ग़ैब (अप्रकट) की कुंजियां हैं, उसके सिवा उसे कोई नहीं जानता। अल्लाह जानता है जो कुछ ख़ुश्की और समुद्र में है। और दरख़्त से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसे इल्म न हो और जमीन की तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई तर और ख़ुश्क चीज मगर सब एक खुली किताब में दर्ज है। (56-59)

ख़ुदा के सिवा जिस चीज को आदमी माबूद (पूज्य) का दर्जा देता है वह उसकी एक ख़्वाहिश होती है जिसे वह वाक़या (सच) मान लेता है। कभी अपनी बेअमली के अंजाम से बचने के लिए वह किसी को ख़ुदा का मुक़र्रब यकीन कर लेता है जो ख़ुदा के यहां उसका मददगार और सिफ़ारिशी बन जाए। कभी वह एक शख़्सियत के हक में तिलिस्माती अज़्मत का तसव्वुर क़ायम कर लेता है ताकि अपने को उससे मंसूब करके अपने छोटेपन की तलाफ़ी कर सके। कभी अपनी सहल (आसान) पसंदी की वजह से वह ऐसा ख़ुदा गढ़ लेता है जो सस्ती क़ीमत पर मिल जाए और मामूली-मामूली चीजों से जिसे ख़ुश किया जा सके।

मगर इस क़िस्म की तमाम चीजें महज मफ़रूज़ात (कल्पनाएं) हैं और मफ़रूज़ात किसी को हक़ीक़त तक नहीं पहुंचा सकते। ताहम आदमी अपनी सस्ती तलब में कभी इतना अंधा हो जाता है कि वह ख़ुद उन लोगों को चैलेंज करने लगता है जिन्होंने कायनात के हक़ीक़ी मालिक की तरफ़ अपने को खड़ा कर रखा है। वह कहता है कि सारी बड़ाई अगर उसी एक ख़ुदा के लिए है जिसके तुम नुमाइंदे हो तो हम जैसे नाफ़रमानों पर उसका एताब नाज़िल करके दिखाओ। यह जुरअत उन्हें इसलिए होती है कि वे देखते हैं कि तौहीद के दाअियों के मुक़ाबले में उनके अपने गिर्द ज्यादा दुनियावी रौनकें जमा हैं। वे भूल जाते हैं कि ये माद्दी चीजें उन्हें दुनियादारी और मस्लेहतपरस्ती की बिना पर मिली हैं और तौहीद के दाओ जो इन चीजों से ख़ाली हैं वे इसलिए ख़ाली हैं कि उनकी आख़िरतपसंदी ने उन्हें मस्लेहतपरस्ती की सतह पर आने से रोके रखा।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। इसलिए यहां देखने की चीज यह नहीं है कि आदमी के माद्दी हालात क्या हैं। बल्कि यह कि वह हक़ीक़ी दलील पर खड़ा हुआ है या मफ़रूज़ात (कल्पनाओं) और ख़ुशगुमानियों पर। बिलआख़िर वही शख़्स कामयाब होगा जो वाक़ई दलील पर खड़ा होगा। जो लोग मफ़रूज़ात पर खड़े हुए हैं उनका आख़िरी अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं कि वे ख़ुदा की इस दुनिया में बिल्कुल बेसहारा होकर रह जाएं। जिस दुनिया का सारा निजाम मोहकम (सुदृढ़) क़ानूनों पर चल रहा हो उसका आख़िरी अंजाम ख़ुशख़्यालियों के ताबेअ क्योंकर हो जाएगा।

وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۭ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۣ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

और वही है जो रात में तुम्हें वफ़ात देता है और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। फिर तुम्हें उठा देता है उसमें ताकि मुक़र्रर मुद्दत पूरी हो जाए। फिर उसी की तरफ़ तुम्हारी वापसी है। फिर वह तुम्हें बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो। और वह ग़ालिब (वर्चस्वमान) है अपने बंदों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर निगरां (निरीक्षक) भेजता है। यहां तक कि जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते। फिर सब अल्लाह, अपने मालिके हक़ीक़ी की तरफ़ वापस लाए जाएंगे। सुन लो, हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (60-62)

ख़ुदा ने यह दुनिया इस तरह बनाई है कि वह उन हक़ीक़तों की अमली तस्दीक़ बन गई है जिनकी तरफ़ इंसान को दावत दी जा रही है। अगर आदमी अपनी आंखों को बंद न करे और अपनी अक़्ल पर मस्नूई (बनावटी) पर्दे न डाले तो पूरी कायनात उसे क़ुरआन की फ़िक्री दावत (वैचारिक आह्वान) का अमली मुजाहिरा दिखाई देगी।

दरख़्त के तने में शाख़ निकलती है और शाख़ में पत्ते। मगर दोनों के जोड़ों में फ़र्क़ होता है। गोया कि बनाने वाले को मालूम है कि शाख़ को अपने तने से जुड़ा रहना है और पत्ते को अलग होकर गिर जाना है। अगर शाख़ की जड़ के मुक़ाबले में पत्ते की जड़ में यह इंफ़िरादी ख़ुसूसियत न हो तो पत्ता शाख़ से जुदा न हो और दरख़्त को हर साल नई जिंदगी देने का निजाम अबतर (बाधित) हो जाए। इसी तरह जब एक दाना जमीन में डाला जाता है तो जमीन में पहले से उसके लिए वह तमाम जरूरी ख़ुराक मौजूद होती है जिससे रिज़्क़ पाकर वह बढ़ता है और बिलआख़िर पूरा दरख़्त बनता है। अब कैसे मुमकिन है कि जो ख़ुदा पत्ता और दाना तक के अहवाल से बाख़बर हो वह इंसानों के अहवाल से बेख़बर हो जाए।

हमारी जमीन सारी कायनात में एक अनोखा वाक़या है। यहां का निजाम विलक्षण रूप से इंसान जैसी एक मख़्लूक़ के अनुकूल बनाया गया है। जमीन के अंदर का एक बड़ा हिस्सा आग है मगर वह फट नहीं पड़ता। सूरज इंतिहाई सही हिसाबी फ़ासले पर है, वह उससे न दूर जाता है और न क़रीब होता। आदमी को हर वक़्त हवा और पानी की जरूरत है। चुनांचे हवा को गैस की शक्ल में हर जगह फैला दिया गया है और पानी को तरल रूप में जमीन ने नीचे रख

दिया गया है। इस किस्म के बेशुमार इंतिजामात हैं जिन्हें जमीन पर मुसलसल बरक़रार रखा जाता है। अगर इनमें मामूली फ़र्क़ आ जाए तो इंसान के लिए जमीन पर जिंदगी गुजारना नामुमकिन हो जाए।

नींद बड़ी अजीब चीज है। आदमी चलता फिरता है। वह देखता और बोलता है। मगर जब वह सोता है तो उसके तमाम हवास इस तरह मुअत्तल हो जाते हैं जैसे जिंदगी उससे निकल गई हो। इसके बाद जब वह नींद पूरी करके उठता है तो वह फिर वैसा ही इंसान होता है जैसा कि वह पहले था। यह गोया जिंदगी और मौत की तमसील है। यह मामला हमारे लिए इस बात को क़ाबिले फ़हम बना देता है कि आदमी किस तरह मरेगा और किस तरह वह दुबारा जिंदा होकर खड़ा हो जाएगा। ये वाकेआत साबित करते हैं कि सारे इंसान ख़ुदा के इख़्तियार में हैं और जल्द वह वक्त आने वाला है जबकि ख़ुदा अपने इख़्तियार के मुताबिक उनका फ़ैसला करे।

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَئِنْ أَنْجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝٦٣ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝٦٤ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۝٦٥ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝٦٦ لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٦٧

कहो, कौन तुम्हें नजात देता है ख़ुश्की और समुद्र की तारीकियों से, तुम उसे पुकारते हो आजिजी से और चुपके-चुपके कि अगर ख़ुदा ने हमें नजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुजार बंदों में से बन जाएंगे। कहो, ख़ुदा ही तुम्हें नजात देता है उससे और हर तकलीफ से, फिर भी तुम शिर्क (साझीदार ठहराना) करने लगते हो। कहो, ख़ुदा कादिर है इस पर कि तुम पर कोई अजाब भेज दे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुम्हें गिरोह-गिरोह करके एक को दूसरे की ताकत का मजा चखा दे। देखो, हम किस तरह दलाइल (तर्क) मुख़्तलिफ पहलुओं से बयान करते हैं ताकि वे समझें। और तुम्हारी कौम ने उसे झुठला दिया है हालांकि वह हक है। कहो, मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूं। हर ख़बर के लिए एक वक्त मुकर्रर है और तुम जल्द ही जान लोगे। (63-67)

इंसान को इस दुनिया में जितनी मुसीबतें पेश आती हैं उतनी किसी भी दूसरे जानदार को पेश नहीं आतीं। ऐसा इसलिए होता है ताकि आदमी पर ऐसे हालात तारी किए जाएं जबकि उसके अंदर से तमाम मस्नूई (कृत्रिम) ख़्यालात ख़त्म हो जाएं और आदमी अपनी

असली फितरत को देख सके। चुनांचे जब भी आदमी पर कोई कड़ी मुसीबत पड़ती है तो वह यकसू होकर ख़ुदा को पुकारने लगता है। उस वक्त उसके जेहन से तमाम बनावटी पर्दे हट जाते हैं। वह जान लेता है कि इस दुनिया में इंसान तमामतर आजिज (निर्बल) है और सारी कुदरत सिर्फ ख़ुदा को हासिल है। मगर जैसे ही मुसीबत के हालात ख़त्म होते हैं वह बदस्तूर ग़फलत का शिकार होकर वैसा ही बन जाता है जैसा कि वह पहले था।

शिर्क की असली हकीकत अल्लाह के सिवा किसी दूसरी चीज पर एतमाद करना है और तौहीद यह है कि आदमी का सारा एतमाद अल्लाह पर हो जाए। शिर्क की एक सूरत वह है जो बुतों और दूसरे पूज्यों की पूजा के रूप में पेश आती है। मगर शुक्र के बजाए नाशुक्री का रवैया इख़्तियार करना भी शिर्क है। शिर्क की ज्यादा आम सूरत यह है कि आदमी ख़ुद अपने को बुत बना ले, वह अपने आप पर एतमाद करने लगे। आदमी जब अकड़ कर चलता है तो गोया वह अपने जिस्म व जान पर एतमाद कर रहा है। आदमी जब अपनी कमाई को अपनी कमाई समझता है तो गोया वह अपनी काबलियत पर भरोसा कर रहा है। आदमी जब एक हक को नजरअंदाज करता है तो गोया वह समझता है कि मैं जो भी करूं, कोई मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। आदमी जब किसी के ऊपर जुल्म करने में जरी होता है तो उस वक्त उसकी नफ्सियात यह होती है कि मैं इसके ऊपर इख़्तियार रखता हूं, उसके हक में अपनी मनमानी करने से मुझे कोई रोकने वाला नहीं। यह सारी सूरतें घमंड की सूरतें हैं और घमंड ख़ुदा के नजदीक सबसे बड़ा शिर्क है। क्योंकि यह अपने आपको ख़ुदा के मकाम पर रखना है।

आदमी अगर अपने हाल पर सोचे तो वह घमंड न करे। वह ऐसी हवाओं से घिरा हुआ है जो किसी भी वक्त तूफ़ान की सूरत इख़्तियार करके उसकी जिंदगी को तहस नहस कर सकती हैं, वह ऐसी जमीन पर खड़ा हुआ है जो किसी भी लम्हे जलजले की सूरत में फट सकती है। वह जिस समाज में रहता है उसमें हर वक्त इतनी अदावतें मौजूद रहती हैं कि एक चिंगारी पूरे समाज को ख़ाक व ख़ून के हवाले करने के लिए काफी है।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝٦٨ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَٰكِنْ ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝٦٩ وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝٧٠

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ यहां तक कि वे किसी और बात में लग जाएं। और अगर कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ऐसे बेइंसाफ लोगों के पास न बैठो। और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज की जिम्मेदारी नहीं। अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें। उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में डाल रखा है। और क़ुरआन के जरिए नसीहत करते रहो ताकि कोई शख़्स अपने किए में गिरफ्तार न हो जाए, इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सिफारिशी उसके लिए न हो। अगर वह दुनिया भर का मुआवजा दे तब भी क़ुबूल न किया जाए। यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ्तार हो गए। उनके लिए खौलता पानी पीने के लिए होगा और दर्दनाक सजा होगी इसलिए कि वे कुफ्र करते थे। (68-70)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने फरमाया कि अल्लाह ने हर उम्मत के लिए एक ईद का दिन मुकर्रर किया ताकि उस दिन वे अल्लाह की बड़ाई करें और उसकी इबादत करें और अल्लाह की याद से उसे मामूर करें। मगर बाद के लोगों ने अपनी ईद (मजहबी त्यौहार) को खेल तमाशा बना लिया। (तफ़्सीर कबीर)

हर दीनी अमल का एक मक्सद होता है और एक इसका जाहिरी पहलू होता है। ईद का मक्सद अल्लाह की बड़ाई और उसकी याद का इज्तिमाई मुजाहिरा है। मगर ईद की अदायगी के कुछ जाहिरी पहलू भी हैं। मसलन कपड़ा पहनना या इज्तिमाअ का सामान करना वग़ैरह। अब ईद को खेल तमाशा बनाना यह है कि उसके अस्ल मक्सद पर तवज्जोह न दी जाए अलबत्ता उसके जाहिरी और माद्दी पहलुओं की ख़ूब धूम मचाई जाए। मसलन कपड़ों और सामानों की नुमाइश, ख़रीद व फरोख़्त के हंगामे, तफरीहात का एहतिमाम, अपनी हैसियत और शान व शौकत के मुजाहिरे वग़ैरह।

उम्मतों के बिगाड़ के जमाने में यही मामला तमाम दीनी आमाल के साथ पेश आता है। लोग दीनी अमल की अस्ल हकीकत को अलग करके उसके जाहिरी पहलू को ले लेते हैं। अब जो लोग इस नौबत को पहुंच जाएं कि वे दीन के मक्सदी पहलू को भुला कर उसे अपने दुनियावी तमाशों का उन्वान (विषय) बना लें वे अपने इस अमल से साबित कर रहे हैं कि वे दीन के मामले में संजीदा नहीं हैं और जो लोग किसी मामले में संजीदा न हों उन्हें उस मामले की कोई ऐसी बात समझाई नहीं जा सकती जो उनके मिजाज के ख़िलाफ हो। मजीद यह कि माद्दी (भौतिक) चीजों का मालिक होना उन्हें इस ग़लतफहमी में मुब्तिला कर देता है कि सच्चाई के मालिक भी वही हैं। वे देखते हैं कि यहां उनकी जरूरतें बफराग़त पूरी हो रही हैं। हर जगह वे रौनके महफिल बने हुए हैं। उनकी जिंदगी में कहीं कोई कमी नहीं। इसलिए वे समझ लेते हैं कि आख़िरत में भी वही कामयाब रहेंगे। ऐसे लोग ऐन अपनी नफ्सियात (मानसिकता) की बिना पर आख़िरत की बातों के बारे में संजीदा नहीं होते। मगर वे जान लें कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह यूं ही ख़त्म हो जाने वाला नहीं। उनका अमल उन्हें घेरे में ले रहा है। अनकरीब वे अपनी सरकशी में फंसकर रह जाएंगे और किसी हाल में उससे छुटकारा न पा सकेंगे।

قُلْ أَنَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ
إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ
يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٢﴾
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ
قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٧٣﴾

कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें जो न हमें नफा दे सकते और न हमें नुक्सान पहुंचा सकते। और क्या हम उल्टे पांव फिर जाएं, बाद इसके कि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख़्स की मानिंद जिसे शैतानों ने बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसे सीधे रास्ते की तरफ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ। कहो कि रहनुमाई तो सिर्फ अल्लाह की रहनुमाई है और हमें हुक्म मिला है कि हम अपने आपको संसार के रब के हवाले कर दें। और यह कि नमाज कायम करो और अल्लाह से डरो वही है जिसकी तरफ तुम समेटे जाओगे। और वही है जिसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगा। उसकी बात हक है और उसी की हुकूमत होगी उस रोज जब सूर फूंका जाएगा। वह ग़ायब और जाहिर का आलिम और हकीम (तत्वदर्शी) व ख़बीर (सर्वज्ञाता) है। (71-74)

जो लोग ख़ुदा के सिवा दूसरे सहारों पर अपनी जिंदगी कायम करें उनकी मिसाल उस मुसाफिर की सी होती है जो बेनिशान सहरा में भटक रहा हो। सहरा में भटकने वाला मुसाफिर फौरन जान लेता है कि उसने अपना रास्ता खो दिया है। रास्ता दिखाई देते ही वह फौरन उसकी तरफ दौड़ पड़ता है। मगर जो लोग ख़ुदा के बजाए दूसरे सहारों पर जीते हैं उन्हें अपने बेराह होने की ख़बर नहीं होती। उनके आस पास पुकारने वाले पुकारते हैं कि अस्ल रास्ता यह है, इधर आ जाओ मगर वे इस किस्म की आवाजों पर ध्यान नहीं देते। इस फर्क की वजह यह है कि पहले मामले में आदमी की अक्ल खुली हुई होती है, सही रास्ते को देखने में उसके लिए कोई रुकावट नहीं होती। जबकि दूसरी सूरत में आदमी की अक्ल शैतान के जेरेअसर आ जाती है। उसकी सोच अपने फितरी ढंग पर काम नहीं करती। इसका नतीजा यह होता है कि वह सुनकर भी नहीं सुनता और देखकर भी नहीं देखता।

ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों का तालिब (इच्छुक) बनना ऐसी चीजों का तालिब बनना है

जो इस दुनिया में फ़ायदा व नुक़्सान की ताक़त नहीं रखतीं। जमीन व आसमान अपने पूरे निजाम के साथ इंकार कर रहे हैं कि यहां एक हस्ती के सिवा किसी और हस्ती को कोई ताकत हासिल हो। इसी तरह जिन दुनियावी रौनकों को आदमी अपना मक्सूद बनाता है और उन्हें पाने की कोशिश में सच्चाई व इंसाफ के तमाम तक़ाजों को रौंद डालता है, वह भी सरासर बातिल है। क्योंकि इंसानी जिंदगी अगर इसी जालिमाना हालत पर तमाम हो जाए तो यह दुनिया बिल्कुल बेमअना करार पाती है। इसका मतलब यह है कि यह दुनिया ख़ुदग़र्ज और अनानियतपसंद (अहंकारी) लोगों की तमाशागाह है। हालांकि कायनात का निजाम जिस बाकमाल ख़ुदा की तजल्लियां (आलोक) दिखा रहा है उससे इंतिहाई बईद (परे) है कि वह इस तरह की कोई बेमक्सद तमाशागाह खड़ी करे।

दुनिया की मौजूदा सूरतेहाल बिल्कुल आरजी है। ख़ुदा किसी भी दिन अपना नया हुक्म जारी करके इस निजाम को तोड़ देगा। इसके बाद इंसान की मौजूदा आजादी ख़त्म हो जाएगी और ख़ुदा का इक्तेदार इंसानों पर भी उसी तरह कायम हो जाएगा जिस तरह आज वह बाकी कायनात पर कायम है। उस वक्त कामयाब वे होंगे जिन्होंने इम्तेहान के जमाने में अपने को ख़ुदा के हवाले किया था, जो किसी दबाव के बग़ैर अल्लाह से डरने वाले और उसके आगे हमहतन झुक जाने वाले थे।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٧٥﴾ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٧٨﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٩﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٠﴾

और जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर से कहा कि क्या तुम बुतों को ख़ुदा मानते हो। मैं तुम्हें और तुम्हारी कौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं। और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और जमीन की हुकूमत, और ताकि उसे यकीन आ जाए। फिर जब रात ने उस पर अंधेरा कर लिया उसने एक तारे को देखा। कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा मैं डूब जाने वालों को दोस्त नहीं रखता। फिर जब उसने चांद को चमकते हुए देखा तो कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा अगर मेरा रब मुझे हिदायत न करे तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊं। फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह डूब गया तो उसने

अपनी कौम से कहा कि ऐ लोगो, मैं उस शिर्क (साझीदार ठहराना) से बरी हूं जो तुम करते हो। मैंने अपना रुख़ यकसू होकर उसकी तरफ कर लिया जिसने आसमानों और जमीन को पैदा कर लिया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। (75-80)

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कहानी जो जहां बयान हुई है वह हक की तलाश की कहानी नहीं है बल्कि हक के मुशाहिदे (अवलोकन) की कहानी है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम चार हजार साल पहले इराक में ऐसे माहौल में पैदा हुए जहां सूरज, चांद और तारों की परस्तिश होती थी। ताहम फ़ितरत की रहनुमाई और अल्लाह की ख़ुसूसी मदद ने आपको शिर्क से महफूज रखा। आप की बेदार निगाहें कायनात के फैले हुए शवाहिद (साक्षातरूप) में तौहीद (एक ख़ुदा) के खुले हुए दलाइल देखतीं। कायनात के आइने में हर तरफ आपको एक ख़ुदा का चेहरा नजर आता था। आप कौम की हालत पर अफ्सोस करते और लोगों को बताते कि खुले हुए हकाइक के बावजूद क्यों तुम लोग अंधे बने हुए हो।

रात का वक्त है। इब्राहीम आसमान में ख़ुदाए वाहिद की निशानियां देख रहे हैं। उसी आलम में सय्यारा जोहरा (शुक्र ग्रह) चमकता हुआ उनके सामने आता है जिसे उनकी कौम माबूद समझ कर पूजती थी। उनके दिल में बतौर सवाल नहीं बल्कि बतौर इस्तेजाब (आश्चर्य) यह ख़्याल आता है कि क्या यही वह चीज है जो मेरा रब हो, यही वह माबूद (पूज्य) है जिसकी हमें परस्तिश करनी चाहिए। यहां तक कि जब वह उसे अपने सामने डूबता हुआ देखते हैं तो उसका डूबना उनके लिए अपने अकीदे के सही होने की एक मुशाहिदाती (अवलोकनीय) दलील बन जाती है। वह कह उठते हैं कि जो चीज एक लम्हे के लिए चमके और फिर ग़ायब हो जाए वह कैसे इस काबिल हो सकती है कि उसे पूजा जाए। बिल्कुल यही तजर्बा उन्हें चांद और सूरज के साथ भी गुजरता है। हर एक चमक कर थोड़ी देर के लिए इस्तेजाब (आश्चर्य) पैदा करता है और फिर डूब जाता है। यह फ़ल्कियाती मुशाहिदात (आकाशीय अवलोकन) जो उनके अपने लिए तौहीद की खुली हुई तस्दीक थे। इसी को वह कौम के सामने अपनी तब्लीग़ में बतौर इस्तदलाल (तर्क) पेश करते हैं और अंदाजे कलाम वह इख़्तियार करते हैं जिसे इस्तलाह (शब्दावली) में हुज्जते इलज़ामी कहा जाता है। यानी मुख़ातिब के अल्फ़ाज को दोहराकर फिर उसे क़ायल करना। हुज्जते इल्जामी का यह तरीक़ा क़ुरआन में दूसरे मक़ामात पर भी मज़्कूर हुआ है। मसलन 'और तू अपने माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बड़ा एकाग्र रहता है।' (ता० हा० 97)

कायनात में ख़ुदा की जो तख़्लीकी निशानियां फैली हुई हैं वे किसी बंदे के लिए ईमान के इज़ाफ़े का जरिया भी हैं और इन्हीं से दावते हक के लिए मजबूत दलाइल भी हासिल होते हैं।

وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨١﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٢﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا

إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا
إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

और उसकी कौम उससे झगड़ने लगी। उसने कहा क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो हालांकि उसने मुझे राह दिखा दी है। और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो मगर यह कि कोई बात मेरा रब ही चाहे। मेरे रब का इल्म हर चीज पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते। और मैं क्योंकर डरूं तुम्हारे शरीकों से जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीजों को ख़ुदाई में शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी। अब दोनों फरीकों (पक्षों) में से अम्न का ज्यादा मुस्तहिक कौन है, अगर तुम जानते हो। जो लोग ईमान लाए और नहीं मिलाया उन्होंने अपने ईमान में कोई नुक्सान, उन्हीं के लिए अम्न है और वही सीधी राह पर हैं। यह है हमारी दलील जो हमने इब्राहीम को उसकी कौम के मुकाबले में दी। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। बेशक तुम्हारा रब हकीम (तत्वदर्शी) व अलीम (ज्ञानवान) है। (81-84)

जब किसी चीज या किसी शख़्सियत को माबूद का दर्जा दे दिया जाए तो इसके बाद फितरी तौर पर यह होता है कि उसके साथ रहस्यमयी अज्मतों के तसव्वुरात वाबस्ता हो जाते हैं। लोग समझने लगते हैं कि इस जात को कायनाती नक्शे में कोई ऐसा बरतर मकाम हासिल है जो दूसरे लोगों को हासिल नहीं। उसे ख़ुश करने से किस्मतें बनती हैं। और उसे नाराज करने से किस्मतें बिगड़ जाती हैं। चुनांचे हजरत इब्राहीम ने जब अपनी कौम के बुतों के बारे में कहा कि ये बेहकीकत हैं, इन्हें ख़ुदा की इस दुनिया में कोई जोर हासिल नहीं तो लोगों को अंदेशा होने लगा कि इस गुस्ताख़ी के नतीजे में कहीं कोई वबाल न आ पड़े। वे हजरत इब्राहीम से बहसें करने लगे। उन्होंने आपको डराया कि तुम ऐसी बातें न करो वर्ना इन माबूदों का ग़ज़ब तुम्हारे ऊपर नाजिल होगा। तुम अंधे हो जाओगे, तुम पागल हो जाओगे। तुम बर्बाद हो जाओगे, वग़ैरह।

इस दुनिया में सिर्फ ख़ुदा की एक जात है जिसकी किबरियाई (बड़ाई) दलील व बुरहान (सुस्पष्ट तर्क) के ऊपर कायम है। इसके सिवा बड़ाई और माबूदियत की जितनी किस्में हैं सब तवह्हुमाती अकाइद (अंधविश्वासों) की बुनियाद पर खड़ी होती हैं। ख़ुदा की ख़ुदाई अपने आप कायम है, जबकि दूसरी तमाम ख़ुदाइयां सिर्फ उनके मानने वालों की बदौलत हैं। अगर मानने वाले न मानें तो ये ख़ुदाइयां भी बेवजूद होकर रह जाएं।

जाहिर हालात को देखकर इन माबूदों के परस्तार अक्सर इस धोखे में पड़ जाते हैं कि वे सच्चे ख़ुदापरस्तों के मुक़ाबले में ज्यादा महफूज मकाम पर खड़े हुए हैं। मगर यह बदतरीन ग़लतफहमी है। महफूज हैसियत दरअस्ल उसकी है जो दलील और बुरहान पर खड़ा हुआ है। दुनियावी रवाज से मुसालेहत करके कोई शख़्स अपने लिए महफूज दीवार हासिल कर ले तो आख़िरी अंजाम के एतबार से उसकी कोई हकीकत नहीं।

झूठे माबूदों का ग़लबा (वर्चस्व) कभी इस नौबत को पहुंचता है कि सच्चे ख़ुदापरस्त भी उससे मरऊब होकर उससे साजगारी कर लेते हैं। दुनियावी मस्लेहतें और माद्दी मफ़ादात (सांसारिक हित, स्वार्थ) उनसे इस दर्जे वाबस्ता हो जाते हैं कि बजाहिर ऐसा मालूम होने लगता है कि बाइज्जत जिंदगी हासिल करने की इसके सिवा कोई और सूरत नहीं कि इन माबूदों के तहत बने हुए ढांचे से मुसालेहत कर ली जाए। मगर इस किस्म का रवैया अपने ईमान में ऐसा नुक्सान शामिल कर लेना है जो ख़ुद ईमान ही को ख़ुदा की नजर में मुशतबह (संदिग्ध) बना दे।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ
دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾ وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ
وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ
وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ ۗ قُل
لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾

और हमने इब्राहीम को इस्हाक और याकूब अता किए, हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी इससे पहले। और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को भी। और हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं। और जकरिया और यहया और ईसा और इलियास को भी, इनमें से हर एक सालेह (नेक) था। और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत को भी और इनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) अता की। और उनके बाप दादों और उनकी औलाद और उनके भाइयों में से भी, और उन्हें हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ उनकी रहनुमाई की। यह अल्लाह की हिदायत है, वह इससे सरफ़राज करता है अपने बंदों में से जिसे चाहता है। और अगर वे शिर्क करते तो जाया हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था। ये लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हिक्मत और नुबुव्वत अता की। पस अगर ये मक्का वाले इसका इंकार कर दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग मुकर्रर कर दिए हैं जो इसके मुंकिर नहीं हैं। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, पस तुम भी उनके तरीके पर चलो। कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई मुआवजा नहीं मांगता। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। (85-91)

'फज़ीलत' किसी का नस्ली या कौमी लकब नहीं, यह अल्लाह का एक अतिया (देन) है जिसका तहक्कुक़ (अधिकार) सिर्फ उन अफ़राद के लिए होता है जो ख़ुदा की हिदायत के मुताबिक अपने को सालेह बनाएं, शिर्क की तमाम किस्मों से अपने आपको बचाएं। और 'बिला मुआवजा नसीहत' के दावती मंसूबे में अपने को हमहतन शामिल करें। ये वे लोग हैं जो ख़ुदा की किताब को अपने हकीकी रहनुमा बनाते हैं। वे इसके साथ अपने वजूद को इतना ज्यादा शामिल कर देते हैं कि उन पर इस राह के वे भेद खुलने लगते हैं जिन्हें हिक्मत कहा जाता है। यही वे लोग हैं जिन्हें ख़ुदा चुन लेता है और उनमें से जिन्हें चाहता है अपने दीन की पैग़ामरसानी की तौफीक देता है, दौरे नुबुव्वत में अल्लाह के ख़ुसूसी पैग़म्बर की हैसियत से और ख़त्मे नुबुव्वत के बाद अल्लाह के आम दाओ की हैसियत से। अल्लाह का इनाम चाहे वह पैग़म्बरों के लिए हो या आम इंसानों के लिए, तमामतर नेक अमली की बुनियाद पर मिलता है न कि किसी और बुनियाद पर।

दावते हक का काम सिर्फ वे लोग करते हैं जो उसकी ख़ातिर इतना ज्यादा यकसू और बेनफ्स हो चुके हों कि वे मदऊ (संबोधित व्यक्ति) से किसी किस्म की माद्दी उम्मीद न रखें। जिस शख़्स या गिरोह तक आप आख़िरत का पैग़ाम पहुंचा रहे हों उसी से आप अपने दुनियावी हुकूक के लिए एहतेजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालबात की मुहिम नहीं चला सकते। दाओ का ऐसा करना सिर्फ इस कीमत पर होगा कि उसकी दावत मदऊ की नजर में हास्यास्पद बन कर रह जाए और माहौल के अंदर कभी उसे संजीदा मुहिम की हैसियत हासिल न हो।

मक्का में कुछ लोग आप पर ईमान लाए। मगर बहैसियत 'कौम' मक्का वालों ने आपका इंकार कर दिया। इसके बाद अल्लाह तआला ने मदीने वालों के दिल आपकी दावत के पक्ष में नर्म कर दिए और वे बहैसियत कौम आपके मोमिन बन गए। यहां तक कि आपके लिए यह मुमकिन हो गया कि आप मक्का से मदीना जाकर वहां इस्लाम का मर्कज कायम कर सकें। अल्लाह तआला की यह मदद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कामिल दर्जे में हासिल हुई। ताहम आपकी उम्मत में उठने वाले दाअियों को भी अल्लाह यह मदद दे सकता है और अपनी मस्लेहत के मुताबिक देता रहा है।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ
اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ
قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ۗ
قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ
مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۗ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝

और उन्होंने अल्लाह का बहुत ग़लत अंदाजा लगाया जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज नहीं उतारी। कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे, वह रोशनी थी और रहनुमाई थी लोगों के वास्ते, जिसे तुमने वरक-वरक कर रखा है। कुछ को जाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा जाते हो। और तुम्हें वे बातें सिखाईं जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप दादा। कहो कि अल्लाह ने उतारी। फिर उन्हें छोड़ दो कि अपनी कजबहसियों (कुसंवाद) में खेलते रहें। और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली है, तस्दीक करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं। और ताकि तू डराए मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को। और जो आख़िरत पर यकीन रखते हैं वही उस पर ईमान लाएंगे। और वे अपनी नमाज की हिफ़ाजत करने वाले हैं। (92-93)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत मक्का वालों के सामने आई तो उनके कुछ लोगों ने कुछ यहूद से पूछा कि तुम्हारा इस बारे में क्या ख़्याल है। क्या मुहम्मद पर वाकई ख़ुदा का कलाम नाजिल हुआ है। यहूद ने जवाब दिया 'ख़ुदा ने किसी बशर पर कुछ नाजिल नहीं किया है।' बजाहिर यह बात बड़ी अजीब है। क्योंकि यहूद तो ख़ुद नबियों को मानने वाले थे। और इस तरह गोया वे इकरार कर रहे थे कि बशर पर ख़ुदा का कलाम उतरता है। मगर जब आदमी मुख़ालिफत में अंधा हो जाए तो वह मुख़ालिफ की तरदीद (रद्द) के जोश में कभी यहां तक पहुंच जाता है कि अपनी मानी हुई बातों की तरदीद करने लगे।

यहूद के अंदर यह ढिठाई इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने ख़ुदा की किताब को वरक-वरक कर दिया था। वे ख़ुदा की तालीमात के कुछ किस्से को सामने लाते और बाकी को किताब में बंद रखते। मसलन वे इनाम वाली आयतों को ख़ूब सुनते सुनाते और उन आयतों को छोड़ देते जिनमें वे आमाल बताए गए हैं जिनके करने से किसी को मज़्कूरा इनाम मिलता है। वे ऐसी आयतों का ख़ुसूसी तज्किरा करते जिनसे उनकी शोर व ग़ुल की सियासत की ताईद निकलती हो और उन आयतों को नजरअंदाज कर देते जिनमें ख़ामोश इस्लाह के अहकाम दिए गए हों। वे ऐसी आयतों के दर्स में बड़ा एहतिमाम करते जिनमें उनके लिए लफ़्ज़ी मूशिगाफ़ियों (कुतर्कों) का कमाल दिखाने का मौका हो मगर उन आयतों से सरसरी गुजर जाते जिनमें दीन के अबदी हकाइक बयान किए गए हैं। वे ऐसी आयतों का ख़ूब चर्चा करते जिनसे अपनी फजीलत निकलती हो और उन आयतों से बेतवज्जोही बरतते हैं जिनसे उनकी जिम्मेदारियां मालूम होती हैं। जो लोग ख़ुदा की किताब को इस तरह 'वरक-वरक' करें उनके अंदर फ़ित्री तौर पर ढिठाई आ जाती है। वे ग़ैर संजीदा बहसें करते हैं, परस्पर विरोधी बयानात देते हैं। उनसे किसी हकीकी तआवुन की उम्मीद नहीं

की जा सकती। जो लोग ख़ुदा की किताब के साथ इंसाफ न करें वे इंसानों के साथ मामला करने में कैसे इंसाफ कर सकते हैं।

दीन की दावत अस्लन लोगों को होशियार करने की दावत है। इस किस्म की दावत चाहे कितने ही कामिल इंसान की तरफ से पेश की जाए वह सुनने वाले के दिल में उस वक्त जगह करेगी जबकि वह अपने सीने में एक अंदेशानाक दिल रखता हो और आख़िरत के मामले को एक संजीदा मामला समझता हो। सुनने वाले में अगर यह इब्तदाई माद्दा मौजूद न हो तो सुनाने वाला उसे कोई फायदा नहीं पहुंचा सकता।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٤﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٥﴾

और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बांधे या कहे कि मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है हालांकि उस पर कोई 'वही' नाजिल नहीं की गई हो। और कहे कि जैसा कलाम ख़ुदा ने उतारा है मैं भी उतारूंगा। और काश तुम उस वक्त देखो जबकि ये जालिम मौत की सख़्तियों में होंगे और फरिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें जिल्लत का अजाब दिया जाएगा इस सबब से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे। और तुम अल्लाह की निशानियों से तकब्बुर (घमंड) करते थे। और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए जैसा कि हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया था। और जो कुछ असबाब हमने तुम्हें दिया था सब तुम पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ उन सिफारिश वालों को भी नहीं देखते जिनके मुतअल्लिक तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है। तुम्हारा रिश्ता टूट गया और तुमसे जाते रहे वे दावे जो तुम करते थे। (94-95)

अल्लाह जब अपने किसी बंदे को अपनी पुकार बुलन्द करने के लिए खड़ा करता है तो इसी के साथ उसे ख़ुसूसी तौफीक भी अता करता है। उसके किरदार में आख़िरत के ख़ौफ की झलक होती है। उसकी बातों में ख़ुदाई इस्तदलाल (तर्कों) की ताकत नजर आती है।

बेपनाह मुख़ालिफतों के बावजूद वह अपने पैग़ामरसानी के अमल को आलातरीन शक्ल में जारी रखने में कामयाब होता है। वह अपने पूरे वजूद के साथ ख़ुदा की जमीन पर ख़ुदा की निशानी होता है। मगर जिनकी निगाहें दुनियावी अज्मत की चीजों में गुम हों वे आख़िरत के दाओ की अज्मत को समझ नहीं पाते। यहां तक कि उनके माद्दी पैमाने में उनकी अपनी जात बरतर और अल्लाह के दाओ की जात कमतर दिखाई देती है। यह चीज उन्हें तकब्बुर (घमंड) में मुब्तिला कर देती है और जो लोग तकब्बुर की नफ्सियात में मुब्तिला हो जाएं उनसे कोई भी नामाकूल रवैया दूर नहीं रहता। यहां तक कि वह इस ग़लतफहमी में मुब्तिला हो सकते हैं कि वे भी वैसा ही कलाम तख़्लीक कर सकते हैं जैसा कलाम ख़ुदा की तरफ से किसी बंदे पर उतरता है। वे ख़ुदा को तिलिस्माती निशानियों में देखना चाहते हैं इसलिए वे बशरी निशानियों में जाहिर होने वाले ख़ुदा को पहचान नहीं पाते।

यह तकब्बुर जो किसी आदमी के अंदर पैदा होता है वह उस दुनियावी हैसियत और माद्दी सामान की बुनियाद पर होता है जो उसे दुनिया में मिला हुआ है। वह भूल जाता है कि दुनिया में जो कुछ उसे हासिल है वह महज आजमाइश के लिए और निर्धारित मुद्दत के लिए है। मौत का वक्त आते ही अचानक ये तमाम चीजें छिन जाएंगी। इसके बाद आदमी उसी तरह महज एक तंहा वजूद होगा जिस तरह वह इब्तिदाई पैदाइश के वक्त एक तंहा वजूद था। मौत के फौरन बाद हर आदमी अपनी जिंदगी के इस मरहले में पहुंच जाता है जहां न उसकी दौलत होगी और न उसकी हैसियत, जहां न उसके साथी होंगे और न उसके सिफारिशी। वह होगा और उसका ख़ुदा होगा। दुनिया में उसे जिन चीजों पर नाज था उनमें से कोई चीज भी उस दिन उसे ख़ुदा की पकड़ से बचाने के लिए मौजूद न होगी।

दुनिया में हर आदमी अल्फाज के तिलिस्म में जीता है। हर आदमी अपने हस्बेहाल ऐसे अल्फाज तलाश कर लेता है जिसमें उसका वजूद बिल्कुल बरहक दिखाई दे, उसका रास्ता सीधा मंज़िल की तरफ जाता हुआ नज़र आए। मगर आख़िरत का इंक़लाब जब हक़ीक़तों के पर्दे फाड़ देगा तो लोगों के ये अल्फाज इस क़द्र बेमअना हो जाएंगे जैसा कि उनका कोई वजूद ही न था।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٦﴾ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٧﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٨﴾

बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है। वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से निकालने वाला है। वही तुम्हारा अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। वही बरामद करने वाला है सुबह का और

उसने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चांद को हिसाब से रखा है। यह ठहराया हुआ है बड़े ग़लबे (वर्चस्व) वाले का, बड़े इल्म वाले का। और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके जरिए से ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में राह पाओ। बेशक हमने दलाइल (तर्क) खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (96-98)

इंसान को जब एक मोटरकार या और कोई चीज बनाना होता है तो वह उसके हर जुज को अलग-अलग बनाता है। और फिर उसके अज्जा को जोड़ कर मत्लूबा चीज तैयार करता है, मगर जब ख़ुदा एक दरख़्त उगाता है या एक इंसान पैदा करता है तो उसकी नौइयत बिल्कुल दूसरी होती है। वह किसी चीज को उसके पूरे मज्मुए के साथ एक वक्त में बरामद कर देता है। ख़ुदाई कारख़ाने में पूरा का पूरा दरख़्त या पूरा का पूरा इंसान एक ही बीज या एक ही बूंद से क्रमशः निकल कर खड़ा हो जाता है। यह इंतिहाई अनोखी तकनीक है जिस पर किसी भी इंसान को काबू नहीं। इससे साबित होता है कि यहां इंसान से बढ़कर एक हस्ती मौजूद है जिसका मंसूबा तमाम मंसूबों से बुलन्द है।

सूरज की जसामत जमीन से बारह लाख गुनाह ज्यादा है। और जमीन चांद से चौगुना ज्यादा बड़ी है। ये सब अज्राम (रचनाएं) मुसलसल हरकत में हैं। चांद जमीन से तक़रीबन ढाई लाख मील दूर रह कर जमीन के गिर्द चक्कर लगा रहा है और जमीन सूरज से तक़रीबन साढ़े नौ करोड़ मील के फ़ासले पर रहते हुए सूरज के गिर्द दो तरीके से घूम रही है, एक अपने महवर (धुरी) पर और दूसरे सूरज के मदार (कक्ष) पर। इसी तरह सितारों की गर्दिश का मामला है जो दहशतनाक हद तक असीम फ़ासलों पर हद दर्जा बाक़ायदगी के साथ मुतहर्रिक (गतिमान) हैं। इसी कायनाती तंजीम से दिन और रात पैदा होते हैं। इसी से औक़ात (समयों) का नक़्शा मुक़र्रर होता है। इसी से ख़ुश्की और तरी में इंसान के लिए अपनी जिंदगी की तर्तीब कायम करना मुमकिन होता है। यह इतना बड़ा निजाम इतनी सेहत के साथ चल रहा है कि हजारों साल में भी इसके अंदर कोई फ़र्क़ नहीं आता। इससे साबित होता है कि यहां एक ऐसी हस्ती है कि जिसकी ताक़तें लामहदूद (असीमित) हद तक ज्यादा हैं।

ख़ुदा की ये निशानियां बहुत बड़े पैमाने पर बता रही हैं कि इस कारख़ाने का बनाने वाला बहुत बड़े इल्म वाला है। कोई बेइल्म हस्ती इतना बड़ा ढांचा कायम नहीं कर सकती। वह बहुत ग़लबे वाला है, उसके बग़ैर इतने बड़े कारख़ाने का इस तरह चलना मुमकिन नहीं हो सकता। उसकी मंसूबाबंदी इंतिहाई हद तक कामिल है। अगर ऐसा न हो तो इतनी बड़ी कायनात में इस क़द्र मअनवियन (सार्थकता) और हमआहंगी (सामंजस्य) का वजूद नामुमकिन हो जाए।

ख़ुदा की दुनिया ख़ुदा के दलाइल से भरी हुई है। मगर दलील एक नजरी माक़ूलियत का नाम है न कि किसी हथोड़े का। इसलिए दलील को मानना किसी के लिए सिर्फ़ उस वक्त मुमकिन होता है जबकि वह वाकई संजीदा हो, वह शुऊरी तौर पर इसके लिए तैयार हो कि वह दलील को मान लेगा चाहे वह उसकी मुवाफ़िक़त में जारी हो या उसके ख़िलाफ़।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ
فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا
قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ
مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

और वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से, फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सौंपे जाने की जगह। हमने दलाइल खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो समझें। और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज। फिर हमने उससे सरसब्ज शाख़ निकाली जिससे हम तह-ब-तह दाने पैदा कर देते हैं। और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और जैतून के और अनार के, आपस में मिलते जुलते और जुदा जुदा भी। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को देखो जब वह पकता है। बेशक इनके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं। (99-100)

इंसानी कारख़ाने इस पर क़ादिर नहीं कि वे एक ऐसी मशीन बना दें कि उसके बत्न से उसी क़िस्म की बेशुमार मशीनें ख़ुद बख़ुद निकलती चली जाएं। हमारे कारख़ानों को हर मशीन अलग-अलग बनानी पड़ती है। मगर ख़ुदा के कारख़ाने में यह वाक़या हर रोज हो रहा है। दरख़्त का एक बीज बो दिया जाता है। फिर इस बीज से बेशुमार दरख़्त निकलते चले जाते हैं। यही मामला इंसान का है। एक मर्द और एक औरत से शुरू होकर खरब हा खरब इंसान पैदा होते जा रहे हैं और इनका सिलसिला ख़त्म नहीं होता। यह मुशाहिदा बताता है कि जिस ख़ुदा ने कायनात को पैदा किया है उसकी क़ुदरत बेहद वसीअ है। वह इस नादिर (दुर्लभ) तख़्लीक़ पर क़ादिर है कि एक इब्तिदाई चीज वजूद में लाए और फिर उसके अंदर से बेहिसाब गुना ज्यादा बड़ी-बड़ी चीजें मुसलसल निकलती चली जाएं। इसी तरह ख़ुदा मौजूदा दुनिया से एक ज्यादा शानदार और ज्यादा मेयारी दुनिया निकाल सकता है। आख़िरत का अक़ीदा कोई दूर का अक़ीदा नहीं बल्कि जिस इम्कान को हम हर रोज देख रहे हैं उसी इम्कान को मुस्तक़बिल के एक वाक़ये की हैसियत से तस्लीम करना है।

मिट्टी बजाहिर एक मुर्दा और जामिद (जड़) चीज है। फिर उसके ऊपर बारिश होती है। पानी पाते ही मिट्टी के अंदर से एक नई सरसब्ज दुनिया निकल आती है। उसके अंदर से तरह-तरह की फ़स्लें और क़िस्म क़िस्म के फलदार दरख़्त वजूद में आ जाते हैं। यह वाक़या भी मौजूदा दुनिया के बाद आने वाली दुनिया की एक तमसील है। मिट्टी पर पानी पड़ने से

जमीन के ऊपर रंग और ख़ुशबू और जायके का एक सरसब्ज व शादाब चमन खिल उठना उस इम्कान को बताता है जो दुनिया के ख़ालिक ने यहां रख दिया है। आज की दुनिया में इंसान जो नेक अमल करता है वह इसी किस्म का एक इम्कान है। जब ख़ुदा की रहमतों की बारिश होगी तो यह इम्कान हरा भरा होकर आख़िरत की लहलहाती हुई फस्ल की सूरत में तब्दील हो जाएगा।

इंसान अव्वलन मां के बत्न के सुपुर्द होता है फिर मौजूदा दुनिया में आता है। कब्र भी गोया इसी किस्म का एक 'बत्न' है। आदमी कब्र के सुपुर्द किया जाता है और इसके बाद वह अगली दुनिया में आंख खोलता है ताकि अपने अमल के मुताबिक जन्नत या जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाए। इंसान से ग़ैब की जिस दुनिया को मानने का मुतालबा किया जा रहा है उसकी झलकियां और उसके दलाइल मौजूदा महसूस कायनात में पूरी तरह मौजूद हैं। मगर मानता वही है जो पहले से मानने के लिए तैयार हो। 'ईमान' की राह में आदमी जब आधा सफर तै कर चुका होता है इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि ईमान की दावत उसके जेहन का जुज बने और वह उसे क़ुबूल कर ले। जो शख़्स ईमान के उल्टे रुख़ पर सफर कर रहा हो उसे ईमान की दावत कभी नफा नहीं पहुंचा सकती।

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ
لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ
الْاَبْصَارُ ؗ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝

और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक करार दिया। हालांकि उसी ने उन्हें पैदा किया है। और बे जाने बूझे उसके लिए बेटियां और बेटे तराशीं। पाक और बरतर है वह उन बातों से जो ये बयान करते हैं। वह आसमानों और जमीन का मूजिद (उत्पत्तिकर्ता) है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया है और वह हर चीज से बाख़बर है। यह है अल्लाह तुम्हारा रब। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही हर चीज का ख़ालिक है, पस तुम उसी की इबादत करो। और वह हर चीज का कारसाज है। उसे निगाहें नहीं पातीं। मगर वह निगाहों को पा लेता है। वह बड़ा बारीकबीं और बड़ा बाख़बर है। अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरत की रोशनियां आ चुकी हैं। पस जो बीनाई से काम लेगा वह अपने ही लिए, और जो अंधा बनेगा वह ख़ुद नुक्सान उठाएगा। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरां नहीं हूं। (101-105)

कदीमतरीन जमाने से इंसान की यह कमजोरी रही है कि जिस चीज में भी कोई इम्तियाज या कोई पुरअसरारियत (रहस्य) देखता है उसे वह ख़ुदा का शरीक समझ लेता है। और उससे मदद लेने और उसकी आफतों से बचने के लिए उसे पूजने लगता है। इसी जेहन के तहत बहुत से लोगों ने फरिश्तों और सितारों और जिन्नात को पूजना शुरू कर दिया। हालांकि इन चीजों के ख़ुदा न होने का खुला हुआ सुबूत यह है कि उनके अंदर 'ख़ल्क' की सिफ़त नहीं। उन्होंने न अपने आपको पैदा किया और न वे दूसरी किसी चीज को पैदा करने पर कादिर हैं। उन्हें ख़ुद किसी दूसरी हस्ती ने तख़्लीक किया है। फिर जो ख़ालिक है वह ख़ुदा होगा या जो मख़्लूक है वह ख़ुदा बन जाएगा।

एक दरख़्त को समुचित रूप से वे तमाम चीजें पहुंचती हैं जो उसकी बका के लिए जरूरी हैं। इसी तरह कायनात की तमाम चीजों का हाल है। जब यह हकीकत है कि इन चीजों को जो कुछ मिलता है किसी देने वाले के दिए से मिलता है तो यकीनन देने वाला हर जुज व कुल से बाख़बर होगा। अगर वह इनसे बाख़बर न हो तो हर चीज की उसकी ऐन जरूरत के मुताबिक कारसाजी किस तरह करे। अब जो ख़ुदा इतनी कामिल सिफात का मालिक हो वह आख़िर किस जरूरत के लिए किसी को अपनी ख़ुदाई में शरीक करेगा।

इंसान ख़ुदा को महसूस सूरत में देखना चाहता है। और जब वह उसे महसूस सूरत में नजर नहीं आता तो वह दूसरी महसूस चीजों को ख़ुदा फर्ज करके अपनी जाहिरपरस्ती की तस्कीन कर लेता है। मगर यह ख़ुदा की हस्ती का बहुत कमतर अंदाजा है। आख़िर जो ख़ुदा ऐसा अजीम हो कि इतनी बड़ी कायनात पैदा करे और इंतिहाई नज्म के साथ उसे मुसलसल चलाता रहे, वह इतना मामूली कैसे हो सकता है कि एक कमजोर मख़्लूक उसे अपनी आंखों से देखे और अपने हाथों से छुऐ। अलबत्ता इंसान दिल की राह से ख़ुदा को पाता है और यकीन की आंख से उसे देखता है। जो शख़्स बसीरत (सूझबूझ) की आंख से देखकर मानने पर राजी हो वही ख़ुदा को पाएगा। जो बसारत (निगाह) से देखने पर इसरार करे वह ख़ुदा को पाने से उसी तरह महरूम रहेगा जिस तरह वह शख़्स फूल की ख़ुशबू को जानने से महरूम रहता है जो उसे कीमयाई (रासायनिक) मेयारों पर परख कर जानना चाहे।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ
مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝
وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ
كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

और इस तरह हम अपनी दलीलें मुख़्तलिफ तरीकों से बयान करते हैं और ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। तुम बस उस चीज की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से एराज (उपेक्षा) करो। और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते। और हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां (संरक्षक) नहीं बनाया है और न तुम उन पर मुख़्तार (साधिकार) हो। और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं उन्हें गाली न दो वर्ना ये लोग हद से गुजर कर जहालत की बुनियाद पर अल्लाह को गालियां देने लगेंगे। इसी तरह हमने हर गिरोह की नजर में उसके अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है। फिर उन सबको अपने रब की तरफ पलटना है। उस वक्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे। (106-109)

एक शख़्स वह है जिसके अंदर तलब की नफ्सियात हो, जो सच्चाई की तलाश में रहता हो। दूसरे लोग वे हैं जो दौलत या इक्तेदार (सत्ता) का कोई हिस्सा पाकर यह समझने लगते हैं कि वे पाए हुए लोग हैं। उनके अंदर कोई कमी नहीं है जो कोई शख़्स आकर पूरी करे। हक की दावत जब उठती है तो उसे कुबूल करने वाले ज्यादातर पहली किस्म के लोग होते हैं। इसके बरअक्स जो दूसरी किस्म के लोग हैं वे उसे कोई काबिले लिहाज चीज नहीं समझते। वे कभी संजीदगी के साथ उस पर ग़ौर नहीं करते। इसलिए उसकी अहमियत भी उन पर वाजेह नहीं होती। ऐसे हालात में हक की दावत के मक्सद दो होते हैं। जो सच्चे तालिब हैं उनकी तलब का जवाब फराहम करना। और जो लोग तालिब नहीं हैं उन पर हुज्जत कायम करना। पहली किस्म के लोगों के लिए दावत का निशाना यह होता है कि वे उसके मानने वाले बन जाएं। और दूसरी किस्म के लोगों के लिए यह कि वे कह उठें कि 'तुमने बता दिया, तुमने बात हम तक पहुंचा दी।'

जो लोग दावत का इंकार करते हैं वे अपने इंकार को बरहक साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें निकालते हैं। ऐसे मौके पर दाअी के दिल में यह ख़्याल आने लगता है कि वह दावत के अंदाज में ऐसी तब्दीली कर दे जिससे वह मदऊ के लिए काबिले कुबूल बन जाए। मगर इस किस्म का इंहिराफ (भटकाव) दुरुस्त नहीं। दाअी को हमेशा उसी उस्लूब पर कायम रहना चाहिए जो बराहेरास्त ख़ुदा की तरफ से तल्कीन किया गया है। क्योंकि अस्ल मक्सद इंसान को ख़ुदा से जोड़ना है न कि किसी न किसी तरह लोगों को अपने हलके में शामिल करना। दूसरी तरफ यह बात भी ग़लत है कि मदऊ के रवैये से उत्तेजित होकर ऐसी बातें की जाएं कि उसकी गुमराही जाहिलाना बदकलामी तक जा पहुंचे।

आदमी जिन ख़ास रिवायात में पैदा होता है और जिन अफ्कार (विचारों) से वह मानूस (अंतरंग) हो जाता है, उनके हक में उसके अंदर एक तरह की अस्बियत पैदा हो जाती है। उसके मुताबिक उसका एक फिक्री ढांचा बन जाता है जिसके तहत वह सोचता है। यही फिक्री (वैचारिक) ढांचा हक को कुबूल करने की राह में सबसे बड़ी रुकावट है। जब तक आदमी इस फिक्री ढांचे को न तोड़े उसके जेहन में वह दरवाजा नहीं खुलता जिसके जरिये हक की आवाज उसके अंदर दाख़िल हो।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾

और ये लोग अल्लाह की कसम बड़े जोर से खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे जरूर उस पर ईमान ले आएं। कह दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियां आ जाएं तब भी ये ईमान नहीं लाएंगे। और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग उसके ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाए। और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे। और अगर हम उन पर फरिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बातें करते और हम सारी चीजें उनके सामने इकट्ठा कर देते तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे इल्ला यह कि अल्लाह चाहे मगर उनमें से अक्सर लोग नादानी की बातें करते हैं। (110-112)

हक एक शख़्स के सामने दलाइल (तर्कों) के साथ आता है और वह उसका इंकार कर देता है तो इसकी वजह हमेशा एक होती है। बात को उसके सही रुख़ से देखने के बजाए उल्टे रुख़ से देखना। कोई बात चाहे कितनी ही तार्किक हो, आदमी अगर उसे मानना न चाहे तो वह उसे रद्द करने के लिए कुछ न कुछ अल्फाज पा लेगा। मसलन दाअी (आह्वानकर्ता) के दलाइल को दलाइल की हैसियत से देखने के बजाए वह यह बहस छेड़ देगा कि तुम्हारे सिवा जो दूसरे बुजुर्ग हैं क्या वे सब हक से महरूम थे। और इसी तरह दूसरी बातें।

जिस आदमी के अंदर इस किस्म का मिजाज हो उसका राहेरास्त (सन्मार्ग) पर आना इंतिहाई मुश्किल है। वह हर बात को ग़लत रुख़ देकर उसके इंकार का एक बहाना तलाश कर सकता है। नजरी दलाइल को रद्द करने के लिए अगर उसे ये अल्फाज मिल रहे थे कि यह अस्लाफ (पूर्वजों) के मस्लक के ख़िलाफ है तो महसूस मुशाहिदे को रद्द करने के लिए वह ये अल्फाज पा लेगा कि यह नजर का धोखा है इसकी हकीकत एक फर्जी तिलिस्म के सिवा और कुछ नहीं। जो मिजाज नजरी दलील को मानने में रुकावट बना था वही मिजाज महसूस दलील को मानने में भी रुकावट बन जाएगा। आदमी अब भी इसी तरह महरूम (वंचित) रहेगा जैसे वह पहले महरूम था।

इस किस्म के लोग अपनी नफ्सियात के एतबार से सरकश होते हैं। वे हर हाल में अपने को ऊंचा देखना चाहते हैं। एक दाई जब उनके सामने हक का पैग़ाम ले आता है तो अक्सर ऐसा होता है कि वह माहौल में अजनबी होता है, वह वक्त की अज्मतों से ख़ाली होता है। उसके साथ अपने को मंसूब करना अपनी हैसियत को नीचा गिराने के समान होता है। इसलिए बरतरी की नफ्सियात रखने वाले लोग उसे कुबूल नहीं कर पाते। वे तरह-तरह की तौजीहात पेश करके उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

दानाई यह है कि आदमी ख़ुदा के नक्शे को माने और उसके मुताबिक अपने जेहन को चलाने के लिए तैयार हो। इसके बरअक्स नादानी यह है कि आदमी ख़ुदा के नक्शे के बजाए ख़ुदसाख़्ता मेयार कायम करे और कहे कि जो चीज मुझे इस मेयार पर मिलेगी मैं उसे मानूंगा और जो चीज इस मेयार पर नहीं मिलेगी उसे नहीं मानूंगा। ऐसे आदमी के लिए इस दुनिया में सिर्फ भटकना है। ख़ुदा की इस दुनिया में आदमी ख़ुदा के मुकर्रर किए हुए तरीकों की पैरवी करके मंजिल तक पहुंच सकता है न कि उसके मुकर्ररह तरीके को छोड़कर।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٤﴾

और इसी तरह हमने शरीर (दुष्ट) आदमियों और शरीर जिन्नों को हर नबी का दुश्मन बना दिया। वे एक दूसरे को पुरफरेब बातें सिखाते हैं धोखा देने के लिए। और अगर तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। पस तुम उन्हें छोड़ दो कि वे झूठ बांधते रहें। और ऐसा इसलिए है कि उसकी तरफ उन लोगों के दिल मायल हों जो आख़िरत (परलोक) पर यकीन नहीं रखते। और ताकि वे उसे पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें। (113-114)

इब्ने जरीर ने हजरत अबूजर से नक्ल किया है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में शरीक हुआ। यह एक लम्बी मज्लिस थी। आपने फरमाया ऐ अबूजर, क्या तुमने नमाज पढ़ ली। मैंने कहा नहीं ऐ ख़ुदा के रसूल। आपने फरमाया : उठो और दो रकअत नमाज पढ़ो। वह नमाज पढ़कर दुबारा मज्लिस में आकर बैठे तो आपने फरमाया : ऐ अबूजर क्या तुमने जिन्न व इन्स के शैतानों के मुकाबले में अल्लाह से पनाह मांगी। मैंने कहा नहीं ऐ ख़ुदा के रसूल, क्या इंसानों में भी शैतान होते हैं। आपने फरमाया हां, वे शयातीने जिन्न से भी ज्यादा बुरे होते हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

यहां शयातीने इन्स से मुराद वे लोग हैं जो दावते हक को बेएतबार साबित करने के लिए

कायदाना किरदार अदा करते हैं। ये वे लोग हैं जो ख़ुदसाख़्ता मजहब की बुनियाद पर इज्जत व मक्बूलियत का मकाम हासिल किए हुए होते हैं। जब हक की दावत अपनी बेआमेज शक्ल में उठती है तो उन्हें महसूस होता है कि वह उन्हें बरहना (नंगा) कर रही है। ऐसे लोगों के लिए सीधा रास्ता तो यह था कि वे हक की वजाहत के बाद उसे मान लें मगर हक के मामले में अपना मकाम उन्हें ज्यादा अजीज होता है। अपनी हैसियत को बचाने के लिए वे ख़ुद दाई और उसकी दावत को मुश्तबह (संदिग्ध) साबित करने में लग जाते हैं। इस मक्सद के लिए वे ख़ुशनुमा अल्फाज का सहारा लेते हैं। वे दाई और उसकी दावत में ऐसे शोशे निकालते हैं जो अगरचे बजातेख़ुद बेहकीकत होते हैं मगर बहुत से लोग उनसे मुतअस्सिर होकर उनके बारे में शुबह में पड़ जाते हैं।

मौजूदा दुनिया में जो इम्तेहानी हालात पैदा किए गए हैं उनमें से एक यह है कि यहां सही बात कहने वाले को भी अल्फाज मिल जाते हैं और ग़लत बात कहने वाले को भी। हक का दाई अगर हक को दलाइल की जबान में बयान कर सकता है तो इसी के साथ बातिलपरस्तों को भी यह मौका हासिल है कि वे हक के ख़िलाफ कुछ ऐसे ख़ुशनुमा अल्फाज बोल सकें जो लोगों को दलील मालूम हों और वे उनसे मुतअस्सिर होकर हक का साथ देना छोड़ दें। यह सूरतेहाल इम्तेहान की ग़रज से है इसलिए वह लाजिमन कियामत तक बाकी रहेगी। इस दुनिया में बहरहाल आदमी को इस इम्तेहान में खड़ा होना है कि वह सच्चे दलाइल और बेबुनियाद बातों के दर्मियान फर्क करे और बेबुनियाद बातों को रद्द करके सच्चे दलाइल को कुबूल कर ले।

शयातीने इन्स (इंसानी शैतान) अपनी जहानत से हक के ख़िलाफ जो पुरफरेब शोशे निकालते हैं वे उन्हीं लोगों को मुतास्सिर करते हैं जो आख़िरत (परलोक) की फिक्र से ख़ाली हों। आख़िरत का अंदेशा आदमी को इंतिहाई संजीदा बना देता है और जो शख़्स संजीदा हो उससे बातों की हकीकत कभी छुपी नहीं रह सकती। मगर जो लोग आख़िरत के अंदेशे से ख़ाली हों वे हक के मामले में संजीदा नहीं होते, इसीलिए वे शोशे और दलील का फर्क भी समझ नहीं पाते।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٥﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٦﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٨﴾

क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मुंसिफ बनाऊं। हालांकि उसने तुम्हारी तरफ वाजेह किताब उतारी है। और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी वे जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ से उतारी गई है हक के साथ। पस तुम न हो शक करने वालों में। और तुम्हारे रब की बात पूरी सच्ची है और इंसाफ की, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात को और वह सुनने वाला, जानने वाला है। और अगर तुम लोगों की अक्सरियत के कहने पर चलो जो जमीन में हैं तो वे तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देंगे। वे महज गुमान की पैरवी करते हैं और कयास आराइयां (अटकल बातें) करते हैं। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं और ख़ूब जानता है उन्हें जो राह पाए हुए हैं। (115-118)

कुरआन में जबीहा के अहकाम उतरे और यह कहा गया कि मुर्दा जानवर न खाओ, जबह किया हुआ खाओ तो कुछ लोगों ने कहा : मुसलमानों का मजहब भी अजीब है। वे अपने हाथ का मारा हुआ जानवर हलाल समझते हैं और जिसे अल्लाह ने मारा हो उसे हराम बताते हैं। इस जुमले में लफ्जी तुकबंदी के सिवा और कोई दलील नहीं है। मगर बहुत से लोग उसे सुनकर धोखे में आ गए और इस्लाम को शुबह की नजर से देखने लगे। ऐसा ही हमेशा होता है। हर जमाने में ऐसे लोग कम होते हैं जो बातों को उनकी असली हकीकत के एतबार से समझते हों। बेशतर लोग अल्फाज के गोरखधंधे में गुम रहते हैं। वह ख़्याली बातों को हकीकी समझ लेते हैं सिर्फ इसलिए कि उन्हें ख़ूबसूरत अल्फाज में बयान कर दिया गया है।

मगर यह दुनिया ऐसी दुनिया है जहां तमाम बुनियादी हकीकतों के बारे में ख़ुदा के वाजेह बयानात आ चुके हैं। इसलिए यहां किसी के लिए इस किस्म की बेराही में पड़ना काबिले माफी नहीं हो सकता। ख़ुदा का कलाम एक खुली हुई कसौटी है जिस पर जांच कर हर आदमी मालूम कर सकता है कि उसकी बात महज एक लफ्जी शोबदा (शब्द जाल) है या कोई वाकई हकीकत है। ख़ुदा ने माजी, हाल और मुस्तकबिल की तमाम जरूरी चीजों के बारे में सच्चा बयान दे दिया है। उसने इंसानी ताल्लुकात के तमाम पहलुओं के बारे में कामिल इंसाफ की राह बता दी है। आदमी अगर वाकई संजीदा हो तो उसके लिए यह जानना कुछ भी मुश्किल नहीं कि हक क्या और नाहक क्या। अब इसके बाद शुबह में वही पड़ेगा जिसका हाल यह हो कि उसकी सोच ख़ुदा के कलाम के सिवा दूसरी चीजों के जेरेअसर काम करती हो। जो शख़्स अपनी सोच को ख़ुदाई हकीकतों के मुवाफिक बना ले उसके लिए यहां फिक्री बेराहरवी (वैचारिक भटकाव) का कोई इम्कान नहीं।

इस ख़ुदाई वजाहत के बाद भी अगर आदमी भटकता है तो ख़ुदा को उसका हाल अच्छी तरह मालूम है। वह ख़ूब जानता है कि वह कौन है जिसने अपनी बड़ाई कायम रखने की ख़ातिर अपने से बाहर जाहिर होने वाली सच्चाई को कोई अहमियत न दी। कौन है जिसके तअस्सुब ने उसे इस काबिल न रखा कि वह बात को समझ सके। किस ने सस्ती नुमाइश में अपनी रग़बत की वजह से सच्चाई की आवाज पर ध्यान नहीं दिया। कौन है जो हसद की नफ्सियात में मुब्तिला होने की वजह से हक से नाआशना रहा।

فكلوا مما ذكر اسم الله عليه ان كنتم بايته مؤمنين ﴿١١٩﴾ وما لكم الا تاكلوا مما ذكر اسم الله عليه وقد فصل لكم ما حرم عليكم الا ما اضطررتم اليه وان كثيرا ليضلون باهوايهم بغير علم ان ربك هو اعلم بالمعتدين ﴿١٢٠﴾ وذروا ظاهر الاثم وباطنه ان الذين يكسبون الاثم سيجزون بما كانوا يقترفون ﴿١٢١﴾ ولا تاكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وانه لفسق وان الشيطين ليوحون الى اوليهم ليجادلوكم وان اطعتموهم انكم لمشركون ﴿١٢٢﴾

पस खाओ उस जानवर में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो। और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है, हालांकि ख़ुदा ने तफ़्सील से बयान कर दी हैं वे चीजें जिन्हें उसने तुम पर हराम किया है। सिवा इसके कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ। और यकीनन बहुत से लोग अपनी ख़्वाहिशात की बिना पर गुमराह करते हैं बग़ैर किसी इल्म के। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है हद से निकल जाने वालों को। और तुम गुनाह के जाहिर को भी छोड़ दो और उसके बातिन को भी। जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें जल्द बदला मिल जाएगा उसका जो वे कर रहे थे। और तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। यकीनन यह बेहुक्मी है और शयातीन इल्का (संप्रेषित) कर रहे हैं अपने साथियों को ताकि वे तुमसे झगड़ें। और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुश्रिक (बहुदेववादी) हो जाओगे। (119-122)

दुनिया में जो कुछ है वह सब हमारे लिए 'माले ग़ैर' है। क्योंकि सबका सब ख़ुदा का है। उसे अपने लिए जाइज करने की वाहिद सूरत यह है कि उसे ख़ुदा के बताए हुए तरीके से हासिल किया जाए और उसे ख़ुदा के बताए हुए तरीके से इस्तेमाल किया जाए। यही मामला जानवरों का भी है।

जानवर हमारे लिए कीमती ख़ुराक हैं। मगर सवाल यह है कि उन्हें ख़ुराक बनाने का हक हमें कैसे मिला। जानवर को ख़ुदा बनाता है और वही उसे परवरिश करके तैयार करता है। फिर हमारे लिए कैसे जाइज हुआ कि हम उसे अपनी ख़ुराक बनाएं। जबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना इसी सवाल का जवाब है। अल्लाह का नाम लेना कोई लफ्जी रस्म नहीं। यह दरअस्ल जानवर के ऊपर ख़ुदा की मालिकाना हैसियत को तस्लीम करना और उसके अतिये (देन) पर ख़ुदा का शुक्र अदा करना है। जबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना इसी एतराफ

व शुक्र की एक अलामत है और यही एतराफ व शुक्र वह 'कीमत' है जिसे अदा करने से मालिक के नजदीक उसका एक जानवर हमारे लिए हलाल हो जाता है। ताहम जिसे इत्तफाकी मजबूरी पेश आ जाए उसे इस पाबंदी से आजाद कर दिया गया है।

जब आदमी हराम व हलाल और जाइज व नाजाइज में ख़ुदा का हुक्म छोड़ता है तो इसके बाद तवह्हुमात (अंधविश्वास) इसकी जगह ले लेते हैं। लोग तवह्हुमाती ख़्यालात के आधार पर चीज़ों के बारे में तरह-तरह की राए कायम कर लेते हैं। इन तवह्हुमात के पीछे कुछ ख़ुदसाख़्ता फलसफे होते हैं और उनकी बुनियाद पर उनके कुछ जवाहिर (प्रकट दृश्य) कायम होते हैं। जो लोग अल्लाह के फरमांबरदार बनना चाहें उनके लिए जरूरी होता है कि इन तवह्हुमात को फिक्री (वैचारिक) और अमली दोनों एतबार से मुकम्मल तौर पर छोड़ दें।

खाने पीने और दूसरे उमूर में हर कौम का एक रवाजी दीन बन जाता है। इस रवाजी दीन के बारे में लोगों के जज्बात बहुत शदीद होते हैं। क्योंकि इसके हक में अस्लाफ और बुजुर्गों की तस्दीकात शामिल रहती हैं। इससे हटना बुजुर्गों के दीन से हटने के समान बन जाता है। इसलिए जब हक की दावत इस रवाजी दीन से टकराती है तो हक की दावत के ख़िलाफ तरह-तरह के एतराजात किए जाते हैं। वक्त के बड़े ऐसी ख़ुशकुन बातें निकालते हैं जिनसे वे अपने अवाम को मुतमइन कर सकें कि तुम्हारा रवाजी दीन सही है और यह 'नया दीन' बिल्कुल बातिल है। मगर अल्लाह हर चीज से बाख़बर है। कियामत में जब वह हकीक्तों को खोलेगा तो हर आदमी देख लेगा कि वह हकीक्त की जमीन पर खड़ा था या तवह्हुमात की जमीन पर।

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۭ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۭ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذَا جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

क्या वह शख़्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे जिंदगी दी और हमने उसे एक रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में पड़ा है, इससे निकलने वाला नहीं। इस तरह मुंकिरों की नजर में उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। और इस तरह हर बस्ती में हमने गुनाहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहां हीले (चालें) करें। हालांकि वे जो हीला करते हैं अपने ही ख़िलाफ

करते हैं मगर वे उसे नहीं समझते। और जब उनके पास कोई निशान आता है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज न मानेंगे जब तक हमें भी वही न दिया जाए जो ख़ुदा के पैग़म्बरों को दिया गया। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे अपनी पैग़म्बरी किसे बख़्शे। जो लोग मुजरिम हैं जरूर उन्हें अल्लाह के यहां जिल्लत नसीब होगी और सख़्त अजाब भी, इस वजह से कि वे मक्र (चालबाजी) करते थे। (123-125)

अल्लाह की नजर में वह शख़्स जिंदा है जिसके सामने हिदायत की रोशनी आई और उसने उसे अपने रास्ते की रोशनी बना लिया। इसके मुकाबले में मुर्दा वह है जो हिदायत की रोशनी से महरूम होकर बातिल के अंधेरों में भटक रहा हो।

मुर्दा आदमी ओहाम (भ्रमों) व तअस्सुबात (विद्वेषों) के जाल में इतना फंसा हुआ होता है कि सीधे और सच्चे हकाइक उसके जेहन की गिरफ्त में नहीं आते। वह चीज़ों की माहियत (स्वरूप) से इतना बेख़बर होता है कि लफ्जी बहस और हकीकी कलाम में फर्क नहीं कर पाता। वह अपनी बड़ाई के तसव्वुर में इतना डूबा हुआ होता है कि किसी दूसरे की तरफ से आई हुई सच्चाई का एतराफ करना उसके लिए मुमकिन नहीं होता। उसके जेहन पर रवाजी ख़्यालात का इतना ग़लबा होता है कि उनसे हट कर किसी और मेयार पर वह चीजों को जांच नहीं पाता। अपनी इन कमजोरियों की बिना पर वह अंधेरे में भटकता रहता है, बजाहिर जिंदा होते हुए भी वह एक मुर्दा इंसान बन जाता है।

इसके बरअक्स (विपरीत) जो शख़्स हिदायत के लिए अपना सीना खोल देता है वह हर किस्म की नफ्सियाती गिरहों से आजाद हो जाता है। सच्चाई को पहचानने में उसे जरा भी देर नहीं लगती। अल्फाज के पर्दे कभी उसके लिए हकीक्त का चेहरा देखने में रुकावट नहीं बनते। जौक और आदत के मसाइल उसकी जिंदगी में कभी यह मकाम हासिल नहीं करते कि उसके और हक के दर्मियान हायल हो जाएं। सच्चाई उसके लिए एक ऐसी रोशन हकीकत बन जाती है जिसे देखने में उसकी नजर कभी न चूके और जिसे पाने के लिए वह कभी सुस्त साबित न हो। वह ख़ुद भी हक की रोशनी में चलता है और दूसरों को भी उसमें चलाने की कोशिश करता है।

वे लोग जो ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) चीजों को ख़ुदा का मजहब बताकर अवाम का आकर्षण केन्द्र बने हुए होते हैं वे हर ऐसी आवाज के दुश्मन बन जाते हैं जो लोगों को सच्चे दीन की तरफ पुकारे। ऐसी हर आवाज उन्हें अपने ख़िलाफ बेएतमादी की तहरीक दिखाई देती है। ये वक्त के बड़े लोग हक की दावत में ऐसे शोशे निकालते हैं जिससे वे अवाम को उससे मुतअस्सिर होने से रोक सकें। वे हक के दलाइल को ग़लत रुख़ देकर अवाम को शुबहात में मुब्तला करते हैं। यहां तक कि बेबुनियाद बातों के जरिये दाओ (आह्वानकर्ता) की जात को बदनाम करने की कोशिश करते हैं। मगर इस किस्म की कोशिशें सिर्फ उनके जुर्म को बढ़ाती हैं, वह दाओ और दावत को कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकतीं। हकपरस्त वह है जो हक को उस वक्त देख ले जबकि उसके साथ दुनियावी अज़्मतें शामिल न हुई हों। दुनियावी अज़्मत वाले हक को मानना दरअस्ल दुनियावी अज़्मतों को मानना है न कि ख़ुदा की तरफ से आए हुए हक को।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۸﴾

अल्लाह जिसे चाहता है कि हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे चाहता है कि गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो। इस तरह अल्लाह गन्दगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते। और यही तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है। हमने वाजेह कर दी हैं निशानियाँ ग़ौर करने वालों के लिए। उन्हीं के लिए सलामती का घर है उनके रब के पास। और वह उनका मददगार है उस अमल के सबब से जो वे करते रहे। (126-128)

हक अपनी जात में इतना वाजेह है कि उसका समझना कभी किसी आदमी के लिए मुश्किल न हो। फिर भी हर जमाने में बेशुमार लोग हक की वजाहत के बावजूद हक को कुबूल नहीं करते। इसकी वजह उनके अंदर की वे रुकावटे हैं जो वे अपनी नफ्सियात में पैदा कर लेते हैं। कोई अपने आपको मुकद्दस हस्तियों से इतना ज्यादा वाबस्ता कर लेता है कि उन्हें छोड़ते हुए उसे महसूस होता है कि वह बिल्कुल बर्बाद हो जाएगा। किसी का हाल यह होता है कि अपनी मस्लेहतों का निजाम टूटने का अंदेशा उसके ऊपर इतना ज्यादा छा जाता है कि उसके लिए हक की तरफ इक्दाम करना मुमकिन नहीं रहता। किसी को नजर आता है कि हक को मानना अपनी बड़ाई के मीनार को अपने हाथ से ढा देना है। किसी को महसूस होता है कि माहौल के रवाज के ख़िलाफ एक बात को अगर मैंने मान लिया तो मैं सारे माहौल में अजनबी बन कर रह जाऊंगा। इस तरह के ख़्यालात आदमी के ऊपर इतने मुसल्लत हो जाते हैं कि हक को मानना उसे एक बेहद मुश्किल बुलन्दी पर चढ़ाई के समान नज़र आने लगता है जिसे देखकर ही आदमी का दिल तंग होने लगता हो।

इसके बरअक्स मामला उन लोगों का है जो नफ्सियाति पेचीदगियों में मुब्तला नहीं होते, जो हक को हर दूसरी चीज से आला समझते हैं। वे पहले से सच्चे मुतलाशी बने हुए होते हैं। इसलिए जब हक उनके सामने आता है तो बिला ताख़ीर (अविलंब) वे उसे पहचान लेते हैं और तमाम उजरात (विवशताओं) और अंदेशों को नजरअंदाज करके उसे कुबूल कर लेते हैं।

ख़ुदा अपने हक को निशानियों (इशाराती हकीकतों) की सूरत में लोगों के सामने लाता है। अब जो लोग अपने दिलों में कमजोरियां लिए हुए हैं, वे इन इशारात की ख़ुदसाख़्ता तावील करके अपने लिए इसे न मानने का जवाज बना लेते हैं। और जिन लोगों के सीने खुले हुए हैं वे

इशारात को उनकी अस्ल गहराइयों के साथ पा लेते हैं और उन्हें अपने जेहन की गिजा बना लेते हैं। उनकी जिंदगी फौरन उस सीधे रास्ते पर चल पड़ती है जो ख़ुदा की बराहेरास्त रहनुमाई में तै होता है और बिलआख़िर आदमी को अबदी कामयाबी के मकाम पर पहुंचा देता है।

ख़ुदा के यहां जो कुछ कीमत है वह अमल की है न कि किसी और चीज की। जो शख़्स अमली तौर पर ख़ुदा की फरमांबरदारी इख़्तियार करेगा वही इस काबिल ठहरेगा कि ख़ुदा उसकी दस्तगीरी करे और उसे अपने सलामती के घर तक पहुंचा दे। यह सलामती का घर ख़ुदा की जन्नत है जहां आदमी हर किस्म के दुख और आफ्त से महफूज रहकर अबदी (चिरस्थाई) सुकून की जिंदगी गुजारेगा। ख़ुदा की यह मदद अफ्राद को उनके अमल के मुताबिक मौत के बाद आने वाली जिंदगी में मिलेगी। लेकिन अगर अफ्राद की काबिले लिहाज तादाद दुनिया में ख़ुदा की फरमांबरदार बन जाए तो ऐसी जमाअत को दुनिया में भी उसका एक हिस्सा दे दिया जाता है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

और जिस दिन अल्लाह उन सबको जमा करेगा, ऐ जिन्नों के गिरोह तुमने बहुत से ले लिए इंसानों में से। और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे ऐ हमारे रब, हमने एक दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुंच गए अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए मुकर्रर किया था। ख़ुदा कहेगा अब तुम्हारा ठिकाना आग है, हमेशा उसमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनाहगारों को एक दूसरे से, उन आमाल के सबब जो वे करते थे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें इस दिन के पेश आने से डराते थे। वे कहेंगे हम ख़ुद अपने ख़िलाफ गवाह हैं। और उन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में रखा। और वे अपने ख़िलाफ ख़ुद गवाही देंगे कि बेशक हम मुंकिर थे। यह इस वजह से कि तुम्हारा

रब बस्तियों को उनके ज़ुल्म पर इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि वहां के लोग बेख़बर हों। (129-132)

किसी के गुमराह करने से जब कोई शख़्स गुमराह होता है तो यह एकतरफा मामला नहीं होता। दोनों अपनी-अपनी जगह यही समझते हैं कि वे अपना मक्सद पूरा कर रहे हैं। शैतान जब आदमी को सब्ज बाग़ दिखा कर अपनी तरफ ले जाता है तो वह अपने उस चैलेंज को सही साबित करना चाहता है जो उसने आग़ाजे तख़्लीक (उत्पत्ति काल) में ख़ुदा को दिया था कि मैं तेरी मख़्लूक के बड़े हिस्से को अपना हमनवा बना लूंगा (बनी इस्राईल 61)। दूसरी तरफ जो लोग अपने आपको शैतान के हवाले करते हैं उनके सामने भी वाज़ेह मफ़ादात (स्वार्थ) होते हैं। कुछ लोग जिन्नों के नाम पर अपने सहर (जादू) के कारोबार को फरोग़ देते हैं या अपनी शायरी और कहानत का रिश्ता किसी जिन्नी उस्ताद से जोड़ कर अवाम के ऊपर अपनी बरतरी कायम करते हैं। इसी तरह वे तमाम तहरीकें जो शैतानी तर्ग़ीबात (प्रेरणा) के तहत उठती हैं, उनका साथ देने वाले भी इसीलिए उनका साथ देते हैं कि उन्हें उम्मीद होती है कि इस तरह अवाम के ऊपर आसानी के साथ वे अपनी कयादत (नेतृत्व) कायम कर सकते हैं। क्योंकि ख़ुदाई पुकार के मुकाबले में शैतानी नारे हमेशा अवाम की भीड़ के लिए ज्यादा पुरकशिश साबित होते हैं।

कियामत में जब हकीकतों से पर्दा उठाया जाएगा तो यह बात खुल जाएगी कि जो लोग बेराह हुए या जिन्होंने दूसरों को बेराह किया उन्होंने किसी ग़लतफहमी की बिना पर ऐसा नहीं किया। इसकी वजह हक को नजरअंदाज करना था न कि हक से बेख़बर रहना। वे दुनियावी तमाशों से ऊपर न उठ सके, वे वक्ती फायदों को कुर्बान न कर सके। वर्ना ख़ुदा ने अपने ख़ास बंदों के जरिए जो हिदायत खोली थी वह इतनी वाज़ेह थी कि कोई शख़्स हकीकते हाल से बेख़बर नहीं रह सकता था। मगर उनकी दुनियापरस्ती उनकी आंखों का पर्दा बन गई। जानने के बावजूद उन्होंने न जाना। सुनने के बावजूद उन्होंने न सुना।

आख़िरत (परलोक) में वे बनावटी सहारे उनसे छिन जाएंगे जिनके बल पर वे हकीकत से बेपरवाह बने हुए थे। उस वक्त उन्हें नजर आएगा कि किस तरह ऐसा हुआ कि हक उनके सामने आया मगर उन्होंने झूठे अल्फाज बोलकर उसे रद्द कर दिया। किस तरह उनकी ग़लती उन पर वाजेह की गई मगर ख़ूबसूरत तावील करके उन्होंने समझा कि अपने आपको हक पर साबित करने में वे कामयाब हो गए हैं।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

और हर शख़्स का दर्जा है उसके अमल के लिहाज से और तुम्हारा रब लोगों के आमाल से बेख़बर नहीं। और तुम्हारा रब बेनियाज (निस्पृह), रहमत वाला है। अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें पैदा किया दूसरों की नस्ल से। जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह आकर रहेगी और तुम ख़ुदा को आजिज नहीं कर सकते। कहो, ऐ लोगो तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर, मैं भी अमल कर रहा हूं। तुम जल्द ही जान लोगे कि अंजामकार किसके हक में बेहतर होता है। यकीनन जालिम कभी फलाह (कल्याण) नहीं पा सकते। (133-136)

दुनिया की जिंदगी में हम देखते हैं कि एक शख़्स और दूसरे शख़्स के मर्तबे में फर्क होता है। यह फर्क ठीक उस तनासुब से होता है जो एक आदमी और दूसरे आदमी की जद्दोजहद में पाया जाता है। किसी आदमी की दानिशमंदी, उसकी मेहनत, मस्लेहतों के साथ उसकी रिआयत जिस दर्जे की होती है उसी दर्जे की कामयाबी उसे यहां हासिल होती है।

ऐसा ही मामला आख़िरत (परलोक) का भी है। आख़िरत में दर्जात और मकामात की तकसीम ठीक उसी तनासुब से होगी जिस तनासुब से किसी आदमी ने दुनिया में उसके लिए अमल किया है। आख़िरत के लिए भी आदमी को उसी तरह माल और वक्त ख़र्च करना है जिस तरह वह दुनिया के लिए अपने वक्त और माल को ख़र्च करता है। आख़िरत के मामले में भी उसे उसी तरह होशियारी दिखानी है जिस तरह वह दुनिया के मामले में होशियारी दिखाता है। आख़िरत की बातों में भी उसे मस्लेहतों और नजाकतों की उसी तरह रिआयत करना है जिस तरह वह दुनिया की बातों में मस्लेहतों और नजाकतों की रिआयत करता है। जिस ख़ुदा के हाथ में आख़िरत का फैसला है वह एक-एक शख़्स के अहवाल से पूरी तरह बाख़बर है। उसके लिए कुछ भी मुश्किल न होगा कि वह हर एक को वही दे जो उसके इस्तहकाक (पात्रता) के बक़द्र उसे मिलना चाहिए।

ख़ुदा ने इम्तेहान और अमल की यह जो दुनिया बनाई है इसके जरिए उसने इंसान के लिए एक कीमती इम्कान खोला है। वह चन्द दिन की जिंदगी में अच्छे अमल का सुबूत देकर अबदी जिंदगी में उसका अंजाम पा सकता है। इस निजाम को कायम करने से ख़ुदा का अपना कोई फायदा नहीं। मौजूदा लोग अगर उसके तख़्लीकी मंसूबे को कुबूल न करें तो ख़ुदा को इसकी परवाह नहीं। वह उनकी जगह दूसरों को उठा सकता है जो उसके तख़्लीकी मंसूबे को मानें और अपने आपको उसके साथ शामिल करें। यहां तक कि वह रेगिस्तान के जर्रों और दरख़्तों के पत्तों को अपने वफादार बंदों की हैसियत से खड़ा कर सकता है।

एक ऐसी दुनिया जो सरासर हक और इंसाफ पर कायम हो वहां जालिमों और सरकशों को छूट मिलना खुद ही बता रहा है कि यह छूट कोई इनाम नहीं है बल्कि वह उन्हें उनके आख़िरी अंजाम तक पहुंचाने के लिए है। जो शख़्स हक को मानने से इंकार करता है और इसके बावजूद बजाहिर उसका कुछ नहीं बिगड़ता उसे इस सूरतेहाल पर ख़ुश नहीं होना चाहिए। यह हालत सरासर वक्ती है। बहुत जल्द वह वक्त आने वाला है जबकि आदमी से वह सब कुछ छीन लिया जाए जिसके बल पर वह सरकशी कर रहा है और उसे हमेशा के लिए

एक ऐसी बर्बादी में डाल दिया जाए जहां से कभी उसे निकलना न हो। जहां न दुबारा अमल का मौका हो और न अपने अमल के अंजाम से अपने को बचाने का।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۖ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ ۗ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٧﴾ وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

और ख़ुदा ने जो खेती और चौपाए पैदा किए उसमें से उन्होंने ख़ुदा का कुछ हिस्सा मुकर्रर किया है। पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनके गुमान के मुताबिक, और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है। फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह उनके शरीकों को पहुंच जाता है। कैसा बुरा फैसला है जो ये लोग करते हैं। और इस तरह बहुत से मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की नजर में उनके शरीकों ने अपनी औलाद के कत्ल को ख़ुशनुमा बना दिया है ताकि उन्हें बर्बाद करें और उन पर उनके दीन को मुशतबह (संदिग्ध) बना दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। पस उन्हें छोड़ दो कि अपनी इफ्तिरा (झूठ गढ़ने) में लगे रहें। (137-138)

मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में यह रवाज था कि वे फस्ल और मवेशी में से अल्लाह का और बुतों का हिस्सा निकालते। अगर वे देखते कि ख़ुदा के हिस्से का जानवर या ग़ल्ला अच्छा है तो उसे बदल कर बुतों की तरफ दे देते। मगर बुतों का अच्छा होता तो उसे ख़ुदा की तरफ न करते। पैदावार की तक़्सीम के वक्त बुतों के नाम का कुछ हिस्सा इत्तफाकन अल्लाह के हिस्से में मिल जाता तो उसे अलग करके बुतों की तरफ लौटा देते। और अल्लाह के नाम का कुछ हिस्सा बुतों की तरफ चला जाता तो उसे न लौटाते। इसी तरह अगर कभी नज़्र व नियाज का ग़ल्ला ख़ुद इस्तेमाल करने की जरूरत पेश आ जाती तो ख़ुदा का हिस्सा ले लेते मगर बुतों के हिस्से को न छूते। वे डरते थे कि कहीं कोई बला नाजिल हो जाए। कहने के लिए वे ख़ुदा को मानते थे मगर उनका अस्ल यकीन अपने बुतों के ऊपर था। हकीकत यह है कि आदमी महसूस बुतों को इसीलिए गढ़ता है कि उसे ग़ैर महसूस ख़ुदा पर पूरा भरोसा नहीं होता।

यही हाल हर उस शख़्स का होता है जो जबान से तो अल्लाह को मानता हो मगर उसका दिल अल्लाह के सिवा कहीं और अटका हुआ हो। जो लोग किसी जिंदा या मुर्दा हस्ती को अपनी अकीदतों का मर्कज (आस्था केन्द्र) बना लें उनका हाल भी यही होता है कि जो वक्त उनके यहां ख़ुदा की याद का है उसमें तो वे अपने 'शरीक' की याद को शामिल कर लेते हैं। मगर जो वक्त उनके नजदीक अपने शरीक की याद का है उसमें ख़ुदा का तज्किरा उन्हें गवारा

नहीं होता। शेफ़्तगी और वारुफ़्तगी (मुहब्बत और शौक) का जो हिस्सा ख़ुदा के लिए होना चाहिए उसका कोई जुज वे बाआसानी अपने शरीकों को दे देंगे। मगर अपने शरीक के लिए वे जिस शेफ़्तगी और वारुफ़्तगी को जरूरी समझते हैं उसका कोई हिस्सा कभी ख़ुदा को नहीं पहुंचेगा। जो मज्लिस ख़ुदा की अज्मत व किब्रियाई बयान करने के लिए आयोजित की जाए उसमें उनके शरीकों की अज्मत व किब्रियाई का बयान तो किसी न किसी तरह दाख़िल हो जाएगा। मगर जो मज्लिस अपने शरीकों की अज्मत व किब्रियाई का चर्चा करने के लिए हो वहां ख़ुदा की अज्मत व किब्रियाई का कोई गुजर न होगा।

उन शरीकों की अहमियत कभी जेहन पर इतना ज्यादा ग़ालिब आती है कि आदमी अपनी औलाद तक को उनके लिए निसार कर देता है। अपनी औलाद को ख़ुदा के लिए पेश करना हो तो वह पेश नहीं करेगा मगर अपने शरीकों की ख़िदमत में उन्हें देना हो तो वह बखुशी इसके लिए आमादा हो जाता है।

इस किस्म की तमाम चीजें ख़ुदा के दीन के नाम पर की जाती हैं मगर हकीकतन वे गढ़े हुए झूठ हैं। क्योंकि यह एक ऐसी चीज को ख़ुदा की तरफ मंसूब करना है जिसे ख़ुदा ने कभी तालीम नहीं किया।

وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٩﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٤٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤١﴾

और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती मना है, इन्हें कोई नहीं खा सकता सिवा उसके जिसे हम चाहें, अपने गुमान के मुताबिक। और फलां चौपाए हैं कि उनकी पीठ हराम कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिन पर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। अल्लाह जल्द उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा। और कहते हैं कि जो फलां किस्म के जानवरों के पेट में है वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है। अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं। अल्लाह जल्द उन्हें इस कहने की सजा देगा। बेशक अल्लाह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को कत्ल किया नादानी से बग़ैर किसी इल्म के। और उन्होंने उस रिज़्क को हराम कर लिया जो अल्लाह

ने उन्हें दिया था, अल्लाह पर बोहतान बांधते हुए। वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले न बने। (139-141)

क़दीम अरब के लोग अपने मजहब को हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल की तरफ मंसूब करते थे। मगर अमलन उनके यहां जो मजहब था वह एक ख़ुदसाख़्ता मजहब था जो उनके पेशवाओं ने गढ़कर उनके दर्मियान राइज कर दिया था। पैदावार और चौपायों की जो नज़्रें (अर्पित वस्तुएं) ख़ुदा या उसके शरीकों के नाम पर पेश होतीं उनके लिए उनके यहां बहुत सी कड़ी पाबंदियां थीं। मसलन बहीरा या सायबा (जानवरों) को अगर जबह किया और उसके पेट से जिंदा बच्चा निकला तो उसका गोश्त सिर्फ मर्द खाएं, औरतें न खाएं। और अगर बच्चा मुर्दा हालत में हो तो उसे मर्द और औरत दोनों खा सकते हैं। इसी तरह कुछ जानवरों की पीठ पर सवार होना या उनके ऊपर बोझ लादना उनके नजदीक हराम था। कुछ जानवरों के बारे में उनका अक़ीदा था कि उन पर सवार होते वक्त या उन्हें जबह करते वक्त या उनका दूध निकालते वक्त ख़ुदा का नाम नहीं लेना चाहिए।

ऐसे लोग दीन के अस्ल तक़ाजे (अल्लाह से तअल्लुक़ और आख़िरत की फ़िक्र) से इंतिहाई हद तक दूर होते हैं। वे रोजाना अल्लाह की हुदूद को तोड़ते रहते हैं। अलबत्ता कुछ ग़ैर मुतअल्लिक जाहिरी चीजों में तशद्दुद की हद तक क़वाइद व ज़वाबित (नियमों) का एहतेमाम करते हैं। यह शैतान की निहायत गहरी चाल है। वह लोगों को अस्ल दीन से दूर करके कुछ दूसरी चीजों को दीन के नाम पर उनके दर्मियान जारी कर देता है और उनमें शिद्दत (अति) की नफ्सियात पैदा करके आदमी को इस गलतफ़हमी में मुब्तिला कर देता है कि वे कमाले एहतियात की हद तक ख़ुदा के दीन पर कायम हैं। इबादत की जवाहिर में तशद्दुद (अतिवाद) भी इसी ख़ास नफ्सियात की पैदावार है। आदमी ख़ुशूअ और ख़ुलूस (निष्ठा भाव) से ख़ाली होता है और कुछ जाहिरी आदाब का शदीद इल्तजाम करके समझता है कि उसने कमाल अदायगी की हद तक इबादत का फेअल (कृत्य) अंजाम दे दिया है।

इस किस्म के लोगों की गुमराही इससे वाजेह है कि उनमें से बहुत से लोगों ने औलाद के क़त्ल जैसे वहशियाना फेअल को दुरुस्त समझ लिया। वे ख़ुदा के पाकीजा (पावन) रिज़्क से लोगों को महरूम कर देते हैं। वे मामूली मसाइल पर लड़ते हैं और उन बड़ी चीजों को नजरअंदाज कर देते हैं जिनकी अहमियत को अक्ले आम के जरिए समझा जा सकता है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते। और खजूर के दरख़्त और खेती कि उसके खाने की चीजें मुख़्तलिफ होती हैं और जैतून और अनार आपस में मिलते जुलते भी और एक दूसरे से मुख़्तलिफ भी। खाओ उनकी पैदावार जबकि वे फलें और अल्लाह का हक अदा करो उसके काटने के दिन। और इसराफ (हद से आगे बढ़ना) न करो, बेशक अल्लाह इसराफ करने वालों को पसंद नहीं करता। और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किए और जमीन से लगे हुए भी। खाओ उन चीजों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं। और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (142-143)

ख़ुदा ने इंसान के लिए तरह-तरह की ग़िजाएं पैदा की हैं। कुछ चीजें वे हैं जो जमीन में फैलती हैं। मसलन ख़रबूजे, सब्जियां वग़ैरह। कुछ चीजें वे हैं जो टट्टियों पर चढ़ाई जाती हैं मसलन अंगूर वग़ैरह। कुछ चीजें ऐसी हैं जो अपने तने पर खड़ी रहती हैं। मसलन खजूर, आम वग़ैरह। इसी तरह आदमी की जरूरत के लिए मुख़्तलिफ किस्म के छोटे-बड़े जानवर पैदा किए। मसलन ऊंट, घोड़े और भेड़ बकरियां।

आदमी एक अलेहिदा मख़्लूक़ है और बाकी चीजें अलेहिदा मख़्लूक़। दोनों एक दूसरे से अलग-अलग पैदा हुए हैं। मगर इंसान देखता है कि दोनों में जबरदस्त हमआहंगी (अंतरंगता) है। आदमी के जिस्म को अगर गिजाइयत दरकार है तो उसके बाहर हरे भरे दरख़्तों में हैरतअंगेज किस्म के गिजाई पैकेट लटक रहे हैं। अगर उसकी ज़बान में मजे का एहसास पाया जाता है तो फलों के अंदर इसकी तस्कीन का आला सामान मौजूद है। अगर उसकी आंखों में हुस्ने नजर का जौक़ है तो क़ुदरत का पूरा कारख़ाना हुस्न और दिलकशी का मुरक़्क़ा (पुंज) बना हुआ है। अगर उसे सवारी और बारबरदारी (यातायात) के जराए दरकार हैं तो यहां ऐसे जानवर मौजूद हैं जो उसके लिए यातायात का जरिया भी बनें और इसी के साथ उसके लिए कीमती ग़िजा भी फराहम करें। इस तरह कायनात अपने पूरे वजूद के साथ तौहीद (एकेश्वावाद) का एलान बन गई है। क्योंकि कायनात के मुख़्तलिफ मजाहिर में यह वहदत (एकत्व) इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि उसका ख़ालिक व मालिक एक हो।

आदमी जब देखता है कि इतना अजीम कायनाती एहतिमाम उसके किसी जाती इस्तहक़ाक़ (पात्रता) के बग़ैर हो रहा है तो इस एकतरफा इनाम पर उसका दिल शुक्र के जज्बे से भर जाता है। फिर इसी के साथ यह सारा मामला आदमी के लिए तक़्वा की ग़िजा बन जाता है। इंसानी फ़ित्रत का यह तक़ाजा है कि हर इनायत (Privilege) के साथ जिम्मेदारी (Responsibility) हो। यह चीज आदमी को जजा व सजा की याद दिलाती है और उसे आमादा करती है कि वह दुनिया में इस एहसास के साथ रहे कि एक दिन उसे ख़ुदा के सामने हिसाब के लिए खड़ा होना है। ये एहसासात अगर हकीकी तौर पर आदमी के अंदर जाग उठें तो लाजिमी तौर पर उसके अंदर दो बातें पैदा होंगी। एक यह कि उसे जो कुछ मिलेगा उसमें वह अपने मालिक का हक भी समझेगा। दूसरे यह कि वह सिर्फ वाक़ई जरूरत के बक़द्र ख़र्च करेगा न कि फ़ुज़ूल और बेमौक़ा ख़र्च करने लगे। मगर शैतान यह करता है कि अस्ल रुख़ से आदमी का जेहन मोड़कर उसे दूसरी ग़ैर मुतअल्लिक बातों में उलझा देता है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٤٣ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٤ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤٥

अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किए। दो भेड़ की किस्म से और दो बकरी की किस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों। मुझे दलील के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो। और इसी तरह दो ऊंट की किस्म से हैं और दो गाय की किस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस वक्त हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था। फिर उससे ज्यादा जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे ताकि वह लोगों को बहका दे बग़ैर इल्म के। बेशक अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। कहो, मुझ पर जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है उसमें तो मैं कोई चीज नहीं पाता जो हराम हो किसी खाने वाले पर सिवा इसके कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह नापाक है। या नाजाइज जबीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो। लेकिन जो शख़्स भूख से बेइख़्तियार हो जाए, न नाफरमानी करे और न ज्यादती करे, तो तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (144-146)

अरबों में गोश्त और दूध वग़ैरह के लिए जो जानवर पाले जाते थे उनमें से चार ज्यादा मशहूर थे। भेड़ बकरी और ऊंट गाय। इनके बारे में उन्होंने तरह-तरह के तहरीमी (निषिद्धता के) कायदे बनाए थे। मगर इन तहरीमी कायदों के पीछे अपने मुश्रिकाना रवाजों के सिवा कोई दलील उनके पास न थी। भेड़ और बकरी और ऊंट और गाय, चाहे नर हों या मादा, अक्ली तौर पर कोई हुरमत (मनाही) का सबब इनके अंदर मौजूद नहीं है, इनका तमाम का तमाम गोश्त इंसान की बेहतरीन ग़िजा है। इनमें कोई ऐसी नापाक आदत भी नहीं जो इनके बारे में इंसानी तबीअत में कराहियत पैदा करती हो। आसमान से उतरे हुए इल्म में भी इनकी हुरमत का जिक्र नहीं।

फिर क्यों ऐसा होता है कि इन हैवानात के बारे में लोगों के अंदर तरह-तरह के तहरीमी (निषिद्धता के) कायदे बन जाते हैं। इसकी वजह शैतानी तर्ग़ीबात हैं। इंसान के अंदर फितरी तौर पर ख़ुदा का शुऊर और हराम व हलाल का एहसास मौजूद है। आदमी अपने अंदरूनी तकाजे के तहत किसी हस्ती को अपना ख़ुदा बनाना चाहता है और चीजों में जाइज नाजाइज का फर्क करना चाहता है। शैतान इस हकीकत को ख़ूब जानता है। वह समझता है कि इंसान को अगर सादा हालात में अमल करने का मौका मिला तो वह फितरत के सही रास्ते को पकड़ लेगा। इसलिए वह फितरते इंसानी को कुंद करने के लिए तरह-तरह के ग़लत रवाज कायम करता है। वह ख़ुदा के नाम पर कुछ फर्जी ख़ुदा गढ़ता है। वह हराम व हलाल के नाम पर कुछ बेबुनियाद मुहर्रमात (अवैध) वजअ करता है। इस तरह शैतान यह कोशिश करता है कि आदमी इन्हीं फर्जी चीजों में उलझ कर रह जाए और असली सच्चाई तक न पहुंचे। वह सीधे रास्ते से भटक चुका हो। मगर बजाहिर अपने को चलता हुआ देखकर यह समझे कि मैं 'रास्ते' पर हूं। हालांकि वह एक टेढ़ी लकीर हो न कि सीधा और सच्चा रास्ता।

जो लोग इस तरह शैतानी बहकावे का शिकार हों वे ख़ुदा की नजर में जालिम हैं। उन्हें ख़ुदा ने समझ दी थी जिससे वे हक व बातिल में तमीज कर सकते थे। मगर उनके तअस्सुबात उनके लिए पर्दा बन गए। समझने की सलाहियत रखने के बावजूद समझने से दूर रहे।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝١٤٦ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٤٧

और यहूद पर हमने सारे नाखून वाले जानवर हराम किए थे और गाय और बकरी की चरबी हराम की सिवा उसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह सजा दी थी हमने उन्हें उनकी सरकशी पर और यकीनन हम सच्चे हैं। पस अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो कह दो कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ (व्यापक) रहमत वाला है। और उसका अजाब मुजरिम लोगों से टल नहीं सकता। (147-148)

शरीअते ख़ुदावंदी में अस्ल मुहर्रमात (अवैध) हमेशा वही रहे हैं जो ऊपर की आयत में बयान हुए। यानी मुर्दार, बहाया हुआ ख़ून, सुअर का गोश्त और वे जानवर जिसे ग़ैर अल्लाह के नाम पर जबह किया गया हो। इसके सिवा अगर कुछ चीजें हराम हैं तो वे इन्हीं की तशरीह व तफ़्सील हैं।

मगर इसी के साथ अल्लाह की एक सुन्नते तहरीम (निषिद्धता) और है। वह यह कि जब कोई किताब की हामिल कौम इताअत के बजाए सरकशी का तरीका इख़्तियार करती है तो उसकी सरकशी की सजा के तौर पर उसे नई-नई मुश्किलात में डाल दिया जाता है। उस पर ऐसी चीजें हराम कर दी जाती हैं जो असलन शरीअते ख़ुदावंदी में हराम न थीं।

इस हुरमत की (मनाही) शक्ल क्या होती है। इसकी एक शक्ल यह होती है कि उस कौम के अंदर ऐसे पेशवा उठते हैं जो दीन की हकीकत से बिल्कुल ख़ाली होते हैं। वे सिर्फ जाहिरी दीनदारी से वाकिफ होते हैं। ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जो एहतिमाम दीन की मअनवी हकीकतों में करना चाहिए वही एहतिमाम वे जाहिरी आदाब व क्वाइद में करने लगते हैं। इसके नतीजे में जवाहिरे दीन में ग़ैर जरूरी मूशिगाफियां (कुतर्क) वजूद में आती हैं। ऐसे लोग दीन के ख़ुदसाख़्ता जाहिरी मेयार वजअ करते हैं। वे ग़ुलू (अति) और तशद्दुद करके सादा हुक्म को पेचीदा और जाइज चीज को नाजाइज बना देते हैं।

मसलन यहूद के अंदर जब सरकशी आई तो उनके दर्मियान ऐसे उलमा उठे जिन्होंने अपनी मूशिगाफियों से यह कायदा बनाया कि किसी चौपाए के हलाल होने के लिए दो शर्ते एक वक्त में जरूरी हैं। एक यह कि उसके पांव चिरे हुए हों, दूसरे यह कि वह जुगाली करता हो। इनमें से कोई एक शर्त भी अगर न पाई जाए तो वह जानवर हराम समझा जाएगा। इस ख़ुदसाख़्ता शर्त की वजह से ऊंट, साफान और ख़रगोश जैसी चीजें भी ख़्वामख़्वाह हराम करार पा गईं। इसी तरह 'नाखुन' की तशरीह में ग़ुलू (अति) करके उन्होंने ग़ैर जरूरी तौर पर शुतुरमुर्ग, काज़ और बत वग़ैरह को अपने लिए हराम कर लिया। इस किस्म की ग़ैर फितरी बंदिशों ने उनके लिए वहां तंगी पैदा कर दी जहां ख़ुदा ने उनके लिए फराख़ी रखी थी।

हक को ना मानने के बाद आदमी फौरन ख़ुदा की पकड़ में नहीं आता। वह बदस्तूर अपने को आजाद और भरपूर पाता है। इस बिना पर अक्सर वह इस ग़लतफहमी में मुब्तिला हो जाता है कि हक को ना मानने से उसका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। वह भूल जाता है कि वह महज ख़ुदा की रहमत की समाई से बचा हुआ है। ख़ुदा आदमी की सरकशी के बावजूद उसे आख़िरी हद तक मौका देता है। बिलआख़िर जब वह अपनी रविश को नहीं बदलता तो अचानक ख़ुदा का अजाब उसे अपनी पकड़ में ले लेता है। कभी दुनिया में और कभी दुनिया और आख़िरत दोनों में।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٥٠﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥١﴾

ع ١٨ ٥

जिन्होंने शिर्क किया वे कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप दादा करते और न हम किसी चीज को हराम कर लेते। इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने भी जो इनसे पहले हुए हैं। यहां तक कि उन्होंने हमारा अजाब चखा। कहो क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है जिसे तुम हमारे सामने पेश करो। तुम तो सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हो और महज अटकल से काम लेते हो। कहो कि पूरी हुज्जत तो अल्लाह की है। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो इस पर गवाही दें कि अल्लाह ने इन चीजों को हराम ठहराया है। अगर वे झूठी गवाही दे भी दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और तुम उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते और दूसरों को अपने रब का हमसर (समकक्ष) ठहराते हैं। (149-151)

हक की बेआमेज (विशुद्ध) दावत हमेशा अपने माहौल में अजनबी दावत होती है। एक तरफ प्रचलित दीन होता है जिसे तमाम इज्तिमाई इदारों (सामूहिक संस्थाओं) में मक्बूलियत व मकाम हासिल होता है। सदियों की रिवायतें उसे बावजन बनाने के लिए उसकी पुश्त पर मौजूद होती हैं। दूसरी तरफ हक की दावत होती है जो इन तमाम इजाफी ख़ुसूसियात से ख़ाली होती है। ऐसी हालत में लोगों के लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि जिस दीन को इतना दर्जा और इतनी मक्बूलियत हासिल हो वह दीन ख़ुदा की पसंद के मुताबिक न होगा। लोग फर्ज कर लेते हैं कि प्रचलित दीन का इतना फैलाव इसीलिए मुमकिन हो सका कि ख़ुदा की मर्जी उसके शामिलेहाल थी। अगर ऐसा न होता तो उसे यह फैलाव कभी हासिल न होता। वे कहते हैं कि जिस दीन को ख़ुदा की दुनिया में हर तरफ बुलन्द मकाम हासिल हो वह ख़ुदा का पसंदीदा दीन होगा या वह दीन जिसे ख़ुदा की दुनिया में कहीं कोई मकाम हासिल नहीं।

मगर हक व बातिल का फैसला हकीकी दलाइल (तर्कों) पर होता है न कि इस किस्म के अनुमानों पर। ख़ुदा ने इस दुनिया को इम्तेहानगाह बनाया है। यहां आदमी को यह मौका है कि वह जिस चीज को चाहे इख़्तियार करे और जिस चीज को चाहे इख़्तियार न करे। यह मामला तमामतर आदमी के अपने ऊपर निर्भर है। ऐसी हालत में किसी चीज का आम रवाज उसके बरहक होने की दलील नहीं बन सकता। कोई चीज बरहक है या नहीं, इसका फैसला दलाइल की बुनियाद पर होगा न कि रवाजी अमल की बुनियाद पर।

दुनिया को अल्लाह ने इम्तेहानगाह बनाया। इंसान पर अपनी मर्जी जबरन मुसल्लत करने के बजाए यह तरीका इख़्तियार किया कि इंसान को सही और ग़लत का इल्म दिया और यह मामला इंसान के ऊपर छोड़ दिया कि वह सही को लेता है या ग़लत को। इसका मतलब यह है कि दुनिया की जिंदगी में दलील (हुज्जत) ख़ुदा की नुमाइंदा है। आदमी जब एक सच्ची दलील के आगे झुकता है तो वह ख़ुदा के आगे झुकता है। और जब वह एक सच्ची दलील को मानने से इंकार करता है तो वह ख़ुदा को मानने से इंकार करता है।

जब आदमी दलील के आगे नहीं झुकता तो इसकी वजह यह होती है कि वह अपनी

ख़्वाहिश से ऊपर उठ नहीं पाता। वह बातिल को हक कहने के लिए खड़ा हो जाता है ताकि अपने अमल को जाइज साबित कर सके। उसकी ढिठाई उसे यहां तक ले जाती है कि वह ख़ुदा की निशानियों को नजरअंदाज कर दे। वह इस बात से बेपरवाह हो जाता है कि ख़ुदा उसे बिलआख़िर पकड़ने वाला है। वह दूसरी-दूसरी चीजों को वह अहमियत दे देता है जो अहमियत सिर्फ ख़ुदा को देना चाहिए।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥٢﴾

कहो, आओ मैं सुनाऊं वे चीजें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं। यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और मां बाप के साथ नेक सुलूक करो और अपनी औलाद को मुफ्लिसी के डर से कत्ल न करो। हम तुम्हें भी रोजी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई के काम के पास न जाओ चाहे वह जाहिर हो या पोशीदा। और जिस जान को अल्लाह ने हराम ठहराया उसे न मारो मगर हक पर। ये बातें हैं जिनकी ख़ुदा ने तुम्हें हिदायत फरमाई है ताकि तुम अक्ल से काम लो। (152)

ख़ुदाई पाबंदी के नाम पर लोग तरह-तरह की रस्मी और जाहिरी पाबंदियां बना लेते हैं और उनका ख़ुसूसी एहतिमाम करके मुतमइन हो जाते हैं कि उन्होंने ख़ुदाई पाबंदियों का हक अदा कर दिया। मगर ख़ुदा इंसान से जिन पाबंदियों का एहतिमाम चाहता है वे हकीकी पाबंदियां हैं न कि किसी किस्म के रस्मी मजाहिर।

सबसे पहली चीज यह है कि आदमी एक ख़ुदा को अपना ख़ुदा बनाए। उसके सिवा किसी की बड़ाई का ग़लबा उसके जेहन पर न हो। उसके सिवा किसी को वह काबिले भरोसा न समझता हो। उसके सिवा किसी से वह उम्मीदें कायम न करे। उसके सिवा किसी से वह न डरे और न उसके सिवा किसी की शदीद मुहब्बत में मुब्तला हो।

वालिदेन अक्सर हालात में कमजोर और मोहताज होते हैं और औलाद ताकतवर। उनसे हुस्ने सुलूक का प्रेरक मफाद (स्वार्थ) नहीं होता बल्कि सिर्फ हकशनासी (दायित्व बोध) होता है। इस तरह वालिदेन के हुकूक अदा करने का मामला आदमी के लिए एक बात का सबसे पहला इम्तेहान बन जाता है कि उसने ख़ुदा के दीन को कौल की सतह पर इख़्तियार किया है या अमल की सतह पर। अगर वह वालिदेन की कमजोरी की बजाए उनके हक को अहमियत दे, अगर अपने दोस्तों और अपने बीवी बच्चों की मुहब्बत उसे वालिदेन से दूर न करे तो गोया उसने इस बात का पहला सुबूत दे दिया कि उसका अख़्लाक उसूलपसंदी और हकशनासी के ताबेअ (अनुरूप) होगा न कि मफादात और मस्लेहत (हितों, स्वार्थों) के ताबेअ।

इंसान अपने हिर्स और ज़ुल्म की वजह से ख़ुदा के पैदा किए हुए रिज़्क को तमाम बंदों तक मुंसिफाना तौर पर पहुंचने नहीं देता। और जब इसकी वजह से किल्लत के मस्नूई (कृत्रिम) मसाइल पैदा होते हैं तो वह कहता है कि खाने वालों को कत्ल कर दो या पैदा होने वालों को पैदा न होने दो। इस किस्म की बातें ख़ुदा के रिज़्क के निजाम पर बोहतान के हममअना हैं।

बहुत सी बुराइयां ऐसी हैं जो अपनी हैयत में इतनी फोहश (अश्लील) होती हैं कि इनकी बुराई को जानने के लिए किसी बड़े इल्म की जरूरत नहीं होती। इंसानी फितरत और उसका जमीर ही यह बताने के लिए काफी है कि यह काम इंसान के करने के काबिल नहीं। ऐसी हालत में जो शख़्स किसी फह्हाशी या बेहयाई के काम में मुब्तिला हो वह गोया साबित कर रहा है कि वह उस इब्तिदाई इंसानियत के दर्जे से भी महरूम है जहां से किसी इंसान के इंसान होने का आग़ाज होता है।

हर इंसान की जान मोहतरम (सम्मानीय) है। किसी इंसान को हलाक करना किसी के लिए जाइज नहीं जब तक ख़ालिक के कानून के मुताबिक वह कोई ऐसा जुर्म न करे जिसमें उसकी जान लेना मख़्सूस शर्तों के साथ मुबाह (वैध) हो गया हो। ये बातें इतनी वाजेह हैं कि अक्ल से काम लेने वाला इनकी सदाकत (सत्यता) जानने से महरूम नहीं रह सकता।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٣﴾ وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٤﴾

और यतीम के माल के पास न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और नाप तौल में पूरा इंसाफ करो। हम किसी के जिम्मे वही चीज लाजिम करते हैं जिसकी उसे ताकत हो। और जब बोलो तो इंसाफ की बात बोलो चाहे मामला अपने रिश्तेदार ही का हो। और अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो। ये चीजें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अल्लाह ने हुक्म दिया कि यही मेरी सीधी शाहराह है। पस इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से जुदा कर देंगी। यह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम बचते रहो। (153-154)

यतीम किसी समाज का सबसे कमजोर फर्द होता है। वे तमाम इजाफी असबाब (अतिरिक्त कारक) उसकी जात में नहीं होते जो आम तौर पर किसी के साथ अच्छे सुलूक का प्रेरक बनते

हैं। 'यतीम' के साथ जिम्मेदारी का मामला वही ख़ुद कर सकता है जो ख़ालिस उसूली बुनियाद पर बाकिरदार बना हो न कि फायदा और मस्लेहत (स्वार्थ) की बुनियाद पर। यतीम किसी समाज में हुस्ने सुलूक की आख़िरी अलामत होता है। जो शख़्स यतीम के साथ ख़ैरख़्वाहाना सुलूक करे वह दूसरे लोगों के साथ और ज्यादा ख़ैरख़्वाहाना सुलूक करेगा।

कायनात की हर चीज दूसरी चीज से इस तरह वाबस्ता है कि हर चीज दूसरे को वही देती है जो उसे देना चाहिए और दूसरे से वही चीज लेती है जो उसे लेना चाहिए। यही उसूल इंसान को अपनी जिंदगी में इख़्तियार करना है। इंसान को चाहिए कि जब वह दूसरे इंसान के लिए नापे तो ठीक नापे और जब तौले तो ठीक तौले। ऐसा न करे कि अपने लिए एक पैमाना इस्तेमाल करे और ग़ैर के लिए दूसरा पैमाना।

जिंदगी में बार-बार ऐसे मौके आते हैं कि आदमी को किसी के ख़िलाफ इज़्हारे राय करना होता है। ऐसे मौकों पर ख़ुदा का पसंदीदा तरीका यह है कि आदमी वही बात कहे जो इंसाफ से मेयार पर पूरी उतरने वाली हो। कोई अपना हो या ग़ैर हो। उससे दोस्ती के तअल्लुकात हों या दुश्मनी के तअल्लुकात, ऐसा शख़्स हो जिससे कोई फायदा वाबस्ता है या ऐसा शख़्स हो जिससे कोई फायदा वाबस्ता नहीं, इन तमाम चीजों की परवाह किए बग़ैर आदमी वही कहे जो फ़िलवाकअ दुरुस्त और हक है।

हर आदमी फितरत के अहद में बंधा हुआ है। कोई अहद लिखा हुआ होता है और कोई अहद वह होता है जो लफ्जों में लिखा हुआ नहीं होता मगर आदमी का ईमान, उसकी इंसानियत और उसकी शराफत का तकाजा होता है कि इस मौके पर ऐसा किया जाए। दोनों किस्म के अहदों को पूरा करना हर मोमिन व मुस्लिम का फरीजा है। ये तमाम बातें इंतिहाई वाजेह हैं। आसमानी 'वही' और आदमी की अक्ल उनके बरहक होने की गवाही देते हैं। मगर उनसे वही शख़्स नसीहत पकड़ेगा जो ख़ुद भी नसीहत पकड़ना चाहता हो।

ये अहकाम (151-153) शरीअते इलाही के बुनियादी अहकाम हैं। इन पर उनके सीधे मफहूम के एतबार से अमल करना ख़ुदा की सीधी शाहराह पर चलना है। और अगर तावील और मूशिगाफियों (कुतर्कों) के जरिए उनमें शाख़ें निकाली जाएं और सारा जोर इन शाख़ों पर दिया जाने लगे तो यह इधर-उधर के विभिन्न रास्तों में भटकना है जो कभी आदमी को ख़ुदा तक नहीं पहुँचाते।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ (١٥٤) وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ
فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (١٥٥) أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ
مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ (١٥٦) أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا
الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ

يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ (١٥٧) هَلْ يَنْظُرُونَ
إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ
أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ (١٥٨)

फिर हमने मूसा को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमतें पूरी करने के लिए और हर बात की तफ्सील और हिदायत और रहमत ताकि वे अपने रब के मिलने का यकीन करें। और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली किताब। पस इस पर चलो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहमत की जाए। इसलिए कि तुम यह न कहने लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी और हम उन्हें पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते। पस आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक रोशन दलील और हिदायत और रहमत। तो उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और उनसे मुंह मोड़े। जो लोग हमारी निशानियों से एराज (उपेक्षा) करते हैं हम उन्हें उनके एराज की पादाश में बहुत बुरा अजाब देंगे। ये लोग क्या इसके मुंतजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुंचेगी तो किसी शख़्स को उसका ईमान नफा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो। कहो तुम राह देखो, हम भी राह देख रहे हैं। (155-159)

ख़ुदा की तरफ से जो किताब आती है उसमें अगरचे बहुत सी तफ्सीलात होती हैं मगर बिलआख़िर उसका मक्सद सिर्फ एक होता है यह कि आदमी अपने रब की मुलाकात पर यकीन करे। यानी दुनिया में वह इस तरह जिंदगी गुजारे कि वह अपने हर अमल के लिए अपने आपको ख़ुदा के यहां जवाबदेह समझता हो। उसकी जिंदगी एक जिम्मेदाराना जिंदगी हो न कि आजाद और बेकैद जिंदगी। यही पिछली किताबों का मक्सद था और यही कुरआन का उद्देश्य भी है।

ख़ुदा ने बाकी दुनिया को बराहेरास्त अपने जब्री हुक्म के तहत अपना पाबंद बना रखा है। मगर इंसान को उसने पूरा इख़्तियार दे दिया है। उसने इंसान की हिदायत का यह तरीका रखा है कि रसूल और किताब के जरिए दलाइल की जबान में वह लोगों को हक और बातिल से बाख़बर करता है। दुनिया में ख़ुदा की मर्जी लोगों के सामने दलील की सूरत में जाहिर होती है। यहां दलील को मानना ख़ुदा को मानना है और दलील को झुठलाना ख़ुदा को झुठलाना।

कियामत का धमाका होने के बाद तमाम छुपी हुई हकीकतें लोगों के सामने आ जाएंगी।

उस वक्त हर आदमी ख़ुदा और उसकी बातों को मानने पर मजबूर होगा। मगर उस वक्त के मानने की कोई कीमत नहीं। मानना वही मानना है जो हालते ग़ैब में मानना हो। ईमान दरअस्ल यह है कि देखने के बाद आदमी जो कुछ मानने पर मजबूर होगा उसे वह देखे बग़ैर मान ले। जो शख़्स देखकर माने उसने गोया माना ही नहीं।

जो लोग आज इख़्तियार की हालत में अपने को ख़ुदा का पाबंद बना लें उनके लिए ख़ुदा के यहां जन्नत है। इसके बरअक्स जो लोग कियामत के आने के बाद ख़ुदा के आगे झुकेंगे उनका झुकना सिर्फ उनके जुर्म को और भी ज़्यादा साबित करने के हममअना होगा। इसका मतलब यह होगा कि उन्होंने, ख़ुद अपने एतराफ के मुताबिक, एक मानने वाली बात को न माना, उन्होंने एक किए जाने वाले काम को न किया।

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٦٠﴾ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

जिन्होंने अपने दीन में राहें निकालीं और गिरोह-गिरोह बन गए तुम्हें उनसे कुछ सरोकार नहीं। उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर वही उन्हें बता देगा जो वे करते थे। जो शख़्स नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए उसका दस गुना है। और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो उसे बस उसके बराबर बदला मिलेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (160-161)

दीन यह है कि आदमी एक ख़ुदा के सिवा किसी को अपनी जिंदगी में बरतर मकाम न दे। वह हक्शनासी (दायित्व बोध) की बुनियाद पर तअल्लुक़ात क़ायम करे न कि मफ़ाद (स्वार्थ) की बुनियाद पर, जिसकी पहली अलामत वालिदेन हैं। वह रिज़्क को ख़ुदा का अतिया समझे और ख़ुदाई निजाम में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) न करे, इस मामले में आदमी की गुमराही उसे औलाद के क़त्ल और तहदीदे नस्ल (परिवार नियोजन) की हिमाक़त तक ले जाती है। वह फ़ोहश और बेहयाई के कामों से बचे ताकि बुराई के बारे में उसके दिल की हस्सासियत जिंदा रहे। वह कमजोर का इस्तहसाल (शोषण) न करे जिसका करीबी इम्तेहान आदमी के लिए यतीम की सूरत में होता है। वह हुक़ूक़ की अदायगी और लेन देन में तराजू की तरह बिल्कुल ठीक-ठीक रहे। वह अपनी जबान का इस्तेमाल हमेशा हक के मुताबिक करे। वह इस एहसास के साथ जिंदगी गुजारे कि हर हाल में वह अहदे ख़ुदावंदी में बंधा हुआ है, वह किसी भी वक्त ख़ुदाई अहद की जिम्मेदारियों से आजाद नहीं है। यही किसी आदमी के लिए ख़ुदा की पसंद के मुताबिक जिंदगी गुजारने का सीधा रास्ता है। आदमी को चाहिए कि वह दाएं बाएं भटके बग़ैर इस सीधे रास्ते पर हमेशा क़ायम रहे।

ऊपर जो दस अहकाम (151-153) बयान हुए हैं वे सब सादा फितरी अहकाम हैं। हर

आदमी की अक्ल उनके सच्चे होने की गवाही देती है। अगर सिर्फ इन चीजों पर जोर दिया जाए तो कभी इख़्तेलाफ और फ़िरक़ाबंदी न हो। मगर जब क़ौमों में ज़वाल (पतन) आता है तो उनमें ऐसे रहनुमा पैदा होते हैं जो इन सादा अहकाम में तरह-तरह की ग़ैर फितरी शिक़ें निकालते हैं। यही वह चीज है जो दीनी इत्तेहाद को टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

तौहीद में अगर यह बहस छेड़ी जाए कि ख़ुदा जिस्म रखता है या वह बग़ैर जिस्म है। यतीम के मामले में मूशिगाफियां (कुतर्क) की जाएं कि यतीम होने की शराइत क्या हैं। या यह नुकता निकाला जाए कि इन ख़ुदाई अहकाम पर उस वक्त तक अमल नहीं हो सकता जब तक हुकूमत पर कब्जा न हो। इसलिए सबसे पहला काम 'ग़ैर इस्लामी' हुकूमत को बदलना है। इस किस्म की बहसें अगर शुरू कर दी जाएं तो इनकी कोई हद न होगी। और उन पर उमूमी इत्तेफ़ाक हासिल करना नामुमकिन हो जाएगा। इसके बाद मुख़्तलिफ फ़िक्री (वैचारिक) हलक़े बनेंगे। अलग-अलग फ़िरक़े और जमाअतें क़ायम होंगी। आपसी इत्तेफ़ाक आपस में बिखराव की सूरत इख़्तियार कर लेगा।

इस सादा और फितरी दीन पर अपनी सारी तवज्जोह लगाना सबसे बड़ी नेकी है। मगर इसके लिए आदमी को नफ्स से लड़ना पड़ता है। माहौल की नासाजगारी के बावजूद सब्र और क़ुर्बानी का सुबूत देते हुए उस पर जमे रहना होता है। यह एक बड़ा पुरमशक्कत अमल है इसलिए इसका बदला भी ख़ुदा के यहां कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है। जो लोग बुराई करते हैं, जो ख़ुदा की दुनिया में ख़ुदा के मुकर्रर रास्ते के सिवा दूसरे रास्तों पर चलते हैं वे अगरचे बहुत बड़ा जुर्म करते हैं। ताहम ख़ुदा उनके ख़िलाफ इंतकामी कार्रवाई नहीं करता। वह उन्हें उतनी ही सजा देता है जितना उन्होंने जुर्म किया है।

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦٢﴾ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٣﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٤﴾ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٦﴾

कहो मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता बता दिया है। सही दीने इब्राहीम की मिल्लत की तरफ जो यकसू थे और मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में से न थे। कहो मेरी नमाज और मेरी

कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। कोई उसका शरीक नहीं। और मुझे इसी का हुक्म मिला है और मैं सबसे पहले फरमांबरदार हूं। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूं जबकि वही हर चीज का रब है और जो शख़्स भी कोई कमाई करता है वह उसी पर रहता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ तुम्हारा लौटना है। पस वह तुम्हें बता देगा वह चीज जिसमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) करते थे। और वही है जिसने तुम्हें जमीन में एक दूसरे का जानशीन बनाया और तुममें से एक का रुत्बा दूसरे पर बुलन्द किया। ताकि वह आजमाए तुम्हें अपने दिए हुए में। तुम्हारा रब जल्द सजा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। (162-166)

कुरआन की सूरत में ख़ुदा ने अपना वह बेआमेज (विशुद्ध) दीन नाजिल कर दिया है जो उसने हजरत इब्राहीम और दूसरे पैग़म्बरों को दिया था। अब जो शख़्स ख़ुदा की रहमत और नुसरत में हिस्सेदार बनना चाहता हो वह इस दीन को पकड़ ले, वह अपनी इबादत को ख़ुदा के लिए ख़ास कर दे। वह ख़ुदा से कुर्बानी की सतह पर तअल्लुक कायम करे। वह जिए तो ख़ुदा के लिए जिए और उसे मौत आए तो इस हाल में आए कि वह हमहतन ख़ुदा का बंदा बना हुआ हो। अजीम कायनात अपने तमाम अज्जा के साथ इताअते ख़ुदावंदी के इसी दीन पर कायम है। फिर इंसान इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता कैसे इख़्तियार कर सकता है। ख़ुदा की इताअत की दुनिया में ख़ुदा की सरकशी का तरीका इख़्तियार करना किसी के लिए कामयाबी का सबब किस तरह बन सकता है। यह मामला हर शख़्स का अपना मामला है। कोई न किसी के इनाम में शरीक हो सकता और न कोई किसी की सजा में। आदमी को चाहिए कि इस मामले में वह उसी तरह संजीदा हो जिस तरह दुनिया में कोई मसला किसी का जाती मसला हो तो वह उसमें आख़िरी हद तक संजीदा हो जाता है।

दुनिया का निजाम यह है कि यहां एक शख़्स जाता है और दूसरा उसकी जगह आता है। एक कौम पीछे हटा दी जाती है और दूसरी कौम उसके बजाए जमीन के जराए व वसाइल (संसाधनों) पर कब्जा कर लेती है। यह वाक्या बार-बार याद दिलाता है कि यहां किसी का इक्तेदार दायमी (स्थाई) नहीं। मगर इंसान का हाल यह है कि जब किसी को जमीन पर मौका मिलता है तो वह गुजरे हुए लोगों के अंजाम को भूल जाता है। वह अपने जुल्म और सरकशी को जाइज साबित करने के लिए तरह-तरह के दलाइल गढ़ लेता है। मगर जब ख़ुदा हकीकतों को खोल देगा तो आदमी देखेगा कि उसकी उन बातों की कोई कीमत न थी जिन्हें वह अपने मौकिफ के जवाज (औचित्य) के लिए मज़बूत दलील समझे हुए था।

दुनिया में आदमी की सरकशी की वजह अक्सर यह होती है कि वह दुनिया की चीजों को अपने हक में ख़ुदा का इनाम समझ लेता है। हालांकि दुनिया में जो कुछ किसी को मिलता है वह सिर्फ बतौर आजमाइश है न कि बतौर इनाम। दुनिया की चीजों को आदमी अगर इनाम समझे तो उसके अंदर फख़्र पैदा होगा और अगर वह उन्हें आजमाइश समझे तो उसके अंदर इज्ज पैदा होगा। फख़्र की नफ्सियात ढिठाई पैदा करती है और इज्ज की नफ्सियात इताअत।

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَتَانِ وَّسِتُّ اٰيَاتٍ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَفِيْهَا اَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

الٓمّٓصٓ ۚ۝١ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآىِٕلُوْنَ ۝٤ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٥ فَلَنَسْــَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْــَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآىِٕبِيْنَ ۝٧ وَالْوَزْنُ يَوْمَىِٕذِ ِۨ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٨ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝٩

आयतें-206 **सूरह-7. अल-आराफ** रुकूअ-24

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम० साद०। यह किताब है जो तुम्हारी तरफ उतारी गई है। पस तुम्हारा दिल इस वजह से तंग न हो ताकि तुम इसके जरिए से लोगों को डराओ, और वह ईमान वालों के लिए याददिहानी है। जो उतरा है तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ से उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो। तुम बहुत कम नसीहत मानते हो। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया। उन पर हमारा अजाब रात को आ पहुंचा या दोपहर को जबकि वे आराम कर रहे थे। फिर जब हमारा अजाब उन पर आया तो वे इसके सिवा कुछ न कह सके कि वाकई हम जालिम थे। पस हमें जरूर पूछना है उन लोगों से जिनके पास रसूल भेजे गए और हमें जरूरी पूछना है रसूलों से। फिर हम उनके सामने सब बयान कर देंगे इल्म के साथ और हम कहीं ग़ायब न थे। उस दिन वजनदार सिर्फ हक होगा। पस जिनकी तोलें भारी होंगी वही लोग कामयाब ठहरेंगे और जिनकी तौलें हल्की होंगी वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे हमारी निशानियों के साथ नाइंसाफी करते थे। (1-9)

ख़ुदा की किताब अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से एक नसीहत है। मगर वह अमलन सिर्फ उन थोड़े से लोगों के लिए नसीहत बनती है जो अपनी फितरी सलाहियत को जिंदा किए हुए हों।

बाकी लोगों के लिए वह सिर्फ उस बुरे अंजाम से डराने के हममअना होकर रह जाती है जिसकी तरफ वे अपनी सरकशी की वजह से बढ़ रहे हैं। दाओी यह देखकर तड़पता है कि जो चीज मुझे कामिल सदाकत के रूप में दिखाई दे रही है उसे बेशतर लोग बातिल समझ कर ठुकरा रहे हैं। जो चीज मेरी नजर में पहाड़ से भी ज्यादा अहम है उसके साथ लोग ऐसी बेपरवाही का सुलूक कर रहे हैं जैसे उसकी कुछ हकीकत ही न हो, जैसे वह बिल्कुल बेअस्ल हो।

यह दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां हर आदमी के लिए मौका है कि अगर वह किसी बात को न मानना चाहे तो वह उसे न माने, यहां तक कि वह उसे रद्द करने के लिए ख़ूबसूरत अल्फ़ाज भी पा ले। मगर यह सूरतेहाल बिल्कुल आरज़ी है। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही अचानक खुल जाएगा कि दाओी की बात लोहे और पत्थर से भी ज्यादा साबितशुदा थी। यह सिर्फ मुख़ालिफ़ीन का तअस्सुब और उनकी अनानियत (अहंकार) थी जिसने उन्हें दलील को दलील की सूरत में देखने न दिया। उस वक्त खुल जाएगा कि हक के दाओी की बातों की रद्द में जो दलीलें वे पेश करते थे वे महज धांधली थी न कि हकीकी मअनों में कोई इस्तदलाल (तर्क)।

दुनिया में जो चीजें किसी को बावजन बनाती हैं वे ये कि उसके गिर्द माद्दी रौनकें जमा हों। वह अल्फ़ाज के दरिया बहाने का फन जानता हो। उसके साथ अवाम की भीड़ इकट्ठा हो गई हो। क्योंकि हक के दाओी के साथ आम तौर पर ये असबाब जमा नहीं होते इसलिए दुनिया के लोगों की नजर में उसकी बात बेवजन और उसके मुख़ालिफ़ों की बात वजनदार बन जाती है। मगर कियामत जब बनावटी पर्दों को फाड़ेगी तो सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स हो जाएगी। अब सारा वजन हक की तरफ होगा और नाहक बिल्कुल बेदलील और बेकीमत होकर रह जाएगा।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ڰ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَاۗىِٕلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

और हमने तुम्हें जमीन मे जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें जिंदगी का सामान फराहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने तुम्हारी सूरत बनाई। फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो। पस उन्होंने सज्दा किया। मगर इब्लीस (शैतान) सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। ख़ुदा ने कहा कि तुझे किस चीज ने सज्दा करने से रोका जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था। इब्लीस ने कहा कि मैं इससे बेहतर हूं। तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से। ख़ुदा ने कहा कि तू उतर यहां से। तुझे यह हक नहीं कि तू इसमें घमंड करे। पस निकल जा, यकीनन तू जलील है। इब्लीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए तू मुझे मोहलत दे जबकि सब लोग उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा कि तुझे मोहलत दी गई। इब्लीस ने कहा कि चूंकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी लोगों के लिए तेरी सीधी राह पर बैठूंगा। फिर उन पर आऊंगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से, और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुजार न पाएगा। ख़ुदा ने कहा कि निकल यहां से जलील और ठुकराया हुआ। जो कोई उनमें से तेरी राह पर चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा। (10-18)

ख़ुदा ने इंसान को इस दुनिया में जो कुछ दिया है इसलिए दिया है कि उसका नफ्सियाती जवाब वह शुक्र की सूरत में पेश करे। मगर यही वह चीज है जिसे आदमी अपने रब के सामने पेश नहीं करता। इसकी वजह यह है कि शैतान उसके अंदर दूसरे-दूसरे जज्बात उभार कर उसे शुक्र की नफ्सियात से दूर कर देता है।

आदम और इब्लीस के किस्से से मालूम होता है कि दुनिया में हिदायत और गुमराही का मअरका कहां बरपा है। यह मअरका उन मौकों पर बरपा है जहां आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफ्सियात जागती है। इम्तेहान की इस दुनिया में बार-बार ऐसा होता है कि एक आदमी दूसरे आदमी से ऊपर उठ जाता है। कभी कोई शख़्स दौलत व इज्जत में दूसरे से ज्यादा हिस्सा पा लेता है। कभी दो आदमियों के दर्मियान ऐसा मामला पड़ता है कि एक शख़्स के लिए दूसरे को उसका जाइज हक देना अपने को नीचे गिराने के हममअना नजर आता है। कभी किसी शख़्स की जबान से ख़ुदा एक सच्चाई का एलान कराता है और वह उन लोगों को अपने से बरतर दिखाई देने लगता है जो उस सच्चाई तक पहुंचने में नाकाम रहे थे। ऐसे मौकों पर शैतान आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफ्सियात जगा देता है। 'मैं बेहतर हूं' के जज्बे से मग़लूब होकर वह दूसरे का एतराफ करने के लिए तैयार नहीं होता। यही ख़ुदा की नजर में शैतान के रास्ते पर चलना है। जिस शख़्स ने ऐसे मौकों पर हसद और घमंड का तरीका इख़्तियार किया उसने अपने को जहन्नमी अंजाम का मुस्तहिक बना लिया जो शैतान के लिए मुकद्दर है और जिसने ऐसे मौको पर शैतान के पैदा किए हुए जज्बात को अपने अंदर कुचल डाला उसने इस बात का सुबूत दिया कि वह इस काबिल है कि उसे जन्नत के बाग़ों में बसाया जाए।

जो कुछ किसी को मिलता है ख़ुदा की तरफ से मिलता है। इसलिए किसी की फजीलत

का एतराफ दरअस्ल ख़ुदा की तक़्सीम के बरहक़ होने का एतराफ है और उसकी फजीलत को न मानना ख़ुदा की तक़्सीम को न मानना है। इसी तरह जब एक शख़्स किसी हक की बिना पर दूसरे के आगे झुकता है तो वह किसी आदमी के आगे नहीं झुकता बल्कि ख़ुदा के आगे झुकता है। क्योंकि ऐसा वह ख़ुदा के हुक्म की बिना पर कर रहा है न कि उस आदमी के जाती फज्ल की बिना पर।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾

और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहां से चाहो। मगर उस दरख़्त के पास न जाना वर्ना तुम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि वह खोल दे उनकी वह शर्म की जगहें जो उनसे छुपाई गई थीं। उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें इस दरख़्त से सिर्फ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फरिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की जिंदगी हासिल हो जाए। और उसने कसम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हूं। (19-21)

जन्नत अपनी तमाम वुस्अतों के साथ आदम और उनकी बीवी के लिए खुली हुई थी। उसमें तरह-तरह की चीजें थीं और ख़ुदा की तरफ से उन्हें आजादी थी कि उन्हें जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें। बेशुमार जाइज चीजों के दर्मियान सिर्फ एक चीज के इस्तेमाल से रोक दिया था। शैतान ने उसी ममनूआ (निषिद्ध) मकाम से उन पर हमला किया। उसने वसवसाअंदाजियों के जरिए सिखाया कि जिस चीज से तुम्हें रोका गया है वही जन्नत की अहमतरीन चीज है। उसी में तक़द्दुस (पवित्रता) और अबदियत का सारा राज छुपा हुआ है। आदम और उनकी बीवी इब्लीस की मुसलसल तल्कीन से मुतास्सिर हो गए। और बिलआख़िर ममनूआ दरख़्त का फल खा लिया। मगर जब उन्होंने ऐसा किया तो नतीजा उनकी उम्मीदों के बिल्कुल बरअक्स निकला। उनकी इस ख़िलाफ़वर्जी ने ख़ुदा का लिबासे हिफ़ाज़त उनके जिस्म से उतार दिया। वह उस दुनिया में बिल्कुल बेयारोमददगार होकर रह गए जहां इससे पहले उन्हें तरह-तरह की सुहूलत और हिफ़ाजत हासिल थी।

इससे मालूम हुआ कि शैतान का वह ख़ास हरबा क्या है जिससे वह इंसान को बहका कर ख़ुदा की रहमत व नुसरत (मदद) से दूर कर देता है। वह है हलाल रिज़्क के फैले हुए मैदान को आदमी की नजर में कमतर करके दिखाना और जो चन्द चीजें हराम हैं उन्हें ख़ूबसूरत

तौर पर पेश करके यकीन दिलाना कि तमाम बड़े-बड़े फ़ायदों और मस्लेहतों का राज बस इन्हीं चन्द चीजों में छुपा हुआ है।

शैतान अपना यह काम हर एक के साथ उसके अपने जौक और हालात के एतबार से करता है। किसी को तमाम कीमती ग़िजाओं से बेरग़बत करके यह सिखाता है कि शानदार तंदरुस्ती हासिल करना चाहते हो तो शराब पियो। कहीं लाखों बेरोजगार मर्द काम करने के लिए मौजूद होंगे मगर वह तर्ग़ीब देगा कि अगर तरक्की की मंजिल तक जल्द पहुंचना चाहते हो तो औरतों को घर से बाहर लाकर उन्हें मुख़्तलिफ तमद्दुनी (सांस्कृतिक) शोबों में सरगर्म कर दो। किसी के पास अपने मुख़ालिफ को जेर करने का यह काबिले अमल तरीका मौजूद होगा कि वह अपने आपको मुस्तहकम (सुदृढ़) बनाए मगर शैतान उसके कान में डालेगा कि तुम्हारे लिए अपने मुख़ालिफ को शिकस्त देने का सबसे ज्यादा कारगर तरीका यह है कि उसके ख़िलाफ तख़्रीबी (विध्वंसक) कार्रवाइयां शुरू कर दो। किसी के लिए 'अपनी तामीर आप' के मैदान में काम करने के लिए बेशुमार मौके खुले हुए होंगे मगर वह सिखाएगा कि दूसरों के ख़िलाफ एहतेजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालबे का तूफ़ान बरपा करना अपने को कामयाबी की तरफ ले जाने का सबसे ज्यादा करीबी रास्ता है। किसी के सामने हुकूमते वक्त से टकराव किए बग़ैर बेशुमार दीनी काम करने के लिए मौजूद होंगे मगर वह उसे इस ग़लतफहमी में डालेगा कि ग़ैर इस्लामी हुक्मरानों को अगर किसी न किसी तरह फांसी पर चढ़ा दिया जाए या उन्हें गोली मार कर ख़त्म कर दिया जाए तो इसके बाद आनन-फानन इस्लाम का मुकम्मल निजाम सारे मुल्क में कायम हो जाएगा, वग़ैरह।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

पस मायल कर लिया उन्हें फरेब से। फिर जब दोनों ने दरख़्त का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं। और वे अपने को बाग़ के पत्तों से ढांकने लगे और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस दरख़्त (वृक्ष) से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें माफ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे। ख़ुदा ने कहा, उत्तरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन

होगे, और तुम्हारे लिए जमीन में एक ख़ास मुद्दत तक ठहरना और नफा उठाना है। ख़ुदा ने कहा, उसी में तुम जियोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (22-25)

आदम और शैतान दोनों एक दूसरे के दुश्मन की हैसियत से जमीन पर भेजे गए हैं। अब कियामत तक दोनों के दर्मियान यही जंग जारी है। शैतान की मुसलसल कोशिश यह है कि वह इंसान को अपने रास्ते पर लाए और जिस तरह वह ख़ुद ख़ुदा की रहमत से महरूम हुआ है इंसान को भी ख़ुदा की रहमत से महरूम कर दे। इसके मुकाबले में इंसान को यह करना है कि वह शैतान के मंसूबे को नाकाम बना दे। वह शैतान की पुकार को नजरअंदाज करके ख़ुदा की पुकार की तरफ दौड़े।

आदम और शैतान की यह जंग अमलन इंसानों में दो गिरोह बन जाने की सूरत में जाहिर होती है। कुछ लोग शैतान की तर्ग़ीबात (प्रेरणा) का शिकार होकर उसकी सफ में शामिल हो जाते हैं। और कुछ लोग ख़ुदा की आवाज पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कह कर यह ख़तरा मोल लेते हैं कि शैतान के तमाम साथी उसे बेइज्जत करने और नाकाम बनाने के लिए हर किस्म की तदबीरें करना शुरू कर दें। हर दौर में यह देखा गया है कि सच्चे हकपरस्त जो हमेशा कम तादाद में होते हैं, लोगों की सख़्ततरीन अदावतों का शिकार रहते हैं। इसकी वजह यही शैतान की दुश्मनाना कार्रवाइयां हैं। वह लोगों को सच्चे हकपरस्त आदमी के ख़िलाफ भड़का देता है। वह मुख़्तलिफ तरीकों से लोगों के दिल में उसके ख़िलाफ नफरत की आग भरता है। चुनांचे वे शैतान का आलाकार बनकर ऐसे आदमी को सताना शुरू कर देते हैं।

शैतान का अस्ल जुर्म एतराफ न करना था। शैतान की यह कोशिश होती है कि हर आदमी के अंदर यही एतराफ न करने का मिजाज पैदा कर दे। वह छोटे को भड़काता है कि वह अपने बड़े का लिहाज न करे। मामलात के दौरान जब एक शख़्स के जिम्मे दूसरे का कोई हक आता है तो वह उसे सिखाता है कि वह हकदार का हक अदा न करे। कोई ख़ुदा का बंदा सच्चाई का पैग़ाम लेकर उठता है तो लोगों के दिलों में तरह-तरह के शुबहात डाल कर उन्हें आमादा करता है कि वे उसकी बात न मानें। दो फरीकों (पक्षों) के दर्मियान निजाअ (विवाद) हो और एक फरीक अपने हालात के एतबार से कुछ देने पर राजी हो जाए तो शैतान दूसरे फरीक के जेहन में यह डालता है कि उसकी पेशकश को कुबूल न करो, और इतना ज्यादा का मुतालबा करो जो वह न दे सकता हो। ताकि जंग व फसाद मुस्तकिल तौर पर जारी रहे।

इस तरह शैतान के बहकावों से हर जगह लोगों के दर्मियान दुश्मनियां जारी रहती हैं। इंसानों में दो गिरोह बन जाते हैं और उनमें ऐसा टकराव शुरू होता है जो कभी ख़त्म नहीं होता।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ

اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

ऐ बनी आदम, हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे बदन के काबिले शर्म हिस्सों को ढके और जीनत (साज-सज्जा) भी। और तक्वा (ईश-परायणता) का लिबास इससे भी बेहतर है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग ग़ौर करें। ऐ आदमी की औलाद, शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके लिबास उतरवाए ताकि उन्हें उनके सामने बेपर्दा कर दे। वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते। (26-27)

दुनिया का निजाम ख़ुदा ने इस तरह बनाया है कि इसकी जाहिरी चीजें इसकी बातिनी हकीकतों की अलामत हैं। जाहिरी चीजों पर ग़ौर करके आदमी छुपी हुई हकीकतों तक पहुंच सकता है। इसी किस्म की एक चीज लिबास है।

ख़ुदा ने इंसान को लिबास दिया जो उसकी हिफाजत करता है और इसी के साथ उसके हुस्न व वकार को बढ़ाने का जरिया भी है। यह इस बात का इशारा है कि आदमी के रूहानी वजूद के लिए भी इसी तरह एक लिबास जरूरी है, यह लिबास तक्वा है। तक्वा आदमी का मअनवी (अर्थपूर्ण) लिबास है। जो एक तरफ उसे शैतान के हमलों से बचाता है और दूसरी तरफ उसके बातिन (भीतर) को संवार कर उसे जन्नत की लतीफ व नफीस दुनिया में बसाने के काबिल बनाता है। यह तक्वा का लिबास क्या है। यह है अल्लाह का ख़ौफ, हक का एतराफ, अपने लिए और दूसरों के लिए एक मेयार रखना, अपने को बंदा समझना, तवाजोअ (विनम्रता) को अपना शिआर बनाना, दुनिया में गुम होने के बजाए आख़िरत (परलोक) की तरफ मुतवज्जह रहना। आदमी जब इन चीजों को अपनाए तो वह अपने अंदरूनी वजूद को ढकता है और अगर वह इसके ख़िलाफ रवैया इख़्तियार करता है तो वह अपने अंदरून को नंगा कर लेता है। जाहिरी जिस्म को कपड़े का बना हुआ लिबास ढांकता है और बातिनी (भीतरी) जिस्म को तक्वा (परहेजगारी, ईश-परायणता) का लिबास।

आदमी को गुमराह करने के लिए शैतान का तरीका यह है कि वह उसे बहकाता है। वह ख़ुदा के ममनूआ दरख़्त को हर किस्म के ख़ैर का सरचश्मा (स्रोत) बताता है। वह ऐसे मासूम रास्तों से उसकी तरफ आता है कि आदमी का गुमान भी नहीं जाता कि उधर से उसकी तरफ गुमराही आ रही होगी। शैतान आदमी के तमाम नाजुक मकामात को जानता है और उन्हीं नाजुक मकामात से वह उस पर हमलाआवर होता है। कभी एक बेहकीकत नजरिये को ख़ूबसूरत अल्फाज में बयान करता है। कभी एक जुज़ई (आंशिक) हकीकत को कुल्ली हकीकत के रूप में उसके सामने लाता है। कभी मामूली चीजों में फायदों का ख़जाना बताकर सारे लोगों को उसकी तरफ दौड़ा देता है। कभी एक बेफायदा हरकत में तरक्की का राज

बताता है। कभी एक तख़रीबी (विध्वंसक) अमल को तामीर के रूप में पेश करता है।

शैतान किन लोगों को बहकाने में कामयाब होता है। वह उन लोगों पर कामयाब होता है जो इम्तेहान के मौकों पर ईमान का सुबूत नहीं दे पाते। जो ख़ुदा की निशानियों पर ग़ौर नहीं करते। जो दलाइल (तर्कों) की जबान में बात को समझने के लिए तैयार नहीं होते। जिन्हें अपने जाती रुज्हान के मुक़ाबले में हक के तकाजे को तरजीह देना गवारा नहीं होता। जिन्हें ऐसी सच्चाई, सच्चाई नजर नहीं आती जिसमें उनके फ़ायदों और मस्लेहतों की रिआयत शामिल न हो। जिन्हें वह हक पसंद नहीं आता जो उनकी जात को नीचे करके ख़ुद उनके मुक़ाबले में ऊंचा होना चाहता हो।

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۖ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾ فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

और जब वे कोई फोहश (खुली बुराई) करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और ख़ुदा ने हमें इसी का हुक्म दिया है। कहो, अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के जिम्मे वह बात लगाते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। कहो कि मेरे रब ने किस्त (न्याय) का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज के वक्त अपना रुख़ सीधा रखो। और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। जिस तरह उसने तुम्हें पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे। एक गिरोह को उसने राह दिखा दी और एक गिरोह है कि उस पर गुमराही साबित हो चुकी। उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक बनाया और गुमान यह रखते हैं कि वे हिदायत पर हैं। (28-30)

कदीम (प्राचीन) अरब में लोग नंगे होकर काबा का तवाफ करते और इसकी हिमायत में यह कहते कि ख़ुदा की इबादत दुनिया की गंदगियों से पाक होकर फितरी हालत में करना चाहिए। हालांकि नंगापन ऐसी खुली हुई बुराई है जिसका बुरा होना अक्लेआम से मालूम हो सकता है। इसी तरह आदमी यह अकीदा कायम कर लेता है कि बेअमली और सरकशी के बावजूद सिफ़ारिशों की बुनियाद पर ख़ुदा उसे इनामात से नवाजेगा हालांकि वह अपने सरकश ग़ुलामों के मामले में महज किसी के कहने से ऐसा नहीं कर सकता। मामूली मामूली नाक़ाबिलेफ़हम आमाल जिनसे दुनिया में एक घर भी नहीं बन सकता उनसे यह उम्मीद कर

लेता है कि वे आख़िरत में उसके लिए आलीशान महल तामीर कर देंगे। अल्फ़ाज का शोर व ग़ुल जिससे दुनिया में एक दरख़्त भी नहीं उगता उनके मुतअल्लिक यह ख़ुशगुमानी कायम कर लेता है कि वे आख़िरत में उसके लिए जन्नत के बाग़ उगा रहे हैं।

किस्त से मुराद वह मुंसिफ़ाना रविश है जो हर नाप में पूरी उतरे, वह ऐन वही हो जो कि होना चाहिए। इबादत इंसान की एक फितरी ख़्वाहिश है। वह किसी को सबसे ऊंचा मान कर उसके आगे अपने को डाल देना चाहता है। इस मामले में किस्त यह होगा कि आदमी सिर्फ़ ख़ुदा का इबादतगुजार बने जो उसका ख़ालिक और रब है। इंसान किसी को यह मकाम देना चाहता है कि वह उसके लिए एतमाद की बुनियाद हो। इस मामले में किस्त यह होगा कि आदमी ख़ुदा को अपनी जिंदगी में एतमाद की बुनियाद बनाए जो सारी ताकतों का मालिक है। इसी तरह मौत के बाद एक और जिंदगी को मानना ऐन किस्त है। क्योंकि आदमी जब पैदा होता है तो वह अदम (अस्तित्वहीनता) से वजूद की सूरत इख़्तियार करता है। इसलिए मौत के बाद दुबारा पैदा होने को मानना ऐन उसी हकीकत को मानना है जो अव्वल पैदाइश के वक्त हर आदमी के साथ पेश आ चुकी है।

हक के दाओ का इंकार करने के लिए आदमी कदीम बुज़ुर्गों का सहारा लेता है। कदीम बुज़ुर्ग वे लोग होते हैं जिनकी अज्मत तारीख़ी तौर पर कायम हो चुकी है। हर आदमी की नजर में उनका हक पर होना मुसल्लमा अम्र (वास्तविकता) बना हुआ होता है। दूसरी तरफ सामने का हक का दाओ एक नया आदमी होता है जिसके साथ अभी तारीख़ की तस्दीक जमा नहीं हुई है। कदीम बुज़ुर्ग को आदमी उसकी तारीख़ के साथ देख रहा होता है और नए दाओ को उसकी तारीख़ के बग़ैर। वह कदीम बुज़ुर्गों के नाम पर हक के दाओ का इंकार कर देता है और समझता है कि वह ऐन हिदायत पर है। मगर इस तरह की ग़लतफ़हमी किसी के लिए ख़ुदा के यहां उज़्र (विवशता) नहीं बन सकती। यह ख़ुदा के नाम पर शैतान की पैरवी है न कि हक़ीक़तन ख़ुदा की पैरवी।

يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾ قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

ऐ औलादे आदम, हर नमाज के वक्त अपना लिबास पहनो और खाओ पियो। और हद से तजावुज (सीमा उल्लंघन) न करो। बेशक अल्लाह हद से तजावुज करने वालों को पसंद नहीं करता। कहो अल्लाह की जीनत (साज-सज्जा) को किसने हराम किया जो उसने अपने बंदों के लिए निकाला था और खाने की पाक चीजों को। कहो वे दुनिया

की जिंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आख़िरत (परलोक) में तो वे ख़ास उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। कहो मेरे रब ने तो बस फोहश (अश्लील) बातों को हराम ठहराया है वे खुली हों या छुपी। और गुनाह को और नाहक की ज्यादती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के जिम्मे ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते। (31-33)

अरब के कुछ कबीले नंगे होकर काबे का तवाफ करते थे और उसे बड़ी कुरबत का जरिया समझते थे। इसी तरह जाहिलियत के जमाने में कुछ लोग ऐसा करते कि जब वे हज के लिए निकलते तो कुछ मुतअय्यन चीजें मसलन बकरी का दूध या गोश्त इस्तेमाल करना छोड़ देते और यह ख़्याल करते कि वे परहेजगारी का कोई बड़ा अमल कर रहे हैं। यह गुमराही की वह किस्म है जिसमें हर जमाने के लोग मुब्तिला रहे हैं। ऐसे अफराद अपनी हकीकी और मुस्तकिल जिंदगी में दीन के तकाजों को शामिल नहीं करते। अलबत्ता चन्द मौकों पर कुछ ग़ैर मुतअल्लिक किस्म के बेफायदा आमाल का ख़ुसूसी एहतिमाम करके यह मुजाहिरा करते हैं कि वे ख़ुदा के दीन पर मामूली जुज़यात (अंशों) की हद तक अमल कर रहे हैं। वे ख़ुदा की मर्जियात पर कामिल अदायगी की हद तक कायम हैं।

इंसान के बारे में अल्लाह की अस्ल मर्जी तो यह है कि आदमी इसराफ (हद से बढ़ने) से बचे, वह ख़ुदा की मुकर्रर की हुई हदों से तजावुज न करे। वह हलाल को हराम न करे और ख़ुदा की हराम की हुई चीजों को अपने लिए हलाल न समझ ले। वह फोहश कामों से अपने को दूर रखे। वह उन बुराइयों से बचे जिनका बुरा होना अक्लेआम से साबित होता है। वह बगावत की रविश को छोड़ दे। जब भी उसके सामने कोई हक आए तो हर दूसरी चीज को नजरअंदाज करके वह हक को इख़्तियार कर ले। वह शिर्क से अपने आपको पूरी तरह पाक करे, अल्लाह के सिवा किसी से वह बरतर तअल्लुक कायम न करे जो सिर्फ एक ख़ुदा का हक है। वह ऐसा न करे कि अपनी पसंद का एक तरीका इख़्तियार करे और उसे बिना दलील ख़ुदा की तरफ मंसूब कर दे, अपने जाती दीन को ख़ुदा का दीन कहने लगे। वह पूरी तरह ख़ुदा का बंदा बनकर रहे, ऐसी कोई रविश इख़्तियार न करे जो बंदा होने के एतबार से उसके लिए दुरुस्त न हो।

आख़िरत में किसी को जो नेमतें मिलेंगी वे बतौर इनाम मिलेंगी। इसलिए वे सिर्फ उन ख़ुदा के बंदों के लिए होंगी जिनके लिए ख़ुदा जन्नत में दाख़िले का फैसला करेगा। मगर दुनिया में किसी को जो नेमतें मिलती हैं वह महदूद मुद्दत के लिए बतौर आजमाइश मिलती हैं। इसलिए यहां की नेमतों में हर एक को उसके इम्तेहान के पर्चे के बकद्र हिस्सा मिल जाता है। इस इम्तेहान में पूरा उतरने का तरीका यह नहीं है कि आदमी ख़ुद इम्तेहान के सामान से दूरी इख़्तियार कर ले। बल्कि सही तरीका यह है कि उन्हें मुकर्रर की हुई हदों के मुताबिक इस्तेमाल करे। वह उनके मिलने पर शुक्र का जवाब पेश करे न कि बेनियाजी और ढिठाई का।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٤﴾
يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتِي فَمَنِ ٱتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾ وَٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا وَٱسْتَكْبَرُوا۟ عَنْهَآ
أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِهِۦٓ أُو۟لَٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم مِّنَ ٱلْكِتَٰبِ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمْ
رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوٓا۟ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ قَالُوا۟ ضَلُّوا۟ عَنَّا
وَشَهِدُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا۟ كَٰفِرِينَ ﴿٣٧﴾

और हर कौम के लिए एक मुकर्ररह मुद्दत है। फिर जब उनकी मुद्दत आ जाएगी तो वे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। ऐ बनी आदम, अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएं जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख़्स डरा और जिसने इस्लाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग मेरी आयतों को झुठलाएं और उनसे तकब्बुर करें वही लोग दोजख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। फिर उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वे उन्हें मिलकर रहेगा। यहां तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी जान लेने के लिए उनके पास पहुंचेंगे तो उनसे पूछेंगे कि अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम पुकारते थे कहां हैं। वे कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए। और वे अपने ऊपर इकरार करेंगे कि बेशक वे इंकार करने वाले थे। (34-37)

मौजूदा दुनिया में किसी को काम का मौका उसी वक्त तक है जब तक उसकी इम्तेहान की मुकर्ररह मुद्दत पूरी हो जाए। फर्द (व्यक्ति) की मुद्दत उसकी उम्र के साथ पूरी होती है। मगर कौम के बारे में ख़ुदाई फैसले के निफाज (लागू होने) की इस किस्म की कोई हद नहीं। इसका फैसला इस बुनियाद पर किया जाता है कि हक के सामने आने के बाद वह उसके साथ क्या मामला करती है। जिस कौम की मुद्दत पूरी हो जाए उसको कभी ग़ैर मामूली अजाब भेज कर फना कर दिया जाता है और कभी उसकी सजा यह होती है कि उसे इज्जत व बड़ाई के मकाम से हटा दिया जाए।

किसी आदमी के लिए जन्नत या दोजख़ का फैसला इस बुनियाद पर किया जाता है कि उसके सामने जब हक आया है तो उसने उसके साथ क्या मामला किया। जब भी कोई हक ऐसे दलाइल के साथ सामने आ जाए जिसकी सदाकत (सच्चाई) पर आदमी की अक्ल गवाही दे रही हो तो उस आदमी पर गोया ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गई। इसके बाद भी अगर आदमी

उस हक को मानने से इंकार करता है तो वह यकीनन किब्र (अहं, बड़ाई) की वजह से ऐसा कर रहा है। अपने आपको बड़ा रखने की नफ्सियात उसके लिए रुकावट बन गई कि वह हक को बड़ा बना कर उसके मुकाबले में अपने को छोटा बनाने पर राजी कर ले। ऐसे आदमी के लिए ख़ुदा के यहां जहन्नम के सिवा कोई अंजाम नहीं।

आदमी जब भी हक का इंकार करता है तो वह किसी एतमाद के ऊपर करता है। किसी को दौलत व इक्तदार का एतमाद होता है। कोई अपनी इज्जत व मक्बूलियत पर भरोसा किए हुए होता है। किसी को यह एतमाद होता है कि उसके मामलात इतने दुरुस्त हैं कि हक को न मानने से उसका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। किसी को यह नाज होता है कि उसकी जिहानत ने अपनी बात को ऐन ख़ुदा की बात साबित करने के लिए शानदार अल्फाज दरयाफ्त कर लिए हैं। मगर यह इंसान की बहुत बड़ी भूल है। वह आजमाइश की चीजों को एतमाद की चीज समझे हुए है। कियामत के दिन जब ये तमाम झूठे सहारे उसका साथ छोड़ देंगे तो उस वक्त उसके लिए यह समझना मुश्किल न होगा कि वह महज सरकशी की बिना पर हक का इंकार करता रहा। अगरचे अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए वह बहुत से उसूली अल्फाज बोलता था।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

ख़ुदा कहेगा, दाख़िल हो जाओ आग में जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं। जब भी कोई गिरोह जहन्नम में दाख़िल होगा वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा। यहां तक कि जब वे उसमें जमा हो जाएंगे तो उनके पिछले अपने अगले वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब, यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया पस तू उन्हें आग का दोहरा अजाब दे। ख़ुदा कहेगा कि सबके लिए दोहरा है मगर तुम नहीं जानते। और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई फजीलत (श्रेष्ठता) हासिल नहीं। पस अपनी कमाई के नतीजे में अजाब का मजा चखो। (38-39)

इस आयत में 'उम्मत' से मुराद गुमराह करने वाले लीडर और 'उख़्त' से मुराद गुमराह होने वाले अवाम हैं। आख़िरत में जब हर दौर के बेराह कायदीन और उनका साथ देने वाले बेराह अवाम जहन्नम में डाले जाएंगे तो यह एक बड़ा इबरतनाक मंजर होगा। दुनिया में तो वे एक दूसरे के बड़े ख़ैरख़्वाह और फिदाकार बने हुए थे। कायदीन (लीडर) अपने अवाम की हर ख़्वाहिश का एहतराम

करते थे और अवाम अपने कायदीन को हीरो बनाए हुए थे। मगर जब जहन्नम की आग उन्हें पकड़ेगी तो उनकी आंखों से तमाम मस्नूई (बनावटी) पर्दे हट जाएंगे। अब हर एक दूसरे को उसके असली रूप में देखने लगेगा। पैरवी करने वाले अपने कायदीन से कहेंगे कि तुम पर लानत हो। तुम्हारी कयादत कैसी बुरी कयादत थी जिसने चन्द दिन के झूठे तमाशे दिखाए और इसके बाद हमें इतनी बड़ी तबाही में डाल दिया। इसके जवाब में कायदीन अपने पैरोकारों से कहेंगे कि तुम अपनी पसंद का एक दीन चाहते थे और ऐसा दीन हमारे पास देखकर हमारे पीछे दौड़ पड़े। वर्ना ऐन उसी जमाने में ऐसे भी ख़ुदा के बंदे थे जो तुम्हें कामयाबी के सच्चे रास्ते की तरफ बुलाते थे। तुमने उनकी पुकार सुनी मगर तुमने उनकी तरफ कोई तवज्जोह न दी।

रहनुमा अपने पैरोकारों से कहेंगे कि तुम किसी एतबार से हमसे बेहतर नहीं हो। हमने अपनी ख़्वाहिशों की ख़ातिर कयादतें खड़ी कीं और तुमने भी अपनी ख़्वाहिशों की ख़ातिर हमारा साथ दिया। हकीकत के एतबार से दोनों का दर्जा एक है। इसलिए यहां तुम्हें भी वही सजा भुगतनी है जो हमारे लिए हमारे आमाल के सबब से मुकद्दर की गई है।

पैरोकारों की जमाअत अपने रहनुमाओं के बारे में ख़ुदा से कहेगी कि उन्होंने हमें गुमराह किया था इसलिए उन्हें हमारे मुकाबले में दुगना अजाब दिया जाए। जवाब मिलेगा कि तुम्हारे रहनुमाओं में से हर एक को दुगना अजाब मिल रहा है मगर तुम्हें इसका एहसास नहीं है। हकीकत यह है कि जहन्नम में जिसे जो अजाब मिलेगा वह उसे इतना ज्यादा सख़्त मालूम होगा कि वह समझेगा कि मुझसे ज्यादा तकलीफ में कोई दूसरा नहीं है। हर शख़्स जिस तकलीफ में होगा वही तकलीफ उसे सबसे ज्यादा मालूम होगी।

दुनिया में मफादपरस्त (स्वार्थी) रहनुमा और उनके मफादपरस्त पैरोकार ख़ूब एक दूसरे के दोस्त बने हुए हैं। हर एक के पास दूसरे के लिए उम्दा अल्फाज हैं। हर एक दूसरे की बेहतरी में लगा हुआ है। मगर आख़िरत में हर एक दूसरे से नफरत करेगा, हर एक दूसरे को शदीदतर (सख़्त) अजाब में धकेलना चाहेगा।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे तकब्बुर (घमंड) किया उनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जाएंगे और वे जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक कि ऊंट सूई के नाके में न घुस जाए। और हम मुजरिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। उनके लिए दोज़ख़ का बिछौना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा। और हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त के मुवाफ़िक़ ही बोझ डालते हैं यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उनके सीने की हर ख़लिश (दुराव) को हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहां तक पहुंचाया और हम राह पाने वाले न थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न करता। हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे। और आवाज आएगी कि यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए हो अपने आमाल के बदले। (40-43)

ख़ुदा के दाअियों के मुकाबले में क्यों ऐसा होता है कि उनके मदऊ के अंदर मुतकब्बिराना नफ्सियात जाग उठती हैं और वे उन्हें मानने से इंकार कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि दाअी की तरफ सिर्फ निशानी (दलील) का जोर होता है और मदऊ की तरफ माद्दी रौनकों का जोर। दाअी दलील की बुनियाद पर खड़ा होता है और उसके मदऊ माद्दियात (संसाधनों) की बुनियाद पर। दलील की ताकत दिखाई नहीं देती और माद्दी ताक्त आंखों से दिखाई देती है। यही फ़र्क़ लोगों के अंदर किब्र (अहं) मिजाज पैदा कर देता है। लोग दाअी को अपने मुक़ाबले में हक़ीर (तुच्छ) समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

ऐसे लोगों का ख़ुदा की रहमत में दाख़िल होना उतना ही नामुमकिन है जितना ऊंट का सूई के नाके में दाख़िल होना। उन्होंने ख़ुदा को नजरअंदाज किया इसलिए ख़ुदा ने भी उन्हें नजरअंदाज कर दिया। ख़ुदा ने अपने दाअी के जरिए उन्हें अपनी झलकियां दिखाईं। ख़ुदा उनके सामने दलाइल के रूप में जाहिर हुआ। मगर उन्होंने उसे बेवजन समझा। उन्होंने ख़ुदाई निशानियों के सामने झुकने से इंकार कर दिया। ऐसा लोग क्योंकर ख़ुदा की रहमतों में हिस्सा पा सकते हैं।

दोजख़ियों का यह हाल होगा कि जो लोग दुनिया में एक दूसरे के दोस्त बने हुए थे वे वहां एक दूसरे से नफरत करने लगेंगे। और एक दूसरे पर लानत कर रहे होंगे। मगर जन्नत का माहौल इससे बिल्कुल मुख़्तलिफ होगा। यहां सबके दिल एक दूसरे के लिए खुले हुए होंगे। हर एक के दिल में दूसरे के लिए मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही का चश्मा फूट रहा होगा। दोजख़ी इंसान के लिए उसका माजी (अतीत) एक दुख भरी दास्तान बना हुआ होगा और जन्नती इंसान के लिए उसका माजी एक ख़ुशगवार याद।

बुरे लोगों के लिए उनकी अगली जिंदगी इस तरह शुरू होगी कि उनका सीना हसरत और यास (नाउम्मीदी) का क़ब्रस्तान बना हुआ होगा। उनका माजी (अतीत) उनके लिए तल्ख़ यादों के सिवा और कुछ न होगा। दूसरी तरफ अच्छे लोगों का यह हाल होगा कि उनकी जबानें उस ख़ुदा की याद से तर होंगी जिसे उन्होंने बजा तौर पर अपना सहारा बनाया था। वे हक के

अलमबरदारों की दी हुई ख़बर को ऐन सच्चा पाकर ख़ुश हो रहे होंगे कि ख़ुदा का यह कितना बड़ा एहसान था कि उसने उन्हें उन हक़ के दाअियों का साथ देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا۟ نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾ ٱلَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ كَٰفِرُونَ ﴿٤٥﴾

और जन्नत वाले दोजख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसे सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के वादे को सच्चा पाया। वे कहेंगे हां। फिर एक पुकारने वाला दोनों के दर्मियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो जालिमों पर। जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते थे और वे आख़िरत (परलोक) के मुंकिर थे। (44-45)

इन आयतों में कदीम जमाने के कुछ लोगों ने यह सवाल उठाया था कि जन्नत और जहन्नम तो एक दूसरे से बहुत ज्यादा दूर वाकअ होंगी, जन्नत आसमानों के ऊपर होगी और दोजख़ सबसे नीचे तहतुस्सरा में। फिर जन्नत वालों की आवाज जहन्नम वालों तक किस तरह पहुंचेगी। मगर अब रेडियो और टेलिविजन के दौर में यह सवाल कोई सवाल नहीं। आज इंसान यह जान चुका है कि दूर के फ़ासलों से किसी को देखना भी मुमकिन है और उसकी आवाज को सुनना भी। जो बात क़दीम इंसान को नाक़ाबिलेफ़हम नजर आती थी वह आज के इंसान के लिए ख़ुद अपने तजर्बात व मुशाहिदात की रोशनी में पूरी तरह काबिलेफ़हम हो चुकी है। इससे मालूम हुआ कि कुरआन की कोई बात अगर आज की मालूमात की रोशनी में समझ में न आ रही हो तो इस बिना पर उसके बारे में कोई हुक्म नहीं लगाना चाहिए। ऐन मुमकिन है कि इल्म के इजाफे के बाद कल वह चीज एक जानी पहचानी चीज बन जाए जो आज बजाहिर अनजान चीज की तरह दिखाई दे रही है।

इसका मतलब यह नहीं कि आख़िरत (परलोक) में जन्नतियों और दोजख़ियों के दर्मियान तअल्लुक मौजूदा क़िस्म के रेडियो और टेलिविजन के जरिए क़ायम होगा। इसका मतलब सिर्फ यह है कि जदीद दरयाफ़्तों ने इस बात को क़ाबिलेफ़हम बना दिया है कि ख़ुदा की कायनात में ऐसे इंतजामात भी मुमकिन हैं कि एक दूसरे से बहुत दूर रहकर भी दो आदमी एक दूसरे को देखें और एक दूसरे से बख़ूबी तौर पर बात करें।

किसी दलील का वजन आदमी उसी वक्त समझ पाता है जबकि वह उसके बारे में संजीदा हो। जो लोग आख़िरत को अहमियत न दें वे आख़िरत के मुतअल्लिक दलाइल का वजन भी महसूस नहीं कर पाते। आख़िरत की बात उनके सामने इंतिहाई मजबूत दलाइल के साथ आती है। मगर इसके बारे में उनका ग़ैर संजीदा जेहन उसके अंदर कोई न कोई ऐब तलाश

कर लेता है। वे तरह-तरह के एतराजात निकाल कर ख़ुद भी शक व शुबह में मुब्तला होते हैं और दूसरों को भी शक व शुबह में मुब्तिला करते हैं। ऐसे लोग ख़ुदा की नजर में सख़्त मुजरिम हैं। वे आख़िर में सिर्फ ख़ुदा की लानत के मुस्तहिक होंगे चाहे दुनिया में वे अपने को ख़ुदा की रहमतों का सबसे बड़ा हकदार समझते रहे हों।

कोई दलील चाहे कितनी ही वजनी और क़तई हो, आदमी के लिए हमेशा यह मौक़ा रहता है कि वह कुछ ख़ूबसूरत अल्फ़ाज बोल कर उसकी सदाक़त के बारे में लोगों को मुश्तबह कर दे। अवाम एक हक़ीक़ी दलील और एक लफ़्ज़ी शोशे में फ़र्क़ नहीं कर पाते इसलिए वे इस किस्म की बातें सुनकर हक से बिदक जाते हैं। मगर जो लोग समझने की सलाहियत रखने के बावजूद इस तरह के शोशे निकाल कर लोगों को हक से बिदकाते हैं वे आख़िरत के दिन ख़ुदा की रहमतों से आख़िरी हद तक दूर होंगे।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ ۚ وَنَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۚ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾ وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٨﴾ أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

और दोनों के दर्मियान एक आड़ होगी। और आराफ (जन्नत और जहन्नम के बीच की जगह) के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे मगर वे उम्मीदवार होंगे। और जब दोज़ख़ वालों की तरफ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमें शामिल न करना इन जालिम लोगों के साथ। और आराफ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आई तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना। क्या यही वे लोग हैं जिनके बारे में तुम कसम खाकर कहते थे कि उन्हें कभी अल्लाह की रहमत न पहुंचेगी। जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अब न तुम पर कोई डर है और न तुम ग़मगीन होगे। (46-49)

दुनिया में ऐसा होता है कि ख़ुदा की नेमतों और उसकी जानिब आई हुई सख़्तियों से मोमिन व मुस्लिम सब यकसां दो चार होते हैं। मगर आख़िरत में ऐसा नहीं होगा। वहां दोनों के दर्मियान 'आड़' कायम हो जाएगी। वहां मोमिनीन को मिली हुई नेमतों की कोई ख़ुशबू मुंकिरों को नहीं मिलेगी और इसी तरह मुंकिरों को मिली हुई तकलीफों का कोई असर जन्नत वालों तक नहीं पहुंचेगा।

अरफ के मअना अरबी जबान में बुलन्दी के होते हैं। आराफ वाले का मतलब है बुलन्दियों वाले। इससे मुराद पैग़म्बरों और दाअियों का गिरोह है जिन्होंने मुख़्तलिफ वक़्तों में लोगों को हक का पैग़ाम दिया। कियामत मे जब लोगों का हिसाब होगा और हर एक को मालूम हो चुका होगा कि उसका अंजाम क्या होने वाला है और हक के दाओ़ी की बात जो वह दुनिया में कहता था आख़िरी तौर पर सही साबित हो चुकी होगी उस वक़्त हर दाओ़ी अपनी कौम को ख़िताब करेगा। ख़ुदा के हुक्म से आख़िरत में उनके लिए ऊंचा स्टेज मुहय्या किया जाएगा जिस पर खड़े होकर वे पहले अपने मानने वालों को ख़िताब करेंगे। ये लोग अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे मगर वे इसके उम्मीदवार होंगे। इसके बाद उनका रुख़ उनके झुठलाने वालों की तरफ किया जाएगा। वे उनकी बुरी हालत देखकर कमाले अब्दियत (बंदगी व आजिजी) की वजह से कह उठेंगे कि ख़ुदाया हमें इन जालिमों में शामिल न कर। वे मुंकिरों के गिरोह के लीडरों को उनके चहरे की हैयत से पहचान लेंगे और उनसे कहेंगे कि तुम्हें अपने जिस जत्थे और अपने जिस साजोसामान पर घमंड था और जिसकी वजह से तुमने हमारे हक के पैग़ाम को झुठला दिया वह आज तुम्हारे कुछ काम न आ सका।

हक का इंकार करने वाले वक़्त के कायमशुदा निजाम के साए में होंगे। इस दुनिया में उनकी हैसियत हमेशा मजबूत होती है। इसके बरअक्स (विपरीत) जो लोग हक के दाअियों का साथ देते हैं उनका साथ देना सिर्फ इस कीमत पर होता है कि वक़्त के जमे हुए निजाम की सरपरस्ती उन्हें हासिल न रहे। इसके नतीजे में ऐसा होता है कि जो लोग हक को नहीं मानते वे मानने वालों की बेचारगी को देखकर उनका मजाक उड़ाते हैं। वे कहते हैं कि क्या यही वे लोग हैं जो ख़ुदा की जन्नतों में जाएंगे। असहाबे आराफ कियामत में ऐसे लोगों से कहेंगे कि अब देख लो कि हकीकत क्या थी और तुम उसे क्या समझे हुए थे। बिलआख़िर कौन कामयाब रहा और कौन नाकाम ठहरा।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾

और दोज़ख़ के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है। वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों चीजों को मुंकिरों के लिए हराम कर दिया है। वे जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में डाल रखा था। पस आज हम उन्हें भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया था और जैसा कि वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। (50-51)

दुनिया दो किस्म की ग़िजाओं का दस्तरख़्वान है। एक दुनियावी और दूसरी उख़रवी। एक इंसान वह है जिसकी रूह की ग़िजा यह है कि वह अपनी जात को नुमायां होते हुए देखे। दुनिया की रौनकें अपने गिर्द पाकर उसे ख़ुशी हासिल होती हो। माद्दी साजोसामान का मालिक होकर वह अपने को कामयाब समझता है। ऐसा आदमी ख़ुदा और आख़िरत को भूला हुआ है। उसके सामने ख़ुदा की बात आएगी तो वह उसे ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देगा। वह उसके साथ ऐसा सरसरी सुलूक करेगा जैसे वह कोई संजीदा मामला न हो बल्कि महज खेल तमाशा हो।

ऐसे आदमी के लिए आख़िरत के इनामात में कोई हिस्सा नहीं। उसने अपने अंदर एक ऐसी रूह की परवरिश की जिसकी ग़िजा सिर्फ दुनिया की चीजें बन सकती थीं। फिर आख़िरत की चीजों से उसकी रूह क्योंकर अपनी ख़ुराक पा सकती है, जो इंसान आज आख़िरत में न जिया हो उसके लिए आख़िरत, कल के दिन भी जिंदगी का जरिया नहीं बन सकती।

दूसरा इंसान वह है जो ग़ैबी हकीकतों में गुम रहा हो। जिसकी रूह को आख़िरत की याद में लज्जत मिली हो। जिसकी ग़िजा यह रही हो कि वह ख़ुदा में जिए और ख़ुदा की फजाओं में सांस ले। यही वह इंसान है जिसके लिए आख़िरत रिज्क का दस्तरख़्वान बनेगी। वह जन्नत के बाग़ों में अपने लिए जिंदगी का सामान हासिल कर लेगा। उसने ग़ैब (अप्रकट) के आलम में ख़ुदा को पाया था इसलिए शुहूद (प्रकट) आलम में भी वह ख़ुदा को पा लेगा।

ख़ुदा की दुनिया में आदमी ख़ुदा को क्यों भुला देता है। इसकी वजह यह है कि ख़ुदा ऐसी निशानियों के साथ सामने आता है जो सिर्फ सोचने से जेहन की पकड़ में आती हैं, जबकि दुनिया की चीजें आंखों के सामने अपनी तमाम रौनकों के साथ मौजूद होती हैं। आदमी जाहिरी चीजों की तरफ झुक जाता है और ख़ुदा की तरफ इशारा करने वाली निशानियों को नजरअंदाज कर देता है। मगर ऐसा हर अमल दुनिया की कीमत पर आख़िरत को छोड़ना है। और जिसने मौत से पहले वाली जिंदगी में आख़िरत को छोड़ा वह मौत के बाद वाली जिंदगी में भी आख़िरत से महरूम रहेगा।

अल्लाह जब एक चीज को हक की हैसियत से लोगों के सामने लाए और वे उसे अहमियत न दें, वे उसके साथ ग़ैर संजीदा मामला करें तो यह दरअस्ल ख़ुद ख़ुदा को ग़ैर अहम समझना और उसके साथ ग़ैर संजीदा मामला करना है। दुनिया में हक को नजरअंदाज करने से आदमी का कुछ बिगड़ता नहीं, हक की पुश्त पर जो ख़ुदाई ताकतें हैं वे अभी ग़ैब में होने की वजह से उसे नजर नहीं आतीं। यह सूरतेहाल उसे धोखे में डाल देती है। जो लोग इस तरह हक को नजरअंदाज करें वे यह ख़तरा मोल लेते हैं कि ख़ुदा भी आख़िरत के दिन उन्हें नजरअंदाज कर दे।

وَلَقَدْ جِئْنَٰهُم بِكِتَٰبٍ فَصَّلْنَٰهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُۥ ۚ يَوْمَ يَأْتِى تَأْوِيلُهُۥ يَقُولُ ٱلَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِٱلْحَقِّ فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوا۟ لَنَآ أَوْ نُرَدُّ

فَنَعْمَلَ غَيْرَ ٱلَّذِى كُنَّا نَعْمَلُ ۚ قَدْ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾

और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बुनियाद पर मुफ़स्सल (विस्तृत) किया है, हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। क्या अब वे इसी के मुंतजिर हैं कि उसका मजमून जाहिर हो जाए। जिस दिन उसका मजमून जाहिर हो जाएगा तो वे लोग जो उसे पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के पैग़म्बर हक लेकर आए थे। पस अब क्या कोई हमारी सिफारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफारिश करें या हमें दुबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि हम उससे मुख़्तलिफ अमल करें जो हम पहले कर रहे थे। उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया वह जो वे गढ़ते थे। (52-53)

कुरआन आदमी को मौत के बाद आने वाली जिंदगी से डराता है, वह आख़िरत के हिसाब किताब से लोगों को आगाह करता है। मगर आदमी चौकन्ना नहीं होता। कुरआन की ये ख़बरें अगरचे महज ख़बरें नहीं हैं बल्कि वे कायनात की अटल हकीकतें हैं। ताहम अभी वे वाकेयात की सूरत में जाहिर नहीं हुईं, अभी वे मुस्तकबिल के पर्दे में छुपी हुई हैं। इस बिना पर ग़ाफिल इंसान यह समझता है कि ये सिर्फ कहने की बातें हैं। वे उन्हें ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देता है।

मगर ये बातें ख़ुदा की तरफ से हैं जो तमाम बातों का जानने वाला है। जिन लोगों ने अपनी फितरत को बिगाड़ा नहीं है। जिनकी आंखों पर मस्नूई (बनावटी) पर्दे पड़े हुए नहीं हैं वे कुरआन की इन बातों को अपने दिल की आवाज पाएंगे। वे उन्हें ऐन वही चीज मालूम होगी जिसकी तलाश उनकी फितरत पहले से कर रही थी। कुरआन उनके लिए जिंदगी और यकीन का ख़जाना बन जाएगा।

इसके बरअक्स हाल उन लोगों का है जो कुरआन की आगाही को कोई संजीदा चीज नहीं समझते। वे अपनी इसी ग़फलत की हालत में पड़े रहेंगे यहां तक कि वह वक्त उन पर फट पड़े जिसकी ख़बर उन्हें दी जा रही है। उस वक्त आदमी अचानक देखेगा कि वह बिल्कुल बेसहारा हो चुका है। वह जिन मसाइल को अहम समझ कर उनमें उलझा हुआ था उस दिन वे बिल्कुल बेहकीकत नजर आएंगे। वह जिन चीजों पर भरोसा किए हुए था वे सब उसका साथ छोड़ चुके होंगे। वह जिन उम्मीदों पर जी रहा था वे सब झूठी ख़ुशख़्यालियां साबित होंगी।

आख़िरत का मसला आज महज एक नजरिया है, वह बजाहिर कोई संगीन मसला नहीं। इसलिए आदमी इसके बारे में संजीदा नहीं हो पाता। मगर मौत के बाद आने वाली जिंदगी में जब आख़िरत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ फट पड़ेगी, उस वक्त हर आदमी उस बात को मानने पर मजबूर होगा जिसे वह इससे पहले मानने को तैयार नहीं होता था। उस वक्त आदमी जान लेगा कि इससे पहले जो बात दलील की जबान में कही जा रही थी वह ऐन

हकीकत थी मगर मैं उसके बारे में संजीदा न हो सका इसलिए मैं उसे समझ भी न पाया।

जब वे तमाम चीजें आदमी का साथ छोड़ देंगी जिन्हें वह दुनिया में अपना सहारा बनाए हुए था तो वह चाहेगा कि दुनिया में उसे दुबारा भेज दिया जाए ताकि वह सही जिंदगी गुजारे। मगर जिंदगी का यह मौका किसी को दुबारा मिलने वाला नहीं।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह उढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किए सूरज और चांद और सितारे, सब ताबेदार हैं उसके हुक्म के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके। यकीनन वह हद से गुजरने वालों को पसंद नहीं करता। और जमीन में फसाद न करो उसकी इस्लाह के बाद। और उसी को पुकारो ख़ौफ के साथ और तमअ (आशा) के साथ। यकीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से करीब है। (54-56)

जमीन व आसमान और उसकी तमाम चीजों का पैदा करने वाला ख़ुदा है। इस पैदा करने की एक सूरत यह भी थी कि वह तमाम चीजों को बनाकर उन्हें इंतिशार (बिखराव) की हालत में छोड़ देता। मगर उसने ऐसा नहीं किया। उसने तमाम चीजों को एक हद दर्जा कामिल और हकीमाना निजाम के तहत जोड़ा और उन्हें इस तरह चलाया कि हर चीज ठीक उसी तरह काम करती है जैसा कि मज्मूई मस्लेहत के एतबार से उसे करना चाहिए।

इंसान भी इसी दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा है। फिर ऐसी इस्लाहयाफ्ता दुनिया में उसका रवैया क्या होना चाहिए। उसका रवैया वही होना चाहिए जो बाकी तमाम चीजों का है। वह भी अपने आपको उसी ख़ालिक के मंसूबे में दे दे जिसके मंसूबे में बाकी कायनात पूरी ताबेदारी के साथ अपने आपको दिए हुए है।

कायनात की तमाम चीजें एहसान (सर्वोत्तम कारकर्दगी) की हद तक अपने आपको ख़ुदा के मंसूबे में शामिल किए हुए हैं। इसलिए इंसान को भी एहसान की हद तक अपने आपको

उसके हवाले कर देना चाहिए। यहां कोई चीज कभी ऐतिदा (अपनी मुकर्ररह हद से तजावुज) नहीं करती। इसलिए इंसान के वास्ते भी लाजिम है कि वह अद्ल और हक की ख़ुदाई हदों से तजावुज न करे। मजीद यह कि इंसान नुत्क (बोलने) और शुऊर की इजाफी ख़ुसूसियात रखता है। इसलिए नुत्क और शुऊर की सतह पर भी उसका रब के हवाले होने का इज्हार होना जरूरी है। इंसान के अंदर ख़ुदा की मअरफत इतनी गहराई तक उतर जाना चाहिए कि उसकी जबान से बार-बार इसका इज्हार होने लगे। वह ख़ुदा को इस तरह पुकारे जिस तरह बंदा अपने ख़ालिक व मालिक को पुकारता है। उसे ख़ुदा की खुदाई का इतना इदराक (ज्ञान) होना चाहिए कि ख़ुदा के सिवा उसकी उम्मीदों और उसके अंदेशों का कोई केन्द्र बाकी न रहे। वह ख़ुदा ही से डरे और उसी से अपनी तमाम तमन्नाएं वाबस्ता करे। ख़ुदा के साथ ख़ौफ और उम्मीद को वाबस्ता करना ख़ुदा की ताबेदारी की आख़िरी और इंतहाई सूरत है।

बंदे की सबसे बड़ी कामयाबी यह है कि उसे ख़ुदा की रहमत हासिल हो, मगर यह रहमत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा है जो अल्लाह के साथ अपने आपको इतना ज्यादा मुतअल्लिक कर लें कि उनके तमाम जज्बात का रुख़ अल्लाह की तरफ हो जाए। वे उसी को पुकारें और उसी के साथ आजिजी करें। उन्हें पाने की उम्मीद उसी से हो और छिनने का डर भी उसी से। यही लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा की कुरबत चाही इसलिए ख़ुदा ने भी उन्हें अपने करीब जगह दे दी।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ۝

और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। फिर जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी ख़ुश्क सरजमीन की तरफ हांक देते हैं। फिर हम उसके जरिए पानी उतारते हैं। फिर हम उसके जरिए से हर किस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम ग़ौर करो। और जो जमीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है उसके रब के हुक्म से और जो जमीन ख़राब है उसकी पैदावार कम ही होती है। इसी तरह हम अपनी निशानियां मुख़्तलिफ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं। (57-58)

दुनिया को ख़ुदा ने इस तरह बनाया है कि उसके माद्दी (भौतिक) वाकेयात उसके रूहानी पहलुओं की तमसील (उदाहरण) बन गए हैं।

जब कहीं बारिश होती है तो उस मकाम के हर हिस्से तक उसका पानी यकसां तौर पर पहुंचता है। मगर फैज उठाने के एतबार से मुख़्तलिफ जमीनों का हाल मुख़्तलिफ होता है। कोई

हिस्सा वह है कि पानी उसे मिला तो उसके अंदर से एक लहलहाता हुआ चमनिस्तान निकल आया। दूसरी तरफ किसी हिस्से का हाल यह होता है कि वह बारिश पाकर भी बेफैज (अलाभांवित) पड़ा रहता है। वहां झाड़ झंकाड़ के सिवा कुछ नहीं उगता।

यही हाल उस रूहानी बारिश का है जो ख़ुदा की तरफ से हिदायत की सूरत में उतरी है। इस हिदायत का पैग़ाम हर आदमी के कानों तक पहुंचता है। मगर फायदा हर एक को अपनी-अपनी इस्तेदाद (सामर्थ्य) की बक्द्र मिलता है। जिसके अंदर हक को कुबूल करने की सलाहियत (क्षमता) जिंद्रा है वह उससे भरपूर फैज हासिल करता है। इससे उसे एक नई जिंदगी मिलती है। उसकी फितरत अचानक जाग उठती है। उसका रब्त अपने मालिकेआला से कायम हो जाता है। उसकी ख़ुश्क नफ्सियात में रब्बानी कैफियात का बाग़ खिल उठता है।

इसके बरअक्स हाल उस शख़्स का होता है जिसने अपनी फितरी सलामती को खो दिया हो। हिदायत की बारिश अपने तमाम बेहतरीन इम्कानात के बावजूद उसे कोई फायदा नहीं पहुंचाती। इसके बाद भी वह वैसा ही ख़ुश्क पड़ा रहता है जैसा कि वह इससे पहले था। और अगर उसके अंदर कोई फस्ल निकलती है तो वह भी झाड़ झंकाड़ की फस्ल होती है। हिदायत की बारिश पाकर उसके अंदर से हसद, किब्र (अहं), हुज्जतबाजी, हक की मुख़ालिफत जैसी चीजें जाग उठती हैं न कि हक का एतराफ करने और उसका साथ देने की।

बारिश के पानी को कुबूल करने के लिए जमीन का ख़ुश्क होना जरूरी है। जो जमीन ख़ुश्क न हो, पानी उसके ऊपर से गुजर जाएगा, वह उसके अंदर दाख़िल नहीं होगा। इसी तरह ख़ुदा की हिदायत सिर्फ उस आदमी के अंदर जड़ पकड़ती है जो उसका तालिब हो, जिसने अपनी रूह को ग़ैर ख़ुदाई बातों से ख़ाली कर रखा हो। इसके बरअक्स जो शख़्स ख़ुदा की हिदायत से बेपरवाह हो, जिसका दिल दूसरी दिलचस्पियों या दूसरी अज्मतों में अटका हुआ हो, उसके पास ख़ुदा की हिदायत आएगी मगर वह उसके अंदुरून में दाख़िल नहीं होगी, वह उसकी रूह की ग़िज़ा नहीं बनेगी, वह उसकी फितरत की जमीन को सैराब करके उसके अंदर ख़ुदा का बाग़ नहीं उगाएगी।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾

हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा। नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। उसकी कौम के बड़ों ने कहा कि हमें तो यह नजर आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुब्तिला हो। नूह ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझमें कोई गुमराही नहीं है। बल्कि मैं भेजा हुआ हूं सारे आलम के परवरदिगार का। तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूं। और मैं अल्लाह की तरफ से वह बात जानता हूं जो तुम नहीं जानते। क्या तुम्हें इस पर तज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के जरिए आई ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर रहम किया जाए। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ कश्ती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। बेशक वे लोग अंधे थे। (59-64)

हजरत आदम के बाद तकरीबन एक हजार साल तक तमाम आदम की औलाद तौहीद पर कायम थी। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि इसके बाद लोगों ने अपने अकाबिर असलाफ (पूर्वजों) की शक्लें बनाना शुरू कीं ताकि उनके अहवाल व इबादात की याद ताजा रहे। उन बुजुर्गों के नाम वुद, सुवाअ, यग़ूस, यऊक और नस्र थे। धीरे-धीरे इन बुजुर्गों ने उनके दर्मियान माबूद का दर्जा हासिल कर लिया। ये लोग कदीम इराक में आबाद थे। जब बिगाड़ इस नौबत तक पहुंचा तो अल्लाह ने उनकी इस्लाह के लिए हजरत नूह को पैग़म्बर बनाकर उनकी तरफ भेजा। मगर उन्होंने हजरत नूह को मानने से इंकार कर दिया। वे तकवा की रविश इख़्तियार करने पर आमादा न हुए।

इस इंकार की वजह कुरआन के बयान के मुताबिक यह थी कि उनके लिए यह समझना मुश्किल हो गया कि एक आदमी जो देखने में उन्हीं जैसा है वह ख़ुदा की तरफ से ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाने के लिए चुना गया है। वे अपने को जिन अकाबिर के दीन पर समझते थे उनके मुकाबले में हजरत नूह उन्हें बहुत मामूली आदमी दिखाई देते थे। इन कदीम अकाबिर की अज्मत सदियों की तारीख़ से मुसल्लम हो चुकी थी। इसके मुकाबले में हजरत नूह एक मुआसिर (समकालीन) शख़्स थे। उनके नाम के साथ तारीख़ी अज्मतें जमा नहीं हुई थीं। चुनांचे कौम ने आपका इंकार कर दिया। उन्होंने वक्त के पैग़म्बर को अहमक और गुमराह कहने से भी दरेग़ नहीं किया। क्योंकि उनके ख़्याल के मुताबिक आप अकाबिर के दीन से मुंहरिफ हो गए थे। हजरत नूह की ख़ैरख़्वाही, उनके साथ दलाइल का जोर, उनका हक की राह पर कायम होना, कोई भी चीज कौम को मुतअस्सिर न कर सकी।

हजरत नूह की तरफ से इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बाद कौम ग़र्क कर दी गई। इस ग़रकाबी की वजह यह थी कि उन्होंने ख़ुदा की निशानियों को झुठलाया। उन्होंने चाहा कि 'मामूली शख़्सियत' के बजाए किसी 'मुसल्लमा शख़्सियत' के जरिए उन्हें ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाया जाए। मगर ख़ुदा की नजर में यह अंधापन था। ख़ुदा ने आदमी को बसीरत

(विवेक) इसलिए दी है कि वह 'निशानी' के रूप में हक को पहचान ले न कि हिस्सी मुजाहिरा (प्रकट रूप) की सूरत में। जो लोग निशानी के रूप में हक को न पहचानें वे ख़ुदा की नजर में आंख रखते हुए भी अंधे हैं। ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा की रहमत में कोई हिस्सा नहीं ।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا
لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن
رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾ أَوَعَجِبْتُمْ
أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا
إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ
فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। सो क्या तुम डरते नहीं। उसकी कौम के बड़े जो इंकार कर रहे थे बोले, हम तो तुम्हें बेअक्ली में मुब्तिला देखते हैं और हमें गुमान है कि तुम झूठे हो। हूद ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझे कुछ बेअक्ली नहीं। बल्कि मैं ख़ुदावंदेआलम का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारा ख़ैरख़्वाह और अमीन हूं। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के जरिए तुम्हारे रब की नसीहत आई ताकि वह तुम्हें डराए। और याद करो जबकि उसने कौमे नूह के बाद तुम्हें उसका जानशीन बनाया और डीलडोल में तुमको फैलाव भी ज्यादा दिया। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम फलाह पाओ। (65-69)

हजरत नूह की कश्ती में जो अहले ईमान बचे थे उनमें आपके पोते इरम की औलाद से एक नस्ल चली। वे कदीम यमन में आबाद थे और आद कहलाते थे। ये लोग इब्तिदा में हजरत नूह के दीन पर थे। बाद को जब उनमें बिगाड़ पैदा हुआ तो अल्लाह ने हजरत हूद को उनके ऊपर अपना पैगम्बर मुक़र्रर किया। मगर कौम के सरदारों को आपके अंदर वह अज्मत नजर न आई जो उनके ख़्याल के मुताबिक़ ख़ुदा के पैग़म्बर के अंदर होना चाहिए थी। उन्होंने समझा कि यह शख़्स या तो अहमक है या फिर वह झूठा दावा कर रहा है।

'मैं तुम्हारा नासेह (नसीहत करने वाला) और अमीन हूं' पैग़म्बर की जबान से यह कि (वाक्य) बताता है कि दाओ और मदऊ का रिश्ता कौमी हरीफ (प्रतिपक्षी) या सियासी मद्देमुकाबिल जैसा रिश्ता नहीं है। यह ख़ैरख़्वाही और अमानतदारी का रिश्ता है। दाओ को ऐसा होना चाहिए कि उसके दिल में मदऊ के लिए ख़ैरख़्वाही के सिवा और कुछ न हो। मदऊ

की तरफ से चाहे कैसा ही नाख़ुशगवार रवैया सामने आए मगर दाओ आख़िर वक्त तक मदऊ का ख़ैरख़्वाह बना रहे। फिर जो पैग़ाम वह दे रहा है उसे देते हुए उसके अंदर यह एहसास न हो कि यह मेरी कोई अपनी चीज है जो मैं दूसरों को अता कर रहा हूं। बल्कि यह जज्बा हो कि यह ख़ुद दूसरों की चीज है। यह दूसरों के लिए ख़ुदा की अमानत है जो मैं उन्हें पहुंचा कर बीउम्मि (दायित्व-मुक्त) हो रहा हूं।

पैग़म्बरों की दावत की बुनियाद हमेशा यह रही है कि वे इंसान के ऊपर ख़ुदा की नेमतें याद दिलाएं और उसे इस बात से डराएं कि अगर वह ख़ुदा का शुक्रगुजार बनकर न रहा तो वह ख़ुदा की पकड़ में आ जाएगा। कौमी झगड़ों और माद्दी मसाइल को पैग़म्बर कभी अपनी दावत का उनवान नहीं बनाते। वे आख़िरी हद तक इस बात की कोशिश करते हैं कि उनके और मदऊ के दर्मियान अस्ल दावत के सिवा कोई चीज बहस की बुनियाद न बनने पाए, कौम उन्हें सिर्फ तौहीद और आख़िरत के दाओ के रूप में देखे न कि किसी और रूप में।

'ख़ुदा की नेमतों को याद करो ताकि तुम कामयाब हो' इससे मालूम होता है कि आख़िरत की नेमतोंका इस्तहक़ाक़ (अधिकार) उसके लिए है जिसने दुनिया में ख़ुदा की नेमतों का एतराफ किया हो। जन्नत ख़ुदा के मुन्इम (दाता) व मोहसिन होने का सबसे बड़ा इज्हार है। इसलिए आख़िरत की जन्नत को वही पाएगा जिसने दुनिया में ख़ुदा के मुन्इम व मोहसिन होने की हैसियत को पा लिया हो। यही मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) जन्नत की अस्ल कीमत है।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا
تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ
رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم
مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٧١﴾
فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾

हूद की कौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते आए हैं। पस तुम जिस अजाब की धमकी हमें देते हो उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो। हूद ने कहा तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से नापाकी और ग़ुस्सा वाकेअ हो चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। जिनकी ख़ुदा ने कोई सनद नहीं उतारी। पस इंतजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूं। फिर हमने बचा लिया उसे और जो उसके साथ थे अपनी रहमत से और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे और मानते न थे। (70-72)

इंसान नामों के जरिए किसी चीज का तसव्वुर क़ायम करता है। किसी शख़्स के साथ अच्छा लफ़्ज लग जाए तो वह अच्छा मालूम होता है और अगर बुरा लफ़्ज लग जाए तो बुरा दिखाई देने लगता है। ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजें या हस्तियां जो आदमी की तवज्जोहात का मर्कज बनती हैं इसकी वजह भी यही नाम होते हैं। लोग किसी शख़्सियत को ग़ौस पाक, गंजबख़्श, ग़रीब नवाज़, मुश्किलकुशा जैसे अल्फ़ाज से पुकारने लगते हैं। ये अल्फ़ाज धीरे-धीरे इन शख़्सियतों के साथ ऐसे वाबस्ता हो जाते हैं कि लोग यकीन कर लेते हैं कि जिसे ग़ौस (फरयाद सुनने वाला) कहा जाता है वह वाकई फरयाद को पहुंचने वाला है और जिसे मुश्किलकुशा के नाम से पुकारा जाता है सचमुच वह मुश्किलों को हल करने वाला है। मगर हक़ीक़त यह है कि इस किस्म के तमाम नाम सिर्फ इंसानों के रखे हुए हैं। इन नामों का कोई अस्ल कहीं मौजूद नहीं। इनके हक में न कोई शरई दलील है और न कोई अक्ली दलील।

नामों की शरीअत की एक किस्म वह है जो जाहिल इंसानों के दर्मियान राइज है। ताहम इसकी एक ज्यादा मुहज्जब (सभ्य) सूरत भी है जो पढ़े लोगों के दर्मियान मक़बूल है। यहां भी कुछ शख़्सियतों के साथ ग़ैर मामूली अल्फ़ाज वाबस्ता कर दिए जाते हैं। मसलन क़ुदसी सिफ़ात, महबूबेख़ुदा, सुतूने इस्लाम, नजात दहिंदए मिल्लत (समुदाय का मुक्ति दाता) वग़ैरह। इस किस्म के अल्फ़ाज धीरे-धीरे मज़्कूरा शख़्सियतों के नाम का जुज बन जाते हैं। लोग इन शख़्सियतों को वैसा ही ग़ैर मामूली समझ लेते हैं जैसा कि इन्हें दिए हुए नाम से जाहिर होता है।

जो चीज 'बाप दादा' से चली आ रही हो, बअल्फ़ाज दीगर जिसने तारीख़ी अहमियत हासिल कर ली हो और तवील (लंबी) रिवायात के नतीजे में जिसके साथ माजी का तक़द्दुस शामिल हो गया हो वह लोगों की नजर में हमेशा अजीम हो जाती है। इसके मुक़ाबले मे 'आज' के दाओ की बात हल्की दिखाई देती है। वे हाल के दाओ को ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें एतमाद होता है कि वे असलाफ (पूर्वजों) की अज़्मतों के वारिस हैं फिर कौन उनका कुछ बिगाड़ सकता है।

ख़ुदा के मामले में ढिठाई आदमी को धीरे-धीरे बेहिस बना देती है। वह इस काबिल नहीं रहता कि वह नसीहत और याददिहानी की जबान में कोई इस्लाह क़ुबूल कर सके। ऐसे लोग गोया इस बात के मुंतजिर हैं कि ख़ुदा अजाब की जबान में उनके सामने जाहिर हो।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम,

अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक खुला हुआ निशान आ गया है। यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी की तौर पर है। पस इसे छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की जमीन में। और इसे कोई तकलीफ न पहुंचाना वर्ना तुम्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। और याद करो जबकि ख़ुदा ने आद के बाद तुम्हें उनका जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और तुम्हें जमीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और जमीन में फसाद करते न फिरो। (73-74)

कौमे आद की तबाही के बाद उसके नेक अफराद अरब के शिमाल मग़्रिब (उत्तर-पश्चिम) में हिज्र के इलाके में आबाद हुए। उनकी नस्ल बढ़ी और उन्होंने जराअत (कृषि) और तामीरात में बड़ी तरक्कियां कीं। उन्होंने मैदानों में महल बनाए और पहाड़ों को तराश कर उन्हें बड़े-बड़े पर्वतीय मकानात की सूरत दे दी। बाद में उनमें वे ख़राबियां पैदा हो गईं जो माद्दी तरक्की और दुनियावी ख़ुशहाली के साथ कौमों में पैदा होती हैं। ऐशपरस्ती, आख़िरत फरामोशी, अल्लाह की हदों से बेपरवाही, अल्लाह की बड़ाई को भूलकर अपनी बड़ाई कायम करना। उस वक्त अल्लाह ने हजरत सालेह को खड़ा किया ताकि वह उन्हें अल्लाह की पकड़ से डराएं। मगर उन्होंने नसीहत क़ुबूल न की। वे अपने बिगाड़ को सुधार में बदलने पर राजी न हुए। जिस कायनात में तमाम चीजें ख़ुदा की ताबेअ बनकर रह रही हैं वहां उन्होंने ख़ुदा का सरकश बनकर रहना चाहा। जहां हर चीज अपनी हद के अंदर अपना अमल करती है वहां उन्होंने अपनी हद से तजावुज करके जिंदा रहना चाहा। यह एक इस्लाहयाफ़्ता दुनिया में फसाद फैलाना था। चुनांचे उन्हें दुनिया में बसने के नाअहल करार दे दिया गया।

कौमे समूद को जांचने के लिए ख़ुदा ने एक ऊंटनी मुकर्रर की और कहा की इसे तकलीफ न पहुंचाना वर्ना हलाक कर दिए जाओगे। ख़ुदा के लिए यह भी मुमकिन था कि वह उनके लिए एक ख़ौफनाक शेर मुकर्रर कर दे। मगर ख़ुदा ने शेर के बजाए ऊंटनी को मुकर्रर फरमाया। इसका राज यह है कि आदमी की ख़ुदातरसी (ख़ुदा से डरने) का इम्तेहान हमेशा 'ऊंटनी' की सतह पर लिया जाता है न कि 'शेर' की सतह पर। समाज में हमेशा कुछ नाक़तुल्लाह (ख़ुदा की ऊंटनी) जैसे लोग होते हैं। ये वे कमजोर अफराद हैं जिनके साथ वह माद्दी जोर नहीं होता जो लोगों को उनके ख़िलाफ कार्रवाई करने से रोके। जिनके साथ हुस्ने सुलूक का मुहर्रिक (प्रेरक) सिर्फ अख़्लाकी एहसास होता है न कि कोई डर। मगर यही वे लोग हैं जिनकी सतह पर लोगों की ख़ुदापरस्ती जांची जा रही है। यही वे अफराद हैं जिनके जरिए किसी को जन्नत का सर्टिफिकेट दिया जा रहा है और किसी को जहन्नम का।

समूद ने फने तामीर (निर्माण कला) में कमाल पैदा किया। संबंधित उलूम मसलन रियाजी (गणित), हिंदिसा (गणना), इंजीनियरिंग में भी यकीनन उन्होंने जरूरी योग्यता हासिल की होगी वर्ना ये तरक्कियात मुमकिन न होतीं। मगर उन्हें जिस बात का मुजरिम ठहराया गया वे उनकी माद्दी तरक्कियां नहीं थीं बल्कि जमीन में फसाद फैलाना था। इसका मतलब यह है कि जाइज हुदूद में तरक्की करने से ख़ुदा नहीं रोकता। अलबत्ता जिंदगी के मामलात में आदमी को उस निजामे इस्लाह (सुधारतंत्र) का पाबंद रहना चाहिए जो ख़ुदा ने पूरी कायनात में क़ायम कर रखा है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِنْ لَا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ﴿٧٩﴾

उनकी कौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन मोमिनीन से बोले जो कमज़ोर समझे जाते थे, क्या तुम्हें यकीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुए हैं। उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं उस पर ईमान रखते हैं। वे मुतकब्बिर (घमंडी) लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज के मुंकिर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो। फिर उन्होंने ऊंटनी को काट डाला और अपने रब के हुक्म से फिर गए। और उन्होंने कहा, ऐ सालेह अगर तुम पैग़म्बर हो तो वह अजाब हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डराते थे। फिर उन्हें ज़लज़ले ने आ पकड़ा और वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। और सालेह यह कहता हुआ उन की बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी कौम, मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की मगर तुम ख़ैरख़्वाहों को पसंद नहीं करते। (75-79)

पैग़म्बर जब आता है तो अपने जमाने में वह एक विवादित शख़्सियत होता है न कि साबितशुदा शख़्सियत। मजीद यह कि उसके साथ दुनिया की रौनकें जमा नहीं होतीं, वह दुनिया की गद्दियों में से किसी गद्दी पर बैठा हुआ नहीं होता। यही वजह है कि जो लोग पैग़म्बर के मुआसिर (समकालीन) होते हैं वे पैगम्बर के पैगम्बर होने को समझ नहीं पाते और उसका इंकार कर देते हैं। उन्हें यकीन नहीं आता कि वह शख़्स जिसे हम सिर्फ एक मामूली आदमी की हैसियत से जानते हैं वही वह शख़्स है जिसे ख़ुदा ने अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए चुना है।

'हम सालेह के पैगाम पर ईमान लाए हैं' हजरत सालेह के साथियों का यह जवाब बताता है कि उनमें और दूसरों में क्या फर्क था। मुंकिरीन ने हजरत सालेह की शख़्सियत को देखा और मोमिनीन ने उनके अस्ल पैग़ाम को। मुंकिरों को हजरत सालेह की शख़्सियत में जाहिरी अज़्मत दिखाई नहीं दी, उन्होंने आपको नजरअंदाज कर दिया। इसके बरअक्स मोमिनीन ने हजरत सालेह के पैग़ाम में हक के दलाइल और सच्चाई की झलकियां देख लीं, वे फौरन उनके साथी बन गए। सच्चाई हमेशा दलाइल के जोर पर जाहिर होती है न कि दुनियावी अज़्मतों के

जोर पर। जो लोग दलाइल के रूप में हक को देखने की सलाहियत रखते हैं वे फौरन उसे पा लेते हैं। और जो लोग जाहिरी बड़ाइयों मे अटके हुए हों वे मुशतबह (भ्रमित) होकर रह जाते हैं। उन्हें कभी हक का साथ देने की तौफ़ीक हासिल नहीं होती।

हजरत सालेह की ऊंटनी को मारने वाला अगरचे कौम का एक सरकश आदमी था। मगर यहां उसे पूरी कौम की तरफ मंसूब करके फ़रमाया 'उन लोगों ने ऊंटनी को हलाक कर दिया' इससे मालूम हुआ कि किसी गिरोह का एक शख़्स बुरा अमल करे और दूसरे लोग उसके बुरे फेअल पर राजी रहें। तो सबके सब उस मुजरिमाना फेअल में शरीक करार दे दिए जाते हैं।

जो कौम ख़्वाहिशपरस्ती का शिकार हो उसे हकीकतपसंदी की बातें अपील नहीं करतीं। वे ऐसे शख़्स का साथ देने के लिए तैयार नहीं होती जो उसे संजीदा अमल की तरफ बुलाता हो। इसके बरअक्स जो लोग ख़ुशनुमा अल्फाज बोलें और झूठी उम्मीदों की तिजारत करें। उनके गिर्द भीड़ की भीड़ जमा हो जाती है। सच्चे ख़ैरख़्वाह के लिए उसके अंदर कोई कशिश नहीं होती। अलबत्ता उन लोगों की तरफ वह तेजी से दौड़ पड़ती है जो उसका इस्तहसाल (शोषण) करने के लिए उठे हों।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी कौम से कहा। क्या तुम खुली बेहयाई का काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया। तुम औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो। बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। मगर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज बनते हैं। फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घर वालों को, उसकी बीवी के सिवा जो पीछे रह जाने वालों में से बनी। और हमने उन पर बारिश बरसाई पत्थरों की, फिर देखो कि कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का। (80-84)

हजरत लूत हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। वह जिस कौम की तरफ पैग़म्बर बनाकर भेजे गए वह दरियाए उर्दुन के किनारे जुनूबी शाम के इलाके में आबाद थी। इस कौम की ख़ुशहाली उसे ऐशपरस्ती की तरफ ले गई। यहां तक कि उन लोगों की बेराहरवी इतनी बढ़ गई कि उन्होंने अपनी शहवानी ख़्वाहिशात (काम वासना) की तस्कीन के लिए हमजिन्सी (समलैंगिक) के तरीके को इख़्तियार कर लिया। पैग़म्बर ने उन्हें इस खुली हुई बेहयाई से डराया।

कायनात के लिए फ़ितरत की एक स्कीम है। इस स्कीम को क़ुरआन में इस्लाह (सुधार) कहा गया है। इस इस्लाह के ख़िलाफ चलने का नाम फ़साद है। कायनात की तमाम चीजें इसी इस्लाही रास्ते पर चल रही हैं। यह सिर्फ इंसान है जो अपनी आजादी का ग़लत फ़ायदा उठाता है और फ़ितरत के रास्ते के ख़िलाफ अपना रास्ता बनाता है। हज़रत लूत की कौम इसी क़िस्म के एक फ़साद में मुब्तिला थी। जिन्सी तअल्लुक़ का फ़ितरी तरीक़ा यह है कि औरत मर्द बाहम बीवी और शौहर बनकर रहें। यह इस्लाह के तरीके पर चलना है। इसके बरअक्स अगर यह हो कि मर्द मर्द या औरत औरत के दर्मियान जिन्सी तअल्लुक़ात क़ायम किए जाने लगें तो यह ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हद से गुज़र जाना है। यह वही चीज है जिसे क़ुरआन में फ़साद कहा गया है।

हज़रत लूत पर सिर्फ उनके क़रीबी लोगों में से चन्द अफ़राद ईमान लाए। बाक़ी पूरी कौम अपनी हवसपरस्ती में ग़र्क रही। उन्होंने कहा 'जब यह हम सब लोगों को गंदा समझते हैं और ख़ुद पाक बनना चाहते हैं तो गंदों में पाकों का क्या काम। 'फिर तो यह निकल जाएं हमारे शहर से' उनका यह कौल दरअस्ल घमंड का कौल था। उन्हें यह कहने की जुरअत इसलिए हुई कि वे अपनी अक्सरियत और माद्दी तरक़्क़ी की वजह से अपने को महफूज़ हालत में समझते थे। घमंड की नफ्सियात में मुब्तिला लोग हमेशा अपने कमजोर पड़ौसियों से कहते हैं कि जिन लोगों को हमारा तरीका पसंद नहीं वे हमारी जमीन को छोड़ दें। मगर यह ख़ुदा की दुनिया में शिर्क करना है और शिर्क सबसे बड़ा जुर्म है।

हज़रत लूत की कौम पर ख़ुदा का अजाब आया तो अजाब का शिकार होने वालों में पैग़म्बर की बीवी भी शामिल थी। इससे इनाम और सजा के बारे में ख़ुदा का बेलाग इंसाफ जाहिर होता है। ख़ुदा के इंसाफ के तराजू में रिश्तों और दोस्तियों को कोई लिहाज नहीं। ख़ुदा का फैसला इतना बेलाग है कि उसने हजरत नूह के बेटे, हजरत इब्राहीम के बाप, हजरत लूत की बीवी और हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के चचा को भी माफ नहीं किया। और दूसरी तरफ फिरऔन की बीवी ने नेक अमल का सुबूत दिया तो उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ
قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَٱلْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ
أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَٰحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوا۟ بِكُلِّ صِرَٰطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِهِۦ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ
وَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟
بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ
وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

और मदयन की तरफ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से दलील पहुंच चुकी है। पस नाप और तौल पूरी करो। और मत घटाकर दो लोगों को उनकी चीजें। और फ़साद न डालो जमीन में उसकी इस्लाह के बाद। यह तुम्हारे हक में बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और रास्तों पर मत बैठो कि डराओ और अल्लाह की राह से उन लोगों को रोको जो उस पर ईमान ला चुके हैं और उस राह में कजी (टेढ़) तलाश करो। और याद करो जबकि तुम बहुत थोड़े थे फिर तुम्हें बढ़ा दिया। और देखो फसाद करने वालों का अंजाम क्या हुआ। और अगर तुममें से एक गिरोह उस पर ईमान लाया है जो देकर मैं भेजा गया हूं और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इंतिजार करो यहां तक कि अल्लाह हमारे दर्मियान फैसला कर दे और वह बेहतर फैसला करने वाला है। (85-87)

हजरत इब्राहीम के एक बेटे मदयान थे जो आपकी तीसरी बीवी क़तूरा से पैदा हुए। अहले मदयन इन्हीं की नस्ल में से थे। यह कौम बहरे अहमर (लाल सागर) के अरब साहिल पर आबाद थी। ये लोग ख़ुदा को मानने वाले थे और अपने को दीने इब्राहीमी का हामिल समझते थे। मगर हजरत इब्राहीम के पांच सौ साल बाद उनके अंदर बिगाड़ आ गया। यह एक तिजारत पेशा कौम थी और उसके बिगाड़ का सबसे ज्यादा इज्हार इसी पहलू से हुआ। वे नाप तौल और लेन देने में दयानतदारी के उसूलों पर पूरी तरह क़ायम नहीं रहे।

दूसरे से मामला करने में बेइंसाफी ख़ुदा के क़ायमकरदा निजामे इस्लाह के ख़िलाफ है। ख़ुदा ने अपनी दुनिया का निजाम कामिल इंसाफ पर क़ायम किया है। यहां कोई भी चीज ऐसी नहीं जो लेते वक्त दूसरे से ज्यादा ले और देते वक्त दूसरे को कम दे। यहां हर चीज हिसाबी सेहत की हद तक इंसाफ के उसूल पर कायम है। ऐसी हालत में इंसान को भी वही करना चाहिए जो उसके गिर्द व पेश की सारी कायनात कर रही है। ऐसा न करना ख़ुदा की इस्लाहयाफ्ता दुनिया में फ़साद बरपा करना है।

अहले मदयन का मामलाती बिगाड़ जब बहुत बढ़ गया तो ख़ुदा ने हजरत शुऐब को उनकी तरफ अपना पैग़ाम लेकर भेजा। आपने उन्हें बताया कि मामलात में रास्ती (नेकी) और दयानतदारी का तरीका इख़्तियार करो। आपने खुले-खुले दलाइल के जरिए उन्हें आख़िरी हद तक बाख़बर कर दिया। मगर वे नसीहत कुबूल करने के लिए तैयार नहीं हुए। यहां तक कि उनका हाल यह हुआ कि ख़ुद हजरत शुऐब की दावत को मिटाने पर तुल गए। वे आपकी बातों में तरह-तरह के शोशे निकाल कर लोगों को आपके बारे में ग़लतफहमी में डालते। वे जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयों के जरिए कोशिश करते कि लोग आपका साथ न दें। बिलआख़िर उन पर ख़ुदाई अजाब आया और वे तबाह कर दिए गए। बंदों के हुक़ूक़ की रिआयत और बाहमी मामलात की दुरुस्तगी ख़ुदा की नजर में इतनी ज्यादा अहम है कि उसकी मुख़ालिफ़त पर एक कौम, ईमान की दावेदार होने के बावजूद तबाह कर दी गई। ख़ुदा बेहतर फैसला करने वाला है और बेहतर फैसला जानिबदारी (पक्षपात) के साथ नहीं हो सकता। यह मुमकिन नहीं कि ख़ुदा बेकलिमा वालों को उनकी बेइंसाफी पर पकड़े और कलिमा वालों को ठीक उसी बेइंसाफी पर छोड़ दे।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾

कौम के बड़े जो मुतकब्बिर (घमंडी) थे उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारी मिल्लत में फिर आ जाओ। शुऐब ने कहा, क्या हम बेजार हों तब भी। हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आएं बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे नजात दी। और हमसे यह मुमकिन नहीं कि हम उस मिल्लत मे लौट आएं मगर यह कि ख़ुदा हमारा रब ही ऐसा चाहे। हमारा रब हर चीज को अपने इल्म से घेरे हुए है। हमने अपने रब पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब, हमारे और हमारी कौम के दर्मियान हक के साथ फैसला कर दे, तू बेहतरीन फैसला करने वाला है। और उन बड़ों ने जिन्होंने उसकी कौम में से इंकार किया था कहा कि अगर तुम शुऐब की पैरवी करोगे तो तुम बर्बाद हो जाओगे। फिर उन्हें जलजले ने पकड़ लिया। पस वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था गोया वे कभी उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे। उस वक्त शुऐब उनसे मुंह मोड़ कर चला और कहा, ऐ मेरी कौम मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा चुका और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर चुका। अब मैं क्या अफसोस करूं मुंकिरों पर। (88-93)

हजरत शुऐब की कौम ख़ुदा के इंकार की मुजरिम न थी बल्कि ख़ुदा पर इफ्तिरा करने (झूठ गढ़ने) की मुजरिम थी। यानी उसने ख़ुदा की तरफ एक ऐसे दीन को मंसूब कर रखा था जिसे ख़ुदा ने उनके लिए उतारा न था। यही तमाम नबियों की कौमों का हाल रहा है। नबियों की कौमें सब वही थीं जिन पर इससे पहले ख़ुदा ने अपना दीन उतारा था मगर बाद को उन्होंने ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तब्दीलियों और इजाफों के जरिए उसे कुछ से कुछ कर दिया। उन्होंने ख़ुदा के दीन को अपनी ख़्वाहिशात का दीन बना डाला और उसी को ख़ुदा का दीन कहने लगे।

वक्त के कायमशुदा दीन में जिन लोगों को इज्जत व बड़ाई का मकाम मिला हुआ था उन्होंने महसूस किया कि दलील के एतबार से उनके पास पैग़म्बर की बातों का तोड़ नहीं है। ताहम इक्तेदार के जराए (सत्ता-संसाधन) सब उन्हीं के पास थे। उन्होंने दलील के मैदान में अपने को लाजवाब पाकर यह चाहा कि जोर व कुव्वत के जरिए वे पैग़म्बर को ख़ामोश कर दें। उन्होंने पैग़म्बर के साथियों को इस नाजुक सूरतेहाल की याद दिलाई कि वक्त के निजाम में जिंदगी के तमाम सिरे उन्हीं लोगों के पास हैं जिन्हें वे बातिल ठहरा रहे हैं। ये बातिल लोग अगर उनके ख़िलाफ सरगर्म हो जाएं तो इसके बाद वे जिंदगी के जराए कहां से पाएंगे। मगर वे भूल गए कि ख़ुदा उनसे भी ज्यादा ताकतवर है। और ख़ुदा जिसके ख़िलाफ हो जाए उसके लिए कहीं पनाह की जगह नहीं।

किसी शख़्स के लिए सिर्फ उस वक्त तक छूट है जब तक उस पर अम्रेहक (सच्चाई) वाजेह न हुआ हो। अम्रेहक जब बख़ूबी वाजेह हो जाए और इसके बाद भी आदमी सरकशी करे तो वह हमदर्दी का इस्तहक़ाक (अधिकार) खो देता है। इसी बुनियाद पर दुनिया में भी किसी मुजरिम के लिए सजा है और इसी बुनियाद पर आख़िरत (परलोक) में भी लोगों के लिए उनके जुर्म के मुताबिक सजा का फैसला होगा।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके बाशिन्दों को हमने सख़्ती और तकलीफ में मुब्तिला किया ताकि वे गिड़गिड़ाएं। फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया यहां तक कि उन्हें ख़ूब तरक्की हुई और वे कहने लगे कि तकलीफ और ख़ुशी तो हमारे बाप दादाओं को भी पहुंचती रही है। फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे इसका गुमान भी न रखते थे। और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उन पर आसमान और जमीन की नेमतें खोल देते। मगर उन्होंने झुठलाया तो हमने उन्हें

पकड़ लिया उनके आमाल के बदले। फिर क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ हो गए हैं कि उन पर हमारा अजाब रात के वक़्त आ पड़े जबकि वे सोते हों। या क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ हो गए हैं कि हमारा अज़ाब आ पहुंचे उन पर दिन चढ़े जब वे खेलते हों। क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों (युक्तियों) से बेख़ौफ हो गए हैं। पस अल्लाह की तदबीरों से वही लोग बेख़ौफ होते हैं जो तबाह होने वाले हों। (94-99)

हदीस में आया है कि मोमिन पर मुसीबतें आती रहती हैं। यहां तक कि वह गुनाहों से पाक हो जाता है। और मुनाफिक की मिसाल गधे की तरह है कि वह नहीं जानता कि उसके मालिक ने किस लिए उसे बांधा और क्यों छोड़ दिया।

ख़ुदा इंसान के ऊपर मुख़्तलिफ किस्म की तकलीफें डालता है ताकि उसका दिल नर्म हो। ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों पर से उसका एतमाद टूट जाए, उसका वह घमंड जाता रहे जो आदमी के लिए अपने से बाहर किसी सच्चाई को कुबूल करने में रुकावट बनता है। इस तरह ख़ुदाई इंतिजाम के तहत आदमी के अंदर कमी और बेचारगी की नफ्सियात पैदा की जाती है ताकि वह हक की आवाज पर कान लगाए। ख़ुदा का यह मामला आम लोगों के साथ भी होता है और पैग़म्बर के मुख़ातब गिरोह के साथ भी। ताहम यह मामला अल्लाह की सुन्नत (तरीके) के तहत रूपों-प्रतीकों में होता है। मसलन कोई आफत आती है तो वह असबाब व इलल (कारकों) के रूप में आती है। यह सूरतेहाल बहुत से लोगों के लिए फितना बन जाती है। वे यह कहकर उसे नजरअंदाज कर देते हैं कि यह तो एक होने वाली बात थी जो हो हुई। फिर जब वे मुसीबतों से असर नहीं लेते तो ख़ुदा उनके हालात बदल कर उन्हें ख़ुशहाली में मुब्तिला कर देता है। अब इस किस्म के लोग और भी ज्यादा मुग़ालते में पड़ जाते हैं। उन्हें यकीन हो जाता है कि यह महज हवादिसे रोजगार (काल-चक्र) की बात थी। यह वही आम उतार चढ़ाव था जो हमेशा लोगों के साथ पेश आता रहा है वर्ना क्या वजह है कि हमें बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन देखने को मिले। वे पहली तंबीह से भी सबक लेने से महरूम रहते हैं और दूसरी तंबीह से भी।

सरकशी के बाद किसी को तरक्की मिलना सख़्त ख़तरनाक है। यह इस बात की अलामत है कि ख़ुदा ने उसे ऐसी हालत में पकड़ने का फैसला कर लिया है जबकि वह अपने पकड़े जाने के बारे में ज्यादा से ज्यादा बेख़ौफ हो चुका हो।

ईमान और तक्वा की जिंदगी का फायदा अगरचे अस्लन आख़िरत में मिलने वाला है। ताहम अगर ख़ुदा चाहता है तो दुनिया में भी वह ऐसे लोगों को फराख़ी और इज्जत की सूरत में उनके अमल का इब्तिदाई इनाम दे देता है।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا

كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

क्या सबक नहीं मिला उन्हें जो जमीन के वारिस हुए हैं उसके अगले बाशिन्दों के बाद कि अगर हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके गुनाहों पर। और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है पस वे नहीं समझते। ये वे बस्तियां हैं जिनके कुछ हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं। उनके पास हमारे रसूल निशानियां लेकर आए तो हरगिज न हुआ कि वे ईमान लाएं उस बात पर जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इस तरह अल्लाह मुंकिरों के दिलों पर मुहर कर देता है। और हमने उनके अक्सर लोगों में अहद (वचन) का निबाह न पाया और हमने उनमें से अक्सर को नाफरमान (अवज्ञाकारी) पाया। (100-102)

जमीन पर बार-बार यह वाक्या होता है कि एक कौम को यहां इज्जत और ख़ुशहाली नसीब होती है। इसके बाद उस पर जवाल (पतन) आता है। वे मैदान से हटा दी जाती है और उसकी जगह दूसरी कौम इज्जत और ख़ुशहाली के तमाम मकामात पर काबिज हो जाती है।

यह वाकया ख़ुदा की एक निशानी है। वह आदमी को ख़ुदा की याद दिलाने वाला है। वह बताता है कि मिलने या न मिलने के सिरे किसी बालातर (उच्च) हस्ती के हाथ में हैं। वह जिसे चाहे दे और जिससे चाहे छीन ले। ख़ुदा ने इंसान को देखने और समझने की जो ताकत दी है उसे काम में लाकर वह बाआसानी इस हकीकत को समझ सकता है। वह जान सकता है कि अस्ल सरचश्मा (स्रोत) अगर किसी और के हाथ में न होता तो जो गिरोह एक बार ग़ालिब आ जाता वह कभी दूसरे को ऊपर आने न देता। आदमी अगर इस किस्म का सबक ले तो कौमों के उरूज व जवाल (उत्थान-पतन) में उसे रब्बानी ग़िजा मिलेगी। मगर जब भी एक कौम पीछे हटती है और उसकी जगह दूसरी कौम ऊपर आती है तो उसके अफराद इस ग़लतफहमी में पड़ जाते हैं कि पिछली कौम के साथ जो कुछ हुआ वह सिर्फ पिछली कौम के लिए था, हमारे साथ ऐसा कभी नहीं होगा।

ख़ुदा ने आंख और कान और अक्ल की सलाहियत इंसान को इसलिए दी है कि वह इससे सबक ले, वह इनके जरिये ख़ुदा के इशारात को समझे। मगर जब आदमी अपनी इन सलाहियतों से वह काम नहीं लेता जो उसे लेना चाहिए तो इसके बाद लाजिमी तौर पर ऐसा होता है कि ख़ुदा के कानून के तहत उसके दिल की हस्सासियत (संवेदनशीलता) मुर्दा होने लगती है। यहां तक कि इन मामलात में उसके जज्बात कुंद होकर रह जाते हैं। उसके दिल व दिमाग़ पर बेहिसी की मुहर लग जाती है। अब उसका हाल यह हो जाता है कि वह देखने के बावजूद न देखे और सुनने के बावजूद न सुने। वह अक्ल रखते हुए भी बातों को न समझे। वह इंसान होते हुए बेइंसान बन जाए।

इंसानियत का आग़ाज हजरत आदम के मोमिनीन से हुआ। इसके बाद जब बिगाड़ हुआ तो याददिहानी के लिए ख़ुदा के पैग़म्बर आए। अब यह हुआ कि पैग़म्बर के जरिए इस्लाह (सुधार) कुबूल करने वाले अफराद को बचाकर उन लोगों को हलाक कर दिया गया जिन्होंने

इस्लाह कुबूल करने से इंकार किया था। मगर बाद की नस्लें दुबारा अपने पैग़म्बर के हाथ पर किए हुए इस्लाम के अहद को भुला बैठीं और दुबारा वही अंजाम पेश आया जो पहली बार मोमिनीने आदम को पेश आया था। यह सूरत बार-बार पेश आती रही यहां तक कि नस्ले इंसानी की अक्सरियत के लिए तारीख़ नाफरमानी और अहदशिकनी (वचन-भंग) की तारीख़ बन गई।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ مُوسَى يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيقٌ عَلَى أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ
مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ
بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُبِينٌ ﴿١٠٧﴾
وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا
لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾ قَالُوا
أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा फिरऔन और उसकी कौम के सरदारों के पास। मगर उन्होंने हमारी निशानियों के साथ ज़ुल्म किया। पस देखो कि मुफ्सिदों (फसाद करने वालों) का क्या अंजाम हुआ। और मूसा ने कहा ऐ फिरऔन, मैं परवरदिगारे आलम की तरफ से भेजा हुआ आया हूं। सजावार हूं कि अल्लाह के नाम पर कोई बात हक के सिवा न कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से खुली हुई निशानी लेकर आया हूं। पस तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फिरऔन ने कहा, अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। तब मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक साफ अजदहा बन गया। और उसने अपना हाथ निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था। फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी जमीन से निकाल दे। अब तुम्हारी क्या सलाह है। उन्होंने कहा, मूसा को और उसके भाई को मोहलत दो और शहरों में हरकारे भेजो कि वे तुम्हारे पास सारे माहिर जादूगर ले आएं। (103-112)

पैग़म्बर का ख़िताब अव्वलन उन लोगों से होता है जो वक्त के सरदार हों, जिन्हें माहौल में फ़िक्री कयादत (वैचारिक नेतृत्व) हासिल हो। ये लोग अपनी बरतर जेहनी सलाहियत की वजह से सबसे ज्यादा इस पोजीशन में होते हैं कि सच्चाई के पैग़ाम को उसकी गहराई के साथ

समझ सकें। मगर तारीख़ बताती है कि इन लोगों ने पैग़म्बराना दावत के साथ हमेशा 'ज़ुल्म' का सुलूक किया। यानी अपनी जहानत को इसके लिए इस्तेमाल किया कि हक के पैग़ाम को टेढ़े मअना पहनाएं। मसलन एक निशानी जो यह साबित कर रही हो कि वह ख़ुदा के जोर पर जाहिर हुई है उसके मुतअल्लिक यह कह देना कि यह जादू के जोर पर दिखाई गई है। या तहरीक को बदनाम करने के लिए उसे सियासी मअना पहनाना और यह कहना कि ये लोग महज अपने इक्तेदार के लिए उठे हैं। अवाम चूंकि बातों का तज्ज़िया (विश्लेषण) नहीं कर पाते इसलिए इस किस्म की बातें उन्हें हक से मुशतबह करने का सबब बन जाती हैं। मगर हक के दाअी के ख़िलाफ ऐसे शोशे निकालना बहुत बड़ा जुर्म है। इस तरह वक्त के बड़े अपनी कयादत (नेतृत्व) [illegible] (सुरक्षा) तो जरूर कर लेते हैं मगर यह तहफ़्फ़ुज़ उन्हें सिर्फ इस कीमत पर मिलता है कि उनकी आख़िरत हमेशा के लिए ग़ैर महफूज हो जाए।

ख़ुदा कामिल हक पर है। इसलिए जो शख़्स ख़ुदा की तरफ से उठे उसके लिए जाइज नहीं कि वह हक व इंसाफ के सिवा कोई दूसरा कलिमा अपनी जबान से निकाले। अगर वह हक के सिवा कोई बात बोले तो वह ख़ुदा की नुमाइंदगी के इस्तहकाक (अधिकार) को खो देगा और ख़ुदा के यहां इनाम के बजाए सजा का मुस्तहिक हो जाएगा।

हजरत मूसा एक ही वक्त में बनी इस्राईल की तरफ भी मबऊस थे और फिरऔन और उसकी किब्ती कौम की तरफ भी। बनी इस्राईल में उस वक्त अगरचे बहुत सी कमजोरियां आ चुकी थीं। ताहम बुनियादी तौर पर उन्होंने हजरत मूसा का साथ दिया। इसके बरअक्स फिरऔन और उसकी कौम ने (चन्द अफराद को छोड़कर) आपका इंकार किया। बिलआख़िर चालीस साला तब्लीग़ के बाद आपने बनी इस्राईल के साथ मिस्र से हिजरत करने का फैसला किया। आपने फिरऔन से मुतालबा किया कि बनी इस्राईल को मुल्क से बाहर जाने दे ताकि वे बयाबान की खुली फज़ा में जाकर एक ख़ुदा की इबादत कर सकें। (ख़ुरूज 16)। हजरत मूसा अगरचे सच्चाई के नुमाइंदे थे। मगर फिरऔन ने उसे जादू का मामला समझा और जादूगरों के जरिये आपको जेर (परास्त) करने का फ़ैसला किया।

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ
وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾ قَالُوا يَا مُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ
نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾ قَالَ أَلْقُوا فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ
وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ
تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوا هُنَالِكَ
وَانْقَلَبُوا صَاغِرِينَ ﴿١١٩﴾ وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾
رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए। उन्होंने कहा, हमें इनाम तो जरूर मिलेगा अगर हम ग़ालिब (विजित) रहे। फ़िरऔन ने कहा, हां और यकीनन तुम हमारे मुकर्रबीन (निकटवर्तियों) में दाख़िल होगे। जादूगरों ने कहा, या तो तुम डालो या हम डालने वाले बनते हैं। मूसा ने कहा, तुम ही डालो। फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन पर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा करतब दिखाया, और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि अपना असा (डंडा) डाल दो। तो अचानक वह निगलने लगा उसे जो उन्होंने गढ़ा था। पस हक जाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था बातिल होकर रह गया। पस वे लोग वहीं हार गए और जलील होकर रहे। और जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रब्बुलआलमीन (सृष्टि-प्रभु) पर जो रब (प्रभु) है मूसा और हारून का। (113-122)

किसी माहौल में जिस चीज की अहमियत लोगों के जेहनों पर छाई हुई हो उसी निस्बत से उनके पैग़म्बर को मोजिजा (चमत्कार) दिया जाता है। कदीम मिस्र में जादू का बहुत जोर था इसलिए हजरत मूसा को उसी नौइयत का मोजिजा दिया गया।

फ़िरऔन के तैकरदा प्रोग्राम के मुताबिक मिस्रियों के कौमी त्यौहार (योमुलज़्ज़ीनह) के मौके पर उनके तमाम बड़े-बड़े जादूगर जमा हुए। जादूगरों ने कहा कि पहले हम अपना करतब सामने लाएं या तुम जो कुछ दिखाना चाहते हो दिखाओगे। हजरत मूसा ने कहा पहले तुम अपना करतब सामने लाओ। चुनांचे ऐसा ही हुआ। इससे मालूम होता है कि पैग़म्बर अपने दुश्मन के ख़िलाफ इक्दाम करने में कभी पहल नहीं करता। वह आख़िर वक्त तक दुश्मन को मौका देता है कि वह .ख़ुद पहल करे। मुख़ालिफ फ़रीक जब इस तरह पहल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले चुका होता है उस वक्त पैग़म्बर अपनी पूरी कुव्वत को इस्तेमाल करके उसे जेर कर देता है। नजरियाती दावत के मामले में पैग़म्बर का तरीका इक्दाम का होता है और अमली टकराव के मामले में दिफाअ (प्रतिरक्षा) का।

मिस्र में हजरत मूसा की दावत तकरीबन चालीस साल तक जारी रही है। जादूगरों से मुकाबले का वाक्या उसके आख़िरी जमाने का है। इससे कयास किया जा सकता है कि जादूगर हजरत मूसा की दावत से आशना रहे होंगे। ताहम अभी तक उनकी आंख का पर्दा नहीं हटा था। जब उन्होंने अपन मख़सूस फन के मैदान में हजरत मूसा की बरतरी देखी तो हिजाबात उठ गए। उन्हें नजर आ गया कि यह जादूगरी का मामला नहीं बल्कि .ख़ुदाई पैग़म्बरी का मामला है। वे बेइख़्तियार होकर .ख़ुदा के सामने गिर पड़े।

जादूगरों ने अपनी लाठियां और रस्सियां फेंकीं तो ख़्यालबंदी (दृष्टि भ्रम) की वजह से वे लोगों को चलता फिरता सांप नजर आने लगीं। मगर जब हजरत मूसा का असा (डंडा) सांप बनकर मैदान में घूमा तो जादूगरों की हर लाठी और रस्सी सिर्फ लाठी और रस्सी होकर रह गई। जादूगर जादू के हुदूद को जानते थे। इस वाकये में जादूगरों को नजर आ गया कि इंसानी तदबीरें अपने आख़िरी कमाल पर पहुंच कर भी कितनी हकीर हैं और .ख़ुदा कितना अजीम और कितना ज्यादा ताकतवर है। इसके बाद फ़िरऔन उन्हें अपने तमाम इक्तेदार के

बावजूद बेवकअत नजर आने लगा। वही जादूगर जो .ख़ुदा की अज्मत को देखने से पहले फ़िरऔन से इनाम के तालिब थे। अब उन्होंने फ़िरऔन की तरफ से बदतरीन सजाओं की धमकी को भी इस तरह नजरअंदाज कर दिया जैसे उसकी कोई हकीकत ही नहीं।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

फ़िरऔन ने कहा, तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं। यकीनन यह एक साजिश है जो तुम लोगों ने शहर में इस ग़रज से की है कि तुम उसके बाशिन्दों को यहां से निकाल दो, तो तुम बहुत जल्द जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पाओं मुख़ालिफ सम्तों से काटूंगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने कहा, हमें अपने रब ही की तरफ लौटना है। तू हमें सिर्फ इस बात की सजा देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियां जब हमारे सामने आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ रब, हम पर सब्र उंडेल दे और हमें वफात दे इस्लाम पर। (123-126)

हक के लिए जान कुर्बान करना हक के हक होने की आख़िरी गवाही देना है। जादूगरों को .ख़ुदा की मदद से इसी की तौफीक हासिल हुई। जादूगरों ने अपने आपको सख़्ततरीन सजा के लिए पेश करके यह साबित कर दिया कि उनका हजरत मूसा पर ईमान लाना कोई हीला और साजिश का मामला नहीं, यह सच्चे एतराफे हक का मामला है। मगर जादूगरों का सबसे बड़ा अमल फ़िरऔन की मुतकब्बिराना नफ्सियात (अहं भाव) के लिए सबसे बड़ा ताजयाना प्रहार था। उन्होंने फ़िरऔन के मुकाबले में हजरत मूसा का साथ देकर फ़िरऔन को सारी कौम के सामने रुसवा कर दिया था। चुनांचे फ़िरऔन उनके ख़िलाफ ग़ुस्से से भर गया। उसने जादूगरों के साथ उसी जालिमाना कार्रवाई का फैसला किया जो हर वह मुतकब्बिर शख़्स करता है जिसे जमीन पर किसी किस्म का इख़्तियार हासिल हो जाए। जादूगर भी दलील के मैदान में हारे और फ़िरऔन भी। मगर जादूगर अपनी शिकस्त का एतराफ करके .ख़ुदा की अबदी नेमतों के मुस्तहिक बन गए और फ़िरऔन ने इसे अपनी इज्जत का मसला बना लिया। उसके हिस्से में सिर्फ यह आया कि अपनी झूठी अनानियत अहंकार की तस्कीन के लिए दुनिया में वह हकपरस्तों पर जुल्म करे और आख़िरत में .ख़ुदा के अबदी अजाब में डाल दिया जाए।

फ़िरऔन ने मूसा की दावत को कुबूल करने या न करने को अपनी 'इजाजत' का मसला समझा। और जादूगरों ने 'निशानी' का। मुतकब्बिर (घमंडी) आदमी का मिजाज हमेशा यह होता है कि वह अपनी मर्जी को सबसे ज्यादा अहम समझता है न कि दलील और सुबूत को। ऐसे

लोग कभी हक को कुबूल करने की तौफीक नहीं पाते।

इस नाज़ुकतरीन मौके पर जादूगरों ने जो कामिल इस्तिकामत (दृढ़ता) दिखाई वह सरासर ख़ुदा की मदद से थी और उनकी जबान से जो दुआ निकली वह भी तमामतर इल्हामी दुआ थी। जब कोई बंदा अपने आपको हमह-तन (पूर्णतः) ख़ुदा के हवाले कर देता है तो उस वक्त वह ख़ुदा के इतना करीब हो जाता है कि उसे ख़ुदा का ख़ुसूसी फैजान पहुंचने लगता है। उस वक्त उसकी जबान से ऐसे कलिमात निकलते हैं जो ख़ुदा के इल्का किए हुए होते हैं। उस वक्त वह वही दुआ करता है जिसके मुतअल्लिक उसका ख़ुदा पहले ही फैसला कर चुका होता है कि वह उसके लिए कुबूल कर ली गई है।

जादूगरों का यह कहना कि ख़ुदाया हमारे ऊपर सब्र उंडेल दे और हमारी मौत आए तो इस्लाम पर आए, दूसरे लफ्जों में यह कहना है कि हमने अपने बसभर अपने आपको तेरे हवाले कर दिया है। अब जो कुछ हमारे बस से बाहर है उसके वास्ते तू हमारे लिए काफी हो जा। जब भी कोई बंदा दीन की राह में दिल से यह दुआ करता है तो ख़ुदा यकीनन उसकी मुश्किलात में उसके लिए काफी हो जाता है।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوا أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी कौम को छोड़ देगा कि वे मुल्क में फसाद फैलाएं और तुझे और तेरे माबूदों (पूज्यों) को छोड़ें। फिरऔन ने कहा हम उनके बेटों को कत्ल करेंगे और उनकी औरतों को जिंदा रखेंगे। और हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो। जमीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है। और आख़िरी कामयाबी अल्लाह से डरने वालों ही के लिए है। मूसा की कौम ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी। मूसा ने कहा करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और बजाए उनके तुम्हें इस सरजमीन का मालिक बना दे, फिर देखे कि तुम कैसा अमल करते हो। (127-129)

बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर के सामने जो मसला पेश किया वह हुकूमत का पैदा किया हुआ था। मगर पैग़म्बर ने इसका जो हल बताया वह यह था कि अल्लाह की तरफ रुजूअ करो।

इससे अंदाजा होता है कि कौमी मसाइल के बारे में दुनियादार लीडरों के सोचने के अंदाज और पैग़म्बर के सोचने के अंदाज में क्या फर्क है। दुनियादार लीडर इस किस्म के मसले का हल हुकूमत की सतह पर तलाश करता है, चाहे वह हुकूमत से मुसालेहत की सूरत में हो या हुकूमत से तसादुम (टकराव) की सूरत में। मगर पैग़म्बर ने जो हल बताया वह यह था कि जो कुछ हो रहा हो उसे बर्दाश्त करते हुए ख़ुदा से मदद के तालिब बनो, हुकूमत की तरफ से बेनियाज होकर ख़ुदा की तरफ रुजूअ करो।

फिर पैग़म्बर ने यह भी बता दिया कि वह आम कौमी जौक के ख़िलाफ जो हल पेश कर रहा है वह क्यों पेश कर रहा है। इसकी वजह यह है कि ये मसाइल अगरचे बजाहिर इक्तेदार (सत्ता) की तरफ से पेश आ रहे हैं और बजाहिर इक्तेदार ही के जरिए उनका हल भी निकलेगा। मगर ख़ुद इक्तेदार कैसे किसी को मिलता है। वह महज अपनी तदबीरों से किसी को नहीं मिल जाता बल्कि बराहेरास्त ख़ुदा की तरफ से किसी को दिए जाने का फैसला होता है और किसी से छीने जाने का। जब इक्तेदार का तअल्लुक ख़ुदा से है तो मसले के हल की जड़ भी यकीनन ख़ुदा ही के पास हो सकती है।

फिर यह कि यह इक्तेदार जिसे भी दिया जाए वह हकीकतन उसके हक में आजमाइश होता है। इस दुनिया में बेताकती भी आजमाइश है और ताकतवर होना भी आजमाइश। आज जिसके पास इक्तेदार है, उसके पास भी इसी लिए है कि उसे आजमाया जाए कि वह जालिम और मुतकब्बिर बनता है या इंसाफ और तवाजोअ (विनम्रता) की रविश इख़्तियार करता है। इसके बाद जब इक्तेदार (सत्ता) का फैसला तुम्हारे हक में किया जाएगा उस वक्त भी इसका मक्सद तुम्हें जांचना ही होगा। जिस तरह एक गिरोह की नाअहली की बिना पर उससे इक्तेदार छीन कर किसी दूसरे गिरोह को दिया जाता है इसी तरह दूसरा गिरोह अगर नाअहल साबित हो तो उससे भी छीन कर दुबारा किसी और को दे दिया जाएगा।

ख़ुशहाली और इक्तेदार (सत्ता) जिसे आदमी दुनिया में चाहता है वह हकीकत में आख़िरत में मिलने वाली चीज है। क्योंकि दुनिया में ये चीजें बतौर आजमाइश मिलती हैं और आख़िरत में वे बतौर इनाम ख़ुदा के नेक बंदों को दी जाएंगी।

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾ فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَٰذِهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

और हमने फिरऔन वालों को कहत (अकाल) और पैदावार की कमी में मुब्तिला किया ताकि उन्हें नसीहत हो। लेकिन जब उन पर ख़ुशहाली आती तो कहते कि यह हमारे

लिए है और अगर उन पर कोई आफत आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत बताते। सुनो, उनकी बदबख़्ती तो अल्लाह के पास है मगर उनमें से अक्सर नहीं जानते। और उन्होंने मूसा से कहा, हमें मस्हूर (जादू ग्रस्त) करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (130-132)

किसी बात को ग़लत कहना हो तो उसका ग़लत होना लफ्ज़ों की सूरत में बताया जाता है और किसी बात को सही कहना हो तो उसे भी लफ्ज़ों ही के जरिए सही कहा जाता है। इसी तरह किसी को मुजरिम क़रार देना हो तो उसे लफ्ज़ों के जरिए मुजरिम क़रार दिया जाता है और अगर किसी को हक पर जाहिर करना हो तो उसका हक पर होना भी लफ्ज़ों में बताया जाता है। मगर अल्फाज का इस्तेमाल करने वाला इंसान है और मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इंसान को यह इख़्तियार हासिल है कि वह अल्फाज को जिस तरह चाहे अपनी मर्जी के मुताबिक इस्तेमाल करे।

इम्तेहान की इस दुनिया में आदमी को जो आजादी दी गई है उसमें सबसे ज्यादा नाज़ुक आजादी यह है कि वह हक को बातिल कहने के लिए भी अल्फाज पा लेता है और बातिल को हक कहने के लिए भी। वह एक खुले हुए पैग़म्बराना मोजिजे को जादू कहकर नजरअंदाज कर सकता है। ख़ुदा उसे कोई नेमत दे तो वह उसे ऐसे अल्फाज में बयान कर सकता है गोया कि उसे जो कुछ मिला है अपनी सलाहियतों (क्षमताओं) और कोशिशों की बदौलत मिला है। हक को नजरअंदाज करने की वजह से ख़ुदा उसके ऊपर कोई तंबीही (सचेतक) सज़ भेजे तो वह आजाद है कि उसे वह उन्हीं ख़ुदापरस्त बंदों की नहूसत का नतीजा करार दे दे जिनके साथ बुरा रवैया इख़्तियार करने ही की वजह से उस पर यह तंबीह आई है। ख़ुदा की तरफ से हर बात इसलिए आती है कि आदमी उससे नसीहत पकड़े। मगर अल्फाज के जरिए आदमी हर नसीहत को एक उल्टा रुख़ दे देता है और उसके अंदर जो सबक का पहलू है उसे पाने से महरूम रह जाता है।

'तुम चाहे कोई भी निशानी दिखाओ हम ईमान नहीं लाएंगे' फिरऔन का यह जुमला बताता है कि हक अपनी मुकम्मल सूरत में मौजूद होने के बावजूद सिर्फ उसी को मिलता है जो उसे पाना चाहे। बअल्फाज दीगर, जो शख़्स हक के मामले में संजीदा हो, जिसके अंदर वाक़ई (सचमुच) यह आमादगी हो कि हक चाहे जहां और जिस सूरत में भी मिले वह उसे ले लेगा, उस पर हक का हक होना खुलता है। इसके बरअक्स जो शख़्स इस मामले में संजीदा न हो। जिसका हाल यह हो कि जो कुछ उसके पास है बस उसी पर वह मुतमइन (संतुष्ट) है वह हक (सत्य) को हक की सूरत में देखने से आजिज रहेगा और इसीलिए वह उसे इख़्तियार भी न कर सकेगा। अपने हाल पर मगन रहना आदमी को अपने से बाहर की चीजों के लिए बेख़बर बना देता है। वह जानकर भी नहीं जानता, वह सुनकर भी नहीं सुनता।

आदमी अगर ग़ैर मुतअस्सिर (निष्पक्ष) जेहन के तहत सोचे तो वह जरूर हकीकत को पा लेगा। मगर अक्सर लोग अपनी नफ्सियात (मानसिकता) के जेरेअसर राय क़ायम करते हैं, यही वजह है कि वे हकीकत को पाने में नाकाम रहते हैं।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَا مُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ ۖ لَئِن كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٣٤﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُم بَالِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿١٣٥﴾

फिर हमने उनके ऊपर तूफान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक और ख़ून। ये सब निशानियां अलग-अलग दिखाईं। फिर भी उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मुजरिम लोग थे। और जब उन पर कोई अजाब पड़ता तो कहते ऐ मूसा, अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है। अगर तुम हम पर से इस अजाब को हटा दो तो हम जरूर तुम पर ईमान लाएंगे और तुम्हारे साथ बनी इस्राईल को जाने देंगे। फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफत को कुछ मुद्दत के लिए जहां बहरहाल उन्हें पहुंचना था तो उसी वक्त वे अहद (वचन) को तोड़ देते। (133-135)

हजरत मूसा ने मिस्र में तकरीबन 40 साल तक पैग़म्बरी की। आपके मिशन के दो अज्जा थे। एक, फिरऔन को तौहीद का पैग़ाम देना। दूसरे, बनी इस्राईल को मिस्र से निकाल कर सहराए सीना में ले जाना और वहां आजादाना फजा में उनकी दीनी तर्बियत करना। बनी इस्राईल (हज़रत याकूब की औलाद) उस वक्त शदीद तौर पर किब्ती बादशाह (फिरऔन) की गिरफ्त में थे। किब्ती कौम उन्हें अपने जराअती (कृषि) और तामीरी कामों में बतौर मजदूर इस्तेमाल करती थी। इसलिए किब्ती हुक्मरां नहीं चाहते थे कि बनी इस्राईल मिस्र से बाहर चले जाएं।

हजरत मूसा ने इब्तदा में जब फिरऔन से मुतालबा किया कि बनी इस्राईल को मेरे साथ मिस्र से बाहर जाने दे तो फिरऔन और उसके दरबारियों ने उसे सियासी मअना पहना कर आप पर यह इल्जाम लगाया कि वह किब्ती कौम को मिस्र से निकाल देना चाहते हैं। (110) यह बात सरासर बेमअना (अर्थहीन) थी। क्योंकि हजरत मूसा का मंसूबा तो ख़ुद अपने आपको मिस्र से बाहर ले जाने का था, और फिरऔन ने यह उल्टा इल्जाम लगाया कि वह किब्तियों को उनके मुल्क से बाहर निकाल देना चाहते हैं। उस वक्त फिरऔन और उसके साथी इक्तेदार (सत्ता) के घमंड में थे इसलिए सीधी बात भी उन्हें टेढ़ी नजर आई।

मगर बाद के मरहले में ख़ुदा ने फिरऔन और उसकी कौम पर हर तरह की बलाएं नाजिल कीं। उन पर कई साल तक मुसलसल कहत (अकाल) पड़े। शदीद गरज चमक के साथ ओलों का तूफान आया। टिड्डियों के दल के दल आए जो फस्ल और बाग़ को खा गए और हर किस्म की सब्जी का ख़ात्मा कर दिया। जुएं और मेंढक इस कसरत से हो गए कि कपड़ों और बिस्तरों पर जुएं ही जुएं थीं और घरों और रास्तों में हर तरफ मेंढक ही मेंढक

कूदने लगे। दरियाओं और तालाबों का पानी ख़ून हो गया। फिरऔन और उसकी कौम जब इन अजीब व गरीब मुसीबतों में मुब्तिला हुए तो वे कह उठे कि ख़ुदा अगर इन मुसीबतों को हमसे टाल दे तो हम बनी इस्राईल को मूसा के साथ जाने देंगे। हजरत मूसा के जिस मुतालबे में पहले किब्तियों के इख़्राज (निष्कासन) की सियासी साजिश दिखाई दी थी वह अब ख़ुद बनी इस्राईल की हिजरत के हममअना नजर आने लगी।

आदमी अपने को महफूज हालत में पा रहा हो तो वह तरह-तरह की बातें बनाता है। मगर जब उससे हिफ़ाज़त छीन ली जाए और उसको इज्ज और बेबसी के मक़ाम पर खड़ा कर दिया जाए तो अचानक वह हकीकतपसंद बन जाता है। अब वह बात ख़ुद ही उसकी समझ में आ जाती है जो पहले समझाने के बाद भी समझ में नहीं आती थी। मगर इंकार की ताकत रखते हुए इक़रार करने का नाम इक़रार है। अल्फ़ाज छिन जाने के बाद कोई इक़रार इक़रार नहीं।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ڏ بِمَا صَبَرُوْا ۭ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝

फिर हमने उन्हें सजा दी और उन्हें समुद्र में ग़र्क कर दिया क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह हो गए। और जो लोग कमजोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस सरजमीन के पूरब व पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और बनी इस्राईल पर तेरे रब का नेक वादा पूरा हो गया इस सबब से कि उन्होंने सब्र किया और हमने फिरऔन और उसकी कौम का वह सब कुछ बर्बाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे। (136-137)

नबियों की मुख़ातब कौमों पर जो अजाब आता है वह आयतों की तक्जीब की वजह से आता है। यानी निशानियों को झुठलाना। इसके मुकाबले में नबियों के साथियों पर जो ख़ुसूसी नुसरत (मदद) उतरती है उसका इस्तहक़ाक़ (पात्रता) उन्हें सब्र की वजह से हासिल होता है। यानी अपने जज्बात को थाम कर अल्लाह के तरीके पर साबित क़दम रहना।

निशानियों से मुराद वे दलाइल हैं जो हक को हक साबित करने वाले होते हैं मगर आदमी अपनी मुतकब्बिराना नफ्सियात (अहं-भाव) की वजह से उन्हें मानने पर कादिर नहीं होता। वह दलील के मामले को दलील पेश करने वाले का मामला बना लेता है। वह समझता है कि अगर मैंने यह दलील मान ली तो फलां शख़्स के मुकाबले में मेरा मर्तबा घट जाएगा। वह दलील पेश करने वाले के मुकाबले में अपने को बाला (उच्च) रखने की ख़ातिर दलील की बालातरी (उच्चता) को तस्लीम नहीं करता। मगर यही इंसान की आजमाइश का अस्ल मकाम

है। मौजूदा दुनिया में ख़ुदा निशानियों या दलाइल के पर्दे में जाहिर होता है, आख़िरत में वह बेहिजाब होकर जाहिर हो जाएगा। मगर ईमान वही मौतबर है जबकि आदमी पर्दादारी के साथ जाहिर होने वाले हक को पा ले। बेहिजाबी के साथ जाहिर होने वाले हक को मानना सिर्फ आदमी के जुर्म को साबित करेगा न कि वह उसे इनाम का मुस्तहिक बनाए। ऐसा इकरार सिर्फ इस बात का सुबूत होगा कि आदमी ने अपनी बेपरवाही की वजह से हक को ना जाना। अगर वह उसके बारे में संजीदा होता तो यकीनन वह उसे जान लेता।

इसके मुकाबले में ख़ुदा के वफादार बंदे हैं जिनकी सबसे नुमायां ख़ुसूसियत सब्र है। हकीकत यह है कि ईमान की जिंदगी सरासर सब्र की जिंदगी है। अपने जैसे एक इंसान की जबान से हक का एलान सुनकर उसे मान लेना, आदतों और मस्लेहतों पर कायमशुदा जिंदगी को हक और उसूल की बुनियाद पर कायम करना, लोगों की तरफ से पेश आने वाली ईजाओं (यातनाओं) को ख़ुदा के ख़ातिर नजरअंदाज करना, हक के मुख़ालिफ़ीन की डाली हुई मुसीबतों से पस्तहिम्मत न होना, ये सब ईमान के लाजिमी मराहिल (चरण) हैं और आदमी सब्र के बग़ैर इन मराहिल से कामयाबी के साथ गुजर नहीं सकता।

फिरऔन को अपने इक्तेदार पर और अपने बाग़ों और इमारतों पर घमंड था। हजरत मूसा की हिजरत के बाद फिरऔन और उसका लश्कर समुद्र में ग़र्क कर दिया गया। ओलों और टिड्डियों ने मिस्र के सरसब्ज व शादाब बाग़ात को उजाड़ दिया और जलजलों ने उनकी शानदार इमारतें ढा दीं। दूसरी तरफ हजरत मूसा की चन्द नस्लों के बाद हजरत दाऊद और हजरत सुलेमान के जमाने में बनी इस्राईल अतराफे मिस्र (शाम व फिलिस्तीन) पर काबिज हो गए। निशानियों को झुठलाने वाले हमेशा ख़ुदा के ग़जब के मुस्तहिक होते हैं और सब्र करने वाले हमेशा ख़ुदा की नुसरत के।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰي قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓي اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْـهَلُوْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका गुजर एक ऐसी कौम पर हुआ जो पूजने में लग रहे थे अपने बुतों के। उन्होंने कहा ऐ मूसा, हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बना दे जैसे इनके बुत हैं। मूसा ने कहा, तुम बड़े जाहिल लोग हो। ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं वह बातिल है। उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे

लिए तलाश करूं हालांकि उसने तुम्हें तमाम अहले आलम पर फजीलत (श्रेष्ठता) दी है। और जब हमने फिरऔन वालों से तुम्हें नजात दी जो तुम्हें सख़्त अजाब में डाले हुए थे। तुम्हारे बेटों को कत्ल करते और तुम्हारी औरतों को जिंदा रहने देते और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी बड़ी आजमाइश थी। (138-141)

बनी इस्राईल बहरे अहमर (लाल सागर) के शिमाली (उत्तरी) सिरे को पार करके जजीरा नुमाए सीना में पहुंचे। फिर शिमाल से जुनूब (दक्षिण) की तरफ समुद्र के किनारे-किनारे अपना सफर शुरू किया। इस दर्मियान में किसी मकाम से गुजरते हुए बनी इस्राईल ने एक कौम को देखा कि वह बुत की परस्तिश में मशग़ूल है। उस वक्त बनी इस्राईल के कुछ लोगों ने (न कि सारे बनी इस्राईल ने) यह तकाजा किया कि उनके लिए एक बुत बना दिया जाए।

आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी जाहिरपरस्ती है। वह ग़ैब में छुपे हुए ख़ुदा पर अपना जेहन पूरी तरह जमा नहीं पाता, इसलिए वह किसी न किसी जाहिरी चीज में अटक कर रह जाता है। कुछ बेशुऊर लोग पत्थर और धातु के बने हुए बुतों के आगे झुकते हैं। और जो लोग ज्यादा मुहज्जब (सभ्य) हैं वे किसी शख़्सियत, किसी कौम या किसी तमद्दुनी (सांस्कृतिक) ढांचे को अपनी तवज्जोह का मर्कज बना लेते हैं।

बनी इस्राईल के कुछ अफराद ने जब हजरत मूसा से जाहिरी बुत गढ़ने की फरमाइश की तो आपने फरमाया ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह सब बर्बाद किया जाने वाला है। यानी हमारा मिशन तो यह है कि हम इन जाहिरी ख़ुदाओं को तोड़कर ख़त्म कर दें और आदमी को पूरी तरह सिर्फ एक ख़ुदा का परस्तार बनाएं। फिर कैसे मुमकिन है कि हम ख़ुद ही इस किस्म का एक जाहिरी ख़ुदा अपने लिए गढ़ लें।

'बनी इस्राईल को तमाम अहले आलम पर फजीलत दी' से मुराद किसी किस्म की नस्ली फजीलत (श्रेष्ठता) नहीं है बल्कि मंसबी (दायित्वपूर्ण) फजीलत है। यह उसी मअना में है जिसमें उम्मते मुहम्मदी के बारे मे कहा गया है कि 'तुम ख़ैरे उम्मत हो'। अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि वह किसी गिरोह को अपनी किताब का हामिल बनाता है और उसके जरिए दूसरी कौमों तक अपना पैग़ाम पहुंचाता है। कदीम जमाने में यह मंसब बनी इस्राईल (यहूद) को हासिल था, ख़त्मे नुबुव्वत के बाद यह मंसब उम्मते मुहम्मदी को दिया गया।

फिरऔन को यह मौका मिलना कि वह बनी इस्राईल पर जुल्म करे। यह बनी इस्राईल के लिए बतौर आजमाइश था न कि बतौर अजाब। इस तरह की आजमाइश इस लिए होती है कि अहले ईमान को झिंझोड़ कर बेदार किया जाए। यह मालूम किया जाए कि कौन मुश्किल हालात में ख़ुदा के दीन से फिर जाता है और कौन है जो सब्र की हद तक ख़ुदा के दीन पर कायम रहने वाला है।

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَمَّا جَاۤءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا۠ اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसे पूरा किया दस मजीद रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी कौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, इस्लाह (सुधार) करते रहना, और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना। और जब मूसा हमारे वक्त पर आ गया और उसके रब ने उससे कलाम किया तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मैं तुझे देखूं। फरमाया, तुम मुझे हरगिज नहीं देख सकते। अलबत्ता पहाड़ की तरफ देखो, अगर वह अपनी जगह कायम रह जाए तो तुम भी मुझे देख सकोगे। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली (आलोक) डाली तो उसे रेजारेजा कर दिया। और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश आया तो बोला, तू पाक है, मैंने तेरी तरफ रुजूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं। (142-143)

हजरत हारून हजरत मूसा के बड़े भाई थे, हजरत मूसा की उम्र उनसे तीन साल कम थी। मगर नुबुव्वत अस्लन हजरत मूसा को मिली और हजरत हारून उनके साथ सिर्फ मददगार की हैसियत से शरीक किए गए। इससे अंदाजा होता है कि दीनी ओहदों की तक्सीम में अस्ल अहमियत इस्तेदाद (क्षमता) की है न कि उम्र या इसी किस्म की दूसरी इजाफी चीजों की।

हजरत मूसा को मिस्र में दावती अहकाम दिए गए थे और सहराए सीना में पहुंचने के बाद पहाड़ी पर बुलाकर कानूनी अहकाम दिए गए। इससे ख़ुदाई अहकाम की तर्तीब मालूम होती है। आम हालात में ख़ुदापरस्तों से जो चीज मत्लूब है वह यह कि वे जाती जिंदगी को दुरुस्त करें और ख़ुदा के परस्तार बनकर रहें। इसी के साथ दूसरों को भी तौहीद व आख़िरत की तरफ बुलाएं। मगर जब अहले ईमान आजाद और बाइख़्तियार गिरोह की हैसियत हासिल कर लें, जैसा कि सहराए सीना में बनी इस्राईल थे, तो उन पर यह फर्ज भी आयद हो जाता है कि अपनी इज्तिमाई जिंदगी को शरई कानूनों की बुनियाद पर कायम करें।

हजरत मूसा ने अपनी ग़ैर मौजूदगी के लिए जब हजरत हारून को बनी इस्राईल का निगरां बनाया तो फरमाया : 'इस्लाह (सुधार) करते रहना और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना' (142)। इससे मालूम होता है कि इज्तिमाई सरबराह (प्रमुख) के लिए अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने का बुनियादी उसूल क्या है। वह है इस्लाह और मुफ्सिदीन (उपद्रवियों) की पैरवी न करना। इस्लाह से मुराद यह है कि मुख़्तलिफ अफराद के

दर्मियान इंसाफ का तवाज़ुन (संतुलन) किसी हाल में टूटने न दिया जाए। हर एक को वही मिले जो उसे अज़रूए अद्ल (न्यायानुसार) मिलना चाहिए और हर एक से वही छीना जाए जो अज़रूए अद्ल उससे छीना जाना चाहिए। इस इस्लाही अमल में अक्सर उस वक्त ख़राबी पैदा होती है जबकि सरदार 'मुफ्सिदीन' (उपद्रवियों) की पैरवी करने लगे। यह पैरवी कभी इस शक्ल में होती है कि उसके मुकर्रबीन (समीपवर्ती) अपने जाती अग़राज की बिना पर जो कुछ कहें वह उन्हें मान ले। और कभी इस तरह होती है कि मुफ्सिदीन की ताकत से ख़ौफज़दा होकर वह ख़ामोशी इख़्तियार कर ले।

हजरत मूसा ने ख़ुदा को देखना चाहा और जब मालूम हुआ कि ख़ुदा को देखना मुमकिन नहीं तो उन्होंने तौबा की और बग़ैर देखे ईमान का इकरार किया। इंसान का इम्तेहान यह है कि वह देखे बग़ैर ख़ुदा को माने। ख़ुदा को देखना आख़िरत (परलोक) का एक इनाम है फिर वह मौजूदा दुनिया में क्योंकर मुमकिन हो सकता है।

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

अल्लाह ने फरमाया, ऐ मूसा मैंने तुम्हें लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और अपने कलाम के जरिए से सरफराज किया। पस अब लो जो कुछ मैंने तुम्हें अता किया है। और शुक्रगुजारों में से बनो। और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर किस्म की नसीहत और हर चीज की तफ्सील लिख दी। पस इसे मजबूती से पकड़े और अपनी कौम को हुक्म दो कि इनके बेहतर मफ्हूम (भावार्थ) की पैरवी करें। अनकरीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा। (144-145)

हजरत मूसा को पहली बार नुबुव्वत पहाड़ के ऊपर मिली थी और दूसरी बार भी तौरात के अहकाम उन्हें पहाड़ पर बुलाकर दिए गए। यह इस बात का एक इशारा है कि ख़ुदा का फैज़ान हासिल करने की सब से ज्यादा मौज़ूं जगह फित्रत का माहौल है न कि इंसानी आबादियों का माहौल। इंसानों की पुरशोर दुनिया से निकल कर आदमी जब पत्थरों और दरख़्तों की ख़ामोश दुनिया में पहुंचता है तो वह अपने आपको ख़ुदा के करीब महसूस करने लगता है। वह मस्नूई (कृत्रिम) एहसासात से ख़ाली होकर अपनी फितरी (स्वाभाविक) हालत पर पहुंच जाता है। यह किसी आदमी के लिए बेहतरीन लम्हा होता है जबकि वह बेआमेज फितरी (सहज-स्वाभाविक) अंदाज में सोचे और यकसू (एकाग्र) होकर अपने रब से जुड़ सके।

पैग़म्बर आम इंसानों में से एक इंसान होता है। वह किसी भी एतबार से कोई ग़ैर इंसानी मख़्लूक नहीं होता। उसकी ख़ुसूसियत सिर्फ यह होती है कि वह अपनी पैदाइशी इस्तेदाद (क्षमता) को महफूज रखने मे कामयाब हो जाता है इसलिए ख़ुदा उसे चुनता है कि वह उसके

पैग़ाम का हामिल (धारक) बने और लोगों के दर्मियान उसकी काबिले एतमाद नुमाइंदगी करे। हजरत मूसा उस वक्त अपनी कौम के बेहतरीन शख़्स थे इसलिए ख़ुदा ने उन्हें अपना पैग़म्बर चुना और उन पर अपना कलाम उतारा।

ख़ुदा के कलाम में अगरचे हिदायत से मुतअल्लिक हर किस्म की जरूरी तफ्सील मौजूद होती है मगर वह अल्फाज में होती है और मौजूदा इम्तेहानी दुनिया में बहरहाल इसका इम्कान बाकी रहता है कि आदमी इन अल्फाज की ग़लत तशरीह करके उसे ग़ैर मत्लूब मअना पहना दे। मगर जो शख़्स हिदायत के मामले में संजीदा हो और ख़ुदा की पकड़ से डरता हो वह इन अल्फाज से वही मअना लेगा जो कलामेइलाही की शायानेशान है न कि वह जो उसके नफ्स को मरग़ूब हो।

'मैं अनकरीब तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा' यानी अपने इस सफर में आगे चलकर तुम उन कौमों के खंडहरों से गुजरोगे जिन्हें इससे पहले ख़ुदा की हिदायत दी गई थी। मगर वे उसे मजबूती के साथ पकड़ने में नाकाम साबित हुए। हालात के दबाव या जज्बात के मैलान को नजरअंदाज करके वे उस पर ठीक तरह कायम न रह सके। चुनांचे उनका अंजाम यह हुआ कि वे हलाक कर दिए गए। अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारा अंजाम भी दुनिया व आख़िरत में वही होगा जो उन पिछली कौमों का हुआ। ख़ुदा का मामला जैसा एक कौम के साथ है वैसा ही मामला दूसरी कौम के साथ है। अदले इलाही (ईश-न्याय) की मीजान (तुला) में एक कौम और दूसरी कौम के दर्मियान कोई फर्क नहीं।

इस दुनिया में यह मौका है कि आदमी अपनी ख़ुदसाख़्ता तशरीह से ख़ुदा के अहसन (अच्छे) कलाम का कोई ग़ैर अहसन मफहूम (भावार्थ) निकाल ले। मगर यह ऐसी जसारत है जो फरमांबरदारी के दावेदार को भी नाफरमानों की फेहरिस्त में शामिल कर देती है।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۤءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूंगा जो जमीन में नाहक घमंड करते हैं। और अगर वे हर किस्म की निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं। और अगर वे हिदायत का रास्ता देखें तो उसे न अपनाएंगे और अगर गुमराही का रास्ता देखें तो उसे अपना लेंगे। यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी तरफ से अपने को ग़ाफिल रखा। और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आख़िरत की मुलाकात को झुठलाया उनके आमाल अकारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे जो वे करते थे। (146-147)

दुनिया में जिंदगी गुजारने की दो सूरते हैं। एक यह कि आदमी ने अपने आंख और कान खुले रखे हों। वह चीजों को उनके असली रंग में देखता और सुनता हो। ऐसे आदमी के सामने हक आएगा तो वह उसे पहचान लेगा। दुनिया में बिखरी हुई ख़ुदाई निशानियां उसे जो सबक देंगी वह उन्हें पा लेगा। दूसरी सूरत यह है कि आदमी मुतकब्बिराना नफ्सियात (अहंभाव) के साथ जी रहा हो। वह जमीन में इस तरह रहता हो जैसे वह उसका मालिक हो, उसे अपने जाती दाअियात (निजी भावनाओं) के सिवा किसी और चीज की परवाह न हो। वह समझता हो कि यहां जो कुछ उसे मिल रहा है वह अपनी लियाकत की वजह से मिल रहा है। अपनी मिली हुई चीजों में उसे किसी और की मर्जी का लिहाज करने की जरूरत नहीं। इस दूसरे आदमी का इस्तग़ना (उदासीनता) उसके लिए कुबूलेहक में रुकावट बन जाएगा।

पहले आदमी की नफ्सियात लेने वाली नफ्सियात होती है। वह अपने खुले जेहन की वजह से ख़ुदा के हर इशारे को पढ़ लेता है। और फौरन अपने आपको उसके मुताबिक ढाल लेता है। इसके बरअक्स दूसरे आदमी की नफ्सियात बेनियाजी (उदासीनता) की नफ्सियात होती है। उसके सामने हक के दलाइल आते हैं मगर वह उन्हें ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देता है। उसके सामने कुदरत ख़ामोश जबान में अपना नग़मा छेड़ती है मगर वह उस पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझता। उसके अपने से बाहर किसी सच्चाई की तरफ रग़बत नहीं होती। मौत के बाद आने वाली दुनिया सिर्फ पहले लोगों के लिए है। दूसरे लोग ख़ुदा की अबदी (चिरस्थाई) दुनिया में उसी तरह नजरअंदाज कर दिए जाएंगे जिस तरह मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में वे ख़ुदा की बात को नजरअंदाज किए हुए थे।

गुमराही का रास्ता नफ्स (अंतःकरण) के मुहर्रिकात (प्रेरकों) के तहत बनता है और हिदायत का रास्ता वह है जो नफ्स और माहौल के असरात से ऊपर उठकर ख़ालिस ख़ुदा के लिए वुजूद में आता है। अब जो लोग अपनी जात की सतह पर जी रहे हों, जो सिर्फ अपने नफ्स के अंदर उभरने वाले दाअियात (भावनाओं) को जानते हों वे गुमराही के रास्ते पर ऐन अपनी चीज समझ कर उसकी तरफ दौड़ पड़ेंगे। हिदायत का रास्ता उनका अपने मिजाज के एतबार से अजनबी दिखाई देगा इसलिए वे उसकी तरफ बढ़ने में भी नाकाम साबित होंगे।

बड़ाई की नफ्सियात उस चीज को आसानी से कुबूल कर लेती है जिसमें उसकी बड़ाई बाकी रहे। और जहां उसकी बड़ाई ख़त्म होती हो उससे उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُوَارٌ أَلَمْ يَرَوْا
أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا
سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا
وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ
أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ وَأَلْقَى

الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي
وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾

और मूसा की कौम ने उसके पीछे अपने जेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई राह दिखाता है। उसे उन्होंने माबूद (पूज्य) बना लिया और वे बड़े जालिम थे। और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा, अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्शा तो यकीनन हम बर्बाद हो जाएंगे। और जब मूसा रंज और ग़ुस्से में भरा हुआ अपनी कौम की तरफ लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) की। क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली। और उसने तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींचने लगे। हारून ने कहा, ऐ मेरी मां के बेटे, लोगों ने मुझे दबा लिया और करीब था कि मुझे मार डालें। पस तू दुश्मनों को मेरे ऊपर हंसने का मौका न दे और मुझे जालिमों के साथ शामिल न कर। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब माफ कर दे मुझे और मेरे भाई को और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फरमा और तू सबसे ज्यादा रहम करने वाला है। (148-151)

बनी इस्राईल के गिरोह में उस वक्त सामिरी नाम का एक बहुत शातिर आदमी था। हजरत मूसा जब बनी इस्राईल को हजरत हारून की निगरानी में छोड़कर पहाड़ पर चले गए तो उसने लोगों को बहकाया। उसने लोगों से जेवरात लेकर उन्हें बछड़े की सूरत में ढाल दिया। बुतगरी (मूर्ति शिल्प) के क़दीम मिस्री फन के मुताबिक बछड़े की यह मूरत इस तरह बनाई गई थी कि जब उसके अंदर से हवा गुजरे तो उसके मुंह से ख़्वार (बैल की डकार की सी आवाज) आए। लोग आम तौर पर अजूबापसंद होते हैं। चुनांचे इतनी सी बात पर बहुत से लोग शुबह में पड़ गए और उसके बारे में ख़ुदाई तसव्वुर (धारण) कायम कर लिया। एक शातिर आदमी ने कुछ अवामी बातें करके भीड़ की भीड़ अपने गिर्द जमा कर ली। उसका जोर इतना बढ़ा कि हजरत हारून और संभवतः उनके चन्द साथियों के सिवा कोई खुल्लम खुल्ला एहतेजाज (प्रतिरोध) करने वाला भी न निकला। जाहिर है कि जिस अवामी तूफान में पैग़म्बर के नायब की आवाज दब जाए वहां कैसे कोई बोलने की जुर्रत कर सकता है।

अवाम का जौक हर जमाने में यही रहा है और आज भी वह पूरी तरह मौजूद है। आज भी एक होशियार आदमी अपनी तकरीरों और तहरीरों से किसी न किसी 'ख़्वार' पर लोगों की भीड़ जमा कर लेता है। लोग यह नहीं सोचते कि जिस चीज के गिर्द वे जमा हो रहे हैं वह महज एक तमाशा है न कि सचमुच कोई हकीकत। कोई संजीदा आदमी अगर इस तमाशे की हकीकत को खोलता है तो उसका वही अंजाम होता है जो बनी इस्राईल के दर्मियान हजरत हारून का हुआ।

हजरत मूसा ने जब देखा कि बनी इस्राईल मुश्रिकाना फेअल में मशग़ूल हैं तो उन्हें गुमान हुआ कि हजरत हारून ने इस्लाह (सुधार) के सिलसिले में कोताही की है। चुनांचे ग़ुस्से में उन्हें पकड़ लिया। मगर जैसे ही उन्होंने बताया कि उन्होंने अपनी इस्लाह की कोशिश में कोई कमी न की थी तो उनके बयान के बाद फौरन रुक गए और अपने लिए और हजरत हारून के लिए ख़ुदा से दुआ करने लगे। एक मोमिन को दूसरे मोमिन के बारे में बड़ी से बड़ी ग़लतफहमी हो सकती है मगर मामले की वजाहत के बाद वह ऐसा हो जाता है जैसे उसे ग़लतफहमी पैदा ही नहीं हुई थी।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को माबूद (पूज्य) बनाया उन्हें उनके रब का ग़जब पहुंचेगा और जिल्लत दुनिया की जिंदगी में। और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ बांधने वालों को। और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर इसके बाद तौबा की। और ईमान लाए तो बेशक इसके बाद तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (152-153)

बनी इस्राईल के बछड़ा बनाने को यहां इफ्तिरा (झूठ बांधना) कहा गया है। ऐसा क्यों है। इसकी वजह यह है कि उन्होंने यह बातिल काम हक के नाम पर किया था। उन्होंने अपना यह काम ख़ुदा के दीन का इंकार करके नहीं किया था बल्कि ख़ुदा के दीन को मानते हुए किया था। अपनी इस बेदीनी को वे दीनी अल्फाज में बयान करते थे। मुश्रिकीन के आम अकीदे की तरह, वे कहते थे कि ख़ुदा उन की गढ़ी हुई मूरत में हुलूल कर आया है। इसलिए उसकी इबादत ख़ुद ख़ुदा की इबादत के हममअना है। यहां तक कि इस फेअल (कृत्य) के लीडर सामिरी ने उसके हक में कश्फ व करामत (दिव्य निर्देश) की दलील भी तलाश कर ली। उसने कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा कि जिब्रील आए हैं और मैंने उनके घोड़े के नक्शे कदम से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई है और एक बछड़ा बनाकर उसके अंदर वह मिट्टी डाल दी तो मुकद्दस (पवित्र) मिट्टी की बरकत से वह बछड़ा बोलने लगा। गोया सामिरी और उसके साथी ख़ुदा की तरफ ऐसी बात मंसूब कर रहे थे जो ख़ुदा ने ख़ुद नहीं बताई थी। इस किस्म की निस्बत इफ्तिरा (ख़ुदा पर झूठ बांधना) है चाहे वह एक सूरत में हो या दूसरी सूरत में।

कोई दीन का हामिल (धारक) गिरोह इस किस्म का इफ्तिरा करता है, वह बेदीनी के फेअल को दीन का नाम दे देता है, तो यह चीज ख़ुदा के ग़जब को शदीद तौर पर भड़का देती है। उसके मुतअल्लिक यह फैसला किया जाता है कि उसे आख़िरत से पहले दुनिया की जिंदगी ही में रुस्वाकुन सजा दी जाए। बनी इस्राईल के लिए यह दुनियावी सजा इस सूरत में आई कि हजरत मूसा के हुक्म पर हर कबीले के मुख़्लिस जिम्मेदारों ने अपने अपने कबीले के उन अफराद को पकड़ा जिन्होंने बछड़ा बनाने के इस काम में हिस्सा लिया था और इस फितने में बराहेरास्त शरीक रहे थे। इसके बाद हर कबीले के अफराद ने ख़ुद अपने हाथ से अपने कबीले के मुजरिमीन

को कत्ल कर दिया। इस दर्दनाक अंजाम से सिर्फ वे लोग बचे जो अपने इस फेअल पर सख़्त शर्मिन्दा हुए और उन्होंने अपने जुर्म का इकरार करते हुए तौबा की।

बनी इस्राईल के जुर्म पर ख़ुदा ने जिस सजा का फैसला किया उसका निफाज ख़ुद उनकी अपनी तलवारों से किया गया। ताहम इस किस्म के फैसले का निफाज कभी अग़यार (अन्यों) की तलवारों के जरिए किया जाता है। और अग़यार की तलवारों से इसका निफाज उस वक्त होता है जबकि सजा के साथ रुस्वाई को भी शामिल कर देने का फैसला किया गया हो।

गुनाह पर तौबा यह है कि गुनाह हो जाने के बाद आदमी अपने उस फेअल पर शदीद शर्मिन्दा हो। तौबा की अस्ल हकीकत शर्मिन्दगी है। यह शर्मिन्दगी इस बात की जमानत है कि आदमी अपने पूरे वजूद से फैसला करे कि आइंदा वह ऐसा फेअल (कृत्य) न करेगा। कोई गुनाहगार जब इस तरह शर्मिन्दगी का और आइंदा के लिए परहेज के अज्म (संकल्प) का सुबूत दे देता है तो गोया कि वह दुबारा ईमान लाता है, दीन के दायरे से निकल जाने के बाद वह दुबारा ख़ुदा के दीन में दाख़िल होता है।

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾ وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तो उसने तख़्तियां उठाईं और जो उनमें लिखा हुआ था उसमें हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। और मूसा ने अपनी कौम में से सत्तर आदमी चुने हमारे मुकर्रर किए हुए वक्त के लिए। फिर जब उन्हें जलजले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ रब, अगर तू चाहता तो तू पहले ही इन्हें हलाक कर देता और मुझे भी। क्या तू हमें ऐसे काम पर हलाक करेगा जो हमारे अंदर के बेवकूफों ने किया। ये सब तेरी आजमाइश है तू इससे जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे। तू ही हमारा थामने वाला है। पस हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा, तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है। और तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी। हमने तेरी तरफ रुजूअ किया। अल्लाह ने कहा, मैं अपना अजाब उसी पर डालता हूं जिसे चाहता हूं और मेरी रहमत शामिल है हर चीज

को। पस मैं उसे लिख दूंगा उनके लिए जो डर रखते हैं और जकात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं। (154-156)

बनी इस्राईल के बछड़ा बनाने से यह जाहिर हुआ था कि उनके अंदर ख़ुदा पर वह यकीन नहीं है जो होना चाहिए। चुनांचे उन्हें पहाड़ पर बुलाया गया। हजरत मूसा मुकर्ररह वक्त के मुताबिक बनी इस्राईल के सत्तर नुमाइंदा अफराद को लेकर दुबारा कोहेतूर पर गए। वहां ख़ुदा ने गरज चमक और जलजले के जरिए ऐसे हालात पैदा किए जिससे बनी इस्राईल के लोगों के अंदर इनाबत व ख़शिय्यत (ईशभय) पैदा हो। चुनांचे इसके बाद वे ख़ुदा के सामने रोए गिड़गिड़ाए और इज्तिमाई (सामूहिक) तौबा की। उन्होंने अहद किया कि वे तौरात के अहकाम पर सच्चाई के साथ अमल करेंगे।

इस मौके पर हजरत मूसा ने दुआ कि 'ऐ हमारे रब, हमारे लिए दुनिया और आख़िरत में भलाई लिख दे' अल्लाह तआला ने इसके जवाब में फरमाया 'मैं जिस पर चाहता हूं अपना अजाब डालता हूं और मेरी रहमत हर चीज को शामिल है' हजरत मूसा की दुआ बहैसियत मज्मूई अपनी पूरी उम्मत के लिए थी। मगर अल्लाह तआला ने अपने जवाब में वाजेह कर दिया कि नजात और कामयाबी कोई गिरोही चीज नहीं है। इसका फैसला हर हर फर्द के लिए उसके जाती अमल की बुनियाद पर होता है। अगरचे मैं तमाम रहम करने वालों से ज्यादा रहीम हूं। मगर जो शख़्स अमले सालेह (सत्कर्मों) का सुबूत न दे वह मेरी पकड़ से बच नहीं सकता, चाहे वह किसी भी गिरोह से तअल्लुक रखता हो।

ख़ुदा की किताब हिदायत व रहमत होती है। वह दुनिया की जिंदगी में आदमी के लिए बेहतरीन रहनुमा है और आख़िरत में ख़ुदा की रहमत का यकीनी जरिया। मगर ख़ुदा की किताब का यह फायदा सिर्फ उसे मिलता है जो 'डर' रखता हो, जिसे अंदेशा लगा हुआ हो कि मालूम नहीं ख़ुदा मेरे साथ क्या मामला करेगा। ये वे लोग हैं जो सच्चे हक के तालिब होते हैं। उनके सामने जब हक आता है तो वे किसी किस्म की नफ्सियाती पेचीदगी में मुब्तिला हुए बग़ैर उसे पा लेते हैं। इसके बाद ख़ुदा उनके ख़ौफ और उम्मीद का मर्कज बन जाता है। उनका सब कुछ ख़ुदा के लिए वक्फ हो जाता है। उनका डर उनके शुऊर को बेदार कर देता है। उनकी निगाह से तमाम मस्नूई पर्दे हट जाते हैं। ख़ुदा की तरफ से जाहिर होने वाली निशानियों को पहचानने में वे कभी नहीं चूकते। वे अंदेशे की नफ्सियात में जीते हैं न कि कनाअत (संतोष) की नफ्सियात में।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ
فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ
لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ
الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي
أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٧﴾

जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (अनपढ़) है, जिसे वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उनके लिए पाकीजा चीजेंजाइज ठहराता है और नापाक चीजेंहराम करता है और उन पर से वह बोझ और कैदें उतारता है जो उन पर थीं। पस जो लोग उस पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज्जत की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। (157)

बनी इस्राईल देखते चले आ रहे थे कि जितने नबी आते हैं वे सब उनकी अपनी कौम में आते हैं। आख़िरी रसूल ख़ुदा के मंसूबे के मुताबिक बनी इस्माईल में आने वाला था। इसलिए ख़ुदा ने बनी इस्राईल के नबियों के जरिए उन्हें पहले से इनकी ख़बर कर दी। उनकी किताबों में कसरत से इसकी पेशीनगोइयां अभी तक मौजूद हैं। ऐसा इसलिए हुआ ताकि जब आख़िरी रसूल आए तो वे किसी बड़े फितने में न पड़ें और आसानी से उसे पहचान कर उसके साथी बन जाएं।

पैग़म्बरे इस्लाम पढ़े लिखे न थे। आप उम्मी रसूल थे। उम्मियत के साथ पैग़म्बरी, जो पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिंदगी में आख़िरी और इंतिहाई सूरत में जमा हुई यही हमेशा के लिए अल्लाह तआला की सुन्नत है। मअरफते ख़ुदावंदी का इज्हार हमेशा 'उम्मियत' की सतह पर होता है। यानी वह किसी ऐसे शख़्स के जरिए जाहिर किया जाता है जो दुनियावी मेयार के लिहाज से इस किस्म के अजीम काम का अहल न समझा जाता हो। तारीख़ (इतिहास) में कभी ऐसा नहीं हुआ कि ख़ुदा ने बुकरात और अफलातून को अपना पैग़म्बर बनाकर भेजा हो।

दीन की अस्ल रूह अल्लाह का ख़ौफ और आख़िरत की फिक्र है। मगर बाद के जमाने में जब अंदरूनी रूह सर्द पड़ती है तो जवाहिर (वाह्यता) का जोर बहुत बढ़ जाता है। अब ग़ैर जरूरी मूशिगाफियां (कुतर्क) करके नए-नए मसाइल बनाए जाते हैं। रूहानियत के नाम पर मशक़ों और रियाजतों (साधना) का एक पूरा ढांचा खड़ा कर लिया जाता है। अवामी तवह्हुमात (अंधविश्वास) मुकद्दस होकर नई शरीअत की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं। यहूद का यही हाल हो चुका था। उन्होंने ख़ुदा के दीन के नाम पर तवह्हुमात और जकड़बंदियों का एक ख़ुदसाख़्ता ढांचा बना लिया था और उसे ख़ुदा का दीन समझते थे। पैग़म्बरे इस्लाम ने उनके सामने दीन को उसकी फितरी सूरत में पेश किया। ग़ैर जरूरी पाबंदियों को ख़त्म करके सादा और सच्चे दीन की तरफ उनकी रहनुमाई फरमाई।

पैग़म्बर जब आता है तो सबसे बड़ी नेकी यह होती है कि उस पर ईमान लाया जाए। मगर यह ईमान आम मअनों में महज एक कलिमा पढ़ाना नहीं है। यह बेरूह ढांचे वाले दीन से निकल कर जिंदा शुऊर वाले दीन में दाख़िल होना है। साबिका (पूर्ववती) मजहबी ढांचे से आदमी की वाबस्तगी महज तारीख़ी रिवायात या नस्ली रवाज के जोर पर होती है। मगर नए पैग़म्बर के दीन को जब वह कुबूल करता है तो वह उसे शुऊरी फैसले के तहत कुबूल करता है, वह रस्म से निकल कर हकीकत के दायरे में दाख़िल होता है। बजाहिर यह एक सादा सी

बात मालूम होती है। मगर यह सादा बात हर दौर में इंसान के लिए मुश्किलतरीन बात साबित हुई है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ٱلَّذِى لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَٱلْأَرْضِ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۖ فَـَٔامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِ ٱلنَّبِىِّ ٱلْأُمِّىِّ
ٱلَّذِى يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَكَلِمَٰتِهِۦ وَٱتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾ وَمِن قَوْمِ
مُوسَىٰٓ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِٱلْحَقِّ وَبِهِۦ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾

कहो ऐ लोगो, बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं तुम सबकी तरफ जिसकी हुकूमत है आसमानों और जमीन में। वही जिलाता है और वही मारता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलिमात (वाणी) पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। और मूसा की कौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक के मुताबिक रहनुमाई करता है और उसी के मुताबिक इंसाफ करता है। (158-159)

'कहो मैं सब इंसानों की तरफ अल्लाह का रसूल हूं' का मतलब यह नहीं है कि दूसरे तमाम पैग़म्बर कौमी पैग़म्बर थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैनुलअक्वामी (अन्तर्राष्ट्रीय) पैग़म्बर हैं। यह बात बतौर तकाबुल (तुलना) नहीं कही गई है बल्कि बतौर वाक्या कही गई है।

अस्ल यह है कि पैग़म्बरे इस्लाम की दो बेअसतें (आगमन) हैं। एक बराहेरास्त, दूसरी बिलवास्ता उम्मत। आपकी बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) बेअसत अरब के लिए थी (अनआम 92) और आपकी बिलवास्ता (परोक्ष) बेअसत सारे आलम के लिए है (हज्ज 78)। हुक्मन (सिद्धांततः) यही नौइयत ख़ुदा के तमाम पैग़म्बरों की थी। मगर दूसरे पैगम्बरों का दीन महफूज हालत में बाकी न रह सका इसलिए यह मुमकिन नहीं हुआ कि वे तमाम आलम के लिए नजीर व बशीर (डराने और ख़ुशख़बरी देने वाले) बनते। आज मसीहियत की तब्लीग़ सारे आलम में बहुत बड़े पैमाने पर हो रही है। इसके बावजूद हजरत मसीह की नुबुव्वत सिर्फ फिलिस्तीन तक महदूद होकर रह गई। क्योंकि हजरत मसीह के बाद उनकी तालीमात अपनी अस्ल हालत में बाकी नहीं रहीं। आज मसीहियत के नाम से जो दीन लोगों तक पहुंच रहा है वह हकीकतन सेंट पॉल का दीन है न कि मसीह का दीन। गोया नबियों के वुस्अतेकार (कार्यक्षेत्र) में जो फर्क है वह फर्क बएतबार वाक्या है न कि बएतबार तफ्ज़ील (श्रेष्ठता)।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अरबी के मुतअल्लिक बाइबल में यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है कि जमीन के सब कबीले उसके वसीले से बरकत पाएंगे (पैदाइश बाब 12)। सब कौमों तक आपकी बरकत पहुंचना इसलिए मुमकिन हो सका कि आपका लाया हुआ दीन महफूज (सुरक्षित) है। हजरत मूसा और हजरत मसीह का दीन महफूज नहीं। इसलिए बजाहिर इसकी आवाज सब तक पहुंच कर भी उसकी बरकत सब तक न पहुंच सकी।

अरब में यहूदी कबीले आबाद थे। ये वे लोग थे जिन्हें यह फख्र था कि उनके पास ख़ुदा की मुक़द्दस किताब (दिव्य ग्रंथ) है। ऐसे लोग हमेशा अपने से बाहर किसी सच्चाई को मानने के लिए सबसे ज्यादा सख़्त होते हैं। उनका यह एहसास कि वे सबसे बड़ी सच्चाई को लिए हुए हैं उनके लिए किसी दूसरे की तरफ से आने वाली सच्चाई को कुबूल करने में रुकावट हो जाता है। यही हाल यहूद का हुआ है। उनकी बहुत बड़ी अक्सरियत जिद और तअस्सुब की नफ्सियात में मुब्तिला हो गई। सिर्फ चन्द लोग (अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह) ऐसे निकले जिन्होंने खुले जेहन के साथ इस्लाम को देखा। उन्होंने अपनी दुनियावी इज्जत की परवाह किए बग़ैर उसकी सदाकत (सच्चाई) का एलान किया और अपनी दुनियावी जिंदगी को उसके हवाले कर दिया।

'रसूल ईमान रखता है अल्लाह पर और उसके कलिमात (वाणी) पर' यह जुमला बताता है कि फलसफियों के ख़ुदा और पैग़म्बर के ख़ुदा में क्या फर्क है। फलसफी का ख़ुदा एक मुजर्रद रूह (निर्जीव) है। उसे मानना ऐसा ही है जैसे कायनात में कुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) को मानना। कुव्वते कशिश न बोलती और न हुक्म देती। मगर पैग़म्बर का ख़ुदा एक जिंदा और बाशुऊर ख़ुदा है। वह इंसानों से हमकलाम होता है। वह अपने बंदों को हुक्म देता है और उस हुक्म के मानने या न मानने पर हर एक के लिए इनाम या सजा का फैसला करता है।

وَقَطَّعْنَٰهُمُ ٱثْنَتَىْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ إِذِ ٱسْتَسْقَىٰهُ قَوْمُهُۥٓ
أَنِ ٱضْرِب بِّعَصَاكَ ٱلْحَجَرَ ۖ فَٱنۢبَجَسَتْ مِنْهُ ٱثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ ٱلْغَمَٰمَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ۖ
كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾ وَإِذْ
قِيلَ لَهُمُ ٱسْكُنُوا۟ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةَ وَكُلُوا۟ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا۟ حِطَّةٌ وَٱدْخُلُوا۟
ٱلْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيٓـَٰٔتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْهُمْ
قَوْلًا غَيْرَ ٱلَّذِى قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

और हमने उन्हें बारह घरानों में तक्सीम करके उन्हें अलग-अलग गिरोह बना दिया। और जब मूसा की कौम ने पानी मांगा तो हमने मूसा को हुक्म भेजा कि फलां चट्टान पर अपनी लाठी मारो तो उससे बारह चशमे (जलस्रोत) फूट निकले। हर गिरोह ने अपना पानी पीने का मकाम मालूम कर लिया। और हमने उन पर बदलियों का साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ पाकीजा चीजों में से जो हमने तुम्हें दी हैं। और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि ख़ुद अपना ही नुक्सान करते रहे। और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ। उसमें जहां से चाहो खाओ और

कहो हमें बख़्श दे और दरवाजे में झुके हुए दाख़िल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं माफ कर देंगे। हम नेकी करने वालों को और ज्यादा देते हैं। फिर उनमें से जालिमों ने बदल डाला दूसरा लफ्ज उसके सिवा जो उनके कहा गया था। फिर हमने उन पर आसमान से अजाब भेजा इसलिए कि वे जुल्म करते थे। (160-162)

मिस्र की मुश्रिकाना फ़जा से निकाल कर ख़ुदा ने बनी इस्राईल को सहराए सीना में पहुंचाया। यहां उनकी तंजीम क़ायम की गई। उन्हें बारह जमाअतों में बांट दिया गया। हर जमाअत के ऊपर एक निगरां था और हजरत मूसा सबके ऊपर निगरां थे।

फिर बनी इस्राईल को ख़ुसूसी तौर पर तमाम जरूरियाते जिंदगी अता की गईं। पहाड़ी चशमे निकाल कर उनके लिए पानी फराहम किया गया। खुले सहरा में साये के लिए उन पर मुसलसल बदलियां भेजी गईं। उनकी ख़ुराक के लिए मन्न व सलवा उतरा जो बाआसानी उन्हें अपने ख़ेमों के सामने मिल जाता था। उनकी बाकायदा सकूनत के लिए एक पूरा शहर अरीहा (वादी यरदुन में) उनके हवाले कर दिया गया।

अल्लाह तआला ने उनसे कहा कि तुम्हारी तमाम जरूरियात का हमने इंतजाम कर दिया है। अब हिर्स और लज्जतपरस्ती में मुब्तिला होकर नापाक चीजों की तरफ न दौड़ो। इसके बजाए कनाअत (संतोष) और अल्लाह के आगे शुक्रगुजारी का तरीका इख़्तियार करो।

'बाब (दरवाजा) में झुके हुए दाख़िल हो' यहां बाब से मुराद बस्ती का दरवाजा नहीं है बल्कि हैकले सुलैमानी का दरवाजा है। जमीन में इक्तेदार देने के बाद बनी इस्राईल से कहा गया कि अपनी इबादतगाह में ख़ाशेअ (शालीन) बनकर जाओ और गुनाहों से मग़्फिरत मांगो। मुसलमानों के यहां जिस तरह काबा को बैतुल्लाह (ख़ुदा का घर) कहा जाता है इसी तरह यहूद के यहां हैकल को बाबुल्लाह (ख़ुदा का फाटक) कहा जाता है। यहूद को हुक्म दिया गया था कि अपने इबादतख़ाने में इज्ज व तवाजोअ के साथ दाख़िल होकर अपने रब की इबादत करो और अल्लाह की अज्मत व जलाल को याद करके उसके आगे अपनी कोताहियों का एतराफ करते रहो। मगर यहूद ख़ुदा की नसीहतों को भूल गए। वे ख़ुदा की बताई हुई राह पर चलने के बजाए ख़ुदा के नाम पर ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) राहों पर चलने लगे। उन्होंने इज्ज के बजाए सरकशी का तरीका अपनाया। शुक्र का कलिमा बोलने के बजाए वे बेसब्री के कलिमात बोलने लगे।

यहूद जब बिगाड़ की इस हद को पहुंच गए तो ख़ुदा ने अपनी इनायात उनसे वापस ले लीं। रहमत के बजाए उन्हें मुख़्तलिफ किस्म के अजाबों ने घेर लिया।

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ
تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ
نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ
مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾

और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो दरिया के किनारे थी। जब वे सब्त (सनीचर) के बारे में तजावुज (उल्लंघन) करते थे। जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियां पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सब्त न होता तो न आतीं। उनकी आजमाइश हमने इस तरह की, इसलिए कि वे नाफरमानी कर रहे थे। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अजाब देने वाला है। उन्होंने कहा, तुम्हारे रब के सामने इल्जाम उतारने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें। (163-164)

यहूद को यह तल्कीन की गई थी कि वे हफ्ते का एक दिन (सनीचर) इबादत और जिक्रे ख़ुदा के लिए ख़ास रखें। उस दिन कोई मआशी (आर्थिक) काम न करें। बाइबल के मुताबिक हुक्म यह था कि जो शख़्स सब्त के कानून के ख़िलाफवर्जी करे वह मार डाला जाए (ख़ुरूज बाब 31)। मगर जब यहूद में बिगाड़ आया तो वे इसकी ख़िलाफवर्जी करने लगे। उनके मुस्लेहीन (सुधारकों) ने मुतवज्जह किया तो वे न माने। ताहम मुस्लेहीन ने अपनी कोशिश मुसलसल जारी रखी। हकीकत यह है कि दूसरों की इस्लाह का काम अगरचे बजाहिर दूसरों के लिए होता है मगर वह ख़ुद अपने लिए किया जाता है, इसका असली मुहर्रिक (प्रेरक) अपने आपको अल्लाह के यहां बरीउज्जिम्मा ठहराना है। अगर यह मुहर्रिक जिंदा न हो तो आदमी दर्मियान में ठहर जाएगा, वह अपने इस्लाह और तब्लीग़ के अमल को आख़िर वक्त तक जारी नहीं रख सकता।

यहूद की सरकशी का नतीजा यह हुआ कि मामले को उनके लिए और सख़्त कर दिया गया। बहरे कुलजुम (लाल सागर) की मश्रिकी ख़लीज के किनारे ईला शहर में यहूद की आबादियां थीं। उनकी मईशत (जीविका) का इंहिसार ज्यादातर मछलियों के शिकार पर था। ख़ुदा के हुक्म से यह हुआ कि सनीचर के दिन उनके साहिल पर मछलियों की आमद बहुत बढ़ गई। बाकी छः दिनों में मछलियां बहुत कम आतीं। मगर ममनूआ (निषिद्ध) दिन (सनीचर) को वे कसरत से पानी की सतह के ऊपर तैरती हुई दिखाई देतीं।

यह यहूद के लिए बड़ी सख़्त आजमाइश थी। गोया पहले अगर यह नौइयत थी कि सनीचर के अलावा छः जाइज दिनों में शिकार करने का पूरा मौका था तो अब सिर्फ एक हराम दिन ही शिकार करने का मौका उनके लिए बाकी रह गया। अब यहूद ने यह किया कि वे हीले के जरिए हराम को हलाल करने लगे। वे सनीचर के दिन शिकार न करते। अलबत्ता वे समुद्र का पानी काट कर बाहर बने हुए हौजों में लाते। सनीचर के दिन मछलियां चढ़तीं तो वे नाली के रास्ते से उनके बनाए हुए हौज में आ जातीं। इसके बाद वे हौज का मुंह बंद करके मछलियों के दरिया में लौटने का रास्ता रोक देते। फिर अगले दिन इतवार को जाकर उन्हें पकड़ लेते। इस तरह वे एक नाजाइज फेअल को जवाज की सूरत देने की कोशिश करते ताकि उन पर यह हुक्म सादिर न आए कि उन्होंने सनीचर के दिन शिकार किया है।

इससे मालूम हुआ कि जो शख़्स जाइज जरियों से अपनी जरूरियात फराहम करने पर कनाअत न करे तो वह अपने आपको इस ख़तरे में डालता है कि उसके लिए जाइज जरियों का दरवाजा सिरे से बंद कर दिया जाए और नाजाइज जरिये के सिवा उसके लिए हुसूले मआश की कोई सूरत बाकी न रहे।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

फिर जब उन्होंने भुला दी वह चीज जो उन्हें याद दिलाई गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया एक सख़्त अजाब में पकड़ लिया। इसलिए कि वे नाफरमानी (अवज्ञा) करते थे। फिर जब वे बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि जलील बंदर बन जाओ। (165-166)

एक काम जिससे ख़ुदा ने मना किया हो उसे करना गुनाह है और हीले के जरिए नाजाइज को जाइज बनाकर करना गुनाह पर सरकशी का इजाफ़ा है। कानूने सब्त की ख़िलाफ़वर्जी करके यहूद इसी किस्म के मुजरिम बन गए थे। ऐसे लोग ख़ुदा की लानत के मुस्तहिक हो जाते हैं। यानी वे ख़ुदा की उन इनायतों से महरूम हो जाते हैं जो उसने इस दुनिया में सिर्फ इंसान के लिए मख़्सूस की हैं। ऐसे लोग इंसानियत की सतह से गिर कर हैवानियत की सतह पर आ जाते हैं।

कानूने सब्त की ख़िलाफ़वर्जी करने वालों के साथ यही मामला किया गया। 'अल्लाह ने उन्हें बंदर बना दिया' का मतलब यह नहीं है कि उनकी सूरत बंदरों की सूरत हो गई। इसका मतलब यह है कि उनका अख़्लाक बंदरों जैसा हो गया। उनका दिल और उनकी सोच इंसानों के बजाए बंदर जैसे हो गए। (तफ़्सीर कुर्तुबी)

इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जिसके अंदर उसके ख़ालिक ने अक्ल और जमीर रख दिया है। उसके अंदर जब कोई ख़्वाहिश उठती है तो उसकी अक्ल व जमीर (अन्तरात्मा) मुतहर्रिक होकर फौरन उसके सामने यह सवाल खड़ा कर देते हैं कि ऐसा करना तुम्हारे लिए दुरुस्त है या नहीं। इसके बरअक्स बंदर का हाल यह है कि उसकी ख़्वाहिश और उसके अमल के दर्मियान कोई तीसरी चीज हायल नहीं। जो बात भी उसके जी में आ जाए वह फौरन उसे कर डालता है। उसे न अपनी ख़्वाहिश के बारे में सोचने की जरूरत होती है और न उस पर अमल करने के बाद उस पर शर्मिन्दा होने की।

अब इंसान का बंदर हो जाना यह है कि वह अपनी अक्ल और अपने जमीर के ख़िलाफ अमल करते करते इतना बेहिस हो जाए कि इस किस्म के नाजुक अहसासात उसके अंदर से जाते रहें। उसके दिल में जो भी ख़्वाहिश पैदा हो उसे वह कर गुजरे। जब भी कोई शख़्स उसकी जद में आ जाए तो वह उसकी इज्जत और उसके माल पर हमला कर दे। किसी से शिकायत पैदा हो तो फौरन उसे जलील करने के लिए खड़ा हो जाए। किसी से इख़्तेलाफ (मतभेद) हो जाए तो उस पर ग़ुर्राने लगे। कोई उसे अपनी राह में रुकावट नजर आए तो फौरन उससे लड़ना शुरू कर दे। सच्चा इंसान वह है जो अपने आप पर ख़ुदा की लगाम लगा

ले। और बंदर इंसान वह है जो बेकैद होकर वह सब कुछ करने लगे जो उसका नफ़्स उससे करने के लिए कहे।

बुराई से रोकना एक किस्म का एलाने बरा-त (विरक्ति) है। इसलिए जब किसी गिरोह पर ख़ुदा की यह सजा आती है तो उसकी जद में आने से वे लोग बचा लिए जाते हैं जो बुराई से इस हद तक बेजार (खिन्न) हों कि वे उसे रोकने वाले बन जाएं।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٧﴾ وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ مِنْهُمُ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

और जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया कि वह यहूद पर कियामत के दिन तक जरूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें निहायत बुरा अजाब दें। बेशक तेरा रब जल्द सजा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। और हमने उन्हें गिरोह-गिरोह करके जमीन में बिखेर दिया। उनमें कुछ नेक हैं और उनमें कुछ इससे मुख़्तलिफ (भिन्न)। और हमने उनकी आजमाइश की अच्छे हालात से और बुरे हालात से ताकि वे बाज आएं। (167-168)

इन आयात में यहूद के लिए जिस सजा का एलान है उसके साथ कियामत के दिन तक की शर्त लगी हुई है। इससे मालूम होता है कि यह सजा वह है जिसका तअल्लुक दुनिया से है। आख़िरत के अंजाम का मामला इससे अलग है जिसका जिक्र दूसरे मकामात पर आया है।

किसी काम के करने पर जब बड़ा इनाम रखा जाए तो इसका मतलब यह है कि उस काम को न करने पर उतनी ही बड़ी सजा भी होगी। यही मामला उस कौम का है जो आसमानी किताब की हामिल बनाई गई हो। यहूद को ख़ुदा ने इसी मंसब पर फायज किया था। चुनांचे आख़िरत के वादे के अलावा दुनिया में भी उन्हें ग़ैर मामूली इनामात दिए गए। मगर यहूद ने मुसलसल नाफरमानी (अवज्ञा) की। वे दीन के नाम पर बेदीनी करते रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि ख़ुदा ने उन्हें फजीलत (श्रेष्ठता) के मंसब से हटा दिया। उनके लिए यह फैसला हुआ कि जब तक दुनिया कायम है वे ख़ुदा की सजा का मजा चखते रहेंगे। और आख़िरत में जो कुछ होना है वह इसके अलावा है।

इसका मतलब यह नहीं है कि अब कियामत तक उन पर कभी अच्छे हालात नहीं आएंगे। जैसा कि ख़ुद इन आयतों में सराहत है, उन पर 'हसनात' के वक्फे (उत्तम काल) भी पड़ेंगे। मगर यह हसनह का वक्फ़ा भी उनके लिए एक किस्म का अताब होगा ताकि वे और सरकशी करके और ज्यादा सजा के मुस्तहिक बनें।

इन आयतों में यहूद के लिए दो सजाओं का जिक्र है। एक यह कि उन पर ऐसी कौमें मुसल्लत की जाएंगी जो उन्हें अपने जुल्म का निशाना बनाएं। तारीख़ बताती है कि यहूद

कभी बुख़्त नस्र और कभी टाइटस रूमी के शदाइद (उत्पीड़न) का निशाना बने। कभी वे मुसलमानों की मातहती में दिए गए। मौजूदा जमाने में उन्होंने पूर्वी यूरोप में अपना जबरदस्त आर्थिक जाल फैला लिया तो हिटलर ने उन्हें तबाह व बर्बाद कर डाला। अब अर्जे मक्दिस में उनका जमा होना बजाहिर इसकी अलामत है कि उनकी पूरी कुव्वत शायद इज्मिाई (सामूहिक) तौर पर हलाक की जाने वाली है।

दूसरी सजा जिसका यहां जिक्र है वह 'तक्तीअ' है। यानी उनके गिरोह को मुख़्तलिफ हिस्सों में बांट कर मुंतशिर (विघटित) कर देना। यह दूसरा वाकया भी तारीख़ में बार-बार उनके साथ होता रहा है।

अल्लाह का यह कानून सिर्फ यहूद के लिए नहीं था। वह बाद के उस गिरोह के लिए भी है जिसे यहूद की माज़ूली के बाद ख़ुदा की गवाही के मंसब पर फायज किया गया है। मुसलमान अपने को अगर इस हाल में पाएं कि मुंकिरीन व मुश्रिकीन ने उन पर ग़लबा पा लिया हो और वे छोटे-छोटे जुग़राफियों (भू-क्षेत्रों) में बंटकर बिखर गए हों तो उन्हें ख़ुदा की तरफ लौटना चाहिए। क्योंकि इसका मतलब यह है कि वे एहतसाबे इलाही की जद में आ गए हैं।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتٰبَ يَأْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْأَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُهٗ يَأْخُذُوْهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيْثَاقُ الْكِتٰبِ أَنْ لَا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾ وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَظَنُّوْا أَنَّهٗ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوْا مَا اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾

फिर उनके पीछे नाख़ल्फ (अयोग्य) लोग आए जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) लेते हैं और कहते हैं कि हम यकीनन बख़्श दिए जाएंगे। और अगर ऐसी ही मताअ उनके सामने फिर आए तो उसे ले लेंगे। क्या उनसे किताब में इसका अहद (वचन) नहीं लिया गया है कि अल्लाह के नाम पर हक के सिवा कोई और बात न कहें। और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है। और आख़िरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए, क्या तुम समझते नहीं। और जो लोग ख़ुदा की किताब को मजबूती से पकड़ते हैं और नमाज कायम करते हैं बेशक हम मुस्लिहीन (सुधारकों) का अज्र जाया नहीं करेंगे। और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान है। और उन्होंने गुमान किया कि वह उन पर आ पड़ेगा। पकड़ो उस चीज को जो हमने तुम्हें दी है मजबूती से, और याद रखो जो उसमें है ताकि तुम बचो। (169-171)

हजरत मूसा के जमाने में यहूद को जब ख़ुदाई अहकाम दिए गए तो उसकी कार्रवाई पहाड़ के दामन में हुई थी। उस वक्त ऐसे हालात पैदा किए गए कि यहूद को महसूस हुआ कि पहाड़ उनके ऊपर गिरा चाहता है। यह इस बात का इज्हार था कि ख़ुदा से अहद बांधने का मामला बेहद संगीन मामला है। अगर तुमने उसके तकाजों को पूरा न किया तो याद रखो कि इस अहद का दूसरा फरीक वह अजीम हस्ती है जो चाहे तो पहाड़ को तुम्हारे ऊपर गिराकर तुम्हें हलाक कर दे।

उस वक्त यहूद में बड़ी तादाद ऐसे लोगों की थी जो अल्लाह से डरने वाले और नेक अमल करने वाले थे। मगर बाद को धीरे-धीरे उन्होंने दुनिया को अपना मक्सूद बना लिया। वे जाइज नाजाइज का फर्क किए बग़ैर माल जमा करने में लग गए। आसमानी किताब को अब भी वे पढ़ते थे मगर उसकी तालीमात की ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तावीलें करके उसे उन्होंने ऐसा बना लिया कि ख़ुदा भी उन्हें अपनी बाग़ियाना जिंदगी का हामी नजर आने लगा। उनकी बेहिसी यहां तक बढ़ी कि वे ये कहकर मुतमइन हो गए कि हम बरगुजीदा (प्रतिष्ठित) उम्मत हैं। हम नबियों की औलाद हैं। ख़ुदा अपने महबूब बंदों के सदके में हमें जरूर बख़्श देगा।

यही वाकया हर नबी की उम्मत के साथ पेश आता है। इब्तिदाई दौर में उसके अफराद ख़ुदा से डरने वाले और नेक अमल करने वाले होते हैं। मगर अगली नस्लों में यह रूह निकल जाती है। वे दूसरे दुनियादार लोगों की तरह हो जाते हैं। उनके दर्मियान अब भी दीन मौजूद होता है। ख़ुदा की किताब अब भी उनके यहां पढ़ी पढ़ाई जाती है। मगर यह सब कौमी विरासत के तौर पर होता है न कि हकीकतन अहदे ख़ुदावंदी के तौर पर। वे अमलन आख़िरत को भूल कर दुनियापरस्ती की राह पर चल पड़ते हैं। वे सही और ग़लत से बेनियाज होकर अपनी ख़्वाहिशों को अपना मजहब बना लेते हैं। मगर इसी के साथ उन्हें यह भी फख़्र होता है कि वे बेहतरीन उम्मत हैं। वे महबूबे ख़ुदा के उम्मती हैं। वे आसमानी किताब के वारिस हैं। कलिमा तौहीद की बरकत से वे जरूर बख़्श दिए जाएंगे।

मगर अस्ल चीज यह है कि आदमी ख़ुदा की किताब को मजबूती से पकड़े, वह नमाज को कायम करे। और किताबे इलाही को पकड़ने और नमाज को कायम करने का मेयार यह है कि आदमी 'मुस्लेह' (सुधारक) बन गया हो। ख़ुदा की किताब से तअल्लुक और ख़ुदा की इबादत करना आदमी को मुस्लेह बनाता है न कि मुफ्सिद।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلٰى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى شَهِدْنَا أَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾ أَوْ تَقُوْلُوْا إِنَّمَا أَشْرَكَ اٰبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾

और जब तेरे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन्हें गवाह ठहराया ख़ुद उनके ऊपर। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं। उन्होंने कहा हां, हम इकरार करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम कियामत के दिन कहने लगो हमें तो इसकी ख़बर न थी। या कहो कि हमारे बाप दादा ने पहले से शिर्क (ख़ुदा का साझीदार ठहराना) किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए। तो क्या तू हमें हलाक करेगा उस काम पर जो ग़लतकार लोगों ने किया। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोलकर बयान करते हैं ताकि वे पलट आएं। (172-174)

एक जानवर को उसके मां बाप से अलग कर दिया जाए और उसकी परवरिश बिल्कुल अलग माहौल में की जाए तब भी बड़ा होकर वह मुकम्मल तौर पर अपनी नस्ली ख़ुसूसियात पर कायम रहता है। वह अपने तमाम मामलात में ऐन वही तरीका इख़्तियार करता है जो उसकी जिबिल्लत (Instinct) में पेवस्त है। यही मामला इंसान का 'शुऊरे रब' के बारे में है। इंसान की रूह में एक ख़ालिक व मालिक का शुऊर इतनी गहराई के साथ जमा दिया गया है कि वह किसी हाल में उससे जुदा नहीं होता। मौजूदा जमाने में एक एतबार से रूस और दूसरे एतबार से टर्की का तजर्बा बताता है कि मुकम्मल तौर पर मुख़ालिफे मजहब माहौल में तर्बियत पाने के बावजूद इंसान की फ़ितरत ऐन वही बाकी रहती है जो इकरारे मजहब के माहौल में हमेशा पाई जाती रही है।

ताहम जानवर और इंसान में एक फर्क है। जानवर अपनी फ़ितरत की ख़िलाफ़वर्जी पर कादिर नहीं। वे मजबूर हैं कि अमलन भी वही करें जो उनके अंदर की फ़ितरत उन्हें सबक दे रही है। इसके बरअक्स इंसान का हाल यह है कि शुऊरे फ़ितरत की हद तक पाबंद होने के बावजूद अमल के मामले में वह पूरी तरह आजाद है। जब भी कोई बात सामने आती है तो उसकी अक्ल और उसका जमीर अंदर से इशारा करते हैं कि सही क्या है और गलत क्या। मगर इसके बावजूद इंसान को इख़्तियार है कि वह चाहे अपनी अंदरूनी आवाज की पैरवी करे, चाहे उसे नजरअंदाज करके मनमानी कार्रवाई करने लगे।

यही वह मकाम है जहां इंसान का इम्तेहान हो रहा है और इसी पर जन्नत और जहन्नम का फ़ैसला होना है। जो शख़्स ख़ुदाई आवाज पर कान लगाए और वही करे जो ख़ुदा फ़ितरत की ख़ामोश जबान में उससे कह रहा है, वह इम्तेहान में पूरा उतरा। उसके मरने के बाद उसके लिए जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाएंगे। और जो शख़्स फ़ितरत की सतह पर नश्र (प्रसारित) होने वाली ख़ुदाई आवाज को नजरअंदाज कर दे वह ख़ुदा की नजर में मुजरिम है। उसे मरने के बाद जहन्नम में डाला जाएगा। ख़ुदा भी उसे नजरअंदाज कर देगा जिस तरह उसने ख़ुदा की आवाज को नजरअंदाज किया था।

फ़ितरत की यह आवाज हर आदमी के ऊपर ख़ुदा की दलील है। अब किसी के पास न तो बेख़बरी का उज्र है और न कोई यह कह सकता है कि माजी में जो होता चला आ रहा था वही हम भी करने लगें। जब इंसान पैदाइश ही से ख़ुदा का शुऊर लेकर आता है और माहौल के विपरीत उसे हमेशा बाकी रखता है तो अब किसी शख़्स के पास बेराह होने का क्या उज्र है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِيٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ
مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ
هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ
ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَآءَ مَثَلَا ِۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝
مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

और उन्हें उस शख़्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं तो वह उनसे निकल भागा। पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयतों के जरिए से बुलन्दी अता करते मगर वह तो जमीन का हो रहा और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगा। पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उस पर बोझ लादे तब भी हांपे और अगर छोड़ दे तब भी हांपे। यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। पस तुम यह अहवाल उन्हें सुनाओ ताकि वे सोचें। कैसी बुरी मिसाल है उन लोगों की जो हमारी निशानियों को झुठलाते हैं और वे अपना ही नुक्सान करते रहे। अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है और जिसे वह बेराह कर दे तो वही घाटा उठाने वाले हैं। (175-178)

रसूलुल्लाल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में एक शख़्स उमैया बिन अबी अस्सल्त था। आला इंसानी औसाफ के साथ वह हकीमाना कलाम में भी मुमताज दर्जा रखता था। उसे जब मालूम हुआ कि ईसाइयों और यहूदियों की किताबों में एक पैग़म्बर के आने की पेशीनगोइयां मौजूद हैं तो उसे गुमान हुआ कि शायद वह पैग़म्बर मैं ही हूं। बाद को उसे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावए नुबुव्वत की ख़बर मिली और उसने आपका आला कलाम सुना तो उसे सख़्त मायूसी हुई। वह पैग़म्बरे इस्लाम का मुख़ालिफ बन गया। उमैया बिन अबी अस्सल्त को ख़ुदा ने जो आला ख़ुसूसियात दी थीं उनका सही इस्तेमाल यह था कि वह ख़ुदा के पैग़म्बर को पहचाने और उनका साथी बन जाए। मगर ख़ुदा की नवाजिशों से उसने अपने अंदर यह जेहन बनाया कि अब ख़ुदा को मेरे सिवा किसी और पर अपना फ़ज़्ल न करना चाहिए। पैग़म्बरे ख़ुदा को न मानने में उसे दुनियावी फ़ायदा नजर आता था इसके बरअक्स आपको मानने में उख़रवी फ़ायदा था। उसने आख़िरत के मुकाबले में दुनिया को तरजीह दी। वह अगर एतराफ के रुख़ पर चलता तो वह फ़रिश्तों को अपना हमसफर बनाता। मगर जब वह हसद व घमंड के रास्ते पर चल पड़ता तो वहां शैतान के सिवा कोई और न था जो उसका साथ दे। यह मिसाल उन तमाम लोगों पर सादिक आती है जो हसद और किब्र (अहं, बड़ाई) की बिना पर सच्चाई को नजरअंदाज करें या उसे मानने से इंकार कर दें।

किसी आदमी का ऐसा बनना अपने आपको इंसानियत के मकाम से गिराकर कुत्ते के मकाम पर पहुंचा देना है। कुत्ता अच्छे सुलूक पर भी हांपता है और बुरे सुलूक पर भी। यही हाल ऐसे आदमी का है। ख़ुदा ने जब उसे दिया तब भी उसने उससे सरकशी की ग़िज़ा ली और न दिया तब भी वह सरकश ही बना रहा। हालांकि चाहिए यह था कि जब ख़ुदा ने उसे दिया था वह तो उसका एहसानमंद होता और जब ख़ुदा ने नहीं दिया तो वह ख़ुदा की तक़्सीम पर राजी रहकर उसकी तरफ रुजूअ करता।

किसी को रास्ता दिखाने के लिए ख़ुदा ख़ुद सामने नहीं आता बल्कि वह निशानियों (दलीलों) की सूरत में अपना रास्ता लोगों के ऊपर खोलता है। जिन लोगों के अंदर यह सलाहियत हो कि वे दलीलों और निशानियों के रूप में जाहिर होने वाले हक को पहचान लें और अपने आपको उसके हवाले करने पर राजी हो जाएं वही इस दुनिया में हिदायतयाब होते हैं। और जो लोग दलीलों और निशानियों को अहमियत न दें उनके लिए अबदी (चिरस्थाई) बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا
وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ
بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ
وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ
خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾

और हमने जिन्नात और इंसानों में से बहुतों को दोज़ख़ के लिए पैदा किया है। उनके दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनकी आंखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे ऐसे हैं जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी ज्यादा बेराह। यही लोग हैं ग़ाफिल। और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम। पस इन्हीं से उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में कजरवी (कुटिलता) करते हैं। वे बदला पाकर रहेंगे अपने कामों का। और हमने जिन्हें पैदा किया है उनमें से एक गिरोह ऐसा है जो हक के मुताबिक फैसला करता है। और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहां से उन्हें ख़बर भी न होगी। और मैं उन्हें ढील देता हूं, बेशक मेरा दाव बड़ा मजबूत है। (179-183)

सच्चाई एक ऐसी चीज है जिसे हर आदमी को खुद पाना होता है। ख़ुदा ने हर आदमी को दिल और आंख और कान दिए हैं। आदमी इन्हीं सलाहियतों को इस्तेमाल करके सच्चाई को पाता है। और जो शख़्स इन सलाहियतों को इस्तेमाल न करे वह यकीनन सच्चाई को पाने से महरूम रहेगा, चाहे सच्चाई उससे कितना ही ज्यादा करीब मौजूद हो।

सच्चाई को पाना हर आदमी का एक शुऊरी और इरादी फेअल है। सच्चाई को वही शख़्स समझ सकता है जिसने अपने दिल के दरवाजे उसके लिए खुले रखे हों। उसे वही देख सकता है जिसने अपनी आंखों पर मस्नूई (कृत्रिम) पर्दे न डाले हों। उसकी आवाज उसी को सुनाई दे सकती है जिसने अपने कान में किसी किस्म के डाट न लगा रखे हों। ऐसे लोग सच्चाई की आवाज को पहचान कर उसके आगे अपने को डाल देंगे। और जिस शख़्स का मामला इसके बरअक्स हो वह चौपायों की तरह नासमझ बना रहेगा। पहाड़ जैसे दलाइल का वजन महसूस करना भी उसके लिए मुमकिन न होगा। उसके सामने ख़ुदा की तजल्लियां (आलोक) जाहिर होंगी मगर वह उसे देखने से आजिज होगा। उसके पास ख़ुदा का नग़मा छेड़ा जाएगा मगर वह उसे सुनने से महरूम रहेगा। सच्चाई हमेशा बेदार लोगों को मिलती है। ग़ाफिलों के लिए कोई सच्चाई सच्चाई नहीं।

ख़ुदा के बारे में इंसान के बेराह होने की वजह अक्सर यह होती है कि वह ख़ुदा को मानते हुए अपने जेहन में ख़ुदा की ग़लत तस्वीर बना लेता है। वह ख़ुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब कर देता है जो उसके शायानेशान नहीं हैं। मसलन इंसानों के हालात पर कयास करके ख़ुदा के मुकर्रबीन (निकटस्थ) का अकीदा बना लेना। बादशाहों को देखकर यह फर्ज कर लेना कि जिस तरह बादशाहों के नायब और मददगार होते हैं उसी तरह ख़ुदा के भी नायब और मददगार हैं। ख़ुदाई फैसले के बारे में ऐसा ख़्याल कायम कर लेना जिसमें आदमी की अपनी ख़्वाहिशें तो पूरी हो रही हों मगर वह ख़ुदावंदी अद्ल (न्याय) से मुताबिकत न रखता हो। यह ख़ुदा के नामों में कजी (कुटिलता) करना है कि ख़ुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब की जाएं जो उसकी अज़्मत के शायानेशान न हों।

ख़ुदा किसी आदमी की कजरवी पर फौरन उसे नहीं पकड़ता। इस तरह उसे मौका दिया जाता है कि वह या तो ख़ुदा की तंबीहात को देखकर संभल जाए या मजीद ढीठ होकर अपने जुर्म को पूरी तरह साबितशुदा बना दे।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٨٤﴾ أَوَلَمْ
يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ
أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾ مَن يُضْلِلِ اللَّهُ
فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ
أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾ قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا
وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ
وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾

क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है। वह तो एक साफ डराने वाला है। क्या उन्होंने आसमानों और जमीन के निजाम पर नजर नहीं की और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज से और इस बात पर की शायद उनकी मुद्दत करीब आ गई हो। पस इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। जिसे अल्लाह बेराह कर दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। और वह उन्हें सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है। वह तुमसे कियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाके होगी। कहो इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। वही उसके वक्त पर उसे जाहिर करेगा। वह भारी हो रही है आसमानों में और जमीन में। वह जब तुम पर आएगी तो अचानक आ जाएगी। वह तुमसे पूछते हैं गोया कि तुम उसकी तहकीक कर चुके हो। कहो इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। कहो मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब को जानता तो मैं बहुत से फायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक्सान न पहुंचता। मैं तो महज एक डराने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें। (184-188)

बामक्सद आदमी की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि वह ग़ैर मस्लेहतपसंद (निस्वार्थ) इंसान होता है। वह वक्त के रवाज से ऊपर उठकर सोचता है। वह माहौल में जमे हुए मसालेह (स्वार्थ) से बेपरवाह होकर अपना काम करता है। वह एक ऐसे निशाने की ख़ातिर अपना जान व माल सब कुछ कुर्बान कर देता है जिसका कोई नतीजा बजाहिर इस दुनिया में मिलने वाला नहीं। यही वजह है कि बामक्सद आदमी अक्सर अपने मुआसिरीन (समकालीन) की तरफ से जो सबसे बड़ा ख़िताब मिलता है वह 'मजनून' है। ख़ुदा का पैग़म्बर अपने वक्त का सबसे बड़ा बामक्सद इंसान होता है। इसलिए ख़ुदा के पैग़म्बरों को हर जमाने के लोगों ने यही कहा कि यह मजनून हो गए हैं।

ख़ुदा के दीन के दाओ (आह्वानकर्ता) को मजनून कहना तमाम जुल्मों में सबसे बड़ा जुल्म है। क्योंकि वह जिस पैग़ाम को लेकर उठता है वह एक ऐसा पैग़ाम है जिसकी तस्दीक तमाम जमीन व आसमान कर रहे हैं। वह ऐसे ख़ुदा की तरफ बुलाता है जो अपनी कायनाती तख़्लीकात में हर तरफ इंतिहाई हद तक नुमायां है। वह ऐसी आख़िरत की ख़बर देता है जो जमीन व आसमान में उसी तरह संगीन हकीकत बनी हुई है जिस तरह किसी मां के पेट में पूरा हमल। लोग हक के बारे में संजीदा नहीं, इसलिए हक की ख़ातिर जान खपाने वाला उन्हें मजनून दिखाई देता है। अगर वे हक की क़द्र व कीमत को जानते तो कभी ऐसा न कहते।

'कियामत किस तारीख़ को आएगी' इस किस्म के सवालात ग़ैर संजीदा जेहन से निकले हुए सवालात हैं। कियामत को मानने का इंहिसार (निर्भरता) कियामत के हक में उसूली दलील पर है न कि इस बात पर कि कियामत की तारीख़ तैशुदा सूरत में बता दी जाए। जब यह दुनिया दारुल इम्तेहान है तो यहां कियामत को तंबीह (चेतावनी) की जबान में बताया जाएगा न कि हिसाबी तअय्युनात (निर्धारण) की जबान में।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ۗ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी ने बनाया उसका जोड़ा ताकि उसके पास सुकून हासिल करे। फिर जब मर्द ने औरत को ढांक लिया तो उसे एक हल्का सा हमल रह गया। फिर वह उसे लिए फिरती रही। फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर अल्लाह अपने रब से दुआ की, अगर तूने हमें तंदरुस्त औलाद दी तो हम तेरे शुक्रगुजार रहेंगे। मगर जब अल्लाह ने उन्हें तंदुरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़्शी हुई चीज में दूसरों को उसका शरीक ठहराने लगे। अल्लाह बरतर है उन मुश्रिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं। क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज को पैदा नहीं करते बल्कि वे ख़ुद मख़्लूक (सृजित) हैं। और वे न उनकी किसी किस्म की मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे। बराबर है चाहे तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो। जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं। पस तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (189-194)

कायनात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ (परिचय) कराती है वह ऐसा तआरुफ है तो किसी हाल में शिर्क के तसव्वुर को कुबूल नहीं करता। कायनात में बेशुमार अज्जा (अवयव) अलग-अलग पाए जाते हैं। मगर तमाम अज्जा मिलकर एक हमआहंग (अंतरंग) कुल बन जाते हैं। इनमें किसी किस्म का तजाद (अन्तर्विरोध) या टकराव नहीं। यह कामिल हमआहंगी इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक हो और वही तंहा इसको चला रहा हो।

मर्द और औरत के मामले को देखिए। एक मर्द और एक औरत में जो कामिल मुताबिक़त (सामंजस्य) होती है वह शायद मौजूदा कायनात का सबसे ज्यादा अजीब वाक़्या है जिसका तजर्बा एक शख़्स करता है। मर्द एक मुंफ़रिद और मुस्तकिल (एकल) वजूद है। और औरत उससे अलग एक मुस्तकिल (एकल) वजूद। मगर ये मर्द और औरत जब मियां

और बीवी की हैसियत से एक दूसरे से मिलते हैं तो दोनों का वजूद इस तरह एक दूसरे में शामिल हो जाता है कि उनमें कोई दूरी बाकी नहीं रहती। हर एक को ऐसा महसूस होता है कि मैं उसके लिए पैदा किया गया हूं और वह मेरे लिए। दोनों के दर्मियान यह गहरी साजगारी इस बात का खुला हुआ सुबूत है कि एक ही इरादे ने अपने पेशगी मंसूबे के तहत दोनों को एक ख़ास ढंग पर बनाया है। कायनात में अगर एक से ज्यादा हस्तियों की कारफरमाई होती तो दो मुख़्तलिफ और मुतजाद (अन्तर्विरोधी) चीजों के दर्मियान यह कामिल हमआहंगी (अंतरंगता) मुमकिन नहीं होती।

मगर कैसी अजीब बात है कि जिस कायनात में तौहीद के इतने ज्यादा दलाइल मौजूद हैं वहां आदमी शिर्क को अपना मजहब बनाता है। दो इंसानों में 'वहदत' (एकत्व) के करिश्मे से एक तीसरे बच्चे ने जन्म लिया मगर जब वह पैदा हो गया तो किसी ने यह अकीदा बना लिया कि यह औलाद फ्लां जिंदा या मुर्दा बुज़ुर्ग की बरकत से हुई है। किसी ने उसे मफरूजा (काल्पनिक) देवताओं की तरफ मंसूब कर दिया। किसी ने कहा कि यह माद्दा (पदार्थ) की अंधी ताकतों के अमल और रद्देअमल (क्रिया-प्रतिक्रिया) का नतीजा है। किसी ने यह समझा कि यह ख़ुद उसकी अपनी कमाई है जो एक ख़ूबसूरत बच्चे की सूरत में उसे हासिल हुई है।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ ﴿١٩٥﴾ إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٧﴾ وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

क्या उनके पाँव हैं कि उनसे चलें। क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें। क्या उनकी आंखें हैं कि उनसे देखें। क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें। कहो, तुम अपने शरीकों को बुलाओ। फिर तुम लोग मेरे ख़िलाफ तदबीरें करो और मुझे मोहलत न दो। यकीनन मेरा कारसाज (कार्य साधक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह कारसाजी करता है नेक बंदों की। और जिन्हें तुम पुकारते हो उसके सिवा वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रास्ते की तरफ पुकारो तो वे तुम्हारी बात न सुनेंगे और तुम्हें नजर आता है कि वे तुम्हारी तरफ देख रहे हैं मगर वे कुछ नहीं देखते। (195-198)

बुतपरस्त लोग पत्थर या धातु की जो मूर्तियां बनाते हैं इसका फलसफा यह बयान किया जाता है कि यह ख़ारजी मजाहिर (वाह्य रूप) हैं जिनके अंदर उनका मज्ऊमा (मान्य) देवता हुलूल (विलय) कर आया है। इन मजाहिर की परस्तिश उनके नजदीक उन माबूदों की

परस्तिश है जिनकी वे महसूस अलामतें हैं। ताहम अवाम की सतह पर अमलन बुतपरस्ती जो शक्ल इख़्तियार करती है वह यह कि लोग ख़ुद इन मूर्तियों को मुकद्दस (पवित्र) समझने लगते हैं। इन बुतों में न चलने की ताकत होती, न पकड़ने की, न देखने की और न सुनने की। मगर वही इंसान उनके बारे में यह फर्ज कर लेता है कि वे उसके काम आएंगे और उसकी हाजतें पूरी करेंगे।

ताहम यह मामला प्रचलित बुतों ही का नहीं है। इनके सिवा जिन चीजों को इंसान माबूदियत (पूज्य) का दर्जा देता है उनका हाल भी यही है। वतन और कौम से लेकर जिंदा या मुर्दा शख़्सियतों तक जिन-जिन चीजों से भी वे जज्बात वाबस्ता किए जाते हैं जो सिर्फ एक ख़ुदा का हक हैं उनकी हकीकत क्या है। उनमें से किसी के पास भी कोई जाती ताकत नहीं। कोई भी पांव या हाथ या आंख वाला ऐसा नहीं जिसके पांव और हाथ और आंख उसके अपने हों। हर 'पांव' वाले के पास दिया हुआ पांव है और अगर उसका पांव छिन जाए तो वह उसे दुबारा वापस नहीं ला सकता। हर 'हाथ' वाले के पास दिया हुआ हाथ है और अगर उसका हाथ बाकी न रहे तो वह दुबारा अपना हाथ नहीं बना सकता। हर 'आंख' वाले की आंख दी हुई आंख है और अगर उसकी आंख जाती रही तो उसके लिए मुमकिन नहीं कि वह दुबारा अपने लिए आंख तैयार कर ले।

ग़ैर अल्लाह की परस्तिश करने वाले लोग अपने बुतों के भरोसे हमेशा एक ख़ुदा के परस्तारों पर जुल्म करते रहे हैं। मगर ये लोग बहुत जल्द जान लेंगे कि ख़ुदा की इस दुनिया में उनका भरोसा किस कद्र बेबुनियाद था। जिस ख़ुदा का जुहूर मौजूदा दुनिया में किताबी मीजान (तुला) की सूरत मे हुआ है, उसका जुहूर अनकरीब अदालती मीजान की सूरत में होने वाला है। उस वक्त हर आदमी देख लेगा कि काम बनाने वाला सिर्फ ख़ुदा था, अगरचे आदमी अपनी नादानी की वजह से दूसरों को अपना काम बनाने वाला समझता रहा। शरीकों के पास तो सिरे से मदद करने की कोई ताकत ही नहीं, मगर ख़ुदा अपने वफादार बंदों की मदद दुनिया में भी करता है और आख़िरत में भी।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾ وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

दरगुज़र (क्षमा) करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से न उलझो। और अगर तुम्हें कोई वसवसा शैतान की तरफ से आए तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। जो लोग डर रखते हैं जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल उन्हें छू जाता है तो वे फौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक्त उन्हें सूझ आ जाती है। और जो शैतान के भाई हैं वे उन्हें गुमराही में खींचे चले जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते। (199-202)

तौहीद (एकेश्वरवाद) और आख़िरत (परलोक), नेकी और अद्ल (न्याय) की तरफ बुलाना 'उर्फ' की तरफ बुलाना है। यानी उन भलाइयों की तरफ जो अक्ल और फितरत के नज़दीक जानी पहचानी हैं। मगर यह सादातरीन काम हर जमाने में मुश्किलतरीन काम रहा है। इंसान की हुब्बेआजिला (स्वार्थपरकता) का यह नतीजा है कि हर जमाने में लोग अपनी जिंदगी का निज़ाम दुनियावी मफाद और जाती मस्लेहतों (हित, स्वार्थ) की बुनियाद पर कायम किए हुए होते हैं। वे हक (सत्य) का नाम लेकर बातिलपरस्ती (असत्यता) के मशग़ले में मुब्तिला होते हैं। ऐसी हालत में जब भी सच्चाई की बेआमेज (विशुद्ध) दावत उठती है तो हर आदमी अपने आप पर उसकी जद पड़ते हुए महसूस करता है। नतीजा यह होता है कि हर आदमी उसका मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

ऐसी हालत मे दाऔ (आह्वानकर्ता) को क्या करना चाहिए। इसका एक ही जवाब है और वह है दरगुजर और एराज (क्षमा, उपेक्षा)। यानी लोगों से उलझे बग़ैर बिल्कुल ठंडे तौर पर अपना काम जारी रखना। दाऔ अगर लोगों के निकाले हुए शोशों का जवाब देने लगे तो हक की दावत मुनाजिरे की सूरत इख़्तियार कर लेगी। दाऔ अगर लोगों की तरफ से छेड़े हुए ग़ैर जरूरी सवालात में अपने को मशग़ूल करे तो वह सिर्फ अपने वक्त और अपनी ताकत को जाया करेगा। दाऔ अगर लोगों की तरफ से आनी वाली तकलीफों पर उनसे झगड़ने लगे तो हक की दावत (सत्य का आह्वान), हक की दावत न रहेगी बल्कि मआशी (आर्थिक) और सियासी लड़ाई बन जाएगी। इसलिए हक की दावत को उसकी असली सूरत में बाकी रखने के लिए जरूरी है कि दाऔ जाहिलों और विरोधियों की तरफ से पेश आने वाली नाख़ुशगवारियों पर सब्र करे और उनसे उलझे बग़ैर अपने मुस्बत (सकारात्मक) काम को जारी रखे।

ताहम मौजूदा दुनिया में कोई शख़्स नफ्स और शैतान के हमलों से ख़ाली नहीं रह सकता। ऐसे मौके पर जो चीज आदमी को बचाती है वह सिर्फ अल्लाह का डर है। अल्लाह का डर आदमी को बेहद हस्सास बना देता है। यही हस्सासियत (संवेदनशीलता) मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में आदमी की सबसे बड़ी ढाल है। जब भी आदमी के अंदर कोई ग़लत ख़्याल आता है या किसी किस्म की मंफी नफ्सियात (नकारात्मक मानसिकता) उभरती है तो उसकी हस्सासियत उसे फौरन बता देती है कि वह फिसल गया है। एक लम्हे की ग़फलत के बाद उसकी आंख खुल जाती है और वह अल्लाह से माफी मांगते हुए दुबारा अपने को दुरुस्त कर लेता है। इसके बरअक्स जो लोग अल्लाह के डर से ख़ाली होते हैं उनके अंदर शैतान दाख़िल होकर अपना काम करता रहता है और उन्हें महसूस भी नहीं होता कि उसके साथी बनकर वे किस गढ़े की तरफ चले जा रहे हैं। हस्सासियत आदमी की सबसे बड़ी मुहाफिज (रक्षक) है जबकि बेहिसी आदमी को शैतान के मुकाबले में ग़ैर महफूज बना देती है।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُر رَّبَّكَ

فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

और जब तुम उनके सामने कोई निशानी मोजिजा (चमत्कार) नहीं लाए तो कहते हैं कि क्यों न तुम छांट लाए कुछ अपनी तरफ से। कहो, मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे रब की तरफ से मुझ पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ से और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। और अपने रब को सुबह व शाम याद करो अपने दिल में, आजिजी और ख़ौफ के साथ और पस्त आवाज से, और ग़ाफिलों में से न बनो। जो (फरिश्ते) तेरे रब के पास हैं वे उसकी इबादत से तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। और वे उसकी पाक जात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं। (203-206)

मक्का के लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि अगर तुम ख़ुदा के पैग़म्बर हो तो ख़ुदा के यहां से कोई मोजिजा क्यों नहीं लाए। ख़ुदा के लिए इंतिहाई आसान था कि वह आपको एक मोजिजा दे देता। मगर इसका नतीजा यह होता कि अस्ल मक्सद जाता रहता।

मसलन फर्ज कीजिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक जदीद तर्ज की एक मोटरकार उतार दी जाती जिसमें लाउडस्पीकर नसब होता। आप उसमें बैठकर चलते और लोगों के दर्मियान तब्लीग़ करते। डेढ़ हजार साल पहले के हालात में ऐसी एक कार लोगों के लिए इंतिहाई हैरतनाक मौजजा होती। मगर इसका नुक्सान यह होता कि लोगों की तवज्जोह अस्ल बात से हट जाती। अस्ल मक्सद तो यह था कि ख़ुदा का कलाम लोगों के लिए बसीरत बने। इससे लोगों को सोचने का ढंग और अमल करने का तरीका मालूम हो। इससे रूहों को ख़ुदाई ठंडक मिले। मगर मज्कूरा मोजिजे के बाद यह सारा मंसूबा धरा रह जाता और लोग बस तिलिस्माती सवारी के अजूबे में मगन होकर रह जाते।

करामाती चीजों में खोने का नाम दीन नहीं। दीन यह है कि आदमी ख़ुदा के कलाम पर ध्यान दे। उसे ग़ौर के साथ पढ़े और तवज्जोह के साथ सुने। दीनदार होने की पहचान यह है कि ख़ुदा के साथ आदमी का गहरा तअल्लुक कायम हो जाए। उसके दिल में गुदाज (नम्रता) पैदा हो। वह ख़ुदा की याद करने वाला बन जाए। ख़ुदा की अज्मत उसके दिल व दिमाग़ पर इस तरह छा जाए कि वह उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) और ख़ौफ की कैफियत पैदा कर दे। ख़ुदा का तज्किरा करते हुए उसकी आवाज पस्त हो जाए। वह ग़फ़लत से निकल कर बेदारी (सजगता) के आलम में पहुंच जाए।

आख़िर में फ़रिश्तों का किरदार बयान किया गया है। यह इसलिए कि तुम भी ऐसा ही करो ताकि तुम्हें फ़रिश्तों का साथ हासिल हो। जब आदमी अपने आपको घमंड से पाक करता है, और ख़ुदा के कमालात से इतना सरशार होता है कि उसके दिल से हर वक्त उसकी याद उबलती रहती है तो वह फ़रिश्तों का हम सतह (सम-स्तर) हो जाता है। इस दुनिया में किसी इंसान की तरक्की का आलातरीन मकाम यह है कि वह इंसान होते हुए मलकूती किरदार का हामिल (फ़रिश्ता-चरित्र) बन जाए। वह दुनिया में रहते हुए फ़रिश्तों के पड़ोस में जिंदगी गुजरने लगे।

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ ﴿۸﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۲ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۳ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴

आयतें-75 | सूरह-8. अल-अनफ़ाल | रुकूअ-10

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

वे तुमसे अनफाल (ग़नीमत का माल) के बारे में पूछते हैं। कहो कि अनफाल अल्लाह और उसके रसूल के हैं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के तअल्लुकात की इस्लाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो, अगर तुम ईमान रखते हो। ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाए तो उनके दिल दहल जाएं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएं तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं। वे नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। यही लोग हकीकी मोमिन हैं। उनके लिए उनके रब के पास दर्जे और मग्फ़िरत (क्षमा) हैं और उनके लिए इज्ज़त की रोजी है।
(1-4)

सूरह अनफाल बद्र की जंग (2 हि०) के बाद उतरी। इस जंग में मुसलमानों को फतह हुई थी और इसके बाद जंग के मैदान से काफी ग़नीमत का माल हासिल हुआ था। मगर ये अमवाल (धन) अमलन एक गिरोह के कब्ज़े में थे। इस बिना पर जंग के बाद ग़नीमत (युद्ध में प्राप्त सामग्री) की तक्सीम पर निज़ाअ (विवाद) पैदा हो गई। जंग में कुछ लोग पिछली सफ

में थे। कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाजत में लगे हुए थे। कुछ लोग आख़िरी मरहले में दुश्मन का पीछा करते हुए आगे निकल गए। इस तरह जंग के मैदान से ग़नीमत का माल लूटने का मौक़ा एक ख़ास फ़रीक (पक्ष) को मिला। दूसरे लोग जो उस वक्त जंग के मैदान से दूर थे वे दुश्मन के छोड़े हुए अमवाल को हासिल न कर सके।

अब सूरतेहाल यह थी की उसूली तौर पर तो जंग के तमाम शुरका (भागीदार) अपने को ग़नीमत के माल में हिस्सेदार समझते थे। मगर ग़नीमत का माल अमलन सिर्फ एक गिरोह के कब्ज़े में था। एक फरीक (पक्ष) के पास दलील थी और दूसरे फरीक के पास माल। एक के पास अपने हक को साबित करने के लिए सिर्फ अल्फ़ाज़ थे। जबकि दूसरे का हक किसी दलील व सुबूत के बग़ैर ख़ुद कब्ज़े के जोर पर क़ायम था।

इस क़िस्म के तमाम झगड़े ख़ुदा के ख़ौफ के मनाफ़ी (प्रतिकूल) हैं। ख़ुदा का ख़ौफ आदमी के अंदर जिम्मेदारी की नफ्सियात उभारता है। ऐसे आदमी की तवज्जोह फराइज पर होती है न कि हुकूक़ पर। वह अपनी तरफ देखने के बजाए ख़ुदा की तरफ देखने लगता है। उसका दिल ख़ुदा व रसूल की इताअत के लिए नर्म पड़ जाता है। वह ख़ुदा का इबादतगुजार बंदा बन जाता है। लोगों को देकर उसे तस्कीन मिलती है न कि लोगों से छीन कर। ये औसाफ (गुण) आदमी के अंदर हकीक़तपसंदी और हक के एतराफ का माद्दा पैदा करते हैं। हकीक़तपसंदी और एतराफेहक की फ़ज़ा का लाजिमी नतीजा यह होता है कि आपस के झगड़े ख़त्म हो जाते हैं। और अगर कभी इत्तेफाकन (संयोगवश) उभरते हैं तो एक बार की तंबीह उनकी इस्लाह के लिए काफी हो जाती है।

ख़ुदा की पकड़ का अंदेशा हर एक को इस हद पर पहुंचा देता है जिस हद पर उसे फिलवाकेअ (वस्तुतः) होना चाहिए था। और जहां हर आदमी अपनी वाकई हद पर रुकने के लिए राजी हो जाए वहां झगड़े का कोई गुजर नहीं।

كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝۵ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝۶ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝۷ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝۸

जैसा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें हक के साथ तुम्हारे घर से निकाला। और मुसलमानों में से एक गिरोह को यह नागवार था। वे इस हक के मामले में तुमसे झगड़ रहे थे बावजूद यह कि वह जाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ हांके जा रहे हैं आंखो देखते। और जब ख़ुदा तुमसे वादा कर रहा था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हें मिल जाएगी। और तुम चाहते थे कि जिसमें कांटा न लगे वह तुम्हें मिले। और अल्लाह चाहता था कि वह हक का हक होना साबित कर दे अपने कलिमात से और मुंकिरों की जड़ काट

दे ताकि हक़ (सत्य) हक़ होकर रहे और बातिल (असत्य) बातिल होकर रह जाए चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (5-8)

शाबान 2 हिजरी में मालूम हुआ कि कुरैश का एक तिजारती काफ़िला शाम से मक्का की तरफ वापस जा रहा है। इस काफ़िले के साथ तक़रीबन 50 हजार अशरफ़ी का सामान था। इसका रास्ता मदीना के करीब से गुजरता था। यह अंदेशा था कि मुसलमान अपने दुश्मनों के तिजारत के काफ़िले पर हमला करें। चुनांचे काफ़िले के सरदार अबू सुफ़्यान बिन हर्ब ने तेज रफ़्तार ऊंटनी के जरिए मक्का वालों के पास यह ख़बर भेजी कि मदद के लिए दौड़ो वर्ना मुसलमान तिजारती काफ़िले को लूट लेंगे। मक्का में इस ख़बर से बड़ा जोश पैदा हो गया। चुनांचे 950 सवार जिनमें 600 जिरहपोश (कवचधारी) थे मक्का से निकल कर मदीना की तरफ रवाना हुए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी तमाम ख़बरें मिल रही थीं। अब मदीना के मुसलमान दो गिरोहों के दर्मियान थे। एक शाम से आने वाला तिजारती काफ़िला। दूसरा मक्का से मदीना की तरफ बढ़ने वाला जंगी लश्कर। मुसलमानों के एक तबके में यह जेहन पैदा हुआ कि तिजारती काफ़िले की तरफ बढ़ा जाए। इस काफ़िले के साथ बमुश्किल 40 मुहाफ़िज थे। उसे बाआसानी मग़लूब करके उसके सामान पर कब्ज़ा किया जा सकता था। मगर ख़ुदा का मंसूबा दूसरा था। ख़ुदा को दरअस्ल मुंकिरीने हक़ का जोर तोड़ना था न कि कुछ इक्तसादी (आर्थिक) फ़ायदे हासिल करना। ख़ुदा ने मख़्सूस हालात पैदा करके ऐसा किया कि तमाम मुख़ालिफ़ सरदारों को मक्का से निकाला और उन्हें मदीना से 20 मील के फ़ासले पर बद्र के मकाम पर पहुंचा दिया ताकि मुसलमानों को उनसे टकरा कर हमेशा के लिए उनका ख़ात्मा कर दिया जाए। अल्लाह के रसूल ने जब मुसलमानों को ख़ुदा के इस मंसूबे से सूचित किया तो सबके सब मुत्तफ़िक़ (सहमत) होकर बद्र की तरफ बढ़े। उनकी तादाद अगरचे सिर्फ़ 313 थी। उनके पास हथियार भी कम थे। मगर अल्लाह ने उनकी ख़ुसूसी मदद फ़रमाई। उन्होंने कुरैश के लश्कर को बुरी तरह शिकस्त दी। उनके 70 सरदार क़त्ल हुए और 70 गिरफ़्तार कर लिए गए। बद्र का मैदान कुफ़्र के मुक़ाबले में इस्लाम की फ़तह का मैदान बन गया। जब भी ऐसा हो कि एक तरफ माद्दी फ़ायदा हो और दूसरी तरफ दीनी फ़ायदा तो यह तक़्सीम ख़ुद इस बात का सुबूत है कि ख़ुदा की मर्जी दीनी फ़ायदे की तरफ है न कि माद्दी फ़ायदे की तरफ।

इस्लामी जद्दोजहद का निशाना कभी मआशी मफ़ाद हासिल करना नहीं होता। इस्लामी जद्दोजहद का निशाना हमेशा बातिल (असत्य) का जोर तोड़ना होता है। चाहे वह नजरियाती ताक़त के जरिए हो या हालात के एतबार से माद्दी ताक़त के जरिए।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِندِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ

عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ
وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾ إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي
مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रियाद सुनी कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हजार फ़रिश्ते लगातार भेज रहा हूं। और यह अल्लाह ने सिर्फ़ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएं। और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है। यक़ीनन अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। जब अल्लाह ने तुम पर ऊंघ डाल दी अपनी तरफ से तुम्हारी तस्कीन के लिए और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके जरिए से तुम्हें पाक करे और तुमसे शैतान की नजासत (गंदगी) को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और उससे क़दमों को जमा दे। जब तेरे रब ने फ़रिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम ईमान वालों को जमाए रखो। मैं मुंकिरों के दिल में रौब डाल दूंगा। पस तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर-पोर पर जर्ब (चोट) लगाओ। यह इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सजा देने में सख़्त है। यह तो अब चखो और जान लो कि मुंकिरों के लिए आग का अजाब है। (9-14)

बद्र की लड़ाई बड़े नाज़ुक हालात में हुई। तक़रीबन एक हजार मुसल्लह दुश्मनों के मुक़ाबले में मुसलमानों की तादाद सिर्फ़ 313 थी। उनके पास हथियार भी कम थे। दुश्मनों ने जंग के मक़ाम (बद्र) पर पहले पहुंच कर वहां अच्छी जगह और पानी के चशमे पर कब्ज़ा कर लिया। इस किस्म के हालात देखकर मुसलमानों के दिल में यह वसवसा आने लगा कि जिस मिशन के लिए वे अपनी जिंदगी वीरान कर रहे हैं उसके साथ शायद ख़ुदा की मदद शामिल नहीं। अगर वह हक़ होता तो ऐसे नाज़ुक मौक़े पर ख़ुदा क्यों उनका साथ न देता, क्यों असबाब के तमाम सिरे उनके हाथ से निकल कर दुश्मनों की तरफ चले जाते।

उस वक़्त अल्लाह तआला ने बद्र के इलाके में जोर की बारिश बरसाई। मुसलमानों ने हौज बना बनाकर बारिश का पानी जमा कर लिया। दुश्मन ने मुसलमानों को जमीन के पानी से महरूम किया था, ख़ुदा ने उनके लिए आसमान से पानी का इंतिजाम कर दिया। इसी तरह ख़ुदा ने यह ग़ैर मामूली इंतिजाम फ़रमाया कि मुसलमानों के ऊपर नींद तारी कर दी। सोना

आदमी के ताजा दम होने के लिए बहुत जरूरी है। मगर जंग के मैदान के हालात इस कद्र वहशतनाक होते हैं कि आदमी की नींद उड़ जाती है। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों की यह ख़ुसूसी मदद फरमाई कि जंग के दिन से पहले वाली रात को उन पर नींद तारी कर दी। वे रात को जेहनी बोझ से फारिग होकर सो गए और सुबह को पूरी तरह ताजा दम होकर उठे। जो हालात मुसलमानों के अंदर वसवसा पैदा करने का सबब बन रहे थे, उन्हीं हालात के अंदर ख़ुदा ने ऐसे इम्कानात पैदा कर दिए कि उनके अंदर नया यकीन व एतमाद उभर आया।

मुकाबले के वक्त अहले हक से जो चीज मत्लूब है वह साबितकदमी है। उन्हें किसी हाल में बददिल नहीं होना चाहिए। इस साबितकदमी का नक . द इनाम ख़ुदा की तरफ से यह मिलता है कि हक के दुश्मनों के दिलों में रौब डाल दिया जाता है। और जो गिरोह अपने हरीफ से मरऊब हो जाए, उसे कोई चीज शिकस्त से नहीं बचा सकती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारा मुकाबला मुंकिरीन से जंग के मैदान में हो तो उनसे पीठ मत फेरो। और जिसने ऐसे मौके पर पीठ फेरी, सिवा इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फौज से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के ग़जब (प्रकोप) में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (15-16)

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम का टकराव जब जंग के मैदान तक पहुंच जाए तो यह गोया फरीकैन (पक्षों) के लिए आख़िरी फैसले का वक्त होता है। ऐसे नाजुक लम्हे में अगर कोई शख़्स या गिरोह ऐसा करे कि ऐन मअरके के वक्त वह मैदान छोड़ कर भागे तो उसने बदतरीन जुर्म किया। एक तरफ उसने हक को बचाने के मुकाबले में अपने आपको बचाने को ज्यादा अहम समझा, उसने अपने मक्सद के मुकाबले में अपनी जात को तरजीह दी। और यह सब कुछ उसने उस वक्त किया जबकि उस हक की जिंदगी की बाजी लगी हुई थी जिसे आलातरीन सदाकत करार देकर वह उस पर ईमान लाया था।

दूसरे यह कि ऐसे नाजुक मौके पर अक्सर एक छोटा सा वाक्या बहुत बड़े वाक्ये का सबब बन जाता है। एक शख़्स या एक गिरोह का मैदान छोड़कर भागना पूरी फौज का हौसला तोड़ देता है। एक शख़्स की भगदड़ बिलआख़िर आम भगदड़ की सूरत इख़्तियार कर लेती है। और हंगामी हालात (आपात स्थिति) में जब किसी मज्मअ में आम भगदड़ शुरू हो जाए तो वह अपनी आख़िरी हद पर पहुंचने से पहले कहीं नहीं रुकती।

इससे मुस्तसना (अपवाद) सिर्फ वह सूरत है जबकि कोई सिपाही या सिपाहियों का कोई दस्ता किसी जंगी तदबीर के लिए पीछे हटता है या वह अपने एक मोर्चे से हटकर दूसरे मोर्चे

की तरफ सिमटना चाहता है। फरार के तौर पर अगर कोई पीछे हटता है तो वह बिलाशुबह नाकाबिले माफी जुर्म करता है। मगर जो पीछे हटना जंग की तदबीर से तअल्लुक रखता हो वह जाइज है। इसके लिए आदमी पर कोई इल्जाम नहीं।

मज्कूरा हुक्म अस्लन जंग से मुतअल्लिक है। ताहम दूसरी मुशाबह सूरतें भी दर्जा बदर्जा इसी के जेल में आ सकती हैं। मसलन एक शख़्स बेआमेज (विशुद्ध) इस्लाम के ख़ामोश और तामीरी अमल की तरफ लोगों को पुकारे। मगर कुछ अर्से के बाद जब वह देखे कि उसकी दावत लोगों में ज्यादा मकबूल नहीं हो रही है तो वह बेसब्री का शिकार हो जाए और ख़ामोश तामीर के महाज को छोड़कर ऐसे इस्लाम की तरफ दौड़ पड़े जिसके जरिए अवाम में बहुत जल्द शोहरत और मर्तबा हासिल किया जा सकता है।

जंग के मैदान से भागना शुऊर और इरादे के तहत होता है। मगर जंगी मैदान के बाहर जो मअरका जारी है उससे 'भागना' एक ग़ैर शुऊरी वाकया है। आदमी तबई तौर पर (स्वभावगत) नतीजापसंद वाकअ हुआ है। वह अपने काम का एतराफ (स्वीकार्यता) चाहता है। उसका यह मिजाज ग़ैर शुऊरी तौर पर उसे उन कामों से हटा देता है जिनमें फौरी नतीजा निकलता हुआ नजर न आता हो। वह अपने अंदर काम करने वाले ग़ैर शुऊरी असरात के तहत उन चीजों की तरफ खिंच उठता है जिनमें बजाहिर यह उम्मीद हो कि फौरन इज्जत व कामयाबी हासिल हो जाएगी। इस किस्म का हर इंहिराफ (भटकाव) अपनी हकीकत के एतबार से उसी नौइयत की चीज है जिसे मज्कूरा आयत में मुकाबले के मैदान से भागना कहा गया है।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾ إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

पस उन्हें तुमने कत्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने कत्ल किया। और जब तुमने उन पर ख़ाक फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी ताकि अल्लाह अपनी तरफ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे। बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। यह तो हो चुका। और बेशक अल्लाह मुंकिरीन की तमाम तदबीरें (युक्तियां) बेकार करके रहेगा। अगर तुम फैसला चाहते थे तो फैसला तुम्हारे सामने आ गया। और अगर तुम बाज आ जाओ तो यह तुम्हारे हक में बेहतर है। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम न आएगा चाहे वह कितना ही ज्यादा हो। और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है। (17-19)

रिवायात में आता है कि जब बद्र का मअरका गर्म हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की जबान से दुआ करते हुए यह अल्फ़ाज निकले : 'ऐ मेरे रब, अगर यह जमाअत हलाक हो गई तो कभी जमीन पर तेरी परस्तिश न होगी।' फिर आपने अपने हाथ में मुट्ठी भर ख़ाक ली और उसे मुश्रिकीन की तरफ फेंकते हुए कहा : 'चेहरे बिगड़ जाएं' इसके बाद मुंकिरों के लश्कर का यह हाल हुआ जैसे सबकी आंखों में रेत पड़ गई हो। चुनांचे अहले ईमान ने निहायत आसानी से जिसे चाहा कत्ल किया और जिसे चाहा गिरफ्तार कर लिया।

यह अल्लाह का जिम्मा है कि वह अहले ईमान की मदद करता है। उनके दुश्मन चाहे कितनी ही साजिशें करें वह उनकी साजिशों को अपनी तदबीरों से बेअसर कर देता है। वह उन्हें मगलूब करके अहले ईमान को उनके ऊपर ग़ालिब कर देता है। मगर ऐसा कब होता है। ऐसा उस वक्त होता है जबकि अहले ईमान अपने इरादे को ख़ुदा के इरादे में इस तरह मिला दें कि ख़ुदा की मंशा और अहले ईमान की मंशा दोनों एक हो जाएं। जब बंदा इस तरह अपने आपको ख़ुदा के मुताबिक कर लेता है तो जो कुछ ख़ुदा का है वह उसका हो जाता है क्यों कि जो कुछ उसका है वह ख़ुदा को दे चुका होता है।

बद्र के लिए रवानगी से पहले मक्का के सरदार बैतुल्लाह गए और काबे के पर्दे को पकड़ कर यह दुआ की : 'ख़ुदाया उसकी मदद कर जो दोनों लश्करों में सबसे आला हो, जो दोनों गिरोहों में सबसे मुअज्जज (आदरणीय) हो, जो दोनों कबीलों में सबसे बेहतर हो।' बद्र की लड़ाई में मक्का के सरदारों को कामिल शिकस्त और अहले ईमान को कामिल फतह हुई। इस तरह ख़ुद मक्का के सरदारों के मेयार के मुताबिक यह साबित हो गया कि ख़ुदा के नजदीक आला व अशरफ (उच्च, संभ्रात) गिरोह वह नहीं हैं बल्कि अहले इस्लाम हैं। इसके बावजूद उन्होंने इस्लाम कुबूल नहीं किया। जो लोग ऐसा करें उनके लिए आख़िरत में सख़्ततरीन अजाब है और इसी के साथ दुनिया में भी।

'दोनों में जो सबसे आला और सबसे अशरफ हो उसे फतह दे' यह बजाहिर दुआ थी मगर हकीकतन वह अपने हक में पुरफख़्र एतमाद का इज्हार था। इसके पीछे उनकी यह नफ्सियात काम कर रही थी कि हम काबा के पासबान हैं, हम इब्राहीम व इस्माईल से निस्बत रखने वाले हैं। जब हमारे साथ इतनी बड़ी फजीलतें जमा हैं तो जीत बहरहाल हमारी होनी चाहिए। मगर ख़ुदा के यहां जाती अमल की कीमत है न कि ख़ारजी इंतिसाबात (वाह्य जुड़ावों) की। ख़ारजी इंतिसाब चाहे वह कितना ही बड़ा हो आदमी के कुछ काम आने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنتُمْ
تَسْمَعُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ
شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ
فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो और उससे रूगर्दानी (अवहेलना) न करो हालांकि तुम सुन रहे हो। और उन लोगों की तरह न हो

जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालांकि वे नहीं सुनते। यकीनन अल्लाह के नजदीक बदतरीन जानवर वे बहरे गूंगे लोग हैं जो अक्ल से काम नहीं लेते। और अगर उनमें किसी भलाई का इल्म अल्लाह को होता तो वह जरूर उन्हें सुनने की तौफीक देता और अगर अब वह उन्हें सुनवा दे तो वे जरूर रूगर्दानी करेंगे बेरुख़ी करते हुए। (20-23)

आदमी के सामने जब हक बात पेश की जाए तो एक सूरत यह है कि वह उसे उन तमाम सलाहियतों को इस्तेमाल करते हुए सुने जो ख़ुदा ने उसे बहैसियत इंसान अता की हैं। वह उस पर पूरी तरह ध्यान दे। वह उसकी सदाकत के वजन को महसूस कर ले। और फिर अपनी जबान से वह सही जवाब पेश करे जो एक हक के मुकाबले में इंसान की फितरत को पेश करना चाहिए। जो शख़्स ऐसा करे उसने गोया पेश की हुई बात को इंसान की तरह सुना। दूसरी सूरत यह है कि वह उसे इस तरह सुने जैसे कि उसके पास सुनने के लिए कान नहीं हैं। उसके समझने की सलाहियत उसकी सच्चाई को पकड़ने से आजिज रह जाए। वह अपनी जबान से वह सही जवाब पेश न कर सके जो उसे अजरुए वाक्या (यथार्थतः) पेश करना चाहिए। जो शख़्स ऐसा करे उसने गोया पेश की हुई बात को जानवर की तरह सुना।

कोई बात चाहे वह कितनी ही बरहक हो उसकी हक्कानित सिर्फ उसी शख़्स पर खुलती है जो दिल की आमादगी के साथ उसे सुने। इसके बरअक्स जो शख़्स हसद, किब्र (अहं), मस्लेहत अंदेशी (स्वार्थता) और जाहिरपरस्ती का मिजाज अपने अंदर लिए हुए हो वह सच्चाई को काबिले ग़ौर नहीं समझेगा, वह उसे संजीदगी के साथ नहीं सुनेगा, इसलिए वह उसकी सदाकत को पाने में भी यकीनी तौर पर नाकाम रहेगा।

ईमान बजाहिर एक कौल है। मगर अपनी हकीकत के एतबार से वह एक इंसानी फैसला है। ईमान महज शहादत के अल्फ़ाज की तकरार नहीं बल्कि अपनी मअनवी (अर्थपूर्ण) हालत का लफ्जी इज्हार है। अगर आदमी की हालत फिलवाकअ (वस्तुतः) वही हो जिसका वह उन अल्फ़ाज के जरिए एलान कर रहा है तो वह ख़ुदा की नजर में हकीकी मोमिन है। मोमिन संजीदातरीन इंसान है और संजीदा इंसान कभी ऐसा नहीं कर सकता कि उसकी अंदुरूनी हालत कुछ हो और बोले हुए अल्फ़ाज में वह अपने को कुछ जाहिर करे।

जिस आदमी का ईमान अपनी अंदुरूनी हकीकत के एलान के हममअना हो वह ईमान का इकरार करते ही अमलन ख़ुदा को अपना माबूद (पूज्य) बना लेगा और अपनी जिंदगी के तमाम मामलात में उसकी पैरवी करने वाला बन जाएगा। जबान से ईमान का इकरार उसके लिए अपनी सम्ते सफर बताने के हममअना होगा न कि किसी किस्म के ज़बानी तलफ्फुज (उच्चारण) के हममअना। इसके बरअक्स हालत उस शख़्स की है जिसने बात सुनी। वह उसके दलाइल के मुकाबले में लाजवाब भी हो गया। मगर वह उसकी रूह में नहीं उतरी। वह उसके दिल की धड़कनों में शामिल नहीं हुई। ताहम ऊपरी तौर पर उसने जबान से कह दिया कि हां ठीक है। मगर उसकी वाकई जिंदगी इसके बाद भी वैसी ही रही जैसी कि वह इससे पहले थी। यह दूसरी सूरत निफ़ाक (पाखंड) की सूरत है और ख़ुदा के यहां ऐसे मुनाफिकाना (पाखंड भरे) ईमान की कोई कीमत नहीं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहो जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ बुला रहा है जो तुम्हें जिंदगी देने वाली है। और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल (बाधित) हो जाता है। और यह कि उसी की तरफ तुम्हारा इकट्ठा होना है। और डरो उस फितने से जो ख़ास उन्हीं लोगों पर घटित न होगा जो तुममें से जुल्म के करने वाला हुए हैं। और जान लो कि अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। (24-25)

'जिंदगी की पुकार' से मुराद यहां जिहाद की पुकार है। यानी हक को दूसरों तक पहुंचाने की जद्दोजहद। यह जद्दोजेहद इब्तिदा में ज़बान व क़लम के ज़रिए तल्कीन (दीक्षा) की सूरत में शुरू होती है। मगर मदऊ (सम्बोधित पक्ष) का मुख़ालिफाना रद्देअमल उसे विभिन्न मराहिल तक पहुंचा देता है, यहां तक कि हिजरत (स्थान-परिवर्तन) और जंग तक भी।

आदमी इंफिरादी सतह पर अपने ख़्याल के मुताबिक एक दीनी जिंदगी बनाता है। इस जिंदगी को वह अपने हालात से इस तरह मुताबिक कर लेता है कि वह उसे आफ़ियत का जजीरा (शांति द्वीप) मालूम होने लगती है। उसे ऐसा महसूस होता है कि अगर वह दूसरों की इस्लाह (सुधार) के लिए उठा तो उसका बना बनाया आशियाना उजड़ जाएगा। उसकी लगी बंधी जिंदगी बेतर्तीब हो कर रह जाएगी। उसके वक्त और उसके माल का वह निजाम बाकी न रहेगा जो उसने अपने जाती तकाजों के तहत बना रखा है।

इस किस्म के अंदेशे उसके लिए दावत व इस्लाह की जद्दोजहद में निकलने और इसकी राह में जान व माल पेश करने के लिए रुकावट बन जाते हैं। मगर यह सरासर नादानी है। हकीकत यह है कि आदमी जिस आफ़ियतकदा (शांति-स्थल) को अपने लिए जिंदगी समझ रहा है वह उसका कब्रस्तान है। और जिस कुर्बानी में उसे अपनी मौत नजर आती है उसी में उसकी जिंदगी का राज छुपा हुआ है।

दावत व इस्लाह का अमल, बशर्ते कि वह आख़िरत के लिए हो न कि दुनियावी मकासिद के लिए, इंतिहाई अहम अमल है। वह आदमी के मुर्दा दीन को जिंदा दीन बनाता है। वह आलातरीन सतह पर इंसान को ख़ुदा से जोड़ता है। वह उन कीमती दीनी तजर्बात से आदमी को आशना करता है जो इंफिरादी ख़ोल में रहकर कभी हासिल नहीं होते। ख़ुदा की तरफ से इतनी अहम पुकार को सुनकर जो लोग उसके बारे में बेतवज्जोह रहें वे यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि उनके और हक (सत्य) के दर्मियान एक नफ़्सियाती (मनोवैज्ञानिक) आड़ खड़ी हो जाए। उनकी यह फितरी सलाहियत हमेशा के लिए कुंद हो जाए कि वे हक की पुकार को सुनें और उसकी तरफ दौड़कर अपने रब को पा लें।

इंसान की जिंदगी एक समाजी जिंदगी है। कोई शख़्स उसके अंदर अपना इंफिरादी जज़ीरा बनाकर नहीं रह सकता। अगर एक शख़्स जाती दीनदारी पर कानेअ (संतुष्ट) है तो वह हर वक्त इस अंदेशे में है कि इज्तिमाई (सामूहिक) बिगाड़ के नतीजे में कोई उमूमी आग फैले और वह ख़ुद भी उसकी लपेट में आ जाए। इस्लाही (सुधारवादी) जद्दोजहद इस्लाह के साथ दायित्व-पालन भी है। अगर आदमी दायित्व-पालन पेश करने में नाकाम रहे तो ख़ुदा उसके मामले को क्यों दूसरों से अलग करेगा।

कोई बुराई हमेशा छोटी सतह से शुरू होती है और फिर बढ़ते-बढ़ते बड़ी बन जाती है। अगर ऐसा हो कि बुराई जब अपनी इब्तिदाई हालत में हो उसी वक्त कुछ लोग उसके ख़िलाफ उठ जाएं तो वे आसानी के साथ उसे कुचल देंगे। लेकिन जब बुराई फैल चुकी हो तो उसकी जड़ें इतनी गहरी हो जाती हैं कि फिर उसे ख़त्म करना मुमकिन नहीं रहता।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

और याद करो जबकि तुम थोड़े थे और जमीन में कमजोर समझे जाते थे। डरते थे कि लोग अचानक तुम्हें उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुम्हें रहने की जगह दी और अपनी नुसरत (मदद) से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीजा रोजी दी ताकि तुम शुक्रगुजार बनो। ऐ ईमान वालो, ख़ियानत (विश्वास-भंग) न करो अल्लाह और रसूल की और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में हालांकि तुम जानते हो। और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आजमाइश हैं। और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अज्र। (26-28)

मक्का में मुसलमान बिल्कुल बेबसी की हालत में थे। हर वक्त यह अंदेशा लगा रहता कि कब उन्हें उखाड़ कर फेंक दिया जाए। वे ऐसे कमजोर की मानिंद थे जिसे हर तरह दबाया जाता था और उसके जाइज हुकूक भी उसे नहीं दिए जाते। बिलआख़िर उनके लिए मदीने का रास्ता खुला। उन्हें यह मौका दिया गया कि वे मदीना जाकर अपना मर्कज बनाएं और वहां के माहौल में आजादी और इज्जत के साथ रहें।

मुश्किल के बाद आसानी फराहम करने का यह मामला इसलिए किया जाता है ताकि आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा उभरे। आदमी के हालात जब इस हद पर पहुंच जाते हैं

जहां वह अपने आपको बेबस महसूस करने लगता है। उस वक्त अचानक अल्लाह का मदद जाहिर होकर हालात को बदल देती है। ऐसा इसलिए होता है ताकि आदमी यकीन करे कि जो कुछ हुआ वह ख़ुदा की तरफ से हुआ। इस एहसास की बिना पर वह ख़ुदा के इनामात के जज्बे से सरशार हो जाए।

आदमी ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाता है। इस तरह वह यह अहद करता है कि वह ख़ुदा व रसूल के रास्ते पर चलेगा। मगर जब ईमानी तरीके को इख़्तियार करने में उसके माल व औलाद के तकाजे हायल होते हैं तो वह ईमान के तकाजे को छोड़कर माल व औलाद के तकाजे को पकड़ लेता है। यह ईमानी अहद के साथ खुली हुई ग़द्दारी है। इस ग़द्दारी की शनाअत (तीव्रता) उस वक्त और बढ़ जाती है जब यह देखा जाए कि आदमी जिस चीज की ख़ातिर खुदा के साथ ग़द्दारी का मामला कर रहा है वह भी ख़ुद ख़ुदा का एक अतिय्या (देन) है।

आदमी का माल और उसकी औलाद क्या है। वह ख़ुदा ही का दिया हुआ तो है। वह बंदे के पास ख़ुदा की अमानत है। इस अमानत का अगर कोई सबसे बेहतर मसरफ (उपयोग) हो सकता है तो वह यह है कि जब देने वाला उसे मांगे तो उसे बख़ुशी उसके हवाले कर दिया जाए। मगर जब खुदा कहता है कि मेरे दीन के लिए उठो और उसमें अपनी कुव्वतें लगाओ तो आदमी उसी अमानत को अपने लिए उज्र बना लेता है जिसे ख़ुदा के दीन की राह में देकर उसे ख़ुदा से किए हुए ईमान के अहद को पूरा करना था। वह कामयाबी के कनारे पहुंच कर अपने को नाकामों की फेहरिस्त में लिखवा लेता है।

कोई फेअल (कृत्य) ख़ुदा के यहां जुर्म उस वक्त बनता है जबकि यह जानते हुए उस पर अमल किया जाए कि वह ग़लत है। किसी शख़्स पर अगर उसके एक काम की ग़लती वाजेह हो जाती है और इसके बाद भी वह उसे करता है तो वह बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने सर ले रहा है। क्योंकि ग़लती को ग़लती जानने के बाद उसे दोहराना ढिठाई है और ढिठाई ख़ुदा के यहां माफ़ी के काबिल नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़ुरकान बहम पहुंचाएगा और तुमसे तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है, और जब मुंकिर तुम्हारे बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि तुम्हें कैद कर दें या कत्ल कर डालें या जलावतन (निर्वासित) कर दें। वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था और अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है। (29-30)

फ़ुरकान के मअना हैं फ़र्क करने वाली चीज। यहां फ़ुरकान से मुराद हक व बातिल के दर्मियान फर्क करने की सलाहियत है। आदमी अगर अल्लाह से डरे, वह वही करे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है और उससे बचे जिससे अल्लाह ने मना किया है तो उसे इस बात की तौफ़ीक मिलती है कि वह हक और बातिल को एक दूसरे से अलग करके देख सके।

इंसानी सलाहियतों को बेदार करने वाली सबसे बड़ी चीज डर है। जिस मामले में इंसान के अंदर डर की नफ़्सियात पैदा हो जाए उस मामले में वह हद दर्जा हकीकतपसंद बन जाता है। डर की नफ़्सियात उसके जेहन के तमाम पर्दों को इस तरह हटा देती है कि इस बारे में वह हर किस्म की ग़फ़लत या ग़लतफ़हमी से बुलन्द होकर सहीतरीन राय कायम कर सके। यही मामला ख़ुदा के उस बंदे के साथ पेश आता है जिसे रब्बुल आलमीन के साथ तकवा (डर) का तअल्लुक पैदा हो गया हो।

यह फ़ुरकान तकरीबन वही चीज है जिसे मअरफ़त या बसीरत कहा जाता है। बसीरत किसी आदमी में वह अंदरूनी रोशनी पैदा करती है कि वह जाहिरी पहलुओं से धोखा खाए बग़ैर हर बात को उसके अस्ल रूप में देख सके। जब भी कोई आदमी किसी मामले में अपने को इतना ज्यादा शामिल करता है कि वह उसकी परवाह करने लगे। वह उसके बारे में अंदेशानाक (संदेह में) रहता हो तो इसके बाद उसके अंदर एक ख़ास तरह की हस्सासियत (संवेदनशीलता) पैदा होती है जो उसे इस मामले में मुवाफ़िक और मुख़ालिफ पहलुओं की पहचान करा देती है। यह फ़ुरकानी मामला हर एक के साथ पेश आता है चाहे वह एक मजहबी आदमी हो या एक ताजिर और डॉक्टर और इंजीनियर। कोई भी आदमी जब अपने काम से तकवा (खटक) की हद तक अपने को वाबस्ता करता है तो उसे इस मामले की ऐसी मअरफ़त हो जाती है कि इधर उधर के मुग़ालतों (भ्रमों) में उलझे बग़ैर वह उसकी हकीकत तक पहुंच जाए।

किसी आदमी के अंदर यह ख़ुदाई बसीरत (फ़ुरकान) पैदा होना इस बात की सबसे बड़ी जमानत है कि वह बुराइयों से बचे, वह ख़ुदा के साथ अपने तअल्लुक को दुरुस्त करे और बिलआख़िर ख़ुदा के फ़ज़्ल का मुस्तहिक बन जाए। यह फ़ुरकान (हक व बातिल की नफ़्सियाती तमीज) पैदा हो जाना इस बात का सुबूत है कि आदमी अपने आपको हक के साथ इतना ज्यादा वाबस्ता कर चुका है कि उसमें और हक में कोई फर्क नहीं रहा। वह और हक दोनों एक दूसरे का मुसन्ना बन चुके हैं। इसके बाद उसका बचाया जाना उतना ही जरूरी हो जाता है जितना हक को बचाया जाना। ऐसे लोग बराहेरास्त ख़ुदा की पनाह में आ जाते हैं। अब उनके ख़िलाफ तदबीरें करना ख़ुद हक के ख़िलाफ तदबीरें करना बन जाता है। और ख़ुदा के ख़िलाफ तदबीरें करने वाला हमेशा नाकाम रहता है चाहे उसने कितनी ही बड़ी तदबीर कर रखी हो।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَمَا كَانَ

اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ۚ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ۚ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया। अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें। यह तो बस अगलों की कहानियां हैं। और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह अगर यही हक है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दर्दनाक अजाब हम पर ले आ। और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें अजाब दे इस हाल में कि तुम उनमें मौजूद हो और अल्लाह उन पर अजाब लाने वाला नहीं जबकि वे इस्तग़फार (क्षमा-याचना) कर रहे हों। और अल्लाह उन्हें क्यों न अजाब देगा हालांकि वे मस्जिदे हराम से रोकते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली (संरक्षक) नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं। मगर उनमें से अक्सर इसे नहीं जानते। और बैतुलल्लाह के पास उनकी नमाज सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं। पस अब चखो अजाब अपने कुफ्र का। (31-35)

हम भी ऐसा कलाम बना सकते हैं, हम नाहक पर हैं तो हमारे ऊपर पत्थर क्यों नहीं बरसता। ये सब घमंड की बातें हैं। आदमी जब दुनिया में अपने को महफूज हैसियत में पाता है, जब वह देखता है कि हक का इंकार करने या उसे नजरअंदाज करने से उसका कुछ नहीं बिगड़ा तो उसके अंदर झूठे एतमाद की नफ्सियात पैदा हो जाती है। वह समझता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूं वह बिल्कुल दुरुस्त है। उसका यह एहसास उसकी जबान से ऐसे कलिमात निकलवाता है जो आम हालात में किसी की जबान से नहीं निकलते।

इस किस्म के लोगों में यह दिलेरी ख़ुदा के कानूने मोहलत की वजह से पैदा होती है। ख़ुदा यकीनन मुजरिमों को सजा देता है मगर ख़ुदा की सुन्नत यह है कि वह आदमी को हमेशा उस वक्त पकड़ता है जबकि उसके ऊपर हक व बातिल की वजाहत का काम मुकम्मल तौर पर अंजाम दे दिया गया हो। इस काम की तक्मील से पहले किसी को हलाक नहीं किया जाता। साथ ही यह कि दावती अमल के दर्मियान अगर एक-एक दो-दो आदमी उससे मुतअस्सिर होकर अपनी इस्लाह कर रहे हों तब भी सजा का नुजूल रुका रहता है ताकि यह अमल इस हद तक मुकम्मल हो जाए कि जितनी सईद (पावन) रूहें हैं सब उससे बाहर आ चुकी हों।

उम्मतों में बिगाड़ आता है तो ऐसा नहीं होता कि उनके दर्मियान से दीन की सूरतें मिट जाएं। बिगाड़ के जमाने में हमेशा यह होता है कि ख़ुदा के ख़ौफ वाला दीन जाता रहता है

और उसकी जगह धूम धाम वाला दीन आ जाता है। अब कौम के पास अमल नहीं होता बल्कि माजी की शख़्सियतें और उनके नाम पर कायमशुदा गद्दियां होती हैं। लोग इन शख़्सियतों और इन गद्दियों से वाबस्ता होकर समझते हैं कि उन्हें वही अज्मत हासिल हो गई है जो तारीख़ी असबाब से ख़ुद इन शख़्सियतों और गद्दियों को हासिल है। लोग अंदर से ख़ाली होते हैं मगर बड़े-बड़े नामों पर नुमाइशी आमाल करके समझते हैं कि वे बहुत बड़ा दीनी कारनामा अंजाम दे रहे हैं।

मक्का के लोग इसी किस्म की नफ्सियात में मुब्तिला थे। उन्हें फ़ख़्र था कि वे बैतुल्लाह के वारिस हैं। इब्राहीम व इस्माईल जैसे जलीलुलकद्र पैग़म्बरों की उम्मत हैं। उन्हें काबा के ख़ादिम होने का शरफ हासिल है। उनका ख़्याल था कि जब उन्हें इतने दीनी एजाजात (पारितोष) हासिल हैं और वे इतने बड़े-बड़े दीनी कारनामे अंजाम दे रहे हैं तो कैसे मुमकिन है कि ख़ुदा उन्हें जहन्नम में डाल दे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

जिन लोगों ने इंकार किया वे अपने माल को इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह की राह से रोकें। वे उसे ख़र्च करते रहेंगे फिर यह उनके लिए हसरत बनेगा फिर वे मग़लूब (परास्त) किए जाएंगे। और जिन्होंने इंकार किया उन्हें जहन्नम की तरफ इकट्ठा किया जाएगा। ताकि अल्लाह नापाक को अलग कर दे पाक से और नापाक को एक पर एक रखे फिर इस ढेर को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारे (घाटे) में पड़ने वाले। (36-37)

इंसानों में कुछ पाक हैं और कुछ नापाक। कुछ रूहों की ग़िजा वे चीजें होती हैं जो ख़ुदा को पसंद हैं और कुछ रूहों को उन चीजों में लज्जत मिलती है जो उनके नफ्स को या शैतान को मरग़ूब हैं।

आम हालात में ये दोनों किस्म के लोग एक दूसरे से मिले रहते हैं। बजाहिर इनमें कोई फर्क दिखाई नहीं देता। इसलिए अल्लाह तआला लोगों के दर्मियान हक व बातिल (सत्य-असत्य) की कशमकश बरपा करता है ताकि दोनों किस्म के लोग एक दूसरे से अलग हो जाएं और यह मालूम हो जाए कि कौन क्या था और कौन क्या था।

इस कशमकश के दौरान खुल जाता है कि कौन हक के सामने आने के बाद फौरन उसे मान लेता है और कौन वह है जो उसका इंकार कर देता है। कौन दूसरों के साथ मामला पड़ने पर इंसाफ की हद पर कायम रहता है और कौन बेइंसाफी पर उतर आता

है। कौन ख़ुदा की जमीन में मुतवाजेअ (सदाचारी) बनकर रहता है और कौन सरकश बनकर। कौन सच्चाई की राह में अपना माल ख़र्च करने वाला है और कौन तअस्सुब और नुमाइश की राह में।

जो लोग हक को छोड़कर दूसरी राहों में अपनी कोशिशें सर्फ करते हैं उनके इस अमल को शैतान उनकी नजर में इस तरह हसीन बनाता रहता है कि वे समझते हैं कि वे आला कारनामे अंजाम दे रहे हैं, वे शानदार मुस्तकबिल की तरफ बढ़ रहे हैं। मगर इस ग़लतफ़हमी की उम्र बहुत थोड़ी होती है। बहुत जल्द आदमी पर वह वक्त आ जाता है जबकि वह जान लेता है कि उसने जो कुछ किया वह सिर्फ अपनी कुव्वत और अपने माल को जाया करना था, वह जिस मुस्तकबिल की तरफ बढ़ रहा था वह हसरत और मायूसी का मुस्तकबिल था। अगरचे झूठी ख़ुशफ़हमी के तहत वह उसे रोशन मुस्तकबिल की तरफ सफ़र के हममअना समझता रहा था।

बेआमेज हक की दावत उठती है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर उसकी जद पड़ती हुई महसूस करते हैं जो मिलावटी दीन की बुनियाद पर सरदारी कायम किए हुए थे। वे उस रवाजी ढांचे की हिफ़ाजत में अपनी सारी ताक़त ख़र्च कर देते हैं जिसके अंदर उन्हें बड़ाई का मकाम हासिल है। मगर ऐसे लोग बेआमेज हक के मुक़ाबले में लाजिमन नाकाम होते हैं, कभी दलील के मैदान में और कभी इसी के साथ अमल के मैदान में भी।

मौजूदा दुनिया के हंगामे सिर्फ इसलिए जारी किए गए हैं कि पाक रूहों और नापाक रूहों को एक दूसरे से अलग कर दिया जाए। यह छांटने का अमल जब पूरा हो जाएगा तो ख़ुदा पाक रूहों को जन्नत में दाख़िल कर देगा और नापाक रूहों को एक साथ जमा करके जहन्नम में धकेल देगा।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

इंकार करने वालों से कहो कि अगर वे बाज आ जाएं तो जो कुछ हो चुका है वह उन्हें माफ कर दिया जाएगा। और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला अगलों के साथ गुजर चुका है। और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फितना बाकी न रहे और दीन सब अल्लाह के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो अल्लाह देखने वाला है उनके अमल का। और अगर उन्होंने एराज (उपेक्षा) किया तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार। (38-40)

इस्लाम का उसूल यह है कि जो शख़्स जैसा अमल करे उसके मुताबिक वह अपना बदला पाए। ताहम अल्लाह तआला ने इस आम उसूल में अपनी रहमत से एक ख़ास इस्तिसना (अपवाद) रखा है। वह यह कि आदमी जब 'तौबा' कर ले तो इसके बाद उसके पिछले आमाल पर उसे कोई सजा नहीं दी जाएगी। एक शख़्स ख़ुदा से दूरी की ज़िंदगी गुजार रहा था। फिर उसे हिदायत की रोशनी मिली। उसने सच्चा मोमिन बनकर सालेह ज़िंदगी इख़्तियार कर ली तो इससे पहले उसने जो बुराईयां की थीं वे सब माफ कर दी जाएंगी। उसके पिछले गुनाहों की बिना पर उसे नहीं पकड़ा जाएगा।

ठीक यही उसूल इज्तिमाई और सियासी मामले में भी है। किसी मकाम पर हक और बातिल की कशमकश बरपा होती है आपस में टकराव होता है, इस टकराव के दौरान में बातिल के अलमबरदार हक के लिए उठने वालों पर जुल्म करते हैं। बिलआख़िर जंग का फैसला होता है। हकपरस्त ग़ालिब आ जाते हैं और नाहक के अलमबरदार मग़लूब होकर जेर (परास्त) कर दिए जाते हैं। इस मामले में भी इस्लाम का उसूल वही है जो ऊपर मज्कूर हुआ। यानी फ़तह के बाद पिछले जुल्म व सितम पर किसी को सजा नहीं दी जाएगी। अलबत्ता जो शख़्स फ़तह के बाद कोई ऐसी हरकत करे जो इस्लामी कानून में जुर्म करार दी गई हो तो जरूरी कार्रवाई के बाद उसे वह सजा मिलेगी जो शरीअत ने ऐसे एक मुजरिम के लिए मुकर्रर की है।

फ़ितना का मतलब सताना (Persecution) है। क़दीम जमाने में सरदारी और हुकूमत शिर्क की बुनियाद पर कायम होती थी। आज हुकूमत करने वाले अवाम का नुमाइंदा बनकर हुकूमत करते हैं, माजी में ख़ुदा या ख़ुदा के शरीकों का नुमाइंदा बनकर लोग हुकूमत किया करते थे। इसके नतीजे मे शिर्क को कदीम समाज में बाइक्तेदार (सत्तायुक्त) हैसियत हासिल हो गई थी। अहले शिर्क अहले तौहीद को सताते रहते थे। अल्लाह ने अपने रसूल और आपके साथियों को हुक्म दिया कि शिर्क और इक्तेदार के बाहमी तअल्लुक को तोड़ दो ताकि मुश्रिकीन अहले तौहीद को सताने की ताकत से महरूम हो जाएं। चुनांचे आपके जरिए जो आलमी इंकलाब आया उसने हमेशा के लिए शिर्क का रिश्ता सियासी निजाम से ख़त्म कर दिया। अब शिर्क सारी दुनिया में सिर्फ एक मजहबी अक़ीदा है न कि वह सियासी नजरिया जिसकी बुनियाद पर हुकूमतों का कयाम अमल में आता है।

ताहम जहां तक अरब का तअल्लुक है वहां यह मक्सद दोहरी सूरत में मत्लूब था, यहां शिर्क और मुश्रिकीन दोनों को ख़त्म करना था ताकि हरमैन के इलाके को अबदी तौर पर ख़ालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) का मर्कज बना दिया जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि जजीरा अरब से मुश्रिकीन को निकाल दो। यह काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में शुरू हुआ और हजरत उमर फ़ारूक़ की ख़िलाफ़त के जमाने में अपनी तक्मील को पहुंचा।

وَاعْلَمُوٓا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُۥ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَٰمَىٰ وَالْمَسَٰكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنتُمْ ءَامَنتُم بِاللَّهِ وَمَآ أَنزَلْنَا
عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत का माल (जंग में हासिल माल) तुम्हें हासिल हो उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और रसूल के लिए और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफिरों के लिए है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज पर जो हमने अपने बंदे (मुहम्मद) पर उतारी फैसले के दिन, जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। (41)

ग़नीमत अरबी जबान में उस माल को कहते हैं जो जंग के मैदान में दुश्मन से लड़कर हासिल किया गया हो। कदीम जमाने में यह रवाज था कि जंग के बाद दुश्मन की जो चीज जिसके हाथ लगे वह उसी की समझी जाए। इस्लाम ने यह उसूल मुकर्रर किया कि हर एक को जो कुछ मिला हो वह सबका सब लाकर अमीर के पास जमा करे, कोई शख़्स सूई का धागा तक छुपाकर न रखे।

इस तरह सारा ग़नीमत का माल इकट्ठा करने के बाद उसमें से पांचवां हिस्सा ख़ुदा का है जिसे रसूल नियाबत (प्रतिनिधि) के तौर पर वुसूल करके पांच जगह इस तरह ख़र्च करेगा कि एक हिस्सा अपनी जात पर, फिर अपने उन रिश्तेदारों पर जिन्होंने रिश्ते की बुनियाद पर मुश्किल वक्तों में आपके दीनी मिशन में आपका साथ दिया, और यतीमों पर और हाजतमंदों पर और मुसाफिरों पर। इसके बाद बाकी चार हिस्से को तमाम फौजियों के दर्मियान इस तरह तक्सीम किया जाए कि सवार को दो हिस्सा मिले और पैदल को एक हिस्सा।

इस्लाम यह जेहन बनाना चाहता है कि आदमी जो चीज पाए उसे वह ख़ुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझे। इस दुनिया में किसी वाकये को जुहूर में लाने के लिए बेशुमार असबाब की एक ही वक्त मुवाफिक़त (अनुकूलता) जरूरी है जो किसी भी इंसान के बस में नहीं। बद्र की लड़ाई में एक बेहद ताकतवर गिरोह के मुकाबले में एक कमजोर गिरोह का फैसलाकुन तौर पर ग़लबा पाना इस बात का एक ग़ैर मामूली सुबूत था कि जो कुछ हुआ है वह ख़ुदा की तरफ से हुआ है। ऐसी हालत में फत्ह के बाद मिली हुई चीज को ख़ुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझना ऐन उस हकीकत को मानना था जो वाकेआत के नतीजे में फित्री तौर पर सामने आई है।

ग़नीमत के माल में दूसरे मुस्तहिक भाइयों का हिस्सा रखना इस बात का सबक है कि अमवाल में हकदार होने की बुनियाद सिर्फ महनत और विरासत नहीं बल्कि ऐसी बुनियादें भी हैं जो महनत और विरासत जैसी चीजों के दायरे में नहीं आतीं। इस्तहकाक (पात्रता) की इन दूसरी मदों का एतराफ गोया इस वाकये का अमली एतराफ है कि आदमी चीजों को ख़ुदा की चीज समझता है न कि अपनी चीज।

ग़नीमत के इस कानून में तीसरा जबरदस्त सबक यह है कि मिल्कियत की बुनियाद कब्जा नहीं बल्कि उसूल है। कोई शख़्स महज इस बिना पर किसी चीज का मालिक नहीं बन जाएगा कि वह इत्तेफाक से उसके कब्जे में आ गई है। कब्जे के बावजूद आदमी को चाहिए कि उस चीज को जिम्मेदार अफ़राद के हवाले करे और उसूली और कानूनी बुनियाद पर उसे जितना मिलना चाहिए उसे लेकर उस पर राजी हो जाए।

إِذْ أَنتُم بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُم بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ ۚ
وَلَوْ تَوَاعَدتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَٰدِ ۙ وَلَٰكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا
لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنۢ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنۢ بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ
لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَىٰكَهُمْ كَثِيرًا
لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَٰزَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾ وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيٓ أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِيٓ
أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

और जबकि तुम वादी के करीबी किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर। और काफिला तुमसे नीचे की तरफ था। और अगर तुम और वे वक्त मुकर्रर करते तो जरूर इस तकर्रर के बारे में तुममें इख़्तेलाफ (मतभेद) हो जाता। लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसे होकर रहना था, ताकि जिसे हलाक होना है वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे जिंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ जिंदा रहे। यकीनन अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब अल्लाह तुम्हारे ख़्वाब में उन्हें थोड़ा दिखाता रहा। अगर वह उन्हें ज्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और आपस में झगड़ने लगते इस मामले में। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। यकीनन वह दिलों तक का हाल जानता है। और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी नजर में कम करके दिखाया और तुम्हें उनकी नजर में कम करके दिखाया ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसका होना तै था। और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं। (42-44)

अल्लाह तआला को यह मत्लूब है कि हक का हक होना और बातिल का बातिल होना लोगों पर पूरी तरह खुल जाए। यह काम इब्तिदा में दावत के जरिए दलाइल की जबान में होता है। दाओ ताकतवर और आमफहम दलाइल के जरिए हक का हक होना और बातिल का बातिल होना साबित करता है। इस काम की तक्मील बिलआख़िर ग़ैर मामूली वाकेयात से की जाती है, चाहे यह ग़ैर मामूली वाकया कोई आसमानी मौजजा हो या जमीनी ग़लबा। बद्र की जंग में यही दूसरा वाकया पेश आया।

क़ुरैश मक्का से इसलिए निकले कि शाम से आने वाले अपने तिजारती क़ाफ़िले की मदद करें। मुसलमान मदीने से इसलिए निकले कि तिजारती क़ाफ़िले पर हमला करें। तिजारती क़ाफ़िला मारूफ़ रास्ते को छोड़कर समुद्री साहिल से गुज़रा और बच गया। और ये दोनों फ़रीक़ बद्र पहुंच कर आमने सामने हो गए। यह अल्लाह की तदबीर से हुआ। दोनों को एक दूसरे से टकरा कर अहले ईमान को फ़तह दी गई। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके मिशन की सदाकत (सच्चाई) लोगों पर पूरी तरह खुल गई। जो लोग सच्चे तालिब थे उन पर आख़िरी हद तक यह बात वाज़ेह हो गई कि यही हक़ है। और जो लोग अपने अंदर किसी क़िस्म की नफ़्सियाती पेचीदगी लिए हुए थे उन्होंने इसके बाद भी अपने मस्लक पर क़ायम रहकर साबित कर दिया कि वे इसी क़ाबिल हैं कि उन्हें हलाक कर दिया जाए।

बद्र में क़ुरैश की फ़ौज की तादाद ज्यादा थी। अगर मुसलमान उनकी अस्ल तादाद को देखते तो कोई कहता कि लड़ो और कोई कहता कि न लड़ो। इस तरह इख़्तेलाफ़ (मतभेद) पैदा हो जाता और अस्ल काम होने से रह जाता। ख़ुदा ने हस्बेमौक़ा कभी तादाद घटा कर दिखाई और कभी बढ़ाकर। इस तरह मुमकिन हो सका कि तमाम मुसलमान बेजिगरी के साथ लड़ें। ख़ुदा को जब कोई काम मत्लूब होता है तो वह इसी तरह अपनी मदद भेजकर उस काम की तक्मील का सामान कर देता है।

अमल के दौरान जो हालात पेश आते हैं वे ख़ुदा की तरफ़ से होते हैं और यह देखने के लिए होते हैं कि किस शख़्स ने अपने हालात के अंदर किस किस्म का रद्देअमल पेश किया।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो तुम साबितक़दम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम कामयाब हो। और इताअत (आज्ञापालन) करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वर्ना तुम्हारे अंदर कमज़ोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है, और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह की राह से रोकते हैं। हालांकि वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (45-47)

कामयाबी ख़ुदा की मदद से आती है। मगर ख़ुदा की मदद हमेशा असबाब के पर्दे में

आती है न कि बेअसबाबी के हालात में। मुसलमान अगर अपने मुमकिन असबाब को जमा कर दें तो बाक़ी कमी ख़ुदा की तरफ़ से पूरी करके उन्हें कामयाब कर दिया जाता है। लेकिन अगर वे बेअसबाबी का मुज़ाहिरा करें तो ख़ुदा कभी ऐसा नहीं कर सकता कि बेअसबाबी के नक्शे में उनके लिए अपनी मदद भेज दे।

असबाब क्या हैं। असबाब ये हैं कि मुसलमान इक़्दाम में पहल न करें। वे अपनी जड़ों को मजबूत करने में लगे रहें यहां तक कि हरीफ़ ख़ुद चढ़ाई करके उनसे लड़ने के लिए आ जाए। फिर जब टकराव की सूरत पैदा हो जाए तो वे उसके मुक़ाबले में पूरी तरह जमाव का सुबूत दें। अल्लाह की याद, ब-अल्फ़ाज़ दीगर, मक़्सूदे असली की मुकम्मल पाबंदी रखें ताकि उनका क़ल्बी हौसला बाक़ी रहे। सरदार के हुक्म के तहत पूरी तरह मुनज़्ज़म रहें। बाहमी इख़्तेलाफ़ात को नजरअंदाज करें न यह कि इख़्तेलाफ़ात को बढ़ाकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। वे अपने इत्तेहाद से हरीफ़ को मरऊब कर दें। वे सब्र करें, यानी जोश के बजाए होश को अपनाएं। जल्द कामयाबी के शौक़ में ग़ैर पुख़्ता इक़्दाम न करें। उनकी नजर हमेशा आख़िरी मंज़िल पर हो न कि वक़्ती मसालेह और मुनाफ़े पर। इन्हीं चीज़ों का नाम असबाब है और इन्हीं असबाब के पर्दे में ख़ुदा की मदद आती है।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां ख़ुदा 'ग़ैब' में रहकर अपने तमाम काम अंजाम देता है, इसलिए जब वह मुसलमानों की मदद करता है तो असबाब के पर्दे में करता है। मुसलमान अगर असबाब का माहौल पैदा न करें वे बेहौसलगी का सुबूत दें, वे इब्तिदाई तैयारी के बग़ैर इक़्दामात करने लगें। वे इख़्तेलाफ़ और इंतिशार में मुब्तिला हों, तो उन्हें कभी यह उम्मीद न करनी चाहिए कि ख़ुदा ग़ैब का पर्दा फाड़कर सामने आ जाएगा और बेअसबाबी का शिकार होने के बावजूद बग़ैर असबाब के उनकी मदद करके उनके तमाम काम बना देगा।

मुसलमान अगर अपने हरीफ़ के मुक़ाबले में अपने को बेहतर हालात में पाएं तब भी ऐसा नहीं होना चाहिए कि वे मुंकिरों की तरह अपनी ताक़त पर घमंड करें, वे फ़ख़्र व नुमाइश के जज़्बात में मुब्तिला हो जाएं। वे बड़ाई के ज़ोम (दंभ) में इस हद तक आगे बढ़ें कि एक शख़्स के सिर्फ़ इसलिए मुख़ालिफ़ बन जाएं कि वह ऐसे हक़ की दावत दे रहा है जिसकी ज़द ख़ुद उनकी अपनी ज़ात पर भी पड़ रही है।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

और जब शैतान ने उन्हें उनके आमाल ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूं। मगर जब दोनों गिरोह आमने सामने हुए तो वह उल्टे पांव भागा और कहा कि मैं तुमसे बरी हूं, मैं वह कुछ देख रहा हूं जो तुम लोग नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूं और अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। जब मुनाफ़िक़ (पाखंडी) और जिनके दिलों में रोग है कहते थे कि इन लोगों को इनके दीन ने धोखे में डाल दिया है और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा जबरदस्त और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (48-49)

मक्का के मुख़ालिफ़ीन अपने आपको बरसरे हक और पैग़म्बर के साथियों को बरसरे बातिल समझते थे। इस पर उन्हें इतना यकीन था कि उन्होंने काबा के सामने खड़े होकर दुआ की कि ख़ुदाया, दोनों फ़रीक़ों में से जो फ़रीक़ हक पर हो तू उसे कामयाब कर और जो फ़रीक़ बातिल पर हो तू उसे हलाक कर दे। ताहम उनका यह यकीन झूठा यकीन था। इस किस्म का यकीन हमेशा शैतान के बहकावे की वजह से पैदा होता है।

शैतान ने मक्का के लोगों को सिखाया कि तुम तारीख़ के मुसल्लमा (सुस्थापित) पैग़म्बरों (इब्राहीम अलैहि० व इस्माईल अलैहि०) के मानने वाले हो जबकि मुसलमान एक ऐसे शख़्स को मानते हैं जिसका पैग़म्बर होना अभी एक मुतनाजआ (विवादित) मसला है। तुम काबा के वारिस हो जबकि मुसलमानों को काबा की सरजमीन से निकाल दिया गया है। तुम असलाफ़ (पूर्वजों) की रिवायतों को कायम रखने के लिए लड़ रहे हो जबकि मुसलमान असलाफ़ की रिवायतों को तोड़ने के लिए उठे हैं। शैतान ने मक्का वालों के दिलों में इस किस्म के ख़्यालात डाल कर उन्हें झूठे यकीन में मुब्तिला कर दिया था। वे समझते थे कि हम जो कुछ कर रहे हैं बिल्कुल दुरुस्त कर रहे हैं और ख़ुदा की मदद बहरहाल हमें हासिल होगी।

मक्का के मुख़ालिफ़ीन एक तरफ़ अपने झूठे यकीन को इस किस्म की चीजों की बिना पर सच्चा यकीन समझ रहे थे। दूसरी तरफ़ जब वे देखते कि पैग़म्बर के साथी उनसे भी ज्यादा यकीन और सरफ़रोशी के जज्बे के साथ इस्लाम के महाज पर अपने आपको लगाए हुए हैं तो वे उनके सच्चे यकीन को यह कह कर बेएतबार साबित करते थे कि यह महज एक मजहबी जुनून है। वह एक शख़्स (पैग़म्बर) की ख़ूबसूरत बातों से जोश में आकर दीवाने हो रहे हैं। उनके यकीन और कुर्बानी की इससे ज्यादा और कोई हकीकत नहीं।

मगर जब दोनों गिरोहों में मुकाबला हुआ और मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद उतर पड़ी तो शैतान इस्लाम के मुख़ालिफ़ों को छोड़कर भागा। एक तरफ़ ख़ुदा की मदद से मुसलमानों के दिल और ज्यादा कवी (दृढ़) हो गए। दूसरी तरफ़ मुख़ालिफ़ीन का झूठा यकीन बेदिली और पस्तहिम्मती में तब्दील हो गया। क्योंकि उनका एतमाद शैतान पर था और शैतान अब उन्हें छोड़कर भाग चुका था।

जो लोग अल्लाह पर भरोसा करें अल्लाह जरूर उनकी मदद करता है। मगर अल्लाह की मदद हमेशा उस वक्त आती है जबकि अहले ईमान अल्लाह पर यकीन का इतना बड़ा सुबूत दे दें कि बेयकीन लोग कह उठें कि ये मजनून हो गए हैं।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَـٰرَهُمْ
وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ ۝ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّـٰمٍ
لِّلْعَبِيدِ ۝ كَدَأْبِ ءَالِ فِرْعَوْنَ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ
فَأَخَذَهُمُ ٱللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِىٌّ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ
لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا۟ مَا بِأَنفُسِهِمْ
وَأَنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ كَدَأْبِ ءَالِ فِرْعَوْنَ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا۟
بِـَٔايَـٰتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَـٰهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَآ ءَالَ فِرْعَوْنَ
وَكُلٌّ كَانُوا۟ ظَـٰلِمِينَ ۝

और अगर तुम देखते जबकि फ़रिश्ते इन मुंकिरीन की जान कब्ज करते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने का अजाब चखो। यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था और अल्लाह हरगिज बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला है, सख़्त सजा देने वाला है। यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी कौम पर करता है उस वक्त तक नहीं बदलता जब तक वे उसे न बदल दें जो उनके नफ़्सों (अंतःकरणों) में है। और बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों को झुठलाया फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उन्हें हलाक कर दिया और हमने फ़िरऔन वालों को ग़र्क कर दिया और ये सब लोग जालिम थे। (50-54)

नेमत का दारोमदार नेमत के इस्तहकाक (पात्रता) की हालत पर है। कौमी सतह पर किसी को जो नेमतें मिलती हैं वे हमेशा उस इस्तहकाक के बकद्र होती हैं जो नफ़्सी (आंतरिक) हालत के एतबार से उसके यहां पाया जाता है। यह 'नफ़्स' चूंकि फ़र्द के अंदर होता है इसलिए इस बात को दूसरे लफ़्जों में यूं कहा जा सकता है कि इज्तिमाई (सामूहिक) इनामात का इंहिसार इंफ़िरादी (व्यक्तिगत) हालात पर है। अफ़राद की सतह पर कौम जिस दर्जे में हो उसी के बकद्र उसे इज्तिमाई इनामात दिए जाते हैं। इसका मतलब यह है कि कोई गिरोह अगर ख़ुदा के इज्तिमाई इनामात को पाना चाहता है तो उसे अपने अफ़राद की नफ़्सी इस्लाह पर अपनी ताकत सर्फ़ करना चाहिए। इसी तरह कोई कौम अगर अपने को इस हाल में देखे कि उससे इज्तिमाई नेमतें छिन गई हैं तो उसे ख़ुद नेमतों के पीछे दौड़ने के बजाए अपने

अफराद के पीछे दौड़ना चाहिए। क्योंकि अफराद ही के बिगड़ने से उसकी नेमतें छिनी हैं और अफराद ही के बनने से दुबारा वे उसे मिल सकती हैं।

जब कोई कौम अद्ल (न्याय) के बजाए ज़ुल्म और तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए सरकशी का रवैया इख़्तियार करती है तो ख़ुदा की तरफ से उसके सामने सच्चाई का एलान कराया जाता है ताकि वह मुतनब्बह (सचेत) हो जाए। यह एलान कमाले वजाहत के एतबार से ख़ुदा की एक निशानी होता है। उसे मानना ख़ुदा को मानना होता है और उसे न मानना ख़ुदा को न मानना। ख़ुदा की दावत (आह्वान) जब आयत (निशानी) की हद तक खुलकर लोगों के सामने आ जाए फिर भी वे उसका इंकार करें तो इसके बाद लाजिमन वे सजा के मुस्तहिक हो जाते हैं। इस सजा का आग़ाज अगरचे दुनिया ही से हो जाता है। ताहम दुनिया की सजा उस सजा के मुक़ाबले में बहुत कम है जो मौत के बाद आदमी के सामने आने वाली है। फ़रिश्तों की मार, सारी मख़्लूक के सामने रुस्वाई और जहन्नम की आग में जलना। ये सब इतने हौलनाक मराहिल हैं कि मौजूदा हालात में उनका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

इंसान जब जुल्म और सरकशी का रवैया इख़्तियार करता है अव्वलन तो उसके लिए तंबीहात (चेतावनियां) जाहिर होती हैं। अगर वह उनसे सबक न ले तो बिलआख़िर वह ख़ुदा के फ़ैसलाकुन अजाब की जद में आ जाता है।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَلَّذِيْنَ
عَاهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا
تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِمَّا
تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

बेशक सब जानदारों में बदतरीन अल्लाह के नजदीक वे लोग हैं जिन्होंने इंकार किया और वे ईमान नहीं लाते। जिनसे तुमने अहद (वचन) लिया, फिर वे अपना अहद हर बार तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं। पस अगर तुम उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सजा दो कि जो उनके पीछे हैं वे भी देखकर भाग जाएं, ताकि उन्हें इबरत (सीख) हो। और अगर तुम्हें किसी कौम से बदअहदी (वचन भंग) का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ फेंक दो, ऐसी तरह कि तुम और वे बराबर हो जाएं। बेशक अल्लाह बदअहदों को पसंद नहीं करता। (55-58)

मदीना के यहूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत (ईशदूतत्व) का इंकार करके ख़ुदा की नजर में मुजरिम हो चुके थे। इस जुर्म पर मजीद इजाफ़ा उनकी बदअहदी थी। हिजरत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मदीना के यहूद के दर्मियान यह तहरीरी मुआहिदा हुआ कि दोनों एक दूसरे के मामले में ग़ैर जानिबदार रहेंगे। मगर यहूद ख़ुफ़िया

तौर पर आपके दुश्मनों (मुश्रिकीन) से मिलकर आपके ख़िलाफ साजिशें करने लगे। यह कुफ़्र पर बदअहदी का इजाफ़ा था। यह इंकार के साथ कमीनगी को जमा करना था। ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में हौलनाक अजाब है और दुनिया में यह हुक्म है कि उनके ख़िलाफ सख़्त कार्रवाई की जाए ताकि उनकी शरारतों का ख़ात्मा हो और उनके इरादे पस्त हो जाएं।

अगर किसी कौम से मुसलमानों का अहद हो और मुसलमान उनकी तरफ से बदअहदी के अंदेशे की बिना पर उस अहद को तोड़ना चाहें तो जरूरी है कि वे पहले उन्हें इसकी इत्तिला दें ताकि दोनों पेशगी तौर पर यह जान लें कि अब दोनों के दर्मियान अहद की हालत बाकी नहीं रही। अमीर मुआविया और रूमी हुक्मरां में एक बार मीआदी मुआहिदा (अवधिगत समझौता) था। मुआहिदे की मुद्दत करीब आई तो अमीर मुआविया ने अपनी फौजों को ख़ामोशी के साथ रूम की सरहद पर जमा करना शुरू किया ताकि मुआहिदे की तारीख़ ख़त्म होते ही अगली सुबह अचानक रूमी इलाके में हमला कर दिया जाए। उस वक्त एक सहाबी हजरत अम्र बिन अंबसा घोड़े पर सवार होकर आए। वह ब-आवाज बुलन्द कह रहे थे 'अल्लाहु अकबर, अहद पूरा करो, अहद को न तोड़ो' उन्होंने लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस सुनाई : 'जिसका किसी कौम से मुआहिदा हो तो कोई गिरह न खोली जाए और न बांधी जाए यहां तक कि मुआहिदे की मुद्दत पूरी हो जाए या बराबरी के साथ अहद उसकी तरफ फेंक दिया जाए।' (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

दूसरी सूरत वह है जबकि सिर्फ अंदेशे की बात न हो बल्कि फरीक सानी (प्रतिपक्ष) की तरफ से अमलन मुआहिदे की वाजेह ख़िलाफ़वर्जी हो चुकी हो। ऐसी सूरत में इजाजत है कि फरीक सानी को मुतलअ (सूचित) किए बग़ैर जवाबी कार्रवाई की जाए। ग़जवए मक्का इसी की मिसाल है। कुरैश ने आपके समर्थक (बनू ख़ुजाआ) के ख़िलाफ बनू बक्र की आक्रमक कार्रवाई में शरीक होकर मुआहिदाए हुदैबिया की एकतरफ़ा ख़िलाफ़वर्जी की तो आपने कुरैश को पेशगी इत्तला दिए बग़ैर उनके ख़िलाफ ख़ामोश कार्रवाई फरमाई।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۭ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ
مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا
لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا
اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾
وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ
قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾

और इंकार करने वाले यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते। और उनके लिए जिस क़द्र तुमसे हो सके तैयार रखो कुव्वत और पले हुए घोड़े कि इससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर और इनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जाएगी। और अगर वे सुलह (संधि) की तरफ झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफी है। वही है जिसने अपनी नुसरत (मदद) और मोमिनों के जरिए तुम्हें कुव्वत दी। और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक (जुड़ाव) पैदा कर दिया। अगर तुम जमीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने उन में इत्तिफ़ाक पैदा कर दिया, बेशक वह जोरआवर है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (59-63)

इस्लाम का एतमाद इस्तेमाले कुव्वत से ज्यादा मजाहिर-ए-कुव्वत (शक्ति प्रदर्शन) पर है। इसीलिए अहले इस्लाम को कुव्वते मुर्हिबा (सैन्य शक्ति) फराहम करने का हुक्म दिया गया, यानी वे चीजें जो हरीफ (प्रतिपक्ष) को इस क़द्र मरऊब करें कि वह इक़्दाम का हौसला खो दे। इस्लाम वक्त के मेयार के मुताबिक अपने को ताक़तवर बनाता है, मगर लाजिमन लड़ने के लिए नहीं। बल्कि इसलिए ताकि उसके दुश्मनों पर उसका धाक कायम रहे और वे उसके ख़िलाफ़ जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाई की हिम्मत न करें। इस्लाम को वक्त के मेयार के मुताबिक फ़िक्री (वैचारिक) और अमली एतबार से ताक़तवर बनाने में जो लोग अपनी कमाई ख़र्च करेंगे वे कई गुना ज्यादा मिक्दार में इसका बदला अपने रब के यहां पाएंगे।

इस्लाम की फतह का राज अस्लन जंगी मुक़ाबलों में नहीं बल्कि उसके उसूलों की तब्लीग़ में है। इसलिए हुक्म हुआ कि जब भी फरीक़े सानी (प्रतिपक्षी) सुलह की पेशकश करे तो हर अंदेशे को नजरअंदाज करते हुए उसे क़ुबूल कर लो। क्योंकि अंदेशा बहरहाल यक़ीनी नहीं और जंगबंदी का यह फ़ायदा यक़ीनी है कि पुरअम्न फजा में इस्लाम का दावती अमल शुरू हो जाए और इस तरह जंग का रुकना इस्लाम की नजरियाती तोसीअ (प्रसार) का सबब बन जाए।

इस्लाम ख़ुद अपनी जात में सबसे बड़ी ताक़त है। ख़ुदा और आख़िरत का अक़ीदा अगर पूरी तरह किसी गिरोह के अफ़राद में पैदा हो जाए तो उनके अंदर से वे तमाम नफ्सियाती ख़राबियां निकल जाती हैं जो नाइत्तिफ़ाकी और बाहमी टकराव का सबब होती हैं। इसके बाद लाजिमन ऐसा होता है कि वे सबके सब बाहम जुड़ कर एक हो जाते हैं। और यह एक हक़ीक़त है कि इत्तिहाद सबसे बड़ी ताक़त है। मुत्तहिद गिरोह अगर तादाद में कम हो तब भी वह अपने से ज्यादा तादाद रखने वाले गिरोह पर ग़ालिब आ जाएगा।

बाहमी इत्तिफ़ाक (एकजुटता) सबसे मुश्किल चीज है। किसी गिरोह के नुसरतयाफ़्ता (सहायता प्राप्त) होने की एक पहचान यह है कि उसके अफ़राद बाहम मुत्तहिद रहें, कोई भी चीज उनके इत्तिहाद को तोड़ने वाली साबित न हो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ حَسْبُكَ ٱللَّهُ وَمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ حَرِّضِ ٱلْمُؤْمِنِينَ عَلَى ٱلْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَٰبِرُونَ يَغْلِبُوا۟ مِا۟ئَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّا۟ئَةٌ يَغْلِبُوٓا۟ أَلْفًا مِّنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾ ٱلْـَٰٔنَ خَفَّفَ ٱللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّا۟ئَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا۟ مِا۟ئَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوٓا۟ أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿٦٦﴾

ऐ नबी तुम्हारे लिए अल्लाह काफी है और वे मोमिनीन जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है। ऐ नबी मोमिनीन को लड़ाई पर उभारो। अगर तुम में बीस आदमी साबितकदम (दृढ़) होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में सौ होंगे तो हजार मुंकिरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुम में कुछ कमजोरी है। पस अगर तुम में सौ साबितकदम होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर हजार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हजार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबितकदम रहने वालों के साथ है। (64-66)

अहले ईमान की कम तादाद ग़ैर अहले ईमान की ज्यादा तादाद पर ग़ालिब आने की वजह यह बताई कि अहले ईमान के अंदर फ़िक़्ह होती है जबकि ग़ैर अहले ईमान फ़िक़्ह से महरूम हैं। फ़िक़्ह के लफ़्जी मअना समझ के हैं। इससे मुराद वह बसीरत (विवेक) और शुऊर है जो ईमान के नतीजे में एक शख़्स को हासिल होता है। ख़ुदा पर ईमान किसी आदमी के लिए वही मअना रखता है जो अंधेरे कमरे में बजली का बल्ब जल जाना। बल्ब पूरे कमरे को इस तरह रोशन कर देता है कि उसकी हर चीज वाजेह तौर पर दिखाई देने लगे। इसी तरह ईमान आदमी को एक रब्बानी शुऊर अता करता है जिसके बाद वह तमाम हक़ीक़तों को उसकी असली सूरत में देखने लगता है।

ईमान के नतीजे में यह होता है कि आदमी जिंदगी और मौत की हक़ीक़त को समझ लेता है। वह जान लेता है कि अस्ल चीज दुनिया की हयात (जिंदगी) नहीं बल्कि आख़िरत की हयात है। यह चीज उसे बेपनाह हद तक निडर बना देती है। वह मौत को इस नजर से देखने लगता है कि वह उसके लिए जन्नत में दाख़िले का दरवाजा है। मोमिन शहादत को जन्नत का मुख़्तसर रास्ता समझता है। अल्लाह की राह में जान देना उसके लिए मत्लूब चीज बन जाता है, जबकि ग़ैर मोमिन की जन्नत यही मौजूदा दुनिया है। वह जिंदा रहना चाहता है ताकि अपनी जन्नत का लुत्फ़ उठा सके। ग़ैर मोमिन क़ौमी शुऊर के तहत लड़ता है और मोमिन जन्नती शुऊर के तहत, और क़ौमी शुऊर वाला कभी इतनी बेजिगरी के साथ नहीं लड़ सकता।

मोमिन ख़ुदा से डरने वाला होता है, वह आख़िरत की फ़िक्र करने वाला होता है, यह मिजाज उसे हर किस्म के मंफ़ी (नकारात्मक) जज्बात से पाक करता है। वह जि़द, नफ़रत, तअस्सुब (विद्वेष), इंतकाम और घमंड जैसी चीजों से ऊपर उठ जाता है। दूसरी तरफ ग़ैर मोमिन का मामला सरासर इसके बरअक्स होता है। इसका नतीजा यह होता है कि ग़ैर मोमिन के इक्दामात मंफ़ी नफ्सियात के तहत होते हैं और मोमिन के इक्दामात ईजाबी नफ्सियात (सकारात्मक मानसिकता) के तहत। ग़ैर मोमिन जज्बाती अंदाज से अमल करता है और मोमिन हक़ीक़तपसंदाना अंदाज से। ग़ैर मोमिन इंसानों का दुश्मन होता है और मोमिन सिर्फ इंसानों की बुराई का। ग़ैर मोमिन तंगजर्फ़ी (कुइच्छा) के साथ मामला करता है और मोमिन वुस्अते जर्फ़ (सद्इच्छा) के साथ।

हजार के मुक़ाबले में सौ और दो हजार के मुक़ाबले में एक हजार के अल्फ़ाज बताते हैं कि किताल का हुक्म जमाअत और फौज के लिए है। ऐसा करना सही न होगा कि एक दो आदमी हों तब भी वे लड़ने के लिए खड़े हो जाएं।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٩﴾

किसी नबी के लिए लायक नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक वह जमीन में अच्छी तरह ख़ूंरेजी न कर ले। तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत को चाहता है। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अगर अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो तरीका तुमने इख़्तियार किया उसके सबब तुम्हें सख़्त अजाब पहुंच जाता। पस जो माल तुमने लिया है उसे खाओ, तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (67-69)

बद्र की लड़ाई में मुसलमानों ने सत्तर बड़े-बड़े मुंकिरों को कत्ल किया। इसके बाद जब उनके पांव उखड़ने लगे तो उनके सत्तर आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। इन गिरफ्तार होने वालों में अक्सर सरदार थे। जंग के बाद मश्वरा हुआ कि इन कैदियों के साथ क्या किया जाए। सहाबा की अक्सरियत ने यह राय दी कि इनको फिदया (आर्थिक मुआवजा) लेकर छोड़ दिया जाए। उस वक्त इस्लाम के दुश्मनों ने मुसलसल जंग की हालत बरपा कर रखी थी। मगर मुसलमानों के पास माल न होने की वजह से जंग के सामान की बहुत कमी थी। यह ख़्याल किया गया कि फिदये से जो रकम मिलेगी उससे जंग का सामान ख़रीदा जा सकता है। हजरत उमर बिन ख़त्ताब और हजरत साद बिन मुआज इस राय के ख़िलाफ थे। हजरत उमर ने कहा : 'ऐ ख़ुदा के रसूल ये कैदी कुफ्र के इमाम और मुश्रिकीन के सरदार हैं।' यानी दुश्मनों की अस्ल ताकत हमारी मुट्ठी में आ गई है, इनको कत्ल करके इस मसले का हमेशा

के लिए ख़ात्मा कर दिया जाए। ताहम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली राय पर अमल फ़रमाया।

बाद को जब वे आयतें उतरीं जिन में जंग पर तबसिरा था तो अल्लाह तआला ने फिदये की रकम को जाइज ठहराते हुए इस रविश पर अपनी नाराजी का इज़्हार फ़रमाया। जंगी कैदियों को फ़िदया लेकर छोड़ना अगरचे बजाहिर रहमत व शफ़क़त का मामला था। मगर वह अल्लाह के दूररस (दूरगामी) मंसूबे के मुताबिक न था। अल्लाह का अस्ल मंसूबा कुफ्र व शिर्क की जड़ उखाड़ना था। इस मक्सद के लिए अल्लाह तआला ने कुरैश के तमाम लीडरों को (अबू लहब और अबू सुफियान को छोड़कर) बद्र के मैदान में जमा कर दिया और ऐसे हालात पैदा किए कि वे पूरी तरह मुसलमानों के काबू में आ गए। अगर इन लीडरों को उस वक्त ख़त्म कर दिया जाता तो कुफ्र व शिर्क की मुजाहमत (प्रतिरोध) बद्र के मैदान ही में पूरी तरह दफ़्न हो जाती। मगर लीडरों को छोड़ने का नतीजा यह हुआ कि वे मुनज्जम होकर दुबारा अपनी मुजाहमत की तहरीक जारी रखने के काबिल हो गए।

यह फ़ैसला जंगी मस्लेहत के ख़िलाफ था। वे मुसलमानों के लिए अजाबे अजीम (सख़्त मुसीबतों) का ज़रिया बन जाता। ये लीडर अपनी अवाम को साथ लेकर इस्लाम के सारे मामले को तहस नहस कर देते। मगर अल्लाह ने आख़िरी रसूल और आपके असहाब (साथियों) के लिए पहले से मुक़द्दर कर दिया था कि वे लाजिमन ग़ालिब रहेंगे, उन्हें जेर करने में कोई कामयाब न हो सकेगा। यही वजह है कि जंगी तदबीर में इस कोताही के बावजूद कुरैश अहले ईमान के ऊपर ग़ालिब न आ सके। और बिलआख़िर वही हुआ जिसका होना पहले से ख़ुदा के यहां लिखा जा चुका था, यानी मुसलमानों की फतह और इस्लाम का ग़लबा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٠﴾ وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

ऐ नबी तुम्हारे हाथ में जो कैदी हैं उनसे कह दो कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें दे देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर ये तुमसे बदअहदी (वचन-भंग) करेंगे तो इससे पहले इन्होंने ख़ुदा से बदअहदी की तो ख़ुदा ने तुम्हें उन पर काबू दे दिया और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (70-71)

बद्र के कैदियों को फिदया लेकर छोड़ना मुसलमानों के लिए एक जंगी ग़लती थी। मगर ख़ुद कैदियों के हक में यह एक नई जिंदगी फ़राहम करने के हममअना था। इसका मतलब यह था कि वे लोग जो अपनी मुख़ालिफ़ते हक के नतीजे मे हलाकत के मुस्तहिक हो चुके थे उन्हें एक बार और मौका मिल गया कि वे इस्लाम की दावत और उसके मुकाबले में अपनी

बेजा रविश पर दुबारा ग़ौर कर सकें। इस मोहलत ने उनके लिए अपनी इस्लाह का नया दरवाजा खोल दिया।

अब एक सूरत यह थी कि इन कैदियों के दिल में शिकस्त की बिना पर इंतिकाम (बदले) की आग भड़के। फ़िदया देने की वजह से उन्हें जो जिल्लत व नुक़्सान हुआ है उसका बदला लेने के लिए वे बेचैन हो जाएं। ऐसी सूरत में वे फिर उसी ग़लती को दोहराएंगे जिसके नतीजे में वे ख़ुदा की पकड़ के मुस्तहिक बन गए थे। वे अपनी कुव्वतों को इस्लाम की मुख़ालिफ़त में सर्फ करेंगे जिसका अंजाम दुनिया में हलाकत है और आख़िरत में अजाब।

दूसरी सूरत यह थी कि वे बद्र के मैदान में पेश आने वाले ग़ैर मामूली वाकये पर ग़ौर करें कि मुसलमानों को कमतर असबाब के बावजूद इतनी खुली हुई फतह क्यों नसीब हुई। इसका साफ मतलब यह है कि ख़ुदा मुसलमानों के दीन के साथ है न कि कुरैश के दीन के साथ। यह दूसरा जेहन अगर पैदा हो जाए तो वह उन्हें आमादा करेगा कि वे अपनी साबिका (पहली) रविश को बदल लें और जिस दीन को पहले इख़्तियार न कर सके उसे अब से इख़्तियार कर लें। और इस तरह दुनिया व आख़िरत में ख़ुदा के इनाम के मुस्तहिक बनें।

तारीख़ बताती है कि कुरैश के लोगों में एक तादाद ऐसी निकली जिनके दिल में मज्कूरा सवाल जाग उठा और जल्द या देर से वे इस्लाम में दाख़िल हो गए। हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ने कैद के जमाने ही में इस्लाम कुबूल कर लिया। कुछ दूसरे लोग बाद को इस्लाम के हलके में आ गए। ये लोग अगरचे गिरोही तअस्सुब की नजर में जलील हुए मगर उन्होंने ख़ुदा की नजर में इज्जत हासिल कर ली। दुनिया का नुक़्सान उठाकर वे आख़िरत के फ़ायदे के मालिक बन गए।

कैदियों को छोड़ने की वजह से मुसलमानों को यह अंदेशा था कि वे इसे एहसान समझ कर इसका एतराफ नहीं करेंगे बल्कि पहले की तरह दुबारा साजिश और तख़्रीबकारी (विध्वंस) का रास्ता इख़्तियार करके इस्लाम की राह में रुकावट बन जाएंगे। मगर कुरआन ने इस अंदेशे को अहमियत न दी। क्योंकि ख़ालिस हक (सत्य) के लिए जो तहरीक उठती है वह आम तर्ज की इंसानी तहरीक नहीं होती। वह एक ख़ुदाई मामला होता है। उसकी पुश्त पर ख़ुद ख़ुदा होता है और ख़ुदा से लड़ना किसी के बस की बात नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ
يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ
اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद किया। और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग एक दूसरे के रफीक हैं और जो लोग ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा रिफाक्त का कोई तअल्लुक नहीं जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएं। और वे तुमसे दीन के मामले में मदद मांगे तो तुम पर उनकी मदद करना वाजिब (जरूरी) है, इल्ला यह कि मदद किसी ऐसी कौम के ख़िलाफ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा (संधि) है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और जो लोग मुंकिर हैं वे एक दूसरे के रफीक (सहयोगी) हैं। अगर तुम ऐसा न करोगे तो जमीन में फित्ना फैलेगा और बड़ा फसाद होगा। (72-73)

आम तौर पर जब एक आदमी दूसरे की मदद करता है तो इसकी वजह यह होती है कि वह आदमी उसके अपने ख़ानदान का है, उससे गिरोही और जमाअती तअल्लुक है। मगर हिजरत के बाद मदीने में जो इस्लामी मआशरा (समाज) कायम हुआ वह ऐसा मआशरा था जिसमें घर वालों ने अपने घर ऐसे लोगों को दे दिए जिनसे तअल्लुक की बुनियाद सिर्फ दीन थी। जो लोग अपने वतन को छोड़कर मदीना आए वे भी अल्लाह के लिए और आख़िरत तलबी के लिए आए। और जिन्होंने इन अजनबी लोगों को अपने माल और अपनी जायदाद में शरीक किया वे भी सिर्फ इसलिए ताकि उनका ख़ुदा उनसे ख़ुश हो और आख़िरत में उन्हें जन्नतों में दाख़िल करे।

यह एक ऐसा समाज था जिसमें अहम चीज ख़ानदान और नसब (वंश) नहीं बल्कि ईमान व इस्लाम था। वे एक दूसरे की मदद करते थे मगर दुनियावी फायदे के लिए नहीं बल्कि आख़िरत के फायदे के लिए। वे एक दूसरे को देते थे मगर पाने वाले से किसी बदले की उम्मीद में नहीं बल्कि अल्लाह से इनाम की उम्मीद में। वही मुआशिरा हकीकतन इस्लामी मुआशिरा है जहां तअल्लुकात ख़ानदानी रिश्तों और गिरोही अस्बियतों पर कायम न हों बल्कि हक की बुनियाद पर कायम हों। जहां लोग एक दूसरे के हामी व नासिर (मददगार) इस बुनियाद पर हों कि वे उनके दीनी भाई हैं न कि इस बुनियाद पर कि दुनियावी मस्लेहतों में से कोई मस्लेहत उनके साथ वाबस्ता है।

एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान से हक के मामले में मदद तलब करे तो उस वक्त उसकी मदद करना बिल्कुल लाजिम है। अगर मुसलमानों में बाहमी मदद की यह रूह बाकी न रहे तो यह होगा कि शरीर लोग कमजोर मुसलमानों पर दिलेर हो जाएंगे और उनकी जिंदगी और उनके ईमान का महफूज रहना सख़्त मुश्किल हो जाएगा। हक के मुख़ालिफ़ीन अपने साथियों की मदद के लिए इंतिहाई हस्सास होते हैं फिर हक के मानने वाले अपने साथियों की मदद में क्यों न सरगर्म हों। इस में इस्तिसना (अपवाद) सिर्फ उस वक्त है जबकि मामला अन्तर्राष्ट्रीय हो और मुसलमानों की मदद करना अन्तर्राष्ट्रीय पेचीदगियां पैदा करने के हममअना समझा जाए।

'हिजरत' जन्नत में दाख़िले का दरवाजा है। एक बंदा जब ख़ुदा के नापसंदीदा मकाम से निकल कर ख़ुदा के पसंदीदा मकाम की तरफ जाता है तो दरअस्ल वह ग़ैर जन्नत को छोड़कर जन्नत में दाख़िल होता है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत (स्थान परिवर्तन) की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने पनाह दी और मदद की, यही लोग सच्चे मोमिन हैं। इनके लिए बख़्शिश है और बेहतरीन रिज़्क है। और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वे भी तुम में से हैं। और ख़ून के रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं अल्लाह की किताब में। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (74-75)

ख़ुदा पर ईमान लाना ख़ुदा के लिए ज़िंदगी गुजारने का फ़ैसला करना है। ऐसे लोग अक्सर उन लोगों के दर्मियान अजनबी बन जाते हैं जो ख़ुदा के सिवा किसी और चीज की ख़ातिर ज़िंदगी गुजार रहे हों। यह अजनबिय्यत कभी इतनी बढ़ती है कि हिजरत की नौबत आ जाती है। माहौल की मुख़ालिफ़त के नतीजे में पूरी ज़िंदगी जद्दोजहद और जांफ़शानी (संघर्ष) की ज़िंदगी बनकर रह जाती है। यही लोग हैं जो ख़ुदा के नजदीक सच्चे मोमिन हैं। इसके बाद सच्चा ईमान उन लोगों का है जो इस्लाम की ख़ातिर बजाहिर बर्बाद हो जाने वाले इस क़ाफ़िले के पुश्तपनाह बनें वे उन्हें जगह दें और उनकी हर मुमकिन मदद के लिए खड़े हो जाएं। जिनकी ज़िंदगियां नहीं लुटी हैं वे अपना असासा (सम्पत्ति) उन लोगों के हवाले कर दें जिनकी ज़िंदगियां इस्लाम की राह में लुट गई हैं।

इससे मालूम हुआ कि हक़ीक़ी मुस्लिम बनने के लिए आदमी को दो में से कम से कम एक चीज का सुबूत देना है। आदमी या तो अपने आपको इस्लाम के साथ इस तरह वाबस्ता करे कि अगर उसे अपनी बनी बनाई दुनिया उजाड़ देनी पड़े तो इससे भी दरेग़ (संकोच) न करे, आराम की ज़िंदगी को बेआरामी की ज़िंदगी बना देना पड़े तो इसे भी गवारा कर ले। फिर यह कि इस्लाम की ख़ातिर जब कुछ लोग अपना असासा लुटा दें तो वे लोग जो अभी लुटने से महफ़ूज़ हैं वे पहले फ़रीक़ की मदद के लिए अपना बाज़ू खोल दें यहां तक कि जरूरत हो तो अपनी कमाई और अपनी जायदाद में भी उन्हें शरीक कर लें। सच्चा ईमान किसी को या तो 'मुहाजिर' (हिजरत करने वाला) बनने की सतह पर मिलता है या 'अंसार' (मदद करने वाला) बनने की सतह पर।

यही दो क़िस्म के लोग हैं जिनके लिए ख़ुदा के यहां मग़्फ़िरत और रिज़्क करीम है। आख़िरत में आने वाली जन्नत इंतिहाई सुथरी और नफ़ीस दुनिया है। वह एक कामिल दुनिया है और कामिल दुनिया में बसाए जाने के लायक़ वही लोग हो सकते हैं जो ख़ुद भी कामिल हों। कोई इंसान अपनी बशरी कमजोरियों की बिना पर ऐसी कामलियत (पूर्णता) का सुबूत

नहीं दे सकता। ताहम अल्लाह का यह वादा है कि जो शख़्स मज्कूरा दोनों कसौटी में से किसी एक कसौटी पर पूरा उतरेगा ख़ुदा अपनी क़ुदरत से उसकी कमियों की तलाफ़ी करके उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा।

दीन की बुनियाद पर भाई बनने वालों की मदद और हिमायत बेहद अहम है ताहम वह रहमी (ख़ून के) रिश्तों के हुक़ूक़ और उनके दर्मियान विरासतों की तक़्सीम पर असरअंदाज न होगी। अपनी ख़्वाहिश के तहत कोई शख़्स अपने अहले ख़ानदान के लिए जिन चीजों को जरूरी समझ ले उनकी कोई अहमियत अल्लाह के नजदीक नहीं है। ताहम अल्लाह ने ख़ुद अपनी किताब में अहले ख़ानदान के लिए हुक़ूक़ और विरासत का जो क़ानून मुक़र्रर कर दिया है वह हर हाल में क़ायम रहेगा। और कोई दूसरी चीज उसकी अदायगी के लिए उज़्र नहीं बन सकती।

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١﴾ فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿٢﴾ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٤﴾

आयतें-129 सूरह-9. अत-तौबह रुकूअ-16

(मदीना में नाज़िल हुई)

बरा-त (विरक्ति) का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने मुआहिदे (संधि) किए थे। पस तुम लोग मुल्क में चार महीने चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह मुंकिरों को रुसवा करने वाला है। एलान है अल्लाह और रसूल की तरफ़ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों से बरीउज़्ज़िम्मा (ज़िम्मेदारी-मुक्त) हैं। अब अगर तुम लोग तौबह करो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है। और अगर तुम मुंह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज करने वाले नहीं हो। और इंकार करने वालों को सख़्त अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। मगर जिन मुश्रिकों से तुमने मुआहिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं

की और न तुम्हारे ख़िलाफ किसी की मदद की तो उनका मुआहिदा (संधि) **उनकी मुद्दत तक पूरा करो। बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। (1-4)**

मौजूदा दुनिया में इंसान को रहने बसने का जो मौका दिया गया है वह किसी हक की बिना पर नहीं है बल्कि महज आजमाइश के लिए है। ख़ुदा जब तक चाहता है किसी को इस जमीन पर रखता है और जब उसके इल्म के मुताबिक उसकी इम्तेहान की मुद्दत पूरी हो जाती है तो उस पर मौत वारिद करके उसे यहां से उठा लिया जाता है।

यही मामला पैग़म्बर के मुख़ातबीन के साथ दूसरी सूरत में किया जाता है। पैग़म्बर जिन लोगों के दर्मियान आता है उन पर वह आख़िरी हद तक हक की गवाही देता है। पैग़म्बर के दावती काम की तक्मील (पूर्णता) के बाद जो लोग ईमान न लाएं वे ख़ुदा की जमीन पर जिंदा रहने का हक खो देते हैं। वे आजमाइश की ग़रज से यहां रखे गए थे। इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) ने आजमाइश की तक्मील कर दी। फिर इसके बाद जिंदगी का हक किस लिए। यही वजह है कि पैग़म्बरों के काम की तक्मील के बाद उनके ऊपर कोई न कोई हलाकतख़ेज आफत आती है और उनका इस्तिसाल (विनाश) कर दिया जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़ातबीन के साथ भी यही मामला हुआ। मगर उन पर कोई आसमानी आफत नहीं आई। उनके ऊपर ख़ुदा की मज्कूरा सुन्नत का निफाज असबाब के नक़्शे में किया गया। अव्वलन कुरआन के बरतर उस्लूब (शैली) और पैग़म्बर के आला किरदार के जरिए उन्हें दावत पहुंचाई गई। फिर अहले तौहीद को मक्का के अहले शिर्क पर ग़ालिब करके उनके ऊपर इतमामे हुज्जत कर दिया गया। जब यह सब कुछ हो चुका और इसके बावजूद वे इंकार की रविश पर कायम रहे तो उन्हें मुसलसल ख़ियानत और अहद शिकनी का मुजरिम करार देकर उन्हें अल्टीमेटम दिया गया कि चार माह के अंदर अपनी इस्लाह कर लो, वर्ना मुसलमानों की तलवार से तुम्हारा ख़ात्मा कर दिया जाएगा।

फिर यह सारा मामला तक़्वा के उसूल पर किया गया न कि कौमी सियासत के उसूल पर। मुश्रिकीन को दलाइल के मैदान में लाजवाब कर दिया गया, उन्हें पेशगी इंतिबाह (संचेतना) के जरिए कई महीने तक सोचने का मौका दिया गया। आख़िर वक्त तक उनके लिए दरवाजा खुला रखा गया कि जो लोग तौबह कर लें वे ख़ुदा के इनामयाफ्ता बंदों में शामिल हो जाएं। जिन कुछ कबाइल ने मुआहिदा नहीं तोड़ा था उनके मामले को मुआहिदा तोड़ने वालों से अलग रखा गया, वग़ैरह।

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾

ع ٧

फिर जब हुरमत (गरिमा) वाले महीने गुजर जाएं तो मुश्रिकीन को कत्ल करो जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में। फिर अगर वे तौबह कर लें और नमाज कायम करें और जकात अदा करें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर मुश्रिकीन में से कोई शख़्स तुमसे पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दो ताकि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसके अमान (सुरक्षा) की जगह पहुंचा दो। यह इसलिए कि वे लोग इल्म नहीं रखते। (5-6)

मोहलत के चार महीने गुजरने के बाद यहां जिस जंग का हुक्म दिया गया वह कोई आम जंग न थी यह ख़ुदा के कानून के मुताबिक वह अजाब था जो पैग़म्बर के इंकार के नतीजे में उन पर जाहिर किया गया। उन्होंने इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद ख़ुदा के पैग़म्बर का इंकार करके अपने को इसका मुस्तहिक बना था कि उनके लिए तलवार या इस्लाम के सिवा कोई और सूरत बाकी न रखी जाए। यह ख़ुदा का एक ख़ुसूसी कानून है जिसका तअल्लुक पैग़म्बर के मुख़ातबीन से है न कि आम लोगों से। ताहम इतमामे हुज्जत के बाद भी इस हुक्म का निफाज अचानक नहीं किया गया बल्कि आख़िरी मरहले में फिर उन्हें चार महीने की मोहलत दी गई।

इंतिकाम माफ करना नहीं जानता। इंतिकामी जज्बे के तहत जो कार्रवाई की जाए उसे सिर्फ उस वक्त तस्कीन मिलती है जबकि वह अपने हरीफ को जलील और बर्बाद होते हुए देख ले। मगर अरब के मुश्रिकीन के ख़िलाफ जो कार्रवाई की गई उसका तअल्लुक किसी किस्म के इंतकाम से नहीं था बल्कि वह सरासर हकीकतपसंदाना (यथार्थवादी) उसूल पर मबनी था। यही वजह है कि इतने शदीद हुक्म के बावजूद उनके लिए यह गुंजाइश हर वक्त बाकी थी कि वे दीने इस्लाम को इख़्तियार करके अपने को इस सजा से बचा लें और इस्लामी बिरादरी में इज्जत की जिंदगी हासिल कर लें। किसी की तौबह के काबिले कुबूल होने के लिए सिर्फ दो अमली शर्तों का पाया जाना काफी है। नमाज और जकात।

जंग के दौरान दुश्मन का कोई फर्द यह कहे कि मैं इस्लाम को समझना चाहता हूं तो मुसलमानों को हुक्म है कि उसे अमान देकर अपने माहौल में आने का मौका दें और इस्लाम के पैग़ाम को उसके दिल में उतारने की कोशिश करें। फिर भी अगर वह कुबूल न करे तो अपनी हिफाजत में उसे उसके ठिकाने तक पहुंचा दें। ऐसा नहीं किया जा सकता कि उसने दीन की बात नहीं मानी है तो उसे कत्ल कर दिया जाए। जब कोई शख़्स अमान में हो तो अमान के दौरान उस पर हाथ उठाना जाइज नहीं।

जंग के जमाने में दुश्मन को इस किस्म की रिआयत देना इंतिहाई नाजुक है। क्योंकि ऐन मुमकिन है कि दुश्मन का कोई जासूस इस रिआयत से फायदा उठाकर मुसलमानों के अंदर घुस आए और उनके फौजी राज मालूम करने की कोशिश करे। मगर इस्लाम की नजर में दावत व तब्लीग़ (आह्वान एवं प्रचार) का मसला इतना ज्यादा अहम है कि इस नाजुक ख़तरे के बावजूद इसका दरवाजा बंद नहीं किया गया।

एक शख़्स अगर बेख़बरी और लाइल्मी की बिना पर जुल्म करे तो उसका जुल्म चाहे कितना ही ज्यादा हो मगर उसके साथ हर मुमकिन रिआयत की जाएगी उस वक्त तक कि उसकी लाइल्मी और बेख़बरी ख़त्म हो जाए।

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾ كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨﴾ اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

इन मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के जिम्मे कोई अहद (वचन) कैसे रह सकता है, मगर जिन लोगों से तुमने अहद किया था मस्जिदे हराम के पास, पस जब तक वे तुमसे सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। कैसे अहद रहेगा जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर काबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न कराबत (निकट के संबंधों) का लिहाज करें और न अहद का। वे तुम्हें अपने मुंह की बात से राजी करना चाहते हैं मगर उनके दिल इंकार करते हैं। और उनमें अक्सर बदअहद हैं। उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका। बहुत बुरा है जो वे कर रहे हैं। किसी मोमिन के मामले में वे न कराबत का लिहाज करते हैं और न अहद का, यही लोग हैं ज्यादती करने वाले। पस अगर वे तौबह करें और नमाज कायम करें और जकात अदा करें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं। और हम खोलकर बयान करते हैं आयतों को जानने वालों के लिए। (7-11)

मुसलमानों को जब जोर हासिल हो गया तो क़ुरैश ने उनसे मुआहिदे कर लिए। ताहम वे इन मुआहिदों से ख़ुश न थे। वे समझते थे कि अपने 'दुश्मन' से यह मुआहिदा उन्होंने अपनी बर्बादी की कीमत पर किया है। यही वजह है कि वे हर वक्त इस इंतिजार में रहते थे कि जहां मौका मिले मुआहिदे (संधि) की ख़िलाफवर्जी करके मुसलमानों को नुक्सान पहुंचाएं या कम से कम उन्हें बदनाम करें। जाहिर है कि जब एक फरीक (पक्ष) की तरफ से इस किस्म की ख़ियानत का मुजाहिरा हो तो दूसरे फरीक के लिए किसी मुआहिदे की पाबंदी जरूरी नहीं रहती।

यह क़ुरैश का हाल था जिन्हें मुसलमानों के उरूज (उत्थान काल) में अपनी क़यादत छिनती हुई नजर आती थी। ताहम कुछ दूसरे अरब कबीले (बनू किनाना, बनू ख़ुजाआ, बनू जमरा) जो इस किस्म की नफ्सियाती पेचीदगी में मुब्तिला न थे, उन्होंने मुसलमानों से

मुआहिदे किए और अपने मुआहिदे पर कायम रहे। जब चार माह की मोहलत का एलान किया गया तो उनके मुआहिदे की मीयाद पूरी होने में तकरीबन नौ महीने बाकी थे। हुक्म हुआ कि उनसे मुआहिदे को आख़िर वक्त तक बाकी रखो, क्योंकि तक्वा का तकाजा यही है। मगर इस मुद्दत के ख़त्म होने के बाद फिर किसी से इस किस्म का मुआहिदा नहीं किया गया और तमाम मुश्रिकीन के सामने सिर्फ दो सूरतें बाकी रखी गईं या इस्लाम लाएं या जंग के लिए तैयार हो जाएं।

समाजी जिंदगी की बुनियाद हमेशा दो चीजों पर होती है। रिश्तेदारी या कौल व करार। जिनसे रहमी (ख़ून के) रिश्ते हैं उनके हुकूक का लिहाज आदमी रहमी रिश्तों की बुनियाद पर करता है। और जिनसे कौल व करार हो चुका है उनसे कौल व करार की बिना पर। मगर जब आदमी के ऊपर दुनिया के मफाद और मस्लेहत (हित, स्वार्थ) का ग़लबा होता है तो वह दोनों बातों को भूल जाता है। वह अपने हकीर (तुच्छ) फायदे के ख़ातिर रहमी हुकूक को भी भूल जाता है और कौल व करार को भी। ऐसे लोग हद से गुजर जाने वाले हैं। वे ख़ुदा की नजर में मुजरिम हैं। दुनिया में अगर वे छूट गए तो आख़िरत में वे ख़ुदा की पकड़ से बच न सकेंगे। इल्ला यह कि वे तौबह करें और अपनी सरकशी से बाज आएं। कोई शख़्स माजी में चाहे कितना ही बुरा रहा हो मगर जब वह इस्लाह कुबूल कर ले तो वह इस्लामी बिरादरी का एक मुअज्जज (सम्मानित) रुक्न बन जाता है। इसके बाद उसमें और दूसरे मुसलमानों में कोई फर्क नहीं रहता।

وَإِن نَّكَثُوا أَيْمَانَهُم مِّن بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ ﴿١٢﴾ أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

और अगर अहद (वचन) के बाद ये अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ऐब लगाएं तो कुफ्र के इन सरदारों से लड़ो। बेशक उनकी कसमें कुछ नहीं, ताकि वे बाज आएं। क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को निकालने की जसारत (दुस्साहस) की और वही हैं जिन्होंने तुमसे जंग में पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे। अल्लाह ज्यादा मुस्तहिक है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो। उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सजा देगा और उन्हें रुसवा करेगा और तुम्हें उन पर गलबा देगा और मुसलमान लोगों के सीने को ठंडा करेगा और उनके दिल की जलन को दूर कर देगा और अल्लाह तौबह नसीब करेगा जिसे चाहेगा और अल्लाह जानने वाला है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (12-15)

कुफ़्र के सरदारों से मुराद क़ुरैश हैं जो अपने क़ायदाना मक़ाम की वजह से अरब में इस्लाम के ख़िलाफ तहरीक की इमामत (नेतृत्व) कर रहे थे। क़ुरैश के इस किरदार से मालूम होता है कि इस्लाम की तहरीक जब उठती है तो उसका पहला मुख़ालिफ कौन गिरोह बनता है। यह वह गिरोह है जिसे बेआमेज (विशुद्ध) हक के पैग़ाम में अपनी बड़ाई पर जद पड़ती हुई नजर आती है। यही वह सरबरआवुरदह (शीर्ष) तबक़ा है जिसके पास वह जेहन होता है कि वह इस्लामी दावत में शोशे निकाल कर लोगों को उसकी तरफ से मुशतबह करे। उसी के पास वे वसाइल होते हैं कि वह इस्लाम के दाअियों की हौसलाशिकनी के लिए उन्हें तरह-तरह की मुश्किलात में डाले। उसी के पास वह जोर होता है कि वह हकपरस्तों को उनके घरों से निकालने की तदबीरें करे। यहां तक कि उसी को ये मौके हासिल होते हैं कि इस्लाम के मानने वालों के ख़िलाफ बाकायदा जंग की आग भड़का सके।

'उनके अहद कुछ नहीं' बहुत मअनाख़ेज फ़िक़रा है। जो लोग दुश्मनी और ज़िद की बुनियाद पर खड़े हुए हों उनके वादे और मुआहिदे बिल्कुल ग़ैर यकीनी होते हैं। उनकी नफ्सियात में अपने हरीफ के ख़िलाफ मुस्तकिल इशतेआल (उत्तेजना) बरपा रहता है। उनके अंदर ठहराव नहीं होता। वे अगर मुआहिदा भी कर लें तो अपने मिजाज के एतबार से उसे देर तक बाक़ी रखने पर क़ादिर नहीं होते। ज्यादा देर नहीं गुज़रती कि अपने मंफ़ी जज्बात से मग़लूब होकर वे मुआहिदे को तोड़ देते हैं और इस तरह अहले हक को यह मौका देते हैं कि अपने ऊपर पहल का इल्ज़ाम लिए बग़ैर वे उनके ख़िलाफ मुदाफ़िआना (सुरक्षात्मक) कार्रवाई करें और ख़ुद की मदद से उनका ख़ात्मा करें।

तमाम हिक्मत और दानाई (सूझबूझ) का सिरा अल्लाह का डर है। अल्लाह का डर आदमी के अंदर एतराफ का माद्दा पैदा करता है। वह आदमी के अंदर वह शुऊर जगाता है कि वह हकीकतों को उनके असली रूप में देख सके। यही वजह है कि अल्लाह से डरने वाले के लिए ख़ुदाई मंसूबे को समझने में देर नहीं लगती। वह ख़ुदा की मंशा को जान कर पूरे एतमाद के साथ अपने आपको उसमें लगा देता है। वह उस सहीतरीन रास्ते पर चल पड़ता है जिसकी आख़िरी मंजिल सिर्फ कामयाबी है। अल्लाह का डर आदमी की आंखों को अश्क आलूद कर देता है। मगर अल्लाह के लिए भीगी हुई आंख ही वह आंख है जिसके लिए यह मुकद्दर है कि उसे ठंडक हासिल हो, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ

तुम करते हो। (16)

मौजूदा दुनिया में आदमी जब किसी चीज को अपनी ज़िंदगी का मक्सद बनाता है तो उसे हासिल करने में तरह-तरह के मसाइल और तकाजे सामने आते हैं। अगर आदमी को अपना मक्सद अज़ीज है तो वह इन मसाइल को हल करने और इन तकाज़ों को पूरा करने में अपनी सारी कुव्वत लगा देता है। इसी का नाम जिहाद है। यह जिहाद इस दुनिया में हर एक को पेश आता है। हर आदमी को जिहाद की सतह पर अपनी तलब का सुबूत देना पड़ता है इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह अपनी तलब में कामयाब हो। फ़र्क यह है कि ग़ैर मोमिन दुनिया की राह में जिहाद करता है और मोमिन आख़िरत की राह में।

यही जिहाद यह साबित करता है कि आदमी अपने मक्सद में कितना संजीदा है। एक शख़्स जो ईमान का मुद्दई (दावेदार) हो उसके सामने बार-बार मुख़्तलिफ मौके आते हैं जो उसके दावे का इम्तेहान हों। कभी उसका दिल किसी के ख़िलाफ बुग्ज व हसद के जज्बात से मुतअस्सिर होने लगता है और उसका ईमान उससे कहता है कि इस किस्म के तमाम जज्बात को अपने अंदर से निकाल दो। कभी उसकी जबान पर नापसंदीदा कलिमात आते हैं और ईमान का तक़ाज़ा यह होता है कि उस वक्त अपनी जबान को पकड़ लिया जाए। कभी मामलात के दौरान किसी को ऐसा हक देना पड़ता है जो क़ल्ब को बिल्कुल नागवार हो मगर ईमान यह कह रहा होता है कि हक़्दार को इंसाफ के मुताबिक उसका पूरा हक पहुंचाया जाए। इसी तरह इस्लाम की दावत कभी ऐसे मोड़ पर पहुंच जाती है कि ईमान यह कहता है कि इसको कामयाब बनाने के लिए अपनी जान व माल क़ुर्बान कर दो। ऐसे तमाम मौकों पर गुरेज (संकोच) या फ़रार से बचना और हर क़ीमत पर ईमान व इस्लाम के तक़ाज़े पूरे करते रहना, इसी का नाम जिहाद है।

जब कोई शख़्स इस्लाम के लिए मुजाहिद बन जाए तो उसका तमामतर नफ्सियाती (मनोवैज्ञानिक) तअल्लुक अल्लाह और रसूल और अहले ईमान से हो जाता है। वह इनके सिवा किसी को अपना वलीजा नहीं बनाता। वलज के मअना हैं दाख़िल होना। वलीजा किसी वादी के उस ग़ार को कहते हैं जहां रास्ता चलने वाले बारिश वग़ैरह से पनाह लें। इसी से वलीजा है, यानी वली दोस्त।

मौजूदा दुनिया में जब भी आदमी किसी वसीअतर (बड़े) मक्सद को अपनाता है तो उसे लाजिमन ऐसा करना पड़ता है कि वह अपने मक्सद की मर्कज़ियत से वाबस्ता हो। वह अपने कायद का मुकम्मल वफ़ादार बने। वह इस राह के साथियों से पूरी तरह जुड़ जाए। मक्सदियत के एहसास के साथ ये चीजें लाजिम मल्ज़ूम (परस्पर पूरक) हैं। इनके बग़ैर बामक्सद ज़िंदगी का दावा बिल्कुल झूठा है। इसी तरह आदमी जब दीन को संजीदगी के साथ अपनी जिंदगी में दाख़िल करेगा तो लाजिमी तौर पर ऐसा होगा कि ख़ुदा और रसूल और अहले ईमान उसका 'वलीजा' बन जाएंगे। वह हर एतबार से उनके साथ जुड़ जाएगा। संजीदगी के साथ दीन इख़्तियार करने वाले के लिए अल्लाह और रसूल और अहले ईमान, अमली तौर पर, ऐसी वहदत (एकत्व) के अज्जा हैं जिनके दर्मियान तक़्सीम मुमकिन नहीं।

इस मामले की नजाकत बहुत बढ़ जाती है जब यह सामने रखा जाए कि इसकी जांच करने वाला वह है जिसे खुले और छुपे का इल्म है, वह हर आदमी से उसकी हकीकत के एतबार

से मामला करेगा न कि उसके जाहिरी रवैये के एतबार से।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۖ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٨﴾ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّاتٍ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُقِيمٌ ﴿٢١﴾ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾

मुश्रिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें हालांकि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं। उन लोगों के आमाल अकारत गए और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं। अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज कायम करे और जकात अदा करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने वालों में से बनें। क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और मस्जिदे हराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख़्स के जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नजदीक ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने जान व माल से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहां बड़ा है और यही लोग कामयाब हैं। उनका रब उन्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी रहमत और ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) की और ऐसे बाग़ों की जिनमें उनके लिए दाइमी (हमेशा रहने वालों) नेमत होगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (17-22)

नुजूले कुरआन के वक्त अरब में यह सूरतेहाल थी कि मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिर्द जमा थे और मुश्रिकीन बैतुल्लाह के गिर्द। उस वक्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अज़्मतों की वह तारीख़ वाबस्ता नहीं हुई थी जिसे आज हम जानते हैं। लोगों को आप आम इंसानों की तरह एक इंसान दिखाई देते

थे। दूसरी तरफ मस्जिदे हराम हजारों वर्षों की तारीख़ के नतीजे में अज़्मत व तक़द्दुस (पावनता) की अलामत बनी हुई थी। मुश्रिकीन की नजर में अपनी तस्वीर तो यह थी कि वे एक मुकद्दसतरीन मर्कज के ख़ादिम और आबादकार हैं। दूसरी तरफ जब वे मुसलमानों को देखते तो उस वक्त के हालात में उन्हें ऐसा मालूम होता जैसे कुछ लोग बस एक दीवाने के पीछे लगे हुए हैं।

मगर मुश्रिकीन का यह ख़्याल सरासर बातिल था। वह जवाहिर का तकाबुल (तुलना) हकाइक से करने की ग़लती कर रहे थे। मस्जिदे हराम के जायरीन को पानी पिलाना, उसके अंदर रोशनी और सफ़ाई का इंतिजाम। काबा पर ग़िलाफ चढ़ा देना। मस्जिद के फ़र्श और दीवार की मरम्मत, ये सब जाहिरी नुमाइश की चीजें हैं। ये भला उन आमाल के बराबर हो सकती हैं जबकि आदमी अल्लाह को पा लेता है और आख़िरत की फ़िक्र में जीने लगता है। वह अपनी जिंदगी और अपने असासे को ख़ुदा के हवाले कर देता है। वह दूसरी तमाम बड़ाइयों का इंकार करके एक ख़ुदा को अपना बड़ा बना लेता है। सच्चाई को पाने वाले दरअस्ल वे लोग हैं जिन्होंने उसे मआना (निहितार्थ) की सतह पर पाया हो न कि जवाहिर की सतह पर। जो कुर्बानी की हद तक सच्चाई से तअल्लुक रखने वाले हों न कि महज सतही और नुमाइशी कार्रवाइयों की हद तक।

अल्लाह से तअल्लुक की दो किस्में हैं। एक तअल्लुक वह है जो रस्मी अकीदे की हद तक होता है, जिसमें आदमी कुछ दिखावे के आमाल तो करता है मगर अपने को और अपने माल को ख़ुदा की राह में नहीं देता। दूसरा तअल्लुक वह है जबकि आदमी अपने ईमान में इतना संजीदा हो कि इस राह में उसे जो कुछ छोड़ना पड़े वह उसे छोड़ दे और जो चीज देनी पड़े उसे देने के लिए तैयार हो जाए। यही दूसरी किस्म के बंदे हैं जो मरने के बाद ख़ुदा के यहां आलातरीन इनामात से नवाजे जाएंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾

ऐ ईमान वालो अपने बापों और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अजीज रखें। और तुम में से जो उन्हें अपना दोस्त बनाएंगे तो ऐसे ही लोग जालिम हैं। कहो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई

और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा ख़ानदान और वे माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा महबूब हैं तो इंतिजार करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफरमान लोगों को रास्ता नहीं देता। (23-24)

लोगों के लिए अपना ख़ानदान, अपनी जायदाद, अपने मआशी मफ़ादात सबसे कीमती होते हैं। इन्हीं चीजों को वे सबसे ज्यादा अहम समझते हैं। हर दूसरी चीज के मुक़ाबले में वे उन्हें तरजीह देते हैं और अपना सब कुछ उनके ऊपर निसार कर देते हैं। इस किस्म की जिंदगी दुनियादाराना जिंदगी है। ऐसा आदमी जो कुछ पाता है बस इसी दुनिया में पाता है। मौत के बाद वाली अबदी दुनिया में उसके लिए कुछ नहीं। इसके बरअक्स दूसरी जिंदगी वह है जबकि आदमी अल्लाह और रसूल को और अल्लाह की राह में जद्दोजहद को सबसे ज्यादा अहमियत दे और इसके ख़ातिर दूसरी हर चीज छोड़ने के लिए तैयार रहे। यही दूसरी जिंदगी ख़ुदापरस्ताना जिंदगी है और ऐसे ही लोगों के लिए आख़िरत में अबदी जन्नतों के दरवाजे खोले जाएंगे।

एक जिंदगी वह है जो दुनियावी तअल्लुक़ात और दुनियावी मफ़ादात की बुनियाद पर कायम होती है। दूसरी जिंदगी वह है जो ईमान की बुनियाद पर कायम होती है। दोनों में से जिस चीज को भी आदमी अपनी जिंदगी की बुनियाद बनाए, वह हमेशा इस कीमत पर होता है कि वह उसके ख़ातिर दूसरी चीजों को छोड़ दे। वह कुछ लोगों से तअल्लुक कायम करे और कुछ दूसरे लोगों से बेतअल्लुक़ हो जाए। वह कुछ चीजों की बक़ा और तरक्की में अपनी सारी तवज्जोह लगा दे और कुछ दूसरी चीजों की बक़ा और तरक्की के मामले में बेपरवाह बना रहे। कुछ नुक्सानात उसे किसी कीमत पर गवारा न हों, वह जान पर खेलकर और अपना बेहतरीन सरमाया ख़र्च करके उन्हें बचाने की कोशिश करे और कुछ दूसरे नुक्सानात को वह अपनी आंखों से देखे मगर उनके बारे में उसके अंदर कोई तड़प पैदा न हो। दुनिया हमेशा उन लोगों को मिलती है जो दुनिया की ख़ातिर अपना सब कुछ लगा दें। इसी तरह आख़िरत सिर्फ उन्हीं लोगों के हिस्से में आएगी जो आख़िरत के ख़ातिर दूसरी चीजों को कुर्बान कर दें।

तरजीह (एक को छोड़कर दूसरे को इख़्तियार करने का मामला) इंतिहाई संगीन है। यहां तक कि वही आदमी के कुफ़्र व ईमान का फैसला करता है। ख़ुदा की दुनिया में जिस तरह खुले मुंकिरों के लिए कामयाबी मुकद्दर नहीं है इसी तरह उन लोगों के लिए भी यहां कामयाबी का कोई इम्कान नहीं जो ईमान का दावा करें और जब नाजुक मौका आए तो वे आख़िरत पसंदाना रविश के मुकाबले में दुनियादाराना रविश को तरजीह दें। ऐसे ईमान के दावेदार अगर अपने बारे में ख़ुशफ़हमी में मुब्तिला हों तो उन्हें उस वक्त मालूम हो जाएगा जब अल्लाह अपना फैसला जाहिर कर देगा।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ

مُّدْبِرِيْنَ ۚ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَاۤءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَاۤءَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

बेशक अल्लाह ने बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें नाज में मुब्तिला कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आई। और जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेर कर भागे। इसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत (शांति) उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने मुंकिरों को सजा दी और यही मुंकिरों का बदला है। फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहे तौबह नसीब कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ऐ ईमान वालो, मुश्रिकीन बिल्कुल नापाक हैं। पस वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आएं और अगर तुम्हें मुफ्लिसी का अंदेशा हो तो अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने फज़्ल से तुम्हें धनी कर देगा। अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (25-28)

मुसलमानों का ग़लबा मुंकिरों को उनके कुफ़्र की सजा का अगला नतीजा है। मगर मुंकिरों का कुफ़्र मुसलमानों के इस्लाम की निस्बत से मुतहक़्क़िक होता है। अगर मुसलमान अपनी इस्लामियत खो दें तो मुंकिरों का कुफ़्र किस चीज के मुकाबले में साबित होगा और किस बुनियाद पर ख़ुदा वह फर्क का मामला करेगा जो एक के लिए इनाम बने और दूसरे के लिए सजा।

रमजान 8 हिजरी में मुसलमानों ने क़ुरैश को कामयाब तौर पर मग़लूब करके मक्का को फतह किया। मगर अगले ही महीने शव्वाल 8 हिजरी में उन्हें हवाजिन व सक़ीफ के मुश्रिक कबीलों के मुक़ाबले में शिकस्त हुई, जबकि फतह मक्का के वक्त मुसलमानों की तादाद दस हजार थी और हवाजिन व सकीफ से मुक़ाबले के वक्त बारह हजार। इसकी वजह यह थी कि क़ुरैश से मुक़ाबले के वक्त मुसलमान सिर्फ अल्लाह के भरोसे पर निकले थे। मगर हवाजिन व सकीफ से मुक़ाबले पर निकलते हुए उन्हें यह नाज हो गया कि अब तो हम फातेह मक्का हैं। हमारे साथ बारह हजार आदमियों का लश्कर है, आज हमें कौन शिकस्त दे सकता है। जब वे ख़ुदा के एतमाद पर थे तो उन्हें कामयाबी हुई, जब उन्हें अपनी जात पर एतमाद हो गया तो उन्हें शिकस्त का सामना करना पड़ा।

अपनी जात पर भरोसा आदमी के अंदर घमंड का जज्बा उभारता है जिसके नतीजे में ख़ारजी (वाह्य) हकीक़तों से बेपरवाई पैदा होती है। वह नज्म की पाबंदी में कोताह हो जाता

है। वह बेजा ख़ुदएतमादी की वजह से ग़ैर हकीक़तपसंदाना इक्दाम करने लगता है जिसका नतीजा इस आलमे असबाब में लाजिमी शिकस्त है। इसके बरअक्स खुदा पर भरोसा सबसे बड़ी ताक़त पर भरोसा है। इससे आदमी के अंदर तवाजोअ (विनम्रता) का जज्बा उभरता है। वह इंतिहाई हक़ीक़तपसंद बन जाता है। और हक़ीक़तपसंदी बिलाशुबह तमाम कामयाबियों की जड़ है।

इब्तिदा में जब यह हुक्म आया कि हरम में मुश्रिकों का दाख़िला बंद कर दो तो मुसलमानों को तशवीश हुई क्योंकि बग़ैर खेती का मुल्क होने की वजह से अरब की इक्तिसादयात (अर्थव्यवस्था) का इंहिसार तिजारत पर था और तिजारत की बुनियाद हमेशा साझे तअल्लुक़ात पर होती है। मुसलमानों ने सोचा कि जब हरम में मुश्रिकीन का आना बंद होगा तो उनके साथ तिजारती रिश्ते भी टूट जाएंगे। मगर उनकी नजर इस इम्कान पर नहीं गई कि आज के मुश्रिक कल के मुसलमान हो सकते हैं। चुनांचे यही हुआ। अरबों के उमूमी तौर पर इस्लाम क़ुबूल कर लेने की वजह से तिजारती सरगर्मियां दुबारा नई सूरत से बहाल हो गईं। साथ ही इस इब्तिदाई क़ुर्बानी का नतीजा यह हुआ कि बिलआख़िर इस्लाम एक अन्तर्राष्ट्रीय दीन बन गया। जो आर्थिक दरवाजे मक़ामी सतह पर बंद होते नजर आते थे वे आलमी सतह पर खुल गए।

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ
يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ
وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَٰلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِئُونَ
قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾ اتَّخَذُوا
أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا
أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

उन अहले किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न आख़िरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते और न दीने हक़ को अपना दीन बनाते यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज्या (जान माल की हिफाज़त) दें और छोटे बनकर रहें। और यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा (ईसाइयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उनके अपने मुंह की बातें हैं। वे उन लोगों की बात की नकल कर रहे हैं जिन्होंने इनसे पहले कुफ़्र किया। अल्लाह इन्हें हलाक करे, वे किधर बहके जा रहे हैं। उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा (विद्वानों) और मशाइख़ (धर्म गुरूओं) को रब बना डाला और मसीह इब्ने मरयम को भी। हालांकि उन्हें सिर्फ यह हुक्म था कि वे एक माबूद की इबादत करें। उसके सिवा

कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह पाक है इससे जो वे शरीक करते हैं। (29-31)

ईमान जिंदा हो तो आदमी हर वाक़ये को ख़ुदा की तरफ मंसूब करता है। वह किसी चीज को सिर्फ उस वक्त समझ पाता है जबकि ख़ुदा की निस्बत से उसके बारे में राए क़ायम कर ले। वह फूल की ख़ुशबू को उस वक्त समझता है जबकि उसमें उसे ख़ुदा की महक मिल जाए। वह सूरज को उस वक्त दरयाफ्त करता है जबकि वह उसके अता करने वाले को मालूम कर ले। हर बड़ाई उसे ख़ुदा का अतिय्या (देन) नजर आती है। हर ख़ूबी उसे ख़ुदा का एहसान याद दिलाती है। इसके बरअक्स अगर ख़ुदा से आदमी का तअल्लुक घटकर सिर्फ मोहूम (काल्पनिक) अक़ीदे के दर्जे पर आ जाए तो ख़ुदा उसके जिंदा शुऊर के लिए एक लामालूम (अज्ञात) चीज बन जाएगा। वह दुनिया की नजर आने वाली चीजों पर ख़ुदा को क़यास करने लगेगा।

दूसरी क़िस्म के लोग तबई (भौतिक) तौर पर ख़ालिक (रचयिता) को उन दुनियावी चीजों की नजर से देखने लगते हैं जिन्हें वे जानते हैं। वे ख़ालिक को मख़्लूक़ (रचना) की सतह पर उतार लाते हैं। यही हाल यहूद व नसारा का अपने बिगाड़ के जमाने में हुआ। अब ख़ुदा उनके यहां काल्पनिक आस्था के ख़ाने में चला गया। चुनांचे वे अपने नजर आने वाले अकाबिर (बड़ों) और बुजुर्गों को वह दर्जा देने लगे जो दर्जा ख़ुदाए आलिमुलग़ैब को देना चाहिए। उन्होंने देखा कि यूनानी और रूमी कौमें सूरज को ख़ुदा बनाकर उसके लिए बेटा फ़र्ज किए हुए हैं तो उन्हें भी अपने बुजुर्गों के लिए यही सबसे ऊंचा लफ़्ज नजर आया। उन्होंने अपनी आसमानी किताबों में अबू (पिता) और इब्न (बेटा) के अल्फ़ाज की ख़ुदसाख़्ता तशरीह करके ख़ुदा को बाप और अपने पैग़म्बर को उसका बेटा कहना शुरू कर दिया। हालांकि ख़ुदा सिर्फ एक ही है, वह हर मुशाबिहत से पाक है, वही तंहा इसका मुस्तहिक़ है कि उसे बड़ा बनाया जाए और उसकी इबादत की जाए।

रसूलुल्लाह के ख़िलाफ जारिहियत करने वाले मुश्रिकीन (बनू इस्माईल) भी थे और अहले किताब (बनू इस्राईल) भी। मगर दोनों के साथ अलग-अलग मामला किया गया। मुश्रिकीन के साथ जंग या इस्लाम का उसूल इख़्तियार किया गया। मगर अहले किताब के लिए हुक्म हुआ कि अगर वे जिज्या (सियासी इताअत) पर राजी हो जाएं तो उन्हें छोड़ दो। इस फ़र्क की वजह यह है कि मुश्रिकीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्लन मुख़ातब थे और अहले किताब तबअन (परिवेशगत)। अल्लाह की सुन्नत यह है कि जिस कौम पर पैग़म्बर के जरिए बराहेरास्त दावत पहुंचाई जाती है उससे इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बाद जिंदगी का हक छीन लिया जाता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी रियासत में एक शख़्स के बाग़ी साबित होने के बाद उससे जिंदगी का हक छीन लिया जाता है। मगर जहां तक दूसरे गिरोहों का तअल्लुक है उनके साथ वही सियासी मामला किया जाता है जो आम अन्तर्राष्ट्रीय उसूल के मुताबिक दुरुस्त हो।

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा किए बग़ैर मानने वाला नहीं, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। उसी ने अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सारे दीन पर ग़ालिब कर दे चाहे यह मुश्रिकों को कितना ही नागवार हो। (32-33)

इन आयतों में ख़ुदा ने अपने उस मुस्तकिल फैसला का एलान किया है कि वह अपने दीन को कियामत तक पूरी तरह महफूज़ रखेगा, माजी (अतीत) की तरह अब ऐसा नहीं होने दिया जाएगा कि लोग अपनी मिलावटों से ख़ुदा के दीन को गुम कर दें या कोई ताकत उसे सफहा-ए-हस्ती से मिटा देने में कामयाब हो।

अल्लाह तआला ने जब इंसान को जमीन पर बसाया तो इसी के साथ उसके लिए अपना हिदायतनामा भी इंसान के हवाले कर दिया। बाद के दौर में जब लोग ग़फलत और दुनियापरस्ती में मुब्तिला हुए तो उन्होंने ख़ुदा के अल्फाज को बदल कर उसे अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक बना लिया। मसलन अपने बुज़ुर्गों को ख़ुदा के यहां सिफारिशी मान कर यह अकीदा कायम कर लिया कि हम जो कुछ भी करें, हमारे बुज़ुर्ग अपनी सिफारिश के जोर पर हमें ख़ुदा के यहां नजात दिला देंगे या यह कि जन्नत और जहन्नम सब इसी दुनिया में हैं। इसके आगे और कुछ नहीं। लोग जो कुछ ख़ुद चाहते थे उसे उन्होंने ख़ुदा की तरफ मंसूब करके ख़ुदा की किताब में लिख दिया। इसके बाद ख़ुदा ने दूसरा नबी भेजा जिसने ख़ुदा के दीन को इंसानी मिलावटों से अलग करके दुबारा उसे सही शक्ल में पेश किया। मगर बाद के जमाने में लोगों ने उसे भी बदल डाला। यही बार-बार होता रहा। बिलआख़िर अल्लाह तआला ने फैसला किया कि एक आख़िरी रसूल भेजे और उसके जरिए ऐसे हालात पैदा करे कि ख़ुदा का दीन हमेशा के लिए अपनी असली हालत में महफूज हो जाए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए तरीख़े नुबुव्वत का यही अजीम कारनामा अंजाम पाया।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए तो उस वक्त लोगों ने ख़ुदसाख़्ता तौर पर बहुत से दीन बना रखे थे। अरब के मुश्रिकीन का एक दीन था जिसे वे दीने इब्राहीम कहते थे। यहूद का एक दीन था जिसे वे दीने मूसा कहते थे। नसारा का एक दीन था जिसे वे दीने मसीह कहते थे। ये सब ख़ुदा के दीन के ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) एडीशन थे जिन्हें उन्होंने ग़लत तौर पर ख़ुदा की तरफ से आया हुआ दीन करार दे रखा था। ख़ुदा ने इन सब दीनों को रद्द कर दिया और मुहम्मद (सल्ल०) के दीन को अपने दीन के वाहिद (एकमात्र) मुस्तनद एडीशन के तौर पर कियामत तक के लिए कायम कर दिया।

आज इस्लाम वाहिद दीन है जिसके मत्न (मूल रूप) में कोई तब्दीली मुमकिन न हो सकी जबकि दूसरे तमाम अदयान (धर्म) इंसानी तहरीफात (संशोधनों) का शिकार होकर अपनी असली तस्वीर गुम कर चुके हैं। इस्लाम वाहिद दीन है जो तारीख़ी तौर पर मोतबर दीन है जबकि दूसरे तमाम अदयान (धर्म) अपने हक में तरीख़ी एतबारियत खो चुके हैं। इस्लाम वाहिद दीन है जिसकी तमाम तालीमात एक जिंदा जबान में पाई जाती हैं जबकि दूसरे तमाम अदयान इब्तिदाई किताबें ऐसी जबानों में हैं जो अब मुर्दा हो चुकी हैं। इस्लाम की सूरत में ख़ुदा ने मजहब की जो रोशनी जलाई वह कभी हल्की नहीं हुई और न बुझाई जा सकी। वह

कामिल तौर पर दुनिया के सामने मौजूद है और हर दूसरे दीन के ऊपर अपनी उसूली बरतरी को मुसलसल कायम रखे हुए है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

ऐ ईमान वालो, अहले किताब के अक्सर उलमा (विद्वान) व मशाइख़ (धर्म गुरू) लोगों के माल बातिल (अवैध) तरीकों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें एक दर्दनाक अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। उस दिन इस माल पर दोजख़ की आग दहकाई जाएगी। फिर उससे उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगी। यही है वह जिसे तुमने अपने वास्ते जमा किया था। पस अब चखो जो तुम जमा करते रहे। (34-35)

दूसरे का माल लेने का एक तरीका यह है कि उसे हक के मुताबिक लिया जाए। यानी आदमी दूसरे की कोई वाकई ख़िदमत करे या उसे कोई हकीकी नफा पहुंचाए और इसके बदले में उसका माल हासिल करे। यह बिल्कुल जाइज है। बातिल तरीके से दूसरे का माल लेना यह है कि दूसरे को धोखे में डाल कर उसका माल हासिल किया जाए। यह दूसरा तरीका नाजाइज है और ख़ुदा के ग़जब को भड़काने वाला है।

बातिल तरीके से दूसरे का माल खाना वही चीज है जिसे मौजूदा जमाने में इस्तग़लाल (Exploitation) कहा जाता है। यहूद के अकाबिर बहुत बड़े पैमाने पर अपने अवाम का मजहबी इस्तग़लाल (शोषण) कर रहे थे। वे अवाम में ऐसी झूठी कहानियां फैलाए हुए थे जिसके नतीजे में लोग बुज़ुर्गों से ग़ैर मामूली उम्मीदें वाबस्ता करें और फिर उन्हें बुज़ुर्ग समझ कर उनकी बरकत लेने के लिए आएं और उन्हें हदिये और नजराने पेश करें। वे ख़ुदा के दीन की ख़िदमत के नाम पर लोगों से रकमें वसूल करते थे हालांकि जो दीन वे लोगों के दर्मियान तक्सीम कर रहे थे वह उनका अपना बनाया हुआ दीन था न कि हकीकतन ख़ुदा का उतारा दीन। वे मिल्लते यहूद के इहया (उत्थान) के नाम पर बड़े-बड़े चन्दे वसूल करते थे हालांकि मिल्लत के इहया के नाम पर वे जो कुछ कर रहे थे वह सिर्फ यह था कि लोगों को ख़ुशख़्यालियों में उलझा कर उन्हें अपनी कयादत (नेतृत्व) के लिए इस्तेमाल करते रहें। वे तावीज गंडे में रहस्य भरे औसाफ बता कर उन्हें लोगों के हाथों फरोख़्त करते थे। हालांकि उनका हाल यह था कि ख़ुद अपने नाजुक मामलात में वे कभी इन तावीज गंडों पर भरोसा नहीं करते थे।

आदमी के पास जो माल आता है उसके दो ही जायज मसरफ (उपयोग) हैं। अपनी वाकई जरूरतों में ख़र्च करना, और जो कुछ वाकई जरूरत से जायद हो उसे ख़ुदा के रास्ते में दे देना। इसके अलावा जो तरीके हैं वे सब आदमी के लिए अजाब बनने वाले हैं। चाहे वह अपने माल को फ़ुज़ूलख़र्चियों में उड़ाता हो या उसे जमा करके रख रहा हो।

जो लोग यहूद की तरह ख़ुदसाख़्ता मजहब की बुनियाद पर किसी गिरोह के ऊपर अपनी कयादत कायम किए हुए हों और ख़ुदा के दीन के नाम पर लोगों का शोषण कर रहे हों वे किसी ऐसी दावत को सख़्त नापसंद करते हैं जो ख़ुदा के सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन को जिंदा करना चाहती हो। ऐसे दीन में उन्हें अपनी मजहबी हैसियत बेएतबार होती नजर आती है। उन्हें दिखाई देता है कि अगर उसे अवाम में फरोग़ हासिल हुआ तो उनकी मजहबी तिजारत बिल्कुल बेनकाब होकर लोगों के सामने आ जाएगी। वे ऐसी तहरीक के उठते ही उसे सूंघ लेते हैं और उसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हो जाते हैं।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ ۚ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾ إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ ۖ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

महीनों की गिनती अल्लाह के नजदीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जिस दिन से उसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, इनमें से चार हुरमत (गरिमा) वाले हैं। यही है सीधा दीन। पस उनमें तुम अपने ऊपर जुल्म न करो। और मुश्रिकों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों (ईश परायण लोगों) के साथ है। महीनों का हटा देना कुफ्र में एक इजाफ़ा है। इससे कुफ्र करने वाले गुमराही में पड़ते हैं। वे किसी साल हराम महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हराम कर देते हैं ताकि ख़ुदा के हराम किए हुए की गिनती पूरी करके उसके हराम किए हुए को हलाल कर लें। उनके बुरे आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। और अल्लाह इंकार करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता। (36-37)

दीनी अहकाम पर हर शख़्स अलग-अलग भी अमल कर सकता है। मगर अल्लाह तआला को यह मत्लूब है कि तमाम अहले ईमान एक साथ उन पर अमल करें ताकि उनमें इज्तिमाइयत (सामूहिकता) पैदा हो। इसी इज्तिमाइयत के मक्सद को हासिल करने की ख़ातिर

इबादात की अदायगी के लिए मुतअय्यन औकात और तारीख़ें मुकर्रर की गई हैं। ये तारीख़ें अगर शमसी केलेन्डर के एतबार से रखी जातीं तो इनके जमाने में यकसानियत (समरूपता) आ जाती। मसलन रोजा हमेशा एक मौसम में आता और हज हमेशा एक मौसम में। मगर यकसानियत आदमी के अंदर जुमूद (जड़ता) पैदा करती है और तब्दीली से नई कुव्वते अमल बेदार होती है। इस बिना पर दीनी उमूर के इज्तिमाई निजाम के लिए चांद का कुदरती केलेन्डर इख़्तियार किया गया।

इसी उसूल की वजह से हज की तारीख़ें मुख़्तलिफ मौसमों में आती हैं, कभी सर्दियों में और कभी गर्मियों में। कदीम जमाने में जबकि हज का इज्तिमा जबरदस्त तिजारती अहमियत रखता था, मुख़्तलिफ मौसमों में हज का आना तिजारती एतबार से नुक्सानदेह मालूम हुआ। अहले अरब को दीनी मस्लेहतों के मुकाबले में दुनियावी मस्लेहतें ज्यादा अहम नजर आई। उन्होंने चाहा कि ऐसी सूरत इख़्तियार करें कि हज की तारीख़ हमेशा एक ही मुवाफिक मौसम में पड़े। इस मौके पर यहूद व नसारा का कबीसा का हिसाब उनके इल्म में आया। अपनी ख़्वाहिशों के ऐन मुताबिक होने की वजह से वह उन्हें पसंद आ गया और उन्होंने उसे अपने यहां राइज कर लिया। यानी महीनों को हटाकर एक की जगह दूसरे को रख देना। मसलन मुहर्रम को सफर की जगह कर देना और सफर को मुहर्रम की जगह।

'नसी' के इस तरीके से अहले अरब को दो फायदे हुए। एक यह कि हज के मौसम को तिजारती तकाजे के मुताबिक कर लेना। दूसरे यह कि हराम महीनों (मुहर्रम, रजब, जीकअदा, जिलहिज्ज) में किसी के ख़िलाफ लड़ाई छेड़ना हो तो हराम महीने की जगह ग़ैर हराम महीना रखकर लड़ाई को जाइज कर लेना। अहले अरब के सामने हजरत इब्राहीम का तरीका भी था। मगर उनके जेहन पर चूंकि तिजारती मकासिद और कबाइली तकाजों का ग़लबा था। इसलिए उन्हें 'नसी' का तरीका ज्यादा अच्छा मालूम हुआ और उन्होंने अपने मामलात के लिए उसे इख़्तियार कर लिया।

'तुम भी मिलकर लड़ो जिस तरह वे मिलकर लड़ते हैं' इसका मतलब यह है कि मुंकिर लोग ख़ुदा से बेख़ौफी पर मुत्तहिद हो जाते हैं, तुम ख़ुदा से ख़ौफ (तकवा) पर मुत्तहिद हो जाओ। वे मंफी (नकारात्मक) मकासिद के लिए बाहम जुड़ जाते हैं तुम मुसबत (सकारात्मक) मकासिद के लिए आपस में जुड़ जाओ। वे दुनिया के ख़ातिर एक हो जाते हैं तुम आख़िरत की ख़ातिर एक हो जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُم بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا تَنفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ

بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۗ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِىَ الْعُلْيَا ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम जमीन से लगे जाते हो। क्या तुम आख़िरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी पर राजी हो गए। आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की जिंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है। अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुम्हें दर्दनाक सजा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा और तुम ख़ुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और ख़ुदा हर चीज पर कादिर है। अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह ख़ुद उसकी मदद कर चुका है जबकि मुंकिरों ने उसे निकाल दिया था, वह सिर्फ दो में का दूसरा था। जब वे दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुम्हें नजर न आते थे और अल्लाह ने मुंकिरों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊंची है और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (38-40)

ये आयतें गजवा तबूक (9 हिजरी) के ज़ेल (प्रसंग) में उतरीं। इस मौके पर मदीने के मुनाफ़िक़ीन की तरफ से जो अमल जाहिर हुआ उससे अंदाजा होता है कि कमजोर ईमान वाले लोग जब किसी इस्लामी समाज में दाख़िल हो जाते हैं तो नाजुक मौके पर उनका किरदार क्या होता है।

अस्ल यह है कि इस्लाम से तअल्लुक के दो दर्जे हैं। एक यह कि उसी से आदमी की तमाम वफ़ादारियां वाबस्ता हो जाएं। वह आदमी के लिए जिंदगी व मौत का मसला बन जाए। दूसरे यह कि आदमी की हकीकी दिलचस्पियां तो कहीं और अटकी हुई हों और ऊपरी तौर पर वह इस्लाम का इकरार कर ले। पहली किस्म के लोग सच्चे मोमिन हैं और दूसरी किस्म के लोग वे हैं जिन्हें शरीअत की इस्तिलाह में मुनाफिक कहा गया है। मोमिन का हाल यह होता है कि आम हालात में भी वह इस्लाम को पकड़े हुए होता है और कुर्बानी के लम्हात में भी वह पूरी तरह उस पर कायम रहता है। इसके बरअक्स मुनाफ़िक़ का हाल यह होता है कि वह बेजरर (अहानिकारक) इस्लाम या नुमाइशी दीनदारी में तो बहुत आगे दिखाई देता है। मगर जब कुर्बानी की सतह पर इस्लाम के तकाजों को इख़्तियार करना हो तो वह पीछे हट जाता है।

इस फ़र्क़ की वजह यह है कि मोमिन के सामने अस्लन आख़िरत होती है और मुनाफ़िक़ के सामने अस्लन दुनिया। मोमिन आख़िरत की बेपायां (असीम) नेमतों के मुकाबले में दुनिया की कोई कीमत नहीं समझता, इसलिए जब भी दुनिया की चीजों में से कोई चीज उसके रास्ते में हायल हो तो वह उसे नजरअंदाज करके दीन की तरफ बढ़ जाता है। इसके बरअक्स मुनाफिक ऐसे इस्लाम को पसंद करता है जिसमें दुनिया को बिगाड़े बग़ैर इस्लामियत का क्रेडिट मिल रहा हो। इसलिए जब ऐसा मौका आता है कि दुनिया को खोकर इस्लाम को पाना हो तो वह दुनिया की तरफ झुक जाता है, चाहे इसके नतीजे में इस्लाम की रस्सी उसके हाथ से निकल जाए।

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम की कशमकश के जो लम्हात मौजूदा दुनिया में आते हैं वे बजाहिर देखने वालों को अगरचे दो इंसानी गिरोहों की कशमकश दिखाई देती है मगर अपनी हकीकत के एतबार से यह एक ख़ुदाई मामला होता है। ऐसे हर मौके पर ख़ुद ख़ुदा इस्लाम की तरफ से खड़ा होता है। ऐसे किसी वाकये को असबाब के रूप में इसलिए जाहिर किया जाता है ताकि उन लोगों को दीन की ख़िदमत का क्रेडिट दिया जाए जो अपने आपको पूरी तरह ख़ुदा के हवाले कर चुके हैं।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۗ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾

हल्के और बोझल और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अगर नफा करीब होता और सफर हल्का होता तो वे जरूर तुम्हारे पीछे हो लेते मगर यह मंजिल उन पर कठिन हो गई। अब वे कसमें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि ये लोग यकीनन झूठे हैं। (41-42)

मदीना के मुनाफ़िक़ीन में एक तबक़ा वह था जो कमजोर अक़ीदे के मुसलमान थे। उन्होंने इस्लाम को हक समझ कर उसका इकरार किया था। वे इस्लाम की उन तमाम तालीमात पर अमल करते थे जो उनकी दुनियावी मस्लेहतों के ख़िलाफ न हों। मगर जब इस्लाम का तकाजा उनके दुनियावी तकाजों से टकराता तो ऐसे मौके पर वे इस्लामी तकाजे को छोड़कर अपने दुनियावी तकाजे को पकड़ लेते। मदीने के समाज में मोमिन उस शख़्स का नाम था जो कुर्बानी की सतह पर इस्लाम को इख़्तियार किए हुए हो और मुनाफ़िक़ वह था जो इस्लाम की ख़ातिर कुर्बानी की हद तक जाने के लिए तैयार न हो।

तबूक का मामला एक अलामती (प्रतीकात्मक) तस्वीर है जिससे मालूम होता है कि ख़ुदा की नजर में मोमिन कौन होता है और मुनाफ़िक़ कौन। इस मौके पर रूम जैसी बड़ी और मुनज्जम ताकत से मुक़ाबले के लिए निकलना था। जमाना शदीद गर्मी का था। फ़स्ल बिल्कुल काटने के करीब पहुंच चुकी थी। हर किस्म की नासाजगारी का मुक़ाबला करते हुए शाम की दूरदराज सरहद पर पहुंचना था। फिर मुसलमानों में कुछ सामान वाले थे और कुछ बेसामान वाले। कुछ आजाद थे और कुछ अपने हालात में घिरे हुए थे। मगर हुक्म हुआ कि हर हाल में निकलो, किसी भी चीज को अपने लिए उज़्र (विवशता) न बनाओ। इसकी वजह यह है कि ख़ुदा के यहां अस्ल मसला मिक्दार का नहीं होता बल्कि यह होता है कि आदमी के पास जो कुछ भी है वह उसे पेश कर दे। यही दरअस्ल जन्नत की कीमत है, चाहे वह बजाहिर देखने वालों के नजदीक कितनी ही कम क्यों न हो।

मुनाफ़िक़ की ख़ास पहचान यह है कि अगर वह देखता है कि बेमशक्क़त सफ़र करके इस्लाम की ख़िदमत का एक बड़ा क्रेडिट मिल रहा है तो वह फ़ौरन ऐसे सफ़र के लिए तैयार हो जाता है। इसके बरअक्स अगर ऐसा सफ़र दरपेश हो जिसमें मशक्क़तें हों और सब कुछ करके भी बजाहिर कोई इज्ज़त और कामयाबी मिलने वाली न हो तो ऐसी दीनी मुहिम के लिए उसके अंदर रग़बत पैदा नहीं होती।

एक हक़ीक़ी दीनी मुहिम सामने हो और आदमी उजरात (विवशताएं) पेश करके उससे अलग रहना चाहे तो यह साफ़ तौर पर इस बात का सुबूत है कि आदमी ने ख़ुदा के दीन को अपनी ज़िंदगी में सबसे ऊंचा मक़ाम नहीं दिया है। उज़्र (विवशता) पेश करने का मत्लब ही यह है कि पेशेनज़र मक़सद के मुक़ाबले में कोई और चीज़ आदमी के नज़दीक ज़्यादा अहमियत रखती है। जाहिर है कि ऐसा उज़्र किसी आदमी को ख़ुदा की नज़र में बेएतबार साबित करने वाला है न यह कि इसकी बिना पर उसे मक़बूलीन (प्रिय बंदों) की फ़ेहरिस्त में शामिल किया जाए। मुनाफ़िक़त दरअस्ल ख़ुदा से बेपरवाह होकर बंदों की परवाह करना है। आदमी अगर ख़ुदा की क़ुदरत को जान ले तो वह कभी ऐसा न करे।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, तुमने क्यों उन्हें इजाज़त दे दी। यहां तक कि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते। जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुमसे यह दरख़्वास्त न करेंगे कि वे अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करें और अल्लाह डरने वालों को ख़ूब जानता है। तुमसे इजाज़त तो वही लोग मांगते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं। पस वे अपने शक में भटक रहे हैं। और अगर वे निकलना चाहते तो ज़रूर वे इसका कुछ सामान कर लेते। मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद न किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो। (43-46)

मुनाफ़िक़ वह है जो इस्लाम के नफ़ाबख़्श या बेज़रर (अहानिकारक) पहलुओं में आगे आगे रहे मगर जब उसके मफ़ादात पर ज़द पड़ती नज़र आए तो वह पीछे हट जाए। ऐसे

मौक़े पर इस क़िस्म के कमज़ोर लोग जिस चीज़ का सहारा लेते हैं वह उज़्र है। वे अपनी बेअमली को ख़ूबसूरत तौजीहात (तर्कों) में छुपाने की कोशिश करते हैं। मुसलमानों का सरबराह अगर इज्तिमाई मसालेह (जनहित) के पेशेनज़र उनके उज़्र को क़ुबूल कर ले तो वे ख़ुश होते हैं कि उन्होंने अपने अल्फ़ाज़ के पर्दे में निहायत कामयाबी के साथ अपनी बेअमली को छुपा लिया। मगर वे भूल जाते हैं कि अस्ल मामला इंसान से नहीं बल्कि ख़ुदा से है। और वह हर आदमी की हक़ीक़त को अच्छी तरह जानता है। ख़ुदा ऐसे लोगों का राज़ कभी दुनिया में खोल देता है और आख़िरत में तो बहरहाल हर एक का राज़ खोला जाने वाला है।

किसी का लड़का बीमार हो या किसी की लड़की की शादी हो तो उस वक़्त वह अपने आपको और अपने माल को उससे बचाकर नहीं रखता। उसकी ज़िंदगी और उसका माल तो इसीलिए है कि ऐसा कोई मौक़ा आए तो वह अपना सब कुछ निसार करके उनके काम आ सके। ऐसा कोई वक़्त उसके लिए बढ़कर क़ुर्बानी देने का होता है न कि उजरात की आड़ तलाश करने का। यही मामला दीन का भी है। जो शख़्स अपने दीन में संजीदा हो वह दीन के लिए क़ुर्बानी का मौक़ा आने पर कभी उज़्र (विवशता) तलाश नहीं करेगा। उसके सीने में जो ईमानी जज़्बात बेक़रार थे वे तो गोया उसी दिन के इंतिज़ार में थे कि जब कोई मौक़ा आए तो वह अपने आपको निसार करके ख़ुदा की नज़र में अपने को वफ़ादार साबित कर सके। फिर ऐसा मौक़ा पेश आने पर वह उज़्र का सहारा क्यों ढूंढेगा।

मोमिन ख़ुदा से डरने वाला होता है और डर का जज़्बा आदमी के अंदर सबसे ज़्यादा क़वी (सशक्त) जज़्बा है। डर का जज़्बा दूसरे तमाम जज़्बात पर ग़ालिब आ जाता है। जिस चीज़ से आदमी को डर और अंदेशे का तअल्लुक़ हो उसके बारे में वह आख़िरी हद तक संजीदा और हक़ीक़तपसंद हो जाता है। यही वजह है कि जब कोई शख़्स डर की सतह पर ख़ुदा का मोमिन बन जाए तो उसे यह समझने में देर नहीं लगती कि किस मौक़े पर उसे किस क़िस्म का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश करना चाहिए।

आख़िरत का नफ़ा सामने न होने की वजह से आदमी उसके लिए क़ुर्बानी देने में शक में पड़ जाता है। मगर इस शक के पर्दे को फाड़ना ही इस दुनिया में आदमी का अस्ल इम्तेहान है।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

अगर ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दर्मियान फ़ितनापरदाज़ी (उपद्रव) के लिए दौड़धूप करते और तुम में उनकी सुनने वाले हैं और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है। ये पहले भी फ़ित्ने (उपद्रव) की कोशिश कर चुके हैं और वे तुम्हारे लिए कामों का उलट फेर करते रहे हैं।

यहां तक कि हक आ गया और अल्लाह का हुक्म जाहिर हो गया और वे नाख़ुश ही रहे। (47-48)

दीन को इख़्तियार करना एक मुख़्लिसाना होता है और दूसरा मुनाफ़िक़ाना। मुख़्लिसाना तौर पर दीन को इख़्तियार करना यह है कि दीन के मसले को आदमी अपना मसला बनाए, अपनी जिंदगी और अपने माल पर वह सबसे ज्यादा दीन का हक समझे। इसके बरअक्स मुनाफ़िक़ाना तौर पर दीन को इख़्तियार करना यह है कि दीन से बस रस्मी और जाहिरी तअल्लुक रखा जाए। दीन को आदमी अपनी जिंदगी में यह मकाम न दे कि उसके लिए वह वक्फ़ हो जाए और हर किस्म के नुक्सान का ख़तरा मोल लेकर उसकी राह में आगे बढ़े।

अपनी ग़लती को मानना अपने को दूसरे के मुकाबले में कमतर तस्लीम करना है और इस किस्म का एतराफ किसी आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है। यही वजह है कि आदमी हमेशा इस कोशिश में रहता है कि किसी न किसी तरह अपने मौकिफ को सही साबित कर दे। चुनांचे मुनाफ़िक़ाना तौर पर इस्लाम को इख़्तियार करने वाले हमेशा इस तलाश में रहते हैं कि कोई मौका मिले तो मुख़्लिस मोमिनों को मत्ऊन करें और उनके मुकाबले में अपने आपको ज्यादा दुरुस्त साबित कर सकें।

मदीने के मुनाफ़िक़ीन मुसलसल इस कोशिश में रहते थे। मसलन उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को शिकस्त हुई तो मदीना में बैठे रहने वाले मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ यह प्रोपेगंडा शुरू कर दिया कि इन्हें मामलाते जंग का तजर्बा नहीं है। इन्होंने जोश के तहत इक्दाम किया और हमारी कौम के जवानों को ग़लत मकाम पर ले जाकर ख़्वामख़्वाह कटवा दिया।

इंसानों में कम लोग ऐसे होते हैं जो मसाइल का गहरा तज्ज़िया (विश्लेषण) कर सकें और उस हकीकत को जानें कि किसी बात का कवाइदे ज़बान के एतबार से सही अल्फ़ाज में ढल जाना इसका काफी सुबूत नहीं है कि वह बात मअना के एतबार से भी सही होगी। बेशतर लोग सादा फ़िक्र के होते हैं और कोई बात ख़ूबसूरत अल्फ़ाज में कही जाए तो बहुत जल्द उससे मुतअस्सिर हो जाते हैं। इस बिना पर किसी मुस्लिम गिरोह में मुनाफ़िक किस्म के अफराद की मौजूदगी हमेशा उस गिरोह की कमजोरी का बाइस होती है। ये लोग अपने को दुरुस्त साबित करने की कोशिश में अक्सर ऐसा करते हैं कि बातों को ग़लत रुख़ देकर उन्हें अपने मुफ़ीदे मतलब रंग में बयान करते हैं। इससे सादा फ़िक्र (सोच) के लोग मुतअस्सिर हो जाते हैं और उनके अंदर ग़ैर जरूरी तौर पर शुबह और बेयकीनी की कैफ़ियत पैदा होने लगती है।

मुनाफ़िक़ीन की मुख़ालिफ़ाना कोशिशों के बावजूद जब बद्र की फत्ह हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों ने कहा : 'यह चीज तो अब चल निकली' इस्लाम का ग़लबा जाहिर होने के बाद उन्हें इस्लाम की सदाकत (सच्चाई) पर यकीन करना चाहिए था मगर उस वक्त भी उन्होंने उससे हसद की गिज़ा ली।

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ ائْذَن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٤٩﴾ إِن تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِن تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِن قَبْلُ وَيَتَوَلَّوا وَّهُمْ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾ قُل لَّن يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَن يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِندِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُم مُّتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

और उनमें वे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे रुख़सत दे दीजिए और मुझे फितने में न डालिए। सुन लो, वे तो फितने में पड़ चुके। और बेशक जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। अगर तुम्हें कोई अच्छाई पेश आती है तो उन्हें दुख होता है और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे ख़ुश होकर लौटते हैं। कहो, हमें सिर्फ वही चीज पहुंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है। वह हमारा कारसाज (कार्य साधक) है और अहले ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। कहो तुम हमारे लिए सिर्फ दो भलाइयों में से एक भलाई के मुंतजिर हो। मगर हम तुम्हारे हक में इसके मुंतजिर हैं कि अल्लाह तुम पर अजाब भेजे अपनी तरफ से या हमारे हाथों से। पस तुम इंतिजार करो हम भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हैं। (49-52)

मदीने में एक शख़्स जुद बिन कैस था। तबूक के ग़जवे में निकलने के लिए आम एलान हुआ तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर कहा कि मुझे इस ग़जवे से माफ रखिए। यह रूमी इलाका है। वहां रूमी औरतों को देखकर मैं फितने में पड़ जाऊंगा, मगर ऐसे मौकों पर उज़्र (विवशता) पेश करना बजाए ख़ुद फितने में पड़ना है। क्योंकि नाज़ुक मौकों पर आदमी के अंदर दीन के ख़ातिर फ़िदा हो जाने का जज्बा भड़कना चाहिए न कि उजरात (विवशताएं) तलाश करके पीछे रह जाने का। फिर ऐसे किसी उज़्र को दीनी और अख़्लाकी रंग देना और भी ज्यादा बुरा है। क्योंकि यह बेअमली पर फ़रेबकारी का इजाफ़ा है।

इस किस्म का मिजाज हकीकत में आदमी के अंदर इसलिए पैदा होता है कि वह अपनी दुनिया को आख़िरत के मुकाबले में अजीजतर रखता है। ख़तरात के मौके पर ऐसे लोग दीन की राह मे आगे बढ़ने से रुके रहते हैं। फिर जब सच्चे हकपरस्तों को उनकी ग़ैर मस्लेहत अंदेशाना (निस्वार्थ) दीनदारी की वजह से कभी कोई नुक्सान पहुंच जाता है तो ये लोग ख़ुश होते हैं कि बहुत अच्छा हुआ कि हमने अपने लिए हिफाजती पहलू इख़्तियार कर लिया था। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि सच्चे हकपरस्त ख़तरात का मुकाबला करें और उसमें उन्हें

कामयाबी हो तो इन लोगों के दिल तंग होते हैं। क्योंकि ऐसा कोई वाकया यह साबित करता है कि उन्होंने जो पॉलिसी इख़्तियार की वह दुरुस्त न थी।

सच्चे अहले ईमान के लिए इस दुनिया में नाकामी का सवाल नहीं। उनकी कामयाबी यह है कि ख़ुदा उनसे राजी हो और यह हर हाल में उन्हें हासिल होता है। मोमिन पर अगर कोई मुसीबत आती है तो वह उसके दिल की इनाबत (ख़ुदा की तरफ झुकाव) को बढ़ाती है। अगर उसे कोई सुख मिलता है तो उसके अंदर एहसानमंदी का जज्बा उभरता है और वह शुक्र करके ख़ुदा की मजीद इनायतों का मुस्तहिक बनता है।

'तुम इंतिजार करो हम भी इंतिजार कर रहे हैं' बजाहिर मोमिनीन का कलिमा है। मगर हकीकतन यह ख़ुदा की तरफ से है। ख़ुदा उन लोगों से तंबीही अंदाज में कह रहा है कि तुम लोग अहले हक की बर्बादी के मुंतज़िर हो, हालांकि ख़ुदा के तक्दीरी निजाम के मुताबिक उन्हें अबदी कामयाबी मिलने वाली है। और तुम्हारे साथ जो होना है वह यह कि तुम्हारे जुर्म को आख़िरी हद तक साबित करके तुम्हें दाइमी (स्थाई) तौर पर रुस्वाई और अजाब के हवाले कर दिया जाए।

قُلْ أَنفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾
وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ
وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٥٤﴾
فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٥٥﴾ وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ
لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً
أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾

कहो तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाखुशी से, तुमसे हरगिज न कुबूल किया जाएगा। बेशक तुम नाफ़रमान लोग हो। और वे अपने ख़र्च की कुबूलियत से सिर्फ इसलिए महरूम हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और ये लोग नमाज के लिए आते हैं तो गरानी (बेदिली) के साथ आते हैं और ख़र्च करते हैं तो नागवारी के साथ। तुम उनके माल और औलाद को कुछ वकअत (महत्व) न दो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उनके जरिए से उन्हें दुनिया की जिंदगी में अजाब दे और उनकी जानें इस हालत में निकलें कि वे मुंकिर हों। वे ख़ुदा की कसम खाकर कहते हैं कि वे तुम में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं। बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं। अगर वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई खोह या घुस बैठने की जगह तो वे भाग कर उसमें जा छुपें। (53-57)

मदीने में यह सूरत पेश आई कि उमूमी तौर पर लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया। उनमें अक्सरियत मुख़्लिस अहले ईमान की थी ताहम एक तादाद वह थी जिसने वक्त की फजा का साथ देते हुए अगरचे इस्लाम कुबूल कर लिया था लेकिन उसके अंदर वह सुपुर्दगी पैदा नहीं हुई थी जो हकीकी ईमान और अल्लाह से सच्चे तअल्लुक का तकाजा है। यही वे लोग हैं जिन्हें मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) कहा जाता है।

ये मुनाफ़िक़ीन ज्यादातर मदीने के मालदार लोग थे और यही मालदारी उनके निफ़ाक़ (पाखंड) का अस्ल सबब थी। जिसके पास खोने के लिए कुछ न हो वह ज्यादा आसानी के साथ उस इस्लाम को इख़्तियार करने के लिए तैयार हो जाता है जिसमें अपना सब कुछ खो देना पड़े। मगर जिन लोगों के पास खोने के लिए हो वे आम तौर पर मस्लेहतअंदेशी में मुब्तिला हो जाते हैं। इस्लाम के बेजरर (अहानिकारक) अहकाम की तामील तो वे किसी न किसी तरह कर लेते हैं। मगर इस्लाम के जिन तकाजों को इख़्तियार करने में जान व माल की महरूमी दिखाई दे रही हो, जिसमें कुर्बानी की सतह पर मोमिन बनने का सवाल हो उनकी तरफ बढ़ने के लिए वे अपने को आमादा नहीं कर पाते।

मगर कुर्बानी वाले इस्लाम से पीछे रहना उनके 'नमाज रोजा' को भी बेकीमत कर देता है। मस्जिद की इबादत का बहुत गहरा तअल्लुक मस्जिद के बाहर की इबादत से है। अगर मस्जिद से बाहर आदमी की जिंदगी हकीकी दीन से ख़ाली हो तो मस्जिद के अंदर भी उसकी जिंदगी हकीकी दीन से ख़ाली होगी और जाहिर है कि बेरूह अमल की ख़ुदा के नजदीक कोई कीमत नहीं। ख़ुदा सच्चे अमल को कुबूल करता है न कि झूठे अमल को।

किसी आदमी के पास दौलत की रौनकें हों और आदमियों का जत्था उसके गिर्द व पेश दिखाई देता हो तो आम लोग उसे रश्क (यश) की नजर से देखने लगते हैं। मगर हकीकत यह है कि ऐसे लोग सबसे ज्यादा बदकिस्मत लोग हैं। आम तौर पर उनका जो हाल होता है वह यह कि माल व जाह (सम्पन्नता) उनके लिए ऐसे बंधन बन जाते हैं कि वे ख़ुदा के दीन की तरफ भरपूर तौर पर न बढ़ सकें, वे ख़ुदा को भूल कर उनमें मशगूल रहें यहां तक कि मौत आ जाए और बेरहमी के साथ उन्हें उनके माल व जाह से जुदा कर दे।

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ
يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٥٩﴾
إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ
وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सदकात के बारे में ऐब लगाते हैं। अगर उसमें से उन्हें दे दिया जाए तो राजी रहते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज हो जाते हैं। क्या अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उस पर वे राजी रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफी है। अल्लाह अपने फज़्ल से हमें और भी देगा और उसका रसूल भी, हमें तो अल्लाह ही चाहिए। सदकात (जकात) तो दरअस्ल फकीरों और मिस्कीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदकात के काम पर मुकर्रर हैं। और उनके लिए जिनकी तालीफे कल्ब (दिल भराई) मत्लूब है। और गर्दनों के छुड़ाने में और जो तावान भरें और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफिर की इम्दाद में। यह एक फरीजा है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (58-60)

यहां जकात के मसारिफ (ख़र्च की मदें) बताए गए हैं। ये मसारिफ कुरआन की तसरीह के मुताबिक आठ हैं :

फुक़रा	:	जिनके पास कुछ न हो
मसाकीन	:	जिन्हें बक्द्र हाजत (जरूरत भर) मयस्सर न हो
आमिलीन	:	जो इस्लामी हुकूमत की तरफ से सदकात की वुसूली और उसके हिसाब किताब पर मामूर हों
तालीफ़े क़ल्ब	:	जिन्हें इस्लाम की तरफ राग़िब करना मक्सूद हो या जो इस्लाम में कमजोर हों
रिक़ाब	:	ग़ुलामों को आजादी दिलाने के लिए या कैदियों का फिदया देकर उन्हें रिहा करने के लिए
ग़ारिमीन	:	जो करजदार हो गए हों या जिनके ऊपर जमानत का भार हो
सबीलिल्लाह	:	दीन की दावत और अल्लाह की राह में जिहाद की मद में
मुसाफिर	:	मुसाफिर जो सफर की हालत में जरूरतमंद हो जाए चाहे अपने मकान पर ग़नी हो

इज्तिमाई नज़्म (सामूहिक) के तहत जब जकात व सदकात की तक्सीम की जाए तो हमेशा ऐसा होता है कि कुछ लोगों को हकतल्फी या ग़ैर मुंसिफाना तक्सीम की शिकायत हो जाती है। मगर ऐसी शिकायत अक्सर ख़ुद शिकायत करने वाले की कमजोरी को जाहिर करती है। तक्सीम का जिम्मेदार चाहे कितना ही पाकबाज हो, लोगों की हिर्स और उनका महदूद तर्जे फिक्र बहरहाल इस किस्म की शिकायतें निकाल लेगा।

मजीद यह कि इस किस्म की शिकायत सबसे ज्यादा आदमी के अपने ख़िलाफ पड़ती है, वह आदमी के फिक्री (वैचारिक) इम्कानात को बरूएकार लाने में रुकावट बन जाती है। आदमी अगर शिकायती मिजाज को छोड़कर ऐसा करे कि उसे जो कुछ मिला है उस पर वह राजी हो जाए और वह अपनी सोच का रुख़ अल्लाह की तरफ कर ले तो इसके बाद यह होगा कि उसके अंदर नई हिम्मत पैदा होगी। उसके अंदर छुपी हुई ईजाबी (सकारात्मक) सलाहियतें जाग उठेंगी। वह मिली हुई रकम को ज्यादा कारआमद मसरफ में लगाएगा। अतियात पर इंहिसार

करने के बजाए उसके अंदर अपने आप पर एतमाद करने का जेहन उभरेगा। वह ख़ुदा के भरोसा पर नए इक्तेसादी (आर्थिक) मौकों की तलाश करने लगेगा। दूसरों से बेजारी के बजाए दूसरों को साथी बनाकर काम करने का जज्बा उसके अंदर पैदा होगा, वग़ैरह।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَ يَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾

और उनमें वे लोग भी हैं जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स तो कान है। कहो कि वह तुम्हारी भलाई के लिए कान है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले ईमान पर एतमाद करता है और वह रहमत है उनके लिए जो तुम में अहले ईमान हैं। और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सजा है। वे तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाते हैं ताकि तुम्हें राजी करें। हालांकि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा हकदार हैं कि वे उसे राजी करें अगर वे मोमिन हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत (विरोध) करे उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह बहुत बड़ी रुस्वाई है। (61-63)

मदीना के मुनाफिक़ीन अपनी निजी मज्लिसों में इस्लामी शख़्सियतों का मजाक उड़ाते। मगर जब वे मुसलमानों के सामने आते तो कसम खाकर यकीन दिलाते कि वे इस्लाम के वफादार हैं। इसकी वजह यह थी कि मुसलमान मदीना में ताकतवर थे। वे मुनाफिक़ीन को नुक्सान पहुंचाने की हैसियत में थे। इसलिए मुनाफिक़ीन मुसलमानों से डरते थे।

इससे मुनाफिक़ (पाखंडी) के किरदार का अस्ल पहलू सामने आता है। मुनाफिक़ की दीनदारी इंसान के डर से होती है न कि ख़ुदा के डर से। वह ऐसे मौकों पर अख़्लाक व इंसाफ वाला बन जाता है जहां इंसान का दबाव हो या अवाम की तरफ से अंदेशा लाहिक हो। मगर जहां इस किस्म का ख़तरा न हो और सिर्फ ख़ुदा का डर ही वह चीज हो जो आदमी की जबान को बंद करे और उसके हाथ पांव को रोके तो वहां वह बिल्कुल दूसरा इंसान होता है। अब वह एक ऐसा शख़्स होता है जिसे न बाअख़्लाक बनने से कोई दिलचस्पी हो और न इंसाफ का रवैया इख़्तियार करने की कोई जरूरत।

जो लोग मस्लेहतों में गिरफ्तार होते हैं और इस बिना पर तहफ़्फ़ुजात (संरक्षणों) से ऊपर उठकर ख़ुदा के दीन का साथ नहीं दे पाते वे आम तौर पर समाज के साहिबे हैसियत लोग

होते हैं। अपनी हैसियत को बाकी रखने के लिए वे उन लोगों की तस्वीर बिगाड़ने की कोशिश करते हैं जो सच्चे इस्लाम को लेकर उठे हैं। वे उनके ख़िलाफ झूठे प्रोपेगंडे की मुहिम चलाते हैं। उन्हें तरह-तरह से बदनाम करने की तदबीरें करते हैं। उनकी बातों में बेबुनियाद किस्म के एतराजात निकालते हैं।

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह बेहद संगीन बात है। यह अहले ईमान की मुख़ालिफत (विरोध) नहीं बल्कि ख़ुद ख़ुदा की मुख़ालिफत है। यह ख़ुदा का हरीफ बनकर खड़ा होना है। ऐसे लोग अगर अपनी मासूमियत साबित करने के बजाए अपनी ग़लती का इकरार करते और कम से कम दिल से इस्लाम के दाजियों के ख़ैरख़्वाह होते तो शायद वे माफी के काबिल ठहरते। मगर जिद और मुख़ालिफत का तरीका इख़्तियार करके उन्होंने अपने को ख़ुदा के दुश्मनों की फेहरिस्त में शामिल कर लिया। अब रुस्वाई और अजाब के सिवा उनका कोई ठिकाना नहीं।

अल्लाह का डर आदमी के दिल को नर्म कर देता है। वह लोगों की बेबुनियाद बातों को भी ख़ामोशी के साथ सुन लेता है, यहां तक कि नादान लोग कहने लगें कि ये तो सादालोह हैं, बातों की गहराइयों को समझते ही नहीं।

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ
قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ
اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾
لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ
نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾

मुनाफिक़ीन (पाखंडी) डरते हैं कि कहीं मुसलमानों पर ऐसी सूरह नाजिल न हो जाए जो उन्हें उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे। कहो कि तुम मजाक उड़ा लो, अल्लाह यकीनन उसे जाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो। और अगर तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो हंसी और दिल्लगी कर रहे थे। कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हंसी दिल्लगी कर रहे थे। बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है। अगर हम तुम में से एक गिरोह को माफ कर दें तो दूसरे गिरोह को तो जरूर सजा देंगे क्योंकि वे मुजरिम हैं। (64-66)

तबूक की लड़ाई के मौके पर मदीने में यह फजा थी कि जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ निकले वे अरबाबे अजीमत (पराक्रमी) शुमार हो रहे थे और जो लोग अपने घरों में बैठ रहे थे वे मुनाफिक और पस्तहिम्मत समझे जाते थे। बैठे रहने वाले मुनाफिक़ीन ने रसूल और असहाबे रसूल के अमल को कमतर जाहिर करने के लिए उनका मजाक उड़ाना शुरू किया। किसी ने कहा : ये कुरआन पढ़ने वाले हमें तो इसके सिवा कुछ

और नजर नहीं आते कि वे हम में सबसे ज्यादा भूखे हैं, हम में सबसे ज्यादा झूठे हैं और हम में सबसे ज्यादा बुजदिल हैं। किसी ने कहा : क्या तुम समझते हो कि रूमियों से लड़ना भी वैसा ही है जैसा अरबों का आपस में लड़ना। ख़ुदा की कसम कल ये सब लोग रस्सियों में बंधे हुए नजर आएंगे। किसी ने कहा : ये साहब समझते हैं कि वे रूम के महल और उनके किले फतह करने जा रहे हैं, इनकी हालत पर अफसोस है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ तो आपने उन लोगों को बुला कर पूछा। वे कहने लगे : हम तो सिर्फ हंसी खेल की बातें कर रहे थे। इसके जवाब में अल्लाह तआला ने फरमाया : क्या अल्लाह और उसके अहकाम और उसके रसूल के मामले में तुम हंसी खेल कर रहे थे।

अल्लाह और रसूल की बात हमेशा किसी आदमी की जबान से बुलन्द होती है। यह आदमी अगर देखने वालों की नजर में बजाहिर मामूली हो तो वे उसका मज़ाक उड़ाने लगते हैं। मगर यह मज़ाक उड़ाना उस आदमी का नहीं है ख़ुद ख़ुदा का है। जो लोग ऐसा करें वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि वे ख़ुदा के दीन के बारे में संजीदा नहीं हैं। ऐसे लोग ख़ुदा की नजर में सख़्त मुजरिम हैं, उनकी झूठी तावीलें उनकी हकीकत को छुपाने में कभी कामयाब नहीं हो सकतीं।

निफाक और इरतिदाद दोनों एक ही हकीकत की दो सूरतें हैं। आदमी अगर इस्लाम इख़्तियार करने के बाद खुल्लम खुल्ला मुंकिर हो जाए तो यह इरतिदाद है। और अगर ऐसा हो कि जेहन और कल्ब (दिल) के एतबार से वह इस्लाम से दूर हो मगर लोगों के सामने वह अपने को मुसलमान जाहिर करे तो यह निफाक (पाखंड) है, ऐसे मुनाफिक़ीन का अंजाम ख़ुदा के यहां वही है जो मुरतदीन (इस्लाम त्यागने वालों) का है, इल्ला यह कि वे मरने से पहले अपनी गलतियों का इकरार करके अपनी इस्लाह कर लें।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ

قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُودَ ۙ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾

मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक ही तरह के हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं। और अपने हाथों को बंद रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। बेशक मुनाफ़िक़ीन बहुत नाफ़रमान हैं। मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुंकिरों से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही उनके लिए बस है। उन पर अल्लाह की लानत है और उनके लिए क़ायम रहने वाला अजाब है। जिस तरह तुमसे अगले लोग, वे तुमसे जोर में ज्यादा थे और माल व औलाद की कसरत में तुमसे बढ़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया, जैसा कि तुम्हारे अगलों ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया था। और तुमने भी वही बहसें कीं जैसी बहसें उन्होंने की थीं। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आख़िरत में जाया हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो इनसे पहले गुजरे। क़ौमे नूह और आद और समूद और क़ौमे इब्राहीम और असहाबे मदयन और उल्टी हुई बस्तियों की। उनके पास उनके रसूल दलीलों के साथ आए। तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर जुल्म करता मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे। (67-70)

पहले लोगों को ख़ुदा ने जाह व माल दिया तो उन्होंने उससे फ़ख्र और घमंड और बेहिसी की ग़िज़ा ली। ताहम बाद वालों ने उनके अंजाम से कोई सबक़ नहीं सीखा। उन्होंने भी दुनिया के साजोसामान से अपने लिए वही हिस्सा पसंद किया जिसे उनके पिछलों ने पसंद किया था। यही हर दौर में आम आदमियों का हाल रहा है। वे हक़ के तक़ाजों को कोई अहमियत नहीं देता। माल व औलाद के तक़ाजे ही उसके नजदीक सबसे बड़ी चीज होते हैं।

मुनाफ़िक़ का हाल भी बऐतबार हक़ीक़त यही होता है। वह जाहिरी तौर पर तो मुसलमानों जैसा नजर आता है। मगर उसके जीने की सतह वही होती है जो आम दुनियादारों की सतह होती है। इसका नतीजा यह होता है कि कुछ नुमाइशी आमाल को छोड़कर हक़ीक़ी जिंदगी में वह वैसा ही होता है जैसे आम दुनियादार होते हैं। मुनाफ़िक़ की क़ल्बी दिलचस्पियां दीनदार के मुक़ाबले में दुनियादारों से ज्यादा वाबस्ता होती हैं। आख़िरत की मद में ख़र्च करने से उसका दिल तंग होता है मगर बेफ़ायदा दुनियावी मशग़लों में ख़र्च करना हो तो वह बढ़ चढ़कर उसमें हिस्सा लेता है। हक़ का फ़रोग़ उसे पसंद नहीं आता अलबत्ता नाहक़ का फ़रोग़ हो तो उसे वह शौक़ से गवारा करता है। जाहिरी दीनदारी के बावजूद वह ख़ुदा और आख़िरत को इस तरह भूला रहता है जैसे उसके नजदीक ख़ुदा और आख़िरत की कोई हक़ीक़त नहीं।

ऐसे लोग अपने जाहिरी इस्लाम की बिना पर ख़ुदा की पकड़ से बच नहीं सकते। दुनिया में उनके लिए लानत है और आख़िरत में उनके लिए अजाब। दुनिया में भी वे ख़ुदा की रहमतों से महरूम रहेंगे और आख़िरत में भी।

ख़ुदा के साथ कामिल वाबस्तगी ही वह चीज है जो आदमी के अमल में क़ीमत पैदा करती है। कामिल वाबस्तगी के बग़ैर जो अमल किया जाए, चाहे वह बजाहिर दीनी अमल क्यों न हो, वह आख़िरत में उसी तरह बेक़ीमत क़रार पाएगा जैसे रूह के बग़ैर कोई जिस्म, जो जिस्म से जाहिरी मुशाबिहत के बावजूद अमलन बेक़ीमत होता है।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के मददगार हैं। वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज क़ायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है बाग़ों का कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। और वादा है, सुथरे मकानों का हमेशगी के बाग़ों में, और अल्लाह की रिजामंदी जो सबसे बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है। (71-72)

मुनाफ़िक़ाना तौर पर इस्लाम से वाबस्ता रहने वाले लोगों में जो ख़ुसूसियात होती हैं वे हैं आख़िरत से ग़फ़लत, दुनियावी जरूरतों से दिलचस्पी, भलाई के साथ तआवुन से दूरी और नुमाइशी कामों की तरफ़ रग़बत। इन मुश्तरक (साझी) ख़ुसूसियात की वजह से वे एक दूसरे से ख़ूब मिले जुले रहते हैं। ये चीजें उन्हें मुश्तरक (साझी) दिलचस्पी की बातचीत का विषय देती हैं। इससे उन्हें एक दूसरे की मदद करने का मैदान हासिल होता है। यह उनके लिए बाहमी तअल्लुक़ात का जरिया बनता है।

यही मामला एक और शक्ल में सच्चे अहले ईमान का होता है, उनके दिल में ख़ुदा की लगन लगी हुई होती है। उन्हें सबसे ज्यादा आख़िरत की फ़िक्र होती है। वे दुनिया की चीजों से बतौर जरूरत तअल्लुक़ रखते हैं न कि बतौर मक़सद। ख़ुदा की पसंद का काम हो रहा हो तो उनका दिल फ़ौरन उसकी तरफ़ खिंच उठता है। बुराई का काम हो तो इससे उनकी तबीअत इबा (इंकार) जाती है। उनकी जिंदगी और उनका असासा सबसे ज्यादा ख़ुदा के लिए होता है न कि

अपने लिए। वे ख़ुदा की याद करने वाले और ख़ुदा की राह में ख़र्च करने वाले होते हैं।

अहले ईमान के ये मुशतरक (साझे) औसाफ उन्हें एक दूसरे से करीब कर देते हैं। सबकी दौड़ ख़ुदा की तरफ होती है। सबकी इताअत का मर्कज ख़ुदा का रसूल होता है। जब वे मिलते हैं तो यही वह बाहमी दिलचस्पी की चीजें होती हैं जिन पर वे बात करें। इन्हीं औसाफ के जरिए वे एक दूसरे को पहचानते हैं। इसी की बुनियाद पर उनके आपस के तअल्लुकात कायम होते हैं। इसी से उन्हें वह मक्सद हाथ आता है जिसके लिए वे मुत्तहिदा कोशिश करें। इसी से उन्हें वह निशाना मिलता है जिसकी तरफ सब मिलकर आगे बढ़ें।

दुनिया में अहले ईमान की जिंदगी उनकी आख़िरत की जिंदगी की तमसील है। दुनिया में अहले ईमान इस तरह जीते हैं जैसे एक बाग़ में बहुत से शादाब दरख़्त खड़े हों, हर एक दूसरे के हुस्न में इजाफ़ा कर रहा हो। उन दरख़्तों को फैजाने ख़ुदावंदी से निकलने वाले आंसू सैराब कर रहे हों। हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का इस तरह ख़ैरख़्वाह और साथी हो कि पूरा माहौल अम्न व सुकून का गहवारा बन जाए। यही रब्बानी जिंदगी आख़िरत में जन्नती जिंदगी में तब्दील हो जाएगी। वहां आदमी न सिर्फ अपनी बोई हुई फ़स्ल काटेगा बल्कि ख़ुदा की ख़ुसूसी रहमत से ऐसे इनामात पाएगा जिनका इससे पहले उसने तसव्वुर भी नहीं किया था।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ
جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ مَا قَالُوا۟ وَلَقَدْ قَالُوا۟ كَلِمَةَ
ٱلْكُفْرِ وَكَفَرُوا۟ بَعْدَ إِسْلَٰمِهِمْ وَهَمُّوا۟ بِمَا لَمْ يَنَالُوا۟ ۚ وَمَا نَقَمُوٓا۟ إِلَّآ
أَنْ أَغْنَىٰهُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ مِن فَضْلِهِۦ ۚ فَإِن يَتُوبُوا۟ يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۖ
وَإِن يَتَوَلَّوْا۟ يُعَذِّبْهُمُ ٱللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
فِى ٱلْأَرْضِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

ऐ नबी मुंकिरों (सत्य का इंकार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर कड़े बन जाओ। और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। वे ख़ुदा की कसम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। हालांकि उन्होंने कुफ़्र की बात कही और वे इस्लाम के बाद मुंकिर हो गए और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें हासिल न हो सकी। और यह सिर्फ इसका बदला था कि उन्हें अल्लाह और रसूल ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। अगर वे तौबह करें तो उनके हक में बेहतर है और अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो ख़ुदा उन्हें दर्दनाक अजाब देगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी। और जमीन में उनका न कोई हिमायती होगा और न मददगार। (73-74)

एक रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में तकरीबन

80 मुनाफ़िक़ीन मदीने में मौजूद थे। इससे मालूम हुआ कि मुनाफ़िक़ीन से जिस जिहाद का हुक्म दिया गया है वह जंग के मअना में नहीं है। अगर ऐसा होता तो आप इन मुनाफ़िक़ों का ख़ात्मा कर देते। इससे मुराद दरअस्ल वह जिहाद है जो जबान और बर्ताव और शिद्दते एहतिसाब के जरिए किया जाता है। (क़ुर्तुबी) चुनांचे जमहूर उम्मत (विद्वानों के मतैक्य) के नजदीक मुनाफ़िक़ीन के मुक़ाबले में सशस्त्र जिहाद वैध नहीं है।

मुनाफ़िक़त (पाखंड) यह है कि आदमी इस्लाम को इस तरह इख़्तियार करे कि वह उसे मफादात और मस्लेहतों (हितों, स्वार्थों) के ताबेअ किए हुए हो। इस किस्म के लोग जब देखते हैं कि कुछ ख़ुदा के बंदे गैर मस्लेहतपरस्ताना अंदाज में इस्लाम को इख़्तियार किए हुए हैं और उसकी तरफ लोगों को दावत देते हैं तो ऐसा इस्लाम उन्हें अपने इस्लाम को बेवकअत साबित करता हुआ नजर आता है। ऐसे दाजियों (आह्वानकर्ताओं) से उन्हें सख़्त नफरत हो जाती है। वे उन्हें उखाड़ने के दरपे हो जाते हैं। जिस इस्लाम के नाम पर वे अपनी तिजारतें कायम करते हैं उसी इस्लाम के दाजियों के वे दुश्मन बन जाते हैं।

मुनाफ़िक़ीन की यह दुश्मनी साज़िश और इस्तहज (मजाक उड़ाने) के अंदाज में जाहिर होती है। अगर वे किसी को देखते हैं कि उसके अंदर किसी वजह से सच्चे इस्लाम के दाजियों के बारे में मुख़ालिफ़ाना जज्बात हैं तो वे उसे उभारते हैं ताकि वह उनसे लड़ जाए। वे मुख़्लिस (निष्ठावान) अहले ईमान का मजाक उड़ाते हैं। वे ऐसी बातें कहते हैं जिससे उनकी क़ुर्बानियां बेहकीकत मालूम होने लगें। वे उनकी मामूली बातों को इस तरह बिगाड़ कर पेश करते हैं कि अवाम में उनकी तस्वीर ख़राब हो जाए। तबूक के सफर में एक बार ऐसा हुआ कि एक पड़ाव के मकाम पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी गुम हो गई। कुछ मुसलमान उसे तलाश करने के लिए निकले। यह बात मुनाफ़िक़ों को मालूम हुई तो उन्होंने मजाक उड़ाते हुए कहा : यह साहब हमें आसमान की ख़बरें बताते हैं। मगर उन्हें अपनी ऊंटनी की ख़बर नहीं कि वह इस वक्त कहां है।

मुनाफ़िक़ मुसलमान सच्चे इस्लाम के दाजियों को नाकाम करने के लिए शैतान के आलाकार बनते हैं। मगर सच्चे इस्लाम के दाजियों का मददगार हमेशा ख़ुदा होता है। वह मुनाफ़िक़ों की तमाम साज़िशों के बावजूद उन्हें बचा लेता है। और मुनाफ़िक़ीन का अंजाम यह होता है कि वे अपना जुर्म साबित करके इसके मुस्तहिक बनते हैं कि उन्हें दुनिया में भी अजाब दिया जाए और आख़िरत में भी।

وَمِنْهُم مَّنْ عَٰهَدَ ٱللَّهَ لَئِنْ ءَاتَىٰنَا مِن فَضْلِهِۦ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ
مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُم مِّن فَضْلِهِۦ بَخِلُوا۟ بِهِۦ وَتَوَلَّوا۟ وَّهُم
مُّعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾ فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِى قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُۥ بِمَآ أَخْلَفُوا۟ ٱللَّهَ
مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا۟ يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾ ٱلَّذِينَ يَلْمِزُونَ ٱلْمُطَّوِّعِينَ مِنَ

الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾

और उनमें वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो हम जरूर सदका करेंगे और हम सालेह (नेक) बनकर रहेंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो वे बुख़्ल करने लगे और बेपरवाह होकर मुंह फेर लिया। पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक (पाखंड) बिठा दिया उस दिन तक के लिए जबकि वे उससे मिलेंगे इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह के किए हुए वादे की ख़िलाफ़वर्जी की और इस सबब से कि वे झूठ बोलते रहे। क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके राज और उनकी सरगोशी (गुप्त वार्ता) को जानता है और अल्लाह तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है। वे लोग जो तअन (कटाक्ष) करते हैं उन मुसलमानों पर जो दिल खोल कर सदकात देते हैं और जो सिर्फ अपनी मेहनत मजदूरी में से देते हैं उनका मजाक उड़ाते हैं। अल्लाह इन मजाक उड़ाने वालों का मजाक उड़ाता है और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। तुम उनके लिए माफी की दरख़्वास्त करो या न करो, अगर तुम सत्तर मर्तबा उन्हें माफ करने की दरख़्वास्त करोगे तो अल्लाह उन्हें माफ करने वाला नहीं। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और रसूल का इंकार किया और अल्लाह नाफरमानों को राह नहीं दिखाता। (75-80)

सालबा बिन हातिब अंसारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मेरे लिए दुआ कीजिए कि ख़ुदा मुझे माल दे दे। आप ने फरमाया : थोड़े माल पर शुक्रगुजार होना इससे बेहतर है कि तुम्हें ज्यादा माल मिले और तुम शुक्र अदा न कर सको। मगर सालबा ने बार-बार दरख़्वास्त की चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई कि ख़ुदाया सालबा को माल दे दे। इसके बाद सालबा ने बकरी पाली। उसकी नस्ल इतनी बढ़ी कि मदीने की जमीन उनकी बकरियों के लिए तंग हो गई। सालबा ने मदीने के बाहर एक वादी में रहना शुरू किया। अब सालबा के इस्लाम में कमजोरी आना शुरू हो गई। पहले उनकी जमाअत की नमाज छूटी। फिर जुमा छूट गया। यहां तक कि यह नौबत आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आमिल सालबा के पास जकात लेने के लिए गया तो सालबा ने जकात नहीं दी और कहा कि जकात तो जिज्या (सुरक्षा-प्रभार) की बहिन मालूम होती है।

वह शख़्स ख़ुदा की नजर में मुनाफ़िक है जिसका हाल यह हो कि वह माल के लिए ख़ुदा से दुआएं करे और जब ख़ुदा उसे माल वाला बना दे तो वह अपने माल में ख़ुदा का हक निकालना भूल जाए। आदमी के पास माल नहीं होता तो वह माल वालों को बुरा कहता है कि

ये लोग माल को ग़लत कामों में बर्बाद करते हैं। अगर ख़ुदा मुझे माल दे तो मैं उसे ख़ैर के कामों में ख़र्च करूं। मगर जब उसके पास माल आता है तो उसकी नफ्सियात बदल जाती है। वह भूल जाता है कि पहले उसने क्या कहा था और किन जज्बात का इज्हार किया था। अब वह माल को अपनी मेहनत और लियाकत (योग्यता) का नतीजा समझ कर तंहा उसका मालिक बन जाता है। ख़ुदा का हक अदा करना उसे याद नहीं रहता।

इस किस्म के लोग अपनी कमजोरियों को छुपाने के लिए मजीद सरकशी यह करते हैं कि वे उन लोगों का मजाक उड़ाते हैं जो ख़ुदा की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं। किसी ने ज्यादा दिया तो उसे रियाकार कह कर गिराते हैं। और किसी ने अपनी हैसियत की बिना पर कम दिया तो कहते हैं कि ख़ुदा को इस आदमी के सदके की क्या जरूरत थी। जो लोग इतना ज्यादा अपने आप में गुम हों उन्हें अपने आप से बाहर की आलातर हकीकतें कभी दिखाई नहीं देतीं।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓي اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰي قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर बहुत ख़ुश हुए और उन्हें गिरां (भारी) गुजरा कि वे अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें। और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। कह दो कि दोजख़ की आग इससे ज्यादा गर्म है, काश उन्हें समझ होती। पस वे हंसें कम और रोएं ज्यादा, इसके बदले में जो वे करते थे। पस अगर अल्लाह तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ वापस लाए और वे तुमसे जिहाद के लिए निकलने की इजाजत मांगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था पस पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। और उनमें से जो कोई मर जाए उस पर तुम कभी नमाज न पढ़ो और न उसकी क़ब्र पर खड़े हो। बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफरमान थे। (81-84)

ग़जवए तबूक सख़्त गर्मी के मौसम में हुआ। मदीना से चल कर शाम की सरहद तक तीन सौ मील जाना था। मुनाफ़िक़ मुसलमानों ने कहा कि ऐसी तेज गर्मी में इतना लम्बा सफ़र न करो। यह कहते हुए वे भूल गए कि ख़ुदा की पुकार सुनने के बाद किसी ख़तरे की बिना पर न निकलना अपने आपको शदीदतर ख़तरे में मुब्तिला करना है। यह ऐसा ही है जैसे धूप से भाग कर आग के शोलों की पनाह ली जाए।

जो लोग ख़ुदा के मुक़ाबले में अपने को और अपने माल को ज्यादा महबूब रखते हैं वे जब अपनी ख़ूबसूरत तदबीरों से उसमें कामयाब हो जाते हैं कि वे मुसलमान भी बने रहें और इसी के साथ उनकी जिंदगी और उनके माल को कोई ख़तरा लाहिक न हो तो वे बहुत ख़ुश होते हैं। वे अपने को अक्लमंद समझते हैं और उन लोगों को बेवक़ूफ़ कहते हैं जिन्होंने ख़ुदा की रिजा के ख़ातिर अपने को हल्कान (कष्टमय) कर रखा हो।

मगर यह सरासर नादानी है। यह ऐसा हंसना है जिसका अंजाम रोने पर ख़त्म होने वाला है। क्योंकि मौत के बाद आने वाली दुनिया में इस किस्म की 'होशियारी' सबसे बड़ी नादानी साबित होगी। उस वक्त आदमी अफ़सोस करेगा कि वह जन्नत का तलबगार था मगर उसने अपने असासे की वही चीज उसके लिए न दी जो दरअस्ल जन्नत की वाहिद कीमत थी।

इस किस्म के मुनाफ़िक़ हमेशा वे लोग होते हैं जो अपनी तहफ़्फ़ुजाती (संरक्षण) पॉलिसी की वजह से अपने गिर्द माल व जाह (सम्पन्नता) के असबाब जमा कर लेते हैं इस बिना पर आम मुसलमान उनसे मरऊब हो जाते हैं। उनकी शानदार जिंदगियां और उनकी ख़ूबसूरत बातें लोगों की नजर में उन्हें अजीम बना देती हैं। यह किसी इस्लामी मआशरे के लिए एक सख़्त इम्तेहान होता है। क्योंकि एक हक़ीक़ी इस्लामी मआशरे (समाज) में ऐसे लोगों को नजरअंदाज किया जाना चाहिए, न यह कि उन्हें इज्जत का मक़ाम दिया जाने लगे।

जिन लोगों के बारे में पूरी तरह मालूम हो जाए कि वे बजाहिर मुसलमान बने हुए हैं मगर हक़ीक़तन वे अपने मफ़ादात और अपनी दुनियावी मस्लेहतों के वफ़ादार हैं उन्हें हक़ीक़ी इस्लामी मआशरा (समाज) कभी इज्जत के मक़ाम पर बिठाने के लिए राजी नहीं हो सकता। ऐसे लोगों का अंजाम यह है कि वे इस्लामी तकरीबात (समारोहों) में सिर्फ़ पीछे की सफ़ों मे जगह पाएं। मुसलमानों के इज्तिमाई मामलात में उनका कोई दख़ल न हो। दीनी मनासिब (पदों) के लिए वे नाअहल क़रार पाएं। जिस मआशरे में ऐसे लोगों को इज्जत का मक़ाम मिला हुआ हो वह कभी ख़ुदा का पसंदीदा मआशरा नहीं हो सकता।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾ وَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ
وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ
مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٨٦﴾ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾ لَٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ

وَأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें ताज्जुब में न डालें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इनके जरिए से उन्हें दुनिया में अजाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे मुंकिर हों। और जब कोई सूरह उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो उनके मकदूर वाले (सामर्थ्यवान) तुमसे रुख़्सत मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम यहां ठहरने वालों के साथ रह जाएं। उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं। और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई पस वे कुछ नहीं समझते। लेकिन रसूल और जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियां और वही फलाह (कल्याण) पाने वाले हैं। उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (85-89)

मुनाफ़िक़ अपने दुनियापरस्ताना तरीक़ों की वजह से अपने आस पास दुनिया का साजोसामान जमा कर लेता है। उसके साथ मददगारों की भीड़ दिखाई देती है। ये चीजें सतही किस्म के लोगों के लिए मरऊबकुन बन जाती हैं। लेकिन गहरी नजर से देखने वालों के लिए उसकी जाहिरी चमक दमक क़ाबिले रश्क नहीं बल्कि क़ाबिले इबरत है। क्योंकि ये चीजें जिन लोगों के पास जमा हों वे उनके लिए ख़ुदा की तरफ़ बढ़ने में रुकावट बन जाती हैं। ख़ुदा का महबूब बंदा वह है जो किसी तहफ़्फ़ुज और किसी मस्लेहत के बग़ैर ख़ुदा की तरफ़ बढ़े। मगर जो लोग दुनिया की रौनक़ों में घिरे हों वे इनसे ऊपर नहीं उठ पाते। जब भी वे ख़ुदा की तरफ़ बढ़ना चाहते हैं उन्हें ऐसा नजर आता है कि वे अपना सब कुछ खो देंगे। वे इस क़ुर्बानी की हिम्मत नहीं कर पाते, इसलिए वे ख़ुदा के वफ़ादार भी नहीं होते। उनकी दुनियावी तरक्कियां उन्हें इस बर्बादी की क़ीमत पर मिलती है कि आख़िरत में वे बिल्कुल महरूम होकर हाजिर हों।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जब ख़ुदा का दीन कहता है कि अपनी अना (अहंकार) को दफ़न करके ख़ुदा को पकड़ो तो वे अपनी बढ़ी हुई अना को दफ़न नहीं कर पाते। जब ख़ुदा का दीन उनसे शोहरत और मकबूलियत से ख़ाली रास्तों पर चलने के लिए कहता है तो वे अपनी शोहरत व मक़बूलियत को संभालने की फ़िक्र में पीछे रह जाते हैं। जब ख़ुदा के दीन की जद्दोजहद जिंदगी और माल की क़ुर्बानी मांगती है तो उन्हें अपनी जिंदगी और माल इतने क़ीमती नजर आते हैं कि वे उसे ग़ैर दुनियावी मक्सद के लिए क़ुर्बान न कर सकें।

यह कैफ़ियत बढ़ते-बढ़ते यहां तक पहुंच जाती है कि उनके दिल की हस्सासियत (संवेदनशीलता) ख़त्म हो जाती है। वे बेहिसी का शिकार होकर उस तड़प को खो देते हैं जो आदमी को ख़ुदा की तरफ़ खींचे और ग़ैर ख़ुदा पर राजी न होने दे।

इसके बरअक्स जो सच्चे अहले ईमान हैं वे सबसे बड़ा मक़ाम ख़ुदा को दिए होते हैं इसलिए दूसरी हर चीज उन्हें ख़ुदा के मुक़ाबले में हेच नजर आती है। वे हर कुर्बानी देकर ख़ुदा की तरफ बढ़ने के लिए तैयार रहते हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए ख़ुदा की रहमतें व नेमतें हैं। उनके और ख़ुदा की अबदी जन्नत के दर्मियान मौत के सिवा कोई चीज हायल नहीं।

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

देहाती अरबों में से भी बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाजत मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वह बैठा रहे। उनमें से जिन्होंने इंकार किया उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ेगा। कोई गुनाह कमजोरों पर नहीं है और न बीमारों पर और न उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ैरख़्वाही करें। नेककारों पर कोई इल्जाम नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और न उन लोगों पर कोई इल्जाम है कि जब तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो। तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज नहीं कि तुम्हें उस पर सवार कर दूं तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे ख़र्च करें। इल्जाम तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे इजाजत मांगते हैं हालांकि वे मालदार हैं। वे इस पर राजी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी, पस वे नहीं जानते। (90-93)

दीन की दावत की जद्‌दोजहद जब लोगों से उनकी जिंदगी और उनके माल का तकाजा कर रही हो उस वक्त साहिबे इस्तेताअत (क्षमतावान) होने के बावजूद उज्ज़ करके बैठे रहना बदतरीन जुर्म है। यह दीनी पुकार के मामले में बेहिसी का सुबूत है। एक मुसलमान के लिए इस किस्म का रवैया ख़ुदा व रसूल से ग़द्‌दारी करने के हममअना है। ऐसे लोग ख़ुदा की रहमतों में कोई हिस्सा पाने के हकदार नहीं हैं। उनके पास जो कुछ था उसे जब उन्होंने ख़ुदा के लिए पेश नहीं किया तो ख़ुदा के पास जो कुछ है वह किस लिए उन्हें दे देगा। कीमत अदा किए बग़ैर कोई चीज किसी को नहीं मिल सकती।

ताहम माजूरीन के लिए ख़ुदा के यहां माफ़ी है। जो शख़्स बीमार हो, जिसके पास ख़र्च करने के लिए कुछ न हो, जो असबाबे सफर न रखता हो, ऐसे लोगों से ख़ुदा दरगुजर फरमाएगा। यही नहीं बल्कि यह भी मुमकिन है कि कुछ न करने के बावजूद सब कुछ उनके ख़ाने में लिख दिया जाए जैसा कि हदीस में आया है कि ग़जवए तबूक से वापस होते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों से फरमाया : मदीने में कुछ ऐसे लोग हैं कि तुम कोई रास्ता नहीं चले और तुमने कोई वादी तै नहीं की मगर वे बराबर तुम्हारे साथ रहे।

ये ख़ुशकिस्मत लोग कौन हैं जो न करने के बावजूद करने का इनाम पाते हैं। ये वे लोग हैं जो माजूर (अक्षम) होने के साथ तीन बातों का सुबूत दें। नुस्ह, यानी अमली शिरकत न करते हुए भी कल्बी (दिली) शिरकत। एहसान, यानी शरीक न होने के बावजूद कम से कम जबान से उनके बस में जो कुछ है उसे पूरी तरह करते रहना। हुज़्न, यानी अपनी कोताही पर इतना शदीद रंज जो आंसुओं की सूरत में बह पड़े।

कोई आदमी जब अपनी अमली जिंदगी में एक चीज को ग़ैर अहम दर्जे में रखे और बार-बार ऐसा करता रहे तो इसके बाद ऐसा होता है कि उस चीज की अहमियत का एहसास उसके दिल से निकल जाता है। उस चीज के तकाजे उसके सामने आते हैं मगर दिल के अंदर उसके बारे में तड़प न होने की वजह से वह उसकी तरफ बढ़ नहीं पाता। यह वही चीज है जिसे बेहिसी कहा जाता है और इसी को कुरआन में दिलों पर मुहर करने से ताबीर किया गया है।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ؗ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

तुम जब उनकी तरफ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र (विवशताएं) पेश करेंगे। कह दो कि बहाने न बनाओ। हम हरगिज तुम्हारी बात न मानेंगे। बेशक अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं। अब अल्लाह और रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे। फिर तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुजर करो। पस तुम उनसे दरगुजर करो बेशक वे नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है बदले में उसके जो वे करते रहे। वे तुम्हारे सामने कसमें खाएंगे कि तुम उनसे राजी हो जाओ। अगर तुम उनसे राजी भी हो जाओ तो अल्लाह नाफ़रमान लोगों से राजी होने वाला नहीं। (94-96)

'तुम्हारे हालात हमें अल्लाह ने बता दिए हैं' का जुमला जाहिर कर रहा है कि यहां जिन मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है इससे मुराद ज़मान-ए-नुज़ूले क़ुरआन के मुनाफ़िक़ीन हैं। क्योंकि बराहेरास्त ख़ुदाई 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए आगाह होने का मामला सिर्फ रिसालत के जमाने में हुआ या हो सकता था। बाद के जमाने में ऐसा होना मुमकिन नहीं। तबक़ात इब्ने साद की रिवायत के मुताबिक ये कुल 82 अफ़राद थे जिनके निफ़ाक़ (पाखंड) के बारे में अल्लाह ने बजरिए 'वही' मुत्तलअ (सूचित) फ़रमाया था।

ताहम इस इल्म के बावजूद सहाबा किराम को उनके साथ जिस सुलूक की इजाजत दी गई वह तग़ाफ़ुल और ऐराज (उपेक्षा) था न कि उन्हें हलाक करना। उन्हें सजा या अजाब देने का मामला फिर भी ख़ुदा ने अपने हाथ में रखा। मदीने के मुनाफ़िक़ीन के साथ अगरचे इतनी सख़्ती की गई कि उन्होंने उजरात (विवशताएं) पेश किए तो उनके उजरात क़ुबूल नहीं किए गए। यहां तक कि सालबा बिन हातिब अंसारी ने मुनाफ़िक़ाना रविश इख़्तियार करने के बाद जकात पेश की तो उनकी जकात लेने से इंकार कर दिया गया। ताहम उनमें से किसी को भी आप ने क़त्ल नहीं कराया। अब्दुल्लाह बिन उबई के लड़के अब्दुल्लाह ने अपने बाप की मुनाफ़िक़ाना हरकत पर सख़्त कार्रवाई करनी चाही तो आप ने रोक दिया और फ़रमाया : उन्हें छोड़ दो, बख़ुदा जब तक वे हमारे दर्मियान हैं हम उनके साथ अच्छा ही सुलूक करेंगे।

बाद के जमाने के मुनाफ़िक़ीन के बारे में भी यही हुक्म है। ताहम दोनों के दर्मियान एक फ़र्क़ है। दौरे अव्वल के मुनाफ़िक़ीन से उनकी हालते क़ल्बी की बुनियाद पर मामला किया गया, मगर बाद के मुनाफ़िक़ीन से उनकी हालते जाहिरी की बुनियाद पर मामला किया जाएगा। उनसे एराज व तग़ाफ़ुल (उपेक्षा) का सुलूक सिर्फ उस वक्त जाइज होगा जबकि उनके अमल से उनकी मुनाफ़िक़त का ख़ारजी सुबूत मिल रहा हो। उनकी नियत या उनकी क़ल्बी हालत की बिना पर उनके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। बाद के लोग उज़्र (विवशता) पेश करें तो उनका उज़्र भी क़ुबूल किया जाएगा और इसके साथ उनके सदक़ात वगैरह भी। उनके अंजाम को अल्लाह के हवाले करते हुए उनके साथ वही मामला किया जाएगा जो जाहिरी क़ानून के मुताबिक किसी के साथ किया जाना चाहिए।

जन्नत किसी को जाती अमल की बुनियाद पर मिलती है न कि मुसलमानों की जमाअत या गिरोह में शामिल होने की बुनियाद पर। मुनाफ़िक़ीन सबके सब मुसलमानों की जमाअत में शामिल थे वे उनके साथ नमाज रोजा करते थे मगर इसके बावजूद उनके जहन्नमी होने का एलान किया गया।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ

وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾

देहात वाले कुफ़्र व निफ़ाक़ में ज्यादा सख़्त हैं और इसी लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है उसके हुदूद से बेख़बर रहें। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला हिक्मत वाला है। और देहातियों में ऐसे भी हैं जो ख़ुदा की राह में ख़र्च को एक तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए जमाने की गर्दिशों के मुंतजिर हैं। बुरी गर्दिश ख़ुद उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। और देहातियों में वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहां क़ुर्ब का और रसूल के लिए दुआएं लेने का जरिया बनाते हैं। हां बेशक वह उनके लिए क़ुर्ब (समीपता) का जरिया है। अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (97-99)

हदीस में आया है कि जिसने देहात में सुकूनत (वास) इख़्तियार की वह सख़्त मिजाज हो जाएगा। शहर के अंदर इल्मी माहौल होता है, तालीमी इदारे क़ायम होते हैं। वहां इल्म व फ़न का चर्चा रहता है। जबकि देहात में लोगों को इसके मौक़े हासिल नहीं होते। इसी के साथ देहात के लोगों के रहन-सहन के तरीके और उनके मआशी जरिये भी निस्बतन मामूली होते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि देहात के लोगों के अंदर ज्यादा गहरा शुऊर पैदा नहीं होता। उनकी तबीअत में सख़्ती और उनके सोचने के अंदाज में सतहियत पाई जाती है। उनके लिए मुश्किल होता है कि वे दीन की नजाकतों को समझें और उन्हें अपने अंदर उतारें।

अल्लाह हर बात को जानता है और इसी के साथ वह हकीम और रहीम भी है। वह देहात के लोगों, बअल्फ़ाजे दीगर अवाम, की इस कमजोरी से बाख़बर है और अपनी हिक्मत (तत्वदर्शिता) व रहमत की बिना पर उन्हें इसकी पूरी रिआयत देता है। चुनांचे ऐसे लोगों से ख़ुदा का मुतालबा यह नहीं है कि वे गहरी मअरफ़त और आला दीनदारी का सुबूत दें। वे अगर नेक नीयत हों तो ख़ुदा उनसे सादा दीनदारी पर राजी हो जाएगा।

अवाम की दीनदारी यह है कि वे सच्चे दिल से ख़ुदा का इक़रार करें। अपने अंदर इस एहसास को ताजा रखें कि आख़िरत का एक दिन आने वाला है। वे अपनी कमाई का एक हिस्सा ख़ुदा की राह में दें और यह समझें कि इसके जरिए से उन्हें ख़ुदा की क़ुरबत (समीपता) और बरकत हासिल होगी। वे ख़ुदा की नुमाइंदगी करने वाले पैग़म्बर को खुश करके उसकी दुआएं लेने के तालिब हों। यह दीनदारी की अवामी सतह है, और अगर आदमी की नीयत में बिगाड़ न हो तो उसका ख़ुदा उससे इसी सादा दीनदारी को क़ुबूल कर लेगा।

लेकिन अगर अवाम ऐसा करें कि वे ख़ुदा और उसके अहकाम से बिल्कुल गाफ़िल हो जाएं। उनकी दीन से इतनी बेतअल्लुक़ी हो कि दीन की राह में कुछ ख़र्च करना उन्हें जुर्माना मालूम होने लगे। इस्लाम की तरक्क़ी से उन्हें वहशत होती हो, तो बिलाशुबह वे नाक़ाबिले

माफ़ी हैं। अवाम की कमफ़हमी (अबोधता) की बिना पर उन्हें यह रिआयत तो ज़रूरी दी जा सकती है कि उनसे गहरी दीनदारी का मुतालबा न किया जाए। लेकिन उनकी कमफ़हमी अगर सरकशी और इस्लाम के साथ बेवफ़ाई की सूरत इख़्तियार कर ले तो वे किसी हाल में बख़्शे नहीं जा सकते।

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَانٍ
رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ
مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

और मुहाजिरीन व अंसार में जो लोग साबिक़ और मुक़द्दम हैं और जिन्होंने ख़ूबी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और तुम्हारे गिर्द व पेश जो देहाती हैं उनमें मुनाफ़िक़ (पाखंडी) हैं और मदीना वालों में भी मुनाफ़िक़ हैं। वे निफ़ाक़ (पाखंड) पर जम गए हैं। तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दोहरा अज़ाब देंगे। फिर वे एक अज़ाबे अज़ीम (महा-यातना) की तरफ़ भेजे जाएंगे। (100-101)

ख़ुदा के दीन की दावत जब भी शुरू की जाए तो दो में से कोई एक सूरत पेश आती है। या तो माहौल उसका दुश्मन हो जाता है। ऐसे माहौल में दीन के लिए पुकारने वाले अजनबी बन जाते हैं। वे अपनी जगह के अंदर बेजगह कर दिए जाते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें मुहाजिर (छोड़ने वाला) कहा जाता है। दूसरी सूरत वह है जबकि माहौल ख़ुदा के दीन की दावत के लिए साज़गार साबित हो। ऐसे माहौल में जो लोग दीन के दाओ बनते हैं उनके साथ यह हादसा पेश नहीं आता कि उनका सब कुछ उनसे छिन जाए। ये दूसरी क़िस्म के लोग अगर ऐसा करें कि वे पहले लोगों का सहारा बनकर खड़े हो जाएं तो यही अंसार (मदद करने वाले) क़रार पाते हैं। दौरे अव्वल में मक्का के हालात ने वहां के मुसलमानों को मुहाजिर बना दिया और मदीने के हालात ने वहां के मुसलमानों को अंसार की हैसियत दे दी।

ख़ुदा की रिज़ामंदी और उसकी जन्नत किसी आदमी को या तो मुहाजिर बनने की क़ीमत पर मिलती है या अंसार बनने की क़ीमत पर। या तो वह ख़ुदा के लिए इतना यकसू हो कि दुनिया के सिरे उससे छूट जाएं। या अगर वह अपने को साहिबे वसाइल (साधन-सम्पन्नता) पाता है तो अपने वसाइल (साधनों) के ज़रिए वह पहले गिरोह की महरूमी का बदल बन जाए। दौरे अव्वल के मुसलमान (सहाबा किराम) इस हिजरत व नुसरत का कामिल नमूना थे। बाद के मुसलमानों में जो लोग इस हिजरत व नुसरत के मामले में अपने पेशरवों

(पूर्ववर्तियों) की तक़लीद (अनुसरण) करेंगे वे इससे इस मुक़द्दस ख़ुदाई गिरोह में शामिल होते चले जाएंगे। ख़ुदा कुछ लोगों को महरूम करता है ताकि उनके अंदर इनाबत (ख़ुदा की तरफ़ झुकने) का जज़्बा उभरे इसी तरह ख़ुदा कुछ लोगों को महरूमी से बचाता है ताकि वे महरूमों की मदद करके ख़ुदा के लिए ख़र्च करने वाले बनें। यह ख़ुदा का मंसूबा है। जो लोग इसका सुबूत न दें वे ऐसे लोग हैं जो ख़ुदा के मंसूबे पर राज़ी न हुए इसलिए ख़ुदा भी आख़िरत के दिन उनसे राज़ी न होगा।

'वे अल्लाह से राज़ी हो गए' यानी जिसे अल्लाह ने ऐसे हालात में उठाया कि उसे सब कुछ छोड़ने की क़ीमत पर दीन को इख़्तियार करना पड़ा तो वह उसमें साबितक़दम रहा। इसी तरह जिसके हालात का तक़ाज़ा यह हुआ कि वह अपने असासे में ऐसे दीनी भाइयों को शरीक करे जिनसे उसका तअल्लुक़ सिर्फ़ मक्सद का है न कि रिश्तेदारी का तो वह भी उस पर राज़ी हो गया। यही वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की ख़ुशी हासिल की और यही वे लोग हैं जो जन्नत के अबदी बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे।

मुनाफ़िक़ वह है जो मुसलमान होने का दावा करे मगर जब हिजरत व नुसरत की क़ीमत पर दीनदार बनने का सवाल हो तो उसके लिए अपने को राज़ी न कर सके।

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾
أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ
هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۖ
وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ وَآخَرُونَ
مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने क़ुसूरों का एतराफ़ कर लिया है। उन्होंने मिले जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे। उम्मीद है कि अल्लाह उन पर तवज्जोह करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। तुम उनके मालों में से सदक़ा लो, इससे तुम उन्हें पाक करोगे और उनका तज़्किया (पवित्रीकरण) करोगे। और तुम उनके लिए दुआ करो। बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तस्कीन (शांति) का ज़रिया होगी। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है। और वही सदक़ों को क़ुबूल करता है। और अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला महरबान है। कहो कि अमल करो, अल्लाह और उसका रसूल और अहले ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे जो तमाम खुले

और छुपे को जानता है। वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी ख़ुदा का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वह उन्हें सजा देगा या उनकी तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (102-106)

कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी तबीअतों में अगरचे शर नहीं होता। वे मअमूल (आम प्रचलन) वाले दीनी आमाल भी करते रहते हैं। मगर जब दीन का कोई ऐसा तकाजा सामने आता है जिसमें अपने बने हुए नक्शे को तोड़ कर दीनदार बनने की जरूरत हो तो वे अपनी जिंदगी और माल को इस तरह दीन के लिए नहीं दे पाते जिस तरह उन्हें देना चाहिए। कुव्वते फैसला की कमजोरी या दुनिया में उनकी मशग़ूलियत उनके लिए दीन की राह में अपना हिस्सा अदा करने में रुकावट बन जाती हैं। ऐसे लोग अगरचे कुसूरवार होते हैं। ताहम उनका कुसूर उस वक्त माफ कर दिया जाता है जबकि याददिहानी के बाद वे अपनी ग़लती का एतराफ कर लें और शर्मिन्दगी के एहसास के साथ दुबारा दीन की तरफ लौट आएं।

एतराफ और शर्मिन्दगी का सुबूत यह है कि उनके अंदर नए सिरे से दीनी ख़िदमत का जज्बा पैदा हो। वे अपने एहसासे गुनाह को धोने के लिए अपने महबूब माल का एक हिस्सा ख़ुदा की राह में पेश करें। जब उनकी तरफ से ऐसा रद्देअमल (प्रतिक्रिया) जाहिर हो तो पैग़म्बर को तल्कीन की गई कि अब उन्हें मलामत न करो बल्कि उन्हें नफ्सियाती सहारा देने की कोशिश करो। उन्हें दुआएं दो ताकि उनके दिल का बोझ दुबारा ईमानी अज्म व एतमाद में तब्दील हो जाए।

ख़ुदा के नजदीक अस्ल बुराई ग़लती करना नहीं है बल्कि ग़लती पर कायम रहना है। जो आदमी ग़लती करने के बाद उसकी तावीलें (हीले) ढूंढने लगे वह बर्बाद हो गया और जो शख़्स ग़लती का एतराफ करके अपनी इस्लाह कर ले वह ख़ुदा के नजदीक काबिले माफी ठहरा।

ग़लती करने के बाद आदमी हमेशा दो इम्कानात के दर्मियान होता है। एक यह कि वह अपनी ग़लती का एतराफ कर ले। दूसरा यह कि वह ढिठाई करने लगे, जो शख़्स अपनी ग़लती का एतराफ कर ले उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) पैदा होती है। वह दुबारा ख़ुदा की रहमतों का मुस्तहिक बन जाता है। इसके बरअक्स जो शख़्स ढिठाई का तरीका इख़्तियार करे वह गोया ख़ुदा के ग़जब के रास्ते पर चल पड़ा। वह अपने को बेख़ता साबित करने के लिए झूठी तावीलें करेगा। एक ग़लती को निभाने के लिए वह दूसरी बहुत सी ग़लतियां करता चला जाएगा। पहले शख़्स के लिए ख़ुदा की रहमत है और दूसरे शख़्स के लिए ख़ुदा की सजा।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا
لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ
يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ۭ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ
اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ

الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ
مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ۭ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ
اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई नुक्सान पहुंचाने के लिए और कुफ़्र के लिए और अहले ईमान में फूट डालने के लिए और इसलिए ताकि कमीनगाह (शरण-स्थल) फराहम करें उस शख़्स के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहा है। और ये लोग कसमें खाएंगे कि हमने तो सिर्फ भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं। तुम उस इमारत में कभी खड़े न होना। अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अव्वल दिन से तकवे (ईश-परायणता) पर पड़ी है वह इस लायक है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है। क्या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद ख़ुदा से डर पर और ख़ुदा की खुशनूदी पर रखी या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है। फिर वह इमारत उसे लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। और यह इमारत जो उन्होंने बनाई हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (107-110)

जिंदगी की तामीर की दो बुनियादें हैं। एक तक्वा, दूसरे जुल्म। पहली सूरत यह है कि ख़ुदा के डर की बुनियाद पर जिंदगी की इमारत उठाई जाए। आदमी की तमाम सरगर्मियां जिस फिक्र के मातहत चल रही हों वह फिक्र यह हो कि उसे अपने तमाम कौल व फेअल का हिसाब एक ऐसी हस्ती को देना है जो खुले और छुपे से बाख़बर है और हर एक को उसके हकीकी कारनामों के मुताबिक जजा या सजा देने वाला है। ऐसा शख़्स गोया मजबूत चट्टान पर अपनी इमारत खड़ी कर रहा है। दूसरी सूरत यह है कि आदमी इस किस्म के अंदेशे से ख़ाली हो। वह दुनिया में बिल्कुल बेकैद जिंदगी गुजारे। वह किसी पाबंदी को कुबूल किए बग़ैर जो चाहे बोले और जो चाहे करे। ऐसे शख़्स की जिंदगी की मिसाल उस इमारत की सी है जो ऐसी खाई के किनारे उठा दी गई हो जो बस गिरने ही वाली हो और अचानक एक रोज उसका मकान अपने मकीनों सहित गहरे खड में गिर पड़े।

जो लोग जुल्म की बुनियाद पर अपनी जिंदगी की इमारत उठाते हैं उनके जराइम में सबसे ज्यादा सख़्त जुर्म वह है जिसकी मिसाल मदीने में मस्जिदे जिरार की सूरत में सामने आई। उस वक्त मदीने में दो मस्जिदें थीं। एक आबादी के अंदर मस्जिदे नबवी। दूसरी मुजाफात (निकट क्षेत्र) में मस्जिदे कुबा। मुनाफिक मुसलमानों ने उसके तोड़ पर एक तीसरी

मस्जिद तामीर कर ली। इस किस्म की कार्रवाई बजाहिर अगरचे दीन के नाम पर होती है मगर हकीकत में इसका मकसद होता है अपनी कयादत और पेशवाई को कायम रखने के ख़ातिर हक की दावत का मुख़ालिफ (विरोधी) बन जाना। जो लोग अपनी ख़ुदपरस्ती की वजह से हक की दावत को कुबूल नहीं कर पाते वे उसके ख़िलाफ महाज बनाते हैं, उसके ख़िलाफ तख़्रीबी (विध्वंसक) कार्रवाइयां करते हैं। उनकी मंफी (सकारात्मक) सरगर्मियां मुसलमानों को दो गिरोहों में बांट देती हैं। ऐसे लोग अपने तख़्रीबी अमल को दीन के नाम पर करते हैं। यहां तक कि वे मुसल्लमा दीनी शख़्सियतों को अपने स्टेज पर लाने की कोशिश करते हैं ताकि लोगों की नजर में उन्हें एतमाद हासिल हो जाए।

ये लोग अपनी अंधी दुश्मनी में भूल जाते हैं कि हक की मुख़ालिफत (विरोध) दरअस्ल ख़ुदा की मुख़ालिफत है जो ख़ुदा की दुनिया में कभी कामयाब नहीं हो सकती। ऐसे लोगों के लिए जो चीज मुक़द्दर है वह सिर्फ यह कि वे हसरत व अफ़सोस के साथ मरें और अल्लाह की रहमतों से हमेशा के लिए महरूम हो जाएं।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

बिलाशुबह अल्लाह ने मोमिनों से उनके जान और उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले। वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। फिर मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह के जिम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात में और इंजील में और कुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है। पस तुम ख़ुशियां करो उस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है। और यही है सबसे बड़ी कामयाबी। वे तौबा करने वाले हैं। इबादत करने वाले हैं। हम्द (ईश-प्रशंसा) करने वाले हैं। ख़ुदा की राह में फिरने वाले हैं। रुकूअ करने वाले हैं। सज्दा करने वाले हैं। भलाई का हुक्म देने वाले है। बुराई से रोकने वाले हैं। अल्लाह की हदों का ख़्याल रखने वाले हैं। और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो। (111-112)

अल्लाह का मोमिन बनना अल्लाह के हाथ अपने आपको बेच देना है। बंदा अपना माल और अपनी जिंदगी अल्लाह को देता है ताकि अल्लाह इसके बदले में अपनी जन्नत उसे दे दे।

यह दरअस्ल हवालगी और सुपुर्दगी की ताबीर है। किसी भी चीज से हक़ीकी तअल्लुक हमेशा हवालगी और सुपुर्दगी की सतह पर होता है। तअल्लुक का यही दर्जा अल्लाह के मामले में भी मत्लूब है। जन्नत की अबदी नेमतें किसी को कामिल हवालगी के बग़ैर नहीं मिल सकतीं।

जब आदमी अल्लाह के दीन को इस तरह इख़्तियार करता है तो दीन का मामला उसके लिए कोई अलग मामला नहीं होता। बल्कि वह उसका जाती मामला बन जाता है। अब वही उसकी दिलचस्पियों और उसके अंदेशों का मर्कज होता है। दीन अगर माल का तकाजा करे तो वह अपना माल उसके लिए हाजिर कर देता है। दीन के लिए अपने वक्त और अपनी सलाहियत को वक्फ करना पड़े तो वह अपने वक्त और अपनी सलाहियत को उसके लिए पेश कर देता है। यहां तक कि अगर वह मरहला आ जाए जबकि अपने वुजूद को मिटा कर या माल से बेमाल होने का ख़तरा मोल लेकर दीन में अपना हिस्सा अदा करना हो तो इससे भी वह दरेग़ नहीं करता।

जो लोग इस तरह अपने को अल्लाह के हवाले करें उनके अंदर किस किस्म के इंफिरादी औसाफ पैदा होते हैं। उनकी हस्सासियत इतनी बेदार हो जाती है कि गलती होते ही वे उसे जान लेते हैं और फौरन अपनी ग़लती का एतराफ कर लेते हैं। वे अल्लाह के लिए बिछ जाने वाले होते हैं। वे ख़ुदा की अज्मतों को इस तरह पा लेते हैं कि उनके कल्ब और जबान से बेइख़्तियार इसका इज्हार होने लगता है। वे साएह हो जाते हैं, यानी इंसानी दुनिया से निकल कर ख़ुदाई दुनिया में जाना उनके लिए ज्यादा सुकून का बाइस होता है। ख़ुदा के आगे झुकना उनके लिए महबूब चीज बन जाता है। जो भी उनके रब्त (सम्पर्क) में आता है उसे भलाई के रास्ते पर डालने की कोशिश करते हैं। अपने सामने किसी को बुराई करते देखते हैं तो उसे रोकने के लिए खड़े हो जाते हैं। वे ख़ुदा की हदबंदियों के मामले में हद दर्जा चौकन्ना हो जाते हैं, वे अल्लाह की हदों के इस तरह निगहबान बन जाते हैं जिस तरह बाग़बान अपने बाग़ का। यही वे लोग हैं जिनके लिए ख़ुदाई इनामात की ख़ुशख़बरी है।

ख़ुदा की जन्नत तमाम कीमती चीजों से ज्यादा कीमती है। मगर ख़ुदा की जन्नत एक मोऊद (बाद का) इनाम है, वह नक्द इनाम नहीं। जन्नत की इसी मुवज्जल (बाद की) नौइयत का यह नतीजा है कि लोग जन्नत को छोड़कर हकीर फायदों की तरफ भागे जा रहे हैं।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं रवा नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही हों जबकि उन पर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले लोग हैं। और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ मांगना सिर्फ इस वादे के सबब से था जो उसने उससे कर लिया था। फिर जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेतअल्लुक हो गया। बेशक इब्राहीम बड़ा नर्मदिल और बुर्दबार (उदार) था। और अल्लाह किसी कौम को, उसे हिदायत देने के बाद गुमराह नहीं करता जब तक उन्हें साफ-साफ वे चीजें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है, बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। अल्लाह ही की सल्तनत है आसमानों में और जमीन में, वह जिलाता है और वही मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है ओर न मददगार। (113-116)

एक शख़्स मुंकिर व मुश्रिक हो और उसके सामने इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) की हद तक दीन की दावत आ जाए, इसके बावजूद वह ईमान न लाए तो ख़ुदा के कानून के मुताबिक वह जहन्नमी हो जाता है। ऐसे शख़्स के लिए इसके बाद नजात की दुआ करना गोया ईमान को बेवकअत बनाना और ख़ुदाई इंसाफ की तरदीद करना है, यही वजह है कि ऐसी दुआ से मना कर दिया गया।

ताहम आयत में 'मिन बअ-दि मा तबय्य-न' का लफ़्ज बताता है कि इस हुक्म का तअल्लुक रिसालत के जमाने के मुश्रिकीन से है जिनके बारे में 'वही' के जरिए बता दिया गया था कि वे जहन्नमी हैं। इन आयतों का पसमंजर यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हुक्म दिया गया था कि आप मुनाफ़िक़ीन की नमाजे जनाजा न पढ़ेंऔर उनके हक में मग़्फ़िरत की दुआ न करें (अत तौबा 84)। यह बात मदीना के मुनाफ़िक़ों को बहुत नागवार हुई। उन्होंने इसे लेकर आपके ख़िलाफ प्रोपेगंडा शुरू कर दिया। वे कहते कि यह नबी तो नबी रहमत हैं और अपने को इब्राहीम का पैरोकार बताते हैं। फिर क्या वजह है कि मुसलमानों को अपने भाइयों और अपने रिश्तेदारों के लिए इस्तग़फार से रोकते हैं। हालांकि इब्राहीम का हाल यह था कि अपने मुश्रिक बाप के लिए भी उन्होंने मग़्फ़िरत की दुआ की।

जवाब दिया गया कि इब्राहीम बड़े दर्दमंद और इंसानियत के गम में घुलने वाले थे। अपने इस जज्बे के तहत उन्होंने अहद कर लिया कि वह अपने मुश्रिक बाप के हक में ख़ुदा से दुआ करेंगे। मगर जब 'वही' ने तंबीह की तो इसके बाद वह फौरन इससे बाज आ गए।

अल्लाह ने हर आदमी के अंदर बुराई की फ़ितरी तमीज रखी है। जब आदमी के सामने एक ऐसा पैग़ाम आता है जो उसे बुराई से रोकता है तो उसका वुजूद अंदर से उसकी तस्दीक करता है। उसके दिल के अंदर एक ख़ामोश खटक पैदा होती है। आदमी अगर इस खटक को नजरअंदाज कर दे, वह फ़ित्रत की गवाही के बावजूद बचने वाली चीज से न बचे तो उसकी फ़ितरी हस्सासियत (संवेदनशीलता) कमजोर पड़ जाती है, यहां तक कि धीरे-धीरे बिल्कुल मुर्दा हो जाती है। यही वह चीज है जिसे गुमराह करने से ताबीर किया गया है। 'हिदायत देने के बाद गुमराह करना' के अल्फ़ाज बता रहे हैं कि इसका ख़तरा मुसलमानों के लिए भी उसी तरह है जिस तरह ग़ैर मुसलमानों के लिए।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾

अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर तवज्जोह फरमाई जिन्होंने तंगी के वक्त मे नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की तरफ मायल हो चुके थे। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह फरमाई। बेशक अल्लाह उन पर महरबान है रहम करने वाला है। और उन तीनों पर भी उसने तवज्जोह फरमाई जिनका मामला उठा रखा गया था। यहां तक कि जब जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए ख़ुदा अल्लाह के सिवा कोई जाएपनाह (शरण-स्थल) नहीं। फिर अल्लाह उनकी तरफ पलटा ताकि वे उसकी तरफ पलट आएं। बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (117-118)

तबूक की लड़ाई के मौके पर एक गिरोह वह निकला जिसने अपना बेहतरीन असासा इस्लाम के हवाले कर दिया। उनकी फस्ल कटने के लिए तैयार थी मगर वह उसे छोड़कर एक ऐसे सफर पर रवाना हो गए जिसमें सख़्त गर्मी के तीन सौ मील तै करके वक्त की सबसे बड़ी ताकत व सल्तनत का मुकाबला करना था। सामान की कमी का यह हाल था कि एक-एक ऊंट पर कई-कई आदमियों की बारी लगी हुई थी। खाने के लिए कभी-कभी सिर्फ एक खजूर एक आदमी के हिस्से में आती थी। ताहम यह इंतिहाई सख़्त मरहला सिर्फ इरादों के इम्तेहान के लिए सामने लाया गया था। जब इरादा करने वालों ने इरादे का सुबूत दे दिया तो ख़ुदा ने दुश्मन के ऊपर रौब तारी कर दिया। वे मुकाबले के मैदान से हट गए और मुसलमान ख़ून बहाए बग़ैर कामयाब व कामरान होकर वापस आ गए।

दूसरा तबका मोतरिफ़ीन (अत तौबा 102) का था। ये लोग अपने दुनियावी मशाग़िल (व्यस्तताओं) की वजह से सफर पर रवाना न हो सके। ताहम फौरन ही बाद उन्हें महसूस हो गया कि उन्होंने ग़लती की है। उनके अंदर एतराफ और शर्मिन्दगी की आग भड़क उठी। उनके आंसुओं की कसरत ने उनके अमल की कमी की तलाफी कर दी। ख़ुदा ने उन्हें भी अपनी रहमतों के साये मे जगह दे दी। क्योंकि उन्होंने आजिजाना तौर पर अपनी ग़लती को मान लिया था।

तीसरा गिरोह मुख़ल्लफ़ीन (अत-तौबह 118) का था। ये तीन नौजवान काब बिन मालिक, मुरारा बिन रबीअ, हिलाल बिन उमैया थे। वे अगरचे सफर पर न निकलने को अपनी कोताही

समझत थे मगर उनके अंदर तौबा व इनाबत (अल्लाह की तरफ विनय-भाव से झुकना) का इतना शदीद एहसास पहले मरहले में नहीं उभरा था जो मत्लूबा मेयार के मुताबिक हो। चुनांचे उनके साथ समाजी बायकॉट का मामला किया गया। ये लोग इस बायकॉट के बावजूद मुतमइन रह सकते थे। वे अपने घर और अपने बाग़ों में मशग़ूल हो जाते। वे बरहमी (खिन्नता) और नावफ़ादारी के रास्तों पर चलना शुरू कर देते। वे नाराज अनासिर (तत्वों) के साथ मिलकर अपनी अलग जमीयत बना लेते। वे आम मुसलमानों से अलग अपना एक जजीरा बनाकर उसके अंदर अपनी ख़ुशियों की दुनिया बसा सकते थे। मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। ख़ुदा व रसूल से दूरी के एहसास ने उन्हें इस क़द्र परेशान कर दिया कि न बाहर उनके लिए सुकून की कोई जगह नजर आई और न अपने दिल के अंदर उनके लिए सुकून का कोई गोशा बाकी रहा। बअल्फ़ाजे दीगर उनकी परेशानी इख़्तियाराना थी न कि मजबूराना। उनकी इस रविश का नतीजा यह हुआ कि उनका दिल पिघल उठा। 50 दिन में वे तौबा व इनाबत के मत्लूबा मेयार पर पहुंच गए। इसके बाद उन्हें भी माफ कर दिया गया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। मदीना वालों और अतराफ (आसपास) के देहातियों के लिए जेबा न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे बैठे रहें और न यह कि अपनी जान को उसकी जान से अजीज रखें। यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख भी उन्हें ख़ुदा की राह में लाहिक होती है और जो कदम भी वे मुंकिरों को रंज पहुंचाने वाला उठाते हैं और जो चीज भी वे दुश्मन से छीनते हैं इनके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है। अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र (प्रतिफल) जाया नहीं करता। और जो छोटा या बड़ा ख़र्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तै किए वे सब उनके लिए लिखा गया ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे। (119-121)

इंसानी जिंदगी इज्तिमाई जिंदगी है। यही वजह है कि हर आदमी का अपने जौक़ और

रुझान के एतबार से एक हलक़ा बन जाता है जिसमें वह अपने रोज व शब गुजारता है। जो लोग अल्लाह से डरने वाले हों और ईमान के रास्ते पर चलना चाहें उनके लिए लाजिम है कि वे अपनी सोहबतों और मुलाक़ातों के लिए उन लोगों को चुनें जो सच्चे लोग हों। यानी जिनके दिल का ख़ौफ़े ख़ुदा उनकी जिंदगी की रविश बन गया हो। जिनके क़ौल व अमल के दर्मियान मुताबिक़त पाई जाती हो। सच्चों के साथ रहकर आदमी सच्चा बन जाता है। इसके बरअक्स अगर वह झूठों का साथ पकड़े तो बिलआख़िर वह खुद भी झूठा बन जाएगा।

आदमी के सामने ऐसे मौके आते हैं जबकि जान को ख़तरे में डाल कर इस्लाम की ख़िदमत करने का सवाल हो। जब भूख प्यास का मुक़ाबला करके इस्लाम के लिए अपना हिस्सा अदा करना हो। जब अपने को थका कर ख़ुदा की राह में आगे बढ़ना हो। जब दुश्मनों का ख़तरा मोल लेकर अपने को इस्लाम की सफ में शामिल करना हो। जब अपनी पुरसुकून जिंदगी को बरहम करके ख़ुदा व रसूल का साथ देना हो। ऐसे मौक़ों पर आदमी एहतियात और बचाव का तरीक़ा इख़्तियार करके पीछे बैठ जाने को पसंद करता है। वह भूल जाता है कि यही तो वे मौके हैं जबकि वह ख़ुदा के साथ अपने तअल्लुक का अमली सुबूत पेश कर सकता है। जबकि वह जन्नत के लिए अपनी उम्मीदवारी को ख़ुदा की नजर में क़ाबिले क़ुबूल साबित कर सकता है।

ग़जवए तबूक के मौके पर पीछे रहने वालो में एक अबू ख़ैसमा अंसारी भी थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी के बाद वह अपने बाग़ में गए। वहां खुशगवार साया था, बीवी ने पानी छिड़क कर जमीन को ठंडा किया, चटाई का फ़र्श बिछाया, ताजा खजूर के ख़ोशे लाकर सामने रखे और ठंडा पानी पीने के लिए पेश किया। अबू ख़ैसमा दुनियावी आसानियों ही की ख़ातिर तबूक के सफर पर न जा सके थे। मगर जब जाने वाले और रहने वाले के दर्मियान फर्क इस इंतिहाई नौबत को पहुंच गया जो अब उनके सामने था तो अबू ख़ैसमा उसे बर्दाश्त न कर सके। उन्होंने कहा 'मैं यहां बाग़ में साये में हूं और ख़ुदा के बंदे लू और गर्मी में कोह व बयाबान तै कर रहे हैं' उन्होंने तलवार संभाली और तेज रफ्तार ऊंटनी पर सवार होकर उसी वक्त रवाना हो गए। यहां तक कि गर्द व ग़ुबार में अटे हुए तबूक के क़ाफ़िले से जा मिले।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

और यह मुमकिन न था कि अहले ईमान सबके सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता ताकि वह दीन में समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी कौम के लोगों को आगाह (दीक्षित) करता ताकि वे भी परहेज करने वाले बनते। (122)

क़ुरआन की यह आयत एक एतबार से ज़ेरेबहस सूरतेहाल से मुतअल्लिक है और दूसरे एतबार से वह एक कुल्ली हुक्म को बता रही है। एक तरफ वह बताती है कि मदीने के अतराफ मे बसने वाले देहातियों की तालीम व तर्बियत किस तरह की जाए। दूसरी तरफ इससे मालूम होता है कि इस्लाम का तालीमी निजाम और नई नस्लों के लिए उसका तर्बियती ढांचा किन उसूली बुनियादों पर कायम होना चाहिए।

तालीम एक ऐसा काम है जिसमें आदमी को दूसरी मशग़ूलियतों से फारिग़ होकर शामिल होना पढ़ता है। अब अगर सारे लोग बयकवक्त तालीमी काम में लग जाएं तो जिंदगी की दूसरी सरगर्मियां, मसलन हुसूले मआश (जीविका) की कोशिशें, मुतअस्सिर हो जाएंगी। इस्लाम का यह तरीका नहीं कि एक काम को बिगाड़ कर दूसरा काम अंजाम दिया जाए, इसलिए हुक्म दिया गया कि बारी-बारी का उसूल मुकर्रर करो। कुछ लोग तालीम के मर्कज में आएं तो कुछ और लोग दूसरी सरगर्मियों को अंजाम देने में लगे रहें। इस तरह दोनों काम बयकवक्त अंजाम पाते रहेंगे।

इस आयत में इस्लामी तालीम के लिए तफक़्क़ोह फ़िद्दीन का लफ्ज आया है। इससे मुराद मारूफ़ फ़िक़्ही (प्रचलित आचार-शास्त्र संबंधी) तालीम नहीं है जो दीन की शक्ल (बमुकाबला रूहे दीन) के तफ़्सीली इल्म का नाम है और जिसके नतीजे में दीन का इल्म मसाइल के इल्म के हममअना (समान) बन गया है। यहां तफक़्क़ोह फ़िद्दीन का मतलब ख़ुदा के उतारे हुए असासी (मौलिक) दीन को जानना और उसमें समझ हासिल करना है। इससे मुराद वह इल्म है जो हक शनासी (सत्य का ज्ञान) पैदा करे जो बुनियादी हकीकतों से आदमी को बाख़बर करे और आख़िरत की बुनियादों पर जिंदगी की तामीर करना सिखाए।

आयत में तफक़्क़ोह फ़िद्दीन (तालीमे दीन) मक्सद यह बताया गया है कि आदमी कौम के ऊपर इंजार का काम करने के काबिल हो सके। इंजार के मअना हैं डराना। क़ुरआन में यह लफ्ज आख़िरत के मसले से डराने और होशियार करने के लिए आया है। इससे मालूम हुआ कि इस्लामी तालीम से ऐसे अफराद तैयार हों जो कौमों के ऊपर ख़ुदा की तरफ से मुंजिर (डरानेवाला) बनकर खड़े हो सकें। ताकि लोग ख़ुदा से डरें और दुनिया की जिंदगी में उस रविश से बचें जो उन्हें आख़िरत के अबदी अजाब की तरफ ले जाने वाली हो। इस्लामी तालीम दावत इलल्लाह की तालीम का नाम है न कि मारूफ मअनों में सिर्फ मसाइले फ़िक़्ह या जुजयाते शरअ (शरीअत के विभिन्न अंगों) की तालीम का।

इस एतबार से इस्लामी तालीम का निसाब दो ख़ास चीजों पर मुशतमिल होना चाहिए :

1. क़ुरआन व सुन्नत
2. वे उलूम जो मदऊ (संबोधित वर्ग) की निस्बत से जरूरी हों। मसलन मुख़ातब की जबान, उसके तर्जेफिक्र और उसकी नफ्सियात, वगैरह।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

ऐ ईमान वालो, उन मुंकिरों से जंग करो जो तुम्हारे आस-पास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख़्ती पाएं और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है। और जब कोई सूरह उतरती है तो उनमें से कुछ कहते हैं कि इसने तुम में से किस का ईमान ज्यादा कर दिया। पस जो ईमान वाले हैं उनका इसने ईमान ज्यादा कर दिया और वे ख़ुश हो रहे हैं। और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर गंदगी। और वे मरने तक मुंकिर ही रहे। क्या ये लोग देखते नहीं कि वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं और न सबक हासिल करते हैं। और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो ये लोग एक दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस वजह से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं। (123-127)

'करीब के मुंकिरों से जंग करो' के अल्फाज बताते हैं कि इस्लामी जद्दोजहद कोई बेमंसूबा जद्दोजहद नहीं है बल्कि इसमें तर्तीब को मल्हूज रखना जरूरी है। पहले करीब की रुकावटों को काबू पाने की कोशिश की जाएगी और इसके बाद दूर की रुकावटों से निपटा जाएगा। इसी से यह बात भी निकली कि सबसे पहले मुजाहिदा (संघर्ष) ख़ुद अपने नफ्स (अंतःकरण) से किया जाना चाहिए। क्योंकि आदमी के सबसे करीब ख़ुद उसका अपना नफ्स होता है। बाहर के दुश्मनों की बारी इसके बाद आती है। फिर इस्लाम दुश्मनों से भी अव्वलन जो चीज मत्लूब है वह सख़्ती (ग़िल्जह) है यानी वह मजबूती जो दुश्मनों के लिए रौब का बाइस बन जाए।

इसी के साथ जरूरी है कि दुश्मनों के मुकाबले की सारी कार्रवाई तकवे की बुनियाद पर की जाए। तकवा (ख़ुदा का ख़ौफ) की रविश ही मुसलमानों के लिए नुसरते ख़ुदावंदी की जामिन है। तकवा से हटते ही वे ख़ुदा की मदद से महरूम हो जाएंगे। वे ख़ुदा से दूर हो जाएंगे और ख़ुदा उनसे।

तकवा गोया बंदे और ख़ुदा के दर्मियान नुक्ता-ए-मुलाकात है। जब आदमी ख़ुदा से डरता है तो वह अपने आपको उस मकाम पर लाता है जहां ख़ुदा उसे देखना चाहता था जहां ख़ुदा ने उसे बुला रखा था। ऐसी हालत में तकवा ही आदमी को ख़ुदा के करीब करने वाला बन सकता है न कि कोई दूसरी चीज। जब ख़ुदा अपने बंदे को मुत्तकी के रूप में देखना चाहता है तो वह उस बंदे की तरफ कैसे मुतवज्जह होगा जो ग़ैर मुत्तकी के रूप में उसके सामने आए।

कुरआन ने अपनी यह ख़ुसूसियत बयान की है कि उसकी आयतों को सुनकर मोमिनीन के ईमान में इजाफा होता है। मगर ईमान के इजाफे का तअल्लुक आदमी की अपनी कल्बी सलाहियत पर है न कि सिर्फ आयतों के सुन लेने पर। डेढ़ हजार साल पहले जब कुरआन उतरा तो उसके अल्फाज अभी सिर्फ अल्फाज थे, वे तारीख़ी वाकया नहीं बने थे। उस वक्त कुरआन की अहमियत को सिर्फ वही लोग समझ सकते थे जो हकीकत को उसकी मुजर्रद (मूल भावना) सूरत में देखने की सलाहियत रखते हों। जाहिरपरस्त मुनाफिकीन के अंदर यह सलाहियत न थी। उन्हें कुरआन के अल्फाज सिर्फ अल्फाज मालूम होते थे। उनकी समझ में नहीं आता था कि चन्द अल्फाज का मज्मूआ किसी के यकीन व एतमाद में इजाफे का सबब कैसे बन जाएगा। चुनांचे जब कोई नई आयत उतरती तो वे यह कह कर मजाक उड़ाते कि अरबी के इन अल्फाज ने तुम में से किसके ईमान में इजाफा किया।

इस बात को आदमी उस वक्त तक नहीं समझ सकता जब तक वह तारीख़ को हटा कर कुरआन को उसके मुजर्रद रूप में देखने की नजर न पैदा करे। आज 'कुरआन' के लफ्ज के साथ वे तमाम तारीख़ी अज्मतें शामिल हो चुकी हैं जो नुज़ूले कुरआन के वक्त मौजूद न थीं और बाद को हजार साल से ज्यादा अर्से में उसके गिर्द जमा हुईं।

मगर नुज़ूल के जमाने में कुरआन की हैसियत सिर्फ एक किताब की थी। उस वक्त जाहिरबीं इंसान उसे सिर्फ एक 'किताब' के रूप में देखता था न कि तारीख़साज सहीफे (इतिहासनिर्माता ग्रंथ) के रूप में। वे लोग जो कुरआन को उसकी छुपी हुई अज्मत के साथ देख रहे थे जब वे कुरआन से ग़ैर मामूली तास्सुर कुबूल करते तो जाहिरबीनों की समझ में न आता। वे कहते कि आख़िर यह एक किताब ही तो है। फिर एक लफ्जी मज्मूए में वह कौन सी ख़ास बात है कि लोग उससे इस कद्र मुतअस्सिर हो रहे हैं।

ख़ुदा ऐसे लोगों को बार-बार मुख़्तलिफ किस्म के झटके देता है ताकि उनके दिल की हस्सासियत बढ़े और वे बातों को ज्यादा गहराई के साथ पकड़ने के काबिल हो जाएं। मगर जब आदमी ख़ुद नसीहत न लेना चाहे तो कोई ख़ारजी (वाह्य) चीज उसकी नसीहत के लिए काफी नहीं हो सकती। नसीहत लेने वाली कोई बात सामने आए और आदमी उसे नजरअंदाज कर दे तो उसका यह अमल उसे नसीहत के मामले में बेहिस बना देता है।

'वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं मगर वे न तौबा करते हैं न सबक हासिल करते हैं।' यहां आजमाइश से मुराद कहत, मर्ज, भूख वग़ैरह में मुब्तिला किया जाना है। इस किस्म की आफतें आदमी की जिंदगी में बार-बार पेश आती हैं मगर वह उनसे तौबा और इबरत (सीख) की ग़िजा नहीं लेता। तौबा हकीकतन तजक्कुर (साधना) के नतीजे का दूसरा नाम है।

हर आदमी के साथ ऐसा होता है कि साल में एक दो बार जरूर कुछ ग़ैर मामूली वाकेयात पेश आते हैं। ये वाकेयात ख़ुदाई हकीकतों की तरफ इशारा करने वाले होते हैं। कभी वे ख़ुदा के मुकाबले में इंसान की बेचारगी को याद दिलाते हैं। कभी वे आख़िरत के मुकाबले में मौजूदा दुनिया की बेवकअती को जाहिर करते हैं। ऐसे मौके आदमी के लिए एक बात का इम्तेहान होते हैं कि वह उन्हें अपने लिए सबक बनाए, वह माद्दी वाकेयात (भौतिक घटनाओं) में ग़ैर माद्दी हकाइक (दिव्य यथार्थ) को देख ले।

सबक वाली चीज से आदमी सबक क्यों नहीं ले पाता। इसकी वजह यह है कि वह एक चीज को दूसरी चीज से मरबूत नहीं कर पाता। दुनिया के वाकेयात से सबक लेने के लिए यह सलाहियत दरकार है कि आदमी एक बात को दूसरी बात से जोड़कर देखना जानता हो। वह जाहिरी वाक्ये को छुपी हुई हकीकत से मिला कर देख सके। वह पेश आने वाली चीज के आइने में उस चीज को पढ़ सके जो अभी पेश नहीं आई।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो ख़ुद तुम में से है। तुम्हारा नुक्सान में पड़ना उस पर शाक (असह्य) है। वह तुम्हारी भलाई का हरीस (लालसा रखने वाला) है। ईमान वालों पर निहायत शफीक (करुणामय) और महरबान है। फिर भी अगर वे मुंह फेरें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया। और वही मालिक है अर्शे अजीम का। (128-129)

इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह तस्वीर बताई गई है कि इस्लाम की जद्दोजहद में उनका सारा एतमाद सिर्फ एक अल्लाह पर है। वे लोगों को जिस ख़ुदा की तरफ बुलाने के लिए उठे हैं वह ऐसा ख़ुदा है जो सारे इक्तेदार (संप्रभुत्व) का मालिक है। तमाम ख़जानों की कुंजियां उसके पास हैं। रसूल इसी ईमान व यकीन की जमीन पर खड़ा हुआ है। इसलिए बिल्कुल फितरी है कि उसका सारा भरोसा सिर्फ एक ख़ुदा पर हो। वह हर किस्म की मस्लेहतों और अंदेशों से बेपरवाह होकर हक की ख़िदमत में लगा रहे।

फिर यह बताया कि ख़ुदा का रसूल लोगों के हक में हद दर्जा शफीक और महरबान है। वह दूसरों की तकलीफों पर इस तरह कुढ़ता है जैसे कि वह तकलीफ ख़ुद उसके ऊपर पड़ी हो। वह हिर्स की हद तक लोगों की हिदायत का तालिब है। हक की दावत (आह्वान) की जद्दोजहद के लिए उसे जिस चीज ने मुतहर्रिक किया है वह सरासर ख़ैरख़्वाही का जज्बा है न कि कोई शख़्सी हौसला या कौमी मसला। वह ख़ुद लोगों की भलाई के लिए उठा है न कि अपनी जाती भलाई के लिए।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फरमाया : लोग परवानों की

तरह आग में गिर रहे हैं और मैं उनकी कमर पकड़ कर उन्हें आग में गिरने से रोक रहा हूं। (मुस्नद अहमद)

रसूल की इस तस्वीर की शक्ल में हक के दाओ की तस्वीर हमेशा के लिए बता दी गई है। इससे मालूम होता है कि इस्लाम के दाओ के अंदर दो ख़ास सिफात नुमायां तौर पर होनी चाहिएं। एक यह कि उसका भरोसा सिर्फ एक अल्लाह पर हो। दूसरे यह कि मदऊ (संबोधित व्यक्ति) के लिए उसके दिल में सिर्फ मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही का जज्बा हो, इसके सिवा और कुछ न हो। अगरचे मदऊ की तरफ से तरह-तरह की शिकायतें पेश आती हैं। उसके और दाओ के दर्मियान कौमी और माद्दी (सांसारिक) झगड़े भी हो सकते हैं। इन सबके बावजूद यह मत्लूब है कि दाओ (आह्वानकर्ता) इन तमाम चीजों को नजरअंदाज करे और मदऊ के लिए रहमत व राफ्त (हमदर्दी) के सिवा कोई और जज्बा अपने अंदर पैदा न होने दे।

दाओ को रद्देअमल की नफ्सियात से बुलन्द होना पड़ता है। उसे एकतरफा तौर पर ऐसा करना पड़ता है कि वह मदऊ का ख़ैरख़्वाह बने, चाहे मदऊ ने उसके ख़िलाफ कितना ही ज्यादा काबिले शिकायत रवैया क्यों न इख़्तियार किया हो। दाओ ख़ुदा के लिए जीता है और मदऊ अपनी जात के लिए।

इब्तदाए इस्लाम में जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया उनके लिए आपका साथ देना अपनी बनी बनाई जिंदगी को उजाड़ देने के हममअना बन गया। इससे कुछ लोगों के अंदर यह ख़्याल पैदा हुआ कि रसूल हमारे लिए मुसीबत बनकर आया है। मगर यह वही बात है जो ऐन मत्लूब है। हक की दावत इसीलिए उठती है कि लोगों को बताया जाए कि उनकी कुव्वतों और सलाहियतों का मसरफ आख़िरत की दुनिया है न कि मौजूदा दुनिया। इसलिए अगर रसूल का लाया हुआ दीन इख़्तियार करने में दुनियावी नक़्शा बिगड़ता हुआ नजर आए तो इस पर आदमी को मुतमइन रहना चाहिए। क्योंकि इसका मतलब यह है कि उसकी मताअ (सम्पत्ति) को ख़ुदा ने आख़िरत के लिए कुबूल कर लिया।

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ · بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ · تِسْعُ اٰيَاتٍ وَّعَشْرُ رُكُوْعًا

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝

आयतें-109 सूरह-10. यूनुस रुकूअ-11

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। ये पुरहिक्मत (तत्वदर्शितामय) किताब की आयतें हैं। क्यों लोगों को इस पर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स पर 'वही' (प्रकाशना) की कि लोगों को डराओ और जो ईमान लाएं उन्हें ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के

पास सच्चा मर्तबा है। मुंकिरों ने कहा कि यह शख़्स तो खुला जादूगर है। (1-2)

पैग़म्बर का कलाम इंतिहाई मोहकम (ठोस) दलाइल पर आधारित होता है। वह अपने ग़ैर मामूली अंदाज की बिना पर ख़ुद इस बात का सुबूत होता है कि वह ख़ुदा की तरफ से बोल रहा है। इसके बावजूद हर जमाने में लोगों ने पैग़म्बर का इंकार किया। इसकी वजह इंसान की जाहिरपरस्ती है। पैग़म्बर अपने समकालीन की नजर में आम इंसानों की तरह बस एक इंसान होता है। उसके गिर्द अभी अज्मत की वह तारीख़ जमा नहीं होती जो बाद के जमाने में उसके नाम के साथ वाबस्ता हो जाती है। इसलिए पैग़म्बर के जमाने के लोग पैग़म्बर को महज एक इंसान समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। वे पैग़म्बर को न ख़ुदा के भेजे हुए की हैसियत से देख पाते और न मुस्तकबिल में बनने वाली तारीख़ के एतबार से इसका अंदाजा कर पाते जबकि हर आदमी उसकी पैग़म्बराना अज्मत को मानने पर मजबूर होगा।

पैग़म्बर का कलाम सरापा एजाज (मोजिजा) होता है जो सुनने वालों को बेदलील कर देता है। मगर मुंकिरीन इसकी अहमियत को घटाने के लिए यह कह देते हैं कि यह अदबी जादूगरी है। वे दलील के मैदान में अपने आपको आजिज पाकर उसके ऊपर ऐब लगाने लगते हैं। इस तरह वे पैग़म्बर के कलाम की सदाकत को मुशतबह (संदिग्ध) करते हैं। पैग़म्बर का कलाम जिन लोगों को मफतूह (विजित) कर रहा था उनके बारे में यह तअस्सुर देते हैं कि वे महज सादगी में पड़े हुए हैं, वर्ना यह सारा मामला अल्फाज के फरेब के सिवा और कुछ नहीं। यह जबान की जादूगरी है न कि कोई वाक़ई अहमियत की चीज।

पैग़म्बर का अस्ल मिशन इंजार व तब्शीर है। यानी ख़ुदा की पकड़ से डराना और जो लोग खुदा से डर कर दुनिया में रहने के लिए तैयार हों उन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी देना। पैग़म्बर इसलिए आता है कि लोगों को इस हकीकत से आगाह कर दे कि आदमी इस दुनिया में आजाद और ख़ुदमुख़्तार नहीं है और न जिंदगी का किस्सा आदमी की मौत के साथ ख़त्म हो जाने वाला है। बल्कि मौत के बाद अबदी जिंदगी है और आदमी को सबसे ज्यादा उसी की फिक्र करना चाहिए। जो शख़्स ग़फलत बरतेगा या सरकशी करेगा वह मौत के बाद की दुनिया में इस हाल में पहुंचेगा कि वहां उसके लिए दुख के सिवा और कुछ न होगा।

जाहिरपरस्त इंसान हमेशा यह समझता रहा है कि इज्जत और तरक्की उस शख़्स के लिए है जिसके पास दुनिया का इक्तेदार है, जो दुनिया की दौलत का मालिक है। पैग़म्बर बताता है कि यह सरासर धोखा है। यह इज्जत व तरक्की तो वह है जो मौजूदा आरजी जिंदगी में इंसानों के दर्मियान मिलती है। मगर इज्जत और तरक्की दरअस्ल वह है जो मुस्तकिल जिंदगी में ख़ुदा के यहां हासिल हो। वही इज्जत व तरक्की हकीकी है और इसी के साथ दाइमी भी।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ اِنَّهٗ

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ④

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों (चरणों) में पैदा किया, फिर वह अर्श पर कायम हुआ। वही मामलात का इंतिजाम करता है। उसकी इजाजत के बग़ैर कोई सिफारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा रब है पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं। उसी की तरफ तुम सबको लौट कर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। बेशक वह पैदाइश की इब्तिदा करता है, फिर वह दुबारा पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें इंसाफ के साथ बदला दे। और जिन्होंने इंकार किया उनके इंकार के बदले उनके लिए खौलता पानी और दर्दनाक अजाब है। (3-4)

कायनात में मुख़्तलिफ किस्म की चीजें हैं। इल्मी मुताला बताता है कि इन चीजों का जुहूर एक ही वक्त में नहीं हुआ बल्कि तदरीज (क्रम) के साथ एक के बाद एक हुआ है। क़ुरआन इस तदरीजी तख़्लीक को छः अदवार (Periods) में तक्सीम करता है। यह दौरी (चरण बद्ध) तख़्लीक साबित करती है कि कायनात की पैदाइश शुऊरी मंसूबे के तहत हुई है। फिर कायनात का मुताला यह भी बताता है कि उसका निजाम हद दर्जा मोहकम नियमों के तहत चल रहा है। हर चीज ठीक उसी तरह अमल करती है जिस तरह सामूहिक तकाज़े के तहत उसे अमल करना चाहिए। यह वाक़्या इस बात का वाज़ेह सुबूत है कि इस निज़ामे कायनात का एक ज़िंदा मुदब्बिर (संचालक) है जो हर लम्हा उसका इंतजाम कर रहा है।

कायनात का यह हैरानकुन निजाम ख़ुद ही पुकार रहा है कि उसका मालिक इतना कामिल और इतना अजीम है जिसके यहां किसी सिफ़ारिशी की सिफारिश चलने का कोई सवाल नहीं। कायनात अपनी खुसूसियात के आइने में अपने ख़ालिक की ख़ुसूसियात को बता रही है।

सारी कायनात में 'किस्त' (न्याय) का निजाम कायम है। यहां हर एक के साथ यह हो रहा है कि जो कुछ वह करता है उसी के मुताबिक नतीजा उसके सामने आता है। हर एक को वही मिलता है जो उसने किया था और हर एक से वह छिन जाता है जिसके लिए उसने नहीं किया था। जमीन का जो हिस्सा रात के असबाब जमा करे वहां तारीकी फैल कर रहती है और जमीन का जो हिस्सा रोशनी के असबाब पैदा करे उसके ऊपर रोशन सूरज चमक कर रहता है।

यह माद्दी (भौतिक) नताइज का हाल है। मगर अख़्लाकी नताइज के मामले में दुनिया की तस्वीर बिल्कुल मुख़्तलिफ नजर आती है। इंसान नेकी करता है और उसे नेकी का फल नहीं मिलता। इंसान सरकशी करता है मगर उसकी सरकशी अपना नतीजा दिखाए बग़ैर जारी रहती है। ख़ालिक की जो मर्जी उसकी दूसरी मख़्लूक़ात (जीवों) में चल रही है उसकी वही मर्जी इंसान के मामलात में क्यों जाहिर नहीं होती।

इसका जवाब यह है कि इंसान की जिंदगी में ख़ुदाई इंसाफ के जुहूर को ख़ुदा ने बाद को आने वाली दुनिया के लिए मुवख़्ख़र (लंबित) कर दिया है। पहली जिंदगी इंसान को अमल के लिए दी गई है, दूसरी जिंदगी उसे अपने अमल का नतीजा पाने के लिए दी जाएगी। और दूसरी ज़िंदगी का ज़ुहूर यक़ीनन इतना ही मुमकिन है जितना पहली ज़िंदगी का ज़ुहूर।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑤ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ⑥

अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चांद को रोशनी दी और उसकी मंजिलें मुकर्रर कर दीं ताकि तुम वर्षों का शुमार और हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ बेमक्सद नहीं बनाया है। वह निशानियां खोल कर बयान करता है उनके लिए जो समझ रखते हैं। यकीनन रात और दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और जमीन में पैदा किया है उनमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो डरते हैं। (5-6)

सूरज हमारी जमीन से निहायत दुरुस्त फ़ासले पर कायम है, यही वजह है कि वह हमारे लिए रोशनी और हरारत जैसी नेमतों का ख़ज़ाना बना हुआ है। अगर इस अंदाजे में फ़र्क़ हो जाए तो सूरज हमारे लिए सूरज न रहे बल्कि आग का जहन्नम बन जाए, वह जिंदगी के बजाए मौत का पैग़ाम साबित हो। चांद एक हददर्जा रियाजियाती (गणितीय) हिसाब के मुताबिक अपने मदार (कक्ष) पर ठीक-ठीक गर्दिश करता है। इसी बिना पर यह मुमकिन होता है कि चांद बजाते ख़ुद बेनूर होने के बावजूद हमारे लिए न सिर्फ ठंडी रोशनी दे बल्कि महीने और साल की कुदरती तक्वीम (कलेंडर) भी फराहम करे। ये फ़ल्कियाती (आकाशीय) निशानियां साबित करती हैं कि इस कायनात में गहरी मक्सदियत है, और मक्सदियत वाली कायनात का आख़िरी अंजाम बेमक्सद नहीं हो सकता।

फिर हमारी दुनिया में रात के बाद दिन का आना माद्दी तमसील (भौतिक प्रक्रिया) की जबान में इस अख़्लाक़ी हक़ीक़त को बता रहा है कि मौजूदा दुनिया में यह क़ानून नाफ़िज़ है कि तारीकी के बाद रोशनी फैले, अंधेरे के बाद उजाले का जुहूर हो। यहां हुक़ूक़ की पामाली के बाद हुक़ूक़ की अदायगी का निजाम आने वाला है। इंसान की सरकशी की जगह ख़ुदाई इंसाफ को गलबा मिलने वाला है। यहां उस वक्त का आना सुनिश्चित है जबकि धांधली ख़त्म हो और हक के एतराफ का माहौल चारों तरफ कायम हो जाए।

आख़िरत की हक़ीक़तों को ख़ुदा ने निशानियों के अंदाज में जाहिर किया है। बअल्फ़ाज़े दीगर, ख़ुदा मौजूदा दुनिया में दलील के रूप में जाहिर होता है न कि महसूस मुशाहिदे (अवलोकन)

के रूप में। फिर ख़ुदा जिस रूप में अपना जलवा दिखाता है उसी रूप में हम उसे पा सकते हैं न कि किसी और रूप में।

ख़ुदा ने इस दुनिया में हिदायत के रास्ते खोल रखे हैं मगर यह हिदायत उन्हीं का मुक़द्दर है जो ख़ुदाई नक़्शे के मुताबिक उसकी पैरवी करने के लिए तैयार हों। यहां वही लोग सही रास्ते पर चलने की तौफ़ीक पाएंगे जो दलील की जबान में बात को समझने और मानने के लिए तैयार हों। जो लोग सच्ची दलील के आगे न झुकें वे गोया ख़ुदा के आगे नहीं झुके। उन्होंने ख़ुदा को नहीं माना। ऐसे लोगों को अपने लिए जहन्नम के सिवा किसी और चीज का इंतिजार न करना चाहिए।

जमीन व आसमान में अगरचे बेशुमार निशानियां फैली हुई हैं मगर वे उन्हीं लोगों के लिए सबक बनती हैं जो डर रखने वाले हैं। डर या अंदेशा वह चीज है जो आदमी को संजीदा बनाता है। जब तक आदमी किसी मामले में संजीदा न हो वह उस मामले पर पूरा ध्यान नहीं देगा और न उसके पहलुओं को समझेगा। पूरी कायनात एक जबरदस्त तख़्लीकी तवाजुन (संतुलन) में जकड़ी हुई है। यह इस बात का खुला हुआ इशारा है कि कायनात का मालिक ऐसा मालिक है जो इंसान को पकड़ने की ताकत रखता है। इसी तरह पहली जिंदगी जिसका हम तजर्बा कर रहे हैं वह इसका यकीनी सुबूत है कि दूसरी जिंदगी भी मुमकिन है। मौजूदा दुनिया में माद्दी नताइज का निकलना मगर अख़्लाकी नताइज का न निकलना तकाजा करता है कि एक और दुनिया बने जहां अख़्लाकी नताइज अपनी पूरी सूरत में जाहिर हों। ये सब इंतिहाई मोहकम बातें हैं मगर इनका मोहकम होना वही शख़्स जानेगा जो अंदेशे की नफ्सियात के तहत जिंदगी के मामले को देखता हो।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ ءَايَٰتِنَا غَٰفِلُونَ ﴿٧﴾ أُولَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُم بِإِيمَٰنِهِمْ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَٰرُ فِي جَنَّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٩﴾ دَعْوَىٰهُمْ فِيهَا سُبْحَٰنَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَٰمٌ وَءَاخِرُ دَعْوَىٰهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٠﴾

बेशक जो लोग हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की जिंदगी पर राजी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से बेपरवा हैं, उनका ठिकाना जहन्नम होगा इस सबब से कि जो वे करते थे। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उन्हें पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के बाग़ों में। उसमें उनका कौल होगा कि ऐ अल्लाह तू पाक है। और मुलाकात उनकी सलाम होगी। और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (7-10)

जहन्नम किसके लिए है। उन लोगों के लिए जो उस दिन को भूले हुए हों जबकि ख़ुदा से उनका सामना होगा। जो आख़िरत की अबदी (चिरस्थाई) नेमतों के मुकाबले में दुनिया की आरजी (क्षणिका) चीजों पर राजी हो गए हों। जिनका यह हाल हो कि दुनिया में जो कुछ उन्हें इम्तेहान के तौर पर मिला है उसी पर वे मुतमइन हो जाएं। जो ग़ैर ख़ुदाई चीजों में इतना दिल लगा लें कि ख़ुदा की तरफ से जाहिर की जानी वाली हकीकतों से ग़ाफ़िल हो जाएं। यह सब ख़ुदा के नजदीक जहन्नमी रास्तों में चलना है, और जो लोग जहन्नमी रास्तों पर चल रहे हों वे आख़िरकार जहन्नम के सिवा और कहां पहुंचेंगे।

'अल्लाह उन्हें उनके ईमान की वजह से जन्नत की मंजिल तक पहुंचाएगा' इससे मालूम हुआ कि ईमान आदमी के लिए रहनुमाई है। वह आदमी को ग़लत राहों से बचा कर सही रास्ते पर चलाता रहता है, यहां तक कि उसे हकीकी मंजिल तक पहुंचा देता है।

ईमान ख़ुदा की दरयाफ्त (खोज) है। जिस आदमी को ईमान हासिल हो जाए उसे इल्म का सिरा हाथ आ जाता है, वह इस काबिल हो जाता है कि हर मामले में सही मकाम से अपनी सोच का आग़ाज कर सके। वह फिक्री (वैचारिक) बेराहरवी से बचकर फिक्री सेहत का मालिक बन जाए। मजीद यह कि ख़ुदा को मानना किसी किताबी फ़लसफे को मानना नहीं है। यह एक जिंदा ख़ुदा को मानना है जो बिलआख़िर तमाम इंसानों को अपने यहां जमा करके उनका हिसाब लेने वाला है। इस तरह ईमान आदमी के अंदर अपने अंजाम के बारे में अंदेशे की कैफियत पैदा करके उसे इंतिहाई संजीदा इंसान बना देता है। वह अपने को मजबूर पाता है कि अपनी तमाम कार्रवाइयों को सही और ग़लत की रोशनी में देखे और सिर्फ सही रुख़ पर चले और ग़लत रुख़ पर चलने से हमेशा परहेज करे।

इस तरह ईमान आदमी को सही फ़िक्र (सोच) भी देता है और इसी के साथ वह कुव्वते तमीज (सही गलत की पहचान) भी जो उसके लिए मुस्तकिल अमली रहनुमा बन जाए।

आख़िरत की जन्नत उन लोगों के लिए है जिन्होंने दुनिया में अपने आपको उसका मुस्तहिक साबित किया हो। आख़िरत ख़ुदा के बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) जलवों में सरशार होने का मकाम है, वहां बसने का मौका सिर्फ उन लोगों को मिलेगा जो दुनिया में ख़ुदा के बिलवास्ता (परोक्ष) जलवों से सरशार हुए थे। आख़िरत में लोगों के दिल एक दूसरे के लिए सलामती और ख़ैरख़्वाही के जज्बात से भरे हुए होंगे, इसलिए वहां की आबादी में वही लोग जगह पाएंगे जिन्होंने दुनिया में इस बात का सुबूत दिया था कि दूसरों के लिए उनके दिल में सलामती और ख़ैरख़्वाही के सिवा कोई दूसरा जज्बा नहीं।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُم بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَٰنَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنۢبِهِۦٓ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَآئِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُۥ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَآ إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُۥ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

अगर अल्लाह लोगों के लिए अजाब उसी तरह जल्दी पहुंचा दे जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुद्दत ख़त्म कर दी गई होती। लेकिन हम उन लोगों को जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं। और इंसान को जब कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह खड़े और बैठे और लेटे हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक्त पर हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुजर जाने वालों के लिए उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। (11-12)

ख़ुदा का कानून यह है कि कोई शख़्स काबिले इनाम अमल करे तो उसका अमल फौरन उसके आमालनामे में शामिल कर दिया जाता है। लेकिन अगर कोई शख़्स काबिले सजा फेअल करता है तो ख़ुदा उसे ढील देता है ताकि वह किसी न किसी मोड़ पर सचेत होकर अपनी इस्लाह कर ले। ख़ुदा का यह कानून इंसान के लिए बहुत बड़ी नेमत है, वर्ना इंसान इतना जालिम है कि वह हर वक्त बुराई करने पर आमादा रहता है, और अगर लोगों को उनकी बुराइयों पर फौरन पकड़ा जाने लगे तो उनकी मोहलतें उम्र बहुत जल्द ख़त्म हो जाए और जमीन की पुश्त चलने वाले इंसानों से ख़ाली हो जाए।

दुनिया की जिंदगी में सरकश वे लोग बनते हैं जो दुनिया में यह समझ कर रहें कि मरने के बाद उन्हें ख़ुदा का सामना नहीं करना होगा। जो पकड़ के अंदेशे से ख़ाली होकर जिंदगी गुजारते हैं। जो समझते हैं कि वे आजाद हैं कि जो धांधली चाहें करें और जो फसाद चाहें फैलाएं। हकीकत यह है कि लोगों के दर्मियान सच्चाई और इंसाफ के साथ मामला करने का एक ही हकीकी मुहर्रिक है। और वह यह कि आदमी यह समझे कि सब ताकतवरों के ऊपर एक ताकतवर है। हर आदमी उसके आगे बेबस है। वह एक दिन तमाम इंसानों को पकड़ेगा और हर एक मजबूर होगा कि अपने बारे में उसके फैसले को तस्लीम करे।

दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि आदमी बार-बार किसी न किसी तकलीफ या हादसे की जद में आ जाता है, आदमी महसूस करने लगता है कि ख़ारजी (वाहय) ताकतों के मुकाबले में वह बिल्कुल बेबस है। उस वक्त आदमी बेइख़्तियार होकर ख़ुदा को पुकारने लगता है। वह ख़ुदा की कुदरत के मुकाबले में अपने इज्ज का एतराफ कर लेता है। मगर यह हालत सिर्फ उस वक्त तक रहती है जब तक वह मुसीबतों की गिरफ्त में हो, मुसीबत से नजात पाते ही वह दुबारा वैसा ही ग़ाफिल और सरकश बन जाता है जैसा वह पहले था। ऐसे लोगों के इज्हारे बंदगी को ख़ुदा तस्लीम नहीं करता। क्योंकि इज्हारे बंदगी वह मत्लूब है जो आजादाना हालात में की जाए, मजबूराना हालात में जाहिर की हुई बंदगी की ख़ुदा के नजदीक कोई कीमत नहीं।

आदमी एक तौजीहपसंद मख़्लूक है। वह हर अमल का एक जवाज (औचित्य) तलाश करता है। अगर आदमी सरकशी को अपने लिए पसंद कर ले तो उसका जेहन भी उसी तरफ मुड़ जाएगा। वह अमलन सरकशी करेगा और उसका जेहन उसकी सरकशी को दुरुस्त साबित

करने के लिए उसे ख़ूबसूरत अल्फाज फराहम करता रहेगा। इसी का नाम तजईने आमाल है। आदमी अपनी गलतियों को ख़ुशनुमा अल्फाज में बयान करके अपने को मुतमइन कर लेता है कि वह हक पर है। मगर यह ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स आग का अंगारा अपने हाथ में ले ले और समझे कि वह उसे नहीं जलाएगा क्योंकि उसका नाम उसने सुर्ख़ फूल रख दिया है।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ لِنَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

और हमने तुमसे पहले कौमों को हलाक किया जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने। हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को। फिर हमने उनके बाद तुम्हें मुल्क में जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसा अमल करते हो। (13-14)

'पैग़म्बर अपनी कौमों के पास बय्यिनात के साथ आए मगर उन्होंने न माना।' बय्यिनह बहुवचन बय्यनात के मअना दलील के हैं, इससे मालूम होता है कि ख़ुदा का दाओ हमेशा बय्यिनात की बुनियाद पर उठता है। लोगों को उसे दलाइल की सतह पर पहचानना पड़ता है। जो लोगा जाहिरी अज्मतों और अवामी इस्तकबालियों में ख़ुदा के दाओ को पाना चाहें वे कभी उसे नहीं पाएंगे, क्योंकि खुदा का दाओ वहां मौजूद ही नहीं होता। नबी मोजिजा दिखाता है। मगर मोजिजा आख़िरी मरहले में इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के लिए आता है, दावती मरहले में सारा काम दलाइल की बुनियाद पर होता है।

किसी शख़्स या गिरोह का जालिम होना यह है कि वह दलील के रूप में जाहिर होने वाली दावते ख़ुदावंदी को न पहचाने और अपने ख़ुदसाख़्ता मेयार पर न पाने की वजह से उसका इंकार कर दे। ऐसे लोग अपनी इस रविश की वजह से ख़ुदाई कानून की जद में आ जाते हैं

माजी की जिन कौमों पर इंकारे नुबुव्वत के जुर्म में ख़ुदा का अजाब नाजिल हुआ वे सिरे से नुबुव्वत की मुंकिर न थीं। ये तमाम कौमें किसी न किसी साबिक (पूर्ववर्ती) पैग़म्बर को मानती थीं। अलबत्ता उन्होंने वक्त के पैग़म्बर को मानने से इंकार कर दिया था। पिछले पैग़म्बर का मामला यह था कि उसकी पुश्त पर तारीख़ की तस्दीकात (पुष्टियां) कायम हो गई थीं और कौमी अस्बियतें उसके साथ वाबस्ता हो चुकी थीं। जबकि मुआसिर (समकालीन) पैग़म्बर अभी इस किस्म की इजाफी ख़ुसूसियात (अतिरिक्त विशिष्टताओं) से ख़ाली था। उन्होंने उस गुजरे हुए पैग़म्बर का इकरार किया जो नस्लों की रिवायतों के नतीजे में उनका कौमी पैग़म्बर बन चुका था, जिसके साथ अपने को मंसूब करना तारीख़ी अज्मत के मीनार से अपने को मंसूब करने के हममअना था। उन्होंने अपने कौमी पैग़म्बर को पैगम्बर माना मगर उस पैग़म्बर का इंकार कर दिया जिसे सिर्फ दलील और बुरहान (सुस्पष्ट तर्क) के जरिए जाना जा सकता था।

यह जुर्म ख़ुदा की नजर में इतना शदीद था कि वे लोग नबी के मुंकिर करार देकर हलाक

कर दिए गए।

'फिर हमने इसके बाद तुम्हें मुल्क में ख़लीफा बनाया।' ख़लीफा के अस्ल मअना हैं बाद को आने वाला। यह लफ्ज जानशीन (उत्तराधिकारी), ख़ास तौर पर, इक्तेदार (सत्ता) में जानशीन के लिए बोला जाता है। यह जानशीनी इंसान की होती है न कि ख़ुदा की। कोई इंसान इक्तेदार में ख़ुदा का जानशीन नहीं हो सकता। इंसान हमेशा किसी मख़्लूक का जानशीन होता है। कुरआन में जहां भी ख़िलाफत का लफ्ज आया है वह मख़्लूक की जानशीनी के लिए है न कि ख़ुदा की जानशीनी के लिए।

किसी को ख़लीफा (जानशीन) बनाना एजाज के लिए नहीं बल्कि सिर्फ इम्तेहान के लिए होता है। जानशीन बनाने का मतलब एक के बाद दूसरे को काम का मौका देना है, एक कौम के बाद दूसरी कौम को इम्तेहान के मैदान में खड़ा करना है। जैसे हिंदुस्तान में देसी राजाओं की जगह मुग़लों को इख़्तियार दिया गया। फिर उन्हें हटाकर अंग्रेज उनके जानशीन बनाए गए। इसके बाद उन्हें मुल्क से निकाल कर अक्सरियती फिरके के लिए जगह ख़ाली की गई। इनमें से हर बाद को आने वाला अपने पहले का ख़लीफा (उत्तराधिकारी) था।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِنْ قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾

और जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं है वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और कुरआन लाओ या इसको बदल दो। कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से इसको बदल दूं। मैं तो सिर्फ उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। कहो कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता। मैं इससे पहले तुम्हारे दर्मियान एक उम्र बसर कर चुका हूं, फिर क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते, उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए। यकीनन मुजरिमों को फलाह हासिल नहीं होती। (15-17)

मक्का के कुरैश ख़ुदा और रसूल को मानते थे। वे अपने को मिल्लते इब्राहीम का पैरोकार

कहते थे। यहां तक कि इस्लाम की बहुत सी दीनी इस्तिलाहें (शब्दावलियां) मसलन सलात, सोम, जकात, हज वग़ैरह वही हैं जो पहले से उनके यहां राइज थीं। इसके बावजूद क्यों उन्होंने कहा कि दूसरा कुरआन लाओ या इस कुरआन में कुछ तरमीम (संशोधन) कर दो तब हम इसको मानेंगे।

इसकी वजह यह थी कि कुरआन में ख़ुदा के ख़ालिस दीन का एलान था। जबकि कुरैश ख़ुदा के दीन के नाम पर एक मिलावटी दीन को इख़्तियार किए हुए थे।

कुरआन की तौहीद (एकेश्वरवाद) से उनके मुश्रिकाना अकीदा-ए-ख़ुदा पर जद पड़ती थी। कुरआन के तसव्वुरे इबादत की रोशनी में उनकी इबादतें महज खेल तमाशा मालूम होती थीं। वे पैग़म्बर को अपने कौमी फख़्र का निशान बनाए हुए थे और कुरआन उनसे एक ऐसे पैग़म्बर को मानने का मुतालबा कर रहा था जो उनकी अमली जिंदगी में रहनुमा का दर्जा हासिल कर ले। उन्होंने काबे की ख़िदमत को अपनी दीनदारी का सबसे बड़ा सुबूत समझ रखा था जबकि कुरआन ने बताया कि दीनदारी यह है कि आदमी खुदा से डरे और जो कुछ करे आख़िरत को सामने रखकर करे।

आदमी कुछ अल्फाज बोलकर हक को नजरअंदाज कर देता है। इसकी वजह यह है कि उसके दिल में 'खटका' नहीं होता। अगर आदमी के दिल में यह खटका लगा हुआ हो कि वह अपने कौल व फेअल के लिए ख़ुदा के यहां जवाबदेह है तो वह फौरन संजीदा हो जाएगा। और जो शख़्स संजीदा हो वह मामले को हकीकतपसंदी की नजर से देखेगा, वह सरसरी तौर पर उसे नजरअंदाज नहीं कर सकता।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुक्सान पहुंचा सकें और न नफा पहुंचा सकें। और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफारिशी हैं। कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की ख़बर देते हो जो उसे आसमानों और जमीन में मालूम नहीं। वह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक करते हैं। और लोग एक ही उम्मत थे। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ किया। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके दर्मियान उस अम्र (मामले) का फैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़्तेलाफ कर रहे हैं। (18-19)

हमारी दुनिया में जो वाकेयात हो रहे हैं वे बजाहिर माद्दी असबाब के तहत हो रहे हैं। मगर हकीकत यह है कि तमाम वाकेयात के पीछे ख़ुदा का तसर्रुफ (नियति) काम कर रहा

है। इस दुनिया में किसी को कोई जाती इख़्तियार हासिल ही नहीं। तौहीद यह है कि आदमी जाहिरी चीजों से गुजर कर ग़ैब में छुपे हुए ख़ुदा को पा ले। इसके मुकाबले में शिर्क यह है कि आदमी जाहिरी चीजों में अटक कर रह जाए। वे चीजों ही को चीजों के ख़ालिक का मकाम दे दे।

इस दुनिया में ख़ुदा के सिवा किसी के पास नफा देने या नुक्सान पहुंचाने की ताकत नहीं। जो आदमी इस हकीकत को पा लेता है उसकी तमाम तवज्जोह ख़ुदा की तरफ लग जाती है। वह ख़ुदा ही की परस्तिश करता है। वह उसी से डरता है और उसी से उम्मीदें कायम करता है। वह अपना सब कुछ एक ख़ुदा को बना लेता है। इसके बरअक्स जो लोग चीजों में अटके हुए हों वे अपने-अपने जौक के लिहाज से किसी ग़ैर ख़ुदा को अपना ख़ुदा बना लेते हैं और उन ग़ैर ख़ुदाओं से वही उम्मीदें और अंदेशे वाबस्ता कर लेते हैं जो दरहकीकत ख़ुदा-ए-वाहिद के साथ वाबस्ता करना चाहिए। इसी की एक सूरत शफाअत का अकीदा है। लोग यह फर्ज कर लेते हैं कि इंसानों या ग़ैर इंसानों में कुछ ऐसी बरतर हस्तियां हैं जो ख़ुदा की नजर में मुकद्दस हैं। ख़ुदा उनकी सुनता है और उनकी सिफारिश पर दुनियावी रिज्क या उख़रवी नजात के फैसले करता है। मगर इस किस्म का अकीदा बातिल है। वह ख़ुदा की ख़ुदाई का कमतर अंदाजा है।

ख़ुदा इस किस्म के हर शिर्क (ईश्वरत्व में साझीदारी) से पाक है। ख़ुदा अपनी सिफात का जो तआरुफ अपनी अजीम कायनात में करा रहा है उसके लिहाज से इस किस्म के तमाम अकीदे बिल्कुल बेजोड़ हैं। ऐसे किसी अकीदे का मतलब यह है कि ख़ुदा वह नहीं है जो बजाहिर अपनी तख़्लीकी सिफात के आइने में नजर आ रहा है या फिर ख़ुदा की सिफ्तों में तजाद (अन्तर्विरोध) है। जाहिर है कि इन दोनों में से कोई चीज मुमकिन नहीं।

ख़ुदा ने इंसानियत का आग़ाज दीने फ़ितरत से किया था। उस वक्त तमाम इंसानों का एक ही दीन था। इसके बाद लोगों ने फर्क करके दीन के मुख़्तलिफ रूप बना लिए। इसकी वजह उस आजादी का ग़लत इस्तेमाल है जो लोगों को इम्तेहान की ग़रज से दी गई है। अगर ख़ुदा जाहिर हो जाए तो उसकी ताकतों को देखकर लोगों की सरकशी ख़त्म हो जाए और अचानक इख़्तेलाफ की जगह इत्तेहाद पैदा हो जाए। क्योंकि शिद्दे ख़ौफ राय के दअद्दुद (मत-भिन्नता) को ख़त्म कर देता है। मगर ख़ुदा कियामत से पहले इस सूरतेहाल में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) नहीं करेगा। मौजूदा दुनिया को ख़ुदा ने इम्तेहान के लिए बनाया है और इम्तेहान की फिजा बाकी रखने के लिए जरूरी है कि हकीकत छुपी रहे और लोगों को मौका हो कि वे अपनी अक्ल को सही रुख़ पर भी इस्तेमाल कर सकें और ग़लत रुख़ पर भी।

وَيَقُولُونَ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا ٱلْغَيْبُ لِلَّهِ فَٱنتَظِرُوٓا۟ إِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِىٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

और वे कहते हैं कि नबी पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी

गई, कहो कि ग़ैब की ख़बर तो अल्लाह ही को है। तुम लोग इंतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में से हूं। और जब कोई तकलीफ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं तो वे फौरन हमारी निशानियों के मामले में हीले बनाने लगते हैं। कहो कि ख़ुदा अपने हीलों में उनसे भी ज्यादा तेज है। यकीनन हमारे फरिश्ते तुम्हारी हीलाबाजियों को लिख रहे हैं। (20-21)

मक्का के लोग जब मुसलसल इंकार की रविश पर कायम रहे तो ख़ुदा ने उन पर कहत भेजा जो सात साल मुसलसल रहा और बिलआख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ के बाद ख़त्म हुआ। यह एक निशानी थी जिससे उन्हें यह सबक लेना चाहिए था कि रसूल का इंकार करने के बाद वे ख़ुदाई पकड़ की जद में आ जाएंगे। मगर उनका हाल यह हुआ कि जब तक कहत रहा विनती-विलाप करते रहे और जब कहत रुख़्सत हुआ तो कहने लगे कि यह तो जमाने की गर्दिशें हैं जो हर एक के साथ पेश आती हैं। इसका रसूल को मानने या न मानने से कोई तअल्लुक नहीं।

पैग़म्बर से लोग निशानी मांगते हैं। मगर अस्ल सवाल निशानी के जुहूर का नहीं बल्कि उससे सबक लेने का है। क्योंकि निशानी सिर्फ देखने के लिए होती है वह मजबूर करने के लिए नहीं होती। निशानी जाहिर होने के बाद भी यह आदमी के अपने इख़्तियार में होता है कि वह उसे माने या झूठी तौजीह निकाल कर उसे रद्द कर दे।

ताहम जब ख़ुदा की आख़िरी निशानी जाहिर होती है तो उसके मुकाबले में इंसान को कोई इख़्तियार नहीं होता। यह आख़िरी निशानी इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बाद ख़ुदा की अदालत बनकर आती है और वह मुख़्तलिफ पैग़म्बरों के लिए मुख़्तलिफ सूरतों में आती है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के लिए मुख़्तलिफ मस्लेहतों के बिना पर यह निशानी इस सूरत में जाहिर हुई कि मुंकिरीन को मग़लूब करके मोमिनीन को उनके ऊपर ग़ालिब कर दिया गया। शाह अब्दुल कादिर साहब इस सिलसिले में मूजिहुल कुरआन में लिखते हैं 'यानी अगर कहें कि हम कैसे जानें कि तुम्हारी बात सच है। फरमाया कि आगे हक तआला इस दीन को रोशन करेगा और मुख़ालिफ जलील और बर्बाद हो जाएंगे। सो वैसा ही हुआ। सच की निशानी एक बार काफी है। और हर बार मुख़ालिफ जलील हों तो फैसला हो जाए। हालांकि फैसले का दिन दुनिया में नहीं।'

आदमी जब सरकशी करता है और इसकी वजह से उसका कुछ बिगड़ता हुआ नजर नहीं आता तो वह और भी ज्यादा ढीठ हो जाता है। वह समझता है कि वह ख़ुदा की पकड़ से बाहर है। हालांकि यह ऐन ख़ुदा की तदबीर होती है। ख़ुदा सरकश आदमी को ढील देता है ताकि वह बेफिक्र होकर ख़ूब सरकशी करे। और इस सरकशी के दौरान ख़ुदा के कारिंदे पर्दे में रहकर ख़ामोशी के साथ उसके तमाम अकवाल व अफआल (कथनी-करनी) को लिखते रहते हैं। यहां तक कि जब उसका वक्त पूरा हो जाता है तो अचानक मौत का फरिश्ता जाहिर होकर उसे पकड़ लेता है कि उसे उसके आमाल का हिसाब देने के लिए ख़ुदा के सामने हाजिर कर दे।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ
طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا
أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم ۖ مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

वह अल्लाह ही है जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है। चुनांचे जब तुम कश्ती में होते हो और कश्तियां लोगों को लेकर मुवाफ़िक़ हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे ख़ुश होते हैं कि यकायक तुंद हवा आती है और उन पर हर जानिब से मौजें उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए। उस वक्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो यकीनन हम शुक्रगुजार बंदे बनेंगे। फिर जब वह उन्हें नजात दे देता है तो फौरन ही जमीन में नाहक की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ है, दुनिया की जिंदगी का नफा उठा लो, फिर तुम्हें हमारी तरफ लौट कर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे। (22-23)

इंसान एक बेहद हस्सास (संवेदनशील) वजूद है। वह तकलीफ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। यही वजह है कि इंसान पर जब तकलीफ का कोई लम्हा आता है तो वह फौरन संजीदा हो जाता है। उस वक्त उसके जेहन से तमाम मस्नूई (बनावटी) पर्दे हट जाते हैं। फ़िक्र के लम्हात में आदमी उस हकीकत का एतराफ कर लेता है जिसका एतराफ करने के लिए वह बेफ़िक्री के लम्हात में तैयार न होता था।

इसकी एक मिसाल समुद्र का सफर है। समुद्र में सुकून हो और कश्ती मंजिल की तरफ रवां हो तो उसके मुसाफिरों के लिए यह बड़ा ख़ुशगवार लम्हा होता है। उस वक्त उनके अंदर एक झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझ लेते हैं कि उनका मामला दुरुस्त है, अब उसे कोई बिगाड़ने वाला नहीं।

इसके बाद समुद्री हवाएं उठती हैं। पहाड़ जैसी मौजें मुसाफिरों को चारों तरफ से घेर लेती हैं। उनके दर्मियान बड़े से बड़ा जहाज भी मामूली तिंके की तरह हिचकोले खाने लगता है। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि अब हलाकत के सिवा दूसरा कोई अंजाम नहीं। उस वक्त ख़ुदा के मुंकिर ख़ुदा का इकरार कर लेते हैं। देवताओं को पूजने वाले ख़ुदाए वाहिद को पुकारना शुरू करते हैं। अपनी कुव्वत और अपनी तदबीर पर भरोसा करने वाले हर दूसरी चीज

को छोड़कर सिर्फ ख़ुदा को याद करने लगते हैं। यह एक तजर्बाती सुबूत है कि तौहीद एक फितरी अकीदा है। तौहीद के सिवा दूसरे तमाम अकीदे बिल्कुल बेबुनियाद हैं।

यह तजर्बा बताता है कि ख़ुदा को न मानने के लिए आदमी चाहे कितने ही फलसफे पेश करे, हकीकतन इस किस्म की तमाम बातें बेफ़िक्री की नजरियासाजी हैं। इंसान अगर जाने कि दुनिया के मौके महज वक्ती तौर पर उसे इम्तेहान के लिए दिए गए हैं तो वह फौरन संजीदा हो जाए। उसके जेहन से तमाम मस्नूई दीवारें गिर जाएं और एक ख़ुदा को मानने के सिवा उसके लिए कोई चारा न रहे।

वह वक्त आने वाला है जब इंसान ख़ुदा के जलाल को देखकर कांप उठे और तमाम ख़ुदाई बातों का इकरार करने पर मजबूर हो जाए। मगर अक्लमंद वह है जो मौजूदा जिंदगी के तजर्बात में आने वाली जिंदगी की हकीकतों को देख ले और आज ही उस बात को मान ले जिसे वह कल मानने पर मजबूर होगा। मगर कल का मानना उसके कुछ काम न आएगा।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ
أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا
كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

दुनिया की जिंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी कि हमने उसे आसमान से बरसाया तो जमीन का सब्जा ख़ूब निकला जिसे आदमी खाते हैं और जिसे जानवर खाते हैं। यहां तक कि जब जमीन पूरी रौनक पर आ गई और संवर उठी और जमीन वालों ने गुमान कर लिया कि अब यह हमारे काबू में है तो अचानक उस पर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसे काट कर ढेर कर दिया गोया कल यहां कुछ था ही नहीं। इस तरह हम निशानियां खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (24)

दुनिया की जिंदगी इम्तेहान के लिए है। इसलिए यहां इंसान को मुकम्मल आजादी और हर किस्म के खुले मौके दिए गए हैं। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि इंसान आजाद है कि जो चाहे करे और जिस किस्म का मुस्तकबिल चाहे अपने लिए बनाए। मगर इन्हीं हालात के दौरान ऐसे वाकेयात भी रख दिए गए हैं जो सोचने वालों के लिए नसीहत का काम करते हैं, जो इस हकीकत की निशानदेही कर रहे हैं कि यह सब कुछ महज वक्ती है और बहुत जल्द उससे छिन जाने वाला है।

इन्हीं में से एक जमीन की सरसब्जी का वाक्या है। जब बारिश होती है तो जमीन हर किस्म की नबातात से लहलहा उठती है। आदमी उन्हें देखकर ख़ुश होता है। वह समझने लगता है कि मामला पूरी तरह उसके काबू में है और बहुत जल्द वह तैयार फस्ल का मालिक

बनने वाला है। ऐन उस वक्त अचानक कोई आफत आ जाती है। मसलन बगीला आ गया, ओले पड़ गए, टिड्डी दल पहुंच गया और एक लम्हे में सारी फस्ल का ख़ात्मा कर दिया।

यही हाल इंसानी जिंदगी का है। आदमी एक उम्दा जिस्म लेकर पैदा होता है। दुनिया के असबाब उसका साथ देते हैं और वह अपने लिए एक कामयाब और शानदार जिंदगी बना लेता है। अब उसके अंदर एक एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझता है कि उसका मामला उसके अपने इख़्तियार में है। इसके बाद किसी दिन या किसी रात में अचानक उसकी मौत आ जाती है। अपने आपको बाइख़्तियार समझने वाला यकायक अपने को इस हाल में पाता है कि मजबूरी और बेइख़्तियारी के सिवा उसके पास और कोई सरमाया नहीं। आदमी अगर इस हकीकत को सामने रखे तो वह दुनिया में कभी सरकश न बने, वह कभी किसी के साथ जुल्म व बेइंसाफी का तरीका इख़्तियार न करे।

وَاللَّهُ يَدْعُوٓا إِلَىٰ دَارِ السَّلَٰمِ وَيَهْدِي مَن يَشَآءُ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝٢٥ لِّلَّذِينَ
أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ
الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝٢٦ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّـَٔاتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ۖ مَّا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَأَنَّمَآ أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ
مُظْلِمًا ۚ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝٢٧

और अल्लाह सलामती (शांति) के घर की तरफ बुलाता है और वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उससे अधिक भी। और उनके चेहरों पर न स्याही छाएगी और न जिल्लत। यही जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और जिन्होंने बुराइयां कमाईं तो बुराई का बदला उसके बराबर है। और उन पर रुस्वाई छाई हुई होगी। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा। गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढांक दिए गए हैं। यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (25-27)

दुनिया के जाहिरी हालात से आदमी धोखा खा जाता है। वह वक्ती चीज को मुस्तकिल चीज समझ लेता है। उसका ख़्याल यह हो जाता है कि ख़ुशियों और राहतों की जिंदगी जो वह चाहता है वह उसे इसी मौजूदा दुनिया में हासिल हो सकती है। मगर इंसानी आरजुओं की दुनिया दरअस्ल आख़िरत में बनने वाली है और उसे वही शख़्स पाएगा जो ख़ुदा के बताए हुए तरीके के मुताबिक उसे हासिल करने की कोशिश करे।

दुनिया में आदमी बिलफर्ज सब कुछ हासिल कर ले तब भी वह इस पर कादिर नहीं कि अपनी जिंदगी को दुख और ग़म से पाक कर सके। यहां हर ख़ुशी के साथ कोई अंदेशा लगा हुआ है। यहां की हर कामयाबी बहुत जल्द किसी दुख की नज़्र हो जाती है। दुख और रंज से

ख़ाली जिंदगी एक ऐसी अनोखी जिंदगी है जो सिर्फ जन्नत के माहौल में आदमी को हासिल होगी। जो लोग इस राज को पा लें वही वे लोग हैं जो जन्नत का रास्ता इख़्तियार करेंगे और बिलआख़िर ख़ुदा की अबदी जन्नतों में पहुंचेंगे।

राहत और ख़ुशी की जिंदगी जो इंसान को बेहद मरग़ूब (प्रिय) है वह ख़ुदा के वफादार बंदों को कामिल तौर पर जन्नत में मिलेगी। मगर राहत और ख़ुशी का एक और दर्जा है जो मारूफ राहतों और ख़ुशियों से बहुत बुलन्द है। यह मालिके कायनात का दीदार है जो अहले जन्नत को ख़ुसूसी तौर पर हासिल होगा। जो ख़ुदा राहतों और लज्जतों का ख़ालिक है वह यकीनी तौर पर तमाम राहतों और लज्जतों का सबसे बड़ा ख़जाना है। हदीस में आया है कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोजख़ वाले दोजख़ में दाख़िल हो चुके होंगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा। ऐ जन्नत वालो, तुम्हारे लिए ख़ुदा का एक वादा बाकी है जिसे अब वह पूरा करना चाहता है। जन्नत वाले यह सुनकर कहेंगे कि वह क्या है। क्या हमारे पलड़े भारी नहीं कर दिए गए। क्या हमारे चेहरों को रोशन नहीं कर दिया गया। क्या ख़ुदा ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया और हमें आग से नहीं बचा लिया। इसके बाद उनके ऊपर से हिजाब उठा लिया जाएगा और वे अपने रब को देखने लगेंगे। पस ख़ुदा की कसम कोई नेमत जो ख़ुदा ने उन्हें दी है वह उनके लिए ख़ुदा को देखने से ज्यादा महबूब न होगी और न उससे ज्यादा उनकी आंखों को ठंडी करने वाली होगी। (तफ्सीर इब्नेकसीर)

आदमी के लिए इससे ज्यादा सख़्त हालत और कोई नहीं कि वह एक ऐसी बेबसी से दो चार हो जो अबदी है। वह अपने आपको एक ऐसी नाकामी में पड़ा हुआ पाए जो दुबारा कामयाबी में तब्दील नहीं हो सकती। जो लोग आख़िरत में जहन्नम के बाशिंदे करार दिए जाएंगे वह इसी हालत से दो चार होंगे। उनके चेहरे शदीद मायूसी की वजह से ऐसे काले हो जाएंगे गोया कि वे तह-ब-तह अंधेरे में डूब गए हैं। आदमी को अगरचे उसकी बुराई का बदला इतना ही दिया जाएगा जितना उसने बुराई की है। मगर अबदी महरूमी का एहसास उसके लिए इतना सख़्त होगा कि उसका चेहरा तक इसकी वजह से स्याह पड़ जाएगा।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا
بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ۝٢٨ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًۢا بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَٰفِلِينَ ۝٢٩ هُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ أَسْلَفَتْ
وَرُدُّوٓا إِلَى اللَّهِ مَوْلَىٰهُمُ الْحَقِّ ۖ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝٣٠

और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी। फिर हम उनके दर्मियान तफरीक (विभेद) कर देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे। अल्लाह हमारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे। उस वक्त हर शख़्स अपने उस अमल से दो चार होगा जो उसने किया था

और लोग अल्लाह अपने मालिके हक़ीक़ी की तरफ़ लौटाए जाएंगे और जो झूठ उन्होंने गढ़े थे वे सब उनसे जाते रहेंगे। (28-30)

शिर्क का पूरा कारोबार झूठी उम्मीदों पर कायम होता है, वे वाक़ेयात जो ख़ुदा के किए से हो रहे हैं उन्हें आदमी झूठे माबूदों की तरफ मंसूब कर देता है और इस तरह खुदसाख़्ता तसव्वुर के तहत उन्हें अपनी अकीदत व परस्तिश का मर्कज बना लेता है, अपने इन माबूदों के ऊपर उसका एतमाद इतना बढ़ता है कि वह समझ लेता है कि आख़िरत में भी वे जरूर ख़ुदा के मुकाबले में उसके मददगार बन जाएंगे। और उसे ख़ुदा की पकड़ से बचा लेंगे।

ये सरासर झूठी उम्मीदें हैं। मगर दुनिया की जिंदगी में उनका झूठ होना जाहिर नहीं होता क्योंकि यहां इम्तेहान की वजह से हर चीज पर ग़ैब का पर्दा पड़ा हुआ है। यहां आदमी को मौक़ा है कि वह वाक़ेयात को अपने फ़र्जी माबूदों की तरफ मंसूब करे और इस तरह उनकी माबूदियत पर मुतमइन हो जाए। मगर आख़िरत में सारी हकीकतें खुल जाएंगी। वहां मालूम होगा कि इस कायनात में एक ख़ुदा के सिवा किसी को कोई जोर हासिल न था।

मौजूदा दुनिया में आदमी इस ख़ुशफ़हमी में जी रहा है कि वह अपने बड़ों या अपने माबूदों की मदद से आख़िरत के मरहले में कामयाब हो जाएगा। मगर आख़िरत में अचानक उस पर खुलेगा कि उसका एतमाद सरासर झूठा था। यहां किसी को सिर्फ वही मिलेगा जो उसने ख़ुद किया था। फ़र्जी सहारे वहां इस तरह गायब हो जाएंगे जैसे कि उनका कोई वजूद ही न था।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝ كَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

कहो कि कौन तुम्हें आसमान और जमीन से रोजी देता है। या कौन है जो कान पर और आंखों पर इख़्तियार रखता है। और कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। और कौन मामलात का इंतिजाम कर रहा है। वे कहेंगे कि अल्लाह। कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं। पस वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार (पालनहार) हक़ीक़ी है। तौफ़ीक़ के बाद भटकने के सिवा और क्या है, तुम किधर फिरे जाते हो, इसी तरह तेरे रब की बात सरकशी करने वालों के हक में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान न लाएंगे। (31-33)

इंसान को रिज़्क़ की ज़रूरत है। यह रिज़्क़ इंसान को कैसे मिलता है। कायनात के मज्मूई अमल से। सारी कायनात हददर्जा हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ एक ख़ास रुख़ पर अमल करती है। तब यह मुमकिन होता है कि इंसान के लिए वह रिज़्क़ फ़राहम हो जिसके बग़ैर उसका वजूद इस जमीन पर मुमकिन नहीं। ख़ुदाई के मफ़रूज़ा शरीक या देवी देवता ख़ुद मुश्रिकीन के अक़ीदे के मुताबिक, इंसान के लिए रिज़्क़ फ़राहम नहीं कर सकते। क्योंकि हर मफ़रूज़ा (काल्पनिक) शरीक किसी जुज का माबूद है, और जुज (अंश) का माबूद कभी ऐसे वाक़ये को ज़ुहूर में नहीं ला सकता जो कुल अज्ज़ा की मुवाफ़िक़त से ज़ुहूर में आता है।

इसी तरह मसलन इंसान के अंदर कान और आंख जैसी हैरतअंगेज सलाहियतें हैं। वे भी किसी देवता की दी हुई नहीं हो सकतीं। देवी देवता या तो ख़ुद इन सलाहियतों से महरूम हैं या अगर किसी मफ़रूजा (काल्पनिक) माबूद के अंदर ये सलाहियतें हों तो वह उनका ख़ालिक नहीं। यहां तक कि ख़ुद उससे ये सलाहियतें वैसे ही छिन जाती हैं जैसे आम इंसानों से छिन जाती हैं। इसी तरह बेजान चीजों में जान डालना और जानदार को बेजान कर देना भी मफ़रूजा माबूदों के लिए मुमकिन नहीं। न इसका कोई सुबूत है और न कोई पूजने वाला इनके बारे में इस किस्म का अक़ीदा रखता है। फिर कैसे मुमकिन है कि ये चीजें उन माबूदों से इंसान को मिलें।

कैसी अजीब बात है कि इंसान एक बड़े ख़ुदा को मानता है। इसके बावजूद वह ख़ुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब करता है जो उसकी तमाम आला सिफ़ात को नकार दें। इसकी वजह यह है कि उसे ख़ुदा का डर नहीं। झूठे ख़्यालात के जरिए उसने अपने आपको यह तसल्ली दे ली है कि ख़ुदा उससे बाजपुर्स (पूछगछ) करने वाला नहीं। और अगर बाजपुर्स की नौबत आई तो उसकी मदद पर ऐसी हस्तियां हैं जो ख़ुदा के यहां सिफारिश करके उसे बचा लें। डर आदमी को संजीदा बनाता है। जब किसी के दिल से डर निकल जाए तो उसे ग़ैर मुंसिफ़ाना (अन्यायपूर्ण) रवैया इख़्तियार करने से कोई चीज रोक नहीं सकती। ऐसा आदमी सरकश हो जाता है। और सरकश आदमी कभी सच्चाई का एतराफ नहीं करता।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهِدِّي إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

कहो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर वह दुबारा भी पैदा करे। कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दुबारा भी पैदा करेगा। फिर तुम कहां भटके जाते हो। कहो, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है

जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता हो, कह दो कि अल्लाह ही हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है। फिर जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है वह पैरवी किए जाने का मुस्तहिक़ है या वह जिसे ख़ुद ही रास्ता न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाए। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फ़ैसला करते हो। उनमें से अक्सर सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और गुमान हक़ बात में कुछ भी काम नहीं देता। अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (34-36)

अल्लाह के सिवा जिनको ख़ुदाई का मकाम दिया जाता है, चाहे वे इंसान हों या ग़ैर इंसान, कोई भी यह ताकत नहीं रखता कि वह किसी ग़ैर मौजूद को मौजूद कर दे। यह सिर्फ अल्लाह है जिसके लिए तख़्लीक का अमल साबित है। और जब तख़्लीक का अमल एक बार अल्लाह के लिए साबित है तो इसी से यह भी साबित हो जाता है कि वह इसे दुबारा कर सकता है और करेगा। फिर जब वजूदे अव्वल और वजूदे सानी दोनों का इख़्तियार सिर्फ एक अल्लाह को है तो दूसरे शरीकों की तरफ तवज्जोह लगाना बिल्कुल अबस (व्यर्थ) है। इनसे आदमी न अपनी पहली जिंदगी में कुछ पाने वाला है और न दूसरी जिंदगी में।

यही मामला रहनुमाई का है। 'अल्लाह रहनुमाई करता है' यह चीज पैग़म्बरों की हिदायत से साबित है। पैग़म्बरों ने जिस हिदायत को ख़ुदाई हिदायत कह कर इंसान के सामने पेश किया वह मुसल्लम तौर पर एक हिदायत है। इसके बरअक्स शरीकों का हाल यह है कि वे या तो सिरे से इस काबिल नहीं कि वे इंसान को हक़ और नाहक के बारे में कोई इल्म दें (मसलन बुत) या वे अपनी कमियों और महदूदियतों की वजह से ख़ुद रहनुमाई के मोहताज हैं, कुजा कि वे दूसरों को वाकई रहनुमाई फराहम करें (मसलन इंसानी माबूद)। जब सूरतेहाल यह है तो इंसान को सिर्फ एक ख़ुदा की तरफ रुजूअ करना चाहिए न कि फर्ज़ी शरीकों की तरफ।

शिर्क का कारोबार किसी वाकई इल्म पर कायम नहीं है बल्कि वह मफरूज़ात और कयासात (अनुमानों) पर कायम है। कुछ हस्तियों के बारे में बेबुनियाद तौर पर यह राय कायम कर ली गई है कि वे ख़ुदाई सिफात के हामिल हैं। हालांकि इतनी बड़ी राय किसी हकीकी इल्म की बुनियाद पर कायम की जा सकती है न कि महज अटकल और कयास की बुनियाद पर।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ۭ
كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई इसको बना ले। बल्कि यह तस्दीक़ (पुष्टि) है उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की जो इसके पहले से मौजूद हैं। और किताब की तफ़्सील है, इसमें कोई शक नहीं कि वह ख़ुदावंदे आलम की तरफ से है। क्या लोग कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि तुम इसकी मानिंद कोई सूरह ले आओ। और अल्लाह के सिवा तुम जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। बल्कि ये लोग उस चीज को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहाते में नहीं आई। और जिसकी हकीकत अभी उन पर नहीं खुली। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुजरे हैं, पस देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। (37-39)

कुरआन अपनी दलील आप है कुरआन का मोमैक़ (विशिष्ट) अंदाजे कलाम इंतिहाई तौर पर नाकाबिले तकलीद (अअनुकरणीय) है, और यही वाकया यह साबित करने के लिए काफी है कि कुरआन एक ग़ैर इंसानी कलाम है। अगर वह किसी इंसान का कलाम होता तो यकीनन दूसरे इंसानों के लिए भी यह मुमकिन होना चाहिए था कि वे अपनी कोशिश से वैसा ही एक कलाम बना लें।

कुरआन के कलामे इलाही होने का दूसरा सुबूत यह है कि वह उन पेशीनगोइयों (भविश्वाणियों) की तस्दीक है जो उसके बारे में पहले से आसमानी सहीफों में मौजूद हैं। आसमानी तालीमात की हामिल कौमें पहले से एक आख़िरी हिदायतनामा की मुंतजिर थीं। कुरआन उसी इंतजार का जवाब बनकर आया है, फिर इसमें शक करने की क्या जरूरत। मजीद यह कि वह 'किताब' की तफ़्सील है। यानी वह इलाही तालीमात जो तमाम आसमानी किताबों का ख़ुलासा हैं उन्हीं को वह सही और बेआमेज (विशुद्ध) रूप में पेश करता है। यह एक वाज़ेह करीना (संकेत) है जिससे जाहिर होता है कि कुरआन उसी ख़ुदा की तरफ से आया है जिसकी तरफ से पिछली आसमानी किताबें आई थीं।

जब कोई शख़्स कहता है कि कुरआन एक इंसानी तस्नीफ (रचना) है तो वह अपने दावे को एक ऐसे मैदान में लाता है जहां उसे जांचना आसान हो। क्योंकि वह अपनी या दूसरों की इंसानी सलाहियतों को काम में लाकर कुरआन जैसी एक किताब या उसके जैसी एक सूरह तैयार कर सकता है। और इस तरह अमली तौर पर इस दावे को रद्द कर सकता है कि कुरआन ख़ुदाई जेहन से निकली हुई किताब है। मगर कुरआनी चैलेन्ज के बावजूद किसी का ऐसा न कर सकना आख़िरी तौर पर साबित कर रहा है कि कुरआन को इंसानी किताब कहने वालों का दावा दुरुस्त नहीं।

कुरआन की सदाकत के ये दलाइल ऐसे नहीं हैं कि आदमी उन्हें समझ न सके। अस्ल यह है कि कुरआन को झुठलाने के नताइज से वे बेख़ौफ हैं। उन्हें यह डर नहीं कि कुरआन का इंकार करके वे किसी अजाब की पकड़ में आ जाएंगे। उनकी मुख़ालिफाना रविश की वजह वह ग़ैर संजीदगी है जो उनकी बेख़ौफी की वजह से पैदा हुई है न कि किसी किस्म का अक्ली और इस्तदलाली (तर्कपूर्ण) इत्मीनान।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ۚ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾
وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ
مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۗ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا
لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۗ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا
يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

और उनमें से वे भी हैं जो कुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लाएंगे। और तेरा रब मुफ्सिदों (उपद्रवियों) को ख़ूब जानता है। और अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूं और मैं उससे बरी हूं जो तुम कर रहे हो। और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों। और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ देखते हैं तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे अगरचे वे देख न रहे हों। अल्लाह लोगों पर कुछ भी जुल्म नहीं करता मगर लोग ख़ुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (40-44)

ईमान न लाने वाले ख़ुदा की नजर में मुफ्सिद (उपद्रवी) हैं। क्योंकि अपनी फितरत को बिगाड़ कर ही किसी के लिए यह मुमकिन होता है कि वह हक को कुबूल करने से बाज रहे। ऐसा आदमी अपने जमीर की आवाज को दबाता है, वह अपने सोचने की सलाहियत को इस्तेमाल नहीं करता, वह खुले खुले दलाइल को झूठे अल्फ़ाज बोल कर नजरअंदाज कर देता है, वह सुनकर नहीं सुनता और समझने के बावजूद समझने की कोशिश नहीं करता, वह हक के मुकाबले में अपने तसस्सुबात (विद्वेष) और अपने मफादात (स्वार्थों) को तरजीह देता है।

बहस व मुनाजिरा करने वाले लोग आख़िर वक्त तक अपनी बहस जारी रखते हैं। 'मेरा मामला मेरे साथ है और तुम्हारा मामला तुम्हारे साथ' इस किस्म का जुमला कहना उन्हें अपनी शिकस्त नजर आता है, मगर दाओ फ्तह व शिकस्त की नफ्सियात से बुलन्द होकर काम करता है, इसलिए जब वह देखता है कि मुख़ातब जिद और हठधर्मी पर उतर आया है और मज़ीद बात करने का कोई फायदा नहीं तो वह यह कह कर अलग हो जाता है कि अस्ल फैसला अल्लाह के यहां होना है। ख़ुदा की मीजान (तुला) में जो शख़्स जैसा निकलेगा वैसा ही उसका अंजाम होगा।

हक को न मानने वालों में एक तबका वह है जो शुरू से अपना मुंकिर होना जाहिर कर देता है। मगर ज्यादा होशियार किस्म के लोग यह करते हैं कि बजाहिर वे बातों को इस तरह सुनते हैं गोया कि वे सचमुच समझना चाहते हैं। हालांकि उनके दिल में यह होता है कि इसको

समझना नहीं है। वे दाओ की सदाकत की निशानियों को इस तरह देखते हैं जैसे वे खुले दिल से उनका मुशाहिदा करना चाहते हैं। हालांकि उनका जेहन पहले से यह तै किए हुए होता है कि उसे देखना और मानना नहीं है। ऐसे लोगों की जाहिरी सादगी से दाओ इस ख़ुशगुमानी में पड़ जाता है कि वे कुबूलियते हक के करीब हैं। मगर ख़ुदा की नजर में वे ऐसे लोग हैं जो कान रखते हुए बहरे और आंख रखते हुए अंधे बन जाएं। ऐसे लोगों को कभी ख़ुदा की तरफ से क़ुबूले हक़ की तौफ़ीक़ नहीं मिलती।

ख़ुदा ने इंसान को बेहतरीन सलाहियतें दी हैं। अगर वह इन सलाहियतों को इस्तेमाल करे तो वह कभी गुमराह न हो। मगर इंसान अपने को आजाद पाकर ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है। वह बेजा सरकशी करने लगता है। ऐसा इसलिए होता है कि उसने ख़ुदा की स्कीम को नहीं समझा, जो चीज उसे आजमाइश के तौर पर दी गई थी उसे उसने अपना हक समझ लिया।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۗ قَدْ
خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

और जिस दिन अल्लाह उन्हें जमा करेगा, गोया कि वे बस दिन की एक घड़ी दुनिया में थे। वे एक दूसरे को पहचानेंगे। बेशक सख़्त घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राहेरास्त (सन्मार्ग) पर न आए। हम तुम्हें उसका कोई हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफात (मौत) दे दें, बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ लौटना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वे कर रहे हैं। और हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके दर्मियान इंसाफ के साथ फैसला कर दिया जाता है और उन पर कोई जुल्म नहीं होता। (45-47)

आज आख़िरत इंसान के सामने नहीं है। आज एक देखने वाले को उसे तसव्वुर की निगाह से देखना पड़ता है। इसलिए जो शख़्स आख़िरत के मामले में संजीदा न हो उसे आख़िरत बहुत दूर की चीज मालूम होगी। मगर जब आख़िरत सबसे बड़ी हकीकत की हैसियत से इंसान के ऊपर टूट पड़ेगी और वह उसे उसकी तमाम संगीनियों के साथ अपनी आंख से देखने लगेगा, उस वक्त वह अपनी मौजूदा सरकशी को भूल जाएगा, उस वक्त उसे दुनिया के वे लम्हात बहुत हकीर (तुच्छ) मालूम होंगे जिनकी वजह से वह ग़फलत में पड़ गया था और आख़िरत के बारे में सोचने पर तैयार न होता था।

आख़िरत किसी अजनबी दुनिया में वाकेअ (घटित) नहीं होगी बल्कि हमारी जानी

पहचानी दुनिया में वाकेअ होगी। वहां आदमी अपने आपको उसी माहौल में पाएगा जिस माहौल में उसने इससे पहले हक का इंकार किया था, वह अपने आपको उन्हीं लोगों के दर्मियान देखेगा जिनके बल पर वह सरकशी करता था मगर उस दिन वे लोग उसके कुछ काम न आएंगे। उस वक्त हर बात उसके जेह्न में इस तरह ताजा होगी गोया उस पर कोई मुद्दत गुजरी ही नहीं।

दाऔ और मदऊ का मामला आसमान के नीचे पेश आने वाले तमाम मामलात में सबसे ज्यादा नाज़ुक मामला है। दाऔ (आह्वानकर्ता) अगर फिलवाकअ हक को लेकर उठा है तो वह इस दुनिया में ख़ुदा का नुमाइंदा है। उसका इकरार ख़ुदा का इकरार है और उसका इंकार ख़ुदा का इंकार है। ऐसा एक वाक्या अंजाम से ख़ाली नहीं हो सकता। हक के दाऔ के जुहूर के बाद लाजिमन ऐसा होता है कि उसकी जबान से जारी होने वाले रब्बानी कलाम के सामने तमाम लोग बेदलील होकर रह जाते हैं। यह बातिल के ऊपर हक की पहली फत्ह है। दूसरी फत्ह आख़िरत में होगी जबकि उसके मुख़ालिफीन ख़ुदा के इज्न (इच्छा) से उसके मुकाबले में बेजोर होकर रह जाएंगे। पहला वाक्या लाजिमी तौर पर इसी दुनिया में पेश आता है और दूसरा वाक्या भी जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में जाहिर होता है अगर ख़ुदा उसे मौजूदा दुनिया में जाहिर करना चाहे।

यह मामला हर गिरोह के साथ पेश आना लाजिमी है जबकि वह बराहेरास्त ख़ुदा के सामने खड़ा होने से पहले मौजूदा दुनिया में बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर ख़ुदा के नुमाइंदे के सामने खड़ा किया जाए। इस तरह ख़ुदा देखता है कि कौन है जो इस वक्त अपने आपको ख़ुदा के हवाले कर देता है जबकि ख़ुदा अभी ग़ैब में है और कौन है जो ऐसा नहीं करता। पहली किस्म के लोगों के लिए जन्नत है और दूसरी किस्म के लोगों के लिए दोजख़।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنتُم بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो मैं अपने वास्ते भी बुरे और भले का मालिक नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक वक्त है। जब उनका वक्त आ जाता है तो फिर न वे एक घड़ी पीछे होते और न आगे। कहो कि बताओ, अगर अल्लाह का अजाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए

तो मुजरिम लोग इससे पहले क्या कर लेंगे। फिर क्या जब अजाब वाकेअ (घटित) हो चुकेगा तब उस पर यकीन करोगे। अब कायल हुए और तुम इसी का तकाजा करते थे, फिर जालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अजाब चखो। यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे। (48-52)

इंसान मौजूदा दुनिया में अपने को आजाद पाता है। वह बजाहिर देखता है कि वह जो चाहे करे, कोई उसे पकड़ने वाला नहीं, कोई उसे सजा देने वाला नहीं। यह सूरतेहाल उसे भुलावे में डाल देती है। यहां तक कि ख़ुदा का दाऔ जब उसे उसके अमल के अंजाम से डराता है तो वह ख़ुदा के दाऔ का मजाक उड़ाने लगता है। वह कहता है हमारी सरकशी पर तुम जिस अजाब की धमकी दे रहे हो वह कब पूरी होगी।

इस किस्म की बातों का सबब नादानी के सिवा और कुछ नहीं। क्योंकि यह पकड़ ख़ुद हक के दाऔ की तरफ से आने वाली नहीं है बल्कि ख़ुदा की तरफ से आने वाली है। और ख़ुदा हर आन अपनी दुनिया में बता रहा है कि उसका तरीका जल्दी का तरीका नहीं।

कश्ती में सुराख़ हो और कोई मल्लाह उसकी परवाह न करते हुए अपनी कश्ती को दरिया में डाल दे तो ख़ुदा का लाजिमी कानून है कि ऐसी कश्ती पानी में डूब जाए। मगर ऐसी कश्ती फौरन पानी में नहीं डूबती बल्कि ख़ुदा की सुन्नत के मुताबिक अपने मुकर्रर वक्त पर डूबती है। इस किस्म की मिसालें दुनिया में फैली हुई हैं जो इंसान को ख़ुदाई सुन्नत का तआरुफ करा रही हैं मगर उन्हें देखने के बावजूद वह कहता है कि अगर इन आमाल पर ख़ुदा का अजाब है तो वह अजाब जल्द क्यों नहीं आ जाता। इसकी वजह यह है कि इंसान ख़ुदा की पकड़ के बारे में संजीदा नहीं।

जलजले और तूफान ख़ुदाई वाकेयात हैं। ये वाकेयात बताते हैं कि जब मामला ख़ुदा और इंसान के दर्मियान हो तो फैसले का इख़्तियार तमामतर सिर्फ फरीके अव्वल (प्रथम पक्ष) को होता है। मगर इंसान इस पहलू पर ग़ौर नहीं करता। वह सिर्फ यह देखता है कि ख़ुदा का कानून फौरन हरकत में नहीं आ रहा है और चूंकि वह फौरन हरकत में नहीं आता इसलिए वह ग़फलत में पड़ा रहता है। मगर जब ख़ुदा का फैसला आएगा तो उस वक्त इंसान अपने को बेबस पाकर सब कुछ मान लेगा। हालांकि उस वक्त का मानना कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह अमल का अंजाम पाने का वक्त होगा न कि अमल करने का।

وَيَسْتَنبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सच है। कहो कि हां मेरे रब की कसम यह सच है और तुम उसे थका न सकोगे। और अगर हर जालिम के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है तो वह उसे फिदये (आर्थिक दंड) में दे देना चाहेगा और जब वे अजाब को देखेंगे तो अपने दिल में पछताएंगे। और उनके दर्मियान इंसाफ से फैसला कर दिया जाएगा और उन पर जुल्म न होगा। याद रखो जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है, याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। वही जिंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (53-56)

अरब के लोगों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि अगर तुमने अपनी इस्लाह न की तो तुम्हें आख़िरत का अजाब पकड़ लेगा। इसके जवाब में वे आपकी बात का मजाक उड़ाने लगे। इसका मतलब यह नहीं है कि वे लोग आख़िरत के मुंकिर थे। वे दरअस्ल पैग़म्बरे इस्लाम की तंबीह (चेतावनी) को बेवजन समझ रहे थे न कि ख़ुद आख़िरत को। पैग़म्बरे इस्लाम की अज्मत उस वक्त तक मुसल्लम न हुई थी। उस वक्त आपके मुख़ातबीन आपको एक मामूली इंसान के रूप में देखते थे। उनकी समझ में न आता था कि ऐसे मामूली इंसान की बात न मानने से उन के ऊपर ख़ुदा का अजाब कैसे आ जाएगा। उन्हें आपके ख़ुदा के नुमाइंदे होने पर शक था न कि ख़ुद ख़ुदा और आख़िरत पर।

यह तकाबुल (तुलना) हकीकतन इकरारे आख़िरत और इंकारे आख़िरत के दर्मियान न था, बल्कि बड़ी शख़्सियत के दीन और छोटी शख़्सियत के दीन के दर्मियान था। वे माजी के मशहूर बुजुर्गों के साथ अपने को मंसूब करते थे। वे अपने आपको मुसल्लमा (सुस्थापित) शख़्सियतों के दीन पर समझते थे। इसके मुकाबले में जब वे सामने के पैग़म्बर को देखते तो वह उन्हें एक मामूली इंसान के रूप में नजर आता। उनकी समझ में न आता था कि तारीख़ की जिन बड़ी-बड़ी शख़्सियतों के साथ वे अपने को वाबस्ता किए हुए हैं, उनसे वाबस्तगी उनके लिए बाइसे नजात (मुक्ति का साधन) न हो। बल्कि नजात के लिए यह जरूरी हो कि वे अपने आपको उस शख़्स के साथ वाबस्ता करें जिसे बजाहिर कोई तकद्दुस और अज्मत हासिल नहीं। यही वह नफ्सियात थी जिसकी वजह से उन्हें यह जुरअत हुई कि वे आपका मजाक उड़ाएं।

आदमी एक हस्सास मख़्लूक है। वह तकलीफ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। दुनिया में जब तक उसे अजाब का सामना नहीं है वह हक का मजाक उड़ाता है। वह उसे बेनियाजी के साथ ठुकरा देता है। मगर जब आख़िरत का अजाब सामने होगा तो उस पर इतनी घबराहट तारी होगी कि सब कुछ उसे हकीर (तुच्छ) मालूम होने लगेगा। सारी दुनिया की दौलत और तमाम दुनिया की नेमत भी अगर उसके पास हो तो अजाब के मुकाबले में वह इतनी बेकीमत नजर आएगी कि वह चाहेगा कि सब कुछ देकर सिर्फ इतना हो जाए कि वह इस तकलीफ से नजात पा जाए।

मगर आख़िरत का मसला कोई सौदेबाजी का मसला नहीं। वह तो अपने किए का अंजाम भुगतने का मसला है। जिंदगी और मौत के बारे में ख़ुदा का जो मंसूबा है उसका यह लाजिमी जुज है। ख़ुदाई इंसाफ का तकाजा है कि वह हो। और ख़ुदाई कुदरत इस बात की

जमानत है कि वह बहरहाल होकर रहेगा।

उसके पेश आने में जो कुछ देर है वह सिर्फ उस मुकर्ररह वक्त के आने की है जबकि मौजूदा इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म हो और सारे इंसान ख़ुदा के यहां अपने आख़िरी अंजाम का फैसला सुनने के लिए हाजिर कर दिए जाएं।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उसके लिए शिफा (निदान) जो सीनों में होती है और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत। कहो कि यह अल्लाह के फज्ल और उसकी रहमत से है। अब चाहिए कि लोग ख़ुश हों, यह उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज्क उतारा था, फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम ठहराया और कुछ को हलाल। कहो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो। और कियामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख़्याल है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज्ल फरमाने वाला है, मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (57-60)

इंसान एक नफ्सियाती (मनोवैज्ञानिक) मख़्लूक है। नफ्सियात के बनने से वह बनता है और नफ्सियात के बिगड़ने से वह बिगड़ जाता है। ख़ुदा की किताब की सूरत में जो हिदायत उतरी है वह इंसान के लिए सरासर रहमत है। इसमें इंसान के लिए बेहतरीन नसीहत मौजूद है। मगर इस नसीहत को पाने के लिए जरूरी है कि आदमी ने अपनी रास्तफिक्री न खोई हो। जो शख़्स अपनी रास्तफिक्री (सद्इच्छा) की सलाहियत को बिगाड़ ले, उसके लिए ख़ुदा का नसीहतनामा बेअसर रहेगा।

मौजूदा दुनिया की चीजें और उसकी रौनकें आदमी के सामने 'नक्द' होती हैं। आदमी हर आन उनकी लज्जत और ख़ूबी का तजर्बा करता है, इसके मुकाबले में आख़िरत की नेमतें सिर्फ 'वादे' की हैसियत रखती हैं। आदमी सिर्फ उनके बारे में सुनता है, वह उनका तजर्बा नहीं करता। इस बिना पर अक्सर लोग दुनिया की नक्द चीजों पर टूट पड़ते हैं। मगर जो शख़्स गहराई के साथ सोचेगा वह इस बात पर ख़ुश होगा कि ख़ुदा ने अपनी हिदायत उतार कर उसके

लिए अबदी (चिरस्थाई) नेमतों के हुसूल का दरवाजा खोल दिया है।

अल्लाह ने जो कुछ इंसान को दिया है, चाहे वह जरई (कृषि) पैदावार की सूरत में हो या दूसरी सूरत में, सबका सब रिज्क है। आदमी अगर इन चीजों को ख़ुदा का दिया हुआ समझे और ख़ुदा के बताए हुए तरीके के मुताबिक उनमें तसर्रुफ करे तो उसके अंदर ख़ुदा के शुक्र का जज्बा उभरेगा। मगर शैतान हमेशा इस कोशिश में रहता है कि वह इस निस्बत को बदल दे, ताकि इस 'रिज्क' के इस्तेमाल के वक्त आदमी को ख़ुदा की याद न आए बल्कि दूसरी-दूसरी चीजों की याद आए। कदीम जमाने में शैतान ने पैदावार में मफरूजा देवी देवताओं के मरासिम (रिति-रिवाज) मुकर्रर किए ताकि आदमी उन्हें लेते हुए ख़ुदा को याद न करे बल्कि देवी देवताओं को याद करे। मौजूदा जमाने में यही मक्सद शैतान माद्दी तौजीहात (भौतिक तर्कों) के जरिए हासिल कर रहा है। वह ख़ुदा की तरफ से मिलने वाली चीज को माद्दी अवामिल (भौतिक कारकों) के तहत मिलने वाली चीज बनाकर लोगों को दिखा रहा है ताकि लोग जब इन नेमतों को पाएं तो वे उसे ख़ुदा का रिज्क न समझें बल्कि सिर्फ माद्दे का करिश्मा समझें।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾

और तुम जिस हाल में भी हो और कुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस वक्त तुम उसमें मशगूल होते हो। और तेरे रब से जर्रा बराबर भी कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में और न इससे छोटी न बड़ी, मगर वह एक वाजेह किताब में है। सुन लो, अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते रहे, उनके लिए ख़ुशख़बरी है दुनिया की जिंदगी में भी और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। और तुम्हें उनकी बात गम में न डाले। जोर सब अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (61-65)

दावत (आहवान) इस दुनिया के तमाम कामों में मुश्किलतरीन काम है। दाओी (आहवानकर्ता) अपने पूरे वजूद को दावती अमल में शामिल करता है, इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह किसी पैग़ाम का दाओी बन सके। इससे भी ज्यादा सख़्त मरहला वह है जो मुख़ातबीन (संबोधित वर्ग) की तरफ से पेश आता है।

दाओी जब ख़ुदा के दीन को बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में पेश करता है और उसे खुले दलाइल की जबान में सुस्पष्ट कर देता है तो वे तमाम लोग बिफर उठते हैं जो ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को ख़ुदा का दीन बताकर दीनदार बने हुए हों या दीनी पेशवाई का मकाम हासिल किए हुए हों। वे दाओी को जेर करने की कोशिश करते हैं। बेबुनियाद प्रोपेगंडा, साजिशें, यहां तक कि जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयां, हर चीज को वे अपने लिए जाइज कर लेते हैं। मौजूदा दुनिया में मिली हुई आजादी उन्हें मौका देती है और वे दाओी के ख़िलाफ जो कुछ करना चाहते हैं करते चले जाते हैं। ये सूरतेहाल यहां तक पहुंचती है कि दलील की ताक्त तमामतर एक तरफ हो जाती है और भौतिक ताक्त तमामतर दूसरी तरफ।

यह सूरतेहाल बिलाशुबह बेहद सख़्त है। इसके बाद एक तरफ यह होता है कि मुख़ालिफीने हक के हौसले बढ़ते चले जाते हैं। वे अपने को कामयाब समझने लगते हैं। दूसरी तरफ दाओी पर भी यह ख़्याल गुजरता है कि क्या ख़ुदा इस मामले में ग़ैर जानिबदार है। क्या वह मुझे हक व बातिल के इस मअरके में डाल कर ख़ुद अलग हो गया है।

मगर ऐसा नहीं है। यह मुमकिन नहीं है कि ख़ुदा हक का साथ न दे। मुख़ालिफीन का बेदलील हो जाना और दलील की कुव्वत का तमामतर दाओी की तरफ होना यही इस बात का सुबूत है कि ख़ुदा दाओी के साथ है न कि दूसरे गिरोह के साथ। क्योंकि दलील मौजूदा दुनिया में ख़ुदा की नुमाइंदा है। जिसके साथ दलील है उसके साथ गोया ख़ुदा है। हक के मुख़ालिफीन को जारिहयत का मौका सिर्फ उस आजादी की वजह से मिल रहा है जो इम्तेहान की ख़ातिर उन्हें दी गई है। इम्तेहानी दुनिया के ख़त्म होते ही यह सूरतेहाल बदल जाएगी। उस वक्त इज्जत व बरतरी उसके लिए होगी जो दलील की बुनियाद पर खड़ा हुआ था। जो लोग दलील से ख़ाली थे वे वहां की दुनिया में रुसवा और नाकाम होकर रह जाएंगे। अल्लाह के सच्चे दाओियों का गिरोह ख़ुदा के दोस्तों का गिरोह है। अल्लाह उन्हें आख़िरत में एक ऐसी आला जिंदगी की ख़ुशख़बरी देता है जहां न उन्हें पिछली जिंदगी के लिए कोई पछतावा होगा और न अगली जिंदगी के लिए कोई अंदेशा।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

सुनो, जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं वे किस चीज की पैरवी कर रहे हैं, वे सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज अटकल दौड़ा रहे हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम सुकून हासिल करो। और दिन को रोशन बनाया। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (66-67)

जमीन व आसमान के पीछे कौन है जो इसको संभाले हुए है और इसको चला रहा है। यह सवाल हर जमाने में इंसान की तलाश का मर्कज़ी नुक्ता रहा है। मगर इस सवाल का सही जवाब पाना उसी वक्त मुमकिन है जब आदमी मावराए तबीइयात (अलौकिक) दुनिया तक देख सके और इस दुनिया तक देखने वाली आंख किसी को हासिल नहीं। यही वजह है कि हर वह जवाब जो वह बतौर ख़ुद कायम करता है वह महज क्यास व गुमान की बुनियाद पर होता है न कि हकीकी इल्म की बुनियाद पर।

इस दुनिया में हकीकी इल्म की बुनियाद पर बोलने वाले सिर्फ वे लोग हैं जिनको पैग़म्बर कहा जाता है। ये वे मख़्सूस लोग हैं जिनका रब्त आलमे बाला से बराहेरास्त कायम होता है। ख़ुदा ख़ुद उन्हें अपनी तरफ से हकीकत की ख़बर देता है। इसलिए इस दुनिया में पैग़म्बर का इल्म ही वाहिद इल्म है जिस पर यकीनी तौर पर भरोसा किया जा सकता है।

पैग़म्बरों के दावे की सदाकत को जांचने के लिए अगरचे हमारे पास कोई बराहेरास्त जरिया नहीं है। ताहम एक बिलवास्ता (परोक्ष) जरिया यकीनी तौर पर मौजूद है। और वह कायनात की आयात (निशानियां) हैं। ये निशानियां पैग़म्बरों के बयानकर्दा मअनवी हकाइक की अमली तस्दीक कर रही हैं।

मिसाल के तौर पर हम देखते हैं कि हमारी जमीन पर रात के बाद दिन आता है और दिन के बाद रात आती है। यह गर्दिश एक इंतिहाई मोहकम निजाम की वजह से वजूद में आती है जो रियाजयाती (गणितीय) सेहत की हद तक मुनज़्ज़म है। मजीद यह कि यह गर्दिश हैरतनाक हद तक हमारी ज़िंदगी के मुवाफ़िक है। इसके पीछे वाज़ेह तौर पर एक बामक्सद मंसूबा काम करता हुआ नजर आता है। यह सूरतेहाल यकीनी तौर पर एक ऐसे कादिरे मुतलक और रहमान व रहीम के वजूद का सुबूत है जिसकी ख़बर पैग़म्बर देते हैं।

जो लोग अपने ख़्याल के मुताबिक 'शरीकों' की पैरवी कर रहे हैं, वे शुरका (साझीदार) चाहे कदीम इलाहियाती (पुरातन दैवीय) शुरका हों या जदीद माद्दी (आधुनिक भौतिक) शुरका वे किसी वाकई हकीकत की पैरवी नहीं कर रहे हैं। बल्कि सिर्फ अपने क्यास व गुमान की पैरवी कर रहे हैं। पैग़म्बरों के जरिए जाहिर होने वाली हकीकत की तस्दीक सारी कायनात कर रही है मगर 'मुश्रिकीन' जिस चीज के दावेदार हैं उसकी तस्दीक करने वाला कोई नहीं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ اِنْ
عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ۚ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह पाक है, बेनियाज (निस्पृह) है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते। कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं वे फलाह नहीं पाएंगे। उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फायदा उठा लेना है। फिर हमारी ही तरफ उनका लौटना है। फिर उनको हम इस इंकार के बदले सख़्त अजाब का मजा चखाएंगे। (68-70)

ख़ुदा के लिए बेटा बेटियां मानना ख़ुदा को इंसान के ऊपर कयास करना है। इंसान कमियों और महदूदियतों (सीमितताओं) का शिकार है, इसलिए उसे औलाद की जरूरत है ताकि उनके जरिए वह अपनी कमियों और महदूदियतों की तलाफी करे मगर ख़ुदा के मामले में यह कयास बिल्कुल बेबुनियाद है।

मख़्लूकात का निजाम ख़ुद ही इस किस्म के ख़ालिक की तरदीद (खंडन) है। मख़्लूकात का आलमी निजाम जिस ख़ुदा की शहादत दे रहा है वह यकीनी तौर पर एक ऐसा ख़ुदा है जो अपनी जात में आख़िरी हद तक कामिल (पूर्ण) है। वह हर किस्म के ऐबों और कमियों से पाक है। ख़ुदा अगर अपनी जात में कामिल न होता, अगर वह ऐबों और कमियों वाला ख़ुदा होता तो कभी वह मौजूदा कायनात जैसी कायनात को नहीं बना सकता था और न उसे इस तरह चला सकता था जिस तरह वह इंतिहाई मेयारी सूरत में चल रही है।

इसका मतलब यह है कि पैगम्बर जिस ख़ुदाए वाहिद का तसव्वुर पेश कर रहा है उसका वजूद तो जमीन व आसमान की तमाम निशानियों से साबित है। मगर मुश्रिकीन ने ख़ुदा का जो तसव्वुर बना रखा है, उसका कोई सुबूत इस कायनात में मौजूद नहीं। अब जाहिर है कि बेसुबूत ख़ुदा को मानना ख़ुद ही इस बात का सुबूत है कि ऐसे लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते। क्योंकि जो ख़ुदा सिरे से मौजूद न हो वह कैसे किसी की मदद पर आएगा और कैसे किसी को बामुराद करेगा। जो ख़ुदा हकीकी तौर पर मौजूद है, मुश्रिकीन उसे मानते नहीं, और जिस ख़ुदा को मानते हैं उसका कहीं वजूद नहीं। ऐसी हालत में मुश्रिकीन मौजूदा कायनात में क्योंकर कामयाब हो सकते हैं। उनके लिए जो वाहिद अंजाम मुकद्दर है वह सिर्फ यह कि बिलआख़िर वे बेबस और बेसहारा होकर रह जाएं और हमेशा के लिए जिल्लत व नाकामी में पड़े रहें।

मौजूदा दुनिया में इंकार या शिर्क का रवैया इख़्तियार करने से किसी का कुछ बिगड़ता नहीं। इससे आदमी ग़लतफहमी में पड़ जाता है। मगर यह सूरतेहाल सिर्फ इम्तेहान की मोहलत की बिना पर है। मौजूदा दुनिया में इंसान को इम्तेहान की वजह से अमल की आजादी दी गई है। जैसे ही इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी मौजूदा सूरतेहाल भी ख़त्म हो जाएगी। उस

वक्त आदमी देखेगा कि उसके पास उन चीजों में से कोई चीज नहीं है जिसका वह अपने आपको मालिक समझ कर सरकश बना हुआ था।

हदीस में आया है कि अल्लाह ने अक्ल से कहा : 'ऐ अक्ल, इस कायनात में मैंने तुझसे अफज़ल, तुझसे हसीन और तुझसे बेहतर मख़्लूक़ पैदा नहीं की।' इंसान को ऐसी अजीम नेमत देने का यह तकाजा है कि उसकी जिम्मेदारी भी अजीम हो। यही वजह है कि ख़ुदा के नज़दीक सच्चाई का इंकार सबसे बड़ा जुर्म है। सच्चाई को जब दलील से साबित कर दिया जाए तो आदमी के ऊपर लाजिम हो जाता है कि वह उसे माने। अक्ली तौर पर साबितशुदा हो जाने के बाद अगर वह सच्चाई का इंकार करता है तो वह नाकाबिले माफ़ी जुर्म कर रहा है। ख़ुदा ने जब इंसान को ऐसी अक्ल दी जिससे वह हक का हक होना और बातिल का बातिल होना जान सके तो इसके बाद क्या चीज होगी जो ख़ुदा के यहां उसके लिए उज़्र बन सके।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ﴿٧١﴾ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٣﴾

और उनको नूह का हाल सुनाओ। जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों से नसीहत करना तुम पर गिरां (भार) हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। तुम अपना मुत्तफ़िक़ा फैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ ले लो, तुम्हें अपने फैसले में कोई शुबह बाकी न रहे। फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो कर गुजरो और मुझको मोहलत न दो। अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो मैंने तुमसे कोई मजदूरी नहीं मांगी है। मेरी मजदूरी तो अल्लाह के जिम्मे है। और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांबरदारों में से हूं। फिर उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे नजात दी और उन्हें जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया। और उन लोगों को गर्क कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। देखो कि क्या अंजाम हुआ उनका जिन्हें डराया गया था। (71-73)

हज़रत नूह क़दीमतरीन ज़माने के रसूल हैं। वह जब तक ख़ामोश थे, कौम उनकी इज़्ज़त करती रही। मगर जब आप हक के दाओी बनकर खड़े हुए और लोगों को बताने लगे कि ऐसा

करो और वैसा न करो तो वह कौम की नजर में एक नापसंदीदा शख़्स बन गए। यहां तक कि कौम ने एलान कर दिया कि तुम अपनी तब्लीग़ व नसीहत से बाज आओ वर्ना हम तुमको अपनी जमीन में नहीं रहने देंगे।

हजरत नूह ने कहा कि तुम लोग मेरे मामले को एक इंसान का मामला समझते हो, इसलिए ऐसा कह रहे हो। मगर यह मामला ख़ुदा का मामला है। मुझसे लड़ने के लिए तुम्हें ख़ुदा से लड़ना पड़ेगा। तुमको अगर यकीन न हो तो तुम इस तरह तजर्बा कर सकते हो कि अपने साथियों और शरीकों को मिलाकर मेरे ख़िलाफ कोई मुत्तफ़िक़ा मंसूबा बनाओ और अपनी तमाम ताकत के साथ उसकी तामील कर गुजरो। तुम देखोगे कि मेरे मुक़ाबले में तुम्हारा हर मंसूबा नाकाम है। मौजूदा दुनिया में हक के दाओी की सदाकत (सच्चाई) को जांचने का मेयार यह है कि वह हर हाल में अपना काम पूरा करके रहता है। कोई भी उसे जेर (परास्त) करने में कामयाब नहीं होता।

जो शख़्स ख़ुदा की तरफ से हक की दावत लेकर उठे वह हमेशा निशानी (दलील) के जोर पर उठता है। दलील चूंकि एक जेहनी चीज है इसलिए जाहिरपसंद इंसान उसकी अज़्मत को समझ नहीं पाता। वह जेहनी तौर पर लाजवाब होने के बावजूद उसके आगे झुकने से इंकार कर देता है।

हक के दाओी को जिन आदाबे दावत का लाजिमी तौर पर लिहाज करना है उनमें से एक यह है कि दाओी अपने मदऊ से किसी भी किस्म का मआशी और माद्दी (सांसारिक) मुतालबा न करे। चाहे इस एकतरफा दस्तबर्दारी की वजह से उसे कितना ही नुक्सान उठाना पड़े। ऐसा करना इसलिए जरूरी है कि दोनों के दर्मियान आख़िरी वक्त तक दाओी और मदऊ का तअल्लुक़ बाकी रहे, वह किसी भी हाल में कौमी हरीफ और माद्दी रक़ीब (प्रतिपक्षी) का तअल्लुक़ न बनने पाए।

हजरत नूह ने जब इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) की हद तक हक का पैग़ाम पहुंचा दिया, फिर भी उनकी कौम सरकशी पर क़ायम रही तो सरकशों को सैलाब में ग़र्क करके जमीन उनसे ख़ाली करा ली गई और मोमिनीने नूह को मौका दिया गया कि वे जमीन के वारिस बनकर उस पर आबाद हों। इसी को क़ुरआन की इस्तिलाह में 'ख़िलाफ़त' कहा जाता है। सैलाब से पहले कौमे नूह जमीन की ख़लीफा बनी हुई थी, सैलाब के बाद मोमिनीने नूह जमीन के ख़लीफ़ा क़रार पाए।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾

फिर हमने नूह के बाद कितने रसूल भेजे। वे उनके पास खुली खुली दलीलें लेकर आए, मगर वे उस पर ईमान लाने वाले न बने जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (74)

इस आयत में 'हद से गुजर जाने वाला' उन लोगों को कहा गया है जिनका हाल यह होता

है कि एक बार अगर वे हक का इंकार कर दें तो इसके बाद वे उसे अपनी साख का मसला बना लेते हैं और फिर उसे मुसलसल नजरअंदाज करते रहते हैं ताकि लोगों की नजर में उनका इल्मे दीन और उनका बरसरे हक होना मुशतबह (संदिग्ध) न होने पाए।

जो लोग इस किस्म का रवैया इख़्तियार करें उन्हें दुनिया में यह सजा मिलती है कि उनके दिलों पर मुहर लगा दी जाती है। यानी ख़ुदा के कानून के तहत उनकी नफ्सियात धीरे-धीरे ऐसी बन जाती हैं कि बिलआख़िर हक के मामले में उनका शिद्दते एहसास बाकी नहीं रहता। इब्तिदा में उनके अंदर जो थोड़ी सी हस्सासियत जिंदा थी वह भी बिलआख़िर मुर्दा होकर रह जाती है। वे इस काबिल नहीं रहते कि हक और नाहक के मामले में तड़पें और नाहक को छोड़कर हक को कुबूल कर लें। हजरत नूह और उनके बाद आने वाले बेशतर रसूलों की तारीख़ इसकी तस्दीक करती है।

अल्लाह की तरफ से जब भी कोई हक का दाओी आता है तो वह इस हाल में आता है कि उसके गिर्द किसी किस्म की जाहिरी अज़्मत नहीं होती। उसके पास जो वाहिद चीज होती है वह सिर्फ दलील है। जो लोग दलील की जबान में हक को मानें वही हक के दाओी को मानते हैं। जिन लोगों का हाल यह हो कि दलील की जबान उन्हें मुतअस्सिर न कर सके वे हक के दाओी को पहचानने से भी महरूम रहते हैं और उसका साथ देने से भी।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوسٰى وَهٰرُوْنَ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَاۡئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून को फिरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियां देकर भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे। फिर जब उनके पास हमारी तरफ से सच्ची बात पहुंची तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। मूसा ने कहा कि क्या तुम हक को जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह जादू है, हालांकि जादू वाले कभी फलाह नहीं पाते। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई कायम हो जाए, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं। (75-78)

फिरऔन और उसकी कौम के सरदारों ने अपनी मुजरिमाना जेहनियत की बिना पर मूसा और हारून की बात नहीं मानी। वे चीजों को दलील के मेयार से देखने के बजाए जाह व इक्तेदार के मेयार से देखते थे। इस ख़ुदसाख़्ता मेयार के नाम पर उन्होंने अपने को ऊंचा और मूसा

व हारून को नीचा समझ लिया। उनकी यह नफ्सियात उनके लिए उस हक को कुबूल करने मे रुकावट बन गई जो उनके नजदीक एक छोटा आदमी उनके सामने पेश कर रहा था।

हजरत मूसा की इस्तदलाल (तर्क) की जबान जब फिरऔन की समझ में नहीं आई तो आप ने असा (डंडे का सांप बनना) और यदेबेजा (हाथ का चमकना) के मोजिजात दिखाए। इन मोजिजात का तोड़ फिरऔन के पास न था। चुनांचे उसने कहा कि यह जादू है। इस तरह फिरऔन ने हजरत मूसा के मुकाबले में अपनी शिकस्त को एक झूठी तौजीह में छुपाने की कोशिश की। उसने लोगों को यह तास्सुर दिया कि मूसा का मामला हक का मामला नहीं है बल्कि जादू का मामला है, यह सही है कि जादू और मोजिजे में कुछ जाहिरी मुशाबिहत होती है। मगर बहुत जल्द मालूम हो जाता है कि जादू महज शोअबदा और करिश्मा था। इसके मुकाबले में मौजजे को मुस्तकिल कामयाबी हासिल होती है। जादू बिलआख़िर जादू साबित होता है और मोजिजा बिलआख़िर मोजिजा।

इस मौके पर फिरऔन ने लोगों को हजरत मूसा की दावत से फेरने के लिए दो और बातें कहीं। एक यह कि मूसा हमें हमारे आबाई दीन से बरगश्ता करना चाहते हैं। फिरऔन को चाहिए था कि वह हजरत मूसा के पैग़ाम को हक और नाहक की इस्तिलाह में समझने की कोशिश करे। मगर उसने उसे आबाई और ग़ैर आबाई मेयार से जांचा। इसकी वजह यह थी कि हक और नाहक के मेयार से देखने में अपने आपको ग़लत मानना पड़ता। जबकि आबाई और ग़ैर आबाई की तक्सीम में अपनी रविश पर बदस्तूर मौजूद रहने का जवाज मिल रहा था।

फिरऔन ने दूसरी बात यह कही कि 'मूसा और हारून इस मुल्क में अपनी किबरियाई (प्रभुत्व) कायम करना चाहते हैं।' यह भी अवाम को भड़काने के लिए महज एक सियासी शोशा था, क्योंकि हजरत मूसा ने तो अव्वल मरहले में फिरऔन के सामने यह बात रख दी थी कि उनका मक्सद यह है कि वह फिरऔन को ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाएं और इसके बाद बनी इस्राईल के साथ मिस्र से निकल कर सहराए सीना में चले जाएं। ऐसी हालत में यह इल्जाम सरासर ख़िलाफे वाक्या था कि वह मिस्र की हुकूमत पर कब्जा करने का मंसूबा बना रहे हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

और फिरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ। जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है। बेशक अल्लाह इसको बातिल (विनष्ट) कर देगा, अल्लाह यकीनन मुफ्सिदों (उपद्रवियों) के काम को सुधरने नहीं देता। और अल्लाह अपने हुक्म से हक को हक कर दिखाता है चाहे मुजरिमों को

वह कितना ही नागवार हो। (79-82)

फ़िरऔन का माहिर जादूगरों को बुलाना इसलिए न था कि वह समझता था कि जादूगरों के जरिए वह हज़रत मूसा को जेर कर लेगा। यह किसी अक़्ली फ़ैसले से ज्यादा फ़िरऔन की उस बढ़ी हुई ख़्वाहिश का नतीजा था कि वह हजरत मूसा को न माने। ख़ुदा के पैग़म्बर को जादूगरों के जरिए ग़लत साबित करने का मंसूबा एक ऐसा मंसूबा था जिसका नाकाम होना पहले से मालूम था। मगर आदमी जब किसी हकीकत को न मानना चाहे तो उसकी यह ख़्वाहिश उसे यहां तक ले जाती है कि वह अहमकाना तदबीरों से उसका मुकाबला करने की नाकाम कोशिश करता है। वह सैलाब के मुकाबले में तिनकों का बांध बांधता है हालांकि वह ख़ुद जान रहा होता है कि सैलाब के मुक़ाबले में तिनकों की कोई हकीकत नहीं।

चुनांचे वही हुआ जो होना था। जादूगरों ने मैदान में रस्सियां और लकड़ियां फेंकीं जो देखने वालों को रेंगते हुए सांप की सूरत में दिखाई दीं। इसके बाद हजरत मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो वह बहुत बड़ा सांप बनकर मैदान में दौड़ने लगा। हजरत मूसा का यह 'सांप' महज सांप न था, वह दरअस्ल ख़ुदा की एक ताक़त थी जो इसलिए जाहिर हुई थी कि हक को हक और बातिल को बातिल साबित कर दे। चुनांचे उसके सामने आते ही जादूगरों की रस्सी, रस्सी रह गई और उनकी लकड़ी लकड़ी।

यह ख़ुद अपने मुंतख़ब किए हुए मैदान में फ़िरऔन की शिकस्त थी। मगर अब भी फ़िरऔन ने शिकस्त न मानी। अब उसने हजरत मूसा की तरदीद (रद्द) के लिए कुछ और अल्फ़ाज तलाश कर लिए जिस तरह उसे पहले मरहले में आप की तरदीद के लिए कुछ अल्फ़ाज मिल गए थे।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۗ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

फिर मूसा को उसकी कौम में से चन्द नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फ़िरऔन के डर से और ख़ुद अपनी कौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वे उन्हें किसी फितने में न डाल दे, बेशक फ़िरऔन जमीन में ग़लबा (संप्रभुत्व) रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुजर जाते हैं। और मूसा ने कहा ऐ मेरी कौम, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम वाकई फरमांबरदार हो। उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब, हमें जालिम लोगों के लिए फितना

न बना। और अपनी रहमत से हमें मुंकिर लोगों से नजात दे। (83-86)

नए फ़िक्र (विचारधारा) को क़ुबूल करना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अपने मुआशिरे में नए-नए मसाइल से दो चार हो जाए। यही वजह है कि ज्यादा उम्र के लोग अक्सर किसी नए फ़िक्र को क़ुबूल करने में मोहतात (संकोची) होते हैं। मुख़्तलिफ वजहों से ज्यादा उम्र के लोगों पर मस्लेहत का ग़लबा हो जाता है। वह नए फ़िक्र की सेहत को मानने के बावजूद आगे बढ़कर उसका साथ नहीं दे पाते।

मगर नौजवान तबका आम तौर पर इस किस्म की मस्लेहतों से ख़ाली होता है। चुनांचे हमेशा तारीख़ में ऐसा हुआ है कि किसी नई और इंकिलाबी दावत को क़ुबूल करने में वही लोग ज्यादा आगे बढ़े जो अभी ज्यादा उम्र को नहीं पहुंचे थे। यही सूरतेहाल हजरत मूसा के साथ पेश आई।

हजरत मूसा का साथ देने वाले नौजवानों को एक तरफ फ़िरऔन का ख़तरा था। दूसरी तरफ ख़ुद अपनी कौम के बड़ों की तरफ से उन्हें हौसलाअफ़जाई नहीं मिली। ये बड़े अगरचे हजरत मूसा की नुबुव्वत को मानते थे। मगर अपनी मस्लेहतअंदेशी (स्वार्थ-भाव) की बिना पर वे नहीं चाहते थे कि उनके बेटे बेटियां पुरजोश तौर पर हजरत मूसा का साथ दें और इसके नतीजे में वे फ़िरऔन के जुल्म का शिकार बनें।

मगर इस किस्म की सूरतेहाल का तकाज़ा यह नहीं होता कि आदमी मुख़ालिफ़ीन के हक के डर से ख़ामोश होकर बैठ जाए। उसे चाहिए कि वह इंसानी मुख़ालिफतों के मुकाबले में ख़ुदाई नुसरतों पर नजर रखे, वह ख़ुदा के भरोसे पर उस हक का साथ देने के लिए उठ खड़ा हो जिसका साथ देने के लिए जाती तौर पर वह अपने आपको आजिज पा रहा था।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾

और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि अपनी कौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुकर्रर कर लो और अपने इन घरों को क़िबला बनाओ और नमाज कायम करो। और अहले ईमान को ख़ुशख़बरी दे दो। (87)

क़िबले के मअना अरबी जबान में मरजअ (आकर्षण केन्द्र) या मर्कजे तवज्जोह के हैं। यहां घरों को किबला बनाने से मुराद यह है कि बनी इस्राईल की बस्तियों में कुछ घरों या उन घरों के कुछ मुनासिब हिस्सों को इस मक्सद के लिए मख़्सूस कर दिया जाए कि वे हजरत मूसा की दीनी जद्दोजहद के लिए बतौर मर्कज के काम दें। यहां तंजीमी इज्तिमाआत हों, बाहमी मश्विरे हों। दावती अमल की ख़ामोश मंसूबाबंदी की जाए।

हजरत मूसा की तौहीद और आख़िरत की बातें मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को सख़्त नागवार थीं। उसने उनके ऊपर निहायत सख़्त किस्म की पाबंदियां आयद कर दीं। यहां तक कि खुले तौर पर दीनी सरगर्मियां जारी रखना उनके लिए सख़्त दुश्वार हो गया। उस वक्त

हुक्म हुआ कि फ़िरऔन से टकराने के बजाए यह करो कि अपने काम को करीबी दायरे में समेट लो। अपनी बस्तियों में छोटे-छोटे दावती और तंजीमी मर्कज बनाकर महदूद दायरे में ख़ामोशी के साथ अपना काम जारी रखो।

इन हालात में उन्हें जो दूसरा हुक्म दिया गया वह नमाज की इकामत था। यानी अल्लाह से तअल्लुक जोड़ने और उससे मदद मांगने के लिए नमाजों का एहतिमाम, इंफ़िरादी तौर पर भी और इज्तिमाई तौर पर भी। नमाज दरअस्ल ख़ुदा से करीब होकर ख़ुदा से मदद मांगने की एक सूरत है। नमाज में मशग़ूल होकर बंदा अपने आपको इज्ज (विनय) और तवाजोअ (विनम्रता) के मकाम पर लाता है और इज्ज और तवाजोअ ही वह मकाम है जहां बंदा और ख़ुदा की मुलाकात होती है। बंदे के लिए अपने रब से मिलने का दूसरा कोई मकाम नहीं।

यह जो प्रोग्राम बताया गया इसी की तक्मील में उनके लिए फलाह और नजात का राज छुपा हुआ था। यह हुक्म गोया इस बात की ख़ुशख़बरी थी कि ख़ुदा उन्हें उस हालत से निकालने वाला है जिसमें उनके दुश्मनों ने उन्हें मुब्तिला कर दिया है।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ ۖ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब, तूने फ़िरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की जिंदगी में रौनक और माल दिया है। ऐ हमारे रब, इसलिए कि वे तेरी राह से लोगों को भटकाएं। ऐ हमारे रब, उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों को सख़्त कर दे कि वे ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अजाब को देख लें। फ़रमाया, तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई। अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। (88-89)

जो लोग आख़िरत की फ़िक्र करते हैं वे आम तौर पर दुनियावी साजोसामान जमा करने में उन लोगों से पीछे रह जाते हैं जो आख़िरत से बेफ़िक्र होकर दुनिया हासिल करने में लगे हुए हों। दुनियावी कमी आख़िरत की तरफ़ ध्यान लगाने की कीमत है, और दुनियावी ज्यादती आख़िरत से ग़ाफ़िल होने की कीमत।

मजीद यह कि जिसके पास दुनिया की रौनक और सामान ज्यादा जमा हो जाएं वह बड़ाई के एहसास में मुब्तिला हो जाता है। नतीजा यह होता है कि ऐसे लोग अपने अंदर यह सलाहियत खो देते हैं कि किसी दूसरे की जबान से जारी होने वाले हक को पहचानें और उसके आगे झुक जाएं। अपने वसाइल (संसाधनों) को अगर वे ख़ुदा का अतिय्या (देन) समझते तो

उसे हक की ताईद में इस्तेमाल करते, मगर वे उसे अपना जाती कमाल समझते हैं इसलिए वे उसे सिर्फ़ इस मक्सद के लिए इस्तेमाल करते हैं कि हक को दबाएं और इस तरह माहौल के अंदर अपनी बरतरी कायम रखें।

'ताकि वे तेरी राह से भटकाएं' का मतलब यह है कि उन्होंने अल्लाह के दिए हुए माल व असबाब को सिर्फ़ इसलिए इस्तेमाल किया कि उसके जरिए से ख़ुदा के बंदों को ख़ुदा से दूर करें, उन्होंने उसे हक की ख़िदमत में लगाने के बजाए बातिल की ख़िदमत में लगाया। यहां शिद्दते बयान के ख़ातिर कलाम का उस्लूब (शैली) बदल गया है।

हजरत मूसा ने फ़िरऔन और उसके साथियों के सामने सच्चे दीन की दावत पेश की और अपनी आला सलाहियतों और ख़ुदा की नुसरतों के जरिए उसे इतमामे हुज्जत की हद तक वाजेह कर दिया, इसके बावजूद फ़िरऔन और उसके साथियों ने आपके पैग़ाम को नहीं माना। उस वक्त हजरत मूसा ने दुआ की कि ख़ुदाया इनके ऊपर वह सजा नाजिल फ़रमा जो तेरी कानून के तहत ऐसे सरकशों के लिए मुकद्दर है। ऐसे मौके पर पैग़म्बर की बददुआ ख़ुद ख़ुदा के फ़ैसले का एलान होता है जो नुमाइंदाए ख़ुदा की जबान से जारी किया जाता है।

हजरत मूसा की दुआ कुबूल हो गई। ताहम जैसा कि कुछ रिवायात में आता है, हजरत मूसा की दुआ और फ़िरऔन की तबाही के दर्मियान 40 साल का फ़ासला है। (तफ़्सीर नसफ़ी)। इसका मतलब यह है कि इसके बाद भी लम्बी मुद्दत तक यह सूरतेहाल बाकी रही कि हजरत मूसा और आपके साथी अपने आपको बेबस पाते थे, और दूसरी तरफ़ फ़िरऔन और उसके साथियों की शान व शौकत बदस्तूर मुल्क में कायम थी। ऐसी हालत में आदमी अगर ख़ुदा की उस सुन्नत से बेख़बर हो कि वह सरकशों को मोहलत देता है तो वह जल्दबाजी में अस्ल काम को छोड़ देगा और मायूसी और बददिली का शिकार होकर रह जाएगा।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾ آلْآنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ﴿٩٢﴾

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया तो फ़िरऔन और उसके लश्कर ने उनका पीछा किया। सरकशी और ज्यादती की ग़रज से। यहां तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर वह जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए। और मैं उसके फ़रमांबरदारों में हूं। क्या अब, और इससे पहले तू नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था। पस आज हम तेरे बदन को बचाएंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने और

बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल रहते हैं। (90-92)

मिस्र में हजरत मूसा का मिशन दोतरफ़ा था। एक, फ़िरऔन को तौहीद (एकेश्वरवाद) और आख़िरत की तरफ बुलाना। दूसरे, बनी इस्राईल को मिस्र से बाहर सहराई माहौल में ले जाना और वहां उनकी तर्बियत करना। जब फ़िरऔन पर हक की दावत की तक्मील हो चुकी तो अल्लाह के हुक्म से वह बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से रवाना हुए। सहराए सीना पहुंचने के लिए उन्हें दरिया को पार करना था। जब बनी इस्राईल हजरत मूसा की रहनुमाई में दरिया के कनारे पहुंचे तो अल्लाह के हुक्म से हजरत मूसा ने पानी पर अपना असा (डंडा) मारा। पानी बीच से फटकर दाएं बाएं खड़ा हो गया, और दर्मियान में ख़ुश्क रास्ता निकल आया। हजरत मूसा और बनी इस्राईल उस रास्ते से बाआसानी पार हो गए।

फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ बनी इस्राईल का पीछा करते हुए आगे बढ़ा। वह दरिया के किनारे पहुंचा तो देखा कि मूसा और बनी इस्राईल पानी के दर्मियान एक ख़ुश्क रास्ते से गुजर रहे हैं। दरिया के वसीअ पाट ने फटकर हजरत मूसा और उनके साथियों को रास्ता दे दिया था। यह वाक्या दरअस्ल ख़ुदा की एक निशानी था। फ़िरऔन को उससे यह सबक लेना चाहिए था कि मूसा हक पर हैं और ख़ुदा उनके साथ है। मगर उसने दरिया के फटने को ख़ुदाई वाकया समझने के बजाए आम वाकया समझा। अपने और मूसा के दर्मियान फ़िरऔन को सिर्फ दरिया नजर आया, हालांकि वहां ख़ुद ख़ुदा खड़ा हुआ था। इसका नतीजा यह हुआ कि जिस वाक्ये में फ़िरऔन के लिए इताअत (आज्ञापालन) और इनाबत (ख़ुदा की तरफ झुकना) का पैग़ाम था वह उसके लिए सिर्फ सरकशी में इजाफ़े का सबब बन गया। उसने 'दरिया' को देखा मगर 'ख़ुदा' को नहीं देखा। उसने समझा कि जिस तरह मूसा और उनके साथियों ने दरिया को पार किया है उसी तरह वह भी दरिया को पार कर सकता है।

अपने इस जेहन के साथ फ़िरऔन और उसके लश्कर दरिया में दाख़िल हो गए। दरिया का पानी जो दो टुकड़े हुआ था वह मूसा और उनके साथियों के लिए हुआ था, वह फ़िरऔन और उसके साथियों के लिए नहीं हुआ था। चुनांचे फ़िरऔन और उसका लश्कर जब बीच दरिया में पहुंचे तो ख़ुदा के हुक्म से दोनों तरफ का पानी मिल गया और फ़िरऔन अपने लश्कर सहित उसमें ग़र्क हो गया। ग़र्क होते हुए फ़िरऔन ने ईमान का इक़रार किया मगर वह बेसूद (निरर्थक) था, क्योंकि अल्लाह तआला के यहां इख़्तियारी ईमान मोतबर है न कि वह ईमान जबकि आदमी ईमान लाने पर मजबूर हो गया हो।

ख़ुदा से नाफरमानी और सरकशी का अंजाम हलाकत है, इसका नमूना दौरे रिसालत में बार-बार इंसान के सामने आता था। ताहम इस किस्म के कुछ नमूने ख़ुदा ने मुस्तकिल तौर पर महफ़ूज़ कर दिए हैं ताकि वह बाद के जमाने में भी इंसान को सबक देते रहें जबकि नबियों की आमद का सिलसिला ख़त्म हो गया हो। इन्हीं में से एक तारीख़ी नमूना फ़िरऔने मूसा (रअमीस सानी) का है जिसकी ममी की हुई लाश पुरातत्व विशेषज्ञों को कदीम मिस्री शहर थेबिस (Thebes) में मिली थी और अब वह काहिरा के म्यूजियम में नुमाइश के लिए रखी हुई है।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ فَمَا ٱخْتَلَفُوا۟ حَتَّىٰ جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और उन्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर उस वक्त जबकि इल्म उनके पास आ चुका था। यकीनन तेरा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ करते रहे। (93)

बनी इस्राईल कदीम जमाने में ख़ुदा के दीन के हामिल थे। उनके साथ ख़ुदा ने यह एहसान किया कि उनके दुश्मन (फ़िरऔन) से उन्हें नजात दी। इसके बाद वह उन्हें सीना की खुली फ़जा में ले गया। वहां उनके लिए ख़ुसूसी इंतजाम के तहत पानी और रिज़्क मुहय्या किया। सहराई तर्बियत के जरिए उनके अंदर एक नई ताकतवर नस्ल तैयार की। उस नस्ल ने हजरत मूसा की वफ़ात के बाद एक अजीम मुल्क फ़तह किया और शाम और उर्दुन और फ़िलिस्तीन जैसे सरसब्ज इलाके में बनी इस्राईल की सल्तनत कायम की। जो कई सौ साल तक बाकी रही।

इस एहसान का नतीजा यह होना चाहिए था कि बनी इस्राईल ख़ुदा के फरमांबरदार और शुक्रगुजार रहते और ख़ुदा के दीन की ख़िदमत को अपनी जिंदगी का मक्सद बनाते। मगर वाजेह रहनुमाई के होते हुए वे राह से बेराह हो गए।

उनका राह से बेराह होना क्या था। यह आपस का इख़्तेलाफ था। उनके पास ख़ुदा का उतारा हुआ इल्म मौजूद था जो वाहिद सच्चाई था। मगर उन्होंने इस इल्म की तशरीह व तावील (भाष्य) में इख़्तेलाफ किया और टुकड़े-टुकड़े हो गए। (तफ़सीर नस्फ़ी) कोई उम्मत जब तक ख़ुदा के उतारे हुए दीन (अल-इल्म) पर रहती है, उसमें इत्तेफ़ाक और इत्तेहाद रहता है। मगर बाद को उनके दर्मियान इस अल-इल्म की तशरीह में इख़्तेलाफ़ात शुरू होते हैं। कुछ लोग एक इख़्तेलाफ़ी राय लेकर बैठ जाते हैं और कुछ लोग दूसरी इख़्तेलाफ़ी राय लेकर। हर एक अपने अपने मस्लक (मत) को बरहक साबित करने के लिए बहस मुबाहिसा और तकरीर और मुनाजिरे का तूफान खड़ा करता है। नौबत यहां तक पहुंचती है कि अस्ल इल्म किताबों में बंद पड़ा रहता है और सारा जोर उनकी तावीलात व तशरीहात (व्याख्या) में सर्फ होने लगता है। इस तरह बुनियादी दीनी तालीमात (अल-इल्म) में एक राय होने के बावजूद लोग जैली तालीमात (उप-शिक्षाओं) में मशग़ूल होकर मुख़्तलिफ राए वाले हो जाते हैं।

'अल्लाह कियामत के दिन फैसला कर देगा' मतलब यह है कि कियामत में जब ख़ुदा जाहिर होगा तो हर आदमी अपने इख़्तेलाफ (मतभेद) को भूलकर उसी बात को मान लेगा जो वाहिद (एक मात्र) सच्चाई है। अगर वे ख़ुदा से डरते तो आज ही सबके सब एक राय पर पहुंच जाते। मगर ख़ुदा से बेख़ौफ होकर वे अलग-अलग राहों में बट गए हैं। बेख़ौफी से बहुत सी राए पैदा होती हैं और ख़ौफ से राए का इत्तहाद।

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٥﴾

पस अगर तुम्हें उस चीज के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। बेशक यह तुम पर हक आया है तुम्हारे रब की तरफ से, पस तुम शक करने वालों में से न बनो। और तुम उन लोगों में शामिल न हो जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वर्ना तुम नुक्सान उठाने वालों में से होगे। (94-95)

पैग़म्बर बेआमेज (विशुद्ध) हक को लेकर उठता है, और बेआमेज हक की दावत को कुबूल करना इंसान के लिए हमेशा सख़्त दुश्वार काम रहा है। लोग आम तौर पर मिलावटी हक की बुनियाद पर खड़े होते हैं। वे अपनी दुनियापरस्ताना जिंदगी पर हक का लेबल लगा लेते हैं। ऐसी हालत में बेआमेज हक की दावत को मानना अपनी जात की नफ़ी (नकार) की कीमत पर होता है। हक के दाओ को मानने के लिए उसके मुकाबले में अपने आपको छोटा करना पड़ता है, और अपने आपको छोटा करना बिलाशुबह इंसान के लिए मुश्किलतरीन काम है। यही वजह है कि ऐसा कभी नहीं होता कि हक की दावत उठे और लोग समूहों में उसकी तरफ दौड़ना शुरू कर दें। हक का इस्तक़बाल इस दुनिया में हमेशा एराज (उपेक्षा) और मुख़ालिफत की सूरत में किया गया है।

दाओ जब अपने माहौल में हक की यह बेवक्अती देखता है तो कभी कभी उस पर यह शुबह गुजरता है कि मैं ग़लती पर तो नहीं हूं। इस आयत में दाओ को इसी नफ्सियात (मनःस्थिति) से बचने की ताकीद की गई है।

इस शुबह के गलत होने का एक निहायत वाजेह सुबूत यह है कि पिछले पैग़म्बरों और दाअियों को भी इसी तरह की सूरतेहाल से साबिका पेश आया। जो लोग पहले के नबियों की तारीख़ से वाकिफ हैं उन्हें बख़ूबी मालूम है कि इस दुनिया में कभी ऐसा नहीं हुआ कि एक पैग़म्बर उठे और फौरन उसे अवामी मकबूलियत हासिल हो जाए। फिर यही बात अगर बाद के जमाने के दाअियों के साथ पेश आए तो इस पर हैरान व परेशान होने की क्या जरूरत।

आदमी की अक्ल अगर किसी चीज की सच्चाई पर गवाही दे और वह सिर्फ लोगों की बेतवज्जोही या मुख़ालिफत की वजह से इस चीज को छोड़ दे तो यह गोया अल्लाह की निशानियों को झुठलाना है। अल्लाह निशानियों (दलाइल) के रूप में इंसान के सामने जाहिर होता है। इसलिए जिस चीज की सदाकत (सच्चाई) पर दलील कायम हो जाए उसे मानना आदमी के ऊपर ख़ुदा का हक हो जाता है। फिर जो शख़्स ख़ुदा का हक अदा न करे उसके हिस्से में नुक्सान और हलाकत के सिवा क्या आएगा।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٩٨﴾

बेशक जिन लोगों पर तेरे रब की बात पूरी हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएंगे, चाहे उनके पास सारी निशानियां आ जाएं जब तक कि वे दर्दनाक अजाब को सामने आता न देख लें। पस क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसे नफा देता, यूनुस की कौम के सिवा। जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की जिंदगी में रुस्वाई का अजाब टाल दिया और उन्हें एक मुद्दत तक बहरामंद (सुखी-सम्पन्न) होने का मौका दिया। (96-98)

इंसान के सामने जब एक हक बात आती है तो उसकी अक्ल गवाही देती है कि यह सही है। मगर किसी हक को लेने के लिए आदमी को कुछ देना पड़ता है और इसी देने के लिए आदमी तैयार नहीं होता। इसके ख़ातिर आदमी को दूसरे के मुकाबले में अपने को छोटा करना पड़ता है। अपने मफाद (हित) को ख़तरे में डालना होता है। अपनी राय और अपने वकार (प्रतिष्ठा) को खोना पड़ता है। ये अंदेशे आदमी के लिए कुबूले हक में रुकावट बन जाते हैं। जिस चीज का जवाब उसे कुबूलियत और एतराफ से देना चाहिए था उसका जवाब वह इंकार और मुख़ालिफत से देने लगता है।

आदमी की नफ्सियात कुछ इस तरह बनी है कि वह एक बार जिस रुख़ पर चल पड़े उसी रुख़ पर उसका पूरा जेहन चलने लगता है। यही वजह है कि एक बार हक से इंहिराफ करने के बाद बहुत कम ऐसा होता है कि आदमी दुबारा हक की तरफ लौटे। क्योंकि हर आने वाले दिन वह अपने फिक्र (सोच) में पुख़्तातर होता चला जाता है। यहां तक कि वह इस काबिल ही नहीं रहता कि हक की तरफ वापस जाए।

इस तरह के लोग अपने मौकिफ (दृष्टिकोण) को बताने के लिए ऐसे अल्फाज बोलते हैं जिससे जाहिर हो कि उनका केस नजरियाती केस है। मगर हकीकतन वह सिर्फ जिद और तअस्सुब और हठधर्मी का केस होता है जो अपनी दुनियावी मस्लेहतों के ख़ातिर इख़्तियार किया जाता है। ताहम अजाबे ख़ुदावंदी के जुहूर के वक्त आदमी का यह भरम खुल जाएगा। ख़ौफ की हालत उसे उस चीज के आगे झुकने पर मजबूर कर देगी जिसके आगे वह बेख़ौफी की हालत में झुकने पर तैयार न होता था।

पिछले जमाने में जितने रसूल आए सबके साथ यह किस्सा पेश आया कि उनकी मुख़ातब कौम आख़िर वक्त तक ईमान नहीं लाई। अलबत्ता जब वे अजाब की पकड़ में आ गए तो उन्होंने कहा कि हम ईमान कुबूल करते हैं। जब तक ख़ुदा उन्हें दलील की जबान में

पुकार रहा था। उन्होंने नहीं माना और जब ख़ुदा ने उन्हें अपनी ताकतों की जद में ले लिया तो कहने लगे कि अब हम मानते हैं। मगर ऐसा मानना ख़ुदा के यहां मोतबर (मान्य) नहीं। ख़ुदा को वह मानना मत्लूब है जबकि आदमी दलील के जोर पर झुक जाए न कि वह ताकत के जोर पर झुके।

हजरत यूनुस अलैहिस्सलाम इराक के एक कदीम शहर नैनवा में भेजे गए। उन्होंने वहां तब्लीग़ की मगर वे लोग ईमान न लाए। आख़िर हजरत यूनुस ने पैग़म्बरों की सुन्नत के मुताबिक हिजरत की। वह यह कहकर नैनवा से चले गए कि अब तुम्हारे ऊपर ख़ुदा का अजाब आएगा। हजरत यूनुस के जाने के बाद अजाब की इब्तिदाई अलामतें जाहिर हुईं। मगर उस वक्त उन्होंने वह न किया जो कौमे हूद ने किया था कि उन्होंने अजाब का बादल आते देखकर कहा कि यह हमारे लिए बारिश बरसाने आ रहा है। कौमे यूनुस के अंदर फौरन चौंक पैदा हो गई। सारे लोग अपने मवेशियों और औरतों और बच्चों को लेकर मैदान में जमा हो गए और ख़ुदा के आगे आजिजी करने लगे। इसके बाद अजाब उनसे उठा लिया गया। जिस तरह जुहूरे अजाब से पहले का ईमान काबिले एतबार है उसी तरह कुर्बे अजाब के करीब का ईमान भी काबिले एतबार हो सकता है बशर्ते कि वह इतना कामिल हो जितना कामिल कौमे यूनुस का ईमान था।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَآمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۚ أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

और अगर तेरा रब चाहता तो जमीन पर जितने लोग हैं सबके सब ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएं। और किसी शख़्स के लिए मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की इजाजत के बग़ैर ईमान ला सके। और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक्ल से काम नहीं लेते। (99-100)

'तेरा रब चाहता तो सारे लोग मोमिन बन जाते' का मतलब यह है कि ख़ुदा के लिए यह मुमकिन था कि इंसानी दुनिया का निजाम भी उसी तरह बनाए जिस तरह बकिया दुनिया का निजाम है। जहां हर चीज मुकम्मल तौर पर ख़ुदा के हुक्म की पाबंद बनी हुई है। मगर इंसान के सिलसिले में ख़ुदा की यह स्कीम ही नहीं। इंसान के सिलसिले में ख़ुदा की स्कीम यह है कि आजादाना माहौल में रखकर इंसान को मौका दिया जाए कि वह ख़ुद अपने जाती फैसले से ख़ुदा का फरमांबरदार बने। वह अपने इख़्तियार से वह काम करे जो बकिया दुनिया बेइख़्तियारी के साथ कर रही है, जन्नत की अबदी (चिरस्थाई) नेमतें इसी इख़्तियाराना इताअत की कीमत हैं।

'कोई शख़्स ख़ुदा के इज्न के बग़ैर ईमान नहीं ला सकता' का मतलब यह है कि मौजूदा दुनिया में किसी को ईमान की नेमत मिलेगी तो उस तरीके की पैरवी करके मिलेगी जो ख़ुदा

ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया है। मौजूदा दुनिया में ईमान को पाने का रास्ता यह है कि आदमी ईमान की दावत को अपनी अक्ल के इस्तेमाल से समझे। जिस शख़्स की अक्ल के ऊपर उसकी दुनियावी मस्लेहतें (स्वार्थ) ग़ालिब आ जाएं उसकी अक्ल गोया गंदगी की कीचड़ में लतपत हो गई है। ऐसे शख़्स के लिए इस दुनिया में ईमान की नेमत पाने का कोई सवाल नहीं।

قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

कहो कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है उसे देखो और निशानियां और डरावे उन लोगों को फायदा नहीं पहुंचाते जो ईमान नहीं लाते। वे तो बस उस तरह के दिन का इंतिजार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुजरे हुए लोगों को पेश आए। कहो, इंतिजार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हूं फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए। इसी तरह हमारा जिम्मा है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे। (101-103)

हमारे चारों तरफ जो कायनात है उसमें बेशुमार निशानियां मौजूद हैं जो ख़ुदा के वजूद को साबित करती हैं। और इसी के साथ यह भी बताती हैं कि इस कायनात के बारे में ख़ुदा का मंसूबा क्या है। मजीद यह कि दुनिया में डरावे (आंधी और भूचाल) जैसे वाकेयात भी पेश आते रहते हैं जो इंसान को ख़ुदा और आख़िरत के मामले में संजीदा बनाएं। मगर यह सब कुछ आलमे इम्तेहान में होता है, यानी ऐसी दुनिया में जहां आदमी को इख़्तियार रहे कि माने या न माने। चुनांचे आदमी यह करता है कि जब निशानियां और डरावे सामने आते हैं तो वह उनकी कोई न कोई ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तौजीह करके बात को दूसरे रुख़ की तरफ फेर देता है और नसीहत से महरूम रह जाता है।

जब आदमी दलील की जबान में बात को न माने तो गोया वह सिर्फ उस दिन का इंतिजार कर रहा है जबकि इम्तेहान का पर्दा हटा दिया जाए और ख़ुदा अपना आख़िरी फैसला सुनाने के लिए सामने आ जाए। मगर वह दिन जब आएगा तो वह आज के दिन से बिल्कुल मुख़ालिफ होगा। आज तो मानने वाले और न मानने वाले दोनों बजाहिर यकसां (एक जैसी) हालत में नजर आते हैं। मगर जब फैसले का दिन आएगा तो इसके बाद वही लोग अम्न में रहेंगे जो हकपरस्त साबित हुए थे। बकिया तमाम लोग इस तरह अजाब की लपेट में आ जाएंगे कि इसके बाद उनके लिए कोई राह न होगी जिससे भाग कर वे नजात (मुक्ति) हासिल करें।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِن كُنتُمْ فِى شَكٍّ مِّن دِينِى فَلَآ أَعْبُدُ ٱلَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ ٱللَّهَ ٱلَّذِى يَتَوَفَّىٰكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٠٦﴾ وَإِن يَمْسَسْكَ ٱللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِۦ ۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

कहो, ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन के मुताल्लिक शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा। बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम्हें वफात (मौत) देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूं। और यह कि अपना रुख़ यकसू (एकाग्र) होकर दीन की तरफ करूं। और मुश्रिकों में से न बनूं। और अल्लाह के अलावा उन्हें न पुकारो जो तुम्हें न नफा पहुंचा सकते हैं और न नुक्सान। फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में से हो जाओगे। और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर सके। और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उसके फ़्ल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपना फ़्ल अपने बंदों में से जिसे चाहता है देता है और वह बख़्शने वाला महरबान है। (104-107)

दाओ पहले दलील की जबान में अपनी बात कहता है। मगर जब लोग दलील सुनने के बावजूद शक व शुबह में पड़े रहते हैं तो उसके पास आख़िरी चीज यह रह जाती है कि अज्म (संकल्प) की जबान में अपने पैग़ाम की सदाकृत का इज्हार कर दे।

तौहीद के दाओ का शिर्क करने वालों से यह कहना कि 'मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी इबादत तुम लोग करते हो' महज एक दावा नहीं बल्कि वह अपनी जात में एक दलील भी है। इसका मतलब यह है किमैं भी तुम्हारे जैसा एक इंसान हूं। मेरे पास भी वही अक्ल है जो तुम्हारे पास है। फिर जिस बात की सदाकत (सच्चाई) मेरी समझ मे आ रही है उसकी सदाकत तुम्हारी समझ में आख़िर क्यों नहीं आती।

सच्चाई अगर एक इंसान की सतह पर काबिलेफहम (समझ में आने योग्य) हो जाए तो इससे यह साबित होता है कि वह दूसरे इंसानों के लिए भी काबिलेफहम थी। इसके बावजूद अगर दूसरे लोग इंकार करें तो यकीनन इसकी वजह ख़ुद उनका अपना कोई नुक्स (कमी)

होगा न कि हक की दावत का नुक्स। जिस चीज को एक आंख वाला देख रहा हो और दूसरा आंख वाला शख़्स उसे न देखे तो वह सिर्फ इस बात का सुबूत है कि आंख वाला हकीकतन आंख वाला नहीं। क्योंकि इस दुनिया में यह मुमकिन नहीं कि जिस चीज को एक आंख वाला देख ले उसे दूसरा शख़्स आंख रखते हुए न देख सके।

मौत इस बात का एलान है कि आदमी इस दुनिया में कामिल तौर पर बेइख़्तियार है। मौत उन तमाम चीजों को बातिल (असत्य) साबित कर देती है जिनके सहारे आदमी इंकार और सरकशी का तरीका इख़्तियार करता है। मौत एक तरफ आदमी को अपने इज्ज और दूसरी तरफ ख़ुदा की कुदरत का तआरुफ कराती है। वह बताती है कि इस दुनिया में कोई नहीं जिसे नफा देने या नुक्सान पहुंचाने का इख़्तियार हासिल हो। इस तरह मौत आदमी को हर दूसरी चीज से काट कर ख़ुदा की तरफ ले जाती है। वह मुकम्मल तौर पर इंसान को ख़ुदा का परस्तार बनाती है। अगर आदमी के अंदर सबक लेने का जेहन हो तो सिर्फ मौत का वाक्या उसकी इस्लाह (सुधार) के लिए काफी हो जाए।

हर इंसान पर एक वक्त आता है जबकि वह बेबसी के साथ अपने आपको मौत के हवाले कर देता है। इसी तरह किसी इंसान के बस में नहीं कि वह फायदा और नुक्सान के मामले में वही होने दे जो वह चाहता है। वह मत्लूब फायदे को हर हाल में पा ले और ग़ैर मत्लूब नुक्सान से हर हाल में महफूज रहे।

यह सूरतेहाल बताती है कि इंसान एक बेइख़्तियार मख़्लूक है। वह एक ऐसी दुनिया में है जहां कोई और भी है जो उसके ऊपर हुक्मरानी कर रहा है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ ٱهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَآ أَنَا۠ عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾ وَٱتَّبِعْ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيْكَ وَٱصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

कहो, ऐ लोगो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास हक आ गया है। जो हिदायत कुबूल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा, और मैं तुम्हारे ऊपर जिम्मेदार नहीं हूं। और तुम उसकी पैरवी करो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। (108-109)

दावत (आह्वान) का काम अस्लन हक के एलान का काम है। किसी गिरोह के ऊपर उस वक्त पैग़ामरसानी का हक अदा हो जाता है जबकि दाओ हक (सत्य) को दलील के जरिए पूरी तरह वाजेह कर दे और इसी के साथ इस बात का सुबूत दे दे कि वह इस मामले में पूरी तरह संजीदा है।

दाओ अगर वक्त के मेयार के मुताबिक हक को मुदल्लल (तार्किक) कर दे। वह नफा नुक्सान से बेनियाज होकर हक की मुकम्मल गवाही दे दे। वह हर तकलीफ और नाख़ुशगवारी

को बर्दाश्त करता हुआ अपने दावती काम को जारी रखे तो इसके बाद मुख़ातब (संबोधित व्यक्ति) के ऊपर वह इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) हो जाता है जिसके बाद ख़ुदा के यहां किसी के लिए कोई उज़्र (विवशता) बाक़ी न रहे।

दाअी (आह्वानकर्ता) का काम अस्लन इत्तबाए 'वही' है। यानी अपनी जात की हद तक अमलन रब की मर्जी पर क़ायम रहते हुए दूसरों को रब की मर्जी की तरफ पुकारते रहना। इस काम को हर हाल में हिक्मत और सब्र और ख़ैरख़्वाही के साथ मुसलसल जारी रखना है। इसके बाद जितने बकिया मराहिल हैं वे सब बराहेरास्त तौर पर ख़ुदा से मुतअल्लिक हैं। दाअी की तरफ से कोई दूसरा अमली इक़दाम सिर्फ उस वक्त दुरुस्त है जबकि ख़ुद ख़ुदा की तरफ से उसका फैसला किया जा चुका हो और उसके आसार जाहिर हो जाएं।

ख़ुदा का फैसला हमेशा हालात के रूप में जाहिर होता है। जब ख़ुदा के इल्म में दाअी का दावती काम मत्लूबा हद को पहुंच चुका होता है तो ख़ुदा हालात में ऐसी तब्दीलियां पैदा करता है जिसे इस्तेमाल करके दाअी अपने अमल के अगले मरहले में दाख़िल हो जाए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

आयतें-123 सूरह-11. हूद रुकूअ-10

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। यह किताब है जिसकी आयतें पहले मोहकम (दृढ़) की गईं फिर एक दाना (तत्वदर्शी) और ख़बीर (सर्वज्ञ) हस्ती की तरफ से उनकी तफ़्सील की गई कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो। मैं तुम्हें उसकी तरफ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं। और यह कि तुम अपने रब से माफी चाहो और उसकी तरफ पलट आओ, वह तुम्हें एक मुद्दत तक बरतवाएगा अच्छा बरतवाना, और हर ज्यादा के मुस्तहिक को अपनी तरफ से ज्यादा अता करेगा। और अगर तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे हक में एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। तुम सबको अल्लाह की तरफ पलटना है और वह हर चीज पर क़ादिर है। (1-4)

कुरआन की दावत (आह्वान) यह है कि आदमी एक अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करे। वह एक ख़ुदा को अपना सब कुछ बनाए। वह उसी से डरे और उसी से उम्मीद रखे। उसके जेहन व दिमाग़ पर उसी का ग़लबा हो। अपनी जिंदगी के मामलात में वह सबसे ज्यादा उसकी मर्जी का लिहाज करे। वह अपने आपको आबिद (पूजक) के मक़ाम पर रखकर ख़ुदा को माबूद (पूज्य) का मक़ाम देने पर राजी हो जाए।

पैग़म्बराना दावत दरअस्ल इसी चीज से इंसान को बाख़बर करने की दावत है। कुरआन में इसको इंतिहाई मोहकम जबान और वाजेह उस्लूब में बयान कर दिया गया है। अब इंसान से जो चीज मत्लूब है वह यह कि वह इसके मुक़ाबले में सही रद्देअमल पेश करे। हसद, घमंड, मस्लेहतबीनी (स्वार्थता) और गिरोहपरस्ती जैसी चीजों के जेरेअसर आकर वह उसे नजरअंदाज न कर दे। बल्कि सीधी तरह उसे मान कर ख़ुदा की तरफ पलट आए। वह अपनी माजी की ग़लतियों के लिए ख़ुदा से माफ़ी मांगे और मुस्तक़बिल के लिए ख़ुदा से मदद की दरख़्वास्त करे।

आदमी के सामने खाना पेश किया जाए और वह खाने को कुबूल कर ले तो इसका मतलब यह है कि उसने अपनी जिस्मानी परवरिश का इंतिजाम किया। इसके बरअक्स अगर वह खाना कुबूल न करे तो गोया उसने अपने आपको जिस्मानी परवरिश से महरूम रखा। ऐसा ही मामला हक की दावत का है। जब आदमी हक को कुबूल करता है तो दरहक़ीक़त वह उस रिज़्के रब्बानी को कुबूल करता है जो उसके अंदर दाख़िल होकर उसकी रूह और उसके जिस्म की सालेह (सही) परवरिश का सबब बने और बिलआख़िर उसे रूहानी तरक्की की उस मंजिल की तरफ ले जाए जो उसे जन्नत के बाग़ों का मुस्तहिक बनाती है।

जो शख़्स हक की दावत को कुबूल न करे उसने गोया अपनी रूह को रब्बानी परवरिश के मौकों से महरूम कर दिया। हक को मानने वाला अगर तवाजोअ (विनम्रता) में जी रहा था तो यह दूसरा शख़्स घमंड की नफ्सियात में जिएगा। हक को मानने वाले के लम्हात अगर ख़ुदा की याद में बसर हो रहे थे तो उसके लम्हात ग़ैर ख़ुदा की याद में बसर होंगे। हक को मानने वाला अगर ज़िंदगी के मौकों में इताअते ख़ुदावंदी का रवैया इख़्तियार किए हुए था तो यह उसकी जगह सरकशी का रवैया इख़्तियार करेगा। इसका नतीजा यह होगा कि पहला शख़्स इस दुनिया से इस हाल में जाएगा कि उसकी रूह सेहतमंद और तरक्क़ीयाफ्ता रूह होगी और जन्नत की फजाओं में बसाए जाने की मुस्तहिक ठहरेगी। और दूसरे शख़्स की रूह बीमार और पिछड़ी हुई रूह होगी और सिर्फ इस काबिल होगी कि उसे जहन्नम के कूड़ाघर में फेंक दिया जाए।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

देखो, ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छुप जाएं। ख़बरदार, जब वे कपड़ों से अपने आपको ढांपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो वे जाहिर करते हैं। वह दिलों की बात तक जानने वाला है। और जमीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोजी अल्लाह की जिम्मे न हो। और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सौंपा जाता है। सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है। (5-6)

कुरैश के कुछ सरदारों ने ऐसा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सामने तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत पेश की तो वे बेपरवाही के साथ उठे। अपनी चादर अपने ऊपर डाली और रवाना हो गए।

यह दरअस्ल किसी बात को नजरअंदाज करने की एक सूरत है। कोई आदमी जब दाओी (आह्वानकर्ता) को हकीर (तुच्छ) समझे और उसके मुकाबले में अपने को बरतर ख़्याल करे तो उस वक्त वह इसी किस्म का रवैया इख़्तियार करता है। मगर आदमी भूल जाता है कि जिस नफ्सियात के तहत वह ऐसा कर रहा है वह अल्लाह तआला को ख़ूब मालूम है। यह सिर्फ एक इंसान (दाओी) को नजरअंदाज करना नहीं है बल्कि ख़ुद ख़ुदा को नजरअंदाज करना है जो हर खुले और छुपे को जानने वाला है।

फिर आदमी का हाल उस वक्त क्या होगा जब वह ख़ुदा का सामना करेगा। वह देखेगा कि जिस ख़ुदा को उसने नजरअंदाज किया था वही वह हस्ती था जिससे उसे वह सब कुछ मिला था जो उसके पास था। यहां तक कि वे असबाब भी जिनके बल पर उसने ख़ुदा की बात को नजरअंदाज कर दिया था। आदमी ख़ुदा की दुनिया में है और बिलआख़िर वह ख़ुदा की तरफ जाने वाला है। मगर वह इस तरह रहता है जैसे कि न आज ख़ुदा से उसका कोई तअल्लुक है और न आइंदा उसका ख़ुदा से कोई वास्ता पड़ने वाला है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ۗ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

और वही है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था, ताकि तुम्हें आजमाए कि कौन तुम में अच्छा काम करता है। और अगर तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो मुंकिरीन कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है। और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सजा को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज उसे रोके हुए है। आगाह, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा

तो वह उनसे फेरा न जा सकेगा और उन्हें घेर लेगी वह चीज जिसका वे मजाक उड़ा रहे थे। (7-8)

मौजूदा दुनिया को ख़ुदा ने छः दिनो, यानी छः अदवार (Periods) में पैदा किया है। जमीन पर एक ऐसा दौर गुजरा है जबकि उसकी सतह पानी से ढकी हुई थी। ख़ुदा की सल्तनत के इस हिस्से में उस वक्त सिर्फ पानी नजर आता था। इसके बाद ख़ुदा के हुक्म से ख़ुश्की के इलाके उभर आए और पानी समुद्रों की गहराई में जमा हो गया। इस तरह यह मुमकिन हुआ कि जमीन पर मौजूदा जीवधारी ज़हूर में आए।

ख़ुदा अगरचे कादिर है कि वाकेयात को अचानक जाहिर कर दे। मगर यह दुनिया इंसान के लिए बतौर इम्तेहानगाह बनाई गई है। यही वजह है कि खुदा ने मौजूदा दुनिया को मंसूबे के तहत बनाया और अपनी तख़्लीकात (रचनाओं) पर असबाब का पर्दा कायम रखा।

दुनिया की पैदाइश और उस पर इंसान की आबादकारी से ख़ुदा का मक्सूद अच्छा अमल करने वाले का इंतख़ाब है। 'अच्छा अमल' दरअस्ल हकीकतपसंदाना अमल का दूसरा नाम है। यानी किसी दबाव के बग़ैर वह करना जो अजरूए हकीकत आदमी को करना चाहिए। हकीकतपसंद शख़्स वह है जो असबाब के जाहिरी पर्दे से गुजर कर ख़ुदा की छुपी हुई हुई कारफरमाई को देख ले। बजाहिर इख़्तियार रखते हुए अपने आपको बेइख़्तियार कर ले। सरकशी की जिंदगी गुजारने का मौका रखते हुए ख़ुदा का ताबेअदार बन जाए।

मौजूदा दुनिया में ऐसे ही हकीकतपसंद इंसानों का चुनाव हो रहा है। जब चुनाव की यह मुद्दत ख़त्म होगी तो मौजूदा निजाम को ख़त्म करके दूसरा मेयारी निजाम बनाया जाएगा जहां तमाम अच्छी चीजें सिर्फ अच्छा अमल करने वालों के लिए होंगी और तमाम बुरी चीजें सिर्फ बुरा अमल करने वालों के लिए।

अल्लाह तआला अपने कानूने मोहलत की वजह से मुंकिरों और सरकशों को फौरन नहीं पकड़ता। उन्हें इंतिहाई हद तक मौका देता है कि वे या तो सचेत होकर अपनी इस्लाह कर लें या आख़िरी तौर पर अपने आपको मुजरिम साबित कर दें। यह कानूने मोहलत कुछ सरकशों के लिए ग़लतफहमी का सबब बन जाता है। वे अपनी हैसियत को भूल कर बड़ी-बड़ी बातें करने लगते हैं। मगर जब वे ख़ुदा की पकड़ में आ जाएंगे उस वक्त उन्हें मालूम होगा कि वे ख़ुदा के मुकाबले में किस कद्र बेबस थे।

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ۝ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ۗ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाजते हैं फिर उससे उसे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्रा बन जाता है। और अगर किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहुंची थी, उसे हम नेमत से नवाजते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें

मुझसे दूर हो गईं, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है। मगर जो लोग सब्र करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं उनके लिए बख़्शिश (क्षमा) है और बड़ा अज्र (प्रतिफल)। (9-11)

मौजूदा दुनिया में आदमी को कभी राहत दी जाती है और कभी मुसीबत। मगर यहां न राहत इनाम के तौर पर है और न मुसीबत सजा के तौर पर। दोनों ही का मक्सद जांच है। यह दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां इंसान के साथ जो कुछ पेश आता है वह सिर्फ इसलिए होता है कि यह देखा जाए कि मुख़्तलिफ हालात में आदमी ने किस किस्म का रद्देअमल पेश किया।

वह आदमी नाकाम है जिसका हाल यह हो कि जब उसे ख़ुदा की तरफ से कोई राहत पहुंचे तो वह फ़ख़्र की नफ्सियात में मुब्तिला हो जाए। और जो अफराद उसे अपने से कम दिखाई दें उनके मुकाबले में वह अकड़ने लगे। इसी तरह वह शख़्स भी नाकाम है कि जब उससे कोई चीज छिने और वह मुसीबत का शिकार हो तो वह नाशुक्री करने लगे। किसी महरूमी के बाद भी आदमी के पास ख़ुदा की दी हुई बहुत सी चीजें मौजूद होती हैं। मगर आदमी उन्हें भूल जाता है और खोई हुई चीज के ग़म में ऐसा पस्तहिम्मत होता है गोया उसका सब कुछ लुट गया है।

इसके बरअक्स ईमान में पूरा उतरने वाले वे हैं जो साबिर (धैर्यवान) और नेक अमल करने वाले हों। यानी हर झटके के बावजूद अपने आपको एतदाल पर बाकी रखें और वही करें जो ख़ुदा का बंदा होने की हैसियत से उन्हें करना चाहिए।

सब्र यह है कि आदमी की नफ्सियात हालात के जेरेअसर न बने बल्कि उसूल और नजरिये के तहत बने। हालात चाहे कुछ हों वह उनसे बुलन्द होकर ख़ालिस हक की रोशनी में अपनी राय बनाए। वह हालात से ग़ैर मुतअस्सिर रहकर अपने अकीदे और शुऊर की सतह पर जिंदा रहने की ताकत रखता हो। इसी किस्म की जिंदगी नेक अमली की जिंदगी है। जो लोग इस नेक अमली का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो अगली जिंदगी में ख़ुदा की रहमतों के हिस्सेदार होंगे और ख़ुदा की अबदी (चिरस्थाई) जन्नतों में जगह पाएंगे।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۲﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज का कुछ हिस्सा छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और तुम इस बात पर दिलतंग हो कि वे कहते हैं कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फरिश्ता क्यों नहीं आया। तुम तो सिर्फ डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज का जिम्मेदार है। क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को गढ़ लिया है। कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरतें बना कर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, फिर क्या तुम हुक्म मानते हो। (12-14)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब शिर्क की तरदीद की और लोगों को तौहीद की तरफ बुलाया तो आपके मुख़ातबीन बिगड़ गए। इसकी वजह यह थी कि आपकी बातों से उनके उन बड़ों पर जद पड़ती थी जिनके दीन को उन्होंने इख़्तियार कर रखा था और जिनसे जुड़ाव पर वे फख़्र करते थे। सूरतेहाल यह थी कि कदीम अरबों के ये अकाबिर (बड़े) तारीख़ी तौर पर उनकी नजर में बाअज्मत बने हुए थे, जबकि पैग़म्बरे इस्लाम के साथ अभी तारीख़ की अज्मतें शामिल नहीं हुई थीं। उस वक्त आप लोगों को एक बेहैसियत इंसान के रूप में नजर आते थे। अरब के लोग यह देखकर सख़्त बरहम (आक्रोशित) होते थे कि एक मामूली आदमी ऐसी बातें कह रहा है जिससे उनके अकाबिर व महापुरुष बेएतबार साबित हो रहे हैं।

ऐसी हालत में दाई के जेहन में यह ख़्याल आता है कि वह, कम से कम वक्ती तौर पर, तंकीदी अंदाज से परहेज करे और सिर्फ मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर अपना पैग़ाम पेश करे। ''शायद तुम 'वही' के कुछ हिस्से की तब्लीग़ छोड़ दोगे।'' से मुराद ख़ुदाई 'वही' का यही तंकीदी हिस्सा है। मगर अल्लाह तआला को वजाहत मत्लूब है और तंकीद (आलोचना) के बग़ैर वजाहत मुमकिन नहीं। फिर अगर हक को पूरी तरह खोलने के नतीजे में लोग दाई को मज़ाक और मुख़ालिफत का मौजूअ (विषय) बनाएं तो इससे घबराने की क्या जरूरत। मदऊ की तरफ से यह मुख़ालिफाना रद्देअमल तो दरअस्ल वह कीमत है जो किसी आदमी को बेआमेज (विशुद्ध) हक का दाई बनने के लिए इस दुनिया में अदा करनी पड़ती है।

ख़ुदा के दाई के बरहक होने का सबसे ज्यादा यकीनी सुबूत उसका नाकाबिले तक्लीद (अद्वितीय) कलाम है। जो लोग पैग़म्बर को हकीर (तुच्छ) समझ रहे थे और यह यकीन करने के लिए तैयार न थे कि इस बजाहिर मामूली आदमी को वह सच्चाई मिली है जो उनके अकाबिर को भी नहीं मिली थी, उनसे कहा गया कि पैग़म्बर की सदाकत को इस मेयार पर न जांचो कि माद्दी एतबार से वह कैसा है। बल्कि इस हैसियत से देखो कि वह जिस कलाम के जरिए अपनी दावत पेश कर रहा है वह कलाम इतना अजीम है कि तुम और तुम्हारे तमाम अकाबिर मिलकर भी वैसा कलाम नहीं बना सकते। यह नाकाबिले तक्लीद इम्तियाज (विशिष्टता) इस बात का कतई सुबूत है कि पैग़म्बर ख़ुदा की तरफ से बोल रहा है। पैग़म्बर के बरसरे हक होने की इस वाजेह निशानी के बाद आख़िर लोगों को ख़ुदा का हुक्मबरदार बनने में किस चीज का इंतिजार है।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

जो लोग दुनिया की जिंदगी और उसकी जीनत (वैभव) चाहते हैं, हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं। और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं है। उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था वह बर्बाद हुआ और ख़राब गया जो उन्होंने कमाया था। (15-16)

दीन की दो किस्में हैं। एक मिलावटी दीन, दूसरा बेआमेज दीन। मिलावटी दीन दरअस्ल दुनिया के ऊपर दीन का लेबल लगाने का दूसरा नाम है। वह दुनिया और दीन के दर्मियान मुसालेहत करने से वजूद में आता है। यही वजह है कि हर जमाने में ऐसा होता है कि मिलावटी दीन की बुनियाद पर बड़े-बड़े इदारे कायम होते हैं। मफ़ादपरस्त लोग उसके जरिए दीन के नाम पर दुनिया हासिल कर लेते हैं।

बेआमेज (विशुद्ध) दीन का मामला इसके बिल्कुल बरअक्स है। बेआमेज दीन की दावत जब किसी माहौल में उठती है तो वह सिर्फ एक नजरी सच्चाई होती है। मआशी मफादात और कयादती मसालेह (हित) उसके साथ जमा नहीं होते। ऐसी हालत में जो लोग मिलावटी दीन के नाम पर इज्जत और मकाम हासिल किए हुए हों उनके सामने जब बेआमेज दीन का दावत आती है तो वे सख़्त ख़ौफज़दा होते हैं। क्योंकि इसे इख़्तियार करने की सूरत में उन्हें नजर आता है कि तमाम दुनियावी चीजें उनसे छिन जाएंगी।

इस एतबार से किसी माहौल में बेआमेज दीन का दावत का उठना वहां एक नाजुक इम्तेहान का बरपा होना है। ऐसे वक्त में जो लोग दुनिया की इज्जत और दुनिया के मफ़ादात को काबिले तरजीह समझें और बेआमेज दीन का साथ न दें उनकी सारी दौड़ धूप दुनिया के ख़ाने में चली जाती है। क्योंकि उन्होंने उस दीन का साथ दिया जिसमें उनके दुनियावी मफ़ादात (स्वार्थ) महफूज थे। और उस दीन का साथ न दिया जिसमें उन्हें अपने दुनियावी मफ़ादात छिनते हुए नजर आते थे। वे बजाहिर चाहे दीनी सरगर्मियों में मशग़ूल हों, अस्ल मक्सूद के एतबार से वे दुनिया के हुसूल मे मशग़ूल होते हैं। जाहिर है कि ऐसी कोशिशों का आख़िरत में कोई नतीजा मिलना मुमकिन नहीं।

उन्होंने अगरचे अपनी सरगर्मियों को दीन का नाम दे रखा था वे अपने कौमी मेलों के ऊपर जश्ने दीनी का बोर्ड लगाते थे। वे अपनी कौमी लड़ाइयों को मुकद्दस जंग का नाम देते थे। वे अपनी कयादती नुमाइश को दीनी कॉन्फ्रेंस कहते थे, वे अपने सियासी हंगामों को मजहब की इस्तेलाहात (शब्दावलियों) में बयान करते थे, वे अपने दुनियावी जज्बात के तहत धूम मचाते थे और उसे ख़ुदा और रसूल के साथ जोड़ते थे। मगर ये सारी तामीरात दुनिया की जमीन में थीं, वे आख़िरत की जमीन में न थीं, इसलिए कियामत का जलजला उन्हें बिल्कुल बर्बाद कर देगा। अगली दुनिया में उनका कोई अंजाम उनके हिस्से में न आएगा।

أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتٰبُ مُوسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۚ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

भला एक शख़्स जो अपने रब की तरफ से एक दलील पर है, इसके बाद अल्लाह की तरफ से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जमाअतों में से जो कोई इसका इंकार करे तो उसके वादे की जगह आग है। पस तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ो। यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (17)

पैग़म्बरे इस्लाम ने अरब में तौहीद की दावत पेश की तो कुछ लोगों ने उसे माना और ज्यादा लोग इसके मुंकिर हो गए। यही हर जमाने में हक की दावत के साथ होता रहा है।

ख़ुदा ने हर आदमी को फ़ितरते सही पर पैदा किया है। गिर्द व पेश की दुनिया में हर तरफ ऐसी निशानियां फैली हुई हैं जो अपने ख़ालिक का एलान करती हैं और इसी के साथ उसके तख़्लीकी मंसूबे की तरफ इशारा कर रही हैं। फिर इंसानियत के बिल्कुल इब्तिदाई जमाने से ख़ुदा के रसूल आते रहे और ख़ुदा की बातें लोगों को बताते रहे। उन्हीं में से एक पैग़म्बर हजरत मूसा अलैहिस्सलाम हैं। जिनकी लाई हुई किताब अब तक किसी न किसी शक्ल में मौजूद है। अब जो शख़्स संजीदा हो और चीजों से सबक लेना जानता हो तो वह हकीकत से इतना मानूस (भिज्ञ) होगा कि दाई जब उसके सामने हकीकत का एलान करेगा तो फौरन वह उसे पहचान लेगा। उसका दिल और उसका दिमाग़ हक के हक होने पर गवाही देंगे। वह आगे बढ़कर उसे इस तरह इख़्तियार कर लेगा जैसे वह उसके अपने दिल की आवाज हो।

मगर अक्सर लोगों का हाल यह होता है कि वे चीजों को बहुत ज्यादा संजीदगी के साथ नहीं देखते। वे सतही तमाशों और वक्ती दिलचस्पियों में पड़कर अपना मिजाज बिगाड़ लेते हैं। ग़ैर मुतअल्लिक चीजों की मसरूफ़ियत उन्हें इसका मौका नहीं देती कि वे दाई और उसकी दावत पर ठहर कर सोचें। चुनांचे उनके सामने जब हक की बात आती है तो वे उसे पहचान नहीं पाते। वे अपने बिगड़े हुए मिजाज की बिना पर उसके मुंकिर बल्कि मुख़ालिफ बन जाते हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा की और ख़ुदा के तख़्लीकी मंसूबे की नाकद्री की। उनके लिए आख़िरत में जहन्नम की आग के सिवा और कुछ नहीं।

इंसानी फ़ितरत, जमीन व आसमान के वाकेयात और पिछली आसमानी किताबें कुरआन के हक होने की गवाही दे रही हैं। इसके बाद अगर लोगों की अक्सरियत (बहुसंख्या) इसका इंकार करती है तो इसकी वजह मुंकिरीन के अंदर तलाश की जाएगी न यह कि ख़ुद कुरआन के किताबे हक (दिव्य ग्रंथ) होने पर शक किया जाए।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾ أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

और उससे बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था। सुनो, अल्लाह की लानत है जालिमों के ऊपर। उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते हैं। यही लोग आख़िरत के मुंकिर हैं। वे लोग जमीन में अल्लाह को बेबस करने वाले नहीं और न अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उन पर दोहरा अजाब होगा। वे न सुन सकते थे और न देखते थे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। और वे सब कुछ उनसे खोया गया जो उन्होंने गढ़ रखा था। इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत (परलोक) में सबसे ज्यादा घाटे में रहेंगे। (18-22)

'ख़ुदा पर झूठ गढ़ने' से मुराद ख़ुदा की जात पर झूठ गढ़ना नहीं है। इससे मुराद ख़ुदा की बात पर झूठ गढ़ना है। ख़ुदा अपना पैग़ाम सुनाने के लिए ख़ुद सामने नहीं आता बल्कि एक इंसान की जबान से इसका एलान कराता है। यह इंसान उस वक्त बजाहिर एक मामूली इंसान होता है, मगर उसके कलाम में ख़ुदा की वाजेह झलकियां होती हैं। अगर लोग उसे उसके कलाम के एतबार से देखें तो वे उसकी अज्मतों में ख़ुदा को पा लें। मगर लोगों की सतहियत और जाहिरपरस्ती का नतीजा यह होता है कि उनकी निगाहें सुनाने वाले की मामूली हैसियत में अटक कर रह जाती हैं। पैग़म्बर का मामूली होना उन्हें नजर आता है मगर पैग़ाम का ग़ैर मामूली होना उन्हें दिखाई नहीं देता। चुनांचे वे उसे एक आम इंसान का मामला समझ कर उसका मजाक उड़ाते हैं। उसकी बात में झूठे एतराजात निकालते हैं। और उसे इस तरह नजरंअदाज कर देते हैं जैसे कि इसकी कोई अहमियत ही नहीं।

इस जालिमाना रवैये की अस्ल वजह बेख़ौफ़ी की नफ्सियात है। लोगों को आख़िरत पर यकीन नहीं। उनके दिलों में ख़ुदाए कह्हार व जब्बार का ख़ौफ नहीं। इसलिए वे इस पैग़ाम के

बारे में संजीदा नहीं हो पाते। और जिस मामले में आदमी संजीदा न हो वह उसके मुतअल्लिक सही रद्देअमल पेश करने में हमेशा नाकाम रहेगा।

मगर लोगों की यह ग़ैर संजीदगी उस वक्त रुख़्सत हो जाएगी जब वे कियामत में मालिके कायनात के सामने खड़े होंगे। उस वक्त उनकी मौजूदा आजादी उनसे छिन चुकी होगी। जिन असबाब व वसाइल के भरोसे पर वे सरकश बने हुए थे वे ख़ुदा का टेपरिकॉर्डर बनकर उनके ख़िलाफ गवाही देने लगेंगे। उस वक्त यह सुस्पष्ट हो जाएगा कि ख़ुदा के दाओ (आह्वानकर्ता) को जो उन्होंने झुठलाया तो इसकी वजह यह नहीं थी कि वे उसे समझने से आजिज थे। इसकी वजह यह थी कि वे उसके बारे में संजीदा न थे। कियामत की हौलनाकी अचानक उन्हें संजीदा बना देगी। उस वक्त अपनी बेबसी के माहौल में वे उस बात को पूरी तरफ समझ लेंगे जिसे दुनिया में अपनी आजादी के माहौल में समझ नहीं पाते थे।

अल्लाह ने इंसान को ऐसी आला सलाहियतें दी हैं कि अगर वह उन्हें इस्तेमाल करे तो वह हर बात को उसकी गहराई तक समझ सकता है। और अपने दुनियावी मामलात में वाकेयतन वह ऐसा ही साबित होता है। मगर आख़िरत के मामले में आदमी का हाल यह है कि वह कान रखते हुए बहरा बन जाता है और आंख रखते हुए अंधेपन का सुबूत देता है।

आदमी की कामयाबी उसकी संजीदगी (Sincerity) की कीमत है। जो लोग दुनिया के मामले में संजीदा हों वे दुनिया में कामयाब रहते हैं। इसी तरह जो लोग आख़िरत के मामले में संजीदा हों वे आख़िरत में कामयाब रहेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिजी (समर्पण) की वही लोग जन्नत वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। इन दोनों फरीकों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या ये दोनों यकसां (समान) हो जाएंगे। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (23-24)

इख़्बात के मअना हैं आजिजी करना (समर्पण भाव से झुकना)। यही ईमान का ख़ुलासा है। ईमान न कोई विरासत है और न किसी लफ्जी मज्मूअे की ज़बानी अदायगी। ईमान एक दरयाफ्त (खोज) है। आदमी जब अपने देखने-सुनने (दूसरे शब्दों में शुऊर) को इस्तेमाल करके ख़ुदा को पाता है और इसके मुकाबले में अपनी हैसियत का इदराक (भान) करता है तो उस वक्त उसके ऊपर जो कैफ़ियत तारी होती है उसी का नाम इज्ज (इख़्बात) है। इज्ज ख़ुदा के मुकाबले में अपनी हैसियते वाकई की पहचान का लाजिमी नतीजा है।

ईमान, इख़्बात और अमले सालेह (सत्कर्म) तीनों एक ही हकीकत के मुख़्तलिफ पहलू हैं। ईमान ख़ुदा के वजूद और उसकी सिफ़ाते कमाल की शुऊरी दरयाफ्त है। इख़्बात उस कल्बी

हालत का नाम है जो ख़ुदा की दरयाफ़्त के नतीजे में लाजिमन आदमी के अंदर पैदा होती है। अमले सालेह उसी शुऊर और उसी कैफियत से पैदा होने वाली ख़ारजी (वाह्य) सूरत है। आदमी जब ख़ुदा के जेहन से सोचता है। जब उसका दिल ख़ुदाई कैफ़ियतों से भर जाता है तो उस वक्त उसके ऐन फ़ितरी नतीजे के तौर पर उसकी जाहिरी जिंदगी ख़ुदाई अमल में ढल जाती है। इसी का नाम अमले सालेह है। जो शख़्स ईमान, इख़्बात और अमले सालेह का पैकर बन जाए वही ख़ुदा का मत्लूब इंसान है। और वही वह इंसान है जिसे जन्नत के अबदी (चिरस्थाई) बाग़ों में बसाया जाएगा।

दुनिया में आलातरीन इम्तेहानी हालात पैदा करके यह दिखाया जा रहा है कि कौन अपने आपको क्या साबित करता है। एक गिरोह वह है जिसने अपने समअ व बसर (शुऊर) को सही तौर पर इस्तेमाल करके हकीकते वाकया को जाना और अपने आपको उसके मुताबिक ढाल लिया। ये देखने और सुनने वाले लोग हैं। दूसरा गिरोह वह है जिसने अपने समअ व बसर (सुनने-देखने) को सही तौर पर इस्तेमाल नहीं किया। उसे न हकीकते वाकया की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) हासिल हुई और न वह अपने आपको उसके मुताबिक ढाल सका। ये अंधे और बहरे लोग हैं। जाहिर है कि ये दोनों बिल्कुल मुख़्तलिफ किस्म के इंसान हैं। और दो मुख़्तलिफ इंसानों का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा कि मैं तुम्हें खुला हुआ डराने वाला हूं। यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक दर्दनाक अजाब के दिन का अंदेशा रखता हूं। उसकी कौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने इंकार किया था कि हम तो तुम्हें बस अपने जैसा एक आदमी देखते हैं। और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारे ताबेअ हुआ हो सिवाए उनके जो हम में पस्त लोग हैं, बेसमझे बूझे। और हम नहीं देखते कि तुम्हें हमारे ऊपर कुछ बड़ाई हासिल हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (25-27)

ख़ुदा के जितने पैगम्बर आए, इसीलिए आए कि वे इंसान को ख़ुदा के तख़्लीकी मंसूबे से आगाह करें। यह मंसूबा कि इंसान मौजूदा दुनिया में इम्तेहान की गरज से रखा गया है। यहां अगरचे बजाहिर मुख़्तलिफ चीजों की इबादत के मौके हैं। मगर अस्ल मत्लूब सिर्फ यह है कि इंसान ख़ुदा का आबिद बने। जो लोग ख़ुदा के आबिद (पूजक) न बनें वे इम्तेहान में

नाकाम हो गए। ऐसे लोगों के लिए मरने के बाद की जिंदगी में सख़्त अजाब है। हजरत नूह ने अपनी कौम के लोगों से यही बात कही। वह उसके लिए नजीरे मुबीन (खुले हुए डराने वाले) बन गए। मगर आपकी कौम ने आपकी बात नहीं मानी।

इसकी वजह लोगों की जाहिरपरस्ती थी। इंसान की गुमराही की नजरियाती तौर पर बहुत सी किस्में हैं। मगर हकीकत के एतबार से हर दौर के इंसानों की गुमराही सिर्फ एक रही है। और वह है जाहिरपरस्ती या दुनियापसंदी। दुनियापरस्त लोग, ऐन अपने मिजाज के मुताबिक, दुनियावी चीजों को हक और नाहक का मेयार समझते हैं। वे शुऊरी या ग़ैर शुऊरी तौर पर यह फर्ज कर लेते हैं कि जिसके पास जाहिरी रौनकें हों वह हक पर है और जो दुनिया की रौनकों से महरूम हो वह नाहक पर।

ख़ुदा का दाओ (आह्वानकर्ता) जब उठता है तो अपने हमअस्रों (समकालीन) को वह सिर्फ इंसानों में से एक इंसान नजर आता है। दुनियावी एतबार से उसके गिर्द व पेश बड़ाई का कोई ख़ुसूसी निशान नहीं होता। दूसरी तरफ यह होता है कि वह जिस दीन का अलमबरदार होता है उसके साथ चूंकि अभी तक दुनियावी फायदे वाबस्ता नहीं होते, इसलिए उसकी तरफ बढ़ने वाले ज्यादा वे तहीदस्त (साधनहीन) लोग होते हैं जिन्हें एक 'नए दीन' को इख़्तियार करने के नतीजे में कुछ खोना न पड़े। यह सूरतेहाल ख़ालिस तौर पर, वक्त के बड़ों के लिए, फ़ितना बन जाती है। वे समझ लेते हैं कि जब दुनिया उनके साथ नहीं है तो हक भी उनके साथ नहीं हो सकता। यहां तक कि कौम में ऐसे लोग भी निकलते हैं जो उन्हें झूठा और धोखेबाज कहने से भी दरेग न करें।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾ وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّهُمْ مُلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾ وَيَا قَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۖ إِنِّي إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ से एक रोशन दलील पर हूं और उसने मुझ पर अपने पास से रहमत भेजी है, मगर वह तुम्हें नजर न आई तो क्या हम उसे तुम पर चिपका सकते हैं जबकि तुम उससे बेजार (खिन्न) हो। और ऐ मेरी कौम, मैं उस पर तुमसे कुछ माल नहीं मांगता। मेरा अज्र (प्रतिफल) तो बस

अल्लाह के जिम्मे है और मैं हरगिज उन्हें अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं। उन लोगों को अपने रब से मिलना है। मगर मैं देखता हूं तुम लोग जहालत में मुब्तिला हो। और ऐ मेरी कौम, अगर मैं उन लोगों को धुत्कार दूं तो ख़ुदा के मुकाबले में कौन मेरी मदद करेगा। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं। और न मैं ग़ैब की ख़बर रखता हूं। और न यह कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हकीर (तुच्छ) हैं उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। अगर मैं ऐसा कहूं तो मैं ही जालिम हूंगा। (28-31)

यहां 'बय्यिनह' से मुराद दलील है और रहमत से मुराद नुबुव्वत है। (तफ्सीरे नसफी) इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बर जब किसी कौम को दावत देता है तो वह दो चीजों के ऊपर खड़ा होता है। दलील और नुबुव्वत। पैग़म्बर के बाद कोई दाओी (आह्वानकर्ता) भी उसी वक्त दाओी है जबकि वह इन्हीं दो चीजों पर खड़ा हो। इस फर्क के साथ कि दलील के बाद दूसरी चीज जो उसके पास होगी वह बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर पैग़म्बर से मिली हुई होगी। जबकि पैग़म्बर के पास वह बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) ख़ुदा की तरफ से आई है।

कौम जिस वक्त ख़ुदा के दाओी को यह समझ कर नजरअंदाज कर देती है कि उसके यहां जाहिरी एतबार से कोई काबिले लिहाज चीज नहीं, ऐन उसी वक्त उसके पास एक बहुत बड़ी काबिले लिहाज चीज मौजूद होती है। और वह दलील और हिदायत है। दलील और हिदायत की बड़ाई कामिल तौर पर ख़ुदा के दाओी के पास मौजूद होती है। मगर यह बहरहाल मअनवी (अर्थपूर्ण) बड़ाई है। और जिन लोगों की निगाहें जाहिरी चीजों में अटकी हुई हों उन्हें मअनवी बड़ाई क्योंकर दिखाई देगी।

दावते इलल्लाह का काम ख़ालिस उख़रवी (परलोकवादी) काम है। उसकी सही कारकर्दगी के लिए जरूरी है कि दाओी और मदऊ के दर्मियान जर और जमीन के झगड़े न हों। यह जिम्मेदारी ख़ुद दाओी को लेनी पड़ती है कि उसके और मदऊ के दर्मियान मोअतदिल (अनुकूल) फजा हो। और इसकी ख़ातिर वह हर किस्म के माद्दी और मआशी (आर्थिक) झगड़े एकतरफा तौर पर ख़त्म कर दे। जिस दाओी का यह हाल हो कि वह एक तरफ दावत दे और दूसरी तरफ मदऊ से दुनियावी चीजों के लिए एहतजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालबा भी कर रहा हो, वह दाओी नहीं, मस्ख़रह है। उसकी कोई कीमत न मदऊ की नजर में हो सकती है और न ख़ुदा की नजर में।

मदऊ का इम्तेहान यह है कि वह बजाहिर एक बेअज्मत इंसान के अंदर हक की अज्मत को देख ले। इसी तरह दाओी का इम्तेहान यह है कि वह किसी बेदीन का इसलिए इस्तकबाल न करने लगे कि वह माल व जाह का मालिक है। और किसी दीनदार को इसलिए नाकाबिले लिहाज न समझ ले कि उसके पास दुनियावी शान व शौकत की चीजें मौजूद नहीं। दाओी अगर ऐसा करे तो इसका मतलब यह होगा कि वह जबान से आख़िरत (परलोक) की अहमियत का वअज (प्रवचन) कह रहा है और अमल से दुनिया की अहमियत का सुबूत दे रहा है। जाहिर है कि यह अपनी तरदीद (खंडन) अपने आप है। और जो शख़्स अपनी तरदीद अपने आप करे उसकी बात की दूसरों की नजर में क्या कीमत हो सकती है।

قَالُوا يَا نُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

उन्होंने कहा कि ऐ नूह तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया। और वह चीज ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, अगर तुम सच्चे हो। नूह ने कहा उसे तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर वह चाहेगा और तुम उसके काबू से बाहर न जा सकोगे। और मेरी नसीहत तुम्हें फायदा नहीं देगी अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूं जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुम्हें गुमराह करे। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है। (32-34)

हजरत नूह ने अपनी कौम से जिदाल (झगड़ा और बहस) नहीं किया था। वह संजीदा अंदाज में अपना सालेह पैग़ाम उनके सामने पेश कर रहे थे। मगर आपकी संजीदा दावत आपकी कौम को उल्टी सूरत में नजर आ रही थी। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि जब उसकी अपनी जात जद (निशाने) में आ रही हो तो वह संजीदगी खो देता है। ऐसी बात को वह दलील और सुबूत के एतबार से नहीं देखता। वह बग़ैर सोचे समझे उसे रद्द कर देता है। हक के दाओी की ठोस दलील भी उसे बहस व जिदाल मालूम होने लगती है।

'बहुत जिदाल कर चुके' का जुमला दरअस्ल यह बताने के लिए नहीं है कि नूह ने क्या कहा था। बल्कि वह इसे बताता है कि सुनने वालों ने आपकी बात को क्या दर्जा दिया था।

इसी तरह मुख़ालिफीन नूह का अजाब को तलब करना हकीकतन अजाब को तलब करना नहीं था। बल्कि हजरत नूह का मजाक उड़ाना था कि देखो यह शख़्स ऐसी बात कह रहा है जो कभी होने वाली नहीं। वे अपनी पोजीशन को इतना मुस्तहकम (सुदृढ़) समझते थे जिसमें उनके ख़्याल के मुताबिक कहीं से अजाब आने की गुंजाइश न थी। इसी जेहन के तहत उन्होंने कहा कि हमारे इंकार की सजा में जिस अजाब की तुम ख़बर देते रहे हो वह अजाब लाओ। और चूंकि उनके नजदीक ऐसा अजाब कभी आने वाला न था इसलिए तार्किक रूप से इसका मतलब यह था कि हम हक पर हैं और तुम नाहक पर।

हजरत नूह ने जवाब दिया कि तुम मामले को मेरी निस्बत से देख रहे हो और चूंकि मैं कमजोर हूं इसलिए तुम्हारी समझ में नहीं आता कि यह अजाब कभी तुम्हारे ऊपर आ सकता है। अगर मामले को ख़ुदा की निस्बत से देखते तो तुम यह न कहते। क्योंकि फिर तुम्हें नजर आ जाता कि इस दुनिया में जालिमों के लिए अजाब का आना इतना ही यकीनी है जितना सूरज का निकलना और जलजले का फटना।

हक के दाओी की बात को मानने का तमामतर इंहिसार इस पर है कि सुनने वाला उसे कहने वाले के एतबार से न देखे बल्कि जो कहा गया है उसके एतबार से देखे। चूंकि हजरत नूह की

कौम आपकी बात को बस एक आम इंसान की बात समझ रही थी, इसलिए आपने फरमाया कि इस जेहन के तहत तुम मेरी बात की क़द्र व कीमत कभी नहीं पा सकते। अब तो तुम्हारे लिए उसी दिन का इंतजार करना है जबकि ख़ुदा बराहेरास्त तुम्हारे सामने आ जाए।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾

क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने उसे गढ़ लिया है। कहो कि अगर मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो उससे मैं बरी हूं। (35)

जो लोग कहते थे कि पैग़म्बर ने यह कलाम ख़ुद गढ़ लिया है, यह ख़ुदा की तरफ से नहीं है, वे 'वही' (ईश्वरीय वाणी) व इल्हाम (दिव्य प्रकाशना) के मुंकिर न थे। यहां तक कि वे माजी (अतीत) के रसूलों को मानते थे। फिर उन्होंने ऐसा क्यों कहा। यह दरअस्ल 'वही' का इंकार नहीं था। बल्कि साहिबे 'वही' का इंकार था। जो शख़्स ख़ुदा की तरफ से बोल रहा था वह देखने में उन्हें एक मामूली इंसान दिखाई देता था। उनका जाहिरपरस्त मिजाज समझ नहीं पाता था कि ऐसा एक आदमी वह शख़्स कैसे हो सकता है जिसे ख़ुदा ने अपने पैग़ाम की पैग़ाम्बरी (संदेश वाहन) के लिए चुना हो।

'मेरा जुर्म मेरे ऊपर, तुम्हारा जुर्म तुम्हारे ऊपर' यह दरअस्ल कलिमए रुख़्सत है। जब मुख़ातब दलील से बात को नहीं मानता। हर किस्म की वजाहत के बावजूद वह इंकार पर तुला हुआ है तो दाओ महसूस करता है कि उसके लिए अब आख़िरी चाराएकार सिर्फ यह है कि वह यह कहकर ख़ामोश हो जाए कि मैं और तुम दोनों असली हाकिम के सामने पेश होने वाले हैं। वहां हर एक का हाल खुल जाएगा। और हर आदमी अपनी हकीकत के एतबार से जैसा था उसके मुताबिक उसे बदला दिया जाएगा। जब दलील की हद ख़त्म हो जाए तो दाओ (आह्वानकर्ता) के लिए इसके सिवा कोई सूरत बाकी नहीं रहती कि वह यकीन की जबान में कलाम करके अलग हो जाए।

وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

और नूह की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई कि अब तुम्हारी कौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवा उसके जो ईमान ला चुका। पस तुम उन कामों पर ग़मगीन न हो जो वे कर रहे हैं। और हमारे रूबरू और हमारे हुक्म से तुम कश्ती बनाओ और जालिमों के हक में मुझसे बात न करो, बेशक ये लोग गर्क होंगे। और नूह कश्ती बनाने लगा। और जब उसकी कौम का कोई सरदार उस पर गुजरता तो वह उसकी हंसी उड़ाता, उन्होंने कहा अगर तुम हम पर हंसते हो तो हम भी तुम पर हंस रहे हैं। तुम जल्द जान लोगे कि वे कौन हैं जिन पर वह अजाब आता है जो उसे रुसवा कर दे और उस पर वह अजाब उतरता है जो दाइमी है। (36-39)

इंसान से जो ईमान मत्लूब है वह ईमान वह है जबकि आदमी शुऊरी तौर पर अपने आजादाना फैसले से ईमान कुबूल करे। पैग़म्बर के लंबे दावती अमल के बावजूद जो लोग ईमान न लाएं वे ऐसा करके यह साबित करते हैं कि वे आजादाना फैसले के तहत ख़ुदा के मोमिन बनने के लिए तैयार नहीं हैं। ऐसे लोगों के लिए दूसरा मरहला यह होता है कि उनकी आजादी छीन ली जाए और उन्हें ले जाकर बराहेरास्त ख़ुदाए जुलजलाल (प्रतापी प्रभु) के सामने खड़ा कर दिया जाए ताकि जिस चीज को उन्होंने मोमिनाना इकरार नहीं किया था, उसका वे मुजरिमाना इकरार करें और अपनी सरकशी की सजा भुगतें।

हजरत नूह की सैंकड़ों साल की तब्लीग़ के बाद उनकी कौम के लिए यह वक्त आ गया था। इसके बाद हजरत नूह से कह दिया गया कि अब तब्लीग़ के काम से फारिग़ होकर कश्ती तैयार करो ताकि जब सरकशों को ग़र्क करने के लिए ख़ुदा का सैलाब आए तो उस वक्त तुम और तुम्हारे साथी अहले ईमान उसमें पनाह ले सकें।

हजरत नूह ने एक बहुत बड़ी तीन मंजिला कश्ती तैयार की। उसे बनाने में कई साल लग गए। जिस जमाने में हजरत नूह अपने चन्द साथियों को लेकर कश्ती बना रहे थे तो कौम के सरकश लोग आते जाते हुए उसे देखते। चूंकि वे लोग अजाब की बात को महज फर्जी समझ रहे थे इसलिए जब उन्होंने देखा कि आने वाले मफरूजा (काल्पनिक) अजाब से बचने के लिए कश्ती भी तैयार की जा रही है तो वे हजरत नूह का और भी ज्यादा मजाक उड़ाने लगे।

एक आदमी सरकशी और नाइंसाफी के जरिए दौलत समेट रहा हो तो जाहिरपरस्त आदमी उसके गिर्द दुनिया का साजोसामान देखकर उसे कामयाब समझ लेगा। मगर जो शख़्स जानता हो कि दुनिया का निजाम अख़्लाकी कानूनों पर चल रहा है, वह मज्कूरा (उक्त) शख़्स की वक्ती कामयाबी में मुस्तकबिल की अजीम तबाही का मंजर देख रहा होगा। नूह की कौम के जाहिरपरस्त लोग अगरचे हजरत नूह का मजाक उड़ा रहे थे, मगर हकीकते वाकया की नजर में ख़ुद उनका मजाक उड़ रहा था।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ

إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَا بُنَيَّ ارْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَآوِي إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾ وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ ۖ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तूफ़ान उबल पड़ा हमने नूह से कहा कि हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा कश्ती में रख लो और अपने घर वालों को भी, सिवा उन लोगों के जिनकी बाबत पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी। और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। और नूह ने कहा कि कश्ती में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दर्मियान उन्हें लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था। ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और मुंकिरों के साथ मत रह। उसने कहा मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे। और दोनों के दर्मियान मौज हायल (बाधित) हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया। और कहा गया कि ऐ जमीन, अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। और पानी सुखा दिया गया। और मामले का फैसला हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया गया कि दूर हो जालिमों की कौम। (40-44)

जब कश्ती बनकर तैयार हो गई तो ख़ुदा के हुक्म से तूफ़ानी हवाएं चलने लगीं। जमीन से पानी के दहाने फूट पड़े। ऊपर से मुसलसल बारिश होने लगी। यहां तक कि हर तरफ पानी ही पानी हो गया। तमाम लोग उसमें डूब गए। सिर्फ वे चन्द इंसान और कुछ मवेशी बचे जो हजरत नूह की कश्ती में सवार थे। यहां तक कि हजरत नूह का बेटा भी ग़र्क़ हो गया। ख़ुदा की नजर में किसी की कीमत उसके अमल के एतबार से है न कि रिश्ते के एतबार से, चाहे वह रिश्ता पैग़म्बर का क्यों न हो।

जब तमाम डूबने वाले डूब चुके तो ख़ुदा ने हुक्म दिया कि तूफ़ान थम जाए, और तूफ़ान थम गया। पानी समुद्रों और दरियाओं में चला गया और जमीन दुबारा रहने के काबिल हो गई।

तूफ़ाने नूह के मौके पर देखने वालों ने यह मंजर देखा कि ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने वाले डूब गए और हौलनाक मौजों के बावजूद कश्ती में बैठने वाले सलामत रहे। इसकी वजह ख़ुद पहाड़ में या कश्ती में न थी। इसकी वजह यह थी कि यह हुक्मे ख़ुदावंदी का मामला था। हुक्मे ख़ुदावंदी अगर पहाड़ के साथ होता तो पहाड़ अपने चढ़ने वालों को बचाता और कश्ती का सहारा लेने वाले हलाक हो जाते। मगर इस मौके पर हुक्म ख़ुदावंदी कश्ती के साथ था। इसलिए कश्ती वाले महफ़ूज रहे और दूसरी चीजों की पनाह लेने वाले ग़र्क़ हो गए।

दुनिया में असबाब का निजाम महज एक पर्दा है। वर्ना यहां जो कुछ हो रहा है बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) ख़ुदा के हुक्म से हो रहा है। इंसान का इम्तेहान यह है कि वह जाहिरी पर्दे से गुजर कर अस्ल हकीकत को देख ले। वह असबाब के अंदर ख़ुदाई ताकतों को काम करता हुआ पा ले।

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۖ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۖ إِنِّي أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٤٧﴾

और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घर वालों में है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बड़ा हाकिम है। ख़ुदा ने कहा ऐ नूह, वह तेरे घर वालों में नहीं। उसके काम ख़राब हैं। पस मुझसे उस चीज के बारे में सवाल न करो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि तुम जाहिलों में से न बनो। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वह चीज मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं। और अगर तू मुझे माफ न करे और मुझ पर रहम न फरमाए तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा। (45-47)

तूफ़ाने नूह में जो लोग ग़र्क़ हुए उनमें ख़ुद हजरत नूह का बेटा कंआन भी था। हजरत नूह ने उसे अपनी कश्ती में बिठाना चाहा। मगर उसके लिए डूबना मुकद्दर था इसलिए वह नहीं बैठा। फिर उन्होंने उसके बचाव के लिए ख़ुदा से दुआ की तो जवाब मिला कि यह नादानी का सवाल है, ऐसे सवालात न करो।

अस्ल यह है कि ख़ुदा का फैसला इस बुनियाद पर नहीं होता कि जो लोग बुजुर्गों की औलाद हैं। या जो किसी हजरत का दामन थामे हुए हैं उन सबको नजातयाफ्ता (मुक्ति-प्राप्त) करार देकर जन्नतों में दाख़िल कर दिया जाए। ख़ुदा के यहां नजात का फैसला ख़ालिस अमल

की बुनियाद पर होता है न कि नसबी या गिरोही तअल्लुक की बुनियादों पर।

दुनिया में अगर नसबी रिश्ते का एतबार है तो आख़िरत में अख़्लाकी रिश्ते का एतबार। तूफ़ाने नूह इसीलिए आया था कि इंसानों के दर्मियान दूसरी तमाम तक्सीमात को तोड़कर अख़्लाकी तक्सीम कायम कर दे। जो अमले सालेह वाले लोग हैं उन्हें ख़ुदाई कश्ती में बिठा कर बचा लिया जाए और ग़ैर अमले सालेह वाले तमाम लोगों को तूफान की बेरहम मौजों के हवाले कर दिया जाए। यही वाक्या दुबारा कियामत में ज्यादा बड़े पैमाने पर और ज्यादा कामिल तौर पर होगा।

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

कहा गया कि ऐ नूह, उतरो, हमारी तरफ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ, तुम पर और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं। और (उनसे जुहूर में आने वाले) गिरोह कि हम उन्हें फायदा देंगे, फिर उन्हें हमारी तरफ से एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिनको हम तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं। इससे पहले न तुम उन्हें जानते थे और न तुम्हारी कौम। पस सब्र करो बेशक आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है। (48-49)

जब तमाम बुरे लोग ग़र्क हो चुके तो तूफ़ान थम गया। पानी धीरे-धीरे जमीन में और समुद्रों में चला गया। हजरत नूह की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई थी, आप अपने साथियों के साथ उससे निकल कर जमीन पर उतरे। जमीन दुबारा ख़ुदा के हुक्म से सरसब्ज व आबाद हो गई।

हजरत नूह जिन लोगों के दर्मियान आए वे हजरत आदम की नुबुव्वत को मानने वाले लोग थे। आपके बाद आपकी उम्मत इब्तिदा में राहेरास्त पर रही। इसके बाद उसकी अगली नस्लों में बिगाड़ आया तो दुबारा अंबिया (ईशदूत) भेजे गए। ये बाद को आने वाले अंबिया उन कौमों में आए जो हजरत नूह की नुबुव्वत को मानती थीं। इसके बावजूद जब उन्होंने वक्त के नबी को मान कर अपनी इस्लाह न की तो वे हलाक कर दी गईं। गोया सिर्फ किसी नबी को मानना या उसकी तरफ अपने को मंसूब करना नजातयाफ्ता होने के लिए काफी नहीं है। बल्कि वह ईमान मत्लूब है जो जिंदा ईमान हो और जिसके अंदर यह ताकत हो कि वह आदमी की जिंदगी को नेक अमली की जिंदगी में तब्दील कर दे।

हजरत नूह की तारीख़ (इतिहास) यह सबक देती है कि बातिलपरस्तों का जोर चाहे कितना ही ज्यादा हो और उनकी जिंदगी चाहे कितनी ही लंबी हो जाए। बिलआख़िर उनके लिए जो चीज मुकद्दर है वह हलाकत है। और इसके मुकाबले में अहले ईमान चाहे कितने

ही कम हों और चाहे वे बजाहिर कितने ही बेजोर हों। मगर जब ख़ुदा का फैसला जाहिर होता है तो यही लोग हैं जो ख़ुदा की रहमतों में हिस्सेदार बनाए जाते हैं, इब्तिदा में मौजूदा दुनिया में और आख़िरी तौर पर आख़िरत में।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾ وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुमने महज झूठ गढ़ रखे हैं। ऐ मेरी कौम, मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (प्रतिफल) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो उस पर है जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम नहीं समझते। और ऐ मेरी कौम, अपने रब से माफी चाहो, फिर उसकी तरफ पलटो। वह तुम्हारे ऊपर ख़ूब बारिशें बरसाएगा। और तुम्हारी कुव्वत पर मजीद कुव्वत का इजाफा करेगा। और तुम मुजरिम होकर रूगर्दानी (अवहेलना) न करो। (50-52)

कौमे आद की हिदायत के लिए हजरत हूद को उठाया गया जो उन्हीं के भाई थे। यह पैग़म्बरों के मामले में हमेशा से अल्लाह तआला की सुन्नत (तरीका) रही है। इसकी हिक्मत यह है कि कौम का फर्द होने की वजह से वह बख़ूबी तौर पर कौम की नफ्सियात, उसके हालात और उसकी जबान को जानते हैं और ज्यादा प्रभावी तौर पर उसके अंदर हक की दावत का काम कर सकते हैं।

हजरत हूद ने अपनी कौम को एक अल्लाह की इबादत का पैग़ाम दिया। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि तुम्हारा जो दीन है वह महज एक झूठ है जो तुमने गढ़ लिया है। इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बर का तरीका मारूफ (प्रचलित) मअनों में सिर्फ 'मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर' अपनी बात कहने का तरीका नहीं है। बल्कि इसी के साथ वह खुली खुली तंकीद (आलोचना) भी करता है। क्योंकि जब तक तंकीद व तज्जिया (विश्लेषण) के जरिए नाहक का नाहक होना वाजेह न किया जाए उस वक्त तक हक का हक होना लोगों की समझ में नहीं आ सकता।

हर पैग़म्बर के जमाने में ऐसा हुआ कि उसके मुख़ालिफीन उसकी पैग़म्बरी को मानने के लिए यह चाहते थे कि वह कोई बड़ा ओहदेदार हो, उसे दौलत के ख़जाने हासिल हों, वह आलीशान इमारतों में रहता हो। मगर हक के दाओ को जांचने का यह मेयार सही नहीं। दाओ की सदाकत को जांचने का अस्ल मेयार यह है कि वह अपने मिशन में पूरी तरह संजीदा हो, उसकी बात आख़िरी हद तक मुदल्लल (तार्किक) हो। वह हर किस्म की

दुनियावी ग़रज से बालातर हो। वह जो कुछ कह रहा है वह ऐन हकीकते वाक्या है। उसका पैग़ाम कायनाती निजाम से कामिल मुताबिक्त (अनुकूलता) रखता हो। उसे इख़्तियार करना कामयाबी की शाहराह पर चलना हो।

'तुम्हारी कुव्वत पर मजीद कुव्वत का इजाफा करेगा।' इस जुमले का मतलब माद्दी कुव्वत में इजाफा नहीं है। क्योंकि कौमे आद अपने जमाने में निहायत ताक्तवर थी। कुरआन से मालूम होता है कि पैग़म्बर ने जब उन्हें अजाब से डराया तो उन्होंने कहा कि हमसे ज्यादा ताक्तवर कौन है। (हामीम अस्सज्दह : 15) इसलिए माद्दी कुव्वत (भौतिक शक्ति) में इजाफे की बात, दावती एतबार से उनके लिए ज्यादा पुरकशिश नहीं हो सकती थी।

इस आयत में कुव्वत पर इजाफा का मतलब है माद्दी कुव्वत पर ईमानी कुव्वत का इजाफा। पैग़म्बर का मतलब यह था कि अगर तुम ईमानी जिंदगी इख़्तियार कर लो तो इससे तुम्हें अख़्लाकी और रूहानी कुव्वत हासिल होगी। मौजूदा माद्दी जोर के साथ अख़्लाकी और रूहानी जोर मिलने से तुम्हारी ताक्त घटेगी नहीं। बल्कि वह मजीद बहुत ज्यादा बढ़ जाएगी।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْۗءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝ اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

उन्होंने कहा कि ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ने वाले नहीं हैं। और हम हरगिज तुम्हें मानने वाले नहीं हैं। हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूं और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूं उनसे जिनको तुम शरीक करते हो उसके सिवा। पस तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ तदबीर (युक्ति) करो, फिर मुझे मोहलत न दो। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। बेशक मेरा रब सीधी राह पर है। (53-56)

कौम ने हजरत हूद से कहा कि तुम्हारे पास अपने बरसरे हक होने की कोई दलील नहीं। इसका यह मतलब नहीं कि फिलवाकअ भी हजरत हूद के पास कोई दलील नहीं थी। आप के पास यकीनन दलील थी, मगर वह मुख़ातबीन को दलील दिखाई नहीं देती थी। इसकी वजह यह थी कि आदमी आम तौर पर किसी बात को ख़ालिस दलील की बुनियादों पर जांच

नहीं पाता। बल्कि इस एतबार से देखता है कि जो शख़्स उसे पेश कर रहा है वह कैसा है। चूंकि पेश करने वाला अपने जमाने में लोगों को एक नाकाबिले लिहाज़ इंसान दिखाई देता था इसलिए उसकी बात भी लोगों को नाकाबिले लिहाज नजर आती थी।

जब एक शख़्स वक्त के जमे हुए मजहब को छोड़कर ख़ालिस बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत लेकर उठता है तो हमेशा ऐसा होता है कि माहौल में वह अजनबी बल्कि हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। लोग उसे इस नजर से देखते हैं जैसे वह कोई ऐसा शख़्स हो जिसे ख़लले दिमाग़ी का रोग लाहिक हो गया हो। हजरत हूद के मामले में यही सूरतेहाल थी जिसकी वजह से उनकी कौम के लोगों को यह कहने की जुरअत हुई कि 'हमारा तो ख़्याल है कि तुम्हारे ऊपर हमारे बुजुर्गों की मार पड़ गई है' मगर हक के दाओ की सदाक्त का सुबूत, नज़री (वैचारिक) दलाइल के बाद, हमेशा यह होता है कि उसके मुख़ालिफीन हर किस्म की कोशिशों के बावजूद उसे जेर (परास्त) नहीं कर पाते।

ख़ुदा के पैग़म्बर जिन कौमों में आए वे सब ख़ुदा को मानने वाली थीं। गोया दाओ भी ख़ुदापरस्त होने का दावेदार था और मदऊ भी ख़ुदापरस्त होने का दावेदार। ऐसी हालत में यह सवाल पैदा होता है कि ख़ुदा दोनों में से किस गिरोह के साथ है। इस सवाल का आसान जवाब यह है कि ख़ुदा सिराते मुस्तकीम (सीधी शाहराह) पर है। इसलिए जो दीन के सीधे ख़त (लाइन) पर चल रहा है वह बराहेरास्त ख़ुदा तक पहुंचेगा और जो टेढ़े रास्तों पर चल रहा है उसका रास्ता इधर उधर भटक कर रह जाएगा। वह ख़ुदा तक पहुंचने में कभी कामयाब नहीं हो सकता।

हजरत हूद ने जब कहा कि 'मेरा रब सिराते मुस्तकीम पर है' तो दूसरे लफ्जों में गोया वह यह कह रहे थे कि मैं जिस चीज की तरफ बुला रहा हूं वह सिराते मुस्तकीम (दीन की शाहराह) है। और तुम लोग जिन चीजों को दीन समझ कर इख़्तियार किए हुए हो वह दीन की शाहराह के अतराफ में पगडंडियां निकाल कर उनके ऊपर दौड़ना है। इस किस्म की दौड़ आदमी को ख़ुदा तक नहीं पहुंचाती, वह उसे इधर उधर भटका कर छोड़ देती है।

इन आयात की रोशनी में ग़ौर किया जाए तो हजरत हूद की बताई हुई सिराते मुस्तकीम यह निकलती है तौहीद, इबादते इलाही, इस्तग़फार, तौबा, नेमतों पर ख़ुदा का शुक्र, तवक्कुल अलल्लाह (ख़ुदा पर भरोसा), ख़ुदा को अपना परवरदिगार मानना, सिर्फ ख़ुदा को तमाम ताकतों का मालिक समझना, ख़ुदा को अपने ऊपर निगरां (निरीक्षक) बना लेना। किब्र (अहं, बड़ाई) की रविश के बजाए इताअत (आज्ञापालन) की रविश इख़्तियार करना।

ये सब दीन की बुनियादी तालीमात हैं। इन तालीमात पर चलना और उन्हें अपनी तवज्जोह का मर्कज बनाना गोया दीन की शाहराह पर चलना है। इस पर चलने वाला सीधे ख़ुदा तक पहुंचता है। इसके सिवा जिन चीजों को आदमी अहमियत दे और उनकी धूम मचाए वह गोया अस्ल शाहराह के दाएं बाएं पगडंडियां निकाल कर उनके ऊपर दौड़ रहा है। ऐसी दौड़ आदमी को सिर्फ ख़ुदा से दूर करने वाली है, वह उसे ख़ुदा के करीब नहीं पहुंचा सकती।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

अगर तुम एराज (उपेक्षा) करते हो तो मैंने तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा दिया जिसे देकर मुझे तुम्हारी तरफ भेजा गया था। और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (ख़लीफा, उत्तराधिकारी) बनाएगा। तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। बेशक मेरा रब हर चीज पर निगहबान है। और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, हमने अपनी रहमत से बचा दिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे। और हमने उन्हें एक सख़्त अजाब से बचा दिया। और ये आद थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों का इंकार किया। और उसके रसूलों को ना माना और हर सरकश और मुख़ालिफ की बात की इत्तिबाअ (अनुसरण) की। और उनके पीछे लानत लगा दी गई इस दुनिया में और कियामत के दिन। सुन लो, आद ने अपने रब का इंकार किया। सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की कौम थी। (57-60)

जो लोग ख़ुदा की बात को नजरअंदाज कर दें, ख़ुदा भी उन्हें नजरअंदाज कर देता है। यह वाकया जो मौजूदा दुनिया में जुजई तौर पर पेश आता है यही कियामत में कुल्ली और आख़िरी तौर पर पेश आएगा। उस वक्त तमाम सरकश लोग ख़ुदा की रहमतों से दूर कर दिए जाएंगे। और ख़ुदा की रहमत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होगी जो दुनिया की जिंदगी में ख़ुदा के ताबेअ और वफ़ादार बनकर रहे थे।

इस दुनिया में ख़ुदा ने 'इस्तख़लाफ' का उसूल राइज किया है। यानी एक कौम को हटाने के बाद दूसरी कौम को उसकी जगह जमीन पर मुतमक्किन (आसीन) करना। दुनिया में यह तमक्कुन (आसीन करना) इम्तेहान की ग़र्ज से वक्ती तौर पर होता है। आख़िरत में ख़ुदा की मेयारी दुनिया में यह तमक्कुन इनाम के तौर पर मुस्तकिल तौर पर सच्चे अहले ईमान को हासिल होगा।

मौजूदा इम्तेहानी दुनिया का निजाम कुछ इस तरह बना है कि यहां आदमी हमेशा ख़ैर और शर के दर्मियान होता है। उसे आजादी होती है कि दोनों में से जिस राह को चाहे इख़्तियार करे। मजीद यह कि अक्सर हालात में इस दुनिया में शर का ग़लबा होता है। ख़ैर की

जानिब सिर्फ निशानियों (नजरी दलाइल) का जोर होता है। दूसरी तरफ शर की जानिब माद्दी (भौतिक) ताकत मौजूद होती है, वह भी इतनी बड़ी मिक्दार में कि उसके अलमबरदार सरकशी और घमंड में मुब्तिला होकर माहौल के अंदर ऐसी दबाव की फजा पैदा करते हैं कि आम आदमी हक की तरफ बढ़ने की जुरअत ही न करे।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا ۖ أَتَنْهَانَا أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَن يَنصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٦٣﴾

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी ने तुम्हें जमीन से बनाया, और उसमें तुम्हें आबाद किया। पस माफी चाहो, फिर उसकी तरफ रुजूअ करो। बेशक मेरा रब करीब है, कुबूल करने वाला है। उन्होंने कहा कि ऐ सालेह इससे पहले हमें तुमसे उम्मीद थी। क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें सख़्त शुबह है और हम बड़े ख़लजान (दुविधा) में हैं। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ से एक वाजेह (सुस्पष्ट) दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत दी है तो मुझे ख़ुदा से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफरमानी करूं। पस तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा सिवाए नुक्सान के। (61-63)

हजरत सालेह ने अपनी कौम को एक ख़ुदा की इबादत की तरफ बुलाया। यही हर जमाने में तमाम पैग़म्बरों का मक्सद था। मगर हजरत सालेह की कौम आपके पैग़ाम को कुबूल न कर सकी। इसकी वजह यह थी कि आप उसे बराहेरास्त ख़ुदा से जोड़ने की बात करते थे, जबकि कौम का हाल यह था कि वह ख़ुदा के नाम पर सिर्फ अपने पूर्वजों व अकाबिर (महापुरुषों) से जुड़ी हुई थी।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे अपने मख़्सूस मिजाज की वजह से किसी चीज की अहमियत और मअनवियत (सार्थकता) सिर्फ उस वक्त समझ पाते हैं जबकि उनके कौमी बुजुर्गों के कौल व अमल में उसकी तस्दीक मिल जाए। अब चूंकि हजरत सालेह के पास सिर्फ दलील का जोर था, उनकी कौम उनकी बात की अहमियत को महसूस न कर सकी। हजरत सालेह जिस दीन की तरफ बुला रहे थे उसकी अहमियत ख़ुदा की 'वही' (वाणी) और जमीन व आसमान की

निशानियों में ग़ौर करने से वाज़ेह होती थी। जबकि उनकी कौम सिर्फ उस दीन की अहमियत से बाख़बर थी जो महापुरुषों की कौम के मल्फूज़ात (ग्रंथों) और मअमूलात (क्रिया-कलापों) से साबित होता हो। इसका नतीजा यह हुआ कि उनकी कौम आप के दलाइल के मुक़ाबले में लाजवाब होकर भी बस एक किस्म के शुबह की हालत में पड़ी रही।

हजरत सालेह, दूसरे तमाम पैग़म्बरों की तरह, शख़्सियत और जहानत में अपनी कौम के मुमताज़ फ़र्द (सर्वोत्तम व्यक्ति) थे। लोग उम्मीद रखते थे कि बड़े होकर वह कौम के एक कारआमद फर्द साबित होंगे। मगर वह बड़ी उम्र को पहुंचे तो उन्होंने कौम के प्रचलित मजहब पर तंकीद शुरू कर दी। यह देखकर कौम के लोगों को उनके बारे में सख़्त मायूसी हुई। उन्होंने कहा, हम तो यह समझे हुए थे कि तुम हमारे कायमशुदा मजहबी निजाम के एक सुतून (स्तंभ) बनोगे। इसके बरअक्स हम यह देख रहे हैं कि तुम हमारे मजहबी निजाम को बेबुनियाद साबित करने पर अपना सारा जोर लगाए हुए हो। यही मामला हर दौर में ख़ुदा के सच्चे दाअियों को अपनी कौम की तरफ से पेश आया है।

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿۶۴﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ
اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿۶۵﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿۶۶﴾ وَاَخَذَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۶۷﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا
اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿۶۸﴾

और ऐ मेरी कौम, यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। पस इसे छोड़ दो कि वह अल्लाह की जमीन में खाए। और इसे कोई तकलीफ न पहुंचाओ वर्ना बहुत जल्द तुम्हें अजाब पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उसके पांव काट डाले। तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फायदा उठा लो। यह एक वादा है जो झूठा न होगा। फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुस्वाई से (महफूज रखा)। बेशक तेरा रब ही कवी (शक्तिमान) और जबरदस्त है। और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन्हें एक हौलनाक आवाज ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं। सुनो, समूद ने अपने रब से कुफ़्र किया। सुनो, फिटकार है समूद के लिए। (64-68)

हजरत सालेह अपनी कौम से कहते थे कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं। अगर तुमने मेरी बात न मानी तो तुम ख़ुदा की पकड़ में आ जाओगे। उनकी कौम अगरचे ख़ुदा और रिसालत की मुंकिर

न थी मगर उसने हजरत सालेह की बात को एक मजाक समझा। क्योंकि हजरत सालेह के पास अपनी पैग़म्बरी को साबित करने के लिए सिर्फ नजरी (वैचारिक) दलील थी और यह इंसान की कमजोरी है कि वह सिर्फ नजरी दलील की बुनियाद पर बहुत कम इसके लिए तैयार होता है कि एक मानूस (परिचित) चीज को छोड़े और दूसरी ग़ैर मानूस चीज को इख़्तियार कर ले।

हजरत सालेह की कौम जब नजरी निशानियों के आगे झुकने पर तैयार न हुई तो आख़िरी मरहले में उसके मुतालबे के मुताबिक उसके लिए स्पष्ट निशानी भी जाहिर कर दी गई। यह एक ऊंटनी थी जो लोगों के सामने ठोस चट्टान के अंदर से निकल आई। ऐसी निशानी के बारे में ख़ुदा का कानून है कि जब वह जाहिर की जाती है तो इसके बाद लोगों के लिए इम्तेहान की मजीद मोहलत बाकी नहीं रहती। चुनांचे हजरत सालेह ने एलान कर दिया कि अब तुम लोग या तो तौबा करके मेरी बात मान लो, वर्ना तुम सब लोग हलाक कर दिए जाओगे। मगर जो लोग नजरी दलाइल की कुव्वत को महसूस न कर सकें वे स्पष्ट दलाइल को देखकर भी उससे इबरत पकड़ने में नाकाम रहते हैं। चुनांचे इसके बाद भी हजरत सालेह की कौम अपनी सरकशी से बाज न आई। यहां तक कि उसने ख़ुद ऊंटनी को मार डाला। इसके बाद उन लोगों के लिए मजीद मोहलत का सवाल न था। चुनांचे वह मिटा दी गई।

कौमे सालेह (समूद) का इलाका शिमाल मग़्रिबी अरब (अलहिज्र) था। हजरत सालेह को हुक्म हुआ कि तुम यहां से बाहर चले जाओ। चुनांचे वह अपने मुख़्लिस (आस्थावान) साथियों को लेकर शाम की तरफ चले गए। इसके बाद एक सख़्त जलजला आया और सारी कौम उसकी लपेट में आकर बुरी तरह हलाक हो गई।

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ
جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿۶۹﴾ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۰﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ
فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿۷۱﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّ
هٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾

और इब्राहीम के पास हमारे फरिश्ते ख़ुशख़बरी लेकर आए। कहा तुम पर सलामती हो। इब्राहीम ने कहा तुम पर भी सलामती हो। फिर देर न गुजरी कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं तो वह खटक गया और दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की कौम की तरफ भेजे गए हैं। और इब्राहीम की बीवी खड़ी थी, वह हंस पड़ी। पस हमने उसे इस्हाक की ख़ुशख़बरी दी और इस्हाक के आगे याकूब की। उसने कहा, ऐ ख़राबी,

क्या मैं बच्चा जनूंगी, हालांकि मैं बुढ़िया हूं और यह मेरा ख़ाविंद भी बूढ़ा है। यह तो एक अजीब बात है। फरिश्तों ने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती हो। इब्राहीम के घर वालो, तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हैं। बेशक अल्लाह निहायत काबिले तारीफ और बड़ी शान वाला है। (69-73)

हजरत इब्राहीम की उम्र तकरीबन सौ साल हो चुकी थी कि एक रोज चन्द इंतिहाई ख़ूबसूरत नौजवान उनके घर में दाख़िल हुए। हजरत इब्राहीम ने उन्हें मेहमान समझ कर फौरन उनके खाने का इंतजाम किया। मगर वे इंसान नहीं थे बल्कि ख़ुदा के फ़रिश्ते थे। वे एक ही वक्त में दो मक्सद के लिए आए थे। एक, हजरत इब्राहीम को औलाद की बशारत देना। (शुभ सूचना) दूसरे, हजरत लूत की कौम को हलाक करना जो इंकार और सरकशी की आख़िरी हद पर पहुंच चुकी थी।

हजरत इब्राहीम और उनकी बीवी को इस्हाक (बेटे) और याकूब (पोते) की बशारत देना आम मअनों में महज औलाद की बशारत न थी। यह सालेह (नेक) और दाओ इंसानों का एक घराना वजूद में लाना था। तारीख़ का तजर्बा है कि अक्सर कोई 'घराना' होता है जो दीने हक की ख़िदमत के लिए खड़ा होता है। नबियों की तारीख़ और नबियों के बाद उनके सच्चे पैरोकारों के वाकेयात यही बताते हैं। इसकी वजह यह है कि एक शख़्स जिस पर सच्चाई का इंकिशाफ होता है वह अपने जमाने के लोगों की नजर में एक मामूली इंसान होता है। इस बिना पर आम लोगों के लिए उसके मकाम का पहचानना और उसका साथ देना बहुत मुश्किल होता है। मगर उसके अपने घर वाले के लिए जाती रिश्ता एक मजीद वजह बन जाता है। जिस चीज को बाहर वाले जाहिरबीनी की बिना पर देख नहीं पाते, घर वाले जाती तअल्लुक की बिना पर उसे महसूस कर लेते हैं। और उसके मिशन में उसके साथी बन जाते हैं।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾ يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾

फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ दूर हुआ और उसे ख़ुशख़बरी मिली तो वह हमसे कौमे लूत के बारे में झगड़ने लगा। बेशक इब्राहीम बड़ा हलीम (उदार) और नर्म दिल था और रुजूअ करने वाला था। ऐ इब्राहीम उसे छोड़ो। तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है और उन पर एक ऐसा अजाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाता। (74-76)

हजरत इब्राहीम की यह गुफ्तगू उन फरिश्तों से हुई जो कौमे लूत को हलाक करने के लिए आए थे। चूंकि ये फरिश्ते ख़ुदा की तरफ से और उसके हुक्म की तामील में आए थे, इसलिए ख़ुदा ने इसे अपनी तरफ मंसूब फरमाया। पैग़म्बर और फरिश्तों के दर्मियान इस गुफ्तगू का एक जुज सूरह अनकबूत (आयत 32) में मज्कूर है। और इसका तफ्सीली जिक्र मौजूदा

बाइबल (पैदाइश बाब 18) में आया है।

हजरत इब्राहीम की दुआ कौमे लूत के हक में मंजूर नहीं हुई। इसी तरह इससे पहले हजरत नूह की दुआ अपने बेटे के लिए मंजूर नहीं हुई थी। इसकी वजह यह है कि मग्फिरत (क्षमा, मुक्ति) की दुआ मारूफ मअनों में कोई सिफारिश नहीं है जो कि एक शख़्स दूसरे शख़्स के लिए करे। और वह दुआ करने वाले की बुजुर्गी की बिना पर उसके हक में मान ली जाए।

दुआ ख़ुद अपने आपको ख़ुदा के सामने पेश करना है। अगर हजरत नूह के बेटे या हजरत लूत की कौम के लोगों के अंदर ख़ुद दुआ का जज्बा उभर आता और वे अपनी नजात के लिए ख़ुदा को पुकारते तो यकीनन ख़ुदा उन्हें माफ कर देता और अपनी रहमत उनकी तरफ भेज देता। अजाब का लौटा दिया जाना मुमकिन है, जैसा कि हजरत यूनुस की कौम की मिसाल से साबित होता है। मगर वह जब भी लौटेगा ख़ुद जेरे सजा (सजा के पात्र) अफराद की दुआओं से लौटेगा न कि किसी ग़ैर शख़्स की दुआओं से, चाहे यह ग़ैर शख़्स पैग़म्बर ही क्यों न हो।

एक शख़्स को दूसरे शख़्स के लिए भी दुआ करनी चाहिए। और हर जमाने में पैग़म्बरों ने और सालेह लोगों ने दूसरों के लिए दुआएं की हैं। मगर यह दुआ हकीकतन खुद दुआ करने वाले के हलीम (उदार, सहृदय) और परोपकारी होने का इज्हार होता है। अल्लाह का एक बंदा जो अल्लाह से डरता हो वह अल्लाह के अजाब को देखकर कांप उठता है और अपने लिए और दूसरों के लिए दुआएं करने लगता है। ताहम किसी की दुआ दूसरे के हक में उसी वक्त मुफीद होगी जबकि वह ख़ुद भी अल्लाह से डर कर अल्लाह को पुकार रहा हो।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَا قَوْمِ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾

और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास पहुंचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल तंग हुआ। उसने कहा आज का दिन बड़ा सख़्त है। और उसकी कौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए। और वे पहले से बुरे काम कर रहे थे। लूत ने कहा ऐ मेरी कौम, ये मेरी बेटियां हैं, वे तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा हैं। पस तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं है। उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ ग़रज नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं। (77-79)

हजरत लूत के पास जो फरिश्ते आए वे अजाब के फरिश्ते थे। मगर वे निहायत ख़ूबसूरत नौजवानों की सूरत में बस्ती के अंदर दाख़िल हुए। यह दरअस्ल उन्हें आख़िरी तौर पर मुजरिम

साबित करने के लिए था। आदमी जब मुसलसल एक बुराई करता है तो उसके बारे में वह बिल्कुल बेहिस (संवेदनाहीन) हो जाता है। यही हाल कौमे लूत का था। वे अब खुल्लम खुल्ला बदकारी करने लगे थे। चुनांचे जब उन्होंने देखा कि ख़ूबसूरत लड़के हजरत लूत के घर आए हुए हैं तो वे शहवत (कामवासना) के जज्बात लिए हुए आपके घर की तरफ दौड़ पड़े। उन्होंने इंतिहाई बेहयाई के साथ मुतालबा शुरू किया कि इन लड़कों को हमारे हवाले कर दिया जाए।

हजरत लूत ने शरीर (दुष्ट) लोगों को इस तरह आते हुए देखा तो आप पर सख़्त शर्म और ग़ैरत तारी हुई। आप ने कहा, 'ये कौम की बेटियां हैं, इनमें से जिससे चाहो निकाह कर लो और अपनी फ़ित्री ख़्वाहिश पूरी करो।' किसी कौम में जो बड़े बूढ़े होते हैं वे कौम की तमाम लड़कियों को बेटी कह कर पुकारते हैं। इसी मअना में हजरत लूत ने कौम की बेटियों को 'मेरी बेटियां' फरमाया।

मगर उन्होंने हजरत लूत की जाइज पेशकश को ठुकरा दिया और नाजाइज की तरफ बदस्तूर दौड़ते रहे। इससे आख़िरी तौर पर साबित हो गया कि ये मुजरिम लोग हैं और यकीनन इस काबिल हैं कि इन्हें हलाक कर दिया जाए। चुनांचे इसके बाद वे सबके सब हलाक कर दिए गए।

'क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं।'' यह उस बंदए ख़ुदा का आख़िरी कलिमा होता है जिसके पास शरीर (दुष्ट) लोगों के रोकने के लिए माद्दी कुव्वत न हो और माकूलियत (विवेक) की तमाम बातें उन्हें रोकने के लिए नाकाफी साबित हुई हों। उस वक्त इस तरह का जुमला बोलकर वह कौम की ग़ैरत को पुकारता है और उसके जमीर (अन्तरात्मा) को बेदार करना चाहता है। इसके बाद भी अगर ऐसा हो कि लोग बदस्तूर बेहिस बने रहें तो इसका मतलब होता है कि उनके अंदर इंसानियत और शराफ़त का कोई दर्जा बाकी नहीं रहा।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِیْ بِکُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِیْۤ اِلٰی رُکْنٍ شَدِیْدٍ ﴿۸۰﴾ قَالُوْا یٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّکَ لَنْ یَّصِلُوْۤا اِلَیْکَ فَاَسْرِ بِاَهْلِکَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّیْلِ وَلَا یَلْتَفِتْ مِنْکُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَکَ ؕ اِنَّهٗ مُصِیْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَیْسَ الصُّبْحُ بِقَرِیْبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِیَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَیْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّیْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّکَ ؕ وَمَا هِیَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ بِبَعِیْدٍ ﴿۸۳﴾

लूत ने कहा, काश मेरे पास तुमसे मुकाबले की कुव्वत होती या मैं जा बैठता किसी मुस्तहकम (सुदृढ़) पनाह में। फरिश्तों ने कहा कि ऐ लूत, हम तेरे रब के भेजे हुए हैं। वे हरगिज तुम तक न पहुंच सकेंगे। पस तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहे निकल जाओ। और तुम में से कोई मुड़कर न देखे। मगर तुम्हारी औरत कि उस पर वही कुछ गुजरने वाला है जो उन लोगों पर गुजरेगा। उनके लिए सुबह का वक्त मुकर्रर है, क्या सुबह करीब नहीं। फिर जब हमारा हुक्म आया तो हमने उस बस्ती को तलपट कर

दिया और उस पर पत्थर बरसाए कंकर के, तह-ब-तह, तुम्हारे रब के पास से निशान लगाए हुए। और वह बस्ती उन जालिमों से कुछ दूर नहीं। (80-83)

हजरत लूत इब्तिदा में आने वाले नौजवानों को इंसान समझ रहे थे। जब हजरत लूत की परेशानी बढ़ी और वह अपने को ख़तरे में महसूस करने लगे तो उन्होंने बताया कि हम फरिश्ते हैं और ख़ुदा की तरफ से भेजे गए हैं। यानी यह मामला इंसानी मामला नहीं बल्कि ख़ुदाई मामला है। वे न हमारा कुछ बिगाड़ सकेंगे और न तुम्हारा। चुनांचे रिवायात में आता है कि जब कौमे लूत के लोग आगे बढ़ने से न रुके तो एक फरिश्ते ने अपना बाज़ू घुमाया। इसके बाद वे सबके सब अंधे हो गए और यह कहते हुए लौट गए किभागो, लूत के मेहमान तो बड़े जादूगर मालूम होते हैं।

जब ख़ुदा किसी कौम को उसकी सरकशी की बिना पर हलाक करने का फैसला करता है तो यह उस पूरे इलाके के लिए एक आम हुक्म होता है। ऐसे मौके पर उस इलाके में बसने वाले तमाम जानदार ख़ुदाई अजाब की लपेट में आ जाते हैं। अलबत्ता ख़ुदा के ख़ुसूसी इंतजामात के तहत वे लोग उससे बचा लिए जाते हैं जिन्होंने उन सरकश लोगों के ऊपर हक का एलान किया हो। हक का एलान ख़ुदा की पकड़ से बचने की सबसे बड़ी जमानत है। मौजूदा दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

हजरत लूत की बीवी के बारे में रिवायात में आता है कि वह दिल से हजरत लूत के साथ न थी। मगर आख़िर वक्त में जब हजरत लूत यह कहकर बस्ती से निकले कि सुबह तक यहां अजाब आ जाएगा तो वह भी आपके काफ़िले के साथ हो गई। ताहम अभी ये लोग रास्ते में थे कि पीछे जलजला और तूफ़ान का शोर सुनाई दिया। हजरत लूत और उनके मुख़्लिस साथियों ने पीछे तवज्जोह न दी। मगर हजरत लूत की बीवी पीछे मुड़कर देखने लगी और जब उसे धुआं और शोर दिखाई दिया तो उसकी जबान से निकला 'हाय मेरी कौम' उस वक्त अजाब का एक पत्थर आकर उसे लगा और वहीं उसका ख़ात्मा हो गया।

इसमें यह सबक है कि एक शख़्स अगर वाकेअतन ख़ुदा व रसूल का वफ़ादार नहीं है तो किसी और मुहर्रिक (प्रेरक) के तहत हक के काफ़िले के साथ लग जाने से वह नजात नहीं पा जाएगा। उसकी कमजोरी कहीं न कहीं जाहिर होगी और वहीं वह बैठकर रह जाएगा।

وَاِلٰی مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَکُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِکْیَالَ وَالْمِیْزَانَ اِنِّیْۤ اَرٰىکُمْ بِخَیْرٍ وَّاِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْکُمْ عَذَابَ یَوْمٍ مُّحِیْطٍ ﴿۸۴﴾ وَیٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِکْیَالَ وَالْمِیْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ﴿۸۵﴾ بَقِیَّتُ اللّٰهِ خَیْرٌ لَّکُمْ اِنْ کُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَیْکُمْ بِحَفِیْظٍ ﴿۸۶﴾

और मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। और नाप और तोल में कमी न करो। मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूं, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अजाब से डरता हूं। और ऐ मेरी कौम, नाप और तोल को पूरा करो इंसाफ के साथ। और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो। और जमीन पर फसाद न मचाओ। जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान (रखवाला) नहीं हूं। (84-86)

मदयन का इलाक़ा हिजाज और शाम के दर्मियान था। उनके पैग़म्बर हजरत शुऐब का अपनी कौम से यह कहना कि 'अगर तुम ईमान वाले हो' जाहिर करता है कि उनकी कौम मोमिन होने की मुद्दई (दावेदार) थी। बअल्फ़ाजे दीगर, वह अपने जमाने की मुसलमान कौम थी। वह हजरत शुऐब से पहले आने वाले नबी की उम्मत थी और अब लम्बा अर्सा गुजरने के बाद उनकी बाद की नस्लों में बिगाड़ आ गया था।

हजरत शुऐब ने उनसे कहा कि अगर तुम मोमिन होने के दावेदार हो तो तुम्हारा दावा ख़ुदा के यहां उसी वक्त माना जाएगा जबकि तुम अपने दावे के तक़ाजे पूरे करो। तक़ाजा पूरा किए बग़ैर दावे की कोई कीमत नहीं।

तुम्हारे ईमान का तक़ाजा यह है कि तुम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करो। लेन देन में इंसाफ बरतो। दूसरों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो। तुम में से हर शख़्स को चाहिए कि वह लोगों के हुकूक़ ठीक-ठीक अदा करे। और इसमें किसी तरह की कमी न करे। जमीन में इस तरह रहो जिस तरह ख़ुदा चाहता है कि उसके बंदे रहें। जाइज तरीके से हासिल किए हुए रिज़्क पर क़नाअत (संतोष) करो न कि नाफ़रमानी करके ज्यादा हासिल करने की कोशिश करो। अगर तुम ऐसा करो जभी तुम ख़ुदा के यहां मोमिन ठहरोगे। वर्ना अंदेशा है कि ख़ुदा का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा।

हजरत शुऐब ने एक तरफ यह कहा कि लोगों को कम न दो। दूसरी तरफ यह फ़रमाया कि 'आज मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूं' इससे मालूम होता है कि कौमे शुऐब में कुछ ग़रीब थे और कुछ अमीर। कुछ ज्यादा पाने वाले थे और कुछ वे थे जिनको घटाकर मिल रहा था। अगर सारे लोग कम पाने वाले होते तो उनमें 'अच्छे हाल वाला' कौन बाकी रहता।

इससे मालूम होता है कि यहां जिन मुख़ातबीन का जिक्र है। वे कौम के बाअसर और साहिबे हैसियत अफराद थे। अंबिया अगरचे हर एक की हिदायत के लिए आते हैं मगर उनका ख़िताब ख़ास तौर पर वक्त के मुमताज (शीर्ष) तबके से होता है। क्योंकि अवाम उन्हीं लोगों के ताबेअ होते हैं। वे ज्यादातर अपने बड़ों के नक्शेकदम पर चलते हैं। ख़्वास (विशिष्ट जनों) तक दावत (सत्य-संदेश) पहुंचना परोक्ष तौर पर अवाम तक भी दावत का पहुंचना है।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَأْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۗ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, क्या तुम्हारी नमाज तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीजों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। या अपने माल में अपनी मर्जी के मुताबिक तसर्रुफ (उपभोग) करना छोड़ दें। बस तुम ही तो एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और नेक चलन आदमी हो। (87)

कभी ऐसा होता है कि नमाज बोलकर दीन मुराद लिया जाता है। मतलब यह है कि क्या तुम्हारा दीन तुम्हें ऐसा हुक्म दे रहा है। उन्होंने नमाज का लफ्ज इसलिए इस्तेमाल किया कि नमाज दीन की सबसे ज्यादा वाजेह अलामत है।

हजरत शुऐब की कौम दीनदार होने की मुद्दई थी। वह इबादत भी करती थी। मगर उन्होंने अपने दीन और इबादत के साथ शिर्क और बदमामलगी को भी जमा कर रखा था। हजरत शुऐब ने उन्हें सच्ची ख़ुदापरस्ती और लोगों के साथ हुस्ने मामला की दावत दी और कहा कि दीन के साथ अगर शिर्क है और इबादत के साथ बदमामलगी भी जारी है तो ऐसे दीन और ऐसी इबादत की ख़ुदा के यहां कोई कीमत नहीं।

इस किस्म की बातों से कौम का दीनी भरम खुलता था। इससे उनके उस जोम (दंभ) पर जद पड़ती थी कि सब कुछ करते हुए भी वे दीनदार हैं और इबादत गुजारी का तमग़ा भी हर हाल में उन्हें मिला हुआ है। चुनांचे वे बिगड़ गए। उन्होंने कहा कि क्या तुम ही एक खुदा के इबादत गुजार हो। क्या हमारे वे तमाम बुजुर्ग जाहिल थे या हैं जिनके तरीके को हमने इख़्तियार कर रखा है। क्या तुम्हारे सिवा कोई यह जानने वाला नहीं कि इबादत क्या है और उसके तक़ाजे क्या हैं। शायद तुम समझते हो कि सिर्फ तुम ही दुनिया भर में एक समझदार और सालेह (नेक) पैदा हुए हो।

कौमे शुऐब को वे लोग ज्यादा बड़े मालूम होते थे जो लम्बी रिवायात के नतीजे में बड़े बन चुके थे। या जो अब ऊंची गद्दियों पर बैठे हुए थे। इसीलिए उन्हें हजरत शुऐब के बारे में ऐसा कहने की जुरअत हुई।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۗ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۗ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۗ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۗ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۗ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾

शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ, अगर मैं अपने रब की तरफ से एक वाजेह दलील पर हूं और उसने अपनी जानिब से मुझे अच्छा रिज़्क भी दिया। और मैं नहीं चाहता कि

मैं ख़ुद वही काम करूं जिससे मैं तुम्हें रोक रहा हूं। मैं तो सिर्फ इस्लाह (सुधार) चाहता हूं, जहां तक हो सके। और मुझे तौफीक तो अल्लाह ही से मिलेगी। उसी पर मैंने भरोसा किया है। और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूं। और ऐ मेरी कौम, ऐसा न हो कि मेरा विरोध करके तुम पर वह आफत पड़े जो कौमे नूह या कौमे हूद या कौमे सालेह पर आई थी, और लूत की कौम तो तुमसे दूर भी नहीं। और अपने रब से माफी मांगो फिर उसकी तरफ पलट आओ। बेशक मेरा रब महरबान और मुहब्बत वाला है। (88-90)

मानने की दो सूरतें हैं। एक है तक्लीदी (अनुकरणीय) तौर पर मानना। दूसरा सही समझ कर मानना। पहली सूरत में आदमी किसी बात को इसलिए मानता है कि लोग उसे मानते हैं। दूसरी सूरत में वह उसे इसलिए मानता है कि उसने ख़ुद दलील की बुनियाद पर पाया है कि वह बात सही है। पहला अगर रस्मी इकरार है तो दूसरा शुऊरी दरयाफ्त।

हक को दलील (या शुऊर) की सतह पर पाना ही मोमिन का अस्ल सरमाया है। इसी से वह ज़िंदा यकीन हासिल होता है जबकि आदमी हर चीज से बेपरवाह होकर लोगों के दर्मियान खड़ा हो और हक की नुमाइंदगी कर सके। हक की शुऊरी याफ्त हर दूसरी चीज का बदल है। जिसे यह नेमत हासिल हो जाए उसे फिर किसी और चीज की जरूरत बाकी नहीं रहती।

आम आदमी 'रोटी' पर जीता है। मोमिन वह इंसान है जो हक की दलील पर जीता है। इस तरह का रिज्क (शुऊरी याफ़्त) मिलने के बाद आदमी के लिए नामुमकिन हो जाता है कि वह उसके ख़िलाफ रवैया इख़्तियार करे। कौल व अमल का तजाद (अन्तर्विरोध) रस्मी ईमान का नतीजा है और कौल व अमल की यकसानियत शुऊरी ईमान का नतीजा।

"शिकाक" की तशरीह में हजरत हसन बसरी का कौल है कि मेरी दुश्मनी तुम्हें ईमान का रास्ता छोड़ देने पर न उभारे कि इसके बाद तुम्हें वह सजा मिले जो मुंकिरों को मिली।

दाओ चूंकि अपने जमाने के लोगों को एक आम इंसान की मानिंद नजर आता है। इसलिए उसकी नाकिदाना (आलोचनात्मक) बातों से वे लोग बिगड़ उठते हैं जिन्हें माहौल में ऊंची हैसियत हासिल हो। एक मामूली आदमी की यह जुरअत उनके लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो जाती है कि वह उन पर और उनके बड़ों पर तंकीद (आलोचना) करे। इस वजह से उनके अंदर दाओ के ख़िलाफ जिद और नफरत पैदा हो जाती है।

किसी आदमी के अंदर इस किस्म की नफ्सियात का पैदा होना उसका निहायत कड़े इम्तेहान में मुब्तिला किया जाना है। क्योंकि ऐसा आदमी एक शख़्स को हकीर (तुच्छ) समझने की वजह से उसकी तरफ से आने वाली ख़ुदाई बात को भी हकीर समझ लेता है। वह एक इंसान को नजरअंदाज करने के नाम पर ख़ुद ख़ुदा को नजरअंदाज कर देता है।

قَالُوا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۖ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۗ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى

مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता। और हम तो देखते हैं कि तू हम में कमजोर है। और अगर तेरी बिरादरी न होती तो हम तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डाला) कर देते। और तुम हम पर कुछ भारी नहीं। शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज्यादा भारी है। और अल्लाह को तुमने पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया। बेशक मेरे रब के काबू में है जो कुछ तुम करते हो। और ऐ मेरी कौम, तुम अपने तरीके पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीके पर करता रहूंगा। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसके ऊपर रुसवा करने वाला अजाब आता है और कौन झूठा है। और इंतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हूं। (91-93)

हजरत शुऐब को हदीस में ख़तीबुल अंबिया (नबियों के वक्ता) कहा गया है। आप अपनी कौम को उसकी अपनी काबिलेफहम जबान में निहायत मुवस्सिर (प्रभावी) अंदाज में समझाते थे। फिर आपकी बात उसकी समझ में क्यों नहीं आई। इसकी वजह यह थी कि कौम का जेहनी सांचा बिगड़ा हुआ था। उसके सोचने का अंदाज और था और हजरत शुऐब के सोचने का अंदाज और। इस बिना पर आप की बात उसकी समझ में न आ सकी।

कौम इंसानों की ताजीम में गुम थी। आप उसे एक अल्लाह की ताज़ीम की तरफ बुलाते थे। वह ख़ुश अकीदगी को नजात का जरिया समझे हुए थी, आपका कहना था कि सिर्फ अमल के जरिए नजात हो सकती है। कौम का ख़्याल था कि वह अपने को मोमिन समझती है इसलिए वह मोमिन है। आपने कहा कि मोमिन वह है जो ख़ुदा की मीजान (तुला) में मोमिन करार पाए। कौम के नजदीक नमाज की हैसियत बस एक ग़ैर मुअस्सिर किस्म के रस्मी जमीमा (परिशिष्ट) की थी। आपने एलान किया कि नमाज आदमी की जिंदगी और उसके आमद व ख़र्च की मुहासिब है। कौम समझती थी कि ईमान बस एक बेरूह इकरार है, आपने बताया कि ईमान वह है जो एक जिंदा शुऊर के तौर पर हासिल हुआ हो।

इस तरह हजरत शुऐब और उनकी कौम के दर्मियान एक किस्म का फस्ल (Gap) पैदा हो गया था। यही जेहनी फस्ल कौम के लिए आपकी सीधी और सच्ची बात को समझने में रुकावट बना रहा।

'अगर तुम्हारा कबीला न होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते।' यह जुमला बताता है कि हजरत शुऐब की कौम किस कद्र बेहिस और जाहिरपरस्त हो चुकी थी। किस्सा यह था कि हजरत शुऐब ने जब कौम के दीनी भरम को बेन काब किया तो कौम के लोग उनके दुश्मन बन गए। उस वक्त हजरत शुऐब के साथ न अवाम की भीड़ थी जो लोगों को रोके और न आप दौलत और हैसियत के मालिक थे जिसे देखकर लोग मरऊब हों। आपके पास सिर्फ सदाकत (सच्चाई) और माकूलियत (विवेक) का जोर था और ऐसे लोगों के नजदीक सिर्फ सदाकत और माकूलियत

की कोई अहमियत नहीं होती।

ऐसी हालत में वे यकीनन आप पर कातिलाना हमला कर देते। ताहम जिस चीज ने उन्हें इस किस्म के इक्दाम से रोका वह कबीले के इंतिकाम का अंदेशा था। कबाइली दौर में कबीले के किसी फर्द को मारने का मतलब यह था कि कबाइली दस्तूर के मुताबिक पूरा कबीला उससे ख़ून का बदना लेने के लिए उठ खड़ा हो जाए। यह अंदेशा कौमे शुऐब के लिए आपके ख़िलाफ किसी इंतिहाई इक्दाम में रुकावट बन गया। ठीक उसी तरह जैसे मौजूदा जमाने में शरीर अफराद की शरारत से अक्सर औकात लोग इसलिए महफूज रहते हैं कि उन्हें अंदेशा होता है कि अगर उन्होंने कोई जारिहयत (आक्रामक) की तो उन्हें पुलिस और अदालत का सामना करना पड़ेगा।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ۝

और जब हमारा हुक्म आया हमने शुऐब को और जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। पस वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। गोया कि कभी उनमें बसे ही न थे। सुनो, फिटकार है मदयन को जैसे फिटकार हुई थी समूद को। (94-95)

हजरत शुऐब की कौम के लोग समझते थे कि वे मदयन के मालिक हैं। जो चीज उन्हें इम्तेहान की मस्लेहत के तहत दी गई थी उसे उन्होंने अपना मुस्तकिल हक समझ लिया। इस एहसास के तहत उन्होंने आपके ख़िलाफ जारिहाना (आक्रामक) तदबीरें कीं। उन्होंने आपको यह धमकी भी दी कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपनी सरजमीन से निकाल देंगे। (अल आराफ 88)। मगर वही जमीन जिसे वे अपनी जमीन समझते थे और जिसके वे मालिक बने हुए थे। वहां ख़ुदा के हुक्म से हौलनाक गड़गड़ाहट के साथ जलजला आया। जिसके नतीजे में यह पूरा इलाका तबाह हो गया। वे ख़ुद अपनी दुनिया में इस तरह मिटकर रह गए जैसे कभी उनका वजूद ही न था।

अलबत्ता कौम के वे अफराद जिन्होंने हजरत शुऐब की बात मानी थी और आपके साथ हो गए थे उन्हें ख़ुसूसी नुसरत से बचा लिया गया।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और वाजेह सनद (स्पस्ट प्रमाण) के साथ भेजा, फिरऔन और उसके सरदारों की तरफ। फिर वे फिरऔन के हुक्म पर चले हालांकि फिरऔन का हुक्म रास्ती (भलाई) पर न था। कियामत के दिन वह अपनी कौम के आगे होगा और उन्हें आग पर पहुंचाएगा। और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुंचेंगे। और इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी गई और कियामत के दिन भी। कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें मिला। (96-99)

हजरत मूसा ने हक की दावत आख़िरी मुमकिन हद तक पेश कर दी। उन्होंने फिरऔन और उसके साथियों को न सिर्फ नजरी (वैचारिक) तौर पर बेदलील कर दिया। बल्कि असा (डंडा) के मोजिजे की सूरत में अपनी सदाकत का खुला हुआ ज़ाहिरी सुबूत भी उन्हें दिखा दिया। फिर भी फिरऔन की कौम फिरऔन ही के साथ रही, वह हजरत मूसा का साथ देने पर तैयार न हुई।

इसकी वजह यह थी कि इन लोगों के नजदीक सारी अहमियत इक्तेदार और दुनियावी साजोसामान की थी और ये चीजें वे हजरत मूसा के अंदर न देखते थे। वे आपकी बातों पर हैरान जरूर होते थे। मगर जब वे हजरत मूसा का मुकाबला फिरऔन से करते तो उन्हें एक तरफ बेसरोसामानी (साधनहीनता) दिखाई देती और दूसरी तरफ हर किस्म का माद्दी जाह व जलाल। यह तकाबुल उनके लिए फैसलाकुन बन गया। और वे दलाइल और मोजिजात (चमत्कार) देखने के बावजूद इसके लिए तैयार न हुए कि फिरऔन को छोड़ दें और उससे अलग होकर हजरत मूसा के साथ हो जाएं।

जो लोग दुनिया में किसी का साथ सिर्फ इसलिए देंगे कि उसके पास माद्दी (सांसारिक) बड़ाई की चीजें थीं, वे आख़िरत में भी उसके साथ कर दिए जाएंगे। मगर दुनिया के बरअक्स यह बहुत बुरा साथ होगा। क्योंकि उस दिन उस आदमी से उसका तमाम सामान छिन चुका होगा। अब उसका वजूद सिर्फ जिल्लत और बर्बादी का निशान होगा। वह अपने साथियों को भी उसी आग में पहुंचा देगा जो ख़ुद उसके लिए उसकी गुमराह कयादत (नेतृत्व) के नतीजे में ख़ुदा की तरफ से मुकद्दर की जा चुकी है।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝

ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें से कुछ अब तक कायम हैं और कुछ मिट गईं। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया। बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर जुल्म किया। फिर जब तेरे रब का हुक्म आ गया तो उनके माबूद (पूज्य) उनके कुछ काम न आए जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे। और उन्होंने उनके हक में बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं बढ़ाया। (100-101)

कदीम तारीख़ों (इतिहासों) में बादशाहों और फौजी जनरलों के हालात दर्ज हैं मगर नबियों और उनकी कौमों के हालात किसी तारीख़ में दर्ज नहीं। दूसरी तरफ कुरआन को देखिए तो उसमें सबसे ज्यादा एहतिमाम के साथ नबियों और उनकी कौमों के हालात मिलते हैं। बकिया बातें उसने इस तरह नजरअंदाज कर दी हैं जैसे उसकी नजर में उनकी कोई अहमियत नहीं। इंसान ने जो तारीख़ लिखी उसमें उसने वही बात छोड़ दी जो ख़ालिक के नजदीक सबसे ज्यादा काबिलेतजकिरा थी।

दौरे नुबुव्वत की उन हलाकशुदा बस्तियों में से कुछ बस्तियां ऐसी हैं जो अभी तक आबाद हैं। जैसे मिस्र जो फिरऔन का मकाम था। दूसरी तरफ कौमे हूद और कौमे लूत जैसी कौमें हैं जिनकी बस्तियां उनके बाशिंदों सहित नापैद हो गईं। अलबत्ता कहीं कहीं उनके कुछ निशानात खंडहर की सूरत में खड़े हैं या जमीन की खुदाई से बरामद किए गए हैं।

इन बस्तियों का हलाक किया जाना बजाहिर एक जालिमाना वाक्या मालूम होता है। मगर जब यह देखिए कि क्यों ऐसा हुआ तो वह ऐन मुताबिके हकीकत बन जाता है। क्योंकि ये उनकी अपनी बदअमली के नताइज थे। जो कुछ हुआ वह उनकी बदकिरदारी के बाद हुआ न कि उनकी बदकिरदारी से पहले।

जब भी आदमी सरकशी और जुल्म करता है तो वह किसी बरते पर करता है। वह कुछ चीजों या हस्तियों को अपना सहारा समझ लेता है और ख़्याल करता है कि ये मुश्किल वक्तों में उसके मददगार साबित होंगे। मगर ये सहारे उसी वक्त तक सहारे हैं जब तक ख़ुदा ढील दे रहा हो। जब ख़ुदा के कानून के मुताबिक ढील की मुद्दत ख़त्म हो जाए और ख़ुदा अपना आख़िरी फैसला जाहिर कर दे उस वक्त आदमी को मालूम होता है कि वे सब महज झूठे मफरूजे थे जिनको उसने अपनी नादानी की वजह से सहारा समझ लिया था।

وَكَذٰلِكَ اَخۡذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الۡقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخۡذَهٗۤ اَلِيۡمٌ شَدِيۡدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنۡ خَافَ عَذَابَ الۡاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّجۡمُوۡعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّشۡهُوۡدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعۡدُوۡدٍ ؕ ﴿۱۰۴﴾ يَوۡمَ يَاۡتِ لَا تَكَلَّمُ نَفۡسٌ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ شَقِىٌّ وَّسَعِيۡدٌ ﴿۱۰۵﴾

और तेरे रब की पकड़ ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके जुल्म पर पकड़ता है। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक और सख़्त है। इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो आख़िरत के अजाब से डरें। वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे। और वह हाजिरी का दिन होगा। और हम उसे एक मुद्दत के लिए टाल रहे हैं जो मुकर्रर है। जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाजत के बग़ैर कलाम न कर सकेगी। पस उनमें कुछ बदबख़्त (अभागे) होंगे। और कुछ नेकबख़्त (भाग्यशाली)। (102-105)

मौजूदा दुनिया में इंसान को रहने और बसने का मौका सिर्फ इम्तेहान की बिना पर हासिल है। पैग़म्बरों के जरिए इतमामे हुज्जत के बाद भी जो लोग मुंकिर बने रहें वे ख़ुदा की जमीन में मजीद ठहरने का हक खो देते हैं। यही वजह है कि पैग़म्बरों के मुंकिरीन को ख़ुदा ने हलाक कर दिया (अनकबूत 40)। यह हलाकत ज्यादातर इस तरह हुई कि आम जमीनी आफ़्तों में शिद्दत पैदा कर दी गई मसलन आंधी, सैलाब या जलजला, जो आम हालात में एक हद के अंदर रहते हैं, उन्हें ग़ैर महदूद तौर पर शदीद कर दिया गया।

माजी में इस तरह कौमों की तबाही के वाक्येयात को भूगोलविद मौसमी परिवर्तनशीलता (Climatic Pulsations) का नाम देते हैं। गोया जो कुछ हुआ वह महज भौगोलिक उथल पुथल के नतीजे में हुआ। अगरचे वे इस वाकये की कोई तौजीह नहीं कर पाते कि इस किस्म के शदीद मौसमी परिवर्तन सिर्फ माजी में क्यों पेश आए। वे अब (ख़त्मे नुबुव्वत के बाद) क्यों नहीं पेश आते।

हकीकत यह है कि ये वाक्येयात सादा मअनों में सिर्फ भौगोलिक वाक्येयात न थे बल्कि यह हुक्मे ख़ुदावंदी का जहूर था। इनसे यह साबित होता है कि मौजूदा दुनिया का निजाम अद्ल पर कायम है। यहां ख़ुद कानूने कुदरत के तहत लाजिमन ऐसा होने वाला है कि जालिम अपने जुल्म की सजा पाए और आदिल को अपने अद्ल का इनाम मिले। इन वाक्येयात को मौसमी तग़य्युरात (परिवर्तन) कहना इन्हें भूगोल के ख़ाने में डाल देना है। इसके बरअक्स अगर उन्हें ख़ुदाई तग़य्युरात (परिवर्तन) माना जाए तो वे आदमी के लिए ख़ौफे ख़ुदा और फिक्रे आख़िरत का जबरदस्त सबक बन जाएंगे।

पैग़म्बरों के जमाने में जो वाक्येयात पेश आए वे गोया बड़ी कियामत से पहले उसकी एक छोटी निशानी थे। उनमें ऐसा हुआ कि मुंकिरीन को एक मुद्दत तक ढील दी गई। इसके बाद ख़ुदा का फैसला जाहिर हुआ तो सबके सब हलाक कर दिए गए। सिर्फ वे लोग बच सके जो हक का साथ देने की वजह से ख़ुदा के नजदीक नेकबख़्त करार पा चुके थे। इनके अलावा जो लोग ख़ुदा की मीजान में सरकश और बदबख़्त थे वे लाजिमी तौर पर अजाब की जद में आए। यहां तक कि पैग़म्बरों की सिफारिश भी उन्हें बचा न सकी, जैसा कि हजरत नूह और हजरत इब्राहीम की मिसाल से साबित होता है।

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ شَقُوۡا فَفِى النَّارِ لَهُمۡ فِيۡهَا زَفِيۡرٌ وَّشَهِيۡقٌ ۙ ﴿۱۰۶﴾ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيۡدُ ﴿۱۰۷﴾ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ سُعِدُوۡا فَفِى الۡجَـنَّةِ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيۡرَ مَجۡذُوۡذٍ ﴿۱۰۸﴾ فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّمَّا يَعۡبُدُ هٰٓؤُلَاۤءِ ؕ مَا يَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا كَمَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُهُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوۡهُمۡ نَصِيۡبَهُمۡ غَيۡرَ مَنۡقُوۡصٍ ﴿۱۰۹﴾

पस जो लोग बदबख़्त हैं वे आग में होंगे। उन्हें वहां चीख़ना है और दहाड़ना। वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन कायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे। बेशक तेरा रब कर डालता है जो चाहता है। और जो लोग नेकबख़्त हैं तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन कायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे बख़्शिश है बेइंतिहा। पस तू उन चीजों से शक में न रह जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं। ये तो बस उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप दादा इबादत कर रहे थे। और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा पूरा देंगे बग़ैर किसी कमी के। (106-109)

क़ुरआन में सबसे ज्यादा अहमियत और सबसे ज्यादा तकरार (पुनरावृत्ति) के साथ जिस चीज का जिक्र है वह यह है कि इंसान अपनी मौजूदा हालत पर छोड़ नहीं दिए जाएंगे। बल्कि वे मौत के बाद ख़ुदा की अदालत में हाजिर किए जाएंगे। वहां हर एक अपनी कारकर्दगी के मुताबिक जन्नत या दोज़ख़ में डाला जाएगा।

इस अहमियत और तकरार की वजह लोगों का 'शक' है। लोग देखते हैं कि जमीन पर बेशुमार इंसान ऐसे हैं जो ख़ुदा की हिदायत को नहीं मानते। बेशुमार इंसान ऐसे हैं जो ख़ुदा की हिदायत से आजाद होकर अमल करते हैं। बेशतर इंसान ख़ुदापसंद जिंदगी की बजाए ख़ुदपसंद जिंदगी गुजार रहे हैं। फिर भी उनका कुछ नहीं बिगड़ता। फिर भी सारे लोग कामयाब हैं। बजाहिर यहां कहीं दिखाई नहीं देता कि ख़ुदा के वफ़ादारों को कोई ख़ुसूसी इनाम मिल रहा हो। या ख़ुदा के नाफ़रमानों को कोई ख़ास सजा भुगतनी पड़ती हो।

इस बिना पर लोगों को शक होने लगता है। उन्हें यकीन नहीं आता कि इंसानों का जो अंजाम मुसलसल वे अपनी आंखों से देख रहे हैं उसके सिवा भी कोई अंजाम उनके लिए मुकद्दर है। यहां क़ुरआन बताता है कि लोगों का मुसलसल गैर हक पर चलना इसलिए नहीं है कि उन्होंने मसले के तमाम पहलुओं पर ग़ौर किया और फिर उसे माकूल पाकर उसे इख़्तियार कर लिया। इसका सबब दरअस्ल रिवाज की पैरवी है न कि दलील और माकूलियत की पैरवी।

इसके बावजूद लोगों के अमल का अंजाम उनके सामने नहीं आता तो इसका सबब मोहलते इम्तेहान है। जमीन पर मौत से पहले की जिंदगी जांच की जिंदगी है। इसलिए मौत तक इंसान को यहां ढील दी जा रही है कि वह जो चाहे बोले और जो चाहे करे। मौत इस मुकर्ररह (निर्धारित) मुद्दत का ख़ात्मा है। मौत का मतलब यह है कि इंसान को मकामे इम्तेहान से उठाकर मकामे अदालत में पहुंचा दिया जाए। वहां हर एक को वही मिलेगा जिसका वह फ़िलवाकअ मुस्तहिक (पात्र) था और हर एक से वह छिन जाएगा जिसे उसने इस्तहकाक (पात्रता) के बग़ैर अपने गिर्द जमा कर रखा था।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾ وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

और हमने मूसा को किताब दी। फिर उसमें फूट पड़ गई। और अगर तेरे रब की तरफ से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और उन्हें इसमें शुबह है कि वह मुतमइन (संतुष्ट) नहीं होने देता और यकीनन तेरा रब हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा। वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं। (110-111)

'मूसा की किताब में इख़्तेलाफ़' का मतलब यह है कि उसके मुख़ातबीन उसके बयानात के बारे में कई राय हो गए। उनमें से कुछ लोगों ने झुठलाया और कुछ लोगों ने तस्लीम किया।

जब भी कोई बात कही जाए तो आदमी उसके बारे में हमेशा दो चीजों के दर्मियान होता है। एक, सही ताबीर (भाष्य)। दूसरे, ग़लत ताबीर। अगर सुनने वाले फ़िलवाकअ संजीदा हों तो वे एक ही सही ताबीर तक पहुंचेंगे उनकी संजीदगी उनके लिए इत्तेहादे राय की जामिन बन जाएगी। इसके बरअक्स अगर वे बात के बारे में संजीदा न हों तो वे उसे कोई अहमियत न देंगे और अपने अपने ख़्याल के मुताबिक उसकी मुख़्तलिफ ताबीरें करेंगे। कोई एक बात कहेगा, कोई दूसरी बात। इस तरह उनकी ग़ैर संजीदगी उन्हें इख़्तेलाफ़े राय तक पहुंचा देगी।

यह सूरत तमाम पैग़म्बरों के साथ पेश आई। इसके बावजूद ख़ुदा इसे गवारा करता रहा। इसकी वजह यह है कि ख़ुदा ने मौजूदा दुनिया को अमल की जगह बनाया है और अगली आने वाली दुनिया को बदला पाने की जगह। ख़ुदा की यही सुन्नत है जिसकी बिना पर लोगों को मुकम्मल आजादी मिली हुई है। मौजूदा सूरतेहाल इसी मोहलते इम्तेहान की बिना पर है न कि ख़ुदा के इज्ज या लोगों के किसी इस्तहकाक (पात्रता) की बिना पर।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ ﴿١١٤﴾ وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

पस तुम जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है और वे भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की है और हद से न बढ़ो बेशक वह देख रहा है जो तुम करते हो। और उनकी तरफ न झुको जिन्होंने जुल्म किया, वर्ना तुम्हें आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे और नमाज कायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में। बेशक नेकियां दूर करती हैं बुराइयों को। यह याददिहानी (अनुस्मरण) है याददिहानी हासिल करने वालों के लिए और सब्र करो अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र जाए (विनष्ट) नहीं करता। (112-115)

हक की दावत (आह्वान) का इब्तिदाई इस्तकबाल नजरअंदाज करने की सूरत में होता है।

इसके बाद मुख़ालिफत शुरू होती है, यहां तक कि मुख़ालिफत अपने आख़िरी नुक्ते पर पहुंच जाती है। यह दाजियों के लिए बड़ा नाजुक वक्त होता है। उस वक्त उनके दर्मियान दो किस्म के जेहन उभरते हैं। कुछ लोग झुंझला कर यह चाहने लगते हैं कि मुख़ालिफीन से टकरा जाएं और उन लोगों से कुव्वत के जरिए निपटें जिनके लिए नजरी दलाइल बेअसर साबित हुए हैं। दूसरा जेहन वह है जो यह सोचता है कि मुख़ातबीन के लिए काबिले कुबूल बनाने के ख़ातिर अपनी दावत में कुछ तरमीम (संशोधन) कर ली जाए। दावत के उन अज्जा (अंशों) का जिक्र न किया जाए जिन्हें सुनकर मुख़ातबीन बिगड़ जाते हैं।

पहला रवैया अगर हद से तजावुज (सीमा-उल्लंघन) करना है तो दूसरा रवैया बातिल से मुसालेहत (असत्य से समझौता) करना। और ये दोनों ही अल्लाह की नजर में यकसां तौर पर ग़लत हैं। ख़ास तौर पर दूसरी चीज (काबिले कुबूल बनाने के ख़ातिर तब्दीली) तो जुर्म का दर्जा रखती है। क्योंकि अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा जो चीज मत्लूब है वह हक का एलान है। और मुसालेहत की सूरत में हक का वाजेह एलान नहीं हो सकता।

दावत की राह में जब भी कोई मुश्किल पेश आए तो दाओ (आह्वानकर्ता) को चाहिए कि ख़ुदा की तरफ ज्यादा से ज्यादा रुजूअ करे क्योंकि सब कुछ करने वाला वही है। ख़ुदा की मदद ही तमाम मुश्किलात के हल का वाहिद यकीनी जरिया है।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

पस क्यों न ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की कौमों में ऐसे अहले ख़ैर होते जो लोगों को जमीन में फसाद करने से रोकते। ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया। और जालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे मुजरिम थे। और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक तबाह कर दे हालांकि उसके बाशिंदे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों। (116-117)

यहां पिछलों से मुराद पिछली उम्मतें बअल्फ़ाजे दीगर पिछली मुस्लिम कौमें हैं। कौम का बिगाड़ हमेशा इस तरह होता है कि दुनियावी सामान जो ख़ुदा की तरफ से उन्हें इसलिए दिया गया था कि इससे उनके अंदर शुक्र का जज्बा उभरे, वह उनके लिए सरमस्ती (उन्मुकता) और दुनियापरस्ती पैदा करने का जरिया बन गया।

ऐसी हालत में मुस्लिम कौम की इस्लाह के लिए जो काम करना है उसका उन्वान शरीअत की इस्तेलाह में 'अम्र बिल मारूफ और नही अनिलमुंकर' है। यह हुक्म एक मुसलमान की उस जिम्मेदारी को बताता है जो अपने करीबी माहौल की इस्लाह के सिलसिले में उस पर आयद होती है। इससे मुराद यह है कि मुस्लिम मुआशिरे में हमेशा ऐसे अफराद मौजूद

रहने चाहिएं जो मुसलमानों को ख़ुदा और आख़िरत की याद दिलाएं। वे उनके अख़्लाक की निगरानी करें। वे मामलात में उन्हें राहेरास्त पर कायम रखने की कोशिश करें।

किसी कौम में ऐसे अहले ख़ैर का न निकलना हमेशा दो सबब से होता है। या तो पूरी कौम की कौम बिगड़ चुकी हो और उसमें कोई सालेह इंसान बाकी न रहा हो। या सालेह अफराद मौजूद तो हों मगर उमूमी बिगाड़ की वजह से वे ज़बान खोलने की हिम्मत न करते हों। उन्हें अंदेशा हो कि अगर उन्होंने सच्ची बात कही तो कौम के दर्मियान वे बेइज्जत होकर रह जाएंगे।

मज्कूरा दोनों सूरतों में कौम ख़ुदा की नजर में अपना एतबार खो देती है और इसकी मुस्तहिक हो जाती है कि एक या दूसरी सूरत में वह इताबे ख़ुदावंदी की जद में आ जाए।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत बना देता मगर वे हमेशा इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) में रहेंगे सिवा उनके जिन पर तेरा रब रहम फरमाए। और उसने इसीलिए उन्हें पैदा किया है। और तेरे रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से इकट्ठे भर दूंगा। (118-119)

हमारी दुनिया में इंसान के सिवा दूसरी बेशुमार मख़्लूकात भी हैं। ये सब हमेशा फितरत के एक ही मुकर्रर रास्ते पर चलती हैं। इसी तरह इंसान को भी ख़ुदा एक ही सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) का पाबंद बना सकता था। मगर इंसान के बारे में ख़ुदा की यह स्कीम ही नहीं। इंसान के सिलसिले में ख़ुदा का मंसूबा यह था कि एक ऐसी मख़्लूक पैदा की जाए जो ख़ुद अपने आजादाना इख़्तियार के तहत एक चीज को ले और दूसरी चीज को छोड़ दे। इंसान की दुनिया में इख़्तेलाफ (किसी का एक रास्ते पर चलना और किसी का दूसरे रास्ते पर) दरअस्ल इसी ख़ास ख़ुदाई मंसूबे की बिना पर है।

यह मंसूबा यकीनन एक पुरख़तर (ख़तरे भरा) मंसूबा था क्योंकि इसका मतलब यह था कि बहुत से लोग आजादी का ग़लत इस्तेमाल करके अपने आपको जहन्नम का मुस्तहिक बना लेंगे। मगर इसी पुरख़तर मंसूबे के जरिए वे आला रूहें भी चुनी जा सकती थीं जो ख़ुदा की ख़ास रहमत की मुस्तहिक करार पाएं। ख़ुदा ने अपनी रहमतें सारी कायनात को बतौर अतिय्या (पारितोष) दे रखी हैं। अब ख़ुदा ने यह मंसूबा इसलिए बनाया ताकि अपनी रहमत वह अपनी एक मख़्लूक को यह कहकर दे कि यह तुम्हारा हक है।

ख़ुदा की रहमत उस शख़्स को मिलती है जिसका शुऊर इतना बेदार हो गया हो कि वह इम्तेहानी इख़्तियार के अंदर अपनी हकीकी बेइख़्तियारी को जान ले। वह इंसानी कुदरत के पर्दे

में ख़ुदा की कुदरत को देख ले। यह शुऊर ऐसे आदमी से सरकशी की ताकत छीन लेता है। यहां तक कि उसका यह हाल हो जाता है कि जब ख़ुदा अपनी रहमत को उसका हक कहकर पेश करे तो उसका शुऊरे हकीकत पुकार उठेख़ुदाया यह भी तेरी रहमतों ही का एक करिश्मा है। वर्ना मेरा अमल तो किसी कीमत का मुस्तहिक (पात्र) नहीं।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज तुम्हें सुना रहे हैं। जिससे तुम्हारे दिल को मजबूत करें और इसमें तुम्हारे पास हक आया है और मोमिनों के लिए नसीहत और याददिहानी (अनुस्मरण)। और जो लोग ईमान नहीं लाए उनसे कहो कि तुम अपने तरीके पर करते रहो और हम अपने तरीके पर कर रहे हैं। और इंतिजार करो हम भी मुंतजिर हैं। और आसमानों और जमीन की छुपी बात अल्लाह के पास है और वही तमाम मामलों का मरजअ (उन्मुख-केन्द्र) है। पस तुम उसकी इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। (120-123)

कुरआन में रसूलों के अहवाल (वृत्तांत) इसलिए सुनाए गए हैं कि बाद के दाअियों को इससे सबक हासिल हो। रसूलों के अहवाल में दाओ देखता है कि उनकी मुख़ातब कौमों ने उनसे झगड़े किए। सीधी बात को गलत रुख़ देकर उन्हें मतऊन (लांछित) किया। उन्हें तरह तरह की तकलीफें पहुंचाई। उन्हें इस तरह रद्द कर दिया जैसे उनकी कोई कीमत ही नहीं।

मगर बिलआख़िर अल्लाह ने उनकी मदद की। उनकी बात सबसे बरतर साबित हुई। मुख़ालिफीन की तमाम कार्रवाइयां नाकाम होकर रह गईं। दोनों गिरोहों का यह मुख़्तलिफ अंजाम अपनी इब्तिदाई सूरत में मौजूदा दुनिया ही में पेश आया और आख़िरत में वह अपनी कामिलतरीन सूरत में पेश आएगा।

इन मिसालों से दाओ को यह तारीख़ी एतमाद हासिल होता है कि उसे हक की दावत की राह में जो मुश्किलें पेश आ रही हैं उनमें उसके लिए न मायूसी का सवाल है और न घबराहट का। हक की दावत की राह में ये चीजें हमेशा पेश आती हैं। और इसे भी बिलआख़िर उसी तरह कामयाबी हासिल होगी जिस तरह इससे पहले ख़ुदा के सच्चे दाअियों को हासिल हुई।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٣﴾

आयतें-111 **सूरह-12. यूसुफ** रुकूअ-12

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। ये वाजेह (स्पष्ट) किताब की आयतें हैं। हमने इसे अरबी कुरआन बनाकर उतारा है ताकि तुम समझो। हम तुम्हें बेहतरीन सरगुजश्त (किस्से) सुनाते हैं इस कुरआन की बदौलत जो हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) किया। इससे पहले बेशक तू बेख़बरों में था। (1-3)

कुरआन अगरचे सारी दुनिया की हिदायत के लिए आया है। ताहम इससे मुख़ातबे अव्वल अरब थे। इसलिए वह अरबी जबान में उतरा। अब इस पर ईमान लाने वालों की जिम्मेदारी है कि वे इसकी तालीमात को हर जबान में मुंतकिल करें। और इसको दुनिया की तमाम कौमों तक पहुंचाएं।

कुरआन की तालीमात कुरआन में मुख़्तलिफ अंदाज और उस्लूब (शैली) से बयान की गई हैं। कहीं वह कायनाती इस्तदलाल (तर्कों) की जबान में हैं, कहीं इंजार और तबशीर (डरावा और ख़ुशख़बरी) की जबान में और कहीं तारीख़ की जबान में। सूरह यूसुफ में यह पैग़ाम हजरत यूसुफ के किस्से की शक्ल में सामने लाया गया है। इस सूरह में अहले ईमान को एक पैगम्बर की सरगुजश्त (किस्सा) की सूरत में बताया गया है कि ख़ुदा हर चीज पर कादिर है। वह हक के लिए उठने वालों की मदद करता है। और मुख़ालिफीन की तमाम साजिशों के बावजूद बिलआख़िर उन्हें कामयाब करता है। शर्त यह है कि अहले ईमान के अंदर तकवा और सब्र की सिफत मौजूद हो। यानी वे अल्लाह से डरने वाले हों और हर हाल में हक के रास्ते पर जमे रहें।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿٤﴾ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦﴾

जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारे और सूरज और चांद देखे हैं। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। उसके बाप ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम अपना यह ख़्वाब अपने भाइयों को न सुनाना कि वे तुम्हारे ख़िलाफ कोई साजिश करने लगें। बेशक शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुंतख़ब करेगा और तुम्हें बातों की हकीकत तक पहुंचना सिखाएगा और तुम पर और आले याकूब पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे अज्दाद (पूर्वजों) इब्राहीम और इस्हाक पर अपनी नेमत पूरी कर चुका है। यकीनन तेरा रब अलीम (ज्ञानवान) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (4-6)

हदीस में है कि ख़्वाब की तीन किस्में हैं। अपने दिल की बात, शैतान का डरावा और ख़ुदा की बशारत (शुभ सूचना)। आम आदमी का ख़्वाब तीनों में से कोई भी हो सकता है। मगर पैग़म्बर का ख़्वाब हमेशा ख़ुदा की बशारत होता है, कभी रास्त (प्रत्यक्ष) अंदाज में और कभी तमसीली (उपमा के) अंदाज में।

हजरत यूसुफ का जमाना उन्नीसवीं सदी ईसा पूर्व का जमाना है। आपके वालिद हजरत याकूब फिलिस्तीन में रहते थे। हजरत यूसुफ और उनके भाई बिन यामीन एक मां से थे और बकिया दस भाई दूसरी माओं से। इस ख़्वाब में सूरज और चांद से मुराद आपके वालिदेन हैं और ग्यारह सितारों से मुराद ग्यारह भाई। इसमें यह बशारत थी कि हजरत यूसुफ को पैग़म्बरी मिलेगी और इसी के साथ यह ख़्वाब आपके उस उरूज व इक्तेदार (सत्ता) की तमसील था जो बाद को मिस्र पहुंच कर आपको मिला और जिसके बाद सारे अहले ख़ानदान मजबूर हुए कि वे आपकी अज्मत को तस्लीम कर लें।

हजरत यूसुफ के दस सौतेले भाई आपकी शख़्सियत और मक्बूलियत को देखकर आपसे हसद रखते थे। इसलिए आपके वालिद (हजरत याकूब) ने ख़्वाब सुनकर फौरन कहा कि अपने भाइयों से इसका जिक्र न करना वर्ना वे तुम्हारे और ज्यादा दुश्मन हो जाएंगे।

किसी की बड़ाई देखकर उसके ख़िलाफ जलन पैदा होना ख़ालिस शैतानी फेअल (कृत्य) है। जिस शख़्स के अंदर यह सिफत पाई जाए उसे अपने बारे में तौबा करनी चाहिए। क्योंकि यह इस बात का सुबूत है कि वह ख़ुदा के फैसले पर राजी नहीं। वह शैतान की हिदायत पर चल रहा है न कि ख़ुदा की हिदायत पर।

यहां इतमामे नेमत का लफ्ज हजरत यूसुफ के लिए भी बोला गया है जिनको हुकूमत हासिल हुई और हजरत इब्राहीम के लिए भी जिनको कोई हुकूमत नहीं मिली। फिर दोनों के दर्मियान वह मुश्तरक (साम्य) चीज क्या थी जिसे इतमामे नेमत कहा गया। वह नुबुव्वत थी। यानी ख़ुदा की उस ख़ुसूसी हिदायत की तौफीक जो किसी को आख़िरत में आला मर्तबों तक पहुंचाने वाली है। ख़ुदा की हिदायत इंसान के ऊपर ख़ुदा की नेमतों की तक्मील है। यह नेमत पैग़म्बरों को बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मिलती है और आम सालेहीन को बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर।

لَقَدْ كَانَ فِىْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿٧﴾ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ﴿٨﴾ اِقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِىْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿١٠﴾

हकीकत यह है कि यूसुफ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं। जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज्यादा महबूब हैं। हालांकि हम एक पूरा जत्था हैं। यकीनन हमारा बाप एक खुली हुई गलती में मुब्तिला है। यूसुफ को कत्ल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जोह सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाए। और इसके बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाना। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ को कत्ल न करो। अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसे किसी अंधे कुवें में डाल दो। कोई राह चलता काफिला उसे निकाल ले जाएगा। (7-10)

मक्का के आख़िरी दिनों में जबकि अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा का इंतिकाल हो चुका था मक्का के लोगों ने आपकी मुख़ालिफत तेजतर कर दी। उस जमाने में मक्का के कुछ लोगों ने आपसे हजरत यूसुफ का हाल पूछा जिनका नाम उन्होंने सफरों के दौरान कुछ यहूदियों से सुना था। यह सवाल अगरचे उन्होंने मज़ाक के तौर पर किया था मगर अल्लाह तआला ने उसे ख़ुद पूछने वालों की तरफ लौटा दिया। इस किस्से के जरिए बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर उन्हें बताया गया कि तुम लोग वे हो जिनके हिस्से में यूसुफ के भाइयों का किरदार आया है। जबकि पैग़म्बर का अंजाम ख़ुदा की रहमत से वह होने वाला है जो यूसुफ का मिस्र में हुआ।

हजरत याकूब देख रहे थे कि उनकी औलाद में सबसे ज्यादा लायक और सालेह (नेक) हजरत यूसुफ हैं। उनके अंदर उन्हें मुस्तकबिल के नबी की शख़्सियत दिखाई देती थी। इस बिना पर उन्हें हजरत यूसुफ से बहुत ज्यादा लगाव था। मगर आपके दस साहबजादे मामले को दुनियावी नजर से देखते थे। उनका ख़्याल था कि बाप की नजर में सबसे ज्यादा अहम चीज उनका जत्था होना चाहिए। क्योंकि वही इस काबिल है कि ख़ानदान की मदद और हिमायत कर सके। उनका यह एकतरफा दृष्टिकोण यहां तक पहुंचा कि उन्होंने सोचा कि यूसुफ को मैदान से हटा दें तो बाप की सारी तवज्जोह उनकी तरफ हो जाएगी।

वे लोग जब हजरत यूसुफ के ख़िलाफ मंसूबा बनाने बैठे तो उनके एक भाई (यहूदा) ने यह तज्वीज पेश की कि यूसुफ को कत्ल करने के बजाए किसी अंधे कुवें में डाल दिया जाए। यह अल्लाह तआला का ख़ास इंतिज़ाम था। अल्लाह का यह तरीका है कि कोई गिरोह जब

नाहक किसी बंदे के दरपे हो जाता है तो ख़ुद उस गिरोह में से एक ऐसा शख़्स निकलता है जो अपने लोगों को किसी ऐसी मोअतदिल तदबीर पर राजी कर ले जिसके अंदर से उस ख़ुदा के बंदे के लिए नया इम्कान खुल जाए।

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ﴿١١﴾ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿١٢﴾ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ﴿١٣﴾ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿١٤﴾

उन्होंने अपने बाप से कहा, ऐ हमारे बाप, क्या बात है कि आप यूसुफ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते। हालांकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं। कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, और हम उसके निगहबान हैं। बाप ने कहा मैं इससे ग़मगीन होता हूं कि तुम उसे ले जाओ और मुझे अंदेशा है कि उसे कोई भेड़िया खा जाए जबकि तुम उससे ग़ाफिल हो। उन्होंने कहा कि अगर उसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरी जमाअत हैं, तो हम बड़े ख़सारे (घाटे) वाले साबित होंगे। (11-14)

हजरत याकूब ने अपने बेटों को जो जवाब दिया उससे मालूम होता है कि हालात के मुतालअे से उन्होंने अंदाजा कर लिया था कि यह सहरा में खेलने कूदने का मामला नहीं है। बल्कि यूसुफ के ख़िलाफ उनके भाइयों की साजिश का मामला है। मगर अल्लाह से डरने वाला इंसान अल्लाह पर भरोसा करने वाला इंसान होता है। हजरत याकूब ने अगरचे अपनी फरासत (दूरदृष्टि) से यह महसूस कर लिया था कि क्या होने जा रहा है। ताहम वह ख़ुदा की कुदरत को हर दूसरी चीज से ऊपर समझते थे। उन्हें ख़ुदा की बालादस्ती पर कामिल यकीन था। चुनांचे वाजेह ख़तरात के बावजूद उन्होंने यूसुफ को ख़ुदा के भरोसे पर उनके भाइयों के हवाले कर दिया।

यह ख़ुदा से डरने वाले इंसान की तस्वीर थी। दूसरी तरफ हजरत यूसुफ के भाइयों में उन लोगों की तस्वीर नजर आती है जिनके दिल ख़ुदा के ख़ौफ से ख़ाली हों। ये लोग एक ख़ुदा के बंदे को नाहक बर्बाद करने के मंसूबे बना रहे थे। वे यह भूल गए थे कि वे एक ऐसी दुनिया में हैं जहां ख़ुदा के सिवा किसी और को कोई इख़्तियार हासिल नहीं। वे लफ्जों के एतबार से अपने को ख़ैरख़्वाह (हितैषी) साबित कर रहे थे। हालांकि ख़ुदा के नजदीक ख़ैरख़्वाह वह है जो अमल के एतबार से अपने को ख़ैरख़्वाह साबित करे।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنْتَ

بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

फिर जब वे उसे ले गए और यह तै कर लिया कि उसे एक अंधे कुवें में डाल दें और हमने यूसुफ को 'वही' (प्रकाशना) की कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा और वे तुझे न जानेंगे और वे शाम को अपने बाप के पास रोते हुए आए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारे बाप हम दौड़ का मुकाबला करने लगे और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया। फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हमारी बात का यकीन न करेंगे चाहे हम सच्चे हों। और वे यूसुफ की कमीज पर झूठा ख़ून लगाकर ले आए। बाप ने कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे नफ्स ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब सब्र ही बेहतर है। और जो बात तुम जाहिर कर रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं। (15-18)

हजरत यूसुफ का अस्ल किस्सा यकीनी तौर पर उससे ज्यादा मुफस्सल (विस्तृत) है जितना कि कुरआन में बयान हुआ है। मगर कुरआन का अस्ल मक्सद नसीहत है न कि वाक्यानिगारी। इसलिए वह सिर्फ उन पहलुओं को लेता है जो नसीहत और तज्कीर के लिए मुफीद हों। और बकिया तमाम अज्जा (अंशों) को हटा देता है ताकि तारीख़निगार उसे मुरत्तब करें।

रिवायात के मुताबिक हजरत यूसुफ तीन दिन तक अंधे कुवें में रहे। इन्हीं तीन दिनों में ग़ालिबन ख़्वाब के जरिए आपको आपका मुस्तकबिल दिखाया गया। उसमें आपने देखा कि आप कुवें से निकलते हैं और फिर अज्मत व शान के एक ऊंचे मकाम पर पहुंचते हैं। यहां तक कि आपके और आपके भाइयों के दर्मियान हैसियत के एतबार से इतना फर्क हो जाता है कि वे आपको देखते हैं तो पहचान नहीं पाते।

हजरत यूसुफ के भाइयों ने जो कुछ किया वह इंतिहाई इश्तिआलअंगेज (उत्तेजक) हरकत थी। मगर एक तरफ हजरत यूसुफ का हाल यह था कि उन्होंने अपने मामले को ख़ुदा के हवाले कर दिया और सुनसान मकाम पर अंधे कुवें के अंदर ख़ामोश बैठे हुए ख़ुदा की मदद का इंतिजार करते रहे। दूसरी तरफ आपके वालिद हजरत याकूब ने सब्रे जमील (असीम संयम) की रविश इख़्तियार की। कुछ तफ्सीरों में आया है कि उन्होंने अपने बेटों से कहा : अगर यूसुफ को भेड़िया खा जाता तो वह उसकी कमीज को भी जरूर भाड़ डालता। यानी वह भेड़िया भी कैसा शरीफ भेड़िया था जो यूसुफ को तो उठा ले गया और ख़ून आलूद कमीज को निहायत सही व सालिम हालत में उतार कर तुम्हारे हवाले कर गया।

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾

और एक काफिला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा। उसने अपना डोल लटकाया। उसने कहा, ख़ुशख़बरी हो यह तो एक लड़का है। और उसे तिजारत का माल समझ कर महफूज कर लिया। और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वे कर रहे थे। और उन्होंने उसे थोड़ी सी कीमत चन्द दिरहम के ऐवज बेच दिया। और वे उससे बेरग़बत (उदासीन) थे। (19-20)

हजरत यूसुफ के भाई जब आपको अंधे कुवें में डाल कर चले गए तो तीन दिन बाद एक तिजारती क़ाफ़िला उधर से गुज़रा जो मदयन से मिस्र जा रहा था। क़ाफ़िले के एक आदमी ने पानी की ख़ातिर कुवें में डोल डाला तो हजरत यूसुफ (जो उस वक्त तक़रीबन 16 साल के थे) डोल पकड़ कर बाहर आ गए।

यह इंसानों को बेचने का जमाना था। इसलिए क़ाफ़िले वाले ख़ुश हुए कि वे मिस्र ले जाकर लड़के को फरोख़्त कर सकेंगे। चुनांचे जब वे मिस्र पहुंचे तो अपने दीगर सामानों के साथ हजरत यूसुफ को भी बाजार में रखा । वहां एक आदमी ने होनहार लड़का देखकर आपको बीस दिरहम में ख़रीद लिया।

हजरत यूसुफ के भाई आपको बेवतन करके कुवें में डाल चुके थे। क़ाफ़िले वालों ने ग़ुलाम की हैसियत से फरोख़्त कर दिया। इसके बाद मिस्र के एक आला सरकारी अफसर की बीवी (जुलेख़ा) ने आपको कैदख़ाने में कैद करा दिया। मगर अल्लाह तआला ने इन तमाम मरहलों को आपके लिए इज्जत व सरबुलन्दी तक पहुंचने का जीना बना दिया। किस कद्र फर्क़ है इल्मे इंसान में और इल्मे ख़ुदावंदी में!

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

और अहले मिस्र में से जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह रखो। उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफीद हो या हम उसे बेटा बना लें। और इस तरह हमने यूसुफ को उस मुल्क में जगह दी। और ताकि हम उसे बातों की तावील (निहितार्थ) सिखाएं। और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब (अधिकार प्राप्त) रहता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुंचा हमने उसे हुक्म और इल्म अता किया। और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (21-22)

कहा जाता है कि मिस्री हुकूमत के एक अफसर (फ़ोतिफ़ार) ने हजरत यूसुफ को ख़रीदा।

मामूली कपड़े में छुपी हुई आपकी शानदार शख़्सियत को उसने पहचान लिया। उसने समझ लिया कि यह कोई ग़ुलाम नहीं है बल्कि शरीफ ख़ानदान का लड़का है। किसी वजह से वह काफिले के हाथ लग गया और उसने इसे यहां लाकर बेच दिया। चुनांचे उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे ग़ुलाम की तरह न रखना। यह एक लायक नौजवान मालूम होता है और इस काबिल है कि हमारे घर और जायदाद का इंतिजाम संभाल ले। मजीद यह की फ़ोतिफ़ार बेऔलाद था और किसी को अपना मुतबन्ना (ले पालक) बनाना चाहता था। उसने यह इरादा भी कर लिया कि अगर वाकई यह नौजवान उसकी उम्मीदों के मुताबिक निकला तो वह उसे अपना बेटा बना लेगा।

हजरत यूसुफ जब तक़रीबन चालीस साल के हुए तो ख़ुदा ने उन्हें एक तरफ नुबुव्वत अता की और दूसरी तरफ इक्तेदार (सत्ता)। उन्हें यह इनाम उनके हुस्ने अमल की वजह से मिला। ख़ुदा के इनाम का दरवाजा हमेशा मोहसिनीन के लिए खुला हुआ है। फर्क़ यह है कि दौरे नुबुव्वत में किसी को उसके हुस्ने अमल के नतीजे में नबी भी बनाया जा सकता था। मगर बाद के जमाने में उसे सिर्फ वे इनामात मिलेंगे जो नुबुव्वत के अलावा हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَن رَّأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

और यूसुफ जिस औरत के घर में था वह उसे फुसलाने लगी और एक रोज दरवाजे बंद कर दिए और बोली कि आ जा। यूसुफ ने कहा ख़ुदा की पनाह। वह मेरा आका है, उसने मुझे अच्छी तरह रखा है। बेशक जालिम लोग कभी फलाह नहीं पाते। और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता अगर वह अपने रब की बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें। बेशक वह हमारे चुने हुए बंदों में से था। (23-24)

अजीजेमिस्र की बीवी जुलेख़ा हजरत यूसुफ पर फ़रेफ़्ता हो गई। वह बराबर आपको फुसलाती रही। यहां तक की एक दिन मौका पाकर उसने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया।

एक ग़ैर शादीशुदा नौजवान के लिए यह बड़ा नाजुक मौक़ा था। मगर हजरत यूसुफ ने अपनी फ़ितरते रब्बानी को महफूज़ रखा था और यह फ़ितरत उस वक्त हज़रत यूसुफ के काम आ गई। हक और नाहक भलाई और बुराई को पहचानने की यह ताकत हर आदमी के अंदर पैदाइशी तौर पर मौजूद होती है। वह हर मौके पर इंसान को मुतनब्बह (सचेत) करती है। जो शख़्स उसे नजरअंदाज कर दे उसने गोया ख़ुदा की आवाज को नजरअंदाज कर दिया। ऐसा आदमी ख़ुदा की मदद से महरूम होकर धीरे-धीरे अपनी फितरत को कमजोर कर लेता है। इसके बरअक्स जो शख़्स ख़ुदाई पुकार के जाहिर होते ही उसके आगे झुक जाए, ख़ुदा की मदद उसकी

इस्तेदाद (क्षमता) बढ़ाती रहती है। वह इस काबिल हो जाता है कि आइंदा ज्यादा कुव्वत के साथ बुराई के मुकाबले में ठहर सके।

हजरत यूसुफ को जिस चीज ने बुराई से रोका वह हकीकतन अल्लाह का डर था। मगर जुलेख़ा के लिए ख़ुदा का हवाला देना उस वक्त बेअसर रहता। यह मौका हक के एलान का नहीं था बल्कि एक नाजुक सूरतेहाल से अपने आपको बचाने का था। इसी नजाकत की बिना पर आपने जुलेख़ा को उसके शौहर का हवाला दिया। आपने फरमाया कि वह मेरा आका है। उसने मुझे निहायत इज्जत के साथ अपने घर में रखा है। फिर कैसे मुमकिन है कि मैं अपने मोहसिन के नामूस (मर्यादा) पर हमला करूं।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾ وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾

और दोनों दरवाजे की तरफ भागे। और औरत ने यूसुफ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उसके शौहर को दरवाजे पर पाया। औरत बोली जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सजा इसके सिवा क्या है कि उसे कैद किया जाए या उसे सख़्त अजाब दिया जाए। यूसुफ ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की। और औरत के कुनबे वालों में से एक शख़्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और वह झूठा है। और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो औरत झूठी है और वह सच्चा है। फिर जब अजीज ने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है। और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी होती हैं। यूसुफ, इससे दरगुजर करो। और ऐ औरत तू अपनी गलती की माफी मांग। बेशक तू ही ख़ताकार थी। (25-29)

हजरत यूसुफ अपने आपको बचाने के लिए दरवाजे की तरफ भागे। जुलेख़ा भी उनके पीछे दौड़ी और पीछे से आपका कुर्ता पकड़ लिया। खींच तान में पीछे का दामन फट गया। ताहम हजरत यूसुफ दरवाजा खोल कर बाहर निकलने में कामयाब हो गए। दरवाजे के बाहर इत्तेफाक से जुलेख़ा का शौहर मौजूद था। उसे देखते ही जुलेख़ा ने सारी जिम्मेदारी हजरत यूसुफ

पर डाल दी। एक लम्हा पहले वह जिस शख़्स से इज्हारे मुहब्बत कर रही थी, एक लम्हा बाद उस पर झूठा इल्जाम लगाने लगी।

हजरत यूसुफ ने बताया कि मामला इसके बिल्कुल बरअक्स है। अब सवाल यह था कि फैसला कैसे किया जाए कि ग़लती किस की है। कोई तीसरा शख़्स मौके पर मौजूद नहीं था जो ऐनी गवाही दे। उस वक्त घर के एक समझदार शख़्स ने लोगों को रहनुमाई दी। संभव है कि यह शख़्स पहले से हालात से बाख़बर था। साथ ही, उसने यह भी देख लिया था कि यूसुफ का कुर्ता आगे के बजाए पीछे से फटा हुआ है। मगर उसने अपनी बात को ऐसे अंदाज में कहा गोया कि वह लोगों से कह रहा है कि जब ऐनी शहादत मौजूद नहीं है तो करीना की शहादत (Circumstantial evidence) देखकर फैसला लो। और करीने की शहादत यह थी कि हजरत यूसुफ का कुर्ता पीछे की जानिब से फटा हुआ था। यह वाजेह तौर पर इसका सुबूत था कि इस मामले में इक्दाम जुलेख़ा की तरफ से हुआ है न कि यूसुफ की तरफ से।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٠﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِنْ لَمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

और शहर की औरतें कहने लगीं कि अजीज की बीवी अपने नौजवान ग़ुलाम के पीछे पड़ी हुई है। वह उसकी मुहब्बत में फरेफ्ता है। हम देखते हैं कि वह खुली हुई गलती पर है। फिर जब उसने उनका फरेब सुना तो उसने उन्हें बुला भेजा। और उनके लिए एक मज्लिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी दी और यूसुफ से कहा कि तुम उनके सामने आओ। फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गईं। और उन्होंने अपने हाथ काट डाले। और उन्होंने कहा पाक है अल्लाह, यह आदमी नहीं है, यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है। उसने कहा यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं और मैंने इसे रिझाने की कोशिश की थी मगर वह बच गया। और अगर

उसने वह नहीं किया जो मैं उससे कह रही हूं तो वह कैद में पड़ेगा और जरूर बेइज्जत होगा। यूसुफ ने कहा, ऐ मेरे रब, कैदख़ाना मुझे उस चीज से ज्यादा पसंद है जिसकी तरफ ये मुझे बुला रही हैं। और अगर तूने उनके फरेब को मुझसे दफा न किया तो मैं उनकी तरफ मायल हो जाऊंगा और जाहिलों में से हो जाऊंगा। पस उसके रब ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उनके फरेब को उससे दफा कर दिया। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है। (30-34)

इस क़िस्से में एक तरफ मिस्र की ऊंचे तबके की ख़्वातीन (औरतें) थीं और दूसरी तरफ हजरत यूसुफ। ख़्वातीन आपको बस एक ख़ूबसूरत जवान की सूरत में देख रही थीं। इसी तरह हजरत यूसुफ उन ख़्वातीन को तस्कीने नफ्स (काम-तृप्ति) के सामान के रूप में देख सकते थे। मगर इंतिहाई हैजानख़ेज हालात में भी आपने ऐसा नहीं किया।

ख़्वातीन का हाल यह था कि वे सबकी सब आपकी पुरकशिश शख़्सियत की तरफ मुतवज्जह थीं। यहां तक की शिद्दते महवियत (तल्लीनता) में उन्होंने छुरी से फल काटते हुए अपने हाथ ज़ख़्मी कर लिए। मगर हजरत यूसुफ अपनी तमामतर तवज्जोह ख़ुदा की तरफ लगाए हुए थे। ख़ुदा की अज्मत व किबरियाई का एहसास आपके ऊपर इतना ग़ालिब आ चुका था कि कोई दूसरी चीज आपको अपनी तरफ मुतवज्जह करने में कामयाब न हो सकी। कितना फर्क है एक इंसान और दूसरे इंसान में!

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۗ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۗ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

फिर निशानियां देख लेने के बाद उन लोगों की समझ में आया कि एक मुद्दत के लिए इसको कैद कर दें। और कैदख़ाने में उसके साथ दो और जवान दाख़िल हुए। उनमें से एक ने (एक रोज) कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि मैं शराब निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूं जिसमें से चिड़ियां खा रही हैं। हमें इसकी ताबीर (अर्थ) बताओ। हम देखते हैं कि तुम नेक लोगों में से हो। (35-36)

मिस्र के आला तबके की ख़्वातीन जब हजरत यूसुफ को अपनी तरफ रागिब न कर सकीं तो इसके बाद उन्होंने आपके लिए जो मकाम पसंद किया वह कैदख़ाना था। चूंकि उस वक्त आपकी हैसियत एक गुलाम की थी इसलिए क़दीम रवाज के मुताबिक आपको कैदख़ाने भेजने के लिए किसी अदालती कार्रवाई की जरूरत न थी। आपका आक़ा ख़ुद अपने फैसले से आपको कैद में डालने का इख़्तियार रखता था।

मगर कैदख़ाना आपके लिए नया अजीमतर जीना बन गया। अब तक ऐसा था कि मिस्र के एक या चन्द अफसरों के घराने आपसे परिचित हुए थे। अब इस का इम्कान पैदा हो गया कि आपकी शख़्सियत का चर्चा ख़ुद बादशाहे मिस्र तक पहुंचे।

इसकी सूरत यह हुई कि आप जिस कैदख़ाने में रखे गए उसमें दो और नौजवान कैद होकर आए। ये दोनों शाही महल से तअल्लुक रखते थे। उन दोनों ने कैदख़ाने में ख़्वाब देखे और आपसे उनकी ताबीर पूछी। आपने उन्हें ख़्वाब की ताबीर बता दी। यह ताबीर बिल्कुल सही साबित हुई। इसके बाद उनमें से एक कैदख़ाने से छूटकर दुबारा शाही महल में पहुंचा तो उसने एक मौके पर बादशाह से बताया कि कैदख़ाने में एक ऐसा नेक इंसान है जो ख़्वाब की बिल्कुल सही ताबीर बताता है। इस तरह आपका कैद होना आपके लिए शाही महल तक रसाई का इब्तिदाई जीना बन गया।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۗ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۗ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۗ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۗ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۗ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ۗ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

यूसुफ ने कहा, जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन ख़्वाबों की ताबीर बता दूंगा। यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है। मैंने उन लोगों के मजहब को छोड़ा जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वे लोग आख़िरत (परलोक) के मुंकिर हैं और मैंने अपने बुज़ुर्गों इब्राहीम और इस्हाक और याक़ूब के मजहब की पैरवी की। हमें यह हक नहीं कि हम किसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराएं। यह अल्लाह का फज्ल है हमारे ऊपर और सब लोगों के ऊपर मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। ऐ मेरे जेल के साथियो, क्या जुदा जुदा कई माबूद (पूज्य) बेहतर हैं या अल्लाह अकेला जबरदस्त। तुम उसके सिवा नहीं पूजते हो मगर कुछ नामों को जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह ने इसकी कोई सनद नहीं उतारी। इक्तेदार (संप्रभुत्व) सिर्फ अल्लाह के लिए है। उसने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की

इबादत न करो। यही सीधा दीन है। मगर बहुत लोग नहीं जानते। (37-40)

नौजवान कैदियों ने अपने ख़्वाब की ताबीर जानने के लिए हजरत यूसुफ से रुजूअ किया। उन्होंने जिस अंदाज से सवाल किया उससे साफ जाहिर हो रहा था कि वे आपकी शख़्सियत से मुतअस्सिर हैं। और आपकी राय पर एतमाद करते हैं। हजरत यूसुफ जैसे नेक और बाउसूल इंसान के साथ एक अर्से तक रहने के बाद ऐसा होना बिल्कुल फितरी था।

हज़रत यूसुफ के दावती जज्बे ने फौरन महसूस कर लिया कि यह बेहतरीन मौक़ा है कि इन नौजवानों को दीने हक का पैग़ाम पहुंचाया जाए। मगर ख़्वाब की ताबीर फौरन बता देने के बाद उनकी तवज्जोह आपकी तरफ से हट जाती। चुनांचे आपने हकीमाना (सूझबूझ भरा) अंदाज इख़्तियार किया और ख़्वाब की ताबीर को थोड़ी देर के लिए टाल दिया। इसके बाद आपने तौहीद (एकेश्वरवाद) पर मुख़्तसर तकरीर की। उसमें मुख़ातब की नफ्सियात की रिआयत करते हुए निहायत ख़ूबसूरत इस्तदलाल (तर्क) के साथ अपना पैग़ाम उन्हें सुना दिया।

दरख़्त, पत्थर, सितारे और रूहों वग़ैरह को जो लोग पूजते हैं इसका राज यह है कि वे बतौर ख़ुद उन्हें मुश्किलकुशा (संकट मोचक) और हाजतरवा (दाता) जैसे अल्काब देते हैं और समझ लेते हैं कि वाकई वे मुश्किलकुशा और हाजतरवा हैं। हालांकि ये सब इंसान के अपने बनाए हुए इस्म (नाम) हैं जिनका मूल रूप कहीं मौजूद नहीं।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝ وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۡ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ۝

ऐ मेरे कैदख़ाने के साथियो तुम में से एक अपने आका को शराब पिलाएगा। और जो दूसरा है उसे सूली दी जाएगी। फिर परिंदे उसके सर में से खाएंगे। उस अम्र मामला का फैसला हो गया जिस अम्र के बारे में तुम पूछ रहे थे। और यूसुफ ने उस शख़्स से कहा जिसके बारे में उसने गुमान किया था कि बच जाएगा कि अपने आका के पास मेरा जिक्र करना। फिर शैतान ने उसे अपने आका से जिक्र करना भुला दिया। पस वह कैदख़ाने में कई साल पड़ा रहा। (41-42)

दोनों जवान जो जेल में लाए गए वह शाहे मिस्र (रियान बिन वलीद) के साकी (शराब पिलाने वाला) और ख़ब्बाज (खाना बनाने वाला) थे। दोनों पर यह इल्जाम था कि उन्होंने बादशाह के खाने में जहर मिलाने की कोशिश की। उनमें से जो साकी था वह तहकीक के बाद इल्जाम से बरी साबित हुआ और रिहाई पाकर दुबारा बादशाह का साकी मुकर्रर हुआ। उसके ख़्वाब का मतलब यह था कि अब वह बादशाह को ख़्वाब में शराब पिला रहा है कुछ दिन बाद वह बेदारी में उसे शराब

पिलाएगा। ख़ब्बाज पर इल्जाम साबित हो गया। उसे सूली देकर छोड़ दिया गया कि चिड़ियां उसका गोश्त खाएं और वह लोगों के लिए इबरत (सीख) हो।

हजरत यूसुफ की दोनों ताबीरें बिल्कुल दुरुस्त साबित हुईं। मगर साकी कैद से छूटकर दुबारा महल में पहुंचा तो वह वादे के मुताबिक बादशाह से हजरत यूसुफ का जिक्र करना भूल गया। उसे अपना किया हुआ वादा सिर्फ उस वक्त याद आया जबकि बादशाह ने एक ख़्वाब देखा और दरबारियों से कहा कि इसकी ताबीर बताओ।

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۭ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝

और बादशाह ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो मेरे ख़्वाब की ताबीर मुझे बताओ, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर देते हो। वे बोले ये ख़्याली ख़्वाब हैं। और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर मालूम नहीं। उन दो कैदियों में से जो शख़्स बच गया था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊंगा, पस मुझे (यूसुफ के पास) जाने दो। (43-45)

मिस्र का बादशाह अगरचे मुश्रिक और शराबी था, मगर ख़ुदा की तरफ से उसे मुस्तकबिल के बारे में एक सच्चा ख़्वाब दिखाया गया। इससे अंदाजा होता है कि ख़ुदा हक के दाजियों की मदद किन-किन तरीकों से करता है। उनमें से एक तरीका यह है कि फरीके सानी को कोई ऐसा ख़्वाब दिखाया जाए जिससे उसके जेहन पर दाजी की अज्मत और अहमियत कायम हो और उसका दिल नर्म होकर दाजी के लिए नए रास्ते खुल जाएं।

बादशाह के साकी ने जब बादशाह का ख़्वाब सुना उस वक्त उसे कैदख़ाने का माजरा याद आया। उसने बादशाह और दरबारियों के सामने अपना जाती तजर्बा बताया कि किस तरह यूसुफ की बताई हुई ख़्वाब की ताबीर दो कैदियों के हक में लफ्ज़ बलफ्ज़ सही साबित हुई। इसके बाद वह बादशाह से इजाजत लेकर कैदख़ाने पहुंचा ताकि यूसुफ से बादशाह के ख़्वाब की ताबीर दरयाफ्त करे।

हजरत यूसुफ की इसी हैसियत के तआरुफ से उनके लिए कैदख़ाने से बाहर आने का रास्ता खुला। ख़ुदा ऐसा कर सकता था कि साकी की रिहाई के बाद हजरत यूसुफ को मजीद कैदख़ाने में न रहने दे। वह साकी को महल के अंदर पहुंचते ही याद दिला सकता था कि वह

वादे के मुताबिक बादशाह के सामने यूसुफ का ज़िक्र करे। मगर ख़ुदा का हर काम अपने मुकर्रर वक्त पर होता है। वक्त से पहले कोई काम करना ख़ुदा का तरीका नहीं।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

यूसुफ ऐ सच्चे, मुझे इस ख़्वाब का मतलब बता कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात बालें हरी हैं और सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊं ताकि वे जान लें। यूसुफ ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे। पस जो फस्ल तुम काटो उसे उसकी बालियों में छोड़ दो मगर थोड़ा सा जो तुम खाओ। फिर इसके बाद सात सख़्त साल आएंगे। उस जमाने में वह ग़ल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक्त के लिए जमा करोगे, सिवाय थोड़े के जो तुम महफूज कर लोगे। फिर इसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर मेंह बरसेगा। और वे उसमें रस निचोड़ेंगे। (46-49)

हजरत यूसुफ ने बादशाह के ख़्वाब की ताबीर यह बताई कि सात मोटी गायें और सात हरी बालें सात वर्ष हैं। उनमें लगातार अच्छी पैदावार होगी। हैवानात और नबातात (खेती) ख़ूब बढ़ेंगे। इसके बाद सात साल कहत (अकाल) पड़ेगा जिसमें तुम सारा पिछला भंडार खाकर ख़त्म कर डालोगे। सिर्फ आइंदा बीज डालने के लिए थोड़ा सा बाकी रह जाएगा। ये बाद के सात साल गोया दुबली गायें और सूखी बालें हैं जो पिछली मोटी गायों और हरी बालों का ख़ात्मा कर देंगी।

इसी के साथ हजरत यूसुफ ने इसकी तदबीर (समाधान) भी बता दी। अपने कहा की पहले सात साल में जो पैदावार हो उसे निहायत हिफाजत से रखो और किफायत के साथ ख़र्च करो। जरूरी खुराक से ज्यादा जो ग़ल्ला है उसे बालों के अंदर रहने दो। इस तरह वह कीड़े वग़ैरह से महफूज रहेगा। और सात साल की पैदावार चौदह साल तक काम आएगी। मजीद आपने यह ख़ुशख़बरी भी सुना दी कि बाद के सात साल कहत के बाद जो साल आएगा वह दुबारा फ़रावानी (सम्पन्नता) का साल होगा। उसमें ख़ूब बारिश होगी, कसरत से दूध और फल लोगों को हासिल होंगे।

अल्लाह तआला ने बादशाह को एक अजीब ख़्वाब दिखाया और हजरत यूसुफ के जरिए उसकी कामयाब ताबीर जाहिर फरमाई। इस तरह आपके लिए यह मौका फराहम किया गया कि मिस्र के निजामे हुकूमत में आपको निहायत आला मकाम हासिल हो।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥١﴾

और बादशाह ने कहा कि उसे मेरे पास लाओ। फिर जब कासिद (संदेशवाहक) उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने आका के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। मेरा रब तो उनके फरेब से ख़ूब वाकिफ है। बादशाह ने पूछा, तुम्हारा क्या माजरा है जब तुमने यूसुफ को फुसलाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा कि पाक है अल्लाह, हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई। अजीज की बीवी ने कहा अब हक खुल गया। मैंने ही इसे फुसलाने की कोशिश की थी और बिलाशुबह वह सच्चा है। (50-51)

कैदख़ाने से निकल कर हजरत यूसुफ को एक मुल्की किरदार अदा करना था, इसलिए जरूरी था कि आपकी शख़्सियत मुल्की सतह पर एक मारूफ शख़्सियत बन जाए। इसकी सूरत बादशाह के ख़्वाब के जरिए पैदा हो गई। बादशाह ने एक अजीब ख़्वाब देखा। वह उसकी ताबीर के लिए इतना बेचैन हुआ कि आम एलान करके तमाम मुल्क के उलमा, ज्ञाताओं और दानिशवरों को अपने दरबार में जमा किया। और उनसे कहा कि वे इस ख़्वाब की ताबीर बताएं मगर सबके सब आजिज रहे। इस तरह ख़्वाब का वाक्या एक उमूमी शोहरत का वाक्या बन गया। अब जब हजरत यूसुफ ने ख़्वाब की ताबीर बयान की और बादशाह ने उसे पसंद किया तो अचानक वह तमाम मुल्क की नजरों में आ गए।

बादशाह ने सारी बात सुनने के बाद संबंधित औरतों से इसकी तहकीक की। सबने एक जबान हजरत यूसुफ को बेकुसूर करार दिया। अजीजेमिस्र की बीवी एतराफेहक मेंसबसे आगे निकल गई। उसने साफ लफ जोंमेंएलान किया कि अब सच्चाई खुल चुकी है। हकीकत यह है कि सारा कुसूर मेरा था। यूसुफ का कुछ भी कुसूर न था। अजीजेमिस्र की बीवी (जुलेख़ा) का यह इकरार इतना अजीम अमल है कि अजब नहीं कि इसके बाद उसे ईमान की तौफीक दे दी गई हो।

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ۝٥٢ وَمَا أُبَرِّئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝٥٣

यह इसलिए कि (अजीजे मिस्र) यह जान ले कि मैंने दरपर्दा उसकी ख़ियानत नहीं की। और बेशक अल्लाह ख़ियानत (विश्वासघात) करने वालों की चाल चलने नहीं देता। और मैं अपने नफ्स को बरी नहीं करता। नफ्स (मन) तो बदी ही सिखाता है मगर यह कि मेरा रब रहम फरमाए। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (52-53)

बादशाह ने जब हजरत यूसुफ को बुलाया तो वह फौरन कैदख़ाने से बाहर नहीं आ गए। बल्कि यह कहा कि पहले उस वाक्ये की तहकीक होनी चाहिए जिसे बहाना बनाकर मुझे कैद किया गया था। ख़ुदा की नजर में अगरचे आप पूरी तरह बरीउज्जिम्मा थे मगर मसला यह था कि आपको अवाम के दर्मियान पैग़म्बरी की ख़िदमत अंजाम देनी थी। यानी ख़ुदा की अमानते हिदायत को उसके बंदों तक पहुंचाना था। मज्कूरा वाक्ये में आप पर अपने आका के साथ ख़ियानत का इल्जाम लगाया गया था। यह एक बहुत नाजुक मामला था और अवाम के सामने आने से पहले जरूरी था कि आप के ऊपर से यह इल्जाम ख़त्म हो क्योंकि जिस शख़्स को लोग बंदों के मामले में अमानतदार न समझें उसे वे ख़ुदा के मामले में अमानतदार नहीं समझ सकते।

मोमिन बयकवक्त दो चीजों के दर्मियान होता है। एक इंसान दूसरे ख़ुदा। कभी ऐसा होता है कि उसे इंसानों की निस्बत से मामले की वजाहत के लिए कोई ऐसा कलिमा बोलना पड़ता है जिसमें बजाहिर दावे का पहलू नजर आता है। मगर उसका दिल उस वक्त भी इज्ज (निर्बलता) के एहसास से भरा हुआ होता है। क्योंकि जब वह अपने आपको खुदा की निस्बत से देखता है तो वह पाता है कि ख़ुदा की निस्बत से वह सिर्फ आजिज (निर्बल) है इसके सिवा और कुछ नहीं। ख़ुदा का तसव्वुर हर आन मोमिन को मुतवाजिन (संतुलित) करता रहता है। हजरत यूसुफ का मज्कूरा कलाम मोमिन की शख़्सियत के उसी दो गुना पहलू की तस्वीर है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝٥٤ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ۝٥٥ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝٥٦ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝٥٧

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूंगा। फिर जब

यूसुफ ने उससे बात की तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहां मुअज्जज और मोअतमद (विश्वसनीय) हुए। यूसुफ ने कहा मुझे मुल्क के ख़जानों पर मुकर्रर कर दो। मैं निगहबान हूं और जानने वाला हूं। और इस तरह हमने यूसुफ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया। वह उसमें जहां चाहे जगह बनाए। हम जिस पर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें। और हम नेकी करने वालों का अज्र जाए (नष्ट) नहीं करते। और आख़िरत का अज्र (प्रतिफल) कहीं ज्यादा बढ़कर है ईमान और तकवा (ईश-भय) वालों के लिए। (54-57)

'मुझे जमीन के ख़जानों पर मुकर्रर कर दो' यहां ख़जानों से मुराद गल्ले के खित्ते हैं। हजरत यूसुफ ने बादशाह को अपनी तरफ मुतवज्जह देखकर शाह मिस्र से यह इख़्तियार मांगा कि वह हुकूमती वसाइल के तहत सारे मुल्क में ग़ल्ले के बड़े-बड़े ख़ित्ते बनवाएं ताकि इब्तिदाई सात सालों में किसानों से फाजिल ग़ल्ला लेकर वहां महफूज किया जा सके। (तफ्सीर इब्ने कसीर)। बादशाह राजी हो गया और अपने आईनी (सवैधानिक) और कानूनी इक्तदार (शासन) के तहत आपको हर किस्म का इख़्तियार दे दिया।

मिस्र का बादशाह मुश्रिक था। आयत नम्बर 76 से मालूम होता है कि हजरत यूसुफ के तकर्रुर के तकरीबन दस साल बाद तक भी उसी बादशाह का कानून (दीनुल मुल्क) मिस्र में राइज था। यह ख़ुदा के एक पैग़म्बर का उसवा (आदर्श) है जो बताता है कि ग़ैर मुस्लिम हुकूमत के तहत कोई जेली ओहदा कुबूल करना इस्लाम के ख़िलाफ नहीं है। इसी बिना पर अस्लाफ (पूर्वजों) ने जालिम बादशाहों के तहत कजा (न्याय-विधान) के ओहदे कुबूल किए। (तफ्सीर नस्फी)

मिस्र में इख़्तियार संभालने से हजरत यूसुफ का मक्सद क्या था, कुरआन की तफ्सील से बजाहिर इसका मक्सद यह मालूम होता है कि बंदगाने ख़ुदा को तवील कहत (लंबे अकाल) की मुसीबत से बचाया जाए, और फिर इसके नतीजे में बनी इस्राईल के लिए मिस्र में आबाद होने के अवसर फराहम किए जाएं।

ईमान और तकवे की रविश इख़्तियार करने वालों के लिए ख़ुदा ने अबदी जन्नत का यकीनी वादा किया है। दुनिया की जिंदगी में भी उन्हें ख़ुदा की मदद हासिल होती है। ताहम इसमें एक फर्क है। जहां तक हक के एलान का मामला है, उसकी तौफीक हर एक को यकसां (समान) तौर पर मिलती है। मगर अमली मदद के मामले में सबकी नुसरत यकसां अंदाज में नहीं। अमली नुसरत (मदद) किसी को एक ढंग पर मिलती है और किसी को दूसरे ढंग पर।

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكِرُونَ ۝٥٨ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَكُمْ مِنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۝٥٩ فَإِنْ لَمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۝٦٠ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝٦١

और यूसुफ के भाई मिस्र आए फिर उसके पास पहुंचे, पस यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया। और उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना। तुम देखते नहीं हो कि मैं ग़ल्ला भी पूरा नाप कर देता हूं और बेहतरीन मेजबानी करने वाला भी हूं। और अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए ग़ल्ला है और न तुम मेरे पास आना। उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके बाप को राजी करने की कोशिश करेंगे और हमें यह काम करना है। (58-61)

हजरत यूसुफ के इक्तेदार के इब्तिदाई सात साल तक ख़ूब फ़स्ल पैदा हुई। आपने सारे मुल्क में बड़े-बड़े ख़ित्ते बनवाए और किसानों से उनका फाजिल ग़ल्ला ख़रीद कर हर साल इन ख़ित्तों में महफ़ूज़ करते रहे। इसके बाद जब कहत के साल शुरू हुए तो आपने उस ग़ल्ले को दारुस्सल्तनत (राजधानी) में मंगवा कर मुनासिब कीमत पर फरोख़्त करना शुरू कर दिया।

यह कहत चूंकि मिस्र के अलावा अतराफ़ के इलाक़ों (शाम, फ़िलिस्तीन, शर्कउर्दुन वग़ैरह) तक फैला हुआ था, इसलिए जब यह ख़बर मशहूर हुई कि मिस्र में ग़ल्ला सस्ती कीमत पर फरोख़्त हो रहा है तो बिरादराने यूसुफ भी ग़ल्ला लेने के लिए मिस्र आए। यहां हजरत यूसुफ को अगरचे उन्होंने बीस साल बाद देखा था, ताहम आपकी शक्ल व सूरत में उन्हें अपने भाई की झलक नजर आई। मगर जल्द ही उन्होंने इसे अपने दिल से निकाल दिया। क्योंकि उनकी समझ में नहीं आया कि जिस शख़्स को वे अंधे कुवें में डाल चुके हैं वह मिस्र के तख़्त पर मुतमक्किन हो सकता है। हजरत यूसुफ ने अपने भाइयों को एक-एक ऊंट प्रति व्यक्ति ग़ल्ला दिलवाया। अब उनके दिल में यह ख़्वाहिश हुई कि बिन यामीन के नाम पर एक ऊंट ग़ल्ला और हासिल करें। उन्होंने दरख़्वास्त की कि हमारे एक भाई (बिन यामीन) को बूढ़े बाप ने अपने पास रोक लिया है। अगर हमें उस भाई के हिस्से का ग़ल्ला भी दिया जाए तो बड़ी इनायत हो। हजरत यूसुफ ने कहा कि ग़ायब का हिस्सा देना हमारा तरीका नहीं। तुम दुबारा आओ तो अपने उस भाई को भी साथ लाओ। उस वक्त तुम उसका हिस्सा पा सकोगे। तुम मेरी बख़्शिश का हाल देख चुके हो। क्या इसके बाद भी तुम्हें अपने भाई को लाने में तरद्दुद (झिझक) है। हजरत यूसुफ ने मजीद कहा कि जो भाई तुम बता रहे हो अगर तुम अगली बार उसे न लाए तो समझा जाएगा कि तुम झूठ बोलते हो और महज धोखा देकर एक ऊंट ग़ल्ला और लेना चाहते थे। इसकी सजा यह होगी कि आइंदा ख़ुद तुम्हारे हिस्से का ग़ल्ला भी तुम्हें नहीं दिया जाएगा।

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ۭ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

और उसने अपने कारिंदों से कहा कि इनका माल इनके असबाब में रख दो ताकि जब वे अपने घर पहुंचें तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर आएं। फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा कि ऐ बाप, हमसे ग़ल्ला रोक दिया गया, पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ जाने दे कि हम ग़ल्ला लाएं और हम उसके निगहबान हैं। याकूब ने कहा, क्या मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करूं जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार कर चुका हूं। पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। (62-64)

हजरत यूसुफ ने ग़ालिबन भाइयों से कीमत लेना मुरव्वत के ख़िलाफ समझा या इस ख़्याल से कि माल की कमी उनके दुबारा यहां आने में रुकावट न बन जाए, अपने आदमियों को हिदायत की कि जो रक्म उन्होंने गल्ले की कीमत के तौर पर अदा की है वह ख़ामोशी से उनके माल में डाल दी जाए ताकि जब वे घर पर जाकर अपना सामान खोलें तो उसे पा लें और अपने भाई (बिन यामीन) को लेकर दुबारा यहां आएं।

हजरत याकूब ने एक तरफ बिन यामीन के सिलसिले में अपने बेटों पर बेएतमादी का इज़्हार किया दूसरी तरफ यह भी फरमाया कि तुम्हें या किसी और को कोई ताकत हासिल नहीं। होना वही है जो ख़ुदा चाहे। मगर यह होना इंसान के हाथों कराया जाता है ताकि जो बुरा है वह बुरा करके अपनी हकीकत को साबित करे। और जो अच्छा है वह अच्छा करके अपने आपको उस फेहरिस्त में लिखवाए जिसका वह मुस्तहिक है।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۭ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۭ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ۭ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰي مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उन्हें लौटा दी गई है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप और हमें क्या चाहिए। यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है। अब हम जाएंगे और अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के लिए रसद लाएंगे। और अपने भाई की हिफाज़त करेंगे। और एक ऊंट का बोझ गल्ला और ज्यादा लाएंगे। यह ग़ल्ला तो थोड़ा है। याकूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज न भेजूंगा जब तक तुम मुझसे ख़ुदा के नाम पर यह अहद न करो कि तुम इसे जरूर मेरे पास ले आओगे, इल्ला यह कि तुम सब घिर जाओ। फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का कौल (वादा) दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगहबान है। (65-66)

घर लौट कर जब उन्होंने देखा कि उनकी रकम उनकी ग़ल्ले की बोरी में मौजूद है तो वे बहुत ख़ुश हुए। उन्होंने अपने वालिद से कहा कि आप जरूर हमारे साथ बिन यामीन को जाने दें। हम उसकी पूरी हिफाजत करेंगे। और अपने हिस्से के अलावा उसके हिस्से का भी मजीद एक ऊंट गल्ला लाएंगे। यह ग़ल्ला जो हम लाए हैं यह तो इख़राजात के लिए थोड़ा है।

हज़रत यूसुफ ने तक्सीम का जो निजाम कायम किया था, उसके तहत ग़ालिबन ऐसा था कि बाहर के एक आदमी को एक ऊंट ग़ल्ला दिया जाता था।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

और याकूब ने कहा कि ऐ मेरे बेटो, तुम सब एक ही दरवाजे से दाख़िल न होना बल्कि अलग-अलग दरवाजों से दाख़िल होना। और मैं तुम्हें अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा सकता। हुक्म तो बस अल्लाह का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। और जब वे दाख़िल हुए जहां से उनके बाप ने उन्हें हिदायत की थी, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से। वह बस याकूब के दिल में एक ख़्याल था जो उसने पूरा किया। बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से इल्म वाला था मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (67-68)

मिस्र का कदीम दारुस्सल्तनत (राजधानी) एक ऐसा शहर था जिसके चारों तरफ ऊंची फसील थी और मुख़्तलिफ सम्तों में दाख़िले के लिए दरवाजे बने हुए थे। हजरत याकूब का अपने बेटों से यह कहना कि तुम लोग इकट्ठा होकर एक ही दरवाजे से दाख़िल न हो बल्कि विभिन्न दरवाजों से दाख़िल हो, इस अंदेशे की बिना पर था कि उनके दुश्मन उन्हें हलाक करने की कोशिश न करें।

इस अंदेशे का मामला इसी सूरह की आयत 73 से वाजेह है जिसमें बिरादराने यूसुफ अपनी बरा-त (असंबद्धता) इन अल्फाज में करते हैं कि हम यहां फसाद के लिए या चोरी के लिए नहीं आए हैं। बिरादराने यूसुफ मिस्र में बाहर से आए थे। उनके लिबास मकामी लोगों के लिबास से मुख़्तलिफ थे। वे अपने हुलिये से यकीनन मिस्र वालों को अजनबी दिखाई देते होंगे। ऐसे ग्यारह आदमियों का एक साथ शहर में दाख़िल होना उन्हें लोगों की नजर में मुशतबह बना सकता था। इसलिए मकामी लोगों से किसी ग़ैर जरूरी टकराव से बचने के लिए उन्होंने उन्हें यह हिदायत की कि शहर में दाख़िल हो तो एक साथ जत्थे की सूरत में दाख़िल न हो।

मोमिन की नजर एक तरफ ख़ुदा की कुदरते कामिला पर होती है। वह देखता है कि इस कायनात में ख़ुदा के सिवा किसी को कोई इख़्तियार हासिल नहीं। इसी के साथ वह जानता है कि यह दुनिया दारुल इम्तेहान है। यहां इम्तेहान की मस्लेहत से ख़ुदा ने हर मामले को जाहिरी असबाब के मातहत कर रखा है। यही वजह है कि हजरत याकूब ने एक तरफ अपने बेटों को दुनियावी तदबीर इख़्तियार करने की तल्कीन फरमाई। दूसरी तरफ यह भी फरमा दिया कि जो कुछ होगा ख़ुदा के हुक्म से होगा क्योंकि यहां ख़ुदा के सिवा किसी को कोई ताकत हासिल नहीं।

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝

और जब वे यूसुफ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूं। पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं। फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के असबाब में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ काफिले वालो, तुम लोग चोर हो। उन्होंने उनकी तरफ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारी क्या चीज खोई गई है। उन्होंने कहा, हम शाही पैमाना नहीं पा रहे हैं। और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट के बोझ भर ग़ल्ला है और मैं इसका जिम्मेदार हूं। उन्होंने कहा, ख़ुदा की कसम तुम्हें मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में फसाद करने के लिए नहीं आए और न हम कभी चोर थे। उन्होंने कहा अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सजा क्या है। उन्होंने कहा, इसकी सजा यह है कि जिस शख़्स के असबाब में मिले पस वही शख़्स अपनी सजा है। हम लोग जालिमों को ऐसी ही सजा दिया करते हैं। फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया। फिर उसके भाई के थेले से उसे बरामद कर लिया। इस तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की। वह बादशाह के कानून

की रू से अपने भाई को नहीं ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। और हर इल्म वाले के ऊपर एक इल्म वाला है। (69-76)

बिरादराने यूसुफ रवाना होने लगे तो हजरत यूसुफ ने अजराहे मुहब्बत अपना पानी पीने का प्याला (जो ग़ालिबन चांदी का था) अपने भाई बिन यामीन के सामान में रख दिया। इसकी ख़बर न बिन यामीन को थी और न दरबार वालों को। इसके बाद ख़ुदा की कुदरत से ऐसा हुआ कि ग़ल्ला नापने का शाही पैमाना (जो ख़ुद भी कीमती था) कहीं इधर-उधर (Misplace) हो गया। तलाश के बावजूद जब वह नहीं निकला तो कारिंदों का शुबह बिरादराने यूसुफ की तरफ गया जो अभी अभी यहां से रवाना हुए थे। एक कारिंदे ने आवाज देकर काफिले को बुलाया। पूछगछ के दौरान उन्होंने बतौर ख़ुद चोरी की वह सजा तज्वीज की जो शरीअते इब्राहीमी की रू से उनके यहां राइज थी। यानी जो चोर है वह एक साल तक मालिक के यहां ग़ुलाम बनकर रहे।

इसके बाद कारिंदे ने तलाशी शुरू की। अब ग़ल्ले का पैमाना तो उनके यहां नहीं मिला। मगर दरबार की एक और ख़ास चीज (चांदी का प्याला) बिन यामीन के सामान से बरामद हो गया। चुनांचे बिन यामीन को हस्बे फैसला हजरत यूसुफ के हवाले कर दिया गया। अगर शाहे मिस्र के कानून पर फैसले की करारदाद हुई होती तो हजरत यूसुफ अपने भाई को न पाते। क्योंकि शाहे मिस्र के मुरव्वजा कानून में चोर की सजा यह थी कि उसे मारा जाए और चुराई गई चीज की कीमत उससे वसूल की जाए। इस वाकये में हजरत यूसुफ की नियत शामिल न थी, यह ख़ुदाई तदबीर से हुआ इसलिए ख़ुदा ने उसे अपनी तरफ मंसूब फरमाया।

قَالُوٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

उन्होंने कहा कि अगर यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है। पस यूसुफ ने इस बात को अपने दिल में रखा। और इसे उन पर जाहिर नहीं किया। उसने अपने जी में कहा, तुम ख़ुद ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। उन्होंने कहा कि ऐ अजीज, इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है सो तू इसकी जगह हम में से किसी को रख ले। हम तुझे बहुत नेक देखते हैं। उसने कहा, अल्लाह की पनाह कि हम उसके सिवा किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपनी चीज पाई है। इस सूरत में हम जरूर जालिम ठहरेंगे। (77-79)

मुफस्सिरीन ने लिखा है कि हजरत यूसुफ की किसी नानी के यहां एक बुत था। हजरत यूसुफ अपने बचपन में उसे चुपके से उनके यहां से उठा लाए और उसे तोड़ डाला। इसी वाकये को बहाना बनाकर बिरादराने यूसुफ ने कहा कि 'इसका बड़ा भाई भी इससे पहले चोरी कर चुका है' एक वाकया जो आपकी ग़ैरते तौहीद को बता रहा था उसे महज एक जाहिरी मुशाबिहत (समरूपता) की वजह से उन्होंने चोरी के ख़ाने में डाल दिया।

बिरादराने यूसुफ का हाल यह था कि मिस्र के तख़्त पर बैठे हुए यूसुफ को तो वह अजीज (हुजूर, सरकार) कह रहे थे और उसके सामने ख़ूब तवाजोअ दिखा रहे थे। मगर कनआन का यूसुफ जो उनकी नजर में सिर्फ एक देहाती लड़का था, उसे ऐन उसी वक्त नाहक चोरी के इल्जाम में मुलव्विस कर रहे थे।

हजरत यूसुफ को इल्म था कि उनके रखे हुए प्याले की वजह से बिन यामीन ख़्वामख़्वाह चोर बन रहा है, मगर वक्ती मस्लेहत की बिना पर वह ख़ामोश रहे और वाकये को अपनी रफ्तार से चलने दिया जो भाइयों और शाही कारिंदे के दर्मियान हो रहा था। एक बार जब आपको बोलना पड़ा तो यह नहीं कहा कि 'जिसने हमारी चोरी की है' बल्कि यह फरमाया कि 'जिसके पास हमने अपना माल पाया है।'

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۚ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

जब वे उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग होकर बाहम मश्विरा करने लगे। उनके बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने अल्लाह के नाम पर पक्का इकरार लिया और इससे पहले यूसुफ के मामले में जो ज्यादती तुम कर चुके हो वह भी तुम्हें मालूम है। पस मैं इस सरजमीन से हरगिज नहीं टलूंगा जब तक मेरा बाप मुझे इजाजत न दे या अल्लाह मेरे लिए कोई फैसला फरमा दे। और वह सबसे बेहतर फैसला करने वाला है। तुम लोग अपने बाप के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप, तेरे बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमें मालूम हुई और हम ग़ैब (अप्रकट) के निगहबान नहीं और तू उस बस्ती के लोगों से पूछ ले जहां हम थे और उस काफिले से पूछ ले जिसके साथ हम आए हैं। और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (80-82)

हजरत यूसुफ के सौतेले भाइयों में ग़ालिबन एक भाई दूसरों से मुख़्तलिफ था। उसी भाई

ने इब्तदाई मरहले में मश्विरा दिया था कि यूसुफ को क़त्ल न करो बल्कि किसी अंधे कुवें में डाल दो ताकि कोई आता जाता काफिला उसे निकाल ले जाए। यही हाल अब उस भाई का मिस्र में हुआ। वह दूसरे भाइयों से अलग हो गया। उसकी ग़ैरत ने गवारा नहीं किया कि जिस बाप के नजदीक वह एक भाई को खोने का मुजरिम बन चुका है, उसी बाप के सामने अब वह दूसरे भाई को खोने का मुजरिम बनकर हाजिर हो।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَأُ تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُو بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ يَا بَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِن يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَيْأَسُوا مِن رَّوْحِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَيْأَسُ مِن رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾

बाप ने कहा, बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, पस मैं सब्र करूंगा। उम्मीद है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा। वह जानने वाला, हकीम (तत्वदर्शी) है। और उसने रुख़ फेर लिया और कहा, हाय यूसुफ, और ग़म से उसकी आंखे सफेद पड़ गईं। वह घुटा घुटा रहने लगा। उन्होंने कहा, ख़ुदा की कसम तू यूसुफ ही की याद में रहेगा। यहां तक कि घुल जाए या हलाक हो जाए। उसने कहा, मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म का शिकवा सिर्फ अल्लाह से करता हूं और मैं अल्लाह की तरफ से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। ऐ मेरे बेटो, जाओ यूसुफ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो। अल्लाह की रहमत से सिर्फ मुंकिर ही नाउम्मीद होते हैं। (83-87)

'तुमने बात बना ली है।' कह कर हजरत याक़ूब ने बिरादराने यूसुफ के दिल का खोट वाज़ेह किया। वे बाप के यहां से गए तो मुकम्मल हिफ़ाजत का वादा करके उसे साथ ले गए। और जब बिन यामीन के असबाब में से प्याला बरामद हुआ तो उसकी तरफ से इतनी मुदाफ़अत भी न कर सके कि यह कहते कि महज प्याला बरामद होने से वह चोर कैसे साबित हो गया। शायद किसी और ने रख दिया हो या किसी ग़लती से वह उसके असबाब के साथ बंध गया हो। इसके बरअक्स उन्होंने यह किया कि यह कह कर उसके जुर्म को मिस्रियों की नजर में और पुख़्ता कर दिया कि इसका भाई भी इससे पहले चोरी कर चुका है।

हज़रत याक़ूब अगरचे दो अज़ीज बेटों को खोने की वजह से बेहद ग़मज़दा थे। मगर इसी

के साथ वह ख़ुदा से उसकी रहमत की उम्मीद भी लगाए हुए थे। उनका अब भी यह ख़्याल था कि यूसुफ का इब्तिदाई जमाने का ख़्वाब एक ख़ुदाई बशारत था और वह जरूर पूरा होगा। इसीलिए उन्होंने बेटों से कहा कि जाओ यूसुफ को तलाश करो और बिन यामीन की रिहाई की भी कोशिश करो।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾ قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾

फिर जब वे यूसुफ के पास पहुंचे, उन्होंने कहा, ऐ अजीज, हमें और हमारे घर वालों को बड़ी तकलीफ पहुंच रही है और हम थोड़ी पूंजी लेकर आए हैं, तू हमें पूरा ग़ल्ला दे और हमें सदका भी दे। बेशक अल्लाह सदका करने वालों को उसका बदला देता है। उसने कहा, क्या तुम्हें ख़बर है कि तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया जबकि तुम्हें समझ न थी। उन्होंने कहा, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ हो। उसने कहा हां मैं यूसुफ हूं और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर फज़्ल फरमाया। जो शख़्स डरता है और सब्र करता है तो अल्लाह नेक काम करने वालों का अज्र (प्रतिफल) जाए (नष्ट) नहीं करता। (88-90)

'तकवा और सब्र करने वालों का अज्र ख़ुदा जाया नहीं करता' यही बात पूरे यूसुफ के किस्से का ख़ुलासा है। अल्लाह तआला को इसकी एक वाज़ेह मिसाल क़ायम करनी थी कि मामलाते दुनिया में जो शख़्स अल्लाह से डरने वाला तरीका इख़्तियार करे और बेसब्री वाले तरीकों से बचे, बिलआख़िर वह ख़ुदा की मदद से जरूर कामयाब होता है। हजरत यूसुफ के वाक़्ये को इसी हक़ीक़त की एक नजर आने वाली मिसाल बिना दिया गया।

मिस्र में इब्तिदाअन सात अच्छे साल और इसके बाद सात ख़राब साल दोनों ख़ुदा के इज़्न के तहत हुए। ख़ुदा चाहता तो तमाम सालों को अच्छे साल बना देता। इसी तरह हजरत यूसुफ का कुवें में डाला जाना और फिर उससे निकल कर मिस्र पहुंचना दोनों ख़ुदा की निगरानी में हुआ। ख़ुदा चाहता तो आपको कुवें के मरहले से गुजारे बग़ैर मिस्र के इक्तेदार तक पहुंचा देता। लेकिन अगर यह तमाम ग़ैर मामूली हालात पेश न आते तो असबाब की इस दुनिया में वह इस बात की मिसाल कैसे बनते कि ख़ुदा उन लोगों की मदद करता है जो ख़ुदा पर भरोसा करते हुए तकवे (ख़ुदा के डर) और सब्र की रविश पर क़ायम रहें।

वाकेयात दो किस्म के होते हैं। एक वह जिसके अंदर शोहरत का माद्दा हो। और दूसरा वह जिसके अंदर शोहरत का माद्दा न हो। दो वाकेयात नौइयत के एतबार से बिल्कुल यकसां

दर्जे के हो सकते हैं। मगर एक वाकया शोहरत पकड़ेगा और दूसरा गुमनाम होकर रह जाएगा। हजरत यूसुफ के साथ नुसरते ख़ुदावंदी का जो मामला हुआ वह दूसरे नेक लोगों और मोहसिनीन के साथ भी पेश आता है। मगर हजरत यूसुफ के वाकये की ख़ुसूसियत यह है कि इसमें शोहरत का माद्दा भी पूरी तरह मौजूद था। इसलिए वह बख़ूबी तौर पर लोगों की नजर में आ गया।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾

भाइयों ने कहा, ख़ुदा की कसम, अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फजीलत दी, और बेशक हम ग़लती पर थे। यूसुफ ने कहा, आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ करे और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, उसकी बीनाई (दृष्टि) पलट आएगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ। (91-93)

जब हकीकत खुल गई तो भाइयों ने हजरत यूसुफ की बड़ाई को तस्लीम करते हुए खुले तौर पर अपनी ग़लती का इकरार कर लिया। दूसरी तरफ हजरत यूसुफ ने भी उस आली जर्फी का सुबूत दिया जो एक सच्चे ख़ुदापरस्त को ऐसे मौके पर देना चाहिए। उन्होंने अपने भाइयों को कोई मलामत नहीं की। उन्होंने माजी के तल्ख़ वाकेयात को अचानक भुला दिया और भाइयों से दुबारा बिरादराना तअल्लुकात उस्तुवार कर लिए।

इस वाकये में इंफिरादी नुसरत (व्यक्तिगत मदद) के साथ इज्तिमाई नुसरत (सामूहिक मदद) की मिसाल भी मौजूद है। इसी के जरिए वे हालात पैदा हुए कि बनी इस्राईल फिलिस्तीन से निकल कर मिस्र पहुंचें और वहां इज्जत और ख़ुशहाली का मकाम हासिल करें। चुनांचे हजरत यूसुफ के जमाने में हजरत याकूब का ख़ानदान मिस्र मुंतकिल हो गया और तकरीबन पांच सौ साल तक वहां इज्जत के साथ रहा। बाइबल के बयान के मुताबिक सब ख़ानदान के अफराद जो इस मौके पर मिस्र गए उनकी तादाद 67 थी।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۖ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

और जब काफिला (मिस्र से) चला तो उसके बाप ने (कंआन में) कहा कि अगर तुम मुझे बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ की ख़ुशबू पा रहा हूं। लोगों ने कहा, ख़ुदा की कसम, तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़्याल में मुब्तला हो। पस जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया, उसने कुर्ता याकूब के चहरे पर डाल दिया, पस उसकी बीनाई (दृष्टि) लौट आई। उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिब से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। बिरादराने यूसुफ ने कहा, ऐ हमारे बाप, हमारे गुनाहों की माफी की दुआ कीजिए। बेशक हम ख़तावार थे। याकूब ने कहा, मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग्फिरत (क्षमा) की दुआ करूंगा। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (94-98)

हजरत यूसुफ अपने बाप से जुदा होकर 20 साल से ज्यादा मुद्दत तक पड़ोसी मुल्क मिस्र में रहे। मगर हजरत याकूब को इसका इल्म न हो सका। अलबत्ता आख़िरी वक्त में आपका लिबास मिस्र से चला तो आपको उसके पहुंचने से पहले उसकी ख़ुशबू महसूस होने लगी। इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बरों का इल्म उनका जाती इल्म नहीं होता बल्कि ख़ुदा का अतिया होता है। अगर जाती इल्म होता तो हजरत याकूब पहले ही जान लेते कि उनके साहबजादे मिस्र में हैं। मगर ऐसा नहीं हुआ। आप हजरत यूसुफ के बारे में सिर्फ उस वक्त मुत्तलअ हुए जबकि अल्लाह ने आपको उनकी ख़बर कर दी।

हजरत याकूब के साथ आपके ख़ानदान वालों की गुफ्तुगुएं जो इस सूरह में मुख़्तलिफ मकामात पर नक्ल हुई हैं उनसे अंदाजा होता है कि ख़ानदान वालों की नजर में हजरत याकूब को वह अज्मत हासिल न थी जो एक पैग़म्बर के लिए होनी चाहिए। वही लोग जो माजी के बुजुर्गों की परस्तिश कर रहे होते हैं वे जिंदा बुजुर्गों की अज्मत मानने के लिए तैयार नहीं होते। इसकी वजह यह है कि मुर्दा बुजुर्गों के गिर्द हमेशा मुबालग़ाआमेज (अतिरंजनापूर्ण) किस्सों और तिलिस्माती कहानियों का हाला बना दिया जाता है। इसकी वजह से लोगों के जेहन में 'बुजुर्ग' की एक मस्नूई (कृत्रिम) तस्वीर बैठ जाती है। चूंकि जिंदा बुजुर्ग उस मस्नूई तस्वीर के मुताबिक नहीं होता इसलिए वह लोगों को बुजुर्ग भी नजर नहीं आता।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۖ وَقَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِن قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ مِن بَعْدِ أَن نَّزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾

पस जब वे सब यूसुफ के पास पहुंचे तो उसने अपने वालिदैन को अपने पास बिठाया। और कहा कि मिस्र में इंशाअल्लाह अम्न चैन से रहो और उसने अपने वालिदैन को तख़्त

पर बिठाया और सब उसके लिए सज्दे में झुक गए। और यूसुफ ने कहा ऐ बाप, यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि उसने मुझे कैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहां लाया बाद इसके कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दर्मियान फसाद डाल दिया था। बेशक मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, वह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (99-100)

यहां तख़्त से मुराद तख़्ते शाही नहीं है बल्कि वह तख़्त है जिस पर हजरत यूसुफ अपने ओहदे की जिम्मेदारियों को अदा करने के लिए बैठते थे। सज्दे से मुराद भी मारूफ सज्दा नहीं बल्कि रुकूअ के अंदाज पर झुकना है। किसी बड़े की ताजीम के लिए इस अंदाज में झुकना क़दीम जमाने में बतौर मारूफ था।

'इन्न रब्बी लतीफुल लिमा यशा' का मतलब यह है कि मेरा रब जिस काम को करना चाहे उसके लिए वह निहायत छुपी राहें निकाल लेता है। ख़ुदा अपने मंसूबे की तक्मील के लिए ऐसी तदबीरें पैदा कर लेता है जिसकी तरफ आम इंसानों का गुमान भी नहीं जा सकता।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

ऐ मेरे रब, तूने मुझे हुकूमत में से हिस्सा दिया और मुझे बातों की ताबीर करना सिखाया। ऐ आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, तू मेरा कारसाज (कार्य-साधक) है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। मुझे फरमांबरदारी की हालत में वफात दे और मुझे नेक बंदों में शामिल फरमा। (101)

ग़ैर मोमिन हर चीज को इंसान के एतबार से देखता है और मोमिन हर चीज को ख़ुदा के एतबार से। हजरत यूसुफ को आला हुकूमती ओहदा मिला तो उसे भी उन्होंने ख़ुदा का अतिया करार दिया। उन्हें तावील और ताबीर (बातों की गहराई और अस्लियत का इल्म) का इल्म हासिल हुआ तो उन्होंने कहा कि यह मुझे ख़ुदा ने सिखाया है। उनके अपनों ने उन्हें मुसीबत में डाला तो उसे भी उन्होंने इस नजर से देखा कि यह ख़ुदा की लतीफ तदबीरें थीं जिनके जरिए वह मुझे इरतकाई (उत्थानगत) सफर करा रहा था।

ख़ुदा की अज्मत के एहसास ने उनसे जाती अज्मत के तमाम एहसासात छीन लिए थे। दुनियावी बुलन्दी की चोटी पर पहुंच कर भी उनकी जबान से जो अल्फाज निकले वे ये थे ख़ुदाया, तू ही तमाम ताकतों का मालिक है। तू ही मेरे सब काम बनाने वाला है। तू दुनिया और आख़िरत में मेरी मदद फरमा। मुझे उन लोगों में शामिल फरमा जो दुनिया में तेरी पसंद पर चलने की तौफीक पाते हैं और आख़िरत में तेरा अबदी इनाम हासिल करते हैं।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْـَٔــلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

यह गैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं और तुम उस वक्त उनके पास मौजूद न थे जब यूसुफ के भाइयों ने अपनी राय पुख़्ता की और वे तदबीरें कर रहे थे और तुम चाहे कितना ही चाहो, अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और तुम इस पर उनसे काई मुआवजा (बदला) नहीं मांगते। यह तो सिर्फ एक नसीहत है तमाम जहान वालों के लिए। (102-104)

हजरत यूसुफ का किस्सा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जबान पर जारी हुआ वह बजाए ख़ुद इस बात का सुबूत है कि कुरआन रब्बानी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है न कि इंसानी कलाम। यह वाक्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तकरीबन ढाई हजार साल पहले पेश आया। आपने इस वाकये को न तो बतौर ख़ुद देखा था और न वह किसी तारीख़ में लिखा हुआ था कि आप उसे पढ़ें या किसी से पढ़वा कर सुनें। वह सिर्फ तौरात के सफ्हात में था। और प्रेस के दौर से पहले तौरात एक ऐसी किताब थी जिसकी वाकफियत सिर्फ यहूदी मराकिज (केन्द्रों) के चन्द यहूदी उलेमा को होती थी, और किसी को नहीं।

मजीद यह कि कुरआन में इस वाकये को जिस तरह बयान किया गया है, बुनियादी तौर पर तौरात के मुताबिक होने के बावजूद, तफ्सीलात में वह उससे काफी मुख़्तलिफ है। यह इख़्तेलाफ बजाते ख़ुद कुरआन के इलाही 'वही' होने का सुबूत है। क्योंकि जहां-जहां दोनों में इख़्तेलाफ (भिन्नता) है वहां कुरआन का बयान वाजेह तौर अक्ल व फितरत के मुताबिक मालूम होता है। कुरआन का बयान पढ़कर वाकई यह समझ में आता है कि वह हजरत याकूब और हजरत यूसुफ की पैगम्बराना सीरत के मुनासिब है जबकि तौरात के बयानात पैगम्बराना सीरत के मुनासिबे हाल नहीं। इसी तरह वाकये के कई बेहद कीमती अज्जा (मसलन कैदख़ाने में हजरत यूसुफ की तकरीर, आयत 37-40) जो कुरआन में मंकूल हुई है। बाइबल या तलमूद में इसका कोई जिक्र नहीं। यहां तक कि कुछ तारीख़ी ग़लतियां जो बाइबल में मौजूद हैं उनका इआदा (पुनः उल्लेख) कुरआन में नहीं हुआ है। मिसाल के तौर पर बाइबल हजरत यूसुफ के जमाने के बादशाह को फिरऔन कहती है। हालांकि फिरऔन का ख़ानदान हजरत यूसुफ के पांच सौ साल बाद मिस्र में हुक्मरां बना है। हजरत यूसुफ के जमाने में मिस्र में एक अरब ख़ानदान हुकूमत कर रहा था जिसे चरवाहे बादशाह (Hyksos Kings) कहा जाता है। (तकाबुल के लिए मुलाहिजा हो, बाइबल, किताब पैदाइश)

हक को न मानने का सबब अगर दलील हो तो दलील सामने अपने के बाद आदमी फौरन उसे मान लेगा। मगर अक्सर हालात में इंकारे हक का सबब हठधर्मी होता है। ऐसे लोग हक को इसलिए नहीं मानते कि वह उसे मानना नहीं चाहते। हक को मानना अक्सर

हालात में अपने को छोटा करने के हममअना होता है, और अपने को छोटा करना आदमी के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल काम है। यही वजह है कि इस क़िस्म के लोग हर क़िस्म के दलाइल और क़राइन (संकेत) सामने आने के बाद भी अपनी रविश को नहीं छोड़ते। वे इसे गवारा कर लेते हैं कि हक़ छोटा हो जाए मगर वे अपने आपको छोटा करने पर राज़ी नहीं होते। वे भूल जाते हैं कि जो दुनिया में अपने आपको छोटा कर ले वह आख़िरत में बड़ा किया जाएगा। और जो शख़्स दुनिया में अपने को छोटा न करे वही वह शख़्स है जो आइंदा आने वाली दुनिया में हमेशा के लिए छोटा होकर रह जाएगा।

وَكَأَيِّن مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ۝١٠٥ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِاللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشْرِكُونَ ۝١٠٦ أَفَأَمِنُوا أَن تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝١٠٧ قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝١٠٨

और आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उनका गुज़र होता रहता है और वे उन पर ध्यान नहीं करते। और अक्सर लोग जो ख़ुदा को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी ठहराते हैं। क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उन पर अज़ाबे इलाही की कोई आफ़त आ पड़े या अचानक उन पर क़ियामत आ जाए और वे इससे बेख़बर हों। कहो यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं समझ-बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है। और अल्लाह पाक है और मैं मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में से नहीं हूं। (105-108)

हक़ के ज़ुहूर के बाद जो लोग उसे न मानें वे अपने इंकार को हमेशा इस रंग में पेश करते हैं कि जो दलील मत्लूब थी वह दलील हक़ की तरफ़ से उनके सामने नहीं आई। अगर ऐसी दलील होती तो वे उसे ज़रूर मान लेते। गोया उनके एराज़ (उपेक्षा) या इंकार का सबब उनके बाहर है न कि उनके अंदर।

मगर हक़ीक़ते हाल इसके बरअक्स है। हक़ इतना वाज़ेह है कि जब वह ज़ाहिर होता है तो ज़मीन व आसमान की तमाम निशानियां उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करती हैं। वह सारी कायनात में सबसे ज़्यादा साबितशुदा चीज़ होता है। मगर हक़ को पाने के लिए अस्ल ज़रूरत देखने वाली आंख और इबरत (सीख) पकड़ने वाले दिमाग़ की है। और यही चीज़ मुंकिरीन के यहां मौजूद नहीं होती।

हक़ के मुक़ाबले में आदमी जब सरकशी दिखाता है तो अक्सर हालात में इसकी वजह 'शिर्क' होता है। बेशतर लोगों का हाल यह है कि ख़ुदा को मानते हुए उन्होंने कुछ और ज़िंदा या मुर्दा हस्तियां फ़र्ज़ कर रखी हैं जिन पर वे अपना एतमाद क़ायम किए हुए हैं जिनको वे

बड़ाई का मक़ाम देते हैं। इस तरह हर एक ने ख़ुदा के सिवा कुछ 'बड़े' बना रखे हैं। वे उन्हीं बड़ों के भरोसे पर जी रहे हैं। हालांकि ख़ुदा के यहां सब छोटे हैं। वहां किसी को जो चीज़ बचाएगी वह उसका ज़ाती अमल है न कि काल्पनिक बड़ों की बड़ाई।

पैग़म्बर का काम एक अल्लाह की तरफ़ बुलाना है। यही उसका मिशन है। इस मिशन को उसने बसीरत के तौर पर इख़्तियार किया है न कि तक़्लीद के तौर पर। गोया पैग़म्बराना दावत (आह्वान) वह दावत है जो इंसान को एक ख़ुदा से जोड़ने की दावत हो और जिसकी सदाक़त (सत्यता) दाओ के ऊपर इतनी खुल चुकी हो कि वह उसके लिए बसीरत और मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) बन जाए। इसी तरह पैग़म्बर के पैरोकार वे लोग हैं जो हक़ को बसीरत (सूझबूझ) की सतह पर पाएं और तौहीद की सतह पर उसका एलान करें।

आदमी अपने वक़्ती इत्मीनान को मुस्तक़िल इत्मीनान समझ लेता है। हालांकि किसी के पास इस बात की ज़मानत नहीं कि उसकी मोहलते उम्र कब तक है। कोई नहीं जानता कि कब मौत आकर उसके तमाम मज़ऊमात (दंभों) को बातिल कर देगी। कब क़ियामत का ज़लज़ला उसकी बनी बनाई दुनिया को उलट-पलट कर देगा। आदमी अपने आपको यक़ीनी अंजाम की दुनिया में समझता है। हालांकि वह हर लम्हा एक ग़ैर यक़ीनी अंजाम के कनारे खड़ा हुआ है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝١٠٩ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَن نَّشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝١١٠

और हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे। हम उनकी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) करते थे। क्या ये लोग ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे और आख़िरत (परलोक) का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं। यहां तक कि जब पैग़म्बर मायूस हो गए और वे ख़्याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उन्हें हमारी मदद आ पहुंची। पस नजात (मुक्ति) मिली जिसे हमने चाहा और मुजरिम लोगों से हमारा अज़ाब टाला नहीं जा सकता। (109-110)

तारीख़ बताती है कि जो लोग रिसालत और पैग़म्बरी को मानते थे वे भी उस वक़्त इसके मुंकिर हो गए, जबकि ख़ुद अपनी क़ौम के अंदर से एक शख़्स पैग़म्बर होकर उनके सामने खड़ा हुआ। इसकी वजह यह थी कि माज़ी का पैग़म्बर तारीख़ी तौर पर साबितशुदा पैग़म्बर बन चुका होता है, जबकि हाल का पैग़म्बर एक निज़ाई (विवादित) शख़्सियत होता

है। तारीख़ी पैग़म्बर को मानना हमेशा इंसान के लिए आसानतरीन काम रहा है और निजाई पैग़म्बर को मानना हमेशा उसके लिए मुश्किलतरीन काम।

आद और समूद और मदयन और कौमे लूत वग़ैरह की तबाहशुदा बस्तियां क़ुरैश के आस पास के इलाकों में मौजूद थीं। वे अपने सफरों के दौरान उन्हें देखते थे। ये आसार जबाने हाल से कह रहे थे कि पैग़म्बर को निजाई दौर में न पहचानने ही की वजह से इन कौमों पर ख़ुदा का अजाब आया और वे हलाक कर दी गईं। इसके बावजूद क़ुरैश ने उनसे सबक नहीं लिया। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि वह एक ग़लत काम करता है मगर कुछ खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) ख़्यालात की बिना पर अपने आपको ग़लतकारों की फेहरिस्त से अलग कर लेता है।

सूरह यूसुफ की आयत 110 की तशरीह सूरह बकरह की आयत 214 से हो रही है जिसमें इरशाद हुआ है 'क्या तुम ख़्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल कर दिए जाओगे। हालांकि तुम पर अभी वह हालात गुजरे ही नहीं जो तुमसे पहले वालों पर गुजरे थे। उन्हें सख़्ती और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उसके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि ख़ुदा की मदद कब आएगी। जान लो, ख़ुदा की मदद करीब है।'

खुदा हमेशा दाऊी (आह्वानकर्ता) की मदद करता है। मगर यह मदद मदऊ के ख़िलाफ दाऊी के हक में ख़ुदा का फैसला होता है, इसीलिए यह मदद हमेशा उस वक्त आती है जबकि दावती जद्दोजहद अपनी तक्मील के आख़िरी मरहले में पहुंच चुकी हो, चाहे इस ताख़ीर की वजह से दावत देने वालों पर मायूसी के एहसासात तारी होने लगें।

'और आख़िरत का घर मुत्तकियों के लिए ज्यादा बेहतर है' इससे मालूम हुआ कि दुनिया में अहले ईमान के साथ जो सुलूक किया जाता है वह आख़िरत में उनके साथ किए जाने वाले सुलूक की अलामत होता है।

दुनिया में ख़ुदा हक के दाऊियों की इस तरह मदद करता है कि उनकी बात तमाम दूसरी बातों पर बुलन्द व बाला साबित होती है। वे अपने दुश्मनों की तमाम साजिशों और मुख़ालिफतों के बावजूद अपना मिशन पूरा करने में कामयाब साबित होते हैं। यही इज्जत और सरबुलन्दी उन्हें आख़िरत में ज्यादा कामिल और मेयारी सूरत में हासिल होगी।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

उनके किस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (सीख) है। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं, बल्कि तस्दीक (पुष्टि) है उस चीज की जो इससे पहले मौजूद है। और तफ्सील है हर चीज की। और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। (111)

पिछले पैग़म्बरों और उनकी कौमों की कहानी इबरत के एतबार से तमाम इंसानों की कहानी है। अगर आदमी अक्ल से काम ले तो वह माजी (अतीत) के वाक्ये में हाल की

नसीहत पा लेगा। दूसरों के अंजाम को देखकर वह अपने अहवाल को दुरुस्त कर लेगा।

कुरआन किसी इंसान की गढ़ी हुई किताब नहीं, वह ख़ुदा की तरफ से उतरी हुई किताब है। वह ऐन उस पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के मुताबिक आई है जो पिछली आसमानी किताबों में की गई थीं। इसमें हिदायत से मुतअल्लिक हर जरूरी चीज का बयान मौजूद है। वह अपने आग़ाज के एतबार से इंसानों के लिए रहनुमाई है और अपने अंजाम के एतबार से उनके लिए रहमत।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الٓمٓر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ ۗ وَالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُم بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾

आयतें-43 सूरह-13. अर-रअ़्द रुकूअ-6

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम० रा०। ये किताबे इलाही की आयतें हैं। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है वह हक (सत्य) है। मगर अक्सर लोग नहीं मानते। अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलन्द किया बग़ैर ऐसे सुतून (स्तंभ) के जो तुम्हें नजर आएं। फिर वह अपने तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ और उसने सूरज और चांद को एक क़ानून का पाबंद बनाया, हर एक एक मुकर्रर वक्त पर चलता है। अल्लाह ही हर काम का इंतिजाम करता है। वह निशानियों को खोल खोल कर बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन करो। (1-2)

कुरआन एक ख़ुदा को मानने की दावत देता है। जो लोग ख़ुदा को नहीं मानते उनकी सबसे बड़ी दलील यह होती है कि ख़ुदा अगर है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता। मगर हमारी मालूम कायनात बताती है कि किसी चीज का दिखाई न देना इस बात का सुबूत नहीं है कि उसका कोई वजूद भी नहीं। इसकी एक मिसाल कुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) है। ख़ला में बेशुमार अलग-अलग सितारे और सय्यारे (ग्रह) हैं। इंसानी इल्म कहता है कि इन अजरामे समावी (आकाशीय पिंडों) के दर्मियान एक ग़ैर मरई (अदृश्य) कुव्वते कशिश है जो वसीअ ख़ला (विशाल अंतरिक्ष) में उन्हें संभाले हुए है। फिर इंसान जब ग़ैर मरई होने के बावजूद कुव्वते कशिश की मौजूदगी का इकरार कर रहा है तो ग़ैर मरई होने की वजह से ख़ुदा के वजूद का इंकार करने में वह क्योंकर हक बजानिब होगा।

यही मामला 'वही' (ईश्वरीय वाणी) व रिसालत का है। कायनात का तालिबे इल्म जब

कायनात का मुतालआ करता है तो वह पाता है कि यहां हर चीज एक निजाम की पाबंद है। ऐसा मालूम होता है कि तमाम चीजें किसी ख़ास हुक्म में जकड़ी हुई हैं। यह 'हुक्म' ख़ुद इन चीजों के अंदर मौजूद नहीं है। यकीनन वह ख़ारिज (बाहर) से आता है। गोया तमाम दुनिया अपने अमल के लिए 'ख़ारिज' से हिदायात ले रही है। इंसान के अलावा बकिया दुनिया में इस ख़ारजी (वाह्य) हिदायत का नाम कानूने फ़ितरत है, और इंसान की दुनिया में इसका नाम 'वही' व इल्हाम। 'वही' दरअस्ल इसी ख़ारजी रहनुमाई की इंसानी दुनिया तक तौसीअ (विस्तार) है जिसे बकिया दुनिया में कानूने फ़ितरत कहा जाता है।

कायनात गोया एक मशीन है और कुरआन उसकी गाइड बुक। कायनात ख़ुदा की तदबीरे अम्र (कार्य-प्रणाली) की मिसाल है और कुरआन ख़ुदा की तफ़्सीले आयात (निशानियों की व्याख्या) की मिसाल। इन दोनों के दर्मियान कामिल मुताबिकत (अुकूलता) है। जो कुछ कायनात में अमलन नजर आता है वह क़ुरआन में लफ्जी तौर पर मौजूद है। यह मुताबिक्त बयकवक्त दो बातें साबित करती है। एक यह कि इस कायनात का एक ख़ालिक है। और दूसरे यह कि कुरआन उसी ख़ालिक की किताब है न कि महदूद (सीमित) इंसानी दिमाग़ की तख़्लीक (रचना)।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾

और वही है जिसने जमीन को फैलाया। और उसमें पहाड़ और नदियां रख दीं और हर किस्म के फलों के जोड़े इसमें पैदा किए। वह रात को दिन पर उढ़ा देता है। बेशक इन चीजों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें। (3)

आसमान की निशानियों के बाद जब जमीन की हालत पर ग़ौर किया जाए तो वह इंसान की रिहाइश के लिए इंतिहाई बामअना तौर पर मौजूं (उपयुक्त) नजर आती है।

जमीन एक कुदरती फ़र्श की मानिंद आदमी के क़दमों के नीचे फैली हुई है। इसमें एक तरफ इंसान की जरूरत के लिए समुद्र की गहराइयां हैं तो दूसरी तरफ पहाड़ों की बुलन्दियां भी हैं ताकि दोनों मिलकर जमीन का तवाजुन (संतुलन) बरकरार रखें। दरख़्त एक दूसरे से अलग-अलग भी हो सकते थे मगर इनमें जोड़े हैं जिनके दर्मियान तजवीज (निषेचन) के अमल से दाने और फल पैदा होते हैं। जमीन का यह हाल है कि सूरज के चारों तरफ अपनी सालाना दौर वाली गर्दिश के साथ अपने महवर (धुरी) पर भी मुसलसल गर्दिश करती है जिसका दौर 24 घंटे में पूरा होता है और जिससे रात और दिन पैदा होते हैं।

इस किस्म की निशानियों पर जो शख़्स भी संजीदगी से ग़ौर करेगा वह यह मानने पर मजबूर होगा कि यह दुनिया एक बाइख़्तियार मालिक के तहत है और उसने अपने इरादे के तहत उसकी एक बामक्सद मंसूबाबंदी कर रखी है। बाशुऊर मंसूबाबंदी के बग़ैर जमीन पर यह मअनवियत (अर्थपूर्णता) हरगिज मुमकिन न थी।

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۫ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾

और जमीन में पास-पास मुख़्तलिफ कितओ (भू-भाग) हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे। सब एक ही पानी से सैराब होते हैं। और हम एक को दूसरे पर पैदावार में फौकियत (श्रेष्ठता) देते हैं बेशक इनमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें। (4)

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फ़रमाया कि कोई अच्छी जमीन है और कोई बंजर जमीन। एक उगती है और उसी के पास दूसरी नहीं उगती। मुजाहिद ने कहा कि यही मामला बनी आदम (मानव-जाति) का है। उनमें अच्छे भी हैं और बुरे भी, हालांकि सबकी अस्ल एक है। हसन बसरी ने कहा कि यह एक मिसाल है जो अल्लाह ने बनी आदम के दिलों के लिए दी है।

जमीन में एक अजीब निशानी यह है कि एक ही मिट्टी है। एक ही पानी से उसे सैराब किया जाता है मगर एक जगह से एक दरख़्त निकलता है और उसी के पास दूसरी जगह से दूसरा दरख़्त। एक में मीठा फल है और दूसरे में खट्टा फल। कोई ज्यादा पैदावार देता है और कोई कम पैदावार।

यह इंसानी वाकये की जमीनी तमसील (उपमा) है। इससे मालूम होता है कि अगरचे तमाम इंसान बजाहिर यकसां (समान) हैं और उन सबके पास एक ही हिदायत आती है। मगर हिदायत से इस्तिफ़ादे के मामले में एक इंसान और दूसरे इंसान में बहुत ज्यादा फ़र्क़ हो जाता है। कोई इससे रहनुमाई हासिल करता है और कोई इसका मुंकिर बन जाता है। कोई थोड़ी हिदायत लेता है और किसी की जिंदगी हिदायत से मालामाल हो जाती है। गोया जैसी जमीन वैसी पैदावार का उसूल यहां भी है और वहां भी।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۵﴾

और अगर तुम तअज्जुब करो तो तअज्जुब के काबिल उनका यह कौल है कि जब वे मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इंकार किया और ये वे लोग हैं जिनकी गर्दनों में तौक पड़े हुए हैं वे आग वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5)

दूसरी जिंदगी के मुंकिरीन का केस निहायत अजीब है। वे जिस वाकये के जुहूर को एक बार मान रहे हैं उसी वाकये के दुबारा जुहूर का इंकार कर देते हैं।

जो लोग दूसरी जिंदगी के वुकूअ (घटित होने) को नहीं मानते वे दूसरी जिंदगी का अकीदा रखने वालों पर हैरानी का इज़्हार करते हैं। उनका ख़्याल यह होता है कि दूसरी जिंदगी को मानना एक ग़ैर इल्मी (अबौद्धिक) बात को मानना है। मगर हकीकत यह है कि सूरतेहाल इसके बिल्कुल बरअक्स है। क्योंकि कोई मुंकिर जिस चीज का इंकार कर सकता है, वह सिर्फ दूसरी जिंदगी है। जहां तक पहली जिंदगी का तअल्लुक है उसका इंकार करना किसी शख़्स के लिए मुमकिन नहीं। क्योंकि वह तो एक जिंदा वाकये के तौर पर हर आदमी के सामने मौजूद है। फिर जब पहली जिंदगी का वजूद में आना मुमकिन है तो दूसरी जिंदगी का वजूद में आना नामुमकिन क्यों हो।

ऐसे लोग हमेशा बहुत कम पाए गए हैं जो ख़ुदा के मुंकिर हों। बेशतर लोगों का हाल यह है कि वे एक ख़ालिक को मानते हैं मगर वे आख़िरत (परलोक) को नहीं मानते। मगर आख़िरत के इंकार के बाद ख़ालिक के इकरार की कोई कीमत बाकी नहीं रहती। ख़ुदा इस कायनात का ख़ालिक ही नहीं वह बजाते ख़ुद हक (सत्य) भी है। ख़ुदा का सरापा हक और अद्ल (न्याय) होना लाजिमी तौर पर तकाजा करता है कि वह जो कुछ करे हक और अद्ल के मुताबिक करे। आख़िरत दरअस्ल ख़ुदा की सिफ्ते अद्ल का जुहूर है। ख़ुदा को मानना वही मानना है जबकि उसके साथ आख़िरत को भी माना जाए। आख़िरत को माने बग़ैर ख़ुदा का अकीदा मुकम्मल नहीं होता।

जो लोग हक के सीधे और सच्चे पैग़ाम को नहीं मानते इसकी वजह अक्सर यह होती है कि वे जुमूद (जड़ता), तअस्सुब (विद्वेष) अनानियत (अहंकार) के शिकार होते हैं। उनसे बात कीजिए तो ऐसा मालूम होगा कि वे ख़ुद अपने ख़्यालात के कैदी बने हुए हैं। इससे निकल कर वे आजादाना तौर पर किसी ख़ारजी (वाह्य) हकीकत पर ग़ौर नहीं कर सकते। इसी हालत को 'गर्दन में तौक पड़ना' फरमाया। क्योंकि गर्दन में तौक होना गुलामी की अलामत है। गोया कि ये लोग ख़ुद अपने ख़्यालात के गुलाम हैं। जो इस तरह अपने आपको दुनिया में कैदी बना लें, आख़िरत में भी उनके हिस्से में कैद ही आएगी।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

वे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं। हालांकि उनसे पहले मिसालें गुजर चुकी हैं और तुम्हारा रब लोगों के जुल्म के बावजूद उन्हें माफ करने वाला है। और बेशक तुम्हारा रब सख़्त सजा देने वाला है। (6)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के लोगों से कहते थे कि ख़ुदा की हिदायत को मानो वर्ना तुम ख़ुदा की पकड़ में आ जाओगे। इसके जवाब में उन्होंने कहा 'ख़ुदाया, मुहम्मद जो कुछ पेश कर रहे हैं अगर वह हक है तो तू हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा' यह दुआ बजाहिर ख़ुदा से थी मगर हकीकतन इसका रुख़ रसूल की तरफ था।

आप उस वक्त मक्का के लोगों को बिल्कुल बेवजन मालूम होते थे। उन्हें यकीन नहीं आता था कि ऐसे मामूली आदमी के इंकार पर ख़ुदा हमें सजा देगा। 'मुहम्मद' के इंकार पर अजाब आना उन्हें इतना असंभावी नजर आता था कि वे बतौर मजाक कहते थे कि तुम जिस ख़ुदाई अजाब की धमकी दे रहे हो हम चाहते हैं कि वह हमारे ऊपर आ जाए।

फरमाया कि तुम्हारे इंकारे हक के सबब से तुम्हारे ऊपर ख़ुदा का अजाब तो आने ही वाला है। यह सिर्फ तुम्हारी बदबख़्ती है कि तुम उसे जल्द बुलाना चाहते हो। हालांकि तुम्हें चाहिए था कि इस वक्फे (अंतराल) को दावते कुरआन पर ग़ौर व फिक्र और उसकी कबूलियत में इस्तेमाल करो न कि अजाब को वक्त से पहले बुलाने में।

लोग चाहते हैं कि ख़ुदा के अजाब को अपनी आंखों से देख लें फिर उसे मानें। मगर यह सिर्फ अंधेपन का मुतालबा है। अगर उनके पास आंखें हों तो जो कुछ दूसरों के साथ पेश आया वही उनके सबक के लिए काफी है। इनसे पहले कितनी कौमें गुजर चुकी हैं जिन्होंने इन्हीं की तरह अपने जमाने के पैग़म्बरों को झुठलाया और बिलआख़िर उन्हें उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

ख़ुदा का कानून यह है कि वह इंसान को अमल की मोहलत देता है। यही कानूने मोहलत है जिसने लोगों को सरकश बना रखा है। मगर मोहलत की एक हद है। इस हद के बाद जो चीज उनका इंतिजार कर रही है वह सिर्फ दर्दनाक अजाब है जिससे वे अपने आपको बचा न सकेंगे।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। तुम तो सिर्फ ख़बरदार कर देने वाले हो। और हर कौम के लिए एक राह बताने वाला है। (7)

आज सारी दुनिया में एक अरब से भी ज्यादा इंसान मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ख़ुदा का रसूल मानते हैं। मगर आपकी जिंदगी में मक्का वालों की समझ में न आ सका कि आपको ख़ुदा ने अपना रसूल बनाया है। इसकी वजह यह थी कि अपनी तारीख़ के इब्तिदाई दौर में आपकी नुबुव्वत एक निजाई (Controversial) नुबुव्वत थी। मगर अब अपनी तारीख़ के इंतिहाई दौर में आपकी नुबुव्वत एक साबितशुदा (Established) नुबुव्वत बन चुकी है। निजाई (विवादपूर्ण) दौर में पैग़म्बर को पहचानना जितना मुश्किल है, इस्बाती (सुस्थापित) दौर में उसे पहचानना उतना ही आसान हो जाता है।

मक्का के लोगों के पास जो पैमाना था वह दौलत, इक्तेदार (सत्ता) और अवाम में मकबूलियत का पैमाना था। इस एतबार से आप उन्हें ग़ैर मामूली नजर न आते थे। इसलिए उन्होंने चाहा कि आपके साथ कोई ग़ैर मामूली निशानी हो जो उनके लिए आपके पैग़म्बर होने का कतई सुबूत बन जाए। इसके जवाब में फरमाया गया कि ये लोग ऐसी चीज मांग रहे हैं जो ख़ुदाई मंसूबे के मुताबिक नहीं, इसलिए वे किसी को मिलने वाली भी नहीं।

मौजूदा दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां हिदायत ऐसी सरीह निशानियों के साथ नहीं आ सकती कि उसके बाद आदमी के लिए शुबह की गुंजाइश बाकी न रहे। क्योंकि ऐसी हालत में इम्तेहान की मस्लेहत फौत हो जाती है। यहां बहरहाल यही होगा कि आदमी को 'ख़बर' की सतह पर जांच कर उसका यकीन करना पड़ेगा। जो शख़्स इस इम्तेहान में पूरा न उतरे, उसके हिस्से में हिदायत भी कभी नहीं आ सकती।

ख़ुदा हर कौम में उसके अपने अंदर के एक आदमी को खड़ा करता है ताकि वह उसकी मानूस जबान में उसे ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दे। यह इंतिजाम कौमों की आसानी के लिए था। मगर अक्सर ऐसा हुआ कि कौमों ने इससे उल्टा असर लेकर ख़ुदा के पैग़म्बरों का इंकार कर दिया। उनकी निगाहें पैग़ामरसां (संदेशवाहक) के मामूलीपन पर अटक कर रह गईं, वे पैग़ाम के ग़ैर मामूलीपन को न देख सकीं।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَاۗءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝

अल्लाह जानता है हर मादा के हमल (गर्भ) को। और जो कुछ रहमों में घटता या बढ़ता है उसे भी। और हर चीज का उसके यहां एक अंदाजा है। वह पोशीदा और जाहिर को जानने वाला है, सबसे बड़ा है, सबसे बरतर। तुम में से कोई शख़्स चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छुपा हुआ हो। और दिन में चल रहा हो, ख़ुदा के लिए सब यकसां (समान) हैं। (8-10)

मां का पेट एक हैरतअंगेज फैक्टरी है। इस ख़ुदाई फैक्टरी में जो इंसानी पैदावार तैयार होती है उसका एक अजीब पहलू यह है कि वह 'मुकर्रर मिक्दार' के मुताबिक अमल करती है। आजकल की जबान में गोया डिमांड और सप्लाई के दर्मियान मुसलसल एक तवाजुन (संतुलन) बरकरार रहता है।

मसलन यह फैक्टरी हजारों साल से काम कर रही है। इससे मर्द भी पैदा हो रहे हैं और औरतें भी। मगर दोनों जिन्सों की तादाद के दर्मियान हमेशा एक तनासुब (संतुलन) कायम रहता है। ऐसा कभी नहीं होता कि इस फैक्टरी से सब मर्द ही मर्द पैदा हो जाएं या सब औरतें ही औरतें पैदा होने लगें। जंग जैसा कोई हादसा मकामी तौर पर कभी इस तनासुब (संतुलन) को बिगाड़ देता है। मगर हैरतअंगेज तौर पर देखा गया है कि कुछ अर्से बाद ही यह कुदरती कारख़ाना इस तनासुब को दुबारा कायम कर देता है।

यही मामला इस फैक्टरी से निकलने वाले मर्द व औरत के दर्मियान सलाहियतों (क्षमताओं) के तवाजुन का है। मुतालआ बताता है कि पैदा होने वाले मर्द व औरत सब यकसां इस्तेदाद के नहीं होते। उनकी सलाहियतों में बहुत ज्यादा विविधता है। इस विविधता की ग़ैर मामूली तमद्दुनी (सांस्कृतिक) अहमियत है। क्योंकि तमद्दुन (संस्कृति) के निज़ाम

को चलाने के लिए मुख़्तलिफ किस्म की सलाहियतों के इंसान दरकार है। मां की फैक्टरी निहायत ख़ामोशी से हर किस्म की इस्तेदाद (सामर्थ्य) वाले इंसान इस तरह कामयाबी के साथ तैयार कर रही है जैसे उसे बाहर से 'ऑर्डर' मोसूल होते हों। और वह पेट के अंदर उसके मुताबिक इंसानों की तशकील कर रही हो। अगर इंसानी पैदावार में यह विविधता न हो तो तमद्दुन का सारा निजाम सर्द पड़ जाए और तमाम तरक्कियां मांद होकर रह जाएं।

मां के पेट के अमल में इस मंसूबाबंदी का होना सरीह तौर पर इस बात का सुबूत है कि इसके पीछे कोई मंसूबासाज है। इरादे के साथ मंसूबाबंदी के बग़ैर इस किस्म का निजाम इस कद्र तसलसुल (निरंतरता) के साथ कायम नहीं रह सकता।

इससे यह भी साबित होता है कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक ऐसी हस्ती है जिसे न सिर्फ खुले की ख़बर है बल्कि वह छुपे को भी जानता है। रहम (गर्भ) के अंदर और मां के पेट में जो कुछ होता है वह बजाहिर एक छुपी चीज है। मगर मज्कूरा वाक्या बताता है कि ख़ुदा को इसकी मुकम्मल ख़बर है। फिर जो हस्ती एक के छुपे और खुले को जानती है वह दूसरे के छुपे और खुले को क्यों नहीं जानेगी। फरिश्तों का अकीदा भी इसी से साबित होता है। क्योंकि वह 'निगरानी' के मौजूदा निजाम की गोया तौसीअ (विस्तार) है।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْۗءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝

हर शख़्स के आगे और पीछे उसके निगरां (रक्षक) हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं। बेशक अल्लाह किसी कौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वे उसे न बदल डालें जो उनके जी में है। और जब अल्लाह किसी कौम पर कोई आफत लाना चाहता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उसके मुकाबले में कोई उनका मददगार नहीं। (11)

दुनिया में कौमों का उरूज व जवाल (उत्थान-पतन) अललटप तौर पर नहीं होता बल्कि ख़ुदा की निगरानी और फैसले के तहत होता है। ख़ुदा जब किसी कौम को अपनी नेमत से नवाजता है तो वह उस नेमत को उस वक्त तक उसके लिए बाकी रखता है जब तक वह अपने अंदर उसकी इस्तेदाद (सामर्थ्य) बाकी रखे। इस्तेदाद खो देने के बाद वह कौम लाजिमी तौर पर ख़ुदाई नेमत को भी खो देती है, मसलन अपने दर्मियान इत्तेहाद खोने के बाद ख़ारजी दुनिया में रौब से महरूम हो जाना, वग़ैरह।

दुनिया में कोई कौम जो कुछ पाती है, ख़ुदा के कानून के तहत पाती है और कोई कौम जो कुछ खोती है ख़ुदा के कानून के तहत खोती है। ख़ुदा के सिवा यहां न कोई देने वाला है और न कोई छीनने वाला।

هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ يُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَ
يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ
فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है और उम्मीद भी। और वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। और बिजली की गरज उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ से। और वह बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग ख़ुदा के बाब में झगड़ते हैं, हालांकि वह जबरदस्त है कुव्वत वाला है। (12-13)

बिजली चमकती है तो कभी वह नए ख़ुशगवार मौसम की आमद का पैग़ाम होती है और कभी वह साइका (बिजली) बनकर जमीन पर गिरती है और चीजों को जला डालती है। इसी तरह बादल उठते हैं तो कभी वे मुफीद बारिश की सूरत में जमीन पर बरसते हैं और कभी तूफान और सैलाब का पेशख़ेमा (पूर्व-क्रिया) साबित होते हैं।

इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में एक ही चीज में डर का पहलू भी है और उम्मीद का पहलू भी। दुनिया का इंतिजाम करने वाला जिस चीज के जरिए दुनिया वालों पर अपनी रहमत भेजता है उसी को वह तबाहकुन अजाब भी बना सकता है। इस सूरतेहाल का तकाजा है कि आदमी कभी अपने आपको ख़ुदा की पकड़ से मामून (सुरक्षित) न समझे।

ग़ाफिल इंसान हमेशा किसी अनोखी और तिलिस्माती निशानी के जुहूर के मुंतजिर रहते हैं। मगर जिन लोगों का शुऊर बेदार है, वे अपने आस पास रोज मर्रह के वाकेयात में हर किस्म की आला निशानी पा लेते हैं। बिजली की कड़क चमक उनके दिल की धड़कनें तेज कर देती है। और बारिश के कतरे देखकर उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब बह पड़ता है। ख़ुदा की ताकतों को बराहेरास्त देखकर फरिश्तों का जो हाल होता है वही हाल सच्चे इंसानों का उस वक्त हो जाता है जबकि उन्होंने ख़ुदा की ताकतों को अभी बराहेरास्त नहीं देखा है।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَىْءٍ اِلَّا
كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا
فِىْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾

सच्चा पुकारना सिर्फ ख़ुदा के लिए है। और उसके सिवा जिनको लोग पुकारते हैं वे उनकी इससे ज्यादा दादरसी (सहायता) नहीं कर सकते जितना पानी उस शख़्स की करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुंह तक पहुंच जाए और वह उसके मुंह तक पहुंचने वाला नहीं। और मुंकिरीन की पुकार सब बेफायदा है। (14)

अगर आप हाथ फैलाकर समुद्र के पानी को पुकारें तो ऐसा कभी नहीं होगा कि समुद्र आपकी पुकार को सुने और उसका पानी समुद्र की गहराइयों से निकल कर आपकी तरफ आए और आपके खेतों और बाग़ों को सैराब करे। मगर इसी समुद्र के साथ ऐसा होता है कि कुदरत के कानून के तहत उसका पानी नमक के जुज को छोड़कर फजा में बुलन्द होता है। फिर गर्मी, कशिश और हवा के अमल से मुतहर्रिक होकर वह आपकी बस्ती के ऊपर आता है और मीठे पानी की सूरत में बरस कर आपकी जमीन को सैराब कर देता है। इससे मालूम हुआ कि समुद्र बजाहिर अजीम होने के बावजूद सरासर आजिज है उसे किसी किस्म का जाती इख़्तियार हासिल नहीं।

यही इस दुनिया की तमाम चीजों का हाल है। ऐसी हालत में अक्लमंद इंसान सिर्फ वह है जो ख़ालिक (रचयिता) को पूजे न कि मख़्लूक (रचना) को, जो चीजों के रब को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाए न कि ख़ुद चीजों को।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ
وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ
فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾

और आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब ख़ुदा ही को सज्दा करते हैं। ख़ुशी से या मजबूरी से और उनके साये भी सुबह व शाम। कहो, आसमानों और जमीन का रब कौन है। कह दो कि अल्लाह। कहो, क्या फिर भी तुमने उसके सिवा ऐसे मददगार बना रखे हैं जो ख़ुद अपनी जात के नफा और नुक्सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। या क्या अंधेरा और उजाला दोनों बराबर हो जाएंगे। क्या उन्होंने ख़ुदा के ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने भी पैदा किया है जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर पैदाइश उनकी नजर में मुशतबह (संदिग्ध) हो गई। कहो, अल्लाह हर चीज का पैदा करने वाला है और वही है अकेला, जबरदस्त। (15-16)

ख़ुदा का मुतालबा इंसान से यह है कि वह उसके आगे झुक जाए। यही 'झुकना' तमाम कायनात का दीन है। इस दुनिया की हर चीज ख़ुदा के हुक्म के आगे कामिल तौर पर झुकी हुई है। इसी झुकाव की एक अलामत है चीजों के साये का सुबह व शाम मग़रिब और मशरिक की तरफ गिरना। चीजों का यह साया गोया उस सज्दे को माद्दी (भौतिक) तौर पर दर्शा रहा है जो इंसान से शुऊरी तौर पर मत्लूब है। पहला सज्दे का अलामती (प्रतीकात्मक) रूप है और

दूसरा उसका हकीकी रूप।

वसीअ कायनात का मुतालआ (अवलोकन) बताता है कि सारी कायनात एक ही आफाकी (सार्वभौम) कानून में बंधी हुई है। यह इस बात का सुबूत है कि इसका ख़ालिक और मालिक एक है। इंसान का इल्मी और अक्ली मुतालआ किसी भी तरह यह साबित नहीं करता कि इस कायनात में एक से ज्यादा ताक़तों की कारफरमाई हो। ऐसी हालत में एक ख़ुदा के सिवा मजीद (अतिरिक्त) ख़ुदा मानना सरासर बेबुनियाद कल्पना है।

'आंख' का मुशाहिदा तो सिर्फ एक ख़ुदा का पता देता है। इसलिए जो लोग एक ख़ुदा से ज्यादा ख़ुदा मानें वे सिर्फ इस बात का सुबूत देते हैं कि वे अंधे हैं। उन्होंने अपने अंधेपन की वजह से कई ख़ुदा फर्ज कर लिए हैं न कि हकीकी मअनों में इल्म और मुशाहिदे (साक्ष्य) की बुनियाद पर।

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर नाले अपनी-अपनी मिक्दार के मुवाफिक बह निकले। फिर सैलाब ने उभरते झाग को उठा लिया और इसी तरह का झाग उन चीजों में भी उभर आता है जिन्हें लोग जेवर या असबाब बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं। इस तरह अल्लाह हक (सत्य) और बातिल (असत्य) की मिसाल बयान करता है। पस झाग तो सूखकर जाता रहता है और जो चीज इंसानों को नफा पहुंचाने वाली है वह जमीन में ठहर जाती है। अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है। (17)

ख़ुदा ने अपनी दुनिया इस तरह बनाई है कि यहां माद्दी (भौतिक) वाकेयात अख़्लाकी हकीकतों की तमसील बन गए हैं। जो कुछ अल्लाह तआला को इंसान से शुऊर की सतह पर मत्लूब है, उन्हीं को बकिया दुनिया में माद्दी सतह पर दिखाया जा रहा है।

यहां कुरआन में फितरत के दो वाकेयात की तरफ इशारा किया गया है। एक यह कि जब बारिश होती है और उसका पानी बहकर नदियों और नालों में पहुंचता है तो पानी के ऊपर हर तरफ झाग फैल जाती है। इसी तरह जब चांदी और अन्य धातुओं को साफ करने के लिए आग पर तपाते हैं तो उसका मैलकुचेल झाग की सूरत में ऊपर आ जाता है। मगर जल्द ही बाद यह होता है कि दोनों चीजों का झाग, जिसमें इंसान के लिए कोई फायदा नहीं फजा में उड़ जाता है। और पानी और धातु अपनी जगह पर महफूज रह जाते हैं जो इंसान के लिए मुफीद हैं।

ये फितरत के वाकेयात हैं जिनके जरिए ख़ुदा तमसील के रूप में दिखा रहा है कि उसने जिंदगी की कामयाबी और नाकामी के लिए क्या उसूल मुकर्रर फरमाया है। वह उसूल यह है

कि इस दुनिया में सिर्फ उस शख़्स या कौम को जगह मिलती है जो दूसरों के लिए नफाबख़्शी का सुबूत दे। जो फर्द या गिरोह दूसरे इंसानों को नफा पहुंचाने की ताकत खो दे उसके लिए ख़ुदा की बनाई हुई दुनिया में कोई जगह नहीं।

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

जिन लोगों ने अपने रब की पुकार को लब्बैक कहा उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है, और उसके बराबर और भी तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का हिसाब सख़्त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा। और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (18)

दुनिया में ख़ुदा का यह कानून है कि चाहे वक्ती तौर पर मैल और झाग उभर कर ऊपर आ जाए मगर बिलआख़िर जिस चीज को यहां मकाम मिलता है वह वही है जो हकीकी है और जिसमें नफाबख़्शी की सलाहियत है। आख़िरत के एतबार से भी इंसानों का मामला यही है। दुनिया में कुछ लोग अपनी इजाफी हैसियत की बिना पर नुमायां हो सकते हैं। मगर आख़िरत में वही लोग ऊंची जगह पाएंगे जो हकीकी औसाफ (गुणों) के मालिक हों।

दुनिया में जो लोग हक की पुकार पर लब्बैक नहीं कहते। इसकी वजह हमेशा यह होती है कि बेआमेज (विशुद्ध) हक की तरफ बढ़ने में उन्हें दुनिया के फायदे हाथ से जाते हुए नजर आते हैं। ऐसे लोगों को हक को नजरअंदाज करने की कीमत हमेशा यह मिलती है कि वे दुनिया में इज्जत और मकबूलियत और ख़ुशहाली के मालिक बन जाते हैं। वे हक का इंकार करके ऊंची गद्दियों पर सरफराज नजर आते हैं।

मगर इन चीजों की हैसियत मैल और झाग से ज्यादा नहीं। आख़िरत में ये सारे लोग वक्ती झाग की तरह दूर फेंके जा चुके होंगे। और वही लोग नुमायां नजर आएंगे जिन्होंने तमाम वक्ती फायदों को नजरअंदाज करके अपने आपको हक के हवाले किया था।

जो लोग दुनिया की हैसियत और दुनिया के फायदों को इतनी अहमियत दे रहे हैं कि इसकी ख़ातिर हक को नजरअंदाज कर देते हैं आख़िरत में ये चीजें उन्हें इतनी हकीर (तुच्छ) दिखाई देंगी कि वे चाहेंगे कि यह सारी दुनिया और इसके बराबर एक और दुनिया मिल जाए तो वे उन सबको सिर्फ अजाब से बचने की ख़ातिर फिद्ये में दे दें।

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾

जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ से उतारा गया है वह हक (सत्य) है, क्या वह उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है। नसीहत तो अक्ल वाले लोग ही कुबूल करते हैं। (19)

इंसानों में हमेशा दो किस्म के लोग होते हैं। एक इंसान वह है जिसने ख़ुदा की दी हुई अक्ल से सोचा और हकाइक की रोशनी में एक यकीनी फैसले तक पहुंचा। इस तरह बेलाग जायजे के नतीजे में उसका दिल जिस चीज पर मुतमइन हुआ उसे उसने इरादा और शुऊर के साथ इख़्तियार कर लिया।

दूसरे लोग वे हैं जो कौमी रिवायात और तक्लीदी ख़्यालात के दायरे में सोचते हों। जो चीजों को दलाइल की नजर से देखने के बजाए रवाज की नजर से देखते हों। और फिर जो चीज उन्हें अवाम में चलती हुई दिखाई दे उसी को हक समझ कर इख़्तियार कर लें।

कुरआन के नजदीक पहला शख़्स वह है जो इल्म की रोशनी में ईमान लाया है। इसके मुकाबले में दूसरा आदमी कुरआन की नजर मे अंधा है। पहला आदमी ख़ुद अपनी बसीरत (सूझबूझ) से हक और बातिल को जानता है। जबकि दूसरे आदमी का सरमाया सिर्फ सुनी सुनाई बातें हैं। लोग जिसे बातिल (असत्य) समझ लें उसे उसने बातिल समझ लिया, लोग जिसे हक समझें, उसके मुतअल्लिक उसने भी यकीन कर लिया कि वह हक होगी।

हक की दावत (आह्वान) ऐसे लोगों की तलाश के लिए उठती है जो अपनी अक्ल से काम लेकर फैसला कर सकते हों। बाकी जो लोग आंख रखते हुए अंधे बने हुए हों उन्हें हक की दावत कुछ फायदा नहीं पहुंचाएगी।

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

वे लोग जो अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करते हैं और उसके अहद को नहीं तोड़ते। और जो उसे जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और वे अपने रब से डरते हैं और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं और जिन्होंने अपने रब की रिजा के लिए सब्र किया। और नमाज कायम की। और हमारे दिए में से पोशीदा और एलानिया ख़र्च

किया। और जो बुराई को भलाई से मिटाते हैं। आख़िरत का घर इन्हीं लोगों के लिए है। अबदी (चिरस्थाई) बाग़ जिनमें वे दाख़िल होंगे। और वे भी जो उसके अहल बनें, उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज) और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। और फरिश्ते हर दरवाजे से उनके पास आएंगे, कहेंगे तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया। पस क्या ही ख़ूब है यह आख़िरत का घर। (20-24)

इंसान को ख़ुदा ने पैदा किया। उसने उसे रहने के लिए बेहतरीन दुनिया दी। वह हर आन उसकी परवरिश कर रहा है। यह वाकया इंसान को अपने ख़ालिक व मालिक के साथ एक फित्री अहद (वचन) बांध देता है। इसका तकाजा है कि इंसान सरकश न बने बल्कि हकीकते वाकया का एतराफ करते हुए ख़ुदा के आगे झुक जाए।

दुनिया में इंसान की जिंदगी मुख़्तलिफ किस्म के तअल्लुकात व रवाबित (संपर्कों) के दर्मियान है। इंसान की बंदगी का तकाजा है कि वह उसी से जुड़े जिससे जुड़ना ख़ुदा को पसंद है और उससे कट जाए जिससे कटने का हुक्म दिया गया है। उस पर ख़ुदा की अज्मत का एहसास इतनी शिद्दत से तारी हो कि वह उसके आगे झुक जाए, जिसकी एक मुकर्रर सूरत का नाम नमाज है। वह अपने असासे में से दूसरों को उसी तरह दे जिस तरह ख़ुदा ने अपने असासे में से उसे दिया है। उसे किसी की तरफ से बुरे सुलूक का तजर्बा हो तो वह अच्छे सुलूक के साथ उसका जवाब दे। क्योंकि वह ख़ुद भी यह चाहता है कि आख़िरत में ख़ुदा उसकी बुराइयों को नजरअंदाज कर दे और उसके साथ फज्ल व रहमत का मामला फरमाए।

यह सब कुछ मुसलसल सब्र का तालिब है। नफ्स के मुहर्रिकात (प्रेरकों) के मुकाबले में सब्र। मफादात का जियाअ (नाश) के मुकाबले में सब्र। माहौल के दबाव के मुकाबले में सब्र। मगर मोमिन को जन्नत की ख़ातिर इन तमाम चीजों पर सब्र करना है। सब्र ही जन्नत की कीमत है। सब्र की कीमत अदा किए बग़ैर किसी को ख़ुदा की अबदी जन्नत नहीं मिल सकती।

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

और जो लोग अल्लाह के अहद को मजबूत करने के बाद तोड़ते हैं और उसे काटते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और जमीन में फसाद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है। अल्लाह जिसे चाहता है रोजी ज्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। और वे दुनिया की जिंदगी पर ख़ुश हैं। और दुनिया की जिंदगी आख़िरत के मुकाबले में एक मताए कलील (अल्प सुख-सामग्री) के सिवा और कुछ नहीं। (25-26)

इंसान अपने ख़ुदा से अहदे फितरत में बांधा हुआ है और दूसरे इंसानों से अहद आदमियत में। इन दोनों अहदों को तोड़ना ख़ुदा की जमीन में फसाद करना है। ख़ुदा की जमीन में इस्लाहयाफ्ता बनकर रहना यह है कि आदमी मज्कूरा दोनों अहदों का पाबंद बनकर जिंदगी गुजारे। इसके बरअक्स ख़ुदा की जमीन में फसादी बनना यह है कि आदमी इन अहदों से आजाद हो जाए। उसे न ख़ुदा के हुकूक़ की परवाह हो और न इंसानों के हुकूक़ की।

ऐसे लोग ख़ुदा के नजदीक लानतजदा हैं। ये वे लोग हैं जो ख़ुदा की रहमतों में हिस्सेदार नहीं बनाए जाएंगे। उन्होंने ख़ुदा की जमीन को गंदा किया, इसलिए वे इसी काबिल हैं कि आइंदा उन्हें सिर्फ गंदे घर में जगह मिले।

दुनिया में किसी को कम मिलता है और किसी को ज्यादा। अब जिसे ज्यादा मिला वह एहसासे बरतरी में मुब्तिला हो जाता है और जिसे कम मिला वह एहसासे कमतरी में। मगर ख़ुदा की नजर में ये दोनों गलत हैं। सही रद्देअमल यह है कि ज्यादा मिले तो आदमी ख़ुदा का शुक्रगुजार बने। कम मिले तो वह सब्र और कनाअत (संतोष) का तरीका इख़्तियार करे।

दुनियापरस्त लोग हमेशा हक के दाओी को नजरअंदाज कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि दुनियापरस्त आदमी सिर्फ जाहिरी अज्मतों को पहचानना जानता है। चूंकि दाओी के पास सिर्फ मअनवी अज्मत होती है इसलिए वह उसे पहचान नहीं पाता। वह उसे हकीर समझ कर नजरअंदाज कर देता है। मगर जब हकीक़त का पर्दा फटेगा उस वक्त इंसान जानेगा कि जिस नजर आने वाली रौनक को वह सब कुछ समझे हुए था वह बिल्कुल बेकीमत थी। कद्र व कीमत की चीज दरअस्ल वह थी जो दिखाई न देने की वजह से उसकी तवज्जोह का मर्कज न बन सकी।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई। कहो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह रास्ता उसे दिखाता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह हो। वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं। सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है। जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए ख़ुशख़बरी है और अच्छा ठिकाना है। (27-29)

हक के दाओी (आह्वानकर्ता) को न मानने की वजह आम तौर पर यह होती है कि लोगों को दाओी के गिर्द महसूस किस्म के करिश्मे नजर नहीं आते। मगर यह ऐन उसी मकाम पर नाकाम होना है जहां आदमी को कामयाबी का सुबूत देना चाहिए। ख़ुदा यह चाहता है कि आदमी

हक को उसके मुजर्रद (साक्षात) रूप में पहचाने और अपने आपको उसके हवाले कर दे। अब जो शख़्स इसरार करे कि वह महसूस करिश्मों की दलील के बग़ैर नहीं मानेगा, उसका अंजाम इस दुनिया में यही हो सकता है कि ख़ुदा के कानून के मुताबिक कभी उसे हक न मिले। वह हमेशा के लिए हिदायत से महरूम हो जाए।

यह दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां आदमी सिर्फ 'याद' की सतह पर ख़ुदा को पा सकता है। वह उसे 'मुशाहिदे' (अवलोकन) की सतह पर नहीं पा सकता। जो लोग इस ख़ुदाई मंसूबे पर राजी होंगे वे ख़ुदा को पाएंगे। और जो लोग इस पर राजी न हों वे ख़ुदा को पाने से उसी तरह महरूम रहेंगे जिस तरह नंगी आंख से सूरज को देखने पर इसरार करने वाला सूरज को देखने से।

इस दुनिया में कामयाबी सिर्फ उस शख़्स के लिए है जो ख़ुदा के मंसूबे को माने और उसके मुताबिक अपनी जिंदगी को ढाल ले। क्योंकि दुनिया की तख़्लीक करने वाला ख़ुदा है न कि कोई इंसान।

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

इसी तरह हमने तुम्हें भेजा है, एक उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुजर चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह पैग़ाम सुना दो जो हमने तुम्हारी तरफ भेजा है। और वे महरबान ख़ुदा का इंकार कर रहे हैं। कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ लौटना है। (30)

जब यह दुनिया दारुल इम्तेहान है तो इसका फित्री तकाजा यह है कि हिस्सी (महसूस) निशानियां दिखाने के बाद लोगों का फैसला कर दिया जाए। अब अगर लोगों के मुतालबे पर ख़ुदा फौरन कोई हिस्सी निशानी जाहिर कर दे और इसके बाद भी लोग न मानें तो फौरन वे हलाकत के मुस्तहिक हो जाएंगे। मगर यह ख़ुदाए रहमान व रहीम की ख़ास इनायत है कि वे लोगों के मुतालबे के बावजूद हिस्सी निशानियां जाहिर नहीं करता। बल्कि नसीहत और दलील की जबान में हक का पैग़ाम पहुंचाता रहता है। इस तरह लोगों को ज्यादा से ज्यादा मोहलत मिलती है कि वे अपनी इस्लाह (सुधार) करके ख़ुदाई रहमतों के मुस्तहिक बन सकें।

ऐसी हालत में दाओी को चाहिए कि वह लोगों के नादान मुतालबे की वजह से घबरा न जाए। वह ख़ुदा के मंसूबे पर राजी रहते हुए लोगों को उसकी तरफ बुलाता रहे।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا

مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

और अगर ऐसा क़ुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे जमीन टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते बल्कि सारा इख़्तियार अल्लाह ही के लिए है। क्या ईमान लाने वालों को इससे इत्मीनान नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता। और इंकार करने वालों पर कोई न कोई आफत आती रहती है, उनके आमाल के सबब से, या उनकी बस्ती के करीब कहीं नाजिल होती रहेगी, यहां तक कि अल्लाह का वादा आ जाए। यकीनन अल्लाह वादे के ख़िलाफ नहीं करता। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया तो मैंने इंकार करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। तो देखो कैसी थी मेरी सजा। (31-32)

हक को न मानने का अस्ल सबब दलील की कमी नहीं बल्कि इंसान की यह आजादी है कि वह चाहे तो माने और चाहे तो न माने। जब तक इंसान को इंकार की आजादी हासिल है वह किसी भी चीज का इंकार करने के लिए उज़्र (बहाना) तलाश कर सकता है।

उसके सामने अल्फाज में एक दलील लाई जाए तो वह कुछ दूसरे अल्फ़ाज बोलकर उसे रद्द कर देगा। कायनात की निशानियों का हवाला दिया जाए तो वह उसकी तरदीद के लिए ख़ुदसाख़्ता तौजीह तलाश कर लेगा। यहां तक कि अगर पहाड़ चलाए जाएं और जमीन फाड़ दी जाए और मुर्दों को जिंदा कर दिया जाए तब भी कोई चीज आदमी को यह कहने से रोक नहीं सकती कि यह तो जादू है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि इंकार करने वाला बजाहिर दलील मांगता है। मगर हकीकतन वह मज़ाक उड़ा रहा होता है। वह यह जाहिर करना चाहता है कि यह शख़्स जो चीज पेश कर रहा है वह हक नहीं। अगर वह फिलवाकअ हक होता तो जरूर उसके पास ऐसी दलील होती कि सारे लोग उसे मानने पर मजबूर हो जाते।

ख़ुदा ने लोगों को मोहलत दी है इसकी वजह से लोग बेख़ौफ हो गए हैं। मगर जब मोहलत ख़त्म होगी और ख़ुदा लोगों को पकड़ेगा तो आदमी देखेगा कि वह किस कद्र बेइख़्तियार था, अगरचे वह फर्जी तौर पर अपने को ख़ुदमुख़्तार समझता रहा।

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۭ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۭ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۭ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ

مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝

फिर क्या जो हर शख़्स से उसके अमल का हिसाब करने वाला है, और लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं। कहो कि उनका नाम लो। क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की ख़बर दे रहे हो जिसे वह जमीन में नहीं जानता। या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो बल्कि इंकार करने वालों को उनका फरेब ख़ुशनुमा बना दिया गया है। और वे रास्ते से रोक दिए गए हैं। और अल्लाह जिसे गुमराह करे उसे कोई राह बताने वाला नहीं। उनके लिए दुनिया की जिंदगी में भी अजाब है और आख़िरत का अजाब तो बहुत सख़्त है। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (33-34)

मुतालआ बताता है कि कायनात में रिकार्डिंग का निजाम है। आदमी जो कुछ बोलता है या जो कुछ करता है, वह कायनाती इंतिजाम के तहत फौरन रिकार्ड हो जाता है। ऐसी हालत में इस कायनात का ख़ुदा किसी ऐसी हस्ती ही को माना जा सकता है जिसके अंदर 'सुनने' और 'देखने' की ताकत हो। मगर इंसानों ने अब तक जितने शरीक फर्ज किए हैं, सब के सब वे हैं जिनके अंदर न सुनने की ताकत है और न देखने की। ऐसी हालत में क्योंकर वे मौजूदा कायनात जैसी दुनिया के ख़ालिक व मालिक हो सकते हैं। जो ख़ुद न सुने वह अपनी मख़्लूकात में सुनने का माद्दा किस तरह पैदा करेगा जो ख़ुद न देखे वह दूसरी चीजों को देखने के काबिल कैसे बनाएगा।

इसी तरह कायनात में इतनी ज्यादा वहदत (एकत्व) है कि वह किसी तरह शिर्क को कुबूल नहीं करती। जिस शरीक का भी नाम लिया जाए, कायनात पूरे वजूद के साथ उसे तस्लीम करने से इंकार कर देगी।

मुंकिरीन के लिए उनका मक्र ख़ुशनुमा बना दिया गया है। यहां मक्र से मुराद उनका 'कौल' है जिसका जिक्र इसी आयत में ऊपर मौजूद है। जब भी आदमी हक का इंकार करता है तो उसका जेहन अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए कोई कौल गढ़ लेता है। यह कौल अगरचे बेहकीकत अल्फाज के मजमूअे के सिवा और कुछ नहीं होता। मगर जो लोग हक के मामले में ज्यादा संजीदा न हों वे कुछ न कुछ अल्फाज बोलकर समझ लेते हैं कि उन्होंने अपने इंकार व एराज (उपेक्षा) को हक बजानिब साबित कर दिया है। चाहे उनके बोले हुए अल्फाज उनके अपने जेहन के बाहर कोई कीमत न रखते हों।

इस किस्म के झूठे अल्फाज किसी आदमी को सिर्फ मौजूदा दुनिया में सहारा दे सकते हैं। आख़िरत में जब हर चीज की हकीकत खुलेगी तो ये ख़ुशनुमा अल्फाज इतने बेवजन हो जाएंगे कि आदमी उन्हें दोहराते हुए भी शर्म महसूस करेगा।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝

और जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तकियों (डर रखने वालों) से वादा किया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा। यह अंजाम उन लोगों का है जो ख़ुदा से डरें और मुंकिरों का अंजाम आग है। (35)

जन्नत की कीमत तक्वा है। यानी अल्लाह की अज़्मत का इतना शदीद एहसास जो डर बनकर आदमी के दिल में समा जाए। जो लोग दुनिया में ख़ुदा से डरें वही वे लोग हैं जो आख़िरत के उन घरों में बसाए जाएंगे जहां आदमी के लिए किसी किस्म का डर न होगा। जिसके चारों तरफ सरसब्ज बाग़ात उनकी अज़्मत व शान को दोचन्द कर रहे होंगे।

इसके बरअक्स हाल उन लोगों का है जो दुनिया में बेख़ौफ बनकर रहे। वे आख़िरत में अपने आपको आग की दुनिया में पाएंगे।

وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ ۖ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَن يُنكِرُ بَعْضَهُ ۚ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُو وَإِلَيْهِ مَآبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَمَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

और जिन लोगों को हमने किताब दी थी वे उस चीज पर ख़ुश हैं जो तुम पर उतारी गई है। और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इंकार करते हैं। कहो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और किसी को उसका शरीक न ठहराऊं। मैं उसी की तरफ बुलाता हूं और उसी की तरफ मेरा लौटना है और इसी तरह हमने उसे एक हुक्म की हैसियत से अरबी में उतारा है। और अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करो बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो ख़ुदा के मुकाबले में तुम्हारा न कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (36-37)

कुरआन आया तो यहूद व नसारा में दो गिरोह हो गए। उनमें जो लोग अल्लाह से डरने वाले थे और हजरत मूसा और हजरत मसीह की सच्ची तालीमात पर कायम थे, उन्होंने कुरआन को अपने दिल की आवाज समझा और ख़ुश होकर उसे कुबूल कर लिया। मगर जो लोग अस्बियत (द्वेष) और गिरोहबंदी को दीन समझे हुए थे वे अपने मानूस (परिचित) दायरे से बाहर आने वाली सच्चाई को पहचान न सके और उसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हो गए। अल्लाह से उनकी बेख़ौफी ने हक की दावत की मुख़ालिफत में भी उन्हें बेख़ौफ बना दिया।

जो शख़्स अस्बियत और गिरोहबंदी की बिना पर सच्चाई का मुख़ालिफ बनता है वह दरअस्ल ख़ुदा को छोड़कर अपनी ख़्वाहिशात पर चलता है। ऐसे लोगों की रिआयत से हक की दावत में कोई तब्दीली करना दाई के लिए जाइज नहीं। दाई के लिए लाजिम है कि वह अपने कौल और फेअल से बेलाग हक पर पूरी तरह जमा रहे। ऐसे लोगों के मुकाबले में

उसे इस्तकामत (दृढ़ता) का सुबूत देना है न कि मुसालेहत का।

आदमी के सामने उसकी काबिलेफहम जबान में हक का इल्म आ जाए। इसके बावजूद वह ख़्वाहिशात का पैरोकार बना रहे तो यह बेहद संगीन बात है। क्योंकि यह ऐसा फेअल (कृत्य) है जो आदमी को ख़ुदा की मदद से यकसर महरूम कर देता है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِندَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٣٩﴾

और हमने तुमसे पहले कितने रसूल भेजे और हमने उन्हें बीवियां और औलाद अता किया और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर कोई निशानी ले आए। हर एक वादा लिखा हुआ है। अल्लाह जिसे चाहे मिटाता है और जिसे चाहे बाकी रखता है। और उसी के पास है अस्ल किताब। (38-39)

ख़ुदा की तरफ से जितने पैग़म्बर आए वे सब आम इंसानों की तरह एक इंसान थे और दुनियावी तअल्लुकात रखते थे। फिर क्या वजह है कि कौमों ने इसके बावजूद पिछले पैग़म्बरों को माना और अपने समकालीन पैग़म्बर का इसी सबब से इंकार कर दिया। इसकी वजह यह है कि पिछले पैग़म्बरों के साथ अतिरिक्त एक चीज शामिल थी जो समकालीन पैग़म्बर का हासिल न थी। यह अतिरिक्त चीज तारीख़ की अज़्मत है। कौमों ने तारीख़ी अज़्मत की बिना पर पिछले पैगम्बरों को माना और तारीख़ी अज़्मत से ख़ाली होने की बिना पर समकालीन पैग़म्बर का इंकार कर दिया।

इंसान की यह कमजोरी है कि वह हकीकत को उसके मूल रूप में देख नहीं पाता। जिंदा पैग़म्बर के साथ हकीकत मूल रूप में थी। इसलिए इंसान उसे पहचान न सका। तारीख़ के पैग़म्बर के साथ इजाफी (अतिरिक्त) अहमियतें भी शामिल हो चुकी थीं इसलिए उसने उन्हें पहचान लिया और उनका मोअतकिद (आस्थावान) बन गया।

'उम्मुल किताब' से मुराद ख़ुदा का वह अस्ल नविश्ता (मूल ग्रंथ) है जो ख़ुदा के पास है और जिसमें हिदायत की वे तमाम उसूली बातें लिखी हुई हैं जो ख़ुदा को इंसान से मत्लूब हैं। मुख़्तलिफ पैग़म्बरों पर जो किताबें उतरीं वे सब इसी उम्मुल किताब से ली गई थीं। ख़ुदा ने अपनी यह किताब कभी एक जबान में उतारी और कभी दूसरी जबान में। कभी उसके लिए तमसील का पेराया इख़्तियार किया गया और कभी उसे बराहेरास्त पेराया में बयान किया गया। कभी नाजिल होने के बाद उसकी हिफाजत की जिम्मेदारी इंसानों पर डाली गई और कभी उसकी हिफाजत की जिम्मेदारी ख़ुद ख़ुदा ने ले ली।

وَإِن مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ

وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝

और जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें वफात दे दें, पस तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना। क्या वे देखते नहीं कि हम जमीन की तरफ उसे उसके अतराफ (चतुर्दिक) से कम करते चले आ रहे हैं। और अल्लाह फैसला करता है, कोई उसके फैसले को हटाने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। जो उनसे पहले थे उन्होंने भी तदबीरें कीं मगर तमाम तदबीरें अल्लाह के इख़्तियार में हैं। वह जानता है कि हर एक क्या कर रहा है और मुंकिरीन जल्द जान लेंगे कि आख़िरत का घर किस के लिए है। (40-42)

खुदा के दीन को इख़्तियार न करने का अंजाम आम तौर पर आख़िरत में सामने आता है। मगर पैगम्बर के मुख़ातबीन अगर पैग़म्बर की दावत का इंकार कर दें तो इसका बुरा अंजाम उनके लिए मौजूदा दुनिया ही से शुरू हो जाता है।

ताहम इस दुनियावी अंजाम का कोई एक उसूल नहीं। यह मुख़्तलिफ पैग़म्बरों के जमाने में मुख़्तलिफ सूरतों में जाहिर होता रहा है। पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मख़्सूस मुसालेह की बिना पर ख़ुदा का यह फैसला इस शक्ल में जाहिर हुआ कि पैग़म्बर के पैरोकारों को पैग़म्बर के मुंकिरीन पर ग़ालिब कर दिया गया।

मक्की दौर के आख़िरी जमाने में जबकि मक्का के सरदारों ने आपका इंकार कर दिया था, ऐन उसी वक्त यह हो रहा था कि इस्लाम की दावत धीरे-धीरे मदीना में और मक्का के बाहरी कबाइल में फैल रही थी। गोया इस्लाम की दावती कुव्वत मक्का के अतराफ (चतुर्दिक) को फतह करती हुई मक्का की तरफ बढ़ रही थी। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)के लिए ख़ुदा की सुन्नत दावती फतहों की सूरत में जाहिर हुई।

यहां दावती तदबीर को ख़ुदाई तदबीर कहा गया है। इससे इसकी अहमियत का अंदाजा होता है। कुरैश ने जब मक्का से आपको निकाला तो उन्होंने यह समझा था कि उन्होंने आपका ख़ात्मा कर दिया। उस वक्त आप एक ऐसे शख़्स थे जिसकी मआशियात (आर्थिक संसाधन) बर्बाद हो चुकी थीं। जिसे ख़ुद अपने कबीले की हिमायत से महरूम कर दिया गया था।

कुरैश यह सब करके अपने तौर पर ख़ुश थे। वे समझते थे कि उन्होंने पैग़म्बर के 'मसले' को हमेशा के लिए दफ्न कर दिया है। मगर वे उस राज को समझ न सके कि दाओी का सबसे बड़ा हथियार दावत (आह्वान) है और यह वह चीज है जिसे कोई शख़्स कभी दाओी से छीन नहीं सकता। दाओी की दूसरी महरूमियां उसके दाजियाना जोर को और बढ़ा देती हैं, वह किसी तरह उसे कम नहीं करतीं। चुनांचे ऐन उस वक्त जबकि कुरैश अपने ख़्याल के मुताबिक पैग़म्बर से उसका सब कुछ छीन चुके थे, उसकी दावत चारों तरफ अरब के कबाइल

में फैल रही थी। लोगों के दिल उससे मुसख़्ख़र (विजित) होते जा रहे थे। यह अमल ख़ामोशी के साथ मुसलसल जारी था। और फतह मक्का गोया इसी का इंतिहाई नुक्ता था। मक्का वालों ने जिन लोगों को 'दस सौ' समझ कर घर से बेघर किया था वे सिर्फ चन्द साल में 'दस हजार' बनकर दुबारा मक्का में इस तरह वापस आए कि मक्का वालों को यह हिम्मत भी न थी कि उन्हें मक्का में दाख़िल होने से रोकने की कोशिश करें।

हक की दावत से जिन लोगों के मफादात (स्वार्थों) पर जद पड़ती है वे उसे जेर करने के लिए उसके ख़िलाफ तदबीरें करते हैं। मगर तमाम तदबीरों का सिरा ख़ुदा के हाथ में है। वह हर एक के ऊपर पूरा इख़्तियार रखता है। ख़ुदा की इस बरतर हैसियत का इब्तिदाई जुहूर इसी मौजूदा दुनिया में हो रहा है। इसका कामिल और इंतिहाई जुहूर आख़िरत में होगा जबकि अंधे भी उसे देख लें और बहरे भी उसे सुनने लगें।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

और मुंकिरीन कहते हैं कि तुम ख़ुदा के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की गवाही काफी है। और उसकी गवाही जिसके पास किताब का इल्म है। (43)

जाहिरपरस्त लोग जिस वक्त हक के दाओी में निशानियां न पाकर उसकी सदाकत के बारे में शुबह कर रहे होते हैं, ऐन उसी वक्त मअनवी (अर्थपूर्ण) निशानियां पूरी तरह उसकी तस्दीक (पुष्टि) के लिए मौजूद होती हैं। सच्चाई अपनी दलील आप है। मगर उसे महसूस करना सिर्फ उस शख़्स के लिए मुमकिन है जो जवाहिर से गुजर कर हकाइक को देखने की निगाह अपने अंदर पैदा कर चुका हो। वर्ना जिन लोगों की निगाहें जवाहिर में अटकी हुई हों वे हक को बेदलील समझ कर उसका इंकार कर देंगे। हालांकि ऐन उसी वक्त दलाइल का अंबार उसकी तस्दीक के लिए उनके करीब मौजूद होगा।

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۝ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝

आयतें-52 **सूरह-14. इब्राहीम** रुकूअ-7

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। यह किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ नाजिल किया है ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ लाओ, उनके रब के हुक्म से ख़ुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व हमीद (प्रशंसित) के रास्ते की तरफ, उस अल्लाह की तरफ कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है और मुंकिरों के लिए एक सख़्त अजाब की तबाही है जो कि आख़िरत के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) निकालना चाहते हैं। ये लोग रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े हैं। (1-3)

ईमान यह है कि आदमी ख़ुदा को एक ऐसी हस्ती की हैसियत से पा ले जो सारी ताक़तों का मालिक है और सारी ख़ूबियों वाला भी है। ऐसा वाकया किसी आदमी के लिए महज एक रस्मी अकीदा (आस्था) नहीं होता। यह किसी आदमी का बेइल्मी की तारीकी से निकल कर इल्म की रोशनी में आना है। यह ग़ैब (अप्रकट) के पर्दे से गुजर कर शुहूद (साक्षात) के जलवे को देख लेना है। यह दुनिया में रहते हुए आख़िरत का इदराक (भाव) कर लेना है। ईमान अपनी हकीक़त के एतबार से एक शुऊरी याफ़्त है न कि किसी मज्मूए अल्फ़ाज की बेरूह तकरार। ख़ुदा की किताब इसलिए आती है कि आदमी को इस शुऊरी दर्जे पर पहुंचा दे।

अल्लाह के इज्न से हिदायत मिलना, बजाहिर हिदायत के मामले को अल्लाह की तरफ मंसूब करना है। मगर इस इर्शाद का रुख़ हकीक़तन ख़ुद इंसान की तरफ है। 'इज्न' से मुराद ख़ुदा का वह मुक़र्रर क़ानून है जो उसने इंसान की हिदायत व गुमराही के लिए मुक़र्रर किया है। इस कानून के मुताबिक आदमी की अपनी संजीदा तलब वाहिद शर्त है जो उसे हिदायत तक पहुंचाती है। इस दुनिया में जिस शख़्स को हिदायत मिलती है वह महज किसी दाओ की दाअियाना कोशिशों से नहीं मिलती बल्कि ख़ुदा के कानून के तहत मिलती है। और ख़ुदा का कानून यह है कि हिदायत की नेमत को सिर्फ वह शख़्स पाएगा जो ख़ुद हिदायत का तालिब हो। जाती तलब के बग़ैर किसी को हिदायत नहीं मिल सकती।

हिदायत के रास्ते को ख़ुदा ने इंतिहाई हद तक साफ और रोशन बनाया है। जमीन व आसमान में उसकी निशानियां फैली हुई हैं। ख़ुदा की किताब उसके हक में नाकाबिले इंकार दलाइल (तर्क) फ़राहम करती है। इंसानी फ़ितरत उसकी सदाकत की गवाही दे रही है। गोया तमाम बेहतरीन कराइन (संकेत) उसके हक में जमा हैं। ऐसी हालत में जो लोग हिदायत के रास्ते को इख़्तियार न करें वे यकीनी तौर पर दुनियावी मफाद की बिना पर ऐसा कर रहे हैं न कि किसी वाकई सबब की बिना पर। अगरचे ऐसे लोग अपनी रविश को दुरुस्त साबित करने के लिए कुछ 'दलाइल' भी पेश करते हैं मगर ये दलाइल सिर्फ सीधी बात में टेढ़ निकालने का नतीजा होते हैं। वे सिर्फ इसलिए होते हैं कि लोगों की नजर में अपने न मानने का जवाज (औचित्य) फ़राहम करें।

ऐसी हालत में हिदायत से महरूम सिर्फ वही शख़्स रह सकता है जिसकी मफादपरस्ती (स्वार्थता) और दुनियावी रग़बत ने उसे बिल्कुल अंधा बहरा बना दिया हो।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٤

और हमने जो पैग़म्बर भी भेजा उसकी कौम की जबान में भेजा ताकि वह उनसे बयान कर दे फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4)

ख़ुदा का तरीका यह है कि वह पैग़म्बरों को ख़ुद मदऊ (संबोधित) कौम के अंदर से उठाता है। ताकि वह लोगों की नफ्सियात की रिआयत करते हुए, उनकी अपनी काबिलेफ़हम जबान में उन्हें हक की तरफ बुलाए। मगर अजीब बात है कि जो चीज इंसान की बेहतरी के लिए की गई थी उससे उसने उल्टा नतीजा निकाल लिया। उसने जब देखा कि पैग़म्बर उन्हीं की तरह का एक आदमी है और उनकी अपनी मानूस जबान में कलाम कर रहा है तो उन्होंने पैग़म्बर को मामूली समझ कर उसका इंकार कर दिया। जो चीज उनकी हिदायत को आसान बनाने के लिए की गई थी उसे उन्होंने अपनी गुमराही का जरिया बना दिया।

ख़ुदा ऐसा नहीं करता कि वह लोगों को अपनी तरफ मुतवज्जह करने के लिए शोअबदे (करिश्मे) दिखाए। वह किसी कौम के पास ऐसा पैग़म्बर भेजे जो अनोखी जबान या तिलिस्माती उस्लूब (जादुई शैली) में कलाम करके लोगों को अचंभे में डाल दे। ख़ुदा लोगों की अजाइबपसंदी की ख़ातिर करिश्मे दिखाने के अंदाज इख़्तियार नहीं करता। ख़ुदा का तरीका सादगी और हकीक़तपसंदी का तरीका है। ख़ुदा ने अपनी दुनिया को हकाइक (यथार्थ) की बुनियाद पर कायम किया है। और इंसान की हिदायत की स्कीम को भी वह हकाइक की बुनियाद पर चलाता है न कि तिलिस्मात की बुनियाद पर।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٥

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी कौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ। बेशक उनके अंदर बड़ी निशानियां हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। (5)

'अल्लाह की आयात' से मुराद कायनात की वे निशानियां हैं जो ख़ुदा की बात को बरहक साबित करती हैं। 'अल्लाह के दिन' से मुराद तारीख़ के वे यादगार वाकेयात हैं जबकि ख़ुदा का फ़ैसला जाहिर हुआ और ख़ुदा की ख़ुसूसी मदद से हक (सत्य) ने बातिल (असत्य) के ऊपर फतह पाई। एक अगर कायनाती दलील है तो दूसरी तारीख़ी (ऐतिहासिक) दलील।

मगर अजीब बात है कि यही दोनों चीजें हमारी दुनिया में सबसे ज्यादा ग़ैर मौजूद नजर

आती हैं। अल्लाह की आयात को ग़लत तशरीह व ताबीर (व्याख्या, भाष्य) के पर्दे में छुपा दिया गया है और अल्लाह के दिनों का यह हाल है कि तारीख़निगारी का काम जिन लोगों के हाथ में था उन्होंने इंसानों के दिन तो ख़ूब कलमबंद किए मगर अल्लाह के दिन उनकी किताबों में ग़ैर मज़्कूर रह गए।

ऐसी हालत में किसी ख़ुदा के बंदे के लिए बातिल के अंधेरे से निकलने की सूरत सिर्फ यह है कि वह सब्र और शुक्र का सुबूत दे।

हक के एतराफ की वाहिद कीमत अपनी बेएतराफी है। हक को पाने के लिए अपने आपको खोना पड़ता है। और यह चीज सब्र के बग़ैर किसी को हासिल नहीं होती। फिर हक का इदराक आदमी को यह बताता है कि इस कायनात में जो तक्सीम है वह मुन्इम (इनाम करने वाला) और मुन्अम अलैह (इनाम पाने वाला) की है। ख़ुदा देने वाला है और इंसान पाने वाला। इस हकीकते वाक्या की दरयाफ्त के बाद आदमी के अंदर जो सही जज्बा पैदा होना चाहिए उसी का नाम शुक्र है। गोया हकीकत तक पहुंचने के लिए आदमी को सब्र का सुबूत देना पड़ता है। और हकीकत को अपने अंदर उतारने के लिए शुक्र का।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٨﴾

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो जबकि उसने तुम्हें फिरऔन की कौम से छुड़ाया जो तुम्हें सख़्त तकलीफें पहुंचाते थे और वे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को जिंदा रखते थे और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से बड़ा इम्तेहान था। और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा। और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अजाब बड़ा सख़्त है। और मूसा ने कहा कि अगर तुम इंकार करो और जमीन के सारे लोग भी मुंकिर हो जाएं तो अल्लाह बेपरवा है, ख़ूबियों वाला है। (6-8)

इन आयात में हजरत मूसा की जिस तकरीर का हवाला है वह ग़ालिबन आपकी वह तकरीर है जो आपने अपनी वफात से कुछ दिनों पहले सहराए सीना में बनी इस्राईल के सामने फरमाई थी। यह तकरीर मौजूदा बाइबल (किताब इस्तिसना) में तफ़्सील के साथ मौजूद है।

हजरत मूसा की इस मुफ़स्सल तकरीर का ख़ुलासा यह है कि अगर तुम दुनिया में ख़ुदा

वाले बनकर रहो और ख़ुदा की बातों का चर्चा करो तो दुनिया की तमाम चीजें तुम्हारा साथ देंगी। सब कौमों के दर्मियान तुम्हारा रौब कायम होगा। ख़ुदा तुम्हारे दुश्मनों को जेर करेगा। यहां तक कि अगर कभी दरिया तुम्हारे रास्ते में हायल हो तो ख़ुदा हुक्म देगा और दरिया फटकर तुम्हें रास्ता दे देगा, जबकि उसी दरिया में तुम्हारे दुश्मन ग़र्क हो जाएंगे।

इसके बरअक्स अगर तुम ऐसा न करो तो तुम ख़ुदा की नजर में लानती ठहरोगे, यानी तुम ख़ुदा की रहमतों से दूर हो जाओगे। तुम्हारी महनत की पैदावार दूसरे लोग खाएंगे। तुम्हारे हर काम बिगड़ते चले जाएंगे तुम फिक्री और अमली एतबार से दूसरी कौमों के जेरेदस्त हो जाओगे।

ख़ुदा का यह कानून मारूफ मअनों में 'यहूद' के लिए नहीं है बल्कि हामिले किताब (ग्रंथ धारक) कौम के लिए है। जो कौम भी हामिले किताब हो, उसके साथ ख़ुदा का यही मामला है, चाहे वे माजी (अतीत) के हामिलीने किताब हों या हाल के हामिलीने किताब।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٩﴾

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं कौमे नूह और आद और समूद और जो लोग इनके बाद हुए हैं, जिन्हें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलाइल (स्पष्ट प्रमाण) लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह में दे दिए और कहा कि जो तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो हम उसके बारे में सख़्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं। (9)

ख़ुदा के जितने रसूल मुख़्तलिफ कौमों में आए सबके साथ एक ही किस्सा पेश आया। हर कौम ने अपने पैग़म्बरों की मुख़ालिफत की। हर जगह उनका मुंह बंद करने की कोशिश की गई।

इसकी वजह क्या थी। इसकी वजह उनका 'शक' था। यह शक इसलिए था कि उनके सामने एक तरफ उनका आबाई (पैतृक) दीन था जिसकी पुश्त पर अकाबिर और अआजिम (महापुरुषों) के नाम थे। दूसरी तरफ पैग़म्बर का दीन था जो बजाहिर एक मामूली इंसान के जरिए पेश किया जा रहा था। दलाइल का जोर पैग़म्बर के दीन के साथ नजर आता था मगर तारीख़ी अज्मत और अवामी भीड़ आबाई दीन के साथ दिखाई देती थी। पैग़म्बर के मुख़ातबीन का यह हाल हुआ कि वे दलाइल को रद्द करने की कुव्वत अपने अंदर न पाते थे। और यह भी उनकी समझ में नहीं आता था कि अआजिम और अकाबिर को किस तरह ग़लत समझ लें। इस दोतरफा सूरतेहाल ने उन्हें शक में मुब्तिला कर दिया। अमलन अगरचे वे आबाई दीन के साथ वाबस्ता रहे मगर अपने कल्ब (दिल) व दिमाग़ को शक से आजाद

भी न कर सके।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿١٠﴾

उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या ख़ुदा के बारे में शक है जो आसमानों और जमीन को वजूद में लाने वाला है। वह तुम्हें बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें एक मुकर्रर मुद्दत तक मोहलत दे। उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं कि हमारे जैसे एक आदमी हो। तुम चाहते हो कि हमें उन चीजों की इबादत से रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। तुम हमारे सामने कोई खुली सनद ले आओ। (10)

इस आयत का तअल्लुक़ अस्लन क़दीम (प्राचीन) क़ौमों से है। मगर क़ुरआन की एक ख़ुसूसियत यह है कि इसमें ख़ुदा की अबदी तालीमात को तारीख़ के सांचे में ढाल कर पेश किया गया है। इसलिए क़ुरआन में ऐसे अल्फाज इस्तेमाल किए जाते हैं जिनमें मुख़ातबे अव्वल की रिआयत के साथ बाद के इंसानों की रिआयत भी पूरी तरह शामिल हो।

इस आयत में 'फातिर' का लफ़्ज इसी की एक मिसाल है। फातिर के लफ़्जी मअना हैं 'फाड़ने वाला'। उमूमी मफहूम के लिहाज से फातिर का लफ़्ज यहां ख़ालिक के मअना में इस्तेमाल हुआ है। मगर इसका ख़ालिस लफ्ज़ी तर्जुमा किया जाए तो वह होगा 'क्या तुम्हें ख़ुदा के बारे में शक है जो जमीन व आसमान का फाड़ने वाला है।'

लफ़्जी तर्जुमे के एतबार से यह आयत मौजूदा जमाने में ख़ुदा के मुंकिरीन के लिए ख़ुदा के वजूद को साबित कर रही है। जदीद तहक़ीक़ात (आधुनिक खोजें) बताती हैं कि जमीन व आसमान का माद्दा इब्तिदा में एक सालिम गोले की सूरत में था। जिसे सुपर एटम कहा जाता है। मालूम क़वानीने फित्रत के मुताबिक इसके तमाम अज्जा इंतिहाई शिद्दत के साथ अंदर की तरफ जुड़े हुए थे। मौजूदा वसीअ कायनात इसी सुपर एटम में इंफिजार (महाविस्फोट) से वजूद में आई। इस आयत में फातिर (फाड़ने वाला) का लफ़्ज इसी कायनाती वाक़ये की तरफ इशारा कर रहा है जो एक ख़ालिक के वजूद का क़तई सुबूत है। क्योंकि सुपर एटम के अज्जा जो मुकम्मल तौर पर अंदर की तरफ खिंचे हुए थे। उन्हें बाहरी सम्त में मुतहर्रिक करना अपने आप नहीं हो सकता। लाजिम है कि इसके लिए किसी ख़ारजी मुदाख़लत (वाह्य हस्तक्षेप) को माना जाए। इसी मुदाख़लत करने वाली ताकत का दूसरा नाम ख़ुदा है।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ

وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना इनाम फरमाता है और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि हम तुम्हें कोई मोजिजा (चमत्कार) दिखाएं बग़ैर ख़ुदा के हुक्म के। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसने हमें हमारे रास्ते बताए। और जो तकलीफ तुम हमें दोगे हम उस पर सब्र करेंगे। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (11-12)

पैग़म्बरों के मुख़ातबीन ने जब अपने समकालीन पैग़म्बरों को यह कहकर रद्द किया कि 'तुम तो हमारे जैसे एक बशर हो' तो इसकी वजह हकीकतन यह नहीं थी कि वे पैगम्बरी के लिए ग़ैर बशर होने को जरूरी समझते थे। इसकी वजह दरअस्ल वह फर्क था जो उनके अपने तसव्वुर के मुताबिक उन्हें पिछले पैगम्बर और समकालीन पैगम्बर में नजर आता था।

गुजरा हुआ पैगम्बर भी अगरचे अपने वक्त में वैसा ही था जैसा कि समकालीन पैगम्बर। मगर बाद के दौर में गुजरे हुए पैगम्बरों के पैरोकारों ने उनके गिर्द तिलिस्माती किस्सों का हाला बना दिया। बाद के दौर में पैग़म्बरों की शख़्सियतों को ऐसा अफसानवी रंग दे दिया गया जो इब्तिदा में उनके यहां मौजूद न था। अब कौमों के सामने एक तरफ फर्जी शोअबदों करिश्मों वाला पैगम्बर था, दूसरी तरफ हकीकी वाकेयात वाला पैगम्बर। इस तक़ाबुल में पिछला पैग़म्बर पैगम्बरी के लिए मेयारी नमूना बन गया। और जब कौमों ने इस मेयार के एतबार से देखा तो वक्त का हकीकी पैगम्बर उन्हें माजी (अतीत) के अफसानवी पैग़म्बर से कम नजर आया। चुनांचे उन्होंने उसे हकीर (तुच्छ) समझ कर नजरअंदाज कर दिया।

पैग़म्बरों ने अपने मुख़ातबीन से कहा कि तुम्हारी इन बातों के जवाब में हमारे पास सब्र के सिवा और कुछ नहीं है। तुम ग़ैर बशरियत (अ-मानव) की सतह पर हिदायत के तालिब हो। और ख़ुदा ने हमें सिर्फ बशरियत की सतह पर हिदायत देने की ताकत अता की है। ऐसी हालत में हम इसके सिवा और क्या कर सकते हैं कि तुम्हारी ईजाओं (यातनाओं) को बर्दाश्त करें और इस सारे मामले को ख़ुदा के हवाले कर दें।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٤﴾

और इंकार करने वालों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि या तो हम तुम्हें अपनी जमीन से निकाल देंगे या तुम्हें तुम्हारी मिल्लत में वापस आना होगा। तो पैग़म्बरो के रब ने उन पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि हम इन जालिमों को हलाक कर देंगे। और उनके बाद तुम्हें जमीन पर बसाएंगे। यह उस शख़्स के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और जो मेरी वईद (चेतावनी) से डरे। (13-14)

पैग़म्बरों की दावत से उनकी क़ौमों के दीन पर जद पड़ती थी। वे लोग अपने जिन अफराद को कौम के अकाबिर (बड़ों) का दर्जा दिए हुए थे, पैग़म्बरों के तज्ज़िए (विश्लेषण) में वे छोटे करार पा रहे थे। इस बिना पर वे पैग़म्बरों से बिगड़ गए। वे दलाइल से तो उन्हें रद्द नहीं कर सकते थे। अलबत्ता वक्त के निजाम में उन्हें हर क़िस्म का इख़्तियार हासिल था। चुनांचे उनकी मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) ने उन्हें समझाया कि पैग़म्बर को बेघर और बेजमीन कर दिया जाए। जिस चीज का तोड़ उनके पास दलील की जबान में न था, उसका तोड़ उन्होंने ताक़त के जरिए करने का फ़ैसला किया।

जो जमीन आदमी के पास है, वह उसके पास बतौर इम्तेहान है न कि बतौर हक। अगर आदमी यह समझे कि यह ख़ुदा की चीज है जिसे उसने इम्तेहान की ग़रज से उसकी तहवील (क़ब्जे) में दिया है तो इससे आदमी के अंदर तवाजोअ की नफ्सियात पैदा होगी। वह डरेगा कि जिस ख़ुदा ने दिया है वह उसे दुबारा उससे छीन न ले। मगर ग़ाफिल लोग इसे अपना जाती हक समझ लेते हैं। उनका यही एहसास उन्हें जालिम और मुतकब्बिर (घमंडी) बना देता है। पैगम्बर की दावत जब तक्मील के मरहले में पहुंचती है तो यह मुख़ातब कौम के लिए इम्तेहान की मोहलत ख़त्म होने के हममअना होती है। इसके बाद वे लोग दुनिया को अपने लिए बिल्कुल बदला हुआ पाते हैं। जिन चीजों को वे अपनी चीज समझ कर मुतकब्बिराना मंसूबे बना रहे थे वे चीजें अचानक उनका साथ छोड़ देती हैं। यहां तक कि वह वक्त आता है जबकि जमीन उनसे छीन कर दूसरे लोगों को दे दी जाए जो इनके मुक़ाबले में उसका ज्यादा इस्तहक़ाक़ (पात्रता) रखते हों।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝

और उन्होंने फैसला चाहा और हर सरकश, जिद्दी नामुराद हुआ। उसके आगे दोज़ख़ है और उसे पीप का पानी पीने को मिलेगा वह उसे घूंट-घूंट पिएगा और उसे हलक से मुश्किल से उतार सकेगा। मौत हर तरफ से उस पर छाई हुई होगी। मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके आगे सख़्त अजाब होगा। (15-17)

ख़ुदा के नजदीक किसी आदमी का सबसे बड़ा जुर्म यह है कि उसे ख़ुदा की तरफ बुलाया

जाए और वह जब्बार और अनीद (दंभी) बनकर उसका जवाब दे। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में जिल्लत है और आख़िरत में ऐसा शदीद अजाब कि वे हर वक्त अपने आपको मौत और हलाकत के किनारे पाएंगे।

जब आदमी किसी के ख़िलाफ जुल्म और सरकशी का रवैया इख़्तियार करता है तो वह किसी बरते पर ऐसा करता है। ये मुख़ालिफीन अपने आपको 'अकाबिर' (बड़े) के दीन पर समझते थे। इसके मुकाबले में पैग़म्बर और उसके साथी उन्हें 'असागिर' (छोटे) दिखाई देते थे। उनकी यही नफ्सियात थी जिसने उन्हें आमादा किया कि वे पैग़म्बर और उसके साथियों के ऊपर हर किस्म के जुल्म को अपने लिए जाइज समझ लें। अपने को 'अकाबिर' से मंसूब करने ही की वजह से वे 'असाग़िर' के ख़िलाफ हर किस्म की कार्रवाइयों के लिए दिलेर हो गए।

مَّثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَّا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝

जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया उनके आमाल उस राख की तरह हैं जिसे एक तूफानी दिन की आंधी ने उड़ा दिया हो। वे अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे। यही दूर की गुमराही है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह ख़ुदा पर कुछ दुश्वार भी नहीं। (18-20)

अरब के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया वे सब ख़ुदा और मजहब को मानने वाले लोग थे। फिर क्यों वे आपके मुंकिर बन गए। इसकी वजह यह थी कि आपकी सतह पर हक अपनी मुजर्रद (साक्षात) सूरत में जाहिर हुआ था। जबकि वे लोग सिर्फ उस चीज को हक समझते थे जो उनके कौमी बुज़ुर्गों के जरिए उन्हें मिला हो। उन्होंने अपने मुसल्लम कौमी बुजुर्गों के दीन को पहचाना, मगर वे 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' के दीन को पहचानने में नाकाम रहे।

जो लोग कौमी रिवायात के जेरेअसर दीन को पाएं उनके यहां भी दीनी मजाहिर मौजूद होते हैं। बल्कि अक्सर उनके यहां दीन की धूम पाई जाती है। ताहम यह सब कुछ महज जाहिरी दीनदारी होती है, दीन की अस्ल हकीकत से इसका कोई तअल्लुक नहीं होता। मगर ख़ुदा को जो चीज मत्लूब है वह हकीकी दीनदारी है न कि जाहिरी हंगामे।

ख़ुदा को वह इंसान मत्लूब है जिसने जाती शुऊर की सतह पर हक को पाया हो। जिसने आलमे ग़ैब में ख़ुदा का मुशाहिदा किया हो। जिसने हक को उसकी मुजर्रद सूरत में पहचाना

हो और उसका साथ दिया हो। जिसकी रूह ख़ुदा के समुद्र में नहाई हो। जो ख़ुदा की मुहब्बत में तड़पा हो और ख़ुदा के ख़ौफ से जिसकी आंखों ने आंसू बहाए हों।

पहली किस्म के लोगों की दीनदारी ऊपरी दीनदारी है। कियामत की आंधी उसे इसी तरह उड़ा ले जाएगी जिस तरह सतह जमीन की ख़स व ख़ाशाक (धूल-मिट्टी) तेज़ हवा में उड़ जाती है। इसके बरअक्स दूसरी किस्म के लोगों का दीन हक़ीक़ी दीन है। वह इंसानी वजूद की आख़िरी गहराई तक पेवस्त होता है। ऐसे वजूद के लिए आंधी सिर्फ इसलिए आती है कि वह उसकी मजबूती को साबित करे न कि उसे उखाड़ ले जाए।

कायनात का मुतालआ बताता है कि उसकी तख़्लीक हकाइक पर हुई है। ऐसी कायनात में सिर्फ हकीकी अमल की कीमत हो सकती है न कि मफरूजे (कल्पनाओं) और ख़ुशगुमानियों की।

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ﴿٢١﴾

और ख़ुदा के सामने सब पेश होंगे। फिर कमजोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे तो क्या तुम अल्लाह के अजाब से कुछ हमें बचाओगे। वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमें कोई राह दिखाता तो हम तुम्हें भी जरूर वह राह दिखा देते। अब हमारे लिए यकसां (समान) है कि हम बेक़रार हों या सब्र करें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (21)

इंसान, बतौर वाकया अगरचे हर वक्त 'ख़ुदा के सामने' है। मगर मौजूदा दुनिया में आदमी अपने आपको बजाहिर ख़ुदा के सामने नहीं पाता। आख़िरत में यह पर्दा हट जाएगा। उस वक्त आदमी देखेगा कि वह इस तरह कामिल तौर पर ख़ुदा के सामने था कि उसकी कोई चीज ख़ुदा से छुपी हुई नहीं थी।

दुनिया में जो लोग हक को नजरअंदाज करते हैं उनका सबसे बड़ा सहारा उनके मफरूजा (काल्पनिक) अकाबिर (बड़े) होते हैं। चाहे वे मुर्दा अकाबिर हों या जिंदा अकाबिर। छोटे जो कुछ करते हैं अपने बड़ों के बल पर करते हैं। आख़िरत में जब ये लोग अपने आपको बिल्कुल बेबसी की हालत में पाएंगे तो वे अपने बड़ों से कहेंगे कि दुनिया में हम तुम्हारी रहनुमाई पर एतमाद किए हुए थे, अब यहां भी तुम हमारी कुछ रहनुमाई करो।

इसके जवाब में उनके बड़े अपने छोटों से कहेंगे कि आज का दिन तो इसीलिए आया है कि वह हमारे बेरहनुमा होने को बेनकाब करे। फिर अब हम तुम्हें क्या रहनुमाई दे सकते हैं। हमारी रहनुमाई तो महज वक्ती फरेब थी जो पिछली दुनिया में ख़त्म हो गई। अब तो यही है कि तुम भी अपने भटकने का नतीजा भुगतो और हम भी अपनी गुमराही का नतीजा भुगतें। हम चाहें या न चाहें, बहरहाल अब हमारा इसके सिवा कोई और अंजाम नहीं।

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنْفُسَكُمْ ۖ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

और जब मामले का फैसला हो जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने उसकी ख़िलाफवर्जी की। और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था। मगर यह कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया पस तुम मुझे इल्जाम न दो, और तुम अपने आपको इल्जाम दो। न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूं और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो। मैं ख़ुद इससे बेजार हूं कि तुम इससे पहले मुझे शरीक ठहराते थे। बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। (22)

ख़ुदा की दुनिया वाकेयात की दुनिया है न कि कल्पनाओं की दुनिया। यहां शैतान के वादे पर उठना यह है कि आदमी ग़ैर हक़ीक़ी बुनियादों पर अपनी जिंदगी की तामीर करना चाहे।

आदमी हक के दाओ को नजरअंदाज कर दे और दूसरे-दूसरे कारनामे दिखा कर हक का अलमबरदार (ध्वजावाहक) होने का क्रेडिट ले। वह आख़िरत के लिए अमल न करे और ख़ुदसाख़्ता मफरूजों के तहत यह उम्मीद कायम कर ले कि उसकी नजात हो जाएगी। वह ख़ुदा के अहकाम के मुताबिक जिंदगी न गुजारे और यह यकीन कर ले कि उसका नाम अपने आप ख़ुदा के महबूब बंदों में लिख लिया जाएगा। यह सब शैतान के वादों पर भरोसा करना है। और आख़िरत में आदमी जान लेगा कि सिर्फ ख़ुदा का वादा सच्चा वादा था। और बाकी तमाम वादे झूठे भरोसे थे जो कभी पूरे होने वाले नहीं।

ख़ुदा की दुनिया में गैर ख़ुदा से उम्मीद कायम करना शिर्क है। इसलिए जो लोग ख़ुदाई हकीकतों को नजरअंदाज करते हैं और ग़ैर ख़ुदाई उम्मीदों पर अपनी जिंदगी का महल खड़ा करना चाहते हैं। वे गोया ख़ुदा के साथ दूसरी चीजों को ख़ुदा का शरीक ठहरा रहे हैं। ये दूसरी चीजें फैसले के दिन उनका कुछ भी सहारा न बन सकेंगी।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴿٢٣﴾

और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे अपने रब के हुक्म से हमेशा रहेंगे। उसमें उनकी मुलाकात एक दूसरे पर सलामती होगी। (23)

मुलाकात के वक्त अस्सलामु अलैकुम कहना महज एक मुआशिरती रस्म नहीं। यह कल्बी तअल्लुक की एक जाहिरी अलामत है। दुनिया का अस्सलामु अलैकुम भी अपनी हकीकत के एतबार से यही है और आख़िरत का अस्सलामु अलैकुम भी मजीद इजाफे के साथ यही।

जो लोग दुनिया में इस तरह रहे कि उनके अंदर एक दूसरे के लिए ख़ैरख़्वाही के जज्बात भरे हुए थे। जो शिकायतों को नजरअंदाज करके एक दूसरे से मुहब्बत करना जानते थे। जो दूसरे के लिए हमेशा वे अल्फाज बोलते थे जिसमें उसका एतराफ और एहतराम शामिल हो। जो दूसरे के लिए वही चीज पसंद करते थे जो अपने लिए पसंद करते थे। जिनके सीने में दूसरों के लिए सलामती के चशमे उबलते थे और जिनकी आंखे दूसरे की भलाई को देखकर ठंडी होती थीं। यही वे लोग हैं जो जन्नत की नफीस दुनिया में बसाए जाने के अहल ठहरेंगे। दुनिया में भी उनका यह हाल था कि जब वे अपने भाइयों से मिलते तो उनके लिए उनकी मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही 'अस्सलामु अलैकुम' की सूरत में टपकती थी। आख़िरत में यही चीज और ज्यादा लतीफ और ख़ालिस बनकर अपने जन्नती पड़ौसियों के बारे में उनकी जबानों से निकलेगी।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِى ٱلسَّمَآءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِىٓ أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍۭ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ ٱلْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ ٱجْتُثَّتْ مِن فَوْقِ ٱلْأَرْضِ مَا لَهَا مِن قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

क्या तुमने नहीं देखा, किस तरह मिसाल बयान फरमाई अल्लाह ने कलिमा-ए-तय्यिबा (शुभ बात) की। वह एक पाकीजा दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ जमीन में जमी हुई है। और जिसकी शाख़ें आसमान तक पहुंची हुई हैं। वह हर वक्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से और अल्लाह लोगों के लिए मिसाल बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें। और कलिमा-ए-ख़बीसा (अशुभ बात) की मिसाल एक ख़राब दरख़्त की है जो जमीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए। उसे कोई सबात (दृढ़ता) न हो। (24-26)

मौजूदा दुनिया में अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ हकीकतों की जाहिरी तमसीलात कायम की हैं। शजर-ए-तय्यिबा (अच्छा दरख़्त) एक एतबार से मोमिन की तमसील है।

दरख़्त की यह अजीब ख़ुसूसियत है कि वह पूरी कायनात को अपना ग़िजाई दस्तरख़्वान बनाता है और इस तरह बीज से तरक्की करके एक अजीम दरख़्त की सूरत में जमीन के ऊपर खड़ा हो जाता है। दरख़्त जमीन से पानी और मअदनियात (खनिज) और नमकियात (लवण) लेकर बढ़ता है। इसी के साथ वह हवा और सूरज से अपने लिए ग़िजा हासिल करता है। वह नीचे से भी ख़ुराक लेता है और ऊपर से भी।

यही मोमिन का मामला भी है। आम दरख़्त अगर माद्दी (भौतिक) दरख़्त है तो मोमिन शुऊरी दरख़्त। मोमिन एक तरफ दुनिया में ख़ुदा की तख़्लीकात (सृष्टि) और उसके निजाम को देखकर इबरत और नसीहत हासिल करता है। दूसरी तरफ 'ऊपर' से उसे मुसलसल ख़ुदा का फैजान पहुंचता रहता है। वह मख़्लूकात से भी अपने लिए इजाफए ईमान की ख़ुराक हासिल करता है और ख़ालिक से भी उसकी कुरबत और मुलाकात बराबर जारी रहती है।

दरख़्त हर मौसम में अपने फल देता है। इसी तरह मोमिन हर मौके पर वह सही रवैया जाहिर करता है जो उसे जाहिर करना चाहिए। मआशी (आर्थिक) तंगी हो या मआशी फराख़ी, ख़ुशी का लम्हा हो या ग़म का। शिकायत की बात हो या तारीफ की। जोरआवरी की हालत हो या बेजोरी की। हर मौके पर उसकी जबान और उसका किरदार वही रद्देअमल जाहिर करता है जो ख़ुदा के सच्चे बंदे की हैसियत से उसे जाहिर करना चाहिए।

दूसरी मिसाल शजर-ए-ख़बीसा (झाड़ झंकाड़) की है। उसे देखकर ऐसा मालूम होता है कि कायनात से उसे बिल्कुल बरअक्स किस्म की ख़ुराक मुहय्या की जा रही है जिसके नतीजे में उसके ऊपर कांटे उगते हैं। उसकी शाख़ों में कड़वे और बदमजा फल लगते हैं। उसके पास कोई शख़्स जाए तो वह बदबू से उसका इस्तकबाल करता है। ऐसे दरख़्त को कोई पसंद नहीं करता। वह जहां उगे वहां से उसे उखाड़ कर फेंक दिया जाता है।

यही मामला ग़ैर मोमिन का है। वह जमीन में एक ग़ैर मत्लूब वजूद की हैसियत से उगता है। कायनात अपनी तमाम बेहतरीन निशानियों के बावजूद उसके लिए ऐसी हो जाती है जैसे यहां उसके लिए न कोई दलील है और न कोई नसीहत। ख़ुदा का फैजान अगरचे हर वक्त बरसता है मगर उसे उसमें से कोई हिस्सा नहीं मिलता। उसके किरदार और मामलात में इसका इज्हार नहीं होता।

يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ ٱللَّهُ ٱلظَّٰلِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

अल्लाह ईमान वालों को एक पक्की बात से दुनिया और आख़िरत (परलोक) में मजबूत करता है। और अल्लाह जालिमों को भटका देता है। और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

'ख़ुदा अहले ईमान को कलिमा तौहीद के जरिए दुनिया में भी साबित कदम रखता है और आख़िरत में भी।' दुनिया में साबित कदम रहने से मुराद अपनी जिंदगी के हर मोड़ पर ख़ैर और अमले सालेह (नेक अमल) की रविश पर कायम रहना है। आख़िरत में साबित कदम रहने से मुराद यह है कि कब्र के सवाल व जवाब के वक्त वे कामयाब रहेंगे।

इंसान हर लम्हा इम्तेहान की हालत में है। उस पर तरह-तरह के पसंदीदा और नापसंदीदा अहवाल आते हैं। इन मौकों पर सही ख़ुदाई रविश पर सिर्फ वे लोग कायम रहते हैं जो अपने अंदर 'दरख़्ते ईमान' उगा चुके हों। वे पेश आने वाली सूरतेहाल में उस सहीतरीन रद्देअमल का सुबूत देते हैं जो ख़ुदा की मर्जी के मुताबिक उन्हें देना चाहिए। इसके बरअक्स जिस आदमी की शख़्सियत झाड़ झंकाड़ की मानिंद उगी हो वह हर तजर्बे में कड़वाहट का सुबूत

देता है। वह हर मौके पर कांटा और बदबू साबित होता है।

दोनों किस्म के इंसान जब क़ब्र के मरहले में आख़िरी तौर पर जांचे जाएंगे तो जो शजर-ए-तय्यिबा था वह शजर-ए-तय्यिबा साबित होकर जन्नत के बाग़ में दाख़िल कर दिया जाएगा। और जो शजर-ए-ख़बीसा था उसके साथ ऐसा मामला होगा गोया वह दुनिया से सिर्फ इसलिए उखाड़ा गया था कि जहन्नम का ईंधन बनने के लिए जहन्नम की आग में फेंक दिया जाए।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلُّوا عَن سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ़्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर में पहुंचा दिया, वे उसमें दाख़िल होंगे और वह कैसा बुरा ठिकाना है। और उन्होंने अल्लाह के मुकाबिल ठहराए ताकि वे लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दें। कहो कि चन्द दिन फायदा उठा लो, आख़िरकार तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है। (28-30)

इन आयात का इब्तिदाई ख़िताब कुरैश के सरदारों से है। मगर इसके उमूमी इंतिबाक (चरितार्थता) में वे तमाम लीडर शामिल हैं जो हक के इंकार की मुहिम की सरदारी करते हैं।

किसी कौम के बड़े वही लोग बनते हैं जिन्हें ख़ुसूसी नेमतें और मवाकेअ (अवसर) हासिल हों। इन नेमतों और मवाकेअ का सहीतरीन इस्तेमाल यह है कि जब उनके सामने हक की दावत उठे तो वे अपने तमाम वसाइल के साथ उसकी जानिब खड़े हों और उसकी पूरी मदद करें। जो चीजें ख़ुदा की दी हुई हैं उन पर सबसे ज्यादा हक ख़ुदा का है न कि किसी और का।

मगर अक्सर हालात में मामला इसके बरअक्स होता है। ऐसे लोग न सिर्फ यह कि हक को कुबूल नहीं करते बल्कि उसके ख़िलाफ उठने वाली तहरीक की क़यादत करते हैं। इसकी वजह यह है कि अपने से बाहर उठने वाले हक को कुबूल करना गोया अपने आपको उसके मुकाबले में छोटा करना है। और ऐसा बहुत कम होता है कि वे लोग उस पर राजी हो जाएं जिन्हें किसी वजह से माहौल में बड़ाई का दर्जा मिल गया हो।

इंसान को एक ख़ुदा चाहिए। एक ऐसी हस्ती जिसे वह अपनी जिंदगी में सबसे बड़ा मकाम दे सके। चुनांचे जब भी कोई शख़्स लोगों की तवज्जोह ख़ुदाए वाहिद से हटाता है तो इसका नतीजा यह होता है कि लोगों की तवज्जोह किसी ग़ैर ख़ुदा की तरफ मायल हो जाती है। ख़ुदा को छोड़ना हमेशा ग़ैर ख़ुदा को अपना ख़ुदा बनाने की कीमत पर होता है। मजीद यह कि ख़ुदा से लोगों को हटाने वाले किसी ग़ैर ख़ुदा में फर्जी तौर पर वह आला सिफ़ात साबित करते हैं जो सिर्फ ख़ुदा में पाई जाती हैं। क्योंकि जब तक ग़ैर ख़ुदा में वे आला सिफ़ात साबित न की जाएं लोग उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं हो सकते। यही वजह है कि आदमी जब एक ख़ुदा की

परस्तिश छोड़ता है तो वह इसके बाद लाजिमी तौर पर तवह्हुमपरस्ती में पड़ जाता है। ख़ुदा को छोड़ने का वाहिद बदल इस दुनिया में तवह्हुमपरस्ती (अंधविश्वास) है।

قُل لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴿٣١﴾

मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज कायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छुपे ख़र्च करें इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न ख़रीद व फरोख़्त होगी और न दोस्ती काम आएगी। (31)

आदमी के ऊपर जब कोई मुसीबत आती है तो वह उससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करता है। अगर उसके कुछ साथी हैं तो वह साथियों का जोर इस्तेमाल करता है। और अगर दौलत है तो दौलत को उसकी राह में ख़र्च करता है। अपने को बचाने की तड़प आदमी को मजबूर करती है कि वह इन दोनों चीजों की तरफ दौड़े।

नमाज और इंफ़ाक (अल्लाह की राह में ख़र्च) हकीकतन आख़िरत के मसले के बारे में आदमी के इसी एहसास का दुनियावी इज्हार हैं। नमाज गोया आख़िरत की हौलनाकी की याद करके ख़ुदा की पनाह की तरफ भागना है ताकि उसकी मदद से वह अपने आपको बचाए। इसी तरह दुनिया में खुले और छुपे ख़र्च करना गोया अपनी कमाई को आख़िरत की मद में देना है ताकि वह आख़िरत की मुसीबत से छुटकारा हासिल करने का जरिया बने।

आख़िरत में वही आदमी सहारा पाएगा जिसने दुनिया में ख़ुदा का सहारा पकड़ा हो। आख़िरत में वही आदमी छुटकारा हासिल करेगा जिसने दुनिया में उसकी ख़ातिर अपने दाएं बाएं ख़र्च किया हो। जो लोग दुनिया में ऐसा न कर सकें वे आख़िरत में सहारे के लिए दौड़ेंगे मगर वहां वे कोई सहारा न पाएंगे। वे आख़िरत में ख़र्च करना चाहेंगे मगर उनके पास कुछ न होगा जिसे फिदया देकर वे वहां की मुसीबतों से नजात हासिल करें।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

अल्लाह वह है जिसने आसमान और जमीन बनाए और आसमान से पानी उतारा। फिर उससे मुख़्तलिफ फल निकाले तुम्हारी रोजी के लिए और कश्ती को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) कर दिया कि समुद्र में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया। और उसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र

कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया। और उसने तुम्हें हर चीज में से दिया जो तुमने मांगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम गिन नहीं सकते। बेशक इंसान बहुत बेइंसाफ और बड़ा नाशुक्रा है। (32-34)

मौजूदा दुनिया इंतिहाई हैरतनाक हद तक ख़ुदा की गवाही दे रही है। वसीअ ख़ला में सितारों और सय्यारों (ग्रहों) की गर्दिश, पानी के जरिए जमीन पर जिंदगी और रिज़्क की फराहमी, ख़ुश्की और तरी और फजा पर इंसान को यह कुदरत होना कि वह उनमें अपनी सवारियां दौड़ाए, दरियाओं और पहाड़ों के जरिए जमीन का इंसान के मुवाफिक़ हो जाना, सूरज और चांद के जरिए मौसमों का और रात और दिन का इंतिजाम, सब कुछ इससे ज्यादा अजीम है कि इन्हें लफ्जों में बयान किया जा सके। इंसान और कायनात में इतनी कामिल मुताबिकत (अनुकूलता) है कि इंसान को हर काबिले कयास (अनुमान योग्य) या नाकाबिले कयास जरूरत पेशगी तौर पर यहां बइफरात (बहुलता से) मौजूद है।

ये तमाम चीजें इतनी ज्यादा अजीब हैं कि आदमी को हिला दें और उसे बंदगी के जज्बे से सरशार कर दें इसके बावजूद ऐसा क्यों नहीं होता कि कायनात को देखकर आदमी के अंदर इस्तेजाब (विस्मय) की कैफियत पैदा हो। ख़ालिके कायनात के तसव्वुर से उसके बदन के रोंगटे खड़े हो जाएं। इसकी वजह यह है कि आदमी पैदा होते ही कायनात को देखता है, देखते-देखते वह उसे एक आम चीज मालूम होने लगती है। इसमें उसे कोई अनोखापन नजर नहीं आता।

मजीद यह कि इस दुनिया में आदमी को जब कोई चीज मिलती है तो वह बजाहिर उसे असबाब के तहत मिलती हुई नजर आती है। इस बिना पर वह समझ लेता है कि जो चीज उसे मिली है वह उसकी अपनी महनत और सलाहियत की बिना पर मिली है। यही वजह है कि आदमी के अंदर देने वाले ख़ुदा के लिए शुक्र का जज्बा पैदा नहीं होता।

इंसान की यही वह ग़फलत है जिसे यहां बेइंसाफी और नाशुक्रगुजारी से ताबीर (परिभाषित) किया गया है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ۝ رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ ۖ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब, इस शहर को अम्न वाला बना। और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया। पस जिसने मेरी पैरवी की वह मेरा है। और जिसने मेरा कहा न माना तो तू बख़्शने वाला महरबान है। (35-36)

हजरत इब्राहीम के जमाने तक मुल्कों और कौमों का यह हाल हो चुका था कि हर तरफ शिर्क का दौर दौरा था। सूरज चांद और दूसरे मजाहिरे फितरत इंसान की परस्तिश का मौजूअ

बने हुए थे। कदीम जमाने में जिंदगी की तमाम सरगर्मियों पर शिर्क का इस तरह गलबा हुआ कि इंसानी नस्लों में शिर्क का तसलसुल कायम हो गया। बजाहिर यह नामुमकिन नजर आने लगा कि लोगों को शिर्क की फजा से निकाल कर तौहीद के दायरे में लाया जा सके। उस वक्त ख़ुदा के हुक्मे ख़ास के तहत हजरत इब्राहीम इराक से निकल कर अरब के सहरा में आए जो तमद्दुन (संस्कृति) से दूर बिल्कुल ग़ैर आबाद इलाका था। आपने अगल-थलग माहौल में अपनी बीवी हाजरा और अपने बच्चे इस्माईल को बसाया। ताकि यहां वक्त के मुश्रिकाना तसलसुल से कटकर एक नई नस्ल तैयार हो। जो आजादाना फजा में परवरिश पाकर अपनी सही फितरत पर कायम हो सके। हजरत इब्राहीम का कलाम दुआ के अंदाज में इसी ख़ास हकीकत को जाहिर कर रहा है।

बनू इस्माईल को ख़ुश्क और ग़ैर आबाद बयाबान में बसाने से ख़ुदा का मंसूबा यही था, अब यहां के जिन लोगों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) को अपने दिल की आवाज बनाया वे गोया बाग़े इब्राहीम की सही पैदावार थे। इसके बरअक्स जिन लोगों ने दुबारा शिर्क का तरीका इख़्तियार कर लिया वे उस बाग़ की नाकिस पैदावार करार पाएंगे।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۝

ऐ हमारे रब, मैंने अपनी औलाद को एक बेखेती की वादी में तेरे मोहतरम घर के पास बसाया है। ऐ हमारे रब ताकि वे नमाज कायम करें। पस तू लोगों के दिल उनकी तरफ मायल कर दे और उन्हें फलों की रोजी अता फरमा। ताकि वे शुक्र करें। (37)

कदीम (प्राचीन) मक्का जहां बनू इस्माईल बसाए गए वहां की पहाड़ी और सहराई दुनिया गोया ख़ुदा की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) की कुदरती तर्बियतगाह थी। दूसरी तरफ वहां इंसानी तामीरात के एतबार से वाहिद काबिले लिहाज निशान अल्लाह का काबा था। एक तरफ फितरत का माहौल इंसान के अंदर ख़ुदा की याद उभारने वाला था। इसके बाद अपने करीब उसे जो नुमायां चीज नजर आती थी वह हजरत इब्राहीम और हजरत इस्माईल की बनाई हुई पत्थरों की मस्जिद थी जिसमें दाख़िल होकर वह ख़ुदा की याद में मशग़ूल हो जाए।

फिर इस माहौल में बनू इस्माईल को मोजिजाती तौर पर जमजम के जरिए पानी मुहय्या किया गया। इसी के साथ उनके लिए यह इंतिजाम किया गया कि ऐसी पैदावार से उन्हें रिज़्क मिले जो उनके कदमों के नीचे पैदा नहीं होता। यह गोया उन्हें शाकिर (कृतज्ञ) बनाने का ख़ुसूसी एहतिमाम था। ग़ैर मामूली नेमत से आदमी के अंदर शुक्र का ग़ैर मामूली जज्बा उभरता है। और यही वह हिक्मत है जो हजरत इब्राहीम की इस दुआ में छुपी हुई थी कि सहरा में उन्हें फलों की रोजी दे।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَي اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ (38) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَي الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ (39) رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ڰ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ (40) رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ (41)

ऐ हमारे रब, तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम जाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में। शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक दिए। बेशक मेरा रब दुआ का सुनने वाला है। ऐ मेरे रब, मुझे नमाज कायम करने वाला बना। और मेरी औलाद में भी। ऐ मेरे रब मेरी दुआ कुबूल कर। ऐ हमारे रब, मुझे माफ फरमा और मेरे वालिदेन को और मोमिनीन को, उस रोज जबकि हिसाब कायम होगा। (38-41)

हजरत इब्राहीम की इस दुआ में वे तमाम जज्बात झलक रहे हैं जो एक सच्चे बंदे के अंदर ख़ुदा को पुकारते हुए उमंडते हैं। उसकी बंदगी जोर करती है कि वह ख़ुदा के सामने अपनेइज्ज (निर्बलता) का इकरार करे। जो कुछ मांगे जरूरतमंदी की बुनियाद पर मांगे न कि इस्हक़ (अधिकार) की बुनियाद पर। एक तरफ वह मिली हुई नेमतों का एतराफ करे और दूसरी तरफ अदब के तमाम तकाजों के साथ अपनी दरख़्वास्त पेश करे। वह इकरार करे कि ख़ुदा देने वाला है और इंसान पाने वाला।

वह अपने रब से यह तौफीक मांगे कि वह दुनिया में उसका परस्तार बनकर रहे। इसी की दरख़्वास्त वह अपने लिए भी करे और अपने अहले ख़ानदान के लिए भी और इसी की दरख़्वास्त तमाम मोमिनीन के लिए भी। दुआ के वक्त उसके सामने जो सबसे बड़ा मसला हो वह दुनिया का न हो बल्कि आख़िरत का हो जहां अबदी तौर पर आदमी को रहना है।

इन आदाब के साथ जो दुआ की जाए वह पैग़म्बराना दुआ है और ऐसी दुआ अगर सच्चे दिल से निकले तो वह जरूर ख़ुदा के यहां कुबूलियत का दर्जा हासिल करती है।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ڛ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ (42) مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَاۗءٌ (43)

और हरगिज मत ख़्याल करो कि अल्लाह इससे बेख़बर है जो जालिम लोग कर रहे हैं। वह उन्हें उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी। वे सिर उठाए हुए भाग रहे होंगे। उनकी नजर उनकी तरफ हटकर न आएगी और उनके दिल बदहवास होंगे। (42-43)

आदमी के सामने हक आता है तो वह उसका मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो जाता है। वह उसके मुकाबले में ऐसी बेख़ौफी का मुजाहिरा करता है जैसे कि उससे ज्यादा बहादुर दुनिया में और कोई नहीं।

मगर यही हक जो मौजूदा दुनिया में 'दाओ' की सतह पर जाहिर होता है वह आख़िरत में 'ख़ुदा' की सतह पर जाहिर होगा। उस दिन ऐसे लोगों की सारी बहादुरी जाती रहेगी। आख़िरत का हौलनाक मंजर देखकर उनका यह हाल होगा कि जब उनकी निगाहें उठेंगी तो वे उठी की उठी रह जाएंगी, पलक झपकने की नौबत भी नहीं आएगी। वे सर उठाए हुए तेजी से मैदाने हश्र की तरफ भाग रहे होंगे। और उनके दिल दहशत की वजह से उड़ रहे होंगे।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۭ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ (44) وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ (45) وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ (46)

और लोगों को उस दिन से डरा दो जिस दिन उन पर अजाब आ जाएगा। उस वक्त जालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत(आह्वान) कुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे। क्या तुमने इससे पहले कसमें नहीं खाई थीं कि तुम पर कुछ ज़्वाल (पतन) आना नहीं है। और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने जानों पर जुल्म किया। और तुम पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया। और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। और उन्होंने अपनी सारी तदबीरें (युक्तियां) कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। अगरचे उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएं। (44-46)

आदमी का हाल यह है कि एक दिन पहले तक भी वह अपने अंजाम का एहसास नहीं करता। उसे अगर कोई कुव्वत या हैसियत हासिल हो तो वह इस तरह अकड़ता है गोया कि उसकी हैसियत कभी उससे छिनने वाली नहीं। वह ख़ुदा की दावत (आह्वान) को ठुकराता है और भूल जाता है कि वह जिन चीजों के बल पर उसे ठुकरा रहा है वे सब ख़ुदा की ही दी हुई हैं। उसके सामने दलाइल आते हैं मगर वह उन पर ध्यान नहीं देता। माजी के सरकशों का अंजाम उसके सामने होता है मगर वह समझता है कि जो कुछ हुआ वह सिर्फ दूसरों के लिए था। ख़ुद उसके अपने लिए कभी ऐसा होने वाला नहीं।

मौजूदा दुनिया में जिन लोगों को मवाकेअ (अवसर) हासिल हैं वे हक को नजरअंदाज करने में फख़्र महसूस करते हैं। मगर मौत के बाद जब वे अपनी सरकशी का अंजाम देखेंगे

तो उन्हें अपने माजी पर इस कद्र शर्म आएगी कि वे चाहेंगे कि अगर उन्हें दुबारा मोहलत मिले तो वे मौजूदा दुनिया में आकर ख़ुद अपनी तरदीद (खंडन) करें। और उस चीज को मान लें जिसका इससे पहले उन्होंने फख्रिया तौर पर इंकार कर दिया था।

हक की मुख़ालिफत ख़ुदा की मुख़ालिफत है। जिस हक के साथ ख़ुदा हो उसकी मुख़ालिफत करने वाले हमेशा नाकाम रहते हैं, चाहे वे उसके ख़िलाफ इतनी बड़ी तैयारियों के साथ आए हों जो पहाड़ को हिलाने के लिए भी काफी साबित हो।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

पस तुम अल्लाह को अपने पैग़म्बरों से वादाख़िलाफी करने वाला न समझो। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। जिस दिन यह जमीन दूसरी जमीन में से बदल जाएगी और आसमान भी। और सब एक जबरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। और तुम उस दिन मुजरिमों को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे। उनके लिबास तारकोल के होंगे। और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसके किए का बदला दे। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। यह लोगों के लिए एक एलान है और ताकि इसके जरिए से वे डरा दिए जाएं। और ताकि वे जान लें कि वही एक माबूद (पूज्य) है और ताकि दानिशमंद (प्रबुद्ध) लोग नसीहत हासिल करें। (47-52)

पैग़म्बर ख़ुदा के दीन की गवाही अपनी कामिल सूरत में देता है। इसलिए पैग़म्बर के साथ ख़ुदा की नुसरत (मदद) भी अपनी कामिल सूरत में आती है। बाद के पैरोकार जितना-जितना पैगम्बर के नमूने पर पूरे उतरेंगे उतना-उतना वे ख़ुदा की नुसरत के मुस्तहिक होते चले जाएंगे।

आज इंसान जमीन पर ऐसा महसूस करता है जैसे वह ख़ुश्की और तरी का मालिक हो। वह फजाओं और ख़लाओं (अंतरिक्ष) को कंट्रोल कर सकता है। वह इख़्तियार रखता है कि यहां के वसाइल को जिस तरह चाहे इस्तेमाल करे और जिस तरह चाहे इस्तेमाल न करे। मगर ये सब कुछ सिर्फ इसलिए है कि ख़ुदा ने इम्तेहान की मुद्दत तक जमीन व आसमान को इंसान के लिए मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) कर रखा है। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही हालात यकसर बदल जाएंगे। इसके बाद जमीन भी दूसरी जमीन होगी और आसमान भी दूसरा आसमान। इंसान अचानक अपने को एक और ही दुनिया में पाएगा।

जहां आदमी अपने आपको हुक्मरां समझता है वहां सारी हुकूमत सिर्फ ख़ुदा के लिए हो

चुकी होगी। जहां हर चीज उसके हुक्म के ताबेअ थी वहां हर चीज उसकी ताबेदारी करना छोड़ देगी। मौजूदा दुनिया में जो लोग बड़े बने हुए थे वे उस दिन बेबस मुजरिम के रूप में नजर आएंगे। जो लिबास आज जिस्म को जीनत (सज्जा) देता है वह उस दिन ऐसा हो जाएगा जैसे जिस्म के ऊपर तारकोल फेर दी गई हो। पुररौनक चेहरे उस दिन आग में झुलसे हुए होंगे। और यह सब कुछ उन लोगों के साथ होगा जो दुनिया में ख़ुदा का बंदा बनकर रहने पर राजी न हुए। जिन्होंने ख़ुदा की तरफ से होने वाले एलान को नजरअंदाज किया।

हकीकत का हकीकत होना काफी नहीं है कि आदमी उसे मान ले। हकीकत को मानने के लिए जरूरी है कि आदमी ख़ुद भी उसे मानना चाहे। जो शख़्स हकीकत के मामले में संजीदा हो, जो ख़ाली जेहन होकर उसे सुने वही हकीकत को समझेगा, वही हकीकत का सही इस्तकबाल करने में कामयाब होगा।

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اٰيَاتُهَا ٩٩ رُكُوْعَاتُهَا ٦

الٓرٰ ۗ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾

आयतें-99 सूरह-15. अल-हिज्र रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। ये आयतें हैं किताब की और एक वाजेह (सुस्पष्ट) **कुरआन की। वह वक्त आएगा जब इंकार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे मानने वाले बने होते। उन्हें छोड़ो कि वे खाएं और फायदा उठाएं और ख़्याली उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रखे, पस आइंदा वे जान लेंगे। और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक किया है उसका एक मुकर्रर वक्त लिखा हुआ था। कोई कौम न अपने मुकर्रर वक्त से आगे बढ़ती और न पीछे हटती।** (1-5)

दुनिया में इंसान को जो आजादी मिली हुई है वह सिर्फ इम्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। यह एक बहुत नाजुक सूरतेहाल है। अगर आदमी वाकई तौर पर इसे सोचे तो वह ऐसा महसूस करेगा कि जो मुद्दत कल ख़त्म होने वाली है वह गोया आज ख़त्म हो चुकी है। यह ख़्याल उसे हिलाकर रख देगा। मगर आदमी सिर्फ 'आज' में जीता है, वह 'कल' पर ध्यान नहीं देता। उसके सामने हकीकत खोली जाती है मगर वह ख़ुशफहमियों में मुब्तिला होकर रह जाता है। वह खुदसाख़्ता तौर पर कुछ फर्जी सहारे तलाश कर लेता है और समझता है कि ये सहारे फैसले के वक्त उसके काम आएंगे।

मगर ग़फ़लत और ख़ुशगुमानी का तिलिस्म उस वक्त टूट जाता है जब मुद्दत ख़त्म होती है और ख़ुदा के फ़रिश्ते उसके पास आ जाते हैं ताकि उसे इम्तेहान की दुनिया से निकाल कर अंजाम की दुनिया में पहुंचा दें।

उस वक्त उसे वे मौके याद आने लगते हैं जबकि उसने एक सच्ची दलील को झूठे अल्फ़ाज के जरिए रद्द करने की कोशिश की थी। जब उसने जमीर की आवाज को छोड़कर अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की थी। जब उसने ख़ुदा के दाओी में ख़ुदा की झलकियां पाने के बावजूद ज़ाती पिंदार की ख़ातिर उसे नजरअंदाज कर दिया था। जब वह देखेगा कि मेरी कोई तदबीर मेरे काम नहीं आई तो वह कहेगा कि काश मैंने वह न किया होता जो मैंने किया। काश मैं 'मुंकिर' का तरीका इख़्तियार करने के बजाए 'मुस्लिम' का तरीका इख़्तियार करता।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۞ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۞ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ۞

और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह शख़्स जिस पर नसीहत उतरी है तू बेशक दीवाना है। अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता। हम फ़रिश्तों को सिर्फ फ़ैसले के लिए उतारते हैं और उस वक्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती। (6-8)

पैग़म्बर के मुख़ातबीन ने पैग़म्बर के ऊपर दीवानगी का शुबह किया। इसकी वजह क्या थी। इसकी वजह पैग़म्बर की दावत थी जिसका मतलब यह था कि 'मैं ख़ुदा का नुमाइंदा हूं। जो शख़्स मेरी बात मानेगा वह कामयाब होगा और जो शख़्स नहीं मानेगा वह नाकाम होकर रह जाएगा।'

मगर ये मुख़ातबीन अमलन जो कुछ देख रहे थे वह इसके बरअक्स था। उनका अपना यह हाल था कि उन्हें वक्त के राइज निजाम में सरदारी और पेशवाई का मकाम हासिल था। दूसरी तरफ पैग़म्बर एक ग़ैर रवाजी दीन का दाओी होने की वजह से राइज निजाम में बेहैसियत और अजनबी बना हुआ था। इस फ़र्क की बिना पर मुख़ातबीन को यह कहने की जुरअत हुई कि तुम हमें दीवाना मालूम होते हो। हर किस्म की दुनियावी ख़ूबियां तो ख़ुदा ने हमें दे रखी हैं और तुम कहते हो कि कामयाबी तुम्हारे लिए है और तुम्हारा साथ देने वालों के लिए।

मगर यह उनके जाविय-ए-नजर (दृष्टिकोण) का फ़र्क था। वे अपनी चीजों को 'इनाम' के तौर पर देख रहे थे। हालांकि ये तमाम चीजें सिर्फ 'आजमाइश' का सामान हैं जो मौजूदा दुनिया में किसी को वक्ती तौर पर दी जाती हैं।

वे ये भी कहते थे कि तुम्हारे दावे के मुताबिक तुम्हारे पास ख़ुदा के फ़रिश्ते आते हैं तो ये फ़रिश्ते हमें क्यों नहीं दिखाई देते। यह भी जाविय-ए-नजर के फ़र्क की बिना पर था। पैग़म्बर के पास जो फ़रिश्ता आता है वह 'वही' (प्रकाशना) का फ़रिश्ता होता है जो ख़ुदा का कलाम पैग़म्बर तक पहुंचाता है। इसके अलावा ख़ुदा के वे फ़रिश्ते भी हैं जो इसलिए आते हैं

कि वे हकीकत को लोगों के सामने बेनकाब कर दें। मगर वे दावत (आह्वान) की तक्मील के बाद आते हैं और जब वे आते हैं तो यह फ़ैसला करने का वक्त होता है न कि ईमान की तरफ बुलाने का।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۞

यह याददिहानी (किताब) हम ही ने उतारी है और हम ही इसके मुहाफ़िज (संरक्षक) हैं। (9)

कुरआन को ख़ुदा ने उतारा है और वही उसकी हिफ़ाजत करने वाला है। नुज़ूले कुरआन के वक्त इस इर्शाद का बराहेरास्त ख़िताब कुरैश से था। मगर वसीअतर मअनों में यह पूरी इंसानियत के लिए एक चैलेन्ज था। इस तरह सातवीं सदी ईसवी से लेकर कियामत तक के इंसानों के सामने एक ऐसा कतई मेयार रख दिया गया जिसके ऊपर जांच कर वे देख सकें कि कुरआन वाकई ख़ुदा की किताब है या नहीं।

जिस वक्त यह चैलेन्ज दिया गया उस वक्त तमाम जाहिरी इम्कानात इसके सरासर ख़िलाफ थे। किसी निजाई (विवादित) किताब को मुस्तकिल तौर पर महफ़ूज रखने के लिए ताक्तवर जमाअत दरकार है। और नुज़ूले कुरआन के वक्त उसके हामिलीन (धारक) अपने दुश्मनों के मुकाबले में बिल्कुल कमजोर हैसियत रखते थे। काग़ज और प्रेस का दौर भी दुनिया में नहीं आया था जिसने मौजूदा जमाने में किसी किताब की हिफ़ाजत को बहुत आसान बना दिया है। किताब जैसी एक चीज को महफ़ूज रखने के लिए उसकी जबान को महफ़ूज रखना भी लाजिमी तौर पर जरूरी था, जबकि तारीख़ बताती है कि कोई जबान कभी मुस्तकिल तौर पर बाकी नहीं रहती। कुरआन मौजूदा साइंसी दौर से बहुत पहले रिवायती (परम्परागत) दौर में आया। ऐसी हालत में इसके जिंदा और महफ़ूज रहने के लिए जरूरी था कि उसके मजामीन अबदी (सर्वांगीण) जांच में पूरे उतरें।

इन तमाम चैलेन्जों को मुकाबला करते हुए कुरआन पूरी तरह महफ़ूज (सुरक्षित) रहा। और आज भी वह पूरी तरह महफ़ूज है। यह इस बात का कतई सुबूत है कि यह ख़ुदा की किताब है। डेढ़ हजार साल पहले के दौर में तैयार की जाने वाली कोई भी किताब इस तरह जिंदा और महफ़ूज नहीं जिस तरह कुरआन आज जिंदा और महफ़ूज है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ۞ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۞ كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۞ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۞ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۞ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ۞

और हम तुमसे पहले गुजरी हुई कौमों में रसूल भेज चुके हैं। और जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मजाक उड़ाते रहे। इसी तरह हम यह (मजाक) मुजरिमीन के दिलों

में डाल देते हैं। वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे। और यह दस्तूर अगलों से होता आया है। और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाजा खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते तब भी वे कह देते कि हमारी आंखों को धोखा हो रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (10-15)

हर दौर में ख़ुदा के पैग़म्बरों का मजाक उड़ाया गया है। इसकी वजह यह थी कि लोगों ने बतौर ख़ुद जो फ़र्जी मेयार किसी को ख़ुदा का नुमाइंदा क़रार देने के लिए बना रखे थे, उस पर उनके पैग़म्बर पूरे नहीं उतरते थे। इस मेयार के एतबार से पैग़म्बर उन्हें कमतर नजर आता था। इसलिए लोगों ने पैगम्बरों को इस्तहजा (मज़ाक) का विषय बना लिया।

किसी नई हकीकत को पाने के लिए जरूरी है कि आदमी खुले जेहन के साथ सोचने और ख़ालिस वाकेयात की बुनियाद पर राय कायम करने के लिए तैयार हो। जो लोग सच्चाई का इंकार करते हैं वे अक्सर इसलिए ऐसा करते हैं कि सच्चाई उन्हें अपने मानूस (परिचित) मेयार के एतबार से अजनबी मालूम होती है। यह मानूस मेयार लम्बे अर्से के बाद उनके दिल में ऐसा रच बस जाता है कि उससे बाहर निकल कर सोचना उनके लिए नामुमकिन हो जाता है। वे आख़िर वक्त तक भी अपने मानूस दायरे से बाहर की सच्चाई को पहचान नहीं पाते।

कौमों के इसी मिजाज का नतीजा था कि मोजिजे को देखकर भी लोग ईमान नहीं लाए। जिस शख़्सियत के बारे में उनके जाहिरी हालात की बिना पर उनका यह जेहन बन गया था कि यह एक मामूली आदमी है वह फिर भी उनकी नजर में मामूली ही रहा। बाद को अगर उसने कोई ख़ारिके आदत (अस्वाभाविक) चीज दिखाई तो चूंकि दूसरे पहलुओं के एतबार से वह बजाहिर अब भी उनके लिए ग़ैर अहम था, उन्होंने समझ लिया कि यह कोई जादू या नजरबंदी है। न कि हकीकतन उसके ख़ुदा के नुमाइंदे होने का सुबूत।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٨﴾

और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रौनक दी। और उसे हर शैतान मर्दूद से महफूज किया। अगर कोई चोरी छुपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक रोशन शोला उसका पीछा करता है। (16-18)

कायनात में बेशुमार सितारे फैले हुए हैं। मगर ये सितारे मज्मूओं (संग्रह) की सूरत में हैं। हर एक मज्मूऐ को एक कहकशां कहा जाता है। हो सकता है कि बुरूज से मुराद ये कहकशाएं हों।

'जय्यन्नाहा लिन्नाजिरीन' में सादा तौर पर सिर्फ 'जीनत' (सजावट) मुराद नहीं है बल्कि आसमान का वह हैरानकुन मंजर मुराद है जो रात के वक्त उसका होता है। रात को जब बादल और गर्द व ग़ुबार न हों, खुले मैदान में खड़े होकर आसमान की तरफ नजर डालें तो वसीअ आसमान में जगमगाते हुए सितारों का मंजर इतना हैरानकुन हद तक शानदार होता है कि आदमी उसे देखकर ख़ुदा की अज़्मत व जलाल के एहसास में डूब जाए।

जो लोग पैग़म्बर से कहते थे कि आसमान से फरिश्ता उतरता हुआ हमें दिखाओ उनसे कहा गया कि तारों भरे आसमान का वह मंजर जो हर रोज तुम्हारे सामने खोला जाता है क्या वह तुम्हारे शुऊर को जगाने और तुम्हारे दिलों को पिघलाने के लिए कम है कि तुम दूसरे मोजिज़ात का तक़ाजा करते हो।

जमीन पर इंसान के साथ शैतान भी बसाए गए हैं। यहां शयातीन को पूरी आजादी है कि वे जिधर चाहे जाएं और जिस तरह चाहें लोगों को बहकाएं। मगर जमीन से मावरा (परे) जो ख़ुदा की दुनिया है उसमें शयातीन की परवाज के लिए नाकाबिले उबूर (अलांघनीय) रुकावटें कायम कर दी गई हैं। वे एक ख़ास हद से आगे उसके अंदर दाख़िल नहीं हो पाते।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْزُونٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿٢٠﴾

और हमने जमीन को फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज एक अंदाजे से उगाई। और हमने तुम्हारे लिए उसमें मईशत (जीविका) के असबाब बनाए और वे चीजें जिन्हें तुम रोजी नहीं देते। (19-20)

भौगोलिक अध्ययन बताता है कि जमीन इब्तिदा में ख़ुश्क गोले की सूरत में थी फिर वह फटी जिसकी वजह से समुद्र की गहराइयां पैदा हुई और उनमें पानी जमा हो गया। इन गहराइयों को संतुलित रखने के लिए जमीन पर जगह-जगह ऊंचे पहाड़ उभर आए।

इसके बाद जमीन पर नबातात (वनस्पति) और हैवानात वजूद में आए और ख़ूब फैले। उनमें से हर एक के अंदर बढ़ने की लामहदूद सलाहियत (असीम क्षमता) है मगर उन्हें देखने से साफ मालूम होता है कि हर एक का एक अंदाजा मुकर्रर है। हर चीज बढ़ते-बढ़ते एक ख़ास हद पर रुक जाती है, वह उससे आगे नहीं जाने पाती।

मसलन पौधों और दरख़्तों में अपनी नस्ल बढ़ाने की इतनी ज्यादा इस्तेदाद (सामर्थ्य) है कि अगर किसी एक पौधे को उसकी अंदरूनी इस्तेदाद के एतबार से बिला रोक टोक बढ़ने दिया जाए तो चन्द साल के अंदर सारी सतहे जमीन पर हर तरफ बस वही पौधा नजर आएगा। किसी दूसरी चीज के लिए यहां कोई जगह बाकी न रहेगी। मगर ऐसा मालूम होता है कि कोई जबरदस्त नाज़िम (व्यवस्थापक) है जो हर एक पर कंट्रोल कायम किए हुए है। यही मामला हैवानात का है। उनके अंदर भी अफजाइशे नस्ल की लामहदूद सलाहियत है। मगर हर एक की तादाद एक हद पर पहुंच कर रुक जाती है। इसी तरह हैवानात में अपनी जसामत बढ़ाने की इस्तेदाद इतनी ज्यादा है कि एक पतिंगे को बढ़ने दिया जाए तो वह हाथी के बराबर हो जाए। मगर कुदरती कंट्रोल एक ख़ास हद पर उसकी जसामत को रोक देता है। अगर चीजें अपनी हद पर न रुकें तो जमीन पर इंसान की रिहाइश नामुमकिन हो जाए।

इंसान को अपनी मईशत (जीविका) और तमद्दुन (संस्कृति) के लिए बेशुमार चीजें दरकार हैं। ये सारी चीजें ऐन हमारी जरूरत के मुताबिक जमीन पर मुहय्या कर दी गई हैं।

इन तमाम चीजों की फ़राहमी और हर एक की बका (अस्तित्व) का इंतिजाम ख़ुदा की तरफ से है। अगर हमें उन्हें उनका रिज़्क देना हो तो हमारे लिए उनका हुसूल नामुमकिन हो जाए।

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝٢١ وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝٢٢

और कोई चीज ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों और हम उसे एक मुअय्यन (निर्धारित) अंदाजे के साथ ही उतारते हैं। और हम ही हवाओं को बारआवर (वर्षा लाने वाली) बनाकर चलाते हैं। फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं। और तुम्हारे वश में न था कि तुम उसका जख़ीरा जमा करके रखते। (21-22)

हदबंदी का उसूल कायनात की तमाम चीजों में राइज है। हवा एक हद के अंदर चलती है, हालांकि ख़ुदा कभी-कभी दिखाता है कि वह आंधी भी बन सकती है। सूरज एक ख़ास फ़ासले पर है। अगर वह उससे ऊपर चला जाए तो जमीन बर्फ की तरह जम जाए। सूरज नीचे आ जाए तो जमीन जलती हुई भट्टी बन जाए। जमीन की कशिश निहायत मौजूं मिक्दार में है। अगर जमीन की जसामत दुगना होती तो उसकी कशिश इतनी बढ़ जाती कि बोझ की वजह से आदमी के लिए जमीन पर चलना मुश्किल होता। और अगर जमीन की जसामत मौजूदा जसामत से आधे के बराबर कम होती तो उसकी कशिश इतनी घट जाती कि आदमी और उसके मकानात हल्केपन की वजह से जमीन पर ठहर न सकते। यही हाल उन तमाम चीजों का है जिनके दर्मियान इंसान रहता है। हर चीज का एक अंदाजा मुकर्रर है वह न उससे घटता है और न उससे बढ़ता है।

जमीन पर इंसान और तमाम जीवधारियों की जिंदगी का इंहिसार पानी पर है। जेरेजमीन पानी के जख़ीरों लेकर फजाई बादलों तक पानी की फ़राहमी का निजाम इतने अजीब और इतने अजीम पैमाने पर है जिसका कायम करना हरगिज इंसान के बस में नहीं। इस अजीब और अजीम इंतिजाम को ख़ुदा मुसलसल ऐन इंसानी जरूरत के मुताबिक कायम किए हुए है।

इंसान एक बेहद नाज़ुक मख़्लूक है। उसके माहौल में कोई फ़र्क उसकी पूरी हस्ती को तह व बाला कर देने के लिए काफी है। ऐसी हालत में बेशुमार अज्जा (अवयवों) की एक कायनात, लातादाद इम्कानात का हामिल होने के बावजूद, ऐन उसी मख़्सूस इम्कानी अंदाजे पर कायम है जो इंसान जैसी एक मख़्लूक के लिए मुनासिब है। यह एतदाल और तनासुब (संतुलन) हरगिज इत्तफ़ाकी नहीं हो सकता। यकीनन इसका कोई जबरदस्त ख़ालिक और नाजिम है। ऐसी हालत में जो शख़्स ख़ुदा को न माने या ख़ुदा को मान कर उसका शरीक ठहराए वह सिर्फ अपने ग़लत होने का सुबूत देता है न कि अकीदए तौहीद के गलत होने का।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝٢٣ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝٢٤ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝٢٥

और बेशक हम ही जिंदा करते हैं और हम ही मारते हैं। और हम ही बाकी रह जाएंगे और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। और बेशक तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा। वह इल्म वाला है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (23-25)

दुनिया में इंसान को बसाना, फिर यहां से उसे उठा लेना दोनों ख़ुदा की तरफ से होता है। अगर यह इंसान की मर्जी से होता तो वह कभी यहां न आ सकता और आने के बाद कभी यहां से वापस न जाता। इसी से यह भी साबित है कि इंसान की पैदाइश से पहले भी जमीन व आसमान ख़ुदा के थे और इसके बाद भी वे ख़ुदा के रहेंगे।

जमीन पर अनगिनत चीजें हैं। मगर हर एक की एक इंफ़िरादियत (विशिष्टता) है। हर चीज वही ख़ास और निश्चित किरदार अदा करती है जो उसे अदा करना चाहिए। इससे साबित होता है कि जमीन का ख़ालिक एक-एक चीज का इंफ़िरादी इल्म रखता है। वह हर चीज को उसके अपने ख़ुसूसी काल में लगाए हुए है। यहां तक कि एक आदमी के हाथ के अंगूठे पर जो निशान होता है वह भी तमाम दूसरे इंसानों से बिल्कुल मुख़्तलिफ होता है। एक शख़्स के अंगूठे का निशान फिर कभी किसी दूसरे इंसान के साथ दोहराया नहीं जाता।

ऐसे कादिर और बाख़बर ख़ुदा के लिए इसमें क्या मुश्किल है कि वह हर आदमी का अलग-अलग हिसाब ले और हर एक के साथ वही मामला करे जिसका वह फ़िलवाकअ (तस्तुतः) मुस्तहिक है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝٢٦ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ۝٢٧

और हमने इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया और इससे पहले जिन्नों को हमने आग की लपट से पैदा किया। (26-27)

इंसान का वजूद दो चीजों से मुरक्कब है। एक जिस्म और दूसरे रूह। जिस्म तमामतर ज़मीनी माद्दों से बना है। इंसानी जिस्म का तज्जिया बताता है कि वह उन्हीं अज्जा की तरकीब से बना है जिसे आम तौर पर पानी और मिट्टी कहते हैं गोया जिस्म के एतबार से इंसान सरासर एक बेहयात (निर्जीव) और बेशुऊर वजूद का नाम है। मगर जब ख़ुदा उसके अंदर अपने पास से रूह डाल दे तो अचानक यही जिस्म ऐसी सलाहियतों (क्षमताओं) का हामिल बन जाता है जो मालूम कायनात में किसी दूसरी मख़्लूक को हासिल नहीं।

यहां दूसरी मख़्लूक वह है जिसे जिन्न कहते हैं। जिन इंसान के हरीफ (प्रतिपक्षी) हैं। जिन्न आग के शोले से बनाए गए हैं। गोया कि वे ऐन अपनी पैदाइश के एतबार से जलाने वाली मख़्लूक हैं। जिस तरह मिट्टी वाली जमीन अपने आपको आग वाले सूरज से दूर रखती है ताकि वह जल न जाए। इसी तरह इंसान को चाहिए कि वह अपने आपको जिन्नों से बचाए। वर्ना वे उसे अख़्लाकी और दीनी एतबार से जला डालेंगे।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى خَٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن صَلْصَٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾ فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَٰجِدِينَ ﴿٢٩﴾ فَسَجَدَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰٓ أَن يَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ يَٰٓإِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُۥ مِن صَلْصَٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से एक बशर (इंसान) पैदा करने वाला हूं। जब मैं उसे पूरा बना लूं और उसमें अपनी रूह में से फूंक दूं तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना। पस तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से इंकार कर दिया। ख़ुदा ने कहा ऐ इब्लीस, तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। इब्लीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर को सज्दा करूं जिसे तूने सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है। (28-33)

इब्लीस ने सज्दा न करने की वजह बजाहिर यह बताई कि इंसान मेरे मुकाबले में कमतर है। मगर हकीकत यह है कि इसकी वजह ख़ुद इब्लीस का अपना एहसासे कमतरी था। वह यह देखकर जल उठा कि मैं पहले से कायनात में हूं और मुझे यह इज्जत नहीं मिली कि तमाम मख़्लूकात से मुझे सज्दा कराया जाए। और इंसान जो अभी पैदा किया गया है उसे तमाम मख़्लूकात से सज्दा कराया जा रहा है। उसने इंसान को सज्दा करने से इंकार कर दिया। 'इंसान मुझसे कमतर है' का मतलब यह है कि सज्दे का मुस्तहिक दरअस्ल मैं था फिर ग़ैर मुस्तहिक की इज्जत अफजाई को मैं क्योंकर तस्लीम करूं।

यही घमंड और हसद तमाम इज्तिमाई ख़राबियों की जड़ है। मौजूदा दुनिया में ऐसे मौके इंसान के सामने बार-बार आते हैं। जो शख़्स ऐसे मौके पर जलन की नफ्सियात में मुब्तिला न हो उसने फरिश्तों की पैरवी की और जो शख़्स जलन का शिकार हो जाए वह गोया शैतान का पैरोकार बना।

قَالَ فَٱخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ ٱللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِىٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْوَقْتِ ٱلْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

ख़ुदा ने कहा तू यहां से निकल जा क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है, और बेशक तुझ पर रोजे जजा (बदले के दिन) तक लानत है। इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, तू मुझे

उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा, तुझे मोहलत है उस मुकर्रर वक्त के दिन तक। (34-38)

इंसान की तख़्लीक के बाद वाकेयात ने जो रुख़ इख़्तियार किया उसने शैतान को मुस्तकिल तौर पर इंसान का दुश्मन बना दिया। अब कियामत तक के लिए आदमी शैतान की जद में है। इंसान के लिए सबसे ज्यादा काबिले लिहाज बात यह है कि वह शैतान के फरेब से चौकन्ना रहे। मौजूदा दुनिया में यही वह मकाम है जहां इंसान की कामयाबी का फैसला भी हो रहा है और उसी मकाम पर उसकी नाकामी का भी।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, जैसे तूने मुझे गुमराह किया है इसी तरह मैं जमीन में उनके लिए मुजय्यन (दिलकशी) करूंगा और सबको गुमराह कर दूंगा। सिवा उनके जो तेरे चुने हुए बंदे हैं। (39-40)

इब्लीस के सामने एक आजमाइशी सूरतेहाल आई। उसमें वह शिकस्त खा गया। अब उसके लिए सही तरीका यह था कि वह अपनी हार मान ले। मगर इसके बजाए उसने यह किया कि ख़ुद ख़ुदा पर इल्जाम देने लगा कि उसने जो कुछ किया मुझे गुमराह करने के ख़ातिर किया। जिस वाकये से उसकी अपनी कमजोरी साबित हो रही थी उसे उसने चाहा कि ख़ुदा के ऊपर डाल दे। अपनी शिकस्त का जिम्मेदार दूसरों को करार देना इसी शैतानी राह की पैरवी है।

इब्लीस ने इंसान को सज्दा न करने का सबब यह बताया कि इंसान को मिट्टी से बनाया गया है और मुझे आग से। इसकी कोई माकूल वजह नहीं है कि मिट्टी के मुकाबले में आग को फजीलत क्यों हासिल हो। मगर इब्लीस के अपने जेहनी ख़ाने में ख़ुदसाख़्ता तसव्वुर के तहत यह हुआ कि मिट्टी हकीर (तुच्छ) चीज बन गई और आग अफजल चीज। इसी का नाम तज़ईन (मनमोहकता) है। यह एक नफ्सियाती चीज है न कि कोई अक्ली चीज। इब्लीस ने अपनी ग़लती मानने के बजाए यह फैसला किया कि वह दूसरों से भी वही ग़लती कराए। वह ख़ुद जिस नफ्सियाती कमजोरी का शिकार हुआ है, उसी नफ्सियाती कमजोरी में तमाम इंसानों को मुब्तिला कर दे।

इब्लीस ने कहा कि तेरे मुंतख़ब बंदों के अलावा सबको मैं गुमराह करूंगा। ये ख़ुदा के मुंतख़ब बंदे कौन हैं। ये वे लोग हैं जो ख़ुदा के मुकाबले में सीधी राह पर आ चुके हों। यानी बंदगी की राह। बअल्फाजे दीगर, ख़ुदा के मुकाबले में अपनी हैसियते वाकई के एतराफ की राह।

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

अल्लाह ने फरमाया, यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता है। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा। सिवा उनके जो गुमराहों में से तेरी पैरवी करें। और उन सबके लिए जहन्नम का वादा है। उसके सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (41-44)

सिराते मुस्तकीम की तशरीह मुजाहिद और हसन और कतादा से यह मरवी है कि इससे मुराद हक का रास्ता है जो अल्लाह की तरफ निकलता है और उसी पर ख़त्म होता है। अगर आदमी शिर्क की राह चले तो वह राह ख़ुदा तक नहीं पहुंचेगी बल्कि शरीकों तक पहुंचेगी। वह अगर सरकशी का तरीका इख़्तियार करे तो उसकी मंजिल आदमी का अपना वजूद होगा न कि ख़ुदा। अगर वह बेकेंद्र होकर जिंदगी गुजारे तो वह मुख़्तलिफ सम्तों में भटकेगा। उसका सफर ख़ुदा पर ख़त्म नहीं हो सकता।

मगर जब आदमी सिर्फ ख़ुदा को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाता है और उसी को सब कुछ समझ कर अपनी जिंदगी को ख़ुदा के रुख़ पर चलाता है तो बिल्कुल कुदरती बात है कि उसका सफर ख़ुदा की तरफ जारी हो और बिलआख़िर वह ख़ुदा तक पहुंच जाए। ख़ुदा कादिर है और इंसान आजिज। इसलिए ख़ुदा और बंदे के दर्मियान एक ही सही निस्बत है और वह अबदियत (बंदगी) की निस्बत है। अबदियत की रविश इख़्तियार करना ख़ुदा के साथ अपनी सहीतरीन निस्बत को पा लेना है। जिस शख़्स की निस्बत ख़ुदा के साथ कायम हो जाए उस पर शैतान का जोर नहीं चलता। और जिसने ख़ुदा के साथ अपनी निस्बत कायम न की उसकी निस्बत शैतान के साथ कायम हो जाती है। फिर वह शैतान के मश्वरों पर चलने लगता है। यहां तक कि वहीं पहुंच जाता है जहां बिलआख़िर शैतान को पहुंचना है।

जहन्नम जो शैतान और उसके साथियों का आख़िरी ठिकाना है। उसके सात दर्जे हैं। जहन्नमी लोग अपने आमाल के फर्क के लिहाज से सात बड़े गिरोहों में तक्सीम किए जाएंगे और उसके मुताबिक जहन्नम के सात तबकों में से किसी एक तबके में जगह पाएंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

बेशक डरने वाले बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में होंगे। दाख़िल हो जाओ इनमें सलामती और अम्न के साथ। और उनके सीनों की कुदूरतें (मन-मुटाव) हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे तख़्तों पर आमने सामने। वहां उन्हें कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। मेरे बंदों को ख़बर दे दो कि मैं बख़्शने वाला रहमत वाला हूं और मेरी सजा दर्दनाक सजा है। (45-50)

जन्नत की जिंदगी बेख़ौफ जिंदगी होगी। उसके मुस्तहिक वे लोग करार पाएंगे जिन्होंने दुनिया में ख़ुदा का ख़ौफ किया। दुनिया में ख़ुदा का ख़ौफ आख़िरत की बेख़ौफी की कीमत है।

आपस की रंजिशें दो किस्म की होती हैं। एक सरकशी की वजह से, दूसरी ग़लतफहमी की वजह से। सरकशी की बिना पर रंजिश और इनाद (दुराव) पैदा होना सबसे बड़ी इज्तिमाई बुराई है। अहले ईमान को उसे दुनिया ही में ख़त्म कर लेना चाहिए। जो लोग इसे दुनिया में ख़त्म न करें वे आख़िरत में जहन्नम का ख़तरा मोल ले रहे हैं।

दूसरी रंजिश वह है जो ग़लतफहमी की वजह से पैदा होती है। वह कभी ख़त्म हो जाती है और कभी तरफैन (पक्षों) के इख़्लास के बावजूद आख़िर वक्त तक बाकी रहती है। यह दूसरी किस्म की रंजिश आख़िरत में मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो जाएगी। क्योंकि आख़िरत हकीकतों के कामिल जुहूर की दुनिया है। जब तमाम हकीकतें बेनकाब होकर सामने आ जाएंगी तो एक मुख़्लिस आदमी के लिए कोई वजह बाकी न रहेगी कि वह क्यों अपने भाई के ख़िलाफ ख़्वामख़्वाह रंजिश रखे।

जन्नत की जिंदगी इतनी लतीफ और नफीस जिंदगी है कि मौजूदा दुनिया में इसका तसव्वुर नहीं किया जा सकता। ताहम मौजूदा दुनिया की लज्जतें और ख़ुशियां आने वाली लज्जतों और ख़ुशियों की दुनिया का एक इब्तिदाई तआरुफ हैं। हर आदमी समझ सकता है कि जिस जन्नत का तआरुफ इतना लजीज हो वह ख़ुद कितनी ज्यादा लजीज होगी।

मौजूदा दुनिया में कोई शख़्स बिलफर्ज हर किस्म की लज्जतें जमा कर ले तब भी तरह-तरह की नाख़ुशगवारियां उसकी हर लज्जत को बेमअना बना देती हैं। मगर जन्नत एक ऐसी जगह है जिसकी लज्जतें हर किस्म की नाख़ुशगवारियों से पाक होंगी। हदीस में आया है कि अहले जन्नत से कहा जाएगा कि अब तुम हमेशा सेहतमंद रहोगे और कभी बीमार न होगे अब तुम हमेशा जियोगे और कभी न मरोगे। अब तुम हमेशा जवान रहोगे और कभी बूढ़े न होगे। अब तुम हमेशा यहां रहोगे तुम्हें यहां से कभी जाना न होगा।

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشَّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَانِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾

और उन्हें इब्राहीम के महमानों से आगाह करो। जब वे उसके पास आए फिर उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने कहा कि हम तुम लोगों से डरते हैं हैं। उन्होंने कहा कि अंदेशा न करो हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जो बड़ा आलिम होगा। इब्राहीम ने कहा क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो। पस तुम किस चीज की बशारत मुझे दे रहे हो। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें हक के साथ बिशारत देते हैं। पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा कि अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन नाउम्मीद हो सकता है। (51-56)

हजरत इब्राहीम के पास फरिश्ते इंसानी सूरत में आए। सवाल व जवाब के दौरान उन्होंने कहा कि हम हक के साथ आए हैं। यह हक (अम्रे वाकई) क्या था जिसके लिए फरिश्ते हजरत इब्राहीम के पास आए। यह एक गैर मामूली इनाम की बशारत थी जिसकी आम हालात में उम्मीद नहीं की जा सकती। इंसान पर जब ख़ुदा कोई ग़ैर मामूली इनाम करना चाहता है तो उसकी तक्मील के लिए वह उसके पास ख़ुसूसी फरिश्ते भेजता है।

इस किस्म के फ़रिश्ते पैग़म्बरों के पास भी आते हैं और ग़ैर पैग़म्बरों के पास भी। फर्क यह है कि पैग़म्बरों के पास फरिश्ते आते हैं तो वह उन्हें देखता है और शुऊरी तौर पर वाकिफ होता है कि ये फरिश्ते हैं। मगर आम इंसान को इस किस्म का यकीनी इदराक (भान) नहीं होता। अलबत्ता फरिश्तों की ख़ुसूसी कुरबत उसके अंदर ख़ुसूसी कैफियात पैदा कर देती है। यह कैफियात गोया इसका इशारा होती हैं कि इस वक्त आदमी ख़ुदा के भेजे हुए ख़ुसूसी फरिश्तों की सोहबत में है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝ إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ۝

कहा ऐ भेजे हुए फरिश्तो अब तुम्हारी मुहिम क्या है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम की तरफ भेजे गए हैं। मगर लूत के घर वाले कि हम उन सबको बचा लेंगे सिवाए उसकी बीवी के कि हमने ठहरा लिया है कि वह जरूर मुजरिम लोगों में रह जाएगी। (57-60)

हजरत इब्राहीम फिलिस्तीन में रहते थे। इसके करीब ही बहरे मुर्दार (Dead Sea) के किनारे आपके भतीजे हजरत लूत थे। हजरत लूत ने इस इलाके में बसने वालों पर तब्लीग़ की। मगर वे इस्लाह कुबूल करने पर राजी न हुए। उनकी सरकशी बढ़ती चली गई। यहां तक कि ख़ुदा का फैसला यह हुआ कि उन्हें हलाक कर दिया जाए। ये फरिश्ते उसी ख़ुदाई फैसले के निफाज के लिए आए थे।

ग़ालिबन हजरत लूत के चन्द अहले ख़ानदान के सिवा और कोई शख़्स उन पर ईमान न लाया। घर से बाहर वालों के लिए हक के दाऔ को कुबूल करना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि उनके लिए बहुत सी नफ्सियाती रुकावटें हायल हो जाती हैं। ताहम ख़ुद अपने ख़ूनी

रिश्तेदारों के लिए ये रुकावटें नहीं होतीं। चुनांचे ये लोग निस्बतन ज्यादा आसानी के साथ हक के दाऔ के साथी बन जाते हैं।

हजरत लूत के साथ ऐसा ही हुआ। आपकी दावत पर ग़ालिबन सिर्फ आपकी लड़कियां ईमान लाईं। औलाद को अपने बाप से जो ख़ुसूसी तअल्लुक होता है वह बाप की दावत (आह्वान) को कुबूल करने में ख़ुसूसी मददगार बन जाता है। उन लड़कियों ने हजरत लूत के साथ नजात पाई। मगर आपकी बीवी दिल से आपकी मोमिन न बन सकी। चुनांचे उसे दूसरे मुजरिमों के साथ हलाक कर दिया गया। ख़ुदा के कानून में महज रिश्तेदारी की बुनियाद पर किसी के साथ कोई रिआयत नहीं की जाती।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ۝ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ۝ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُصْبِحِينَ ۝

फिर जब भेजे हुए फरिश्ते लूत के ख़ानदान के पास आए। उन्होंने कहा कि तुम लोग अजनबी मालूम होते हो। उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि हम तुम्हारे पास वह चीज लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक करते हैं। और हम तुम्हारे पास हक के साथ आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं। पस तुम कुछ रात रहे अपने घर वालों के साथ निकल जाओ। और तुम उनके पीछे चलो और तुम में से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहां चले जाओ जहां तुम्हें जाने का हुक्म है। और हमने लूत के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (61-66)

एक 'हक' वह था जिसे लेकर फरिश्ते हजरत इब्राहीम के पास आए थे। दूसरा हक वह है जिसे लेकर वे हजरत लूत के पास पहुंचे। पहला हक ख़ुदा के खुसूसी इनाम की सूरत में था। दूसरा हक ख़ुदा की ख़ुसूसी सजा की सूरत में।

हजरत लूत के पास फरिश्ते इंसान की सूरत में आए। ये फरिश्ते इसलिए आए थे कि वे पैग़म्बर को न मानने वालों के दर्मियान वह फैसला नाफिज कर दें जो ख़ुदा ने उनकी सरकशी की बिना पर उनके लिए मुकद्दर किया है। उनकी हिदायत के मुताबिक हजरत लूत रात के अंधेरे में दूसरे अहले ईमान को लेकर बस्ती से निकल गए। इसके बाद सुबह सवेरे शदीद जलजलों के धमाकों से वह पूरा इलाका तलपट हो गया। तमाम मुंकिरीन इंतिहाई बेदर्दी के साथ हलाक कर दिए गए।

यह हलाकत कहां हुई। यह उनकी उसी दुनिया में हुई जिसे वे अपनी दुनिया समझे हुए थे। जहां की हर चीज उन्हें अपनी साथी और मददगार दिखाई देती थी। ख़ुदा जब हुक्म देता है तो ऐन वही नक्शा आदमी के लिए हलाकत का नक्शा बन जाता है जिसे वह अपने लिए

कामयाबी का नक़्शा समझे हुए था। जिस महल के अंदर अपने आपको पाकर आदमी फख़्र करता है उस महल को इस तरह खंडहर कर दिया जाता है जैसे कि वह एक मलबा था जो आदमी के सिर पर पटक दिया गया।

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾ قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿٦٩﴾ قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ﴿٧١﴾

और शहर के लोग ख़ुश होकर आए। उसने कहा ये लोग मेरे महमान हैं, तुम लोग मुझे रुसवा न करो। और तुम अल्लाह से डरो और मुझे जलील न करो। उन्होंने कहा, क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर दिया। उसने कहा ये मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है। (67-71)

कौमे लूत की बस्ती (सदूम) में जो फरिश्ते आए वे निहायत ख़ूबसूरत नौजवान की सूरत में आए। यह गोया फ़हहाशी (अश्लीलता) में डूबी हुई उस कौम की जांच का आख़िरी पर्चा था। चुनांचे ये लोग अपनी बढ़ी हुई सरकशी की बिना पर उन नौजवानों पर टूट पड़े। वे हस्बे आदत उनके साथ बदकारी करना चाहते थे। मगर उन्हें मालूम न था कि वे जिन्हें पुरकशिश नौजवान समझ रहे हैं वे दरअस्ल अजाब के फरिश्ते हैं जो सिर्फ इसलिए आए हैं कि उन्हें हमेशा के लिए जलील करके छोड़ दें।

'मेरी बेटियां' से मुराद कौम की बेटियां हैं। हजरत लूत ने जब देखा कि जालिम लोग मना करने के बावजूद महमानों पर टूटे पड़ रहे हैं तो आपने उनसे कहा कि ख़ुदारा, मेरे महमानों के मामले में मुझे रुसवा न करो। अगर तुम्हें कुछ करना है तो ये कौम की लड़कियां हैं इनमें से जिससे चाहो निकाह कर लो।

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُقِيمٍ ﴿٧٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

तेरी जान की कसम, वे अपनी सरमस्ती में मदहोश थे। पस दिन निकलते ही उन्हें चिंघाड़ ने पकड़ लिया। फिर हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकर के पत्थर की बारिश कर दी। बेशक इसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिए। और यह बस्ती एक सीधी राह पर वाकेअ (स्थिति) है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (72-77)

कौमे लूत का यह हाल क्यों हुआ कि वे सरकशी में आपे से बाहर हो गए। इसकी वजह यह

थी कि उन्होंने मामले को हजरत लूत की निस्बत से देखा। चूंकि वे हजरत लूत के मुक़ाबले में ताकतवर थे। इसलिए उन्होंने समझा कि हम जो चाहें करें। कोई हमारा कुछ बिगाड़ने वाला नहीं।

अगर वे मामले को अल्लाह की निस्बत से देखते तो सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होती। अब उन्हें मालूम होता कि उनकी सरकशी सरासर मजहकाख़ेज (हास्यास्पद) है। क्योंकि ख़ुदा के मुकाबले में किसी भी ताकतवर की कोई हैसियत नहीं। चुनांचे ऐन सुबह को उन पर कड़क चमक का शदीद तूफान आया। ख़ुदा ने हवाओं को हुक्म दिया और उन्होंने कौमे लूत की बस्तियों (सदूम और अमूरा) पर कंकरियों की बारिश शुरू कर दी। कौम की कौम थोड़ी देर में तबाह होकर रह गई।

इस वाकये में ग़ौर करने वालों के लिए यह नसीहत है कि इस दुनिया में किसी का साबिक़ा (सामना) हकीकतन इंसान से नहीं बल्कि ख़ुदा से है। अगर आदमी इस हकीकत को जान ले तो उसकी सारी सरकशी ख़त्म हो जाए।

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُبِينٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾ وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾

और ऐका वाले यकीनन जालिम थे। पस हमने उनसे इंतिकाम लिया। और ये दोनों बस्तियां खुले रास्ते पर वाकेअ (स्थित) हैं। और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। और हमने उन्हें अपनी निशानियां दीं। मगर वे उससे मुंह फेरते रहे और वे पहाड़ों को तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अम्न में रहें। पस उन्हें सुबह के वक्त सख़्त आवाज ने पकड़ लिया। पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया। (78-84)

असहाबे ऐका से मुराद हजरत शुऐब की कौम है। उस कौम का अस्ल नाम बनी मदयान था। ये लोग मौजूदा तबूक के इलाके में आबाद थे। असहाबे हिज्र से मुराद कौमे समूद है जिसकी तरफ हजरत सालेह मबऊस हुए। यह इलाका मौजूदा मदीना के शुमाल में वाकेअ था।

असहाबे ऐका की सरकशी ने उन्हें न सिर्फ शिर्क में मुब्तिला किया बल्कि उन्हें बदतरीन अख़्लाकी जराइम तक पहुंचा दिया। हजरत शुऐब की याददिहानी के बावजूद उन्होंने सबक नहीं लिया तो ख़ुदा ने जमीन को हुक्म दिया। इसके बाद यह हुआ कि जो जमीन उनके लिए गहवार-ए-ऐश बनी हुई थी वही उनके लिए गहवार-ए-अजाब बन गई।

कौमे समूद संग तराशी के फन में माहिर थे। उन्होंने पहाड़ों को काट कर उन्हें शानदार घरों में तब्दील कर दिया था। वे समझते थे कि उन्होंने अपनी हिफाजत का आख़िरी इंतिजाम कर लिया है। जब उन्होंने ख़ुदा की पुकार को नजरअंदाज कर दिया तो ख़ुदा ने हुक्म दिया और उनके अजीम मकानात उनके लिए अजीम कब्रों में तब्दील हो गए।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है हिक्मत (तत्वदर्शिता) के बग़ैर नहीं बनाया और बिलाशुबह कियामत आने वाली है। पस तुम ख़ूबी के साथ दरगुजर (क्षमा) करो। बेशक तुम्हारा रब सबका ख़ालिक (स्रष्टा) है, जानने वाला है। (85-86)

जमीन व आसमान का मुतालआ बताता है कि यह पूरा निज़ाम हददर्जे हिक्मत के साथ बनाया गया है। यहां हर चीज ठीक वैसी ही है जैसा कि उसे होना चाहिए। इस पूरे निजाम में सिर्फ इंसान है जो ख़िलाफे हकीकत रवैया इख़्तियार करता है। इंसान और कायनात में यह तजाद (अन्तर्विरोध) तकाजा करता है कि वह ख़त्म हो। कियामत का अकीदा इस एतबार से ऐन अक्ली और मंतिकी (तर्कपूर्ण) अकीदा है। क्योंकि कियामत के सिवा कोई और चीज नहीं है जो इस तजाद को ख़त्म करने वाली हो।

दावते इलल्लाह के अमल का एक अहम जुज 'एराज' है। यानी मुख़ातब जब ग़ैर मुतअल्लिक बहस और झगड़ा छेड़े तो उसके साथ मशग़ूल होने के बजाए उससे अलग हो जाना। एराज का उसूल इख़्तियार किए बग़ैर दावत का काम मुअस्सिर तौर पर नहीं किया जा सकता।

एराज की मस्लेहत यह है कि मदऊ हमेशा दाऊी (आह्वानकर्ता) से ग़ैर मुतअल्लिक झगड़े छेड़ता है। अब अगर दाऊी यह करे कि हर ऐसे मौके पर मदऊ से लड़ जाए तो ग़ैर मुतअल्लिक उमूर पर टकराव तो ख़ूब होगा मगर अस्ल दावती काम बग़ैर हुए पड़ा रह जाएगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

और हमने तुम्हें सात मसानी और कुरआने अजीम अता किया है। तुम इस दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) की तरफ आंख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ लोगों को दी हैं और उन पर ग़म न करो और ईमान वालों पर अपने शफ्कत (स्नेह) के बाजू झुका दो और कहो कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूं। इसी तरह हमने तक्सीम करने वालों पर भी उतारा था जिन्होंने अपने कुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। पस तेरे रब की कसम, हम उन सबसे जरूर पूछेंगे, जो कुछ वे करते थे। (87-93)

सात मसानी से मुराद सूरह फातिहा है। सूरह फातिहा पूरे कुरआन का ख़ुलासा (सार) है और बकिया कुरआन उसकी तफ्सील। यह कुरआन बिलाशुबह जमीन व आसमान की सबसे बड़ी नेमत है। इसका हिदायतनामा होना इसके मानने वालों के लिए आख़िरत की कामयाबी की जमानत है। और इसका आख़िरी किताब होना लाजिम ठहराता है कि जरूर इसे अपने मुख़ालिफीन (विरोधियों) पर ग़लबा हासिल हो। क्योंकि अगर गलबा न हो तो वह आख़िरी किताब की हैसियत से बाकी नहीं रह सकती।

दाऊी (आह्वानकर्ता) को चाहिए कि जो लोग ईमान नहीं लाते उन्हें सोच कर वह मायूस न हो। बल्कि जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें देखकर मुतमइन हो और उनकी दिलजोई और तर्बियत में पूरी तवज्जोह सर्फ करे।

कुरआन को टुकड़े-टुकड़े करने से मुराद तौरात को टुकड़े-टुकड़े करना है। यहूद ने अपनी आसमानी किताब को अमलन दो हिस्सों में बांट रखा था। उसकी जो तालीम उनकी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ होती उसे वे छोड़ देते और जो उनकी ख़्वाहिशों के मुताबिक होती उसे ले लेते। पहली किस्म की आयतें उनके यहां सिर्फ तकद्दुस (पावनता) के ख़ाने में पड़ी रहतीं। उन पर वे न ज्यादा ध्यान देते और न उन्हें ज्यादा फैलाते। अलबत्ता दूसरी किस्म की आयतों की वे ख़ूब इशाअत (प्रसार) करते। बअल्फाज दीगर उन्होंने किताबे ख़ुदावंदी को अपने मफाद (हितों) के ताबेअ बना लिया था न कि ख़ुदाई अहकाम के ताबेअ।

किसी चीज को पाने के दो दर्जे हैं। एक है उसके अज्जा (अंशों) को पाना। दूसरा है उसे उसकी कुल्ली हैसियत में पाना। दरख़्त को जब आदमी उसकी कुल्ली हैसियत में पहचान ले तो वह कहता है कि यह दरख़्त है। लेकिन अगर वह उसे उसकी कुल्ली हैसियत में न पहचाने तो वह तना और शाख़ और पत्ती और फूल और फल का जिक्र करेगा। वह उस वाहिद (एक) लफ्ज को न बोल सकेगा जिसके बोलने के बाद उसके तमाम मुतफर्रिक (विभिन्न) अज्जाए अस्ल में जुड़कर वहदत (एकत्व) की शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं।

यही मामला ख़ुदा की किताब का है। ख़ुदा की किताब में बहुत से मुतफर्रिक अहकाम हैं। इसी के साथ उसका एक एक कुल्ली और मर्कजी नुक्ता है। जो लोग ख़ुदा की किताब में गुम हों वे ख़ुदा की किताब को उसकी कुल्ली हैसियत में पा लेंगे। इसके बरअक्स जो लोग ख़ुद अपने आप में गुम हों वे ख़ुदा की किताब को देखते हैं तो ख़ुदा की किताब उन्हें बस मुख़्तलिफ और मुतफर्रिक अहकाम का मज्मूआ दिखाई देती है। वे उनमें से अपने जौक और हालात के मुताबिक कोई जुज ले लेते हैं और उस पर इस तरह जोर सर्फ करने लगते हैं जैसे कि बस वही एक चीज सब कुछ हो।

दरख़्त की जड़ में पानी देने से पूरे दरख़्त में पानी पहुंच जाता है। इसी तरह जब ख़ुदा की किताब के कुल्ली और मर्कजी पहलू को जिंदा किया जाए तो उसके जिंदा होते ही बकिया तमाम अज्जा लाजिमी तौर पर जिंदा हो जाते हैं। इसके बरअक्स अगर किसी एक जुज को लेकर उस पर जोर दिया जाए तो उसकी जाहिरी धूम तो मच सकती है मगर उससे दीन का अहया (उत्थान) नहीं होता। क्योंकि उसे जिंदगी मर्कजी पहलू के जिंदा होने से मिलती और वह सिरे से जिंदा ही नहीं हुआ।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾
الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ
يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾
وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

पस जिस चीज का तुम्हें हुक्म मिला है उसे खोलकर सुना दो और मुश्रिकों से एराज (उपेक्षा) करो। हम तुम्हारी तरफ से उन मजाक उड़ाने वालों के लिए काफी हैं जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को शरीक करते हैं। पस अनकरीब वे जान लेंगे। और हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हारा दिल तंग होता है। पस तुम अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और सज्दा करने वालों में से बनो और अपने रब की इबादत करो। यहां तक कि तुम्हारे पास यकीनी बात आ जाए। (94-99)

मौजूदा दुनिया में हर आदमी को बोलने और करने की छूट मिली हुई है। इसलिए दाओ जब ख़ुदा की तरफ बुलाने का काम शुरू करता है तो दूसरों की तरफ से तरह-तरह की बेमअना बातें कही जाती हैं। लोग मुख़्तलिफ किस्म के ग़ैर मुतअल्लिक मसले छेड़ देते हैं। ऐसे मौक़ों पर दाओ के लिए लाजिमी है कि वह इन तमाम बातों के मुक़ाबले में एराज (उपेक्षा) का तरीक़ा इख़्तियार करे। अगर वह ऐसे मौको पर लोगों से लड़ने लगे तो वह हक की दावत के मुस्बत (सकारात्मक) काम को अंजाम नहीं दे सकता।

इस दुनिया में हक के दाओ के लिए एक ही सकारात्मक तरीका है। वह यह कि वह उलझने वालों से न उलझे। और जो हक उसे मिला है उसका वह पूरी तरह एलान कर दे। हर उस बात को वह ख़ुदा के हवाले कर दे जिससे निपटने की ताकत वह अपने अंदर न पाता हो। दुनिया के नामुवाफ़िक़ हालात जब उसे सताएं तो वह आख़िरत की तरफ अपनी तवज्जोह को फेर दे। इंसानों की उदासीनता जब उसे तंगदिल करे तो वह ख़ुदा की याद में मशग़ूल हो जाए।

सच्चे दाओ का हाल यह होता है कि जब उस पर गम की कोई हालत तारी होती है तो वह हमहतन ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाता है। जो चीज वह इंसानों से न पा सका उसे वह ख़ुदा से पाने की कोशिश करता है। नमाज में ख़ुदा के सामने खड़े होने से उसे तस्कीन मिलती है। आंखों से आंसू बहाकर उसके दिल का बोझ हल्का होता है। ख़ुदा के साथ सरगोशियों में मशग़ूल होकर वह महसूस करता है कि उसने वह सब कुछ पा लिया जो उसे पाना चाहिए था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ
بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا
فَاتَّقُونِ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣﴾

आयतें-128 रुकूअ-16

सूरह-16. अन-नहल

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

आ गया अल्लाह का फैसला, पस उसकी जल्दी न करो। वह पाक है और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं। वह फरिश्तों को अपने हुक्म की रूह के साथ उतारता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। पस तुम मुझसे डरो। उसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया है। वह बरतर है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं। (1-3)

दीन की हकीकत यह है कि इंसान ख़ुदा की हस्ती और कायनात में उसकी कारफ़रमाई को इस तरह जान ले कि एक ख़ुदा की जात ही उसे सब कुछ नजर आने लगे। उसी से वह डरे और उसी से वह हर किस्म की उम्मीद रखे। एक ख़ुदा उसके कल्ब (दिल) व दिमाग़ की तमाम तवज्जोहात का मर्कज बन जाए।

यही अल्लाह को इलाह (पूज्य) बनाना और उसकी इबादत करना है। इंसानों के अंदर यही कैफियत पैदा करने के लिए तमाम पैग़म्बर इस दुनिया में आए। जो लोग इस अबदियत (बंदगी) का सुबूत दें वे फैसले के दिन कामयाब ठहरेंगे। जो लोग इसके ख़िलाफ चलें वे फैसले के दिन नामुराद हो जाएंगे। यह फैसला आम इंसानों के लिए कियामत में होगा। मगर पैग़म्बर के मुख़ातबीन के लिए वह इसी दुनिया में शुरू हो जाता है।

कायनात में मुकम्मल वहदत (एकत्व) है और इसी के साथ मुकम्मल मक्सदियत भी। कायनात की वहदत इससे इंकार करती है कि यहां एक ख़ुदा के सिवा किसी और को तवज्जोह का मर्कज बनाना किसी के लिए जाइज हो। और इसकी मक्सदियत तकाजा करती है कि उसका ख़ात्मा एक बामअना अंजाम पर होना चाहिए न कि बेमअना अंजाम पर। गोया कायनात का निजाम बयकवक्त तौहीद की दलील भी फराहम करता है और आख़िरत की दलील भी।

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٤﴾ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا
لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٥﴾ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ﴿٦﴾ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا
بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ
لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

उसने इंसान को एक बूंद से बनाया। फिर वह यकायक खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा और उसने चौपायों को बनाया उनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और ख़ुराक भी और दूसरे फायदे भी, और उनमें से खाते भी हो। और उनमें तुम्हारे लिए रौनक है, जबकि

शाम के वक्त उन्हें लाते हो और जब सुबह के वक्त छोड़ते हो और वे तुम्हारे बोझ ऐसे मकामात तक पहुंचाते हैं जहां तुम सख़्त महनत के बग़ैर नहीं पहुंच सकते थे। बेशक तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक (करुणामय) महरबान है। और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत (साज-सज्जा) के लिए भी और वह ऐसी चीजें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (4-8)

इंसान का आग़ाज एक हकीर माद्दा से होता है। मगर इंसान जब बड़ा होता है तो वह ख़ुदा को मद्देमुकाबिल बनने की कोशिश करता है। वह ख़ुदा की कायनात में बेखुदा बनकर रहना चाहता है। अगर इंसान अपनी इब्तिदाई हकीकत को नजर में रखे तो कभी वह जमीन में सरकशी का रवैया इख़्तियार न करे।

इंसान को मौजूदा दुनिया में जो नेमतें हासिल हैं उनमें से एक चौपाए हैं। यह गोया कुदरत की जिंदा मशीनें हैं जो इंसान की मुख़्तलिफ जरूरियात फराहम करने में लगी हुई हैं। ये चौपाए घास और चारा खाते हैं। और उन्हें इंसानी ख़ुराक के लिए गोश्त और दूध में तब्दील करते हैं। वे अपने जिस्म पर बाल और ऊन निकालते हैं जिनसे आदमी अपने पोशाक बनाता है। वे इंसान को और उसके सामान को एक जगह से उठाकर दूसरी जगह पहुंचाते हैं। इन चौपायों का गल्ला आदमी के असासे में शामिल होकर उसकी हैसियत और शान में इजाफा करता है।

'और ख़ुदा ऐसी चीजें पैदा करता है जिन्हें तुम नहीं जानते' इससे मुराद वे फायदे हैं जो चौपायों के अलावा दूसरे जराये से हासिल होते हैं। इन दूसरे जराये का एक हिस्सा कदीम जमाने में भी इंसान को हासिल था। और इनका बड़ा हिस्सा मौजूदा जमाने में दरयाफ्त करके इंसान इनसे फायदा उठा रहा है। मिसाल के तौर पर जानवर की जगह मशीन।

दुनिया में इंसान के लिए जो बेशुमार नेमतें हैं वे इंसान ने ख़ुद नहीं बनाई हैं बल्कि वे ख़ुदा की तरफ से उसके लिए मुहय्या की गई हैं। इससे जाहिर होता है कि इस दुनिया का ख़ालिक एक महरबान ख़ालिक है। इसका तकाजा है कि इंसान अपने ख़ालिक का शुक्रगुजार बने और उसका वह हक अदा करे जो मोहसिन होने की हैसियत से उसके ऊपर लाजिम आता है।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۭ وَلَوْ شَاۤءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

और अल्लाह तक पहुंचती है सीधी राह। और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। (9)

एक जगह से दूसरी जगह सफर करने के लिए कोई निश्चित सड़क होती है जो सीधी मंजिल तक पहुंचाती है। सवारियां अपनी मंजिले मक्सूद के मुताबिक इन्हीं सीधी सड़कों पर चलती हैं। ताहम इन सड़कों के अलावा अतराफ में भी रास्ते और पगडंडियां होती हैं। अगर कोई शख़्स इन विभिन्न रास्तों को रास्ता समझ कर उन पर चल पड़े तो वह कभी अपनी मत्लूबा मंजिल तक नहीं पहुंच सकता। वह अस्ल मंजिल के दाएं बाएं भटक कर रह जाएगा।

यही मामला ख़ुदा तक पहुंचने का भी है। ख़ुदा ने इंसान को वाजेह तौर पर बता दिया है कि वह कौन सा रास्ता है जो उसे ख़ुदा तक पहुंचाने वाला है। यह रास्ता तौहीद और तकवा का रास्ता है। जो शख़्स इस रास्ते को इख़्तियार करेगा वह ख़ुदा तक पहुंचेगा और जो शख़्स दूसरे रास्तों पर चलेगा वह इधर-उधर भटक जाएगा। वह कभी अपने रब तक नहीं पहुंच सकता।

दुनिया में हर चीज ख़ुदा के मुकर्रर किए हुए रास्ते पर चलती है। ख़ुदा अगर चाहता तो इसी तरह इंसान को भी एक मुकर्रर रास्ते का पाबंद बना देता। मगर इंसान का तख़्लीकी मंसूबा दूसरी अशया (चीजें) के तख़्लीकी मंसूबे से मुख़्तलिफ है। दूसरी अशया से सिर्फ पाबंदी मत्लूब है। मगर इंसान से जो चीज़ मत्लूब है वह इख़्तियारी पाबंदी है। इसी इख़्तियारी पाबंदी का मौका देने का यह नतीजा है कि कोई शख़्स सच्चे रास्ते पर चलता है और कोई उसे छोड़कर ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) राहों में भटकने लगता है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से दरख़्त होते हैं जिनमें तुम चराते हो। वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है। बेशक इसके अंदर निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (10-11)

बादल ऊपर फजा से पानी बरसाते हैं और नीचे जमीन पर उससे निहायत बामअना किस्म के नतीजे जाहिर होते हैं। 'जमीन व आसमान' का इस तरह हमआहंग (अंतरंग) होकर अमल करना वाजेह तौर पर यह साबित करता है कि जो ख़ुदा आसमान का है वही ख़ुदा जमीन का भी है।

कायनात के मुख़्तलिफ हिस्सों के दर्मियान कामिल हमआहंगी है। यह हमआहंगी इस बात का कतई सुबूत है कि सारी कायनात का ख़ालिक व मालिक सिर्फ एक है। कायनात के मौजूदा ढांचे में एक से ज्यादा ख़ुदा की कोई गुंजाइश नहीं। और जब ख़ालिक व मालिक हकीकतन सिर्फ एक ख़ुदा है तो उसके सिवा दूसरी जिस चीज को भी माबूदियत (पूज्यता) का दर्जा दिया जाएगा वह सरासर बेबुनियाद होगा।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝

और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूरज को और चांद को और सितारे भी उसके हुक्म से मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं अक्लमंद लोगों के लिए। और जमीन में जो चीजें मुख़्तलिफ किस्म की तुम्हारे लिए फैलाईं, बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सबक हासिल करें। (12-13)

सूरज, चांद सितारे वसीअ ख़ला में इंतिहाई सेहत के साथ मुसलसल गर्दिश करते हैं। जमीन में तरह-तरह की मख़्लूकात (हैवानात, नबातात, जमादात) बेशुमार तादाद में पाई जाती हैं। पहले में अधीनता का पहलू नुमायां है। और दूसरे में बहुरूपता का पहलू। एक मंजर ख़ुदा की कुदरत के बेपनाह होने को याद दिलाता है। दूसरा मंजर ख़ुदाई सिफात के अनगिनत होने को।

ये मनाजिर इतने हैरतनाक हैं कि जो शख़्स उन्हें नजर ठहराकर देखे वह उनसे मुतअस्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकता। इन चीजों में उसे ख़ुदा की अज्मत और उसकी खूबियत दिखाई देगी। वह जाहिरी वाकेयात के अंदर छुपे हुए ग़ैबी हकाइक को दरयाफ्त करेगा। वह मख़्लूकात को देखकर ख़ालिक की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) में डूब जाएगा।

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾

और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताजा गोश्त खाओ और उससे जेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

समुद्र में लोहे का टुकड़ा डालें तो फौरन डूबकर पानी की तह में चला जाएगा। मगर जब इसी लोहे को जहाज की शक्ल दे दी जाए तो वह भारी बोझ लिए हुए समुद्र में तैरने लगता है और एक मुल्क से दूसरे मुल्क में पहुंच जाता है।

यह ख़ुदा का ख़ास कानून है जिसके जरिए उसने समुद्र जैसी मुहीब (भयावह) मख़्लूक को इंसान के लिए कारआमद बना रखा है। इसी तरह समुद्र के अंदर हैरतनाक इंतजाम के तहत मछली की सूरत में ताजा गोश्त तैयार किया जाता है और उसके अंदर इंसानी जीनत (साज-सज्जा) के लिए कीमती मोती बनते हैं।

ख़ुदा के लिए दुनिया के इंतिजाम की दूसरी सूरतें भी मुमकिन थीं। मसलन ऐसा हो सकता था कि जमीन पर समुद्र न हों। या इंसान जिस तरह खुश्की पर चलता है उसी तरह वह समुद्र में चलने लगे। मगर खुदा ने ऐसा नहीं किया। इसका मक्सद आदमी के अंदर शुक्रगुजारी का जज्बा पैदा करना था। आदमी जब अपने पैरों से समुद्र में न चल सके और कश्ती और जहाज पर बैठे तो निहायत आसानी से समुद्र को उबूर (पार) करने लगे तो उसे

देखकर कुदरती तौर पर आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा उभर आता है। वह सोचता है कि जिस समुद्र को मैं अपने कदमों के जरिए पार नहीं कर सकता था, ख़ुदा ने कश्ती और जहाज के जरिए उसे पार करने का इंतिजाम कर दिया। वह फजा जिसमें मैं ख़ुद नहीं उड़ सकता था, उसमें हवाई जहाज के जरिए निहायत तेज रफ्तारी के साथ उड़ने की सूरत पैदा कर दी। इस किस्म के फर्क कुदरत के निजाम में इसीलिए रखे गए हैं कि वे इंसान के शुऊर को जगाएं और उसके अंदर अपने रब के लिए शुक्र और एहसानमंदी का जज्बा पैदा करें।

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾ وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए ताकि वह तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और बहुत सी दूसरी अलामतें (चिह्न) भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं। (15-16)

यहां दो चीजों का जिक्र है। पहाड़ उभार कर जमीन पर तवाजुन (संतुलन) कायम करने का। और जमीन व आसमान में ऐसी अलामतें (चिह्न) कायम करने का जो लोगों के लिए रास्ता मालूम करने का काम दें।

भौगोलिक अध्ययन बताता है कि जमीन में जब गहराइयां पैदा हुई और उनमें पानी जमा होकर समुद्र बने तो जमीन हिलने लगी। इसके बाद ख़ुश्की पर ऊंचे पहाड़ उभर आए। इस तरह दोतरफा अमल के नतीजे में जमीन पर तवाजुन (संतुलन) कायम हो गया। अगर जमीन की सतह पर यह तवाजुन न होता तो इंसान के लिए यहां जिंदगी नामुमकिन या कम से कम सख़्त दुश्वार हो जाती।

इसी तरह इंसान को अपने सफर और यातायात के लिए अलामतों की जरूरत है जिनकी मदद से वह सम्त को पहचाने और भटके बग़ैर अपनी मंजिल पर पहुंच जाए। इसका इंतिजाम भी यहां कामिल तौर पर मौजूद है। कदीम जमाने का इंसान दरियाओं और सितारों जैसी चीजों से अपने रास्ते पहचानता था। अब वह मक्नातीसी आलात (चुंबकीय उपकरणों) की मदद से अपना रास्ता और दूसरी जरूरी बातें मालूम करता है। ख़ुश्की और तरी, तथा फजाओं और ख़लाओं (अंतरिक्ष) में तेज रफ्तार परवाजें इसी की मदद से मुमकिन होती हैं। अगर इस किस्म की अलामतें मौजूद न हों तो इंसानी सरगर्मियां इंतिहाई हद तक सिमट कर रह जाएं।

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उन्हें गिन न सकोगे,

बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। (17-19)

दुनिया में जितनी चीजें हैं उनमें से किसी के अंदर तख़्लीक (अदम से वजूद में लाने) की ताकत नहीं। इससे साबित है कि दुनिया अपनी ख़ालिक आप नहीं है। उसका ख़ालिक वही हो सकता है जिसके अंदर यह ताकत हो कि एक चीज जो मौजूद नहीं है उसे मौजूद कर दे। इसलिए एक ख़ुदा का अकीदा ऐन फितरी है। कायनात की तौजीह एक ऐसे ख़ुदा को माने बग़ैर नहीं हो सकती जिसके अंदर तख़्लीक की सलाहियत कामिल दर्जे में पाई जाए।

मुश्रिकीन ने ख़ुदा के सिवा जितने ख़ुदा के शरीक गढ़े हैं। या मुंकिरीन ने ख़ुदा को छोड़कर जिन दूसरी चीजों को ख़ुदा का बदल बनाने की कोशिश की है उनमें से कोई भी नहीं जिसके अंदर जाती तख़्लीक (निजी रचनाशीलता) की सलाहियत हो। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि शिर्क और इल्हाद (नास्तिकता) के गढ़े हुए तमाम ख़ुदा सरासर फ़र्ज़ी हैं। क्योंकि जिसके अंदर तख़्लीकी कुव्वत न हो उसके मुतअल्लिक यह दावा करना सरासर बेबुनियाद है कि वह एक मौजूद कायनात का ख़ुदा है। जो ख़ुद जाती वजूद न रखता हो वह किस तरह दूसरी चीज को वजूद दे सकता है।

ख़ुदा को अपने बंदों से सबसे ज्यादा जो चीज मत्लूब हैं वह उसकी नेमतों पर शुक्रगुजारी है। अगरचे ख़ुदा की नेमतें इससे ज्यादा हैं कि कोई शख़्स भी उनका वाकई शुक्र अदा कर सके। मगर ख़ुदा बेनियाज (निस्पृह) है। वह ज्यादा नेमत के लिए थोड़ा शुक्र भी कुबूल कर लेता है। ताहम यह शुक्र हकीकी शुक्र होना चाहिए न कि महज रस्मी किस्म की हम्दख़्वानी (स्तुतिगान)।

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

और जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किए हुए हैं। वे मुर्दा हैं जिनमें जान नहीं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे। तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही माबूद है मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुंकिर हैं और वे तकब्बुर (घमंड) करते हैं अल्लाह यकीनन जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता। (20-23)

अक्सर शिर्क की सूरत यह होती है कि पिछले बुजुर्गों को मुकद्दस और मुकर्रब मान कर लोग उनकी परस्तिश करने लगते हैं। हालांकि यह परस्तिश सरासर अहमकाना होती है। जिन

दफ़्न हुए बुजुर्गों की बड़ी-बड़ी क़ब्रें बनाकर लोग उनसे मुरादें मांगते हैं वे ख़ुद मुर्दा हालत में आलमे बरजख़ में पड़े होते हैं। उन्हें ख़ुद अपने बारे में भी मालूम नहीं होता कि वे कब उठाए जाएंगे, कुजा यह कि वे किसी दूसरे की मदद करें।

'वे तकब्बुर करते हैं' का मतलब यह नहीं कि वे ख़ुदा से तकब्बुर (घमंड) करते हैं। जमीन व आसमान के ख़ालिक से तकब्बुर की जुरअत कौन करेगा। इससे मुराद दरअस्ल ख़ुदा के दाओ से तकब्बुर है न कि ख़ुद ख़ुदा से तकब्बुर। अल्लाह का जो बंदा तौहीद का दाओ बनकर उठता है वह दुनियावी एतबार से अपने मुख़ातबीन के मुकाबले में हमेशा कम होता है। क्योंकि मुख़ातब रवाजी मजहब का हामी होने की वजह से वक्त के नक्शे में ऊंचा दर्जा हासिल किए हुए होता है जबकि हक का दाओ 'नए दीन' का अलमबरदार होने की बिना पर इन दर्जात व मकामात से महरूम होता है। वह मुख़ातबीन को अपने मुकाबले में माद्दी एतबार से कमतर नजर आता है। चुनांचे उनके अंदर बरतरी की नफ्सियात पैदा हो जाती है। वे उसकी बात को बेवजन समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

ऐसे लोगों का केस अगरचे तकब्बुर (घमंड) का केस होता है लेकिन वे उसे उसूली और नजरियाती केस बनाकर पेश करते हैं। मगर अल्लाह को लोगों की अंदरूनी नफ्सियात का हाल ख़ूब मालूम है। अल्लाह उनकी अस्ल हकीकत के एतबार से उसके साथ सुलूक करेगा न कि उनकी जाहिरी बातों के एतबार से।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾

और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियां हैं, ताकि वे कियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ में से भी जिन्हें वे बग़ैर किसी इल्म के गुमराह कर रहे हैं। याद रखो बहुत बुरा है वह बोझ जिसे वे उठा रहे हैं। (24-25)

रवायात में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का में नुबुव्वत का दावा किया और इसकी ख़बर धीरे-धीरे अरब के दूसरे कबाइल में पहुंची तो वे मुलाकात के वक्त मक्का के सरदारों से पूछते कि जिस शख़्स ने नुबुव्वत का दावा किया है उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है। इसके जवाब में मक्का के सरदार कोई ऐसी बात कह देते जिससे आपकी शख़्सियत और आपके कलाम के बारे में लोग शक में मुब्तिला हो जाएं। (तफ़्सीर मज़हरी)

इसका एक तरीका यह है कि बात को बिगड़े हुए अल्फाज में बयान किया जाए। मसलन कुरआन में पैग़म्बरों का जो जिक्र है उसके मुतअल्लिक वे 'पिछले पैग़म्बरों का इतिहास' का लफ्ज भी बोल सकते थे मगर उसे उन्होंने 'पिछले लोगों के किस्से कहानियों' का नाम दे दिया।

हक की दावत से लोगों को इस तरह फेरना या मुशतबह (संदिग्ध) करना ख़ुदा के नजदीक

बदतरीन जुर्म है। ऐसे लोगों को क़ियामत के दिन दुगना अजाब होगा। क्योंकि वे न सिर्फ ख़ुद गुमराह हुए बल्कि दूसरों को गुमराह करने का जरिया भी बने।

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

उनसे पहले वालों ने भी तदबीरें कीं। फिर अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों से आ गया। पस छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उन पर अजाब वहां से आ गया जहां से उन्हें गुमान भी न था। फिर क़ियामत के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा कि वे मेरे शरीक कहां हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे। जिन्हें इल्म दिया गया था वे कहेंगे कि आज रुस्वाई और अजाब मुंकिरों पर है। (26-27)

जो लोग झूठी बुनियादों पर बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हैं, वे जब किसी हक की दावत को उठता हुआ देखते हैं तो उन्हें अपने मकाम के लिए ख़तरा महसूस होने लगता है। वे अपने मकाम के तहफ्फुज (सुरक्षा) के लिए यह तदबीर करते हैं कि हक की दावत के ख़िलाफ ऐसी फितनाअंगेज बातें फैलाते हैं जिससे अवाम उसके बारे में मुशतबह हो जाएं और उसके गिर्द जमा न हो सकें।

मगर हक की दावत के ख़िलाफ ऐसे लोगों की तदबीरें कभी कामयाब नहीं होतीं। हक के मुख़ालिफीन अपनी जिन बुनियादों पर भरोसा कर रहे थे ऐन वही बुनियादें इस तरह कमजोर साबित होती हैं कि उनकी छत उनके ऊपर गिर पड़ती है। कभी ऐसा होता है कि कोई कुदरती जलजला उनकी बुनियादों को हिलाकर उनकी तामीरात को उनके ऊपर गिरा देता है। कभी उनके अवाम उनका साथ छोड़कर हक की सफों में शामिल हो जाते हैं। और इस तरह वे अपने मददगारों को खोकर मजबूर हो जाते हैं कि हक की दावत के आगे हथियार डाल दें। यह अंजाम अपनी आख़िरी और तक्मीली सूरत में क़ियामत में सामने आएगा। जबकि मुंकिरीन अपनी अबदी जिल्लत को देखेंगे और कुछ न कर सकेंगे।

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِن سُوءٍ ۚ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

जिन लोगों को फरिश्ते इस हाल में वफात (मौत) देंगे कि वे अपनी जानों पर जुल्म कर

रहे होंगे तो उस वक्त वे सिपर डाल देंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हां बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते थे। अब जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ। उसमें हमेशा हमेशा रहो। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का। (28-29)

तकब्बुर (घमंड) सबसे बड़ा जुर्म है। ख़ुदा इंसान की हर ग़लती माफ कर देगा मगर वह तकब्बुर को माफ नहीं करेगा।

तकब्बुर के इज्हार की दो बड़ी सूरतें हैं। एक तकब्बुर वह है जो आम बंदों के दर्मियान ज़ाहिर होता है। एक आदमी ताकत, दौलत और दीगर साजोसामान में अपने को दूसरे के मुकाबले में ज्यादा पाता है, इस बिना पर वह उससे तकब्बुर करने लगता है।

दूसरा ज्यादा शदीद तकब्बुर वह है जो हक के दाओ के साथ किया जाता है। ख़ुदा का एक बंदा ख़ुदा के सच्चे दीन की दावत लेकर उठता है। अब जो लोग झूठे दीन की बुनियाद पर बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हैं, वे महसूस करते हैं कि उनके ऊपर इसकी जद पड़ रही है। वे सच्चे दीन के मेयार पर बेकीमत करार पा रहे हैं। यह देखकर वे बिफर उठते हैं। और हक के दाओ को मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) के साथ नजरअंदाज कर देते हैं।

आदमी जब किसी के मुकाबले में तकब्बुर करता है तो इसलिए करता है कि वह समझता है कि वह उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। मगर जब मौत के फरिश्ते आएंगे और उसे बेबस कर देंगे, उस वक्त उसे मालूम होगा कि मामला किसी इंसान का नहीं बल्कि ख़ुदा का था, इंसान किसी दूसरे इंसान के मुकाबले में ताकतवर हो सकता है मगर ख़ुदा के मुकाबले में कौन ताकतवर है। ख़ुदा के फरिश्ते जब इंसान को अपने कब्जे में लेते हैं तो उस वक्त हर आदमी हथियार डाल देता है। मगर अल्लाह का सच्चा बंदा वह है जो उस मौके के आने से पहले ख़ुदा के आगे हथियार डाल दे।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾ جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

और जो तकवा (ईश-परायणता) वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर बेहतर है और क्या ख़ूब घर है तकवा वालों का। हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे से नहरें जारी होंगी। उनके लिए वहां सब कुछ होगा जो वे चाहें, अल्लाह परहेजगारों को ऐसा ही बदला देगा। जिनकी रूह फरिश्ते इस हालत में कब्ज करते हैं कि वे पाक हैं। फरिश्ते कहते हैं तुम पर

सलामती हो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ अपने आमाल के बदले में। (30-32)

जो लोग किब्र (अहं, बड़ाई) की नफ्सियात मे मुब्तिला हों वे ख़ुदा की बात सुनते हैं तो उनका जेहन उल्टी सम्त में चलने लगता है। इस बिना पर वे उससे नसीहत नहीं ले पाते। मगर जिस शख़्स के दिल में अल्लाह का डर हो वह ख़ुदा की बात को पूरी आमादगी के साथ सुनेगा। ऐसे शख़्स के लिए अल्लाह का कलाम मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का जरिया बन जाता है। उसे इसके अंदर हकीकत की झलकियां दिखाई देने लगती हैं।

जन्नत की सिफत यह है कि वहां वह सब कुछ है जो इंसान चाहे। यह ऐसी चीज है जो कभी किसी इंसान को, यहां तक कि बड़े-बड़े बादशाहों को भी हासिल न हो सकी। मौजूदा दुनिया में इंसान की महदूदियत (सीमितता) और ख़ारजी हालात की ना मुवाफिकत (प्रतिकूलता) की बिना पर कभी ऐसा नहीं होता कि इंसान जो कुछ चाहता है उसे हासिल कर ले। यह तसव्वुर कि 'जन्नत में वह सब कुछ होगा जो इंसान चाहेगा' इतना पुरकैफ (आनंदमय) है कि इसकी ख़ातिर जो कुर्बानी भी देनी पड़े वह यकीनन हल्की है।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

क्या ये लोग इसके मुंतजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएं या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। फिर उन्हें उनके बुरे काम की सजाएं मिलीं। और जिस चीज का वे मजाक उड़ाते थे उसने उन्हें घेर लिया। (33-34)

ख़ुदा की बात इंसान के सामने अव्वलन दलाइल (तर्कों) के जरिए बयान की जाती है। यह दावती मरहला होता है। अगर वह दलाइल के जरिए न माने तो फिर वह वक्त आ जाता है जबकि इंफिरादी मौत या इज्तिमाई कियामत की सूरत में उसे लोगों के सामने खोल दिया जाए।

आदमी के सामने अगर ख़ुदा की बात दलाइल के जरिए आए और वह उसे नजरअंदाज कर दे तो गोया वह उस दूसरे मरहले का इंतिजार कर रहा है जबकि ख़ुदा और उसके फरिश्ते जाहिर हो जाएं और आदमी उस बात को जिल्लत के साथ मानने पर मजबूर हो जाए जिसे उसे इज्जत के साथ मानने का मौका दिया गया था मगर उसने नहीं माना।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं, अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज की इबादत न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम उसके बग़ैर किसी चीज को हराम ठहराते। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के जिम्मे तो सिर्फ साफ-साफ पहुंचा देना है। (35)

ग़ाफिल इंसान अपने हक से इंहिराफ को जाइज साबित करने के लिए जो बातें करता है उसमें से एक बात यह है कि जब इस दुनिया में हर चीज ख़ुदा की मर्जी से होती है तो हमारा मौजूदा अमल भी ख़ुदा की मर्जी से है। उसकी मर्जी न होती तो हम ऐसा कर ही न पाते। अगर वाकई ख़ुदा को हमारे काम पसंद न होते तो वह हमें ऐसा काम करने क्यों देता। फिर तो ऐसा होना चाहिए था कि जब भी हम उसकी मर्जी के ख़िलाफ कोई काम करें तो वह फौरन हमें रोक दे।

यह बात आदमी सिर्फ इसलिए कहता है कि वह हक नाहक के मामले में संजीदा नहीं होता। अगर वह संजीदा हो तो फौरन उसकी समझ में आ जाए कि उसे मौजूदा अमल की जो छूट है वह इम्तेहान की वजह से है न कि ख़ुदा की पसंद की वजह से।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾ إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

और हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (बढ़े हुए उपद्रवी) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और किसी पर गुमराही साबित हुई। पस जमीन में चल फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। अगर तुम उसकी हिदायत के हरीस (लालसा रखने वाले) हो तो अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह कर देता है और उनका कोई मददगार नहीं। (36-37)

ख़ुदा ने कहीं बराहेरास्त अपने पैग़म्बर भेजे और कहीं पैगम्बर के नायब और नुमाइंदे के जरिए बिलवास्ता तौर पर अपना पैग़ाम पहुंचाने का इंतिजाम किया। उन तमाम लोगों ने इंसान को जिस चीज की तल्कीन की वह यही थी कि इबादत का हक सिर्फ एक ख़ुदा को है। शैतान इस इबादत से इंसान को फेरने की कोशिश करता है, इसलिए आदमी को चाहिए कि वह शैतानी तर्ग़ीबात से बचे। वर्ना वह आदमी को झूठे माबूदों की परस्तिश के रास्ते पर डाल देगा।

हिदायत अगरचे वाजेह है। मगर उसे कुबूल करने या न करने का इंहिसार तमामतर इस बात पर है कि आदमी उसके बारे में कितना संजीदा है। जो शख़्स हिदायत पर संजीदगी के साथ ग़ौर करेगा उसे उसकी सदाकत को पाने में देर नहीं लगेगी। मगर जो शख़्स इसके बारे में संजीदा न हो वह मामूली-मामूली बातों पर अटक कर रह जाएगा। ऐसा आदमी कभी हक को नहीं पा सकता।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

और ये लोग अल्लाह की कसमें खाते हैं, सख़्त कसमें कि जो शख़्स मर जाएगा अल्लाह उसे नहीं उठाएगा। हां, यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। ताकि उनके सामने उस चीज को खोल दे जिसमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं और इंकार करने वाले लोग जान लें कि वे झूठे थे। जब हम किसी चीज का इरादा करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसे कहते हैं हो जा तो वह हो जाती है। (38-40)

मौजूदा दुनिया कुछ इस ढंग से बनी है कि यहां हक और नाहक इस तरह साबित नहीं हो पाते कि किसी के लिए इंकार की गुंजाइश बाकी न रहे। यहां आदमी हर दलील को काटने के लिए कुछ अल्फाज पा लेता है। हर साबितशुदा चीज को मुश्तबह (संदिग्ध) करने के लिए वह कोई न कोई बात निकाल लेता है।

यह बात कायनात के मिजाज के सरासर ख़िलाफ है। माद्दी उलूम (भौतिक ज्ञानों) में आदमी के लिए मुमकिन होता है कि वह कतई नताइज तक पहुंच सके। इसी तरह यह भी जरूरी होना चाहिए कि इंसानी मामलात में कतई हकाइक खुलकर सामने आ जाएं। यही वह काम है जो कियामत में अंजाम पाएगा। शाह अब्दुल कादिर देहलवी लिखते हैं 'इस जहान में बहुत बातों का शुबह रहा। किसी ने अल्लाह को माना और कोई उसका मुंकिर रहा तो दूसरा जहान होना लाजिम है कि झगड़े तहकीक हों। सच और झूठ जुदा हो और मुतीअ (आज्ञाकारी) और मुंकिर अपना किया पाएं।'

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा, बाद इसके कि उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में जरूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे जानते। वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (41-42)

अक्सर मुफस्सिरीन ने इस आयत को उन 80 सहाबा से मुतअल्लिक माना है जो मक्का में इस्लाम के मुख़ालिफीन की ज्यादतियों का निशाना बन रहे थे और बिलआख़िर अपना वतन छोड़कर हबश चले गए। यह वाकया मदीना की हिजरत से पहले मक्की दौर में पेश आया।

हक के मामले में हमेशा दो गिरोह होते हैं। एक वह जो हक को इतनी अहमियत न दें कि उसकी ख़ातिर मिली हुई चीजों को छोड़ दें या अपनी जिंदगी का नक्शा बदल लें। दूसरे वे लोग जो हक को इस तरह इख़्तियार करते हैं कि वही उनके नजदीक सबसे अहम चीज बन जाता है। वे उसकी ख़ातिर हर तकलीफ को सहने के लिए तैयार रहते हैं। वे हक को अपना अहमतरीन मसला बना लेते हैं। वे हर दूसरी चीज को छोड़ सकते हैं मगर हक को नहीं छोड़ सकते।

जाहिर है कि दोनों किस्म के गिरोहों का अंजाम यकसां (समान) नहीं हो सकता। जिन लोगों ने हक को अपनी जिंदगी में अहमतरीन मकाम दिया वे ख़ुदा की अबदी नेमतों के मुस्तहिक ठहरेंगे। और जिन लोगों ने हक को नजरअंदाज किया उन्हें ख़ुदा भी नजरअंदाज कर देगा। वे ख़ुदा के यहां कोई इज्जत का मकाम नहीं पा सकते। और न वे ख़ुदा की नेमतों में हिस्सेदार बन सकते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

और हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ हम 'वही' (प्रकाशना) करते थे, पस अहले इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। हमने भेजा था उन्हें दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) और किताबों के साथ। और हमने तुम पर भी याददिहानी (अनुस्मृति) उतारी ताकि तुम लोगों पर उस चीज को वाज़ेह कर दो जो उनकी तरफ उतारी गई है और ताकि वे ग़ौर करें। (43-44)

'अहले इल्म' से मुराद यहां अहले किताब हैं। या वे लोग जो पिछली उम्मतों और पिछले पैग़म्बरों के तारीख़ी हालात का इल्म रखते हैं। जो चीज उनसे पूछने के लिए फरमाई गई है वह यह नहीं है कि हक क्या है और नाहक क्या। बल्कि यह कि पिछले जमानों में जो पैग़म्बर आए वे इंसान थे या ग़ैर इंसान। मक्का वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंसान होने को इस बात की दलील बनाते थे कि आप ख़ुदा के पैग़म्बर नहीं हैं। उनसे कहा गया कि जिन कौमों में इससे पहले पैग़म्बर आते रहे हैं (मसलन यहूद) उनसे पूछ कर मालूम कर लो कि उनके यहां जो पैग़म्बर आए वे इंसान थे या फरिश्ते।

पैग़म्बर सिर्फ 'याददिहानी' के लिए आता है, यह याददिहानी अस्लन दलाइल के जरिए होती है। ताहम यह भी जरूरी है कि पैग़म्बर अपने आपको इस मामले में पूरी तरह संजीदा साबित करे। अगर एक शख़्स लोगों को जन्नत और जहन्नम से बाख़बर करे और इसी के साथ

वह ऐसे कामों में मशग़ूल हो जो जन्नत और जहन्नम के मामले में उसे ग़ैर संजीदा साबित करते हों तो उसका दावती काम लोगों की नजर में मजाक बनकर रह जाएगा।

ताहम दावत (आह्वान) चाहे कितने ही आला दर्जे पर और कितने ही कामिल अंदाज में पेश कर दी जाए उससे वही लोग फायदा उठाएंगे जो ख़ुद भी उस पर ध्यान दें। जो लोग ध्यान न दें वे किसी भी हालत में हक की दावत से फ़ैज़याब नहीं हो सकते।

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾

क्या वे लोग जो बुरी तदबीरें कर रहे हैं वे इस बात से बेफिक्र हैं कि अल्लाह उन्हें जमीन में धंसा दे या उन पर अजाब वहां से आ जाए जहां से उन्हें गुमान भी न हो या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले तो वे लोग ख़ुदा को आजिज नहीं कर सकते या उन्हें अंदेशे की हालत में पकड़ ले। पस तुम्हारा रब शफीक (करुणामय) और महरबान है। (45-47)

यह आयत मक्की दौर के आख़िरी जमाने की है जबकि मक्का के मुख़ालिफीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कत्ल की साजिशें कर रहे थे। पैग़म्बर ख़ुदा की जमीन पर ख़ुदा का नुमाइंदा होता है। इसलिए पैग़म्बर के ख़िलाफ इस किस्म में साजिश करना ऐसे ही लोगों का काम हो सकता है जो ख़ुदा की पकड़ से बिल्कुल बेख़ौफ हो चुके हों।

हालांकि ख़ुदा इंसान के ऊपर इतना ज्यादा काबूयाफ्ता है कि वह चाहे तो इंसान को जमीन में धंसा दे या जिस मकाम को आदमी अपने लिए महफूज़ समझे हुए है वहीं से उसके लिए एक अजाब फट पड़े। या ख़ुदा ऐसा करे कि लोगों की सरगर्मियों के दौरान उन्हें पकड़ ले, फिर वे अपने आपको उससे बचा न सकें। ख़ुदा यह भी कर सकता है कि वह इस तरह उन्हें पकड़े कि वे ख़तरे को महसूस कर रहे हों और उसके लिए पूरी तरह बेदार हों।

ग़रज ख़ुदा हर हालत में इंसान को पकड़ सकता है। अगर वह लोगों को शरारतें करते हुए देखता है और इसके बावजूद वह उन्हें नहीं पकड़ता तो लोगों को बेख़ौफ नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह उसकी इम्तेहान की मस्लेहत है न कि उसका इज्ज (निर्बलता)।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

क्या नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज भी पैदा की है उसके साये दाईं तरफ और बाईं तरफ झुक जाते हैं, अल्लाह को सज्दा करते हुए, और वे सब आजिज (नम्र) हैं। और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीजें चलने वाली आसमानों और जमीन में हैं। और फरिश्ते भी और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। वे अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। (48-50)

इंसान एक ऐसी दुनिया में सरकशी करता है जिसमें उसके चारों तरफ उसे ताबेदारी का सबक दिया जा रहा है। मिसाल के तौर पर माद्दी अजसाम (वस्तुओं) के साये। एक चीज जो खड़ी हुई हो, उसका साया जमीन पर पड़ जाता है। इस तरह वह सज्दे को मुमस्सल (प्रतिरूपित) कर रहा है। वह तमसीली अंदाज में बताता है कि इंसान को किस तरह अपने ख़ालिक के आगे झुक जाना चाहिए।

फरिश्ते अगरचे इंसान को नजर नहीं आते। मगर अजीम कायनात का इस कद्र मुनज़्ज़म होकर चलना साबित करता है कि इसे चलाने के लिए ख़ुदा ने अपने जो कारिंदे मुकर्रर किए हैं वे इंतिहाई ताकतवर हैं। ये फरिश्ते ग़ैर मामूली ताकतवर होने के बावजूद ख़ुदा के हददर्जा मुतीअ (आज्ञाकारी) हैं। अगर वे हददर्जा मुतीअ न हों तो कायनात का निजाम इस दर्जे सेहत और यकसानियत के साथ मुसलसल चलता हुआ नजर न आए।

ऐसी हालत में इंसान के लिए सही रवैया इसके सिवा और कुछ नहीं हो सकता कि वह अपने आपको ख़ुदा की इताअत में दे दे, वह मुकम्मल तौर पर उसका फरमांबरदार बन जाए।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾ وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

और अल्लाह ने फरमाया कि दो माबूद (पूज्य) मत बनाओ। वह एक ही माबूद है तो मुझ ही से डरो और उसी का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और उसी की इताअत (आज्ञापालन) है हमेशा। तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो। (51-52)

पैग़म्बरों के जरिए ख़ुदा ने इंसान को इससे डराया है कि वह एक माबूद (पूज्य) के सिवा दूसरे माबूद अपने लिए बनाए। इस कायनात का माबूद सिर्फ एक है। उसी से आदमी को डरना चाहिए। उसे सिर्फ उसी की ताबेदारी (आज्ञापालन) करना चाहिए।

अगर आदमी को इस बात का सही इदराक हो जाए कि ख़ुदा ही इंसान का और तमाम मौजूदात का ख़ालिक व मालिक है। उसी पर उसकी जिंदगी का सारा दारोमदार है तो इस इदराक के लाजिमी नतीजे के तौर पर जो कैफियत आदमी के अंदर पैदा होती है उसी का नाम तक्वा है।

जमीन व आसमान में ख़ुदा ही की दाइमी (स्थाई) इताअत है। यहां हर चीज मुकम्मल तौर

पर कानूने ख़ुदावंदी में जकड़ी हुई है। एक ऐसी दुनिया में किसी और की इबादत करना या किसी और से उम्मीद कायम करना बिल्कुल बेबुनियाद है। मौजूदा कायनात ऐसे शिर्क को कुबूल करने से सरासर इंकार करती है।

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ (53) ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ (54) لِيَكْفُرُوْا بِمَا اٰتَيْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (55) وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ (56)

और तुम्हारे पास जो नेमत भी है वह अल्लाह ही की तरफ से है। फिर जब तुम्हें तकलीफ पहुंचती है तो उससे फरयाद करते हो। फिर जब वह तुमसे तकलीफ दूर कर देता है तो तुम में से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है ताकि मुंकिर हो जाएं उस चीज से जो हमने उन्हें दी है। पस चन्द रोज फायदे उठा लो। जल्द ही तुम जान लोगे। और ये लोग हमारी दी हुई चीजों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुतअल्लिक उन्हें कुछ इल्म नहीं। ख़ुदा की कसम, जो झूठ तुम गढ़ रहे हो उसकी तुमसे जरूर बाज़पुर्स (पूछगछ) होगी। (53-56)

पूरी तारीख़ का तजर्बा है कि आदमी जब किसी ऐसी मुसीबत में पड़ता है जहां वह अपने को आजिज महसूस करने लगता है तो उस वक्त वह ख़ुदा को याद करने लगता है। मुंकिर और मुश्रिक दोनों ही ऐसा करते हैं। इस तजर्बे से मालूम हुआ कि ख़ुदा का तसव्वुर इंसानी फितरत में पैवस्त है। जब तमाम दूसरे अलाइक (बखेड़े) कट जाते हैं तो आख़िरी चीज जो बाकी रहती है वह सिर्फ ख़ुदा है।

मगर यह इंसान की अजीब ग़फलत है कि जब वह मुसीबत में नजात पाता है तो दुबारा अपने फर्जी ख़ुदाओं की याद में मश्ग़ूल हो जाता है। वह मिली हुई नेमत को ख़ुदा के बजाए दूसरी-दूसरी चीजों की तरफ मंसूब कर देता है। उसे वह अजीम सबक याद नहीं रहता जो ख़ुद उसकी फितरत ने चन्द लम्हा पहले उसे दिया था।

शैतान ने फर्जी माबूदों की माबूदियत के अकीदे को पुख़्ता करने के लिए तरह-तरह की झूठी रस्में अवाम में राइज कर रखी हैं। उनमें से एक है अपनी आमदनी में फर्जी माबूदों का हिस्सा निकालना। इस किस्म की रस्में ख़ुदा की दुनिया में एक बोहतान की हैसियत रखती हैं क्योंकि वह ख़ुदा की तरफ से मिली हुई चीज के लिए ग़ैर ख़ुदा का शुक्र अदा करने के हममअना हैं।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ (57) وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ (58) يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ

مَا بُشِّرَ بِهٖ أَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ أَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ أَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (59) لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلٰى وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (60)

और वे अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह इससे पाक है, और अपने लिए वह जो दिल चाहता है। और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़ुशख़बरी दी जाए तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह जी में घुटता रहता है। जिस चीज की उसे ख़ुशख़बरी दी गई है उसके आर (लाज) से लोगों से छुपा फिरता है। उसे जिल्लत के साथ रख छोड़े या उसे मिट्टी में गाड़ दे। क्या ही बुरा फैसला है जो वे करते हैं। बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और अल्लाह के लिए आला मिसालें हैं। वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (57-60)

एक ख़ुदा के सिवा इंसान ने दूसरे जो माबूद बनाए हैं उनमें देवता भी हैं और देवियां भी। यहां देवियों के अकीदे को बेबुनियाद साबित करने के लिए एक आम मिसाल दी गई है। मर्द के मुकाबले में औरत चूंकि कमजोर होती है, इसके अलावा आम हालात में वह असासे (सम्पत्ति) से ज्यादा जिम्मेदारी होती है, इसलिए आम तौर पर लोग लड़के की पैदाइश पर ज्यादा ख़ुश होते हैं। और लड़की की पैदाइश पर कम। अब जबकि लड़के और लड़की में यह फर्क है तो ख़ुदा अगर अपने लिए औलाद पैदा करता तो वह लड़कियां क्यों पैदा करता।

इंसान किस लिए औलाद चाहता है। इसलिए ताकि वह उसके जरिए से अपनी कमी को पूरा कर सके। मगर ख़ुदा इस तरह की कमियों से बुलन्द है। ख़ुदा की अज्मत व कुदरत जो उसकी कायनात में जाहिर हुई है वह बताती है कि ख़ुदा इससे बुलन्द व बरतर है कि उसके अंदर ऐसी कोई कमी हो जिसकी तलाफी (पूर्ति) के लिए वह अपने यहां लड़का और लड़की पैदा करे। हकीकत यह है कि ख़ुदा अगर कमियों वाला होता तो वह ख़ुदा ही न होता। ख़ुदा इसीलिए ख़ुदा है कि वह हर किस्म की तमाम कमियों से पाक है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ (61)

और अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म पर पकड़ता तो जमीन पर किसी जानदार को न छोड़ता। लेकिन वह एक मुकर्रर वक्त तक लोगों को मोहलत देता है। फिर जब उनका मुकर्रर वक्त आ जाएगा तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61)

जुल्म पर गिरफ्त की एक शक्ल यह है कि जैसे ही कोई शख़्स जुल्म करे फौरन उसे पकड़

कर सख़्त सजा दी जाए। मगर ख़ुदा का यह तरीका नहीं। अगर ख़ुदा ऐसा करे तो जमीन पर कोई चलने वाला बाकी न रहे। ख़ुदा ने हर शख़्स और हर कौम को एक मुकर्रर मोहलत दी है। उस मुद्दत तक वह हर एक को मौका देता है कि वह अपने जमीर (अन्तरात्मा) की आवाज से या ख़ारजी तंबीहात (वाह्य चेतावनियों) से चौकन्ना हो और अपनी इस्लाह कर ले। इस्लाह करते ही लोगों के पिछले तमाम जराइम माफ कर दिए जाते हैं। वे ऐसे हो जाते हैं कि जैसे उन्होंने अभी नई जिंदगी शुरू की हो।

मोहलत के दौरान न पकड़ना जिस तरह ख़ुदा ने अपने ऊपर लाजिम किया है इसी तरह उसने यह भी अपने ऊपर लाजिम किया है कि मोहलत के ख़त्म होने के बाद वह लोगों को जरूर पकड़े। मोहलत ख़त्म होने के बाद किसी को मजीद (अतिरिक्त) मौका नहीं दिया जाता, न फर्द को और न कौम को।

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

और वे अल्लाह के लिए वह चीज ठहराते हैं जिसे अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी जबानें झूठ बयान करती हैं कि उनके लिए भलाई है। निश्चय ही उनके लिए दोज़ख़ है और वे जरूर उसमें पहुंचा दिए जाएंगे। (62)

इंसानी गुमराहियों की बहुत बड़ी वजह ख़ुदा की ख़ुदाई का कमतर अंदाजा करना है। अक्सर ग़लत अकाइद इसीलिए बने कि ख़ुदा को उससे कम समझ लिया गया जैसा कि वह हकीकतन है। यहां तक कि लोगों का हाल यह है कि जो चीजें कमतर समझ कर वे ख़ुद अपने लिए पसंद नहीं करते (मसलन बेटियां या अपनी सम्पत्ति में किसी अजनबी की शिरकत) उसे भी वे ख़ुदा के लिए साबित करने लगते हैं।

ख़ुदा के इसी कमतर अंदाजे का नतीजा है कि लोग ख़ुदा पर अकीदा रखते हुए ख़ुदा से बेख़ौफ रहते हैं। वे निहायत मामूली-मामूली चीजों के बारे में यह अकीदा बना लेते हैं कि वे उन्हें ख़ुदा की कुरबत (समीपता) दे देंगी। और आख़िरत की तमाम नेमतें उनके हिस्से में लिख दी जाएंगी। जो चीज एक आम इंसान को भी ख़ुश नहीं कर सकती उसके मुतअल्लिक यह अकीदा बना लिया जाता है कि वह ख़ुदा को ख़ुश कर देगी। इस किस्म की कोई हरकत ग़लती पर सरकशी का इजाफा है जिसे ख़ुदा कभी माफ नहीं कर सकता।

تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۙ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾

ख़ुदा की कसम हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ कौमों की तरफ रसूल भेजे। फिर शैतान

ने उनके काम उन्हें अच्छे करके दिखाए। पस वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। और हमने तुम पर किताब सिर्फ इसलिए उतारी है कि तुम उन्हें वह चीज खोल कर सुना दो जिसमें वे इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हैं और वह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। (63-64)

रसूल की दावत जब उठती है तो सुनने वाले महसूस करते हैं कि यह उनके रवाजी मजहब से टकरा रही है। अब चूंकि वे उस रवाजी मजहब से मानूस (भिज्ञ) होते हैं और उससे उनके बहुत से मफादात वाबस्ता हो चुके होते हैं इसलिए वे चाहते हैं कि उससे लिपटे रहें। उस वक्त शैतान उन्हें ऐसे ख़ूबसूरत अल्फाज समझा देता है जिससे वे पैग़म्बर के दीन को छोड़ने और रवाजी दीन पर कायम रहने को दुरुस्त साबित कर सकें।

आदमी अगर रसूल की बात को सीधी तरह मान ले तो यह ख़ुदा को अपना साथी बनाना है। इसके बरअक्स अगर वह ख़ूबसूरत तावीलात (हीलों-बहानों) का सहारा ले तो यह शैतान को अपना साथी बनाना होगा।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजकर ख़ुदा ने यह इंतिजाम किया था कि लोग मजहबी इख़्तेलाफात (मत-भिन्नता) के जंगल के दर्मियान ख़ुदा के सच्चे रास्ते को मालूम कर सकें। यही सूरतेहाल आज भी बाकी है। एक शख़्स ख़ुदा के रास्ते की तलाश में हो और वह मुख़्तलिफ मजहबों का मुतालआ करे तो वह यकीनन ज़ेहनी इंतिशार में पड़ जाएगा। क्योंकि मजहबों की जो तालीमात आज मौजूद हैं उनमें बाहम सख़्त इख़्तेलाफात हैं। चुनांचे हक के मुतलाशी की समझ में नहीं आता कि वह किस चीज को सही समझे और किस चीज को ग़लत।

ऐसी हालत में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का लाया हुआ दीन ख़ुदा के बंदों के लिए रहमत है क्योंकि दूसरे अदयान (धर्मों) के बरअक्स, आपका दीन एक महफूज दीन है। वह तारीख़ी एतबार से पूरी तरह मुस्तनद है। इस बिना पर पूरा एतमाद किया जा सकता है कि आपने जो दीन छोड़ा वही वह हकीकी दीन है जो ख़ुदा को अपने बंदों से मत्लूब है।

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उससे जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद जिंदा कर दिया। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (65)

बारिश और नबातात (वनस्पति) का निजाम अपने अंदर बहुत बड़ा सबक रखता है। मुख़्तलिफ अवामिल (कारक) की मुत्तहदा कारफरमाई से पानी के कतरे फिजा में जाकर दुबारा जमीन पर बारिश की सूरत में बरसते हैं। फिर यह बारिश हैरतअंगेज तौर पर जमीन पर सब्जा उगाने का सबब बनती है।

इस वाक्ये में एक तरफ यह सबक है कि इस कायनात में चारों तरफ एक ख़ुदा की कारफरमाई है। अगर यहां कई ख़ुदाओं की कारफरमाई होती तो कायनात की मुख़्तलिफ तक्रो

इस तरह हमआहंग होकर मुशतरका (साझा) अमल नहीं कर सकती थीं। कायनात के निजाम की वहदानियत (एकत्व) वाजेह तौर पर इसका सुबूत है कि उसका ख़ालिक व मालिक सिर्फ एक है न कि एक से ज्यादा।

दूसरा सबक यह है कि ख़ुदा की कुदरत इतनी अजीम है कि वह मुर्दा जिस्म में जिंदगी पैदा कर सकती है। वह सूखी हुई चीजों में हरियाली, रंग, ख़ुशबू और मजा का बाग़ उगा सकती है।

पहले वाकये में तौहीद का सुबूत है और दूसरा वाकया तमसील के रूप में बता रहा है कि इसी तरह इंसानी रूहों के लिए भी एक ख़ुदाई बारिश है, और वह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है। जो शख़्स अपनी मुर्दा और सूखी हुई रूह को नई जिंदगी देना चाहे, उसे अपने आपको ख़ुदाई 'वही' की बारिश में नहलाना चाहिए।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ
وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ
تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक है। हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और ख़ून के दर्मियान से तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते है, ख़ुशगवार पीने वालों के लिए और खजूर और अंगूर के फलों से भी। तुम उनसे नशे की चीजें भी बनाते हो और खाने की अच्छी चीजें भी। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। (66-67)

दूध देने वाले जानवरों में यह अजीब ख़ुसूसियत है कि वे जो कुछ खाते हैं वह एक तरफ उनके अंदर गोबर और ख़ून बनाता है, दूसरी तरफ इसी के दर्मियान से दूध जैसा कीमती तरल भी बनकर निकलता है जो इंसान के लिए बेहद कीमती ग़िजा है। यही हाल दरख़्तों का है। उनके अंदर मिट्टी और पानी जैसी चीजें दाख़िल होती हैं और फिर उनके अंदरूनी निजाम के तहत वे रसदार फल की सूरत में शाख़ों में लटक पड़ती हैं।

ये वाकेयात इसलिए हैं कि वे लोगों को खुदा की याद दिलाएं। आदमी इन में ख़ुदा की कुदरत की झलकियां देखने लगे, यहां तक कि उसका यह एहसास इतना बढ़े कि वह पुकार उठे कि खुदाया तू जो गोबर और ख़ून के दर्मियान से दूध जैसी चीज निकालता है, मेरी नामुवाफिक़ हालत के अंदर से मुवाफ़िक़ नताइज जाहिर कर दे। तू जो मिट्टी और पानी को फल में तब्दील कर देता है, मेरी बेक़ीमत जिंदगी को बाक़ीमत जिंदगी बना दे।

'तुम उनसे नशे की चीज भी बनाते हो और रिज़्के हसन भी' इसमें इस हक़ीक़त की तरफ इशारा है कि दुनिया में ख़ुदा ने जो चीजें पैदा की हैं उनका सही इस्तेमाल भी है और उनका ग़लत इस्तेमाल भी। खजूर और अंगूर को उसकी कुदरती हालत में खाया जाए तो वह सेहतबख़्श ग़िजा है जिससे जिस्म और अक्ल को तवानाई (ऊर्जा) हासिल होती है। इसके बरअक्स अगर इंसानी अमल से उसे नशे में तब्दील कर दिया जाए तो वह जिस्म को भी नुक्सान पहुंचाती है और अक्ल को भी बिगाड़ देने वाली है।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَ
مِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٨﴾ ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ
يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर 'वही' (प्रकाशना) किया कि पहाड़ों और दरख़्तों और जहां टट्टियां बांधते हैं उनमें घर बना। फिर हर किस्म के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल। उसके पेट से पीने की चीज निकलती है, इसके रंग मुख़्तलिफ हैं, इसमें लोगों के लिए शिफा (आरोग्य) है। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (68-69)

शहद की मक्खी ख़ुदा की कुदरत का एक हैरतनाक शाहकार है। वह रियाजयाती कवानीन (गणितीय नियमों) की पाबंदी करते हुए इंतिहाई मेयारी किस्म का छत्ता बनाती है। फिर ख़ास मंसूबाबंद अंदाज में फूलों का रस चूस कर लाती है। उसे एक कामिलतरीन निजाम के तहत छत्तों में जख़ीरा करती है। फिर ऐन कवानीने सेहत के मुताबिक शहद जैसी कीमती चीज तैयार करती है जो इंसान के लिए ग़िजा भी है और इलाज भी। यह सब कुछ इतने अजीब और इतने मुनज्जम अंदाज में होता है कि इस पर मोटी-मोटी किताबें लिखी गई हैं फिर भी इसका बयान मुकम्मल नहीं हुआ।

शहद का यह मोजिजाती कारख़ाना तमाम इंसानी कारख़ानों से ज्यादा पेचीदा और ज्यादा कामयाब है। ताहम बजाहिर वह ऐसी मक्खियों के जरिए चलाया जा रहा है जिन्होंने इस फन की कहीं तालीम नहीं पाई। यहां तक कि उन्हें अपने आमाल का जाती शुऊर भी हासिल नहीं। इससे साबित होता है कि कोई काम लेने वाला है जो अपनी छुपी हिदायतों के जरिए मक्खियों से यह सब कुछ काम ले रहा है। शहद की मक्खियों को अगर कोई देखने वाला देखे तो वह उनकी हैरानकुन हद तक बामअना सरगर्मियों में ख़ुदा की कारफरमाई का जिंदा मुशाहिदा करने लगेगा।

शहद की मक्खी की मिसाल देने का एक पहलू यह भी है कि जिस तरह शहद की मक्खी जबरदस्त महनत के जरिए फूलों का रस चूस कर शहद बनाती है जिसमें लोगों के लिए ग़िजा और शिफा है। इसी तरह अल्लाह के बंदों को चाहिए कि वे कायनात में ग़ौरोफिक्र के जरिए हिक्मत की चीजें हासिल करें जो उनकी रूह की ग़िजा भी हों और उनकी अख़्लाकी बीमारियों का इलाज भी। जो चीज शहद की मक्खी के लिए 'रस' है वही इंसान की सतह पर पहुंच कर 'मअरफत' बन जाती है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ
لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात (मौत) देता है। और तुम में से कुछ वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुंचाए जाते हैं कि जानने के बाद वे कुछ न जानें। बेशक अल्लाह इल्म वाला है, कुदरत वाला है। (70)

जिंदगी का मजहर जो जमीन पर है उसके कई पहलू इंसान के सामने आते हैं। एक शख़्स नहीं था इसके बाद वह दुनिया में मौजूद हो गया, फिर हर एक मरता है मगर सबका एक वक्त नहीं। कोई बचपन में मरता है, कोई जवानी में और कोई बुढ़ापे में। फिर यह मंजर भी अजीब है कि उम्र की आख़िरी हद पर पहुंच कर अक्ल और इल्म और ताकत आदमी से बिल्कुल रुख़्सत हो जाते हैं। इंसान मौजूदा जमीन पर बजाहिर आजाद है मगर उसे अपनी किसी चीज पर कोई इख़्तियार नहीं।

यह सब इसलिए होता है ताकि इंसान को बताया जाए कि इल्म और कुदरत दोनों सिर्फ ख़ुदा का हिस्सा हैं। इंसानी जिंदगी में मज्कूरा किस्म के जो वाकेयात पेश आते हैं उनमें इंसान का अपना कोई दख़ल नहीं। वह उनमें कोई तब्दीली करने पर कादिर नहीं। इससे साबित होता है कि जो कुछ हो रहा है वह किसी और करने वाले के जरिए हो रहा है। बचपन से मौत तक इंसान की जिंदगी यह गवाही देती है कि यहां सारा इल्म भी सिर्फ ख़ुदा के लिए है और सारी कुदरत भी सिर्फ ख़ुदा के लिए। इंसान की मजबूरी कादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) ख़ुदा की मौजूदगी का सुबूत है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّىْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۗ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोजी में बड़ाई दी है। पस जिन्हें बड़ाई दी गई है वे अपनी रोजी अपने ग़ुलामों को नहीं दे देते कि वे इसमें बराबर हो जाएं। फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। (71)

यहां एक सादा सी मिसाल के जरिए इस अकीदे को ग़लत साबित किया गया है कि ख़ुदा के कुछ शरीक हैं। और उसने अपने इख़्तियारात का कुछ हिस्सा अपने उन शरीकों को दे दिया है। वह मिसाल यह कि दुनिया में रोजी की तक्सीम यकसां (समान) नहीं है। आम तौर पर देखने में आता है कि किसी के पास बहुत ज्यादा होता है और किसी के पास इतना कम होता है कि वह ज्यादा वाले के यहां नौकर और ग़ुलाम बनने पर मजबूर हो जाता है। अब कोई भी ज्यादा वाला ऐसा नहीं करता कि अपनी दौलत अपने नौकरों में बांट दे और इस तरह अपना और नौकरों का फर्क मिटाकर यकसां हो जाए। फिर ख़ुदा के बारे में यह मानना कैसे सही हो सकता है कि उसने अपने इख़्तियारात दूसरों को तक्सीम कर दिए हैं।

कोई शख़्स अपनी बड़ाई का आप इंकार नहीं करता। फिर जो बात एक इंसान भी पसंद

नहीं करता, हालांकि उसके पास कोई जाती असासा (सम्पत्ति) नहीं, इस बात को ख़ुदा क्यों पसंद करेगा जिसके पास जो कुछ है वह उसका अपना जाती है। किसी दूसरे का दिया हुआ नहीं। हकीकत यह है कि इस किस्म के तमाम अकीदे ख़ुदा की हस्ती की नफी कर रहे हैं। वे ख़ुदा को ग़ैर ख़ुदा की सतह पर पहुंचा रहे हैं जो किसी हाल में मुमकिन नहीं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۗ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियां बनाईं और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर क्या ये बातिल (असत्य) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। और वे अल्लाह के सिवा उन चीजों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से किसी रोजी पर इख़्तियार रखती हैं और न जमीन से, और न वे कुदरत रखती हैं। पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो। बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (72-74)

इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जिसकी बेशुमार जरूरतें हैं। इन तमाम जरूरतों का इंतिजाम निहायत कामिल सूरत में दुनिया के अंदर मौजूद है।

आदमी को भूख प्यास लगती है तो यहां खाने पीने की बेहतरीन चीजें इफरात के साथ मौजूद हैं। आदमी को शख़्सी सुकून के लिए बीवी दरकार है तो यहां ऐन उसके तकाजों मुताबिक मुसलसल औरतें पैदा की जा रही हैं। आदमी के सामने अपनी नस्ल की बका का मसला है तो यहां उसके लिए बेटे और पोते की पैदाइश का निजाम भी मौजूद है।

यह सब कुछ ख़ुदा की तरफ से है। मगर हर जमाने में इंसान ने यह ग़लती की कि ख़ुदा की इन नेमतों को ग़ैर ख़ुदा की तरफ मंसूब कर दिया। मुश्रिक लोग उन्हें ख़ुदा के सिवा देवी देवताओं या जिंदा मुर्दा हस्तियों की तरफ मंसूब करते हैं। और जो मुल्हिद (नास्तिक) हैं वे उन्हें कवानीने फित्रत के अंधे अमल का नतीजा करार देते हैं। नेमतों का यह निजाम इसलिए था कि उसे देखकर आदमी के अंदर शुक्रे ख़ुदावंदी का जज्बा उमड़े। मगर ख़ुदसाख़्ता कपोल-कल्पनाओं की बिना पर यह निजाम उसके लिए सिर्फ कुफ्रे ख़ुदावंदी की गिजा देने का जरिया बन गया।

अक्सर एतकादी गुमराहियां मिसालों की वजह से पैदा होती हैं। मसलन इंसान के बेटे-बेटियां हैं तो इसी पर कयास करके समझ लिया गया कि ख़ुदा की भी बेटे-बेटियां हैं। दुनिया में बड़े लोगों के यहां कुछ अफराद होते हैं जो मुकर्रब और सिफारिशी होते हैं। इसे मिसाल

बनाकर फर्ज कर लिया गया कि ख़ुदा के दरबार में भी कुछ कुरबत वाले हैं और ख़ुदा के यहां उनकी सिफ़ारिशें चलती हैं।

इस किस्म की तमसीलात से शिर्क और गुमराही की अक्सर किस्में पैदा होती हैं। मगर यह ख़ालिक को मख़्लूक के ऊपर क्यास करना है जो सरासर जहालत है। ख़ालिक हर एतबार से मख़्लूक से मुख़्तलिफ है। मख़्लूक की कोई मिसाल ख़ालिक पर चसपां नहीं होती। मिसाल के जरिए बात को समझाना बजाए ख़ुद ग़लत नहीं। मगर मिसाल उसी वक्त कारआमद है जबकि आदमी को अस्ल और तशबीह (उपमा) दोनों का इल्म हो। इंसान जब ख़ुदा की हकीकत को नहीं जानता तो कैसे वह उसके मुताबिक कोई मिसाल ला सकता है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक गुलाम ममलूक की जो किसी चीज पर इख़्तियार नहीं रखता, और एक शख़्स है जिसे हमने अपने पास से अच्छा रिज्क दिया है, वह उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च करता है। क्या ये यकसां (समान) होंगे। सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते। (75)

मुश्रिकाना तमसीलात की ग़लती वाजेह करने के लिए यहां एक सादा और आम मिसाल दी गई है। एक शख़्स है जिसके पास हर किस्म के असबाब हैं और वह उनका जाती मालिक है। वहीं दूसरा शख़्स है जो किसी भी चीज का जाती मालिक नहीं। ये दोनों आदमी एक दूसरे से नौई (मौलिक) तौर पर मुख़्तलिफ हैं। इसलिए एक की मिसाल दूसरे पर कभी चसपां नहीं होगी। फिर ख़ुदा और बंदे में यह नौई फर्क तो अपने कमाल पर पहुंचा हुआ है। ऐसी हालत में कैसे मुमकिन है कि इंसान के वाकेयात से ख़ुदा पर मिसाल कायम की जाए। इस कायनात में ख़ुदा और दूसरी चीजों के दर्मियान जो तक्सीम है वह ख़ालिक और मख़्लूक की तक्सीम है न कि ख़ुदा और शरीके ख़ुदा की। ख़ुदा की हस्ती वह हस्ती है जो हर किस्म के कमालात का जाती सरचशमा (स्रोत) है। जो हर किस्म की नेमतों का तनहा बख़्शने वाला है। इस कायनात में सबसे ज्यादा ख़िलाफे वाकिआ बात यह है कि ख़ुदा के सिवा किसी और के लिए वे चीजें फर्ज की जाएं जिनमें कोई भी उनका शरीक नहीं।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख़्स हैं जिनमें से एक गूंगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक बोझ है। वह उसे जहां भेजता है वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता। क्या वह और ऐसा शख़्स बराबर हो सकते हैं जो इंसाफ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है। (76)

ऊपर आयत नम्बर 75 में ख़ुदा के मुकाबले में शरीकों का बेहकीकत होना बताया गया था। अब आयत 76 में रसूल के मुकाबले में उन हस्तियों का बेहकीकत होना वाजेह किया जा रहा है जिनके बल पर आदमी रसूल की हिदायत को नजरअंदाज करता है।

पैग़म्बर को ख़ुदा अपनी ख़ुसूसी तवज्जोह के जरिए उस शाहराह की तरफ रहनुमाई करता है जो हक की शाहराह है और जो बराहेरास्त ख़ुदा तक पहुंचाने वाली है। पैगम्बर और उसके साथी इस शाहराह पर खुद चलते हैं और दूसरों को भी उसकी तरफ रहनुमाई देते हैं। दूसरी तरफ वे लोग हैं जो पैग़म्बर के रास्ते के सिवा दूसरे रास्तों की तरफ बुलाते हैं। उनकी मिसाल अंधे बहरे की है। उनके पास कान नहीं कि वे ख़ुदा की आवाजों को सुनें, उनके पास आंख नहीं कि उसके जरिए ख़ुदा के जलवों को देखें। उनके अंदर वह कल्ब व दिमाग़ नहीं कि वे कायनात में फैली हुई ख़ुदाई निशानियों को पा लें।

समअ व बसर व फुआद (सुनना, देखना, दिल) इसलिए दिए गए थे कि इनके जरिए आदमी मख़्लूकात के आइने में ख़ालिक का जलवा देखे। मगर इंसान ने इनका इस्तेमाल यह किया कि वह ख़ुद मख़्लूकात में अटक कर रह गया।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾

और आसमानों और जमीन की पोशीदा (छुपी) बातें अल्लाह ही के लिए हैं और कियामत का मामला बस ऐसा होगा जैसे आंख झपकना बल्कि इससे भी जल्द। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (77)

आलमे जाहिर के पीछे एक ग़ैबी निजाम है। यह ग़ैबी निजाम ख़ुदा का कायम किया हुआ है। अपनी महदूदियत की वजह से अगरचे हम इस ग़ैबी निजाम को नहीं देखते मगर ख़ुद इस ग़ैबी निजाम पर हमारी हर चीज बिल्कुल खुली हुई है। ख़ुदा गैब में रहकर हर आन अपनी दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज को देख रहा है। उसे हर बात का सहीतरीन अंदाजा है। ख़ुदा जब फैसला करेगा कि अब इंसान के इम्तेहान की मुद्दत तमाम हो चुकी है, ऐन उस वक्त वह इशारा करेगा और इसके बाद पलक झपकते में मौजूदा निजाम यकलख़्त टूट जाएगा। और नया निजाम बिल्कुल मुख़्तलिफ बुनियादों पर कायम होगा ताकि हर एक को उस अस्ल मकाम पर पहुंचा दिया जाए जहां वह बाएतबार वाकिआ था न कि उस मकाम पर जहां वह मस्नूई (बनावटी) तौर पर अपने आपको बिठाए हुए था।

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट से निकाला, तुम किसी चीज को न जानते थे। और उसने तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो। (78)

इंसान जब पैदा होता है तो वह बिल्कुल आजिज और बेसमझ बच्चा होता है। मगर बड़ा होकर वह उन हैरतअंगेज क़ुव्वतों का मालिक बन जाता है जिन्हें कान और आंख और अक्ल कहते हैं। यह भी मुमकिन था कि आदमी जिस रोज पैदा हो उसी रोज उसके अंदर वे तमाम सलाहियतें मौजूद हों जो बड़ी उम्र को पहुंचकर उसके अंदर पैदा होती हैं।

मगर ऐसा नहीं किया गया। सिर्फ इसलिए कि इंसान के अंदर शुक्र का जज्बा पैदा हो। अव्वलन वह अपनी इब्तिदाई बेबसी की हालत को देखे और फिर यह देखे कि बाद को किस तरह वह एक तरक्कीयाफ्ता हालत को पहुंच गया है। यह देखकर वह ख़ुदा की मिली हुई नेमत का एहसास करे और ख़ुदा की एहसानमंदी के जज्बे से सरशार हो जाए।

किसी आदमी के अंदर यह कैफ़ियत सिर्फ उस वक्त पैदा हो सकती है जबकि वह ख़ुदा की दी हुई कुव्वतों को सही तौर पर इस्तेमाल करे। उसके कान और आंख और दिल बस जाहिरी दुनिया में अटक कर न रह जाएं बल्कि वे उसके लिए ऐसे रोशनदान बन जाएं जिनके जरिए झांक कर कोई शख़्स ग़ैब की झलकियों को देख लेता है।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨٠﴾

क्या लोगों ने परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की फजा में मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) हो रहे हैं। उन्हें सिर्फ अल्लाह थामे हुए है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून का मकाम बनाया और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिन्हें तुम अपने कूच के दिन और कयाम के दिन हल्का पाते हो। और उनकी ऊन और उनके रूऐं और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे की चीजें एक मुद्दत तक के लिए बनाईं। (79-80)

परिंदों का फजा में उड़ना क़ुदरत की एक अजीम मंसूबाबंदी के तहत मुमकिन होता है। परवाज के मक्सद के लिए परिंदों की निहायत मौज़ूं बनावट, जिसकी मशीनी नक्ल हवाई जहाज की सूरत में की गई है। जमीन के ऊपर हवा जो परिंदों के लिए ऐसी ही है जैसे कश्ती के लिए समुद्र। जमीनी कशिश की वजह से हवा का मुसलसल जमीन के ऊपर क़ायम रहना वग़ैरह। ये आला इंतिजामात अगर न हों तो फजा में परिंदों का उड़ना मुमकिन न हो सके।

इस वाकये को गहरी नजर से देखा जाए तो आदमी को ऐसा मालूम होगा कि गोया वह ख़ुदा को अपनी कायनात में अमल करते हुए देख रहा है। वह तख़्लीकी निजाम के अंदर उसके ख़ालिक को पा जाएगा। वह मस्नूआत (रचनाओं) के दर्मियान सानेअ (रचयिता) का जलवा देख लेगा।

यही मामला खुद इंसान का है। घर आदमी के लिए सुकून का मकाम है। लेकिन घर कैसे बनता है। ख़ुदा के बहुत से इंतिजामात हैं जिनकी वजह से जमीन पर एक घर का क़याम मुमकिन होता है। वे तमाम तामीरी अज्जा जिनके जरिए एक मकान बनता है, पेशगी तौर पर हमारी दुनिया में रख दिए गए हैं। जमीन में निहायत मुनासिब मिक्दार में क़ुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) है जिसकी वजह से मकानात जमीन की सतह पर जमे खड़े होते हैं। ऐसा न हो तो एक हजार मील फ़ी घंटा की रफ्तार से दौड़ती हुई जमीन के ऊपर मकानात उड़ जाएं। इसी तरह वे चीजें जिनसे आदमी हल्के फुल्के ख़ेमे बनाता है और वे चीजें जिनमें यह सलाहियत है कि इंसान के लिबास की सूरत में ढल जाएं और उसकी जीनत (सज्जा) का और मौसमों में उसकी जिस्मानी हिफ़ाजत का काम दें।

इस तरह की तमाम चीजें इसलिए हैं कि आदमी के अंदर अपने रब की नेमतों पर शुक्र का जज्बा पैदा हो, वह उसकी अज्मत व क़ुदरत के एहसास से उसके आगे गिर पड़े।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمْ بَأْسَكُمْ كَذَٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों की साये बनाए और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं। इसी तरह अल्लाह तुम पर अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फरमांबरदार बनो। (81)

छत का और दूसरी चीजों को साया कितनी अहमियत रखता है, इसका अंदाजा उस वक्त होता है जबकि आदमी अपने आपको किसी ऐसे सहरा में पाए जहां किसी किस्म का कोई साया न हो। सूरज की हददर्जा हिसाबी हरारत (तापमान) का यह नतीजा है कि एक मामूली आड़ भी हमें साया दे देता है। हालांकि अगर सूरज की हरारत मौजूदा हरारत से ज्यादा होती, जो यकीनी

तौर पर मुमकिन थी, तो हमारे तमाम सायादार घर आग की भट्टी में तब्दील हो जाते। पहाड़ जैसी सख़्त चट्टानों में ऐसे शिगाफ होना जहां आदमी अपनी पनाहगाहें बना सके। दुनिया में ऐसी चीजें मौजूद होना जो बारीक रेशों में ढलकर आदमी को उसके जिस्म के बचाव के लिए लिबास दें। इस किस्म की चीजें आदमी जैसी मख़्लूक़ के लिए इतनी अहम हैं कि अगर वे न होतीं तो जमीन पर न इंसान का वजूद होता और न किसी इंसानी तहजीब का।

यह मअरफत बयकवक्त आदमी के अंदर दो चीजें पैदा करती है। एक, ख़ुदा के लिए एहसानमंदी का जज्बा, क्योंकि वही है जिसने आदमी को ऐसी कीमती नेमतें दीं, दूसरे, अंदेशे का जज्बा, क्योंकि ख़ुदा अगर अपनी नेमतों को वापस ले ले तो इसके बाद आदमी के पास इनकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) की कोई सूरत नहीं। ये एहसासात जब आदमी के अंदरून को इस तरह जगा दें कि वह अपने रब के सामने गिर पड़े तो इसी का नाम इबादत है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٣﴾

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ साफ्साफ पहुंचा देने की जिम्मेदारी है। वे लोग ख़ुदा की नेमत को पहचानते हैं फिर वे उसके मुंकिर हो जाते हैं और उनमें अक्सर नाशुक्र हैं। (82-83)

जो शख़्स भी कायनात का मुतालआ करता है, चाहे वह एक आम आदमी हो या एक साइंसदां हो, उस पर ऐसे लम्हात गुजरते हैं, जबकि मख़्लूकात पर ग़ौर करते हुए उसका जेहन ख़ालिक की तरफ मुंतकिल हो जाता है। उसे महसूस होने लगता है कि ये हैरतनाक चीजें न तो अपने आप बन गई हैं और न मफरूजा (काल्पनिक) माबूदों ने इन्हें बनाया है। इनका बनाने वाला यकीनन ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर है।

मगर ख़ुदा को मानना लाजिमी तौर पर आदमी की अपनी जिंदगी में तब्दीली का तकाजा करता है। वह आदमी से उसकी आजादी छीन लेता है। इसलिए आदमी पर जब यह तजर्बा गुजरता है तो वक्ती तअस्सुर (प्रभाव) के बाद वह अपने जेहन को इस तरफ से हटा देता है। वह ख़ुदा को पाकर भी ख़ुदा को छोड़ देता है।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उठाएंगे। फिर इंकार करने वालों को हिदायत न दी जाएगी। और न उनसे तौबा ली जाएगी। और जब जालिम लोग अजाब को देखेंगे तो वह अजाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (84-85)

पैग़म्बर और पैग़म्बर के सच्चे पैरोकारों का कौमों के सामने हक का दाओ बनकर उठना बजाहिर एक मामूली वाक्या मालूम होता है। दुनिया ने आम तौर पर इन वाक़ेयात को इतना कम अहम समझा है कि एक पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को छोड़कर कोई दूसरा पैग़म्बर नहीं जिसका काम उसके समकालीन इतिहास में काबिले जिक्र करार पाया हो।

मगर यह काम उस वक्त बेहद अहम और बेहद संगीन बन जाता है जबकि उसे आख़िरत से जोड़ कर देखा जाए। क्योंकि आख़िरत की अजीम अदालत में यही पैग़म्बर और दाओ ख़ुदा के गवाह होंगे और इन्हीं की गवाही पर लोगों के अबदी मुस्तकबिल का फैसला किया जाएगा। जिन अफराद के बारे में गवाह ये कहेंगे कि उन्होंने हक को माना और अपने आपको उसकी इताअत में दिया वे वहां की अबदी दुनिया में जन्नती करार पाएंगे। और जिनके बारे में ख़ुदा के ये गवाह बताएंगे कि उन्होंने हक का इंकार किया और उसकी इताअत (आज्ञापालन) पर राजी नहीं हुए वे अबदी जहन्नम में डाल दिए जाएंगे।

किसी कौम में ख़ुदा के सच्चे दाओ उठें और वह कौम उनकी बात न माने तो यह उसके मुजरिम होने का कतई सुबूत होता है, इसके बाद वह कौम यह कहने का हक खो देती है कि हमें कियामत और जन्नत दोज़ख़ की ख़बर न थी, इसलिए हमें आज के दिन की सजा से माफ रखा जाए।

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

और जब मुश्रिक (बहुदेववादी) लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब, यही हमारे वे शुर्का (ईश्वरत्व के साझीदार) हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारते थे। तब वे बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो। और उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जाएंगे और उनकी इफ्तिरा परदाजियां (गढ़े हुए झूठ) उनसे गुम हो जाएंगी। जिन्होंने इंकार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोका, हम उनके अजाब पर अजाब का इजाफा करेंगे उस फसाद की वजह से जो वे करते थे। (86-88)

कियामत में यह हकीकत आख़िरी हद तक खुल जाएगी कि इस कायनात में एक ख़ुदा के सिवा किसी के पास कोई ताकत नहीं। उस वक्त जब पूजने वाले अपने उन माबूदों को देखेंगे जिन्हें वे पूजते थे तो वे ऐसी बातें कहेंगे जिनसे उनकी बरा-त (विरक्ति) साबित होती हो। गोया कि ये झूठे माबूद धोखा देकर उनसे ग़ैर ख़ुदा की परस्तिश कराते थे। मगर वे माबूद फौरन इसकी

तरदीद करेंगे और कहेंगे कि यह तुम्हारी अपनी सरकशी थी। तुमने ख़ुदा की ताबेदारी से बचने के लिए बतौर ख़ुद झूठे माबूद गढ़े और उनके नाम पर अपने ख़्वाहिशपरस्ताना मजहब को जाइज साबित करते रहे।

एक वह शख़्स है जो हक की दावत को क़ुबूल नहीं करता। दूसरा वह है जो इसी के साथ दूसरों को भी तरह-तरह से रोकने की कोशिश करता है। पहली रविश अगर गुमराही है तो दूसरी रविश गुमराही की कयादत। गुमराह लोगों को जो अजाब होगा, उसका दुगना अजाब उन लोगों को मिलेगा जो दुनिया में गुमराही की कयादत (नेतृत्व) करते रहे।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उन पर उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर लाएंगे और हमने तुम पर किताब उतारी है हर चीज को खोल देने के लिए। वह हिदायत और रहमत और बशारत (शुभ सूचना) है फ़रमांबरदारों के लिए। (89)

अल्लाह तआला का तरीक़ा यह है कि किसी क़ौम पर इंजार व तबशीर (तंबीह और ख़ुशख़बरी) का काम ख़ुद उस क़ौम के किसी मुंतख़ब फ़र्द के जरिए अंजाम दिलाता है। यही वजह है कि किसी क़ौम में जो पैग़म्बर आए वे ख़ुद उसी क़ौम के एक फ़र्द थे। अब उम्मते मुस्लिमा को कियामत तक इसी तरह हर क़ौम के अंदर दावत (आह्वान) व शहादत (सत्य की गवाही) की जिम्मेदारी अंजाम देना है।

यह दुनिया में क़ौमों को दावत देने वाले आख़िरत में क़ौमों के ऊपर ख़ुदा के गवाह होंगे। उन्हीं की गवाही पर क़ौम के हर फ़र्द के लिए सवाब या अजाब का फ़ैसला किया जाएगा।

क़ुरआन में हर चीज का बयान है। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरी आसमानी किताबों में हर चीज का बयान न था। हक़ीक़त यह है कि हर आसमानी किताब जो ख़ुदा की तरफ से आई उसमें हर चीज का बयान मौजूद था। ताहम उस हर चीज का तअल्लुक़ दुनिया के उलूम व फ़ुनून (ज्ञान-विज्ञान) से नहीं है बल्कि आख़िरत की कामयाबी और नाकामी के इल्म से है। वे तमाम चीजें जो आख़िरत में किसी को कामयाब या नाकाम बनाने वाली हैं वे सब उसूली तौर पर क़ुरआन में बयान कर दी गई हैं। अब जो लोग उससे हिदायत लेंगे, उनके लिए वह एक अजीम नेमत बन जाएगी। और जो लोग उससे हिदायत न लें उनके हिस्से में सिर्फ यह आएगा कि उसका इंकार करके अपनी हलाकत के लिए जवाज (औचित्य) फराहम करें।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

बेशक अल्लाह हुक्म देता है अद्ल (न्याय) का और एहसान (परोपकार) का और क़राबतदारों (नातेदारों) को देने का। और अल्लाह रोकता है बेहयाई के कामों और बुराई से और सरकशी से। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करो। (90)

दुनिया में कोई अल्लाह का बंदा किस तरह रहे, इसका वाजेह बयान इस आयत में मौजूद है। इसकी इसी अहमियत की बिना पर ख़लीफ़ा-ए-राशिद हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज ने इस आयत को जुमा के हफ्तेवार ख़ुतबे में शामिल किया था।

पहली चीज जिसका एक शख़्स को एहतमाम करना है वह अद्ल है। इसका मतलब यह है कि एक शख़्स का जो हक दूसरे पर आता है वह उसे पूरी तरह अदा करे, चाहे साहिबे हक कमजोर हो या ताक़तवर, और चाहे वह पसंदीदा शख़्स हो या नापसंदीदा। हुक़ूक़ की अदायगी में सिर्फ़ हक का लिहाज किया जाए न कि दूसरे एतबारात का।

दूसरी चीज एहसान है। इससे मुराद यह है कि हुक़ूक़ की अदायगी में आली जर्फ़ी का तरीक़ा अपनाया जाए। इंसाफ़ के साथ मुरव्वत को जमा किया जाए। क़ानूनी दायरे से आगे बढ़कर लोगों के साथ फय्याजी (सहृदयता) और हमदर्दी का रवैया इख़्तियार किया जाए। आदमी के अंदर यह हौसला हो कि मुमकिन हद तक वह अपने लिए अपने हक से कम पर राजी हो जाए, और दूसरे को उसके हक से ज्यादा देने की कोशिश करे।

तीसरी चीज संबंधियों को देना है। इसका मतलब यह है कि आदमी जिस तरह अपने बीवी बच्चों की जरूरत को देखकर तड़प उठता है और उसे पूरा करता है, इसी तरह वह दूसरे करीबी लोगों की जरूरत के बारे में भी हस्सास हो। हर साहिबे इस्तेदाद शख़्स अपने माल पर सिर्फ अपना और अपने घर वालों ही का हक न समझे बल्कि अपने रिश्तेदारों के हुक़ूक़ अदा करने को भी वह अपनी जिम्मेदारी में शामिल करे। इसके बाद आयत में तीन चीजों से मना फ़रमाया गया है।

पहली चीज फ़हश है। इसके मुराद खुली हुई अख़्लाक़ी बुराइयां हैं। यानी वे बुराइयां जिनका बुरा होना ख़ुद अपने जमीर के तहत हर आदमी को मालूम होता है। और लोग आम तौर पर उसे शर्मनाक समझते हैं।

दूसरी चीज मुन्कर है। मुन्कर मारूफ का उल्टा है। मारूफ उन अच्छी बातों को कहते हैं जिन्हें हर मुआशिरे में अच्छा समझा जाता है। इसके बरअक्स मुन्कर से मुराद वे नामाकूल काम हैं जो आम अख़्लाक़ी मेयार के ख़िलाफ हैं। इसमें वे तमाम चीजें शामिल हैं जिन्हें इंसान आम तौर पर बुरा जानते हैं और जिन्हें क़ुबूल करने से इंसान की फितरत इंकार करती है।

तीसरी चीज बग़ी है। इसके मअना हैं हद से तजावुज करना। इसमें हर वह सरकशी दाख़िल है जबकि आदमी अपनी वाक़ई हद से गुजर कर दूसरे शख़्स पर दस्तदराजी करे। वह किसी की जान या माल या आबरू लेने के लिए उसके ऊपर नाहक कार्रवाइयां करे। वह अपने जोर व असर को नाजाइज फ़ायदा उठाने के लिए इस्तेमाल करने लगे।

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُونُوا

كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِن بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

और तुम अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो जबकि तुम आपस में अहद कर लो। और कसमों को पक्का करने के बाद न तोड़ो। और तुम अल्लाह को जामिन भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपना महनत से काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ दिया। तुम अपनी कसमों को आपस में फसाद डालने का जरिया बनाते हो महज इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। अल्लाह इसके जरिए से तुम्हारी आजमाइश करता है और वह कियामत के दिन उस चीज को अच्छी तरह तुम पर जाहिर कर देगा जिसमें तुम इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हो। (91-92)

सूत कातना महनत के जरिए बिखरे हुए रेशों का यकजा करना है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि इंसान के लिए कारआमद चीजें तैयार हों। अब अगर कोई मर्द या औरत दिन भर महनत करके सूत काते और फिर शाम के वक्त अपने काते हुए सूत को पारा-पारा कर दे तो उसकी सारी महनत बेनतीजा होकर रह जाएगी।

यही मामला उन लोगों का है जो आपस में एक मुआहिदा (समझौता) करें और फिर एक या दूसरा फरीक (पक्ष) किसी माकूल सबब के बग़ैर उसे तोड़ डाले। काते हुए सूत का ख़्वामख़्वाह बिखेरना अपनी महनत को अकारत करना है। इसी तरह किए हुए मुआहिदे को तोड़ डालना उस पूरे अमल को बातिल करना है जिसके नतीजे में बाहमी इत्तेफाक का एक मामला वजूद में आया था।

मौजूदा दुनिया में एक आदमी दूसरे आदमियों के साथ मिलकर जिंदगी गुजारता है। हर आदमी को अपना काम दूसरे बहुत से आदमियों के दर्मियान करना होता है। इस बिना पर इज्तिमाई जिंदगी में बाहमी एतमाद की बहुत ज्यादा अहमियत है। इसी इज्तिमाई जिंदगी को कायम करने की ख़ातिर बार-बार एक इंसान और दूसरे इंसान के दर्मियान मुआहिदे और कौल व करार वजूद में आते हैं, कभी कसम खाकर और कभी कसम के बग़ैर। अब अगर लोग ऐसा करें कि मुआहिदों को हकीकी जवाज (औचित्य) के बग़ैर तोड़ डालें तो इज्तिमाई जिंदगी में फसाद फैल जाए और किसी किस्म की तामीर मुमकिन न रहे।

ख़ुदा के नाम पर मुआहिदे की दो सूरतें हैं। एक यह कि बाकायदा कसम के अल्फाज अदा करके किसी से कोई अहद किया जाए। दूसरे यह कि कसम के अल्फाज न बोले जाएं ताहम जो मुआहिदा किया गया है उसमें ख़ुदा का हवाला भी किसी पहलू से शामिल हो। ऐसी तमाम सूरतों में अहद करने वाले गोया ख़ुदा को इस मामले का गवाह या जामिन बनाते हैं। ऐसे मुआहिदे जिनमें ख़ुदा का नाम भी शामिल किया गया हो उन्हें तोड़ना और भी ज्यादा बुरा है क्योंकि इसका मतलब यह है कि जब आदमी को दूसरों के ऊपर अपना एतबार कायम करना था तो उसने

ख़ुदा के नाम को इस्तेमाल किया और जब उस पर नफ्स या मफाद के तकाजे ग़ालिब आए तो उसने ख़ुदा को नजरअंदाज कर दिया।

अफराद या कौमों के दर्मियान जो मुआहिदे होते हैं उनकी दो सूरतें हैं। एक यह कि वे उसूलों के ताबेअ हों। दूसरे यह कि वे मफादात के ताबेअ हों। कदीम जमाने में और आज भी आम हालत यह हैं कि जब मुआहिदा करने में कोई फायदा नजर आए तो मुआहिदा कर लिया। और जब तोड़ना मुफीद मालूम हुआ तो उसे तोड़ दिया। इसके बरअक्स इस्लाम की तालीम यह है कि मुआहिदों को शरई और अख़्लाकी उसूलों के ताबेअ रखा जाए।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह बेराह कर देता है जिसे चाहता है और हिदायत दे देता है जिसे चाहता है और जरूर तुमसे तुम्हारे आमाल की पूछ होगी। (93)

दुनिया में इख़्तेलाफात (मत-भिन्नताएं) हैं। हक और नाहक एक दूसरे से अलग नहीं होते। इसकी वजह ख़ुदा का वह मंसूबा है जिसके तहत उसने मौजूदा दुनिया को बनाया है। और वह मंसूबा इम्तेहान है।

मौजूदा दुनिया में इंसान को जांच की ग़रज से रखा गया है। यह मक्सद इसके बग़ैर पूरा नहीं हो सकता था कि हर आदमी को मानने और न मानने की आजादी हो। यहां तक कि उसे यह भी आजादी हो वह हक को नाहक साबित करे और नाहक को हक के रूप में पेश करे। अगर यह मस्लेहत न होती तो ख़ुदा तमाम इंसानों को उसी तरह अपने हुक्म का पाबंद बना देता जिस तरह वह बकिया कायनात को अपने हुक्म का पाबंद बनाए हुए है।

यह सूरतेहाल कियामत तक के लिए है। कियामत के दिन खुल जाएगा कि किसने अपनी समझ को सही तौर पर इस्तेमाल किया और किसने अपने मफाद (स्वार्थ) के ख़ातिर सच्चाई को नजरअंदाज किया। उस वक्त ख़ुदा हर एक के साथ वह मामला करेगा जिसका उसने मौजूदा इम्तेहानी मरहले में अपने को अहल साबित किया था।

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدتُّمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

और तुम अपनी कसमों को आपस में फरेब का जरिया न बनाओ कि कोई कदम जमने के बाद फिसल जाए और तुम इस बात की सजा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से

रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ा अजाब है। और अल्लाह के अहद (वचन) को थोड़े फायदे के लिए न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। (94-95)

कसम खाकर मुआहिदा (समझौता) करना पुख़्ता मुआहिदे की आख़िरी सूरत है। इस एतबार से इस आयत के तहत तमाम मुआहिदे आ जाते हैं।

अगर मुसलमान ऐसा करें कि वे दूसरों से मुआहिदाती मामले करें और फिर किसी हकीकी सबब के बग़ैर महज मफ़ाद के ख़ातिर उन्हें तोड़ दें तो इससे माहौल में मुसलमानों की अख़्लाकी साख ख़त्म हो जाएगी। और नतीजतन उनका यह अमल लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जरिया बन जाएगा। मुफस्सिर इब्ने कसीर लिखते हैं कि जब मुंकिरे इस्लाम देखेगा कि मुसलमान ने मुआहिदा किया और फिर उसने उससे बेवफाई की तो उसे दीने इस्लाम पर एतमाद बाकी न रहेगा और इसकी वजह से वह ख़ुदा के दीन में दाख़िल होने से रुक जाएगा।

अहद को गैर शरई तौर पर तोड़ने का वाकया हमेशा इसलिए पेश आता है कि आदमी को यह नजर आने लगता है कि अगर वह मुआहिदे को तोड़ दे तो उसे फुलां दुनियावी फायदा हासिल हो जाएगा। मगर मोमिन की नजर आख़िरतपसंदाना नजर होती है। जब भी उसका नफ्स इस किस्म की तहरीक करता है तो वह अपने नफ्स को यह कहकर दबा देता है कि मुआहिदा तोड़ने में अगर दुनिया का फायदा है तो मुआहिदा न तोड़ने में आख़िरत का फायदा। और दुनिया के फायदे के मुक़ाबले में आख़िरत का फायदा यकीनन ज्यादा बड़ा है।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ [96] مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ [97]

जो कुछ तुम्हारे पास वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाकी रहने वाला है। और जो लोग सब्र करेंगे हम उनके अच्छे कामों का अज्र (प्रतिफल) उन्हें जरूर देंगे। जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो हम उसे जिंदगी देंगे, एक अच्छी जिंदगी। और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें बेहतरीन बदला देंगे। (96-97)

ख़ुदा के दाओ का साथ देना रवाजयाफ़्ता मज्हबी निजाम को छोड़कर ग़ैर रवाजी मज्हब के साथ अपने आपको वाबस्ता करना है। इस तरह का इक्दाम हमेशा आदमी के लिए मुश्किलतरीन होता है। इसमें उस फायदे को नजरअंदाज करना होता है जो इंसानों से मिल रहा है। और उस फायदे की तरफ बढ़ना होता है जो ख़ुदा से मिलने वाला है।

इस किस्म का फैसला करने के लिए वाहिद चीज जो दरकार है वह 'सब्र' है। यानी यह बर्दाश्त कि आदमी कल के फायदे के ख़ातिर आज का नुक्सान गवारा कर सके। यह

सलाहियत कि आदमी नजर आने वाली चीज के मुक़ाबले में उसे ज्यादा अहमियत दे सके जो नजर नहीं आती। यह हौसला कि आदमी कुर्बानी की कीमत पर किसी चीज को इख़्तियार करे न कि महज फौरी नफा की कीमत पर। ख़ुदा के जो बंदे इस उलुलअज्मी (संकल्प) का सुबूत दें यकीन वे इस काबिल हैं कि ख़ुदा उन्हें अपनी आलातरीन नेमतों से नवाजे।

जो अफ़राद बेआमेज (विशुद्ध) हक का साथ देने की वजह से मुरव्वजह (स्थापित) निजाम में नुक्सान उठाते हैं। उन्हें लोग समझ लेते हैं कि वे बर्बाद हो गए। मगर ख़ुदा का वादा है कि वह उन्हें उनकी कुर्बानियों का भरपूर मुआवजा देगा। मौत के बाद की अबदी (चिरस्थाई) दुनिया में वह उन्हें निहायत बेहतर जिंदगी से नवाजेगा। जिन चीजों को उन्होंने वक्ती तौर पर खोया है, उन्हें वह ज्यादा बेहतर शक्ल में अबदी तौर पर दे देगा।

ख़ुदा का यह वादा औरतों के लिए भी इसी तरह है जिस तरह वह मर्दों के लिए है। ख़ुदा के यहां जजा के मामले में औरत और मर्द की कोई तक्सीम नहीं।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ [98] اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ [99] اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ [100]

पस जब तुम कुरआन को पढ़ो तो शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगो। उसका जोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। उसका जोर सिर्फ उन लोगों पर चलता है जो उससे तअल्लुक रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। (98-100)

कुरआन को पढ़ने की दो सूरते हैं। एक, अपनी नसीहत के लिए पढ़ना। दूसरे, दावत (आह्वान) की ख़ातिर दूसरों के सामने पेश करना, चाहे कुरआन के अल्फाज दोहराए जाएं या उसके मतालिब (भावार्थ) बयान किए जाएं। दोनों सूरतों में जरूरी है कि आदमी शैतान के मुक़ाबले में ख़ुदा की पनाह मांगे। पनाह चाहने का मतलब सिर्फ कुछ मुक़र्ररह अल्फाज की तकरार नहीं बल्कि अपने आपको शुऊरी तौर पर मुसल्लह करना है ताकि शैतान का हमला बेअसर होकर रह जाए।

शैतान हर वक्त आदमी की घात में है। वह कुरआन के अल्फाज के मफ्हूम (भावार्थ) को उसके कारी के जेहन में बदल देता है। और जो चीज मत्न (मूल पाठ) में न हो उसे तफ्सीर में शामिल करा देता है। इसी तरह शैतान दाओ और मदऊ के दर्मियान ऐसे फितने उभारता है जिसके नतीजे में दावत (आह्वान) का अमल रुक जाए।

ताहम शैतान को ख़ुदा ने सिर्फ बहकाने और वरग़लाने की आजादी दी है। उसे यह ताकत नहीं दी कि वह किसी को बजोर गुमराही के रास्ते पर डाल दे। जो लोग ख़ुदा से अपना जेहनी राब्ता कायम किए हुए हों उन पर उसका कुछ बस नहीं चलता। अलबत्ता जो लोग ख़ुदा से ग़ाफिल हों और शैतान की बातों पर ध्यान दें उनके ऊपर शैतान मुसल्लत हो जाता है और फिर जिधर चाहता है उधर उन्हें ले जाता है।

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (١٠١) قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ (١٠٢)

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तुम गढ़ लाए हो। बल्कि उनमें अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। कहो कि इसे रूहुल कुदुस (पवित्र आत्मा) ने तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ उतारा है ताकि वह ईमान वालों को साबित कदम रखे और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी हो फरमांबरदारों के लिए। (101-102)

कुरआन एक दावती किताब है। इसके मुख़्तलिफ हिस्से 23 साल के अर्से में थोड़ा-थोड़ा करके उतरते रहे। दावत व तर्बियत के मुसालेह के तहत कुछ अहकाम में तदरीज (क्रम) का तरीका भी इख़्तियार किया गया (मसलन पहले यह हुक्म आया कि मुख़ालिफों के मुकाबले में सब्र करो। इसके बाद यह हुक्म आया कि उनसे जंग करो।)

इस किस्म की 'तब्दीलियों' को लेकर मुख़ालिफीन यह कहते कि कुरआन ख़ुदा की किताब नहीं। यह मुहम्मद की अपनी तस्नीफ (कृति) है जिसे उन्होंने ख़ुदा की तरफ मंसूब कर दिया है। अगर वह ख़ुदा की तरफ से होती तो उसमें कभी इस किस्म की तब्दीलियां न होतीं।

मुख़ालिफीन अगर कुरआन के मामले में संजीदा होते और तब्दीली के वाक्ये को सही रुख़ से देखते तो इसमें उन्हें तदरीज फिलअहकाम (आदेशों में क्रम) की हिक्मत नजर आती। मगर जब उन्होंने इसे गलत रुख़ से देखा तो तब्दीली का वाकया उन्हें इंसानी इल्म की कमी का नतीजा नजर आया। जिस चीज में उनके लिए तस्दीक (प्रमाण) का सामान छुपा हुआ था उसे उन्होंने अपने लिए इफ्तिरा (गढ़ना) का जरिया बना लिया।

कुरआन को हक के साथ उतारा गया है। यहां हक से मुराद ख़ुदा का ख़ालिस और बेआमेज (विशुद्ध) दीन है। जो लोग सच्चाई के तालिब हों और मिलावटी दीनों में इत्मीनान न पाते हों, उनके लिए कुरआनी दीन में अपनी तलाश का जवाब भी है और उनकी तस्कीने कल्ब का सामान भी।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُبِينٌ (١٠٣) إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (١٠٤) إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ (١٠٥)

और हमें मालूम है कि ये लोग कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है। जिस शख़्स की तरफ वे मंसूब करते हैं। उसकी जबान अजमी (ग़ैर-अरबी) है और यह

कुरआन साफ अरबी जबान है। बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सजा है। झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और यही लोग झूठे हैं। (103-105)

मक्का में कुछ अजमी (ग़ैर-अरबी) ग़ुलाम थे। उनके नाम तफ़्सीर की किताबों में हैर, यसार आइश, यईश वग़ैरह आए हैं। इस जिम्न में सलमान फारसी का नाम भी लिया गया है जो बाद को मुसलमान हो गए। ये ग़ुलाम या यहूदी थे या नसरानी। इस बिना पर वे कदीम आसमानी मजाहिब, यहूदियत और नसरानियत के बारे में मालूमात रखते थे। इनमें से किसी की कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाकात हो जाती थी। इस तरह की मुलाकातों को बुनियाद बनाकर कुरैश के लीडरों ने कहा कि 'यही अजमी लोग मुहम्मद को कुछ बातें बता देते हैं और वह उन्हें ख़ुदाई कलाम बताकर लोगों के सामने पेश करते हैं।'

यह मजहकाख़ेज़ बात उन्होंने क्यों कही। इसकी वजह वही आम बुराई है जो हर जमाने में और हमेशा दुनिया में पाई गई है। वह है अपने हमअस्र (समकालीन) की कीमत को न पहचानना। कुरैश के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मुआसिर (समकालीन) शख़्सियत थे, इसलिए वे आपको पहचानने और आपकी कद्र करने में नाकाम रहे।

इस आयत से मालूम होता है कि जो लोग मुआसिराना नफ्सियात के फितने में मुब्तिला हों वे कभी हक को कुबूल करने की तौफीक नहीं पाते। वे हक को मान लेने के बजाए यह करते हैं कि हक के अलमबरदार के ख़िलाफ झूठी बातें गढ़ते रहते हैं। वे बड़ी-बड़ी हकीकतों को नजरअंदाज कर देते हैं। और छोटी-छोटी बातों को लेकर दाओी की शख़्सियत को बदनाम करते हैं। वे इसी में मशग़ूल रहते हैं, यहां तक कि मर कर ख़ुदा की पकड़ के मुस्तहिक बन जाते हैं।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (١٠٦) ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ (١٠٧) أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ (١٠٨) لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ (١٠٩)

जो शख़्स ईमान लाने के बाद अल्लाह से मुंकिर होगा, सिवा उसके जिस पर जबरदस्ती की गई हो बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख़्स दिल खोलकर मुंकिर हो जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उन्हें बड़ी सजा होगी। यह इस वास्ते कि उन्होंने आख़िरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी को पसंद किया और अल्लाह मुंकिरों को रास्ता नहीं दिखाता। ये वे लोग हैं कि अल्लाह

ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर मुहर कर दी। और ये लोग बिल्कुल ग़ाफिल हैं। लाजिमी बात है कि आख़िरत में ये लोग घाटे में रहेंगे। (106-109)

ख़ुदा के यहां हकीकत का एतबार किया जाता है न कि महज जाहिर का। यही वजह है कि इस्लाम में इंसान के साथ बहुत रिआयत की गई है। अगर कोई शख़्स दिल से ख़ुदा का सच्चा वफ़ादार हो। मगर सख़्त मजबूरी की हालत में अपनी जान बचाने के लिए वक्ती तौर पर कोई ख़िलाफ़े ईमान कलिमा कह दे तो ख़ुदा के यहां इस पर उसकी पकड़ न होगी। मगर वे लोग ख़ुदा के यहां नाकाबिले माफ़ी हैं जो अंदर से बदल चुके हों। जो शैतानी शुबहात या हालात के दबाव से मुतअस्सिर होकर दिल की रिजामंदी से किसी और रास्ते पर चल पड़ें।

जब आदमी ईमान के बजाए ग़ैर ईमान की रविश इख़्तियार करता है तो इसकी वजह हमेशा दुनियापरस्ती होती है। वह दुनियावी मफ़ाद को ख़तरे में देखकर ग़ैर मोमिनाना रविश पर चल पड़ता है। अगर वह आख़िरत की क़द्र व कीमत को समझता तो दुनिया का मफ़ाद उसे इतना हकीर (तुच्छ) नजर आता कि उसे यह बात बिल्कुल लग्व (घटिया) मालूम होती कि दुनिया की ख़ातिर वह आख़िरत को छोड़ दे।

आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया के फ़ायदे अगर किसी के नजदीक अहमतर बन जाएं तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि वह मामलात को आख़िरत के नुक्तए नजर से सोच नहीं पाता। वह देखता और सुनता है मगर दुनिया की तरफ झुकाव की वजह से चीजों का उख़रवी (परलोकवादी) पहलू उसकी निगाहों से ओझल हो जाता है। वह उसी पहलू को देख पाता है जो दुनियावी मसालेह (हितों) से तअल्लुक रखते हों। जो लोग ग़फ़लत के इस मर्तबे को पहुंच जाएं उनके हिस्से में अबदी (चिरस्थाई) नुक्सान के सिवा और कुछ नहीं।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

फिर तेरा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आजमाइश में डाले जाने के बाद हिजरत (स्थान-परिवर्तन) की, फिर जिहाद किया और कायम रहे तो इन बातों के बाद बेशक तेरा रब बख़्शने वाला, महरबान है। जिस दिन हर शख़्स अपनी ही तरफदारी में बोलता हुआ आएगा। और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (110-111)

माहौल पर नाहक का ग़लबा हो, उस वक्त कोई शख़्स हक को कुबूल कर ले तो वह सख़्त आजमाइश में पड़ जाता है। चारों तरफ से माहौल का दबाव जोर करता है कि आदमी दुबारा ख़्वाजी दीन की तरफ लौट जाए। ऐसी हालत में अगर वह हक पर कायम रहे, वह हर चीज यहां तक कि जायदाद और वतन को छोड़ दे मगर हक को न छोड़े तो वह मुहाजिर और मुजाहिद है। और अल्लाह की नजर में बहुत बड़े सवाब का मुस्तहिक है।

दुनिया की आजमाइश में जो चीज हक पर साबित क़दम रखने वाली है वह सिर्फ़ आख़िरत की याद है। हर आदमी पर बहुत जल्द एक हौलनाक दिन आने वाला है। वह दिन ऐसा सख़्त होगा कि आदमी अपने दोस्तों और रिश्तेदारों तक को भूल जाएगा। वहां न कोई शख़्स किसी की तरफ से बोल सकेगा और न कोई शख़्स किसी का सिफ़ारिशी बनकर खड़ा होगा। अगर आदमी को उस आने वाले दिन का एहसास हो तो उसका यही हाल होगा कि वह हर किस्म का नुक्सान गवारा कर लेगा मगर हक को कभी न छोड़ेगा।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है कि वे अम्न और इत्मीनान में थे। उन्हें उनका रिज़्क फ़राग़त के साथ हर तरफ से पहुंच रहा था। फिर उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उन्हें उनके आमाल के सबब से भूख और ख़ौफ़ का मजा चखाया। और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उसे उन्होंने झूठा बताया फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। (112-113)

इंसानों की कोई आबादी इत्मीनान की हालत में हो और उसके दर्मियान रिज़्क की फ़रावानी हो। फिर ख़ुदा अपने किसी बंदे को उनके दर्मियान खड़ा करे जो उन्हें हक की तरफ बुलाए तो ऐसी हालत में हमेशा दो में से कोई एक सूरत पेश आती है। या तो यह आबादी हक को कुबूल करके मजीद (अतिरिक्त) ख़ुदाई इनामात की मुस्तहिक बने और अगर वह ऐसा न करे तो फिर यह होता है कि उस पर तरह-तरह के हादसात गुजरते हैं। ये हादसात उसके हक में ख़ुदाई अजाब नहीं होते बल्कि ख़ुदाई तंबीहात (चेतावनियां) होते हैं। इनका मक्सद यह होता है कि लोग चौकन्ने हो जाएं। उनकी हस्सासियत (संवेदनशीलता) जागे और वे ख़ुदा के दाई की पुकार पर लब्बैक कहने के लिए तैयार हो जाएं।

अगर इस किस्म की तंबीहात कारगर न हों तो दावत की तक्मील के बाद दूसरा मरहला यह आता है कि उस कौम को हलाक कर दिया जाए ताकि वह आख़िरत के आलम में पहुंच कर अपने अबदी अंजाम को भुगते।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٥﴾

सो जो चीजें अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो। अगर तुम उसकी इबादत करते हो। उसने तो तुम पर सिर्फ मुर्दार को हराम किया है और ख़ून को और सुअर के गोश्त को और जिस पर ग़ैर-अल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए बशर्ते कि वह न तालिब हो और न हद से बढ़ने वाला, तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (114-115)

इस आयत का तअल्लुक रोजमर्रह खाने वाली चीजों से है। ख़ुदा ने जो काबिले ख़ुराक चीजें पैदा की हैं, उनमें चन्द मुतअय्यन चीजों को छोड़कर बकिया सब इंसान के लिए हलाल हैं। ताहम कदीम मुश्रिक इंसान ने यह किया कि ख़ुदा की हलाल की हुई बहुत सी ग़िज़ाओं को बतौर ख़ुद अपने लिए हराम कर लिया। जदीद मुलहिद (आधुनिक नास्तिक) इंसान ने इसके बरअक्स यह किया कि ख़ुदा की हराम की हुई बहुत सी गिजाओं को बतौर खुद अपने लिए हलाल ठहरा लिया। यह दोनों चीजें उस रूह (भावना) की कातिल हैं जिसे ग़िज़ाई नेमतों के जरिए इंसान के अंदर पैदा करना मक्सूद है।

ग़िज़ा इंसान की तमाम जरूरतों में सबसे ज्यादा अहम जरूरत है जिसका हर इंसान को सुबह व शाम तजर्बा होता है। ख़ुदा को यह मत्लूब है कि आदमी जब ग़िज़ा का इस्तेमाल करे तो वह उसे ख़ुदा का अतिय्या (देन) समझ कर खाए और उस पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे। मगर इंसान ने पूरे मामले को उलट दिया।

कदीम मुश्रिकाना दौर में उसने इन ग़िज़ाओं को देवताओं के साथ मंसूब किया और इस तरह उन्हें ख़ुदा के बजाए देवताओं की याद का जरिया बना दिया। जदीद मुलहिदाना जमाने में यह हुआ है कि इंसान ने सारे मामले को अपनी लज्जते नफ्स के ताबेअ कर दिया। उसने ख़ुदा की हराम ग़िज़ाओं को भी अपने लिए हलाल ठहरा लिया। नतीजा यह हुआ कि ख़ुदा की पैदा की हुई चीजें उसके लिए सिर्फ अपनी लज्जत का दस्तरख़्वान बनकर रह गईं।

मजबूरी की हालत में अगर कोई शख़्स ख़ुदा के ग़िज़ाई कानून को बदले तो वह नदामत के जज्बे के तहत ऐसा करेगा न कि सरकशी के जज्बे के तहत। इसलिए इससे नफ्सियाते इंसानी में कोई ख़राबी पैदा होने का अंदेशा नहीं।

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

और अपनी जबानों के गढ़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह हलाल है, और यह हराम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ। जो लोग अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे फलाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। वे थोड़ा सा फायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (116-117)

इस आयत का तअल्लुक आम कानूनसाजी से नहीं है बल्कि ग़िज़ाई चीजों में हराम व हलाल मुकर्रर करने से है। इंसान हमेशा यह करता रहा है कि वह खाने की चीजों में कुछ को जाइज और कुछ को नाजाइज ठहराता है। ऐसा या तो तवह्हुमात (अंधविश्वास) के तहत होता है या ख़्वाहिशात के तहत। मगर इसे करने वाले इसे मजहब की तरफ मंसूब कर देते हैं।

मज्कूरा किस्म की तहरीम (अवैधता) व तहलील (वैधता) का यह नुक्सान है कि इससे लोगों में तवह्हुमपरस्ती और ख़्वाहिशपरस्ती का मिजाज पैदा होता है। जबकि आदमी के लिए सही बात यह है कि वह दुनिया में ख़ुदापरस्त बनकर रहे।

मौजूदा जिंदगी में इम्तेहान की वजह से इंसान को आजादी हासिल है। तवह्हुमात और ख़्वाहिशात को अपना दीन बनाने का मौका मिलने की वजह यही आजादी है। जब इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी तो अचानक इंसान पाएगा कि उसके लिए एक ही मुमकिन रास्ता था। यानी ख़ुदापरस्ती को अपना दीन बनाना। इसके अलावा जिन चीजों को उसने अपनाया वह सिर्फ इम्तेहानी आजादी का ग़लत इस्तेमाल था न कि उसका कोई जाइज हक। उस वक्त उसे वही सजा भुगतनी पड़ेगी जो इम्तेहान में नाकाम होने वालों के लिए मुकद्दर है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

और यहूदियों पर हमने वे चीजें हराम कर दी थीं जो हम इससे पहले तुम्हें बता चुके हैं कि हमने उन पर कोई जुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर जुल्म करते रहे। (118)

यहूद की मजहबी किताबों में कुछ ऐसी खाने की चीजें हराम हैं जो इस्लाम की शरीअत में हराम नहीं की गई हैं। (अन-निसा 160)। इसकी वजह यह नहीं कि ख़ुद ख़ुदा ने दो किस्म के अहकाम दिए हैं। यहूद पर भी अस्लन वही ग़िज़ाई चीजें हराम ठहराई गई थीं जो यहां (अन नहल, आयत 115) में मज्कूर हैं। मगर बाद को यहूद ने ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तसव्वुरात के तहत कुछ जाइज चीजों को अपने ऊपर हराम कर लिया। पैग़म्बरों की फ़हमाइश के बावजूद वे अपने इस ख़ुदसाख़्ता दीन को छोड़ने पर तैयार नहीं हुए।

मजीद यह कि अव्वलन उन्होंने ख़ुदा के हलाल को हराम किया और इस तरह अपने आपको नाहक मुसीबतों में डाला। और फिर जब वे उस हराम पर कायम न रह सके तो अकीदतन उसे हराम समझते हुए अमलन उसे अपने लिए जाइज बना लिया। इस तरह वे दोहरे मुजरिम बन गए।

आदमी अगर किसी ख़ुदसाख़्ता नजरिये के तहत एक जाइज चीज को अपने लिए नाजाइज बना ले और उसकी ख़ातिर कुर्बानियां देना शुरू करे, तो यह महज अपनी जान पर जुल्म करना होगा न कि ख़ुदा के रास्ते में कुर्बानी पेश करना।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٩﴾

फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुराई कर ली, इसके बाद तौबा की और अपनी इस्लाह की तो तुम्हारा रब इसके बाद बख़्शने वाला महरबान है। (119)

जब बुराई के साथ सरकशी और तअस्सुब के जज्बात इकट्ठा हो जाएं तो आदमी उससे हटने के लिए तैयार नहीं होता, चाहे उसके अमल को ग़लत साबित करने के लिए कितने ही दलाइल दिए जाएं। मगर बुराई की दूसरी किस्म वह है जो महज नादानी की वजह से पैदा होती है। आदमी बेख़बरी में या नफ्स से मग़लूब होकर कोई ग़लती कर बैठता है। ऐसे आदमी के अंदर आम तौर पर ढिठाई नहीं होती। जब दलील से उस पर उसकी ग़लती वाजेह हो जाए तो वह फौरन पलट आता है और दुबारा अपने को सही रवैया पर कायम कर लेता है।

पहली किस्म के लोगों के लिए माफी का कोई सवाल नहीं। मगर दूसरी किस्म के लोगों के लिए यह बशारत (शुभ सूचना) है कि ख़ुदा उन्हें अपनी रहमतों के साये में ले लेगा क्योंकि वह अपने बंदों पर बहुत ज्यादा महरबान है।

إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ٱجْتَبَٰهُ وَهَدَٰهُ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٢١﴾ وَءَاتَيْنَٰهُ فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُۥ فِى ٱلْءَاخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ أَنِ ٱتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

बेशक इब्राहीम एक अलग उम्मत था, अल्लाह का फरमांबरदार, और उसकी तरफ यकसू (एकाग्रचित्त), और वह शिर्क (ख़ुदा के साझीदार बनाना) करने वालों में से न था। वह उसकी नेमतों का शुक्र करने वाला था। ख़ुदा ने उसे चुन लिया। और सीधे रास्ते की तरफ उसकी रहनुमाई की। और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी। वह अच्छे लोगों में से होगा। फिर हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि इब्राहीम के तरीके की पैरवी करो जो यकसू था और वह शिर्क करने वालों में से न था। (120-123)

हजरत इब्राहीम को कुरआन में ख़ुदा के मत्लूब इंसान के नमूने के तौर पर पेश किया गया है। वह नमूने के इंसान क्यों बने। इसलिए कि वह माहौल के बिगाड़ के विपरीत तनहा ईमान पर कायम रहने वाले इंसान थे। वह अकेले ख़ुदा के लिए खड़े हुए जबकि इस राह में कोई उनका साथ देने वाला न था।

हजरत इब्राहीम पूरी तरह अपने आपको ख़ुदा की पाबंदी में दिए हुए थे। उन्होंने आलमगीर (विश्वव्यापी) मुश्रिकाना माहौल में अपने आपको तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए यकसू कर लिया था। वह तमाम चीजों को ख़ुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझते थे और उनके लिए उनका दिल ख़ुदा के शुक्र के जज्बे से भरा रहता था। हजरत इब्राहीम के इस कमाले ईमान की वजह से ख़ुदा ने उन पर अपनी हिदायत की राहें खोल दीं और उन्हें पैग़म्बरी के लिए चुन लिया ताकि वह दुनिया वालों को ख़ुदा के दीन से आगाह करें।

हजरत इब्राहीम को दुनिया का हसनह (बेहतरी) दी गई और आख़िरत की बेहतरी भी। यह मालूम है कि दुनियावी में हजरत इब्राहीम को न अवाम की भीड़ मिली, न इक्तेदार (सत्ता) का तख़्त, और न और कोई दुनिया रौनक की चीज। इसके बावजूद कुरआन की यह गवाही है कि उन्हें ख़ुदा की तरफ से दुनिया की बेहतरी मिली थी। इससे मालूम हुआ कि ख़ुदा की नजर में दुनिया की बेहतरी न अवामी मकबूलियत का नाम है और न दौलत व हुकूमत का। बल्कि दुनिया की बेहतरी ख़ुदा की नजर में अस्लन वही चीजें हैं जिन्हें यहां हजरत इब्राहीम की ख़ुसूसियत के तौर पर बयान किया गया है।

إِنَّمَا جُعِلَ ٱلسَّبْتُ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

सब्त उन्हीं लोगों पर आयद किया गया था जिन्होंने उसमें इख़्तेलाफ (मतभेद) किया था। और बेशक तुम्हारा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा जिस बात में वे इख़्तेलाफ कर रहे थे। (124)

हफ्ते का एक दिन तमाम शरीअतों में इज्तिमाई इबादत का दिन रहा है। यहूद उसे सनीचर (सब्त) के दिन मनाते हैं। ईसाई इतवार के दिन। और मुसलमानों को हुक्म है कि वे जुमा के दिन इसका एहतिमाम करें।

यहूद के बुजुर्गों ने मूशिगाफियां (कुतर्क) करके बतौर ख़ुद सब्त (Sabbath) के लिए नए-नए जवाबित (नियम) बनाए और अपने आपको मस्नूई पाबंदियों में जकड़ लिया। फिर जब इन पाबंदियों पर अमल करना उन्हें नामुमकिन मालूम हुआ तो अपने बुजुर्गों के तकद्दुस (पवित्रता) की वजह से वे उन्हें रद्द न कर सके। अलबत्ता अमली तौर पर उन्होंने उनके ख़िलाफ चलना शुरू कर दिया।

ख़ुदा के दीन में बाद के आलिमों और बुजुर्गों ने अपनी तशरीहात से जो इख़्तेलाफात (मतभेद) पैदा किए उनका फैसला दुनिया में होने वाला नहीं। मगर जब कियामत आएगी तो ख़ुदा बता देगा कि अस्ल आसमानी दीन क्या था और वे क्या चीजें थीं जो लोगों ने अपनी तरफ से इजाफा करके दीन में शामिल कर दीं।

ٱدْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِٱلْحِكْمَةِ وَٱلْمَوْعِظَةِ ٱلْحَسَنَةِ وَجَٰدِلْهُم بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعْلَمُ بِٱلْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

अपने रब के रास्ते की तरफ हिक्मत (तत्वदर्शिता) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे तरीके से बहस करो। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह में भटका हुआ है और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं। (125)

दावत (आह्वान) का अमल एक ऐसा अमल है जो इंतिहाई संजीदगी और ख़ैरख़्वाही के जज्बे के तहत उभरता है। ख़ुदा के सामने जवाबदेही का एहसास आदमी को मजबूर करता

है कि वह ख़ुदा के बंदों के सामने दाई बनकर खड़ा हो। वह दूसरों को इसलिए पुकारता है कि वह समझता है अगर मैंने ऐसा न किया तो मैं कियामत के दिन पकड़ा जाऊंगा। इस नफ़्सियात का क़ुदरती नतीजा है कि आदमी का दावती अमल वह अंदाज इख़्तियार कर लेता है जिसे हिक्मत, अच्छी नसीहत और अच्छी बहस कहा गया है।

हिक्मत से मुराद दलील व बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) है। कोई दावती अमल उसी वक्त हक़ीक़ी दावती अमल है जबकि वह ऐसे दलाइल के साथ हो जिसमें मुख़ातब के जेहन की पूरी रिआयत शामिल हो। मुख़ातब के नजदीक, किसी चीज के साबितशुदा चीज होने की जो शराइत हैं, उन शराइत की तक्मील के साथ जो कलाम किया जाए उसी को यहां हिक्मत का कलाम कहा गया है। जिस कलाम में मुख़ातब की जेहनी व फ़िक्री रिआयत शामिल न हो वह ग़ैर हकीमाना कलाम है। और ऐसा कलाम किसी को दाई का मर्तबा नहीं दे सकता।

अच्छी नसीहत उस ख़ुसूसियत का नाम है जो दर्दमंदी और ख़ैरख़्वाही की नफ़्सियात से किसी के कलाम में पैदा होती है। जिस दाई का यह हाल हो कि ख़ुदा के अज़्मत व जलाल (प्रताप) के एहसास से उसकी शख़्सियत के अंदर भूचाल आ गया हो जब वह ख़ुदा के बारे में बोलेगा तो यकीनी तौर पर उसके कलाम में अज़्मते ख़ुदावंदी की बिजलियां चमक उठेंगी। जो दाई जन्नत और जहन्नम को देखकर दूसरों को उसे दिखाने के लिए उठे। उसके कलाम में यकीनी तौर पर जन्नत की बहारें और जहन्नम की हौलनाकियां गूंजती हुई नजर आएंगी। इन चीजों की आमेजिश दाई के कलाम को ऐसा बना देगी जो दिलों को पिघला दे और आंखों को अश्कबार (नम) कर दे।

दावती कलाम की ईजाबी ख़ुसूसियात यही दो हैं हिक्मत और मोअज़ते हसनह (अच्छी नसीहत)। ताहम हमेशा दुनिया में कुछ ऐसे लोग मौजूद रहते हैं जो ग़ैर जरूरी बहसें करते हैं। जिनका मक्सद उलझाना होता है न कि समझना समझाना। ऐसे लोगों के बारे में मज़्कूरा किस्म का दाई जो अंदाज इख़्तियार करता है, उसी का नाम 'अच्छी बहस' है। वह टेढ़ी बात का जवाब सीधी बात से देता है, वह सख़्त अल्फ़ाज सुनकर भी अपनी जबान से नर्म अल्फ़ाज निकालता है। वह इल्जाम तराशी के मुक़ाबले में इस्तदलाल (तर्क) और तज्ज़िया (विश्लेषण) का अंदाज इख़्तियार करता है। वह इश्तेआल (उत्तेजना) के उस्लूब के जवाब में सब्र का उस्लूब (शैली) इख़्तियार करता है।

हक के दाई की नजर सामने के इंसान की तरफ नहीं होती बल्कि उस ख़ुदा की तरफ होती है जो सबके ऊपर है। इसलिए वह वही बात कहता है जो ख़ुदा की मीजान (तुला) में हक़ीक़ी बात ठहरे न कि इंसान की मीजान में।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

और अगर तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है और सब्र करो

और तुम्हारा सब्र ख़ुदा ही की तौफ़ीक़ से है और तुम उन पर ग़म न करो और जो कुछ तदबीरें वे कर रहे हैं उससे तंग दिल न हो। बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेज़गार (ईश-परायण) हैं और जो नेकी करने वाले हैं। (126-128)

यहां दाई का वह किरदार बताया गया है जो मुख़ालिफ़ीन के मुक़ाबले में उसे इख़्तियार करना है। फ़रमाया कि अगर मुख़ालिफ़ीन की तरफ से ऐसी तकलीफ पहुंचे जिसे तुम बर्दाश्त न कर सको तो तुम्हें उतना ही करने की इजाजत है जितना तुम्हारे साथ किया गया है। ताहम यह इजाजत सिर्फ इंसान की कमजोरी को देखते हुए बतौर रिआयत है। वर्ना दाई का अस्ल किरदार तो यह होना चाहिए कि वह मदऊ की तरफ से पेश आने वाली हर तकलीफ पर सब्र करे। वह मदऊ से हिसाब चुकाने के बजाए ऐसे तमाम मामलात को ख़ुदा के ख़ाने में डाल दे।

मुख़ातब आख़िर हक को न माने। वह उसे मिटाने के दरपे हो जाए तो उस वक्त दाई को सबसे बड़ी तदबीर जो करनी है वह सब्र है यानी रद्देअमल की नफ़्सियात या जवाबी कार्रवाइयों से बचते हुए मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर हक का पैग़ाम पहुंचाते रहना। दाई को अस्लन जो सुबूत देना है वह यह कि वह फ़िलवाक़अ अल्लाह से डरने वाला है। उसके अंदर वह किरदार पैदा हो चुका है जो उस वक्त पैदा होता है जबकि आदमी दुनिया के पर्दों से गुजर कर ख़ुदा को उसकी छुपी हुई अज़्मतों के साथ देख ले। अगर दाई यह सुबूत दे दे तो इसके बाद बकिया मामलों में ख़ुदा उसकी तरफ से काफ़ी हो जाता है। इसके बाद दावत (आह्वान) के मुख़ालिफ़ीन की कोई तदबीर दाई को नुक्सान नहीं पहुंचा सकती, चाहे वह तदबीर कितनी ही बड़ी क्यों न हो।

दुनिया में दो किस्म के इंसान होते हैं। एक वे जिनकी निगाहें इंसानों में अटकी हुई हों। जिन्हें बस इंसानों की कार्रवाइयां दिखाई देती हों। दूसरे वे लोग जिनकी निगाहें ख़ुदा में अटकी हुई हों। जो ख़ुदा की ताकतों को अपनी आंखों से देख रहे हैं। पहली किस्म के लोग कभी सब्र पर क़ादिर नहीं हो सकते। ये सिर्फ दूसरी किस्म के इंसान हैं जिनके लिए यह मुमकिन है कि वे शिकायतों और तल्ख़ियों (कटुताओं) को सह लें। और जो कुछ ख़ुदा की तरफ से मिलने वाला है उसके ख़ातिर उसे नजरअंदाज कर दें जो इंसान की तरफ से मिल रहा है।

दाई को जिस तरह जवाबी नफ़्सियात से परहेज करना है उसी तरह उसे जवाबी कार्रवाई से भी अपने आपको बचाना है। मुख़ालिफ़ीन की साजिशें और तदबीरें बजाहिर डराती हैं कि कहीं वे दावत और दाई को तहस नहस न कर डालें। मगर दाई को हर हाल में ख़ुदा पर भरोसा रखना है। उसे यह यकीन रखना है कि ख़ुदा सब कुछ देख रहा है। और वह यकीनन हक की दावत का साथ देकर बातिलपरस्तों को नाकाम बना देगा।

سُورَةُ بَنِي إِسْرَائِيلَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ آياتها ١١١ ركوعاتها ١٢

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١﴾

आयतें-111 **सूरह-17. बनी इस्राईल** रुकूअ-12

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिदे हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को हमने बाबरकत बनाया है ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

हिजरत से एक साल पहले मक्का के हालात बेहद सख़्त थे। ऐसा मालूम होता था कि इस्लाम की तारीख़ बनने से पहले ख़त्म हो जाएगी। ऐन उस वक्त अल्लाह ने पैग़म्बरे इस्लाम को एक अजीम निशानी दिखाई। यह निशानी उस हकीकत का महसूस मुजाहिरा था कि इस्लाम की तारीख़ न सिर्फ यह कि अपनी तक्मील तक पहुंचेगी, बल्कि इसके गिर्द ऐसे अमली हालात जमा किए जाएंगे कि वह अबदी (चिरस्थाई) तौर पर ज़िंदा और महफ़ूज़ रहे। क्योंकि अब इसी को कियामत तक तमाम कौमों के लिए ख़ुदा के दीन का मुस्तनद माखज (प्रमाणिक स्रोत) करार पाना है।

अल्लाह अपने ख़ुसूसी एहतमाम के तहत पैग़म्बरे इस्लाम को मक्का से फिलिस्तीन (बैतुल मक्दिस) ले गया। यह जिस्मानी या रूहानी सफर आपके सफ़रे मेराज की पहली मंजिल थी। यहां बैतुल मक्दिस में पिछले तमाम पैगम्बर भी जमा थे। उन सब ने मिलकर बाजमाअत नमाज अदा की और पैगम्बरे इस्लाम ने आगे खड़े होकर उन सबकी इमामत फरमाई। आपकी इमामत का यह वाकया गोया उस ख़ुदाई फैसले की एक अलामत था कि पिछली तमाम नुबुव्वतें अब हिदायते इलाही के मुस्तनद माख़ज (प्रमाणिक स्रोत) की हैसियत से मंसूख़ कर दी गईं। अब ख़ुदाई हिदायत को जानने के लिए तमाम कौमों को पैगम्बरे इस्लाम के लाए हुए दीन की तरफ रुजूअ करना चाहिए।

इस अहम तकरीब को अंजाम देने के लिए फिलिस्तीन मौज़ूंतरीन जगह थी। फिलिस्तीन पिछले अक्सर अंबिया की दावत (आह्वान) का मर्कज रहा है। इसलिए ख़ुदा ने अपने इस फैसले के इज़्हार के लिए इसी ख़ास इलाके का इंतिख़ाब फरमाया।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝ ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝

और हमने मूसा को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज (कार्य-साधक) न बनाओ। तुम उन लोगों की औलाद हो जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, बेशक वह एक शुक्रगुजार बंदा था। (2-3)

इसरा (मेराज) के मज्कूरा वाकये का मतलब यह था कि बनू इस्राईल (यहूद) को हामिले

किताब (ग्रंथ धारक) के मकाम से माजूल कर दिया गया और उनकी जगह बनू इस्माईल को किताबे इलाही का हामिल बना दिया गया। यह वाकया ख़ुदा की सुन्नत के तहत अमल में आया। ख़ुदा इस दुनिया में हक के एलान के लिए किसी तैशुदा गिरोह को मुंतख़ब करता है। यह सबसे बड़ा एज़ाज है जो इस दुनिया में किसी को मिलता है।

ताहम यह इंतिख़ाब नस्ल या कौम की बुनियाद पर नहीं है। इसका इस्तहकाक किसी गिरोह के लिए सिर्फ उस वक्त साबित होता है जबकि वह उसके लिए जरूरी अहलियत (योग्यता) का सुबूत दे। अहलियत के ख़त्म होते ही उसका इस्तहकाक भी ख़त्म हो जाता है। उम्मते आदम, उम्मते नूह, उम्मते मूसा, उम्मते मसीह, हर एक के साथ यह वाकया हो चुका है। आइंदा उम्मत के लिए भी ख़ुदा का कानून यही है, इसमें किसी का कोई इस्तसना (अपवाद) नहीं।

इस मंसब के लिए जो अहलियत दरकार है वह यह कि ख़ुदा के सिवा किसी को वकील (कारसाज) न बनाया जाए। सिर्फ एक ख़ुदा पर सारा भरोसा करके अपने सारे मामलात उसके हवाले कर दिए जाएं।

ख़ुदा को जब आदमी उसकी तमाम अज्मतों और कुदरतों के साथ पाता है तो इसका नतीजा यह होता है कि वह ख़ुदा को अपना वकील (कारसाज) बना लेता है। जिस शख़्स को ख़ुदा की हकीकी मअरफत हो जाए, उसका हाल यही होगा कि वह इस दुनिया में ख़ुदा को अपना सब कुछ बना लेगा। जो लोग इस तरह ख़ुदा को पा लें वही मौजूदा दुनिया में मोमिनाना जिंदगी गुजार सकते हैं। मोमिनाना जिंदगी गुजारने के लिए आदमी को तमाम मख़्लूकात से ऊपर उठना पड़ता है। और तमाम मख़्लूकात से वही शख़्स ऊपर उठ सकता है जो सबसे बड़ी चीज मख़्लूकात (सृष्टि) के ख़ालिक व मालिक को पा ले।

हक की दावत की जिम्मेदारी भी वही लोग सही तौर पर अदा कर सकते हैं जिन्हें ख़ुदा की मअरफत का यह दर्जा हासिल हो जाए। हक की दावत के लिए कामिल बेगर्जी और कामिल यकसूई (एकाग्रता) लाजिमी तौर पर जरूरी है। और कामिल बेगर्जी और कामिल यकसूई इसके बग़ैर किसी के अंदर पैदा नहीं हो सकती कि उसकी तमाम उम्मीदें और अंदेशे ख़ुदा से वाबस्ता हो चुके हों, ख़ुदा ही उसका सब कुछ बन चुका हो।

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝

और हमने बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था कि तुम दो मर्तबा जमीन (शाम) में ख़राबी करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे। फिर जब उनमें से पहला वादा आया

तो हमने तुम पर अपने बंदे भेजे, निहायत जोर वाले। वे घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा। फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें ज्यादा बड़ी जमाअत बना दिया। (4-6)

यहां फसाद से मुराद दीनी बिगाड़ है। जो हजरत मूसा के बाद बनी इस्राईल के दर्मियान जाहिर हुआ। इसके दो दौर हैं। पहले दौर के बिगाड़ की तफसीलात पुराने अहदनामे (ओल्डटेस्टामेंट) में जबूर, यसअयाह, यरमियाह, हजकीइयल की किताबों में पाई जाती हैं। और दूसरे दौर के बिगाड़ की तफसील हजरत मसीह की जबान से है जो नए अहदनामे (न्यू टेस्टामेंट) में मत्ता और लूका की इंजीलों में मौजूद है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का से उठाकर बैतुल मक़्दिस ले जाया गया ताकि 'आपको ख़ुदा की निशानियां दिखाई जाएं' इन निशानियों में से एक निशानी वह तारीख़ (इतिहास) भी है जो बैतुल मक्दिस से वाबस्ता है।

यह तारीख़ दरअस्ल ख़ुदा के एक कानून का ज़ुहूर है। वह कानून यह है कि आसमानी किताब की हामिल कौम अगर किताबे इलाही के हुकूक़ अदा करे तो उसे (आख़िरत की कामयाबी के अलावा) दुनिया में सरफ़राजी दी जाए। और अगर वह किताब के हुकूक़ अदा न करे तो उसे दुनिया की जाबिर (दमनकारी) कौमों के हवाले कर दिया जाए जो उसे अपने जुल्म व दमन का निशाना बनाएं। यह गोया एक अलामत है जो इसी दुनिया में बता देती है कि ख़ुदा उस कौम से ख़ुश है या नाख़ुश।

इस कानून का ज़ुहूर साबिक (पूर्ववर्ती) हामिलीने किताब (यहूद) पर बार-बार हुआ है जिनमें से दो नुमायां वाकेयात का यहां बतौर नसीहत हवाला दिया गया है।

बनी इस्राईल पर अव्वलन ख़ुदा ने यह इनाम किया कि उन्हें फ़िरऔन के जुल्म से नजात दिलाई और फिर हजरत मूसा के बाद उनके लिए ऐसे हालात पैदा किए कि वे फ़िलिस्तीन पर कब्जा करके अपनी सल्तनत कायम कर सकें। मगर बाद को यहूद के अंदर बिगाड़ आ गया। एक तरफ वे मुश्रिक कौमों पर दाअी (आह्वानकर्ता) बनने के बजाए ख़ुद उनके मदऊ बन गए और उनके असर से मुश्रिकाना आमाल में मुब्तिला हो गए। दूसरी तरफ वे आपस के इख़्तेलाफ (मतभेद) का शिकार होकर टुकड़े-टुकड़े हो गए।

ख़ुदा की नाफरमानी के नतीजे में बनी इस्राईल पर जो कुछ गुजरा उसमें से एक नुमायां वाक्या बाबिल (इराक) के बादशाह बनू कदनजर का है। यहूद की कमजोरियों से फायदा उठा कर बनू कदनजर ने फ़िलिस्तीन पर अपनी बालादस्ती कायम कर ली। इसके बाद उसने ख़ुद यहूद के शाही ख़ानदान में से एक शख़्स को अपना नुमाइंदा बना दिया कि वह उसकी तरफ से उनके ऊपर हुकूमत करे। मगर यहूद ने इस 'मातहती' को अपने कौमी फ़ख़्र के ख़िलाफ समझा और उसके ख़िलाफ बग़ावत के दरपे हो गए। उनके अंदर ऐसे शायर और मुकर्रिर (वक्ता) पैदा हुए जिन्होंने पुरजोश अंदाज में यहूद को उभारना शुरू किया। यहूद के पैग़म्बर यरमियाह ने मुतनब्बह किया कि ये सब झूठे लीडर हैं। तुम उनके फरेब में न आओ। तुम

अपनी मौजूदा कमजोरियों के साथ शाह बाबिल के मुकाबले में कामयाब नहीं हो सकते। इसके बजाए तुम ऐसा करो कि शाह बाबिल की सियासी बालादस्ती को तस्लीम करते हुए अपनी दीनी इस्लाह और तामीरी जद्दोजहद में लग जाओ यहां तक की अल्लाह आइंदा तुम्हारे लिए मजीद राहें पैदा कर दे। मगर यहूद ने यरमियाह नबी की नसीहत को नहीं माना। ख़ुशफ़हम लीडरों की बातों में आकर उन्होंने शाह बाबिल के ख़िलाफ बगावत कर दी। इसके बाद शाह बाबिल सख़्त गजबनाक हो गया। उसने दुबारा 586 ई०पू० में अपनी पूरी ताकत से फ़िलिस्तीन पर हमला किया। यहूद की मुकम्मद शिकस्त हुई। शाह बाबिल ने न सिर्फ यहूद को जबरदस्त दुनियावी नुक्सान पहुंचाए बल्कि यरोशलम में यहूद के इबादतख़ाने को मुकम्मल तौर पर ढा दिया जो यहूद की अज़्मत का आख़िरी निशान था।

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ۝٧ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝٨

अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरा काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरे वादे का वक्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरे को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल मक़्दिस) में घुस जाएं जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज पर उनका जोर चले उसे बर्बाद कर दें। बईद (असंभव) नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर रहम करे। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही करेंगे और हमने जहन्नम को मुंकिरीन के लिए कैदख़ाना बना दिया है। (7-8)

हादसों के नतीजे में बनी इस्राईल के अंदर रुजूअ इलल्लाह की कैफियत पैदा हुई तो ख़ुदा ने दुबारा उनकी मदद की। इस बार ख़ुदा ने शाह ईरान साइरस (ख़ुसरू) को उठाया। उसने 539 ई०पू० में बाबिल पर हमला किया, और उसकी हुकूमत को शिकस्त देकर उसके ऊपर कब्जा कर लिया। इसके बाद उसने यहूद पर यह महरबानी की कि उन्हें दुबारा बाबिल से उनके वतन फ़िलिस्तीन जाने की इजाजत दे दी। चुनांचे वे वापस आए और एक अर्से के बाद दुबारा अपना इबादतख़ाना तामीर किया।

ताहम यहूद की नई नस्ल में दुबारा वही बिगाड़ पैदा होने लगा जो उनकी पिछली नस्ल में पैदा हुआ था। इस दर्मियान में उनके अंदर मुख़्तलिफ उतार चढ़ाव आए। यहां तक कि उनके दर्मियान हजरत यहया और हजरत मसीह उठे। इन पैग़म्बरों ने यहूद की रविश पर तंकीदें कीं। उनकी उस बेदीनी को खोला जो वे दीन के नाम पर कर रहे थे। मगर यहूद इस

तंकीद व तज्जिया का असर क़ुबूल करने के बजाए बिगड़ गए। यहां तक कि उन्होंने हजरत यहया को क़त्ल कर दिया और हजरत मसीह को सूली पर चढ़ाने के लिए तैयार हो गए।

अब दुबारा उन पर ख़ुदा का गजब भड़का। सन् 70 ई० में रूमी बादशाह तीतस (Titus) उठा और उसने यरोशलम पर हमला करके उसे बिल्कुल तबाह व बर्बाद कर डाला।

यहूद की तारीख़ के ये वाक़ेयात ख़ुद यहूद के नजदीक भी मुसल्लम (प्रमाणिक) हैं। मगर यहूद जब इन तारीख़ी वाक़ेयात का जिक्र करते हैं तो वे उन्हें जालिमों के ख़ाने में डाल देते हैं। मगर क़ुरआन वाजेह तौर पर इन्हें ख़ुद यहूद के ख़ाने में डाल रहा है। इससे मालूम हुआ कि सियासी हालात हमेशा अख़्लाक़ी हालात के ताबेअ होते हैं। कोई जालिम किसी के ऊपर जुल्म नहीं करता। बल्कि क़ौम की दीनी और अख़्लाक़ी हालत का बिगाड़ लोगों को यह मौक़ा दे देता है कि वे उसे अपने जुल्म व दमन का निशाना बनाएं।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

बिला शुबह यह क़ुरआन वह राह दिखाता है जो बिल्कुल सीधी है और वह बशारत (शुभ सूचना) देता है ईमान वालों को जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और यह कि जो लोग आख़िरत (परलोक) को नहीं मानते उनके लिए हमने एक दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (9-10)

क़ुरआन तमाम इंसानों को तौहीद की तरफ़ बुलाता है। यानी एक ख़ुदा को मान कर अपने आपको उसकी इताअत में दे देना। यह एक ऐसी बात है जिससे ज्यादा सहीह, जिससे ज्यादा माक़ूल और जिससे ज्यादा मुताबिक़े फ़ितरत बात कोई और नहीं हो सकती। तौहीद बिला शुबह सबसे बड़ी हक़ीक़त है और इसी के साथ सबसे बड़ी सदाक़त (सच्चाई)।

तौहीद की इस हैसियत का तक़ाजा है कि यही तमाम इंसानों के लिए जांच का मेयार हो। इसी की बुनियाद पर किसी को सही करार दिया जाए और किसी को ग़लत। कोई कामयाब ठहरे और कोई नाकाम।

मौजूदा दुनिया में बजाहिर यह मेयार सामने नहीं आता और इसकी बुनियाद पर इंसानों की अमली तक़्सीम नहीं की जाती। मगर यह सिर्फ़ ख़ुदा के क़ानूने इम्तेहान की वजह से है। इंफ़िरादी तौर पर मौत और इज्तिमाई तौर पर क़ियामत इस मुद्दते इम्तेहान की आख़िरी हद है। यह हद आते ही इंसान दो गिरोहों की सूरत में अलग-अलग कर दिए जाएंगे। तौहीद के के रास्ते को इख़्तियार करने वाले अपने आपको जन्नत में पाएंगे और उसे इख़्तियार न करने वाले अपने आपको जहन्नम में।

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۝

और इंसान बुराई मांगता है जिस तरह उसे भलाई मांगना चाहिए और इंसान बड़ा जल्दबाज है। और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया। फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करो। और हमने हर चीज को ख़ूब खोलकर बयान किया है। (11-12)

रात और दिन का निजाम बताता है कि ख़ुदा का तरीक़ा यह है कि पहले तारीकी (अंधकार) हो और इसके बाद रोशनी आए। ख़ुदाई नक्शे में दोनों यकसां तौर पर जरूरी हैं। जिस तरह रोशनी में फ़ायदे हैं इसी तरह तारीकी में भी फ़ायदे हैं। दुनिया में अगर रात और दिन का फ़र्क़ न हो तो आदमी अपने औक़ात की तक़्सीम किस तरह करे। वह अपने काम और आराम का निजाम किस तरह बनाए।

आदमी को ऐसा नहीं करना चाहिए कि वह 'तारीकी' से घबराए और सिर्फ़ 'रोशनी' का तालिब बन जाए। क्योंकि ख़ुदा की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। जो आदमी ऐसा चाहता हो उसे ख़ुदा की दुनिया छोड़कर अपने लिए दूसरी दुनिया तलाश करनी पड़ेगी।

मगर अजीब बात है कि यही इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी है। वह हमेशा यह चाहता है कि उसे तारीकी का मरहला पेश न आए और फ़ौरन ही उसे रोशनी हासिल हो जाए। इसी कमजोरी का नतीजा वह चीज है जिसे उजलत (जल्दबाज़ी, उतावलापन) कहा जाता है। उजलत दरअस्ल ख़ुदावंदी मंसूबे पर राजी न होने का दूसरा नाम है। और ख़ुदावंदी मंसूबे पर राजी न होना ही तमाम इंसानी बर्बादियों का अस्ल सबब है।

ख़ुदा चाहता है कि इंसान दुनिया की फ़ौरी लज्जतों पर सब्र करे ताकि वह आख़िरत की तरफ़ अपने सफ़र को जारी रख सके। मगर इंसान अपनी उजलत की वजह से दुनिया की वक़्ती लज्जतों पर टूट पड़ता है। वह आगे की तरफ़ अपना सफ़र तय नहीं कर पाता। आदमी की उजलतपसंदी उसे आख़िरत की नेमतों से महरूम करने का सबसे बड़ा सबब है।

यही दुनिया का मामला भी है। दुनिया में भी हक़ीक़ी कामयाबी सब्र से मिलती है न कि जल्दबाजी से।

यहूद को उनके पैग़म्बर यरमियाह ने नसीहत की कि तुम बाबिल के हुक्मरां के सियासी ग़लबे को फ़िलहाल तस्लीम कर लो और इब्तिदाई मरहले में अपनी कोशिशों को सिर्फ़ दावती

और तामीरी मैदान में लगाओ। इसके बाद वह वक्त भी आएगा जबकि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए गलबा और इक्तेदार की राहें खोल दे। मगर यहूद की उजलतपसंदी इस पर राजी नहीं हुई। उन्होंने चाहा कि 'तारीकी' के मरहले से गुजरे बग़ैर 'रोशनी' के मरहले में दाख़िल हो जाएं। उन्होंने फौरन शाह बाबिल के ख़िलाफ सियासी लड़ाई शुरू कर दी। चूंकि ख़ुदा के निजाम में ऐसा होना मुमकिन नहीं था, उनके हिस्से में जिल्लत और रुस्वाई के सिवा और कुछ न आया।

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾ اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾ مَّنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

और हमने हर इंसान की किस्मत उसके गले के साथ बांध दी है। और हम कियामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा पढ़ अपनी किताब। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू ख़ुद ही काफी है। जो शख़्स हिदायत की राह चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है। और जो शख़्स बेराही करता है वह भी अपने ही नुक्सान के लिए बेराह होता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम कभी सजा नहीं देते जब तक हम किसी रसूल को न भेजें। (13-15)

कदीम जमाने में तवह्हुमपरस्त (अंधविश्वास) लोग अक्सर चिड़ियों के उड़ने से या सितारों की गर्दिश से या तरह-तरह के फाल से अपनी किस्मत का हाल मालूम करते थे। मौजूदा जमाने में जो लोग इस किस्म के तवह्हुमात पर यकीन नहीं रखते वे भी अपनी किस्मत के मामले को किसी न किसी पुरअसरार (रहस्यमयी) सबब के साथ वाबस्ता करते हैं। वे समझते हैं कि कोई न कोई ख़ारजी आमिल (वाह्य कारक) है जो इस सिलसिले में अस्ल प्रभावी हैसियत रखता है।

फरमाया कि तुम्हारी किस्मत न चिड़ियों और सितारों के साथ वाबस्ता है और न किसी दूसरी ख़ारजी चीज से इसका तअल्लुक है। हर आदमी की किस्मत का मामला तमामतर उसके अपने अमल पर मुंहसिर है। हर आदमी जो कुछ सोचता या करता है वह उसके अपने वजूद के साथ नक़्श हो रहा है। आदमी उसे कियामत के दिन एक ऐसी डायरी की सूरत में लिखा हुआ पाएगा जिसमें हर छोटी और बड़ी चीज दर्ज हो।

ख़ुदा ने कौमों के दर्मियान रसूल खड़े किए और किताब उतारी। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि लोगों को आने वाले सख़्त दिन से पहले उसकी ख़बर हो जाए। अब यह हर आदमी के अपने फैसला करने की बात है कि जिंदगी के अगले मुस्तकिल मरहले में वह अपना

क्या अंजाम देखना चाहता है। वह हिदायत के तरीके पर चलकर जन्नत में पहुंचना चाहता है या हिदायत के तरीके को छोड़कर जहन्नम में गिरने का सामान कर रहा है।

وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِن بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾

और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुशऐश (सुखभोगी) लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफरमानी करते हैं। तब उन पर बात साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। और नूह के बाद हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं। और तेरा रब काफी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए और उन्हें देखने के लिए। (16-17)

किसी कौम की इस्लाह या किसी कौम के बिगाड़ का मेयार उस कौम का सरबरआवुरदह (शीर्ष) तबका होता है। यही तबका सोचने समझने की सलाहियत का मालिक होता है। यही तबका अपने वसाइल (संसाधनों) के जरिए लोगों पर असरअंदाज होने की ताकत रखता है। यही तबका इस काबिल होता है कि वह किसी गिरोह के ऊपर कायद बनने की कीमत अदा कर सके।

यही वजह है कि किसी कौम के सरबरआवुरदह तबके की इस्लाह पूरी कौम की इस्लाह है और किसी कौम के सरबरआवुरदह तबके का बिगाड़ पूरी कौम का बिगाड़। हजरत नूह के जमाने से लेकर अब तक की कौमों का जायजा लिया जाए तो हर एक की तारीख़ इस आम उसूल की सेहत की तस्दीक करेगी।

इसी आम हुक्म में कौम के उन 'बड़ों' का मामला भी शामिल है जो कौम को अपनी कयादत (नेतृत्व) की शिकारगाह बनाते हैं और इस तरह उसकी ग़लत रहनुमाई करके उसकी हलाकत का सामान करते हैं। वे कौम को हकीकतपसंदी के बजाए जज्बातियत का दर्स देते हैं। उसे मआना के बजाए अल्फाज के तिलिस्म में गुम करते हैं। उसे संजीदगी के बजाए कल्पनाओं की फजा में उड़ाते हैं। वे उसे हकाइक का एतराफ करने के बजाए ख़ुशख़्यालियों में जीना सिखाते हैं। ख़ुलासा यह कि वे कौम को ख़ुदा के बजाए ग़ैर ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह कर देते हैं।

जब किसी कौम पर इस किस्म के रहनुमा छा जाएं तो यह इस बात की अलामत है कि ख़ुदा के यहां से उस कौम की हलाकत का फैसला हो चुका है। इस किस्म का हर वाक्या ख़ुदा की इजाजत के तहत होता है। और किसी शख़्स या कौम का कोई अमल ख़ुदा से छुपा हुआ नहीं है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

जो शख़्स आजिला (जल्द हासिल होने वाली दुनिया) को चाहता हो, उसे हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसे देना चाहें। फिर हमने उसके लिए जहन्नम ठहरा दी है, वह उसमें दाख़िल होगा बदहाल और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर। और जिसने आख़िरत को चाहा और उसके लिए दौड़ की जो कि उसकी दौड़ है और वह मोमिन हो तो ऐसे लोगों की कोशिश मकबूल होगी। (18-19)

मौजूदा दुनिया में आदमी दो रास्तों के दर्मियान है। एक का फायदा नक्द मिलता है और दूसरे का फायदा उधार। जो शख़्स पहले रास्ते पर चले उसने आजिला को पसंद किया। और जो शख़्स दूसरे रास्ते को इख़्तियार करे उसने आख़िरत को पसंद किया।

एक तरफ आदमी के सामने मस्लेहतपरस्ती (स्वार्थता) का तरीका है जिसे इख़्तियार करने से फौरी तौर पर इज्जत और दौलत मिलती है। दूसरी तरफ बेलाग हक़परस्ती का तरीका है जिसका क्रेडिट आदमी को मौत के बाद की जिंदगी में मिलेगा। किसी से शिकायत पैदा हो जाए तो एक सूरत यह है कि उसके बारे में अपने दिल के अंदर इंतिकाम की नफ्सियात पैदा कर ली जाए और उसके ख़िलाफ वह सब कुछ किया जाए जो अपने बस में है। इसके बरअक्स दूसरी सूरत यह है कि उसे माफ कर दिया जाए। और उसके लिए अच्छी दुआएं करते हुए सारे मामले को अल्लाह के हवाले कर दिया जाए। इसी तरह आदमी के पास जो माल है उसके ख़र्च की एक शक्ल यह है कि उसे अपने शौक की तक्मील और अपनी इज्जत को बढ़ाने की राहों में लगाया जाए। दूसरी शक्ल यह है कि उसे ख़ुदा के दीन की मदों में ख़र्च किया जाए।

इसी तरह तमाम मामलात में आदमी के सामने दो मुख़्तलिफ तरीके होते हैं। एक ख़्वाहिशपरस्ती का तरीका और दूसरा ख़ुदापरस्ती का तरीका। एक सामने की चीजों को अहमियत देना और दूसरा ग़ैब की हकीकतों को अहमियत देना। एक मस्लेहतपरस्ती का अंदाज और दूसरा उसूलपरस्ती का अंदाज। एक बेसब्री के तहत कर गुजरना और दूसरा सब्र के साथ वह करना जो करना चाहिए।

पहले तरीके में वक्ती फायदा है और इसके बाद हमेशा की महरूमी। दूसरे तरीके में वक्ती नुक्सान है और इसके बाद हमेशा की इज्जत और कामयाबी।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾

हम हर एक को तेरे रब की बख़्शिश में से पहुंचाते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी। और तेरे रब की बख़्शिश किसी के ऊपर बंद नहीं। देखो हमने उनके एक को दूसरे पर किस तरह फौकियत (अग्रसरता) दी है। और यकीनन आख़िरत और भी ज्यादा बड़ी है दर्जे के एतबार से और फजीलत (श्रेष्ठता) के एतबार से। (20-21)

दुनिया की कामयाबी हो या आख़िरत की कामयाबी, दोनों ही अल्लाह के फराहम किए हुए मवाकेअ (अवसरों) और इंतिजामात को इस्तेमाल करने का दूसरा नाम है। जो शख़्स दुनिया की कामयाबी हासिल करता है वह भी ख़ुदा के इंतिजामात से फायदा उठाकर ऐसा करता है। इसी तरह जो शख़्स आख़िरत को अपना मक्सूद बनाए उसके लिए भी ख़ुदा ने ऐसे इंतिजामात कर रखे हैं जो उसके आख़िरत के सफर को आसान बनाने वाले हैं।

दुनिया में कोई आदमी आगे नजर आता है और कोई पीछे। किसी के पास ज्यादा है और किसी के पास कम। यह इस बात की अलामत है कि ख़ुदा की दुनिया में मवाकेअ (अवसरों) की कोई हद नहीं। दुनिया में जो शख़्स जितना ज्यादा अमल करता है वह उतना ज्यादा उसका फल पाता है। इसी तरह आख़िरत के लिए जो शख़्स जितना ज्यादा अमल का सुबूत देगा वह उतना ही ज्यादा वहां इनाम पाएगा। मजीद यह कि आख़िरत में मिलने वाली चीज अबदी होगी जबकि दुनिया में मिलने वाली चीज सिर्फ वक्ती होती है।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ ۭ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾

तू अल्लाह के साथ किसी और को माबूद (पूज्य) न बना वर्ना तू मज्मूम (निंदित) और बेकस होकर रह जाएगा। और तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर वे तेरे सामने

बुढ़ापे को पहुंच जाएं, उनमें से एक या दोनों, तो उन्हें उफ न कहो और न उन्हें झिड़को, और उनसे एहतराम के साथ बात करो। और उनके सामने नर्मी से इज्ज (सदाशयता) के बाज़ू झुका दो। और कहो कि ऐ रब इन दोनों पर रहम फरमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक रहोगे तो वह तौबा करने वालों को माफ कर देने वाला है। (22-25)

ख़ुदा इंसान का सब कुछ है। वह उसका ख़ालिक भी है और मालिक भी और राज़िक भी। मगर ख़ुदा ग़ैब में है। वह अपने आपको मनवाने के लिए इंसान के सामने नहीं आता। इसका मतलब यह है कि एक आदमी जब ख़ुदा की बड़ाई और उसके मुकाबले में अपने इज्ज (निर्बलता) का इकरार करता है तो वह महज अपने इरादे के तहत ऐसा करता है न कि किसी जाहिरी दबाव के तहत।

इस एतबार से बूढ़े मां-बाप का मामला भी अपनी नौइयत के एतबार से ख़ुदा के मामले जैसा है। क्योंकि बूढ़े मां-बाप का अपनी औलाद के ऊपर कोई माद्दी जोर नहीं होता। औलाद जब अपने बूढ़े मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करती है तो वह अपने आजादाना जेहनी फैसले के तहत ऐसा करती है न कि माद्दी दबाव के तहत।

मौजूदा दुनिया में आदमी का अस्ल इम्तेहान यही है। यहां उसे हक और इंसाफ के रास्ते पर चलना है बग़ैर इसके कि उसे इसके लिए मजबूर किया गया हो। उसे ख़ुद अपने इरादे के तहत वह करना है जो वह उस वक्त करता जबकि ख़ुदा उसके सामने अपनी तमाम ताकतों के साथ जाहिर हो जाए।

यह इख़्तियाराना अमल इंसान के लिए बड़ा सख़्त इम्तेहान है। ताहम अल्लाह तआला ने अपनी रहमते ख़ास से उसे इंसान के लिए आसान कर दिया है। वह इंसान को तानाशाह हाकिम की तरह सख़्ती से नहीं जांचता। आदमी अगर बुनियादी तौर पर ख़ुदा का वफादार है तो उसकी छोटी-छोटी ख़ताओं को वह नजरअंदाज कर देता है। इंसान अगर ग़लती करके पलट आए तो वह उसे माफ कर देता है चाहे उसने बजाहिर कितना बड़ा जुर्म कर दिया हो।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾

और रिश्तेदार को उसका हक दो और मिस्कीन को और मुसाफिर को। और फुज़ूलख़र्ची न करो। बेशक फुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और अगर तुम्हें अपने रब के फज़्ल (अनुग्रह) के इंतिजार

में जिसकी तुम्हें उम्मीद है, उनसे एराज करना (बचना) पड़े तो तुम उनसे नर्मी की बात कहो। (26-28)

हर आदमी जो कुछ अपनी महनत से कमाता है उसे वह अपने ऊपर ख़र्च करने का हक रखता है, ताहम शरीअत का हुक्म है कि वह फुज़ूलख़र्ची से बचे। वह अपने माल को अपनी वाकई जरूरतों में ख़र्च करे न कि फख़्र और नुमाइश के लिए।

दूसरी बात यह कि हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी कमाई में दूसरे जरूरतमंदों का भी हक समझे। चाहे वे उसके रिश्तेदार हों या उसके पड़ौसी हों। मुसाफिर हों या और किसी किस्म के हाजतमंद हों।

कभी-कभी ऐसा होता है कि आदमी मोहताज को देने के काबिल नहीं होता। ताहम उस वक्त के लिए भी हुक्म है कि अगर तुम माल देने के काबिल नहीं हो तो अपने जरूरतमंद भाई को नर्म बात दो और उससे माफी का कलिमा कहो। क्योंकि वह तुम्हें एक नेकी का मौका देने आया था मगर तुम उस मौके को अपने लिए इस्तेमाल न कर सके।

अपने कमाए हुए माल को ख़ुदा की मर्जी के मुताबिक ख़र्च करने में वही शख़्स कामयाब हो सकता है जो अपने माल को बेफायदा मदों में जाया होने से बचाए। वर्ना उसके पास माल ही न होगा जिसे वह ख़ुदा के रास्तों में दे। हकीकत यह है कि फुज़ूलख़र्ची शैतान का एक हरबा है जिसके जरिए से वह साहिबे माल को इस काबिल नहीं रखता कि वह दूसरे जरूरतमंदों के सिलसिले में अपनी जिम्मेदारियों को अदा कर सके।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾

और न तो अपना हाथ गर्दन से बांध लो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम मलामतज़दा (निंदित) और आजिज (असहाय) बनकर रह जाओ। बेशक तेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रिज़्क देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (29-30)

इस्लाम हर मामले में एतदाल (मध्यमार्ग) को पसंद करता है। ज्यादती और कमी से बचकर जो दर्मियानी रास्ता है वही इस्लाम के नजदीक बेहतरीन रास्ता है। चुनांचे यही तालीम ख़र्च के मामले में भी दी गई है कि आदमी न तो ऐसा करे कि इतना बख़ील (कंजूस) हो कि वह लोगों की नजरों से गिर जाए। और न इतना ज्यादा ख़र्च करे कि इसके बाद बिल्कुल ख़ाली हाथ होकर बैठा रहे। हदीस में इर्शाद हुआ है कि जिसने मियानारवी (मध्यमार्ग) इख़्तियार की वह मोहताज नहीं हुआ।

माल के सिलसिले में बेएतिदाली का जेहन अक्सर इसलिए पैदा होता है कि आदमी की

नजर से यह हकीकत ओझल हो जाती है कि देने वाला ख़ुदा है। वही अपने मसालेह (सोच) के तहत किसी को कम देता है और किसी को ज्यादा। हदीस कुदसी में आया है कि मेरे बंदों में कोई ऐसा है जिसके लिए सिर्फ मोहताजी मुनासिब है। अगर मैं उसे ग़नी कर दूं तो उसके दीन में बिगाड़ आ जाए। और मेरे बंदों में कोई ऐसा है जिसके लिए सिर्फ अमीरी मुनासिब है। अगर मैं उसे फकीर बना दूं तो उसके दीन में बिगाड़ आ जाए।

وَلَا تَقْتُلُوٓا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْـًٔا كَبِيرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰٓ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ فَاحِشَةً وَسَآءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾

और अपनी औलाद को मुफ्लिसी के अंदेशे से कत्ल न करो, हम उन्हें भी रिज़्क देते हैं और तुम्हें भी। बेशक उन्हें कत्ल करना बड़ा गुनाह है। और जिना (व्यभिचार) के करीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरा रास्ता है। (31-32)

ख़ुदा ही ने तमाम जानदारों को पैदा किया है वही उनके रिज़्क का इंतिजाम करता है। ऐसी हालत में किसी इंसान का किसी को रिज़्क की तंगी का नाम लेकर हलाक करना एक ऐसा काम करना है जिसका उससे कोई तअल्लुक न था। जब रिज़्क का इंतिजाम ख़ुदा की तरफ से हो रहा है तो किसी को क्या हक है कि वह किसी जान को इस अंदेशे से हलाक करे कि वह खाएगी क्या।

'हम उन्हें भी रिज़्क देंगे और तुम्हें भी' इन अल्फाज के जरिए इंसान के जेहन को इस मामले में तख़्रीब के बजाए तामीर की तरफ मोड़ा गया है। ग़ौर कीजिए कि जो इंसान मौजूद हैं वे अपना रिज़्क किस तरह हासिल कर रहे हैं। वे उसे ख़ुदा के फराहमकरदा पैदावारी वसाइल (संसाधनों) पर अमल करके हासिल कर रहे हैं। यही तरीका आइंदा आने वाली नस्ल के लिए भी दुरुस्त है। तुम्हें चाहिए कि मजीद (अतिरिक्त) पैदा होने वालों को ख़ुदा के पैदावारी वसाइल में मजीद अमल करने पर लगाओ न कि ख़ुद पैदा होने वालों की आमद को रोकने लगो।

ख़ुदा इंसानों के दर्मियान जिन आमाल को मुकम्मल तौर पर ख़त्म करना चाहता है उनमें से एक जिना (व्यभिचार) है। इसीलिए फरमाया कि 'जिना के करीब न जाओ' यानी जिना इतनी बड़ी बुराई और ऐसी बेहयाई है कि उसके मुकद्दमात (संबंधित चीजों) से भी तुम्हें परहेज करना चाहिए। यहां इस सिलसिले में सिर्फ उसूली हुक्म दिया गया है। इसके तफसीली अहकाम आगे सूरह नूर में बयान किए गए हैं।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِى حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِۦ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِف فِّى الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ مَنصُورًا ﴿٣٣﴾

और जिस जान को ख़ुदा ने मोहतरम ठहराया है उसे कत्ल मत करो मगर हक पर। और

जो शख़्स नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है। पस वह कत्ल में हद से न गुजरे, उसकी मदद की जाएगी। (33)

हक्के शरई के बग़ैर किसी को कत्ल करना सरासर हराम है। जो शख़्स शरई जवाज (औचित्य) के बग़ैर कत्ल किया जाए वह मज़्लूमाना कत्ल हुआ। ऐसी हालत में मक्तूल (मृतक) के औलिया को कातिल के ऊपर पूरा इख़्तियार है। वे चाहें तो उससे किसास (समान बदला) लें। चाहें तो ख़ूंबहा (आर्थिक मुआवज़ा) लेकर छोड़ दें। और चाहें तो सिरे से माफ कर दें। इस्लामी कानून के मुताबिक कत्ल के मामले में अस्ल मुद्दई मक्तूल के औलिया (वारिस) हैं न कि हुकूमत। हुकूमत का काम सिर्फ यह है कि वह मक्तूल के औलिया की मर्जी को नाफिज करने में उनकी मदद करे।

कत्ल इतना भयानक जुर्म है कि हदीस में इर्शाद हुआ है कि सारी दुनिया का चला जाना अल्लाह के नजदीक इससे कमतर है कि एक मोमिन को नाहक कत्ल कर दिया जाए। इसके बावजूद मक्तूल मृतक के औलिया को यह हक नहीं कि वे कातिल से बदला लेते हुए उसके साथ ज्यादती करें। मसलन वे कातिल के अंग भंग कर दें या कातिल के बदले उसके किसी साथी को कत्ल कर दें, वग़ैरह। मक्तूल के वारिस अगर बदला लेने में ज्यादती करें तो यहां हुकूमत उसी तरह उनकी प्रतिरोधी हो जाएगी जिस तरह वह उनके हके किसास के मामले में उनकी मददगार हुई थी।

इससे इस्लामी शरीअत की यह रूह मालूम होती है कि कोई शख़्स चाहे कितना ही ज्यादा मज़्लूम हो, अगर वह जालिम से बदला लेना चाहता है तो वह सिर्फ जुर्म के बक्द्र बदला ले सकता है। इससे ज्यादा कोई कार्रवाई करने की इजाजत उसे हरगिज हासिल नहीं

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِى هِىَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُۥ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔولًا ﴿٣٤﴾ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾

और तुम यतीम (अनाथ) के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो। यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और अहद (वचन) को पूरा करो। बेशक अहद की पूछ होगी। और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराजू से तौल कर दो। यह बेहतर तरीका है और इसका अंजाम भी अच्छा है। (34-35)

नाबालिग़ यतीम के सरपरस्त उसके करीबी रिश्तेदार होते हैं। मगर यतीम का माल उन औलिया (संरक्षकों) के हाथ में उस वक्त तक के लिए बतौर अमानत है जब तक कि यतीम आकिल व बालिग़ न हो जाए। औलिया को चाहिए कि वे यतीम के माल को हाथ न लगाएं।

वेसिर्फउस वक्त उसमेंतसर्रुफ (व्यय) कर सकते हैं जबकि खुद यतीम की ख़ैरख़्वाही और तरक्की का तकाजा हो। और यतीम जैसे ही अपने नफा नुकसान को समझने के काबिल हो उसका माल पूरी तरह उसके हवाले कर दिया जाए।

अहद (वचन, प्रतिज्ञा) को पूरा करना इंसानी किरदार की अहमतरीन सिफत है। जो आदमी एक अहद करे और फिर उसे पूरा न करे वह बिल्कुल बेकीमत इंसान है। बंदों के नजदीक भी और ख़ुदा के नजदीक भी।

'अहद ख़ुदा के नजदीक काबिले पुरसिश है' ये अल्फाज बताते हैं कि जब एक आदमी किसी दूसरे आदमी से अहद करता है तो यह सिर्फ दो इंसानों का बाहमी मामला नहीं होता बल्कि इसमें ख़ुदा भी तीसरे फरीक (पक्ष) की हैसियत से शरीक होता है। आदमी को अहद तोड़ते हुए डरना चाहिए कि अहद का दूसरा फरीक सिर्फ एक कमजोर इंसान नहीं है बल्कि वह खुदा है जिसकी पकड़ से बचना किसी तरह मुमकिन नहीं।

दुनिया में हर किस्म का कारोबार नाप तौल की बुनियाद पर कायम है। इस सिलसिले में हुक्म दिया गया कि नाप तौल बिल्कुल ठीक रखा जाए और जो चीज दी जाए पूरे नाप तौल के साथ दी जाए।

यह तरीका बयकवक्त अपने अंदर दो पहलू रखता है। एक तरफ वह इंसानी अज़्मत के मुताबिक है। नाप तौल में फर्क करना किरदार की पस्ती है। और नाप तौल में पूरा देना किरदार की बुलन्दी। इसका दूसरा अजीम फायदा यह है कि इससे कारोबार को फरोग हासिल होता है। क्योंकि कारोबार की तरक्की की बुनियाद तमामतर एतमाद (विश्वास, भरोसा) पर है और नाप तौल सही देना वह चीज है जिससे किसी शख़्स का कारोबारी एतमाद लोगों के दर्मियान कायम होता है।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

और ऐसी चीज के पीछे न लगो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं। बेशक कान और आंख और दिल सबकी आदमी से पूछ होगी। और जमीन में अकड़ कर न चलो। तुम जमीन को फाड़ नहीं सकते और न तुम पहाड़ों की लम्बाई को पहुंच सकते हो। ये सारे बुरे काम तेरे रब के नजदीक नापसंदीदा हैं। (36-38)

कतादा ने कहा है कि 'मैंने देखा' मत कहो जबकि तुमने देखा न हो। 'मैंने सुना' मत कहो जबकि तुमने सुना न हो। 'मैंने जाना' मत कहो जबकि तुमने जाना न हो।

जिस आदमी को इस बात का डर हो कि ख़ुदा के यहां हर बात की पूछ होगी वह कभी बेतहकीक बात अपनी जबान से नहीं निकालेगा और न आंख बंद करके बेतहकीक

बात की पैरवी करेगा। इंसान को चाहिए कि वह कान और आंख और दिमाग़ से वह काम ले जिसके लिए वे बनाए गए हैं और वही बात मुंह से निकाले या अमल में लाए जो पूरी तरह साबित हो चुकी हो। इस हुक्म में तमाम बेबुनियाद चीजें आ गईं। मसलन झूठी गवाही देना, गलत तोहमत लगाना, सुनी सुनाई बातों की बुनियाद पर किसी के दरपे हो जाना, महज तअस्सुब (विद्वेष) की बिना पर नाहक बात की हिमायत करना, ऐसी चीजों के पीछे पड़ना जिन्हें अपनी महदूदियत (असमर्थता) की बिना पर इंसान जान नहीं सकता। आंख, कान, दिल बजाहिर इंसान के कब्जे में हैं। मगर ये इंसान के पास बतौर अमानत हैं। इंसान पर लाजिम है कि वह इन चीजों को ख़ुदा की मंशा के मुताबिक इस्तेमाल करे। वर्ना उनकी बाबत उससे सख़्त बाजपुर्स होगी।

इंसान एक ऐसी जमीन पर है जिसे वह फाड़ नहीं सकता, वह एक ऐसे माहौल में है जहां ऊंचे-ऊंचे पहाड़ उसकी हर बुलन्दी की नफी कर रहे हैं। यह ख़ुदा के मुकाबले में इंसान की हैसियत का एक तमसीली (प्रतीकात्मक) एलान है। इसका तकाजा है कि आदमी दुनिया में मुतकब्बिर (घमंडी) बनकर न रहे। वह इज्ज़ और तवाजोअ का तरीका इख़्तियार करे न कि अकड़ने और सरकशी करने का।

ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ﴿٣٩﴾

ये वे बातें हैं जो तुम्हारे रब ने हिक्मत (तत्वदर्शिता) में से तुम्हारी तरफ 'वही' की हैं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना, वर्ना तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, मलामतजदा (निंदित) और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर। (39)

ऊपर की आयतों में जो अहकाम दिए गए उन्हें यहां हिक्मत कहा गया है। हिक्मत का मतलब है ठोस हकीकत, दानाई (सूझबूझ) की बात। ये बातें जो यहां बताई गई हैं ये जिंदगी के मोहकम हकाइक हैं। इनकी बुनियाद पर दुरुस्त जिंदगी की तामीर होती है। और जो इंसानी मुआशिरा इनसे ख़ाली हो उसके लिए ख़ुदा की दुनिया में हलाकत के सिवा और कोई चीज मुकद्दर नहीं। आज भी और आज के बाद की जिंदगी में भी।

मज्कूरा बाला नसीहतों का बयान तौहीद से शुरू हुआ था। (आयत नम्बर 22) अब उनका ख़ात्मा भी तौहीद पर किया गया है। (आयत नम्बर 39)। यह इस बात का इशारा है कि तमाम भलाइयों की बुनियाद यह है कि आदमी एक ख़ुदा को अपना ख़ुदा बनाए। वह उसी से डरे और उसी से मुहब्बत करे। ख़ुदा से दुरुस्त तअल्लुक ही में जिंदगी की दुरुस्ती का राज छुपा हुआ है। अगर ख़ुदा से तअल्लुक दुरुस्त न हो तो कोई भी दूसरी चीज इंसानी जिंदगी के निजाम को दुरुस्त नहीं कर सकती। ख़ुदा इंसान का आगाज (आरंभ) है और वही उसका इख़्तेताम (अंत) भी।

أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾ قُل لَّوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾

क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फरिश्तों में से बेटियां बना लीं। बेशक तुम बड़ी सख़्त बात कहते हो। और हमने इस कुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करें। लेकिन उनकी बेज़ारी बढ़ती ही जाती है। कहो कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श वाले की तरफ जरूर रास्ता निकालते। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जो ये लोग कहते हैं। सातों आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब उसकी पाकी बयान करते हैं। और कोई चीज ऐसी नहीं जो तारीफ के साथ उसकी पाकी बयान न करती हो। मगर तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। बिला शुबह वह हिल्म (उदारता) वाला, बख़्शने वाला है। (40-44)

हक़ीक़त इतनी कामिल और मुकम्मल है कि जो भी ख़िलाफ़े वाक़्या बात उसके साथ मंसूब की जाए वह फौरन बेजोड़ होकर रह जाती है। इसकी एक मिसाल ख़ुदा के साथ शरीक ठहराने का मामला है।

मुश्रिक लोग अपने मफ़रूज़ा शरीकों को ख़ुदा की औलाद कहते हैं मगर यह बात ख़ुद ही अपने दावे की तरदीद (खंडन) है। अगर इन शरीकों को स्त्रीलिंग करार देकर ख़ुदा की बेटियां कहा जाए तो फौरन यह एतराज वाकेअ होता है कि बेटियां ख़ुद मुश्रिकीन के एतराफ के मुताबिक़ कमज़ोर सिन्फ़ (Gender) से तअल्लुक़ रखती हैं। फिर ख़ुदा ने कमज़ोर सिन्फ़ को अपना शरीक बनाना क्यों पसंद किया। कैसी अजीब बात होगी कि ख़ुदा इंसानों को उनकी महबूब औलाद की हैसियत से बेटा दे और ख़ुद अपने लिए बेटियों का इंतिख़ाब करे।

इसके बरअक्स अगर इन शरीकों को बेटा फर्ज किया जाए जो इंसानी तजर्बात के मुताबिक़ कुव्वत व ताक़त की अलामत है तब भी यह बात नाक़ाबिलेफ़हम है। क्योंकि इक़्तेदार एक नाक़ाबिले तक़्सीम चीज है। जब भी किसी निज़ाम में एक से ज्यादा साहिबे ताक़त और साहिबे इक़्तेदार हों तो उनके दर्मियान लाजिमन कशमकश शुरू हो जाती है।

उनमें से हर एक यह चाहता है कि उसे मुतलक़ इक़्तेदार (सम्पूर्ण सत्ता) मिल जाए। अब अगर कायनात में एक से ज्यादा ताक़तवर हस्तियां होतीं तो उनके दर्मियान जरूर इक़्तेदार की जंग बरपा हो जाती और कायनात के सारे निजाम में अव्यवस्था व इंतिशार पैदा हो जाता। मगर चूंकि कायनात में कोई अव्यवस्था व इंतिशार नहीं। इससे साबित हुआ कि यहां दूसरी ऐसी हस्तियां भी मौजूद नहीं जो ख़ुदा के साथ उसकी ताकत में हिस्सेदार हों।

शरीकों को अगर बेटे कहा जाए तब भी वह सूरते वाक़ये से टकराता है और बेटियां कहा जाए तब भी। हक़ीक़त यह है कि कायनात अपने पूरे वजूद के साथ ऐसे हर तसव्वुर को क़ुबूल करने से इंकार करती है जिसमें ख़ुदा की ख़ुदाई में किसी और को शरीक किया गया हो।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾

और जब तुम कुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान एक छुपा हुआ पर्दा हायल कर देते हैं जो आख़िरत को नहीं मानते। और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में गिरानी (बोझ) पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरआन में तंहा अपने रब का ज़िक्र करते हो तो वे नफ़रत के साथ पीठ फेर लेते हैं। (45-46)

यहां जिस चीज को 'छुपा हुआ पर्दा' कहा गया है वह दरअस्ल नफ़्सियाती (मनोवैज्ञानिक) पर्दा है। इससे मुराद वह सूरतेहाल है जबकि आदमी बतौर ख़ुद अपने जेहन में किसी ग़ैर सक्षत्र (सच्चाई) को सदाक़त का मक़ाम दे दे। ऐसे शख़्स के सामने जब एक ऐसा हक आता है जिसके मुताबिक़ उसकी मफ़रूज़ा (मान्य) सदाक़तों की नफ़ी हो रही हो तो ऐसी बेआमेज (विशुद्ध) दावत उसके लिए नाक़ाबिलेफ़हम बन जाती है। अपनी मख़्सूस नफ़्सियात की बिना पर उसकी समझ में नहीं आता कि ऐसी दावत भी सच्ची दावत हो सकती है जिसे मानने की सूरत में वह चीज बातिल (असत्य) क़रार पाए जिसे वह अब तक मुसल्लमा सदाक़त (प्रमाणिक सच्चाई) समझे हुए था। वह नई दावत के दलाइल का तोड़ नहीं कर पाता। ताहम अपने मख़्सूस जेहन की बिना पर यह मानने के लिए भी तैयार नहीं होता कि यही वह मुतलक़ सदाक़त है जिसे उसे दूसरी तमाम चीजों को छोड़कर मान लेना चाहिए।

बेआमेज (विशुद्ध) सदाक़त का एलान हमेशा दूसरी मफ़रूज़ा (मान्य) सदाक़तों की नफ़ी (नकार) के हममअना होता है। इसलिए इसे सुनकर वे लोग बिफर उठते हैं जो इसके सिवा दूसरी चीजों या शख़्सियतों को भी अज़्मत व तक़द्दुस का मक़ाम दिए हुए हों। उनके अंदर आख़िरत की जवाबदेही का यकीन न होना उन्हें ग़ैर संजीदा बना देता है और ग़ैर संजीदा जेहन के साथ कोई बात समझी नहीं जा सकती।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ﴿٤٧﴾ انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾

और हम जानते हैं कि जब वे तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो वे किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में सरगोशियां करते हैं। ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक सहरज़दा (जादूग्रस्त) आदमी के पीछे चल रहे हो देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चसपां कर रहे हैं। ये लोग खोए गए, वे रास्ता नहीं पा सकते। (47-48)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत में दलाइल का जोर इतना ज्यादा था कि अरब के आम लोग इससे मरऊब होने लगे। यह देखकर वहां के सरदारों को ख़तरा महसूस हुआ कि अगर इन लोगों ने बड़ी तादाद में नए दीन को कुबूल कर लिया तो हमारी सरदारी ख़त्म हो जाएगी। उन्होंने लोगों को उससे फेरने के लिए एक तदबीर की। उन्होंने कहा कि इस शख़्स के कलाम में तुम जो जोर देख रहे हो वह दरअस्ल साहिराना (जादुई) कलाम का जोर है। यह 'अदब' (साहित्य) का मामला है न कि हकीकतन सदाकत का मामला। इस तरह उन्होंने यह किया कि जिस कलाम की अज्मत में लोग सदाकत की झलक देख रहे थे उसे लोगों की नजर में 'कलम के जादू' के हममअना बना दिया।

जो लोग किसी दावत को उसके जौहर की बुनियाद पर न देखें बल्कि इस एतबार से देखें कि वह उनकी हैसियत की तस्दीक (पुष्टि) करती है या तरदीद (रद्द), ऐसे लोग कभी सदाकत को पाने में कामयाब नहीं हो सकते।

وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾ أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾

और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से उठाए जाएंगे। कहो कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज जो तुम्हारे ख़्याल में इनसे भी ज्यादा मुश्किल हो। फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें दुबारा जिंदा करेगा। तुम कहो कि वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है। फिर वे तुम्हारे

आगे अपना सर हिलाएंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहो कि अजब नहीं कि उसका वक्त करीब आ पहुंचा हो, जिस दिन ख़ुदा तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत थोड़ी मुद्दत रहे। (49-52)

इंसान का वजूदे अव्वल वाजेह तौर पर उसके वजूदे सानी को मुमकिन साबित करता है। जो शख़्स इंसान की पहली पैदाइश को बतौर वाकया मानता हो, उसके पास कोई हकीकी दलील नहीं जिससे वह इंसान की दूसरी पैदाइश के इम्कान को न माने।

फिर यह कि इंसान की दूसरी पैदाइश, कम से कम उन लोगों के लिए हरगिज हैरत नहीं जो इंसान को पत्थर और लोहा (दूसरे शब्दों में माद्दी चीज़ों का मज्मूआ) समझते हैं क्योंकि जिस्म की कोशिकाएं (Cells) के टूटने के साथ इसी मालूम दुनिया में यह वाकया हो रहा है कि आदमी का माद्दी (भौतिक) वजूद मुसलसल ख़त्म होता है और फिर दुबारा बनता है। हकीकत यह है कि हश्र व नश्र (परलोक) इसी वाकये को मौत के बाद मानना है जिसका मौत से पहले हम बार-बार तजर्बा कर रहे हैं।

कियामत दरअस्ल उसी दिन का नाम है जबकि ग़ैब का पर्दा फट जाए और ख़ुदा अपनी तमाम ताकतों के साथ बिल्कुल सामने आ जाए। जब ऐसा होगा तो मुंकिर भी वही करने पर मजबूर होगा जो आज सिर्फ सच्चा मोमिन कर पाता है। उस वक्त तमाम लोग ख़ुदा के कमालात का इकरार करते हुए उसकी तरफ दौड़ पड़ेंगे।

وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُبِينًا ﴿٥٣﴾

और मेरे बंदों से कहो कि वही बात कहें जो बेहतर हो। शैतान उनके दर्मियान फसाद डालता है। बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है। (53)

यह आयत दाओ (आह्वानकर्ता) और मदऊ (संबोधित व्यक्ति) के नाज़ुक रिश्ते के बारे में है। हुक्म दिया गया है कि मदऊ की तरफ से चाहे कितनी ही सख़्त बात कही जाए और कितना ही उत्तेजक मामला किया जाए, दाओ को हर हाल में कौले अहसन (उत्तम बात) का पाबंद रहना है। क्योंकि दाओ अगर जवाबी जेहन के तहत कार्रवाई करे तो मदऊ के अंदर मजीद नफरत और जिद की नफ्सियात उभरेगी। और दाओ और मदऊ के दर्मियान ऐसी कशमकश पैदा होगी कि लोग दाओ की बात को ठंडे जेहन के साथ सुनने के काबिल ही न रहें।

दाओ और मदऊ के अंदर जिद और नफ़रत की फ़ज़ा पैदा होना सरासर शैतान की मुवाफ़िक़त में है ताकि वह हक़ के पैग़ाम को लोगों के लिए नाक़ाबिले क़ुबूल बना दे। इसलिए दाओ अगर अपने किसी फेअल (कृत्य) से मदऊ के अंदर जिद और नफ़रत की नफ़्सियात

जगाने लगे तो गोया कि उसने शैतान का काम किया, उसने अपने दुश्मन का काम अपने हाथ से अंजाम दे दिया।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ﴿٥٥﴾

तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अजाब दे। और हमने तुम्हें उनका जिम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो आसमानों और जमीन में हैं और हमने कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है और हमने दाऊद को जबूर दी। (54-55)

एक शख़्स सच्चे दीन की दावत दे और दूसरा शख़्स उसे न माने तो दाई के अंदर झुंझलाहट पैदा हो जाती है कि यह शख़्स कैसा है कि खुली हुई सदाकत को मानने के लिए तैयार नहीं। कभी बात और आगे बढ़ती है और वह एलान कर बैठता है कि यह शख़्स जहन्नमी है। इस किस्म का कलाम दाई के लिए किसी हाल में जाइज नहीं।

एक है हक का पैग़ाम पहुंचाना। और एक है पैग़ाम के रद्देअमल के मुताबिक हर एक को उसका बदला देना। पहला काम दाई (आह्वानकर्ता) का है और दूसरा काम ख़ुदा का। दाई को कभी यह ग़लती नहीं करना चाहिए कि वह अपने दायदे से गुजर कर खुदा के दायरे में दाख़िल हो जाए।

इसी तरह कभी ऐसा होता है कि दाई और मदऊ के दर्मियान अपने-अपने पेशवाओं की फजीलत की बहस उठ खड़ी होती है। हर एक अपने पेशवा को दूसरे से आला और अफजल साबित करने में लग जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि जो बहस उसूल के दायरे में रहनी चाहिए वह शख़्सियत के दायरे में चली जाती है और तअस्सुबात को जगाकर क़ुबूले हक की राह में मजीद रुकावट खड़ी करने का सबब बनती है। इस सिलसिले में कहा गया कि यह ख़ुदा का मामला है कि वह किसको क्या दर्जा देता है। तुम्हें चाहिए कि इस किस्म की बहस से बचते हुए अस्ल पैग़ाम को पहुंचाने में लगे रहो।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है। वे न तुमसे

किसी मुसीबत को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न उसे बदल सकते हैं। जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब का क़ुर्ब (समीप्य) ढूंढते हैं कि उनमें से कौन सबसे ज्यादा करीब हो जाए। और वे अपने रब की रहमत के उम्मीदवार हैं। और वे उसके अजाब से डरते हैं। वाकई तुम्हारे रब का अजाब डरने ही की चीज है। (56-57)

इंसान जिन हस्तियों को अल्लाह के सिवा अपना माबूद (पूज्य) बनाता है वे सब वही हैं जो अल्लाह की मख़्लूक हैं। मसलन बुजुर्ग या फरिश्ते वग़ैरह। ग़ौर से देखिए तो यह माबूदियत सरासर एकतरफा होती है। इन हस्तियों ने ख़ुद अपने ख़ुदा होने का दावा नहीं किया है। ये सिर्फ दूसरे लोग हैं जो उन्हें माबूद मानकर उनकी तकदीस व ताजीम में लगे हुए हैं।

अगर किसी को हाजिर से ग़ायब तक देखने की नजर हासिल हो और वह पूरी सूरतेहाल पर नजर करे तो वह अजीब मजहकाख़ेज मंजर देखेगा। वह देखेगा कि इंसान कुछ हस्तियों को बतौर ख़ुद माबूद का दर्जा देकर उनकी परस्तिश कर रहा है। और उनसे मुरादें मांग रहा है। जबकि ऐन उसी वक्त ख़ुद इन हस्तियों का यह हाल है कि वे अल्लाह की अज्मत के एहसास से सहमे हुए हैं और उसकी रहमत व कुरबत की तलाश में हमहतन सरगर्म हैं।

وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम कियामत से पहले हलाक न करें या सख़्त अजाब न दें। यह बात किताब में लिखी हुई है। (58)

अफ़राद के लिए जिस तरह फ़ना का क़ानून है इसी तरह क़ौमों और बस्तियों के लिए भी फ़ना का क़ानून है। कोई बस्ती चाहे वह कितनी ही मजबूत और पुररौनक हो, बहरहाल वह एक दिन ख़त्म होकर रहेगी। चाहे उसकी सूरत यह हो कि वह अपने गुनाह और सरकशी की वजह से पहले हलाक कर दी जाए। या वह बाकी रहे यहां तक कि जब आख़िरत कायम होने का वक्त आए तो जमीन की तमाम आबादियों के साथ उसे इकट्ठे मिटा दिया जाए।

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾

और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया। और हमने समूद को ऊंटनी दी उन्हें समझाने के लिए। फिर उन्होंने उस पर जुल्म किया। और निशानियां हम सिर्फ डराने के लिए भेजते हैं। (59)

पैग़म्बरों के साथ जो ग़ैर मामूली वाकेयात पेश आते हैं वे दो किस्म के होते हैं। एक वे जो पैग़म्बर और आपके साथियों की उमूमी नुसरत के लिए होते हैं। उन्हें ताईद (ख़ुदाई मदद) कहा जा सकता है। दूसरे वे हैं जो मुश्रिकीन के मुतालबे के तौर पर जाहिर किए जाते हैं। इनका पारिभाषिक नाम मोजिजा है। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके असहाब के साथ ताईदे इलाही के बेशुमार वाकेयात पेश आए। मगर जहां तक फरमाइशी निशानी (मोजिजा) का तअल्लुक है। आपके लिए उन्हें भेजना रोक दिया गया।

इसकी वजह यह है कि हर चीज के कुछ तकाजे होते हैं। जो लोग ग़ैर मामूली निशानी का मुतालबा करें, उनके ऊपर ग़ैर मामूली जिम्मेदारियां भी आयद होती हैं। चुनांचे ख़ुदा का यह कानून है कि जो लोग ग़ैर मामूली निशानी (मोजिज़ा) देखने के बावजूद ईमान न लाएं उन्हें सख़्त अजाब भेजकर नेस्तोनाबूद कर दिया जाए। अब चूंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नुबुव्वत का सिलसिला ख़त्म होने वाला था इसलिए आपकी मुख़ातब कौम के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता था। क्योंकि पूरी तबाही की सूरत में कौम मिट जाती। फिर पैग़म्बर के बाद पैग़म्बर की नुमाइंदगी के लिए दुनिया में कौन बाकी रहता।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मुख़ातबीन के साथ यह अल्लाह तआला की ख़ास रहमत थी कि उनके मुतालबे के बावजूद उन्हें महसूस मोजिजात नहीं दिखाए गए। अगर ऐसा किया जाता तो अंदेशा था कि उनका भी वही सख़्त अंजाम हो जो इससे पहले कौमे समूद का हुआ।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾

और जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है। और वह रूया (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया वह सिर्फ लोगों की जांच के लिए था, और उस दरख़्त को भी जिसकी कुरआन में मजम्मत (निंदा) की गई है। और हम उन्हें डराते हैं, लेकिन उनकी बढ़ी हुई सरकशी बढ़ती ही जा रही है। (60)

लोग ख़ुदा के दाई से अक्सर अपने प्रस्तावित मोजिजे (दिव्य चमत्कार) का मुतालबा करते हैं। हालांकि अगर वे खुले जेहन के साथ देखें तो दाई की ख़ुसूसी नुसरत की शक्ल में वह मोजिजा उन्हें दिखाया जा चुका होता है जिसे वे उसकी सदाकत (सच्चाई) को जांचने के लिए देखना चाहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़ातबीन आप से महसूस मोजिजात मांग रहे थे। फरमाया कि क्या ये मोजिजे तुम्हारी आंख खोलने के लिए काफी नहीं कि दावत के इब्तिदाई दौर में जब इसकी बजाहिर कोई ताकत नहीं थी, यह एलान किया गया कि ख़ुदा

तुम्हें घेरे में लिए हुए है। यह पेशीनगोई अरब कबीलों में इस्लाम की तोसीअ (प्रसार) से पूरी हो गई। फिर इसकी तक्मील बद्र की फतह और सुलह हुदैबिया के बाद मक्का की फतह की सूरत में हुई।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेराज की सुबह को जब यह एलान किया कि आज रात मैं बैतुल हराम से बैतुल मक्दिस तक गया तो लोगों को यकीन नहीं आया। इसके बाद ऐसे अफराद बुलाए गए जो बैतुल मक्दिस को देखे हुए थे और उनके सामने आपने बैतुल मक्दिस की इमारत की पूरी तफ्सील बयान कर दी।

मगर इन वाकेयात को लोगों ने मजाक में टाल दिया हालांकि वह आपकी सदाकत का मोजिजाती सुबूत था। हकीकत यह है कि अस्ल मसला महसूस मोजिजा दिखाने का नहीं है बल्कि दावत पर संजीदा ग़ौर व फिक्र का है। अगर लोग दावत के बारे में संजीदा न हों तो हर चीज को मजाक की नज़र कर देंगे। चाहे वह बात बजाते ख़ुद कितनी ही काबिले लिहाज क्यों न हो।

कुरआन में जब डराया गया कि जहन्नम में जक्कूम का खाना होगा (अस साफ्फात 62) तो रिवायत में आता है कि अबू जहल ने कहा कि हमारे लिए खजूर और मक्खन ले आओ। जब वह लाया गया तो वह दोनों को मिलाकर खाने लगा और कहा कि तुम लोग भी खाओ यही जक्कूम है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

इसी तरह कुरआन में शजरह मलऊना (बनी इस्राईल 60) का जिक्र है जो जहन्नमियों का खाना होगा। जब कुरआन में यह आयत उतरी तो कुरैश के एक सरदार ने कहा : अबू कब्शा के लड़के को देखो। वह हमसे ऐसी आग का वादा करता है जो पत्थर तक को जला देगी। फिर उसका गुमान है कि उसके अंदर एक दरख़्त उगता है हालांकि मालूम है कि आग जलाने वाली चीज है। (तफ्सीर मज़हरी)

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ أَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٢﴾

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया। उसने कहा क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया है। उसने कहा, जरा देख, यह शख़्स जिसे तूने मुझ पर इज्जत दी है अगर तू मुझे कियामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा इसकी तमाम औलाद को खा जाऊंगा। (61-62)

फरिश्ते और इब्लीस का किस्सा बताता है कि मानने वाले कैसे होते हैं और न मानने वाले कैसे। मानने वाले लोग हक को हक के लिहाज से देखते हैं चुनांचे उसे समझने में उन्हें देर नहीं लगती। वे फौरन उसे समझ कर उसे मान लेते हैं। जैसा कि आदम की पैदाइश के

वक्त फरिश्तों ने किया।

दूसरे लोग वे हैं जो हक को अपनी जात की निस्बत से देखते हैं। शैतान ने यही किया। उसने हक को अपनी जात की निस्बत से देखा। चूंकि आदम को सज्दे का हुक्म आदम को बजाहिर बड़ा बना रहा था और उसे छोटा, उसने ऐसे हक को मानने से इंकार कर दिया जिसे मानने के बाद उसकी अपनी जात छोटी हो जाए।

शैतान ने ख़ुदा को जो चैलेन्ज दिया था उसे सामने रखकर देखिए तो हर वह शख़्स शैतान का शिकार नजर आएगा जो हक को इसलिए नजरअंदाज कर दे कि उसे मानने की सूरत में उसकी अपनी जात दूसरे के मुकाबले में छोटी हो जाती है।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُورًا ۝٦٣ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ إِلَّا غُرُورًا ۝٦٤ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۚ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝٦٥

ख़ुदा ने कहा कि जा उनमें से जो भी तेरा साथी बना तो जहन्नम तुम सबका पूरा-पूरा बदला है। और उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज से उनका कदम उखाड़ दे और उन पर अपने सवार और प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर। और शैतान का वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा और तेरा रब कारसाजी (कार्य-सिधि) के लिए काफी है। (63-65)

'इंसानों में से जो शख़्स शैतान की राह चलेगा' ये अल्फाज बताते हैं कि मौजूदा दुनिया में इंसान को आजादी हासिल है कि वह चाहे शैतान के रास्ते पर चले या ख़ुदा के बताए हुए रास्ते पर। इसी आजादी के इस्तेमाल में इंसान का अस्ल इम्तेहान है। यहीं कामयाब होकर या तो वह ख़ुदा का इनाम पाता है या नाकाम होकर शैतान के अंजाम का मुस्तहिक बन जाता है।

शैतान को इस दुनिया में आजादी हासिल है कि वह इंसान को अपना साथी बनाए। वह उसके ऊपर अपनी सारी कोशिश इस्तेमाल करे। वह उसके अंदर घुसकर उसके माल व औलाद में शामिल हो जाए। मगर शैतान को किसी भी दर्जे में इंसान के ऊपर कोई इख़्तियार नहीं दिया गया है। शैतान के बस में सिर्फ यह है कि वह आवाज और अल्फाज के जरिए लोगों को बहकाए। वह बेहकीकत चीजों को ख़ुशनुमा बनाकर उन्हें अजीम हकीकत के रूप में पेश करे।

आयत में 'लइ-स ल-क अलैहिम सुलतान०' के अल्फाज बताते हैं कि शैतान इम्कानी

तौर पर इंसान के मुकाबले में ज्यादा ताकतवर है। फिर एक ऐसी दुनिया जहां शैतान अपने तमाम 'सवार और प्यादे' के जरिए इंसान के ऊपर हमलाआवर हो वहां उससे बचने का रास्ता क्या है। इसका रास्ता सिर्फ यह है कि इंसान ख़ुदा को हकीकी मअनों में अपना कारसाज बनाए। जो शख़्स ऐसा करेगा ख़ुदा उसे इस तरह अपनी हिफाजत में ले लेगा कि शैतान उसके मुकाबले में अपनी तमाम ताकतों के बावजूद आजिज होकर रह जाए।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝٦٦ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝٦٧

तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फज्ल (अनुग्रह) तलाश करो। बेशक वह तुम्हारे ऊपर मेहरबान है। और जब समुद्र में तुम पर कोई आफत आती है तो तुम उन माबूदों (पूज्यों) को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ बचा लाता है तो तुम दुबारा फिर जाते हो, और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। (66-67)

ख़ुदा ने मौजूदा दुनिया को ख़ास कवानीन (नियमों) का पाबंद बना रखा है, इस बिना पर इंसान के लिए यह मुमकिन होता है कि वह समुद्र में अपना जहाज चलाए और हवा में अपनी सवारियां दौड़ाए। यह सब इसलिए था कि इंसान अपने हक में अपने खुदा की रहमतों को पहचाने और उसका शुक्रगुजार बने। मगर इंसान का हाल यह है कि वह जो कुछ होते हुए देखता है वह समझता है कि उसे बस ऐसा ही होना है। वह एक इरादी (नियोजित) वाक़े को अपने आप होने वाला वाक़्या फर्ज कर लेता है। यही वजह है कि इन वाकेयात को देखकर उसके अंदर कोई ख़ुदाई एहसास नहीं जागता।

ख़ुदा की मअरफ्त इतनी हकीकी है कि वह इंसान की फ़ितरत के अंदर आख़िरी गहराई तक पेवस्त है। इसका एक मुजाहिरा उस वक्त होता है जबकि उस पर कोई आफत आ पड़े जिसके मुकाबले में वह अपने आपको बेबस महसूस करे। मसलन अथाह समुद्र में तूफान का आना और जहाज का उसके अंदर फंस जाना। इस तरह के लम्हात में इंसान के ऊपर से उसके तमाम मस्नूई पर्दे हट जाते हैं वह एक ख़ुदा का पहचान कर उसे पुकारने लगता है।

यह वक्ती तजर्बा इंसान को इसलिए कराया जाता है ताकि वह अपनी पूरी जिंदगी को उस पर ढाल ले। वह वक्ती एतराफ को अपना मुस्तकिल ईमान बना ले। मगर इंसान का यह हाल है कि समुद्र के तूफान में वह जिस हकीकत को याद करता है, ख़ुश्की के माहौल में पहुंचते ही वह उसे भूल जाता है।

ख़ुदा की ख़ुदाई को मानने का नाम तौहीद (एकेश्वरवाद) है और ख़ुदा की ख़ुदाई को न मानने का नाम शिर्क (बहुदेववादी)। इस एतबार से तौहीद की अस्ल हकीकत एतराफ

(स्वीकार) है और शिर्क की अस्ल हकीकत अदम एतराफ (अस्वीकार)। इंसान से उसके ख़ुदा को अस्लन जो चीज मत्लूब है वह यही एतराफ है। मगर इंसान इतना जालिम है कि वह एतराफ के बक्द्र भी ख़ुदा का हक देने के लिए तैयार नहीं होता।

أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ۞ أَمْ أَمِنتُمْ أَن يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۞

क्या तुम इससे बेडर हो गए कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ लाकर जमीन में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज न पाओ। या तुम इससे बेडर हो गए कि वह तुम्हें दुबारा समुद्र में ले जाए फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफान भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इंकार के सबब से ग़र्क कर दे। फिर तुम इस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ। (68-69)

ख़ुदा इंसान को उसकी सरकशी के बावजूद फौरन नहीं पकड़ता। बल्कि उस पर वक्ती आफत भेजकर उसे ख़बरदार करता है। मगर इंसान का हाल यह है कि जब आफत आती है तो वक्ती तौर पर उसके अंदर एहसास जागता है मगर आफत के रुख़्सत होते ही उसका एहसास भी रुख़्सत हो जाता है। हालांकि बाद को भी वह उतना ही ख़ुदा के कब्जे में होता है जितना कि वह पहले था।

समुद्र के सफर से अगर एक बार वह सलामती के साथ वापस आ गया है तो यह भी मुमकिन है कि उसे दुबारा समुद्र का सफर पेश आए और वह दुबारा उसी आफत में घिर जाए जिसमें वह पहले घिरा था। मजीद यह कि ख़ुश्की के ख़तरात समुद्र के ख़तरात से कम नहीं हैं। समुद्र में जो चीज तूफान है ख़ुश्की पर वही चीज जलजला बन जाती है। फिर वह कौन सा मकाम है जहां आदमी कोई ऐसी चीज पा ले जो ख़ुदा के मुकाबले में उसकी तरफ से रोक बन सके।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۞

और हमने आदम की औलाद को इज्जत दी और हमने उन्हें ख़ुश्की और तरी में सवार किया और उन्हें पाकीजा (पवित्र) चीजों का रिज्क दिया और हमने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूकात पर फौकियत (श्रेष्ठता) दी। (70)

दुनिया की तमाम मख़्लूकात में इंसान को ख़ुसूसी फजीलत (श्रेष्ठता) हासिल है। चांद

और सितारे बेशुऊर मख़्लूक हैं जबकि इंसान शुऊर और इरादे का मालिक है। दरख़्त पर दूसरे जिस तरह चाहते हैं तसर्रुफ करते हैं मगर इंसान ख़ुद दूसरी चीजों के ऊपर तसर्रुफ करता है। जानवर सिर्फ अपने आजा (अंगों) के जरिए अमल करते हैं मगर इंसान औजार और मशीन बनाकर उनके जरिए अपना मक्सद हासिल करता है। दरिया के लिए सिर्फ यह मुमकिन है कि वह ढलान के रुख़ पर बहे मगर इंसान बुलन्दियों पर चढ़ता है और बहाव के उल्टे रुख़ पर सफर करने की ताकत रखता है।

इंसान के लिए इस दुनिया में रिज्क का शाहाना इंतिजाम किया गया है। दरख़्त के पत्ते सूरज की एनर्जी को केमिकल एनर्जी में तब्दील करते हैं ताकि इससे इंसान की गिजा तैयार हो। जानवर घास खाते हैं ताकि उसे इंसान के लिए दूध और गोश्त की शक्ल में लौटाएं। मक्खियां रात दिन सरगर्म रहती हैं ताकि वे दुनिया भर के फूलों का रस चूसकर इंसान के लिए शहद का जख़ीरा जमा करें, वग़ैरह वग़ैरह।

इस इनाम का तकाजा था कि इंसान ख़ुदा का शुक्रगुजार बने। मगर तमाम मख़्लूकात में इंसान ही वह मख़्लूक है जो सबसे कम ख़ुदा का शुक्र अदा करता है।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۞ وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۞

जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएंगे। पस जिसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा वे लोग अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उनके साथ जरा भी नाइंसाफी न की जाएगी। और जो शख़्स इस दुनिया में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा और बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से। (71-72)

दुनिया में हर इंसानी गिरोह अपने रहनुमाओं के साथ होता है। चुनांचे आख़िरत में भी हर गिरोह अपने अपने रहनुमा के साथ बुलाया जाएगा। अच्छे लोग अपने रहनुमा के साथ और बुरे लोग अपने रहनुमा के साथ।

इसके बाद हर एक को उसकी जिंदगी का आमालनामा दिया जाएगा। नेक लोगों का आमालनामा उनके दाएं हाथ में और बुरे लोगों का आमालनामा उनके बाएं हाथ में। यह गोया एक महसूस अलामत होगी कि पहला गिरोह ख़ुदा का मकबूल गिरोह है और दूसरा गिरोह उसका नामकबूल गिरोह।

आख़िरत में अच्छे और बुरे की जो तक्सीम होगी वह इस बुनियाद पर होगी कि कौन दुनिया में अंधा बनकर रहा और कौन बीना (दृष्टिवान) बनकर। दुनिया में चूंकि ख़ुदा ख़ुद बराहेरास्त इंसान से हमकलाम नहीं होता। इसलिए दुनिया की जिंदगी में ख़ुदा की बातों को कायनात की ख़ामोश निशानियों और दाअियाने हक के अल्फाज से जानना पड़ता है। जो

लोग इस बिलवास्ता (परोक्ष) कलाम से मअरफ़त हासिल करें वे ख़ुदा की नजर में 'बीना' लोग हैं। और जो लोग बिलवास्ता कलाम की जबान न समझें और उस वक्त के मुंतजिर हों जब ख़ुदा जाहिर होकर ख़ुद कलाम फरमाएगा वे ख़ुदा की नजर में 'अंधे' लोग हैं। ऐसे लोगों का बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) कलाम को सुनना कुछ भी काम न आएगा। वे उस वक्त भी हकीकत से दूर रहेंगे जैसा कि आज उससे दूर पड़े हुए हैं।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

और करीब था कि ये लोग फितने में डाल कर तुम्हें उससे हटा दें जो हमने तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की है ताकि तुम उसके सिवा हमारी तरफ ग़लत बात मंसूब करो और तब वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते। और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो करीब था कि तुम उनकी तरफ कुछ झुक पड़े। फिर हम तुम्हें जिंदगी और मौत दोनों का दोहरा (अजाब) चखाते। इसके बाद तुम हमारे मुकाबले में अपना कोई मददगार न पाते। (73-75)

मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत (आह्वान) का अस्ल नुक्ता यह था कि ख़ुदा सिर्फ एक है और उसके सिवा जिन बुतों को तुम पूजते हो वे सब बातिल (झूठे) हैं। अहले मक्का अगरचे एक बड़े ख़ुदा का इकरार करते थे मगर इसी के साथ वे दूसरे ख़ुदाओं को भी मानते थे।

ये दूसरे ख़ुदा कौन थे। ये उनके बुजुर्ग और अकाबिर थे। जिन्हें वे मुकद्दस समझते थे और उनकी मूर्तियां बनाकर उनके सामने झुकना शुरू कर दिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीद की दावत से बुजुर्गों के इस अकीदे पर जद पड़ती थी। चुनांचे वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस मुसालेहत के लिए कहते थे कि हम आपके माबूद को मानेंगे, शर्त यह है कि आप हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दें।

इस दुनिया में वह शख़्स फौरन लोगों की नजर में मबग़ूज (अप्रिय) हो जाता है जो ऐसी बात कहे जिसकी जद लोगों के बड़ों पर पड़ती हो। इसके बरअक्स लोगों के दर्मियान महबूब बनने का सबसे आसान तरीका यह है कि ऐसी बात कहो जिसमें सब लोग अपने-अपने बुजुर्गों की तस्दीक पा रहे हों। मगर पैग़म्बर का तरीका यह है कि सच्चाई का खुला एलान किया जाए। इसकी परवाह न की जाए कि किस बुजुर्ग पर इसकी जद पड़ती है और किस पर नहीं पड़ती।

दावती अमल से अस्ल मक्सूद हकीकत का कामिल एलान है। इसीलिए एलान के मामले मे किसी कमी या रिआयत की इजाजत नहीं है। पैग़म्बर या ग़ैर पैग़म्बर, जो भी हक की दावत

के लिए उठे उसे हकीकत का खुला एलान करना है, चाहे इसकी यह कीमत देनी पड़े कि दुनिया में उसका कोई दोस्त बाकी न रहे।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾

और ये लोग इस सरजमीन से तुम्हारे कदम उखाड़ने लगे थे ताकि तुम्हें इससे निकाल दें। और अगर ऐसा होता तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। जैसा कि उन रसूलों के बारे में हमारा तरीका रहा है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारे तरीके में तब्दीली न पाओगे। (76-77)

जब भी किसी गिरोह में सच्चे दीन की दावत उठती है तो सूरतेहाल यह होती है कि एक तरफ वे लोग होते हैं जो मजहब के नाम पर कायमशुदा गद्दियों के मालिक होते हैं। दूसरी तरफ हक का दाओ होता है जो बेआमेज (विशुद्ध) दीन का नुमाइंदा होने की वजह से वक्त के माहौल में तंहा और बेजोर दिखाई देता है। यह फर्क लोगों को ग़लतफहमी में डाल देता है। वे हक के दाओ को बिल्कुल बेकीमत समझ लेते हैं। यहां तक कि यह चाहते हैं कि उसे अपनी बस्ती से निकाल दें।

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह जमीन ख़ुदा की जमीन है। यहां किसी ख़ुदा के बंदे के ख़िलाफ तख़रीब (प्रतिरोध) का मंसूबा बनाना ख़ुद अपने आपको ख़ुदा की नजर में मुजरिम साबित करना है। ख़ुदा के दाओ को किसी बस्ती से निकालना ऐसा ही है जैसे किसी शहर से उस शख़्स को निकाल दिया जाए जिसे वहां हुकूमते वक्त के नुमाइंदे की हैसियत हासिल हो। ऐसे शख़्स को बस्ती में न रहने देने का नतीजा बिलआख़िर यह होता है कि बस्ती वाले ख़ुद वहां न रहने पाएं।

आदमी दूसरे को निकालता है हालांकि वह ख़ुद अपने आपको निकाल रहा होता है। आदमी दूसरे को छोटा करना चाहता है हालांकि वह ख़ुद अपने आपको उस मालिके हकीकी की नजर में छोटा कर रहा होता है जिसे हकीकतन यह इख़्तियार है कि वह जिसे चाहे छोटा करे और जिसे चाहे बड़ा कर दे।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾

नमाज कायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे तक। और ख़ास कर फज्र की क़िरात (प्रभात-पाठ)। बेशक फज्र की किरात मशहूद (उपस्थित) होती है। (78)

आयत का लफ़्ज़ी तर्जुमा यह है : 'क़ायम करो नमाज को सूरज ढलने से रात के अंधेरे तक' इन अल्फ़ाज से बजाहिर यह निकलता है कि दोपहर बाद से लेकर रात का अंधेरा छाने तक मुसलसल नमाज पढ़ी जाती रहे। इसमें शक नहीं कि ख़ुदा की अज्मत और उसके एहसानात का तक़ाजा यही है कि बंदे हर वक्त उसकी इबादत करते रहें। मगर हदीस की तशरीह ने इस आम हुक्म को ख़ास कर दिया। हदीस ने इस मुश्किल हुक्म को इस तरह आसान कर दिया कि उसने क़रार दिया कि आम औक़ात में लोग सिर्फ़ जिक्र (याद) की हद तक ख़ुदा से अपना तअल्लुक़ वाबस्ता रखें और दोपहर से रात तक के औक़ात में चार बार (जुहर, अस्र, मग़्रिब, इशा) उसकी इबादत कर लिया करें।

इसी तरह आयत के दूसरे टुकड़े का लफ़्ज़ी तर्जुमा यह है : 'और क़ुरआन पढ़ना फ़ज्र का' इसे भी अगर इसके जाहिरी मफ़हूम में लिया जाए तो इसका मतलब यह निकलेगा कि रोजाना सुबह के तमाम औक़ात में क़ुरआन पढ़ा जाता रहे। मगर यहां हदीस की तशरीह ने हमारे लिए आसानी पैदा कर दी। हदीस के मुताबिक इस हुक्म का मुतअय्यन (निश्चित) मतलब यह है कि सुबह के वक्त भी एक नमाज अदा की जाए और इस (पांचवीं) नमाज का नुमायां पहलू यह हो कि इसमें क़ुरआन की लम्बी तिलावत (पाठ) की जाए।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾

और रात को तहज्जुद पढ़ो, यह नफ़्ल है तुम्हारे लिए। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे महमूद (प्रशंसित-स्थल) पर खड़ा करे। (79)

तहज्जुद की नमाज की रूह अल्लाह को अपनी मख़्सूस तंहाइयों में याद करना है। तहज्जुद के लफ़्ज़ी मअना रात की बेदारी के हैं। रात का वक्त तंहाई और सुकून का वक्त होता है। रात को जब आदमी एक नींद पूरी करके उठता है तो वह उसके तमाम औक़ात (समयों) में सबसे बेहतर वक्त होता है। इन लम्हात में आदमी जब ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह होता है और नमाज की सूरत में हाथ बांधकर ख़ुदा के कलाम को पढ़ता है तो गोया वह अपनी अबदियत (बंदगी) की आख़िरी तस्वीर बना रहा होता है। ख़ास तौर पर उस वक्त जबकि उसका दिल भी उसका साथ दे रहा हो और उसकी शख़्सियत इस तरह पिघल उठी हो कि वह बेकरार होकर आंखों के रास्ते से बह पड़े।

मक़ामे महमूद के लफ़्ज़ी मअना हैं तारीफ़ किया हुआ मक़ाम। इस महमूदियत का एक दुनियावी पहलू है और एक इसका उख़रवी (परलोकवादी) पहलू। उख़रवी पहलू वह है जिसे मुफ़स्सिरीन शफ़ाअते कुबरा कहते हैं। जैसा कि हदीस से मालूम होता है, क़ियामत के दिन तमाम अंबिया अपने मोमिनीन की शफ़ाअत करेंगे। यह शफ़ाअत गोया उनके मोमिन होने की तस्दीक़ होगी जिसके बाद उन लोगों को जन्नत में दाख़िल किया जाएगा जिन्हें ख़ुदा जन्नत में दाख़िल करना चाहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत सबसे बड़ी

होगी। क्योंकि अपने उम्मतियों की तादाद सबसे ज्यादा होने की वजह से आप सबसे बड़ी तादाद की शफ़ाअत फ़रमाएंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महमूदियत का दुनियावी पहलू यह है कि आपके साथ ऐसी तारीख़ जमा हो जाए कि आप तमाम अकवामे आलम (विश्व-समुदायों) की नजर में मुसल्लमा (सुस्थापित) तौर पर क़ाबिले सताइश (प्रशंसनीय) और लायक़े एतराफ़ बन जाएं। ख़ुदा का यह मंसूबा आपके हक में मुकम्मल तौर पर पूरा हुआ। आज दुनिया में तमाम लोग आपका एतराफ़ करने पर मजबूर हैं। आपकी नुबुव्वत एक मुसल्लम नुबुव्वत बन चुकी है न कि निजाई (विवादित) नुबुव्वत जैसा कि वह आपके जहूर के इब्तिदाई सालों में थी।

महमूदी नुबुव्वत, दुनियावी एतबार से मुसल्लमा (Established) नुबुव्वत का दूसरा नाम है। यानी ऐसी नुबुव्वत जिसके हक में तारीख़ी शहादतें इतनी ज्यादा कामिल तौर पर मौजूद हों कि आपकी शख़्सियत और आपकी तालीमात के बारे में किसी के लिए शुबह की गुंजाइश न रहे। इंसान, ख़ुद अपने मुसल्लमा इल्मी मेयार के मुताबिक आपकी हैसियत का एतराफ़ करने पर मजबूर हो जाए। इक़रार व एतराफ़ की आख़िरी सूरत तारीफ़ है इसलिए उसे 'मक़ामे महमूद' कहा गया।

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

और कहो कि ऐ मेरे रब मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना। और मुझे अपने पास से मददगार क़ुव्वत (शक्ति) अता कर और कह कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया। बेशक बातिल मिटने ही वाला था। (80-81)

पैग़म्बरे इस्लाम को अरब के सरदार 'मज्मूम' (निंदित) बना देना चाहते थे। मगर अल्लाह का फ़ैसला था कि आपको 'महमूद' (प्रशंसित) के मकाम तक पहुंचाया जाए। इसके लिए अल्लाह का मंसूबा यह था कि मदीना में आपके लिए मुवाफ़िक़ (अनुकूल) हालात पैदा किए जाएं और मक्का से निकाल कर आपको मदीना ले जाया जाए। मदीना में इस्लाम का इक्तेदार (शासन) क़ायम हो। तब्लीग़ी कोशिश के जरिए मुसलमानों की तादाद ज्यादा से ज्यादा बढ़ाई जाए। यहां तक कि वे लोग मक्का फ़तह कर लें और बिलआख़िर सारा अरब मुसख़्ख़र हो जाए। इस तरह तौहीद की पुश्त पर वह ताक़त जमा हो जो मुसलसल अमल के जरिए सारी दुनिया से शिर्क का ग़लबा ख़त्म कर दे।

यही वह ख़ुदाई मंसूबा था जिसे यहां दुआ की सूरत में पैग़म्बरे इस्लाम को तल्क़ीन किया गया।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾

और हम कुरआन में से उतारते हैं जिसमें शिफा (निदान) और रहमत है ईमान वालों के लिए, और जालिमों के लिए इससे नुक्सान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता। (82)

कुरआन ख़ालिस सच्चाई का एलान है। ख़ालिस सच्चाई जब पेश की जाती है तो उन तमाम लोगों पर इसकी जद पड़ती है जो या तो सच्चाई से ख़ाली हों या मिलावटी सच्चाई लिए हुए हों। अब जो लोग हकीकतपसंद हैं उनके सामने जब ख़ालिस सच्चाई आती है तो वे सच्चाई को मेयार बनाते हैं न कि अपनी जात को। वे अपने आपको सच्चाई पर ढाल लेते हैं न यह कि ख़ुद सच्चाई को अपने ऊपर ढालने लगें। इस तरह उनकी संजीदगी और हकीकतपसंदी उनके कुरआन को उनके लिए रहमत बना देती है।

दूसरे लोग वे हैं जिनके अंदर अपनी बड़ाई का एहसास छुपा हुआ होता है। उनके सामने जब बेआमेज (ख़ुली) सच्चाई आती है तो अपनी मख़्सूस नफ्सियात की बिना पर उनका जेहन उल्टे रुख़ पर चल पड़ता है। वे यह नहीं सोच पाते कि 'अगर मैं सच्चाई को इख़्तियार कर लूं तो मैं सच्चा बन जाऊंगा' इसके बजाए वे यह सोचने लगते हैं कि 'अगर मैंने सच्चाई को माना तो मैं छोटा हो जाऊंगा।' वे जाने वाली चीज की हिफाजत में रहने वाली चीज को खो देते हैं। वे अपनी बड़ाई को कायम रखने की ख़ातिर सच्चाई को छोटा करने पर राजी हो जाते हैं।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿۸۳﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۗ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿۸۴﴾ ع

और आदमी पर जब हम इनाम करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और पीठ मोड़ लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है। कहो कि हर एक अपने तरीके पर अमल कर रहा है। अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन ज्यादा ठीक रास्ते पर है। (83-84)

हर इंसान पर ये हालात गुजरते हैं कि जब उसे राहत और फरावानी हासिल होती है तो वह जबरदस्त ख़ुद एतमादी (आत्मविश्वास) का मुजाहिरा करता है। किसी बात को मानने के लिए वह इतना कड़ा बन जाता है जैसे कि वह ऐसा लोहा है जो झुकना नहीं जानता। मगर जब उसके असबाब छिन जाते हैं और उसे इज्ज (निर्बलता) का तजर्बा होता है तो अचानक वह बेहिम्मत हो जाता है। वह मायूसी से निढाल हो जाता है।

मौजूदा दुनिया में हर आदमी अपने बारे में इस तजर्बे से गुजरता है। मगर कोई ऐसा नहीं जो इस तजर्बे में अपनी दरयाफ्त कर ले। वह यह सोचे कि दुनिया में जबकि उसे आजादी

हासिल है वह हक के मुकाबले में इतनी सरकशी दिखा रहा है। मगर उस वक्त उसका क्या हाल होगा जबकि कियामत आएगी और उससे उसका सारा इख़्तियार छीन लेगी। आदमी कितना ज्यादा कमजोर है मगर वह कितना ज्यादा अपने को ताकतवर समझता है।

शाकिला से मुराद जेहनी सांचा है। हर आदमी के हालात और रुझानात के तहत धीरे-धीरे उसका एक ख़ास जेहनी सांचा बन जाता है। वह उसी के जेरेअसर सोचता है और उसी के मुताबिक उसका नुक्तए नजर बनता है। मगर सही नुक्तए नजर (दृष्टिकोण) वह है जो इल्मे इलाही के मुताबिक सही हो और ग़लत वह है जो इल्मे इलाही के मुताबिक ग़लत हो।

यही वह मकाम है जहां आदमी का इम्तेहान है। आदमी को यह करना है कि उसके शाकिला ने उसका जो जेहनी ख़ोल बना दिया है वह उस ख़ोल को तोड़े। ताकि वह चीजों को वैसा ही देख सके जैसी कि वे हैं। ब-अल्फाज दीगर वह चीजों को रब्बानी निगाह से देखने लगे। जो लोग अपने जेहनी ख़ोल में गुम हों, वे भटके हुए लोग हैं। और जो लोग अपने जेहनी ख़ोल से निकल कर ख़ुदाई नुक्तए नजर को पा लें वही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत पाई।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۗ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۸۵﴾

और वे तुमसे रूह (आत्मा) के मुतअल्लिक पूछते हैं। कहो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (85)

यहां रूह से मुराद 'वही' इलाही है। अरब के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सवाल किया, वे 'वही' व इल्हाम के मुंकिर न थे। इस सवाल का रुख़ उनके नजदीक रसूलुल्लाह की बेख़बरी की तरफ था न कि हकीकतन अपनी बेख़बरी की तरफ।

यह वह जमाना था जबकि रसूलुल्लाह के गिर्द अज्मत की तारीख़ नहीं बनी थी। लोगों को आप महज एक आम इंसान नजर आते थे। चूंकि उन्हें यकीन नहीं था कि ख़ुदा का फरिश्ता आपके पास ख़ुदा की 'वही' (ईश्वरीय वाणी) लेकर आता है। इसलिए उन्होंने आपका मजाक उड़ाने के लिए यह सवाल किया।

ताहम इस सवाल के जवाब में कुरआन में एक अहम उसूली बात बता दी गई। वह यह कि इंसान को सिर्फ 'इल्मे कलील' (अल्पज्ञान) दिया गया है। वह 'इल्मे कसीर' (अधिक ज्ञान) का मालिक नहीं है। इसलिए हकीकतपसंदी का तकाजा यह है कि वह उन सवालात में न उलझे जिन्हें वह अपनी पैदाइशी कम इल्मी की बिना पर जान नहीं सकता।

कदीम जमाने में इंसान सिर्फ आंख के जरिए चीजों को देख सकता था। ताहम दृष्टि प्रयोगों ने बताया कि आंख सिर्फ एक हद तक काम करती है। इसलिए वह सम्पूर्ण अवलोकन के लिए काफी नहीं। मसलन एक चीज जो दूर से देखने में एक नजर आती है, करीब से जाकर देखा जाए तो मालूम होता है कि वह दो थीं।

मौजूदा जमाने में आलाती मुतालआ (उपकरणीय अध्ययन) वजूद में आया तो इंसान ने समझा कि आलात (उपकरण) उसकी सीमितता का बदल हैं। आलाती मुतालआ के जरिए चीजों को उनकी आख़िरी हद तक देखा जा सकता है। मगर बीसवीं सदी में पहुंच कर इस ख़ुशख़्याली का ख़ात्मा हो गया। अब मालूम हुआ कि चीजें उससे ज्यादा पेचीदा और उससे ज्यादा पुरअसरार (रहस्यमयी) हैं कि आलात की मदद से उन्हें पूरी तरह देखा जा सके।

ऐसी हालत में इज्माली इल्म (अल्पज्ञान) पर संतुष्ट होना इंसान के लिए हकीकतपसंदी का तक़ाज बन गया है न कि महज अक़ीदे का तक़ाज। हमारी सलाहियतें महदूद (सीमित) हैं और हमसे मावरा जो आलम है वह लामहदूद, फिर महदूद के लिए किस तरह मुमकिन है कि वह लामहदूद का इहाता कर सके। इंसान की महदूदियत का तकाजा है कि वह बिलवास्ता (परोक्ष) इल्म पर कनाअत (संतोष) करे और बराहेरास्त इल्म में उलझना छोड़ दे। दूसरे शब्दों में तर्क से हासिलशुदा इल्म को भी उसी तरह माकूल (Valid) मान ले जिस तरह वह मुशाहिदे (अवलोकन) से हासिलशुदा इल्म को माकूल मानता है।

وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا (٨٦) إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا (٨٧) قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا (٨٨)

और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने 'वही' (प्रकाशना) के जरिए तुम्हें दिया है, फिर तुम इसके लिए हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न पाओ, मगर यह सिर्फ तुम्हारे रब की रहमत है, बेशक तुम्हारे ऊपर उसका बड़ा फ़ज़्ल है। कहो कि अगर तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएं कि ऐसा क़ुरआन बना लाएं तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे। अगरचे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएं। (86-88)

क़ुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ख़ास-ख़ास औकात (समयों) में उतरता था। इन मख़्सूस औक़ात के अलावा आप ख़ुद भी इस पर क़ादिर न थे कि क़ुरआन जैसा कलाम बना सकें। दूसरे वक्तों में आपकी जबान से जो कलाम निकलता था वह हमेशा क़ुरआन के कलाम से मुख़्तलिफ होता था। जब कभी लम्बी मुद्दत के लिए 'वही' रुकती तो आप बेहद परेशान हो जाते। मगर आपके लिए यह मुमकिन न हो सका कि ख़ुद या किसी की मदद से क़ुरआन जैसा कलाम बना लें। यह एक हक़ीक़त है कि क़ुरआन की जबान और आपकी अपनी जबान में बेहद नुमायां फ़र्क़ होता था। यह फ़र्क़ आज भी हर अरबीदां क़ुरआन और हदीस की जबान का तकाबुल (तुलना) करके देख सकता है।

यह वाक़्या इस बात का एक वाज़ेह सुबूत है कि क़ुरआन मुहम्मद का कलाम नहीं। वह

मुहम्मद के सिवा एक और बरतर जेहन से निकला हुआ कलाम है।

जो लोग क़ुरआन को इंसानी कलाम कहते थे उनसे कहा गया कि अगर तुम्हारा ख़्याल सही है तो बहैसियत इंसान के तुम्हें भी इसकी क़ुदरत होनी चाहिए। तुम तंहा या दूसरे इंसानों को लेकर क़ुरआन जैसा कलाम बना कर लाओ। मगर उस वक्त के लोगों में से किसी के लिए मुमकिन न हो सका कि वह इस चैलेन्ज का जवाब दे। बाद के जमाने में भी कोई अदीब या आलिम क़ुरआन जैसे कलाम का नमूना पेश न कर सका। वाक़ेयात बताते हैं कि बहुत से लोगों ने कोशिश की मगर वे सरासर नाकाम रहे। वे क़ुरआन जैसी एक सूरह भी न बना सके।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا (٨٩) وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنبُوعًا (٩٠) أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا (٩١) أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا (٩٢) أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَن نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرَؤُهُ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا (٩٣)

और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर किस्म का मज़्मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इंकार ही पर जमे रहे और वे कहते हैं कि हम हरगिज तुम पर ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे लिए जमीन से कोई चशमा (स्रोत) जारी न कर दो या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए, फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नहरें जारी कर दो। या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फरिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो या तुम्हारे पास सोने का कोई घर हो जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक तुम वहां से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें। कहो कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ एक बशर (इंसान) हूं, अल्लाह का रसूल। (89-93)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हक का पैग़ाम पेश किया तो आपके मुआसिरीन (समकालीन) ने कहा कि हम तुम्हें उस वक्त मानेंगे जबकि तुम ख़ारिके आदत (दिव्य) करिश्मे दिखाओ। मगर इस किस्म के मुतालबात ख़ुदा के मंसूबए तख़्लीक के ख़िलाफ हैं। इंसान को खुदा ने बाशुऊर वजूद के तौर पर पैदा किया है। यह सारी कायनात में एक इंतिहाई नादिर अतिय्या (अद्वितीय देन) है जो इसलिए दिया गया है कि इंसान जाती शुऊर

के जरिए हक को पहचाने न कि मस्हूरकुन (विस्मयकारी) करिश्मों के जरिए।

हकीकत यह है कि मौजूदा दुनिया में इंसान का इम्तेहान 'दलील' की सतह पर हो रहा है। यहां हर आदमी को दलील की जबान में हक को पहचानना और उसे इख़्तियार करना है। जो लोग दलील की सतह पर हक को न पहचानें वही वे लोग हैं जो बिलआख़िर नाकाम और नामुराद रहेंगे।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

और जब उनके पास हिदायत आ गई तो उन्हें ईमान लाने से इसके सिवा और कोई चीज रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने बशर (इंसान) को रसूल बनाकर भेजा है। कहो कि अगर जमीन में फरिश्ते होते कि उसमें चलते फिरते तो अलबत्ता हम उन पर आसमान से फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (94-96)

इस तरह की आयतों को आज जब आदमी पढ़ता है तो उसे तअज्जुब होता है कि वे कैसे हठधर्म लोग थे जिन्होंने पैग़म्बरे आजम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इंकार किया। इस तअज्जुब की वजह दरअस्ल यह है कि आज का एक आदमी मुंकिरीन का तकाबुल (तुलना) 'पैग़म्बरे आजम' से करता है। जबकि दौरे अव्वल के मुंकिरीन के सामने जो शख़्स था वह एक ऐसा शख़्स था जो अभी तक सिर्फ 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' था। वह सारी तारीख़ उस वक्त मुस्तकबिल (भविष्य) के पर्दे में छुपी हुई थी जिसके बाद दुनिया ने आपको पैग़म्बरे आजम की हैसियत से तस्लीम किया।

पैग़म्बर अपने जमाने के लोगों को सिर्फ एक 'बशर' नजर आता है। बाद को जब तारीख़ी तस्दीकात जमा हो जाती हैं तो लोगों को नजर आता है कि यह वाकई पैग़म्बर था। यही वजह है कि हर पैग़म्बर के साथ यह वाकया पेश आया कि उसके समकालीन मुख़ातबीन ने उसका इंकार किया और बाद के लोग उसका एतराफ करने पर मजबूर हुए।

मौजूदा दुनिया में आदमी हालते इम्तेहान में है। इसलिए यह मुमकिन नहीं कि फरिश्तों के जरिए उसे हक से बाख़बर किया जाए। फरिश्तों के जरिए हक से बाख़बर करने का मतलब हकीकत को आख़िरी हद तक बेनकाब कर देना है। जब हकीकत को आख़िरी हद तक बेनकाब कर दिया जाए तो इसके बाद आदमी का इम्तेहान किस चीज में होगा।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला है। और जिसे वह बेराह कर दे तो तुम उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओगे। और हम कियामत के दिन उन्हें उनके मुंह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे उनका ठिकाना जहन्नम है। जब-जब उसकी आग धीमी होगी हम उसे मजीद भड़का देंगे। यह है उनका बदला इस सबब से कि उन्होंने हमारी निशानियों का इंकार किया। और कहा कि जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे। (97-98)

दुनिया में आदमी अपनी हैसियते माद्दी के मुताबिक जीता है। आख़िरत में वह अपनी हैसियते रूहानी के मुताबिक नजर आएगा। यही वजह है कि जो लोग दुनिया में राह से बेराह हुए वे कियामत में उठेंगे तो अपने आपको अंधा, बहरा, गूंगा पाएंगे। उनका राह से बेराह होना इसलिए था कि उन्होंने आंख और कान और जबान को उस मक्सद में इस्तेमाल नहीं किया जिसके लिए वे उन्हें दिए गए थे। उन्होंने ख़ुदा की निशानियों को नहीं देखा। उन्होंने ख़ुदा के दलाइल को नहीं सुना। उनकी जबान हक की हिमायत में नहीं खुली। वे आंख, कान और जबान रखते हुए हक की निस्बत से बेआंख, बेकान और बेजबान हो गए। मौत के बाद जब वे आलमे हकीकी में पहुंचेंगे तो वहां वे अपने आपको अपनी असली सूरत में पाएंगे न कि उस मस्नूई (कृत्रिम) सूरत में जो हालते इम्तेहान होने की वजह से वक्ती तौर पर उन्हें मौजूदा दुनिया में हासिल थी।

'जब हम रेजा-रेजा हो जाएंगे' कहने वाले एक वे हैं जो जबाने काल (कथन) से यह जुमला दोहराएं। दूसरे वे लोग हैं जो जबाने हाल (व्यवहार) से उसे कहें। ये दूसरे लोग वे हैं जो आंख और कान और जबान को उसके मक्सदे तख़्लीक (रचना, उद्देश्य) के ख़िलाफ इस्तेमाल करें और यह गुमान रखें कि उनका यह अमल बस इसी दुनिया में गुम होकर रह जाएगा, वह आख़िरत में पहुंचने वाला नहीं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर है कि उनके मानिंद दुबारा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुकर्रर कर रखी है, इसमें कोई शक नहीं। इस पर भी जालिम लोग बेइंकार किए न रहे। (99)

जमीन व आसमान हमारे सामने एक हकीकत के तौर पर मौजूद हैं। हम इनका इंकार नहीं कर सकते। यह मौजूदगी साबित करती है कि यहां कोई जिंदा हस्ती है जो यह ताकत रखती है कि वह पहली बार तख़्लीक (सृजन) करे। वह 'नहीं' से 'है' को वजूद में लाए। फिर जब पहली तख़्लीक मुमकिन है तो दूसरी तख़्लीक क्यों मुमकिन नहीं। हकीकत यह है कि पहली तख़्लीक को मानने के बाद दूसरी तख़्लीक को मानने में कोई इल्मी व अक्ली दलील मानेअ (रुकावट) नहीं रहती।

इतने खुले हुए करीने (तर्क) के बावजूद जो शख़्स दुबारा तख़्लीक को न माने वह जालिम है। वह हठधर्मी की जमीन पर खड़ा हुआ है न कि दलील और माकूलियत की जमीन पर।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾

कहो कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़जानों के मालिक होते तो इस सूरत में तुम ख़र्च हो जाने के अंदेशे से जरूर हाथ रोक लेते और इंसान बड़ा ही तंग दिल है। (100)

इंसान तंग जर्फ वाकेअ हुआ है। वह हर किस्म के शरफ को अपने लिए या अपने गिरोह के लिए जमा कर लेना चाहता है। अगर नेमतों की तक्सीम इंसान के हाथ में होती तो जिन लोगों के पास दौलत व अज्मत आ गई थी वही नुबुव्वत को भी अपने पास जमा कर लेते। वे उसे दूसरों के पास जाने न देते।

मगर ख़ुदा मामलात को जौहर के एतबार से देखता है न कि गिरोही तअस्सुबात की नजर से। वह तमाम इंसानों पर नजर डालता है। और पूरी नस्ल में जो सबसे बेहतर इंसान होता है उसे नुबुव्वत के लिए चुन लेता है। नुबुव्वत का इंतख़ाब अगर इंसान करने लगें तो यहां भी वही कैफियत पैदा हो जाए जो इंसानी इदारों में जानिबदारी की वजह से नाअहल इंसानों की भीड़ की सूरत में नजर आती है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْــَٔـلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِذْ جَاۗءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۗءِ

اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَاۗىِٕرَ ۚ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾

और हमने मूसा को नौ निशानियां खुली हुई दीं। तो बनी इस्राईल से पूछ लो जबकि वह उनके पास आया तो फिरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा, मेरे ख़्याल में तो जरूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। मूसा ने कहा कि तू ख़ूब जानता है कि उन्हें आसमानों और जमीन के रब ही ने उतारा है, आंखें खोल देखने के लिए और मेरा ख़्याल है कि ऐ फिरऔन, तू जरूर शामतजदा (प्रकोपित) आदमी है। फिर फिरऔन ने चाहा कि उन्हें इस सरजमीन से उखाड़ दे। पस हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क कर दिया। और हमने बनी इस्राईल से कहा कि तुम जमीन में रहो। फिर जब आख़िरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएंगे। (101-104)

फिरऔन के सामने खुली हुई निशानियां पेश की गईं तो उसने कहा कि यह 'जादू' है। इसका मतलब यह है कि दाओ की तरफ से चाहे कितनी ही ताकतवर दलील और कितनी ही बड़ी निशानी पेश कर दी जाए, इंसान के लिए यह दरवाजा बंद नहीं होता कि वह कुछ अल्फाज बोलकर उसे रद्द कर दे। वह ख़ुदाई निशानी को इंसानी जादू कह दे। वह इल्मी दलील को नाकिस मुतालआ कहकर टाल दे। वह वाजेह कराइन को ग़ैर माकूल कहकर नजरअंदाज कर दे।

हक के मुख़ालिफीन जब लफ्जी मुख़ालिफत से हक की आवाज को दबाने में कामयाब नहीं होते तो वे जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयों पर उतर आते हैं। मगर वे भूल जाते हैं कि यह किसी इंसान का मामला नहीं। बल्कि ख़ुदा का मामला है और कौन है जो ख़ुदा के साथ जारिहियत (आक्रामकता) करके कामयाब हो।

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَي النَّاسِ عَلٰي مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾

और हमने कुरआन को हक के साथ उतारा है और वह हक ही के साथ उतरा है। और हमने तुम्हें सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और हमने कुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके उतारा ताकि तुम उसे लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ो। और उसे हमने बतदरीज (क्रमवार) उतारा है। (105-106)

कुरआन बेआमेज (विशुद्ध) सच्चाई का एलान है। मगर बेआमेज सच्चाई हमेशा लोगों

के लिए सबसे कम काबिले कुबूल चीज होती है। इस बिना पर अल्लाह तआला ने दाओी पर यह जिम्मेदारी नहीं डाली कि वह लोगों को जरूर मनवा ले। दाओी की जिम्मेदारी यह है कि वह कामिल तौर पर सच्चाई का एलान कर दे।

कुरआन में मुख़ातब की आख़िरी हद तक रिआयत की गई है। इसी मस्लेहत की बिना पर कुरआन को ठहर-ठहर कर उतारा गया है। ताकि जो लोग समझना चाहते हैं वे उसे ख़ूब समझते जाएं। वह आहिस्ता-आहिस्ता उनके फ़िक्र व अमल का जुज बनता चला जाए।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿۱۰۷﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾

कहो कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है। बेशक हमारे रब का वादा जरूर पूरा होता है। और वे ठोड़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं और कुरआन उनका ख़ुशूअ (विनय) बढ़ा देता है। (107-109)

ख़ुदा का कलाम इंसान से इज्ज व तवाज़ोअ (विनम्रता) का तकाजा करता है। मगर मौजूदा दुनिया में ख़ुदा अपना कलाम ख़ुद सुनाने नहीं आता। वह एक 'इंसान' की जबान से अपना कलाम जारी कराता है। अब जो लोग अपने अंदर किब्र (अहं) की नफ्सियात लिए हुए हैं, वे उसके आगे झुकने को एक इंसान के आगे झुकने के समान मान लेते हैं और इस बिना पर उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

इसके बरअक्स जो लोग किब्र (अहं) की नफ्सियात से ख़ाली हों वे ख़ुदा के कलाम को बस ख़ुदा के कलाम की हैसियत से देखते हैं। उन्हें इंसान की जबान से जारी होने वाले कलाम में ख़ुदा की झलकियां नजर आ जाती हैं। वे इसके जरिए ख़ुदा से मरबूत हो जाते हैं। वे ख़ुदा की बड़ाई के मुकाबले में अपने इज्ज को और अपने इज्ज के मुकाबले में ख़ुदा की बड़ाई को पा लेते हैं। यह एहसास उनके सीने को पिघला देता है। वे रोते हुए उसके आगे सज्दे में गिर पड़ते हैं।

पहली किस्म के आदमियों के मिसाल कुरैश के सरदारों की है। और दूसरी किस्म के आदमियों की मिसाल अहले किताब के उन मोमिनीन की जो दौरे अव्वल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए थे।

इस आयत में बजाहिर सालिहीन (नेक) अहले किताब का जिक्र है। उन्होंने कदीम आसमानी सहीफों में पढ़ा था कि एक आख़िरी पैग़म्बर आने वाले हैं। जो लोग उन पर ईमान लाएंगे और उनका साथ देंगे वे ख़ुदा की ख़ुसूसी रहमत के मुस्तहिक करार पाएंगे। इस बिना

पर वे उस आख़िरी नबी का पहले से इंतिजार कर रहे थे। यह इंतिजार इतना शदीद था कि जब वह पैग़म्बर आया तो उन्होंने फौरन उसे पहचान लिया। उनका यह हाल हुआ कि इस पैग़म्बर की लाई हुई किताब (कुरआन) को जब वे पढ़ते तो शिद्दते एहसास से उनकी आंखों से आंसू जारी हो जाते और वे रोते हुए ख़ुदा के आगे सज्दे में गिर जाते।

ताहम यह सिर्फ अहले किताब के एक गिरोह का मामला नहीं है बल्कि वह सारे इंसानों का मामला है। हर इंसान के अंदर ख़ुदा ने पेशगी तौर पर हक की मअरफत रख दी है गोया कि हर इंसान पहले ही से ख़ुदाई सच्चाई का मुंतजिर है। अब जो लोग अपनी इस फितरत को जिंदा रखें उनका वही हाल होगा जो साबिक (पूर्ववर्ती) अहले किताब का हुआ। वे अपनी फितरत के जिंदा शुऊर की बिना पर ख़ुदाई सच्चाई को पहचान लेंगे और दिल की पूरी आमादगी के साथ उसकी तरफ बेताबाना दौड़ पड़ेंगे।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾

कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपाशील) कहकर पुकारो, उसके लिए सब अच्छे नाम हैं। और तुम अपनी नमाज न बहुत पुकार कर पढ़ो और न बिल्कुल चुपके-चुपके पढ़ो। और दोनों के दर्मियान का तरीका इख़्तियार करो। और कहो कि तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है। और न कमजोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और तुम उसकी ख़ूब बड़ाई बयान करो। (110-111)

जो लोग सच्चाई को गहराई के साथ पाए हुए नहीं होते। वे हमेशा जाहिरी चीजों में उलझे रहते हैं। कोई कहता है कि ख़ुदा को इस लफ्ज से पुकारना अफजल है और कोई कहता है कि उस लफ्ज से। कोई कहता है कि फुलां इबादती फेअल (कृत्य) जोर से अदा करना चाहिए और कोई कहता है कि धीरे से।

अरब में भी इस किस्म की बहसें मुख़्तलिफ अंदाज में जारी थीं। फरमाया कि ख़ुदा को जिस बेहतर नाम से पुकारो वह उसी का नाम है। इसी तरह इबादत के बारे में फरमाया कि ख़ुदा की इबादत की अदायगी का इंहिसार न जोर से बोलने पर है और न धीरे बोलने पर। तुम इबादत की अस्ल रूह अपने अंदर पैदा करो और उसकी अदायगी में एतदाल (मध्य मार्ग) से काम लो।

इबादत की रूह यह है कि अल्लाह की बड़ाई का कामिल एहसास आदमी के अंदर पैदा हो जाए। अल्लाह पर ईमान उसके लिए ऐसी कामिल और अजीम हस्ती की दरयाफ्त के

हममअना बन जाए जिसे किसी से मदद लेने की जरूरत न हो। जिसका कोई शरीक और बराबर न हो। जिस पर कभी कोई ऐसा हादसा न गुजरता हो जबकि वह किसी की मदद का मोहताज हो। यह याफ्त जब लफ्ज़ों की सूरत में ढलकर जबान से निकलने लगे तो इसी का नाम तकबीर है।

سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعَشْرُ آيَاتٍ وَاثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۞ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۞ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۞ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۞ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۞

आयतें-110	सूरह-18. अल कहफ	रुकूअ-12

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी। और उसमें कोई कजी (टेढ़) नहीं रखी। बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ से एक सख़्त अजाब से आगाह कर दे। और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दे जो नेक आमाल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है। वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। उन्हें इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को। यह बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वे सिर्फ झूठ कहते हैं। (1-5)

कुरआन पिछली किताबों का तस्हीहशुदा एडीशन है। पिछली किताबों में यह हुआ कि बाद के लोगों ने मूशिगाफियां (कुतर्क) करके ख़ुदाई तालीमात को पुरपेच बना दिया। दूसरे यह कि ख़ुदसाख़्ता तशरीहात के जरिए इब्तिदाई तालीम में इंहिराफ पैदा किया गया और इस तरह उसके रुख़ को बदल दिया गया। कुरआन इन दोनों किस्म की इंसानी आमेजिशों (मिलावटों) से पाक है। इसमें एक तरफ अस्ल दीन अपनी फितरी सादगी के साथ मौजूद है। दूसरी तरफ इसका रुख़ सीधा ख़ुदा की तरफ है, जैसा कि ब-एतबार वाक्या होना चाहिए।

ख़ुदा ने यह एहतिमाम क्यों किया कि वह दुनिया वालों के पास अपनी किताब भेजे। इसका मक्सद लोगों को ख़ुदा की स्कीम से आगाह करना है। ख़ुदा ने इंसान को इस दुनिया में इम्तेहान की ग़र्ज से आबाद किया है। इसके बाद वह हर एक का हिसाब लेगा। और हर

एक को उसके अमल के मुताबिक या तो जहन्नम में डालेगा या जन्नत के अबदी बाग़ों में बसाएगा। ख़ुदा चाहता है कि हर आदमी मौत से पहले इस मसले से बाख़बर हो जाए ताकि किसी के लिए कोई उज़्र बाकी न रहे।

दुनिया में इंसान की गुमराही का एक सबब यह है कि वह ख़ुदा के सिवा किसी और को अपना सहारा बना लेता है। इसी की एक बेतुकी सूरत किसी को खुदा का बेटा फर्ज कर लेना है। मगर इस किस्म का हर अकीदा सिर्फ एक झूठ है। क्योंकि जमीन व आसमान में ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जिसे किसी किस्म का कोई इख़्तियार हासिल हो।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۞ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۞ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۞

शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएं। जो कुछ जमीन पर है उसे हमने जमीन की रौनक बनाया है ताकि हम लोगों को जांचें कि उनमें कौन अच्छा अमल करने वाला है और हम जमीन की तमाम चीजों को एक साफ मैदान बना देंगे। (6-8)

'शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे।' यह जुमला बताता है कि दाऔ अगर दावत के मामले में संजीदा हो तो शिद्दते एहसास से उसका क्या हाल हो जाता है। हकीकत यह है कि हक की दावत का इतमाम (अति) उस इंतिहा पर पहुंच कर होता है जब यह कहा जाने लगे कि दाऔ शायद इस ग़म में अपने को हलाक कर लेगा कि लोग हक की दावत को कुबूल नहीं कर रहे हैं।

एक दावत जो दलील के एतबार से इंतिहाई वाजेह हो, जिसे पेश करने वाला दर्दमंदी की आख़िरी हद पर पहुंच कर उसे लोगों के लिए संजीदा ग़ौरोफ़िक्र का मौजूअ (विषय) बना दे, इसके बावजूद लोग उसे न मानें तो इस न मानने की वजह क्या होती है। इसकी वजह दुनिया की दिलफरेबियां हैं। मौजूदा दुनिया इतनी पुरकशिश है कि आदमी इससे ऊपर उठ नहीं पाता। इसलिए वह ऐसी दावत की अहमियत को समझ नहीं पाता जो उसकी तवज्जोहों को सामने की दुनिया से हटाकर उस दुनिया की तरफ ले जा रही है जिसकी रौनकें बजाहिर दिखाई नहीं देतीं।

मगर जमीन की दिलफरेबियां इंतिहाई आरजी हैं। वे इम्तेहान की एक मुकर्रर मुद्दत तक हैं। इसके बाद जमीन की यह हैसियत ख़त्म कर दी जाएगी। यहां तक कि वह सहरा (रेगिस्तान) की तरह बस एक ख़ुश्क मैदान होकर रह जाएगी।

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾ فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ﴿١٢﴾

क्या तुम ख़्याल करते हो कि कहफ और रकीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे। जब उन नौजवानों ने गार मे पनाह ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे मामले को दुरुस्त कर दे। पस हमने ग़ार में उनके कानों पर सालहा साल (दीर्घ काल) के लिए (नींद का पर्दा) डाल दिया। फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुद्दत का ज्यादा ठीक शुमार करता है। (9-12)

असहाबे कहफ का वाक्या एक अलामती वाक्या है जो बताता है कि सच्चे अहले ईमान की जिंदगी में किस किस्म के मराहिल पेश आते हैं। इससे मालूम होता है कि अहले ईमान कभी-कभी हालात की शिद्दत की बिना पर किसी 'ग़ार' में पनाह लेने पर मजबूर होते हैं। मगर यह ग़ार जो बजाहिर उनके लिए एक क़ब्र था, वहां से जिंदगी और हरकत का एक नया सैलाब फूट पड़ता है। उनके मुख़ालिफीन ने जहां उनकी तारीख़ ख़त्म कर देनी चाही थी वहीं से दुबारा उनके लिए एक नई तारीख़ शुरू हो जाती है।

कहफ वाले अगर वही हैं जो मसीही तारीख़ में सात सोने वाले (Seven Sleepers) कहे जाते हैं तो यह क़िस्सा शहर एफेसस (Ephesus) से तअल्लुक रखता है। यह क़दीम जमाने का एक मशहूर शहर है। जो टर्की के मग़रिबी साहिल पर वाकेअ था और जिसके पुरअज़्मत खंडहर आज भी वहां पाए जाते हैं। 249-251 ई० में इस इलाके में रूमी हुक्मरां डेसियस (Desius) की हुकूमत थी। यहां बुतपरस्ती का जोर था। और चांद को माबूद करार देकर उसे पूजा जाता था। उस जमाने में मसीह के इब्तिदाई पैरोकारों के जरिए यहां तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत पहुंची और फैलने लगी। रूमी हुक्मरां जो ख़ुद भी बुतपरस्त था, मजहबे तौहीद की इशाअत को बर्दाश्त न कर सका और हजरत मसीह के पैरोकारों पर सख़्तियां करने लगा। मज़्कूरा असहाबे कहफ एफेसस के आला घरानों के सात नौजवान थे जिन्होंने ग़ालिबन 250 ई० में मजहबे तौहीद को क़ुबूल कर लिया। और उसके मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन गए। हुकूमत की तरफ से उन पर सख़्ती हुई तो वे शहर से निकल कर करीब के एक पहाड़ की तरफ चले गए और वहां एक बड़े ग़ार में छुप गए।

असहाबे रकीम ग़ालिबन इन्हीं असहाबे कहफ का दूसरा नाम है। रकीम के मअना मरकूम के हैं। यानी लिखी हुई चीज। कहा जाता है कि आला ख़ानदानों के मज़्कूरा सात

नौजवान जब लापता हो गए तो बादशाह के हुक्म से उनके नाम और हालात एक सीसे की तख़्ती पर लिखकर शाही ख़जाने में रख दिए गए। इस बिना पर उनका दूसरा नाम असहाबे रकीम (तख़्ती वाले) पड़ गया। (तफ़सीर इब्नेकसीर)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَ مِن دُونِهِ إِلَٰهًا ۖ لَّقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ لَّوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

हम तुम्हें उनका अस्ल किस्सा सुनाते हैं। वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मजीद तरक्की दी और हमने उनके दिलों को मजबूत कर दिया जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और जमीन का रब है। हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारेंगे। अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा बात करेंगे। ये हमारी कौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं। ये उनके हक में वाजेह दलील क्यों नहीं लाते। फिर उस शख़्स से बड़ा जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे। (13-15)

'ये लोग वाजेह दलील क्यों नहीं लाते' इस जुमले से अंदाजा होता है कि ईमान लाने के बाद उन नौजवानों और कौम के बड़े लोगों के दर्मियान एक मुद्दत तक बहस व गुफ्तगू रही। मगर इस दर्मियान में उन बड़ों की तरफ से जो बातें कही गई उनमें शिर्क के हक में कोई वाजेह दलील न थी। इस तजर्बे ने उन तौहीदपरस्त नौजवानों के यकीन को और ज्यादा बढ़ा दिया। उनके लिए नामुमकिन हो गया कि ग़ैर साबितशुदा चीज की ख़ातिर साबितशुदा चीज को तर्क कर दें।

मज़्कूरा मुख़ालिफत के बाद अगर वे बड़ों की बड़ाई को अहमियत देते तो वे बेयकीनी और तजबजुब (दुविधा) का शिकार हो जाते। मगर जब उन्होंने दलील और बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) को अहमियत दी तो उसने उनके यकीन में और इजाफा कर दिया। क्योंकि दलील और बुरहान के एतबार से ये बड़े उन्हें बिल्कुल छोटे नजर आए। अपनी तमाम जाहिरी अज़्मतों के बावजूद वे लोग झूठ की जमीन पर खड़े हुए मिले न कि सच की जमीन पर।

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُم مِّنْ أَمْرِكُم مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं तो अब चलकर ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा। और तुम्हारे काम के लिए सरोसामान मुहय्या करेगा। (16)

बंदा जब हक की ख़ातिर इंसानों से कटता है तो ऐन उसी वक्त वह ख़ुदा से जुड़ जाता है। यहां तक कि वह अपने रब से इतना करीब हो जाता है कि उससे उसकी सरगोशियां शुरू हो जाती हैं। वह अपने रब से कलाम करता है और उससे उसका जवाब पाता है।

असहाबे कहफ का नौमुसलमाना यकीन, उनकी बेख़ौफ तब्लीग़, उनका सब कुछ छोड़ने पर राजी हो जाना मगर हक को न छोड़ना, इन चीजों ने उन्हें कुरबते ख़ुदावंदी का आला मकाम अता कर दिया था। वे बजाहिर जो कुछ खो रहे थे, उससे ज्यादा बड़ी चीज उनके लिए वह थी जिसे उन्होंने पाया था। यही याफ्त (प्राप्ति) का वह एहसास था जिसने उन्हें आमादा किया कि वे हर दूसरी चीज की महरूमी गवारा कर लें मगर हक से महरूमी को गवारा न करें। वे इस पर राजी हो गए कि वे अपने घर और शहर को छोड़कर ग़ार में चले जाएं और फिर भी उनकी यह उम्मीद बाकी रहे कि उनका ख़ुदा जरूर उनकी मदद करेगा और उनके हालात को दुरुस्त कर देगा।

इब्ने जरीर ने अता का कौल नकल किया है कि उनकी तादाद सात थी। वे ग़ार में दाख़िल होकर इबादत करते रहते और रोते और अल्लाह से मदद मांगते। यहां तक कि बिलआख़िर ख़ुदा ने उन पर लम्बी नींद तारी कर दी।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَاوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَت
تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَن يَهْدِ
اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

और तुम सूरज को देखते कि जब वह तुलूअ (उदय) होता है तो उनके ग़ार से दाईं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं जानिब को कतरा जाता है और वे ग़ार के अंदर एक वसीअ (विस्तृत) जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे अल्लाह बेराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई मददगार राह बताने वाला न पाओगे। (17)

दावती दौर में जब असहाबे कहफ और उनकी कौम के लोगों के दर्मियान कशमकश बढ़ी, इसी दौरान ग़ालिबन उन्होंने इम्कानी अंदेशे के पेशेनजर एक मख़्सूस ग़ार का इंतिख़ाब कर लिया था। यह ग़ार इतना वसीअ था कि सात आदमी बाआसानी इसके अंदर कयाम कर सकें। मजीद यह कि ग़ालिबन वह शिमाल रूया (उत्तर-मुखी) था। इस बिना पर सूरज की रोशनी सुबह या शाम किसी वक्त भी बराहेरास्त उसके अंदर नहीं पहुंचती थी और उधर से गुजरने वाला कोई शख़्स

बाहर से देखकर यह नहीं जान सकता था कि इसके अंदर कुछ इंसान मौजूद हैं।

जब आदमी ऐसा करे कि हक के मामले में मस्लेहत का रवैया न इख़्तियार करे। मुश्किलतरीन हालात में भी वह सब्र व शुक्र के साथ ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह रहे तो ख़ुदा उसे ऐसे रास्तों की तरफ रहनुमाई फरमाता है जिसमें उसका ईमान भी महफूज़ रहे और वह अपने दावती मिशन को भी न खोए। यह नुसरत असहाबे कहफ को उनके मख़्सूस हालात के एतबार से पूरी तरह हासिल हुई।

मजीद यह कि ख़ुदा ने उन्हें अपने ख़ास काम के लिए चुन लिया। उन्होंने जिस रूहानी बुलन्दी का सुबूत दिया था। इसके बाद वे ख़ुदा की नजर में इस काबिल हो गए कि उन्हें जिंदगी बाद मौत का हिस्सी (महसूस) सुबूत बना दिया जाए। असहाबे कहफ का दो सौ साल तक सोकर दुबारा उठना इसी नौइयत का एक वाकया है।

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ
وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا
وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

और तुम उन्हें देखकर यह समझे कि वे जाग रहे हैं, हालांकि वे सो रहे थे। हम उन्हें दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे। और उनका कुत्ता ग़ार के दहाने पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झांक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनकी दहशत बैठ जाती। (18)

अल्लाह तआला ने एक तरफ यह किया कि असहाबे कहफ पर मुसलसल नींद तारी कर दी। इसी के साथ उनकी हिफाजत के लिए मुख़्तलिफ इंतिजामात फरमा दिए। मसलन वे बराबर करवटें लेते रहते थे। क्योंकि हजरत इब्ने अब्बास के अल्फाज में, अगर ऐसा न होता तो उनका जिस्म जमीन खा जाती। उनके ग़ार के दहाने पर एक कुत्ता मुसलसल बैठा रहा। यह ग़ालिबन इसलिए था कि कोई इंसान या जानवर अंदर दाख़िल न हो सके। मजीद यह कि ग़ार के अंदर ख़ुदा ने ऐसा पुरहैबत माहौल बना दिया था कि कोई शख़्स अगर झांकने की कोशिश करे तो पहली ही नजर में दहशतजदा होकर भाग जाए।

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا
لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُم
بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُم بِرِزْقٍ مِّنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ﴿١٩﴾ إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ

يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾

और इसी तरह हमने उन्हें जगाया ताकि वे आपस में पूछ गछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहां ठहरे। उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। वे बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहां रहे। पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीजा खाना कहां मिलता है, और तुम्हारे लिए इसमें से कुछ खाना लाए। और वह नर्मी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। अगर वे तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या तुम्हें अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी फलाह न पाओगे। (19-20)

असहाबे कहफ जब सोकर उठे तो कुदरती तौर पर वे आपस में जिक्र करने लगे कि वे कितनी मुद्दत तक सोए होंगे। मगर जमाना ख़ुदा के हुक्म के तहत उनके लिए ठहर गया था। इसलिए जो मुद्दत दूसरों के लिए सदियो में फैली हुई थी वह असहाबे कहफ को बस एक दिन के बराबर मालूम हुई।

सोकर उठने के बाद उन्हें भूख का एहसास हुआ। उनके पास कुछ चांदी के सिक्के थे। उन्होंने अपने में से एक शख़्स को एक सिक्का लेकर भेजा। ग़ालिबन उनका ख़्याल होगा कि शहर के जिन हिस्सों में ईसाई बसे होंगे वहां हलाल खाना मिल सकेगा इसलिए उन्होंने कहा कि तलाश करके पाकीजा खाना ले आना। साथ ही उन्होंने ताकीद की कि सारा मामला निहायत ख़ुश तदबीरी से अंजाम देना। क्योंकि साबिका (पहले के) तजर्बे की बिना पर उन्हें अंदेशा था कि अगर वे लोग हमसे बाख़बर हो जाएंगे तो वे हमें दुबारा बुतपरस्त बनाने की कोशिश करेंगे। और जब हम राजी न होंगे तो वे हमें मार डालेंगे।

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

और इस तरह हमने उन पर लोगों को मुतलअ (सूचित) कर दिया ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि कियामत में कोई शक नहीं। जब लोग आपस में उनके मामले में झगड़ रहे थे। फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो। उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है। जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके गार पर एक इबादतगाह बनाएंगे। (21)

इंसान सौ साल या इससे भी कम मुद्दत मौजूदा जमीन पर जिंदगी गुजार कर मर जाता

है। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि वह हमेशा के लिए ख़त्म हो गया। मगर हकीकत यह है कि वह मर कर बाकी रहता है और दुबारा एक नई दुनिया में उठता है जहां उसके लिए या अबदी राहत है या अबदी अजाब।

यह इंसान का सबसे ज्यादा संगीन मसला है और इस पर लोगों के दर्मियान हमेशा बहस जारी रही है। इसकी इसी अहमियत की बिना पर ख़ुदा ने ऐसा किया कि अक्ली दलील के साथ उसके हक में हिस्सी (महसूस) दलील का भी इंतिजाम फरमाया ताकि 'जिंदगी बाद मौत' के मामले में किसी के लिए इसकी गुंजाइश बाकी न रहे। मुख़्तलिफ जमानों में यह हिस्सी दलील मुख़्तलिफ अंदाज से दिखाई जा रही है। पांचवीं सदी ईसवी में असहाबे कहफ का 'मौत' के बाद दुबारा ग़ार से निकलना इसी किस्म का एक ग़ैर मामूली वाकया था। मौजूदा जमाने में माफौक साइंस (Meta Science) की तहकीकात भी संभवतः इसी नौइयत की मिसाल हैं जिनसे जिंदगी बाद मौत का नजरिया हिस्सी मेयारे इस्तदलाल पर साबित होता है।

असहाबे कहफ दो सौ साल (या इससे ज्यादा मुद्दत के बाद) जब ग़ार से निकले तो उनके शहर की दुनिया बिल्कुल बदल चुकी थी। ग़ालिबन 250 ई० में वे अपने शहर एफेसस से निकल कर ग़ार में गए थे। उस वक्त इस इलाके में बुतपरस्त हुक्मरां डेसियस की हुकूमत थी। इस दौरान में मसीही मुबल्लिग़ीन की कोशिशों से रूमी बादशाह किस्तिनतीन (272-337 ई०) ईसाई हो गया और इसके बाद सारे रूमी इलाके में ईसाई मजहब फैल गया। 447 ई० में जब असहाबे कहफ दुबारा अपने शहर में वापस आए तो उनके शहर में ईसाइयत का ग़लबा हो चुका था।

जब ये सातों नौजवान ग़ार से बाहर आए और शाही ख़जाने में महफूज उनके नाम की तख़्ती, साथ ही दूसरे कराइन से तस्दीक हो गई कि ये वही नौजवान हैं जो बुतपरस्ती के दौर में अपने मसीही अकाइद के ख़ातिर शहर छोड़कर चले गए थे तो वे फौरन लोगों की अकीदत का मर्कज बन गए। नया रूमी हुक्मरां थयोडोसीस ख़ुद उनसे मिलने और उनकी बरकत लेने के लिए पैदल चलकर उनके पास आया। और जब इन नौजवानों का इंतिकाल हुआ तो उनकी यादगार में उनके ग़ार पर इबादतख़ाना तैयार किया गया।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग बेतहकीक बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वे कितने थे। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। पस तुम

सरसरी बात से ज्यादा उनके मामले में बहस न करो और न उनके बारे में उनमें से किसी से पूछो। (22)

असहाबे कहफ के बारे में कुछ लोग ग़ैर जरूरी बहसों में मुब्तिला थे। किसी ने कहा कि उनकी तादाद तीन थी और चौथा उनका कुत्ता था। किसी ने कहा कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था। किसी ने कहा कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था।

मगर इस किस्म की बहसें मिजाज की ख़राबी की अलामत हैं। जब दीनी रूह (भावना) जिंदा होती तो सारा जोर अस्ल हकीकत पर दिया जाता है। और जब कौम पर जवाल (पतन) आता है तो अस्ल रूह पसे पुश्त चली जाती है और जाहिरी तफ्सीलात बहस व मुनाजिरे का मौजूअ बन जाती हैं। सच्चे ख़ुदापरस्त को चाहिए कि वह इन बहसों में न पड़े बल्कि अगर कोई दूसरा शख़्स इस किस्म के सवालात करे तो उसे इज्माली (संक्षिप्त) जवाब देकर गुजर जाए।

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

और तुम किसी काम के बारे में यूं न कहो कि मैं इसे कल कर दूंगा, मगर यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो। और कहो कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझे भलाई की इससे ज्यादा करीब राह दिखा दे। (23-24)

कुरैश ने नज्र बिन हारिस और उकबा बिन मुईत को मदीना भेजा कि वे यहूद से मिलकर मुहम्मद सल्ल० के बारे में पूछें। क्योंकि वे लोग नबियों का इल्म रखते हैं। दोनों मदीना आए और यहूदी आलिमों से कहा कि हमें हमारे आदमी के बारे में बताओ। उन्होंने कहा कि तुम लोग उनसे तीन चीजों के बारे में पूछो। अगर वह तुम्हें उनकी बाबत बता दें तो वह पैग़म्बर हैं। वर्ना वह बातें बनाने वाले हैं। उनमें से एक सवाल असहाबे कहफ के नौजवानों के बारे में था। दूसरा जुलकरनैन के बारे में और तीसरा रूह के बारे में।

प्रेस के दौर से पहले आम लोगों को असहाबे कहफ की बाबत कुछ मालूम न था। यह किस्सा कुछ सुरयानी मख़्तूतात (पांडुलिपियों) में दर्ज था जिसकी ख़बर सिर्फ चन्द ख़ास उलमा को थी। आपके सामने यह सवाल आया तो आपने फरमाया कि तुमने जो बात पूछी है उसका जवाब मैं कल दूंगा। आपको उम्मीद थी कि कल तक जिब्रील आ जाएंगे और मैं उनसे मालूम करके जवाब दे दूंगा। मगर जिब्रील के आने में ताख़ीर हुई। यहां तक कि वह पंद्रह दिन के बाद सूरह कहफ लेकर आए।

'वही' में इस ताख़ीर से मक्का के मुख़ालिफीन को मौका मिल गया। उन्होंने इसे बुनियाद बनाकर लोगों को आपसे बदजन करना शुरू कर दिया। अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम एक मामूली बात को शोशा बनाकर जिस शख़्स की सदाकत (सच्चाई) से लोगों को

मुशतबह (संदिग्ध) करना चाहते हो उसकी सदाकत पर इससे ज्यादा यकीनी और इससे ज्यादा बड़ी दलीलें जमा होने वाली हैं।

यह बात आज वाकया बन चुकी है। आज पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बराना सदाकत पर इतने दलाइल जमा हो चुके हैं कि कोई होशमंद आदमी इससे इंकार की जुरअत नहीं कर सकता। आपकी नुबुव्वत आज एक साबितशुदा नुबुव्वत है। न कि महज दावे की नुबुव्वत।

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۖ لَهُ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾

और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे (कुछ लोग मुद्दत की शुमार में) 9 साल और बढ़ गए हैं, कहो कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज्यादा जानता है। आसमानों और जमीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला। ख़ुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है। (25-26)

कतादा और मुतरिफ बिन अब्दुल्लाह की तफ्सीर के मुताबिक यहां 300 साल या 309 साल लोगों के कौल की हिकायत है न कि ख़ुदा की तरफ से ख़बर। अब्दुल्लाह बिन मसऊद की किरात से भी इसी की ताईद होती है। उस जमाने के अहले किताब ग़ैर मुस्तनद किस्सों की बुनियाद पर यह समझते थे कि ग़ार में असहाबे कहफ के कियाम की मुद्दत शमसी कैलेंडर के लिहाज से 300 साल है और कमरी कैलेंडर के लिहाज से 309 साल (तफ्सीर इब्ने कसीर)। कुरआन ने लोगों के इस ख़्याल को नकल किया। मगर इसी के साथ यह कहकर उसे बेबुनियाद करार दे दिया कि 'कुलिल्लाहु अअलमु बिमा लबिसू०' (कहो कि अल्लाह ज्यादा जानता है कि वे ग़ार में कितना ठहरे)।

मौजूदा जमाने के मुहक्किकीन ने दरयाफ्त किया कि यह मुद्दत शमसी कैलेंडर से लिहाज से 196 साल थी। यह तहकीक इस बात का सुबूत है कि कुरआन ख़ुदा की किताब है जो तमाम अगली पिछली बातों से बाख़बर है। और इसी इल्म की बिना पर उसने मज्कूरा कौल को कुबूल नहीं किया। कुरआन अगर कोई इंसानी कलाम होता तो यकीनन वह अपने जमाने के मशहूर कौल को ले लेता जो बिलआख़िर बाद की तहकीक से टकरा जाता।

وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ
أَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ أَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनाओ, ख़ुदा की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और उसके सिवा तुम कोई पनाह नहीं पा सकते। और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रिजा (प्रसन्नता) के तालिब हैं। और तुम्हारी आंखे हयाते दुनिया की रौनक की ख़ातिर उनसे हटने न पाएं। और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जिसके कल्ब (हृदय) को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया। और वह अपनी ख़्वाहिश पर चलता है। और उसका मामला हद से गुजर गया है। (27-28)

कदीम मक्का में जिन लोगों ने पैग़म्बर का साथ देकर बेआमेज (विशुद्ध) दीन को अपना दीन बनाया था उनके लिए यह इक्दाम कोई सादा चीज न थी। यह मफ़ादात से वाबस्ता निजाम को छोड़कर एक ऐसे अकीदे का साथ देना था जिससे बजाहिर कोई मफ़ाद वाबस्ता न था। पहला गिरोह नए दीन को इख़्तियार करते ही वक्त के जमे हुए निजाम से कट गया था जबकि दूसरा गिरोह पूरी तरह वक्त के जमे हुए निजाम के जोर पर खड़ा हुआ था। पहले गिरोह के पास सिर्फ ख़ुदा की बातें थीं जिसकी अहमियम आख़िरत में जाहिर होगी जबकि दूसरा गिरोह उन चीजों का मालिक बना हुआ था जिसकी कीमत इसी दुनिया के बाजार में होती है।

यह जाहिरी फर्क अगर दाओ को मुतअस्सिर कर दे तो इसका नतीजा यह होगा कि दीन की बेआमेज दावत की अहमियत उसकी नजर में कम हो जाएगी। और आमेजिश (मिलावट) वाला दीन उसकी नजर में अहमियत इख़्तियार कर लेगा जिसके अलमबरदार बनकर लोग दुनिया की रौनकें हासिल किए हुए हैं।

मगर यह बहुत बड़ी भूल है। क्योंकि यह उस अस्ल मिशन से हटना है जो ख़ुदा को सबसे ज्यादा मत्लूब है। दाओ अगर ऐसा करे तो वह खुदा की मदद से महरूम हो जाएगा। वह ख़ुदा की दुनिया में ऐसा हो जाएगा कि कोई दरख़्त उसे साया न दे और कोई पानी उसकी प्यास न बुझाए। चुनांचे इब्ने जरीर ने इस आयत की तफ्सीर में लिखा है कि अल्लाह फरमाता है कि ऐ मुहम्मद, अगर तुमने लोगों को कुरआन न सुनाया तो ख़ुदा के मुकाबले में तुम्हारे लिए कोई जाए पनाह न होगी।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّآ أَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ
يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۗ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

और कहो कि यह हक (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ से, पस जो शख़्स चाहे इसे माने और जो शख़्स चाहे न माने। हमने जालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उन्हें अपने घेरे में ले लेंगी। और अगर वे पानी के लिए फरयाद करेंगे तो उनकी फरयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा। वह चेहरों को भून डालेगा। क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना। (29)

जो हक ख़ुदा की तरफ से आता है वह आख़िरी हद तक सदाक़त (सच्चाई) होता है। इसलिए लोगों की रिआयत से उसमें किसी किस्म की तरमीम (संशोधन) नहीं की जा सकती। ख़ुदाई हक में तरमीम करना गोया उस मेयार को तब्दील करना है जिस पर जांच कर हर शख़्स की हैसियत मुतअय्यन (सुनिश्चित) की जाने वाली है।

जो लोग यह चाहते हैं कि ख़ुदाई हक में ऐसी तरमीम की जाए कि इससे उनकी ग़लत रविश का जवाज (औचित्य) निकल आए वे गुमराही पर सरकशी का इजाफ़ा कर रहे हैं। ऐसे लोगों को अपने लिए सिर्फ सख़्ततरीन सजा का इंतिजार करना चाहिए।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ
جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٔيْنَ فِيْهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۚ
نِعْمَ الثَّوَابُ ۗ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र (प्रतिफल) जाया नहीं करेंगे जो अच्छी तरह काम करें। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वहां उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। और वे बारीक और दबीज (गाढ़े) रेशम के सब्ज कपड़े पहनेंगे, तख़्तों पर टेक लगाए हुए। कैसा अच्छा बदला है और कैसी अच्छी जगह। (30-31)

जो लोग घमंड, मस्लेहत (स्वार्थ) और जाहिरपरस्ती से ख़ाली होते हैं, उनका हाल यह होता है कि जब ख़ुदाई सदाक़त (सच्चाई) उनके सामने जाहिर होती है तो वे उसे फौरन पहचान लेते हैं। चाहे वह सदाक़त उनके जैसे एक इंसान की जबान से क्यों न जाहिर हुई हो।

वे अपने आपको हक के आगे डाल देते हैं। वे अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक ढालना शुरू कर देते हैं न कि ख़ुद सदाक़त को अपनी जिंदगी के मुताबिक ढालने लगें। जो लोग इस तरह हकपरस्ती का सुबूत दें वे ख़ुदा के महबूब बंदे हैं। उन्हें आख़िरत में शाहाना इनामात से नवाजा जाएगा।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَٰذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِدتُّ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنقَلَبًا ﴿٣٦﴾

तुम उनके सामने एक मिसाल पेश करो। दो शख़्स थे। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए। और उनके गिर्द खजूर के दरख़्तों का इहाता बनाया और दोनों के दर्मियान खेती रख दी। दोनों बाग़ अपना पूरा फल लाए, उनमें कुछ कमी नहीं की। और दोनों बाग़ों के बीच हमने नहर जारी कर दी और उसे ख़ूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे माल में ज्यादा हूं और तादाद में भी ज्यादा ताक़तवर हूं। वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ और वह अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था। उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद हो जाएगा। और मैं नहीं समझता कि क़ियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटा दिया गया तो जरूर इससे ज्यादा अच्छी जगह मुझे मिलेगी। (32-36)

एक बाग़ जो ख़ूब हरा भरा हो, फिर क़ुदरती आफ़त से अचानक ख़त्म हो जाए, वह उस शख़्स की तमसील है जो दुनिया में दौलत और इज्जत पाकर घमंड में मुब्तिला हो जाता है। दुनिया में किसी इंसान को दौलत या इज्जत का जो हिस्सा मिलता है वह ख़ुदा की तरफ से बतौर इम्तेहान होता है। मगर जालिम इंसान अक्सर उसे अपने लिए इनाम या अपनी कुव्वते बाजू का हासिल समझ लेता है। इसका नतीजा यह होता है कि उसके अंदर सरकशी के जज्बात पैदा हो जाते हैं। वह उन लोगों को हकीर (तुच्छ) समझने लगता है जिनके पास दौलत और इज्जत में कम हिस्सा मिला हो। उसकी नफ्सियात ऐसी हो जाती है गोया उसकी दुनिया कभी ख़त्म होने वाली नहीं। और अगर यह दुनिया ख़त्म होकर दूसरी दुनिया बनी तो कोई वजह नहीं कि वहां भी उसका हाल अच्छा न हो जिस तरह यहां उसका हाल अच्छा है।

यह इम्तेहान की हालत पर इनाम की हालत को कयास (अनुमानित) करना है। हालांकि दोनों में कोई निस्बत नहीं।

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لَّٰكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ

قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ﴿٤١﴾

उसके साथी ने बात करते हुए कहाक्या तुम उस जात से इंकार कर रहे हो जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूंद से। फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया। लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बग़ैर किसी में कोई कुव्वत (शक्ति) नहीं। अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुमसे कम हूं तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर बाग़ दे दे। और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आफत भेज दे जिससे वह बाग़ साफ मैदान होकर रह जाए या उसका पानी ख़ुश्क हो जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको। (37-41)

ख़ुदा किसी इंसान को दौलत दे तो उसे ख़ुदा का शुक्रगुजार बंदा बनकर रहना चाहिए। लेकिन अगर जेहन सही न हो तो दौलतमंदी आदमी के लिए सरकशी का सबब बन जाती है। इसके बरअक्स अगर जेहन सही है तो मुफ्लिसी में भी आदमी ख़ुदा को नहीं भूलता। जो कुछ मिला है उस पर कानेअ (संतुष्ट) रहकर वह उम्मीद रखता है कि उसका ख़ुदा उसे मजीद देगा।

आदमी अगर आंख खोलकर दुनिया में रहे तो कभी वह सरकशी में मुब्तिला न हो। इंसान एक हकीर वजूद की हैसियत से परवरिश पाता है। उसे हादसात पेश आते हैं। उसे बीमारी और बुढ़ापा लाहिक होता है। पानी और दूसरी चीजें जिनके जरिए वह इस दुनिया में अपना 'बाग़' उगाता है उनमें से कोई चीज भी उसके जाती कब्जे में नहीं।

यह सब इसलिए है कि आदमी मुतवाजेअ (विनम्र) बनकर दुनिया में रहे। मगर जालिम इंसान किसी चीज से सबक नहीं लेता। उसे उस वक्त तक होश नहीं आता जब तक वह हर चीज से महरूम होकर अपनी आंखों से देख न ले कि उसके पास इज्ज (निर्बलता) से सिवा और कुछ न था।

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

और उसके फल पर आफत आई तो जो कुछ उसने उस पर ख़र्च किया था उस पर वह हाथ मलता रह गया। और वह बाग़ अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था। और वह

कहने लगा कि ऐ काश मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता। और उसके पास कोई जत्था न था जो ख़ुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह ख़ुद बदला लेने वाला बन सका। यहां सारा इख़्तियार सिर्फ ख़ुदाए बरहक़ का है। वह बेहतरीन अज्र (प्रतिफल) और बेहतरीन अंजाम वाला है। (42-44)

आदमी एक काम में अपनी पूंजी लगाता है और अपनी काबलियत सर्फ करता है। वह समझता है कि मेरी काबलियत और मेरी पूंजी कामयाब नतीजे के साथ मेरी तरफ लौटेगी। मगर मुख़्तलिफ किस्म के हादसात आते हैं और उसकी उम्मीदों को तहस-नहस कर देते हैं। आदमी की कोई भी तदबीर या उसकी कोई भी काबलियत उसे बचाने वाली साबित नहीं होती।

ख़ुदा मौजूदा दुनिया में बार-बार इस तरह के नमूने दिखाता है ताकि इंसान उससे सबक ले। ताकि वह ख़ुदा के सिवा किसी दूसरी चीज को अहमियत देने की ग़लती न करे।

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾

और उन्हें दुनिया की जिंदगी की मिसाल सुनाओ। जैसे कि पानी जिसे हमने आसमान से उतारा। फिर उससे जमीन की नबातात (पौध) ख़ूब घनी हो गई। फिर वे रेजा-रेजा हो गई जिसे हवाएं उड़ाती फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। माल और औलाद दुनियावी जिंदगी की रौनक हैं। और बाकी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक सवाब के एतबार से बेहतर हैं। (45-46)

दुनिया आख़िरत की तमसील है। पानी पाकर जमीन जब सरसब्ज हो जाती है तो बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि वह हमेशा इसी तरह रहेगी, मगर इसके बाद मौसम बदलता है और सारा सब्जा सूख कर ख़त्म हो जाता है।

यही हाल दुनिया की रौनक का है। मौजूदा दुनिया की रौनकें आदमी को अपनी तरफ खींचती हैं। मगर ये तमाम रौनकें इंतिहाई आरजी हैं। कियामत बहुत जल्द उन्हें इस तरह ख़त्म कर देगी कि ऐसा मालूम होगा जैसे उनका कोई वजूद ही न था।

दुनिया की रौनकें बाकी नहीं रहतीं मगर यहां एक और चीज है जो हमेशा बाकी रहने वाली है। और वे इंसान के नेक आमाल हैं। जिस तरह जमीन में बीज डालने से बाग़ उगता है उसी तरह अल्लाह की याद और अल्लाह की फरमांबरदारी से भी एक बाग़ उगता है। इस

बाग़ पर कभी उजाड़ नहीं आता। मगर दुनियावी बाग़ के बरअक्स यह दूसरा बाग़ आख़िरत में उगता है और वहीं वह अपने उगाने वाले को मिलेगा।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे। और तुम देखोगे जमीन को बिल्कुल खुली हुई। और हम उन सबको जमा करेंगे। फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे। और सब लोग तेरे रब के सामने सफ बांधकर पेश किए जाएंगे। तुम हमारे पास आ गए जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक्त मुकर्रर नहीं करेंगे। (47-48)

मौजूदा दुनिया में जो हालात जमा किए गए हैं वे महज इम्तेहान के लिए हैं। इम्तेहान की मुकर्ररह मुद्दत पूरी होने के बाद ये हालात बाकी नहीं रहेंगे। इसके बाद जमीन की सारी जिंदगीबख़्श खुसूसियात ख़त्म कर दी जाएंगी। वह ऐसी ख़ाली जगह हो जाएगी जहां न किसी के लिए अकड़ने का सामान होगा और न फख़्र करने का।

दुनिया में इम्तेहान की वजह से इंसान अपने आपको इख़्तियार की फजा में पा रहा है। मगर कियामत इस फजा को यकसर ख़त्म कर देगी। उस दिन लोग बेयारोमददगार फजा में अपने रब के पास जमा किए जाएंगे। तमाम लोग अपने मालिक के सामने उसका फैसला सुनने के लिए खड़े होंगे। ख़ुदा के पास हर शख़्स की जिंदगी का इंतिहाई मुकम्मल रिकार्ड होगा। उसके मुताबिक वह किसी को इनाम देगा और किसी के लिए सजा का हुक्म सुनाएगा।

मौजूदा दुनिया में इंसान की बयकवक्त दो हालतें हैं। एक एतबार से वह आजिज है और दूसरे एतबार से आजाद। आदमी अगर अपने इज्ज को देखे तो उसके अंदर ख़ुदा की तरफ रुजूअ का जज्बा पैदा होगा। मगर इंसान सिर्फ अपनी आजादी की हालत को देखता है। नतीजा यह होता है कि वह ग़ाफिल और सरकश बनकर रह जाता है।

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿٤٩﴾

और रजिस्टर रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वे उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय ख़राबी। कैसी है यह किताब कि इसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात। और जो कुछ उन्होंने किया है वह

सब सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी के ऊपर जुल्म न करेगा। (49)

इंसान जो कुछ करता है वह सब खुदा के इंतिजाम के तहत रिकार्ड हो रहा है। आदमी की नीयत, उसका कौल और उसका अमल सब कायनाती पर्दे पर नक्श हो रहे हैं। ताहम यह इंतजाम आज दिखाई नहीं देता। कियामत में यह ओट हटा दी जाएगी। उस वक्त इंसान यह देखकर दहशतजदा रह जाएगा कि दुनिया में जो कुछ वह यह समझकर कर रहा था कि कोई उसे जानने वाला नहीं वह इतने कामिल तौर पर यहां दर्ज है कि उसकी फेहरिस्त से न कोई छोटी चीज बची है और न कोई बड़ी चीज।

कियामत के दिन इंसान के साथ जो मामला किया जाएगा उसकी हर चीज इतनी साबितशुदा होगी कि आदमी जब अपने अमल का बदला पाएगा तो उसे यकीन होगा कि उसके साथ वही किया जा रहा है जिसका वह फ़िलवाकअ (वस्तुतः) मुस्तहिक था, न उससे कम न उससे ज्यादा।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِۦٓ أَفَتَتَّخِذُونَهُۥ وَذُرِّيَّتَهُۥٓ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِى وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّۢ بِئْسَ لِلظَّٰلِمِينَ بَدَلًا ۝

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने न किया, वह जिन्नों में से था। पस उसने अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की। अब क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। यह जालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है। (50)

रिवायात से मालूम होता है कि इब्लीस एक इबादतगुजार जिन्न था। वह बजाहिर आबिद व जाहिद बना हुआ था। मगर जब ख़ुदा ने आदम के सामने झुकने का हुक्म दिया तो वह घमंड की बिना पर झुकने के लिए तैयार न हुआ। अब जो लोग घमंड के जज्बे के तहत हक के सामने झुकने से इंकार करें वे सब इब्लीस की औलाद हैं। चाहे वे बजाहिर इबादतगुजार ही क्यों न दिखाई देते हों।

ख़ुदा के सामने झुकना दरअस्ल ख़ुदा के मुकाबले में अपने इज्ज का इकरार करना है। अगर कोई शख़्स हकीकी मअनों में खुदा के सामने झुकने वाला हो तो जहां कहीं भी उसका सामना हक से होगा वह फौरन झुक जाएगा। इसके बरअक्स जो शख़्स जाहिरी तौर पर सज्दागुजार हो मगर अपने अंदर घमंड की नफ्सियात लिए हुए हो वह ऐसे मौके पर बाआसानी सज्दा कर लेगा जहां उसकी अना (अंहकार) को ठेस न लगती हो। मगर जहां अना को झुकाने की कीमत पर अपने आपको झुकाना पड़े वहां अचानक वह सरकश बन जाएगा और झुकने से इंकार कर देगा।

जब हक की पुकार उठे और कुछ लोग इब्लीस और उसकी औलाद के असर में आकर उसे कुबूल न करें तो गोया वे इब्लीस और उसकी औलाद को ख़ुदा का बदल बना रहे हैं। जहां उन्हें खुदा के डर से हक के आगे झुक जाना चाहिए था वहां वे झूठे माबूदों के डर से उसके आगे झुकने से इंकार कर रहे हैं। ऐसे लोग बदतरीन जालिम हैं। बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि ख़ुदा को छोड़कर उन्होंने जिनके ऊपर भरोसा किया था वे उनके कुछ काम आने वाले नहीं।

مَّآ أَشْهَدتُّهُمْ خَلْقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنفُسِهِمْ وَمَا كُنتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ عَضُدًا ۝

मैंने उन्हें न आसमानों और जमीन पैदा करने के वक्त बुलाया। और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक्त बुलाया। और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊं। (51)

लोग अपने जिन बड़ों को दुनिया की जिंदगी में काबिले भरोसा समझ लेते हैं। वे इस कद्र कमजोर हैं कि न कायनात के वजूद में उनका कोई दख़ल है और न ख़ुद अपने वजूद में। साथ ही यह कि ये लोग हक की दावत के मुकाबले में मुजिल (गुमराह करने वाले) का किरदार अदा करके साबित कर रहे हैं कि वे कृतई काबिले भरोसा नहीं। एक ऐसी दुनिया जहां हर तरफ हक की कारफरमाई हो, वहां ऐसी शख़्सियतें किस तरह दाख़िल हो सकती हैं जिनका वाहिद (एक मात्र) सरमाया लोगों को हक से दूर करना है।

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَآءِىَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ۝ وَرَءَا الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوٓا أَنَّهُم مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝

और जिस दिन ख़ुदा कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे उन्हें पुकारो। पस वे उन्हें पुकारेंगे मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे। और हम उनके दर्मियान (अदावत की) आड़ कर देंगे। और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। (52-53)

दुनिया में जिन शख़्सियतों के बल पर आदमी हक का इंकार करता है, कियामत में वे उसके कुछ काम न आएंगी। आज वे एक दूसरे के साथी हैं मगर जब हकाइक खुलेंगे तो दोनों एक दूसरे से नफरत करने लगेंगे। ऐसा मालूम होगा गोया दोनों के दर्मियान हलाकतख़ेज (विनाशक) रुकावट कायम हो गई है। मौजूदा दुनिया में वे अपने आपको मामून व महफूज समझते हैं। मगर कियामत में उनका अंजाम सिर्फ यह होने वाला है कि वे अपने आपको

जहन्नम के दरवाजे पर खड़ा हुआ पाएं और उससे भागने की कोई तदबीर न कर सकें।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

और हमने इस कुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर किस्म की मिसाल बयान की है और इंसान सबसे ज्यादा झगड़ालू है। और लोगों को बाद इसके कि उन्हें हिदायत पहुंच चुकी, ईमान लाने से और अपने रब से बख़्शिश मांगने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी जाहिर हो जाए, या अजाब उनके सामने आ खड़ा हो। (54-55)

मौजूदा दुनिया में इम्तेहान की आजादी है। इस बिना पर यहां आदमी हक का एतराफ न करने के लिए कोई न कोई उज़्र पा लेता है। हर बात को रद्द करने के लिए उसे कुछ न कुछ अल्फाज मिल जाते हैं। कभी ऐसा होता है कि वह एक खुली हुई दलील को बेमअना बहसों से काटने की कोशिश करता है। कभी वह ऐसा करता है कि जो दलील दी गई है उसे नजरअंदाज करके एक और चीज का तकाजा करता है जो किसी वजह से अभी पेश नहीं की गई।

इस आख़िरी सूरत की एक मिसाल यह है कि पैग़म्बर ने अपने मुख़ातबीन के सामने वाजेह दलाइल के साथ अपना पैग़ाम पेश किया तो उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया बल्कि उससे कतअ नजर करते हुए यह कहा कि इंकार की सूरत में तुम हमें जिस अजाब की ख़बर दे रहे हो वह कहां है, उसे लाकर हमें दिखाओ।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾

और रसूलों को हम सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं, और मुंकिर लोग नाहक की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं ताकि इसके जरिए से हक को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उन्हें मजाक बना दिया। उससे बड़ा जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए याददिहानी की जाए तो वह उससे मुंह फेर ले और अपने हाथों के अमल को

भूल जाए। हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में डाट है। और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओ तो वे कभी राह पर आने वाले नहीं हैं। (56-57)

ख़ुदा की बात सबसे ज्यादा सच्ची बात है। तमाम बेहतरीन दलाइल उसकी मुवाफिकत करते हैं। चुनांचे जो लोग उसे मानना नहीं चाहते वे कोई हकीकी दलील नहीं पाते जिसके जरिए वे उसे रद्द कर सकें। उनके पास हमेशा सिर्फ बेअस्ल बातें होती हैं जिनके जरिए वे उसे जेर करने की नाकाम कोशिशें करते हैं। वे ठोस दलाइल का मुकाबला झूठे एतराजात से करते हैं। वे संजीदा काम को मजाक में गुम कर देना चाहते हैं।

यह सब वे इसलिए करते हैं कि दाओ (आह्वानकर्ता) को अवाम की नजर में बेएतबार साबित कर सकें। मगर वे भूल जाते हैं कि ऐसा करके वे ख़ुद अपने आपको ख़ुदा की नजर में बेएतबार साबित कर रहे हैं।

आदमी को सोचने और समझने की सलाहियत इसलिए दी गई है कि वह हक और नाहक में तमीज कर सके। मगर जब वह अपनी सूझ-बूझ को गलत रुख़ पर इस्तेमाल करता है तो उसका जेहन उसी ग़लत रुख़ पर चल पड़ता है जिस रुख़ पर उसने उसे चलाया है। इसके बाद उसके लिए नामुमकिन हो जाता है कि किसी बात को उसके सही रुख़ से देखे। और उसकी वाकई अहमियत को समझ सके। वह आंख रखते हुए भी बेआंख हो जाता है। वह कान रखते हुए बेकान हो जाता है।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़े तो फौरन उन पर अजाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुकर्रर वक्त है और वे उसके मुकाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे। और ये बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया जबकि वे जालिम हो गए। और हमने उनकी हलाकत का एक वक्त मुकर्रर किया था। (58-59)

आदमी हक के मुकाबले में सरकशी करता है तो उसे फौरन उसकी सजा नहीं मिलती। इससे ग़लतफहमी में पड़कर वह अपने आपको आजाद समझ लेता है और मजीद सरकशी करने लगता है। हालांकि यह न पकड़ा जाना, इम्तेहान की मोहलत की बिना पर है न कि आजादी और ख़ुदमुख़्तारी की बिना पर।

आदमी सबक लेना चाहे तो माजी (अतीत) का अंजाम उसके सामने मौजूद है जिससे

वह हाल के लिए सबक ले सकता है। सतहे जमीन पर बार-बार मुख़्तलिफ कौमें और तहजीबें उभरी हैं और तबाह कर दी गई हैं। जब पिछली नस्लों के साथ ऐसा हुआ कि उन्हें उनकी सरकशी की सजा मिली तो अगली नस्लों के साथ यही वाकया क्यों नहीं होगा।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूंगा यहां तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुंच जाऊं या इसी तरह वर्षों तक चलता रहूं। पस जब वे दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे तो वे अपनी मछली को भूल गए। और मछली ने दरिया में अपनी राह ली। फिर जब वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफर से हमें बड़ी थकान हो गई। (60-62)

ख़ुदा फरिश्तों के जरिए मुसलसल दुनिया का इंतिजाम कर रहा है। इंसान चूंकि इस इंतजाम को नहीं देखता, वह इसके भेदों को पूरी तरह समझ नहीं पाता। वह कमतर वाकफियत की बिना पर तरह-तरह के शुब्हात में मुब्तिला हो जाता है।

इसके इलाज के लिए ख़ुदा ने बिलवास्ता मुशाहिदे (परोक्ष अवलोकन) का इंतिजाम किया। उसने अपने चुने हुए बंदों को छुपी हुई दुनिया का मुशाहिदा कराया ताकि वे उसकी हिक्मतों को अपनी आंखों से देखें और दूसरे इंसानों को उससे बाख़बर कर दें। यहां हजरत मूसा के जिस वाक्ये का जिक्र है वह इसी किस्म का एक अनुपम वाक्या है जिसके जरिए उन्हें ख़ुदा के छुपे हुए निजाम की एक झलक दिखाई गई।

हजरत मूसा ने यह सफर ग़ालिबन मिस्र व सूडान के दर्मियान अपने एक नौजवान शागिर्द (यूशअ बिन नून) के साथ किया था। ख़ुदा ने बतौर अलामत उन्हें बताया था कि तुम चलते रहो। यहां तक कि जब तुम उस जगह पहुंचो जहां दो दरिया बाहम मिलते हों तो वहां तुम्हें हमारा एक बंदा (ग़ालिबन फरिश्ता बाशक्ल इंसान) मिलेगा। तुम उसके साथ हो लेना।

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذَٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

शागिर्द ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली

को भूल गया। और मुझे शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता। और मछली अजीब तरीके से निकल कर दरिया में चली गई। मूसा ने कहा, उसी मौके की तो हमें तलाश थी। पस दोनों अपने कदमों के निशान देखते हुए वापस लौटे। तो उन्होंने वहां हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी थी और जिसे अपने पास से एक इल्म सिखाया था। (63-65)

हजरत मूसा को मजीद अलामत यह बताई गई थी कि तुम जब मत्लूबा मकाम पर पहुंचोगे तो तुम्हारे नाश्ते की मछली अजीब तरीके से पानी में चली जाएगी। यह वाकया एक मकाम पर हुआ। मगर मछली शागिर्द के साथ थी और शागिर्द किसी वजह से हजरत मूसा को बता न सका कि ऐसा वाकया हुआ है। कुछ आगे बढ़ने के बाद जब हजरत मूसा को मालूम हुआ तो वह फौरन वापस हुए और मज्कूरा मकाम पर उस बंदे (ख़िज़्र) को पा लिया जिससे मिलने के लिए उन्होंने यह लम्बा सफर किया था।

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूं ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है। उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते और तुम उस चीज पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी वाकफियत (जानकारी) के दायरे से बाहर है। मूसा ने कहा, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी नाफरमानी नहीं करूंगा। उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना जब तक कि मैं ख़ुद तुमसे उसका जिक्र न करूं। (66-70)

उस बंदे (ख़िज़्र) को ख़ुदा ने ख़ुसूसी इल्म और ताकत अता की थी ताकि उसके मुताबिक वह दुनिया के मामलात में ग़ैर मामूली तसर्रुफ कर सकें। इस इल्म के तहत वह अक्सर औकात आम जाब्ते के ख़िलाफ अमल करते थे। इसलिए हजरत मूसा की फरमाइश पर उन्होंने कहा कि तुम उसकी बर्दाश्त नहीं ला सकते।

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ

لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ﴿٧٣﴾ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ﴿٧٤﴾

फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख़्स ने कश्ती में छेद कर दिया। मूसा ने कहा, क्या आपने इस कश्ती में इसलिए छेद किया है कि कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दें। यह तो आपने बड़ी सख़्त चीज कर डाली। उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा, मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए। फिर वे दोनों चले यहां तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख़्स ने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, क्या आपने एक मासूम जान को मार डाला हालांकि उसने किसी का ख़ून नहीं किया था। यह तो आपने एक नामाकूल बात की है। (71-74)

अच्छी कश्ती को ऐबदार बनाना और छोटे बच्चे को हलाक करना बजाहिर ऐसे काम हैं जो सही नहीं। मगर जैसा कि आगे की आयात बताती हैं, इसमें निहायत गहरी मस्लेहत छुपी हुई थी। ये बजाहिर ग़लत काम हक़ीक़त के एतबार से बिल्कुल सही और मुफ़ीद काम थे।

इसमें इस मसले का भी एक जवाब है जिसे आम तौर पर ख़राबी का मसला (Problem of evil) कहा जाता है। इंसानी दुनिया की बहुत सी चीजें जिन्हें देखकर यह समझ लिया जाता है कि दुनिया के निजाम में ख़राबियां हैं, वे गहरी मस्लेहत पर मबनी होती हैं। मौजूदा जिंदगी में यकीनन इस मस्लेहत पर पर्दा पड़ा हुआ है। मगर आख़िरत में यह पर्दा बाक़ी न रहेगा। उस वक्त आदमी जान लेगा कि जो कुछ हुआ वही होना भी चाहिए था।

الجزء السادس عشر

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾

उस शख़्स ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज के मुतअल्लिक

पूछूं तो आप मुझे साथ न रखें। आप मेरी तरफ से उज्र की हद को पहुंच गए। फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुंचे तो वहां वालों से खाने को मांगा। उन्होंने उनकी मेजबानी से इंकार कर दिया। फिर उन्हें वहां एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी तो उसने उसे सीधा कर दिया। मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत (मेहनताना) ले लेते। उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई है। मैं तुम्हें उन चीजों की हक़ीक़त बताऊंगा जिन पर तुम सब्र न कर सके। (75-78)

हजरत मूसा और हजरत ख़िज़्र जैसे मुक़र्रबीने ख़ुदा एक बस्ती में पहुंचते हैं और चाहते हैं कि बस्ती वाले महमान समझकर उन्हें खाना खिलाएं। मगर बस्ती वाले खाना खिलाने से इंकार कर देते हैं। इससे मालूम हुआ कि किसी का सादिक और मुक़र्रब होना काफ़ी नहीं है कि वह देखने वालों को भी सादिक और मुक़र्रब नजर आए। अगर बस्ती वालों ने उन्हें पहचाना होता तो जरूर वे उन्हें अपना ख़ुसूसी महमान बनाते और उनसे बरकत हासिल करते, मगर उनके मामूली जाहिरी हुलिये की बिना पर उन्होंने उन्हें नजरअंदाज कर दिया। वे उनकी अंदुरूनी हक़ीक़त के एतबार से उन्हें न देख सके।

इस नाख़ुशगवार सुलूक के बावजूद हजरत ख़िज़्र ने बस्ती वालों की एक गिरती हुई दीवार सीधी कर दी। ख़ुदा के सच्चे बंदों का दूसरों से सुलूक जवाबी सुलूक नहीं होता। बल्कि हर हाल में वही होता है जो अजरुए हक उनके लिए दुरुस्त है।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾

कश्ती का मामला यह है कि वह चन्द मिस्कीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे। तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को जबरदस्ती छीन कर ले लेता था। (79)

हजरत ख़िज़्र ने कश्ती को बेकार नहीं किया था बल्कि वक्ती तौर पर उसे ऐबदार बनाया था। इसकी मस्लेहत यह थी कि कश्ती जिस तरफ जा रही थी उस तरफ आगे एक बादशाह था जो ग़ालिबन अपनी किसी जंगी मुहिम के लिए अच्छी कश्तियों को जबरदस्ती अपने क़ब्जे में ले रहा था। चुनांचे उन्होंने उसे ऐसा बना दिया कि बादशाह के कारिंदे उसे देखें तो उसे नाक़ाबिले तवज्जोह समझकर छोड़ दें।

इससे मालूम हुआ कि दुनिया में किसी के साथ कोई हादसा पेश आए तो उसे चाहिए कि वह बददिल न हो। वह यह सोचकर उस पर राजी हो जाए कि ख़ुदा ने जो कुछ किया है उसमें उसके लिए कोई फ़ायदा छुपा होगा, अगरचे वह अभी उससे पूरी तरह बाख़बर नहीं।

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

और लड़के का मामला यह है कि उसके मां-बाप ईमानदार थे। हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और नाफरमानी से उन्हें तंग करेगा। पस हमने चाहा कि उनका रब उन्हें उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीजगी में उससे बेहतर हो और शफ्क़त करने वाली हो। (80-81)

लड़के की यह मिसाल बताती है कि ख़ुदा अपने बंदों की मदद कहां कहां करता है। यहां तक कि वह ऐसे मामले में भी उनकी मदद करता है जिसका उन्हें इल्म तक नहीं होता कि वह उसके लिए अपने रब से दरख़्वास्त कर सकें। इंसान को चाहिए कि वह हमेशा सब्र व शुक्र का रवैया इख़्तियार करे। वह हर हाल में ख़ुदा से ख़ैर की उम्मीद रखे। ख़ुदा कुल्ली (पूर्ण) इल्म रखता है, इसलिए वह किसी बंदे की भलाई को उससे ज्यादा जानता है जितना इंसान जुजई (आंशिक) इल्म की बिना पर नहीं जान सकता।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उस दीवार के नीचे उनका एक ख़ज़ाना दफ्न था और उनका बाप एक नेक आदमी था पस तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुंचें और अपना ख़ज़ाना निकालें। यह तुम्हारे रब की रहमत से हुआ। और मैंने उसे अपनी राय से नहीं किया। यह है हकीकत उन बातों की जिन पर तुम सब्र न कर सके। (82)

इन मिसालों से अंदाजा होता है कि ख़ुदा हर वक्त मौजूदा दुनिया की निगरानी कर रहा है। उसने अगरचे इम्तेहान की मस्लेहत की बिना पर इस दुनिया का निजाम असबाब व इलल के तहत कायम कर रखा है। मगर इसी के साथ वह इस निजाम में बार-बार मुदाख़लत (हस्तक्षेप) करता रहता है। ख़ुदा कहीं तामीर (निर्माण) का तरीका इख़्तियार करता है और कहीं बजाहिर तख़रीब (बिगाड़) का। मगर वसीअतर मस्लेहत के एतबार से सब उसकी रहमत होती है। और इस बात का यकीन हासिल करना होता है कि असबाब की आजादाना गर्दिश में तख़्लीक के अस्ल मक्सद फौत (विनष्ट) न होने पाएं।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

और वे तुमसे जुलकरनैन का हाल पूछते हैं। कहो कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा। हमने उसे जमीन में इक्तेदार (शासन) दिया था। और हमने उसे हर चीज का सामान दिया था। (83-84)

जुलकरनैन के लफ्जी मअना हैं दो सींगों वाला। यानी वह बादशाह जिसकी फुतूहात (विजयों) का सिलसिला दुनिया के दोनों किनारों (मश्रिक व मग़्रिब) तक पहुंचा हुआ था। यहां जुलकरनैन से मुराद ग़ालिबन कदीम ईरानी बादशाह ख़ुसरू (Cyrus) है। उसका जमाना पांचवीं सदी ई०पू० है। उसने कदीम आबाद दुनिया का बड़ा हिस्सा फतह कर डाला था। और बिलआख़िर एक जंग में मारा गया। वह निहायत मुंसिफ और आदिल बादशाह था।

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

फिर जुलकरनैन एक राह के पीछे चला। यहां तक कि वह सूरज के गुरूब होने के मकाम तक पहुंच गया। उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहां उसे एक कौम मिली। हमने कहा कि ऐ जुलकरनैन तुम चाहो तो उन्हें सजा दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा सुलूक करो। उसने कहा कि जो उनमें से जुल्म करेगा हम उसे सजा देंगे। फिर वह अपने रब के पास पहुंचाया जाएगा, फिर वह उसे सख़्त सजा देगा। और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छी जजा है और हम भी उसके साथ आसान मामला करेंगे। (85-88)

जुलकरनैन ग़ालिबन ईरान के मग़्रिब में फुतूहात करता हुआ एशिया माइनर तक पहुंच गया जहां एजियन समुद्र (Aegean Sea) का 'स्याह पानी' ख़ुश्की की हदबंदी कर रहा है। यहां एक शख़्स साहिल (समुद्र-तट) के किनारे खड़ा होकर समुद्र की तरफ देखे तो शाम के वक्त उसे नजर आएगा कि गोया कि सूरज का गोला पानी में दाख़िल होकर उसके अंदर डूब रहा है। यह मुहावरे की जबान में उस हद का बयान है जहां तक जुलकरनैन पहुंचा था।

जुलकरनैन समुद्र के इस किनारे तक बतौर सय्याह (पर्यटक) नहीं आया था बल्कि बतौर फातेह (विजेता) आया था। यहां उस वक्त जो कौम आबाद थी उसके ऊपर उसे पूरा इख़्तियार मिल गया। उसके ऊपर उसकी हुकूमत कायम हो गई। बहैसियत हुक्मरां उसे कामिल इख़्तियार हासिल था कि उसके साथ जो चाहे करे। ताहम जुलकरनैन एक आदिल (न्यायप्रिय) बादशाह था। उसने किसी पर कोई जुल्म नहीं किया। उसने आम एलान कर दिया कि हम सिर्फ उस शख़्स के साथ सख़्ती करेंगे जो बुराई करता हुआ पाया जाए। जो लोग अम्न व नज़्म (अनुशासन) के साथ रहेंगे उनके ऊपर कोई ज्यादती नहीं की जाएगी।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुंचा तो उसने सूरज को एक ऐसी कौम पर उगते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी। यह इसी तरह है। और हम जुलकरनैन के अहवाल (हालात) से बाख़बर हैं। (89-91)

जुलकरनैन की दूसरी मुहिम ईरान के मश्रिक (पूर्व) की तरफ थी। वह फुतूहात करता हुआ आगे बढ़ा। यहां तक कि वह ऐसे मकाम पर पहुंच गया जहां बिल्कुल गैर मुतमद्दिन (असभ्य) लोग बसते थे 'उनके और आफताब (सूरज) के दर्मियान आड़ नहीं थी' का मतलब ग़ालिबन यह है कि वे ख़ानाबदोश थे और तामीरशुदा मकानात में रहने के बजाए खुले मैदानों में ज़िंदगी गुजरते थे।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो उनके पास उसने एक कौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। उन्होंने कहा कि ऐ जुलकरनैन, याजूज और माजूज हमारे मुल्क में फसाद फैलाते हैं तो क्या हम तुम्हें कोई महसूल इसके लिए मुकर्रर कर दें कि तुम हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बना दो। (92-94)

जुलकरनैन की तीसरी मुहिम ग़ालिबन ईरान के शिमाल मश्रिक (उत्तर-पूर्व) की जानिब थी। वह ऐसे इलाके में पहुंचा जहां बिल्कुल वहशी किस्म के लोग आबाद थे। दूसरी कौमों से उनका मेल जोल नहीं हो सका था चुनांचे वह कोई और जबान मुश्किल ही से समझ पाते थे।

यह ग़ालिबन बहरे केसपियन और बहरे असवद (काला सागर) के दर्मियान के पहाड़ थे। यहां वहशी कबीले दूसरी तरफ से आकर ग़ारतगरी करते और फिर पहाड़ी दर्रे के रास्ते से भाग जाते। जुलकरनैन ने यहां दोनों पहाड़ों के दर्मियान आहनी (लौह) दीवार खड़ी कर दी।

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوا أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿٩٨﴾

जुलकरनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है। तुम महनत से मेरी मदद करो। मैं तुम्हारे और उनके दर्मियान एक दीवार बना दूंगा। तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो। यहां तक कि जब उसने दोनों के दर्मियानी ख़ला (रिक्त-स्थान) को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ यहां तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूं। पस याजूज व माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सुराख़ कर सकते थे। जुलकरनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (95-98)

मौजूदा रूस के इलाके में कुफ़काज पहाड़ (Caucasus Mountains) वाकेअ हैं। उनका सिलसिला केसपियन समुद्र और ब्लैक समुद्र के दर्मियान फैला हुआ है। ये ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं जो यूरोप और एशिया के दर्मियान कुदरती दीवार का काम देते हैं। इस पहाड़ी सिलसिले में कुछ मकामात पर दर्रे थे जिनसे जुनूब (दक्षिण) के इलाके से याजूज माजूज के वहशी कबीले शिमाल (उत्तर) की तरफ आ जाते और ईरानी ममलकत (राज्य) के हिस्से में ग़ारतगरी करते। यहां पर आज भी एक कदीम दीवार के आसार मौजूद हैं। संभव है कि यही वह दीवार है जो जुलकरनैन ने हिफाज़ती मकसद के तहत तामीर की थी।

दुश्मन के मुकाबले में 'लोहे की दीवार' खड़ी करना एक ऐसा कारनामा है जिस पर आम तौर पर लोगों में फ़ख्र और घमंड के जज्बात पैदा हो जाते हैं। मगर जुलकरनैन ने ऐसी

नाकाबिले तसख़ीर (अलांघनीय) दीवार खड़ी करने के बाद भी इतनी तवाजोअ (विनम्रता) नहीं खोई। उसकी नजर अपने कारनामे पर नहीं थी बल्कि ख़ुदा के इख़्तियारात पर थी और ख़ुदा के मुकाबले में किसी इंसान को कोई जोर हासिल नहीं।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे। वे मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे। और सूर फूंका जाएगा पस हम सबको एक साथ जमा करेंगे और उस दिन हम जहन्नम को मुंकिरों के सामने लाएंगे, जिनकी आंखों पर हमारी याददिहानी से पर्दा पड़ा रहा और वे कुछ सुनने के लिए तैयार न थे। (99-101)

कियामत आने के बाद मौजूदा दुनिया एक और दुनिया बन जाएगी। उस वक्त ग़ालिबन ऐसा होगा कि दरियाओं और पहाड़ों की मौजूदा हदबंदियां तोड़कर ख़त्म कर दी जाएंगी। इंसानों का एक हुजूम होगा, जो एक दूसरे से उसी तरह टकराएगा जिस तरह समुद्र में मौजें टकराती हैं।

आज लोगों को अक्ल की आंख से जहन्नम दिखाई जा रही है तो वह उन्हें नजर नहीं आती। कियामत में लोगों को पेशानी की आंख से जहन्नम दिखाई जाएगी। उस वक्त हर आदमी देख लेगा। मगर यह देखना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि नसीहत के जरिए जिसने अपनी आंख का पर्दा हटाया वही पर्दा हटाने वाला है। वर्ना कियामत के दिन पर्दा हटाया जाना तो सिर्फ इसलिए होगा कि सरकशी करने वालों को उनके आख़िरी अंजाम तक पहुंचा दिया जाए।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

क्या इंकार करने वाले यह समझते हैं कि वे मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना कारसाज बनाएं। हमने मुंकिरों की महमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है। (102)

हक को मानना ख़ुदा को मानना है और हक को न मानना ख़ुदा को न मानना। जब भी आदमी हक को न माने तो वह किसी न किसी चीज या शख़्सियत के बल पर ऐसा करता है। ऐसा हर भरोसा झूठा भरोसा है। क्योंकि इस दुनिया में ख़ुदा के सिवा किसी को कोई इख़्तियार हासिल नहीं। फैसले के दिन ऐसे लोगों को बचाने वाला कोई न होगा। क्योंकि बचाने वाला तो

सिर्फ ख़ुदा था और उसकी हिमायत को उन्होंने पहले ही सरकशी करके खो दिया।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

कहो क्या मैं तुम्हें बता दूं कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज्यादा घाटे में कौन लोग हैं। वे लोग जिनकी कोशिश दुनिया की जिंदगी में अकारत हो गई और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इंकार किया। पस उनका किया हुआ बर्बाद हो गया। फिर कियामत के दिन हम उन्हें कोई वजन न देंगे। यह जहन्नम उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने इंकार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मजाक उड़ाया। (103-106)

आदमी दुनिया में अमल करता है। वह देखता है कि उसके अमल का नतीजा इज्जत और दौलत की सूरत में उसे मिल रहा है। अपना कोई काम उसे बिगड़ता हुआ नजर नहीं आता। वह समझ लेता है कि मैं कामयाब हूं।

मगर यह सरासर नादानी है। ख़ुदा के नक्शे में जिंदगी की कामयाबी का मेयार आख़िरत है। ऐसी हालत में दुनिया की तरक्की को तरक्की समझना ख़ुदा के नक्शे के ख़िलाफ अपना नक्शा बनाना है। यह आख़िरत को हज्फ करके जिंदगी के मसले को देखना है। जाहिर है कि ऐसे लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते।

ख़ुदा अपनी निशानियां जाहिर करता है। मगर जो लोग अपने जेहन को दुनिया में लगाए हुए हों वे आख़िरत की निशानियों से मुतअस्सिर नहीं होते। ख़ुदा अपने दलाइल खोलता है मगर जो लोग दुनिया की बातों में गुम हों उन्हें आख़िरत की दलीलें अपील नहीं करतीं। ऐसे लोग हिदायत के कनारे खड़े होकर भी हिदायत को कुबूल करने से महरूम रहते हैं। उन्होंने ख़ुदा की बातों को कोई वजन नहीं दिया। फिर कैसे मुमकिन है कि ख़ुदा उन्हें अपने यहां किसी वजन का मुस्तहिक समझे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए फिरदौस के बाग़ों की महमानी है। उसमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कभी निकलना न चाहेंगे। (107-108)

मौजूदा दुनिया में ईमान और अमले सालेह की जिंदगी इख़्तियार करना जबरदस्त कुर्बानी का सुबूत देना है। यह छुपी हुई जन्नत के ख़ातिर नजर आने वाली जन्नत को छोड़ना है। यह उस मुश्किलतरीन इम्तेहान में पूरा उतरना है जबकि आदमी मात्र दलील की सतह पर हक को पहचानता है और अपनी जिंदगी उसके रास्ते पर डाल देता है, हालांकि ऐसा करने के लिए वहां कोई दबाव नहीं होता।

जो लोग इस मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और इस कारकरदगी को सुबूत दें उनका इनाम यही है कि उन्हें अबदी (चिरस्थाई) राहत व आराम के बाग़ों में दाख़िल कर दिया जाए।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝

कहो कि अगर समुद्र मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो समुद्र ख़त्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिंद और समुद्र मिला दें। (109)

जो लोग ख़ुदा के पैग़ाम को नहीं मानते वे ऐसी चीज को नहीं मानते जो तमाम साबितशुदा चीजों से ज्यादा साबितशुदा है। वह इतनी मुसल्लम (सुस्थापित) है जिसे लिखने के लिए दुनिया के तमाम दरख़्तों के कलम भी नाकाफी साबित हों। तमाम समुद्रों की स्याही भी ख़ुश्क हो जाए इससे पहले कि उसकी फेहरिस्त ख़त्म हो।

मगर इंसान कैसा जालिम है कि इसके बावजूद वह हक (सत्य) को नहीं पहचानता। इसके बावजूद वह अपनी जिंदगी को हक के मुताबिक नहीं ढालता।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝

कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं। मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक ही माबूद है। पस जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए। (110)

पैग़म्बर ख़ुदा या फरिश्ता नहीं होता। वह इंसानों की तरह एक इंसान होता है। उसकी मजीद ख़ुसूसियत सिर्फ यह होती है कि उस पर ग़ैर मरई (ग़ैर-महसूस) जरिए से ख़ुदा की 'वही' आती है। गोया पैग़म्बर एक ऐसी हस्ती है जो अपने जाहिर के एतबार से एक इंसान

है और अपनी अंदरूनी हकीकत के एतबार से नुमाइंदए ख़ुदा।

यही वजह है कि हक को पाने के लिए जौहर शनासी की सलाहियत दरकार होती है। हक को पाना सिर्फ उस शख़्स के लिए मुमकिन होता है जो हकीकत को उसके ग़ैबी रूप में देख सके। जो 'इंसान' की सतह पर 'पैग़म्बर' को पहचानने का सुबूत दे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝

आयतें-98 **सूरह-19. मरयम** **रुकूअ-6**

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ० हा० या० अइन० साद०। यह उस रहमत का जिक्र है जो तेरे रब ने अपने बंदे जकरिया पर की। जब उसने अपने रब को छुपी आवाज से पुकारा। (1-3)

हजरत जकरिया हजरत मरयम के बहनोई थे। हजरत मरयम के वालिद का नाम इमरान था। हजरत मरयम अभी सिर्फ चन्द साल की थीं कि उनके वालिद का इंतकाल हो गया। वह हैकल के नाजिमे आला थे। उनके बाद हजरत जकरिया हैकल के नाजिमे आला (काहिनों के सरदार) मुकर्रर हुए। उस जमाने में हजरत मरयम अपनी वालिदा की नज़्र के मुताबिक हैकल की ख़िदमत में दे दी गई थीं। हजरत जकरिया चूंकि हजरत मरयम के करीबी अजीज थे और हैकल के सरदार भी इसलिए वही हजरत मरयम की तर्बियत के जिम्मेदार करार पाए।

हजरत जकरिया अलैहिस्सलाम ने 'छुपी आवाज' में ख़ुदा से दुआ की। यह दुआ हैरतअंगेज तौर पर पूरी हुई। इससे मालूम होता है कि सच्ची दुआ क्या है। सच्ची दुआ दरअस्ल इस यकीन का बेताबाना इज्हार है कि सारा इख़्तियार सिर्फ ख़ुदा के पास है। उसी के देने से आदमी को मिलेगा और वह न दे तो कभी किसी को कुछ नहीं मिल सकता। सच्ची दुआ का सारा रुख़ सिर्फ एक ख़ुदा की तरफ होता है। यही वजह है कि सच्ची दुआ सबसे ज्यादा उस वक्त उबलती है जबकि आदमी तंहाई में हो। जहां उसके और ख़ुदा के सिवा कोई तीसरा न पाया जाए।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝

जकरिया ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी हड्डियां कमजोर हो गई हैं। और सर में बालों की

सफेदी फैल गई है और ऐ मेरे रब, तुझसे मांग कर मैं कभी महरूम नहीं रहा। और मैं अपने बाद रिश्तेदारों की तरफ से अंदेशा रखता हूं। और मेरी बीवी बांझ है, पस मुझे अपने पास से एक वारिस दे जो मेरी जगह ले और याकूब की आल (संतति) की भी। और ऐ मेरे रब उसे अपना पसंदीदा बना। (4-6)

यह उस बंदे की जबान से निकली हुई दुआ है जो दीन का मिशन चलाते हुए बिल्कुल बूढ़ा हो गया था। और अहले ख़ानदान में कोई शख़्स उसे नजर नहीं आता था जो उसके बाद उसके मिशन को जारी रखे। एक तरफ अपना इज्ज (निर्बलता) और दूसरी तरफ मिशन की अहमियत, ये दोनों एहसासात उसकी जबान पर उस दुआ की सूरत में ढल गए जो मज्कूरा आयात में नजर आते हैं। गोया यह आम मअनों में महज एक बेटे की दुआ न थी। बल्कि इस बात की दुआ थी कि मुझे एक ऐसा लायक शख़्स हासिल हो जाए जो मेरे बाद मेरे पैग़म्बराना मिशन को जारी रखे।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝

ऐ जकरिया, हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जिसका नाम यहया होगा। हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मेरे यहां लड़का कैसे होगा जबकि मेरी बीवी बांझ है। और मैं बुढ़ापे के इंतिहाई दर्जे को पहुंच चुका हूं। (7-8)

यह दुआ बेटे की सूरत में कुबूल हुई। एक ऐसा बेटा जैसा बेटा आम तौर पर लोगों के यहां पैदा नहीं होता। एक शख़्स जो आख़िरी हद तक बूढ़ा हो चुका हो और जिसकी बीवी पूरी उम्र तक बांझ रही हो। उसके यहां बच्चा पैदा होना यकीनन एक इंतिहाई ग़ैर मामूली बात है। इस बिना पर हजरत जकरिया को इस ख़बर पर ख़ुशी के साथ तअज्जुब भी हुआ। मिलने वाली नेमत के ग़ैर मुतवक्कअ (अप्रत्याशित) होने का एहसास उनकी जबान से इन अल्फाज में निकल पड़ा कि मेरे यहां कैसे बच्चा पैदा होगा जबकि मैं और मेरी बीवी दोनों इस एतबार से अज्कार रफ्ता (असमर्थ) हो चुके हैं।

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝

जवाब मिला कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। मैंने

इससे पहले तुम्हें पैदा किया, हालांकि तुम कुछ भी न थे। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए कोई निशानी मुकर्रर कर दे। फरमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन शब व रोज लोगों से बात न कर सकोगे हालांकि तुम तंदुरुस्त होगे। फिर जकरिया इबादत की मेहराब से निकल कर लोगों के पास आया और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम ख़ुदा की पाकी बयान करो। (9-11)

पहले इंसान का बाप और मां के बग़ैर पैदा होना जिस तरह एक ख़ुदाई मोजिजा (दिव्य चमत्कार) है इसी तरह बाप और मां के जरिए बच्चे का पैदा होना भी एक ख़ुदाई मोजिजा है। चाहे ये मां-बाप बूढ़े हों या जवान। हकीकत यह है कि यह ख़ुदा है जो इंसान को पैदा करता है। उसी ने पहले पैदा किया और वही आज भी पैदा करने वाला है। दूसरी हर चीज महज एक जाहिरी बहाना है न कि हकीकी वजह।

हजरत जकरिया ने रहमते ख़ुदावंदी के मिलने की अलामत दरयाफ्त की। बताया गया कि तंदरुस्त होने के बावजूद जब कामिल तीन रात दिन तक लोगों से जबान के जरिए बात न कर सको, उस वक्त समझ लेना कि हमल (गर्भ) करार पा गया है। चुनांचे जब वह वक्त आया तो जबान बातचीत से रुक गई। हजरत जकरिया अपने इबादतख़ाने से निकले और लोगों से इशारे के साथ कहा कि सुबह व शाम अल्लाह को याद करो और उसकी इबादत व इताअत (आज्ञापालन) में मशग़ूल रहो।

हजरत जकरिया का ग़ालिबन यह नियम था कि वह रोजाना लोगों को वअज व नसीहत फरमाते थे। जब जबान बोलने से रुक गई तब भी आप मकामे इज्तिमाअ पर आए और लोगों को नसीहत की। अलबत्ता चूंकि जबान चल नहीं रही थी, आपने इशारे के साथ लोगों को तल्कीन (नसीहत) फरमाई।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

ऐ यहया किताब को मजबूती से पकड़ो। और हमने उसे बचपन ही में दीन की समझ अता की। और अपनी तरफ से उसे नर्मदिली और पाकीजगी (पवित्रता) अता की। और वह परहेजगार और अपने वालिदैन का ख़िदमतगुजार था। और वह सरकश और नाफरमान न था। और उस पर सलामती है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह जिंदा करके उठाया जाएगा। (12-15)

कहा जाता है कि हजरत यहया जब छोटे थे तो लड़कों ने एक बार उन्हें खेलने के लिए

बुलाया। उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि 'हम इसलिए नहीं बनाए गए हैं' इससे अंदाजा होता है कि उन्हें बचपन से यह शुऊर हासिल था कि जिंदगी को बामक्सद होना चाहिए। इसी तरह उनके अंदर पैदाइशी तौर पर सोज व गुदाज (शालीनता, सहृदयता) मौजूद था वह नफ्सियाती गिरहों (कुप्रवृत्तियों) से आजाद थे। वे अपने वालिदेन के हुकूक अदा करने वाले थे। वे सरकशी और नाफरमानी से बिल्कुल ख़ाली थे।

यही वे औसाफ (गुण) हैं जो आदमी को इस काबिल बनाते हैं कि वह किसी हाल में ख़ुदा की किताब से न हटे। और इन्हीं औसाफ वाला आदमी वह है जिस पर दुनिया में भी ख़ुदा की रहमत नाजिल होती है और आख़िरत में भी ख़ुदा की रहमत।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا ۠ فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ ۖ لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ أَنّٰى يَكُونُ لِي غُلٰمٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا ﴿٢١﴾

और किताब में मरयम का जिक्र करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर शरकी पूर्वी मकान में चली गई। फिर उसने अपने आपको उनसे पर्दे में कर लिया। फिर हमने उसके पास अपना फरिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा आदमी बनकर जाहिर हुआ। मरयम ने कहा, मैं तुझसे ख़ुदाए रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तू खुदा से डरने वाला है। उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं ताकि तुम्हें एक पाकीजा लड़का दूं। मरयम ने कहा, मेरे यहां कैसे लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुवा और न मैं बदकार (बदचलन) हूं। फरिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। और ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत। और यह एक तैशुदा बात है। (16-21)

हजरत मरयम अपनी वालिदा की नज्र के मुताबिक हैकल (बैतुल मक्दस) की ख़िदमत के लिए दे दी गई थीं। कदीम (प्राचीन) हैकल का मश्रिकी हिस्सा औरतों के लिए ख़ास था। वह उस हिस्से में एक तरफ पर्दा डाल कर मोतकिफ (एकांतवासीय) हो गईं। इसके बाद अचानक एक रोज ऐसा हुआ कि उन्होंने देखा कि एक तंदुरुस्त व तवाना (सशक्त) आदमी उनके सामने खड़ा हुआ है। इस मंजर से उनका घबरा उठना बिल्कुल फितरी था। मगर आदमी ने बताया कि वह फरिश्ता है। और ख़ुदा की तरफ से इसलिए आया है कि हजरत

मरयम को मोजिजाती तौर पर एक बच्चा अता करे।

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम का इस तरह मोजिजाती तौर पर पैदा होना ख़ुदा की एक अजीम निशानी थी। इसका मकसद यह था कि यहूद आपके ख़ुदा के संदेशवाहक होने पर शक न करें और आप ख़ुदा की तरफ से जो बातें बताएं उन्हें मान लें। मगर इतनी खुली हुई निशानी के बावजूद उन्होंने हजरत मसीह का इंकार कर दिया।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾ فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَنْسِيًّا ﴿٢٣﴾

पस मरयम ने उसका हमल (गर्भ) उठा लिया और वह उसे लेकर एक दूर की जगह चली गई। फिर दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) उसे खजूर के दरख़्त की तरफ ले गया। उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली बिसरी चीज हो जाती। (22-23)

हजरत मरयम एक मुअज्जज़ मजहबी घराने की ग़ैर शादीशुदा ख़ातून थीं। ऐसी एक ख़ातून का हामिला (गर्भवती) होना उसके लिए एक ऐसी आजमाइश है जिससे बड़ी कोई आजमाइश नहीं। इस परेशानी में मुब्तिला होने के बाद वह ख़ामोशी के साथ हैकल से निकलीं और दूर के एक मकाम (बैतेलहम) चली गईं। जब वक्त पूरा हुआ और दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) की कैफियत पैदा हुई तो वह बस्ती से बाहर एक खजूर के नीचे बैठ गईं। एक पाकबाज ग़ैर शादीशुदा ख़ातून पर ऐसे वक्त में जो कैफियत गुजरेगी उसकी तस्वीर इन अल्फाज में मिलती है काश मैं इससे पहले ख़त्म हो जाती और लोगों के हाफिजे में मेरा कोई वजूद न होता।

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۚ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا ۙ فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

फिर मरयम को उसने उसके नीचे से आवाज दी कि ग़मगीन न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक चशमा (स्रोत) जारी कर दिया है और तुम खजूर के तने को अपनी तरफ हिलाओ। उससे तुम्हारे ऊपर पकी खजूरें गिरेंगी। पस खाओ और पियो और आंखे ठंडी करो। फिर अगर तुम कोई आदमी देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोजा मान रखा है तो आज मैं किसी इंसान से नहीं बोलूंगी। (24-26)

इतनी नाजुक आजमाइश में मुब्तिला होने के बाद हजरत मरयम के लिए तस्कीन का सिर्फ एक ही जरिया हो सकता था। वह यह कि ख़ुदा का फरिश्ता जाहिर होकर उन्हें यकीन

दिलाए। चुनांचे यही हुआ। ऐन उस वक्त फ़रिश्ते ने आकर आवाज दी कि घबराओ मत। यह सब जो हो रहा है यह ख़ुदा के मंसूबे के तहत हो रहा है। तुम्हारे करीब साफ पानी का चशमा (स्रोत) रवां कर दिया गया है। और खजूर का यह दरख़्त तुम्हें हर वक्त ताजा फल मुहय्या करेगा। इससे खाओ और पियो।

बच्चे के सिलसिले में फरिश्ते ने यह कहकर मुतमइन कर दिया कि ख़ुदा के मोजिजे से पैदा होने वाला यह ख़ुद तुम्हारे दिफ़ाअ (प्रतिरक्षा) के लिए काफी है। तुम बनी इस्राईल के रवाज के मुताबिक चुप का रोजा रख लो। और जब किसी आदमी से तुम्हारा सामना हो और वह तुमसे पूछे तो तुम बच्चे की तरफ इशारा कर दो। वह ख़ुद जवाब देकर तुम्हारी पाकी बयान कर देगा।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا (27) يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا (28)

फिर वह उसे गोद में लिए हुए अपनी कौम के पास आई। लोगों ने कहा, ऐ मरयम, तुमने बड़ा तूफ़ान कर डाला। ऐ हारून की बहिन, न तुम्हारा बाप कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी मां बदकार (बदचलन) थी। (27-28)

फरिश्ते की बात सुनने के बाद हजरत मरयम के अंदर एतमाद पैदा हो गया। वह बच्चे को लेकर अपने ख़ानदान वालों के पास वापस आईं। उन्हें इस हाल में देखकर यहूद के तमाम लोग उन्हें मलामत करने लगे। हजरत मरयम ने वही किया जो फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था। उन्होंने ख़ुद ख़ामोश रहते हुए बच्चे की तरफ इशारा कर दिया। मतलब यह था कि यह लड़का कोई आम किस्म का लड़का नहीं है। और इसका सुबूत यह है कि तुम इससे कलाम करो, वह गोद का बच्चा होने के बावजूद तुम्हारे कलाम को समझेगा और साफ जबान में तुम्हारा जवाब देगा।

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا (29) قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا (30) وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا (31) وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا (32) وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا (33)

फिर मरयम ने उसकी तरफ इशारा किया। लोगों ने कहा, हम इससे किस तरह बात करें जो कि गोद में बच्चा है। बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बंदा हूं। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया। और मैं जहां कहीं भी हूं उसने मुझे बरकत वाला बनाया

है। और उसने मुझे नमाज और जकात की ताकीद की है जब तक मैं जिंदा रहूं। और मुझे मेरी मां का ख़िदमतगुजार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख़्त नहीं बनाया है। और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं जिंदा करके उठाया जाऊंगा। (29-33)

हजरत मरयम के इशारे के बावजूद यहूद की समझ में नहीं आता था कि वे एक छोटे से बच्चे से किस तरह बात करें। उस वक्त हजरत मसीह ख़ुद बोल पड़े। उनकी मोजिजाना गुफ़्तुगू में एक तरफ हजरत मरयम की कामिल बरा-त (विरक्ति) थी। दूसरी तरफ यह एक पेशगी शहादत (गवाही) थी। ताकि यह नोमोलूद (नवजात) जब बड़ा होकर नुबुव्वत का एलान करे तो लोगों के लिए आपकी नुबुव्वत पर शक करने की कोई गुंजाइश बाकी न रहे।

ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ (34) مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَانَهُ إِذَا قَضَى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ (35)

यह है ईसा इब्ने मरयम, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद बनाए। वह पाक है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (34-35)

हजरत मसीह की ग़ैर मामूली पैदाइश एक अनोखा वाकया था। इस अनोखे वाकये की तौजीह में मसीही उलेमा ने अजीब-अजीब अकीदे बना लिए। मगर हमेशा तौजीह की एक हद होती है। और उस हद के अंदर रहकर ही किसी चीज की तौजीह की जा सकती है। हजरत मसीह की ग़ैर मामूली पैदाइश की तौजीह में उन्हें ख़ुदा का बेटा बना देना हद से बाहर जाना है क्योंकि यह ख़ुदा की यकताई (एक होने) के मनाफी है कि उसकी कोई औलाद हो।

साथ ही यह कि कायनात में बेशुमार अनोखे वाकेयात हैं जिन्हें हम रोजाना देखते हैं। इस दुनिया की हर चीज एक अनोखा वाकया है। अब अगर मजीद एक अनोखी चीज सामने आए तो इंसान को यह कहना चाहिए कि ख़ुदा ने जिस तरह दूसरी बेशुमार अनोखी चीजें पैदा की हैं उसी तरह वह इस अनोखी चीज का भी ख़ालिक है जो आज हमारे सामने जाहिर हुई है।

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ (36) فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ (37) أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ (38)

और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर उनके फिरकों (समुदायों) ने आपस में मतभेद किया। पस

इंकार करने वालों के लिए एक बड़े दिन के आने से ख़राबी है। जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे। वे ख़ूब सुनते और ख़ूब देखते होंगे, मगर आज ये जालिम खुली हुई गुमराही में हैं। (36-38)

हजरत मसीह और दूसरे तमाम पैग़म्बरों ने एक ही सिराते मुस्तक़ीम (सन्मार्ग) की तरफ लोगों को बुलाया। वह यह कि आदमी ख़ुदा को अपना रब बनाए और उसी की इबादत करे। मगर हमेशा यह हुआ कि ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तावीलात व तशरीहात के जरिए इस सिराते मुस्तक़ीम से इंहिराफ (भटकाव) किया गया। किसी ने एक बात निकाली और किसी ने दूसरी बात। इस तरह इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) पैदा हुआ और एक दीन कई दीनों में तक्सीम हो गया।

दुनिया में भी हक बात पूरी तरह वाजेह है मगर यहां इंसान को इम्तेहान की वजह से आजादी हासिल है। वह चाहे तो माने और चाहे तो न माने। इस वक़्ती आजादी की वजह से इंसान ग़लतफहमी में पड़ जाता है। और सरकशी करने लगता है। उसे दलाइल (तर्कों) के जरिए बताया जाता है कि ख़ुदा की सिराते मुस्तक़ीम क्या है। मगर वह उसे नहीं मानता। लेकिन आख़िरत में जब आजादी छिन चुकी होगी, इंसान की वही आंखें और वही कान ख़ूब देखने और सुनने वाले बन जाएंगे, जो आज ऐसे मालूम होते हैं गोया कि वे देखना और सुनना जानते ही न हों।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝

और इन लोगों को उस हसरत (प्रश्चाताप) के दिन से डरा दो जब मामले का फैसला कर दिया जाएगा, और वे गफलत में हैं। और वे ईमान नहीं ला रहे हैं। बेशक हम ही जमीन और जमीन के रहने वालों के वारिस होंगे। और लोग हमारी ही तरफ लौटाए जाएंगे। (39-40)

आदमी दुनिया में नाकामी से दो चार होता है तो उसे मौका होता है कि वह दुबारा नई जिंदगी शुरू कर सके। उसके पास साथी और मददगार होते हैं जो उसे संभालने के लिए खड़े हो जाते हैं। मगर आख़िरत की नाकामी ऐसी नाकामी है जिसके बाद दुबारा संभलने का कोई इम्कान नहीं। कैसा अजीब हसरत का लम्हा होगा जब आदमी यह जानेगा कि वह सब कुछ कर सकता था मगर उसने नहीं किया। यहां तक कि करने का वक्त ही ख़त्म हो गया।

सारी ख़राबियों की जड़ यह है कि आदमी यह समझ लेता है कि वह अपना मालिक आप है। मगर हकीकत यह है कि यह सिर्फ एक दर्मियानी वक्फ़ा (अंतराल) है। पहले भी सिर्फ ख़ुदा तमाम चीजों का मालिक था और आख़िर में भी यह सिर्फ ख़ुदा है जो तमाम चीजों का मालिक होगा। ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जिसे यहां हकीकी मअनों में कोई मालिकाना हैसियत हासिल हो।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنكَ شَيْئًا ۝ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ۝ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۝

और किताब में इब्राहीम का जिक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। जब उसने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसी चीज की इबादत क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा इल्म आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊंगा। ऐ मेरे बाप शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान ख़ुदाए रहमान की नाफरमानी करने वाला है। ऐ मेरे बाप, मुझे डर है कि तुम्हें ख़ुदाए रहमान का कोई अजाब पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बनकर रह जाओ। (41-45)

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए। उनके वालिद आजर बुतपरस्त थे। आपको नुबुव्वत मिली तो आपने अपने वालिद को नसीहत की कि बुतों की इबादत छोड़ दो और ख़ुदा की इबादत करो। वर्ना तुम ख़ुदा की पकड़ में आ जाओगे।

शैतान की इबादत का मतलब ख़ुद शैतान की इबादत नहीं है बल्कि शैतान की बताई हुई चीज की इबादत है। इंसान के अंदर फितरी तौर पर यह जज्बा रखा गया है कि वह किसी को ऊंचा दर्जा देकर उसके आगे अपने जज्बाते अकीदत को निसार करे। इस जज्बे का हकीकी मर्कज ख़ुदा है। मगर शैतान मुख़्तलिफ तरीके से लोगों के जेहन को फेरता है। ताकि वह इंसान को मुश्रिक (बहुदेववादी) बना दे, ताकि इंसान ग़ैर ख़ुदा को वह चीज दे दे जो उसे सिर्फ ख़ुदा को देना चाहिए।

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ ۖ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ۝ قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۝ وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ۝

बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या तुम मेरे माबूदों (पूज्यों) से फिर गए हो। अगर तुम बाज न आए तो मैं तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर दूंगा। और तुम मुझसे हमेशा के लिए दूर हो जाओ। इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो। मैं अपने रब

से तुम्हारे लिए बख़्शिश की दुआ करूंगा, बेशक वह मुझ पर महरबान है। और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूं और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। और मैं अपने रब ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (वंचित) नहीं रहूंगा। (46-48)

हजरत इब्राहीम ने जिन बुतों पर तंकीद की, वे सादा मअनों में महज पत्थर के टुकड़े न थे बल्कि वे उन हस्तियों के नुमाइंदे थे जिनकी तिलिस्माती अज्मत माजी (अतीत) की तवील रिवायात के नतीजे में लोगों के जेहनों पर कायम हो चुकी थी। इस तकाबुल में 'नौजवान इब्राहीम' एक मामूली शख़्स नजर आए और इराक के बुत अज्मतों के पहाड़ दिखाई दिए। यही वजह है कि हजरत इब्राहीम के वालिद ने हकारत के साथ उनकी नसीहत को नजरअंदाज कर दिया।

हक की दावत एक मकाम पर शुरू की जाए और फिर वह उस मरहले में पहुंच जाए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ चुके हों मगर वे मानने के बजाए जारिहियत (आक्रामकता) पर उतर आएं तो उस वक्त दाओ अपने मकामे अमल को तब्दील कर देता है। इसी का दूसरा नाम हिजरत है। मकामे अमल की यह तब्दीली कभी करीब के दायरे में होती है और कभी दूर के दायरे में।

दावत का अमल एक ख़ुदाई अमल है। यही वजह है कि वह जब भी शुरू होता है रब्बानी नफ्सियात के साथ शुरू होता है। मदऊ अगर दाओ (आह्वानकर्ता) के साथ जुल्म व हकारत का मामला करे तब भी दाओ के दिल में उसके लिए नर्म गोशा मौजूद रहता है। इसी तरह दाओ अगर अपने माहौल में बेयारोमददगार हो जाए तब भी वह मायूस नहीं होता क्योंकि उसका अस्ल सहारा ख़ुदा होता है। वह यकीन रखता है कि वह बदस्तूर उसके साथ मौजूद है और हमेशा मौजूद रहेगा।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَهَبْنَا لَهٗٓ إِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

पस जब वह लोगों से जुदा हो गया। और उनसे जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक और याकूब अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया। और उन्हें अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (49-50)

आदमी अपने ख़ानदान और अपने गिरोह के साथ जीता है। ऐसी हालत में किसी शख़्स को उसके ख़ानदान और उसके गिरोह से निकाल देना गोया उसे बर्बादी के सहरा में धकेल देना है। मगर हजरत इब्राहीम के वाकये के सूरत में अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए दिखा दिया कि जो बंदा ख़ालिस अल्लाह के लिए बेघर किया जाए उसे अल्लाह अपनी तरफ से

ज्यादा अच्छा घर अता कर देता है। जो शख़्स ख़ालिस अल्लाह के लिए गुमनामी में डाल दिया जाए उसे अल्लाह ज्यादा बड़े पैमाने पर नेक नाम बना देता है।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوسٰىٓ ۚ إِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ أَخَاهُ هٰرُونَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

और किताब में मूसा का जिक्र करो। बेशक वह चुना हुआ था और रसूल नबी था। और हमने उसे कोहे तूर के दाहिनी जानिब से पुकारा और उसे हमने राज की बातें करने के लिए करीब किया। और अपनी रहमत से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया। (51-53)

हजरत मूसा मदयन से चलकर मिस्र जा रहे थे। इस सफर में वह कोहे तूर से गुजरे। वहां ख़ुदा ने उन्हें पैग़म्बरी अता फरमाई। अल्लाह तआला ने पिछले हर दौर में अपने पैग़म्बर मुंतख़ब किए और उनके पास अपना कलाम भेजा। यह कलाम हमेशा जिब्रील फरिश्ते के जरिए आया। मगर हजरत मूसा के साथ यह ख़ुसूसी मामला हुआ कि अल्लाह ने उनसे बराहेरास्त कलाम किया। यह भी हजरत मूसा की ख़ुसूसियत है कि आपके लिए ख़ुदा ने एक अतिरिक्त पैग़म्बर (हजरत हारून) मुकर्रर फरमाया। जो आपका मददगार हो। इस ख़ुसूसियत की वजह शायद वे मख़्सूस हालात हों जिनमें आपको अपना पैग़म्बराना फर्ज अंजाम देना था। क्योंकि आपके सामने एक तरफ फिरऔन जैसा जाबिर बादशाह था और दूसरी तरफ यहूद जैसी कौम जो अपने जवाल (पतन) की आख़िरी हद को पहुंच चुकी थी।

रहमत व नुसरत के ये मामलात अपनी इंतिहाई सूरत में सिर्फ पैग़म्बरों के लिए ख़ास हैं। ताहम अल्लाह अपने मोमिन बंदों के साथ भी दर्जा-ब-दर्जा इसी किस्म का मामला फरमाता है। वह उनके हस्बे इस्तेदाद यथा सामर्थ्य उन्हें अपने किसी काम को करने की तौफीक देता है। वह उन पर ख़ामोशी से अपनी बात इलका करता है। वह उनके लिए ऐसी ख़ुसूसी ताईद का इंतिजाम करता है जो आम हालात में किसी को नहीं मिलतीं।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِسْمٰعِيلَ ۚ إِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۖ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهٗ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

और किताब में इस्माईल का जिक्र करो। वह वादे का सच्चा था और रसूल नबी था। वह अपने लोगों को नमाज और जकात का हुक्म देता था। और अपने रब के नजदीक

पसंदीदा था। और किताब में इदरीस का जिक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। और हमने उसे बुलन्द रुतबे तक पहुंचाया। (54-57)

हज़रत इस्माईल हज़रत इब्राहीम के फ़रज़ंद थे। हज़रत इदरीस एक पैग़म्बर हैं जो ग़ालिबन हजरत नूह से पहले पैदा हुए। इन पैग़म्बरों की दो ख़ास सिफ़तें यहां बयान की गई हैं सच्चा होना, लोगों को नमाज (ख़ुदा की इबादत) और ज़कात (बंदों के हुक़ूक़ की अदायगी) की तलक़ीन करना। इर्शाद हुआ है कि इन सिफ़्तों ने उन्हें ख़ुदा का पसंदीदा बना दिया और वे इंतिहाई आला दर्जे पर पहुंचा दिए गए।

जिन शख़्सियतों को ख़ुदा ने अपनी पैग़म्बरी के लिए चुना। उनके अंदर ये सिफ़तें कमाल दर्जे में मौजूद होती थीं। ताहम आम अहले ईमान से भी यही सिफ़ात मत्लूब हैं और उन्हें भी दर्जा-ब-दर्जा इसके वे समरात (प्रतिफल) हासिल होते हैं जो ख़ुदा ने इन सिफ़तों के लिए अबदी तौर पर मुक़र्रर किए हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ مِن ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِن ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَٰنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ۩

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने पैग़म्बरों में से अपना फ़ज़्ल फ़रमाया। आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था। और इब्राहीम और इस्राईल की नस्ल से और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत बख़्शी और उन्हें मक़बूल बनाया। जब उन्हें ख़ुदाए रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते। (58)

यहां उन पैग़म्बरों की तरफ़ इशारा किया गया है जो आदम की नस्ल, नूह की नस्ल और इब्राहीम की नस्ल में ख़ुसूसियत से पैदा हुए जिन्हें ख़ुदा ने इसका अहल पाया कि उन्हें अपनी ख़ास हिदायत से नवाजे और उन्हें लोगों के सामने अपनी नुमाइंदगी के लिए चुन ले।

इन हजरात पर ख़ुदा ने इतने बड़े-बड़े इनामात क्यों किए। फ़रमाया कि इसकी वजह उनका यह मुशतरक वस्फ़ (साझा गुण) था कि वे ख़ुदा की ख़ुदाई के एहसास में इतना बढ़े हुए थे कि उसका कलाम सुनकर उनका सीना हिल जाता था और वे रोते हुए उसके आगे जमीन पर गिर पड़ते थे।

'रोते हुए सज्दे में गिरना' ख़ुदा की अज़्मत व जलाल (प्रताप) के एतराफ़ का आख़िरी दर्जा है। जिसे यह दर्जा मिले उसने गोया उस ईमान का जायक़ा चखा जो नबियों और रसूलों के लिए ख़ास है।

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ ۖ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا

फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ जानशीन (बुरे उत्तराधिकारी) हुए जिन्होंने नमाज को खो दिया और ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए, पस अनक़रीब वे अपनी ख़राबी को देखेंगे, अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी जरा भी हक़तलफ़ी नहीं की जाएगी। (59-60)

पैग़म्बर की दावत के जरिए जो अफ़राद बनते हैं उनकी नुमायां ख़ुसूसियत यह होती है कि वे ख़्वाहिशपरस्ती से ऊपर उठ जाते हैं। वे अल्लाह को याद करने वाले बन जाते हैं जिसकी एक मुतअय्यन (सुनिश्चित) सूरत का नाम नमाज है। दीन की अस्ल ख़ुदा की याद है। और नमाज उसी ख़ुदा की याद की एक मुनज़्ज़म सूरत।

पैग़म्बरों को मानने वालों की अगली नस्लें अगर ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाएं और ख़्वाहिश के पीछे चलने लगें तो ख़ुदा के नजदीक वे गुमराह लोग हैं। पैग़म्बरों से वाबस्तगी उन्हें कोई फ़ायदा देने वाली नहीं। ऐसे लोग यक़ीनन अपने अंजाम को पहुंचेंगे। उनमें से सिर्फ़ वही लोग बचेंगे जो दुबारा अस्ल दीन की तरफ़ लौटें और हक़ीक़ी मअनों में ईमान और अमले सालेह की जिंदगी इख़्तियार करें।

आख़िरत के लिए कोशिश करने वाले को फ़ौरन अपनी महनतों और क़ुर्बानियों का अंजाम नहीं मिलता। इसलिए कोई शख़्स शुबह कर सकता है कि यह रास्ता ऐसा है जिसमें अमल है मगर अमल का अंजाम नहीं। मगर यह महज ग़लतफ़हमी है। हक़ीक़त यह है कि जिस तरह दुनिया के लिए अमल करने वाले अपने अमल का बदला पाते हैं इसी तरह आख़िरत के लिए अमल करने वाले भी अपने अमल का भरपूर बदला पाएंगे। इस मामले में किसी शक में पड़ने की जरूरत नहीं।

جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَن كَانَ تَقِيًّا

उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है। और यह वादा पूरा होकर रहना है। उसमें वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात नहीं सुनेंगे सिवाए सलाम के। और उसमें उनका रिज़्क़ सुबह व शाम मिलेगा,

यह वह जन्नत है जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाएंगे जो ख़ुदा से डरने वाले हों। (61-63)

मौजूदा दुनिया में इम्तेहान की वजह से हर एक को आजादी मिली हुई है। यहां अच्छाई करने वाले भी आजाद हैं और बुराई करने वाले भी आजाद। इसका नतीजा यह है कि मौजूदा दुनिया में एक सच्चे इंसान को कभी सुकून हासिल नहीं होता। वह जाती तौर चाहे कितना ही ठीक हो मगर दूसरे लोगों की बेठीक बातें उसे सुकून लेने नहीं देतीं। लोग अपनी आजादी से गलत फायदा उठाकर माहौल को गंदी बातों और बुरी आवाजों से भर देते हैं।

जन्नत वह बस्ती है जिससे इस किस्म के तमाम इंसान ख़ारिज कर दिए जाएंगे। वहां सिर्फ वे आला जौक (उच्च रूचि) के लोग आबाद किए जाएंगे जिन्होंने दुनिया में यह सुबूत दिया था कि वे कांटों की मानिंद नहीं जीते बल्कि फूल की मानिंद रहना जानते हैं। ऐसे लोगों के माहौल में जो जिंदगी बनेगी वह बिलाशुबह अबदी सलामती की जन्नत होगी।

दुनिया में लग्व (निकृष्ट) चीजों से बचना और सलामती का पैकर बनकर जिंदगी गुजारना एक सख़्ततरीन अमल है। इसके लिए अपनी आजाद जिंदगी को ख़ुद अपने इरादे से पाबंद जिंदगी बना लेना पड़ता है। यह मुश्किलतरीन कुर्बानी है जिसका सुबूत सिर्फ वह शख़्स दे सकता है जो फिलवाकअ अल्लाह से डरता हो। अल्लाह से डरने वाले ही दुनिया में जन्नती इंसान बनकर रह सकते हैं। और यही वे लोग हैं जो आख़िरत की अबदी जन्नतों में दाख़िल किए जाएंगे।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

और हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से। उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो इसके बीच में है। और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। वह रब है आसमानों का और जमीन का और जो इनके बीच में है, पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी इबादत पर कायम रहो। क्या तुम उसका कोई हमसिफ्त (उसके गुणों जैसा) जानते हो। (64-65)

इस्लामी दावत (आह्वान) जब मुख़ालिफत के दौर में हो तो यह दाओ (आह्वानकर्ता) के लिए बड़ा सख़्त मरहला होता है। दाओ हर रोज चाहता है कि मौजूदा कैफियत को ख़त्म करने के लिए कोई नया इक्दाम किया जाए। जबकि ख़ुदा का हुक्म यह होता है कि सब्र और इंतिजार का तरीका इख़्तियार करो।

ऐसी ही एक कैफियत एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पेश आई। हालात की शिद्दत के पेशेनजर आप ख़ुदा की तरफ से मजीद हिदायत के मुंतजिर थे। मगर एक रिवायत के मुताबिक तकरीबन चालीस दिन तक जिब्रील नहीं आए। फिर जब वह आए तो आपने कहा कि ऐ जिब्रील, इतनी देर क्यों कर दी। उन्होंने जवाब दिया कि हम ख़ुदा की मर्जी के पाबंद हैं। जब ख़ुदा की तरफ से कोई हिदायत मिलती है तो आते हैं और जब हिदायत नहीं मिलती तो नहीं आते।

यह वाकया बयान करके यहां सब्र की तल्कीन की गई है। जो सूरतेहाल जारी है उसे ख़ुदा पूरी तरह देख रहा है। इसके बावजूद अगर उसकी तरफ से नई हिदायत नहीं आ रही है तो इसका मतलब यह है कि उस वक्त यही मत्लूब है कि इस सूरतेहाल को बर्दाश्त किया जाए। अगर हिक्मत का तकाजा कुछ और होता तो यकीनन कोई और हुक्म आता। ख़ुदा से ज्यादा कोई जानने वाला नहीं इसलिए ख़ुदा से बेहतर किसी की रहनुमाई भी नहीं हो सकती।

'रुकने' वाले हालात में 'इक्दाम' (पहल) की आयत तलाश करना सही नहीं। ऐसा करना गोया उस हुक्म को वक्त से पहले उतारने की कोशिश करना है जो अभी आदमी के लिए नहीं उतरा।

وَيَقُولُ الْإِنسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

और इंसान कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर जिंदा करके निकाला जाऊंगा। क्या इंसान को याद नहीं आता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था। पस तेरे रब की कसम, हम उन्हें जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उन्हें जहन्नम के गिर्द इस तरह हाजिर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे। (66-68)

अरब के लोग जो कुरआन के पहले मुख़ातब थे वे जिंदगी बाद मौत को मानते थे। मगर यह मानना सिर्फ रस्मी मानना था, वह हकीकी मानना न था। कुरआन में आख़िरत (परलोक) से मुतअल्लिक जितने अल्फाज हैं वे सब पहले से उनकी जबान में मौजूद थे। मगर उनकी जिंदगी पर इस मानने का कोई असर न था। उनकी अमली जिंदगी ऐसी थी गोया कि वे जबानेहाल से कह रहे हों कि जिंदगी तो बस यही दुनिया की जिंदगी है। मरने के बाद कौन हमें उठाएगा और कौन हमारा हिसाब लेगा।

मगर यह ग़फलत या इंकार सिर्फ इसलिए है कि आदमी संजीदगी के साथ ग़ौर नहीं करता। अगर वह ग़ौर करे तो उसकी पहली पैदाइश ही उसके लिए उसकी दूसरी पैदाइश की दलील बन जाए।

यहां 'शयातीन' से मुराद बुरे लीडर हैं। ये लीडर पुरफरेब अल्फाज बोल कर अवाम को बहकाते हैं। इस एतबार से वे वही काम करते हैं जो शैतान करता है। मौजूदा दुनिया में ये

लीडर अज़्मत के मक़ाम पर खड़े हुए नज़र आते हैं। इसलिए लोग उन्हें नज़रअंदाज नहीं कर पाते। मगर आख़िरत में उनकी अज़्मत ख़त्म हो जाएगी। वहां ये बड़े लोग भी उसी तरह ज़िल्लत के गढ़े में डाल दिए जाएंगे जिस तरह उनके छोटे लोग।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुकाबले में सबसे ज्यादा सरकश बने हुए थे। फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने के ज्यादा मुस्तहिक़ हैं और तुम में से कोई नहीं जिसका उस पर से गुज़र न हो, यह तेरे रब के ऊपर लाज़िम है जो पूरा होकर रहेगा। फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और ज़ालिमों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे। (69-72)

हक को न मानना जुर्म है मगर हक को न मानने की तहरीक चलाना इससे भी ज्यादा बड़ा जुर्म है। जो लोग हक के ख़िलाफ तहरीक के क़ायद बने वे ख़ुदा की नज़र में बदतरीन सज़ा के मुस्तहिक़ हैं। उन्हें आख़िरत में आम लोगों के मुक़ाबले में दुगनी सज़ा दी जाएगी।

क़ुरआन के अल्फ़ाज से और कुछ रिवायात से यह मालूम होता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन तमाम लोगों को जहन्नम से गुज़ारेगा। यह गुज़रना जहन्नम के अंदर से नहीं होगा बल्कि उसके ऊपर से होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे गहरे दरिया के ऊपर आदमी खुले पुल के ज़रिए गुज़र जाता है। वह दरिया की ख़तरनाक मौजों को देखता है मगर वह उसमें ग़र्क़ नहीं होता। इसी तरह क़ियामत के दिन तमाम लोग जहन्नम के ऊपर से गुज़रेंगे। जो नेक लोग हैं वे आगे जाकर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। और जो बुरे लोग हैं वे आगे न बढ़ सकेंगे। जहन्नम उन्हें पहचान कर उन्हें अपनी तरफ़ खींच लेगी।

इस तजर्बे का मक्सद यह होगा कि जन्नत में दाख़िल किए जाने वाले लोग ख़ुदा की उस अज़ीम नेमत का वाकई एहसास कर सकें कि उसने कैसी बुरी जगह से बचा कर उन्हें कैसी बेहतर जगह पहुंचा दिया है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿٧٤﴾

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इंकार करने वाले ईमान लाने

वालों से कहते हैं कि दोनों गिरोहों में से कौन बेहतर हालत में है और किस की मज्लिस ज्यादा अच्छी है। और उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं जो उनसे ज्यादा असबाब (संसाधन) वाली और उनसे ज्यादा शान वाली थीं। (73-74)

जो लोग हक नाहक की बहस में न पड़ें। जो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की मस्लेहतों को अहमियत दें। जो ख़ुदा को ख़ुश करने से ज्यादा अवाम को ख़ुश करने का एहतिमाम करते हों। ऐसे लोग हमेशा ज्यादा कामयाब रहते हैं। उनके गिर्द ज्यादा रौनक और शान जमा हो जाती है। दूसरी तरफ़ जो लोग हर मामले में यह देखें कि हक क्या है और नाहक क्या। जो दुनिया की मस्लेहतों (हितों) को नज़रअंदाज करें और आख़िरत की मस्लेहतों को तरजीह दें। जो अवामी रुज्हान से ज्यादा ख़ुदा का लिहाज करें। ऐसे लोग अक्सर ज़ाहिरी शान व शौकत वाली चीज़ों से महरूम रहते हैं।

यह फ़र्क़ बहुत से लोगों के लिए ग़लतफ़हमी का सबब बन जाता है। वे समझते हैं कि जो लोग दुनियावी एतबार से बेहतर हैं वे ख़ुदा के पसंदीदा हैं और जो लोग दुनियावी एतबार से बेहतर नहीं वे ख़ुदा के नज़दीक नापसंदीदा हैं। मगर यह मेयार सरासर ग़लत है। और माज़ी की तारीख़ इसकी तरदीद (खंडन) करने के लिए काफ़ी है। कितने पुरफ़ख़्र सर ज़मीन के नीचे दफ्न हो गए। कितने महल हैं जो आज खंडहर के सिवा किसी और सूरत में देखने वालों को नज़र नहीं आते।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

कहो कि जो शख़्स गुमराही में होता है तो रहमान उसे ढील दिया करता है यहां तक कि जब वे देख लेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, अज़ाब या क़ियामत, तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि किस का हाल बुरा है और किस का जत्था कमज़ोर। (75)

सरकश आदमी को सरकशी का मौक़ा मिलना मोहलते इम्तेहान की वजह से होता है न कि किसी हक (अधिकार) की बिना पर। मगर अक्सर ऐसा होता है कि आदमी इस फ़र्क़ को समझ नहीं पाता। वह वक़्ती मोहलत को अपनी मुस्तक़िल हालत समझ लेता है। उस की आंख उस वक़्त तक नहीं खुलती जब तक मुद्दत के ख़ात्मे का एलान न हो जाए और उससे सरकशी का हक छीन न लिया जाए।

ख़ुदा अपनी मस्लेहत के तहत किसी को दुनिया ही में यह तजर्बा करा देता है। कोई इसी हाल पर बाक़ी रहता है। यहां तक मौत उसे वह चीज़ दिखा देती है जिसे वह ज़िंदगी में देखने के लिए तैयार न हुआ था।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا

और अल्लाह हिदायत पकड़ने वालों की हिदायत में इजाफ़ा करता है और बाक़ी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक अज्र (प्रतिफल) के एतबार से बेहतर हैं और अंजाम के एतबार से भी बेहतर। (76)

हिदायतयाब होना यह है कि आदमी का शुऊर सही रुख़ पर जाग उठे। ऐसे आदमी के सामने कोई सूरतेहाल आती है तो वह उसकी सही तौजीह करके उसे अपनी ग़िज़ा बना लेता है। इस तरह उसकी हिदायत में यकीन और कैफ़ियत के एतबार से बराबर इजाफ़ा होता रहता है। उसकी हिदायत जामिद (स्थिर) चट्टान की तरह नहीं होती बल्कि जिंदा दरख़्त की मानिंद होती है जो बराबर बढ़ता चला जाए।

जिस तरह दुनिया के पेशेनजर अमल करने वाला बराबर तरक्की करता रहता है, इसी तरह आख़िरत को सामने रखकर अमल करने वाले का अमल भी मुसलसल इजाफ़ा पजीर (वृद्धिशील) है। यह इजाफ़ा पजीरी चूंकि आख़िरत में ज़ख़ीरा हो रही है। इसलिए वह दुनिया में नजर नहीं आती। मगर कियामत जब पर्दा फाड़ देगी तो हर आदमी देख लेगा कि हिदायत पाने वाले की हिदायत किस तरह बढ़ रही थी और इसी के साथ उसका अमल भी।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا

क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे माल और औलाद मिलकर रहेंगे। क्या उसने ग़ैब में झांक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई अहद (वचन) ले लिया है, हरगिज नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और उसकी सजा में इजाफ़ा करेंगे। और जिन चीजों का वह दावेदार है उसके वारिस हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा। (77-80)

जब आदमी के पास दौलत और ताकत का कोई हिस्सा आता है तो उसके अंदर ग़लत किस्म की ख़ुदएतमादी पैदा हो जाती है। वह ऐसी रविश इख़्तियार करता है जो उसकी वाकई हैसियत से मुताबिकत नहीं रखती। वह ऐसी बातें बोलने लगता है जो उसे नहीं बोलना चाहिए।

ऐसा ही एक वाकया मक्का में हुआ। आस बिन वाइल मक्का का एक मुश्रिक सरदार

था। हजरत ख़ब्बाब बिन अल अरत की कुछ रकम उसके जिम्मे बाकी थी। उन्होंने रकम का मुतालबा किया तो आस बिन वाइल ने कहा कि मैं तुम्हारी रकम उस वक्त दूंगा जबकि तुम मुहम्मद का इंकार करो। उनकी जबान से निकला कि मैं हरगिज मुहम्मद का इंकार नहीं करूंगा यहां तक कि तुम मरो और फिर पैदा हो। आस बिन वाइल ने यह सुनकर कहा कि जब मैं दुबारा पैदा हूंगा तो वहां भी मैं माल और औलाद का मालिक रहूंगा, उस वक्त तुम मुझसे अपनी रकम ले लेना।

यह सब झूठी ख़ुदएतमादी की बातें हैं और झूठी ख़ुदएतमादी किसी के कुछ काम आने वाली नहीं।

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا

और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद (पूज्य) बनाए हैं ताकि वे उनके लिए मदद बनें। हरगिज नहीं, वे उनकी इबादत का इंकार करेंगे और उनके मुख़ालिफ़ बन जाएंगे। (81-82)

इंसान यह चाहता है कि वह दुनिया में जो चाहे करे, मगर उसे उसकी बदअमली का अंजाम न भुगतना पड़े। इस किस्म की हिफ़ाजत किसी को अल्लाह से नहीं मिल सकती थी। इसलिए उसने ऐसी हस्तियां तज्वीज कर लीं जो अल्लाह की महबूब हों और उसकी तरफ से अल्लाह के यहां सिफ़ारिशी बन सकें।

मगर यह सब बेबुनियाद कयासात (अनुमान) हैं जो किसी के कुछ काम आने वाले नहीं। यहां तक कि वे हस्तियां जिन्हें आदमी ने शरीक फर्ज करके उनके लिए इबादती मरासिम (रस्में) अदा किए थे वे भी कियामत के दिन उससे बरा-त (विरक्ति) करेंगे। इंसान को उनसे नफरत के सिवा और कुछ हासिल न हो सकेगा।

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ وَفْدًا وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا لَّا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने मुंकिरों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वे उन्हें ख़ूब उभार रहे हैं। पस तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं। जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की तरफ महमान बनाकर जमा करेंगे। और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ प्यासा हांकेंगे। किसी को शफ़ाअत का इख़्तियार न होगा मगर उसे जिसने रहमान के पास से इजाजत ली हो। (83-87)

आदमी के सामने हक अपनी वाजेह सूरत में आए मगर वह उसे नजरअंदाज कर दे तो ऐसा अमल शैतान को अपने अंदर राह देने का सबब बन जाता है। इसके बाद आदमी का जेहन बिल्कुल मुख़ालिफ सम्त में चल पड़ता है। अब हर दलील उसके जेहन में जाकर उलट जाती है। ख़ुदा की निशानियां उसके सामने आती हैं। मगर वह उनकी ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तौजीह करके उन्हें अपनी सरकशी की ग़िजा बना लेता है।

जो शख़्स झूठे सहारों को अपना सहारा समझ ले वह हमेशा इसी किस्म की नादानी में मुब्तिला हो जाता है। मगर जो अल्लाह से डरने वाले हैं वे सिर्फ अल्लाह को अपना सहारा समझते हैं। अल्लाह का डर उनकी नजर से उन तमाम हस्तियों को हटा देता है जिन्हें झूठा सहारा बनाकर लोग गुमराह होते हैं। यही वे लोग हैं जो आख़िरत में अल्लाह के बाइज्जत महमान बनाए जाएंगे।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है। यह तुमने बड़ी संगीन बात कही है। करीब है कि इससे आसमान फट पड़ें और जमीन टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें, इस पर कि लोग रहमान की तरफ औलाद की निस्बत करते हैं। हालांकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। (88-92)

ख़ुदा के लिए औलाद मानना दो वजहों से हो सकता है। या तो यह कि ख़ुदा को अपने लिए मददगार की जरूरत है। या वह आम इंसानों की तरह औलाद की तमन्ना रखता है। इसलिए उसने अपनी औलाद बनाई है। ये दोनों बातें बेबुनियाद हैं।

जमीन व आसमान की बनावट इतनी कामिल है कि यह बिल्कुल नाकाबिले तसव्वुर (अकल्पनीय) है कि उसे बनाने और चलाने वाला ख़ुदा ऐसा हो जो इंसानों की तरह की कमियां अपने अंदर रखता हो। मख़्लूकात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ करा रही हैं उसमें ख़ुदा की औलाद का तसव्वुर किसी तरह चसपां नहीं होता।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

आसमानों और जमीन में कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए। उसके पास

उनका शुमार है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है और उनमें से हर एक कियामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनके लिए ख़ुदा मुहब्बत पैदा कर देगा। (93-96)

अक्सर ऐसा होता है कि जो लोग बेआमेज (विशुद्ध) हक को लेकर उठते हैं वे अवाम के नजदीक मबग़ूज (अप्रिय) होकर रह जाते हैं। मिलावटी सच्चाई पर कायम होने वाले लोग बेमिलावट वाली सच्चाई के अलमबरदार को वहशत की नजर से देखने लगते हैं।

मगर यह सिर्फ मौजूदा दुनिया का मामला है। आख़िरत का मामला इसके बिल्कुल मुख़ालिफ होगा। वहां का सारा माहौल उन्हीं लोगों के साथ होगा जो बेआमेज (विशुद्ध) हक पर अपने आपको खड़ा करें। आख़िरत की दुनिया में इज्जत और मकबूलियत तमामतर उन अशख़ास (लोगों) के हिस्से में आएगी जिन्होंने मौजूदा दुनिया की इज्जत व मकबूलियत से बेपरवाह होकर अपने आपको बेआमेज (विशुद्ध) सच्चाई के साथ वाबस्ता किया था।

मिलावटी सच्चाई की दुनिया में मिलावटी सच्चाई पर खड़ा होने वाला इज्जत पाता है। इसी तरह बेआमेज सच्चाई की दुनिया में उसे इज्जत मिलेगी जो बेआमेज सच्चाई की जमीन पर खड़ा हुआ था।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

पस हमने इस कुरआन को तुम्हारी जबान में इसलिए आसान कर दिया है कि तुम मुत्तकियों (ईश-परायण लोगों) को ख़ुशख़बरी सुना दो। और हठधर्म लोगों को डरा दो। और इनसे पहले हम कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं। क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो। (97-98)

ख़ुदा की किताब इंसान की काबिलेफ़हम जबान में है। इसी के साथ उसके मजामीन में उन तमाम पहलुओं की पूरी रिआयत मौजूद है जो किसी किताब को इस काबिल बनाते हैं कि वह उससे रहनुमाई ले सके। मगर इन सबके बावजूद कुरआन उन्हीं लोगों के लिए रहनुमाई का जरिया बनता है जो संजीदा हों और जिन्हें यह खटक हो कि वे हक और नाहक को जानें। वे नाहक (असत्य) से बचें और हक (सत्य) के मुताबिक अपनी जिंदगी की तामीर करें। जो लोग संजीदगी और तलब से ख़ाली हों वे कुरआन की तालीमात को सुनकर सिर्फ बेमअना बहसें करेंगे, वे उससे कोई फायदा हासिल नहीं कर सकते।

जो लोग हक की दावत के मुख़ालिफ बनकर खड़े होते हैं वे हमेशा इस ग़लतफ़हमी में रहते हैं कि ऐसा करने से उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। उनके आसपास मुख़ालिफीने हक

की तबाही के वाक़ेयात मौजूद होते हैं मगर वे उनसे इबरत (सीख) नहीं लेते। वे आख़िर वक्त तक यही समझते हैं कि जो कुछ हुआ वह सिर्फ दूसरों के लिए था। उनके अपने साथ कुछ होने वाला नहीं।

मगर अल्लाह के कानून में कोई इस्तिसना (अपवाद) नहीं। यहां हर आदमी के साथ वही होने वाला है जो दूसरे के साथ हुआ, अच्छों के लिए अच्छा और बुरों के लिए बुरा।

سُورَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَخَمْسٌ وَثَلٰثُونَ آيَةً وَثَمَانُ رُكُوعَاتٍ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ۚ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلَى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾

आयतें-135 — **सूरह-20. ता० हा०** — रुकूअ-8

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० हा०। हमने कुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए जो डरता हो। यह उसकी तरफ से उतारा गया है जिसने जमीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है। वह रहमत वाला है, अर्श पर कायम है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और जो इन दोनों के दर्मियान है और जो कुछ जमीन के नीचे है। (1-6)

कुरआन अगरचे सिर्फ एक याददिहानी (अनुस्मरण) है। मगर वह मदऊ (संबंधित व्यक्ति) के लिए काबिलेहुज्जत याददिहानी उस वक्त बनता है जबकि उसकी दावत देने वाला अपने आपको उसकी राह में खपा दे। दूसरों की ख़ैरख़्वाही में वह अपने आपको इस हद तक नजरअंदाज कर दे कि यह कहा जाए कि इसने तो लोगों को हक (सत्य) की राह पर लाने के ख़ातिर अपने आपको मशक्कत में डाल लिया।

ताहम दावत (आह्वान) को चाहे कितना ही कामिल और मेयारी अंदाज में पेश कर दिया जाए, अमलन उससे हिदायत सिर्फ उस ख़ुदा के बंदे को मिलती है जो हक शनास (सत्य को पहचानने वाला) हो। जिसके अंदर यह सलाहियत हो कि दलील की सतह पर बात का वाजेह होना ही उसकी आंख खोलने के लिए काफी हो जाए।

जिस हस्ती ने आलम की तख़्लीक की है उसी ने कुरआन को भी नाजिल किया है। इसलिए कुरआन और फितरत में कोई तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। कुरआन एक ऐसी हकीकत की याददिहानी है जिसे पहचानने की सलाहियत फितरते इंसानी के अंदर पहले से मौजूद है।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾

और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई बात को जानता है। और इससे ज्यादा छुपी बात को भी। वह अल्लाह है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तमाम अच्छे नाम उसी के हैं। (7-8)

दुनिया में एक तरफ वे लोग हैं जिनका मजहब दुनिया से साजगारी होता है। दूसरी तरफ बेआमेज (विशुद्ध) हक का दाई है जिसका मजहब ख़ुदा से साजगारी पर कायम होता है। पहला गिरोह अपने माहौल में हर तरफ अपने साथी और मददगार पा लेता है। उसे कभी तंहा होने का एहसास नहीं होता। इसके बरअक्स हक का दाई जिस माबूद (पूज्य) के ऊपर खड़ा हुआ है वह आंखों से ओझल होता है। हालात के तूफान में बार-बार उसका दिल तड़प उठता है। वह कभी अपने दिल में ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह होता है और कभी उसकी जबान से बआवाज बुलन्द दुआ के कलिमात निकल जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि इस भरी हुई दुनिया में वह अकेला है। कोई उसका साथी और मददगार नहीं।

मगर यह सिर्फ जाहिरी हालत है। हकीकत के एतबार से हक का दाई (आह्वानकर्ता) सबसे ज्यादा मजबूत सहारे पर खड़ा हुआ होता है। वह ऐसे ख़ुदा को पुकार रहा है जो तंहाई के अल्फाज और दिल की सरगोशियों तक से बाख़बर है। वह उस ख़ुदा को अपना सहारा बनाए हुए है जो उन तमाम काबिले कयास (कल्पनीय) और नाकाबिले कयास कुव्वतों का मालिक है जो किसी की मदद के लिए दरकार हैं।

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿٩﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾

और क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊं या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए। (9-10)

हजरत मूसा मिस्र में पैदा हुए। वहां एक मौके पर एक किबती उनके हाथ से हलाक हो गया। इसके बाद वह मिस्र से निकल कर मदयन चले गए। वहां वह कई साल तक रहे। वहीं एक ख़ातून से निकाह किया और फिर अपनी अहलिया (पत्नी) को लेकर वापस मिस्र के लिए रवाना हो गए। उस वक्त आपके साथ बकरियां भी थीं।

हजरत मूसा इस सफर में सीना प्रायद्वीप के जुनूब (दक्षिण) में वादी तूर के इलाके से

गुजर रहे थे। रात हुई तो तारीकी में रास्ते का अंदाजा नहीं हो रहा था। मजीद यह कि यह सख़्त सर्दी का मौसम था। इसी दौरान उन्हें दिखाई दिया कि दूर एक आग जल रही है। यह देखकर हजरत मूसा उसके रुख़ पर रवाना हुए ताकि सर्दी का मुकाबला करने के लिए आग हासिल करें और वहां कुछ लोग हों तो उनसे रास्ता मालूम करें।

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾

फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि ऐ मूसा। मैं ही तुम्हारा रब हूं, पस तुम अपने जूते उतार दो क्योंकि तुम तुवा की मुकद्दस (पवित्र) वादी में हो। और मैंने तुम्हें चुन लिया है। पस जो 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनो। मैं ही अल्लाह हूं। मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज क़ायम करो। बेशक क़ियामत आने वाली है। मैं उसे छुपाए रखना चाहता हूं। ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिले। पस इससे तुम्हें वह शख़्स गाफ़िल न कर दे जो इस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशों पर चलता है कि तुम हलाक हो जाओ। (11-16)

हजरत मूसा को जो आग नजर आई वह आम किस्म की आग नहीं थी बल्कि ख़ुदा की तजल्ली (आलोक) थी। चुनांचे जब वे वहां पहुंचे तो उन्हें एहसास दिलाया गया कि वह इस वक्त कहां हैं। उन्हें तवाजोअ (आदर) के साथ पूरी तरह मुतवज्जह होने के लिए जूते उतारने का हुक्म हुआ। फिर आवाज आई कि इस वक्त तुम ख़ुदा से हमकलाम हो और ख़ुदा ने तुम्हें अपनी पैग़म्बरी के लिए चुना है।

उस वक्त हजरत मूसा को जो तालीम दी गई वह वही थी जो तमाम पैग़म्बरों को हमेशा तालीम की गई है। यानी एक ख़ुदा को माबूद (पूज्य) बनाना। उसी की इबादत करना। उसी को हर मौके पर याद रखना। फिर हजरत मूसा को जिंदगी की इस हकीकत की ख़बर दी गई कि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। एक ख़ास मुद्दत तक के लिए ख़ुदा ने हकीकतों को ग़ैब में छुपा दिया है। कियामत में यह पर्दा फट जाएगा। इसके बाद इंसानी जिंदगी का अगला दौर शुरू होगा जिसमें हर आदमी उस अमल के मुताबिक मकाम पाएगा जो उसने मौजूदा दुनिया में किया था।

जब एक आदमी पर ख़्वाहिशों का ग़लबा होता है और वह आख़िरत से बेपरवाह होकर दुनिया के रास्तों में चल पड़ता है तो वह अपने इस फेअल (कृत्य) को हक बजानिब साबित करने के लिए नजरियात वजअ करता है। वह अपनी रविश को ख़ूबसूरत अल्फ़ाज में बयान करता है। उसे सुनकर दूसरे लोग भी आख़िरत से ग़ाफिल हो जाते हैं। ऐसी हालत में मोमिन को अपने बारे में सख़्त चौकन्ना रहने की जरूरत है। उसे अपने आपको इससे बचाना है कि वह ख़ुदा से ग़ाफिल और आख़िरत फरामोश लोगों को देखकर उनसे मुतअस्सिर (प्रभावित) हो जाए। या उनकी ख़ूबसूरत बातों के फरेब में आकर आख़िरतपसंदाना जिंदगी को खो बैठे।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾

और यह तुम्हारे हाथ में क्या है ऐ मूसा, उसने कहा, यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं। इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं। फरमाया कि ऐ मूसा इसे जमीन पर डाल दो। उसने उसे डाल दिया तो यकायक वह एक दौड़ता हुआ सांप बन गया। फरमाया कि इसे पकड़ लो और मत डरो, हम फिर इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे। (17-21)

'तुम्हारे हाथ में क्या है' यह सवाल हजरत मूसा के शुऊर को जिंदा करने के लिए था। इसका मक्सद यह था कि लाठी का लाठी होना हजरत मूसा के जेहन में ताजा हो जाए। ताकि अगले लम्हे जब वह ख़ुदा की कुदरत से सांप बन जाए तो वह पूरी तरह उसकी कद्र व कीमत का एहसास कर सकें।

हजरत मूसा की लकड़ी का सांप बन जाना वैसा ही एक अनोखा वाकया था जैसा मिट्टी और पानी का लकड़ी बन जाना। वह सब कुछ जो हम जमीन पर देख रहे हैं वह सब एक चीज से दूसरी चीज में तब्दील हो जाने का ही दूसरा नाम है गैस का पानी में तब्दील होना, मिट्टी का दरख़्त में तब्दील होना वग़ैरह। आम हालात में तब्दीली का यह अमल क्रमवत होता है। इसलिए इंसान उसे महसूस नहीं कर पाता। हजरत मूसा की लकड़ी ने यकायक सांप की सूरत इख़्तियार कर ली इसलिए वह अजीब मालूम होने लगी।

हकीकत यह है कि इस दुनिया में जो कुछ है या हो रहा है वह सब का सब ख़ुदा का मोजिजा (चमत्कार) है। चाहे वह जमीन से लकड़ी का निकलना हो या लकड़ी का सांप बन जाना। पैग़म्बरों के जरिए 'ग़ैर मामूली' मोजिजा सिर्फ इसलिए दिखाया जाता है ताकि आदमी 'मामूली' (Monotonous) मोजिजात को देखने के काबिल हो जाए।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾ اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾

और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है। ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियां तुम्हें दिखाएं। तुम फिरऔन के पास जाओ। वह हद से निकल गया है। (22-24)

पिछले नबियों के वाकेयात बाइबल में भी हैं और कुरआन में भी। मगर बहुत से मकामात पर कुरआन और बाइबल में बहुत बामअना फ़र्क़ है। मसलन यहां बाइबल में है मूसा ने अपना हाथ अपने सीने पर रखकर उसे ढांक लिया और जब उसने उसे निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ की मानिंद सफेद था। (ख़ुरूज 4 : 7)

बाइबल हजरत मूसा के हाथ की सफेदी को 'कोढ़' बता रही है। ऐसी हालत में कुरआन में यदबेजा के मोजिजे को बयान करते हुए 'मिन ग़ैरि सू' का इजाफा वाज़ेह तौर पर बता रहा है कि कुरआन बाइबल से माख़ूज (उद्धृत) नहीं है। बल्कि यह ख़ुदाए आलिमुलग़ैब की तरफ से है जो बाइबल की तहरीफात (परिवर्तनों) को सही कर रहा है।

हजरत मूसा को दो ख़ास मोजिजे दिए गए। सांप का मोजिजा आपके लिए गोया ताक़त की अलामत था। और यदबेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा इस बात की अलामत कि आप एक रौशन सदाक़त पर क़ायम हैं।

फिरऔन का हद से गुजर जाना यह था कि उसे इक्तेदार (सत्ता) मिला तो उसने अपने को ख़ुदा समझ लिया। फिरऔन के लफ़्जी मअना हैं सूरज की औलाद। क़दीम मिस्री सूरज को सबसे बड़ा देवता (रब्बे आला) समझते थे। चुनांचे फिरऔन ने अपने को सूर्य देवता का जमीनी मजहर (प्रतीक) बताया। उसने अपने स्टेचू और बुत बनवा कर मिस्र के तमाम शहरों में रखवा दिए जो बाकायदा पूजे जाते थे।

इक्तेदार ख़ुदा की एक नेमत है। इस नेमत को पाकर आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा उभरना चाहिए। मगर सरकश इंसान इक्तेदार को पाकर ख़ुद अपने आपको ख़ुदा समझ लेता है।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾ هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾ وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾ وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾ إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी जबान की गिरह खोल दे। ताकि लोग मेरी बात समझें। और मेरे ख़ानदान से मेरे लिए एक मुआविन (सहायक) मुकर्रर कर दे, हारून को जो मेरा भाई है। उसके जरिए से मेरी कमर को मजबूत कर दे। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे ताकि हम दोनों कसरत (अधिकता) से तेरी पाकी बयान करें और कसरत से तेरा चर्चा करें। बेशक तू हमें देख रहा है। फरमाया कि दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा तुम्हारा सवाल। (25-36)

पैग़म्बरी मिलने के बाद एक सूरत यह थी कि हजरत मूसा के अंदर अहसासे फख़्र पैदा हो। मगर उस वक्त उन्होंने जो कुछ अल्लाह से मांगा उससे जाहिर होता है कि उन्होंने पैग़म्बरी को फख़्र की चीज नहीं समझा बल्कि जिम्मेदारी की चीज समझा। उस वक्त उन्होंने जो अल्फ़ाज कहे वे सब वे हैं जो दावत (सत्य का आह्वान) की नाज़ुक जिम्मेदारी का एहसास करने वाले की जबान से निकलते हैं।

दाऔ के लिए सीने का खुलना यह है कि हस्बे मौका उसके अंदर प्रभावशाली मजामीन का वुरूद (जाप) हो। मामले का आसान होना यह है कि मुख़ालिफीन कभी दावत की राह बंद करने में कामयाब न हो सकें। जबान की गिरह खुलना यह है कि बड़े-बड़े मजमे में बिला झिझक दावत पेश करने का मलका पैदा हो जाए। अल्लाह तआला ने हजरत मूसा को पैगम्बराना जिम्मेदारी अदा करने के लिए ये सब कुछ दिया। इसी के साथ उनकी दरख़्वास्त के मुताबिक उनके भाई को उनके लिए एक ताकतवर मुआविन (सहायक) बना दिया।

नुसरत मदद का यह ख़ुसूसी मामला जो पैग़म्बर के साथ किया गया यही ग़ैर पैग़म्बर दाऔ के लिए भी हो सकता है बशर्ते कि वह दावत के काम से अपने आपको इस तरह कामिल तौर पर वाबस्ता करे जिस तरह पैग़म्बर ने अपने आपको कामिल तौर पर वाबस्ता किया था।

'तस्बीह और जिक्र' ही दीन का अस्ल मक्सूद है। मगर तस्बीह और जिक्र से मुराद किसी किस्म का लफ़्जी विर्द (जाप) नहीं है। इससे मुराद वह कैफियत है जो हक की याफ्त के बाद बिल्कुल कुदरती तौर पर पैदा होती है। उस वक्त इंसान का वजूद अल्लाह के सिफ़ाते कमाल का इस तरह तजर्बा करता है कि वह उसमें नहा उठता है। वह ख़ुदाई एहसास से इस तरह सरशार होता है कि वह उसका मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन जाता है।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾ أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِي وَعَدُوٌّ لَهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾ إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ

هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ﴿٤٠﴾

और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया है जबकि हमने तुम्हारी मां की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की जो 'वही' की जा रही है, कि उसे संदूक में रखो, फिर उसे दरिया में डाल दो, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल दे। उसे एक शख़्स उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन है। और मैंने अपनी तरफ से तुम पर एक मुहब्बत डाल दी। और ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ। जबकि तुम्हारी बहिन चलती हुई आई, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूं जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे। पस हमने तुम्हें तुम्हारी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंख ठंडी हो और उसे ग़म न रहे। और तुमने एक शख़्स को कत्ल कर दिया। फिर हमने तुम्हें इस ग़म से नजात दी। और हमने तुम्हें ख़ूब जांचा। फिर तुम कई साल मदयन वालों में रहे। फिर तुम एक अंदाजे पर आ गए ऐ मूसा। (37-40)

मिस्र के अस्ल बाशिंदे किबती थे जिनका सियासी और मजहबी नुमाइंदा फिरऔन था। वहां की दूसरी कौम बनी इस्राईल थी जो हजरत यूसुफ के जमाने में बाहर से आकर यहां आबाद हुई थी। हजरत मूसा जिस जमाने में बनी इस्राईल के एक घर में पैदा हुए। उस जमाने में फिरऔन ने इस्राईल की नस्ल ख़त्म करने के लिए यह हुक्म दे दिया था कि इस्राईल के घरों में जितने बच्चे पैदा हों सब कत्ल कर दिए जाएं। हजरत मूसा की मां ने बच्चे को कत्ल से बचाने के लिए ख़ुदाई इल्हाम के तहत यह किया कि उसे टोकरी में रखकर दरियाए नील में डाल दिया।

यह टोकरी बहते हुए फिरऔन के महल के पास पहुंची। वहां फिरऔन और उसकी बीवी ने उसे देखा तो उन्हें छोटे बच्चे पर रहम आ गया। उन्होंने उसे निकाल कर महल के अंदर रख लिया। इसके बाद हजरत मूसा की बहिन की निशानदेही पर आपकी मां आपको दूध पिलाने के लिए मुकर्रर हुईं। यह ख़ुदा का एक करिश्मा है कि जिस फिरऔन को मूसा का सबसे बड़ा दुश्मन बनना था उसी फिरऔन के जरिए हजरत मूसा की परवरिश और तर्बियत कराई गई।

हजरत मूसा बड़े हुए तो एक किबती और एक इस्राईली के झगड़े में उन्होंने किबती को तंबीह की। अप्रत्याशित तौर पर वह किबती मर गया। इसके बाद हुकूमत की तरफ से हुक्म जारी हुआ कि मूसा को गिरफ्तार कर लिया जाए। मगर हजरत मूसा ख़ुफिया तौर पर मिस्र से निकल कर मदयन चले गए। वहां के सहराई माहौल में वह जिंदगी के मजीद तजर्बात से

आशना हुए। किबती की हलाकत के बाद हजरत मूसा ने अल्लाह तआला से ग़ैर मामूली दुआएं कीं। इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने इस हादसे को उनके लिए मजीद तर्बियत और तालीम का जरिया बना दिया।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ﴿٤١﴾ اذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ﴿٤٢﴾ اذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

और मैंने तुम्हें अपने लिए मुंतख़ब किया। जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ। और तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना। तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है। पस उससे नर्मी के साथ बात करना, शायद वह नसीहत कुबूल करे या डर जाए। (41-44)

मुख़्तलिफ तजर्बात से गुजर कर हजरत मूसा जब तकमीले शुऊर के आख़िरी मरहले में पहुंच गए तो अल्लाह तआला ने उन्हें पैग़म्बराना दावत की जिम्मेदारी सौंप दी। उस वक्त हजरत मूसा को दो ख़ास नसीहतें की गईं। एक ख़ुदा के जिक्र में कमी न करना। दूसरे दावत (आह्वान) में नर्म अंदाज इख़्तियार करना।

ख़ुदा के जिक्र से मुराद यह है कि आदमी के कल्ब व दिमाग में ख़ुदा का यकीन इस तरह शामिल हो गया हो कि वह बार-बार उसे याद आता रहे। आदमी का हर मुशाहिदा (अवलोकन) और उसकी जिंदगी का हर वाकया उसके ख़ुदाई शुऊर से जुड़कर उसे जगाने वाला बन जाए। आम इंसान माद्दी (भौतिक) ग़िजाओं पर जीते हैं। हक का दाऔ ख़ुदा की याद में जीता है। ख़ुदा की याद मोमिन का सरमाया है और इसी तरह दाऔ (आह्वानकर्ता) का भी।

दूसरी जरूरी चीज दावत में नर्म अंदाज इख़्तियार करना है। फिरऔन जैसे सरकश इंसान के सामने भेजते हुए यह हिदायत करना साबित करता है कि दावत के लिए नर्म और हकीमाना अंदाज मुतलक तौर पर मत्लूब है। मदऊ की तरफ से कोई भी सख़्ती या सरकशी दाऔ को यह हक नहीं देती कि वह अपनी दावत में नर्मी और शफ़क़त (स्नेह) का अंदाज खो दे।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَا ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾ فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾ إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

दोनों ने कहा कि ऐ हमारे रब, हमें अंदेशा है कि वह हम पर ज्यादती करे या सरकशी करने लगे। फरमाया कि तुम अंदेशा न करो। मैं तुम दोनों के साथ हूं, सुन रहा हूं और देख रहा हूं। पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, पस तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। और उन्हें न सता। हम तेरे रब के पास से एक निशानी भी लाए हैं। और सलामती उस शख़्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे। हम पर यह 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि उस शख़्स पर अजाब होगा जो झुठलाए और एराज (उपेक्षा) करे। (45-48)

फिरऔन निहायत मुतकब्बिर (घमंडी) था। इक्तेदार (सत्ता) पाकर वह अपने आपको ख़ुदा समझने लगा था। इसलिए हजरत मूसा को अंदेशा हुआ कि जब वह देखेगा कि उसके सिवा किसी और ख़ुदा का पैगाम उसे सुनाया जा रहा है तो वह ग़ुस्से में भड़क उठेगा। मगर ख़ुदा का पैग़म्बर मुकम्मल तौर पर ख़ुदा की हिफाजत में होता है। इसलिए हुक्म हुआ कि तुम जाओ और यह यकीन रखो कि फिरऔन अपनी सारी ताकत और जबरूत (शौर्य) के बावजूद तुम्हें कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकता।

बनी इस्राईल कदीम जमाने के मुसलमान थे। वे अस्लन एक मुअह्हिद (एकेश्वरवादी) कौम थे। मगर मिस्र की मुश्रिक कौम के दर्मियान रहते हुए वे मुश्रिकाना तहजीब से बुरी तरह मुतअस्सिर हो गए थे। मजीद यह कि मुश्रिक हुक्मरानों ने बनी इस्राईल को इस तरह मेहनत मजदूरी में लगा रखा था कि वे इस काबिल नहीं रहे थे कि वे तौहीद और आख़िरत की आला हकीकतों के बारे में सोच सकें। इसलिए हजरत मूसा को हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को मुश्रिकाना माहौल से निकालो और उन्हें अलग ख़ित्तए जमीन में आबाद करो। ताकि शिर्क और जाहिलियत की फजा से कटकर उनकी तर्बियत मुमकिन हो सके।

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ۝

फिरऔन ने कहा, फिर तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा। मूसा ने कहा, हमारा रब वह है जिसने हर चीज को उसकी सूरत अता की, फिर रहनुमाई फरमाई। फिरऔन ने कहा, फिर अगली कौमों का क्या हाल है। मूसा ने कहा। इसका इल्म मेरे रब के पास एक दफ्तर में है। मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है। (49-52)

'तुम्हारा रब कौन है।' फिरऔन का यह जुमला इस मअना में न था कि वह अपने सिवा किसी ख़ुदा से बेख़बर था। या किसी बरतर ख़ुदा का सिरे से कायल न था। उसका यह जुमला दरअस्ल मूसा की बात की तहकीर (अवमानना) था न कि उसका सिरे से इंकार।

मिस्र में हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की तब्लीग़ की थी। अब भी बनी इस्राईल वहां लाखों की तादाद में मौजूद थे। जो ख़ुदाए वाहिद पर अकीदा रखते थे। इस तरह मिस्र में अगरचे ख़ुदाए बरतर का अकीदा मौजूद था मगर अमलन वहां सारा जोर और शानो शौकत फिरऔन के गिर्द जमा था। वह मिस्रियों के अकीदे के मुताबिक उनके सबसे बड़े देवता (सूरज) का ज़मीनी मजहर था। वह मिस्र का अवतार बादशाह (God-king) था और उसके बुत और स्टेचू सारे मिस्र में परस्तिश की चीज बने हुए थे। इसके मुकाबले में मूसा बनी इस्राईल के एक फर्द थे जो मिस्र में गुलामों और मजदूरों की एक कौम समझी जाती थी। और इस बिना पर उसका मज़्हबी अकीदा भी मिस्र में एक नाकाबिले जिक्र अकीदे की हैसियत इख़्तियार कर चुका था।

दुनिया में बेशुमार चीजें हैं मगर हर चीज की एक मुन्फरिद (विशिष्ट) बनावट है और हर चीज का एक मुतअय्यन (सुनिश्चित) तरीके अमल है। न इस बनावट में कोई तब्दीली मुमकिन है और न इस तरीके अमल में। इससे ख़ुद फिरऔन जैसा सरकश बादशाह भी अपवाद नहीं। यह वाक्या वाजेह तौर पर एक बालातर ख़ालिक का वजूद साबित करता है।

हजरत मूसा ने यह बात कही तो फिरऔन ने महसूस किया कि उसके पास इस बात का कोई बराहेरास्त जवाब नहीं है। अब उसने बात को फेर दिया। दलील के मैदान में अपने को कमजोर पाकर उसने चाहा कि तअस्सुब (विद्वेष) के जज्बात को भड़का कर लोगों के दर्मियान अपनी बरतरी कायम रखे। चुनांचे उसने कहा कि अगर तुम्हारी बात सही है तो हमारे पिछले बड़ों का अंजाम क्या हुआ जो तुम्हारे नजरिये के मुताबिक गुमराह हालत में मर गए। हजरत मूसा ने इसके जवाब में एराज का तरीका इख़्तियार किया। उन्होंने कहा कि गुजरे हुए लोगों को ख़ुदा के हवाले करो और अब अपने बारे में ग़ौर करो।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝

वही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन का फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए राहें निकालीं और आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उसके जरिए से मुख़्तलिफ किस्म की नबातात (पौधें) पैदा कीं। खाओ और अपने मवेशियों को चराओ। इसके अंदर अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। उसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और उसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दुबारा निकालेंगे। (53-55)

जमीन की पैदाइश, बारिश का निजाम, नबातात (पेड़-पौधों) का उगना, और दूसरे

एहतिमामात जिसने मौजूदा दुनिया को जिंदा चीजों के लिए काबिले रिहाइश बनाया है वे हैरतनाक हद तक अजीम हैं।

यह एक 'निशानी' है जो साबित करती है कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक अजीम ख़ुदा है। मौजूदा दुनिया जैसी दुनिया को वजूद में लाने के लिए इतनी बड़ी कुदरत दरकार है जो न किसी 'सूरज' को हासिल है और न किसी 'बादशाह' को। ऐसी हालत में यह माने बग़ैर चारा नहीं कि इसे बनाने और चलाने वाला एक बरतर ख़ुदा है।

फिर इसी से यह भी साबित होता है कि यह दुनिया अबस (निरर्थक) दुनिया नहीं है जो यूं ही पैदी हो और यूं ही ख़त्म हो जाए। बामअना दुनिया लाजिमी तौर पर एक बामअना अंजाम चाहती है। इस तरह दुनिया का मुशाहिदा (अवलोकन) बयकवक्त तौहीद को भी साबित कर रहा है और आख़िरत को भी।

وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٥٧﴾ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

और हमने फिरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाईं तो उसने झुठलाया और इंकार किया। उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। तो हम तुम्हारे मुकाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। पस तुम हमारे और अपने दर्मियान एक वादा मुकर्रर कर लो, न हम उसके ख़िलाफ करें और न तुम। यह मुकाबला एक हमवार (खुले) मैदान में हो। (56-58)

हजरत मूसा की दावत फ़िरऔन के ऊपर लम्बी मुद्दत तक जारी रही। इस दौरान आपने उसके सामने अक्ली दलाइल भी पेश किए और महसूस मोजिजे (चमत्कार) भी दिखाए। मगर वह हज़रत मूसा पर ईमान न लाया। हज़रत मूसा की सच्चाई का इक़रार फ़िरऔन के लिए अपनी नफ़ी (नकार) के हममअना होता। और फ़िरऔन की मुतकब्बिराना नफ़्सियात (घमंड-भाव) इसमें रुकावट बन गई कि अपनी नफ़ी की कीमत पर वह सच्चाई का इक़रार करे।

हज़रत मूसा के अक्ली दलाइल को फ़िरऔन ने ग़ैर मुतअल्लिक बातों के जरिए बेअसर करने की कोशिश की। और आपके मोजिजात के बारे में उसने कहा कि यह जादू है। यानी एक ऐसी चीज जिसका ख़ुदा से कोई तअल्लुक नहीं। हर आदमी महारत पैदा करके इस किस्म का करिश्मा दिखा सकता है। अपनी इस ढिठाई को निभाने के लिए मजीद उसे यह करना पड़ा कि उसने कहा कि हम भी अपने जादूगरों के जरिए वैसा ही करिश्मा दिखा सकते हैं जैसा करिश्मा तुमने हमें दिखाया है। गुफ्तुगू के बाद बिलआख़िर यह तय हुआ कि आने वाले कौमी मेले के दिन मुल्क के जादूगरों को जमा किया जाए और सबके सामने मूसा और

जादूगरों का मुकाबला हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ﴿٦١﴾

मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े तक जमा किए जाएं। फिरऔन वहां से हटा, फिर अपने सारे दाव जमा किए, इसके बाद वह मुकाबले पर आया। मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह तुम्हें किसी आफत से ग़ारत कर दे। और जिसने ख़ुदा पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ। (59-61)

फिरऔन ने सारे मुल्क में आदमी भेजकर तमाम माहिर जादूगरों को बुलाया। जब ये लोग मेले के मैदान में जमा हुए तो मुकाबला पेश आने से पहले हजरत मूसा ने एक तकरीर की। यह तकरीर लोगों के लिए बिल्कुल नई चीज न थी बल्कि यह एक किस्म की याददिहानी थी। इससे पहले हजरत मूसा की दावत के जरिए जादूगर और दूसरे हजरात यकीनन इस बात से आगाह हो चुके थे कि मूसा का पैग़ाम क्या है। वे जानते थे कि मूसा शिर्क के मुकाबले में तौहीद की दावत लेकर खड़े हुए हैं।

इस पसमंजर में हजरत मूसा ने इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के तौर पर आख़िरी नसीहत की। हजरत मूसा ने फिरऔन और जादूगरों से कहा कि इस मामले को तुम लोग जादू का मामला न समझो। ख़ुदा की निशानी को जादू कहना और इंसानी जादू के जरिए उसे जेर करने की कोशिश करना बेहद संगीन बात है। यह एक वाकई हकीकत का मुकाबला एक सरासर बेहकीकत चीज के जरिए करना है जिसका यकीनी नतीजा हलाकत है। तुम बजाहिर मुझे झूठा साबित करना चाहते हो मगर यह ख़ुद ख़ुदा को नऊजुबिल्लाह झूठा साबित करने की कोशिश करना है। जो लोग इस किस्म की सरकशी करें वे ख़ुदा की दुनिया में कभी कामयाब नहीं हो सकते।

فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا النَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾ قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ أَنْ يُخْرِجَاكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾

फिर उन्होंने अपने मामले में इख़्तेलाफ (मतभेद) किया। और उन्होंने चुपके-चुपके बाहम

मश्विरा किया। उन्होंने कहा ये दोनों यकीनन जादूगर हैं, वे चाहते हैं कि अपने जादू के जोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीके का ख़ात्मा कर दें। पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो। फिर मुत्तहिद होकर आओ और वही जीत गया जो आज ग़ालिब रहा। (62-64)

हजरत मूसा की इब्तिदाई तकरीर से जादूगरों की जमाअत में इख़्तेलाफ पड़ गया। उनके एक गिरोह ने कहा कि यह जादूगर का कलाम नहीं है बल्कि यह नबी का कलाम है। दूसरे लोगों ने कहा कि नहीं, यह शख़्स हमारी ही तरह का एक जादूगर है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

जादूगर यकीनी तौर पर अपने पेशे के लोगों को पहचानते थे। उनके तजर्बेकार अफराद ने महसूस कर लिया कि यह जादू का मामला नहीं है बल्कि मोजिजे (दिव्य चमत्कार) का मामला है। चुनांचे वे मुकाबले की हिम्मत खो बैठे। मगर फिरऔन और उसके पुरजोश साथियों के उकसाने पर वे मुकाबले के लिए राजी हो गए।

'तरीकए मुस्ला' का मतलब है अफज़ल तरीका। उस वक्त मिस्रियों की जिंदगी का पूरा ढांचा मुश्रिकाना अकाइद के ऊपर कायम था। सबसे बड़े देवता (सूरज) के जिस्मानी मजहर (रूप) की हैसियत से फिरऔन की शख़्सियत उनके सियासी और समाजी निजाम की बुनियाद बनी हुई थी। फिरऔन ने तअस्सुब (विद्वेष) के जज्बात को उभार कर कहा कि यह निजाम हमारा कौमी निजाम है। अब अगर तौहीद के इन अलमबरदारों की जीत हो गई तो हमारा पूरा कौमी निजाम उखड़ जाएगा।

قَالُوا يٰمُوسٰى إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۚ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سٰحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتٰى ﴿٦٩﴾ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هٰرُونَ وَمُوسٰى ﴿٧٠﴾

उन्होंने कहा कि ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालने वाले बनें। मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो तो यकायक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के जोर से उसे इस तरह दिखाई दीं गोया कि वे दौड़ रही हैं। पस मूसा अपने दिल में कुछ डर गया। हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उन्हें निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है। यह जो कुछ उन्होंने बनाया है यह जादूगर का फरेब है। और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता, चाहे वह कैसे आए। पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा

के रब पर ईमान लाए। (65-70)

मुकाबला इस तरह शुरू हुआ कि जादूगरों ने पहले अपनी रस्सियां और लाठियां मैदान में फेंकी तो उनकी रस्सियां और लाठियां सांप बनकर मैदान में चलती हुई दिखाई दीं। ताहम यह सिर्फ नजरबंदी का मामला था। यानी रस्सियां और लाठियां फिलवाकअ सांप नहीं बन गई थीं बल्कि जादूगरों ने नजरबंदी के अमल से हाजिरीन की कुव्वतेख़्याली को इस तरह मुतअस्सिर किया कि उन्हें वक्ती तौर पर दिखाई दिया कि रस्सियां और लाठियां सांप की मानिंद मैदान में चल रही हैं।

उस वक्त अल्लाह तआला के हुक्म से हजरत मूसा ने अपनी लाठी मैदान में फेंकी। उनकी लाठी फौरन बहुत बड़ा सांप बनकर मैदान में दौड़ने लगी। उसने उन जादूगरों के नजरबंदी के तिलिस्म को निगल लिया। वे चीजें जो सांपों की शक्ल में चलती हुई नजर आती थीं वे उसके छूते ही महज रस्सी और लाठी होकर रह गईं।

जादूगर हजरत मूसा का कलाम सुनकर पहले ही उससे मुतअस्सिर हो चुके थे। अब जब अमली मुजाहिरा हुआ तो उन्होंने हजरत मूसा की सदाकत को अपनी खुली आंखों से देख लिया। उन्होंने यकीन के साथ जान लिया कि मूसा के पास जो चीज है वह कोई इंसानी जादू नहीं है बल्कि वह ख़ुदाई मोजिजा है। यह यकीन इतना गहरा था कि उन्होंने उसी वक्त हजरत मूसा के दीन को इख़्तियार करने का एलान कर दिया।

قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقٰى ﴿٧١﴾

फिरऔन ने कहा कि तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत देता। वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ सम्तों से कटवाऊंगा। और मैं तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूंगा। और तुम जान लोगे कि हम में से किस का अजाब ज्यादा सख़्त है और ज्यादा देर तक रहने वाला है। (71)

यह मुकाबला महज दो किस्म के आदमियों के करतब का मुकाबला न था बल्कि वह तौहीद और शिर्क का मुकाबला था। यानी इसके जरिए से यह फैसला होना था कि सदाकत (सच्चाई) शिर्क की तरफ है या तौहीद की तरफ। चूंकि फिरऔन की बड़ाई की बुनियाद तमामतर शिर्क के ऊपर कायम थी इसलिए वह शिर्क की शिकस्त को बरदाश्त न कर सका और जादूगरों के लिए उस सख़्ततरीन सजा का हुक्म सुना दिया जो मिस्र में कदीम जमाने में राइज थी।

फिरऔन जब दलील के मैदान में हार गया तो उसने यह कोशिश की कि ताकत के जरिए हक को दबा दे। यह हर जमाने में अरबाबे इक्तेदार की आम नफ्सियात रही है, चाहे वह शाहाना इख़्तियार रखने वाले अरबाबे इक्तेदार (सत्ताधारी) हों या ग़ैर शाहाना इख़्तियार रखने वाले।

قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (٧٢) إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ (٧٣)

जादूगरों ने कहा कि हम तुझे हरगिज उन दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं। और उस जात पर जिसने हमें पैदा किया है, पस तुझे जो कुछ करना है उसे कर डाल। तुम इसी दुनिया की जिंदगी का कर सकते हो। हम अपने रब पर ईमान लाए ताकि वह हमारे गुनाहों को बख़्श दे और उस जादू को भी जिस पर तुमने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है और बाकी रहने वाला है। (72-73)

जादूगरों के सामने एक तरफ हजरत मूसा की दलील थी। और दूसरी तरफ फ़िरऔन की जाबिराना (दमनकारी) शख़्सियत। यह दलील और शख़्सियत का मुकाबला था। जादूगरों ने शख़्सियत पर दलील को तरजीह (वरीयता) दी। अगरचे वे जानते थे कि इस तरजीह की कीमत उन्हें इंतिहाई मंहगी सूरत में देनी पड़ेगी।

जादूगरों का ईमान कोई नस्ली या रस्मी ईमान न था। उनका ईमान उनके लिए दरयाफ्त के हममअना था। और जो ईमान किसी आदमी को दरयाफ्त के तौर पर हासिल हो वह इतना ताकतवर होता है कि इसके बाद हर दूसरी चीज उसे हेच (महत्वहीन) नज़र आने लगती है, चाहे वह कोई बड़ी शख़्सियत हो या कोई बड़ी दुनियावी मस्लेहत।

إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ (٧٤) وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ (٧٥) جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ (٧٦)

बेशक जो शख़्स मुजरिम बनकर अपने रब के सामने हाजिर होगा तो उसके लिए जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा। और जो शख़्स अपने रब के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बदला है उस शख़्स का जो पाकीजगी इख़्तियार करे। (74-76)

मुजरिम बनना क्या है। मुजरिम बनना यह है कि आदमी के सामने ख़ुदा की निशानी आए मगर वह उससे नसीहत हासिल न करे। उसके सामने दलादल की जबान में हक को खोला जाए मगर वह उसे नजरअंदाज कर दे। वह जाहिरी कुव्वतों और माद्दी मस्लेहतों से बाहर निकल कर हकीकत का एतराफ न कर सके।

ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में सख़्ततरीन सजा है। दुनिया की कोई मुसीबत, चाहे वह कितनी ही बड़ी हो, बहरहाल वह महदूद (सीमित) है। और मौत के साथ एक न एक दिन ख़त्म हो जाती है। मगर आख़िरत वह जगह है जहां मुसीबतों का तूफ़ान हर तरफ से आदमी को घेरे हुए होगा। मगर आदमी के लिए वहां से भागना मुमकिन न होगा। और न वहां मौत आएगी जो नाकाबिले बयान मुसीबतों का सिलसिला मुंकतअ (ख़त्म) कर दे।

जन्नत उसके लिए है जो अपने आपको पाक करे। पाक करना यह है कि आदमी ग़फलत की जिंदगी को तर्क करे और शुऊर की जिंदगी को अपनाए। वह अपने आपको उन चीजों से बचाए जो हक से रोकने वाली हैं। मस्लेहत (स्वार्थ) की रुकावट सामने आए तो उसे नजरअंदाज कर दे। नफ्स की ख़्वाहिश उभरे तो उसे कुचल दे। जुल्म और घमंड की नफ्सियात जागे तो उसे अपने अंदर ही अंदर दफ्न कर दे।

यही लोग सच्चे ईमान वाले हैं। दुनिया में उनका ईमान अमले सालेह (सत्कर्मों) के बाग़ की सूरत में उगा था, आख़िरत में वह अबदी (चिरस्थाई) जन्नतों के रूप में सरसब्ज व शादाब होकर उन्हें वापस मिलेगा।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ (٧٧) فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُم مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ (٧٨) وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ (٧٩)

और हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि रात के वक्त मेरे बंदों को लेकर निकलो। फिर उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना लो, तुम न तआकुब (पीछा करने) से डरो और न किसी और चीज से डरो। फिर फिरऔन ने अपने लश्करों के साथ उनका पीछा किया फिर उन्हें समुद्र के पानी ने ढांप लिया। जैसा कि ढांप लिया और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और उसे सही राह न दिखाई। (77-79)

जादूगरों से मुकाबले के बाद हजरत मूसा कई साल तक मिस्र में रहे। एक तरफ तो उन्होंने फ़िरऔन और कौमे फ़िरऔन पर अपनी तब्लीग़ जारी रखी। दूसरी तरफ उन्होंने मुतालबा किया कि मुझे इजाजत दे दो कि मैं अपने साथियों को लेकर मिस्र से बाहर सहराए सीना में चला जाऊं और वहां आजादी के साथ ख़ुदाए वाहिद की इबादत करूं। मगर फ़िरऔन ने न तो नसीहत कुबूल की और न हजरत मूसा को बाहर जाने की इजाजत दी।

आख़िरकार हजरत मूसा ने ख़ुदा के हुक्म से ख़ामोश हिजरत का फ़ैसला किया। उस वक्त मिस्र में जो इस्राईली या ग़ैर इस्राईली मुसलमान थे, सब पेशगी मंसूबे के तहत एक ख़ास मकाम पर जमा हुए और वहां से रात के वक्त इज्तिमाई तौर पर रवाना हो गए।

यह काफ़िला बहरे अहमर (लाल सागर) की शिमाली ख़लीज (उत्तरी खाड़ी) तक पहुंचा था कि फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ उनका पीछा करते हुए वहां आ गया। पीछे फ़िरऔन का लश्कर था और आगे समुद्र की मानिंद वसीअ ख़लीज। अब हजरत मूसा ने ख़लीज के पानी पर अपनी लाठी मारी। ख़ुदा के हुक्म से पानी दो टुकड़े हो गया। हजरत मूसा और उनके साथी उसके दर्मियान ख़ुश्की पर चलते हुए दूसरी तरफ़ पहुंच गए। यह देखकर फ़िरऔन भी उसके अंदर दाख़िल हो गया। मगर फ़िरऔन और उसका लश्कर जैसे ही दर्मियान में पहुंचे दोनों तरफ़ का पानी मिल गया। वे लोग उसके अंदर ग़र्क़ हो गए। एक ही दरिया ख़ुदा के वफ़ादार बंदों के लिए नजात का जरिया बन गया। और ख़ुदा के दुश्मनों के लिए मौत का गढ़ा।

लोग अक्सर अपने क़ायदीन लीडरों के भरोसे पर हक को नजरअंदाज कर देते हैं। मगर फ़िरऔन की मिसाल बताती है कि क़ायदीन का सहारा निहायत कमजोर सहारा है। इस दुनिया में अस्ल सहारे वाला वह है जो ख़ुदा की आयात (निशानियों) की बुनियाद पर अपनी राह मुतअय्यन करे न कि क़ौम के अकाबिर बड़ों की बुनियाद पर।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَاعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ﴿٨٠﴾ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ﴿٨١﴾ وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾

ऐ बनी इस्राईल हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुमसे तूर के दाईं जानिब वादा ठहराया। और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा। खाओ हमारी दी हुई पाक रोजी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा ग़ज़ब नाजिल हो। और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह तबाह हुआ। अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत ज्यादा बख़्शने वाला हूं। (80-82)

ख़लीज (खाड़ी) को पार करने के बाद हजरत मूसा और उनके साथी चलते रहे। यहां तक कि वे सहराए सीना में पहुंच गए। इसके बाद कोहेतूर के दामन में बुलाकर ख़ास एहतिमाम से उन्हें शरीअत अता की गई। ये लोग चालीस साल तक सहराए सीना में रहे। यहां उनके लिए ख़ुसूसी नेमत के तौर पर पानी और ग़िज़ा (मन्न और सलवा) का इंतिजाम

किया गया जो उस वक्त तक मुसलसल जारी रहा जबकि उनकी अगली नस्ल फ़िलिस्तीन के सरसब्ज इलाके में पहुंच गई।

अल्लाह तआला के ऊपर बंदों का यह हक है कि वह हर हाल में अपने बंदों के लिए रिज़्क फ़राहम करे। और बंदों के ऊपर अल्लाह का यह हक है कि वे किसी हाल में उसके साथ सरकशी न करें। जो लोग ख़ुदा की नेमतों के शुक्रगुजार बनकर रहें उनके लिए ख़ुदा की [illegible] (अतिरिक्त) रहमतें हैं। और जो लोग सरकश बन जाएं उनके लिए ख़ुदा का शदीद अजाब है जो कभी ख़त्म न होगा।

وَمَا أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

और ऐ मूसा, अपनी क़ौम को छोड़कर जल्द आने पर तुम्हें किस चीज ने उभारा। मूसा ने कहा, वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं। और मैं ऐ मेरे रब, तेरी तरफ़ जल्द आ गया ताकि तू राजी हो। फ़रमाया तो हमने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद एक फ़ित्ने में डाल दिया। और सामिरी ने उसे गुमराह कर दिया। (83-85)

मिस्र से निकलने के बाद अल्लाह तआला ने हजरत मूसा के लिए एक तारीख़ मुक़र्रर की कि उस रोज वह कोहेतूर के उसी दामन में दुबारा आएं जहां उन्हें इब्तिदाअन पैग़म्बरी मिली थी। यहां हजरत मूसा को तौरात लेने के लिए अपनी पूरी क़ौम के साथ पहुंचना था। मगर फ़र्ते शौक़ में वह तेजी से रवाना होकर मुक़र्ररह तारीख़ से कुछ दिन पहले मक़ामे मौऊद (निश्चित-स्थल) पर आ गए। और क़ौम को पीछे छोड़ दिया। क़ौम से हजरत मूसा का अलग होना क़ौम के लिए फ़ित्ना बन गया। क़ौम में कुछ मुश्रिकाना जेहनियत के लोग थे। सामरी उनका लीडर था। उन लोगों ने हजरत मूसा की ग़ैर मौजूदगी से फ़ायदा उठाकर क़ौम को बहकाया और उसे बछड़े की परस्तिश में मुब्तिला कर दिया जैसा कि मिस्र में उस जमाने में होता था।

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ﴿٨٦﴾

फिर मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ ग़ुस्से और रंज में भरे हुए लौटे। उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वादा नहीं किया था। क्या तुम पर ज्यादा जमाना गुज़र गया। या तुमने चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का ग़जब (प्रकोप) नाजिल हो, इसलिए तुमने मुझसे वादाख़िलाफ़ी की। (86)

अल्लाह तआला ने जब हजरत मूसा को ख़बर दी कि तुम्हारी कौम फ़ितने में मुब्तिला हो गई है तो वह शदीद जज़्बात में भरे हुए कौम की तरफ वापस आए। उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि अभी-अभी ख़ुदा ने तुम्हारे ऊपर इतने एहसानात किए हैं और अपनी इतनी ज्यादा निशानियां तुम्हारे लिए जाहिर की हैं। फिर कैसे तुम इतनी जल्द सब भूलकर गुमराही में पड़ गए।

हजरत मूसा बनी इस्राईल के लिए अल्लाह की किताब लेने गए। और बनी इस्राईल की बड़ी तादाद कुछ लोगों की बातों में आकर गैर अल्लाह की परस्तिश में मशग़ूल हो गई। इससे अंदाजा होता है कि बनी इस्राईल मिस्र के मुश्रिकाना माहौल से कितना ज्यादा मुतअस्सिर हो चुके थे। और क्यों यह जरूरी हो गया था कि दुबारा तौहीद का परस्तार बनाने के लिए उन्हें मिस्र के माहौल से निकाल कर बाहर ले जाया जाए।

हजरत मूसा ने फ़िरऔन के मुक़ाबले में जो कुछ किया वह दावते दीन का काम था। और आपने बनी इस्राईल के सिलसिले में जो कुछ किया वह तहफ़्फ़ुजे दीन का काम। दोनों काम आपने साथ-साथ अंजाम दिए। इससे दोनों कामों की अहमियत मालूम होती है। मुसलमान अगर बिगड़े हुए हों तो इस बिना पर दावते आम का काम रोका नहीं जा सकता। और अगर दावते आम का काम करना हो तो वह इस तरह नहीं किया जाएगा कि दाख़िली इस्लाह (आन्तरिक सुधार) का काम बंद कर दिया जाए।

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

उन्होंने कहा कि हमने अपने इख़्तियार से आपके साथ वादाख़िलाफी नहीं की। बल्कि कौम के जेवरात का बोझ हमसे उठवाया गया था तो हमने उसे फेंक दिया। फिर इस तरह सामरी ने ढाल लिया। पस उसने उनके लिए एक बछड़ा बरामद कर दिया। एक मूर्ति जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। फिर उसने कहा कि यह तुम्हारा माबूद (पूज्य) है और मूसा का माबूद भी, मूसा इसे भूल गए। क्या वे देखते न थे कि न वह किसी बात का जवाब देता है और न कोई नफा या नुक्सान पहुंचा सकता है। (87-89)

बनी इस्राईल की औरतें ग़ालिबन क़दीम रवाज के मुताबिक भारी जेवरात अपने जिस्म पर लादे हुए थीं। इस सफ़र में कौम ने कहीं पड़ाव डाला तो उन्होंने इन जेवरात को उतार कर एक जगह ढेर कर दिया। उनके दर्मियान एक सामरी था जो मिस्र की क़दीम शिल्पकारी

बुतसाजी का तजर्बा रखता था। उसने इन जेवरात को पिघलाया और उनसे बछड़े जैसी एक मूर्ति बना डाली। यह बछड़ा अंदर से ख़ाली था। और इस तरह हुनरमंदी से बनाया गया था कि जब उसके अंदर से हवा गुजरती तो बैल की डकार की सी आवाज आती। सामरी ने बनी इस्राईल के जाहिल अवाम से कहा कि देखो तुम्हारा माबूद (पूज्य) तो यह है जो यहां मौजूद है। मूसा माबूद की तलाश में मालूम नहीं किस पहाड़ पर चले गए।

हर जमाने के 'सामरी' इसी तरह अवाम को बेवक़ूफ़ बनाते हैं। वे किसी महसूस चीज को निशाना बनाकर उसी को सबसे बड़ा हक साबित करते हैं। और अल्फ़ाज के फ़रेब में आकर अवाम की एक भीड़ उनके गिर्द जमा हो जाती है। महसूसपरस्ती इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी है। चाहे वह दौरे क़दीम का इंसान हो या दौरे जदीद (आधुनिक काल) का इंसान।

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩٠﴾ قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩١﴾

और हारून ने उनसे पहले ही कहा था कि ऐ मेरी कौम, तुम इस बछड़े के जरिए से बहक गए हो और तुम्हारा रब तो रहमान है। पस मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा कि हम तो इसी की परस्तिश (पूजा) में लगे रहेंगे जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए। (90-91)

हजरत मूसा के बाद कौम की देखभाल की जिम्मेदारी हजरत हारून पर थी। उन्होंने कौम को काफ़ी समझाने की कोशिश की। मगर कौम के ऊपर उनका वह दबाव न था जो हजरत मूसा का था। इसलिए उनके मना करने के बाद भी लोग इससे न रुके। हजरत हारून का इसरार बढ़ा तो लोगों ने कहा कि अब जो हो गया है वह तो इसी तरह जारी रहेगा। मूसा जब लौट कर आएंगे तो वही इसका फ़ैसला करेंगे।

हजरत हारून उस वक्त अगर कोई सख़्त इक्दाम करते तो वह नतीजाख़ेज न होता। क्योंकि आपके साथ जो लोग थे उनकी तादाद कम थी। आपने बेनतीजा कार्रवाई करने के मुक़ाबले में इसे ज्यादा मुनासिब समझा कि वक्ती तौर पर सब्र का तरीक़ा इख़्तियार कर लें। और लोगों की इस्लाह (सुधार) के लिए अल्लाह तआला से दुआ करते रहें।

قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ﴿٩٢﴾ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾ قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾

मूसा ने कहा कि ऐ हारून, जब तूने देखा कि वे बहक गए हैं तो तुम्हें किस चीज ने रोका कि तुम मेरी पैरवी करो। क्या तुमने मेरे कहने के ख़िलाफ किया। हारून ने कहा

कि ऐ मेरी मां के बेटे, तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो और न मेरा सर। मुझे यह डर था कि तुम कहोगे कि तुमने बनी इस्राईल के दर्मियान फूट डाल दी और मेरी बात का लिहाज न किया। (92-94)

हजरत मूसा ने अपने भाई का सख़्ती के साथ मुहासबा किया। हजरत हारून ने जवाब दिया कि ऐसा नहीं है कि मैंने इस्लाह की कोशिश नहीं की और जाहिलों के साथ मुसालेहत कर ली। बल्कि मैंने पूरी कुव्वत के साथ उन्हें इस मुश्रिकाना फेअल से रोकने की कोशिश की। मगर मसला यह था कि कौम की अक्सरियत सामरी के फरेब में आकर उसकी साथी बन गई। मैंने इसरार किया तो वे लोग जंग व कत्ल पर आमादा हो गए। मुझे अंदेशा हुआ कि अगर मैं इसरार जारी रखता हूं तो कौम के अंदर बाहमी ख़ूंरेजी शुरू हो जाएगी।

मामला इस नौबत तक पहुंचने के बाद अब मुझे दो में से एक चीज का इंतिख़ाब करना था। या तो बाहमी जंग, या आपकी आमद तक इस मामले को मुल्तवी रखना। मैंने दूसरी सूरत को बेहतर समझ कर उसे इख़्तियार कर लिया। बहुत से मौकों पर दीन का तकाजा यह होता है कि बाहमी लड़ाई से बचने के लिए ख़ामोशी का तरीका इख़्तियार कर लिया जाए, यहां तक कि शिर्क जैसे मामले में भी।

قال فما خطبك يسامري ﴿٩٥﴾ قال بصرت بما لم يبصروا به فقبضت قبضة من اثر الرسول فنبذتها وكذلك سولت لي نفسي ﴿٩٦﴾ قال فاذهب فان لك في الحيوة ان تقول لا مساس وان لك موعدا لن تخلفه وانظر الى الهك الذي ظلت عليه عاكفا لنحرقنه ثم لننسفنه في اليم نسفا ﴿٩٧﴾ انما الهكم الله الذي لا اله الا هو وسع كل شيء علما ﴿٩٨﴾

मूसा ने कहा कि ऐ सामरी, तुम्हारा क्या मामला है। उसने कहा कि मुझे वह चीज नजर आई जो दूसरों को नजर नहीं आई तो मैंने रसूल के नक्शेकदम (पद चिन्हों) से एक मुट्ठी उठाई और वह इसमें डाल दी। मेरे नफ्स (अंतःकरण) ने मुझे ऐसा ही समझाया। मूसा ने कहा कि दूर हो। अब तेरे लिए जिंदगी भर यह है कि तू कहे कि मुझे न छूना। और तेरे लिए एक और वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। और तू अपने इस माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बराबर मोअतकिफ (एकाग्र) रहता था, हम उसे जलाएंगे फिर उसे दरिया में बिखेर कर बहा देंगे। तुम्हारा माबूद तो सिर्फ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसका इल्म हर चीज पर हावी है। (95-98)

हजरत मूसा को जब मालूम हुआ कि इस फेअल (कृत्य) का अस्ल लीडर सामरी है तो आपने उससे पूछ-गछ की। सामरी ने दुबारा होशियारी का तरीका इख़्तियार किया और बात

बनाते हुए कहा कि मैंने जो कुछ किया एक कश्फ (दिव्य निर्देश) के जेरे असर किया। और ख़ुद रसूल के नक्शे कदम की मिट्टी भी इसमें बरकत के लिए शामिल कर दी।

पैग़म्बर को फरेब देने की कोशिश की बिना पर सामरी का जुर्म और ज्यादा शदीद हो गया। बाइबल के बयान के मुताबिक उसे ख़ुदा ने कोढ़ का मरीज बना दिया। उसका जिस्म ऐसा मकरूह हो गया कि लोग उसे देखकर दूर ही से उससे कतराने लगे। सामरी ने झूठ की बुनियाद पर कौम का महबूब बनने की कोशिश की। इसकी उसे यह सजा मिली कि उसे कौम का सबसे ज्यादा मब्ग़ूज (घृणित) शख़्स बना दिया गया। और आख़िरत की सजा इसके अलावा है।

बनी इस्राईल के जेहन में मुश्रिकाना मजाहिर की जो अज्मत थी उसे ख़त्म करने के लिए हजरत मूसा ने यह किया कि लोगों के सामने बछड़े को जला डाला और फिर उसकी ख़ाक को समुद्र की मौजों में बहा दिया।

كذلك نقص عليك من انباء ما قد سبق وقد اتينك من لدنا ذكرا ﴿٩٩﴾ من اعرض عنه فانه يحمل يوم القيمة وزرا ﴿١٠٠﴾ خلدين فيه وساء لهم يوم القيمة حملا ﴿١٠١﴾ يوم ينفخ في الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا ﴿١٠٢﴾ يتخافتون بينهم ان لبثتم الا عشرا ﴿١٠٣﴾ نحن اعلم بما يقولون اذ يقول امثلهم طريقة ان لبثتم الا يوما ﴿١٠٤﴾

इसी तरह हम तुम्हें उनके अहवाल (वृत्तांत) सुनाते हैं जो पहले गुजर चुके। और हमने तुम्हें अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो इससे एराज (उपेक्षा) करेगा वह कियामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा। वे उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ कियामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और मुजरिमों को उस दिन हम इस हाल में जमा करेंगे कि ख़ौफ से उनकी आंखें नीली होंगी। आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि तुम सिर्फ दस दिन रहे होगे। हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे। जबकि उनका सबसे ज्यादा वाकिफ़कार कहेगा कि तुम सिर्फ एक दिन ठहरे। (99-104)

पैग़म्बरों का इंकार करने वालों का जो अंजाम हुआ वह गोया दुनिया में उस इलाही फैसले का जुजई जुहूर (आंशिक प्रदर्शन) था जो कियामत में कुल्ली तौर पर तमाम नोए इंसानी (मानव जाति) के लिए पेश आने वाला है। कुरआन इसी हकीकत की एक याददिहानी है।

दुनिया में आदमी जब हक को नजरअंदाज करता है तो बजाहिर यह बहुत हलकी सी चीज मालूम होती है। मगर आख़िरत में आदमी का यह फेअल उसके लिए निहायत भारी बोझ

बन जाएगा। जब ख़ुदाई बिगुल (सूर) यह एलान करेगा कि इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म हो चुकी, उस वक्त अचानक लोग अपने आपको एक और दुनिया में पाएंगे। जब आदमी पर यह खुलेगा कि जिस दुनिया को वह अपनी दुनिया समझे हुए था वह दरअस्ल ख़ुदा की दुनिया थी तो उस पर इस कद्र दहशत तारी होगी कि उसकी हैयत (स्वरूप) तक बदल जाएगी।

मौजूदा दुनिया में आदमी आख़िरत को इस तरह नजरअंदाज करता है जैसे वह कोई बहुत दूर की चीज हो। मगर कियामत आने के बाद आदमी को ऐसा मालूम होगा जैसे दुनिया की जिंदगी तो बस गिनती के चन्द रोज की थी। इसके बाद सारी लम्बी जिंदगी वही थी जो आख़िरत के आलम में गुजरने वाली थी।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

और लोग तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं। कहो कि मेरा रब उन्हें उड़ाकर बिखेर देगा। फिर जमीन को साफ मैदान बनाकर छोड़ देगा। तुम इसमें न कोई कजी (टेढ़) देखोगे और न कोई ऊंचान। उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे। जरा भी कोई कजी न होगी। तमाम आवाजें रहमान के आगे दब जाएंगी। तुम एक सरसराहट के सिवा कुछ न सुनोगे। (105-108)

कियामत में मौजूदा जमीन एक वसीअ (विस्तृत) और हमवार (समतल) फर्श की मानिंद बना दी जाएगी। उस वक्त यहां न पहाड़ों की बुलन्दियां होंगी और न दरियाओं की गहराइयां। तमाम इंसान दुबारा पैदा होकर उस जमीन पर जमा किए जाएंगे। दुनिया में ख़ुदा की आवाज ख़ुदा के दाओ (आह्वानकर्ता) की जबान से बुलन्द होती है तो लोग उसे नजरअंदाज कर देते हैं। मगर कियामत में जब ख़ुदा बराहेरास्त लोगों को पुकारेगा तो सारे इंसान किसी अदना इंहिराफ के बग़ैर उसकी आवाज की तरफ चल पड़ेंगे। लोगों पर इस कद्र हौल तारी होगा कि किसी की जबान से कोई लफ्ज नहीं निकलेगा। लोगों के चलने की सरसराहट के सिवा कोई और आवाज न होगी जो उस वक्त लोगों को सुनाई दे।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ

مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

उस दिन सिफ़ारिश नफा न देगी मगर ऐसा शख़्स जिसे रहमान ने इजाजत दी हो और उसके लिए बोलना पसंद किया हो। वह सबके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता। और तमाम चेहरे उस हय्य व कय्यूम (जीवंत एवं शाश्वत) के सामने झुके होंगे। और ऐसा शख़्स नाकाम रहेगा जो जुल्म लेकर आया होगा। और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसे न किसी ज्यादती का अंदेशा होगा और न किसी कमी का। (109-112)

सिफ़ारिश का मुस्तकिल बिज्जात मुअस्सिर (स्वयं प्रभावी) होना सरासर बातिल है। ख़ुदा न तो बंदों के अहवाल से बेख़बर है कि कोई उसे किसी के बारे में बताए और न वह कमजोर है कि कोई उस पर दबाव डाल सके। अलबत्ता कुछ ख़ास अहवाल में ख़ुद अल्लाह तआला ही की यह मंशा हो सकती है कि वह किसी की जबान से जारी होने वाली एक काबिले लिहाज दरख़्वास्त को इज्जते कुबूल अता फरमाए।

कियामत में अस्ल अहमियत इसकी होगी कि कौन शख़्स ख़ुद क्या लेकर आया है। जिस शख़्स ने मौजूदा दुनिया में अपनी जिंदगी नाहक पर खड़ी की होगी उसका आख़िरत में नाकाम होना यकीनी है। वहां सिर्फ वही लोग कामयाब होंगे जिन्होंने हालते ग़ैब (अप्रकट) में अपने रब को पहचाना और अपनी जिंदगी को उसकी मर्जी के मुताबिक ढाल लिया।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۗ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ ۖ وَقُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾

और इसी तरह हमने अरबी का कुरआन उतारा है और इस में हमने तरह-तरह से वईद (चेतावनी) बयान की है ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे। पस बरतर है अल्लाह, बादशाह हकीकी। और तुम कुरआन के लेने में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' (प्रकाशना) तक्मील को न पहुंच जाए। और कहो कि ऐ मेरे रब मेरा इल्म ज्यादा कर दे। (113-114)

ख़ुदा ने अपनी किताब जिसमें हर किस्म के दलाइल हैं, इंसानी जबान में उतारी है। और उस जबान को हमेशा के लिए एक जिंदा जबान बना दिया है। इस तरह ख़ुदा की हिदायत को एक ऐसी चीज बना दिया गया है जिसे हर जमाने का आदमी पढ़ और समझ सके।

दाओ जब हक की दावत लेकर उठे तो उसके सामने नतीजे के एतबार से दो चीजें होनी चाहिएं। पहली मत्लूब चीज तो यह है कि सुनने वाले के अंदर नफ्सियाती इंकिलाब पैदा हो

और वह अल्लाह से डरने वाला बन जाए। दूसरी इससे कमतर बात यह है कि दाअी की बात सुनने वाले के जेहन में सवाल बनकर दाख़िल हो जाए।

मक्का में दावती मुहिम के दौरान रोजाना लोगों की तरफ से सवाल उठाए जाते थे और नए-नए मसाइल पैदा होते थे। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश फ़ित्री तौर पर यह होती थी कि क़ुरआन के नाज़िल होने का वक़्फ़ा (अंतराल) कम हो ताकि आपको जल्द-जल्द ख़ुदाई रहनुमाई मिलती रहे। फरमाया कि क़ुरआन जिस तदरीज (क्रम) से उतर रहा है वह ख़ुदा का तय शुदा मंसूबा है। वह इसी तरह उतरेगा और बहरहाल अपनी तक्मील तक पहुंचेगा। तुम मुस्तकबिल (भविष्य) के क़ुरआन को हाल (वर्तमान) में उतारने के ख़्वाहिशमंद न बनो। अलबत्ता यह दुआ करो कि ख़ुदा तुम्हारे फहमे क़ुरआन में इजाफ़ा करे। क़ुरआन की आयतों में जो वसीअ (सार्वभौम) मजामीन छुपे हुए हैं उनका इदराक करने की सलाहियत पैदा कर दे। क़ुरआन की अगली आयतों के बारे में जल्दी के बजाए तुम्हें उस हिक्मत को जानने का ख़्वाहिशमंद होना चाहिए कि क़ुरआन के नुज़ूल में तर्तीब व तदरीज (चरणबद्धता) क्यों रखी गई है।

इससे यह नतीजा निकलता है कि दाअी को कभी जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए। दावत (आह्वान) के हालात में जिहाद के मसाइल बयान करना। लोगों की इस्लाह के दौर में इज्तिमाई इक्दाम (सामूहिक पहल) के अहकाम सुनाना। जिन मौक़ों पर सब्र मत्लूब है उन मौक़ों पर संघर्ष की आयतों के हवाले देना, ये सब इसी के दायरे में दाख़िल है। और इससे बचना दाअी के लिए लाजिमी तौर पर जरूरी है।

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ ٱلْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰٓ ﴿١١٧﴾

और हमने आदम को इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गया और हमने उस में अज़्म (दृढ़-संकल्प) न पाया। और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) कि उसने इंकार किया। फिर हमने कहा कि ऐ आदम, यह बिलाशुबह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम महरूम होकर रह जाओ। (115-117)

ख़ुदा के हुक्म पर कायम रहने के लिए मजबूत इरादा इंतिहाई तौर पर जरूरी है। आदमी अगर ग़ैर मुतअल्लिक चीजों से मुतअस्सिर (प्रभावित) हो जाया करे तो वह यक़ीनन ख़ुदा के रास्ते से हट जाएगा। ख़ुदा के रास्ते पर कायम रहने के लिए सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्म का जानना काफ़ी नहीं, बल्कि यह अज़्म (दृढ़-संकल्प) भी लाजिमी तौर पर जरूरी है कि आदमी हुक्मे

ख़ुदावंदी के ख़िलाफ बातों से मुजाहमत (प्रतिरोध) करे और उन्हें अपने ऊपर असरअंदाज न होने दे।

ख़ुदा ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया तो फ़रिश्ते फ़ौरन सज्दे में गिर गए। मगर शैतान ने सज्दा नहीं किया। इस फ़र्क़ की वजह क्या थी। इसकी वजह यह थी कि फ़रिश्तों ने इस मामले को ख़ुदा का मामला समझा। इसके बरअक्स इब्लीस ने इसे इंसान का मामला समझा। जब मामले को ख़ुदा का मामला समझा जाए तो आदमी के लिए एक ही मुमकिन सूरत होती है। वह यह कि वह उसकी इताअत (आज्ञापालन) करे। मगर जब मामले को इंसान का मामला समझ लिया जाए तो आदमी यह करेगा कि वह सामने के इंसान को देखेगा। अगर वह उससे ताक़तवर है तो वह झुक जाएगा। और अगर वह उससे ताक़तवर नहीं है तो वह झुकने से इंकार कर देगा, चाहे हक़ का वाजेह तक़ाजा यही हो कि वह उसके आगे अपने आपको झुका दे।

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ﴿١١٨﴾ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا۟ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ ٱلشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ ٱلْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ﴿١٢٠﴾ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ ٱلْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ رَبَّهُۥ فَغَوَىٰ ﴿١٢١﴾ ثُمَّ ٱجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾

यहां तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे। और तुम यहां न प्यासे होगे, और न तुम्हें धूप लगेगी। फिर शैतान ने उन्हें बहकाया। उसने कहा कि क्या मैं तुम्हें हमेशगी (अमरता) का दरख़्त बताऊं। और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमजोरी न आए। पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया तो उन दोनों से सत्र एक दूसरे के सामने खुल गए। और दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे। और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो भटक गए। फिर उसके रब ने उसे नवाजा। पस उसकी तौबा क़ुबूल की और उसे हिदायत दी। (118-122)

आदम और उनकी बीवी को जिस जन्नत में रखा गया था वहां जिंदगी की तमाम जरूरतें उन्हें बफ़राग़त हासिल थीं। ग़िजा, लिबास, पानी, साया (मकान) ये सब चीजें वहां ख़ुदा की तरफ से बिल्कुल मुफ़्त मुहय्या की गई थीं। मौजूदा दुनिया में ये चीजें आदमी को पुरमशक़्क़त कस्ब के जरिए मिलती हैं, जन्नत में ये चीजें उन्हें किसी मशक़्क़त के बग़ैर हासिल थीं।

एक दरख़्त का फल खाना आदम के लिए ममनूअ था। शैतान ने उस दरख़्त के फल में अबदी फायदे बताए। बिलआख़िर आदम उसकी बातों से मुतअस्सिर हो गए और उन्होंने उस दरख़्त का फल खा लिया। इसके फौरन बाद उन्होंने महसूस किया कि वे नंगे हो गए हैं। यह गोया एक अलामत थी कि ख़ुदा की वह जमानत उनसे उठा ली गई जिसकी वजह से वे अब तक बग़ैर मेहनत रोजी के मालिक थे। इसके बाद तौबा और दुआ की वजह से आदम की

माफ़ी हो गई। ताहम वह बिना मेहनत की रोजी वाली दुनिया से निकाल कर मेहनत की रोजी वाली दुनिया में पहुंचा दिए गए। इस तरह जमीन पर मौजूदा नस्ले इंसानी का आग़ाज हुआ।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝١٢٣ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۝١٢٤ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝١٢٥ قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ ۝١٢٦ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَىٰ ۝١٢٧

ख़ुदा ने कहा कि तुम दोनों यहां से उतरो। तुम एक दूसरे के दुश्मन हो गए। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा और न महरूम रहेगा। और जो शख़्स मेरी नसीहत से एराज (उपेक्षा) करेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा। और कियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आंखों वाला था। इर्शाद होगा कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी निशानियां आईं तो तुमने उनका कुछ ख़्याल न किया तो इसी तरह आज तुम्हारा कुछ ख़्याल न किया जाएगा। और इसी तरह हम बदला देंगे उसे जो हद से गुजर जाए और अपने रब की निशानियों पर ईमान न लाए। और आख़िरत (परलोक) का अजाब बड़ा सख़्त है और बहुत बाकी रहने वाला। (123-127)

ख़ुदा ने आदम और इब्लीस दोनों को जमीन पर बसाया। उसने इब्तिदा ही में यह तंबीह कर दी कि कियामत तक तुम दोनों के दर्मियान एक दूसरे से मुकाबला जारी रहेगा। इब्लीस इंसानी नस्ल को बहकाने में अपनी सारी कोशिश लगा देगा। इसके जवाब में इंसान को यह करना है कि वह अपने सबसे बड़े दुश्मन इब्लीस को समझे और उसके वसवसों से आख़िरी हद तक दूर रहने की कोशिश करे।

इंसान की मजीद हिदायत के लिए ख़ुदा ने यह इंतिजाम किया कि मुसलसल अपने पैग़म्बर भेजे जो इंसान की काबिलेफ़हम जबान में उसे जिंदगी की हकीकत से बाख़बर करते रहे। अब इंसान की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार इस पर है कि वह पैग़म्बर की बात को मानता है या नहीं मानता। जो शख़्स उसे मानेगा उसे दुबारा जन्नत की राहत भरी हुई जिंदगी दे दी जाएगी। और जो शख़्स नहीं मानेगा उसकी जिंदगी सख़्ततरीन जिंदगी होगी जिससे वह कभी निकल न सकेगा।

हिदायत से एराज (उपेक्षा) करने वाले लोग आख़िरत में इस तरह उठेंगे कि वे दोनों

आंखों से अंधे होंगे। इसकी वजह यह है कि उन्हें आंखें इसलिए दी गई थीं कि वे ख़ुदा की निशानियों को देखकर उसे पहचानें। मगर उनका हाल यह हुआ कि उनके सामने ख़ुदा की निशानियां आईं और उन्होंने उन्हें नहीं पहचाना। इस तरह उन्होंने साबित किया कि वे आंख रखते हुए भी अंधे हैं। फिर ख़ुदा फरमाएगा कि ऐसे अंधों को आंख देने की क्या जरूरत।

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَىٰ ۝١٢٨ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُسَمًّى ۝١٢٩ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ۝١٣٠

क्या लोगों को इस बात से समझ न आई कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए। ये उनकी बस्तियों में चलते हैं बेशक इसमें अहले अक्ल के लिए बड़ी निशानियां हैं। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती। और मोहलत की एक मुद्दत मुकर्रर न होती तो जरूर उनका फैसला चुका दिया जाता। पस जो ये कहते हैं उस पर सब्र करो। और अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (अर्चना) करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के औकात में भी तस्बीह करो। और दिन के किनारों पर भी। ताकि तुम राजी हो जाओ। (128-130)

किसी कौम को जमीन पर उरूज (उत्थान) हासिल हो और फिर वह हलाक या मग़लूब (परास्त) कर दी जाए तो इसकी वजह हमेशा यह होती है कि उसने बंदगी की हद से तजावुज किया। हर तबाहशुदा कौम अपने बाद वालों के लिए दर्सेइबरत होती है। मगर बहुत कम लोग हैं जो इस तरह के वाकेयात से दर्स (सीख) हासिल करते हों।

यहां तस्बीह और नमाज की जो तल्कीन की गई है वह मक्की दौर के इंतिहाई सख़्त हालात में की गई है। इससे अंदाजा होता है कि इंकार और मुख़ालिफत के सख़्ततरीन हालात में नमाज और ख़ुदा की याद मोमिन की ढाल है। इससे राहें हमवार होती हैं। और फ़ुतुहात (विजयों) के दरवाजे खुलते हैं। इससे सब कुछ इतनी बड़ी मिक्दार (मात्रा) में मिल जाता है कि आदमी उसे पाकर राजी हो जाए।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝١٣١ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝١٣٢

और हरगिज उन चीजों की तरफ आंख उठाकर भी न देखो जिन्हें हमने उनके कुछ गिरोहों को उनकी आजमाइश के लिए उन्हें दे रखा है। और तुम्हारे रब का रिज़्क ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है। और अपने लोगों को नमाज का हुक्म दो और उसके पाबंद रहो। हम तुमसे कोई रिज़्क नहीं मांगते। रिज़्क तो तुम्हें हम देंगे और बेहतर अंजाम तो तकवा (ईश-परायणता) ही के लिए है। (131-132)

इन आयात का ख़िताब अगरचे बजाहिर पैग़म्बर से है मगर इसके मुख़ातब तमाम अहले ईमान हैं। दुनिया में एक शख़्स ईमान और दावत (आह्वान) की जिंदगी इख़्तियार करता है। इसके नतीजे में उसकी जिंदगी मशक्कतों की जिंदगी बन जाती है। दूसरी तरफ यह हाल है कि जो लोग इस किस्म की जिम्मेदारियों से आजाद हैं वे आराम और राहत में अपने सुबह व शाम गुजार रहे हैं। इस सूरतेहाल को नुमायां करके शैतान आदमी के दिल में वसवसा डालता है। वह मोमिन और दाओ (आह्वानकर्ता) को मुतज़लज़ल (अस्थिर) करने की कोशिश करता है।

लेकिन गहराई से देखा जाए तो इस ज़ाहिरी फ़र्क के आगे एक और फ़र्क है और वह फ़र्क ज्यादा काबिले लिहाज है। वह फ़र्क यह कि दुनियापरस्त लोगों को जो चीज मिली है वह महज इम्तेहान के लिए है और सरासर वक्ती है। इसके बाद अबदी जिंदगी में उनके लिए कुछ नहीं। दूसरी तरफ मोमिन और दाओ को ख़ुदा से वाबस्तगी इख़्तियार करने के नतीजे में जो चीज मिली है वह तमाम दुनिया की चीजों से ज्यादा कीमती है। वह है अल्लाह की याद, आख़िरत की फ़िक्र, इबादत और तक्वे की जिंदगी, ख़ुदा के बंदों को आख़िरत की पकड़ से बचाने के लिए फ़िक्रमंद होना। यह भी रिज़्क है। और यह ज्यादा आला रिज़्क है क्योंकि वह आख़िरत में ऐसी बेहिसाब नेमतों की शक्ल में आदमी की तरफ लौटेगा जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं।

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

और लोग कहते हैं कि यह अपने रब के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते। क्या उन्हें अगली किताबों की दलील नहीं पहुंची। और अगर हम उन्हें इससे पहले किसी अजाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे रब तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम जलील और रुसवा होने से पहले तेरी निशानियों की पैरवी करते। कहो कि हर एक मुन्तज़िर है तो तुम भी इंतिजार करो। आइंदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंजिल तक पहुंचा। (133-135)

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बैअसत से पहले अल्लाह तआला ने यह एहतिमाम किया कि पिछले नबियों की जबान से आपकी आमद का पेशगी एलान किया। ये पेशीनगोइयां (भविष्यवाणियां) आज भी तमाम तहरीफात (परिवर्तनों) के बावजूद, पिछली आसमानी किताबों में मौजूद हैं। यह पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सदाकत (सच्चाई) की सबसे बड़ी दलील थी। मगर दलील की कुव्वत को समझने के लिए संजीदगी की जरूरत होती है, और यह वह चीज है जो हमेशा सबके कम पाई गई है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ﴿١﴾ مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٣﴾ قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٤﴾

आयतें-112 सूरह-21. अल-अंबिया रुकूअ-7

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगों के लिए उनका हिसाब नजदीक आ पहुंचा। और वे गफलत में पड़े हुए एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। उनके रब की तरफ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है वे उसे हंसी करते हुए सुनते हैं। उनके दिल गफलत में पड़े हुए हैं। और जालिमों ने आपस में यह सरगोशी (कानाफूसी) की कि यह शख़्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। फिर तुम क्यों आंखों देखे इसके जादू में फंसते हो। रसूल ने कहा कि मेरा रब हर बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या जमीन में। और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (1-4)

हर आदमी जो दुनिया में है वह जिंदगी से ज्यादा मौत से करीब है। इस एतबार से हर आदमी अपने रोजे हिसाब के ऐन किनारे पर खड़ा हुआ है। मगर इंसान का हाल यह है कि वह किसी भी याददिहानी पर तवज्जोह नहीं देता, चाहे वह पैग़म्बर के जरिए से कराई जाए, या ग़ैर पैग़म्बर के जरिए। हक (सत्य) के दाओ (आवाहक) की बात को वह बस 'एक इंसान' की बात कहकर नजरअंदाज कर देता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में जब कुरआन के जरिए दावत शुरू की तो कुरआन का ख़ुदाई कलाम लोगों के दिलों को मुसख़्ख़र करने लगा। यह वहां के सरदारों के लिए बड़ी सख़्त बात थी। क्योंकि इससे उनकी कयादत ख़तरे में पड़ रही थी। कुरआन तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देता था, और मक्का के सरदार शिर्क (बहुदेववाद) के ऊपर अपनी सरदारी कायम किए हुए थे। उन्होंने लोगों के जेहन को इससे हटाने के लिए यह किया कि लोगों से कहा कि इस कलाम में बजाहिर जो तासीर तुम देख रहे हो वह इसलिए नहीं है कि वह ख़ुदा का कलाम है। इसका जोर सदाकत (सच्चाई) का जोर नहीं बल्कि जादू का जोर है। यह जादू बयानी का मामला है न कि आसमानी कलाम का मामला।

इस किस्म की बात कहने वाले लोग अगरचे ख़ुदा का नाम लेते हैं मगर उन्हें यकीन नहीं कि ख़ुदा उन्हें देख और सुन रहा है। अगर उन्हें ख़ुदा के आलिमुलग़ैब होने का यकीन होता तो वे ऐसी ग़ैर संजीदा बात हरगिज अपनी जबान से न निकालते।

بَلْ قَالُوٓا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ أُرْسِلَ الْأَوَّلُوْنَ ۝٥ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا ۚ أَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

बल्कि वे कहते हैं, ये परागंदा ख़्वाब (दुस्वप्न) हैं। बल्कि इसे उन्होंने गढ़ लिया है। बल्कि वह एक शायर हैं। उन्हें चाहिए कि हमारे पास उस तरह की कोई निशानी लाएं जिस तरह की निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए थे। इनसे पहले किसी बस्ती के लोग भी जिन्हें हमने हलाक किया, ईमान नहीं लाए तो क्या ये लोग ईमान लाएंगे। (5-6)

हक का दाऔ हमेशा हक की दावत (आह्वान) को दलील के जोर पर पेश करता है। मुख़ालिफीन जब देखते हैं कि वे दलील से उसका तोड़ नहीं कर सकते तो वे तरह-तरह की बातें निकाल कर अवाम को उससे बरगश्ता (खिन्न) करने की कोशिश करते हैं। मसलन यह कि यह शायराना कलाम है। यह अदबी साहिरी (साहित्यिक जादूगरी) है। यह एक दीवाने की कल्पनाएं हैं। यह अपने जी से बनाई हुई बातें हैं। वग़ैरह। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चूंकि अहले मक्का के सामने कोई महसूस मोजिजा नहीं दिखाया था। इसलिए आपकी रिसालत को मुशतबह करने के लिए वे यह भी कहते थे कि यह अगर ख़ुदा के भेजे हुए हैं तो पिछले पैग़म्बरों की तरह ख़ुदा के पास से कोई मोजिजा (दिव्य चमत्कार) लेकर क्यों नहीं आए।

मगर तारीख़ का तजर्बा बताता है कि जो लोग दलील से बात को न मानें वे मोजिजे को देखकर भी उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। इसलिए लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही यह है कि दलील की जबान में उनकी नसीहत जारी रखी जाए न कि मोजिजा दिखाकर उन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) कर दी जाए। क्योंकि मोजिजे से न मानने के बाद दूसरा मरहला सिर्फ हलाकत होता है।

وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيٓ إِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوٓا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩

और तुमसे पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा। हम उनकी तरफ 'वही' भेजते थे। पस तुम अहले किताब से पूछ लो, अगर तुम नहीं जानते। और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वे खाना न खाते हों। और वे हमेशा रहने वाले न थे। फिर हमने उनसे वादा पूरा किया। पस उन्हें और जिस-जिस को हमने चाहा बचा लिया। और हमने हद से गुजरने वालों को हलाक कर दिया। (7-9)

जो लोग यह कहकर पैग़म्बर का इंकार करते थे कि यह तो हमारी तरह के एक इंसान हैं, उनसे कहा गया कि अगर तुम अपने इस एतराज में संजीदा हो तो तुम्हारे लिए मामले को समझना कुछ मुश्किल नहीं। बहुत सी गुजरी हुई हस्तियां जिन्हें तुम पैगम्बर तस्लीम करते हो, उनके जानने वाले मौजूद हैं। फिर उन जानने वालों से तहकीक कर लो कि वे इंसान थे या ग़ैर इंसान। अगर वे इंसान थे तो मौजूदा पैग़म्बर को तुम सिर्फ इस बिना पर कैसे रद्द कर सकते हो कि वह एक मां-बाप के जरिए आम इंसान की तरह पैदा हुए हैं।

पिछले पैग़म्बरों की तारीख़ यह भी बताती है कि उनका इकरार या इंकार लोगों के लिए महज सादा किस्म का इक़रार या इंकार न था। उसने दोनों गिरोहों के लिए वाज़ेह तौर पर अगल-अगल नतीजा पैदा किया। इकरार करने वालों ने नजात पाई और इंकार करने वाले हलाक कर दिए गए। इसलिए इस मामले मे तुम्हें हद दर्जा संजीदा होना चाहिए।

لَقَدْ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ أَحَسُّوْا بَأْسَنَآ إِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوٓا إِلٰى مَآ أُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝١٥

हमने तुम्हारी तरफ एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी याददिहानी है, फिर क्या तुम समझते नहीं। और कितनी ही जालिम बस्तियां हैं जिन्हें हमने पीस डाला। और उनके बाद दूसरी कौम को उठाया। पस जब उन्होंने हमारा अजाब आते देखा तो वे उससे भागने लगे। भागो मत। और अपने सामाने ऐश की तरफ और अपने मकानों की तरफ वापस चलो, ताकि तुमसे पूछा जाए। उन्होंने कहा, हाय हमारी कमबख़्ती, बेशक हम लोग जालिम थे। पस वे यही पुकारते रहे। यहां तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो। (10-15)

ख़ुदा की किताब आम मअनों में महज एक किताब नहीं वह एक याददिहानी है। वह इस बात की चेतावनी है कि मौजूदा दुनिया में इंसान का आना इत्तेफ़ाक से नहीं है वह एक ख़ुदाई मंसूबा है। और वह मंसूबा यह है कि इंसान को आजमाइश के लिए वक्ती आजादी दी जाए। इसके बाद आदमी जैसा अमल करे उसके मुताबिक उसे बदला दिया जाए। इस हकीकत का जुज़्ई जुहूर (आंशिक प्रदर्शन) जालिम कौमों की हलाकत की सूरत में बार-बार होता रहा है। और उसका कुल्ली जुहूर (पूर्ण प्रदर्शन) कियामत में होगा। जबकि तमाम अगले पिछले इंसान दुबारा पैदा करके जमा किए जाएंगे।

जब ख़ुदा की पकड़ जाहिर होती है तो वे तमाम माद्दी (भौतिक) साजोसामान आदमी को मुसीबत मालूम होने लगते हैं जिनके बल पर इससे पहले वह हक की दावत को नजरअंदाज कर देता था। माद्दी सामान जब तक साथ न छोड़ दें वह ग़फ़लत के निकलने के लिए तैयार नहीं होता। और जब ये सामान उसका साथ छोड़ देते हैं उस वक़्त उसकी आंख खुल जाती है। मगर उस वक्त आंख का खुलना उसके काम नहीं आता। क्योंकि उस वक़्त तमाम चीजें अपनी ताकत खो चुकी होती हैं। इसके बाद सिर्फ़ ख़ुदा किसी के काम आता है न कि झूठे माबूद।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿١٦﴾ لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهْوًا لَاتَّخَذْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا إِنْ كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

और हमने आसमान और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे हम अपने पास से बना लेते, अगर हमें यह करना होता। बल्कि हम हक (सत्य) को बातिल (असत्य) पर मारेंगे तो वह उसका सिर तोड़ देगा तो वह यकायक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो। (16-18)

जो लोग ख़ुदा की दावत के बारे में संजीदा न हों वे गोया मौजूदा दुनिया को एक किस्म

का ख़ुदाई खिलौना समझते हैं। जिसका वक्ती तफ़रीह के सिवा और कोई मक्सद न हो। मगर मौजूदा दुनिया अपनी बेपनाह हिक्मत व मअनवियत (अर्थपूर्णता) के साथ अपने ख़ालिक का जो तआरुफ कराती है उसके लिहाज से यह नामुमकिन मालूम होता है कि उसका ख़ालिक कोई ऐसा ख़ुदा हो जिसने इस दुनिया को महज खेल के तौर पर बनाया हो।

मौजूदा दुनिया में इंसान जैसी अनोखी मख़्लूक है जिसकी फ़ितरत में हक व बातिल की तमीज पाई जाती है। दुनिया में ऐसी मख़्लूक का होना जो एक तरीके को हक और दूसरे तरीके को बातिल समझे और फिर हक व बातिल के नाम पर बार-बार मुकाबला पेश आना जाहिर करता है कि यहां कोई ऐसा वक्त आने वाला है जबकि आख़िरी तौर पर यह बात खुल जाए कि फ़िलवाकअ हक क्या था और बातिल क्या। और फिर जिसने हक का साथ दिया हो उसे कामयाबी हासिल हो और जिसने हक का साथ न दिया हो वह नाकाम कर दिया जाए। जिस दुनिया में ऐसा 'पत्थर' हो जो एक शख़्स के 'सर' को तोड़ दे वहां क्या ऐसा हक न होगा जो बातिल को बातिल साबित कर सके।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾

और उसी के हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं वे उसकी इबादत से सरताबी (विमुखता) नहीं करते और न काहिली (सुस्ती) करते हैं। वे रात दिन उसे याद करते हैं, कभी नहीं थकते। (19-20)

जमीन व आसमान की हर चीज ख़ुदा की मख़्लूक है। हर चीज वही करती है जिसका उसे ऊपर से हुक्म दिया गया हो। सारी कायनात में सिर्फ इंसान है जो सरकशी करता है। जो लोग ख़ुदा को नहीं मानते वे यह कहकर सरकशी करते हैं कि हमारे ऊपर कोई मालिक और हाकिम नहीं। हम आजाद हैं कि जो चाहें करें।

जो लोग ख़ुदा को मानते हैं वे भी सरकशी करते हैं। अलबत्ता उनके पास अपनी सरकशी की तौजीह दूसरी होती है। वे ख़ुदा के सिवा किसी और को अपना शफ़ीअ (शफ़ाअत करने वाला) और वसीला मान लेते हैं। वे किसी को ख़ुदा का मुकर्रब मानकर यह फर्ज कर लेते हैं कि हम उनके लिए अकीदत व एहतराम का इज्हार करते रहें तो वे ख़ुदा के यहां हमारे लिए नजात की सिफ़ारिश कर देंगे। कुछ लोग फ़रिश्तों को अपना शफ़ीअ और वसीला मान लेते हैं और कुछ लोग किसी दूसरी हस्ती को।

मगर इस किस्म के तमाम नजरिये मजहकाख़ेज (हास्यास्पद) हद तक बातिल हैं। अगर किसी को वह निगाह हासिल हो कि वह कायनाती सतह पर हकीकत को देख सके तो वह देखेगा कि मफरूजा हस्तियां ख़ुद तो ख़ुदा की हैबत से उसके आगे झुकी हुई हैं और इंसान उनके नाम पर दुनिया में सरकश बना हुआ है।

أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ
إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْأَلُ عَمَّا
يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾

क्या उन्होंने जमीन में से माबूद (पूज्य) ठहराए हैं जो किसी को जिंदा करते हों। अगर इन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम-बरहम हो जाते। पस अल्लाह, अर्श का मालिक, उन बातों से पाक है जो ये लोग बयान करते हैं। वह जो कुछ करता है उस पर वह पूछा न जाएगा और उनसे पूछ होगी। (21-23)

जमीन बकिया कायनात से अलग नहीं है। वह वसीअतर कायनात के साथ मुसलसल तौर पर मरबूत (जुड़ी हुई) है। जमीन पर जिंदगी और सरसब्जी उसी वक़्त मुमकिन होती है जबकि बकिया कायनात उसके साथ पूरी तरह हमआहंगी करे। जमीन व आसमान का यह मुतवाफ़िक अमल (संयुक्त प्रक्रिया) साबित करता है कि जमीन व आसमान का इंतिजाम एक ही हस्ती के हाथ में है। अगर वह दो के हाथ में होता तो यकीनन दोनों के दर्मियान बार-बार टकराव होता और जमीन पर मौजूदा जिंदगी का कियाम मुमकिन न होता।

कायनात अपनी बेपनाह अज्मत और मअनवियत (अर्थपूर्णता) के साथ अपने जिस ख़ालिक का तआरुफ कराती है वह यकीनी तौर पर ऐसा ख़ुदा है जो हर किस्म की कमियों से यकसर पाक है। यह मौजूदा कायनात का कमतर अंदाजा है कि उसका ख़ालिक एक ऐसी हस्ती को माना जाए जिसके साथ कमियां और कमजोरियां लगी हुई हों।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن
مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُم
مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

क्या उन्होंने ख़ुदा के सिवा और माबूद (पूज्य) बनाए हैं। उनसे कहो कि तुम अपनी दलील लाओ। यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझसे पहले हुए। बल्कि उनमें से अक्सर हक को नहीं जानते। पस वे एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। और हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी तरफ हमने यह 'वही' (प्रकाशना) न की हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो। (24-25)

एक ख़ुदा के सिवा दूसरे माबूद फर्ज करना किसी वाकई दलील की बुनियाद पर नहीं है। बल्कि सरासर लाइल्मी की बुनियाद पर है। जो लोग ख़ुदा के लिए शुर्का (साझीदार) मानते हैं उनके पास अपने अकीदए शिर्क के हक में कोई दलील नहीं, न इंसानी इल्म में और न आसमानी 'वही' में। वे तौहीद के दलाइल सुनकर उनसे एराज करते हैं तो इसकी वजह उनका इस्तदलाली (तार्किक) यकीन नहीं है बल्कि इसकी वजह सिर्फ उनका तअस्सुब है। अपने तअस्सुब भरे मिजाज की वजह से वे अपने अकीदे में इतना पुख़्ता हो गए हैं कि इस्तदलाल के एतबार से बेहकीकत होने के बावजूद वे उसे छोड़ने के लिए राजी नहीं होते।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُونَهُ
بِالْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾ وَمَن
يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

और वे कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है, वह इससे पाक है, बल्कि (फरिश्ते) तो मुअज्जज (सम्मानीय) बंदे हैं। वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं करते। और वे उसी के हुक्म के मुताबिक अमल करते हैं। अल्लाह उनके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और वे सिफारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिसे अल्लाह पसंद करे। और वे उसकी हैबत से डरते रहते हैं। और उनमें से जो शख़्स कहेगा कि उसके सिवा मैं माबूद (पूज्य) हूं तो हम उसे जहन्नम की सजा देंगे। हम जालिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। (26-29)

एक चीज को हक और दूसरी चीज को बातिल समझना आदमी से उसकी आजादी छीन लेता है। इसलिए इंसान हमेशा इस कोशिश में रहा है कि वह ऐसा नजरिया दरयाफ्त करे जिससे हक व बातिल का फ़र्क़ मिट जाए। जिससे उसे यह इत्मीनान हासिल हो कि वह दुनिया में चाहे जिस तरह भी रहे उससे यह पूछ नहीं होने वाली है कि तुमने ऐसा क्यों किया और वैसा क्यों नहीं किया। ग़ैर मजहबी लोगों ने यह तस्कीन इंकारे आख़िरत के जरिए हासिल करने की कोशिश की है और मजहबी लोगों ने मुश्रिकाना अकीदे के जरिए।

फ़रिश्ते एक ग़ैबी (अप्रकट) मख़्लूक हैं। पैग़म्बरों के जरिए इंसान को फ़रिश्तों की मौजूदगी की ख़बर दी गई ताकि वह ख़ुदा की कुदरत का एहसास करे। मगर उसने फरिश्तों को ख़ुदा की बेटी बनाकर अजीब व ग़रीब तौर पर यह अकीदा गढ़ लिया कि वे फ़रिश्तों के नाम पर कुछ इबादती रस्में अदा करता रहे, और वह आख़िरत में अपने बाप से सिफारिश करके उसकी बख़्शिश करा देंगे।

इस क़िस्म के तमाम अक़ीदे ख़ुदा की ख़ुदाई की नफ़ी हैं। ख़ुदा इसीलिए ख़ुदा है कि वह ऐसी तमाम कमियों से पाक है। अगर वह इन कमियों में मुब्तिला होता तो वह ख़ुदा न होता।

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

क्या इंकार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों बंद थे फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जानदार चीज को बनाया। क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते। (30)

रत्क के मअना किसी चीज का मुंह बंद होना है और फ़त्क का मतलब उसका खुल जाना है। ग़ालिबन इससे जमीन व आसमान की वह इब्तिदाई हालत मुराद है जिसे मौजूदा जमाने में बिगबैंग (महाविस्फोट) नजरिया कहा जाता है। जदीद साइंसी तख़्लीक के मुताबिक जमीन व आसमान का तमाम माद्दा इब्तिदा में एक बहुत बड़े गोले (सुपर एटम) की सूरत में था। ज्ञात भौतिक विज्ञान के नियमों के मुताबिक उस वक़्त उसके तमाम अज्जा (अवयय) अपने अंदरूनी मर्कज की तरफ खिंच रहे थे और इंतिहाई शिद्दत के साथ आपस में जुड़े हुए थे। इसके बाद उस गोले के अंदर एक धमाका हुआ और उसके अज्जा अचानक बाहर की दिशा में फैलना शुरू हुए। इस तरह बिलआख़िर वह वसीअ कायनात बनी जो आज हमारे सामने मौजूद है।

इब्तिदाई माद्दी गोले (सुपर एटम) में यह ग़ैर मामूली वाकया बाहर की मुदाख़लत (हस्तक्षेप) के बग़ैर नहीं हो सकता। इस तरह आगाजे कायनात की यह तारीख़ वाजेह तौर पर एक ऐसी हस्ती को साबित करती है जो कायनात के बाहर अपना मुस्तक़िल वजूद रखती है और जो अपनी जाती कुव्वत से कायनात के ऊपर असरअंदाज होती है।

हमारी दुनिया में हर जानदार चीज सबसे ज्यादा जिस चीज से मुरक्कब (निर्मित) होती है वह पानी है। पानी न हो तो जिंदगी का ख़ात्मा हो जाए। यह पानी हमारी जमीन के सिवा कहीं और मौजूद नहीं। वसीअ कायनात में अपवाद के तौर पर सिर्फ एक मकाम पर पानी का पाया जाना वाजेह तौर पर 'ख़ुसूसी तख़्लीक' (विशिष्ट सृजन) का पता देता है। कैसी अजीब बात है कि ऐसी खुली-खुली निशानियों के बाद भी आदमी ख़ुदा को नहीं पाता। इसके बावजूद वह बदस्तूर महरूम पड़ा रहता है।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

और हमने जमीन में पहाड़ बनाए कि वह उन्हें लेकर झुक न जाए और उसमें हमने कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग राह पाएं। और हमने आसमान को एक महफ़ूज (सुरक्षित) छत बनाया। और वे उसकी निशानियों से एराज (उपेक्षा) किए हुए हैं। और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद बनाए। सब एक-एक मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं। (31-33)

यहां जमीन की चन्द नुमायां निशानियों का जिक्र है जो इंसान को ख़ुदा की याद दिलाती हैं ताकि वह उसका शुक्रगुजार बंदा बने। उनमें से एक पहाड़ों के सिलसिले हैं जो समुद्रों के नीचे के कसीफ (गाढ़े) माद्दे को संतुलित रखने के लिए सतह जमीन पर जगह-जगह उभर आए हैं। इससे मुराद ग़ालिबन वही चीज है जिसे जदीद साइंस में भू-संतुलन (Isostasy) कहा जाता है। इसी तरह जमीन का इस काबिल होना भी एक निशानी है कि इंसान उस पर अपने लिए रास्ते बना सकता है, कहीं हमवार (समतल) मैदान की सूरत में, कहीं पहाड़ी दर्रों की सूरत में और कहीं दरियाई शिगाफ (फाड़) की सूरत में।

आसमान की 'छत' जो हमारी बालाई फजा है, उसकी तर्कीब इस तरह से है कि वह हमें सूरज की नुक्सानदेह किरणों से बचाती है। वह शिहाबे साकिब (तारों के टूटने) की मुसलसल बारिश को हम तक पहुंचने से रोके हुए है। इसी तरह सूरज और चांद का टकराए बग़ैर एक ख़ास दायरे में घूमना और इसकी वजह से जमीन पर दिन और रात का बाकायदगी के साथ पैदा होना।

इस किस्म की बेशुमार निशानियां हमारी दुनिया में हैं। आदमी उन्हें गहराई के साथ देखे तो वह ख़ुदा की कुदरतों और नेमतों के एहसास में डूब जाए। मगर आदमी उन्हें नजरअंदाज कर देता है। वह खुले-खुले वाकेयात को देखकर भी अंधा बहरा बना रहता है।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

और हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान को हमेशा की जिंदगी नहीं दी तो क्या अगर तुम्हें मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं। हर जान को मौत का मजा चखना है। और हम तुम्हें बुरी हालत और अच्छी हालत से आजमाते हैं परखने के लिए। और तुम सब हमारी तरफ लौटाए जाओगे। (34-35)

मक्का में जो लोग अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

मुख़ालिफ थे वे वसाइल (संसाधनों) के एतबार से आपसे बहुत बढ़े हुए थे। उन्हें उस वक्त के माहौल में इज्जत और बरतरी हासिल थी। इस फर्क का मतलब उनके नजदीक यह था कि वे हक पर हैं और मुहम्मद (सल्ल०) नाहक पर। मगर दुनियावी चीजों की ज्यादती और कमी हक और नाहक की बुनियाद पर नहीं होती बल्कि सिर्फ इम्तेहान के लिए होती है। यह ख़ुदा की तरफ से बतौर आजमाइश है। दुनियावी सामान पाकर अगर कोई शख़्स अपने को बड़ा समझने लगे तो गोया वह अपने को इन चीजों का नाअहल साबित कर रहा है। इसका नतीजा सिर्फ यह है कि मौत के बाद की जिंदगी में उसे हमेशा के लिए महरूम कर दिया जाए।

मक्का के लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाकाम करने के लिए हर किस्म की मुख़ालिफाना कोशिशों में लगे हुए थे। यहां तक कि वे चाहते थे कि किसी न किसी तरह वे आपका ख़ात्मा कर दें। ताकि यह मिशन अपनी जड़ से महरूम होकर हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए। फरमाया कि पैग़म्बर के ख़िलाफ इस किस्म की साजिशें करने वाले लोग इस हकीकत को भूल गए हैं कि जिस कब्र में वे दूसरे को दाख़िल करना चाहते हैं उसी कब्र में बिलआख़िर उन्हें ख़ुद भी दाख़िल होना है। फिर मौत के बाद जब उनका सामना मालिके हकीकी से होगा तो वहां वे क्या करेंगे।

وإذا رآك الذين كفروا إن يتخذونك إلا هزوا أهذا الذي يذكر آلهتكم وهم بذكر الرحمن هم كافرون

और मुंकिर लोग जब तुम्हें देखते हैं तो वे सब तुम्हें मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों (पूज्यों) का जिक्र किया करता है। और ख़ुद ये लोग रहमान के जिक्र का इंकार करते हैं। (36)

क़ुरैश के माबूद अक्सर उनकी कौम के अकाबिर (महापुरुष) थे। एक तरफ अपने इन अकाबिर की ख़्याली अज्मत उनके जेहनों में बसी हुई थी। दूसरी तरफ पैग़म्बर था जिसकी तस्वीर उस वक्त एक आम इंसान से ज्यादा न थी। इस तक़ाबुल (तुलना) में पैग़म्बर उन्हें बिल्कुल मामूली नजर आता। वे हकारत के साथ कहते कि क्या यही वह शख़्स है जो हमारे अकाबिर पर तंकीद करता है और अकाबिर के जिस दीन पर हम कायम हैं उसे रद्द करके दूसरा दीन पेश कर रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को सिर्फ एक ख़ुदा की तरफ बुलाते थे। मगर उन्हें ख़ुदा से कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी तमाम दिलचस्पियां अपने अकाबिर से वाबस्ता थीं। उन्होंने अपने इन अकाबिर को माबूद का दर्जा दे रखा था। आपकी दावत (आह्वान) से चूंकि इन अकाबिर पर जद पड़ती थी। इसलिए वे आपके सख़्त मुख़ालिफ हो गए। वे भूल गए कि माबूदों को रद्द करके आप ख़ुदा को पेश कर रहे हैं न कि ख़ुद अपनी जात को।

خلق الإنسان من عجل سأوريكم آياتي فلا تستعجلون ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار ولا عن ظهورهم ولا هم ينصرون بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ولا هم ينظرون ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزئون

इंसान उजलत (जल्दबाज़ी) के ख़मीर से पैदा हुआ है। मैं तुम्हें अनकरीब अपनी निशानियां दिखाऊंगा, पस तुम मुझसे जल्दी न करो और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। काश इन मुंकिरों को उस वक्त की ख़बर होती जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से। और न उन्हें मदद पहुंचेगी। बल्कि वह अचानक उन पर आ जाएगी, पस उन्हें बदहवास कर देगी। फिर वे न उसे दफा कर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया। फिर जिन लोगों ने उनमें से मजाक उड़ाया था उन्हें उस चीज ने घेर लिया जिसका वे मजाक उड़ाते थे। (37-41)

अरब के लोग आख़िरत के मुंकिर न थे। वे आख़िरत की उस नौइयत के मुंकिर थे जिसकी ख़बर उन्हें उनकी कौम का एक शख़्स 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' दे रहा था। उन्हें फख़्र था कि वे एक ऐसे दीन पर हैं जो उनकी कामयाबी की यकीनी जमानत है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके इस यकीन की तरदीद की तो वे बिगड़ गए। वे अपनी बेख़ौफ नफ्सियात की बिना पर यह कहने लगे कि वह अजाब हमें दिखाओ जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो।

फरमाया कि उनकी यह जल्दबाजी सिर्फ इसलिए है कि अभी इम्तेहान के दौर में होने की वजह से वे अजाब से दूर खड़े हुए हैं। जिस दिन यह मोहलत ख़त्म होगी और ख़ुदा का अजाब उन्हें घेर लेगा, उस वक्त उनकी समझ में आ जाएगा कि रसूल की दावत के बारे में संजीदा न होकर उन्होंने कितनी बड़ी ग़लती की थी।

قل من يكلؤكم بالليل والنهار من الرحمن بل هم عن ذكر ربهم معرضون أم لهم آلهة تمنعهم من دوننا لا يستطيعون نصر

أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफाजत करता है। बल्कि वे लोग अपने रब की याददिहानी से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचा लेते हैं। वे ख़ुद अपनी हिफाजत की कुदरत नहीं रखते। और न हमारे मुकाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (42-43)

ख़ुदा की पकड़ का मसला किसी दूरदराज मुस्तकबिल का मसला नहीं है। वह उसी दिन-रात के अंदर छुपा हुआ है जिसमें आदमी अपने आपको मामून व महफूज समझता है। मसलन सूरज और जमीन का फासला अगर आधे के बराकर घट जाए तो हमारे दिन इतने गर्म हो जाएं कि वे हमें आग के शोलों की तरह जला दें। इसके बरअक्स अगर जमीन से सूरज का फासला दुगना बढ़ जाए तो हमारी रातें इतनी ठंडी हो जाएं कि हम बर्फ की तरह जमकर रह जाएं।

जमीन व आसमान का यह हद दर्जा मुवाफिक इंतिजाम जिसने कायम कर रखा है वह इस काबिल है कि इंसान अपनी तमाम अकीदतें और वफादारियां उससे वाबस्ता करे। न कि वह उन झूठे माबूदों की परस्तिश करने लगे जो उसे कुछ नहीं दे सकते।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾

बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि इसी हाल में उन पर लम्बी मुद्दत गुजर गई। क्या वे नहीं देखते कि हम जमीन को उसके अतराफ (चतुर्दिक) से घटाते चले जा रहे हैं। फिर क्या यही लोग ग़ालिब (वर्चस्वशील) रहने वाले हैं। (44)

मक्का के लोग उस जमाने में अरब के कायद (नायक) समझे जाते थे। यह कयादत (नेतृत्व) उनके लिए ख़ुदा की एक नेमत थी। मगर उससे उन्होंने किब्र (अभिमान) की ग़िजा ली। चुनांचे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जबान से हक का एलान हुआ तो उन्होंने अपनी मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) की बिना पर इसका इंकार कर दिया।

यह मक्का में इस्लाम का हाल था। मगर बाहर के अवाम जो इस किस्म की नफ्सियाती पेचीदगियों में मुब्तिला न थे उनके अंदर इस्लाम की सदाकत फैलती जा रही थी। मक्का में इस्लाम को रद्द कर दिया गया था मगर बाहर के कबाइल में इस्लाम को इख़्तियार किया जा रहा था। मदीना के बाशिंदों के बड़े पैमाने पर कुबूले इस्लाम ने यह बात आख़िरी तौर पर वाजेह कर दी कि मक्का के लोगों की कयादत का दायरा सिमटता जा रहा है। यह एक खुली

हुई तंबीह थी। मगर जो लोग बड़ाई की नफ्सियात में मुब्तिला हों वे किसी भी तंबीह से सबक लेने वाले नहीं बनते।

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾

कहो कि मैं बस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से तुम्हें डराता हूं। और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उन्हें डराया जाए और अगर तेरे रब के अजाब का झोंका उन्हें लग जाए तो वे कहने लगेंगे कि हाय हमारी बदबख़्ती, बेशक हम जालिम थे। (45-46)

'वही के जरिए डराना' गोया दलील के जरिए लोगों को सचेत करना है। हक का दाओ हमेशा दलील की जबान में अपनी बात को पेश करता है। और दलील ही की जबान में लोगों को उसे पहचानना पड़ता है। जो लोग दलील के सामने अंधे बहरे बने रहें, उनकी आंख सिर्फ उस वक्त खुलती है जबकि ख़ुदा की ताकत खुले तौर पर जाहिर हो जाए। उस वक्त हर सरकश और मुतकब्बिर (घमंडी) फौरन मान लेगा। मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۗ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾

और हम कियामत के दिन इंसाफ की तराजू रखेंगे। पस किसी जान पर जरा भी जुल्म न होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसे हाजिर कर देंगे। और हम हिसाब लेने के लिए काफी हैं। (47)

'तराजू' मौजूदा दुनिया में किसी चीज का वजन मालूम करने की अलामत है। इसलिए अल्लाह तआला ने इसी मालूम शब्दावली को आख़िरत का मामला समझाने के लिए इस्तेमाल किया। दुनिया का तराजू माद्दी (भौतिक) चीजों को तोलना है। आख़िरत में ख़ुदा का तराजू मअनवी (अर्थपूर्ण) हकीकतों को तोलकर उसका वजन बताएगा।

दुनिया में आदमी किसी चीज को उसी वक्त पाता है जबकि वह उसकी कीमत अदा करे। कम कीमत देने वाला कम चीज पाता है। और ज्यादा कीमत देने वाला ज्यादा चीज। यही मामला आख़िरत में भी पेश आएगा। वहां की आला चीजें भी आदमी को कीमत देकर मिलेंगी। कीमत अदा किए बग़ैर जिस तरह दुनिया की चीज किसी को नहीं मिलती। इसी तरह आख़िरत की चीजेंभी उसी को मिलेंगी जो उनकी जरूरी कीमत अदा करे। कुरआन इसी कीमत की निशानदेही करने वाली किताब है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۗ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

और हमने मूसा और हारून को फ़ुरक़ान (सत्य-असत्य की कसौटी) और रोशनी और नसीहत अता की ख़ुदातरसों (ईश-परायण लोगों) के लिए, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे क़ियामत का ख़ौफ़ रखने वाले हैं। और यह एक बाबरकत याददिहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुंकिर हो। (48-50)

फ़ुरक़ान और ज़िया (रोशनी) और ज़िक्र जो हज़रत मूसा को दिया गया, यही ख़ुदा की तरफ से तमाम पैग़म्बरों को मिला था। फ़ुरक़ान से मुराद वह नज़रियाती मेयार है जिसके ज़रिए आदमी हक़ और बातिल के दर्मियान फ़र्क़ कर सकता है। ज़िया से मुराद ख़ुदा की रहनुमाई है जो आदमी को बेराही के अंधेरे से निकाल कर सिराते मुस्तक़ीम (सन्मार्ग) के उजाले में लाती है। ज़िक्र से मुराद याददिहानी है। यानी चीज़ों के अंदर छुपे हुए नसीहत के पहलू को खोलना। ताकि चीज़ें लोगों के लिए महज़ चीज़ें न रहें बल्कि वे नसीहत और मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) का ख़ज़ाना बन जाएं।

इस तरह ख़ुदा ने इंसान की हिदायत का इंतिज़ाम किया। मगर ख़ुदाई हिदायतनामे को वाकई तौर पर अपने लिए हिदायत बनाना उसी वक्त मुमकिन है जबकि आदमी अंजाम का अंदेशा रखता हो। उसकी अंदेशानाक नफ्सियात उसे इस हद तक संजीदा बना दे कि वह हर दूसरी चीज़ के मुक़ाबले में हक़ व सदाक़त को ज़्यादा अहमियत देने लगे।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾

और हमने इससे पहले इब्राहीम को इसकी हिदायत अता की। और हम उसे ख़ूब जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो। उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप दादा को इनकी इबादत करते हुए पाया है। इब्राहीम ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा एक खुली गुमराही में मुब्तिला रहे। (51-54)

ख़ुदा के यहां फ़ैज़ बक़द्रे इस्तेदाद (सामर्थ्य) का उसूल है। हज़रत इब्राहीम ने मुख़्तलिफ इम्तेहानात से गुजरकर जिस इस्तेदाद का सुबूत दिया था उसे ख़ुदा ने जाना और उसके मुताबिक उन्हें हिदायत और मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) अता फरमाई। यही मामला ख़ुदा का अपने हर बंदे के साथ है।

हज़रत इब्राहीम इराक के क़दीम शहर उर में पैदा हुए। उस वक्त यहां की ज़िंदगी में पूरी तरह शिर्क छाया हुआ था। मुश्रिकाना माहौल में परवरिश पाने के बावजूद वह उससे मुतअस्सिर नहीं हुए। उन्होंने चीज़ों को ख़ुद अपनी अक्ल से जांचा और माहौल के विपरीत तौहीद (एकेश्वरवाद) की सदाक़त को पा लिया। वह ऐसी दुनिया में थे जहां हर किस्म की इज़्ज़त और तरक्क़ी शिर्क से वाबस्ता हो गई थी। मगर उन्होंने किसी चीज़ की परवाह नहीं की। तमाम मस्लेहतों से बेनियाज़ होकर क़ौम की रविश पर तंक़ीद की और उसके सामने हक़ का एलान करने के लिए खड़े हो गए। यही वे सिफ़ात हैं जो किसी शख़्स को इस क़ाबिल बनाती हैं कि उसे ख़ुदा की हिदायत हासिल हो।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मजाक कर रहे हो। इब्राहीम ने कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। जिसने उन्हें पैदा किया। और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूं और ख़ुदा की कसम मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर (युक्ति) करूंगा। जबकि तुम पीठ फेरकर चले जाओगे। पस उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवा उनके एक बड़े के ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। (55-58)

हजरत इब्राहीम के ज़माने में मुश्रिकाना तख़य्युलात (बहुदेववादी परिकल्पनाएं) लोगों के ज़ेहनों पर इतना ज़्यादा छाए हुए थे कि इब्तिदा में वे हज़रत इब्राहीम की तंक़ीद को ग़ैर संजीदा बात समझे। उन्होंने कहा कि तुम कोई सोची समझी बात कह रहे हो या महज़ तफ़रीह के तौर पर कुछ अल्फ़ाज़ अपनी ज़बान से निकाल रहे हो।

हजरत इब्राहीम ने कहा कि यह तुम्हारी मजीद नासमझी है कि तुम इस अहमतरीन बात को गैर संजीदा बात समझ रहे हो। हालांकि तमाम ज़मीन व आसमान इसके हक़ में गवाही

दे रहे हैं। अगले दिन उन्होंने मजीद यह किया कि ग़ैर मामूली जुरअत से काम लेकर उनके बुतों को तोड़ डाला। इस तरह गोया हजरत इब्राहीम ने अमलन दिखाया कि ये बुत फ़िलवाक़अ भी इतने ही बेहक़ीक़त हैं जितना मैंने लफ़्ज़ी तौर पर तुम्हें बताया था।

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ۝ قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ۝ قَالُوا أَأَنْتَ فَعَلْتَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ۝ قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَاسْأَلُوهُمْ إِنْ كَانُوا يَنْطِقُونَ ۝

उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है बेशक वह बड़ा जालिम है। लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को इनका तज़्किरा करते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्होंने कहा कि उसे सब आदमियों के सामने हाजिर करो। ताकि वे देखें। उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ तुमने ऐसा किया है। इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों। (59-63)

अगले दिन जब लोग बुतख़ाने में गए और देखा कि वहां के बुत टूटे पड़े हैं। तो उन्हें सख़्त धक्का लगा। बिलआख़िर उनकी समझ में आया कि यह उस नौजवान का किस्सा मालूम होता है जो हमारे आबाई (पैतृक) दीन से मुंहरिफ (भटका हुआ) है और उसके ख़िलाफ बोलता रहता है।

हजरत इब्राहीम ने बुतों को तोड़ते हुए जानबूझ कर सबसे बड़े बुत को छोड़ दिया था। अब जब वे बुलाए गए और उनसे बाजपुर्स (पूछगछ) हुई तो उन्होंने कहा कि यह बड़ा बुत सही व सालिम मौजूद है। इससे पूछ लो। अगर वह वाकई माबूद है तो बोलकर तुम्हें बताए कि यह किस्सा इन बुतों के साथ कैसे पेश आया।

हजरत इब्राहीम ने बराहेरास्त तौर पर कोई बात नहीं कही। मगर बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर उन्होंने वह बात कह दी जो इस मौके पर बराहेरास्त कलाम से भी ज्यादा मुअस्सिर थी।

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنْفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَٰؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ۝ قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ۝ أُفٍّ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

फिर उन्होंने अपने जी में सोचा फिर कहने लगे कि हक़ीक़त में तुम ही नाहक

पर हो। फिर अपने सरों को झुका लिया। ऐ इब्राहीम, तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हो जो तुम्हें न कोई फ़ायदा पहुंचा सकें और न कोई नुक़सान। अफ़सोस है तुम पर भी और उन चीजों पर भी जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं। (64-67)

हजरत इब्राहीम के इन जवाबात पर वे लोग आपको गुस्ताख़ ठहरा कर बिगड़ सकते थे। जैसा कि इन मौकों पर आम तौर पर होता है। ताहम बुतपरस्ती के बावजूद उनमें अभी जिंदगी मौजूद थी। चुनांचे उन्होंने आपके जवाब के इस्तदलाली (तार्किक) वजन को महसूस किया। और शर्मिंदा होकर अपने बरसरे नाहक (असत्यवादी) होने का एतराफ किया। बाद को अगर अस्बियत (द्वेष) के जज्बात न उभर आते तो यह तजर्बा उन्हें ईमान तक पहुंचाने के लिए काफ़ी हो जाता।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانْصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝ قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝ وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ۝

उन्होंने कहा कि इसे आग में जला दो और अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है। हमने कहा कि ऐ आग तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा। और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया। (68-70)

जो लोग इख़्तियारात के मालिक होते हैं वे दलील के मैदान में हार जाने के बाद हमेशा ज़ुल्म का तरीका इख़्तियार करते हैं। यही हजरत इब्राहीम के साथ हुआ। बुतशिकनी के वाक्ये के बाद जब कौम के लीडरों ने महसूस किया कि वे इब्राहीम के मुक़ाबले में बेदलील हो चुके हैं तो अब उन्होंने आपके ऊपर सख़्तियां शुरू कर दीं। यहां तक कि ताकत के घमंड में आकर एक रोज आपको आग के अलाव में डाल दिया।

मगर ख़ुदा का पैग़म्बर दुनिया में ख़ुदा का नुमाइंदा होता है। उसका मामला ख़ुदा का मामला होता है। इसलिए ख़ुदा इस्तिसनाई तौर पर पैग़म्बर की ग़ैर मामूली मदद करता है। चुनांचे ख़ुदा ने हुक्म दिया और आग आपके लिए ठंडी हो गई। इस नौइयत की नुसरत (मदद) ग़ैर पैग़म्बरों के लिए भी नाजिल हो सकती है। बशर्ते कि वे अपने आपको ख़ुदा के मंसूबे के साथ उस हद तक वाबस्ता करें जिस तरह पैग़म्बर उसके साथ अपने को वाबस्ता करता है।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ

بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝

और हमने उसे और लूत को उस जमीन की तरफ नजात दे दी जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हमने उसे इस्हाक दिया और मजीद बरआं (तदधिक) याकूब। और हमने उन सबको नेक बनाया। और हमने उन्हें इमाम (नायक) बनाया जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे। और हमने उन्हें नेक अमली और नमाज की इकामत और जकात की अदायगी का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे। (71-73)

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए। जब उनकी कौम और वहां का बादशाह नमरूद आपका दुश्मन हो गया तो इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद आपने अपना वतन छोड़ दिया। और अल्लाह के हुक्म से शाम व फ़िलिस्तीन के सरसब्ज इलाके की तरफ चले गए। आपके मुल्क वालों ने अगरचे आपका साथ नहीं दिया था। मगर ख़ुदा ने आपको बेटे और पोते दिए जो आपके रास्ते पर चलने वाले बने। यहां तक कि उनकी नेकी ख़ुदा ने इस तरह कुबूल फरमाई कि आपकी नस्ल में नुबुव्वत का सिलसिला जारी कर दिया।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۝ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

और लूत को हमने हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया। और उसे उस बस्ती से नजात दी जो गंदे काम करती थी। बिलाशुबह वे बहुत बुरे, फासिक (अवज्ञाकारी) लोग थे। और हमने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह नेकों में से था। (74-75)

हिक्मत से मुराद मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और इल्म से मुराद 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है। हजरत लूत को ये चीजें अता हुईं। दूसरे तमाम पैग़म्बरों को भी ये चीजें दी जाती रही हैं। अब ख़त्मे नुबुव्वत के बाद 'वही' का कायम मकाम (स्थानापन्न) कुरआन है। ताहम हिक्मत (मअरफत) से ग़ैर पैग़म्बरों को भी बकद्र इस्तेदाद (यथा सामर्थ्य) हिस्सा मिलता है।

जिन लोगों पर अल्लाह की नजर होती है वह उनका वली व कारसाज बन जाता है। वह उन्हें बुरे लोगों के माहौल से निकाल कर अच्छे लोगों के माहौल में ले जाता है। वह जिंदगी के हर मोड़ पर उनका मददगार बन जाता है। वह उन्हें वह हिक्मत अता फरमाता है जिसके बाद उनकी पूरी जिंदगी रहमते ख़ुदावंदी के आबशार (झरने) में नहा उठती है।

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

और नूह को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी दुआ कुबूल की। पस हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी। और उन लोगों के मुकाबले में उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। बेशक वे बहुत बुरे लोग थे। पस हमने उन सबको ग़र्क कर दिया। (76-77)

हजरत नूह ने इंतिहाई लम्बी मुद्दत तक अपनी कौम को दावत दी। मगर चन्द लोगों के सिवा किसी ने इस्लाह कुबूल न की। आख़िरकार हजरत नूह ने अपनी कौम की हलाकत की दुआ की। इसके बाद ऐसा सख़्त सैलाब आया कि पहाड़ की चोटियां भी लोगों को बचाने के लिए आजिज हो गईं।

यह वाकया अगरचे पैग़म्बर की सतह पर पेश आया। ताहम आम इंसानों के लिए भी इसमें बहुत तस्कीन का सामान है। इससे मालूम होता है कि इस दुनिया में बिगाड़ पैदा करने वाले बिल्कुल आजाद नहीं हैं। और सच्चाई के लिए उठने वाला शख़्स बिल्कुल अकेला नहीं है। अगर कोई शख़्स सच्चाई से इस हद तक अपने आपको वाबस्ता करे कि वह दुनिया में सच्चाई का नुमाइंदा बन जाए तो इसके बाद वह दुनिया में अकेला नहीं रहता। बल्कि ख़ुदा उसके साथ हो जाता है और जिसके साथ ख़ुदा हो जाए उसे कौन जेर कर सकता है।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝

और दाऊद और सुलैमान को जब वे दोनों खेत के बारे में फैसला कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियां रात के वक्त जा पड़ीं। और हम उनके इस फैसले को देख रहे थे। पस हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी। और हमने दोनों को हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया था। और हमने दाऊद के साथ ताबेअ कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्बीह करते थे और परिंदों को भी। और हम ही करने वाले थे। और हमने उसे तुम्हारे लिए एक जंगी लिबास की संअत (शिल्पकला) सिखाई।

ताकि वह तुम्हें लड़ाई में महफूज रखे। तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो। (78-80)

इन आयात में दो इस्राईली पैग़म्बरों का ज़िक्र है। एक हजरत दाऊद और दूसरे उनके साहबजादे हजरत सुलैमान। इन्हें अल्लाह तआला ने इंसानी मामलात का सही फैसला करने की सलाहियत दी। हजरत दाऊद अल्लाह की तस्बीह इतने आला तरीके पर करते थे कि पहाड़ और चिड़ियां भी उनकी हमनवां हो जातीं। इसी तरह अल्लाह ने उन्हें बताया कि लोहे का इस्तेमाल किस तरह किया जाए।

यह एक हकीकत है कि ख़ुदा के पैग़म्बरों ही ने इंसान को बताया कि वह अपने रब की तस्बीह व इबादत किस तरह करे। मगर इन आयात से मालूम होता है कि दूसरी जरूरी चीजें भी इंसान को सही तौर पर पैग़म्बरों ही के जरिए मालूम हुई। मसलन अद्ले इज्तिमाई (सामूहिक न्याय) का उसूल और मादनियात (धातु, खनिज) का इस्तेमाल भी पैग़म्बरों ही के जरिए इंसानों के इल्म में आया। जिंदगी के मुतअल्लिक हर जरूरी चीज का इब्तिदाई इल्म ग़ालिबन पैग़म्बरों ही के जरिए इंसान को दिया गया है।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝

और हमने सुलैमान के लिए तेज हवा को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरजमीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज को जानने वाले हैं। और शयातीन में से भी हमने उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया था जो उसके लिए ग़ौता लगाते थे। और इसके सिवा दूसरे काम करते थे और हम उन्हें संभालने वाले थे। (81-82)

यहां हवाओं की तस्ख़ीर से मुराद समुद्री जहाजरानी है। क़दीम जमाने में समुद्री सफर में उस वक्त इंक़लाब आया जबकि इंसान ने बादबानी जहाज बनाने का तरीक़ा दरयाफ्त किया। ये बादबान गोया हवाओं को मुसख़्ख़र करने का जरिया थे और उस जमाने के जहाजों के लिए इंजन का काम करते थे। बादबानी जहाजों की ईजाद ने समुद्रों को ज्यादा बड़े पैमाने पर नक़्ल व हमल (यातायात) के लिए क़ाबिले इस्तेमाल बना दिया। इससे अंदाजा होता है कि समुद्री जहाजरानी की साइंस भी ग़ालिबन इंसान को पैग़म्बरों के जरिए सिखाई गई।

इसके अलावा जिन्नों में से भी एक गिरोह को अल्लाह ने हजरत सुलैमान के ताबेअ कर दिया था। वे उनके लिए ऐसे बड़े-बड़े रिफाही (जनहित के) काम करते थे जो आम इंसान नहीं कर सकते। जदीद (आधुनिक) मशीनी दौर में इंसानी फायदे के ज्यादा बड़े काम मशीनें

अंजाम देती हैं। मशीनी दौर से पहले इस किस्म के बड़े-बड़े कामों को मुमकिन बनाने के लिए ख़ुदा ने जिन्नों को अपने पैग़म्बर की मातहती में दे दिया था।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝

और अय्यूब को जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू सब रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे जो तकलीफ थी उसे दूर कर दिया। और हमने उसे उसका कुंबा (परिवार) अता किया और इसी के साथ उसके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत और नसीहत, इबादत करने वालों के लिए। (83-84)

पैग़म्बरों के जरिए ख़ुदा हर किस्म की आलातरीन मिसाल क़ायम करता है ताकि वे लोगों के लिए नमूना हों। उन्हीं में से एक मिसाल हजरत अय्यूब की है। हजरत अय्यूब ग़ालिबन नवीं सदी क़ब्ल मसीह (ई० पू०) के इस्राईली पैग़म्बर थे। बाइबल के बयान के मुताबिक इब्तिदा में वह बहुत दौलतमंद थे। खेती, मवेशी, मकानात, आल औलाद, हर चीज की इतनी कसरत थी कि कहा जाने लगा कि अहले मशरिक में कोई इतना बड़ा आदमी नहीं। इसके बावजूद हजरत अय्यूब बेहद शुक्रगुजार और वफ़ादार बंदे थे। उनकी जिंदगी इस बात का नमूना बन गई कि इज्जत और दौलत पाने के बावजूद किस तरह एक आदमी मुतवाजेअ (विनम्र) बंदा बना रहता है।

मगर शैतान ने इस वाकये को लोगों के जेहनों में उलट दिया। उसने लोगों को सिखाया कि अय्यूब की यह ग़ैर मामूली ख़ुदापरस्ती इसलिए है कि उन्हें ग़ैर मामूली नेमतें हासिल हैं। अगर ये नेमतें उनके पास न रहें तो उनकी सारी शुक्रगुजारी ख़त्म हो जाएगी।

इसके बाद ख़ुदा ने आपके जरिए से दूसरी मिसाल क़ायम की। हजरत अय्यूब के मवेशी मर गए। खेतियां बर्बाद हो गईं। औलाद ख़त्म हो गई। यहां तक कि जिस्म भी बीमारी की नज़्र हो गया। दोस्तों और रिश्तेदारों ने साथ छोड़ दिया। सिर्फ एक बीवी आपके साथ बाकी रह गई। मगर हजरत अय्यूब ख़ुदा के फैसले पर राजी रहे उन्होंने कामिल सब्र का मुजाहिरा किया। बाइबल के अल्फ़ाज में:

'तब अय्यूब ने जमीन पर गिर कर सज्दा किया। और कहा नंगा मैं अपनी मां के पेट से निकला और नंगा ही वापस जाऊंगा। ख़ुदावंद ने दिया और ख़ुदावंद ने ले लिया। ख़ुदावंद का नाम मुबारक हो। इन सब बातों में अय्यूब ने न तो गुनाह किया और न ख़ुदा पर बेजा काम का ऐब लगाया। (अय्यूब 1 : 22)

हजरत अय्यूब ने जब मुसीबतों में इस तरह सब्र व शुक्र का मुजाहिरा किया तो न सिर्फ

आख़िरत में उनके लिए बेहतरीन अज्र लिख दिया गया। बल्कि दुनिया में भी उनकी हालत बदल दी गई। और ख़ुदावंद ने अय्यूब को जितना उसके पास पहले था उसका दोचन्द उसे दिया। (अय्यूब 42 : 12)। हदीस में इसी को तमसील के अल्फ़ाज में इस तरह कहा गया है कि ख़ुदा ने जब दुबारा अय्यूब के दिन फेरे तो उन पर सोने की टिड्डियों की बारिश कर दी।

وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا ٱلْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ ٱلصَّٰبِرِينَ ۝ وَأَدْخَلْنَٰهُمْ فِى رَحْمَتِنَآ ۖ إِنَّهُم مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ۝

और इस्माईल और इदरीस और जुलकिफ्ल को, ये सब सब्र करने वालों में से थे। और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया। बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे। (85-86)

हज़रत इस्माईल हज़रत इब्राहीम के साहबज़ादे थे। कुछ मुफ़स्सिरीन ने हज़रत इदरीस से वह पैग़म्बर मुराद लिया है जिनका जिक्र बाइबल में हनूक (Enoch) के नाम से आया है। इसी तरह हज़रत जुलकिफ्ल से मुराद ग़ालिबन वह नबी हैं जो बाइबल में हिज्क़ील (Ezeikel) के नाम से मज्कूर हुए हैं।

इन पैग़म्बरों की नुमायां सिफ्त सब्र बताई गई है। इसकी वजह यह है कि सब्र तमाम खुदापरस्ताना आमाल की बुनियाद है। सब्र का मतलब अपने आपको रद्दअमल (प्रतिक्रिया) की नफ़्सियात से बचाना है। जो शख़्स अपने आपको रद्दअमल की नफ़्सियात से न बचाए वह इम्तेहान की इस दुनिया में कभी ख़ुदा की पसंदीदा जिंदगी पर कायम नहीं हो सकता। हकीकत यह है कि सब्र ख़ुदा की तमाम रहमतों का दरवाजा है, इस दुनिया में भी और मौत के बाद आने वाली दूसरी दुनिया में भी।

وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبًا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِى ٱلظُّلُمَٰتِ أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبْحَٰنَكَ إِنِّى كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ وَنَجَّيْنَٰهُ مِنَ ٱلْغَمِّ ۚ وَكَذَٰلِكَ نُـۨجِى ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝

और मछली वाले (यूनुस) को, जबकि वह अपनी कौम से बरहम (क्रुद्ध) होकर चला गया। फिर उसने यह समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, तू पाक है। बेशक मैं कुसूरवार हूं। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम ईमान वालों को नजात (मुक्ति) देते हैं। (87-88)

हजरत यूनुस, इराक के एक क़दीम शहर नैनवा की तरफ पैग़म्बर बनाकर भेजे गए। उस

वक्त नैनवा की आबादी एक लाख से कुछ ज्यादा थी। उन्होंने एक अर्से तक कौम को तौहीद और आख़िरत की तरफ बुलाया। मगर वे लोग मानने के लिए तैयार न हुए। पैग़म्बरों के बारे में ख़ुदा की सुन्नत यह है कि इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद अगर कौम बदस्तूर पैग़म्बर की मुंकिर बनी रहे तो पैग़म्बर को बस्ती छोड़ने का हुक्म होता है और कौम पर अजाब आ जाता है। हजरत यूनुस ने ख़्याल किया कि वह वक़्त आ गया है। और ख़ुदा की तरफ से हिजरत (स्थान-परिवर्तन) का हुक्म मिले बग़ैर कौम को छोड़कर चले गए।

शहर से निकल कर वह साहिले समुद्र पर आए और एक कश्ती में सवार हो गए। रास्ते में कश्ती डूबने लगी। लोगों ने समझा कि कोई गुलाम अपने मालिक से भागा है। कदीम रिवायत के मुताबिक इसका हल यह था कि उस ग़ुलाम को मालूम करके उसे दरिया में फेंक दिया जाए। कुरआ (किसी एक का चयन करना) निकाला गया तो हजरत यूनुस का नाम कुरआ में निकला। चुनांचे उन्होंने आपको दरिया में फेंक दिया। ऐन उसी वक्त एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया। मछली आपको अपने पेट में लिए रही और फिर ख़ुदा के हुक्म से आपको लाकर साहिल (समुद्र-तट) पर डाल दिया। आप तंदुरुस्त होकर दुबारा अपनी कौम में वापस आए।

एक पैग़म्बर ने दावत (आह्वान) के महाज को सिर्फ तक्मील (पूर्णता) से पहले छोड़ दिया तो उनके साथ यह किस्सा पेश आया। फिर पैग़म्बर के उन वारिसों का क्या अंजाम होगा जो दावत के महाज को यकसर छोड़े हुए हों।

وَزَكَرِيَّآ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥ رَبِّ لَا تَذَرْنِى فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْوَٰرِثِينَ ۝ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ وَوَهَبْنَا لَهُۥ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَا لَهُۥ زَوْجَهُۥٓ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا خَٰشِعِينَ ۝

और जकरिया को, जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब, तू मुझे अकेला न छोड़। और तू बेहतरीन वारिस है। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे यहया अता किया। और उसकी बीवी को उसके लिए दुरुस्त कर दिया। ये लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमें उम्मीद और ख़ौफ के साथ पुकारते थे। और हमारे आगे झुके हुए थे। (89-90)

पैग़म्बर ख़ुसूसी इनामयाफ्ता लोग हैं। इनकी सबसे बड़ी शख़्सी सिफत यह होती है कि उनकी दौड़ धूप दुनिया के लिए नहीं होती। बल्कि उन चीजों की तरफ होती है जो आख़िरत के एतबार से कीमत रखती हों। अल्लाह की अज्मत को वे इस तरह पा लेते हैं कि वही उन्हें सब कुछ नजर आने लगता है। वे सिर्फ उसी से डरते हैं और सिर्फ उसी को पुकारते हैं। वे हर हाल में ख़ुशूअ (विनय) और तवाजोअ (विनम्रता) की रविश पर कायम रहते हैं।

ये चीजें हजरत जकरिया और दूसरे नबियों में कमाल दर्जे पर थीं। और इसी बिना पर

अल्लाह ने उन्हें अपनी ख़ुसूसी नेमतों से नवाजा। आम अहले ईमान भी जिस क़द्र इन औसाफ का सुबूत देंगे, उसी क़द्र वे ख़ुदा की नुसरत व इआनत के मुस्तहिक क़रार पाएंगे।

وَالَّتِيٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِن رُّوحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً
لِّلْعٰلَمِينَ ﴿٩١﴾

और वह ख़ातून जिसने अपनी नामूस (स्तीत्व) को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूंक दी और उसे और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (91)

हजरत मरयम की सिफ्ते ख़ास यह बताई गई है कि उन्होंने अपनी शहवत (वासना) को काबू में रखा। इसका उन्हें यह इनाम मिला कि वह उस पैग़म्बर की मां बनाई गईं जो बराहेरास्त मोजिजा ख़ुदावंदी (ईश्वरीय चमत्कार) के तहत पैदा हुआ।

यही बात आम मर्दों और औरतों के लिए भी सही है। हर एक का इम्तेहान मौजूदा दुनिया में यह है कि वे अपनी शहवतों और ख़्वाहिशों को काबू में रखे। जो शख़्स जितना ज्यादा इस जब्त का सुबूत देगा उसी के बक़द्र वह ख़ुदा की ख़ुसूसी इनायतों में हिस्सेदार बनेगा।

إِنَّ هٰذِهٖٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوٓا أَمْرَهُم
بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُونَ ﴿٩٣﴾ فَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
لِسَعْيِهٖ ۚ وَإِنَّا لَهٗ كٰتِبُونَ ﴿٩٤﴾

और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूं तो तुम मेरी इबादत करो। और उन्होंने अपना दीन अपने अंदर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। सब हमारे पास आने वाले हैं। पस जो शख़्स नेक अमल करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी महनत की नाक़द्री न होगी, और हम उसे लिख लेते हैं। (92-94)

ख़ुदा ने तमाम नबियों को एक ही दीन लेकर भेजा है। वह यह कि सिर्फ एक ख़ुदा को अपना ख़ुदा बनाओ और उसी की इबादत करो। अगर लोग इसी अस्ल दीन पर कायम रहते तो सब एक ही उम्मत बने रहते। मगर लोगों ने अपनी तरफ से नई-नई बहसें निकाल कर दीन के मुख़्तलिफ एडीशन तैयार कर लिए। किसी ने एक को लिया और किसी ने दूसरे को। इस तरह एक दीन कई दीनों में तक्सीम होकर रह गया।

ख़ुदा के यहां ईमान व अमल की कीमत है, यानी ख़ुदा की सच्ची मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और ख़ुदा की सच्ची ताबेअदारी। इसके सिवा जो चीजें हैं उनकी ख़ुदा के यहां कोई क़द्रदानी न होगी, चाहे कोई शख़्स बतौर ख़ुद उन्हें कितना ही ज्यादा काबिलेक़द्र क्यों न समझता हो।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَآ أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ
وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَّنسِلُونَ ﴿٩٦﴾ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا
هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ
كُنَّا ظٰلِمِينَ ﴿٩٧﴾

और जिस बस्ती वालों के लिए हमने हलाकत मुक़द्दर कर दी है उनके लिए हराम है कि वे रुजूअ करें। यहां तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलन्दी से निकल पड़ेंगे। और सच्चा वादा नजदीक आ लगेगा तो उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएंगी जिन्होंने इंकार किया था। हाय हमारी कमबख़्ती, हम इससे ग़फलत में पड़े रहे। बल्कि हम जालिम थे। (95-97)

किसी बस्ती के लिए ईमान में दाख़िला हराम होने का मतलब यह है कि उसके कुबूले ईमान की इस्तेदाद (सामर्थ्य) ख़त्म हो जाए। जब हक वाजेह दलाइल के साथ सामने आता है तो आदमी अपनी ऐन फितरत के तहत मजबूर होता है कि वह उसे पहचाने। अब जो लोग इस पहचान के बाद हक का एतराफ कर लें वे अपनी फितरत को बाक़ी रखते हैं। इसके बरअक्स जो लोग दूसरी चीजों को अहमियत देने की बिना पर उसका एतराफ न करें वे गोया अपनी फितरत पर पर्दा डाल रहे हैं। हक का इंकार हमेशा अपनी फितरत को अंधा बनाने की कीमत पर होता है। जो लोग अपनी फितरत को अंधा बनाने का ख़तरा मोल लें उनका अंजाम यही है कि उनके लिए ईमान में दाख़िल होना बिल्कुल नामुमकिन हो जाए।

जो लोग दलाइल की जबान में हक को न पहचानें वे हक को सिर्फ उस वक्त पहचानेंगे जबकि कियामत उनकी आंख का पर्दा फाड़ देगी। मगर उस वक्त का पहचानना किसी के कुछ काम न आएगा क्योंकि वह मानने का अंजाम पाने का वक्त होगा न कि मानने का।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنتُمْ لَهَا وٰرِدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ
كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوهَا ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَّ
هُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ أُولٰٓئِكَ عَنْهَا
مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ
خٰلِدُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۖ هٰذَا يَوْمُكُمُ
الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

बेशक तुम और जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं। वहीं तुम्हें जाना है। अगर ये वाकई माबूद (पूज्य) होते तो उसमें न पड़ते। और सब उसमें हमेशा रहेंगे। उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ न सुनेंगे। बेशक जिनके लिए हमारी तरफ से भलाई का पहले फैसला हो चुका है वे उससे दूर रखे जाएंगे। वे उसकी आहट भी न सुनेंगे। और वे अपनी पसंदीदा चीजों में हमेशा रहेंगे। उन्हें बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी। और फरिश्ते उनका इस्तकबाल करेंगे। यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था। (98-103)

अब्दुल्लाह बिन अलजबअरी क़दीम अरब का एक मशहूर शायर था। यह आयत उतरी तो उसने लोगों से कहा कि मुहम्मद से पूछो कि आपके ख़्याल में ख़ुदा के सिवा जितने माबूद हैं और जो उनके आबिद हैं, सबके सब जहन्नम में जाएंगे, तो हम तो फरिश्तों की इबादत करते हैं। यहूद उजैर पैग़म्बर की इबादत करते हैं। नसारा (ईसाई) मसीह पैग़म्बर की इबादत करते हैं। मुश्रिकीन इस नुक्ते को पाकर बहुत ख़ुश हुए और आपसे जाकर सवाल किया। आपने फरमाया कि हर एक जिसने पसंद किया कि वह ख़ुदा के सिवा पूजा जाए तो वह उसके साथ होगा जिसने उसे पूजा। इस जवाब के बाद अब्दुल्लाह बिन अलजबअरी ने मजीद बहस नहीं की। बल्कि उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

इससे मालूम हुआ कि इस आयत के मिस्दाक या तो पत्थर वग़ैरह के बुत हैं या वह माबूद जो ख़ुद भी अपने माबूद बनाए जाने पर राजी रहा हो। जिसने ख़ुदा के सिवा किसी को माबूद बनाया और जिसने अपने माबूद बनने को पसंद किया, दोनों एक साथ इसलिए जहन्नम में डाले जाएंगे ताकि लोगों को इबरत हो।

क़ियामत का दिन इंतिहाई हौलनाक दिन होगा। मगर जिन लोगों को यह तौफ़ीक मिली कि वे क़ियामत के आने से पहले क़ियामत से डरे वे उस दिन की दहशत से महफ़ूज़ रहेंगे। वे जन्नत की राहतों से भरी हुई दुनिया में दाख़िल कर दिए जाएंगे।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِقَوْمٍ عَابِدِينَ ﴿١٠٦﴾

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह तूमार (पुस्तिका) में औराक (पन्ने) लपेट दिए जाते हैं। जिस तरह पहले हमने तख़्लीक की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा (पुनरावृत्ति) करेंगे। यह हमारे जिम्मे वादा है और हम उसे करके रहेंगे। और जबूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि जमीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। इसमें एक बड़ी ख़बर है इबादतगुजार लोगों के लिए। (104-106)

कायनात का मौजूदा फैलाव इम्तेहान वाली दुनिया बनाने के लिए था। इसके बाद जब अंजाम वाली दुनिया बनाने का वक़्त आएगा तो ख़ुदा इस आलम को समेट देगा। और ग़ालिबन इसी माद्दा (पदार्थ) से दूसरा आलम बनाएगा जो अंजाम वाले मकासिद (उद्देश्यों) के हस्बेहाल (अनुरूप) हो। एक दुनिया का वजूद में आना यही इस बात के सुबूत के लिए काफी है कि दूसरी दुनिया भी वजूद में लाई जा सकती है।

मौजूदा दुनिया में अक्सर बुरे लोग बड़ाई का मकाम हासिल कर लेते हैं। मगर यह सिर्फ इम्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। जब इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी और स्थाई तौर पर ख़ुदा की मेयारी दुनिया बनाई जाएगी। तो वहां हर क़िस्म की इज्ज़त और राहत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होगी जो मौजूदा इम्तेहानी दौर में ख़ुदा के सच्चे बंदे साबित हुए थे। यह बात मौजूदा जबूर में भी तफ़्सील से मौजूद है। इसके चन्द अल्फ़ाज ये हैं :

और बदी करने वालों पर रश्क न कर। ख़ुदावंद पर तवक्कुल (भरोसा) कर और नेकी कर। वह तेरी रास्तबाजी (सच्चाई) को नूर की तरह और तेरे हक को दोपहर की तरह रोशन करेगा। क्योंकि बदकिरदार काट डाले जाएंगे सादिक (सच्चे) जमीन के वारिस होंगे। और वे उसमें हमेशा बसे रहेंगे। (जबूर, बाब 37)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قُلْ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

और हमने तुम्हें तो बस दुनिया वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। कहो कि मेरे पास जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है वह यह है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअतगुजार बनते हो। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो कह दो कि मैं तुम्हें साफ तौर पर इत्तिला कर चुका हूं। और मैं नहीं जानता कि वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, करीब है या दूर। बेशक वह खुली बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसे तुम छुपाते हो। और मुझे नहीं मालूम शायद वह तुम्हारे लिए इम्तेहान हो और फायदा उठा लेने की एक मोहलत हो। पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब, हक के साथ फैसला कर दे। और हमारा रब रहमान (कृपाशील) है, उसी से हम उन बातों पर मदद मांगते हैं जो तुम बयान करते हो। (107-112)

ख़ुदा की तरफ से जितने पैग़म्बर आए सब एक ही मक्सद के लिए आए। उनके ज़रिए ख़ुदा यह चाहता था कि इंसानों को हकीकत का वह इल्म दे जिसे इख़्तियार करके वे अबदी (चिरस्थाई) जन्नत के बाशिंदे बन सकते हैं। मगर इंसान हर बार पैग़म्बरों को रद्द करता रहा।

इस एतबार से तमाम पैग़म्बर ख़ुदा की रहमत थे। मगर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इम्तियाज यह है कि आपको अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए एक ख़ुसूसी इनायत का ज़रिया बनाया। ख़ुदा ने यह फैसला फ़रमाया कि आपके ज़रिए हिदायत के उस दरवाजे को हमेशा के लिए खोल दे जो अब तक उनके ऊपर बंद पड़ा हुआ था। इस बिना पर आपकी मदऊ कौम के लिए अल्लाह तआला का यह ख़ुसूसी फैसला था कि उसे बहरहाल हक के रास्ते पर लाना है। ताकि पैग़म्बर के साथ एक ताकतवर जमाअत तैयार हो और वह दुनिया में इंकिलाब बरपा करके तारीख़ के रुख़ को मोड़ दे। रहमते ख़ुदावंदी का यह ख़ुसूसी मंसूबा आप और आपके असहाब के ज़रिए बातमाम व कमाल अंजाम पाया।

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ① يَوْمَ تَرَوْنَهَا
تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ② وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ③ كُتِبَ عَلَيْهِ
اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ④

आयतें-78 **सूरह-22. अल-हज** रुकूअ-10

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ लोगो, अपने रब से डरो। बेशक कियामत का भूकम्प बड़ी भारी चीज है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी। और हर हमल (गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी। और लोग तुम्हें मदहोश नजर आएंगे हालांकि वे मदहोश न होंगे। बल्कि अल्लाह का अजाब बड़ा ही सख़्त है। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के विषय में झगड़ता है। और हर सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है। उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे दोस्त बनाएगा वह उसे बेराह कर देगा और उसे अजाबे

जहन्नम का रास्ता दिखाएगा। (1-4)

'दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हमल (गर्भ) वाली औरत अपना हमल गिरा देगी' यह तमसील की जबान में कियामत की हौलनाकी का बयान है। यानी उस दिन लोगों का यह हाल होगा कि अगर मां की गोद में दूध पीने वाला बच्चा हो तो घबराहट की बिना पर वह अपने बच्चे को भूल जाए। और अगर कोई हामिला (गर्भवती) औरत हो तो शिद्दते हौल से उसका हमल साकित हो जाए।

हमारी मौजूदा दुनिया में जो भूचाल आते हैं वे कियामत के वाकये का हल्का सा नमूना हैं। कियामत का सबसे बड़ा भूचाल जब आएगा तो आदमी हर वह चीज भूल जाएगा जिसे अहमियत देने की वजह से वह कियामत के दिन को भूला हुआ था। यहां तक कि अपनी अजीजतरीन चीज भी उस दिन उसे याद न रहेगी।

पैग़म्बर की बात इल्म की बिना पर होती है। वह दलाइल से उसे साबितशुदा बनाता है। मगर जो लोग अपने से बाहर किसी सदाकत का एतराफ करना नहीं चाहते वे अपने को बरसरे हक जाहिर करने के लिए पैग़म्बर की बात में झूठी बहसें निकालते हैं। इस किस्म की रविश ख़ुदा के मुकाबले में सरकशी करने के हममअना है। जो लोग इस तरह की बहसों को हक का पैग़ाम न मानने के लिए बहाना बनाएं वे गोया शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाए हुए हैं। वे इस बात का सुबूत देते हैं कि वे ख़ुदा के ख़ौफ से ख़ाली हैं। बेख़ौफी की नफ्सियात आदमी को इससे महरूम कर देती है कि वह हक को पहचाने और उसका एतराफ करे। वह निहायत आसानी से शैतान का शिकार बन जाता है। ऐसा आदमी सिर्फ कियामत की चिंघाड़ से जागेगा। मगर कियामत का जलजला ऐसे लोगों के लिए सिर्फ जहन्नम का दरवाजा खोलने के लिए आता है न कि उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाने के लिए।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ
لَكُمْ ۭ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۤءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاۤءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ⑤ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⑥ وَّاَنَّ السَّاعَةَ

اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝

ऐ लोगो, अगर तुम दुबारा जी उठने के मुतअल्लिक शक में हो तो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर नुत्फा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लौथड़े से, फिर गोश्त की बोटी से, शक्ल वाली और बग़ैर शक्ल वाली भी, ताकि हम तुम पर वाजेह करें। और हम रहमों (गर्भों) में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत तक। फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं। फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुंच जाओ। और तुम में से कोई शख़्स पहले ही मर जाता है और कोई शख़्स बदतरीन उम्र तक पहुंचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम जमीन को देखते हो कि ख़ुश्क पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह ताजा हो गई और उभर आई और वह तरह-तरह की ख़ुशनुमा चीजें उगाती है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक है और वह बेजानों में जान डालता है, और वह हर चीज पर कादिर है। और यह कि कियामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह जरूर उन लोगों को उठाएगा जो कब्रों में हैं। (5-7)

आख़िरत की जिंदगी के बारे में आदमी को इसलिए शुबह होता है कि उसकी समझ में नहीं आता कि जब इंसान मर चुका होगा तो वह किस तरह दुबारा जिंदा होकर खड़ा हो जाएगा। मुर्दा कायनात दुबारा जिंदा कायनात कैसे बन जाएगी।

इस शुबह का जवाब ख़ुद हमारी मौजूदा दुनिया की साख़्त (बनावट) में मौजूद है। मौजूदा दुनिया क्या है। यह एक हालत का दूसरी हालत में तब्दील हो जाना है। वह चीज जिसे हम जिंदा वजूद कहते हैं वह हकीकत में ग़ैर जिंदा वजूद की तब्दीली है। इंसानी जिस्म का तज्ज़िया यह बताता है कि वह लोहा, कार्बन, कैल्शियम, नमकयात (लवणों), पानी और गैसों वग़ैरह से मिलकर बना है। इंसानी वजूद के ये मुरक्कबात (अवयव) सबके सब बेजान हैं। मगर यही ग़ैर जीरूह (आत्माहीन) माद्दे तब्दील होकर जीरूह अशया (जीव) की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं। और इंसान की सूरत में चलने लगते हैं। फिर जो इंसान एक बार ग़ैर जिंदा से जिंदा सूरत इख़्तियार कर लेता है वह अगर दुबारा ग़ैर जिंदा से जिंदा स्वरूप में तब्दील हो जाए तो इसमें ताज्जुब की बात क्या है।

इसी तरह जमीन के सब्जा (वनस्पति) को देखिए। मिट्टी या दूसरी जिन चीजों से तर्कीब पाकर सब्जा बनता है वे सबकी सब इब्तिदा में उन खुसूसियात से ख़ाली होती हैं जिनके मज्मूअे का नाम सब्जा है। मगर यही ग़ैर सब्जा तब्दील होकर सब्जा बन जाता है। तब्दीली का यह वाकया रोजाना हमारी आंखों के सामने हो रहा है। फिर इसी होने वाले वाक्ये का दूसरी बार होना नामुमकिन क्यों हो।

हकीकत यह है कि पहली दुनिया का वजूद में आना ख़ुद ही दूसरी दुनिया के वजूद में आने का सुबूत है। एक दुनिया का तजर्बा करने के बाद दूसरी दुनिया को समझना अक्ली और मंतकी (तार्किक) तौर पर कुछ भी मुश्किल नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

और लोगों में कोई शख़्स है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर तकब्बुर (घमंड) करते हुए ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे। उसके लिए दुनिया में रुसवाई है और कियामत के दिन हम उसे जलती आग का अजाब चखाएंगे। यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। (8-10)

अरब के लोगों ने शिर्क को सच्चाई समझ कर इख़्तियार कर रखा था। पैग़म्बर की दावते तौहीद से शिर्क को मानने वालों के अकाइद मुतजलजल (शिथिल) हुए तो इसमें उन लोगों को ख़तरा महसूस होने लगा जो शिर्क की जमीन पर अपनी सरदारी कायम किए हुए थे। एक आम आदमी के लिए शिर्क को छोड़ना सिर्फ अपने आबाई (पैतृक) दीन को छोड़ना होता है। जबकि एक सरदार के लिए शिर्क का ख़ात्मा उसकी सरदारी के ख़ात्मे के हममअना है। इसलिए हर दौर में बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत के सबसे ज्यादा मुख़ालिफ वे लोग बन जाते हैं जो मिलावटी दीन की बुनियाद पर अपनी कयादत (नेतृत्व) कायम किए हुए हों।

ये लोग हक की दावत और उसके दाऔ के बारे में लायअनी (निरर्थक) बहसें पैदा करते हैं। वे कोशिश करते हैं कि उनके जेरे असर अवाम दावत के बारे में शक में पड़ जाएं। और बदस्तूर अपने रवाजी दीन पर कायम रहें।

हक की यह मुख़ालिफत वे सिर्फ इसलिए करते हैं कि ख़ुदसाख़्ता दीन की बुनियाद पर उन्होंने जो अपनी झूठी बड़ाई कायम कर रखी है वह बदस्तूर कायम रहे। उन्हें सच्चाई से ज्यादा अपनी जात से दिलचस्पी होती है। ऐसे लोग ख़ुदा के नजदीक बहुत बड़े मुजरिम हैं। कियामत में उनके हिस्से में रुसवाई और अजाब के सिवा कुछ आने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝

और लोगों में कोई है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है। पस अगर

उसे कोई फायदा पहुंचा तो वह उस इबादत पर क़ायम हो गया। और अगर कोई आजमाइश पेश आई तो उल्टा फिर गया। उसने दुनिया भी खो दी और आख़िरत भी। यही खुला हुआ ख़सारा (घाटा) है। (11)

एक शख़्स वह है जो दीन को कामिल सदाकत (सच्चाई) के तौर पर दरयाफ़्त करता है। दीन उसके दिल व दिमाग़ पर पूरी तरह छा जाता है। वह किसी संकोच के बग़ैर अपने आपको दीन के हवाले कर देता है। उसकी नजर में हर दूसरी चीज महत्वहीन बन जाती है। यही शख़्स ख़ुदा की नजर में सच्चा मोमिन है।

दूसरे लोग वे हैं जो बस ऊपरी जज्बे से दीन को मानें। ऐसे लोगों की हकीकी दिलचस्पियां अपने मफादात (हितों) से वाबस्ता होती हैं। अलबत्ता सतही तअस्सुर (प्रभाव) के तहत वे अपने आपको दीन से भी वाबस्ता कर लेते हैं। उनकी यह वाबस्तगी सिर्फ उस वक्त तक के लिए होती है जब तक दीन को इख़्तियार करने से उन्हें कोई नुक्सान न हो रहा हो। उनके मफादात पर उससे कोई जद न पड़ती हो। जैसे ही उन्होंने देखा कि दीन और उनका मफ़ाद दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते वे फ़ौरन जाती मफ़ाद को इख़्तियार कर लेते हैं और दीन को छोड़ देते हैं।

यही दूसरे क़िस्म के लोग हैं जिन्हें मुनाफ़िक़ (पाखंडी) कहा जाता है। मुनाफ़िक़ इंसान आख़िरत को पाने में भी नाकाम रहता है और दुनिया को पाने में भी। इसकी वजह यह है कि दुनिया और आख़िरत दोनों मामले में कामयाबी के लिए एक ही लाजिमी शर्त है, और वह यकसूई (एकाग्रता) है। और यही वह क़ल्बी सिफ़त है जिससे मुनाफ़िक़ इंसान हमेशा महरूम रहता है। वह अपने दोतरफ़ा रुज्हान की वजह से न पूरी तरह आख़िरत की तरफ यकसू होता और न पूरी तरह दुनिया की तरफ। इस तरह वह दोनों में से किसी की भी लाजिमी कीमत नहीं दे पाता। ऐसे लोग दोतरफा महरूमी की अलामत बनकर रह जाते हैं।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۚ﴿12﴾ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿13﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿14﴾

वह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज को पुकारता है जो न उसे नुक्सान पहुंचा सकती और न उसे नफा पहुंचा सकती। यह इंतिहा दर्जे की गुमराही है। वह ऐसी चीज को पुकारता है जिसका नुक़्सान उसके नफ़ा से क़रीबतर है। कैसा बुरा कारसाज है और कैसा बुरा रफीक (साथी)। बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (12-14)

ख़ुदा को छोड़ना हमेशा ग़ैर ख़ुदा पर भरोसे की वजह से होता है। जब भी ऐसा होता है कि एक आदमी ख़ुदा के सच्चे रास्ते से हटता है या उसे नजरअंदाज करता है तो इसकी वजह यह होती है कि वह ख़ुदा के सिवा किसी और चीज पर भरोसा किए हुए होता है। यह ग़ैर ख़ुदा कभी कोई बुत होता है और कभी बुत के सिवा कोई दूसरी चीज।

मगर इस दुनिया में एक ख़ुदा के सिवा किसी को कोई ताकत हासिल नहीं। इसलिए आदमी जब ख़ुदा के सिवा दूसरों पर भरोसा करता है तो वह ताकतवर को छोड़कर ऐसी मोहूम (कल्पित) चीज का सहारा पकड़ता है जिसका बहैसियत ताक़त कोई वजूद नहीं। इससे ज्यादा भूल की बात और क्या हो सकती है।

मजीद यह कि अपने आपको ख़ुदा के साथ वाबस्ता करना सिर्फ़ जरूरत का तक़ाजा नहीं है बल्कि वह हक़ीक़त का तक़ाजा भी है। वह इंसान के ऊपर ख़ुदा का हक़ है। इसलिए जब आदमी ख़ुदा को छोड़कर मोहूम (कल्पित) चीजें की तरफ़ जाता है तो उसका नुक़्सान फ़ौरन उसके लिए मुक़द्दर हो जाता है। और जहां तक उसके नफा का सवाल है तो वह तो कभी मिलने वाला नहीं।

ग़ैर ख़ुदा को सहारा बनाने वाले बजाहिर उसे अपने से ऊंचा समझते हैं। वर्ना वे उसे सहारा ही न बनाएं। मगर हकीकत यह है कि वह ग़ैर ख़ुदा जिसे सहारा बनाया जाए और वे लोग जो उन्हें अपना सहारा बनाएं दोनों यकसां (समान) दर्जे में मजबूर और बेताकत हैं।

ऐसी दुनिया में जो लोग इसका सुबूत दें कि उन्होंने माहौल से ऊपर उठकर सोचा। ग़ैर ख़ुदाओं के पुरफ़रेब हुजूम में उन्होंने ख़ुदा को दरयाफ़्त किया। और फिर सिर्फ़ आख़िरत के ख़ातिर अपनी जिंदगी को ख़ुदा की पसंद के रास्ते पर डाल दिया वे इस दुनिया की सबसे कीमती रूहें हैं। ख़ुदा उनकी इस तरह क़द्रदानी करेगा कि उन्हें जन्नत की कामिल दुनिया में बसाएगा। जहां वे अबदी तौर पर ऐश करते रहें।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿15﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿16﴾

जो शख़्स यह गुमान रखता हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद नहीं करेगा तो उसे चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने। फिर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके ग़ुस्से को दूर करने वाली बनती है। और इस तरह हमने कुरआन को खुली खुली दलीलों के साथ उतारा है। और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है। (15-16)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को हक की तरफ पुकारा तो जो लोग नाहक की बुनियाद पर अपनी इमारत खड़ी किए हुए थे वे आपके दुश्मन हो गए। मुख़ालिफत बढ़ती रही। यहां तक कि ऐसा मालूम हुआ गोया नाहक के अलमबरदार (ध्वजावाहक) हक के अलमबरदारों का ख़ात्मा कर देंगे। ऐसे नाजुक हालात में कुछ मुसलमानों के दिल में यह वसवसा पैदा हुआ कि अगर हम हक पर हैं तो ख़ुदा हमारी मदद क्यों नहीं करता। हक और नाहक की कशमकश में वह ग़ैर जानिबदार क्यों बना हुआ है।

फरमाया कि ख़ुदा बिलाशुबह हक का साथ देता है। मगर ख़ुदा का यह तरीका नहीं कि वह फौरन मुदाख़लत (हस्तक्षेप) करे। वह मामलात के उस हद तक पहुंचने का इंतिजार करता है जहां एक फरीक (पक्ष) का बरसरे हक होना और दूसरे फरीक का बरसरे बातिल होना पूरी तरह साबितशुदा बन जाए। जब यह हद आ जाती है उस वक्त ख़ुदा बिलाताख़ीर मुदाख़लत करके फैसला कर देता है।

यह ख़ुदा की सुन्नत (तरीका) है। आदमी को चाहिए कि वह अपने आपको ख़ुदा की इस सुन्नत पर राजी करे। क्योंकि इसके सिवा कोई और चीज इस जमीन व आसमान के अंदर मुमकिन नहीं। इसके सिवा हर रास्ता मौत का रास्ता है न कि जिंदगी का रास्ता।

إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئين والنصارى والمجوس والذين أشركوا إن الله يفصل بينهم يوم القيامة إن الله على كل شيء شهيد ﴿١٧﴾

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इख़्तियार की, और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क (ख़ुदा का साझीदार बनाना) किया। अल्लाह उन सबके दर्मियान कियामत के रोज फैसला फरमाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज से वाकिफ है। (17)

इस आयत में छः मजहबी गिरोहों का जिक्र है मुसलमान, यहूदी, साबी, नसारा, मजूस और मुश्रिकीने मक्का। यहूदी हजरत मूसा को मानने वाले लोग हैं। इसी तरह साबी हजरत यहया को मानने वाले थे। नसारा हजरत ईसा को मजूस जरतुश्त को और मुश्रिकीन हजरत इब्राहीम को।

ये सारे लोग इब्तिदाअन तौहीदपरस्त थे। मगर बाद को उन्होंने अपने दीन में बिगाड़ पैदा कर लिया। और अब वे उसी बिगड़े हुए दीन पर कायम हैं। मुसलमानों का हाल भी अमलन ऐसा हो सकता है। मुसलमानों की किताब अगरचे महफूज (सुरक्षित) है। मगर इम्तेहान की इस दुनिया में उनके हाथ इससे बंधे हुए नहीं हैं कि वे कुरआन व सुन्नत की ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तशरीह करके अपना एक दीन बनाएं और उस ख़ुदसाख़्ता दीन पर कायम होकर समझें कि वे ख़ुदा के दीन पर कायम हैं।

ख़ुदा का अस्ल दीन एक है। मगर लोगों की अपनी तशरीहात में वह हमेशा मुख़्तलिफ हो जाता है। इसलिए जब लोग ख़ुदा के अस्ल दीन पर हों तो उनके दर्मियान इत्तेहाद फरोग़ पाता है। मगर जब लोग ख़ुदसाख़्ता दीन पर चलने लगें तो हमेशा उनके दर्मियान मजहबी इख़्तेलाफात पैदा हो जाते हैं। ये इख़्तेलाफात लामुतनाही (अंतहीन) तौर पर बढ़ते हैं। वे कभी ख़त्म नहीं होते। ताहम अल्लाह तआला को हर शख़्स का हाल पूरी तरह मालूम है। वह कियामत में बता देगा कि कौन हक पर था और कौन नाहक पर।

ألم تر أن الله يسجد له من في السماوات ومن في الأرض والشمس والقمر والنجوم والجبال والشجر والدواب وكثير من الناس وكثير حق عليه العذاب ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله يفعل ما يشاء ﴿١٨﴾ ۩

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं। और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए और बहुत से इंसान। और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अजाब साबित हो चुका है और जिसे ख़ुदा जलील कर दे तो उसे कोई इज्जत देने वाला नहीं। बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

जिस तरह इंसान के लिए ख़ुदा का एक कानून है उसी तरह बकिया कायनात के लिए भी ख़ुदा का एक कानून है। बकिया कायनात ख़ुदा के कानून पर सहज रूप से कायम है। वह निहायत इत्तेफाक और हमआहंगी के साथ ख़ुदा के मुकर्रर करदा कानून की पैरवी कर रही है। यह सिर्फ इंसान है जो इख़्तेलाफात (मत-भिन्नता) पैदा करता है। वह ख़ुदासाख़्ता तशरीह निकाल कर नए-नए रास्तों पर चलने लगता है।

ख़ुदा की नजर में वे लोग बहुत बड़े मुजरिम हैं जो ख़ुदा के दीन में इख़्तेलाफात पैदा करते हैं। वे बेइख़्तेलाफ कायनात में इख़्तेलाफ के साथ रहना चाहते हैं। जिस दुनिया में चारों तरफ निहायत वसीअ पैमाने पर 'एक दीन' का सबक दिया जा रहा है वहां वे 'कई दीन' बनाने में मशग़ूल हैं।

ख़ुदा की कायनात ख़ुदा की मर्जी का अमली एलान है। जो लोग ख़ुदा के कायम करदा इस अमली नमूने के ख़िलाफ चलते हैं वे आज ही अपने आपको मुस्तहिके अजाब साबित कर रहे हैं। कियामत उस नतीजे का सिर्फ लफ्जी एलान करेगी जिसका अमली एलान इसी आज की दुनिया में हर आन हो रहा है।

هذان خصمان اختصموا في ربهم فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من

نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

ये दो फरीक (पक्ष) हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया। पस जिन्होंने इंकार किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे। उनके सरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। इससे उनके पेट की चीजें तक गल जाएंगी और खालें भी और उनके लिए वहां लोहे के हथौड़े होंगे। जब भी वे घबराकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएंगे और चखते रहो जलने का अजाब। (19-22)

बड़ी तक़्सीम में तमाम गिरोह सिर्फ दो हैं। एक अहले हक, दूसरे उनका इंकार करने वाले। जो लोग मौजूदा दुनिया में अहले हक से झगड़ते हैं वे बतौर ख़ुद यह समझते हैं कि वे दलाइल का पहाड़ अपने साथ लिए हुए हैं। मगर यह सिर्फ उनकी ग़ैर संजीदगी है जो उनकी बेमअना बहसों को उन्हें दलील के रूप में दिखाती है। वे चूंकि हक का एतराफ करना नहीं चाहते इसलिए वे उसके ख़िलाफ झूठे झगड़े खड़े करते हैं। ऐसे लोग आख़िरत में एतराफ न करने की ऐसी सख़्त सजा पाएंगे जिससे वे कभी निकल न सकें।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, अल्लाह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उन्हें वहां सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उनकी पोशाक रेशम होगी। और उन्हें पाकीजा कौल (कथन) की हिदायत बख़्शी गई थी। और उन्हें ख़ुदाए हमीद (प्रशंसित) का रास्ता दिखाया गया था। (23-24)

जिस दुनिया में हर तरफ पुरफ़रेब अल्फ़ाज का जाल बिछा हुआ हो। जहां हक से फिरे हुए लोग ग़लबा हासिल किए हुए हों। ऐसे माहौल में ईमान की सदाकत को पहचानना बिलाशुबह सख़्त मुश्किल काम है। और इससे भी ज्यादा मुश्किल काम यह है कि ईमान के इस रास्ते पर अमलन अपने आपको डाल दिया जाए।

यह वे लोग हैं जिन्हें अकवाल (कथनों) के पुरशोर हंगामों में तय्यब (पावन) कौल को पाने की तौफ़ीक मिली। जिन्होंने रास्तों के हुजूम में सिराते हमीद (प्रशंसित मार्ग) को देखा

और उसे पहचान लिया। जो लोग दुनिया में इस अजीम लियाकत (योग्यता) का सुबूत दें वे इंसानियत के सबसे ज्यादा कीमती लोग हैं। वे इस काबिल हैं कि उन्हें जन्नत के अबदी बाग़ों में बसाया जाए।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और वे लोगों को अल्लाह की राह से और मस्जिदे हराम से रोकते हैं जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है जिसमें मकामी (स्थानीय) बाशिंदे और बाहर से आने वाले बराबर हैं। और जो इस मस्जिद में रास्ती (शालीनता) से हटकर जुल्म का तरीका इख़्तियार करेगा उसे हम दर्दनाक अजाब का मजा चखाएंगे। (25)

हक का इंकार करने की एक मिसाल वह है जो कदीम मक्का में पेश आई। मक्का के लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इंतिहाई पुरअमन तब्लीग़ को भी बर्दाश्त नहीं किया। उन्होंने आपके ऊपर पाबंदियां लगाईं। आपको और आपके साथियों को यकतरफ़ा तौर पर जुल्म का निशाना बनाया। यहां तक कि उन्होंने यह जुल्म भी किया कि आपको और आपके असहाब (साथियों) को मस्जिदे हराम में दाख़िल होने से रोका।

मक्का के लोगों की यह रविश इंकार पर सरकशी का इजाफ़ा थी। जो लोग ऐसे जालिमाना रवैये का सुबूत दें। उनके लिए ख़ुदा के यहां सख़्ततरीन सजा है, चाहे वे माजी (अतीत) के जालिम लोग हों या हाल के जालिम लोग। और चाहे उनकी सरकशी का तअल्लुक हजरत इब्राहीम की तामीर करदा मस्जिद से हो या उस वसीअतर (विराट) 'मस्जिद' से जिसे ख़ुदा ने ज़मीन की सूरत में अपने तमाम बंदों के लिए बनाया है।

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾

और जब हमने इब्राहीम को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) की जगह बता दी, कि मेरे साथ किसी चीज को शरीक न करना और मेरे घर को पाक रखना तवाफ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और कियाम करने वालों के लिए और रुकूअ और सज्दा करने वालों के लिए। (26)

हजरत इब्राहीम का जमाना चार हजार साल पहले का जमाना है। उस जमाने में सारी आबाद दुनिया में मुशिरकाना मजहब छाया हुआ था। यहां तक कि शिर्क के उमूमी ग़लबे की

वजह से तारीख़ में शिर्क का तसलसुल कायम हो गया। अब यह नौबत आ गई कि जो बच्चा पैदा हो वह अपने माहौल से सिर्फ शिर्क का सबक ले।

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया कि वह इराक और शाम और मिस्र जैसे आबाद इलाकों को छोड़कर हिजाज (अरब) के ग़ैर आबाद इलाके में चले जाएं और वहां अपनी औलाद को बसा दें। ग़ैर आबाद इलाके में बसाने का मक्सद यह था कि यहां अलग थलग दुनिया में एक ऐसी नस्ल पैदा हो जो शिर्क से अलग होकर परवरिश पा सके। हजरत इब्राहीम ने इसी ख़ुदाई मंसूबे के तहत अपनी औलाद को मौजूदा मक्का में लाकर बसा दिया जो उस वक्त यकसर ग़ैर आबाद थी। इसी के साथ हजरत इब्राहीम ने एक मस्जिद (ख़ाना काबा) की तामीर की ताकि वह इस नई नस्ल के लिए और बिलआख़िर सारी दुनिया के लिए एक ख़ुदा की इबादत का मर्कज बन सके।

وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ
فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ
عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾
ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

और लोगों में हज का एलान कर दो, वे तुम्हारे पास आएंगे। पैरों पर चलकर और दुबले ऊंटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज रास्तों से आएंगे ताकि वे अपने फायदे की जगह पर पहुंचें और चन्द मालूम दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शे हैं। पस उसमें से खाओ और मुसीबतजदा मोहताज को खिलाओ। तो चाहिए कि वे अपना मेल कुचैल ख़त्म कर दें। और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें। और इस कदीम (प्राचीन) घर का तवाफ (परिक्रमा) करें। (27-29)

काबा की तामीर का इब्तिदाई मक्सद उन लोगों के लिए मर्कज़े इबादत फराहम करना था। जो 'पैदल' चलकर वहां पहुंचने की मसाफत (दूरी) पर हों। मगर बिलआख़िर उसे सारे आलम के लिए एक ख़ुदा की इबादत का मर्कज बनना था। और यह मक्सद पूरी तरह हासिल हुआ। यहां पहुंचकर हाजी जो मनासिक व मरासिम (रीति-रस्में) अदा करता है, कुरआन में उसका मुख़्तसरन बयान है और अहादीस में उसकी पूरी तफ्सील माजूद है।

'ताकि अपने फायदों के लिए हाजिर हों' का मतलब यह है कि दीन के फायदे जिन्हें वे एतकादी तौर पर मानते हैं उन्हें यहां अमली तौर पर देखें। हज के लिए आदमी जिन मकामात पर हाजिर होता है उनसे दीने ख़ुदावंदी की अजीम तारीख़ (इतिहास) वाबस्ता है। इस बिना पर वहां जाना और उन्हें देखना दिलों को पिघलाने का सबब बनता है। वहां सारी दुनिया के मुसलमान जमा होते हैं। इस तरह वहां इस्लाम की बैनुलअकवामी (अन्तर्राष्ट्रीय) वुसअत (व्यापकता) खुली आंखों से नजर आती है। हज का सालाना इज्तिमाअ मुसलमानों के अंदर

आलमी सतह पर इज्तिमाइयत (सामूहिकता) पैदा करने का जरिया बनता है। आदमी को इस सफर से बहुत से दीनी और दुनियावी तजर्बे हासिल होते हैं। जो उसके लिए जिंदगी की तामीर में मददगार बनते हैं। वग़ैरह।

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ
الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا
قَوْلَ الزُّورِ ﴿٣٠﴾

यह बात हो चुकी और जो शख़्स अल्लाह की हुरमतों (मर्यादाओं) की ताजीम करेगा तो वह उसके हक में उसके रब के नजदीक बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जा चुके हैं। तो तुम बुतों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो। (30)

हलाल क्या है और हराम क्या, क्या चीज मुक़द्दस (पवित्र) है और क्या चीज ग़ैर मुक़द्दस। इबादत के कौन से तरीके दुरुस्त हैं और कौन से तरीके दुरुस्त नहीं। ये सब बातें ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों के जरिए वाजेह तौर पर बता दी हैं। उनमें किसी किस्म की तब्दीली जाइज नहीं। हर तब्दीली जो बतौर ख़ुद इन चीजों में की जाए वह अल्लाह के नजदीक झूठ है, बल्कि वह सबसे बड़ा झूठ है। इंसान के लिए लाजिम है कि इन चीजों में बिल्कुल लफ़्जी तौर पर पैग़म्बराना तालीमात की पैरवी करे। वह किसी हाल में इनमें कोई कमी बेशी न करे।

ये उमूर (मामले) वे हैं जिनकी हकीकत सिर्फ ख़ुदा को मालूम है। आदमी जब उनमें अपनी तरफ से कोई बात कहता है तो वह ऐसी चीज के बारे में अपनी वाकफियत का दावा करता है जिसकी उसे कोई वाकफियत नहीं। जाहिर है कि यह झूठ है, बल्कि यह इतना बड़ा झूठ है कि इससे बड़ा झूठ और कोई नहीं।

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ
فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾

अल्लाह की तरफ यकसू (एकाग्र) रहो, उसके साथ शरीक न ठहराओ। और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा। फिर चिड़ियां उसे उचक लें या हवा उसे किसी दूर दराज मकाम पर ले जाकर डाल दे। (31)

इस कायनात में मर्कजी कुव्वत (केन्द्रीय शक्ति) सिर्फ एक है। और वह ख़ुदाए वाहिद की जात है। जो शख़्स अपने आपको ख़ुदा से जोड़े उसने अपने लिए हकीकी ठिकाना पा लिया। वह मजबूत जमीन पर खड़ा हो गया। इसके बरअक्स जो शख़्स अपने आपको ख़ुदा

से न जोड़े या ऐसा हो कि वह जबान से ख़ुदा का इकरार करे मगर अपने दिली तअल्लुक किसी और से वाबस्ता रखे। वह गोया उस मर्कज (केन्द्र) से कटा हुआ है जिसके सिवा इस कायनात में दूसरा कोई मर्कज नहीं। ऐसे शख़्स का हाल उस इंसान जैसा होगा जिसकी एक मिसाल ऊपर की आयत में बताई गई है।

ذٰلِكَ ۖ وَمَن يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقْوَى الْقُلُوبِ ۝ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝

यह बात हो चुकी। और जो शख़्स अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का पूरा लिहाज रखेगा तो यह दिल के तकवे (ईश-परायणता) की बात है। तुम्हें उनसे एक मुकर्रर वक़्त तक फ़ायदा उठाना है। फिर उन्हें कुर्बानी के लिए क़दीम (प्राचीन) घर की तरफ ले जाना है। (32-33)

शईरह (बहुवचन शआइर) के मअना अलामत (Symbol) के हैं। इस्लाम की जो इबादात हैं, उनका एक जाहिरी पहलू है और एक अंदरूनी पहलू। अंदरूनी पहलू इबादत का अस्ल है। और जो जाहिरी पहलू है वह उसी अंदरूनी पहलू की अलामत, या शईरह है। अल्लाह तआला ने जो शआइर मुकर्रर किए हैं। उनका हक इस तरह अदा नहीं हो सकता कि जाहिरी तौर पर उनकी ताजीम (सम्मान) कर ली जाए। उनका हक अदा करने के लिए दिल का तकवा मत्लूब है।

हदी व नियाज के जानवर (अल्लाह के) शआइर में से हैं। वे एक हकीकत की अलामत (प्रतीक) हैं न कि वे बजाते ख़ुद हकीकत हैं। इन जानवरों को रंगना या इसका एहतिमाम करना कि उन पर सवारी न की जाए, उनसे किसी किस्म का फायदा न उठाया जाए, ये वे चीजें नहीं हैं जिनसे अल्लाह ख़ुश होता हो। अल्लाह की ख़ुशनूदी इसमें है कि जो कुछ किया जाए अल्लाह के लिए किया जाए। अल्लाह के यहां क़ल्बी हालत की क़द्र है न कि महज जाहिरी हालत की।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ فَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝

और हमने हर उम्मत के लिए कुर्बानी करना मुकर्रर किया ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किए हैं। पस तुम्हारा इलाह (पूज्य-प्रभु) एक ही इलाह है तो तुम उसी के होकर रहो और आजिजी (नम्रता) करने वालों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो

उनके दिल कांप उठते हैं। और जो उन पर पड़े उसे सहने वाले और नमाज की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उन्हें दिया है वे उसमें से ख़र्च करते हैं। (34-35)

इंसान इस दुनिया में जो कुछ पैदावार हासिल करता है, चाहे वह जरई (कृषि) पैदावार हो या हैवानी पैदावार या संअती (औद्योगिक) पैदावार, उनके बारे में उसके अंदर दो किस्म की मुमकिन नफ्सियात पैदा होती हैं। एक यह कि यह मेरी अपनी कमाई है या यह कि वह माबूदों की बरकत का नतीजा है। यह नफ्सियात सरासर मुश्रिकाना नफ्सियात है।

दूसरी नफ्सियात यह है कि आदमी जो कुछ हासिल करे उसे वह ख़ुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझे। उश्र और जकात और कुर्बानी इसी दूसरे जज्बे के ख़ारजी इज्हार के मुकर्रर तरीके हैं। आदमी अपनी कमाई का एक हिस्सा ख़ुदा की राह में नज़्र (अर्पित) करता है और इस तरह वह इस बात का अमली इकरार करता है कि उसके पास जो कुछ है वह ख़ुदा का अतिया है न कि महज उसकी अपनी कमाई।

इंसान को अगर सही मअनों में ख़ुदा की मअरफत हासिल हो जाए तो इसके बाद उसके दिल का जो हाल होगा वह वही होगा जिसे यहां इख़बात कहा गया है। ऐसा आदमी हमहतन ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाएगा। उस पर इज्ज की कैफियत तारी हो जाएगी। अल्लाह के तसव्वुर से उसका दिल दहल उठेगा। वह अपनी हर चीज को ख़ुदा की चीज समझने लगेगा। न कि अपनी जाती चीज।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُم مِّن شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافَّ ۖ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ لَن يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَٰكِن يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۝

और कुर्बानी के ऊंटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार बनाया है। उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। पस उन्हें खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। फिर जब वे करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और बेसवाल मोहताज और साइल (मांगने वाले) को खिलाओ। इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो। और अल्लाह को न उनका गोश्त पहुंचता है और न उनका ख़ून बल्कि अल्लाह को सिर्फ तुम्हारा तकवा (ईश-परायणता) पहुंचता है इस तरह अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है। ताकि तुम अल्लाह की बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो। (36-37)

दुनिया में अगर ऊंट और दूसरे मवेशी न होते। सिर्फ शेर और रीछ और भेड़िए होते तो उनसे ख़िदमत लेना इंसान के लिए बहुत मुश्किल होता। और उन्हें उमूमी पैमाने पर कुर्बान करना तो बिल्कुल नामुमकिन हो जाता। यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि उसने सिर्फ वहशी और दरिंदे जानवर पैदा नहीं किए। बल्कि कुछ ऐसे जानवर भी पैदा किए जिनमें फ़ितरी तौर पर यह मिजाज मौजूद है कि वे अपने आपको इंसान के काबू में दे देते हैं। और जब इंसान उन्हें ग़िजा या कुर्बानी के लिए जबह करता है तो उस वक्त उनकी तस्ख़ीरी फितरत अपनी आख़िरी हद पर पहुंच जाती है।

कुर्बानी का तरीका इसलिए मुकर्रर नहीं किया गया है कि ख़ुदा को गोश्त और ख़ून की जरूरत है। कुर्बानी तो सिर्फ एक अलामती फेअल है। जानवर की कुर्बानी उस इंसान की एक जाहिरी तस्वीर है जो अपने आपको अल्लाह के लिए जबह कर चुका है। यह दरअस्ल ख़ुद अपना जबीहा है जो जानवर के जबीहा की सूरत में मुमस्सल (प्रतिरूपित) होता है। ख़ुशकिस्मत हैं वे लोग जिन के लिए जानवर की कुर्बानी ख़ुद अपनी कुर्बानी के हममअना बन जाए।

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾ أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

बेशक अल्लाह उन लोगों की मुदाफिअत (प्रतिरक्षा) करता है जो ईमान लाए। बेशक अल्लाह बदअहदों (वचन तोड़ने वालों) और नाशुक्रों को पसंद नहीं करता। इजाजत दे दी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वजह से कि उन पर जुल्म किया गया है। और बेशक अल्लाह उनकी मदद पर कादिर है। वे लोग जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए। सिर्फ इसलिए कि वे कहते हैं कि हमारा रब (प्रभु) अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे लिए जरिए हटाता न रहे तो ख़ानकाहें (आश्रम) और गिरजा और इबादतख़ाने और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम कसरत (अधिकता) से लिया जाता है ढा दिए जाते। और अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, जोर वाला है। (38-40)

अल्लाह का कोई बंदा या कोई गिरोह अपने आपको अल्लाह के रास्ते पर डाले तो वह इस दुनिया में तंहा नहीं होता। ग़ाफ़िल और सरकश लोग जब उसे अपने जुल्म का

निशाना बनाएं तो ख़ुदा जालिमों के मुकाबले में उनकी जानिब खड़ा हो जाता है। ख़ुदा इब्तिदा में अपना नाम लेने वालों के इख़्लास (निष्ठा) का इम्तेहान लेता है। मगर जो लोग इम्तेहान में पड़कर अपना मुख़्लिस (निष्ठावान) होना साबित कर दें ख़ुदा जरूर उनकी मदद पर आ जाता है। और उनके लिए ऐसे हालात पैदा करता है कि वे तमाम रुकावटों पर काबू पाते हुए हक पर कारबंद रह सकें।

अहले ईमान का अस्ल इक्दाम सिर्फ दावत है। वे दावत से आग़ाज करते हैं और बराबर दावत ही पर कायम रहते हैं। वे बवक़्ते जरूरत कभी जंग भी करते हैं मगर उनकी जंग हमेशा दिफाअ (प्रतिरक्षा) के लिए होती है न कि जारिहिय्यत (आक्रामकता) के लिए।

एक गिरोह अगर ज्यादा मुद्दत तक इक्तेदार (सत्ता) पर रहे तो उसके अंदर सरकशी और घमंड पैदा हो जाता है। इसलिए ख़ुदा ने इस दुनिया में दिफअ (हटाना) का कानून मुकर्रर किया है। वह बार-बार एक गिरोह के जरिए दूसरे गिरोह को इक्तेदार के मकाम से हटाता है। इस तरह तारीख़ में सियासी तवाजुन (संतुलन) कायम रहता है। अगर ख़ुदा ऐसा न करे तो लोगों की सरकशी यहां तक बढ़ जाए कि इबादतख़ाने जैसे मुकद्दस इदारे भी उनकी जद से महफूज न रहें

इस दिफअ की एक सूरत यह है कि किसी गिरोह के इक्तेदार (सत्ता) को सिरे से ख़त्म कर दिया जाए। इसकी एक मिसाल मौजूदा जमाने में ब्रिटिश साम्राज्य की है। जिसे वतनी आजादी की तहरीकों के जरिए ख़त्म किया गया। दूसरा तरीका वह है जिसकी मिसाल रूस और अमेरिका की शक्ल में नजर आती है। यानी एक के जरिए दूसरे पर रोक लगाना। और इस तरह बैनुल अक्वामी सियासत में तवाजुन कायम रखना।

الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम जमीन पर ग़लबा दें तो वे नमाज का एहतिमाम करेंगे और जकात अदा करेंगे और मअरूफ (भलाई) का हुक्म देंगे और मुंकर (बुराई) से रोकेंगे और सब कामों का अंजाम ख़ुदा ही के इख़्तियार में है। (41)

ख़ुदा की मदद का मुस्तहिक बनने की ख़ास शर्त यह है कि आदमी ऐसा हो कि उसे इक्तेदार मिले फिर भी वह न बिगड़े, उसे बड़ाई का मकाम मिलना उसके इज्ज व तवाजोअ (विनम्रता) को बढ़ाने वाला बन जाए। जो लोग इक्तेदार से पहले की हालत में इस तरह सालेह (नेक) साबित हों वही इक्तेदार के बाद के हालात में सालेह साबित हो सकते हैं।

यही वे लोग हैं कि जब उन्हें कोई इक्तेदार (सत्ता) दिया जाता है तो वे ख़ुदा के आगे झुक जाते हैं। वे बंदों का पूरा-पूरा हक अदा करते हैं। वे जिंदगी के मामलात में वही करते हैं जिसे खुदा पसंद करता है। और उससे दूर रहते हैं जो ख़ुदा को पसंद नहीं।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۙ وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۙ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ

और अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो उनसे पहले कौमे नूह और आद और समूद झुठला चुके हैं और कौमे इब्राहीम और कौमे लूत और मदयन के लोग भी। और मूसा को झुठलाया गया। फिर मैंने मुंकिरों को ढील दी। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। पस कैसा हुआ मेरा अजाब। (42-44)

'इब्राहीम और मूसा को झुठलाने वाले लोगों' से मुराद हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा के हम जमाना लोग हैं न कि वे लोग जो इस आयत के उतरने के वक़्त मौजूद थे। क्योंकि क़ुरआन के उतरने के जमाने में तो तमाम लोग इन पैग़म्बरों को मानने वाले बने हुए थे।

यही मामला हर पैग़म्बर के साथ पेश आया। उनके जमाने के लोगों ने उन्हें झुठलाया। और बाद के लोगों ने उन्हें अज्मत व तक़द्दुस (पवित्रता) का मक़ाम दिया। इसकी वजह यह है कि पैग़म्बर अपने जमाने में सिर्फ एक दाओ होता है। मगर बाद के जमाने में उसके नाम के साथ अज्मतों की तारीख़ वाबस्ता हो जाती है। हर दौर के इंसानों ने यह सुबूत दिया है कि वे पैग़म्बर को मुजर्रद दाओ के रूप में पहचानने की सलाहियत नहीं रखते। वे पैग़म्बर को सिर्फ अज्मतों के रूप में पहचानना जानते हैं। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा ही का दाजियाना रूप थे। मगर आपके जमाने के वही लोग जो हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा से वाबस्तगी पर फख़्र करते थे उन्होंने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने से इंकार कर दिया।

इससे मालूम होता है कि पैगम्बर को मानने वाले हक़ीक़त में कौन लोग हैं। पैग़म्बर को मानने वाले दरअस्ल वे लोग हैं जो 'दावत' (आह्वान) वाले पैग़म्बर को पहचानें। जो लोग सिर्फ 'अज्मत' (महानता) वाले पैग़म्बर को पहचानें वे तारीख़ के मोमिन हैं न कि हक़ीक़त में पैग़म्बरे ख़ुदा के मोमिन।

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ

पस कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया और वे जालिम थीं। पस अब वे अपनी छतों पर उल्टी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुवें और कितने पुख़्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं। क्या ये लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते। क्योंकि आंखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं। (45-46)

ख़ुदा के नजदीक देखने वाले वे लोग हैं जो इबरत (सीख) और नसीहत की नजर से चीजें को देखें। जिन लोगों का हाल यह हो कि वे वाकेयात को देखें मगर उससे नसीहत न ले सकें वे ख़ुदा की नजर में अंधे हैं। उनका देखना जानवर का देखना है न कि इंसान का देखना।

ख़ुदा ने जमीन पर नसीहत के बेशुमार सामान फैला दिए हैं। उन्हीं में से एक वे क़दीम यादगारें हैं जो पिछली क़ौमों ने दुनिया में छोड़ी हैं। ये क़ौमें कभी अज्मत व इक्तेदार का मक़ाम हासिल किए हुए थीं। मगर आज उनका निशान टूटे हुए खंडहरों के सिवा और कुछ नहीं।

यह वाकया हर इंसान को उसका अंजाम याद दिला रहा है मगर जब लोग दिल वाली आंख खो दें तो सर की आंख उन्हें कोई भी बामअना चीज नहीं दिखाती।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۚ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ

और ये लोग तुमसे अजाब के लिए जल्दी किए हुए हैं। और अल्लाह हरगिज अपने वादे के ख़िलाफ करने वाला नहीं है। और तेरे रब के यहां का एक दिन तुम्हारे शुमार के एतबार से एक हजार साल के बराबर होता है। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें मैंने ढील दी और वे जालिम थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ लौट कर आना है। (47-48)

इस दुनिया में कोई शख़्स या कौम अगर सरकशी करे तो ख़ुदा जरूर उसे पकड़ता है। मगर ख़ुदा कभी पकड़ने में जल्दी नहीं करता। इंसान एक दिन में बेबरदाश्त हो सकता है। मगर ख़ुदा एक हजार साल तक भी बेबरदाश्त नहीं होता। ख़ुदा नाफरमानियों को देखता है फिर भी लम्बी मुद्दत तक लोगों को मौका देता है। ताकि अगर वे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों तो अपनी इस्लाह कर लें। ख़ुदा किसी फर्द (व्यक्ति) या क़ौम को सिर्फ उस वक़्त पकड़ता है जबकि वे आख़िरी तौर पर अपना मुजरिम होना साबित कर चुके हों।

पिछले लोगों के साथ ख़ुदा ने यही मामला किया। आइंदा के लोगों के साथ भी ख़ुदा अपनी इसी सुन्नत (तरीक़े) के तहत मामला फ़रमाएगा।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾

कहो कि ऐ लोगो मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए मग़्फिरत (क्षमा) है और इज्जत की रोजी। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े वही दोजख़ वाले हैं। (49-51)

इंसान का अस्ल मसला यह है कि वह बिलआख़िर एक ऐसी दुनिया में पहुंचने वाला है जहां मोमिनीन और सालिहीन (नेक लोगों) के लिए अबदी राहत है और जो लोग हक को नजरअंदाज करें और उसके मुक़ाबले में सरकशी का रवैया दिखाएं उनके लिए अबदी (चिरस्थाई) आग का अजाब है।

इस्लामी दावत का अस्ल मक्सद यह है कि लोगों को उस आने वाले दिन से बाख़बर कर दिया जाए। काम की यह नौइयत ख़ुद मुतअय्यन कर रही है कि दाओ का अस्ल काम ख़बरदार करना है। इसके बाद जो कुछ है वह सिर्फ ख़ुदा से मुतअल्लिक है और वही उसे अंजाम दे सकता है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٤﴾

और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल और नबी भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में मिला दिया। फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है। और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है उससे वह उन लोगों को जांचे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं। और जालिम लोग मुख़ालिफत में बहुत दूर निकल गए हैं और ताकि वे लोग जिन्हें इल्म मिला है जान लें कि यह सच है तेरे रब की तरफ से है। फिर वे उस पर यकीन लाएं। और उनके दिल उसके आगे झुक जाएं। और अल्लाह ईमान लाने वालों को जरूर सीधा रास्ता दिखाता है। (52-54)

हक का दाई चाहे वह पैग़म्बर हो या ग़ैर पैग़म्बर, उसके साथ हमेशा यह पेश आता है कि जब वह ख़ुदा की सच्ची बात का एलान करता है तो मुआनिदीन (विरोधी) उसकी बात में तरह-तरह के शोशे निकालते हैं ताकि लोगों को उसकी सदाकत (सच्चाई) के बारे में मुशतबह (संदिग्ध) कर दें।

इस तरह के शोशे हमेशा बेबुनियाद होते हैं। जब वे पेश किए जाते हैं तो दाई को मौका मिलता है कि वह उनकी वजाहत करके अपनी बात को और ज्यादा साबितशुदा बना दे। इससे मुख़्लिस (निष्ठावान) लोगों के यकीन में इजाफा होता है। इसके बाद ख़ुदा के साथ उनका तअल्लुक और ज्यादा मजबूत हो जाता है। मगर जो लोग मुख़्लिसाना शुऊर से ख़ाली होते हैं, ये शोशे उनके लिए फितना बन जाते हैं। वे उनके फरेब में मुब्तिला होकर हक से दूर चले जाते हैं।

'अल्लाह ईमान वालों को जरूर सिराते मुस्तकीम दिखाता है।' इसका मतलब दूसरे लफ्जों में यह है कि जो लोग फिलवाकअ ईमान के मामले में संजीदा हों वे कभी झूठे प्रोपेगंडों से मुतअस्सिर नहीं होते। वे अल्फाज के तिलिस्म से कभी धोखा नहीं खाते। उनका ईमान उनके लिए ऐसा इल्म बन जाता है जो बातों को उनकी गहराई के साथ जान ले, न कि महज बातों के जाहिरी रूप में अटक कर रह जाए।

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾ الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٥٧﴾

और इंकार करने वाले लोग हमेशा उसकी तरफ से शक में पड़े रहेंगे। यहां तक कि अचानक उन पर कियामत आ जाए। या एक मनहूस दिन का अजाब आ जाए। उस दिन सारा इख़्तियार सिर्फ अल्लाह को होगा। वह उनके दर्मियान फैसला फरमाएगा। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए वे नेमत के बाग़ों में होंगे और जिन्होंने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (55-57)

पैग़म्बर की दावत में दलील की अज्मत पूरी तरह मौजूद होती है। मगर वे लोग जो सिर्फ जाहिरी अज्मतों को जानते हैं वे पैग़म्बर की मअनवी अज्मत को देख नहीं पाते और उसका इंकार कर देते हैं। ऐसे लोग हमेशा शक व शुबह में पड़े रहते हैं। क्योंकि वे हक

को जाहिरी अज़्मतों में देखना चाहते हैं। और अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) यह है कि वह हक को अस्ल रूप में लोगों के सामने लाए ताकि जो लोग हक़ीक़त शनास हैं वे उसे पहचान कर उससे वाबस्ता हो जाएं। और जो जाहिरबीं हैं वे उसे नजरअंदाज करके अपना मुजरिम होना साबित करें।

'आयतों को झुठलाना' यह है कि आदमी दलील की सतह पर जाहिर होने वाले हक को नजरअंदाज कर दे। वह उस सदाकत को मानने के लिए तैयार न हो जो अस्ल रूप में उसके सामने जाहिर हुई है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾ لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा, फिर वे कत्ल कर दिए गए या वे मर गए, अल्लाह जरूर उन्हें अच्छा रिज़्क देगा। और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर रिज़्क देने वाला है। वह उन्हें ऐसी जगह पहुंचाएगा जिससे वे राजी होंगे। और बेशक अल्लाह जानने वाला, हिल्म (उदारता) वाला है। (58-59)

जो शख़्स ईमान के मामले में मुख़्लिस हो उसका हाल यह हो जाता है कि वह हर दूसरी चीज की क़ुर्बानी गवारा कर लेता है। मगर ईमान की क़ुर्बानी उसे गवारा नहीं होती। इस राह में अगर वतन छोड़ना पड़े तो वह वतन छोड़ देता है। इस राह में कत्ल होना पड़े तो वह कत्ल हो जाता है। वह ईमान के साथ बंधा रहता है। यहां तक कि वह इसी हाल में मर जाता है।

जो लोग दुनिया की जिंदगी में इस बात का सुबूत देंगे कि वे ईमान को सबसे कीमती चीज समझते हैं, अल्लाह उनकी इस तरह क़द्रदानी फरमाएगा कि उन्हें आख़िरत की सबसे कीमती चीज दे देगा। वे वहां अबदी तौर पर ख़ुशियों और राहतों की जिंदगी गुजारते रहेंगे।

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

यह हो चुका, और जो शख़्स बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था, और फिर उस पर ज्यादती की जाए तो अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, दरगुजर करने वाला है। (60)

अहले ईमान को यह तल्क़ीन की गई थी कि वे उस ख़ुदा के तरीके को अपना तरीका बनाएं जो ग़फ़ूर व रहीम है। वह लोगों की ज्यादतियों से मुसलसल दरगुजर करता है। और

उन्हें माफ फरमाता है। चुनांचे सहाबा किराम का गिरोह आम तौर पर इसी अख़्लाके ख़ुदावंदी पर कायम था। उन पर जुल्म किया जाता था मगर वे उसे बर्दाश्त करते थे। उनके साथ इश्तआलअंगेज (उत्तेजक) बातें की जाती थीं मगर वे दरगुजर करते थे।

ताहम कुछ मुसलमानों से ऐसा हुआ कि उनके साथ ज्यादती की गई तो फौरी जज़्बे के तहत उन्होंने जवाबी कार्रवाई की। उन्हें नुक़्सान पहुंचाया गया तो उन्होंने भी कुछ नुक़्सान पहुंचाया। दुश्मनों ने इसे बहाना बनाकर मुसलमानों के ख़िलाफ जबरदस्त प्रोपेगंडा किया। वे ख़ुद अपनी जालिमाना कार्रवाइयों को भूल गए। अलबत्ता मुसलमानों के मामूली वाकये को जुल्म करार देकर उन्हें बदनाम करना शुरू कर दिया।

ऐसा करना बदतरीन कमीनापन है। जो लोग इस किस्म के कमीनापन का सुबूत दें वे ख़ुदा की ग़ैरत को चैलेन्ज करते हैं। बजाहिर वे एक मुसलमान को जालिम साबित कर रहे हैं। मगर हक़ीक़त की नजर में वे ख़ुद सबसे बड़े जालिम हैं। वे अपने जुल्म की सख़्ततरीन सजा पाकर रहेंगे। इस किस्म के झूठे प्रोपेगंडों से वे अहले हक को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक (सत्य) है और वे सब बातिल (असत्य) हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं। और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (61-62)

दुनिया का निजाम ख़ामोश जबान में इंसान को जबरदस्त सबक दे रहा है। यहां बार-बार ऐसा होता है कि रात की तारीकी आती है और वह दिन को ढांक लेती है। यहां हर रोज दिन आता है और रात की तारीकी को ख़त्म कर देता है। यह तमसील की जबान में उस हक़ीक़त का कायनाती एलान है कि एक गिरोह अगर शान व शौकत हासिल किए हुए हो तो उसे इस ग़लतफहमी में नहीं रहना चाहिए कि उसकी शान व शौकत ख़त्म होने वाली नहीं। इसी तरह दूसरा गिरोह अगर मज़्लूम है तो उसे भी यह ख़्याल नहीं करना चाहिए कि उसकी मज़्लूमियत हमेशा बाकी रहेगी।

जो ख़ुदा आसमानी दुनिया में रोशनी को तारीकी के ख़ाने में डाल देता है और तारीकी को रोशनी का रूप अता करता है वही ख़ुदा इंसानी दुनिया में भी इसी किस्म के वाकेयात रूनुमा कर सकता है। यहां कोई भी ताकत नहीं जो ख़ुदा को ऐसा करने से रोक दे।

اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۖ فَتُصۡبِحُ الۡاَرۡضُ مُخۡضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيۡفٌ خَبِيۡرٌ ۝ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الۡغَنِىُّ الۡحَمِيۡدُ ۝

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया। फिर जमीन सरसब्ज हो गई। बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। बेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। (63-64)

दुनिया में जब एक आदमी हक के ऊपर अपनी जिंदगी खड़ी करता है तो उसे तरह-तरह की मुश्किलें पेश आती हैं। शैतान लोगों को वरग़लाता है और वे उसे सताने के लिए जरी हो जाते हैं। यह सूरतेहाल बड़ी सख़्त होती है। उसे देखकर हकपरस्त आदमी मायूसी में मुब्तिला होने लगता है।

मगर कायनात जबाने हाल से कहती है कि यहां किसी ख़ुदा के बंदे के लिए मायूसी का कोई सवाल नहीं। ख़ुदा हर साल यह मंजर दिखाता है कि जमीन का सब्जा गर्मी की शिद्दत से झुलस जाता है। मिट्टी ख़ुश्क वीरान नजर आने लगती है। बजाहिर उसमें जिंदगी का कोई इम्कान नहीं होता। इसके बाद बारिश बरसती है। और ख़ुश्क मिट्टी में सब्जा लहलहा उठता है।

यह ख़ुदा की कुदरत का एक नमूना है जो हर साल माद्दी सतह पर दिखाया जाता है। फिर ख़ुदा के लिए क्या मुश्किल है कि वह इंसानी सतह पर भी अपना यही करिश्मा दिखा दे।

اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمۡ مَّا فِى الۡاَرۡضِ وَالۡفُلۡكَ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِاَمۡرِهٖ ؕ وَيُمۡسِكُ السَّمَآءَ اَنۡ تَقَعَ عَلَى الۡاَرۡضِ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِىۡۤ اَحۡيَاكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ يُحۡيِيۡكُمۡ ؕ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَـكَفُوۡرٌ ۝

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने जमीन की चीजों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी, वह उसके हुक्म से समुद्र में चलती है। और वह आसमान को जमीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर यह कि उसके हुक्म से। बेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, महरबान है। और वही है जिसने तुम्हें जिंदगी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है। फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्र है। (65-66)

जमीन की तमाम चीजेंएक ख़ास तवाज़ुन (संतुलन) को मुसलसल अपने अंदर कायम रखती हैं। अगर उनका तवाज़ुन बिगड़ जाए तो चीजें मुफीद बनने के बजाए हमारे लिए सख़्त मुजिर बन जाएं। पानी में धातु का एक टुकड़ा डालें तो वह फौरन डूब जाएगा मगर पानी को ख़ुदा ने एक ख़ास कानून का पाबंद बना रखा है जिसकी वजह से यह मुमकिन होता है कि लोहे या लकड़ी को कश्ती की सूरत दे दी जाए तो वह पानी में नहीं डूबती। ख़ला (अंतरिक्ष) में बेशुमार कुरे (ग्रह, नक्षत्र) हैं। उन्हें बजाहिर गिर पड़ना चाहिए। मगर वे ख़ास कानून के तहत निहायत सेहत के साथ अपने मदार (कक्ष) पर थमे हुऐ हैं।

इंसान ने अपने आपको खुद नहीं बनाया। उसे ख़ुदा ने पैदा किया है। फिर उसे एक ऐसी दुनिया में रखा जो उसके लिए सरापा रहमत है। मगर आजादी पाकर इंसान ऐसा सरकश हो गया कि वह अपने सबसे बड़े मोहसिन के एहसान का एतराफ नहीं करता।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلۡنَا مَنۡسَكًا هُمۡ نَاسِكُوۡهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الۡاَمۡرِ وَادۡعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝ وَاِنۡ جَادَلُوۡكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۝ اَللّٰهُ يَحۡكُمُ بَيۡنَكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ۝ اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ ذٰ لِكَ فِىۡ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰ لِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ۝

और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीका मुकर्रर किया कि वे उसकी पैरवी करते थे। पस वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ। यकीनन तुम सीधे रास्ते पर हो। अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। अल्लाह कियामत के दिन तुम्हारे दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि आसमान व जमीन की हर चीज अल्लाह के इल्म में है। सब कुछ एक किताब में है। बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है। (67-70)

इबादत के दो पहलू हैं। एक उसकी अंदरूनी हकीकत और दूसरे उसका जाहिरी तरीका। अंदरूनी हकीकत इबादत का अस्ल जुज़ है और जाहिरी तरीका उसका इजफी (अतिरिक्त) जुज। मगर कोई गिरोह जब लम्बी मुद्दत तक इस पर कारबंद रहता है तो वह इस फर्क को भूल जाता है। वह इबादत की जाहिरी तामील (अनुपालन) ही को अस्ल इबादत समझ लेता है।

इसी का नाम जुमूद (जड़ता) है। चुनांचे अल्लाह तआला की यह सुन्नत रही है कि जब वह अगला पैग़म्बर भेजता है तो वह उसकी शरीअत (जाहिरी तरीका) में कुछ फर्क कर देता है। इस

फर्क का मक्सद यह होता है कि लोगों के जुमूद को तोड़ा जाए। लोगों को जाहिरपरस्ती की हालत से निकाल कर जिंदा इबादत करने वाला बनाया जाए। अब जो लोग जाहिरी आदाब व क्वाइद ही को सब कुछ समझे हुए हों वे पैग़म्बर की इताअत (आज्ञापालन) से इंकार कर देते हैं। इसके बरअक्स जो लोग इबादत की हकीकत को जानते हैं वे पैग़म्बर के कहने पर अमल करने लगते हैं। यह तब्दीली उनकी इबादत में नई रूह पैदा कर देती है। वह उन्हें जामिद (निर्जीव) ईमान की हालत से निकाल कर जिंदा ईमान की हालत तक पहुंचा देती है।

यही वह ख़ास हिक्मत है जिसकी बिना पर एक पैग़म्बर और दूसरे पैगम्बर के मंसक (इबादत का तरीका) में कुछ फर्क रखा गया। जब कोई पैग़म्बर नया मंसक लाया तो जुमूद (जड़ता) में पड़े हुए लोगों ने उसके ख़िलाफ सख़्त एतराजात निकालने शुरू किए। मगर पैग़म्बरों को यह हुक्म था कि वे इन मामलों को बहस का मौज़ूअ (विषय) न बनने दें। वे अस्ली और बुनियादी तालीमात पर अपनी सारी तवज्जोह सर्फ करें।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिनके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और न उनके बारे में उन्हें कोई इल्म है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। और जब उन्हें हमारी वाज़ेह (सुस्पष्ट) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम मुंकिरों के चेहरे पर बुरे आसार देखते हो। गोया कि वे उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना रहे हैं। कहो कि क्या मैं तुम्हें बताऊं कि इससे बदतर चीज क्या है। वह आग है। उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इंकार किया और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (71-72)

ख़ालिस तौहीद की दावत हमेशा उन लोगों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त होती है जो एक अल्लाह के सिवा दूसरों से अपनी अकीदतें (आस्थाएं) वाबस्ता किए हुए हों। वे अपने माबूदों और अपनी महबूब शख़्सियतों पर तंकीद को सुनकर बिफर उठते हैं। हक की दावत की तरदीद से अपने आपको बेबस पाकर वे दाअियाने हक पर टूट पड़ते हैं। वे चाहते हैं कि उनका सिरे से ख़ात्मा कर दें।

ऐसे लोगों से कहा गया कि तुम्हारा रवैया सरासर बेअक़्ली का रवैया है। आज तुम

लफ्जी तंकीद बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हो। कल तुम्हारा क्या हाल होगा जबकि तुम्हें अपनी इस रविश की बिना पर आग का अजाब बर्दाश्त करना पड़ेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है तो इसे ग़ौर से सुनो। तुम लोग ख़ुदा के सिवा जिस चीज को पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगरचे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएं। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमजोर और जिनसे मदद चाही गई वे भी कमजोर। उन्होंने अल्लाह की कद्र न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक है। बेशक अल्लाह ताकतवर है, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है। (73-74)

अल्लाह के सिवा किसी और को तकद्दुस (पवित्रता) का मकाम देना सरासर बेअक़्ली की बात है। इसलिए कि मुकद्दस (पवित्र) मकाम उसे दिया जाता है जिसके अंदर कोई ताकत हो। और इस दुनिया का हाल यह है कि यहां किसी भी इंसान या ग़ैर इंसान को कोई हकीकी ताकत हासिल नहीं। मक्खी एक इंतिहाई मामूली चीज है। मगर जमीन व आसमान की तमाम चीजें मिलकर भी एक मक्खी को वजूद में नहीं ला सकतीं। फिर किसी ग़ैर ख़ुदा को मुकद्दस (पवित्र पूज्य) समझना क्योंकर दुरुस्त हो सकता है।

इस किस्म के तमाम अकीदे दरअस्ल ख़ुदा की ख़ुदाई के कमतर अंदाजा (Underes-timation) पर आधारित हैं। लोग ख़ुदा को मानते हैं मगर वे उसकी अज्मत व कुदरत से बेख़बर हैं। अगर वे ख़ुदा को वैसा मानें जैसा कि उसे मानना चाहिए तो उन्हें अपने ये तमाम अहमकाना (हास्यास्पद) हद तक बेमअना मालूम हों। वे ख़ुद ही ऐसे तमाम अकीदों से दस्तबरदार हो जाएं।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

अल्लाह फरिश्तों में से अपना पैग़ाम पहुंचाने वाला चुनता है। और इंसानों में से भी। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामलात। (75-76)

अल्लाह ने जिस स्कीम के तहत इंसान को बनाया और उसे जमीन पर रखा, इसका यह तकाजा था कि वह इंसानों की हिदायत का इंतिजाम करे। वह उन्हें बताए कि जन्नत का रास्ता कौन सा है और जहन्नम का रास्ता कौन सा। चुनांचे उसने यह इंतिजाम किया कि वह इंसानों में से किसी को पैग़म्बरी के लिए चुनता है। और उसके पास फरिश्ते के जरिए अपना कलाम भेजता है।

इस इंतिजाम के तहत इंसान को अस्ल हकीकत से बाख़बर किया जा रहा है। दूसरी तरफ अल्लाह तआला लोगों के आमाल की निगरानी भी फरमा रहा है। इसके बाद जब इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी तो तमाम लोग ख़ुदा की तरफ लौटाए जाएंगे ताकि अपनी अपनी कारकर्दगी के मुताबिक अपने अंजाम को पाएं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱرْكَعُوا وَٱسْجُدُوا وَٱعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَٱفْعَلُوا ٱلْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٧٧﴾ وَجَٰهِدُوا فِى ٱللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِۦ ۚ هُوَ ٱجْتَبَىٰكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى ٱلدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِّلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَٰهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّىٰكُمُ ٱلْمُسْلِمِينَ مِن قَبْلُ وَفِى هَٰذَا لِيَكُونَ ٱلرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا ٱلزَّكَوٰةَ وَٱعْتَصِمُوا بِٱللَّهِ هُوَ مَوْلَىٰكُمْ ۖ فَنِعْمَ ٱلْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ ٱلنَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

ऐ ईमान वालो, रुकूअ और सज्दा करो। और अपने रब की इबादत करो और भलाई के काम करो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि कोशिश करने का हक है। उसी ने तुम्हें चुना है। और उसने दीन के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन। उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा, इससे पहले और इस कुरआन में भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह बनो। पस नमाज कायम करो और जकात अदा करो। और अल्लाह को मजबूत पकड़ो, वही तुम्हारा मालिक है। पस कैसा अच्छा मालिक है और कैसा अच्छा मददगार। (77-78)

इस आयत का ख़िताब अस्लन असहाबे रसूल से और तबअन (सामान्यतः) तमाम मोमिनीने कुरआन से है। इस गिरोह को ख़ुदा ने इस ख़ास काम के लिए मुंतख़ब किया है कि वह कियामत तक तमाम कौमों को ख़ुदा के सच्चे और हकीकी दीन से बाख़बर करता रहे। रसूल ने यही शहादत (आह्वान) का अमल अपने जमाने के लोगों पर किया। और आपके पैरोकारों को यही अमल बाद में अपने हमजमाना (समकालीन) लोगों पर अंजाम देना है।

यह काम एक बेहद नाजुक काम है। इसके लिए मुजाहिदाना (संघर्षपरक) अमल दरकार है। इसे सिर्फ वही लोग हकीकी तौर पर अंजाम दे सकते हैं जो सही मअनों में ख़ुदा के आगे

झुकने वाले बन गए हों। जो दूसरों के इतने ज्यादा ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हों कि अपना वक्त और अपना पैसा उनके लिए ख़र्च करने में ख़ुशी महसूस करें। जो हर दूसरी चीज से ऊपर उठकर सिर्फ एक ख़ुदा पर भरोसा करने वाले बन गए हों। जो हकीकी मअनों में लफ़्ज 'मुस्लिम' का मिस्दाक हों जो उनके लिए ख़ुसूसी तौर पर वजअ किया गया है।

ताहम इस कारेशहादत (आह्वान-कार्य) के साथ ख़ुदा ने एक ख़ास मामला यह किया है कि उसकी राह की ख़ारजी (वाह्य) रुकावटों को हमेशा के लिए दूर कर दिया है। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए दुनिया में ऐसा इंकिलाब लाया गया है जिसने उन रुकावटों को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया जिनका साबिका पिछले नबियों और उनकी उम्मतों को पेश आता था। अब इस काम के लिए हकीकी रुकावट कोई नहीं है। यह अलग बात है कि कुरआन के हामिलीन (धारक) ख़ुद ही अपनी नादानी से अपनी राह में ख़ुदसाख़्ता मुश्किलें पैदा कर लें और एक आसान काम को मस्नूई तौर पर मुश्किल काम बना डालें।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قَدْ أَفْلَحَ ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ ٱلَّذِينَ هُمْ فِى صَلَاتِهِمْ خَٰشِعُونَ ﴿٢﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ عَنِ ٱللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَوٰةِ فَٰعِلُونَ ﴿٤﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَٰفِظُونَ ﴿٥﴾ إِلَّا عَلَىٰٓ أَزْوَٰجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٦﴾ فَمَنِ ٱبْتَغَىٰ وَرَآءَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْعَادُونَ ﴿٧﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِأَمَٰنَٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَٰعُونَ ﴿٨﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَٰتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْوَٰرِثُونَ ﴿١٠﴾ ٱلَّذِينَ يَرِثُونَ ٱلْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿١١﴾

आयतें-118 **सूरह-23. अल-मोमिनून** रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यकीनन फलाह पाई ईमान वालों ने जो अपनी नमाज में झुकने वाले हैं और जो लग्व (घटिया, निरर्थक) बातों से बचते हैं। और जो जकात अदा करने वाले हैं और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले हैं, सिवा अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो उनके अधीन दासियां हों कि उन पर वे काबिले मलामत नहीं। अलबत्ता जो इसके अलावा चाहें तो वही ज्यादती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद (वचन) का ख़्याल रखने वाले हैं। और जो अपनी नमाजों की हिफाजत करते हैं। यही लोग वारिस होने वाले हैं जो फिरदौस की विरासत पाएंगे। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (1-11)

ख़ुदा की इस दुनिया में कामयाबी सिर्फ उस शख़्स के लिए है जो साहिबे ईमान हो। जो किसी और वाला न होकर एक अल्लाह वाला बन जाए। जिसकी जिंदगी अंदर से बाहर तक ईमान में ढल गई हो।

जब किसी शख़्स को ईमान मिलता है तो यह सादा सी बात नहीं होती। यह उसकी जिंदगी में एक इंकिलाब आने के हममअना होता है। अब वह अल्लाह की इबादत करने वाला और उसके आगे झुकने वाला बन जाता है। उसकी संजीदगी इतनी बढ़ जाती है कि बेफायदा मशाग़िल में वक़्त जाया करना उसे हलाकत मालूम होने लगता है। वह अपनी कमाई का एक हिस्सा ख़ुदा के नाम पर निकालता है। और उससे जरूरतमंदों की मदद करता है। वह अपनी शहवानी ख़्वाहिशात को कंट्रोल में रखने वाला बन जाता है। और उसे उन्हीं हुदूद (हदों) के अंदर इस्तेमाल करता है। जो ख़ुदा ने उसके लिए मुकर्रर कर दी हैं। वह दुनिया में एक जिम्मेदार आदमी की तरह जिंदगी गुजारता है। दूसरे की अमानत में वह कभी ख़ियानत नहीं करता। किसी से जब वह कोई अहद कर लेता है तो वह कभी उसके ख़िलाफ नहीं जाता।

जिन लोगों के अंदर ये ख़ुसूसियात हों वे अल्लाह के मत्लूब बंदे हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए ख़ुदा ने जन्नतुल फिरदौस की मेयारी दुनिया तैयार कर रखी है। मौत के बाद वे उसकी फजाओं में दाख़िल कर दिए जाएंगे ताकि अबदी तौर पर उसके अंदर ऐश करते रहें।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

और हमने इंसान को मिट्टी के ख़ुलासा (सत) से पैदा किया। फिर हमने पानी की एक बूंद की शक्ल में उसे एक महफूज़ ठिकाने में रखा। फिर हमने पानी की बूंद को एक जनीन (भ्रूण) की शक्ल दी। फिर जनीन को गोश्त का एक लौथड़ा बनाया। पस लौथड़े के अंदर हड्डियां पैदा कीं। फिर हमने हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया। फिर हमने उसे एक नई सूरत में बना खड़ा किया। पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करने वाला। फिर इसके बाद तुम्हें जरूर मरना है। फिर तुम कियामत के दिन उठाए जाओगे। (12-16)

इंसान का बच्चा मां के पेट में परवरिश पाता है। कदीम जमाने में इस्तकरारे हमल (गर्भ धारण) से लेकर बच्चे की पैदाइश तक की पूरी मुद्दत इंसान के लिए एक छुपी हुई चीज की हैसियत रखती थी। बीसवीं सदी में जदीद साइंसी जराए के बाद यह मुमकिन हुआ है कि पेट

में परवरिश पाने वाले बच्चे का मुशाहिदा (अवलोकन) किया जाए और उसके बारे में बराहेरास्त मालूमात हासिल की जाएं।

कुरआन ने जो चौदह सौ साल पहले इंसानी तख़्लीक के जो मुख़्तलिफ तदरीजी (क्रमवत) मरहले बताए थे, वे हैरतअंगेज तौर पर दौरे जदीद के मशीनी मुशाहिदे के ऐन मुताबिक साबित हुए हैं। यह एक खुला हुआ सुबूत है कि कुरआन ख़ुदा की किताब है। अगर ऐसा न होता तो जदीद तहकीक और कुरआन के बयान में इतनी कामिल मुताबिकत मुमकिन न थी।

तख़्लीक का यह वाक्या जो हर रोज मां के पेट में हो रहा है। वह बताता है कि इस दुनिया का ख़ालिक एक हददर्जा बाकमाल हस्ती है। इंसान की तख़्लीके अव्वल (प्रथम सृजन) का हैरतनाक वाक्या जो हर रोज हमारी आंखों के सामने हो रहा है वही यह यकीन दिलाने के लिए काफी है कि इसी तरह तख़्लीके सानी (पुनः सृजन) का वाक्या भी होगा। और ऐन उसके मुताबिक होगा जिसकी ख़बर नबियों के जरिए दी गई है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए। और हम मख़्लूक (सृष्टि) से बेख़बर नहीं हुए। और हमने आसमान से पानी बरसाया एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उसे जमीन में ठहरा दिया। और हम उसे वापस लेने पर कादिर हैं। फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं। और तुम उनमें से खाते हो। और हमने वह दरख़्त पैदा किया जो तूरे सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है। और खाने वालों के लिए सालन भी। और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक है। हम तुम्हें उनके पेट की चीज से पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फायदे हैं। और तुम उन्हें खाते हो। और तुम उन पर और कश्तियों पर सवारी करते हो। (17-22)

इंसान एक हकीर वजूद है। इसके मुकाबले में कायनात दहशतनाक हद तक अजीम है। मगर कायनात का सबसे ज्यादा हैरतअंगेज पहलू यह है कि वह इंसान के लिए इंतिहाई तौर

पर मुवाफिक (अनुकूल) है।

यहां वसीअ ख़ला में अंगिनत सितारे और सय्यारे (ग्रह) तेज रफ्तारी के साथ घूम रहे हैं। मगर बेशुमार नामुवाफिक इम्कानात (प्रतिकूल संभावनाओं) के बावजूद वे इंसान के लिए कोई नामुवाफिक़ सूरतेहाल पैदा नहीं करते। बारिश अगर बहुत ज्यादा बरसने लगे तो इंसानी आबादियां तबाह हो जाएं मगर उसकी भी एक हद है, वह उस हद से बाहर नहीं जाती। जमीन पर पानी के जो ज़ख़ीरे हैं वे सबके सब जमीन में जज्ब हो सकते हैं या भाप बनकर फज़ा में उड़ सकते हैं मगर कभी ऐसा नहीं होता।

मजीद यह कि जमीन की सूरत में एक अद्वितीय ग्रह मौजूद है जो ऐसा मालूम होता है कि ख़ास तौर पर इंसान की जरूरियात का सामने रखकर बनाया गया है। यहां इंसान की गिजाई जरूरियात से लेकर उसकी सनअती (औद्योगिक) जरूरियात तक तमाम चीजें इफ्रात के साथ मौजूद हैं। जमीन के जानवर बजाहिर वहशी मख़्लूक हैं मगर उन्हें ख़ुदा ने तरह-तरह से इंसान के लिए कारआमद बना दिया है। इन जानवरों का पेट एक हैरतअंगेज कारख़ाना है जो घास और चारा लेता है और उसे दूध और गोश्त जैसी कीमती चीजों में तब्दील करता है। जानवरों में से बहुत से जानवर हैं जो जानवर होने के बावजूद अपने आपको पूरी तरह इंसान के कब्जे में दे देते हैं कि वह उन पर सवारी करे और उनसे दूसरे मुख़्तलिफ फायदे हासिल करे।

ये वाकेयात इसका तकाजा करते हैं कि इंसान अपने महरबान ख़ुदा को पहचाने और उसका शुक्रगुजार बंदा बनकर रहे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। तो उसकी कौम के सरदार जिन्होंने इंकार किया था उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक आदमी है। वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर बरतरी हासिल करे। और अगर अल्लाह चाहता तो वह फरिश्ते भेजता। हमने यह बात अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी। यह तो बस एक शख़्स है जिसे जुनून हो गया है। पस एक वक्त तक इसका इंतिजार करो। (23-25)

हजरत नूह जिस कौम में आए वह प्रचलित मअनों में कोई 'मुन्किर' कौम न थी। बल्कि वह आदम अलैहिस्सलाम की उम्मत थी। वह ख़ुदा पर और रिसालत पर अकीदा रखती थी।

इसके बावजूद क्यों उसने हजरत नूह को ख़ुदा का पैग़म्बर मानने से इंकार कर दिया। इसकी वजह सिर्फ एक थी नूह उसे अपने जैसे एक आदमी मालूम हुए।

पैग़म्बर एक इंसान होता है वह मां बाप के जरिए पैदा होता है। इसलिए अपने जमाने के लोगों को वह हमेशा अपने ही जैसा एक आदमी दिखाई देता है। यह सिर्फ बाद की तारीख़ में होता है कि पैग़म्बर का नाम लोगों को एक पुरअज्मत नाम महसूस होने लगे। यही वजह है कि पैग़म्बर के हमअस्र (समकालीन लोग) पैग़म्बर को पहचान नहीं पाते। उन्हें पैग़म्बर एक ऐसा आदमी मालूम होता है जो बड़ा बनने के लिए फर्जी तौर पर पैग़म्बरी का दावा करने लगे। वे पैग़म्बर को एक मजनून समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

हर उम्मत का यह हाल हुआ है कि बाद के जमाने के वह ख़ुदा की तालीमात के बजाए अपने असलाफ (पूर्वजों) की रिवायात पर कायम हो गई। पैग़म्बर ने आकर जब अस्ल दीनी तालीमात को दुबारा पेश किया तो पैग़म्बर का दीन उसे असलाफ की रिवायात से हटा हुआ मालूम हुआ। उसके अपने जेहनी सांचे में उसे असलाफ बरतर नजर आए और वक्त का पैग़म्बर उनके मुकाबले में उसे कमतर दिखाई दिया। यही सबसे बड़ी वजह है जिसकी बिना पर हर दौर में ऐसा हुआ कि पैग़म्बरों की दावत उनके हमअसरों (समकालीनलोगों) के लिए अजनबी बनी रही।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब तू मेरी मदद फरमा कि इन्होंने मुझे झुठला दिया। तो हमने उसे 'वही' (प्रकाशना) की कि तुम कश्ती तैयार करो हमारी निगरानी में और हमारी हिदायत के मुताबिक। तो जब हमारा हुक्म आ जाए और जमीन से पानी उबल पड़े तो हर किस्म के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ। और अपने घर वालों को भी, सिवा उनके जिनके बारे में पहले फैसला हो चुका है। और जिन्होंने जुल्म किया है उनके मामले में मुझसे बात न करना। बेशक उन्हें डूबना है। (26-27)

हजरत नूह लम्बी मुद्दत तक अपनी कौम को तल्कीन करते रहे। मगर उनकी कौम उनकी बात मानने के लिए तैयार न हुई। आख़िरकार हजरत नूह ने दुआ की कि ख़ुदाया, मेरी दावत व तब्लीग़ इनसे अम्रे हक (सत्य बात) को मनवा न सकी। अब तू ही इन पर अम्रे हक को जाहिर कर दे। मगर जब इंसानी अमल की हद ख़त्म होकर ख़ुदाई अमल की हद शुरू हो तो यह मुवाख़िज़ा (पकड़) का वक्त होता है न कि वअज व तल्कीन का। चुनांचे ख़ुदा का हुक्म

नाक़ाबिले तस्ख़ीर तूफ़ान की सूरत में जाहिर हुआ और चन्द मोमिनीने नूह का छोड़कर बक़िया सारी क़ैम ग़र्क़ हेक्र रह गई।

अम्रे हक का एतराफ न करना सबसे बड़ा जुर्म है। जो लोग यह जुर्म करें वे हमेशा ख़ुदा की पकड़ में आ जाते हैं। कोई दूसरी चीज उन्हें इस पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं होती।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾

फिर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाएं तो कहो कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमें जालिम लोगों से नजात दी और कहो कि ऐ मेरे रब तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू बेहतर उतारने वाला है। बेशक इसमें निशानियां हैं और बेशक हम बंदों को आजमाते हैं। (28-30)

शिर्क से भरे हुए माहौल में जो चन्द अफराद हजरत नूह पर ईमान लाए वे उसी दिन मअनवी एतबार से ख़ुदा की कश्ती में दाख़िल हो चुके थे। इसके बाद जब तूफान के वक्त वे लकड़ी की बनाई हुई कश्ती में बैठे तो यह गोया उनके इब्तिदाई फैसले की तक्मील थी। उन्होंने अपने आपको फिक्री (वैचारिक) तौर पर बदी के तूफ़ान से बचाया था। ख़ुदा ने उन्हें अमली (व्यावहारिक) तौर पर बदी के सख़्त अंजाम से बचा लिया।

मोमिन हर कामयाबी को ख़ुदा की तरफ से समझता है, इसलिए वह हर कामयाबी पर ख़ुदा का शुक्र अदा करता है। और तूफाने नूह से नजात तो खुला हुआ ख़ुदाई नुसरत का वाकया था। ऐसे मौके पर मोमिन की जबान से जो कलिमात निकलते हैं वे वही हैं जिनकी एक तस्वीर मज्कूरा आयत में नजर आती है। वह हाल के लिए ख़ुदा की क़ुदरत का एतराफ करते हुए मुस्तकबिल के लिए मजीद इनायत की इल्तजा करने लगता है। क्योंकि उसे यकीन हेता है कि हाल भी ख़ुदा के कब्जे में है और मुस्तकबिल भी ख़ुदा के कब्जे में।

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِينَ ﴿٣١﴾ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ وَأَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ

بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُونَ ﴿٣٤﴾

फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया। फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। और उसकी कौम के सरदारों ने जिन्होंने इंकार किया। और आख़िरत की मुलाकात को झुठलाया, और उन्हें हमने दुनिया की जिंदगी में आसूदगी (सम्पन्नता) दी थी, कहा यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है जो तुम पीते हो। और अगर तुमने अपने ही जैसे एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। (31-34)

हजरत नूह के मोमिनीन की नस्ल बढ़ी और उस पर सदियां गुजर गईं तो दुबारा वे उसी गुमराही में मुब्तिला हो गए जिसमें उनके पिछले लोग मुब्तिला हुए थे। इससे मुराद ग़ालिबन वही कौम है जिसे कौमे आद कहा जाता है। ये लोग ख़ुदा से ग़ाफ़िल होकर ग़ैर ख़ुदाओं में मशगूल हो गए। अब दुबारा उनके दर्मियान ख़ुदा का रसूल आया। और उसने उन्हें हक से आगाह किया।

मगर दुबारा यही हुआ कि कौम के सरदार पैग़म्बर के मुख़ालिफ बनकर खड़े हो गए। ये सरदार वे लोग थे जो वक्त के ख़्यालात से मुवाफिक़त करके लोगों के क़ायद (लीडर) बने हुए थे। इसी के साथ ख़ुशहाली भी उनके गिर्द जमा हो गई थी। यह एक आम कमजोरी है कि जिन लोगों को दौलत और इक्तेदार (सत्ता) हासिल हो जाए वे उसे अपने बरसरे हक होने की दलील समझ लेते हैं। यही उन सरदारों के साथ हुआ। उनकी ख़ुशहाली और इक्तेदार उनके लिए यह समझने में मानेअ (रुकावट) हो गए कि वे ग़लती पर भी हो सकते हैं।

उन्होंने देखा कि पैग़म्बर के गिर्द न दौलत का ढेर जमा है और न उसे इक्तेदार की गद्दी हासिल है, इसलिए उन्होंने पैग़म्बर को हकीर (तुच्छ) समझ लिया। वे अपनी जाहिरपरस्ती की बिना पर पैग़म्बर की मअनवी अज्मत को देखने में नाकाम रहे।

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا أَنَّكُمْ مُّخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

क्या यह शख़्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे। बहुत ही बईद (असंभव) और बहुत ही बईद है जो बात उनसे कही जा रही है। जिंदगी तो यही हमारी दुनिया की जिंदगी है। यहीं हम मरते हैं और जीते हैं। और हम दुबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं। यह तो बस एक ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। और हम उसे मानने वाले नहीं। (35-38)

इस आयत में आख़िरत के बारे में जो कलिमात नकल किए गए हैं वे कभी जबानेहाल (व्यवहार) से अदा होते हैं और कभी जबानेकाल (कथन) से। कभी ऐसा होता है कि आदमी हमहतन बस दुनिया की चीजों में मशग़ूल होता है। वह आख़िरत से इस तरह ग़ाफ़िल नजर आता है जैसे कि आख़िरत उसके नजदीक बिल्कुल बईद अज़ क्यास (कल्पना से परे की) बात है। और कभी ऐसा होता है कि उसकी आख़िरत से ग़फ़लत उसे सरकशी की उस हद तक पहुंचा देती है कि वह अपनी जबान से भी कह देता है कि आख़िरत तो बहुत बईद अज क्यास चीज है। इसलिए आज जो कुछ मिल रहा है उसे हासिल करो, कल के मोहूम (कल्पित) फ़ायदे की ख़ातिर आज के यकीनी फ़ायदे को न खोओ।

'इस शख़्स ने अल्लाह पर झूठ बांधा है' इस कलिमे की भी दो सूरते हैं। एक यह कि आदमी ऐन इसी जुमले को अपनी जबान से अदा करे। दूसरे यह कि वह हक के दाओ (आह्वानकर्ता) को इस तरह नजरअंदाज करे जैसे कि उसकी बात महज एक सिरफिरे शख़्स की बात है। उसका ख़ुदा से कोई तअल्लुक नहीं।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿٤٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُثَاءً ۚ فَبُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

रसूल ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी मदद फरमा कि उन्होंने मुझे झुठला दिया। फरमाया कि ये लोग जल्द ही पछताएंगे। पस उन्हें एक सख़्त आवाज ने हक के मुताबिक पकड़ लिया। फिर हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक (कूड़ा-कचरा) कर दिया। पस दूर हो जालिम कौम। (39-41)

ख़ुदा का पैग़म्बर जिस चीज के एलान के लिए आता है वह इस कायनात की सबसे संगीन हकीकत है। मगर पैग़म्बर इस हकीकत को सिर्फ दलील के रूप में जाहिर करता है। वही लोग दरअस्ल मोमिन हैं जो उसे दलील के रूप में पहचानें और अपने आपको उसके हवाले कर दें।

जब कोई गिरोह आख़िरी तौर पर यह साबित कर दे कि वह हकीकत को दलील के रूप में पहचानने की सलाहियत नहीं रखता तो फिर ख़ुदा हकीकत को 'सइहा' (सख़्त आवाज) के रूप में जाहिर करता है। हकीकत एक ऐसी चिंघाड़ बन जाती है जिसका सामना करने की ताकत किसी को न हो। मगर जब हकीकत 'सख़्त आवाज़' के रूप में जाहिर हो जाए तो यह उसे भुगतने का वक्त होता है न कि उसे मानने का। हकीकत जब 'सख़्त आवाज़' के रूप में जाहिर होती है तो आदमी के हिस्से में सिर्फ यह रह जाता है कि वह अबद (अनंत) तक अपनी उस नादानी पर पछताता रहे कि उसने हकीकत को देखा मगर वह उसकी तरफ से अंधा बना रहा। हकीकत की आवाज उसके कान से टकराई मगर उसने उसे सुनने के लिए अपने कान बंद कर लिए।

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّ مَا جَاءَ أُمَّةً رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۚ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

फिर हमने उनके बाद दूसरी कौमें पैदा कीं। कोई कौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती। फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे। जब भी किसी कौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठलाया। तो हमने एक के बाद एक को लगा दिया। और हमने उन्हें कहानियां बना दिया। पस दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते। (42-44)

पैग़म्बरों के बाद हमेशा उनकी उम्मतों में बिगाड़ आता रहा। उनकी इस्लाह के लिए बार-बार पैग़म्बर भेजे गए उम्मते आदम में हजरत नूह आए। इसके बाद उम्मते नूह (आद) में हजरत हूद आए। फिर उम्मते हूद (समूद) में हजरत सालेह आए, वग़ैरह। मगर हर बार यह हुआ कि वही लोग जो माजी के पैग़म्बर को बग़ैर बहस माने हुए थे वे हाल के पैग़म्बर को किसी तरह मानने पर तैयार न हुए।

इसकी वजह यह है कि माजी का पैग़म्बर तवील रिवायात के नतीजे में कौमी फ़ख़्र का निशान बन जाता है। वह कौमों के लिए उनके कौमी तशख़्ख़ुस (पहचान) की अलामत होता है। वह उनके लिए कौमी हीरो का दर्जा इख़्तियार कर लेता है। उसे मानकर आदमी के अहसासे बरतरी को तस्कीन मिलती है। जाहिर है कि ऐसे पैग़म्बर को कौन नहीं मानेगा।

मगर हाल के पैग़म्बर का मामला इसके बिल्कुल बरअक्स होता है। हाल के पैग़म्बर के साथ उसकी तारीख़ (इतिहास) वाबस्ता नहीं होती। उसके साथ अज़्मत और तकद्दुस की रिवायत शामिल नहीं होती। उसे मानना सिर्फ एक मअनवी हकीकत के एतराफ के हममअना होता है। न कि किसी हिमालयाई अज़्मत से अपने आपको वाबस्ता करना। यही वजह है कि माजी (अतीत) के पैग़म्बर को मानने वाले हमेशा हाल के पैग़म्बर का इंकार करते हैं।

'दूर हों जो ईमान नहीं लाते' इसे लफ़्ज बदल कर कहें तो इसका मतलब यह होगा कि दूर हों वे लोग जो ख़ुदा के सफ़ीर (दूत) को ख़ुदा के सफ़ीर की हैसियत से नहीं पहचान पाते। वे ख़ुदा के सफ़ीर को सिर्फ उसी वक्त पहचानते हैं जबकि तारीख़ी अमल के नतीजे में वह उनका कौमी हीरो बन चुका हो।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٤٥﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَ

قَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ फिरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मग़रूर (अभिमानी) लोग थे। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें हालांकि उनकी कौम के लोग हमारे ताबेअदार हैं। पस उन्होंने उन्हें झुठला दिया। फिर वे हलाक कर दिए गए। और हमने मूसा को किताब दी ताकि वे राह पाएं। (45-49)

हजरत मूसा और हजरत हारून बनी इस्राईल के फर्द थे। बनी इस्राईल उस वक्त मिस्र में थे और वहां की हुक्मरां कौम के लिए मजदूर की हैसियत रखते थे। बनी इस्राईल की कमतर हैसियत और उनके मुक़ाबले में फिरऔन और उसके साथियों की बरतर हैसियत उनके लिए रुकावट बन गई। वे एक इस्राईली पैग़म्बर को नुमाइंद-ए-ख़ुदा मानने के लिए तैयार न हुए। हजरत मूसा ने अगरचे उनके सामने निहायत मोहकम (ठोस) दलाइल पेश किए। मगर दलाइल का वजन उन्हें इसके लिए मजबूर न कर सका कि वे अपनी बरतर नफ्सियात को बदलें और एक महकूम (अधीन) शख़्स की जबान से जाहिर होने वाली सदाक़त का एतराफ करें।

इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने पैग़म्बर की मदद की। फिरऔन अपनी तमाम ताकतों के साथ ग़र्क कर दिया गया। दूसरी तरफ जिन लोगों ने पैग़म्बर का साथ दिया था। उन पर ख़ुदा ने यह एहसान फरमाया कि उनके पास अपना हिदायतनामा भेजा जिसे इख़्तियार करके आदमी दुनिया और आख़िरत में कामयाबी को अपने लिए यकीनी बना सकता है।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾

और हमने मरयम के बेटे को और उसकी मां को एक निशानी बनाया और हमने उन्हें एक ऊंची जमीन पर ठिकाना दिया जो सुकून की जगह थी और वहां चशमा जारी था। (50)

हजरत मसीह की बग़ैर बाप के पैदाइश एक बेहद अनोखा वाक्या था। यह वाक्या क्यों हुआ। यह एक 'निशानी' के तौर पर हुआ। कदीम जमाने में यहूद को हामिले रिसालत (ईशदूतत्व की धारक) गिरोह की हैसियत हासिल थी। मगर उन्होंने मुसलसल सरकशी से अपने लिए इसका इस्तहक़ाक़ (पात्रता) खो दिया। अब वक्त आ गया था कि यह अमानत उनसे लेकर बनू इस्माईल को दे दी जाए। चुनांचे यहूद के ऊपर आख़िरी इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के लिए उनके आख़िरी पैग़म्बर को मोजिजाती अंदाज में पैदा किया गया। और उस पैग़म्बर को मजीद ग़ैर मामूली मोजिजे दिए गए। इसके बावजूद जब यहूद

आपके मुंकिर बने रहे तो यह बात आख़िरी तौर पर साबित हो गई कि वे हामिले रिसालत बनने के अहल नहीं हैं।

हजरत मसीह की वालिदा हजरत मरयम के लिए यह इंतिहाई नाज़ुक मरहला था। ऐसे हाल में उन्हें सख़्त जरूरत थी कि कोई ऐसा गोशा हो जहां वह लोगों की नजरों से दूर होकर रह सकें। वहां जिंदगी की जरूरी चीजें भी हों और सुकून व इत्मीनान भी हासिल हो। अल्लाह तआला ने जब उन्हें इस नाजुक इम्तेहान में डाला तो इसी के साथ उनके वतन के करीब एक पुरअम्न गोशा भी उनके लिए मुहय्या फरमा दिया।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾

ऐ पैग़म्बरो, सुथरी चीजें खाओ और नेक काम करो। मैं जानता हूं जो कुछ तुम करते हो। और यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है। और मैं तुम्हारा रब हूं, तो तुम मुझसे डरो। (51-52)

दीन अस्लन सिर्फ एक है। और यही एक दीन तमाम पैग़म्बरों को बताया गया। वह यह कि आदमी ख़ुदा को एक ऐसी अजीम हस्ती की हैसियत से पाए कि वह उससे डरने लगे। उसके दिल व दिमाग़ पर यह तसव्वुर छा जाए कि उसके ऊपर एक ख़ुदा है। वह हर हाल में उसे देख रहा है। और वह मौत के बाद उससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लेगा।

यह मअरफत (अन्तर्ज्ञान) ही अस्ल दीन है। इस मअरफत और इस एहसास के तहत जो जिंदगी बने वह यही होगी कि आदमी दुनिया की चीजों में से पाकीजा और सुथरी चीजें लेगा। वह अपने मामलात में नेकी और भलाई का तरीका इख़्तियार करेगा। ख़ुदा की मअरफत का लाजिमी नतीजा ख़ुदा का ख़ौफ है और ख़ुदा के ख़ौफ का लाजिमी नतीजा नेक जिंदगी।

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

फिर लोगों ने अपने दीन (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया। हर गिरोह के पास जो कुछ है उसी पर वह नाजां (गौरवांवित) है। पस उन्हें उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दो। क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं तो हम उन्हें फायदा पहुंचाने में सरगर्म हैं। बल्कि वे बात को नहीं समझते। (53-56)

ख़ुदा का दीन जब अपनी अस्ल रूह के साथ जिंदा हो तो वह लोगों में ख़ौफ पैदा करता है और जब दीन की अस्ल रूह निकल जाए तो वह फख्र का जरिया बन जाता है। यही वह वक्त है जबकि अहले दीन गिरोहों में बटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। हर गिरोह अपने हालात के लिहाज से कोई ऐसा पहलू ले लेता है जिसमें उसके लिए फख्र का सामान मौजूद हो। फख्र वाले दीन हमेशा कई होते हैं और ख़ौफ वाला दीन हमेशा एक होता है। बेख़ौफी की नफ्सियात राय का तअद्दुद (मत-भिन्नता) पैदा करती है। और ख़ौफ की नफ्सियात राय का इत्तेहाद (मतैक्य)।

मौजूदा दुनिया में इंसान हालते इम्तेहान में है। ख़ुदा के इल्म में किसी शख़्स या गिरोह की जो मुद्दत है उस मुद्दत तक उसे जिंदगी का सामान लाजिमन दिया जाता है। इस बिना पर ग़ाफिल लोग समझ लेते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं सही कर रहे हैं। अगर वे ग़लती पर होते तो उनका माल व असबाब उनसे छीन लिया जाता। हालांकि ख़ुदा का कानून यह है कि माल व असबाब मुद्दते इम्तेहान के ख़त्म होने पर छीना जाए न कि इम्तेहान के दौरान में हिदायत से इंहिराफ पर।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं। और जो लोग अपने रब की आयतों पर यकीन रखते हैं। और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते। और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। ये लोग भलाइयों की राह में सबकत (अग्रसरता) कर रहे हैं और वे उन पर पहुंचने वाले हैं सबसे आगे। और हम किसी पर उसकी ताकत से ज्यादा बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब हे जो बिल्कुल ठीक बोलती है, और उन पर ज़ुल्म न होगा। (57-62)

जो शख़्स अल्लाह को इस तरह पाए कि उस पर अल्लाह की हैबत तारी हो जाए वह आम इंसानों से बिल्कुल मुख़्तलिफ इंसान होता है। ख़ौफ की नफ्सियात उसे इंतिहाई हद तक संजीदा बना देती है। उसकी संजीदगी इसकी जामिन बन जाती है कि वह दलाइले ख़ुदावंदी

के वजन को पूरी तरह समझे और उसके आगे फौरन झुक जाए। ख़ुदा के सिवा हर चीज उसकी नजर में अपना वजन खो दे। वह सब कुछ करके भी यह समझे कि उसने कुछ नहीं किया।

मौजूदा दुनिया में दौड़-धूप की दो राहें खुली हुई हैं। एक दुनिया की राह और दूसरी आख़िरत की राह। जिन लोगों के अंदर मज्कूरा सिफात पाई जाएं वही वे लोग हैं जो आख़िरत की तरफ दौड़ने वाले हैं। ताहम आख़िरत की तरफ दौड़ना मौजूदा दुनिया में एक बेहद मुश्किल काम है। इसमें इंसान से तरह-तरह की कोताहियां हो जाती हैं। मगर अल्लाह तआला का मुतालबा हर आदमी से उसकी ताकत के बकद्र है न कि ताकत से ज्यादा। हर आदमी की इस्तेताअत (सामर्थ्य) और उसका कारनामा दोनों कामिल तौर पर ख़ुदा के इल्म में है। और यही वाकया इस बात की जमानत है कि कियामत में हर शख़्स को वह रिआयत मिले जो अजरुए इंसाफ उसे मिलनी चाहिए। और हर शख़्स वह इनाम पाए जिसका वह फिलवाकअ मुस्तहिक था।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْأَرُونَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُمْ مِنَّا لَا تُنْصَرُونَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُونَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ سَامِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾

बल्कि उनके दिल इसकी तरफ से ग़फलत में हैं। और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं वे उन्हें करते रहेंगे। यहां तक कि जब हम उनके ख़ुशहाल लोगों को अजाब में पकड़ेंगे तो वे फरयाद करने लगेंगे। अब फरयाद न करो। अब हमारी तरफ से तुम्हारी कोई मदद न होगी। तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे, उससे तकब्बुर (घमंड) करके। गोया किसी किस्सा कहने वाले को छोड़ रहे हो। (63-67)

जो लोग दुनियापरस्ती में ग़र्क हों उन्हें ख़ुदा और आख़िरत की बातों से दिलचस्पी नहीं होती। उनकी दिलचस्पी की चीजें उससे मुख़्तलिफ होती हैं जो सच्चे अहले ईमान की दिलचस्पी की चीजें होती हैं। ख़ुदा और आख़िरत की बात चाहे कितने ही मुवस्सिर (प्रभावी) अंदाज में बयान की जाए, उन्हें वह ज्यादा अपील नहीं करती। वे ऐसी बातों को नजरअंदाज करके अपनी दूसरी दिलचस्पियों में गुम रहते हैं। वे हक के दाओ (आह्वानकर्ता) की मज्लिस से इस तरह उठ जाते हैं जैसे किसी फुज़ूल किस्सागो (कथावाचक) को छोड़कर चले गए।

मगर जब ख़ुदा की पकड़ आती है तो ऐसे लोग ग़फलत और सरकशी को भूलकर

आजिजाना फ़रयाद करने लगते हैं। उस वक्त वे ख़ुदा के आगे झुक जाते हैं। मगर उस वक्त का झुकना बेकार होता है। क्योंकि ख़ुदा के आगे झुकना वह मोतबर है जबकि आदमी ख़ुदा की निशानी को देखकर झुक गया हो। जब ख़ुदा ख़ुद अपनी ताकतों के साथ जाहिर हो जाए उस वक्त झुकने की कोई कीमत नहीं।

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾ أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَاهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया। या उनके पास ऐसी चीज आई है जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं आई। या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं। इस वजह से वे उसे नहीं मानते। या वे कहते हैं कि उसे जुनून है। बल्कि वह उनके पास हक (सत्य) लेकर आया है। और उनमें से अक्सर को हक बात बुरी लगती है। और अगर हक उनकी ख़्वाहिशों के ताबेअ (अधीन) होता तो आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब तबाह हो जाते। बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है तो वे अपनी नसीहत से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। (68-71)

हक वह है जो हकीकते वाकये के मुताबिक हो। मगर ख़्वाहिशपरस्त इंसान यह चाहने लगता है कि हक को उसकी ख़्वाहिश के ताबेअ (अधीन) कर दिया जाए। इस किस्म के लोगों का हाल यह होता है कि दाऔ जब हक बात कहता है तो वे उससे नाराज हो जाते हैं। वे हक के ताबेअ नहीं बनना चाहते। इसलिए वे चाहने लगते हैं कि हक को उनके ताबेअ कर दिया जाए। अपनी इस नफ्सियात की बिना पर वे हक की आवाज पर ध्यान नहीं देते। हक उन्हें अजनबी दिखाई देता है। वे हक के दाऔ (आह्वानकर्ता) को उसकी अस्ल हैसियत में पहचान नहीं पाते। अपने को बरसरे हक जाहिर करने के लिए वे दाऔ को मत्ऊन (लांछित) करने लगते हैं।

कायनात में कामिल दुरुस्तगी नजर आती है। इसके बरअक्स इंसानी दुनिया में हर तरफ फसाद और बिगाड़ है। इसकी वजह यह है कि कायनात का निजाम हक की बुनियाद पर चल रहा है। यानी वही होना जो होना चाहिए, वह न होना जो न होना चाहिए। अब अगर कायनात का निजाम भी इंसान की ख़्वाहिशों पर चलने लगे तो जो फसाद इंसानी दुनिया में है वही फसाद बकिया कायनात में भी बरपा हो जाएगा।

नसीहत और तंकीद हमेशा आदमी के लिए सबसे ज्यादा तल्ख़ चीज होती है। बहुत ही कम वे ख़ुदा के बंदे हैं जो नसीहत और तंकीद को खुले जेहन के साथ सुनें। बेशतर लोग इसे नजरअंदाज करके गुजर जाते हैं।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ﴿٧٤﴾

क्या तुम उनसे कोई माल मांग रहे हो तो तुम्हारे रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है। और वह बेहतरीन रोजी देने वाला है। और यकीनन तुम उन्हें एक सीधे रास्ते की तरफ बुलाते हो। और जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते वे रास्ते से हट गए हैं। (72-74)

पैग़म्बर अपने मुख़ातबीन से कभी कोई माली ग़र्ज नहीं रखता। पैग़म्बर और उसके मुख़ातबीन का तअल्लुक दाऔ और मदऊ का तअल्लुक होता है। दाऔ और मदऊ का तअल्लुक बेहद नाजुक तअल्लुक है। दाऔ अगर एक तरफ लोगों को आख़िरत का पैग़ाम दे और इसी के साथ वह उनसे दुनिया के मुतालबात भी छेड़े हुए हो तो उसकी दावत (आह्वान) लोगों की नजर में मजाक बनकर रह जाएगी। यही वजह है कि पैग़म्बर किसी भी हाल में अपने मदऊ से कोई माद्दी मुतालबा नहीं करता, चाहे इसकी वजह से उसे एकतरफा तौर पर हर किस्म का नुक्सान बर्दाश्त करना पड़े।

दाऔ का अस्ल मुआवजा ख़ुद वह हक होता है जिसे लेकर वह खड़ा हुआ है। ख़ुदा की दरयाफ्त उसका सबसे बड़ा सरमाया होती है। दाजियाना जिंदगी गुजारने के नतीजे में उसे जो रब्बानी तजर्बात होते हैं वे उसकी रूह को सबसे बड़ी ग़िजा फ़राहम करते हैं। आलातरीन मक्सद के लिए सरगर्म रहने से जो लज्जत मिलती है वह उसकी तस्कीन का सबसे बड़ा सामान होती है।

हक की दावत को वही शख़्स मानेगा जिसे आख़िरत का खटका लगा हुआ हो। आख़िरत का एहसास आदमी को संजीदा बनाता है और संजीदगी ही वह चीज है जो आदमी को मजबूर करती है कि वह हकीक़त को माने। जो शख़्स संजीदा न हो वह कभी हकीक़त को तस्लीम नहीं करेगा, चाहे उसे दलाइल से कितना ही ज्यादा साबितशुदा बना दिया जाए।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٦﴾ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٧﴾

और अगर हम उन पर रहम करें और उन पर जो तकलीफ है वह दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे बहके हुए। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा। लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने आजिजी की। यहां तक कि जब हम

उन पर सख़्त अजाब का दरवाजा खोल दें तो उस वक्त वे हैरतजदा रह जाएंगे। (75-77)

मक्की दौर में जब कुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत (आह्वान) को रद्द कर दिया तो अल्लाह तआला ने चन्द साल के लिए मक्का वालों को कहत (अकाल) में मुब्तिला कर दिया। यह कहत इतना शदीद था कि बहुत से लोग मुर्दार खाने पर मजबूर हो गए। यह अल्लाह तआला की एक आम सुन्नत है कि जब कोई गिरोह सरकशी इख़्तियार करता है और नसीहत कुबूल करने पर तैयार नहीं होता तो वह उस गिरोह पर तंबीही अजाब भेजता है ताकि उनके दिल नर्म हों और वे हक बात की तरफ ध्यान दे सकें।

मगर तारीख़ का तजर्बा है कि इंसान न अच्छे हालात से सबक लेता और न बुरे हालात से। दोनों किस्म के हालात का मक्सद यह होता है कि आदमी अल्लाह की तरफ रुजूअ करे। मगर इंसान यह करता है कि वह अच्छे हालात को अपनी तदबीर का नतीजा समझ लेता है और बुरे हालात को जमाने के उलट-फेर का। इस तरह वह दोनों ही किस्म के वाकेयात से सबक लेने से महरूम रहता है।

आदमी इसी तरह ग़फ़लत में पड़ा रहता है यहां तक कि ख़ुदा का आख़िरी फैसला आ जाता है। उस वक्त वह हैरान रह जाता है कि वह चीज जिसे उसने ग़ैर अहम समझकर नजरअंदाज कर दिया था वही इस दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे अहम हकीकत थी।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो। और वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया। और तुम उसी की तरफ जमा किए जाओगे। और वही है जो जिलाता है और मारता है और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का बदलना। तो क्या तुम समझते नहीं। (78-80)

इंसान इस कायनात की वह ख़ास मख़्लूक है जिसे विशेष तौर पर सुनने और देखने और सोचने की आला सलाहियतें दी गई हैं। ये ख़ुसूसी सलाहियतें यकीनन किसी ख़ुसूसी मक्सद के लिए हैं। वह मक्सद यह है कि आदमी उन्हें हकीकते हयात की मअरफ्त (जीवन के यथार्थ को समझने) के लिए इस्तेमाल करे। वह अपने कान से उस सदाकत (सच्चाई) की आवाज को सुने जिसका एलान यहां किया जा रहा है। वह अपनी आंख से उन निशानियों को देखे जो उसके चारों तरफ बिखरी हुई हैं। वह अपनी सोचने की सलाहियत को इस्तेमाल करके उनकी गहराई

तक पहुंचे। यही कान और आंख और दिल का शुक्र है। जो लोग मौजूदा दुनिया में इस शुक्र का सुबूत न दें वे इन इनामात का इस्तहकाक (अधिकार) हमेशा के लिए खो रहे हैं।

ख़ुदा की जो सिफ़ात (गुण) दुनिया में नुमायां हो रही हैं उनमें से एक यह है कि वह जिंदा को मुर्दा और मुर्दा को जिंदा करता है। यह ख़ुदा बिलआख़िर तमाम मरे हुए लोगों को दुबारा जमा करेगा। फिर जिस तरह वह रात को दिन बनाता है इसी तरह वह लोगों की निगाहों से ग़फ़लत का पर्दा हटा देगा। इसके बाद विभिन्न चीजों की हकीकत लोगों पर ठीक-ठीक स्पष्ट हो जाएगी।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾ قَالُوا أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَٰذَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम दुबारा उठाए जाएंगे। इसका वादा हमें और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया। ये महज अगलों के अफ़साने हैं। (81-83)

इंसान को अक्ल दी गई है। अक्ल के अंदर यह सलाहियत है कि वह मामलात की गहराई में दाख़िल हो और अस्ल हकीकत को दरयाफ्त करके उसे समझ सके। मगर बहुत कम ऐसा होता है कि इंसान हकीकी मअनों में अपनी अक्ल को इस्तेमाल करे। वह बस जाहिरी तअस्सुर (प्रभाव) के तहत एक राय कायम कर लेता है और उसे दोहराने लगता है। माजी (अतीत) के लोग भी ऐसा करते रहे और हाल के लोग भी यही कर रहे हैं।

मौत के बाद दुबारा उठाए जाने का शुऊरी या लफ़्जी इंकार करने वाले बहुत कम होते हैं। ज्यादातर लोगों को इस अकीदे का अमली मुंकिर कहा जा सकता है। ये वे लोग हैं जो रस्मी तौर पर जिंदगी बाद मौत को मानते हुए अमलन ऐसी जिंदगी गुजारते हैं जैसे कि उन्हें इस पर यकीन न हो कि मरने के बाद वे दुबारा उठाए जाएंगे। और जिस तरह आज वे होश व हवास के साथ जिंदा हैं, उसी तरह दुबारा होश व हवास के साथ जिंदा होकर ख़ुदा के सामने पेश होंगे।

قُل لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَن بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَ

هُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

कहो कि जमीन और जो कोई इसमें है यह किसका है, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि अल्लाह का है। कहो कि फिर तुम सोचते नहीं। कहो कि कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है अर्शे अजीम का। वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं। कहो कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज का इख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है। कहो कि फिर कहां से तुम मस्हूर (जादूग्रस्त) किए जाते हो। (84-89)

इन आयात में उस तजादे फ़िक्र (वैचारिक अन्तर्विरोध) का तज़्किरा है जिसमें हर दौर के बेशतर लोग मुब्तिला रहे हैं। चाहे वे मुश्रिक हों या ग़ैर मुश्रिक। बजाहिर ख़ुदा को एक मानने वाले हों या कई ख़ुदाओं को मानने वाले।

बेशतर लोगों का हाल यह है कि वे इस बात को मानते हैं कि जमीन व आसमान का ख़ालिक एक अल्लाह है। वही उसका मालिक है। वही उसे चला रहा है। तमाम बरतर इख़्तियारात उसी को हासिल हैं। मगर इस मानने का जो लाजिमी तकाजा है उसका कोई असर उनकी जिंदगियों में नहीं पाया जाता।

इस अजीम इक़रार का तकाजा है कि वही उनकी सोच बन जाए। ख़ुदा का एहसास उनके अंदर ख़ौफ बनकर दाख़िल हो जाए। उनके अंदर यह माद्दा पैदा हो कि उनके सामने हक आए तो वे फौरन उसका एतराफ कर लें। उनकी जिंदगी पूरी की पूरी उसी में ढल जाए। मगर यह सब कुछ नहीं होता। वे अगरचे अकीदे के तौर पर ख़ुदा को मानते हैं मगर उनका अकीदए ख़ुदा अलग रहता है और उनकी हकीकी जिंदगी अलग।

ख़ुदा का तसव्वुर इंसान को मस्हूर (जादूग्रस्त) नहीं करता। अलबत्ता दूसरी-दूसरी चीजें उसकी नजर में इतनी अहम बन जाती हैं जिनसे वह मस्हूर होकर रह जाए। कैसा अजीब है इंसान का मामला!

بَلْ أَتَيْنَاهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ ۚ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٩١﴾ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

बल्कि हम उनके पास हक लाए हैं और बेशक वे झूठे हैं। अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद (पूज्य) नहीं। ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़्लूक को लेकर अलग हो जाता। और एक दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं। वह खुले और छुपे का जानने वाला है। वह बहुत ऊपर है उससे जिसे ये शरीक बताते हैं। (90-92)

इक्तेदार (सत्ता) की यह फ़ितरत है कि वह तक्सीम को गवारा नहीं करता। इंसानों में जब भी कई साहिबे इक्तेदार हों तो वे आपस में एक दूसरे को जेर करने या नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते हैं। यहां तक कि जो कौमें मुख़्तलिफ देवताओं को मानती हैं उनकी मैथोलोजी में कसरत (अधिकता) से दिखाया गया है कि एक देवता और दूसरे देवता में लड़ाइयां जारी हैं।

कायनात में इस सूरतेहाल की मौजूदगी कि इसके एक हिस्से और इसके दूसरे हिस्से में कोई टकराव नहीं होता, यह इस बात का सुबूत है कि हर हिस्से का ख़ुदा एक ही है। अगर हर हिस्से के अलग-अलग ख़ुदा होते तो हर हिस्से का खुदा अपने हिस्से को लेकर अलग हो जाता और इसके नतीजे में कायनात के मुख़्तलिफ हिस्सों की मौजूदा हमआहंगी बाकी न रहती। मुख़्तलिफ ख़ुदाओं की कशाकश (परस्पर टकराव) में कायनात का निजाम दरहम-बरहम हो जाता।

ऐसी हालत में तौहीद का नजरिया सरापा सच्चाई है और शिर्क का नजरिया सरापा झूठ।

قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾ وَإِنَّا عَلَىٰ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ﴿٩٥﴾

कहो कि ऐ मेरे रब, अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। तो ऐ मेरे रब मुझे जालिम लोगों में शामिल न कर। और बेशक हम कादिर हैं कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। (93-95)

पैग़म्बर की इस दुआ का तअल्लुक ख़ुद पैग़म्बर के दिल की कैफ़ियत से है न कि ख़ुदा के अजाब से। पैग़म्बर की यह दुआ बताती है कि मोमिन हर हाल में ख़ुदा से डरने वाला इंसान होता है। ख़ुदा का अजाब जब दूसरों के लिए आ रहा हो उस वक्त भी मोमिन का दिल कांप उठता है। वह आजिजी के साथ ख़ुदा को पुकारने लगता है। क्योंकि वह जानता है कि इंसान सिर्फ ख़ुदा की इनायत से बच सकता है न कि अपने किसी अमल या अपनी किसी ताकत से।

पैग़म्बर के मुंकिरीन पर ख़ुदा का फैसला कभी पैग़म्बर की जिंदगी में आता है और कभी पैगम्बर की वफात के बाद। आयत का आख़िरी टुकड़ा बताता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंकिरीन पर ख़ुदा का यह फैसला आपकी जिंदगी ही में आया। आपके दुश्मन आपकी जिंदगी ही में पामाल कर दिए गए।

ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ ۝ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ۝

तुम बुराई को उस तरीके से दूर करो जो बेहतर हो। हम ख़ूब जानते हैं जो ये लोग कहते हैं। और कहो कि ऐ मेरे रब मैं पनाह मांगता हूं शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब मैं तुझसे पनाह मांगता हूं कि वे मेरे पास आएं। (96-98)

ख़ुदा का दाओ (आह्वानकर्ता) जब लोगों को हक़ की तरफ़ बुलाता है तो अक्सर ऐसा होता है कि लोग उसके दुश्मन बन जाते हैं। वे उसके ख़िलाफ़ झूठे प्रोपेगंडे करते हैं। वे उसे अपने शर (कुकृत्यों) का निशाना बनाते हैं। उस वक़्त दाओ के अंदर भी जवाबी जेहन उभरता है। उसके दिल में यह ख़्याल आता है कि जिन लोगों ने तुम्हारे साथ बुरा सुलूक किया है तुम भी उनके साथ बुरा सुलूक करो। अगर तुम ख़ामोश रहे तो उनके हौसले बढ़ेंगे और वे मजीद मुख़ालिफ़ाना कार्रवाई करने के लिए दिलेर हो जाएंगे।

मगर इस क़िस्म के ख़्यालात शैतान का वसवसा हैं। शैतान इस नाज़ुक मौक़े पर आदमी को बहकाता है ताकि उसे राह से बेराह कर दे। ऐसे मौक़े पर दाओ और मोमिन को चाहिए कि वह शैतानी बहकावों के मुक़ाबले में ख़ुदा की पनाह मांगे। न कि शैतानी बहकावों को मान कर अपने मुख़ालिफ़ीन (विरोधियों) के ख़िलाफ़ इंतिक़ामी कार्रवाइयां करने लगे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۖ وَمِن وَرَائِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝

यहां तक कि जब उनमें से किसी पर मौत आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे रब, मुझे वापस भेज दे। ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूं उसमें कुछ नेकी कमाऊं। हरगिज नहीं,यह एक बात है कि वही वह कहता है। और उनके आगे एक पर्दा है उस दिन तक के लिए जबकि वे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर फूंका जाएगा तो फिर उनके दर्मियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा। पस जिनके पल्ले भारी होंगे वही

लोग कामयाब होंगे। और जिनके पल्ले हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे। उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे। (99-104)

मौत आते ही आदमी मौजूदा दुनिया से जुदा हो जाता है। इसके बाद उसके और मौजूदा दुनिया के दर्मियान एक ऐसी आड़ क़ायम हो जाती है कि वह कभी इधर वापस न हो सके।

आदमी जब मौत के बाद अगली दुनिया में दाख़िल होता है तो अचानक उसकी आंख खुल जाती है। अब वह जान लेता है कि जिस आख़िरत को वह नजरअंदाज किए हुए था वही दरअस्ल जिंदगी का सबसे बड़ा मसला था। दुनिया के सामान तो सिर्फ इसलिए थे कि उससे आख़िरत की कमाई की जाए न यह कि बजाते ख़ुद उन्हीं को अस्ल मक्सूद समझ लिया जाए। चुनांचे मौत के बाद वह बेइख़्तियार चाहेगा कि काश वह दुबारा दुनिया में लौटा दिया जाए। मगर ऐसा होना मुमकिन नहीं क्योंकि ख़ुदा का कानून यह है कि किसी आदमी को सिर्फ एक बार मौक़ा दिया जाए, दुबारा नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी अपने साथियों और रिश्तेदारों पर भरोसा करता है। मगर क़ियामत में वह बिल्कुल तंहा होगा। वहां आदमी का जाती अमल उसके काम आएगा, इसके सिवा कोई चीज किसी के काम आने वाली नहीं।

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ۝

क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमारी बदबख़्ती ने हमें घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल ले, फिर अगर हम दुबारा ऐसा करें तो बेशक हम जालिम हैं। ख़ुदा कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो। (105-108)

आख़िरत के मनाजिर आंखों से देख लेने के बाद किसी को यह मौक़ा नहीं दिया जाएगा कि वह दुबारा मौजूदा दुनिया में आकर रहे और सही अमल का सुबूत दे। क्योंकि दुनिया की जिंदगी का मक्सद इम्तेहान है, इस बात का इम्तेहान कि आदमी देखे बग़ैर झुकता है या नहीं। जब आख़िरत का मुशाहिदा (अवलोकन) करा दिया जाए तो इसके बाद न झुकने की कोई कीमत है और न वापस भेजने का कोई इम्कान।

आदमी का इम्तेहान देखकर मानने में नहीं है बल्कि सोच कर मानने में है। तालिबे इल्म (छात्र) की जांच पर्चा आउट होने से पहले की जाती है। जब पर्चा आउट होकर अख़बारों में

छप चुका हो इसके बाद किसी तालिबे इल्म की जांच करने का कोई सवाल नहीं।

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾

मेरे बंदों में एक गिरोह था जो कहता था कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए, पस तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। पस तुमने उन्हें मजाक बना लिया। यहां तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उन पर हंसते रहे। मैंने उन्हें आज उनके सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले। (109-111)

दुनिया की जिंदगी में जबकि अभी आख़िरत के हकाइक आंखों के सामने नहीं आए थे। उस वक्त ख़ुदा के कुछ बंदों ने ख़ुदा को उसके जलाल (प्रताप) व कमाल के साथ पहचाना। उनके सामने हक की दावत सिर्फ दलाइल की सतह पर आई। इसके बावजूद उन्होंने उस पर यकीन किया। वे उसके बारे में इस हद तक संजीदा हुए कि उसी को अपनी कामयाबी और नाकामी का मेयार बना लिया। एक अजनबी हक के साथ अपनी कामिल वाबस्तगी की उन्हें यह कीमत देनी पड़ी कि माहौल में वे मजाक का मौज़ूअ (विषय) बन गए। इसके बावजूद उन्होंने उससे अपनी वाबस्तगी को ख़त्म नहीं किया।

यह फिक्री इस्तकामत (आस्थागत दृढ़ता) ही सबसे बड़ा सब्र है और आख़िरत का इनाम आदमी को इसी सब्र की कीमत में मिलता है। वही लोग दरअस्ल कामयाब हैं जो मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इस सब्र का सुबूत दे सकें।

قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

इर्शाद होगा कि वर्षों के शुमार से तुम कितनी देर जमीन में रहे। वे कहेंगे हम एक दिन रहे या एक दिन से भी कम। तो गिनती वालों से पूछ लीजिए। इर्शाद होगा कि तुम थोड़ी ही मुद्दत रहे। काश तुम जानते होते। (112-114)

ऐश वही है जो अबदी (चिरस्थाई) हो। जो ऐश अबदी न हो वह जब ख़त्म होता है तो ऐसा मालूम होता है कि वह बस एक लम्हा था जो आया और गुजर गया।

दुनिया की जिंदगी में आदमी इस हकीकत को भूला रहता है। मगर आख़िरत में यह

हकीकत उस पर आख़िरी हद तक खुल जाएगी। उस वक्त वह जानेगा। मगर उस वक्त जानने का कोई फायदा नहीं।

दुनिया में आदमी के सामने हक आता है मगर वह अपने सुकून को ख़त्म करना नहीं चाहता इसलिए वह उसे कुबूल नहीं करता। वह मिलने वाले फायदे की ख़ातिर मिले हुए फायदे को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। यहां की इज्जत, यहां का आराम, यहां की मस्लेहतें उसे इतनी कीमती मालूम होती हैं कि उसकी समझ में नहीं आता कि वह किस तरह ऐसा करे कि 'चीज' को नजरअंदाज करके अपने आपको 'बेचीज' से वाबस्ता कर ले। हालांकि जब उम्र की मोहलत पूरी होगी तो सौ साल भी ऐसा मालूम होगा जैसा कि वह बस एक दिन था जो आया और ख़त्म हो गया।

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾ وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

पस क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हमने तुम्हें बेमक्सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे। पस बहुत बरतर (उच्च) है अल्लाह, बादशाह हकीकी, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह मालिक है अर्शे अजीम का। और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे, जिसके हक में उसके पास कोई दलील नहीं। तो उसका हिसाब उसके रब के पास है बेशक मुंकिरों को फलाह न होगी। और कहो कि ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फरमा, तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। (115-118)

इंसानों में दो किस्म के इंसान हैं। कोई इंसान बाउसूल जिंदगी गुजारता है और कोई बेउसूल। कोई अनदेखी सदाकत (सच्चाई) के लिए अपने आपको कुर्बान कर देता है और कोई सिर्फ दिखाई देने वाली चीजों में मशग़ूल रहता है। कोई हक की दावत को उसकी सारी अजनबियत के बावजूद कुबूल करता है। और कोई उसे नजरअंदाज कर देता है और उसका मजाक उड़ाता है। कोई अपने आपको ज़ुल्म से रोकता है, सिर्फ इसलिए कि ख़ुदा ने उसे ऐसा करने से मना किया है। कोई मौका पाते ही दूसरों के लिए जालिम बन जाता है, क्योंकि उसका नफ़्स (अंतःकरण) उससे ऐसा ही करने के लिए कह रहा है।

अगर इस दुनिया का कोई अंजाम न हो, अगर वह इसी तरह चलती रहे और इसी तरह बिलआख़िर उसका ख़ात्मा हो जाए तो इसका मतलब यह है कि यह एक बेमक्सद हंगामे के

सिवा और कुछ न थी। मगर कायनात की मअनवियत (सार्थकता) इस किस्म के बेमअना नज़रिये की तरदीद (खंडन) करती है। कायनात का आला निजाम इससे इंकार करता है कि उसका ख़ालिक एक ग़ैर संजीदा हस्ती हो।

कायनात अपने वसीअ निजाम (सार्वभौम व्यवस्था) के साथ जिस ख़ालिक का तआरुफ करा रही है वह एक ऐसा ख़ालिक है जो अपनी जात में आख़िरी हद तक कामिल है। ऐसे ख़ालिक के बारे में नाक़ाबिले क़यास है कि वह दो मुख़्तलिफ किस्म के इंसानों का यकसां (समान) अंजाम होते हुए देखे और उसे गवारा कर ले। यह सरासर नामुमकिन है। यकीनन ऐसा होने वाला है कि मालिके कायनात एक तबके को बेकीमत कर दे जिस तरह उन्होंने हक (सत्य) को बेकीमत किया और दूसरे तबके की क़द्रदानी करे जिस तरह उन्होंने हक की क़द्रदानी की।

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ①
اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا
رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ
عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ② اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫
وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③

आयतें-64 सूरह-24. अन-नूर रुकूअ-9

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फर्ज किया है। और इसमें हमने साफ-साफ आयतें उतारी हैं। जानी (व्यभिचारी) औरत और जानी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कौड़े मारो। और तुम्हें उन दोनों पर अल्लाह के दीन के मामले में रहम न आना चाहिए। अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। और चाहिए कि दोनों की सजा के वक्त मुसलमानों का एक गिरोह मौजूद रहे। जानी निकाह न करे मगर जानिया (व्यभिचारिणी) के साथ या मुश्रिका (बहुदेववादी स्त्री) के साथ। और जानिया के साथ निकाह न करे मगर जानी या मुश्रिक (बहुदेववादी पुरुष)। और यह हराम कर दिया गया अहले ईमान पर। (1-3)

सूरह नूर ग़ज़वा (जंग) बनी अलमुस्तलक के बाद सन् 6 हि० में नाज़िल हुई। इस ग़ज़वे में एक मामूली वाक़्या पेश आया। उसे शोशा बनाकर मदीना के मुनाफ़िक़ीन ने हजरत आइशा

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बदनाम करना शुरू किया। इस सूरह में एक तरफ हजरत आइशा को पूरी तरह निर्दोष घोषित किया गया, और दूसरी तरफ वे ख़ास अहकाम दिए गए जो मआशिरे (समाज) में इस किस्म की सूरतेहाल पेश आने के बाद नाफिज किए जाने चाहिएं।

इस्लामी क़ानून में जिना (व्यभिचार) बेहद संगीन जुर्म है। ताहम इस्लामी क़ानून दो किस्म के इंसानों में फर्क करता है। एक वह जिसके लिए जाइज सिंफी तअल्लुक़ (यौन संबंध) के मौक़े मौजूद हों इसके बावजूद वह नाजाइज सिंफी तअल्लुक़ कायम करे। दूसरा वह जिसे अभी जाइज सिंफी तअल्लुक़ के मौक़े हासिल न हुए हों।

'जानी और जानिया को सौ कौड़े मारो' यह जिना क़ब्ल एहसान की सजा है। यानी उस जानी या जानिया की जो निकाह किए हुए न हों। इसके मुक़ाबले में जिना बाद एहसान (शादी-शुदा होने के बाद जिना करना) की सजा रज्म है। यानी मुजरिम को पत्थर मारकर हलाक कर देना। रज्म का हुक्म कुरआन (अल माइदा 43) में संक्षेप में और हदीस में सविस्तार मौजूद है।

अवाम के सामने सजा देना दरअस्ल सजा में इबरत (सीख) का पहलू शामिल करना है। इसका मक्सद यह है कि हाल (वर्तमान) के मुजरिम का अंजाम देखकर मुस्तकबिल (भविष्य) के मुजरिम डर जाएं और इस किस्म का जुर्म करने से बाज रहें।

जानी और जानिया अगर सजा के बाद तौबा और इस्लाह (सुधार) कर लें तो वे दुबारा आम मुसलमानों की तरह हो जाएंगे। लेकिन अगर वे तौबा और इस्लाह न करें तो इसके बाद वे इस क़ाबिल नहीं रहते कि इस्लामी मआशिरे में वे रिश्ता और तअल्लुक़ के लिए क़ुबूल किए जा सकें

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ
ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ④
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाएं, फिर चार गवाह न ले आएं उन्हें अस्सी कौड़े मारो और उनकी गवाही कभी क़ुबूल न करो। यही लोग नाफरमान हैं। लेकिन जो लोग इसके बाद तौबा करें और इस्लाह (सुधार) कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (4-5)

जिना को शदीद जुर्म क़रार देने का फित्री तक़ाज़ा यह है कि किसी ग़ैर जानी पर जिना का इल्जाम लगाना भी शदीद जुर्म हो। चुनांचे यह हुक्म दिया गया कि जो शख़्स किसी पर जिना का इल्जाम लगाए और फिर उसे शरई क़ायदे के मुताबिक साबित न कर सके, उसे अस्सी कौड़े मारे जाएं। मजीद यह कि ऐसे शख़्स को हमेशा के लिए शहादत (गवाही) के अयोग्य करार दे दिया जाए। यहां तक कि अहनाफ के नजदीक तौबा के बाद भी उसकी गवाही

मामलात में क़ुबूल नहीं की जाएगी।

किसी शख़्स पर झूठा इल्जाम लगाना उसे अख़्लाकी तौर पर क़त्ल करने की कोशिश है। ऐसे जुर्म पर इस्लाम में सख़्त सजाएं मुक़र्रर की गई हैं। और अगर कोई शख़्स दुनिया में सजा पाने से बच जाए तब भी वह आख़िरत की सजा से बहरहाल नहीं बच सकता। इल्ला यह कि वह तौबा करे और अल्लाह से माफी का तलबगार हो।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۶﴾ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۷﴾ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۸﴾ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۹﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰﴾

और जो लोग अपनी बीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो ऐसे शख़्स की गवाही की सूरत यह है कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है। और पांचवीं बार यह कहे कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो। और औरत से सजा इस तरह टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि यह शख़्स झूठा है। और पांचवीं बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़जब हो अगर यह शख़्स सच्चा हो। और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फ़ज्ल और उसकी रहमत न होती और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-10)

इस सिलसिले में एक मसला यह है कि अगर कोई शख़्स अपनी बीवी पर बदचलनी का इल्जाम लगाए और उसके पास ख़ुद अपने बयान के सिवा कोई ऐनी गवाह मौजूद न हो तो उसका फ़ैसला किस तरह होगा। जवाब यह है कि इस सूरत में मामले का फ़ैसला कसम के जरिए किया जाएगा जिसे शरई इस्तलाह (शब्दावली) में लिआन कहा जाता है।

अगर मर्द मुक़र्ररह तरीक़े पर कसम खा ले और औरत ख़ामोश रहे तो मर्द के बयान को मान कर औरत के ऊपर मज्कूरा सजा नाफिज कर दी जाएगी। और अगर ऐसा हो कि औरत भी मज्कूरा तरीक़े पर कसम खाकर कहे कि वह बेकुसूर है तो फिर उसे सजा नहीं दी जाएगी। अलबत्ता इसके बाद दोनों के दर्मियान तफ़रीक़ (अलगाव) करा दी जाएगी।

मआशिरत (सामाजिकता) के मामलात बेहद पेचीदा होते हैं। इन मामलात में इंसान जब कानूनसाजी करता है तो वह एक पहलू की तरफ झुक कर दूसरे पहलू को छोड़ देता है। ख़ुदा के कानून में तमाम पहलुओं की कामिल रिआयत है। इस एतबार से ख़ुदा का कानून इंसान के लिए बहुत बड़ी रहमत है।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۭ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۭ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱﴾

जिन लोगों ने यह तूफान बरपा किया वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमाअत है। तुम उसे अपने हक में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया। और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अजाब है। (11)

दाई (आह्वानकर्ता) अगर वाकेअतन सच्चाई पर है तो उसके ख़िलाफ झूठे प्रोपेगंडे हमेशा उसके हक में मुफ़ीद साबित होते हैं क्योंकि झूठे प्रोपेगंडों की हक़ीक़त आख़िरकार खुलकर रहती है। और जब हक़ीक़त खुलती है तो एक तरफ दाई का बरसरे हक होना और ज्यादा वाजेह हो जाता है। और जो लोग उसके बारे में दुविधा में थे वे इसके बाद यक़ीन के दर्जे तक पहुंच जाते हैं। वे अमलन देख लेते हैं कि हक के दाई के मुख़ालिफ़ीन (विरोधियों) के पास झूठे इल्जाम और बेबुनियाद इत्तिहाम (आक्षेप) के सिवा और कुछ नहीं।

हजरत आइशा सिद्दीक़ा के ख़िलाफ इल्जाम में सबसे बड़ा हिस्सा लेने वाला मशहूर मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबई था। उसके लिए क़ुरआन में सख़्त उख़रवी अजाब का एलान किया गया। मगर दुनिया में उसे कोई सजा नहीं दी गई, यहां तक कि वह अपनी तबई (स्वाभाविक) मौत मर गया। वाक़ये के बाद हजरत उमर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि इस शख़्स को क़त्ल कर दिया जाए। आपने फ़रमाया : 'ऐ उमर, क्या होगा जब लोग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल करते हैं।' इससे अंदाजा होता है कि बअज औक़ात हिक्मत का तक़ाजा यह होता है कि बड़े-बड़े मुजरिमीन को भी दुनिया में सजा न दी जाए बल्कि उनके मामले को आख़िरत के ऊपर छोड़ दिया जाए।

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰۗىِٕكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾

जब तुम लोगों ने उसे सुना तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने एक दूसरे के बारे में नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान (आक्षेप) है। ये लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाए। पस जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के नजदीक वही झूठे हैं। (12-13)

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का यह हक है कि वह उसके बारे में हमेशा नेक गुमान करे। दूसरे के बारे में बदगुमानी करना ख़ुद अपनी बदनफ्सी (कुप्रवृत्ति) का सुबूत है। और दूसरे के बारे में नेक गुमान करना अपनी नेकनफ्सी (सद्प्रवृत्ति) का सुबूत।

सही तरीका यह है कि जब भी कोई शख़्स किसी के बारे में बुरी ख़बर दे तो फौरन उससे सुबूत का मुतालबा किया जाए। जो शख़्स सुने वह महज सुनकर उसे दोहराने न लगे बल्कि वह ख़बर देने वाले से कहे कि अगर तुम सच्चे हो तो शरीअत के मुताबिक गवाह ले आओ। अगर वह गवाह ले आए तो उसकी बात काबिले लिहाज हो सकती है। और अगर वह अपनी बात के हक में गवाह न लाए तो वह खुद सबसे बड़ा मुजरिम है। क्योंकि किसी शख़्स को भी यह हक नहीं है कि वह बग़ैर सुबूत किसी के ऊपर ऐब लगाने लगे।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَانَكَ هَٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फज्ल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उसके सबब तुम पर कोई बड़ी आफत आ जाती। जबकि तुम उसे अपनी जबानों से नकल कर रहे थे। और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म न था। और तुम उसे एक मामूली बात समझ रहे थे। हालांकि वह अल्लाह के नजदीक बहुत भारी बात है। और जब तुमने उसे सुना तो यूं क्यों न कहा कि हमें जेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुंह से निकालें। मआजल्लाह, यह बहुत बड़ा बोहतान (आक्षेप) है। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम मोमिन हो। अल्लाह तुमसे साफ-साफ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (14-18)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैसियत हक के दाओ (आह्वानकर्ता) की थी। हक के दाओ का मामला बेहद नाजुक मामला होता है। किरदार की एक ग़लती उसके पूरे मिशन को ढा देने के लिए काफी होती है। ऐसी हालत में जिन लोगों ने यह किया कि एक इस्लामी ख़ातून के बारे में एक बेबुनियाद बात सुनकर उसे इधर-उधर बयान करने लगे, उन्होंने सख़्त ग़ैर जिम्मेदारी का सुबूत दिया। अगर अल्लाह तआला की ख़ुसूसी मदद से उस इल्जाम की बरवक्त तरदीद न हो गई होती तो यह ग़लती इस्लाम को नाकाबिले तलाफी नुक्सान पहुंचाने का सबब बन जाती। इसके नतीजे में पूरा इस्लामी मआशिरा बदगुमानियों का शिकार हो जाता। मुसलमान दो गिरोहों में बटकर आपस में लड़ने लगते। जिस गिरोह के लिए ख़ुदा का मंसूबा यह था कि उसके जरिए से शिर्क का आलमी ग़लबा ख़त्म किया जाए वे आपस की जंग में ख़ुद अपने आपको ख़त्म कर लेता।

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का चर्चा हो उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सजा है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। और अगर तुम पर अल्लाह का फज्ल और उसकी रहमत न होती, और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला रहमत करने वाला है। (19-20)

इस आयत में 'फाहिशा' की इशाअत (प्रसार) से मुराद उसी चीज की इशाअत है जिसे ऊपर आयत नम्बर 11 में इफ्क कहा गया है। यानी किसी के ख़िलाफ बेबुनियाद इल्जाम वजअ करना और उसे लोगों के अंदर फैलाना।

बात कहने के दो तरीके हैं। एक यह कि आदमी सिर्फ वह बात अपने मुंह से निकाले जिसके हक में उसके पास फिलवाकअ कोई मजबूत दलील हो, जो शरई तौर पर साबित की जा सके। दूसरा तरीका यह है कि किसी हकीकी बुनियाद के बग़ैर ख़ुद अपने जेहन से बात गढ़ना और उसे लोगों से बयान करना। पहला तरीका जाइज तरीका है। और दूसरा तरीका सरासर नाजाइज तरीका।

आम तौर पर ऐसा होता है कि अपने मुख़ालिफ (विरोधी) के बारे में कोई बात हो तो आदमी उसकी ज्यादा तहकीक की जरूरत नहीं समझता। वह बग़ैर बहस उसे मान लेता है और दूसरों से उसे बयान करना शुरू कर देता है। यह न सिर्फ ग़ैर जिम्मेदाराना फेअल (कृत्य) है बल्कि वह बहुत बड़ा जुर्म है। वह दुनिया में भी काबिले सजा है और आख़िरत में भी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَىٰ مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

ऐ ईमान वालो, तुम शैतान के कदमों पर न चलो। और जो शख़्स शैतान के कदमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स पाक न हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (21)

शैतान के कदमों पर चलना यह है कि आदमी शैतानी वसवसों की पैरवी करने लगे। एक बेबुनियाद बात पर जब किसी के अंदर बदगुमानी के जज़्बात पैदा होते हैं तो यह एक शैतानी वसवसा होता है। अपने मुख़ालिफ के बारे में जब आदमी के अंदर मंफी (नकारात्मक) ख़्यालात उभरते हैं तो यह भी दरअस्ल शैतान होता है जो उसके दिल में रेंगता है। ऐसे जज़्बात और ख़्यालात जब किसी के अंदर पैदा हों तो उसे चाहिए कि वह अंदर ही अंदर उन्हें कुचल दे, न यह कि वह उनकी पैरवी करने लगे। ऐसे एहसासात की पैरवी करना बराहेरास्त शैतान की पैरवी करना है।

दूसरों के ख़िलाफ तूफ़ान उठाना एक ऐसा अमल है जो तवाज़ोअ (शालीनता) के ख़िलाफ है। आम तौर पर ऐसा होता है कि आदमी अपने बारे में जरूरत से ज्यादा ख़ुशगुमान होता है। और दूसरे के बारे में जरूरत से ज्यादा बदगुमान। ये दोनों ही बातें ऐसी हैं जो ईमान के साथ मुताबिकत नहीं रखतीं। अगर आदमी के अंदर ईमानी तवाज़ोअ पैदा हो जाए तो वह अपने एहतिसाब (जांच) में इतना ज्यादा मशग़ूल होगा कि उसे फ़ुरसत ही न होगी कि वह दूसरे के एहतिसाब का झूठा झंडा उठाए।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾

और तुम में से जो लोग फ़ज़्ल वाले और वुस्अत (सामर्थ्य) वाले हैं वे इस बात की कसम न खाएं कि वे अपने रिश्तेदारों और मिस्कीनों और ख़ुदा की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वे माफ कर दें और दरगुजर करें।

क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ करे। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (22)

हजरत आइशा के ख़िलाफ तूफ़ान उठाने वालों में एक साहब मिसतह बिन उसासा थे। वह एक मुफ़्लिस (ग़रीब) मुहाजिर थे और हजरत अबूबक्र के दूर के रिश्तेदार थे। हजरत अबूबक्र इआनत के तौर पर उन्हें कुछ रकम दिया करते थे। हजरत आइशा अबूबक्र की साहबजादी थीं। कुदरती तौर पर हजरत अबूबक्र को मिसतह बिन उसासा के अमल से तकलीफ हुई। आपने कसम खा ली कि वह आइंदा मिसतह बिन उसासा की कोई मदद न करेंगे।

इस्लाम में मोहताजों की मदद उनकी मोहताजी की बुनियाद पर होती है न कि किसी और बुनियाद पर। चुनांचे कुरआन में यह हुक्म उतरा कि तुम में से जो लोग साहिबे माल हैं वे जाती शिकायत की बिना पर बेमाल लोगों की इमदाद बंद न करें। क्या तुम नहीं चाहते कि ख़ुदा तुम्हें माफ कर दे। अगर तुम अपने लिए ख़ुदा से माफी के उम्मीदवार हो तो तुम्हें भी दूसरों के बारे में माफी का तरीका इख़्तियार करना चाहिए। यह आयत सुनकर हजरत अबूबक्र ने कहा : 'हां ख़ुदा की कसम हम चाहते हैं ऐ हमारे रब कि तू हमें माफ कर दे।' और दुबारा मिसतह की इमदाद जारी कर दी।

मोमिन की नजर में सबसे ज्यादा अहमियत ख़ुदा के हुक्म की होती है। ख़ुदा का हुक्म सामने आते ही वह फौरन झुक जाता है, चाहे ख़ुदा का हुक्म उसकी ख़्वाहिश के सरासर ख़िलाफ क्यों न हो।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

बेशक जो लोग पाक दामन, बेख़बर, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की गई। और उनके लिए बड़ा अजाब है। उस दिन जबकि उनकी जबानें उनके ख़िलाफ गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। उस दिन अल्लाह उन्हें वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक है, खोलने वाला है। (23-25)

इंसान अपनी जबान से दूसरों के ख़िलाफ बुरे अल्फ़ाज निकालता है। मगर वह नहीं जानता कि उसकी जबान से निकले हुए अल्फ़ाज दूसरों तक पहुंचने से पहले ख़ुदा तक पहुंच रहे हैं। आदमी अपने हाथ और अपने पांव को दूसरों पर जुल्म करने के लिए इस्तेमाल करता

है। मगर वह इससे बेख़बर होता है कि कियामत जब आएगी तो उसके हाथ और पांव उसके हाथ और पांव न रहेंगे बल्कि वह ख़ुदा के गवाह बन जाएंगे।

यही बेख़बरी तमाम बुराइयों की अस्ल जड़ है। अगर आदमी को इस हकीकते हाल का वाकई एहसास हो कि वह ऐसी दुनिया में है जहां वह हर आन ख़ुदा की निगाह में है, जहां उसका हर अमल ख़ुदाई निजाम के तहत रिकॉर्ड हो रहा है तो उसकी जिंदगी बिल्कुल बदल जाए। वह हर लफ्ज तौल कर अपनी जबान से निकाले। वह अपने हाथ और पांव की ताकत को इंतिहाई एहतियात के साथ इस्तेमाल करे।

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

ख़बीसात (गंदी बातें) ख़बीसों के लिए हैं और ख़बीस (गंदे लोग) ख़बीसात के लिए हैं। और तय्यिबात (अच्छी बातें) तय्यबों के लिए हैं और तय्यब (अच्छे लोग) तय्यिबात के लिए। वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं। उनके लिए बख़्शिश है और इज्जत की रोजी है। (26)

ख़बीसात के मुराद ख़बीस कलिमात (बुरी बातें) हैं और इसी तरह तय्यिबात से मुराद तय्यिब कलिमात (अच्छी बातें)। मतलब यह है कि महज किसी के बुरा कहने से कोई शख़्स बुरा नहीं हो जाता। आदमी ख़ुद जैसा हो वैसी ही बात उसके ऊपर चस्पां होती है। बुरे लोग अगर अच्छे लोगों के बारे मे बुरी बात कहें तो ऐसी बात आख़िरकार ख़ुद कहने वाले पर पड़ती है और अच्छे लोग उससे पूरी तरह बरीउज्जिम्मा हो जाते हैं।

जो लोग अपनी जात में अच्छे हों वे दुनिया में भी झूठे इल्जामात से बरी होकर रहते हैं। और आख़िरत में तो उनका बरी होना बिल्कुल यकीनी है। आख़िरत में उन्हें मजीद इजाफे के साथ ख़ुदा के इनामात मिलेंगे। क्योंकि उनके ख़िलाफ नाहक बातें दरअस्ल इस बात की कीमत थीं कि उन्होंने अपने आपको नाहक से काटा और अपने आपको पूरी तरह हक के साथ वाबस्ता किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

ऐ ईमान वालो तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाजत हासिल न कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। ताकि तुम याद रखो। फिर अगर वहां किसी को न पाओ तो उनमें दाख़िल न हो जब तक तुम्हें इजाजत न दे दी जाए। और अगर तुमसे कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाख़िल हो जिनमें कोई न रहता हो। उनमें तुम्हारे फायदे की कोई चीज हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। (27-29)

इज्तिमाई (सामूहिक) जिंदगी में अक्सर मुलाकात की जरूरत पेश आती है। अब एक तरीका यह है कि आदमी बिला इत्तला किसी के यहां पहुंचे और अचानक उसके मकान के अंदर दाख़िल हो जाए। यह तरीका दोनों ही के लिए तकलीफ का बाइस है। इसलिए पेशगी इजाजत को मुलाकात के आदाब में शामिल किया गया।

अगर मुमकिन हो तो बेहतर तरीका यह है कि अपने घर से रवाना होने से पहले साहिबे मुलाकात से राब्ता कायम किया जाए और उससे पेशगी तौर पर मुलाकात का वक्त मुकर्रर कर लिया जाए। और फिर जब आदमी उसके मकान पर पहुंचे तो अंदर दाख़िल होने से पहले इसकी बाकायदा इजाजत ले। तमद्दुनी (रीतिगत) हालात के लिहाज से इस इजाजत के मुख़्तलिफ तरीके हो सकते हैं। ताहम हर तरीके में इस्लामी शाइस्तगी (शालीनता) की शर्त मौजूद रहना जरूरी है।

इस्लाम इज्तिमाई जिंदगी के तमाम मामलात को आलाजर्फी (उच्च-आचरण) की बुनियाद पर कायम करना चाहता है। यही आलाजर्फी मुलाकात के मामले में भी मत्लूब है। अगर आप किसी से मिलने के लिए उसके घर जाएं, और साहिबेख़ाना किसी वजह से उस वक्त मुलाकात से मअजरत करे तो आपको ख़ुशदिली के साथ वापस आ जाना चाहिए। ताहम वह इज्तिमाई मकामात इस हुक्म के मुस्तसना (अपवाद) हैं जहां उसूलन लोगों के लिए दाख़िले की आम इजाजत होती है।

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾

मोमिन मर्दों से कहो वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें। यह उनके लिए पाकीजा है। बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो वे करते हैं। (30)

औरत और मर्द घर में और मआशरे में किस तरह रहें, इस सिलसिले में यहां दो उसूली हिदायतें दी गई हैं। एक है सत्र को ढांकना। और दूसरे निगाह को नीची रखना।

मर्द के जिस्म का वह हिस्सा जो उसे हर हाल में छुपाए रखना है वह नाफ से लेकर घुटने तक है। यह सत्र है और उसे अपनी बीवी के सिवा किसी और के सामने खोलना जाइज नहीं। इल्ला यह कि इस नौइयत की कोई जरूरत पेश आ जाए जबकि हराम भी हलाल हो जाता है। मसलन मेडिकल जांच के लिए।

दूसरी जरूरी चीज यह है कि जब मर्द और औरत का सामना हो तो मर्दों को चाहिए कि वे अपनी निगाहें नीची रखें। मर्द और औरत की मुलाकात इस तरह बेतकल्लुफ अंदाज में नहीं होनी चाहिए जिस तरह मर्द और मर्द एक दूसरे से मिलते हैं। मर्द और औरत की मुलाकात में मर्द की निगाहें नीची रहनी चाहिएं। अगर इत्तफाकन मर्द की निगाह किसी अजनबी औरत पर पड़ जाए तो वह फौरन अपनी नजर उससे हटा ले। वह जानबूझकर दूसरी बार उसकी तरफ न देखे।

निगाहें नीची रखने और शर्मगाहों की हिफाज़त करने का जो हुक्म मर्दों के लिए है वही हुक्म औरतों के लिए भी है, जैसा कि अगली आयत (31) से वाजेह है।

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ
أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ
أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ
عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوا
إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

और मोमिन औरतों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें। और अपनी जीनत (बनाव-सिंगार) को जाहिर न करें। मगर जो उसमें से जाहिर हो जाए और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें। और अपनी जीनत को जाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहिनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर या अपने ममलूक (गुलाम)

पर या जेरदस्त (अधीन) मर्दों पर जो कुछ ग़रज नहीं रखते। या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाकिफ हों। वे अपने पांव जोर से न मारें कि उनकी छुपी जीनत मालूम हो जाए। और ऐ ईमान वालो, तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ तौबा करो ताकि तुम फलाह पाओ। (31)

ख़्वातीन के सिलसिले में इस्लाम के अहकाम दो पहलुओं से तअल्लुक रखते हैं। एक वह जिसका उन्वान (विषय) सत्र है और दूसरा वह जिसका उन्वान हिजाब है। सत्र का तअल्लुक जिस्म के पर्दे से है। यानी औरत चाहे घर के अंदर हो या घर के बाहर, उसे अपने बदन का कौन सा हिस्सा, किस के सामने और किन हालात में खुला रखना जाइज है और कब खुला रखना जाइज नहीं।

हिजाब का तअल्लुक बाहर के पर्दे से है। यानी इस मसले से कि शरीअत ने औरत को किन हालात में घर से बाहर निकलने और सफर करने की इजाजत दी है। इन आयात में बुनियादी तौर पर सत्र का मसला बयान हुआ है। हिजाब का मसला आगे सूरह अहजाब में है।

'ऐ मोमिनों तुम सब अल्लाह की तरफ रुजूअ करो' ये अल्फाज बताते हैं कि अहकामे शरीअत की तामील के सिलसिले में सबसे अहम चीज यह है कि दिलों के अंदर उसकी आमादगी हो। सहाबा और सहाबियात इस मामले में आख़िरी मेयारी दर्जे पर थे। हजरत आइशा कहती हैं कि ख़ुदा की कसम मैंने ख़ुदा की किताब की तस्दीक और उसके अहकाम पर ईमान के मामले में अंसार की औरतों से बेहतर किसी को नहीं पाया। जब सूरह नूर की आयत 'वल यजरिब-न बिख़ुमुरिहिन-न अला जुयूबिहिन-न०' उतरी तो उनके मर्द अपने घरों की तरफ लौटे। उन्होंने अपनी औरतों और लड़कियों और बहिनों को वह हुक्म सुनाया जो ख़ुदा ने उनके लिए उतारा था। पस अंसार की औरतों में से हर औरत फौरन उठ खड़ी हुई। किसी ने अपनी कमरपट्टी खोल कर और किसी ने अपनी चादर लेकर उसका दुपट्टा बनाया और उसे ओढ़ लिया। अगले दिन सुबह की नमाज उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे पढ़ी तो दुपट्टे की वजह से ऐसा मालूम होता था गोया उनके सिरों पर कौवे हों। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ
يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ
لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا
مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي

آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

और तुम में जो बेनिकाह हों उनका निकाह कर दो। और तुम्हारे गुलामों और दासियों में से जो निकाह के लायक हों उनका भी। अगर वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह कुशअत (सामर्थ्य) वाला, जानने वाला है। और जो निकाह का मौका न पाएं उन्हें चाहिए कि वे ज़ब्त करें यहां तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें ग़नी कर दे। और तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) में से जो मुकातब (लिखित) होने के तालिब हों तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उनमें सलाहियत (क्षमता) पाओ। और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और अपने दासियों को पेशे पर मजबूर न करो जबकि वे पाक दामन रहना चाहती हों, महज इसलिए कि दुनियावी जिंदगी का कुछ फायदा तुम्हें हासिल हो जाए। और जो शख़्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह इस जब्र के बाद बख़्शने वाला महरबान है। और बेशक हमने तुम्हारी तरफ रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और डरने वालों के लिए नसीहत भी। (32-34)

इस्लाम मर्द और औरत के लिए शादी-शुदा जिंदगी पसंद करता है। किसी भी उज़्र की वजह से निकाह से रुकना इस्लाम में दुरुस्त नहीं। कुछ लोग किसी जाती सबब से ग़ैर शादी शुदा रह जाएं तो उस वक्त इस्लाम पूरे मुआशिरे में यह रूह देखना चाहता है कि तमाम लोग उसे एक मुश्तरक (साझा) मसला समझें और उस वक्त तक मुतमइन न हों जब तक वे इस मसले को शरई तरीके पर हल न कर लें।

किताब या मुकातिबत के लफ्ज़ी मअना हैं लिखना। इससे मुराद वह तहरीर है जिसमें कोई दासी या गुलाम अपने आका से यह अहद करे कि मैं इतनी मुद्दत में इतना माल कमाकर तुझे दे दूंगा। और इसके बाद से मैं आजाद हूंगा।

इस्लाम जिस जमाने में आया उस वक्त अरब में और सारी दुनिया में ग़ुलाम बनाने का रिवाज था। इस्लाम ने निहायत मुनज्जम तौर पर उसे ख़त्म करना शुरू किया। उसी में से एक तरीका वह था जिसे मुकातिबत कहा जाता है। ताहम इस्लाम ने 'गर्दनें छुड़ाने' की यह मुहिम अपने आम उसूल के मुताबिक तदरीज (क्रम) के तहत चलाई। मुख़्तलिफ तरीकों से ग़ुलामों और दासियों को रिहा किया जाता रहा। यहां तक कि ख़िलाफत राशिदा के आख़िरी दौर तक इस इदारे का तकरीबन ख़ात्मा हो गया।

कदीम जमाने में कुछ लोग अपनी दासियों से कस्ब (कमाई) कराते थे। मदीना के

मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबई के पास कई दासियां थीं जिनसे बदकारी कराकर वह रकम हासिल करता था। उनमें से एक दासी ने इस्लाम कुबूल कर लिया और कस्ब से बाज आना चाहा तो अब्दुल्लाह बिन उबई ने उस पर जब्र करना शुरू किया। बिलआख़िर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से यह दासी अब्दुल्लाह बिन उबई के कब्जे से रिहा कराई गई।

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

अल्लाह आसमानों और जमीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ एक शीशे के अंदर है। शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा। वह जैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के तेल से रोशन किया जाता है जो न पूर्वी है और न पश्चिमी। उसका तेल ऐसा है गोया आग के छुए बग़ैर ही ख़ुद-ब-ख़ुद जल उठेगा। अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसे चाहता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (35)

यह एक मुरक्कब तमसील (संयुक्त उपमा) है। इस आयत में रोशनी से मुराद अल्लाह तआला की हिदायत है। ताक से मुराद इंसान का दिल है और चिराग़ से मुराद ईमान की इस्तेदाद (समर्थता) है। शीशा और तेल इसी इस्तेदाद की मजीद (अतिरिक्त) ख़ुसूसियत को बता रहे हैं। शीशा इस बात की ताबीर है कि यह इस्तेदाद कल्बे इंसानी में इस तरह रखी गई है कि वह ख़ारजी असरात से पूरी तरह महफ़ूज़ रहे। और शफ्फाफ तेल इस बात की ताबीर है कि उसकी यह इस्तेदाद इतनी कवी (सशक्त) है कि वह बेताब हो रही है कि कब उसके सामने हक आए और वह उसे बिला ताख़ीर कुबूल कर ले।

यह एक हकीकत है कि इस कायनात में रोशनी का वाहिद माख़ज (स्रोत) सिर्फ एक अल्लाह की जात है। उसी से हर एक को रोशनी और हिदायत मिलती है। मजीद यह कि अल्लाह तआला ने इंसान को इस तरह पैदा किया है कि उसके अंदर फितरी तौर पर हक की तलब मौजूद है। यह तलब बेहद ताकतवर है। और अगर उसे जाया न किया जाए तो वह हर आन अपना जवाब पाने के लिए बेताब रहती है। बएतबार फितरत इंसान की इस्तेदादे

कुबूल इतनी बढ़ी हुई है गोया वह कोई पेट्रोल है कि आग अगर उसके करीब भी लाई जाए तो वह फौरन भड़क उठे।

मोमिन वह हकीकी इंसान है जिसने अपनी फित्री इस्तेदाद (समर्थता) को जाया नहीं किया। चुनांचे हक की दावत सामने आते ही उसकी इस्तेदाद जाग उठी। नूरे फितरत के साथ नूरे हिदायत ने मिलकर उसके पूरे वजूद को रोशन कर दिया।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿٣٦﴾ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

ऐसे घरों में जिनके बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वे बुलन्द किए जाएं और उनमें उसके नाम का जिक्र किया जाए उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते हैं वे लोग जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फरोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफिल नहीं करती और न नमाज की इकामत से और जकात की अदायगी से। वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आंखें उलट जाएंगी। कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला दे और उन्हें मजीद (अतिरिक्त) अपने फज़्ल से नवाजे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (36-38)

इंसानी जिस्म में जो मकाम दिल का है वही मकाम इंसानी बस्ती में मस्जिद का है। इंसान का दिल ईमान से आबाद होता है और मस्जिदें अल्लाह की इबादत से आबाद होती हैं। मस्जिदें ख़ुदा का घर हैं। वे इसीलिए बनाई जाती हैं कि वहां अल्लाह की याद की जाए। वहां आने वाले वही लोग होते हैं जो इसलिए आते हैं कि वहां के रूहानी माहौल में अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो सकें। वे इसलिए आते हैं कि अपने आपको यकसू (एकाग्र) करके कुछ वक्त अल्लाह की इबादत में गुजारें।

जिस इंसान को यह तौफीक मिले कि वह अपनी फितरत की आवाज को पहचान कर ख़ुदा पर ईमान लाए। और फिर वह अपने आपको मस्जिद वाले आमाल में मशग़ूल कर ले। उसके दिल में अल्लाह अपनी हैबत का एहसास डाल देता है जो मौजूदा दुनिया में किसी इंसान के लिए सबसे बड़ी नेमत है। यही वे लोग हैं जो कुर्बानी की सतह पर ख़ुदापरस्ती को इख़्तियार करते हैं। और गैर ख़ुदा से कटकर ख़ुदा वाले बनते हैं।

यही वह इंसान है जो अल्लाह के यहां बेहतरीन इनाम का मुस्तहिक है। अल्लाह उसे बेहिसाब फज़्ल अता फरमाएगा।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾

और जिन लोगों ने इंकार किया उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब (मरीचिका)। प्यासा उसे पानी ख़्याल करता है यहां तक कि जब वह उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया। और उसने वहां अल्लाह को मौजूद पाया, पस उसने उसका हिसाब चुका दिया। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है। या जैसे एक गहरे समुद्र में अंधेरा हो, मौज के ऊपर मौज उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों, ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख पाए। और जिसे अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (39-40)

इंसानों की एक किस्म वह है जिसका जिक्र आयत 35 में था। यह वह इंसान है जो अपनी फित्री इस्तेदाद (समर्थता) को जिंदा रखता है और इसके नतीजे में ईमान की दौलत से सरफराज होता है। अब आयत 39-40 में इंसानों की मजीद दो किस्मों का जिक्र है। यह वे लोग हैं जिनका तेल हक की दावत की आग से भड़कने के लिए तैयार नहीं होता।

एक किस्म वह है जो किसी ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन पर कायम रहती है। वह झूठी तमन्नाओं का एक महल बनाकर उसमें ख़ुश रहती है। ये लोग इसी तरह ख़ुशगुमानियों में पड़े रहते हैं। यहां तक कि जब मौत आती है तो उनकी ख़ुशगुमानियों का तिलिस्म टूट जाता है। और फिर अचानक उन्हें मालूम होता है कि जिस चीज को वे मंजिल समझे हुए थे वह हलाकत के गढ़े के सिवा और कुछ न थी।

दूसरी किस्म वह है जो खुल्लम खुल्ला मुंकिरों और बाग़ियों की है। ये लोग ख़ुदा की हिदायत को छोड़कर बतौर ख़ुद हिदायत वजअ करने की कोशिश करते हैं। मगर वे सरासर नाकाम रहते हैं। क्योंकि इस दुनिया में हिदायत देने वाला ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं। ख़ुदा को छोड़ने के बाद आदमी के हिस्से में इसके सिवा कुछ नहीं रहता कि वह अबदी तौर पर अंधेरे में भटकता रहे।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَافَّاتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं और चिड़ियां भी पर को फैलाए हुए। हर एक अपनी नमाज को और अपनी तस्बीह को जानता है। और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। और अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों और जमीन में। और अल्लाह ही की तरफ है सबकी वापसी। (41-42)

इंसान से ख़ुदा का जो मुतालबा है उसे लफ्ज बदल कर कहें तो वह यह है कि इंसान वैसा ही रहे जैसा कि अज़रूए हकीकत (यथार्थतः) उसे रहना चाहिए। यही दीने हक है। इस एतबार से सारी कायनात दीने हक पर है। क्योंकि इस कायनात की हर चीज ऐन उसी तरह अमल करती है जैसा कि फिलवाकअ उसे अमल करना चाहिए। इंसान के सिवा इस कायनात में कोई भी चीज नहीं जिसके अमल में और हकीकते वाक्या में कोई टकराव हो।

इन्हीं बेशुमार चीजों में से एक मिसाल चिड़िया की है। चिड़िया जब अपना पर फैलाए हुए फजा में उड़ती है तो वह उसी हकीकत का एक कामिल नमूना होती है। ऐसा मालूम होता है गोया वह अबदी हकीकत की दुनिया में कामिल मुवाफिकत करके तैर रही हो। गोया उसने अपने इंफिरादी वुजूद को हकाइक (यथार्थ) के वसीअतर समुद्र में गुम कर दिया हो।

हर एक की एक तस्बीहे ख़ुदावंदी है और वही उससे मत्लूब (अपेक्षित) है। इसी तरह इंसान की एक तस्बीह ख़ुदावंदी है और वह उससे मत्लूब है। इंसान अगर इस मामले में ग़फलत या सरकशी का रवैया इख़्तियार करे तो उस वक्त उसे इसकी सख़्त कीमत अदा करनी होगी जब ख़ुदा के साथ उसका सामना पेश आएगा।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ ۖ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है। फिर उन्हें आपस में मिला देता है। फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके

बीच से निकलती है और वह आसमान सेउसके अंदर के पहाड़ों सेओले बरसाता है। फिर उसे जिस पर चाहता है गिराता है। और जिससे चाहता है उन्हें हटा देता है। उसकी बिजली की चमक से मालूम होता है कि निगाहों को उचक ले जाएगी। अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। बेशक इसमें सबक है आंख वालों के लिए। (43-44)

यहां दुनिया के चन्द वाकेयात को बतौर तमसील जिक्र करके कहा गया है कि इसमें अहले बसीरत (प्रबुद्ध) के लिए इबरत है। इबरत के अस्ल मअना है उबूर करना, तै करना। इससे मुराद वह जेहनी सफर है जबकि आदमी एक चीज से दूसरी चीज तक पहुंचता है। जब आदमी एक वाकये को हकीकत से लिंक (Link) करता है। जब वह एक जाहिरी चीज के अंदर उसके मअनवी पहलू को देख लेता है तो इसी का नाम इबरत है।

बारिश को देखिए जमीन से लेकर सूरज तक एक अजीम हमआहंग अमल (संयुक्त प्रक्रिया) के नतीजे में वह चीज वजूद में आती है जिसे बारिश कहते हैं। फिर ये बादल कभी जिंदगीबख़्श बारिश लाते हैं और कभी इन्हीं बादलों से हलाकतख़ेज ओले बरसने लगते हैं। यही मामला बिजली की चमक और रात और दिन की गर्दिश का है। इन जाहिरी वाकेयात में बेशुमार मअनवी (अर्थपूर्ण) हकाइक छुपे हुए हैं। जो लोग उन्हें देखकर जाहिर को मअना से जोड़ सकें वही ख़ुदा की नजर में बसीरत (सूझबूझ) वाले हैं।

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَاءٍ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है। और उनमें से कोई दो पांवों पर चलता है। और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। हमने खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है। (45-46)

दुनिया की चीजों में बजाहिर तअद्दुद (भिन्नता) है। इससे मुश्रिक इंसान ने यह कयास (अनुमान) किया कि चीजों के ख़ालिक भी बहुत से हैं। मगर जब चीजों को इस पहलू से देखा जाए कि जाहिरी भिन्नता और विविधता के अंदर एक यकसानियत (समरूपता) छुपी हुई है तो मामला बिल्कुल बदल जाता हैं

हैवानात की लाखों किस्में हैं। मगर गहरा मुतालआ बताता है कि इन सबकी अस्ल एक है। तमाम हैवानात का हयातयाती (जैविक) निजाम बिल्कुल यकसां (समान) है। इस मुतालअे के बाद चीजों की भिन्नता और विविधता ख़ालिक की कुदरत का करिश्मा बन जाता है। एक एतबार से जो चीज तअद्दुदे तख़्लीक (बहु-सृजन) का इज्हार मालूम हो रही थी वह दूसरे एतबार से तौहीदे तख़्लीक (एकीय सृजन) का सुबूत बन जाती है।

मौजूदा दुनिया एक ऐसी दुनिया है जहां फरेब के दर्मियान हकीकत को पाना पड़ता है। यहां अपने आपको धोखा देने वाली बातों से ऊपर उठाना पड़ता है। ताकि आदमी हक का मुशाहिदा (सत्य का अवलोकन) कर सके। इसी ख़ास काम के लिए अल्लाह तआला ने आदमी को अक्ल की सलाहियत दी है। जो शख़्स इस ख़ुदाई टॉर्च को सही तौर पर इस्तेमाल करेगा वह रास्ता पा लेगा। और जो शख़्स इसे इस्तेमाल नहीं करेगा उसके लिए इस दुनिया में भटकने के सिवा कोई और अंजाम मुकद्दर नहीं।

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٤٩﴾ أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत (आज्ञापालन) की। मगर उनमें से एक गिरोह इसके बाद फिर जाता है। और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ बुलाया जाता है ताकि ख़ुदा का रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो उनमें से एक गिरोह रूगर्दानी (अवहेलना) करता है। और अगर हक उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ फरमांबरदार बनकर आ जाते हैं। क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे शक में पड़े हुए हैं या उन्हें यह अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ जुल्म करेंगे। बल्कि यही लोग जालिम हैं। (47-50)

कदीम मदीना में एक तबका वह था जिसने बजाहिर इस्लाम कुबूल कर लिया था मगर वह इस्लाम के मामले में मुख़्लिस (निष्ठावान) न था। इस गिरोह को मुनाफ़िक (पाखंडी) कहा जाता है। ये लोग जबान से तो ख़ुदा व रसूल की इताअत के अल्फाज बोलते थे। मगर जब तजर्बा पेश आता तो वे ख़ुद अपने अमल से अपने इस दावे की तरदीद कर देते।

उस वक़्त सूरतेहाल यह थी कि मदीना में बाकायदा नौइयत की इस्लामी अदालत अभी

कायम नहीं हुई थी। वहां एक तरफ यहूदी सरदार थे जो सैंकड़ों साल से रवाजी तौर पर लोगों के फैसले करते चले आ रहे थे। दूसरी तरफ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हिजरत करके वहां पहुंच चुके थे। मुनाफ़िकीन का हाल यह था कि अगर किसी मुसलमान से उनका विवाद हो जाए और वह कहे कि चलो अल्लाह के रसूल के यहां इसका फैसला करा लो तो मज़्कूरा मुनाफ़िक उसके लिए सिर्फ इस सूरत में राजी होता था जबकि उसे यकीन होता कि मुकदमे की नौइयत ऐसी है कि फैसला उसके अपने हक में हो जाएगा। अगर मामला इसके बरअक्स होता तो वह कहता कि फलां यहूदी सरदार के यहां चलो और इसका फैसला करा लो। यह बजाहिर होशियारी है मगर यह ख़ुद अपने ऊपर जुल्म करना है। इस तरह जीतने वाले आख़िरत में इस हाल में पहुंचेंगे कि वे अपना मुकदमा बिल्कुल हार चुके होंगे।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٢﴾

ईमान वालों का कौल (कथन) तो यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो वे कहें कि हमने सुना और हमने माना। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुख़ालिफत (विरोध) से बचे तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे। (51-52)

आम आदमी अपने मफ़ाद के ताबेअ (अधीन) होता है। मोमिन वह है जो अपने आपको अल्लाह और रसूल का ताबेअ बना ले। जब ख़ुदा और रसूल का फैसला सामने आ जाए तो वह हर हाल में वही करे जो ख़ुदा व रसूल का फैसला हो। चाहे वह उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक हो या उसकी ख़्वाहिश के ख़िलाफ। चाहे उसमें उसका मफ़ाद (हित) महफ़ूज़ हो या उसमें उसका मफ़ाद मजरूह हो रहा हो।

आख़िरत की कामयाबी सिर्फ उस शख़्स के लिए है जिसका ईमान उसे ख़ुदा व रसूल के हुक्म के आगे झुका दे। ख़ुदा का एहसास उसके दिल में इस तरह उतर जाए कि वह उसी से सबसे ज्यादा डरने लगे। ख़ुदा की नाराजगी से अपने आपको बचाना उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा मसला बन जाए।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं, बड़ी सख़्त कसमें, कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वे जरूर निकलेंगे। कहो कि कसमें न खाओ दस्तूर के मुताबिक इताअत (आज्ञापालन) चाहिए। बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो। कहो कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे तो रसूल पर वह बोझ है जो उस पर डाला गया है और तुम पर वह बोझ है जो तुम पर डाला गया है। और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे। और रसूल के जिम्मे सिर्फ साफ-साफ पहुंचा देना है। (53-54)

जिस शख़्स के दिल में गहराई के साथ ख़ुदा उतरा हुआ हो उसकी निगाहें झुक जाती हैं। उसकी जबान बंद हो जाती है। उसका अहसासे जिम्मेदारी उससे बड़ी-बड़ी कुर्बानियां करा देता है। मगर जबानी दावों के वक्त वह देखने वाले लोगों को गूंगा नजर आता है।

इसके बरअक्स जो शख़्स ख़ुदा से तअल्लुक के मामले में कम हो वह अल्फाज के मामले में ज्यादा हो जाता है। वह अपने अमल की कमी को अल्फाज की ज्यादती से पूरा करता है। उसके पास चूंकि किरदार (सदाचरण) की गवाही नहीं होती इसलिए वह अपने को मोतबर साबित करने के लिए बड़े-बड़े अल्फाज का मुजाहिरा करता है।

जो लोग अल्फाज का कमाल दिखाकर दूसरों को मुतअस्सिर करना चाहते हैं वे समझते हैं कि सारा मामला बस इंसानों का मामला है। मगर जिस शख़्स को यकीन हो कि अस्ल मामला वह है जो ख़ुदा के यहां पेश आने वाला है। उसका सारा अंदाज बिल्कुल बदल जाएगा।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

अल्लाह ने वादा फरमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और नेक अमल करें कि वह उन्हें जमीन में इक्तेदार (सत्ता) देगा जैसा कि उसने पहले लोगों को इक्तेदार दिया था। और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसे उनके लिए पसंद किया है। और उनकी ख़ौफ की हालत के बाद उसे अम्न से बदल देगा। वे सिर्फ मेरी इबादत

करेंगे और किसी चीज को मेरा शरीक न बनाएंगे। और जो इसके बाद इंकार करे तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। (55)

यहां जिस ग़लबे (वर्चस्व) का वादा किया गया है उसका तअल्लुक अव्वलन रसूल और असहाबे रसूल से है। मगर तबअन (सिद्धांततः) उसका तअल्लुक पूरी उम्मत से है। इससे मालूम होता है कि ग़लबा और इक्तेदार अहले ईमान के अमल का निशाना नहीं। वह एक ख़ुदाई इनाम है जो ईमान और अमल के नतीजे में मोमिनीन की जमाअत को दिया जाता है।

इस ग़लबे का मक्सद यह है कि अहले ईमान को जमीन में इस्तहकाम (सुदृढ़ता) अता किया जाए। उन्हें यह मौका दिया जाए कि वे दुश्मनाने हक के अंदेशों से मामून (सुरक्षित) होकर रह सकें। वे आजादाना तौर पर ख़ुदा की इबादत करें। और सिर्फ एक ख़ुदा के बंदे बनकर जिंदगी गुजारें। अहले ईमान के ग़लबे की यह हालत उस वक्त तक बाकी रहेगी जब तक वे ख़ुदा के शुक्र करने वाले बने रहें। और तकवा की कैफियत को न खोएं।

ख़लीफा के मअना अरबी जबान में जानशीन या बाद को आने वाले के हैं। इस्तख़लाफ या ख़लीफा बनाना यह है कि एक कौम के बाद दूसरी कौम को उसकी जगह पर ग़लबा और इस्तहकाम अता किया जाए। ग़लबा दरअस्ल ख़ुदाई इम्तेहान का एक पर्चा है। ख़ुदा एक के बाद एक हर कौम को जमीन पर ग़लबा देता है। और इस तरह उसे जांचता है। अहले ईमान की जमाअत के लिए यह ग़लबा इम्तेहान के साथ एक इनाम भी है।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾

और नमाज कायम करो और जकात अदा करो और रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो लोग इंकार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करो कि वे जमीन में अल्लाह को आजिज कर देंगे। और उनका ठिकाना आग है और वह निहायत बुरा ठिकाना है। (56-57)

ख़ुदा की रहमत यह है कि दुनिया में ग़लबा और आख़िरत में जन्नत अता की जाए। जो लोग ख़ुदा की इस रहमत का मुस्तहिक बनना चाहें उन्हें अपने अंदर तीन सिफतें पैदा करनी चाहिएं।

एक इकामते सलात। इकामते सलात सूरतन पंजवक्ता नमाज का निजाम कायम करने का नाम है। और मअनन इसका मतलब यह है कि लोग ख़ुशूअ (विनय) और तवाजेअ (विनम्रता) में जीने वाले बनें न कि किब्र (अहं) और सरकशी में जीने वाले।

इसी तरह जकात की अमली सूरत यह है कि अपने अमवाल में मुकर्रह शरह के मुताबिक सालाना एक रकम निकाली जाए और उसे बैतुलमाल के हवाले किया जाए। और

जकात अपनी मअनवी हकीकत के एतबार से यह है कि लोग ख़ुदग़रज (स्वार्थी) बनकर न रहें बल्कि वे दूसरों के ख़ैरख़्वाह (हितैषी) बनकर रहें। यहां तक कि उनकी ख़ैरख़्वाही इतनी बढ़े कि अपनी जात और अपने असासे (धन-सम्पत्ति) में वे दूसरों का हक समझने लगें।

रसूल की इताअत रसूल के जमाने में जाते रसूल की इताअत थी। और बाद के जमाने में सुन्नते रसूल की इताअत। इसका मतलब यह है कि लोगों के लिए जिंदगी का नमूना अल्लाह का रसूल हो। लोग अपनी जिंदगी के तमाम मामलात में सिर्फ ख़ुदा के रसूल को अपना रहनुमा समझें। रसूल की राय सामने आने के बाद लोग अपनी जाती राय से दस्तबरदार हो जाएं। रसूल आगे हो और तमाम लोग उसके पीछे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لِيَسْتَـْٔذِنكُمُ ٱلَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَٰنُكُمْ وَٱلَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا۟ ٱلْحُلُمَ
مِنكُمْ ثَلَٰثَ مَرَّٰتٍ ۚ مِّن قَبْلِ صَلَوٰةِ ٱلْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُم مِّنَ
ٱلظَّهِيرَةِ وَمِنۢ بَعْدِ صَلَوٰةِ ٱلْعِشَآءِ ۚ ثَلَٰثُ عَوْرَٰتٍ لَّكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَ
لَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّٰفُونَ عَلَيْكُم بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾ وَإِذَا بَلَغَ ٱلْأَطْفَٰلُ مِنكُمُ ٱلْحُلُمَ
فَلْيَسْتَـْٔذِنُوا۟ كَمَا ٱسْتَـْٔذَنَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ ءَايَٰتِهِۦ ۗ
وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَٱلْقَوَٰعِدُ مِنَ ٱلنِّسَآءِ ٱلَّٰتِى لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ
جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَٰتٍۭ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ
وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) को और तुम में जो बुलूग़ (युवावस्था) को नहीं पहुंचे उन्हें तीन वक्तों में इजाजत लेना चाहिए। फज्र की नमाज से पहले, और दोपहर को जब तुम अपने कपड़े उतारते हो, और इशा की नमाज के बाद। ये तीन वक्त तुम्हारे लिए पर्दे के हैं। इनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर। तुम एक दूसरे के पास बकसरत (अधिकता से) आते जाते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वजाहत करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और जब तुम्हारे बच्चे अक्ल की हद को पहुंच जाएं तो वे भी इसी तरह इजाजत लें जिस तरह उनके अगले इजाजत लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वजाहत करता है और अल्लाह अलीम (जानने वाला) व हकीम (तत्वदर्शी) है। और बड़ी बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, उन पर कोई गुनाह नहीं अगर वे अपनी चादरें उतार कर रख दें, बशर्ते कि वे जीनत

(बनाव-सिंगार) की नुमाइश करने वाली न हों। और अगर वे भी एहतियात करें तो उनके लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (58-60)

ऊपर मआशिरती (समाजी) अहकाम बयान हुए थे। ये आयतें ग़ालिबन बाद को उनके पूरक या तौजीह (विवेचना) के तौर पर नाजिल हुईं। मसलन ऊपर औरतों के लिए घर के अंदर पर्दे की जो हिदायत दी गई हैं उनमें यह है कि औरतें अपनी ओढ़नी के आंचल अपने सीने पर डाल लिया करें (आयत 31) यहां (आयत 60) में इस आम हुक्म से उन औरतों को अलग कर दिया गया जो निकाह की उम्र से गुजर चुकी हों। फरमाया कि अगर वे ओढ़नी का एहतिमाम न करें तो कोई हरज नहीं। ये दोनों किस्म के अहकाम एक साथ उतर सकते थे। मगर इनके दर्मियान चार रुकूओं का फासला है। इन दर्मियानी रुकूओं में दूसरे मजामीन हैं। जैसा कि रिवायात से मालूम होता है, इब्तिदाई अहकाम उतरने के बाद कुछ अमली सवालात पैदा हुए। चुनांचे उनकी वजाहत में ये आख़िरी आयतें उतरीं और यहां शामिल की गईं। इससे मालूम होता है कि कुरआन का अंदाज तर्तीब और तदरीज (क्रम) का अंदाज है न कि यकबारगी इक्दाम का। ख़ुदा के लिए यह मुमकिन था कि वह तमाम अहकाम एक साथ बयकवक्त नाजिल कर दे। मगर ख़ुदा ने हालात के एतबार से अहकाम को बतदरीज नाजिल फरमाया।

لَّيْسَ عَلَى ٱلْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى ٱلْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى ٱلْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا
عَلَىٰٓ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا۟ مِنۢ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ ءَابَآئِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَٰنِكُمْ
أَوْ بُيُوتِ أَخَوَٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَٰمِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَٰلِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
خَٰلَٰتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُم مَّفَاتِحَهُۥٓ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَأْكُلُوا۟ جَمِيعًا أَوْ
أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ مُبَٰرَكَةً طَيِّبَةً ۚ
كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

अंधे पर कोई तंगी नहीं और लंगड़े पर कोई तंगी नहीं और बीमार पर कोई तंगी नहीं और न तुम लोगों पर कोई तंगी है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप दादा के घरों से, या अपनी मांओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी ख़ालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो जो बाबरकत दुआ है अल्लाह की तरफ से। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वजाहत करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस्लाम से पहले अरब का मआशिरा एक आजाद मआशिरा था। वहां किसी किस्म की कोई पाबंदी न थी। इसके बाद इस्लाम ने घरों के अंदर जाने पर पर्दे की पाबंदियां आयद कीं जिनका बयान ऊपर की आयतों में है, तो कुछ लोगों को एहसास हुआ कि इन पाबंदियों के बाद हमारी समाजी जिंदगी बिल्कुल महदूद (सीमित) होकर रह जाएगी।

इस सिलसिले में ये वजाहती आयतें नाजिल हुईं। फरमाया कि ये पाबंदियां तुम्हारी समाजी जिंदगी को मुनज्जम करने के लिए हैं न कि तुम्हारी जाइज आजादी को ख़त्म करने के लिए। मसलन अंधे, लंगड़े और बीमार अगर अपने तअल्लुक के लोगों से दूर हो जाएं तो यह अमलन उन्हें बेसहारा कर देने के हममअना होगा। मगर इस्लाम का यह मंशा हरगिज नहीं। चुनांचे साबिका (पहले के) अहकाम में जरूरी गुंजाइशें देते हुए इसकी अस्ल रूह (भावना) की निशानदेही फरमा दी।

इर्शाद हुआ कि इस्लाम का अस्ल मत्लूब यह है कि लोगों के दिलों में एक दूसरे की सच्ची ख़ैरख़्वाही हो। जब एक आदमी दूसरे के घर में दाख़िल हो तो वह सलाम करे। और कहे कि 'तुम्हारे ऊपर सलामती हो और अल्लाह की बरकतें तुम्हारे ऊपर नाजिल हों।' यह रूह (भावना) अगर हकीकी तौर पर लोगों के अंदर मौजूद हो तो अक्सर इज्तिमाई ख़राबियों का अपने आप ख़ात्मा हो जाएगा।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٢﴾

ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यकीन लाएं। और जब किसी इज्तिमाई (सामूहिक) काम के मौके पर रसूल के साथ हों तो जब तक तुमसे इजाजत न ले लें वहां से न जाएं। जो लोग तुमसे इजाजत लेते हैं वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं। पस जब वे अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाजत मांगे तो उन्हें इजाजत दे दो। और उनके लिए अल्लाह से माफी मांगो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला रहम करने वाला है। (62)

जब कुछ लोग अपने आपको इस्लाम के साथ वाबस्ता करें तो मुख़्तलिफ असबाब से बार-बार इसकी जरूरत पेश आती है कि उन्हें इकट्ठा किया जाए। मसलन मुसलमानों के किसी मुशतरक (साझे) मामले में मश्विरा करने के लिए, किसी इज्तिमाई मुहिम पर लोगों का तआवुन (सहयोग) हासिल करने के लिए। वग़ैरह।

ऐसे मौकों पर यह होता है कि जिन लोगों पर अपने इंफिरादी (व्यक्तिगत) तकाज़े ग़ालिब हों वे थोड़ी देर के बाद अपनी दिलचस्पी खो देते हैं। और चाहते हैं कि ख़ामोशी के साथ उठकर चले जाएं। यह मिजाज सही इस्लामी मिजाज नहीं। ताहम जो लोग इस जेहनियत से पाक हों उनमें भी कुछ ऐसे अफराद हो सकते हैं जो किसी वक्ती जरूरत की वजह से इज्तिमाअ (बैठक, सभा) के ख़त्म होने से पहले उठना चाहें। ऐसे अफराद का तरीका यह होता है कि वे जिम्मेदार शख़्सियत से (और रसूल के जमाने में रसूल से) बाकायदा इजाजत लेकर वापस जाते हैं। अगर जिम्मेदार उन्हें किसी वजह से इजाजत न दे तो वह किसी नागवारी के बग़ैर आख़िर वक्त तक कार्रवाई में शरीक रहते हैं।

जो शख़्स मुसलमानों के इज्तिमाई (सामूहिक) मामलात का जिम्मेदार हो उसके अंदर यह मिजाज होना चाहिए कि कोई शख़्स अगर वक्ती जरूरत की वजह से मअजरत पेश करे तो वह उसकी मअजरत को दिल से कुबूल करे। और उसके हक में दुआ करे कि अल्लाह तआला उसकी मदद फरमाए।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं। पस जो लोग उसके हुक्म की ख़िलाफवर्जी करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई आजमाइश आ जाए। या उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ ले। याद रखो कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है। अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम हो। और जिस दिन लोग उसकी तरफ लाए जाएंगे तो जो कुछ उन्होंने किया था वह उससे उन्हें बाख़बर कर देगा। और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (63-64)

यहां जिस इताअते रसूल का जिक्र है उसका तअल्लुक रसूल की जिंदगी में रसूल से था। रसूल के बाद इसका तअल्लुक हर उस शख़्स से है जो मुसलमानों के मामले का जिम्मेदार बनाया जाए।

इज्तिमाई मामलात में अपना हिस्सा अदा करने से जो लोग कतराएं वे बतौर ख़ुद यह समझते हैं कि वे इज्तिमाई काम में वक्त जाया न करके अपने इंफिरादी मामले को मजबूत कर रहे हैं। मगर जो गिरोह इज्तिमाइयत (सामूहिकता) को खो दे उसके दुश्मन उसके अंदर घुसने की

राह पा लेते हैं। इस तरह जो बर्बादी आती है वह अपने नतीजे के एतबार से उमूमी बर्बादी होती है। उसका नुक्सान हर एक को पहुंचता है, यहां तक कि उसे भी जो यह समझ रहा था कि उसने जाती मामलात में पूरी तवज्जोह लगाकर अपने आपको महफ़ूज़ कर लिया है।

आदमी जब इस किस्म की कमजोरी दिखाता है तो बतौर ख़ुद वह समझता है कि वह जो कुछ कर रहा है इंसानों के साथ कर रहा है। मगर हकीकत यह है कि वह जो कुछ कर रहा होता है वह ख़ुदा के साथ कर रहा होता है। अगर यह एहसास ज़िंदा हो तो आदमी कभी इस किस्म की बेउसूली की जुरअत न करे।

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ وَسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝

आयतें-77 **सूरह-25. अल-फ़ुरक़ान** रुकूअ-6

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान उतारा ताकि वह जहान वालों के लिए डराने वाला हो। वह जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं। और उसने हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक अंदाज़ा मुक़र्रर किया। और लोगों ने उसके सिवा ऐसे माबूद (पूज्य) बनाए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं। और वे ख़ुद अपने लिए न किसी नुक्सान का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफ़ा का। और न वे किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का। (1-3)

'फ़ुरक़ान' के लफ़्ज़ी मअना है फ़र्क़ करने वाला। यानी हक़ व बातिल के दर्मियान इम्तियाज़ (अंतर) करने का मेयार (Criterion)। यहां फ़ुरक़ान से मुराद क़ुरआन है। ख़ुदा अलीम व ख़बीर भी है और हाकिमे मुतलक़ भी। इसलिए ख़ुदा की तरफ़ से एक किताब फ़ुरक़ान का आना बयकवक़्त अपने अंदर दो पहलू रखता है। एक यह कि वह यक़ीनी तौर

पर सही है उसकी सेहत व क़तइयत (परिपूर्णता) में कोई शुबह नहीं। दूसरे यह कि उसे मानना और उसे न मानना दोनों का अंजाम यकसां (समान) नहीं हो सकता।

ख़ुदा तंहा तमाम इख़्तियारात का मालिक है। कोई उसकी राय पर असरअंदाज़ नहीं हो सकता। कोई उसके और उसके फ़ैसलों के दर्मियान हायल नहीं हो सकता। यही वाक़या इस बात की ज़मानत है कि जो शख़्स क़ुरआन को अपनी रहनुमा किताब बनाएगा वह कामयाब होगा और जो शख़्स इसे नज़रअंदाज़ करेगा उसके लिए किसी तरह यह मुमकिन नहीं कि अपने आपको उस नाकामी से बचाए जो हक़ को नज़रअंदाज़ करने वाले के लिए ख़ुदा ने मुक़र्रर कर दी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَاۗءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

और मुंकिर लोग कहते हैं कि यह सिर्फ़ एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है। और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसकी मदद की है। पस ये लोग ज़ुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए। और वे कहते हैं कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं जिन्हें उसने लिखवा लिया है। पस वे उसे सुबह व शाम सुनाई जाती हैं। कहो कि इसे उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है। बेशक वह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (4-6)

मुंकिरीन बज़ाहिर क़ुरआन को झूठी किताब कहते थे। मगर हक़ीक़त यह है कि उनके इस क़ौल का रुख़ पैग़म्बर की तरफ़ था। पैग़म्बर उन्हें देखने में एक मामूली इंसान दिखाई देता था। उनकी समझ में नहीं आता था कि एक मामूली इंसान एक ग़ैर मामूली किताब का मालिक किस तरह हो सकता है।

क़ुरआन हर किस्म के मज़ामीन को छूता है। तारीख़ी, तबीई (भौतिक), नफ़्सियाती, मआशिरती, वग़ैरह। मगर इसमें आज तक किसी वाक़ई ग़लती की निशानदेही न की जा सकी। इससे साबित होता है कि क़ुरआन एक ऐसी हस्ती का कलाम है जो कायनात के भेदों को आख़िरी हद तक जानने वाला है। अगर ऐसा न होता तो क़ुरआन में भी ग़लतियां मिलतीं जिस तरह दूसरी इंसानी किताबों में मिलती हैं। यही वाक़या क़ुरआन के ख़ुदाई किताब होने की सबसे बड़ी दलील है।

जो लोग क़ुरआन के बारे में बेबुनियाद बातें कहें वे बहुत ज़्यादा जसारत (दुस्साहस) की

बातें करते हैं। ऐसे लोग यकीनन ख़ुदा की पकड़ में आ जाएंगे। अलबत्ता अगर वे रुजूअ कर लें तो ख़ुदा का यह तरीका नहीं कि इसके बाद भी वह उनसे इंतिकाम ले। ख़ुदा आदमी के हाल को देखता है न कि उसके माजी (अतीत) को।

وَقَالُوا مَالِ هَٰذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ﴿٧﴾ أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ﴿٨﴾ انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾

और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाजारों में चलता फिरता है। क्यों न इसके पास कोई फरिश्ता भेजा गया कि वह इसके साथ रहकर डराता या इसके लिए कोई ख़ज़ाना उतारा जाता। या इसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता। और जालिमों ने कहा कि तुम लोग एक सहरजदा (जादूग्रस्त) आदमी की पैरवी कर रहे हो। देखो वे कैसी-कैसी मिसाले तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं। पस वे बहक गए हैं, फिर वे राह नहीं पा सकते। (7-9)

हक के हर दाओ (आह्वानकर्ता) के साथ यह हुआ है कि उसके जमाने के लोगों ने उसे हकीर (तुच्छ) समझा। और बाद के लोगों ने उसकी परस्तिश की। इसकी वजह यह है कि अपनी जिंदगी में वह अपनी हकीकी शख़्सियत के साथ लोगों के सामने होता है। इसलिए वह उन्हें बस एक आम इंसान की मानिंद दिखाई देता है। मगर बाद को उसकी शख़्सियत के गिर्द अफसानवी किस्सों का हाला बन जाता है। बाद के लोग उसे मुबालग़ाआमेज (अतिरंजित) रूप में देखते हैं। इसलिए बाद के लोग मुबालग़ाआमेज हद तक उसकी ताजीम व तक्दीस (मान-सम्मान) करने लगते हैं।

बाद के जमाने में लोगों के जेहनों में पैग़म्बर की ग़ैर मामूली अज्मत कायम हो जाती है। इसलिए कोई बड़ा अपने आपको पैग़म्बर से बड़ा नहीं पाता। मगर पैग़म्बर की जिंदगी में उसकी जो जाहिरी सूरतेहाल होती है वह वक्त के बड़ों को मौका देती है कि वे पैग़म्बर के मुकाबले में मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) में मुब्तिला हो सकें। ऐसे लोग जब कुछ लोगों को देखते हैं कि वे पैग़म्बर की बातों को सुनकर मुतअस्सिर (प्रभावित) हो रहे हैं तो वे उनके तअस्सुर को घटाने के लिए कह देते हैं कि यह तो एक मजनून है। यह तो एक सहरजदा इंसान है, वग़ैरह। वे दलील के मैदान में अपने आपको आजिज पाकर ऐब लगाने का तरीका इख़्तियार करते हैं। हालांकि दलील के जरिए किसी को रद्द करना ऐन दुरुस्त है। जबकि ऐब लगाकर किसी को बदनाम करना सरासर नादुरुस्त।

تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلْ لَكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾ إِذَا رَأَتْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ﴿١٦﴾

बड़ा बाबरकत है वह। अगर वह चाहे तो तुम्हें इससे भी बेहतर चीज दे दे। ऐसे बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हें बहुत से महल दे दे। बल्कि उन्होंने कियामत को झुठला दिया है। और हमने ऐसे शख़्स के लिए जो कियामत को झुठलाए दोजख़ तैयार कर रखी है। जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना सुनेंगे। और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बांध कर डाल दिए जाएंगे तो वे वहां मौत को पुकारेंगे। आज एक मौत को न पुकारो, और बहुत सी मौत को पुकारो। कहो क्या यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका वादा ख़ुदा से डरने वालों से किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी। उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह तेरे रब के जिम्मे एक वादा है वाजिबुल अदा। (10-16)

हक के मुख़ालिफ़ीन अक्सर हक के दाओ की ज़ात को निशाना बनाते हैं। वे दाओ को ग़ैर मोतबर साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें करते हैं। इस तरह वे यह तअस्सुर देते हैं कि हक का दाओ अगर उनके मेयार पर होता तो वे उसकी बात मान लेते। मगर यह सही नहीं। उनका अस्ल मसला यह नहीं है कि हक का दाओ उन्हें काबिले एतबार नजर नहीं आता। उनका अस्ल मसला यह है कि वे कियामत की पकड़ से बेख़ौफ हैं, इसलिए वे ग़ैर जिम्मेदाराना तौर पर तरह-तरह के अल्फाज बोलते रहते हैं।

हक और नाहक के मामले की सारी अहमियत इस बिना पर है कि आख़िरत में उसकी बाबत पूछ होगी। जो लोग आख़िरत की पकड़ के बारे में बेख़ौफ हो जाएं वे उसके बिल्कुल लाजिमी नतीजे के तौर पर हक और नाहक के मामले में संजीदा नहीं रहते। और जिस चीज के बारे में आदमी संजीदा न हो वह उसकी अहमियत को किसी तरह महसूस नहीं कर सकता, चाहे उसके हक में कितनी ही ज्यादा दलीलें दे दी जाएं। ऐसे लोगों के अल्फाज सिर्फ उस वक्त ख़त्म होंगे जबकि कियामत की चिंघाड़ उनसे उनके अल्फाज छीन ले।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ فَيَقُولُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿17﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوْا قَوْمًا بُوْرًا ﴿18﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿19﴾

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे उन बंदों को गुमराह किया या वे ख़ुद रास्ते से भटक गए। वे कहेंगे कि पाक है तेरी जात। हमें यह सजावार न था कि हम तेरे सिवा दूसरों को कारसाज तज्वीज करें। मगर तूने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि वे नसीहत को भूल गए। और हलाक होने वाले बने। पस उन्होंने तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया। अब न तुम ख़ुद टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो। और तुम में से जो शख़्स जुल्म करेगा हम उसे एक बड़ा अजाब चखाएंगे। (17-19)

'ज़िक्र' की तशरीह मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने इन अल्फ़ाज में की है : 'वे उस पैग़ाम को भूल गए जो उनकी तरफ तूने अपने पैग़म्बरों की जबान से तंहा और लाशरीक अपनी इबादत के लिए उतारा था।'

हक़ीक़त यह है कि अंबिया की मुख़ातब क़ौमें मअरूफ मअनों (प्रचलित भावार्थ) में मुंकिर और मुश्रिक क़ौमें न थीं। वे दरअस्ल पिछले अंबिया की उम्मतें थीं। उनके पैग़म्बरों ने उन्हें ख़ुदा की हिदायत पहुंचाई। मगर जमाना गुजरने के बाद वे दुनिया में मशग़ूल हो गए और अपने बुजुर्गों और पैगम्बरों के बारे में यह अक़ीदा बना लिया कि वे ख़ुदा के यहां उनकी बख़्शिश का जरिया बन जाएंगे। मगर जब क़ियामत आएगी तो इस क़िस्म के तमाम अक़ीदे बातिल (झूठे) साबित होंगे। उस वक्त लोगों को मालूम होगा कि अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला ख़ुद अल्लाह के सिवा कोई और न था।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً اَتَصْبِرُوْنَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿20﴾

और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना खाते थे और बाजारों में चलते फिरते थे। और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आजमाइश बनाया है। क्या तुम सब्र करते

हो। और तुम्हारा रब सब कुछ देखता है। (20)

क़ुरआन के मुख़ातबीने अव्वल हजरत नूह, हजरत इब्राहीम, हजरत इस्माईल, हजरत मूसा और दूसरे पैग़म्बरों को मानते थे। इसके बावजूद उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने से इंकार कर दिया। इसकी एक वजह यह है कि बाद के जमाने में हमेशा ऐसा होता है कि लोग अपने गुजरे हुए पैग़म्बरों को आला और अफ़जल साबित करने के लिए बतौर ख़ुद तिलिस्माती कहानियां वजअ करते हैं। इन कहानियों में उनके साबिक पैग़म्बर की शख़्सियत एक पुरअजूबा शख़्सियत की हैसियत इख़्तियार कर लेती है। अब इसके बाद जब उनका हमअस्र (समकालीन) नबी उनके सामने आता है तो वह बजाहिर सिर्फ एक इंसान दिखाई देता है। उनके तसव्वुर में एक तरफ माजी (अतीत) का पैग़म्बर होता है जो उन्हें फ़ौक़ुलबशर (दिव्य) हस्ती मालूम होता है। दूसरी तरफ जिंदा पैग़म्बर होता है जो सिर्फ एक बशर (इंसान) के रूप में नजर आता है। इस तक़ाबुल (तुलना) में वे हाल के पैग़म्बर पर यकीन नहीं कर पाते। वे पैग़म्बरी को मानते हुए पैग़म्बर का इंकार कर देते हैं।

मुंकिरीन के लिए रसूल और अहले ईमान आजमाइश हैं। और रसूल और अहले ईमान के लिए मुंकिरीन आजमाइश हैं। मुंकिरीन की आजमाइश यह है कि वे रसूल के बजाहिर बेअज्मत हुलिये में उसके अंदर छुपी हुई अज्मत को दरयाफ्त करें। और अहले ईमान की आजमाइश यह है कि वे मुंकिरीन की लायअनी निरर्थक बातों पर बेबर्दाश्त न हों। वे हर हाल में साबिर व शाकिर बने रहें।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿21﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿22﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿23﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿24﴾

और जो लोग हमारे सामने पेश होने का अंदेशा नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गए। या हम अपने रब को देख लेते। उन्होंने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे हद से गुजर गए हैं सरकशी में। जिस दिन वे फरिश्तों को देखेंगे। उस दिन मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी। और वे कहेंगे कि पनाह, पनाह। और हम उनके हर अमल की तरफ बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसे उड़ती हुई ख़ाक बना देंगे। जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे। और निहायत अच्छी आरामगाह में। (21-24)

जो लोग दाओी के पैग़ाम को मानने के लिए फ़रिश्ते और ख़ुदा के ज़ुहूर का मुतालबा करें वे कोई वाकई बात नहीं कहते। वे सिर्फ अपनी ग़ैर संजीदगी का सुबूत देते हैं। उन्हें मालूम नहीं कि ख़ुदा और फ़रिश्तों का ज़ुहूर क्या मअना रखता है। हक़ीक़त यह है कि उनके लिए बोलने का जो मौक़ा है वह सिर्फ उसी वक्त तक है जब तक हक़ को दाओी की सतह पर जाहिर किया गया हो। जब हक़ ख़ुदा और फ़रिश्तों की सतह पर जाहिर हो जाए तो वह फ़ैसले का वक्त होता है न कि मानने और तस्दीक़ करने का।

बहुत से लोग इस ग़लतफ़हमी में रहते हैं कि कियामत में जब ख़ुदा पूछेगा कि क्या लाए तो मैं अपना फ़लां अमल पेश कर दूंगा। मैं कहूंगा कि फ़लां और फ़लां बुज़ुर्गों की निस्बत (संबंध) मुझे हासिल है। मगर कियामत के आते ही इस किस्म की ख़ुशख़्यालियां इस तरह बेहक़ीक़त साबित होंगी जैसे गर्म लोहे पर पानी का क़तरा पड़े और वह फ़ौरन उड़ जाए। उस दिन सिर्फ हक़ीक़ी अमल किसी के काम आएगा न कि किसी क़िस्म की झूठी ख़ुशख़्याली।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

और जिस दिन आसमान बादल से फट जाएगा। और फ़रिश्ते लगातार उतारे जाएंगे। उस दिन हक़ीक़ी बादशाही सिर्फ रहमान की होगी। और वह दिन मुंकिरों पर बड़ा सख़्त होगा। और जिस दिन जालिम अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा कि काश मैंने रसूल के साथ राह इख़्तियार की होती। हाय मेरी शामत, काश मैं फ़लां शख़्स को दोस्त न बनाता। उसने मुझे नसीहत से बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान है ही इंसान को दग़ा देने वाला। और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब मेरी कौम ने इस क़ुरआन को बिल्कुल नजरअंदाज कर दिया। और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के दुश्मन बनाए। और तुम्हारा रब काफी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए। (25-31)

जब भी हक़ की दावत उठती है तो वे लोग उसके दुश्मन बन जाते हैं जो हक़ के नाम पर नाहक़ का कारोबार कर रहे हों। वे तरह-तरह के शोशे निकाल कर दाओी की सदाक़त को मुशतबह (संदिग्ध) साबित करते हैं। और बहुत से लोगों को अपना हमनवा बना लेते हैं।

जो लोग इन झूठे लीडरों की बातों पर यक़ीन करके हक़ के दाओी का साथ नहीं देते उन पर कियामत के दिन खुल जाएगा कि लीडरों की दलीलें दलीलें न थीं। वे महज झूठे शोशे थे जिन्हें उन्होंने अपने मफ़ाद के मुताबिक़ पाकर मान लिया। और उसे हक़ से दूर रहने का बहाना बना लिया। उस वक्त वे अफ़सोस करेंगे कि क्यों उन्होंने ऐसा किया कि वे लीडरों के झूठे शोशों के फ़रेब में पड़े रहे। और हक़ के दाओी का साथ देने वाले न बने।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾

और इंकार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा क़ुरआन क्यों नहीं उतारा गया। ऐसा इसलिए है ताकि इसके जरिए से हम तुम्हारे दिल को मजबूत करें और हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है। और ये लोग कैसा ही अजीब सवाल तुम्हारे सामने लाएं मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वजाहत तुम्हें बता देंगे। जो लोग अपने मुंह के बल जहन्नम की तरफ ले जाए जाएंगे। उन्हीं का बुरा ठिकाना है। और वही हैं राह से बहुत भटके हुए। (32-34)

क़ुरआन जब उतरा तो वह बयकवक्त एक पूरी किताब की शक्ल में नहीं उतरा बल्कि जुज-जुज करके 23 साल में उतारा गया। इसे मुंकिरीन ने शोशा बना लिया और कहा कि इससे जाहिर होता है कि यह इंसान की किताब है न कि ख़ुदा की किताब। क्योंकि ख़ुदा के लिए बयकवक्त पूरी किताब बना देना कुछ मुश्किल नहीं।

फ़रमाया कि क़ुरआन महज एक तस्नीफ़ (कृति) नहीं, वह एक दावत (आह्वान) है। और दावत की मस्लेहतों में से एक मस्लेहत यह है कि उसे बतदरीज (क्रमवत) सामने लाया जाए ताकि वह माहौल में मुस्तहकम (सुदृढ़) होती चली जाए।

जो दावत कामिल हक़ हो उसके ख़िलाफ़ हर एतराज झूठा एतराज होता है। उसके ख़िलाफ़ जब भी कोई एतराज उठे और फिर उसकी सच्ची वजाहत कर दी जाए तो इससे दावत की सदाक़त मजीद साबित हो जाती है। वह किसी भी दर्जे में मुशतबह (संदिग्धि) नहीं होती।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ لَمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَثَمُودَ وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَٰلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۚ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾

और हमने मूसा को किताब दी। और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया। फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है। फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह कर दिया। और नूह की कौम को भी हमने ग़र्क़ कर दिया जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया। और हमने जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। और आद और समूद को और अर-रस वालों को और उनके दर्मियान बहुत सी कौमों को। और हमने उनमें से हर एक को मिसालें सुनाईं और हमने हर एक को बिल्कुल बर्बाद कर दिया। और ये लोग उस बस्ती पर से गुजरे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं। बल्कि वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते। (35-40)

कुरआन बार-बार जिन पैग़म्बरों का हवाला देता है उनमें से अक्सर वे हैं जिनका जिक्र इंसानियत के संकलित इतिहास में जगह न पा सका। इससे अंदाजा होता है कि उन पैग़म्बरों के समकालीन प्रबुद्ध वर्ग ने उन्हें कोई अहमियत न दी। उन्होंने बादशाहों और फौजी नायकों के हालात जोश के साथ लिखे क्योंकि उनके हालात में सियासी पहलू मौजूद था। मगर उन्होंने पैग़म्बरों को नजरअदांज कर दिया। क्योंकि उनके हालात में सियासी जौक़ की तस्कीन का सामान मौजूद न था।

अजीब बात है कि यह मिजाज आज भी मुकम्मल तौर पर मौजूद है। आज भी जो लोग अपने आपको सियासी प्लेटफॉर्म पर नुमायां करें वे फौरन प्रेस और रेडियों में जगह पा लेते हैं और जो लोग ग़ैर सियासी मैदान में काम करें उन्हें आज का इंसान भी ज्यादा काबिले तज्किरा नहीं समझता।

इंसान से सबसे ज्यादा जो चीज मत्लूब (अपेक्षित) है वह यह कि वह वाक़ेआत से सबक़ ले। मगर यही वह चीज है जो इंसान के अंदर सबसे कम पाई जाती है, मौजूदा जमाने में भी और इससे पहले के जमाने में भी।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾ إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

और वे जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारा मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जिसे खुदा ने रसूल बनाकर भेजा है। इसने तो हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से हटा ही दिया होता। अगर हम उन पर जमे न रहते। और जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा जब वे अजाब को देखेंगे कि सबसे ज्यादा बेराह कौन है। (41-42)

'अगर हम जमे न रहते तो वह हमें हमारे दीन से हटा देता' इससे मालूम होता है कि उनके अपने दीन पर कायम रहने की वजह उनका तअस्सुब (विद्वेष) था न कि कोई दलील। दलील के मैदान में वे बेहथियार हो चुके थे। मगर तअस्सुब के बल पर वे अपने आबाई दीन पर जमे रहे। यही अक्सर इंसानों का हाल होता है। बेशतर इंसान महज तअस्सुब की जमीन पर खड़े होते हैं। अगरचे जबान से वे जाहिर करते हैं कि वे दलील की जमीन पर खड़े हुए हैं।

किसी दावत का मुक़ाबले करने के दो तरीके हैं। एक है उसे दलील से रद्द करना। दूसरा है उसका मजाक उड़ाना। पहला तरीका जाइज है और दूसरा तरीका सरासर नाजाइज। जो लोग किसी दावत का मजाक उड़ाएं वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि दलील के मैदान में वे अपनी बाजी हार चुके हैं। और अब मजाक और हंसी की बातों से अपनी हार पर पर्दा डालना चाहते हैं।

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है। पस क्या तुम उसका जिम्मा ले सकते हो। या तुम ख़्याल करते हो कि उनमें से अक्सर सुनते और समझते हैं। वे तो महज जानवरों की तरह हैं बल्कि वे उनसे भी ज्यादा बेराह हैं। (43-44)

एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आसमान के साये के नीचे अल्लाह के सिवा पूजे जाने वाले माबूदों में सबसे ज्यादा संगीन अल्लाह के नजदीक वह ख़्वाहिश है जिसकी पैरवी की जाए। (तबरानी)

यह एक हक़ीक़त है कि सबसे बड़ा बुत आदमी की ख़्वाहिशे नफ़्स (मनोकामनाएं) है। बल्कि यही अस्ल बुत है। बक़िया तमाम बुत सिर्फ ख़्वाहिशपरस्ती के दीन को जाइज साबित

करने के लिए वजअ किए गए हैं।

ख़्वाहिश को अपना रहबर बनाने के बाद इंसान उसी सतह पर आ जाता है जो जानवरों की सतह है। जानवर सोच कर कोई काम नहीं करते बल्कि सिर्फ जिबिल्ली तक़ाज़े के तहत करते हैं। अब अगर इंसान भी अपने सोचने की सलाहियत को काम में न लाए और सिर्फ ख़्वाहिशे नफ़्स के तहत चलने लगे तो उसमें और जानवर में क्या फ़र्क़ बाक़ी रहा।

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝ لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ۝

क्या तुमने अपने रब की तरफ नहीं देखा कि वह किस तरह साये को फैला देता है। और अगर वह चाहता तो वह उसे ठहरा देता। फिर हमने सूरज को उस पर दलील बनाया। फिर हमने आहिस्ता-आहिस्ता उसे अपनी तरफ समेट लिया। और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को राहत बनाया और दिन को जी उठना का वक्त बनाया। और वही है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं। ताकि उसके जरिये से मुर्दा जमीन में जान डाल दें। और उसे पिलाएं अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को। (45-49)

यहां आम मुशाहिदे के जबान में उस हक़ीक़त की तरफ इशारा किया गया है जिसे मौजूदा जमाने में जमीन की महवरी (धुरीय) गर्दिश कहा जाता है। जमीन अपने महवर (धुरी) पर हर 24 घंटे में एक बार घूम जाती है। इसी से रात और दिन पैदा होते हैं। यह अल्लाह तआला की क़ुदरत का एक हैरतअंगेज करिश्मा है। अगर जमीन की महवरी गर्दिश न हो तो जमीन के आधे हिस्से पर मुसलसल तेज धूप रहे। और दूसरे आधे हिस्से पर मुसलसल रात की तारीकी छाई रहे। और इस तरह जमीन पर जिंदगी गुजारना इंतिहाई हद तक दुश्वार हो जाए।

जमीन के इस निजाम में बहुत सी मअनवी नसीहतें मौजूद हैं। जिस तरह रात की तारीकी के बाद लाजिमन दिन की रोशनी आती है। उसी तरह नाहक के बाद हक का आना भी इस जमीन पर लाजिमी है। रात को सोकर दुबारा सुबह को उठना मौत के बाद दुबारा आख़िरत की दुनिया में उठने की तमसील है, वग़ैरह।

इसी तरह बारिश के निजाम में उसके माद्दी (भौतिक) पहलू के साथ अजीम मअनवी

(अर्थपूर्ण) सबक का पहलू भी छुपा हुआ है। जिस तरह बारिश से मुर्दा जमीन सरसब्ज हो जाती है उसी तरह ख़ुदा की हिदायत उस सीने को ईमान और तकवा का चमनिस्तान बना देती है जिसके अंदर वाकई सलाहियत हो, जो बंजर जमीन की तरह बेजान न हो चुका हो।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ۝

और हमने इसे उनके दर्मियान तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे सोचें। फिर भी अक्सर लोग नाशुक्री किए बग़ैर नहीं रहते। और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। पस तुम मुंकिरों की बात न मानो और इस (क़ुरआन) के जरिये से उनके साथ बड़ा जिहाद करो। (50-52)

क़ुरआन में तौहीद और आख़िरत के मजामीन मुख़्तलिफ अंदाज और मुख़्तलिफ उस्लूब से बार-बार बयान हुए हैं। आदमी अगर संजीदा हो तो ये मजामीन उसे तड़पा देने के लिए काफी हैं। मगर ग़ाफ़िल इंसान किसी दलील से कोई असर नहीं लेता।

'इसके जरिए जिहादे कबीर करो' से मुराद क़ुरआन के जरिए बड़ा जिहाद करना है। इससे अंदाजा होता है कि क़ुरआन के जरिए जिहाद, दूसरे शब्दों में, पुरअम्न (शांतिमय) दावती जद्दोजहद ही अस्ल जिहाद है। बल्कि यही सबसे बड़ा जिहाद है। मुंकिर लोग अगर यह कोशिश करें कि अहले ईमान को दावत (आह्वान) के मैदान से हटाकर दूसरे मैदान में उलझाएं तब भी अहले ईमान की सारी कोशिश यह होनी चाहिए कि वह अपने अमल को क़ुरआनी दावत के मैदान में केन्द्रित रखें। और अगर मुख़ालिफीन के हंगामों की वजह से किसी वक्त अमल का मैदान बदलता हुआ नजर आए तो हर मुमकिन तदबीर करके दुबारा उसे दावत के मैदान में ले आएं।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَحْجُورًا ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝

और वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह खारी है कड़ुवा। और उसने उनके दर्मियान एक पर्दा रख दिया और एक मजबूत आड़। और वही है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया। फिर उसे ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तुम्हारा रब बड़ी क़ुदरत वाला है। (53-54)

जब किसी संगम पर दो दरिया मिलते हैं या कोई बड़ा दरिया समुद्र में जाकर गिरता है तो

ऐसे मक़ाम पर बाहम (परस्पर) मिलने के बावजूद दोनों का पानी अलग-अलग रहता है। दोनों के बीच में एक धारी दूर तक जाती हुई नजर आती है। इस लेखक ने यह मंजर इलाहाबाद में गंगा और जमना के संगम पर देखा है। यह वाक़्या उस क़ुदरती क़ानून के तहत होता है जिसे मौजूदा जमाने में सतही तनाव (Surface tension) कहा जाता है। इसी तरह जब समुद्र में ज्वारभाटा आता है तो समुद्र का खारी पानी साहिली दरिया के मीठे पानी के ऊपर चढ़ जाता है। मगर सतही तनाव दोनों पानी को बिल्कुल अलग रखता है। और जब समुद्र का पानी दुबारा उतरता है तो उसका खारी पानी ऊपर-ऊपर से वापस चला जाता है और नीचे का मीठा पानी बदस्तूर अपनी पहले की हालत पर बाक़ी रहता है। यहां तक कि इसी सतही तनाव के क़ानून की वजह से यह मुमकिन हुआ है कि खारी समुद्रों के ऐन बीच में मीठे पानी के ज़ख़ीरे मौजूद हैं और बहरी (समुद्री) मुसाफ़िरों को मीठा पानी फ़राहम कर सकें।

इंसानी जिस्म की अस्ल पानी है। पानी से इंसान जैसी हैरतअंगेज नूअ (जाति) बनी। फिर नसबी तअल्लुक़ात और सुसराली रवाबित (संबंधों) के जरिए उसकी नस्ल चलती रही। इस तरह के मुख़्तलिफ वाक़ेयात जो जमीन पर पाए जाते हैं उन पर ग़ौर किया जाए तो उनमें ख़ुदा की क़ुदरत की निशानियां छुपी हुई नजर आएंगी।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नफ़ा पहुंचा सकती हैं और न नुक़्सान। और मुंकिर तो अपने रब के ख़िलाफ मददगार बना हुआ है। और हमने तुम्हें सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तुम कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई उजरत (बदला) नहीं मांगता, मगर यह कि जो चाहे वह अपने रब का रास्ता पकड़ ले। (55-57)

ख़ुदा ने इंसान को ऐसी दुनिया में रखा है जहां की हर चीज और उसका पूरा माहौल तौहीद (एकेश्वरवाद) की गवाही देता है। मगर इंसान उससे रोशनी हासिल नहीं करता। वह अपनी गुमराही में इस हद तक जाता है कि वह तौहीद के बजाए शिर्क की बुनियाद पर अपनी जिंदगी का निजाम बनाता है। और जब कोई ख़ुदा का बंदा इंसानों को तौहीद की तरफ पुकारने के लिए उठे तो वह दावते तौहीद का मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

ताहम हक़ के दाई को जारिहिय्यत (आक्रामकता) की हद तक जाने की इजाजत नहीं। उसे सिर्फ तल्क़ीन (दीक्षा) और नसीहत के दायरे में अपना काम जारी रखना है। अगर दावत कारगर न हो रही हो तो उसका यह काम नहीं कि वह दावत पर जारिहियत का इजाफ़ा करे।

उसे जिस चीज का इजाफ़ा करना है वह है ख़ुदा से दुआ, हर क़िस्म के माद्दी झगड़ों को एकतरफ़ा तौर पर ख़त्म करना, बेग़र्जी और अख़्लाक़ के जरिए मुख़ातब के दिल को मुतअस्सिर करना।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ ﴿٦٠﴾

और जिंदा ख़ुदा पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफ़ी है। जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है, छः दिन में। फिर वह तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। रहमान, पस उसे किसी जानने वाले से पूछो। और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या है। क्या हम उसे सज्दा करें जिसे तू हमसे कहे। और उनका बिदकना और बढ़ जाता है। (58-60)

'रहमान की बाबत जानने वाले से पूछो' इसमें पूछे जाने वाली बात पर जोर है न कि पूछे जाने वाले शख़्स पर। मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स ख़ुदाए रहमान के करिश्मों को जाने तो वह तुम्हें बताएगा कि रहमान की जात कितनी बुलन्द व बरतर है। मौजूदा जमाने में साइंसदानों ने कायनात में जो तहक़ीक़ की है वह जुज़ई (आंशिक) तौर पर इस आयत की मिस्दाक़ है। साइंसदानों की तहक़ीक़ात से कायनात के जो भेद सामने आए हैं वे इतने हैरतनाक हैं कि उन्हें पढ़कर आदमी के जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाएं और उसका दिल बेइख़्तियार ख़ालिक़ की अज़्मतों के आगे झुक जाए।

'छः दिन' से मुराद ख़ुदा के छः दिन हैं। इंसान की जबान में इसे छः अदवार (चरण) कहा जा सकता है। छः दौरों में पैदा करना जाहिर करता है कि कायनात की तख़्लीक़ मंसूबाबंद तौर पर हुई है। और जो चीज मंसूबा और एहतिमाम के साथ वजूद में लाई जाए वह कभी अबस (निरर्थक) नहीं हो सकती।

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾

बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चराग़ (सूरज) और एक चमकता चांद रखा। और वही है जिसने रात और दिन को एक

के बाद दूसरे आने वाला बनाया, उस शख़्स के लिए जो सबक लेना चाहे और शुक्रगुजार बनना चाहे। (61-62)

बुर्ज के लफ्ज़ी मअना किला के हैं। आसमानी बुर्ज से क्या मुराद है, इसकी कोई मुत्तफ़िक़ (सर्वस्वीकार्य) तफ्सीर अभी तक नहीं की जा सकी है। मुमकिन है कि इससे मुराद वह चीज हो जिसे मौजूदा जमाने में शम्सी निजाम (सूर्यमंडल) कहा जाता है। कायनात में करोड़ों की तादाद में शम्सी निजाम पाए जाते हैं। उन्हीं में से एक वह है जो हमसे करीब है और जिसके अंदर हमारी जमीन और सूरज और चांद वाकेअ हैं।

शम्सी निजाम की बेशुमार निशानियों में से एक निशानी जमीन का सूरज के गिर्द मुसलसल घूमना है। इसकी एक गर्दिश मदार (कक्ष) पर होती है। यह गर्दिश साल में पूरी होती है और इसकी वजह से मौसम वाकेअ होते हैं। इसकी दूसरी गर्दिश उसके महवर (धुरी) पर होती है। यह 24 घंटे में पूरी हो जाती है और इससे रात और दिन पैदा होते हैं।

अथाह ख़ला (अंतरिक्ष) में हददर्जा सेहत के साथ जमीन की गर्दिश और उसका इंसानी मस्लेहतों के इतना ज्यादा मुवाफ़िक़ (अनुकूल) होना इतने हैरतनाक वाकेयात हैं कि जो शख़्स उन पर ग़ौर करेगा वह शुक्रे ख़ुदावंदी की जज्बे में ग़र्क होकर रह जाएगा।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

और रहमान के बंदे वे हैं जो जमीन पर आजिजी (नम्रता) के साथ चलते हैं। और जब जाहिल लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुम्हें सलाम। और जो अपने रब के आगे सज्दा और कियाम में रातें गुजारते हैं। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब जहन्नम के अजाब को हमसे दूर रख। बेशक उसका अजाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरा मकाम है। और वे लोग कि जब वे ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं। और उनका ख़र्च इसके दर्मियान एतदाल (मध्य-मार्ग) पर होता है। (63-67)

'चलना' पूरी शख़्सियत की अलामत है। जिन लोगों के दिल में अल्लाह का यकीन उतर जाए वे सरापा इज्ज व तवाजोअ बन जाते हैं। ख़ुदा का ख़ौफ उनसे बड़ाई का एहसास छीन

लेता है। उनका चलना-फिरना और रहना-सहना ऐसा हो जाता है जिसमें अबदियत (बंदा होने) की रूह पूरी तरह समाई हुई हो।

रहमान के बंदों का मामला अगर सिर्फ इतना ही हो तो कोई भी उनसे न उलझे। मगर ख़ुदा की मअरफत उन्हें ख़ुदा का दाओ भी बना देती है। बस यहीं से उनका टकराव दूसरों से शुरू हो जाता है। उनका एलाने हक बातिलपरस्तों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो जाता है। और वे उनसे टकराने के लिए आ जाते हैं। मगर यहां भी ख़ुदा का ख़ौफ उन्हें जवाबी टकराव से रोक देता है। वे उनके हक में हिदायत की दुआ करते हुए उनसे अलग हो जाते हैं।

ख़ुदा की मअरफत ही का यह नतीजा भी है कि उनकी जिंदगी में एक कभी न ख़त्म होने वाली बेचैनी शामिल हो जाती है। वे न सिर्फ दिन के वक्त ख़ुदा को बेताबाना पुकारते रहते हैं बल्कि उनकी रातों की तंहाइयां भी ख़ुदा की याद में बसर होने लगती हैं।

इसी तरह ख़ुदा का एहसास उन्हें हददर्जा मोहतात बना देता है। वे जिम्मेदाराना तौर पर कमाते हैं और जिम्मेदाराना तौर पर ख़र्च करते हैं। ख़ुदा के आगे जवाबदेही के एहसास उन्हें अपने आमद व ख़र्च के मामले में मोअतदिल (मध्यमार्गी) और मोहतात बना देता है। हदीस में आता है कि यह आदमी की दानाई में से है कि वह अपनी मईशत में बीच की राह इख़्तियार करे।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को नहीं पुकारते। और वे अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को कत्ल नहीं करते मगर हक पर। और वे बदकारी (व्यभिचारी) नहीं करते। और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो वह सजा से दो चार होगा। कियामत के दिन उसका अजाब बढ़ता चला जाएगा। और वह उसमें हमेशा जलील होकर रहेगा। मगर जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और जो शख़्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहकीकत अल्लाह की तरफ रुजूअ कर रहा है। (68-71)

इस आयत में तीन गुनाहों का जिक्र है। शिर्क और कत्ले नाहक और जिना। ये तीनों गुनाह ख़ुदा और बंदों के हक में सबसे बड़े गुनाह हैं। अल्लाह पर हकीकी ईमान की अलामत यह है कि आदमी इन तीनों गुनाहों से दूर हो जाए। जो लोग इन गुनाहों में मुलव्विस हों वे तौबा करके इनके अंजाम से बच सकते हैं। जो लोग तौबा और रुजूअ के बग़ैर मर जाएं उनके लिए ख़ुदा के यहां निहायत सख़्त सजा है जिससे वे किसी हाल में बच न सकेंगे।

ख़ुदा के नजदीक अस्ल नेकी यह है कि आदमी ख़ुदा से डरने वाला बन जाए। जो नेकी आदमी को ख़ुदा से बेख़ौफ करे वह बदी है। और जो बदी आदमी को ख़ुदा से डराए वह अपने अंजाम के एतबार से नेकी।

अगर एक आदमी से बुराई हो जाए। इसके बाद उसे ख़ुदा की याद आए। वह ख़ुदा की बाजपुर्स (पकड़) को सोचकर तड़प उठे और तौबा और इस्तग़्फार करते हुए ख़ुदा की तरफ दौड़ पड़े तो ख़ुदा अपनी रहमत से ऐसी बुराई को नेकी के ख़ाने में लिख देगा। क्योंकि वह आदमी को ख़ुदा की तरफ रुजूअ करने का सबब बन गई।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

और जो लोग झूठे काम में शामिल नहीं होते। और जब किसी बेहूदा चीज से उनका गुजर होता है तो संजीदगी के साथ गुजर जाते हैं। और वे ऐसे हैं कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाती है तो वे उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीवी और औलाद की तरफ से आंखों की ठंडक अता फरमा और हमें परहेजगारों का इमाम बना। (72-74)

मौजूदा दुनिया में जो ग़लत काम हैं उन सबका मामला यह है कि शैतान ने उन्हें जाहिरी तौर पर ख़ूबसूरत बना रखा है। हर बातिलपरस्त अपने नजरिये को ख़ुशनुमा अल्फाज में पेश करता है। इसी जाहिरी फरेबी की वजह से लोग इन चीजों की तरफ खिंचते हैं। अगर उनके इस जाहिर ग़िलाफ को हटा दिया जाए तो हर चीज इतनी मकरूह (घृणित) दिखाई देने लगे कि कोई शख़्स उसके करीब जाने के लिए तैयार न हो।

इस एतबार से हर बुराई एक किस्म का झूठ है जिसमें आदमी मुब्तिला होता है। मौजूदा दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह झूठ को पहचाने। वह जाहिरी पर्दे को फाड़कर चीजों को उनकी अस्ल हकीकत के एतबार से देख सके।

जब किसी को एक ऐसी नसीहत की जाए जिसमें उसकी जात पर जद पड़ती हो तो वह

फौरन बिफर उठता है। ऐसा शख़्स ख़ुदा की नजर में अंधा बहरा है। क्योंकि उसने अपनी आंख से यह काम न लिया कि वह हकीकत को देखे। उसने अपने कान से यह काम न लिया कि वह सच्चाई की आवाज को सुने। उसने नसीहत का इस्तकबाल सुनने और देखने वाले आदमी की हैसियत से नहीं किया। उसने नसीहत का इस्तकबाल एक ऐसे आदमी की हैसियत से किया जो सुनने और देखने की सलाहियत से महरूम हो। ख़ुदा की नजर में देखने और सुनने वाला वह है जो लग्व (निरर्थक घटिया बात) को देखे तो उससे एराज करे और जब उसके सामने सच्ची नसीहत आए तो फौरन उसे कुबूल कर ले।

हर आदमी जो कुंबे वाला है वह अपने कुंबे का 'इमाम' (मुखिया) है। अगर उसके कुंबे वाले मुत्तकी (ईश-परायणता) हैं तो वह मुत्तकियों का इमाम है। और अगर उसके कुंबे वाले ख़ुदा फरामोश हैं तो ख़ुदा फरामोशों का इमाम।

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾ خَالِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

ये लोग हैं कि उन्हें बालाख़ाने (उच्च भवन) मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने सब्र किया। और उनमें उनका इस्तकबाल दुआ और सलाम के साथ होगा। वे उनमें हमेशा रहेंगे। वह ख़ूब जगह है ठहरने की और ख़ूब जगह है रहने की। कहो कि मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता। अगर तुम उसे न पुकारो। पस तुम झुठला चुके तो वह चीज अनकरीब होकर रहेगी। (75-77)

जन्नत के ऊंचे बालाख़ानों में वे लोग जगह पाएंगे जिन्होंने दुनिया में अपने आपको हक के ख़ातिर नीचा कर लिया था। उन्होंने दुनिया में तवाजोअ (विनम्रता) इख़्तियार की थी इसलिए आख़िरत में उनका ख़ुदा उन्हें सरफराजी (उच्च स्थान) अता फरमाएगा। यही वह बात है जिसे हजरत मसीह ने इन लफ्जों में अदा फरमाया : 'मुबारक हैं वे जो दिल के ग़रीब हैं। आसमान की बादशाही में वही दाख़िल होंगे।'

वे औसाफ जो किसी आदमी को जन्नत में ले जाने वाले हैं उन्हें हासिल करना उस शख़्स के लिए मुमकिन होता है जो सब्र करने के लिए तैयार हो। जन्नत वह आला मकाम है जहां आदमी की तमाम ख़्वाहिशें कामिल तौर पर पूरी होंगी। मगर जन्नत उसी साबिर इंसान के हिस्से में आएगी जिसने दुनिया में अपनी ख़्वाहिशों पर कामिल रोक लगाई हो। जन्नत सब्र की कीमत है। और जहन्नम उसके लिए है जो दुनिया की जिंदगी में सब्र की मत्लूबा (अपेक्षित) कीमत देने के लिए तैयार नहीं हुआ था।

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طسٓمٓ ۝١ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝٣ إِنْ نَشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۝٤ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝٦

आयतें-227 **सूरह-26. अश-शुअरा** रुकूअ-11

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इस पर कि वे ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर आसमान से निशानी उतार दें। फिर उनकी गर्दनें उसके आगे झुक जाएं। उनके पास रहमान की तरफ से कोई भी नई नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुख़ी न करते हों। पस उन्होंने झुठला दिया। तो अब अनक़रीब उन्हें उस चीज की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी जिसका वे मजाक़ उड़ाते थे। (1-6)

हक की दावत जब जाहिर होती है तो वह हमेशा कलामे मुबीन (सुस्पष्ट वाणी) में जाहिर होती है। किसी दावत के ख़ुदाई दावत होने की यह भी एक अलामत है कि उसकी हर बात वाजेह हो। उसकी हर बात खुले हुए दलाइल पर मबनी (आधारित) हो। एक शख़्स उसका इंकार तो कर सके मगर कोई शख़्स वाकई तौर पर यह कहने की पोजीशन में न हो कि उसका पैग़ाम मेरी समझ में नहीं आया।

'शायद तुम अपने आपको हलाक कर लोगे' का जुमला उस कामिल ख़ैरख़्वाही (परहित) को बता रहा है जो दाओी (आह्वानकर्ता) को मदऊ के हक में होती है। दावती अमल ख़ालिस ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से उबलता है। इसलिए दाओी जब देखता है कि मदऊ उसके पैग़ाम को नहीं मान रहा है तो वह उसके ग़म में इस तरह हल्कान होने लगता है जिस तरह मां अपने बच्चे की भलाई के लिए हल्कान (व्यथित) होती है। कुरआन का यह जुमला कुरआन के दाओी की ख़ैरख़्वाहाना कैफ़ियत की तस्दीक है न कि उस पर तंक़ीद।

हक की दावत (आह्वान) ख़ुदा की दावत होती है। ख़ुदा वह ताकतवर हस्ती है जिसके मुकाबले में किसी के लिए इंकार व सरकशी की गुंजाइश न हो। मगर यह सूरतेहाल ख़ुद ख़ुदा के अपने मंसूबे की बिना (आधार) पर है। ख़ुदा को अपनी जन्नत में बसाने के लिए वे कीमती इंसान दरकार हैं जो फ़रेब से भरी हुई दुनिया में हक को पहचानें और किसी दबाव के

बग़ैर उसके आगे झुक जाएं। ऐसे इंसानों का चुनाव ऐसे ही हालात में किया जा सकता था जहां हर इंसान को फ़िक्र (विचार) व अमल की पूरी आजादी दी गई हो।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝٧ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝٨ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝٩

क्या उन्होंने जमीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस क़द्र तरह-तरह की उम्दा चीजें उगाई हैं। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, रहम करने वाला है। (7-9)

मिट्टी के अंदर से हरे-भरे दरख़्त का निकलना उतना ही अजीब है जितना यह वाकया कि मिट्टी के अंदर से अचानक एक जिंदा ऊंट निकल आए और जमीन पर चलने फिरने लगे। लोग दूसरी किस्म के वाक्ये को देखकर हैरान होते हैं। हालांकि उससे ज्यादा बड़ा वाक्या हर वक्त जमीन पर हो रहा है। मगर उसमें उन्हें कोई सबक नहीं मिलता।

अल्लाह तआला को इंसान से जो चीज मत्लूब है वह यह है कि वह मामूली वाकेयात में छुपे हुए ग़ैर मामूली पहलुओं को देखे। वह असबाब के तहत पेश आने वाले वाकये में ख़ुदा की बराहेरास्त कारफ़रमाई का मुशाहिदा (अवलोकन) कर ले। जो लोग इस आला बसीरत (समझ) का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो ख़ुदा पर ईमान लाने वाले हैं। और वही वे लोग हैं जो ख़ुदा की अबदी रहमतों में दाख़िल किए जाएंगे।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝١٠ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ۝١١ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝١٢ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ۝١٣ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝١٤

और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि तुम जालिम क़ौम के पास जाओ, फ़िरऔन की कौम के पास, क्या वे नहीं डरते। मूसा ने कहा ऐ मेरे रब, मुझे अंदेशा है कि वे मुझे झुठला देंगे। और मेरा सीना तंग होता है और मेरी जबान नहीं चलती। पस तू हारून के पास पैग़ाम भेज दे। और मेरे ऊपर उनका एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूं कि वे मुझे क़त्ल कर देंगे। (10-14)

हजरत मूसा को मिस्र के फ़िरऔन पर दीने तौहीद की तब्लीग़ करनी थी जो अपने जमाने में दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे मुतमद्दिन (वैभवशाली) सल्तनत का बादशाह था। दूसरी तरफ़ हजरत मूसा का मामला यह था कि वह बनी इस्राईल के फ़रज़ंद थे जिनकी हैसियत उस वक्त के मिस्र में ग़ुलामों और मजदूरों जैसी थी। क़ौमे फ़िरऔन का एक शख़्स हजरत मूसा के

हाथ से बिला इरादा हलाक हो गया था। मजीद यह कि हजरत मूसा अपने अंदर कुव्वते बयान की कमी महसूस फरमाते थे। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए हजरत मूसा का इंतिख़ाब (चयन) फरमाया।

हकीकत यह है कि ख़ुदा जाहिर से ज्यादा आदमी के बातिन (भीतर) को देखता है। और अगर किसी के अंदर बातिनी जौहर मौजूद हो तो उसी बातिनी जौहर की बुनियाद पर उसे अपने दीन के लिए मुंतख़ब फरमा लेता है। बातिनी जौहर आदमी को ख़ुद पेश करना पड़ता है। इसके बाद अगर बएतबार जाहिर कुछ कमी हो तो वह ख़ुदा की तरफ से पूरी कर दी जाती है।

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾ فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾ قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

फरमाया कभी नहीं। पस तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। पस तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और कहो कि हम ख़ुदावंद आलम के रसूल हैं। कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। फिरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने अंदर नहीं पाला। और तुमने अपने उम्र के कई साल हमारे यहां गुजारे। और तुमने अपना वह फेअल (कृत्य) किया जो किया। और तुम नाशुक्रों में से हो। (15-19)

ख़ुदा जिस शख़्स को अपनी नुमाइंदगी के लिए मुंतख़ब करे वह हर एतबार से ख़ुदा की हिफाजत में होता है। इसी के साथ उसके लिए मजीद एहतिमाम यह किया जाता है कि उसे ख़ुसूसी निशानियां दी जाती हैं जो इस बात की सरीह अलामत होती हैं कि उसका मामला ख़ुदा का मामला है। मगर इंसान इतना जालिम है कि इसके बावजूद वह एतराफ नहीं करता।

हजरत मूसा ने बनी इस्राईल के सिलसिले में फिरऔन से जो मुतालबा किया उसका तफ्सीली मतलब क्या था, इसके बारे में कुरआन में कोई वजाहत मौजूद नहीं है। तौरात का बयान इस सिलसिले में हस्बे जेल है :

(मूसा ने फिरऔन से कहा) अब तू हमें तीन दिन की मंजिल तक बयाबान (निर्जन-स्थल) में जाने दे। ताकि हम ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के लिए कुर्बानी करें (4 : 18)। मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे बयाबान में मेरे लिए ईद करें (1 : 5) तब फिरऔन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा कि तुम जाओ और अपने ख़ुदा के लिए इसी मुल्क में कुर्बानी करो। मूसा ने कहा ऐसा करना मुनासिब नहीं क्योंकि हम ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के लिए उस चीज की कुर्बानी करेंगे

जिससे मिस्री नफरत रखते हैं। सो अगर हम मिस्रियों की आंखों के आगे उस चीज की कुर्बानी करें जिससे वे नफरत रखते हैं तो क्या वे हमें संगसार न कर डालेंगे। पस हम तीन दिन की राह बयानात में जाकर ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के लिए जैसा वह हमें हुक्म देगा कुर्बानी करेंगे। (8 : 25-27)

बाइबल के बयान से बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि हजरत मूसा का यह सफर हिजरत (स्थान-परिवर्तन) के लिए नहीं बल्कि तर्बियत के लिए था। मिस्र में गाय मुकद्दस मानी जाती थी। सदियों के अमल से बनी इस्राईल भी उससे मुतअस्सिर हो गए थे। अब हजरत मूसा ने चाहा कि बनी इस्राईल को कुछ दिनों के लिए मिस्र के मुश्रिकाना माहौल से बाहर ले जाएं और उन्हें आजाद फजा में रखकर उनकी तर्बियत करें।

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدْتَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾

मूसा ने कहा। उस वक्त मैंने किया था और मुझसे ग़लती हो गई। फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुमसे भाग गया। फिर मुझे मेरे रब ने दानिशमंदी (सूझबूझ) अता फरमाई और मुझे रसूलों में से बना दिया। और यह एहसान है जो तुम मुझे जता रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना लिया। (20-22)

हजरत मूसा ने फिरऔन के सामने तौहीद की दावत पेश की और असा और यदेबेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा दिखाया। फिरऔन ने आपकी अहमियत घटाने के लिए उस वक्त आपकी साबिका (पिछली) जिंदगी की दो बातें याद दिलाईं। एक, बचपन में हजरत मूसा का फिरऔन के घर में परवरिश पाना। दूसरे, एक किब्ती का कत्ल। हजरत मूसा ने जवाब में फरमाया कि तुम्हारे घर में मेरी परवरिश की नौबत ख़ुद तुम्हारे जुल्म की वजह से आई। तुम चूंकि बनी इस्राईल के बच्चों को कत्ल कर रहे थे इसलिए मेरी मां ने यह किया कि मुझे टोकरी में रखकर बहते दरिया में डाल दिया। और इसके बाद ख़ुद तुमने मुझे दरिया से निकाला और मुझे अपने घर में रखा। जहां तक किबती के कत्ल का मामला है तो वह मैंने इरादतन नहीं किया। मैंने अपने इस्राईली भाई की तरफ से किबती की जारिहिय्यत (आक्रामकता) का दिफाअ किया था और वह इत्तफाकन मर गया।

हजरत मूसा किबती के कत्ल के बाद मिस्र को छोड़कर मदयन चले गए थे। वहां वह कई साल तक रहे। शहर की मस्नूई (कृत्रिम) फजा से निकल कर देहात की फित्तरी फिजा में चन्द साल गुजारना शायद आपकी तर्बियत के लिए जरूरी था। चुनांचे मदयन से निकल कर जब आप दुबारा मिस्र जाने लगे तो रास्ते में अल्लाह तआला ने आपको नुबुव्वत अता फरमाई।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٣ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ
كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٢٤ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝٢٥ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٦ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۝٢٧ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ
وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢٨ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ
لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝٢٩ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٠ قَالَ فَاْتِ
بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٣١ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝٣٢
وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝٣٣ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا
لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝٣٤ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ڰ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝٣٥

फिरऔन ने कहा कि रब्बुल आलमीन क्या है। मूसा ने कहा, आसमानों और जमीन का रब और उन सबका जो उनके दर्मियान हैं, अगर तुम यकीन लाने वाले हो। फिरऔन ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो। मूसा ने कहा वह तुम्हारा भी रब है। और तुम्हारे अगले बुजुर्गों का भी। फिरऔन ने कहा तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है मजनून है। मूसा ने कहा, मश्रिक (पूर्व) व मग़्रिब (पश्चिम) का रब और जो कुछ इनके दर्मियान है, अगर तुम अक्ल रखते हो। फिरऔन ने कहा, अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद (पूज्य) बनाया तो मैं तुम्हें कैद कर दूंगा। मूसा ने कहा क्या अगर मैं कोई वाजेह दलील पेश करूं तब भी। फिरऔन ने कहा फिर उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक सरीह (साक्षात) अजदहा था। और उसने अपना हाथ खींचा तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था। फिरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा, यकीनन यह शख़्स एक माहिर जादूगर है। वह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दे। पस तुम क्या मश्विरा देते हो। (23-35)

तुम्हारा रब्बुल आलमीन क्या है। फिरऔन का यह जुमला दरअस्ल इस्तेहजा (मज़ाक) था न कि सवाल। मगर हजरत मूसा ने किसी झुंझलाहट के बग़ैर बिल्कुल मोअतदिल (शालीन) अंदाज में इसका जवाब दिया। फिरऔन ने दुबारा अपने दरबारियों से यह कहकर हजरत मूसा की तहकीर (अपमान) की कि 'सुनते हो, यह क्या कह रहे हैं।' हजरत मूसा ने इसे भी नजरअंदाज किया और अपना सिलसिला कलाम बदस्तूर जारी रखा। फिरऔन ने मुश्तइल (उत्तेजित) होकर हजरत मूसा को दीवाना करार दिया। मगर अब भी हजरत मूसा ने अपने एतदाल को नहीं खोया। फिरऔन ने कैद की धमकी दी तो हजरत मूसा ने अपनी आख़िरी

दलील (मोजिजा) को उसके सामने रख दिया। अब फिरऔन के लिए मजीद कुछ कहने की गुंजाइश न थी। मगर उसने हार न मानी। उसने हजरत मूसा की अहमियत घटाने के लिए कहा कि यह कोई ख़ुदाई वाकया नहीं। यह तो महज एक साहिराना वाक़्या है। और हर जादूगर ऐसा करिश्मा दिखा सकता है।

हजरत मूसा की दावत (आह्वान) सरासर पुरअम्न दावत थी। उसका सियासत और हुकूमत से भी बराहेरास्त कोई तअल्लुक न था। मगर फिरऔन ने अपनी कौम को आपके ख़िलाफ भड़काने के लिए यह कह दिया कि वह हमें हमारे मुल्क से निकाल देना चाहते हैं। फिरऔन की ग़ैर संजीदगी इसी से वाजेह है कि हजरत मूसा ने तो ख़ुद अपनी कौम को साथ लेकर मिस्र से बाहर जाने की बात की थी। मगर फिरऔन ने उसे उलट कर यह कह दिया कि मूसा हम लोगों को मिस्र से बाहर निकाल देना चाहते हैं।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝٣٦ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝٣٧
فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٣٨ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝٣٩
لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝٤٠ فَلَمَّا جَاۗءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ
اَىِٕنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝٤١ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ۝٤٢

दरबारियों ने कहा कि इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए। और शहरों में हरकारे भेजिए कि वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएं। पस जादूगर एक दिन मुकर्रर वक्त पर इकट्ठा किए गए और लोगों से कहा गया कि क्या तुम जमा होगे। ताकि हम जादूगरों का साथ दें अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों। फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फिरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहे। उसने कहा हां, और तुम इस सूरत में मुकर्रब (निकटवर्ती) लोगों में शामिल हो जाओगे। (36-42)

फिरऔन और उसके दरबारियों ने हजरत मूसा के मामले को सिर्फ जादू का मामला समझा। इसलिए जादू के जरिए उनका मुकाबला करने का मंसूबा बनाया। उनकी सोच जहां तक पहुंची वह सिर्फ यह था किमूसा अगर लकड़ी को सांप बना सकते हैं तो हमारे जादूगर भी लकड़ी को सांप बना सकते हैं। इससे आगे की उन्हें ख़बर न थी। वे मूसा के मामले को इंसान का मामला समझते थे इसलिए इंसान के जरिए उसका तोड़ करना चाहते थे। उन्होंने उस राज को नहीं जाना कि मूसा का मामला ख़ुदा का मामला है और कौन इंसान है जो ख़ुदा से टक्कर ले सके।

हजरत मूसा और जादूगरों के दर्मियान मुकाबले के लिए मिस्रियों के सालाना कौमी

त्यौहार का दिन मुकर्रर हुआ। और उसके लिए एक बहुत बड़े मैदान का इंतिख़ाब हुआ ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग जमा हों और ज्यादा से ज्यादा जादूगरों की हौसलाअफज़ाई कर सकें।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾ فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَٰلِبُونَ ﴿٤٤﴾ فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَٰجِدِينَ ﴿٤٦﴾ قَالُوٓا ءَامَنَّا بِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ﴿٤٨﴾

मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो कुछ डालना हो डालो। पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं। और कहा कि फ़िरऔन के इक्बाल की कसम हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो अचानक वह उस स्वांग को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था। फिर जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा हम ईमान लाए रब्बुल आलमीन पर जो मूसा और हारून का रब है। (43-48)

जादूगरों ने अपनी रस्सियां और लाठियां मैदान में डालीं तो देखने वालों को ऐसा महसूस हुआ गोया कि वे सांप बनकर मैदान में दौड़ रही हैं। मगर यह कोई हकीकी तब्दीली न थी, यह सिर्फ नजरबंदी का मामला था। इसके बरअक्स हजरत मूसा के असा का सांप बनना असा का मौजज़ए ख़ुदावंदी (दिव्य चमत्कार) में ढल जाना था। चुनांचे जब हजरत मूसा का असा सांप बनकर मैदान में चला तो अचानक उसने जादूगरों के सारे तिलिस्म को बातिल कर दिया। इसके बाद जादूगरों की रस्सियां और लाठियां सिर्फ रस्सियां और लाठियां होकर रह गईं जैसा कि वह हकीकत थी।

जादूगरों ने पहले हजरत मूसा को अपनी तरह का एक जादूगर समझा था। मगर तजर्बे ने उनकी आंखें खोल दीं। वे जादू के फन को बख़ूबी जानते थे इसलिए वे फौरन समझ गए कि यह जादूगरी नहीं है बल्कि पैग़म्बरी है। ताहम उनके लिए मुमकिन था कि अब भी वे एतराफ न करें और हजरत मूसा को रद्द करने के लिए फ़िरऔन की तरह कुछ झूठे अल्फ़ाज बोल दें। मगर एक जिंदा इंसान के लिए यह नामुमकिन होता है कि हक के पूरी तरह खुल जाने के बाद वह हक का एतराफ न करे। जादूगर इसी किस्म के ज़िंदा इंसान थे। चुनांचे उन्होंने फौरन हजरत मूसा की सदाक्त (सच्चाई) का एतराफ कर लिया।

قَالَ ءَامَنتُمْ لَهُۥ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُۥ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَٰفٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾ قَالُوا لَا ضَيْرَ ۖ إِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَٰيَٰنَآ أَن كُنَّآ أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

फ़िरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं। बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। पस अब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पांव काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। उन्होंने कहा कि कुछ हरज नहीं। हम अपने मालिक के पास पहुंच जाएंगे। हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को माफ कर देगा। इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने। (49-51)

जादूगरों का हजरत मूसा पर ईमान लाना फ़िरऔन के लिए जबरदस्त रुसवाई का बाइस था। उसने इसके इजाले के लिए यह किया कि इस पूरे वाक्ये को साजिश करार दे दिया। उसने कहा कि तुम लोग मूसा के साथ मिले हुए हो। और तुमने जान बूझकर उनके मुकाबले में अपनी शिकस्त का मुजाहिरा किया है ताकि मूसा की बड़ाई लोगों के दिलों पर कायम हो और तुम्हारे लिए अपना मक्सद हासिल करना आसान हो जाए। फ़िरऔन ने जादूगरों को अपना यह फैसला सुनाया कि तुम लोगों को बग़ावत की सजा दी जाएगी। तुम्हारे हाथ पांव बेतर्तीब काट कर तुम्हें बरसरे आम सूली पर चढ़ाया जाएगा। इस शदीद हुक्म के बावजूद जादूगर बेहिम्मत नहीं हुए। वही जादूगर जो पहले (आयत 41) फ़िरऔन के इक्बाल (गरिमा) की कसम खा रहे थे और उससे इनाम व इकराम की दरख़्वास्त कर रहे थे उन्होंने बिल्कुल बेख़ौफ होकर कहा कि तुम जो चाहे करो अब हम मूसा के दीन से हटने वाले नहीं हैं। इस आला हिम्मती का सबब ईमानी दरयाफ्त थी। आदमी किसी चीज का खोना उस वक्त बर्दाश्त करता है जबकि उसे खोकर वह ज्यादा बड़ी चीज पा रहा हो। ईमान से पहले जादूगरों के पास सबसे बड़ी चीज फ़िरऔन और उसका इनाम था। मगर ईमान के बाद उन्हें ख़ुदा और उसकी जन्नत सबसे बड़ी चीज़ नजर आने लगी। यही वजह है कि ईमान से पहले जिस चीज की कुर्बानी वे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे ईमान के बाद निहायत ख़ुशी से वे उसकी कुर्बानी देने पर राजी हो गए।

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِيٓ إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾ فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُونَ ﴿٥٥﴾ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَٰذِرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَخْرَجْنَٰهُم مِّن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾ كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَٰهَا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿٥٩﴾

और हमने मूसा को 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ। बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। पस फ़िरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे। ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। और उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया है। और हम एक मुस्तइद (चुस्त) जमाअत हैं। पस हमने उन्हें बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से निकाला, और ख़ज़ानों

और उम्दा मकानात से। यह हुआ, और हमने बनी इस्राईल को इन चीजों का वारिस बना दिया। (52-59)

वर्षों की दावती जद्दोजहद के बावजूद फिरऔन हजरत मूसा पर ईमान न लाया। आख़िरकार इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद अल्लाह तआला ने हजरत मूसा को हुक्म दिया कि बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से बाहर चले जाएं। फिरऔन को जब मालूम हुआ कि बनी इस्राईल इज्तिमाई तौर पर मिस्र से रवाना हो गए हैं। तो उसने अपने लश्कर और अपने आयाने सल्तनत (पदाधिकारियों) के साथ उनका पीछा किया। बजाहिर फिरऔन का यह इक्दाम बनी इस्राईल के ख़िलाफ था। मगर अमलन वह ख़ुद उसके अपने ख़िलाफ इक्दाम बन गया। इस तरह फिरऔन और उसके साथी अपनी शानदार आबादियों को छोड़कर वहां पहुंच गए जहां उन्हें यकजाई (सामूहिक) तौर पर समुद्र में ग़र्क होना था।

अल्लाह तआला ने एक तरफ फिरऔन और उसके साथियों को उनके जुल्म के नतीजे में अपनी नेमतों से महरूम किया जो उन्हें मिस्र में हासिल थीं। दूसरी तरफ बनी इस्राईल के सालिहीन के साथ यह मामला फरमाया कि उन्हें एक मुद्दत के बाद फिलिस्तीन पहुंचाया। और वहां उन्हें ये तमाम नेमतें मजीद इजाफे के साथ दे दीं।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالَ كَلَّآ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿۶۲﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿۶۳﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿۶۴﴾ وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿۶۵﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۶۶﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۶۷﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۶۸﴾

पस उन्होंने सूरज निकलने के वक्त उनका पीछा किया। फिर जब दोनों जमाअतें आमने सामने हुईं तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा कि हरगिज नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है। वह मुझे राह बताएगा। फिर हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि अपना असा दरिया पर मारो। पस वह फट गया और हर हिस्सा ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और हमने दूसरे फरीक (पक्ष) को भी उसके करीब पहुंचा दिया। और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया। फिर दूसरों को ग़र्क कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तेरा रब जबरदस्त है रहमत वाला है। (60-68)

फिरऔन बनी इस्राईल का पीछा करते हुए वहां पहुंच गया जहां बनी इस्राईल के आगे समुद्र था और पीछे फिरऔन और उसका लश्कर। बनी इस्राईल इस नाजुक सूरतेहाल को देखकर घबरा उठे। बाइबल के बयान के मुताबिक वे मूसा से कहने लगे 'क्या मिस्र में कब्रें न थीं कि तू हमें वहां से मरने के लिए बयाबान (निर्जन स्थान) में ले आया है।'

मगर हजरत मूसा को यकीन था कि अल्लाह तआला उनकी मदद फरमाएगा। चुनांचे अल्लाह तआला के हुक्म पर हजरत मूसा ने अपना असा (डंडा) समुद्र के पानी पर मारा। पानी बीच से फट गया। दोनों तरफ ऊंची दीवारों की मानिंद पानी खड़ा हो गया। और दर्मियान में ख़ुश्क रास्ता निकल आया। बनी इस्राईल इस रास्ते से पार होकर अगले किनारे पर पहुंच गए।

यह मंजर देखकर फिरऔन ने समझा कि वह भी इस खुले हुए रास्ते से पार हो सकता है। उसे मालूम न था कि यह रास्ता नहीं है बल्कि ख़ुदा का हुक्म है। फिरऔन अपने पूरे लश्कर के साथ उसके अंदर दाख़िल हो गया। जैसे ही वे लोग बीच में पहुंचे ख़ुदा के हुक्म से समुद्र का खड़ा हुआ पानी दोनों तरफ से मिलकर बराबर हो गया। फिरऔन अपने तमाम लश्कर के साथ दफअतन (यकायक) ग़र्क हो गया। एक ही नक्शे में एक गिरोह के लिए नजात छुपी हुई थी और दूसरे गिरोह के लिए हलाकत।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۶۹﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿۷۱﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿۷۲﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿۷۳﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۴﴾

और उन्हें इब्राहीम का किस्सा सुनाओ। जबकि उसने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि तुम किस चीज की इबादत करते हो। उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर इस पर जमे रहेंगे। इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो। या वे तुम्हें नफा नुक्सान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है। (69-74)

एक तरफ हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कौम थी कि उसने बाप दादा को जो कुछ करते हुए देखा वही ख़ुद भी करने लगी। दूसरी तरफ हजरत इब्राहीम थे जिन्होंने ख़ुद अपनी अक्ल से सोचा। उन्होंने माहौल से ऊपर उठकर सच्चाई को मालूम करने की कोशिश की। यही वह ख़ास सिफ्त है जो आदमी को ख़ुदा की मअरफ्त तक पहुंचाती है। और इस सिफ्त में जो कमाल दर्जे पर हो उसे ख़ुदा अपने दीन की पैग़ामबरी के लिए मुंतख़ब फरमाता है।

'हम अपने बुतों पर जमे रहेंगे।' का लफ्ज बताता है कि हजरत इब्राहीम से गुफ्तगू में उन्होंने अपने आपको बेदलील पाया। इसके बावजूद वे मानने के लिए तैयार न हुए। दलील की

सतह पर शिकस्त खाने के बावजूद वे तअस्सुब (विद्वेष) की सतह पर अपने आबाई (पैतृक) दीन पर कायम रहे।

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾

इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीजों को देखा भी जिनकी इबादत करते हो, तुम भी और तुम्हारे बड़े भी। ये सब मेरे दुश्मन हैं सिवा एक ख़ुदावंद आलम के जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरी रहनुमाई फरमाता है। और जो मुझे खिलाता है और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूं तो वही मुझे शिफा देता है। और जो मुझे मौत देगा फिर मुझे जिंदा करेगा। और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूं कि बदले के दिन मेरी ख़ता माफ करेगा। (75-82)

इंसान एक मुस्तकिल हस्ती के तौर पर दुनिया में आता है। उसके अंदर अक्ल है जो ख़ैर और शर में फर्क करती है, जो जुज़इयात (अंशों) से कुल्लियात (कुल) अख़्ज करती है और महसूसात से माकूलात (तथ्यों) तक पहुंच जाती है। आदमी के लिए यहां निहायत आला दर्जे पर वे चीजें मौजूद हैं जो उसे मुसलसल रिज़्क फराहम करती हैं। आदमी बीमार होता है तो वह पाता है कि यहां वे असबाब भी मुकम्मल तौर पर मौजूद हैं जिनसे इलाज का फन वजूद में आ सके। फिर आदमी देखता है कि बजाहिर सारी आजादी के बावजूद वह मौत के सामने बेबस है। वह एक ख़ास उम्र को पहुंच कर मर जाता है।

इन वाकेयात का तअल्लुक एक ख़ुदा के सिवा किसी और से नहीं हो सकता, फिर कैसे जाइज है कि एक ख़ुदा के सिवा किसी और की इबादत की जाए। मजीद यह कि इस मामले में आदमी को हददर्जा संजीदा होना चाहिए। क्योंकि यही वाकेयात यह इशारा भी कर रहे हैं कि जो ख़ुदा यह सब कर रहा है वह इंसान से हिसाब लेने के लिए उसे एक रोज अपने यहां बुलाएगा। मौत इसी बुलावे के अमल का आग़ाज (आरंभ) है।

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾

ऐ मेरे रब, मुझे हिक्मत (तत्वदर्शिता) अता फरमा और मुझे नेक लोगों में शामिल फरमा। और मेरा बोल सच्चा रख बाद के आने वालों में। और मुझे बाग़े नेमत के वारिसों में से बना। और मेरे बाप को माफ फरमा, बेशक वह गुमराहों में से है। और मुझे उस दिन रुसवा न कर जबकि लोग उठाए जाएंगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद। मगर वह जो अल्लाह के पास कल्बे सलीम (पाकदिल) लेकर आए। (83-89)

इस आयत में 'हुक्म' से मुराद सही फहम है। यानी चीजों को वैसा ही देखना जैसा कि वे फिलवाकअ हैं। नुबुव्वत के बाद किसी बंदाए ख़ुदा के लिए यह सबसे बड़ी नेमत है। इसीलिए हदीस में आया है कि : 'अल्लाह जिस शख़्स के लिए ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ दे देता है।'

हजरत इब्राहीम ने अपनी दुआ में जो बातें कहीं वे सब कुबूल हो गई। मगर अपने बाप (आजर) की मग्फिरत की दुआ कुबूल नहीं हुई। इससे अंदाजा होता है कि दुआ तमामतर ख़ुदा और बंदे के दर्मियान का मामला है। किसी शख़्स की दुआ किसी दूसरे शख़्स को मग्फिरत नहीं दिला सकती।

अल्लाह तआला के यहां अस्ल कीमत 'कल्बे सलीम' की है। कल्बे सलीम से मुराद कल्बे सही या पाक दिल है यानी वह दिल जो शिर्क और निफाक और हसद और बुग्ज के जज्बात से पाक हो। बअल्फाज दीगर ख़ुदा ने पैदाइशी तौर पर जो दिल आदमी को दिया था वही दिल लेकर वह ख़ुदा के यहां पहुंचे। कोई दूसरा दिल लेकर वह ख़ुदा के यहां हाजिर न हो।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾ تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी। और जहन्नम गुमराहों के लिए जाहिर की जाएगी। और उनसे कहा जाएगा। कहां हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे, अल्लाह के सिवा। क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे। या वे अपना बचाव कर सकते हैं। फिर उसमें

औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वे और गुमराह लोग और इब्लीस (शैतान) का लश्कर, सबके सब। वे उसमें बाहम झगड़ते हुए कहेंगे। ख़ुदा की कसम, हम खुली हुई गुमराही में थे। जबकि हम तुम्हें ख़ुदावंद आलम के बराबर करते थे। और हमें तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया। पस अब हमारा कोई सिफारिशी नहीं। और न कोई मुख़्लिस (निष्ठावान) दोस्त। पस काश हमें फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (90-104)

आदमी की जन्नत और जहन्नम आदमी से दूर नहीं। दोनों के दर्मियान सिर्फ एक पर्दा हायल है। कियामत जब इस पर्दे को हटाएगी तो हर आदमी देखेगा कि वह ऐन अपनी जन्नत या ऐन अपनी जहन्नम के किनारे खड़ा हुआ था। अगरचे ग़ाफिल इंसान उसे बहुत दूर की चीज समझ रहा था।

'मुजरिमीन' से मुराद यहां झूठे लीडर हैं। ये लोग अपने वक्त के समाज में बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए थे। उन्होंने हक की दावत को सिर्फ इसलिए कुबूल नहीं किया कि इसके बाद उनकी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी। उनका किब्र (अहं, बड़ाई) उनके लिए हक के एतराफ में रुकावट बन गया। इसका नतीजा यह हुआ कि उनके पैरोकार भी हक की दावत को काबिले लिहाज चीज न समझ सके।

'लीडरों को ख़ुदावंद आलम के बराबर करना' यह है कि उनकी बात को वह दर्जा दिया जाए जो ख़ुदावंद आलम की बात का दर्जा होता है। मुफस्सिर इब्ने कसीर ने इसकी तशरीह इन अल्फाज में की है : 'हम तुम्हारे हुक्म की इताअत (आज्ञापालन) इस तरह करते रहे जिस तरह रब्बुल आलमीन के हुक्म की इताअत की जाती है।' वे लोग जो दुनिया में अपने लीडरों की बात को ख़ुदा की बात की तरह मानते थे वे आख़िरत में अपने लीडरों को ख़ुद अपनी जबान से मुजरिम कहेंगे। मगर इसका उन्हें कोई फायदा नहीं मिलेगा। क्योंकि मुजरिम और हकपरस्त को पहचानने की जगह दुनिया थी न कि आख़िरत।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾

नूह की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं हो। मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो। और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (बदला) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के जिम्मे है। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा क्या हम तुम्हें मान लें। हालांकि तुम्हारी पैरवी रजील (नीच) लोगों ने की है। नूह ने कहा कि मुझे क्या ख़बर जो वे करते रहे हैं। उनका हिसाब तो मेरे रब के जिम्मे है, अगर तुम समझो। और मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं हूं। मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूं। (105-115)

हजरत नूह की कौम ने उन्हें झुठलाया। हालांकि उनकी दावत (आह्वान) में दलील का वजन पूरी तरह मौजूद था। इसी के साथ उनकी सीरत उनकी सदाकत की तस्दीक कर रही थी। हजरत नूह के बारे में उनकी कौम के लोग जानते थे कि वह एक सच्चे और अमानतदार आदमी हैं। वे जानते थे कि हजरत नूह जो दावत दे रहे हैं उससे उनका कोई जाती मफाद वाबस्ता नहीं। ये ख़ुसूसियात हजरत नूह को संजीदा साबित करने के लिए काफी थीं। और जो आदमी मख़्लूक के बारे में संजीदा हो, वह ख़ालिक के बारे में ग़ैर संजीदा नहीं हो सकता।

हजरत नूह की कौम ने आपकी दावत को मानने से इंकार कर दिया। हालांकि इस इंकार के लिए उनके पास ग़ैर मुतअल्लिक बातों के सिवा कोई चीज मौजूद न थी। किसी दावत को रद्द करने के लिए यह कहना कि उसका साथ देने वाले मामूली लोग हैं। यह दावत की तरदीद (रद्द) नहीं बल्कि ख़ुद अपनी तरदीद है। क्योंकि इसका मतलब यह है कि आदमी दलील के एतबार से इस दावत के हक में कुछ कहने की गुंजाइश नहीं पाता। ताहम वह सिर्फ इसलिए उसका साथ देना नहीं चाहता कि उसमें मामूली किस्म के लोग जमा हैं। उसे यह उम्मीद नहीं कि उसके हलके में शामिल होने के बाद उसे कोई बड़ा मकाम हासिल हो सकेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

उन्होंने कहा कि ऐ नूह अगर तुम बाज न आए तो जरूर संगसार कर दिए जाओगे। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया। पस तू मेरे और उनके दर्मियान वाजेह फैसला फरमा दे। और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उन्हें नजात

दे। फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया। फिर इसके बाद हमने बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया। यकीनन इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वही जबरदस्त है, रहमत वाला है। (116-122)

हजरत नूह सदियों तक अपनी कौम के लोगों को हक की तरफ बुलाते रहे। मगर उन्होंने आपकी बात न मानी। यहां तक कि आख़िरकार उन्होंने फैसला किया कि सब लोग मिलकर नूह को पत्थर मारें, यहां तक कि वह हलाक हो जाएं और फिर सुबह व शाम उनकी बात सुनने से नजात मिल जाए। जब कौम इस हद को पहुंच गई तो अल्लाह तआला का फैसला हुआ कि अब इस कौम का ख़ात्मा कर दिया जाए। अल्लाह तआला का यही फैसला है जो हजरत नूह की दुआ की शक्ल में जाहिर हुआ।

अल्लाह के हुक्म से हजरत नूह ने एक बड़ी कश्ती बनाई। उसमें हजरत नूह के तमाम साथी और हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा रख लिया गया। इसके बाद अल्लाह ने शदीद तूफ़ान भेजा। जमीन से पानी उबलने लगा और ऊपर से मुसलसल बारिश होने लगी। यहां तक कि कश्ती के सिवा सारी जिंदा मख़्लूक फना हो गई। यह एक तारीख़ी (ऐतिहासिक) मिसाल है जिससे जाहिर होता है कि इस दुनिया में नजात सच्चे अहले ईमान के लिए है और बाक़ी लोगों के लिए यहां हलाकत के सिवा कुछ और मुकद्दर नहीं।

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ (123) إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ (124) إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (125) فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ (126) وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (127) أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ (128) وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ (129) وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ (130) فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ (131) وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ (132) أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ (133) وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (134) إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (135)

आद ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम हर ऊंची जमीन पर लाहासिल (व्यर्थ) एक यादगार इमारत बनाते हो और बड़े-बड़े महल तामीर करते हो। गोया तुम्हें हमेशा रहना है। और जब किसी पर हाथ डालते हो तो जब्बार (दमनकारी) बनकर डालते हो। पस

तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीजों से तुम्हें मदद पहुंचाई जिन्हें तुम जानते हो। उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से और बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से। मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। (123-135)

आद वह कौम है जिसे कौमे नूह की तबाही के बाद दुनिया में उरूज मिला (अल-आराफ 69)। इस कौम को अल्लाह तआला ने सेहत, फ़ारिगुल बाली (सम्पन्नता) और इक्तेदार (सत्ता) हर चीज अता फ़रमाई। इन चीजों पर अगर वे शुक्र करते तो उनके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) का जज्बा उभरता। मगर उन्होंने इस पर फ़ख्र किया। नतीजा यह हुआ कि उनके लिए अपने वसाइल का सबसे ज्यादा पसंदीदा मसरफ यह बन गया कि वे अपने मेयारे जिंदगी को बढ़ाएं। वे अपने नाम को ऊंचा करें। वे अपनी अज्मत के संगी निशानात कायम करने को सबसे बड़ा काम समझने लगें।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जब उन्हें किसी से इख़्तेलाफ या शिकायत हो जाए तो उनकी मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) उन्हें किसी हद पर रुकने नहीं देती। वे उसके ख़िलाफ हर बेइंसाफ़ी को अपने लिए जाइज कर लेते हैं। वे उसे अपनी पूरी ताकत से पीस डालना चाहते हैं। दुनिया की दुरुस्तगी उन्हें आख़िरत की पकड़ से बेख़ौफ कर देती है। और जो शख़्स अपने आपको आख़िरत की पकड़ से महफूज समझ ले, दूसरे लोग उसकी पकड़ से महफूज नहीं रह सकते।

जिन लोगों को ख़ुशहाली और बरतरी हासिल हो जाए उनके अंदर अपने बारे में झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। यह झूठा एतमाद उनके लिए अपने से बाहर की सदाकत को समझने में रुकावट बन जाता है। वे नासेह (नसीहत करने वाले) की बात को अहमियत नहीं देते, चाहे वह कितना ही काबिले एतबार क्यों न हो, चाहे वह ख़ुदा का रसूल ही क्यों न हो। ऐसे लोग उसी वक्त मानते हैं जबकि ख़ुदा का अजाब उन्हें मानने पर मजबूर कर दे।

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ (136) إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ (137) وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ (138) فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ (139) وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (140)

उन्होंने कहा, हमारे लिए बराबर है, चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो। यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है। और हम पर हरगिज अजाब आने वाला नहीं है। पस उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है रहमत वाला है। (136-140)

कौमे आद का झूठा एतमाद उसके लिए पैग़म्बर की बात को मानने में रुकावट बन

गया। यहां तक कि वह उसके पैग़ाम का मजाक़ उड़ाती रही। वह दुनिया में अपनी ख़ुशहाली को इस बात की अलामत समझती रही कि वह ख़ुदा की इनामयाफ्ता है। वे लोग इस राज को न समझ सके कि दुनिया का असासा (धन-सम्पत्ति) आदमी को बतौर इम्तेहान मिलता है न कि बतौर इस्तहक़ाक़।

जब आख़िरी तौर पर साबित हो गया कि वे हक को मानने वाले नहीं हैं तो ख़ुदा ने तूफ़ानी हवा और शदीद बारिश भेजी जो एक हफ्ते तक मुसलसल अपनी तमाम ख़ौफ़नाकियों के साथ रात दिन जारी रही। नतीजा यह हुआ कि पूरी कौम अपने शानदार तमद्दुन सहित बर्बाद होकर रह गई। इस कौम का निशान अब सिर्फ वह रेगिस्तान है जो मौजूदा उमान और यमन के दर्मियान दूर तक फैला हुआ है। क़दीम जमाने में यह इलाक़ा निहायत शादाब और आबाद था। मगर अब वहां किसी किस्म की जिंदगी नहीं पाई जाती।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَرِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾

समूद ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ़ ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम्हें उन चीजों में बेफिक्री से रहने दिया जाएगा जो यहां हैं, बाग़ों और चशमों में। और खेतों और रस भरे गुच्छों वाले खजूरों में। और तुम पहाड़ खोदकर फख़्र करते हुए मकान बनाते हो। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और हद से गुजर जाने वालों की बात न मानो जो जमीन में ख़राबी करते हैं। और इस्लाह नहीं करते। (141-152)

आद के बाद दूसरी कौम जिसे उरूज मिला वह समूद की कौम थी (अल-आराफ 74)। इस कौम की आबादियां ख़ैबर और तबूक के दर्मियान उस इलाके में थीं जिसे अल हिज्र कहा जाता है। उस कौम को भी जबरदस्त ख़ुशहाली और ग़लबा हासिल हुआ। मगर उसके अफ़राद की भी सारी तवज्जोह दुबारा सिर्फ माद्दी (भौतिक) तरक्क़ी की तरफ लग गई। पहाड़ों को काट कर बड़े-बड़े मकान बनाने का फन ग़ालिबन इसी कौम ने शुरू किया।

जिसकी ज्यादा तरक्क़ीयाफ्ता सूरत अजन्ता और एलोरा के ग़ारों की शक्ल में पाई जाती है।

हर शख़्स और हर गिरोह जिसे दुनिया का साजोसामान मिलता है वह इस ग़लतफहमी में पड़ जाता है कि यह सब उसका हक है और वह जिस तरह चाहे उसे इस्तेमाल करे। मगर यह सबसे बड़ी भूल है। हकीक़त यह है कि दुनिया का असबाब सिर्फ इम्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। इसके बाद वह इस तरह छीन लिया जाएगा कि आदमी के पास उनमें से कुछ भी बाक़ी न रहेगा।

हद से गुजरने वाला (मुसरिफ) वह शख़्स है जिसके पास दौलत आए तो वह शुक्र के बजाए फख़्र की नफ्सियात में मुब्तिला हो जाए। वह इक्तेदार पाए तो तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए घमंड करने लगे। उसे ओहदा दिया जाए तो वह उसे ख़िदमत के बजाए अपना नाम बुलन्द करने के लिए इस्तेमाल करे। मवाकेअ (अवसरों) के यही ग़लत इस्तेमालात हैं जो मआशिरे में बिगाड़ पैदा करते हैं। कौमे समूद के बड़े लोग इसी क़िस्म के इसराफ में मुब्तिला थे। और उनके अवाम उनकी पैरवी कर रहे थे। पैग़म्बर ने उन्हें मुतनब्बह (सचेत) किया कि ये लोग जिन्हें तुम बड़ा समझते हो वे तो ख़ुद बेराह हैं फिर वे तुम्हें कैसे रास्ता दिखाएंगे।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَادِمِينَ ﴿١٥٧﴾ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾

उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। तुम सिर्फ हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो, सालेह ने कहा यह एक ऊंटनी है। इसके लिए पानी पीने की एक बारी है। और एक मुकर्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है। और इसे बुराई के साथ मत छेड़ना वर्ना एक बड़े दिन का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उस ऊंटनी को मार डाला फिर पशेमां (पछतावा-ग्रस्त) होकर रह गए। फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (153-159)

पैग़म्बर जिस कौम में उठता है वह कोई लामजहब कौम नहीं होती। वह पूरे मअनों में एक मजहबी कौम होती है। मगर यह मजहब उसके बुज़ुर्गों का मजहब होता है और पैग़म्बर ख़ुदा का मजहब पेश करता है। जो लोग अपने बुज़ुर्गों के तरीके को मुक़द्दस समझ कर उस पर कायम हों वे कभी किसी दूसरे तरीके की अहमियत नहीं समझ पाते, चाहे वह उनके पैग़म्बर

की जबान से क्यों न पेश किया जाए। बुजुर्गों के तरीके से हटना कौम की नजर में इतना सख़्त था कि उसने हजरत सालेह को दीवाना करार दे दिया। यह कशमकश लम्बी मुद्दत तक जारी रही। आख़िर उन्होंने मुतालबा किया कि कोई मोजिजा दिखाओ। अल्लाह तआला के हुक्म से एक मोजिजा जाहिर हुआ। जो बयकवक्त मोजिजा भी था और कौम के हक में ख़ुदा की अदालत भी। यह एक ऊंटनी थी जो ख़िर्के आदत (दिव्य रूप) के तौर पर जुहूर में आई। हजरत सालेह ने कहा कि यह ख़ुदा की ऊंटनी है। यह तुम्हारे खेतों और बाग़ों में आजादाना तौर पर घूमेगी और पानी का घाट एक दिन सिर्फ इसके लिए ख़ास होगा। कौम ने कुछ दिन तक उस ऊंटनी को बर्दाश्त किया इसके बाद उसके एक सरकश आदमी ने उसे मार डाला। उसके सिर्फ तीन दिन के बाद पूरी कौम शदीद जलजले से हलाक कर दी गई।

ऊंटनी को हलाक करने का जुर्म कौम के एक शख़्स ने किया था मगर बहुवचन में फरमाया कि उन्होंने उसे हलाक कर दिया। इसकी वजह यह है कि हलाक करने के वक्त न तो कौम के लोगों ने उसे रोका और न बाद को अपने उस आदमी को बुरा कहा। सारे लोग उसकी हिमायत में हजरत सालेह के ख़िलाफ बोलते रहे। हलाक करने वाले ने अगर अपने हाथ से जुर्म किया था तो बकिया लोग दिल और जबान से उसके साथ शरीके जुर्म थे। इसलिए ख़ुदा की नजर में सबके सब मुजरिम करार पाए।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ (160) إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ (161) إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (162) فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ (163) وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (164) أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ (165) وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ (166)

लूत की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो। और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियां पैदा की हैं उन्हें छोड़ते हो, बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। (160-166)

हजरत लूत जिस कौम में आए वह शहवतपरस्ती में हद को पार कर गई थी। उनके लिए उनकी बीवियां काफी न थीं। वे नौजवान लड़कों से मुबाशिरत का फेअल (समलैंगिकता) करने लगे थे। हजरत लूत ने उन्हें ख़ुदापरस्ती और तकवे की तालीम दी और बुरे अफआल से उन्हें मना किया।

हजरत लूत उनके दर्मियान एक ऐसे दाओ की हैसियत से उठे जिसकी शख़्सियत झूठ और फुजूलगोई से सद फी सद पाक थी। कौम से माद्दी मफाद का झगड़ा छेड़ने से भी उन्होंने मुकम्मल परहेज किया। ये वाकेयात यह साबित करने के लिए काफी थे कि हजरत लूत जो कुछ कह रहे हैं पूरी संजीदगी के साथ कह रहे हैं। मगर चूंकि आपकी बात कौम की रविश के ख़िलाफ थी वे आपके दुश्मन हो गए। हजरत लूत की बात को वजन देने के लिए जरूरी था कि लोगों के अंदर ख़ुदा का ख़ौफ हो। मगर यही वह चीज थी जिससे उनकी कौम के लोग पूरी तरह ख़ाली हो चुके थे। फिर वे पैग़म्बर की बात पर ध्यान देते तो किस तरह देते।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ (167) قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ (168) رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ (169) فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ (170) إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ (171) ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ (172) وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ (173) إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ (174) وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (175)

उन्होंने कहा कि ऐ लूत, अगर तुम बाज न आए तो जरूर तुम निकाल दिए जाओगे। उसने कहा मैं तुम्हारे अमल से सख़्त बेजार हूं। ऐ मेरे रब, तू मुझे और मेरे घर वालों को उनके अमल से नजात दे। पस हमने उसे और उसके सब घर वालों को बचा लिया। मगर एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गई। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और हमने उन पर बरसाया एक मेंह। पस कैसा बुरा मेंह था जो उन पर बरसा जिन्हें डराया गया था। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (167-175)

बहरे मुर्दार (Dead Sea) के जुनूब (दक्षिण) और मश्रिक (पूर्व) का इलाका आज वीरान हालत में नजर आता है। मगर 2300-1900 ई० पू० के जमाने में वह निहायत सरसब्ज इलाका था। कौमे लूत इसी इलाके में आबाद थी। हजरत लूत की मुसलसल तब्लीग के बावजूद उन्होंने अपनी इस्लाह नहीं की यहां तक कि वे आपको कत्ल करने के दरपे हो गए। उस वक्त उन्हें जबरदस्त जलजले के जरिए हलाक कर दिया गया। इस बर्बादशुदा इलाके का एक हिस्सा बहरे मुर्दार के नीचे दफन है और एक हिस्सा खंडहर बना हुआ पड़ा है। यह वाक्या अब से चार हजार साल पहले पेश आया।

हजरत लूत की बीवी अपने आपको कौमी रिवायात से ऊपर न उठा सकी। वह पैग़म्बर की बीवी होने के बावजूद अपने कौमी मजहब की वफादार बनी रही। नतीजा यह हुआ कि जब ख़ुदा का अजाब आया तो वह भी आम मुंकिरीन के साथ हलाक कर दी गई।

كَذَّبَ أَصْحَٰبُ لْـَٔيْكَةِ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾ إِنِّى لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾ فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾ وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ
أَجْرِىَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٨٠﴾ أَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا۟ مِنَ ٱلْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوا۟
بِٱلْقِسْطَاسِ ٱلْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾ وَٱتَّقُوا۟ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ وَٱلْجِبِلَّةَ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾

ऐका वालों ने रसूलों को झुठलाया। जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीयता) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। तुम लोग पूरा-पूरा नापो और नुक्सान देने वालों में से न बनो। और सीधी तराजू से तोलो और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो और जमीन में फसाद न फैलाओ। और उस जात से डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है और पिछली नस्लों को भी। (176-184)

'ऐका' के लफ्ज़ी मअना जंगल के हैं। यह तबूक का पुराना नाम है। कौमे शुऐब हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से थी। वह जिस इलाके में आबाद हुई, उसका मर्कजी शहर तबूक था। इसीलिए क़ुरआन में उसे असहाबे ऐका कहा गया है।

तमाम अख़्लाक़ी और मआशिरती ख़राबियों की जड़ 'मीजान' में फर्क करना है। सही मीजान (तराज़ू) यह है कि आदमी दूसरों को वह दे जो अजरुए हक उन्हें देना चाहिए। और अपने लिए वह ले जो अजरुए हक उसे लेना चाहिए। यही ख़ुदाई मीजान है। जब इस मीजान में फर्क किया जाता है तो उसी वक्त इज्तिमाई ज़िंदगी में बिगाड़ पैदा हो जाता है। ताहम इस मीजान पर क़ायम होने का राज अल्लाह का ख़ौफ है। अगर अल्लाह का डर दिल से निकल जाए तो कोई चीज आदमी को मीजान पर क़ायम नहीं रख सकती।

ख़ुदा की तरफ से जितने रसूल आए सबने अपनी मुख़ातब कौमों से कहा कि 'मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूँ' इससे अंदाजा होता है कि दाओ के अंदर एतबारियत की सिफत लाजिमी तौर पर मौजूद होना चाहिए। इसी एतबारियत का एक पहलू यह है कि दाओ अपनी मदऊ कौम से मआशी (आर्थिक) और माद्दी झगड़ा न छेड़े ताकि उसकी बेग़रज मक्सदियत मुशतबह (संदिग्ध) न हो। यह एतबारियत इतनी अहम है कि उसे हर हाल में हासिल करना जरूरी है। चाहे इसकी ख़ातिर दाओ को अपने माद्दी हुक़ूक से यकतरफा तौर पर दस्तबरदार होना पड़े।

قَالُوٓا۟ إِنَّمَآ أَنتَ مِنَ ٱلْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ

ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿١٨٦﴾ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ
رَبِّىٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ ٱلظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

उन्होंने कहा कि तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो। और हम तो तुम्हें झूठे लोगों में से ख़्याल करते हैं। पस हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो। शुऐब ने कहा, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर उन्हें बादल वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया। बेशक वह एक बड़े दिन का अजाब था। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (185-191)

हजरत शुऐब की कौम को अपने आबाई तरीके की सदाक़्त पर इस क़द्र यक़ीन था कि पैग़म्बर की बात उसे उल्टी और बेजोड़ मालूम हुई। उसने कहा कि तुम पर शायद किसी ने सख़्त अमल कर दिया है। इसलिए तुम ऐसी बातें कर रहे हो।

उनका यह कहना कि हमारे ऊपर आसमानी अजाब लाओ, इसका रुख़ ख़ुदा की तरफ नहीं बल्कि हजरत शुऐब की तरफ था। वे हजरत शुऐब को बेहक़ीक़त साबित करने के लिए ऐसा कहते थे। क्योंकि वे हजरत शुऐब को ऐसा नहीं समझते थे कि उनके कहने से आसमानी अजाब आ जाएगा।

आख़िरकार कौम की सरकशी का नतीजा यह हुआ कि साएबान की तरह एक बादल ने उनके ऊपर साया कर लिया। फिर ख़ुदा के हुक्म से उसके अंदर से ऐसी आग बरसी जिसने पूरी कौम को मिटाकर रख दिया।

وَإِنَّهُۥ لَتَنزِيلُ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾ عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ
مِنَ ٱلْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِىٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾ وَإِنَّهُۥ لَفِى زُبُرِ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾ أَوَلَمْ يَكُن
لَّهُمْ ءَايَةً أَن يَعْلَمَهُۥ عُلَمَٰٓؤُا۟ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٩٧﴾

और बेशक यह ख़ुदावंद आलम का उतारा हुआ कलाम है। इसे अमानतदार फरिश्ता लेकर उतरा है तुम्हारे दिल पर ताकि तुम डराने वालों में से बनो। साफ अरबी जबान में और इसका जिक्र अगले लोगों की किताबों में है और क्या उनके लिए यह निशानी

नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं। (192-197)

क़ुरआन अगरचे बजाहिर एक इंसानी जबान में है। मगर इसकी अदबी अज़्मत इतनी ग़ैर मामूली है कि वह ख़ुद अपनी जबान के एतबार से एक बरतर ख़ुदाई कलाम होने की शहादत दे रहा है। क़ुरआन की सदाक़त का मजीद सुबूत यह है कि क़ुरआन के नुज़ूल से बहुत पहले पैदा होने वाले पैग़म्बरों ने इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की। यह पेशीनगोई आज भी तौरात और जबूर और इंजील में मौजूद है। इन्हीं पेशीनगोइयों की बिना पर उस जमाने के बहुत से मसीही और यहूदी उलमा (मसलन अब्दुल्लाह बिना सलाम) इस पर ईमान लाए। यह सिलसिला आज तक जारी है।

ख़ुदा के कलाम का इस तरह ख़ुसूसी एहतिमाम के साथ उतरना किसी बहुत ख़ुसूसी मक्सद के तहत ही हो सकता है। और वह मक्सद यह है कि इंसान को आने वाले सख़्त दिन से आगाह किया जाए। आख़िरत से सचेत करना पिछली तमाम आसमानी किताबों का भी ख़ास मक्सद था और यही क़ुरआन का भी ख़ास मक्सद है।

وَلَوْ نَزَّلْنَٰهُ عَلَىٰ بَعْضِ ٱلْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾ فَقَرَأَهُۥ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾ كَذَٰلِكَ سَلَكْنَٰهُ فِى قُلُوبِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِۦ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا۟ هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

और अगर हम इसे किसी अजमी (ग़ैर अरबी) पर उतारते फिर वह उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे इस पर ईमान लाने वाले न बनते। इसी तरह हमने ईमान न लाने को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है। ये लोग ईमान न लाएंगे जब तक सख़्त अजाब न देख लें। पस वह उन पर अचानक आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। फिर वे कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत मिल सकती है। (198-203)

क़ुरआन अरबी जबान में आया और जिस पैग़म्बर ने इसे पेश किया उसकी भी मादरी जबान (मातृ-भाषा) अरबी थी। इस बिना पर मुंकिरीन को यह कहने का मौका मिल गया कि यह तो ख़ुद इनका अपना कलाम है। वह एक अरब हैं इसलिए इन्होंने अरबी में एक क़ुरआन तस्नीफ (रचित) कर लिया।

मगर एतराज का यह अंदाज ख़ुद बता रहा है कि यह कोई संजीदा एतराज नहीं है। और जो लोग किसी मामले में संजीदा न हों वे हमेशा कोई न कोई शोशा निकाल लेते हैं। मसलन अगर ऐसा किया जाता कि किसी गैर अरबी पर यह अरबी क़ुरआन उतार दिया जाता और वह शख़्स अरबी जबान से नावाक़िफ़ होने के बावजूद अरबी क़ुरआन उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे फौरन यह कह देते कि 'कोई अरब इसे सिखा जाता है।'

जो लोग नाहक़ की बुनियाद पर अपनी ज़िंदगी की इमारत खड़ी किए हों उनके लिए हक़ का

एतराफ करना ख़ुद अपनी नफ़ी (नकार) के हममअना होता है। ऐसे लोगों के सामने जब हक़ आए और वे जाती मसालेह (हितों) को अहमियत देते हुए हक़ का एतराफ न करें तो इंकार का मिजाज उनकी नफ्सियात में इस तरह शामिल हो जाता है कि उन्हें दुबारा उससे निकलना नसीब नहीं होता।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَءَيْتَ إِن مَّتَّعْنَٰهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَآءَهُم مَّا كَانُوا۟ يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾ وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنۢبَغِى لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ ٱلسَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾

क्या वे हमारे अजाब को जल्द मांग रहे हैं। बताओ कि अगर हम उन्हें चन्द साल तक फायदा पहुंचाते रहें फिर उन पर वह चीज आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है तो यह फायदामंदी उनके किस काम आएगी। और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया मगर उसके लिए डराने वाले थे याद दिलाने के लिए, और हम जालिम नहीं हैं। और इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उनके लिए लायक है। और न वे ऐसा कर सकते हैं। वे इसे सुनने से रोक दिए गए हैं। (204-212)

पैग़म्बर की सतह पर जब ख़ुदा की दावत जाहिर होती है तो वह अपनी आख़िरी कामिल सूरत में जाहिर होती है। यही वजह है कि पैग़म्बर का इंकार करने वाली कौम पर ख़ुदा का अजाब आना लाजिमी हो जाता है। ताहम जब तक अजाब अमलन न आ जाए आदमी अपने को महफ़ूज़ समझता है। वह हक़ की दावत को बेहक़ीक़त साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें करता है। कभी पैग़म्बर की शख़्सियत की तहकीर करता है। कभी पैग़म्बर के लाए हुए कलाम को बनावटी कलाम बनाता है। कभी यह कहता है कि तुम्हारे बयान के मुताबिक अगर ख़ुदा हमारे साथ नहीं तो वह हमें सजा क्यों नहीं देता।

पैग़म्बर की जिम्मेदारी या पैग़म्बर की पैरवी में दाओ की जिम्मेदारी सिर्फ यह है कि वह लोगों को अम्रे हक़ से आगाह कर दे। इससे आगे के तमाम मामलात ख़ुदा के जिम्मे हैं और वही जब चाहता है उन्हें जाहिर करता है।

فَلَا تَدْعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ ٱلْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَٱخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾ فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٢١٩﴾ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

पस तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो कि तुम भी सजा पाने वालों में से हो जाओ। और अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ। और उन लोगों के लिए अपने बाजू झुकाए रखो जो मोमिनीन में दाख़िल होकर तुम्हारी पैरवी करें। पस अगर वे तुम्हारी नाफरमानी करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उससे बरी हूं। और जबरदस्त और महरबान ख़ुदा पर भरोसा रखो। जो देखता है तुम्हें जबकि तुम उठते हो और तुम्हारी चलत-फिरत नमाजियों के साथ, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (213-220)

अल्लाह के सिवा किसी और को माबूद बनाना अल्लाह की नजर में बहुत बड़ा जुर्म है। ऐसा करने के बाद कोई शख़्स सजा से बच नहीं सकता, यहां तक कि वह शख़्स भी नहीं जो जबान व कलम से तौहीद (एकेश्वरवाद) का अलमबरदार बना हुआ हो। दाओ का काम यह है कि अपने आपको पूरी तरह शिर्क से बचाते हुए लोगों को हक की तरफ बुलाए, जिनमें उसके करीबी लोग बदर्जए ऊला (प्राथमिकता से) शामिल हैं।

हक का साथ देने के लिए अपनी बड़ाई के बुत को तोड़ना पड़ता है। यही वजह है कि बड़े लोगों में बहुत कम ऐसे अफराद निकलते हैं जो हक का साथ देने के लिए तैयार हों। ज्यादातर ऐसा होता है कि हक का साथ देने के लिए वे लोग उठते हैं जो समाज में कमतर हैसियत रखते हों। यह वाकया दाओ के लिए सख़्त इम्तेहान होता है। दाओ को इससे बचना पड़ता है कि दूसरों की तरह वह भी उन्हें हकीर समझे, जो लोग ग़ैर इस्लामी समाज में हकीर (तुच्छ) बने हुए थे वे इस्लामी हलके में आकर भी बदस्तूर हकीर बने रहें।

दाओ वह है जिसका ख़ुदा से तअल्लुक इतना बढ़ा हुआ हो कि रात की तंहाइयों में वह बेकरार होकर अपने बिस्तर से उठ खड़ा हो। अपने सज्दागुजार साथियों की कीमत उसकी नजर में इतनी ज्यादा हो कि वह उन्हीं को अपनी दिलचस्पियों का मर्कज बना ले।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं। वे हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं। वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर झूठे हैं। और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं और वह कहते हैं जो वह करते

नहीं। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उन पर जुल्म हुआ। और जुल्म करने वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उन्हें कैसी जगह लौटकर जाना है। (221-227)

पैग़म्बर के कलाम में ग़ैर मामूलीपन इतना नुमायां (स्पष्ट) था कि पैग़म्बर के मुंकिरीन भी उसकी तरदीद (खंडन) नहीं कर सकते थे। चुनांचे वे अपने लोगों को मुतमइन करने के लिए कह देते कि यह काहिन और आमिल हैं। और इनके कलाम में जो ग़ैर मामूलीपन है वह काहिन और आमिल होने की बिना पर है न कि पैग़म्बर होने की बिना पर। इसी तरह वे कुरआन को शायर का कलाम बताते थे। फरमाया कि इस बात की तरदीद (खंडन) के लिए यही काफी है कि पैग़म्बर का और काहिनों और शायरों का मुकाबला करके देखा जाए। दोनों की जिंदगियों में इतना ज्यादा फर्क मिलेगा कि कोई संजीदा आदमी हरगिज एक को दूसरे पर कयास नहीं कर सकता।

शायरी की बुनियाद तख़्युल (कल्पना) पर है न कि हकाइक (यथार्थ) व वाकेयात पर। यही वजह है कि शायर लोग हमेशा ख़्यालात की दुनिया में परवाज करते हैं। वे कभी एक किस्म की बातें करते हैं और कभी दूसरे किस्म की। इसके बरअक्स पैगम्बर और आपके साथियों का हाल यह है कि वे अल्लाह की बुनियाद पर खड़े हुए हैं जो सबसे बड़ी हकीकत है। उनकी जिंदगियां कौल व अमल की यकसानियत (एकरुपता) की मिसालें हैं। अल्लाह की गहरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) ने उन्हें अल्लाह की याद करने वाला बना दिया है। उनकी एहतियात इतनी बढ़ी हुई है कि वे अगर किसी के ख़िलाफ कार्रवाई करते हैं तो सिर्फ उस वक्त करते हैं जबकि उसने उनके ऊपर सरीह जुल्म किया हो। मुस्तकबिल (भविष्य) की नजाकत आदमी को उसके हाल (वर्तमान) के बारे में संजीदा बना देती है। जो शख़्स मुस्तकबिल के बारे में हस्सास (संवेदनशील) न हो वह हाल के बारे में भी हस्सास नहीं हो सकता।

سُورَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طس ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿١﴾ هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٥﴾ وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٦﴾

आयतें-93 **सूरह-27. अन-नम्ल** रुकूअ-7

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ता० सीन०। ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक वाज़ेह किताब की। रहनुमाई और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। जो नमाज क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके कामों को हमने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया है, पस वे भटक रहे हैं। ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सजा है और वे आख़िरत में सख़्त ख़सारे (घाटे) में होंगे। और बेशक क़ुरआन तुम्हें एक हकीम (तत्वदर्शी) और अलीम (ज्ञानवान) की तरफ से दिया जा रहा है। (1-6)

जब आदमी के सामने हक़ आए और वह किसी तहफ़्फ़ुज़ के बग़ैर उसका एतराफ कर ले तो इसका नतीजा यह होता है कि वह फौरन सही रुख़ पर चल पड़ता है। उसकी जिंदगी हर एतबार से दुरुस्त होती चली जाती है। इसके बरअक्स जो शख़्स अपने आपको हक के मुताबिक ढालने के लिए तैयार न हो वह मजबूर होता है कि ख़ुद हक को अपने मुताबिक ढाले। इसी नफ़्सियाती कैफ़ियत का दूसरा नाम तज़ईने आमाल है।

ऐसा आदमी अपनी रविश को जाइज साबित करने के लिए ख़ुदसाख़्ता दलीलें तलाश करता है। ये दलीलें धीरे-धीरे उसके जेहन पर इस तरह छा जाती हैं कि वे उसे ऐन दुरुस्त मालूम होती हैं। अपना ग़लत अमल उसे अपनी झूठी तौजीहात (तर्कों) की रोशनी में सही नजर आने लगता है।

जो लोग हक की दावत के बारे में संजीदा न हों वे हमेशा तज़ईने आमाल का शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोग ऐन अपनी नफ़्सियात के नतीजे में अपनी इस्लाह की तरफ से बिल्कुल ग़ाफ़िल हो जाते हैं। अपने ग़लत को सही समझने की उन्हें यह भारी कीमत देनी पड़ती है कि वे ऐसे रास्ते पर चलते रहें जिसकी आख़िरी मंजिल जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ
قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ⑦ فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَن بُورِكَ مَن فِي النَّارِ وَمَنْ
حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑧

जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है। मैं वहां से कोई ख़बर लाता हूं या आग का कोई अंगारा लाता हूं ताकि तुम तापो। फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है। और पाक है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। (7-8)

क़िब्ती की मौत के वाक़्ये के बाद हजरत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से मदयन चले गए

थे। मदयन का इलाक़ा बहरे अहमर (लाल सागर) की उस शाख़ के मश्रिक़ी साहिल (पूर्वी तट) पर था जिसे ख़लीज अक़बा कहा जाता है। हजरत मूसा ने यहां तक़रीबन आठ साल गुज़ारे। इसके बाद वह अपनी अहलिया (पत्नी) के साथ मिस्र वापस जाने के लिए रवाना हुए। इस सफर में वह बहरे अहमर की दोनों शाख़ों के दर्मियान उस पहाड़ के किनारे पहुंचे जिसका क़दीम नाम तूर था और अब उसे जबल मूसा (Gebel Musa) कहा जाता है।

यह ग़ालिबन सर्दियों की रात थी। हजरत मूसा को दूर पहाड़ पर एक आग सी चीज नजर आई। वह उसकी तरफ रवाना हुए। मगर क़रीब पहुंच कर मालूम हुआ कि यह ख़ुदा की तजल्ली (आलोक) थी न कि कोई इंसानी आग।

पहाड़ के ऊपर जहां हजरत मूसा ने रोशनी देखी थी वहां आज भी एक क़दीम दरख़्त मौजूद है। कहा जाता है कि यही वह दरख़्त है जिसके ऊपर से हजरत मूसा को ख़ुदा की आवाज सुनाई दी थी। यहां बाद को ईसाई हजरात ने गिरजा और ख़ानक़ाह (आश्रम) तामीर कर दिया जो आज भी लोगों के लिए जियारतगाह बना हुआ है।

يَا مُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑨ وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا
جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَا مُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ⑩ إِلَّا
مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑪ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي
جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ⑫ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑬ وَجَحَدُوا بِهَا
وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ⑭

ऐ मूसा यह मैं हूं अल्लाह, जबरदस्त हकीम (तत्वदर्शी) । और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। फिर जब उसने उसे इस तरह हरकत करते देखा जैसे वह सांप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलट कर न देखा। ऐ मूसा, डरो नहीं मेरे हुज़ूर पैग़म्बर डरा नहीं करते। मगर जिसने ज्यादती की। फिर उसने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया। तो मैं बख़्शने वाला महरबान हूं। और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो, वह किसी ऐब के बग़ैर सफेद निकलेगा। यह दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फिरऔन और उसकी कौम के पास जाओ। बेशक वे नाफरमान लोग हैं। पस जब उनके पास हमारी वाजेह निशानियां आईं, उन्होंने कहा यह खुला हुआ जादू है। और उन्होंने उनका इंकार किया हालांकि उनके दिलों ने उनका यकीन कर लिया था, ज़ुल्म और घमंड की वजह से। पस देखो कैसा बुरा अंजाम हुआ मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) का। (9-14)

हजरत मूसा पहाड़ पर आग के लिए गए थे। मगर वहां पहुंच कर मालूम हुआ कि वह पैग़म्बरी के लिए बुलाए गए हैं। अल्लाह तआला जब अपने किसी बंदे को ख़ुसूसी अतिया देता है तो अचानक और ग़ैर मुतवक्क़अ (अप्रत्याशित) तौर पर देता है ताकि वह उसे बराहेरास्त अल्लाह की तरफ से समझे और उसके अंदर ज्यादा से ज्यादा शुक्र का जज्बा पैदा हो।

हजरत मूसा की क़ौम (बनी इस्राईल) अगरचे उस वक्त के लिहाज से एक मुस्लिम क़ौम थी। मगर अब वह बिल्कुल बेजान हो चुकी थी। दूसरी तरफ उन्हें फिरऔन जैसे जाबिर (दमनकारी) हुक्मरां के सामने तौहीद की दावत पेश करना था। इसलिए अल्लाह तआला ने आग़ाज ही में आपको असा का मोजिजा अता फरमा दिया। यह असा हजरत मूसा के लिए एक मुस्तक़िल ख़ुदाई ताक़त था। इसके जरिए से फिरऔन के मुक़ाबले में 9 मोजिजात जाहिर हुए। बनी इस्राईल के लिए जाहिर होने वाले मोजिजात इनके अलावा थे।

हजरत मूसा के मोजिजात ने आख़िरी हद तक आपकी सदाक़त साबित कर दी थी। इसके बावजूद फिरऔन और उसके साथियों ने आपका एतराफ नहीं किया। इसकी वजह उनका जुल्म और घमंड था। फिरऔन और उसके साथी अपनी आजादी पर क़ैद लगाने के लिए तैयार न थे। मजीद यह कि वे जानते थे कि मूसा की बात मानना अपनी बड़ाई की नफी (नकार) करना है। और कौन है जो अपनी बड़ाई की नफी की क़ीमत पर सच्चाई को माने।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُودَ ۖ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ شَيْءٍ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

और हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता किया। और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फजीलत (श्रेष्ठता) अता फरमाई। और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ। और कहा कि ऐ लोगो, हमें परिंदों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर किस्म की चीज दी गई। बेशक यह खुला हुआ फज्ल है। (15-16)

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के पैग़म्बर और बादशाह थे। आपके बेटे हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम भी पैग़म्बर और बादशाह हुए। आपकी सल्तनत फिलिस्तीन और शर्क़ उर्दुन से लेकर शाम तक फैली हुई थी। आपको अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ किस्म की संअती (औद्योगिक) मालूमात दी थीं। साथ ही, आपको मोजिजाती तौर पर कई चीजें अता हुई थीं। मसलन चिड़ियों की बोलियां समझना। और उन्हें तर्बियत देकर उन्हें ख़बर रसानी के लिए इस्तेमाल करना। हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अपने हमजमाना लोगों पर ग़ैर मामूली बरतरी हासिल थी। मगर इस बरतरी ने उनके अंदर सिर्फ तवाजोअ (विनम्रता) का जज्बा पैदा किया। उन्हें जो कुछ हासिल था उसे उन्होंने बराहेरास्त ख़ुदा का अतिय्या करार दिया।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम का जमानए सल्तनत 926 ई०पू० से लेकर 965 ई०पू०

तक है। इस लिहाज से आप तक़रीबन चालीस साल हुक्मरां रहे।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾

और सुलैमान के लिए उसका लश्कर जमा किया गया, जिन्न और इंसान और परिंदे, फिर उनकी जमाअतें बनाई जातीं, यहां तक कि जब वह चींटियों की वादी पर पहुंचे। एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियो , अपने सुराख़ों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो। पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कराते हुए हंस पड़ा और कहा, ऐ मेरे रब मुझे तौफीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर किया है और यह कि मैं नेक काम करूं जो तुझे पसंद हो और अपनी रहमत से तू मुझे अपने नेक बंदों में दाख़िल कर। (17-19)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लश्कर में न सिर्फ इंसान थे। बल्कि जिन्नात और परिंदे भी आपकी फौज में शामिल थे। हजरत सुलैमान का लश्कर एक बार किसी वादी से गुजरा जहां चींटियां बहुत ज्यादा थीं। चींटियों ने ग़ैर मामूली तौर पर आपके लश्कर की अज्मत का एतराफ किया। चींटियों ने इस मौक़े पर जो गुफ्तुगू की उसे हजरत सुलैमान ने भी समझ लिया।

इस तरह का कोई वाक़या एक आम इंसान को फख़्र व ग़ुरूर में मुब्तिला करने के लिए काफी है। मगर हजरत सुलैमान अपने इस हाल को देखकर सरापा शुक्र बन गए। जो कुछ बजाहिर ख़ुद उन्हें हासिल था उसे उन्होंने पूरे तौर पर ख़ुदा के ख़ाने में डाल दिया। यही है सालेह (नेक) इंसान का तरीक़ा।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِن سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾ إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِن كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدتُّهَا وَقَوْمَهَا

يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِن دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ
السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾ أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾

और सुलैमान ने परिंदों का जायजा लिया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूं। क्या वह कहीं ग़ायब हो गया है। मैं उसे सख़्त सजा दूंगा। या उसे जिब्ह कर दूंगा, या वह मेरे सामने कोई साफ हुज्जत लाए। ज्यादा देर नहीं गुजरी थी कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज की ख़बर लाया हूं जिसकी आपको ख़बर न थी। और मैं सबा से एक यकीनी ख़बर लेकर आया हूं। मैंने पाया कि एक औरत उन पर बादशाही करती है और उसे सब चीज मिली है। और उसका एक बड़ा तख़्त है। मैंने उसे और उसकी कौम को पाया कि सूरज को सज्दा करते हैं अल्लाह के सिवा। और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए, फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया, पस वे राह नहीं पाते, कि वे अल्लाह को सज्दा न करें जो आसमानों और जमीन की छुपी चीज को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मालिक अर्शे अजीम (महान सिंहासन) का। (20-26)

सबा (Sabaeans) क़दीम जमाने की एक दौलतमंद कौम थी। उसका जमाना 1100 ई०पू०से लेकर 1015 ई०पू० तक है। उसका मर्कज मआरिब (यमन) था। उस इलाके में आज भी उसके शानदार खंडहर पाए जाते हैं। हजरत सुलैमान के जमाने में यहां एक औरत (बिलकीस) की हुकूमत थी। ये लोग सूरज की परस्तिश करते थे। शैतान ने उन्हें सिखाया कि माबूद वही हो सकता है जो सबसे ज्यादा नुमायां (सुस्पष्ट) हो। सूरज चूंकि तमाम दिखाई देने वाली चीजों में सबसे ज्यादा नुमायां है इसलिए वही इस काबिल है कि उसे माबूद समझा जाए और उसकी परस्तिश की जाए।

हुदहुद के जरिये हजरत सुलैमान को कौमे सबा के बारे में मुफ़स्सल मालूमात हासिल हुई। यह हुदहुद ग़ालिबन आपकी परिंदों की फौज से तअल्लुक रखता था और बाकायदा तर्बियतयाफ़्ता था।

قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اذْهَب بِّكِتَابِي هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ

ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ﴿٢٩﴾
إِنَّهُ مِن سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾ أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣١﴾
قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣٢﴾ قَالُوا
نَحْنُ أُولُو قُوَّةٍ وَأُولُو بَأْسٍ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ
إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾
وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِم بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾

सुलैमान ने कहा, हम देखेंगे कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो। मेरा यह ख़त लेकर जाओ। फिर इसे उन लोगों की तरफ डाल दो। फिर उनसे हट जाना। फिर देखना कि वे क्या रद्देअमल प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं। मलिका सबा ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मेरी तरफ एक बावकअत (प्रतिष्ठित) ख़त डाला गया है। वह सुलैमान की तरफ से है। और वह है शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है कि तुम मेरे मुकाबले में सरकशी न करो। और मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आ जाओ। मलिका ने कहा कि ऐ दरबारियो, मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी मामले का फैसला नहीं करती जब तक तुम लोग मौजूद न हो। उन्होंने कहा, हम लोग जोरआवर हैं। और सख़्त लड़ाई वाले हैं। और फैसला आपके इख़्तियार में है। पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं। मलिका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और उसके इज्जत वालों को जलील कर देते हैं। और यही ये लोग करेंगे। और मैं उनकी तरफ एक हदिया (उपहार) भेजती हूं, फिर देखती हूं कि सफीर (दूत) क्या जवाब लाते हैं। (27-35)

हजरत सुलैमान की कुव्वत व सल्तनत एक ख़ुदाई अतिया थी। इसी तरह आपने सबा की हुकूमत के साथ जो मामला किया वह भी एक ख़ुदाई मामला था। शाह अब्दुल कादिर देहलवी आयत 37 के जेल में लिखते हैं : 'और किसी पैग़म्बर ने इस तरह की बात नहीं फरमाई। सुलैमान को हक तआला की सल्तनत का जोर था जो यह फरमाया।'

मलिका सबा (बिलकीस) ने मामले को ख़ालिस हकीकतपसंदाना अंदाज से देखा। उसने यह राय कायम की कि अगर हम सुलैमान की ताकत से टकराएं तो ज्यादा इम्कान यह है कि हम हारेंगे और फिर हमारे साथ वही किया जाएगा जो हर ग़ालिब (विजित) कौम मग़लूब कौम के साथ करती है। इसके बरअक्स अगर हम इताअत कुबूल कर लें तो हम तबाही से बच जाएंगे। ताहम मलिका ने इब्तिदाई अंदाजे के लिए तोहफे भेजने का तरीका इख़्तियार किया।

ताकि मालूम हो जाए कि सुलैमान हमारी दौलत के ख़्वाहिशमंद हैं। या इससे आगे उनका हमसे कोई उसूली मुतालबा है।

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۝٣٦ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝٣٧

फिर जब सफीर (दूत) सुलैमान के पास पहुंचा, उसने कहा क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो। पस अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है। बल्कि तुम ही अपने तोहफे से ख़ुश हो। उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर आएंगे जिनका मुक़ाबले वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहां से बेइज्जत करके निकाल देंगे। और वे ख़्वार सम्मानहीन होंगे। (36-37)

हजरत सुलैमान को नुबुव्वत और ख़ुदा की मअरफत की शक्ल में जो कीमती दौलत मिली थी, उसके मुकाबले में हर दूसरी दौलत उनकी नजर में हैच हो चुकी थी। चुनांचे मलिका सबा की तरफ से जब उनके पास सोने चांदी के तोहफे पहुंचे तो उन्होंने उनकी तरफ निगाह भी न की।

हजरत सुलैमान ने अपने अमल से मलिका सबा के सफीरों को यह तास्सुर दिया कि मेरा मामला उसूली मामला है न कि मफाद का मामला। मुफस्सिर इब्ने कसीर इसकी तशरीह में यह अल्फाज लिखते हैं : 'क्या तुम माल देकर मुझे मुतअस्सिर करना चाहते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे शिर्क पर छोड़ दूं और तुम्हारी हुकूमत तुम्हारे पास रहने दूं।'

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝٣٨ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ۝٣٩ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۣ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۭ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ۝٤٠

सुलैमान ने कहा ऐ दरबार वालो, तुम में से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) मेरे पास लाता है इससे पहले की वे लोग मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएं। जिन्नों में से एक देव ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें,

और मैं इस पर कुदरत रखने वाला, अमानतदार हूं। जिसके पास किताब का एक इल्म था उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूंगा। फिर जब उसने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, यह मेरे रब का फज्ल है। ताकि वह मुझे जांचे कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री। और जो शख़्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है। और जो शख़्स नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज (निस्पृह) है करम करने वाला है। (38-40)

हजरत सुलैमान के पास अगरचे ग़ैर मामूली ताक्त थी। मगर उन्होंने इस्तेमाले ताक्त के बजाए मुजाहिरे ताक्त के जरिए कौमे सबा को जेर करने का मंसूबा बनाया। चुनांचे आपने अपने ख़ुसूसी कारिंदे के जरिए मलिका के तख़्त को मआरिब (Marib) के महल से यरोशलम (फिलिस्तीन) मंगवाया। तख़्त को मंगवाने का वाक्या ग़ालिबन उस वक्त पेश आया जबकि तोहफे की वापसी के बाद मलिका सबा यमन से फिलिस्तीन के लिए रवाना हुई। ताकि वह हजरत सुलैमान के दरबार में पहुंच कर बराहेरास्त आपसे गुफ्तुगू करे। मलिका सबा का अपने ख़दम व हशम (सेवकों, दरबारियों) के साथ यह सफर यकीनन उस वक्त हुआ होगा, जबकि उसके सिफारती वफ्द ने वापस जाकर हजरत सुलैमान की हिक्मत की बातें और आपके ग़ैर मामूली किरदार की शहादत दी और आपकी ग़ैर मामूली अज्मत का हाल बयान किया।

मआरिब से यरोशलम का फासला तकरीबन डेढ़ हजार मील है। यह लम्बा फासला इस तरह तै हुआ कि इधर हजरत सुलैमान की जबान से हुक्म के अल्फाज निकले और उधर जरोजवाहर (रत्नों) से जड़ा हुआ तख़्त उनके सामने रखा हुआ मौजूद था। इस ग़ैर मामूली कुव्वत के बावजूद हजरत सुलैमान के अंदर फख़्र का कोई जज्बा पैदा नहीं हुआ। वह सर ता पा तवाजोअ (सर्वथा विनम्रता) बनकर ख़ुदा के आगे झुके रहे।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝٤١ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۝٤٢ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝٤٣ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۭ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۥ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٤

सुलैमान ने कहा कि उसके तख़्त (सिंहासन) का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है या उन लोगों में से हो जाती है जिन्हें समझ नहीं। पस जब वह आई तो कहा

गया क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है। उसने कहा, गोया कि यह वही है। और हमें इससे पहले मालूम हो चुका था। और हम फरमांबरदारों में थे। और उसे रोक रखा था उन चीजों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती थी। वह मुंकिर लोगों में से थी। उससे कहा गया कि महल में दाख़िल हो। पस जब उसने उसे देखा तो उसे ख़्याल किया कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं। सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया। और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान लाई। (41-44)

मलिका सबा अपने मुल्क से रवाना होकर बैतुल मक़्दिस पहुंची। यहां वह हजरत सुलैमान के महल में दाख़िल हुई तो बिल्कुल अंजान तौर पर उसके सामने एक तख़्त लाया गया। और कहा गया कि देखो, क्या यह तुम्हारा तख़्त है। यह देखकर वह ख़ुदा की कुदरत पर हैरान रह गई कि अपने जिस तख़्त को वह मआरिब के महल में महफ़ूज करके आई थी वह पुरअसरार (करिश्माई) तौर पर डेढ़ हजार मील का फ़ासला तै करके बैतुल मक़्दिस पहुंच गया है।

हजरत सुलैमान के महल में दाख़िल होकर मलिका सबा एक ऐसे मकाम पर पहुंची जिसका फ़र्श साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शीशे की मोटी तख़्तियों से बनाया गया था और उसके नीचे पानी बह रहा था। मलिका जब चलते हुए यहां पहुंची तो उसे अचानक महसूस हुआ कि उसके आगे पानी का हौज है। उस वक्त उसने वही किया जो पानी में उतरने वाला हर आदमी करता है। यानी उसने ग़ैर इरादी तौर पर अपने कपड़े उठा लिए।

इस तरह गोया अमली तजर्बे की जबान में उसे बताया गया कि इंसान जाहिर को देखकर फ़रेब खा जाता है। मगर अस्ल हक़ीक़त अक्सर उससे मुख़्तलिफ़ होती है जो जाहिरी आंखों से दिखाई देती है। आदमी जाहिरी तौर पर सूरज और चांद को नुमायां देखकर उनकी परस्तिश करने लगता है। हालांकि हक़ीक़ी ख़ुदा वह है जो इन जवाहिर (प्रकट चीजों) से आगे है।

मलिका सबा अब तक कौमी रिवायात के जेरेअसर सूरज की परस्तिश कर रही थी। मगर हजरत सुलैमान के करीब पहुंच कर उसने जो कुछ सुना और जो कुछ देखा उसने उसके जेहन से ग़ैर अल्लाह की अज्मत का यकसर ख़ात्मा कर दिया। उसने दीने शिर्क को छोड़ दिया और दीने तौहीद को दिल व जान से इख़्तियार कर लिया।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۗ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

और हमने समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो फरीक (पक्ष) बनकर आपस में झगड़ने लगे। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी कर रहे हो। तुम अल्लाह से माफी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए। उन्होंने कहा, हम तो तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं। उसने कहा कि तुम्हारी बुरी किस्मत अल्लाह के पास है बल्कि तुम तो आजमाए जा रहे हो। (45-47)

हजरत सालेह अलैहिस्सलाम ने तौहीदे ख़ालिस की दावत शुरू की तो उनकी कौम दो तबकों में बट गई। जो लोग कौम के बड़े थे वे अपनी बड़ाई में गुम रहे, और हजरत सालेह के बेआमेज (विशुद्ध) दीन को कुबूल करने के लिए तैयार न हुए। अलबत्ता छोटे लोगों में से कुछ अफराद निकले जिन्होंने आपकी पुकार पर लब्बैक कहा।

इन दोनों गिरोहों में इख़्तेलाफ़ी बहसें शुरू हो गईं। बड़े लोग पुरफ़ख़्र अंदाज में कहते कि हम तुम्हारे मुंकिर हैं। फिर हमारे इंकार की पादाश में जो अजाब तुम ला सकते हो ले आओ। कभी कोई मुसीबत पड़ती तो वे कह देते कि सालेह और उनके साथियों की नहूसत की वजह से यह बला हमारे ऊपर आई है। ये बातें वे हजरत सालेह और आपकी दावत की तहकीर (अनादर) के तौर पर कहते थे न कि संजीदा ख़्याल के तौर पर। उनकी अच्छी हालत और उनकी बुरी हालत दोनों ख़ुदा की तरफ से थी। मगर अच्छी हालत से उन्होंने झूठे फ़ख़्र की ग़िजा ली और बुरी हालत से झूठी शिकायत की।

उनके दर्मियान हक के दाओ का उठना उनके लिए ख़ुदा का एक इम्तेहान था। वे इस आजमाइश के मैदान में खड़े कर दिए गए थे कि वे हक को पहचान कर उसका साथ देते हैं या इसके मुकाबले में अंधे बहरे बने रहते हैं। मगर वे दूसरी-दूसरी बातों में उलझे रहे और अस्ल मामले को समझने से कासिर (असमर्थ) रहे।

وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾

और शहर में नौ शख़्स थे जो जमीन में फसाद करते थे और इस्लाह (सुधार) का काम न करते थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की कसम खाओ कि हम उसे और उसके लोगों को चुपके से हलाक कर देंगे। फिर उसके वली (संरक्षक) से कह देंगे कि हम उसके

घर वालों की हलाकत के वक्त मौजूद न थे। और बेशक हम सच्चे हैं। और उन्होंने एक तदबीर (युक्ति) की और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें ख़बर भी न हुई। पस देखो कैसा हुआ उनकी तदबीर का अंजाम। हमने उन्हें और उनकी पूरी कौम को हलाक कर दिया। पस ये हैं उनके घर वीरान पड़े हुए उनके जुल्म के सबब से। बेशक इसमें सबक है उन लोगों के लिए जो जानें। और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो डरते थे। (48-53)

कौम में नौ बड़े सरदार थे। वे अपने को बड़ा बाकी रखने के लिए हक को छोटा करने की कोशिश में लगे रहते थे। और इस किस्म की कोशिश बिला शुबह ख़ुदा की जमीन में सबसे बड़ा फ़साद है।

इन सरदारों ने आख़िरी मरहले में हजरत सालेह को हलाक करने की साजिश की। मगर क़ब्ल इसके कि वे अपने ख़ुफ़िया मंसूबे के मुताबिक हज़रत सालेह के ख़िलाफ कोई इक़्दाम करें, ख़ुदा ने ख़ुद उन्हें पकड़ लिया। वे अपनी सारी बड़ाई के बावजूद इस तरह बर्बाद कर दिए गए कि उनकी क़दीम बस्तियों में अब सिर्फ उनके टूटे हुए खंडहर, उनकी यादगार बाकी रह गए हैं।

इस किस्म के तारीख़ी वाक़ेआत में जबरदस्त सबक छुपा हुआ है। मगर इस सबक को वही शख़्स पाएगा जो इसे कानून इलाही से जोड़े। इसके बरअक्स जो लोग इसे असबाबे तबीई (स्वाभाविक प्रक्रिया) से जोड़ें वे इससे कोई सबक हासिल नहीं कर सकते।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

और लूत को जब उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम बेहयाई करते हो और तुम देखते हो। क्या तुम मर्दों के साथ शहवतरानी करते हो। औरतों को छोड़कर, बल्कि तुम लोग बेसमझ हो। फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक साफ बनते हैं। फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी सिवा उसकी बीवी के, जिसका पीछे रह जाना हमने तै कर दिया था। और हमने उन पर बरसाया एक हौलनाक बरसाना। पस कैसा बुरा बरसाव था उन पर जिन्हें आगाह किया जा चुका था, कहो हम्द है अल्लाह के लिए और

सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने मुंतख़ब फरमाया। क्या अल्लाह बेहतर है या वे जिन्हें वे शरीक करते हैं। (54-59)

कौमे लूत अपनी लज्जतियत में हमजिंसी (समलैंगिकता) की हद तक पहुंच गई थी। हजरत लूत ने कौम के जमीर को झिंझोड़ते हुए कहा कि ख़ुदा के बंदो, तुम्हें आंख दी गई है कि देखो और भले बुरे की तमीज दी गई है कि पहचानो। फिर कैसे तुम वह काम करते हो जो खुली हुई बेहयाई का काम है।

कौम के पास इसका कोई जवाब न था। वे पैग़म्बर की बात को दलील से रद्द नहीं कर सकते थे। इसलिए वे पैग़म्बर के ख़िलाफ जारिहियत पर आमादा हो गए। मगर जब यह नौबत आ जाए तो फिर बिला ताख़ीर खुदा का फैसला आ जाता है। चुनांचे ख़ुदा ने आतिश फ़शानी (विनाशक) माद्दा बरसाकर उन्हें हलाक कर दिया। इस ख़ुदाई फ़ैसले से हजरत लूत की बीवी भी न बची जो मुश्रिकों से मिली हुई थी। ख़ुदा का मामला हर शख़्स से उसके जाती अमल की बुनियाद पर होता है न कि रिश्ते और तअल्लुक की बुनियाद पर।

तारीख़ के मज्कूरा वाक़ेआत पर जो शख़्स ग़ौर करेगा वह पुकार उठेगा कि उस खुदा का शुक्र है जिसने हर दौर में इंसान की रहनुमाई का इंतिजाम किया और फिर उन बंदों की अक़ीदत से उसका सीना लबरेज हो जाएगा जिन्होंने अपनी जिंदगी कामिल तौर पर ख़ुदा के हवाले करके ख़ुदा के मंसूबए हिदायत की तक्मील की।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

भला वह कौन है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया। और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक वाले बाग़ उगाए। तुम्हारे वश में न था कि तुम इन दरख़्तों को उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) है। बल्कि वे राह से इंहिराफ करने वाले लोग हैं। भला किसने जमीन का ठहरने के लायक बनाया और उसके दर्मियान नदियां जारी कीं। और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए। और दो समुद्रों के दर्मियान पर्दा डाल दिया। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। बल्कि उनके अक्सर लोग नहीं जानते। (60-61)

कायनात नाकाबिले कयास हद तक अजीम है। उसकी अज़्मत के आगे वे अल्फाज सरासर नाकाफी हो जाते हैं जो गुमराहकुन इंसान उसकी ग़ैर ख़ुदाई तौजीह के लिए बोलता रहा है। चाहे वे कदीम मुश्रिक इंसान के बुत हों या जदीद मुल्हिद (नास्तिक) इंसान के वे नजरियात जो असबाब और इत्तफाकात (संयोगों) की इस्तेहालों में बयान किए जाते हैं।

बेशुमार अजराम (आकाशीय पिंडों) को पैदा करके उन्हें अथाह ख़ला (अंतरिक्ष) में मुतहर्रिक करना, जमीन को निहायत आला एहतिमाम के जरिए जिंदगी के मुवाफ़िक बनाना, पानी और नबातात (वनस्पति) जैसी नादिर चीजों को इंतिहाई इफरात (बहुलता) के साथ वजूद में लाना, मुसलसल हरकत करती हुई जमीन पर कामिल सुकून के हालात पैदा करना, दरियाओं और पहाड़ों के जरिए जमीन को जाए रिहाइश (आवास-स्थल) बनाना, पानी के सतही तनाव (Surface tension) के कानून के जरिए खारी पानी और मीठे पानी को एक दूसरे से अलग रखना, ये और इस तरह के दूसरे वाकेयात इससे ज्यादा अजीम हैं कि कोई बुत इन्हें अंजाम दे या कोई अंधा तबीई (भौतिक) कानून इन्हें वजूद दे सके।

हकीकत यह है कि एक अल्लाह के सिवा दूसरी बुनियादों पर कायनात की तौजीह करना झूठी तौजीह को तौजीह के कायम मकाम बनाना है। यह इंहिराफ (भटकाव) है न कि फिलवाकअ कोई तौजीह।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٤﴾

कौन है जो बेबस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है। और तुम्हें जमीन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है। क्या अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) है। तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो। कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र के अंधेरों में रास्ता दिखाता है। और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिन्हें वे शरीक ठहराते हैं। कौन है जो ख़ल्क (सृष्टि) की इब्तिदा करता है और फिर उसे दोहराता है। और कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रोजी देता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। कहो कि अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो। (62-64)

एक हाजतमंद की हाजत पूरी होना उस वक्त मुमकिन होता है जबकि तमाम कायनाती असबाब उसके साथ मुवाफ़िक़त करें। फिर एक क़ादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) ख़ुदा के सिवा कौन है जो इतने बड़े पैमाने पर मुवाफिक (अनुकूल) असबाब को जमा कर सकता हो।

इसी तरह एक कौम का हटना और दूसरी कौम का उसकी जगह लेना, समुद्री जहाज और मौजूदा जमाने में हवाई जहाज का इम्कानाते फ़ितरत से फायदा उठाकर अंधेरे और उजाले में सफर करना, समुद्र से भाप का उठना और फिर बारिश बनकर बरसना, चीजों को अदम से वजूद में लाना और फिर उन्हें दुबारा पैदा करना। इंसान के लिए वसीअ पैमाने पर हर किस्म के रिज़्क का बंदोबस्त करना, ये सब ख़ुदाई सतह के काम हैं। और एक बरतर ख़ुदा ही इन्हें अंजाम दे सकता है।

यही जमीन में जाहिर होने वाले तमाम वाकेयात का हाल है। यहां एक वाहिद वाक्ये को जहूर में लाने के लिए भी इतने बेशुमार अवामिल (कारक) दरकार होते हैं कि उसे वही हस्ती जहूर में ला सकती है जिसके कब्जे में सारी कायनात हो। फिर यह किस कद्र बेअक्ली की बात है कि आदमी एक ख़ुदा के सिवा किसी और को अपने जज्बाते अबदियत (बंदा होने की भावना) का मर्कज बनाए। वह एक ख़ुदा के सिवा किसी और की परस्तिश करे।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا ۖ بَلْ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

कहो कि अल्लाह के सिवा, आसमानों और जमीन में कोई ग़ैब (अप्रकट) का इल्म नहीं रखता। और वे नहीं जानते वे कब उठाए जाएंगे। बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म उलझ गया है। बल्कि वे उसकी तरफ से शक में हैं। बल्कि वे उससे अंधे हैं। और इंकार करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप दादा भी, तो क्या हम जमीन से निकाले जाएंगे। इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी। यह महज अगलों की कहानियां हैं। कहो कि जमीन में चलो फिरो, पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ। (65-69)

किसी पैग़म्बर के मुख़ातब आख़िरत के सिरे से मुंकिर न थे। बल्कि वे उस तसव्वुरे आख़िरत के मुंकिर थे जिसे पैग़म्बर पेश करते थे। लोग यह यकीन किए हुए थे कि आख़िरत

का मसला उनके अपने लिए नहीं है बल्कि दूसरों के लिए है। पैग़म्बर ने बताया कि आख़िरत तुम्हारे लिए भी वैसा ही एक संगीन मसला है जैसा कि वह दूसरों के लिए है। लोग समझते थे कि अपने बुजुर्गों से वाबस्तगी आख़िरत में उनके लिए नजात का जरिया बन जाएगी। पैग़म्बरों ने बताया कि आख़िरत में सिर्फ ख़ुदा की रहमत आदमी के काम आएगी न कि किसी बुज़ुर्ग से वाबस्तगी।

यही वजह है कि वे लोग आख़िरत के बारे में एक किस्म की जेहनी उलझन में पड़े हुए थे। उनके कुछ सिरफिरे कभी ऐसे अल्फाज बोलते जैसे कि वे आख़िरत के मुंकिर हों। मगर आम लोगों का हाल यह था कि वे नफ्से आख़िरत का इंकार नहीं करते थे। अलबत्ता पैग़म्बर के तसव्वुरे आख़िरत को मानने में जिंदगी की आजादियां ख़त्म होती थीं इसलिए उनका नफ्स इसे मानने के लिए तैयार न था। चुनांचे इसके जवाब में वे ऐसी बातें करते थे जैसे कि वे शक में हों। अपनी इसी जेहनी कैफियत की वजह से उन्होंने आख़िरत के दलाइल पर कभी संजीदगी के साथ ग़ौर नहीं किया। उसके बारे में वे अंधे बहरे बने रहे।

हकीकत यह है कि कौमों का फैसला करने के लिए जो ताकतें दरकार हैं वे सिर्फ ख़ुदाए आलिमुल ग़ैब को हासिल हैं। वह जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में भी अपना फैसला नाफिज करता है। और वही आख़िरत में कुल्ली तौर पर तमाम कौमों के ऊपर अपना फैसला नाफिज करेगा।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾

और उन पर ग़म न करो और दिल तंग न हो उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं। और वे कहते हैं कि यह वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। कहो कि जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो। और बेशक तुम्हारा रब लोगों पर बड़े फज़्ल वाला है। मगर उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते। और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे जाहिर करते हैं। और आसमानों और जमीन की कोई पोशीदा चीज नहीं है जो एक वाज़ेह किताब में दर्ज न हो। (70-75)

'गम न करो' का मतलब हक के दाई को ग़म से रोकना नहीं है। ग़म तो दाई की ग़िजा है। यह दरअस्ल हक की बेबसी की तरदीद (खंडन) है। इसका मतलब यह है कि सारे नामुवाफिक (प्रतिकूल) हालात के बावजूद आख़िरकार बहरहाल हक को और हक का साथ देने वालों को कामयाबी हासिल होगी।

हक के दाओ (आह्वानकर्ता) के मुख़ालिफीन जब हक के दाई की मुख़ालिफत करते हैं तो वे समझते हैं कि वे एक शख़्स की मुख़ालिफत कर रहे हैं। वे नहीं समझते कि यह ख़ुद ख़ुदा की मुख़ालिफत है न कि महज एक शख़्स की मुख़ालिफत। यह सूरतेहाल सिर्फ उस वक्त तक बाकी रहती है जब तक इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म न हुई हो। इम्तेहान की मुकर्ररह मुद्दत ख़त्म होते ही ख़ुदा की ताकतें जाहिर हो जाती हैं और वे मुख़ालिफीन का इस तरह ख़ात्मा कर देती हैं जैसे कि कभी उनकी कोई हैसियत ही न थी। आदमी के लिए इससे बड़ी कोई नादानी नहीं कि वह आजमाइश की फुरसत को अपने लिए सरकशी की फुरसत के हममअना बना ले।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर बहुत सी चीजों को वाज़ेह कर रहा है जिनमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) रखते हैं। और वह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म के जरिए उनके दर्मियान फैसला करेगा और वह जबरदस्त है, जानने वाला है। पस अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक तुम सरीह हक (सुस्पष्ट सत्य) पर हो। तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वे पीठ फेरकर चले जाएं। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से बचाकर रास्ता दिखाने वाले हो। तुम तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर फरमांबरदार बन जाते हैं। (76-81)

इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो आंख, कान और दिमाग़ की सलाहियतें रखता है। इन सलाहियतों को अगर खुले तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो वे बेख़ता (अचूक) तौर पर हकीकतों को देखने और पहचानने का जरिया बन सकती हैं। लेकिन अगर कोई शख़्स अपने आपको किसी मस्नूई (बनावटी) तसव्वुर से मग़लूब कर ले तो उसकी इदराक (भिज्ञता) की

सलाहियतें मुअत्तल (नष्ट) होकर रह जाती हैं। उसके सामने हकीकत बेनकाब सूरत में आती है मगर वह उससे इस तरह बेख़बर रहता है जैसे कि वह अंधा बहरा हो। हकीकत यह है कि इस दुनिया में उसी शख़्स को रास्ता दिखाया जा सकता है जो रास्ता देखना चाहे। जिसके अंदर ख़ुद रास्ते की तड़प न हो उसके लिए किसी रहनुमा की रहनुमाई काम आने वाली नहीं।

हकपरस्त बनने के लिए सबसे ज्यादा जो चीज दरकार है वह एतराफ (स्वीकार) है। इस दुनिया में उसी शख़्स को हिदायत मिलती है जिसके अंदर यह माद्दा हो कि जो बात दलाइल से वाजेह हो जाए वह फौरन उसे मान ले और अपनी जिंदगी को उसकी मातहती में दे दे।

जो लोग ख़ुदा की दावत के आगे न झुकें, उन्हें आख़िरकार ख़ुदा के फैसले के आगे झुकना पड़ता है। मगर उस वक्त का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

और जब उन पर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए जमीन से एक दाब्बह (जानवर) निकालेंगे जो उनसे कलाम करेगा। कि लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उनकी जमाअतबंदी की जाएगी। यहां तक कि जब वे आ जाएंगे तो ख़ुदा कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को झुठलाया हालांकि तुम्हारा इल्म उनका अहाता न कर सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे। और उन पर बात पूरी हो जाएगी इस सबब से कि उन्होंने जुल्म किया, पस वे कुछ न बोल सकेंगे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें। और दिन कि उसमें देखें। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन करते हैं। (82-86)

जब अल्लाह तआला का यह फैसला होगा कि जमीन की मौजूदा तारीख़ ख़त्म कर दी जाए तो आख़िरी तौर पर कुछ ग़ैर मामूली निशानियां जाहिर होंगी। उन्हीं में से एक दाब्बह (जानवर) का जुहूर है। इंसानी दाजियों की जबान से जो बात लोगों ने नहीं मानी उसका एलान एक ग़ैर इंसानी मख़्लूक के जरिए से कराया जाएगा। ताहम यह इम्तेहान का वक्त ख़त्म होने का घंटा होगा न कि इम्तेहान का वक्त शुरू होने का एलान।

कियामत में जब तमाम लोग हाजिर होंगे तो उनकी जमाअतें बनाई जाएंगी। मानने वाले एक तरफ कर दिए जाएंगे और न मानने वाले दूसरी तरफ। इसके बाद मुंकिरीन से पूछा जाएगा कि तुम्हारे पास कौन सी इल्मी दलील थी जिसकी बिना पर तुमने सदाकत (सच्चाई) का इंकार किया। उस वक्त उनका लाजवाब होना साबित करेगा कि उनका इंकार महज जिद और तअस्सुब पर मबनी था। अगरचे अपने को बरहक जाहिर करने के लिए वे झूठे दलाइल पेश किया करते थे। उस वक्त उन पर खुलेगा कि दाओ के मलफूज (शाब्दिक) कलाम के अलावा रात और दिन भी ग़ैर मलफूज जबान में उन्हें अम्रे हक से मुत्तलअ (सूचित) कर रहे थे। रात की नींद गोया मौत की तमसील थी। और सुबह का जागना दुबारा जी उठने की तमसील। हक के एलान के इतने ग़ैर मामूली एहतिमाम के बावजूद वे हक की दरयाफ्त से महरूम रहे।

وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُم مِّن فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ﴿٨٩﴾ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾

और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं मगर वह जिसे अल्लाह चाहे। और सब चले आएंगे उसके आगे आजिजी से। और तुम पहाड़ों को देखकर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं, और वे चलेंगे जैसे बादल चलें। यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को मोहकम (सुदृढ़) किया है। बेशक वह जानता है जो तुम करते हो। जो शख़्स भलाई लेकर आएगा तो उसके लिए इससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट से महफूज होंगे। और जो शख़्स बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग औंधे मुंह आग में डाल दिए जाएंगे। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (87-90)

मौजूदा दुनिया में इंकार का अस्ल सबब इंसान की बेख़ौफी है। यह दरअस्ल बेख़ौफी की नफ्सियात है जिसकी वजह से आदमी हक को नजरअंदाज करता है और इसके मुकाबले में सरकशी का रवैया इख़्तियार करता है। मगर जब इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी और इसकी अलामत के तौर पर सूर फूंक दिया जाएगा तो अचानक लोग महसूस करेंगे कि उनकी बेख़ौफी महज बेख़बरी की बिना पर थी। उस दिन तमाम बड़ाइयां रेत की दीवार की तरह ढह जाएंगी।

यह ऐसा सख़्त लम्हा होगा कि इंसान तो दरकनार पहाड़ भी रेजा-रेजा हो जाएंगे। उस वक्त सारा इज्ज एक तरफ हो जाएगा और सारी कुद्रत दूसरी तरफ।

उस दिन वे तमाम चीजें बिल्कुल ग़ैर अहम हो जाएंगी जिन्हें लोग दुनिया में अहम समझे हुए थे। उस दिन सारा वजन सिर्फ अमले सालेह में होगा। उस दिन, खोने वाले पाएंगे और पाने वाले अबदी (चिरस्थाई) तौर पर महरूम होकर रह जाएंगे।

إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ ٱلْبَلْدَةِ ٱلَّذِى حَرَّمَهَا وَلَهُۥ كُلُّ شَىْءٍ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾ وَأَنْ أَتْلُوَا۟ ٱلْقُرْءَانَ ۖ فَمَنِ ٱهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُنذِرِينَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ ءَايَٰتِهِۦ فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

मुझे यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूं जिसने इसे मोहतरम (आदरणीय) ठहराया और हर चीज उसी की है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांबरदारी करने वालों में से बनूं। और यह कि कुरआन को सुनाऊं। फिर जो शख़्स राह पर आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा और जो गुमराह हुआ तो कह दो कि मैं तो सिर्फ डराने वालों में से हूं। और कहो कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (91-93)

इस शहर (मक्का) का हवाला कुरआन के मुख़ातबे अव्वल की रिआयत से है। ताहम यह एक उस्लूबे कलाम (शैली) की बात है। आयत का अस्ल उद्देश्य इंसान को उस अबदी (शाश्वत) हकीकत की तरफ मुतवज्जह करना है कि उसके लिए एक ही सही रवैया है। और वह यह कि वह एक ख़ुदा का इबादतगुजार बने।

दाऔ (आह्वानकर्ता) का काम 'सुनाना' है। यानी अम्रे हक का एलान। आदमी को दाऔ की लफ्जी पुकार में मअनवी हकीकत का इदराक करना है। बेजोर दावत में ख़ुदाई ताकत का जलवा देखना है। जो लोग इस सलाहियत का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो ख़ुदा के अबदी इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

'ख़ुदा अपनी निशानियां दिखाएगा' इस पेशीनगोई का एक पहलू कुरआन के मुख़ातबे अव्वल (कुरैशे मक्का) से तअल्लुक रखता है जिन्हें दौरे अव्वल में जंगे बद्र और फतह मक्का की सूरत में ख़ुदा की निशानियां दिखाई गईं। इसका दूसरा पहलू वह है जिसका तअल्लुक कुरआन की अबदियत (शाश्वतता) से है। इस दूसरे एतबार से इस मौजूदा जमाने में जाहिर होने वाली साइंसी निशानियां भी इस ग़ैर मामूली पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के वसीअतर मिस्दाक में शामिल हैं।

سُورَةُ ٱلْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَهِىَ ثَمَانٍ وَثَمَانُونَ ءَايَةً وَتِسْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

طسٓمٓ ﴿١﴾ تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱلْكِتَٰبِ ٱلْمُبِينِ ﴿٢﴾ نَتْلُوا۟ عَلَيْكَ مِن نَّبَإِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِٱلْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى ٱلْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ أَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْىِۦ نِسَآءَهُمْ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٤﴾ وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ ٱلْوَٰرِثِينَ ﴿٥﴾ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَحْذَرُونَ ﴿٦﴾

आयतें-88 **सूरह-28. अल-क़सस** रुकूअ-9

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। हम मूसा और फिरऔन का कुछ हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। बेशक फिरऔन ने जमीन में सरकशी की। और उसने उसके बाशिंदों को गिरोहों में तक्सीम कर दिया। उनमें से एक गिरोह को उसने कमजोर कर रखा था। वह उनके लड़कों को जबह करता था और उनकी औरतों को जिंदा रखता था। बेशक वह फसाद करने वालों में से था। और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो जमीन में कमजारे कर दिए गए थे और उन्हें पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हें वारिस बना दें और उन्हें जमीन में इक्तेदार (सत्ता) अता करें। और फिरऔन और हामान और उनकी फौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे। (1-6)

फिरऔन को यहां फसाद फिलअर्ज (धरती पर उपद्रव) का मुजरिम बताया गया है। फिरऔन का फसाद यह था कि उसने मिस्र की दो कौमों में इम्तियाज किया। किब्ती कौम जो उसकी अपनी कौम थी, उसे उसने हर किस्म के मवाकेअ (अवसर) दिए। और बनी इस्राईल को न सिर्फ मवाकेअ से महरूम किया बल्कि उनके नौमोलूद (नवजात) लड़कों को कत्ल करना शुरू कर दिया ताकि धीरे-धीरे उनकी नस्ल का ख़ात्मा हो जाए। फिरऔन का यह अमल फित्रत के निजाम में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) थी। ख़ुदा के कानून में, निजामे फित्रत से मुताबिकत का नाम इस्लाह है और निजामे फित्रत में मुदाख़लत का नाम फसाद।

इज्ज़त और बेइज्ज़ती का फ़ैसला ख़ुदा की तरफ से होता है। ख़ुदा ने उसके बरअक्स फ़ैसला किया जो फ़िरऔन ने फ़ैसला किया था। ख़ुदा ने फ़ैसला किया कि वह बनी इस्राईल को इज्ज़त और इक्तेदार दे और फ़िरऔन को उसकी फ़ौजों के साथ हलाक कर दे। हज़रत मूसा के ज़रिए इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद फ़िरऔन ने अपने को मुस्तहिके अज़ाब साबित कर दिया। चुनांचे ख़ुदा ने उसे समुद्र में डुबा कर हमेशा के लिए उसका ख़ात्मा कर दिया। और बनी इस्राईल को मिस्र से ले जाकर शाम व फ़िलिस्तीन का हुक्मरां (शासक) बना दिया।

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّ مُوسَىٰٓ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِى
ٱلْيَمِّ وَلَا تَخَافِى وَلَا تَحْزَنِىٓ ۖ إِنَّا رَآدُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ⑦
فَٱلْتَقَطَهُۥٓ ءَالُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَ
هَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا۟ خَٰطِـِٔينَ ⑧ وَقَالَتِ ٱمْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّى وَ
لَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰٓ أَن يَنفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهُۥ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑨

और हमने मूसा की मां को इल्हाम (दिव्य संकेत) किया कि उसे दूध पिलाओ। फिर जब तुम्हें उसके बारे में डर हो तो तुम उसे दरिया में डाल दो। और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो। हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएंगे। और उसे पैग़म्बरों में से बनाएंगे। फिर उसे फ़िरऔन के घर वालों ने उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बाइस बने। बेशक फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे। और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि यह आंख की ठंडक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए। इसे क़त्ल न करो। क्या अजब कि यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें। और वे समझते न थे। (7-9)

हज़रत मूसा की पैदाइश के ज़माने में बनी इस्राईल के लड़के हलाक किए जा रहे थे। इस बिना पर हज़रत मूसा की वालिदा परेशान हुईं। उस वक़्त ग़ालिबन ख़्वाब के ज़रिए आपकी वालिदा को यह तदबीर बताई गई कि वह आपको एक छोटी कश्ती में रखकर दरियाए नील में डाल दें। उन्होंने तीन माह बाद ऐसा ही किया। यह छोटी कश्ती बहते हुए फ़िरऔन के महल के सामने पहुंची। फ़िरऔन की बीवी (आसिया) एक नेकबख़्त (सदाचारी) ख़ातून थीं। उन्हें हज़रत मूसा के मासूम और पुरकशिश हुलिये को देखकर रहम आ गया। चुनांचे उनके मश्विरे पर हज़रत मूसा फ़िरऔन के महल में रख लिए गए।

रिवायतों में आता है कि फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि यह बच्चा आंख की ठंडक है। फ़िरऔन ने जवाब दिया कि तुम्हारे लिए है न कि मेरे लिए। यह बात ग़ालिबन फ़िरऔन ने मर्द और औरत के फ़र्क़ पर कही होगी मगर बाद को वह ऐन वाक़्या बन गई।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَٰرِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِى بِهِۦ لَوْلَآ أَن رَّبَطْنَا
عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ⑩ وَقَالَتْ لِأُخْتِهِۦ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ
بِهِۦ عَن جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑪ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ ٱلْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰٓ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُۥ لَكُمْ وَهُمْ لَهُۥ نَٰصِحُونَ ⑫
فَرَدَدْنَٰهُ إِلَىٰٓ أُمِّهِۦ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑬ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُۥ وَٱسْتَوَىٰٓ ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَ
عِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ⑭

और मूसा की मां का दिल बेचैन हो गया। क़रीब था कि वह उसे ज़ाहिर कर दे अगर हम उसके दिल को न संभालते कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे। और उसने उसकी बहिन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा। तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई। और हमने पहले ही मूसा से दाइयों को रोक रखा था। तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूं जो इसे तुम्हारे लिए पालें और वे इसकी ख़ैरख़्वाही करें। पस हमने उसे उसकी मां की तरफ़ लौटा दिया ताकि उसकी आंखें ठंडी हों। और वह ग़मगीन न हो। और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचा और पूरा हो गया तो हमने उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को। (10-14)

हज़रत मूसा की हिफ़ाज़त को अल्लाह तआला ने तमामतर अपनी तरफ़ मंसूब किया है। हालांकि वाक़ये की तफ़सीलात बताती हैं कि पूरा वाक़्या असबाब के तहत पेश आया। इससे मालूम होता है कि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में अल्लाह तआला की मर्ज़ी का ज़ुहूर आम तौर पर असबाब के अंदाज में होता है न कि तिलिस्मात और ख़वारिक़ (अस्वाभाविकता) के अंदाज मे।

हज़रत मूसा बेबसी की हालत में दरिया की मौजों में डाले गए मगर वह पूरी तरह महफ़ूज़ रहकर साहिल पर पहुंच गए। बादशाहे वक़्त ने उनके क़त्ल का मंसूबा बनाया मगर अल्लाह ने उसी बादशाह के ज़रिए आपकी परवरिश का इंतिज़ाम किया। वह एक मामूली ख़ानदान में पैदा हुए मगर अल्लाह तआला ने उन्हें शाही महल से वाबस्ता करके आलातरीन सतह पर उनके लिए वक़्त के उलूम (ज्ञान) व आदाब सीखने का इंतिज़ाम किया। यह एक मि साल है जो बताती है कि अल्लाह तआला की क़ुदरत लामहदूद (असीम) है। कोई नहीं जो उसके मंसूबे को ज़ुहूर में आने से रोक सके।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۡ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝

और शहर में वह ऐसे वक्त में दाख़िल हुआ जबकि शहर वाले ग़फलत में थे तो उसने वहां दो आदमियों को लड़ते हुए पाया। एक उसकी अपनी कौम का था और दूसरा दुश्मनों में से था। तो जो उसकी कौम में से था उसने उसके ख़िलाफ मदद तलब की जो उसके दुश्मनों में से था। पस मूसा ने उसे घूंसा मारा। फिर उसका काम तमाम कर दिया। मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम से है। बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है। पस तू मुझे बख़्श दे तो ख़ुदा ने उसे बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, जैसा तूने मेरे ऊपर फज़्ल किया तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा। (15-17)

पैग़म्बरी मिलने से पहले का वाकया है, हजरत मूसा मिस्र के दारुस्सल्तनत (राजधानी) में थे। एक रोज उन्होंने देखा कि एक किबती (मूल मिस्री) और एक इस्राईली लड़ रहे हैं। इस्राईली ने हजरत मूसा को अपना हमकौम समझ कर पुकारा कि जालिम किबती के मुकाबले में मेरी मदद कीजिए। हजरत मूसा ने दोनों को अलग करना चाहा तो किबती आपसे उलझ गया। आपने दिफाअ (आत्मरक्षा) के तौर पर उसे एक घूंसा मारा। वह इत्तफाकन ऐसी जगह लगा कि किबती मर गया।

किबती कौम उस वक्त बनी इस्राईल पर सख़्त ज्यादतियां कर रही थी। ऐसी हालत में हजरत मूसा अगर इस वाकये को कौमी नुक्तए नजर से देखते तो वह उसे मुजाहिदाना कारनामा करार देकर फख़्र करते। मगर उन्हें किबती की मौत पर शदीद अफसोस हुआ। वह फौरन अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हुए और अल्लाह से माफी मांगने लगे।

'अब मैं किसी मुजरिम की हिमायत नहीं करूंगा' इसका मतलब यह है कि अब मैं बिला तहकीक किसी की हिमायत नहीं करूंगा। एक शख़्स का बजाहिर मज़लूम फिरके से तअल्लुक रखना या किसी को जालिम बताकर उसके ख़िलाफ मदद मांगना यह साबित करने के लिए काफी नहीं कि फिलवाकअ भी दूसरा शख़्स जालिम है। और फरयाद करने वाला मज़लूम।

इसलिए सही तरीका यह है कि ऐसे मौकों पर अस्ल मामले की तहकीक की जाए और सिर्फ उस वक्त किसी की हिमायत की जाए जबकि ग़ैर जानिबदाराना तहकीक में उसका मज़लूम होना साबित हो जाए।

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ۭ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۤ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

फिर सुबह को वह शहर में उठा डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। तो देखा कि वही शख़्स जिसने कल मदद मांगी थी, वही आज फिर उसे मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, बेशक तुम सरीह गुमराह हो। फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो उसने कहा कि ऐ मूसा क्या तुम मुझे कत्ल करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक शख़्स को कत्ल किया। तो तुम जमीन में सरकश बनकर रहना चाहता हो। तुम सुलह करने वालों में से बनना नहीं चाहते। और एक शख़्स शहर के किनारे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा ऐ मूसा, दरबार वाले मश्विरा कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें। पस तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे ख़ैरख़्वाहों में से हूं। फिर वह वहां से निकला डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे जालिम लोगों से नजात दे। (18-21)

अगले दिन वही इस्राईली दुबारा एक किबती से लड़ रहा था। यह इस बात का वाजेह करीना (संकेत) था कि वह एक झगड़ालू किस्म का आदमी है और रोजाना किसी न किसी से लड़ता रहता है। चुनांचे अपनी कौम का फर्द होने के बावजूद हजरत मूसा ने उसे मुजरिम ठहराया। मज्कूरा इस्राईली का मुजरिम होना इस वाकये से मजीद साबित हो गया कि उस इस्राईली ने जब देखा कि हजरत मूसा आज उसकी मदद नहीं कर रहे हैं और उसकी उम्मीद के ख़िलाफ ख़ुद उसी को बुरा कह रहे हैं तो वह कमीनेपन पर उतर आया। उसने ग़ैर

जिम्मेदाराना तौर पर कल के क़त्ल का राज खोल दिया जो अभी तक किसी के इल्म में न आया था।

इस्राईली की जबान से क़ातिल का नाम निकला तो बहुत से लोगों ने सुन लिया। चन्द दिन में उसकी ख़बर हर तरफ फैल गई। यहां तक कि हुक्मरानों में मूसा के क़त्ल के मश्विरे होने लगे। एक नेकबख़्त आदमी को इसका पता चल गया। वह ख़ुफिया तौर पर हजरत मूसा से मिला और कहा कि इस वक्त यही बेहतर है कि आप इस जगह को छोड़ दें। चुनांचे आप मिस्र से निकल कर मदयन की तरफ रवाना हो गए। मदयन ख़लीज अक़बा के मग़रिबी साहिल (पश्चिमी तट) पर था और फिरऔन की सल्तनत के हुदूद (सीमाओं) से बाहर था।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

और जब उसने मदयन का रुख़ किया तो उसने कहा, उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखा दे। और जब वह मदयन के पानी पर पहुंचा तो वहां लोगों की एक जमाअत को पानी पिलाते हुए पाया। और उनसे अलग एक तरफ दो औरतों को देखा कि वे अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है। उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियां न हटा लें। और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया। फिर साये की तरफ हट गया। फिर कहा कि ऐ मेरे रब, तू जो चीज मेरी तरफ उतारे मैं उसका मोहताज हूं। (22-24)

हजरत मूसा का यह सफर गोया नामालूम मंज़िल की तरफ सफर था। ऐसे हालात में मोमिन के दिल की जो कैफियत होती है वह पूरी तरह आपके ऊपर तारी थी। आप दुआओं के साये में अपना क़दम आगे बढ़ा रहे थे। तक़रीबन दस दिन के सफर के बाद मदयन पहुंचे। ग़ालिब गुमान है कि आप भूखे भी होंगे।

हजरत मूसा ने कमजोरों की हिमायत के जज्बे के तहत मदयन की दोनों लड़कियों की मदद की। यह वाक़या उनके लिए लड़कियों के वालिद तक पहुंचने का जरिया बना। यह बुज़ुर्ग मदयान बिन इब्राहीम की औलाद से थे और हजरत मूसा, इस्हाक़ बिन इब्राहीम की औलाद से। इस एतबार से दोनों में नस्ली क़ुरबत भी थी।

उस वक्त हज़रत मूसा की ज़बान से यह दुआ निकली : 'ऐ मेरे रब, तू जो चीज़ मेरी तरफ

उतारे मैं उसका मोहताज हूं।' यह दुआ बताती है कि ऐसे वक्त में मोमिन का हाल क्या होता है। वह अपने मामले को तमामतर अल्लाह पर डाल देता है। उसे यक़ीन होता है कि बंदे को जो कुछ मिलता है ख़ुदा से मिलता है, और ख़ैर वही है जो उसे ख़ुदा की तरफ से मिले।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

फिर उन दोनों में से एक आई शर्म से चलती हुई। उसने कहा कि मेरा बाप आपको बुला रहा है कि आपने हमारी ख़ातिर जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दे। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा किस्सा बयान किया तो उसने कहा कि अंदेशा न करो। तुमने जालिमों से नजात पाई। उनमें से एक ने कहा कि ऐ बाप इसे मुलाजिम रख लीजिए। बेहतरीन आदमी जिसे आप मुलाजिम रखें वही है जो मजबूत और अमानतदार हो। उसने कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ कर दूं। इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाजिमत करो। फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ से है। और मैं तुम पर मशक्कत डालना नहीं चाहता। इंशाअल्लाह तुम मुझे भला आदमी पाओगे। मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दर्मियान तै है। इन दोनों मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी करूं तो मुझ पर कोई जब्र न होगा। और अल्लाह हमारे कौल व करार पर गवाह है। (25-28)

लड़कियां उस दिन मअमूल से कुछ पहले पहुंच गईं। वालिद ने पूछा तो उन्होंने बताया कि आज एक मुसाफिर ने हमारी बकरियों को पहले ही पानी पिला दिया। लड़कियों के वालिद ने कहा कि फिर तुम उस मुसाफिर को घर क्यों न लाईं कि वह हमारे साथ खाना खाए। चुनांचे एक लड़की दुबारा कुंवें पर गई और हजरत मूसा को बुलाकर ले आई।

चन्द दिन के तजर्बे ने बताया कि हजरत मूसा महनती भी हैं और अमानतदार भी। चुनांचे मज्कूरा बुज़ुर्ग ने अपनी बेटी की राय से इत्तफ़ाक करते हुए हजरत मूसा को अपने यहां मुस्तकिल ख़िदमत के लिए रख लिया। हक़ीक़त यह है कि यह दोनों सिफ़ात, अमानत और कुव्वत (Honesty & hard working) तमाम जरूरी सिफ़ात की जामेअ हैं। आदमी के इंतख़ाब के लिए मेयार मुकर्रर होना हो तो इन दो लफ़्ज़ों से बेहतर कोई मेयार नहीं हो सकता।

बाद को मज्कूरा बुज़ुर्ग ने अपनी एक लड़की की शादी भी हजरत मूसा से कर दी। ताहम चूंकि उस वक्त उन्हें अपने घर और जायदाद की देखभाल के लिए एक मर्द की शदीद जरूरत थी, उन्होंने हजरत मूसा को इस पर आमादा किया कि वह आठ साल या दस साल तक उनके यहां कियाम करें। इसके बाद वे जहां जाना चाहें जा सकते हैं।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿29﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَیْمَنِ فِی الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ یّٰمُوْسٰۤى اِنِّیْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿30﴾ وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ یُعَقِّبْ ۚ یٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ ﴿31﴾ اُسْلُكْ یَدَكَ فِیْ جَیْبِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ وَّاضْمُمْ اِلَیْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ﴿32﴾

फिर मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और वह अपने घर वालों के साथ रवाना हुआ तो उसने तूर की तरफ से एक आग देखी। उसने अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है। शायद मैं वहां से कोई ख़बर ले आऊं या आग का अंगारा ताकि तुम तापो। फिर जब वह वहां पहुंचा तो वादी के दाहिने किनारे से बरकत वाले ख़ित्ते में दरख़्त से पुकारा गया कि ऐ मूसा, मैं अल्लाह हूं, सारे जहान का मालिक। और यह कि तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। तो जब उसने उसे हरकत करते हुए देखा कि गोया सांप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर न देखा। ऐ मूसा आगे आओ और न डरो। तुम बिल्कुल महफ़ूज हो। अपना हाथ गरेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी मरज के, और ख़ौफ के वास्ते अपना बाज़ू अपनी तरफ मिला लो।

पस यह तुम्हारे रब की तरफ से दो सनदें हैं फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास जाने के लिए। बेशक वे नाफरमान लोग हैं। (29-32)

हजरत मूसा ग़ालिबन दस साल मदयन में रहे। इस मुद्दत में साबिक़ा फ़िरऔन मर गया और ख़ानदाने फ़िरऔन का दूसरा शख़्स मिस्र के तख़्त पर बैठा। अब आप अपनी बीवी (और तौरात के मुताबिक दो बच्चों) के साथ दुबारा मिस्र की तरफ रवाना हुए। रास्ते में आप पर तूर का तजर्बा गुजरा।

जिस ख़ुदा ने सीना के पहाड़ पर एक इंसान से बराहेरास्त कलाम किया। वह ख़ुदा तमाम इंसानों को भी बराहेरास्त आवाज देकर अपनी मर्जी से बाख़बर कर सकता है। मगर यह ख़ुदा का तरीका नहीं। बराहेरास्त ख़िताब का मतलब पर्दे को हटा देना है, जबकि इम्तेहान की मस्लेहत चाहती है कि पर्दा लाजिमन बाकी रहे। चुनांचे ख़ुदा अपना बराहेरास्त कलाम सिर्फ किसी मुंतख़ब इंसान के ऊपर उतारता है और बकिया लोगों को उसके जरिए से बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर अपना पैग़ाम पहुंचाता है।

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ یَّقْتُلُوْنِ ﴿33﴾ وَاَخِیْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً یُّصَدِّقُنِیْۤ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنِ ﴿34﴾ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِیْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا یَصِلُوْنَ اِلَیْكُمَا ۚ بِاٰیٰتِنَاۤ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿35﴾

मूसा ने कहा ऐ मेरे रब मैंने उनमें से एक शख़्स को कत्ल किया है तो मैं डरता हूं कि वे मुझे मार डालेंगे। और मेरा भाई हारून वह मुझसे ज्यादा फसीह (वाक-कुशल) है जबान में, पस तू उसे मेरे साथ मददगार की हैसियत से भेज कि वह मेरी ताईद करे। मैं डरता हूं कि वे लोग मुझे झुठला देंगे। फरमाया कि हम तुम्हारे भाई के जरिए तुम्हारे बाज़ू को मजबूत कर देंगे और हम तुम दोनों को ग़लबा देंगे तो वे तुम लोगों तक न पहुंच सकेंगे। हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और तुम्हारी पैरवी करने वाले ही ग़ालिब रहेंगे। (33-35)

ख़ुदा जब किसी को अपनी दावत के काम पर मामूर (नियुक्त) करता है तो लाजिमी तौर पर उसे वह तमाम असबाब भी देता है जो कारे दावत की मुवस्सिर अदायगी के लिए जरूरी हैं। चुनांचे हजरत मूसा को उनके हालात के लिहाज से विभिन्न चीजें दी गईं। आपको मामूरियत की सनद के तौर पर ख़ारिके आदत (दिव्य) मोजिजे अता किए गए। आपको मददगार दिया गया जो हक के एलान के काम में आपका मुआविन (सहयोगी) हो। आपको

शख़्सी हैबत दी गई ताकि फिरऔन की कौम आप पर हाथ डालने की जुरअत न करे। ख़ुदा की तरफ से यह मुक़द्दर कर दिया गया कि हजरत मूसा और आपके साथियों (बनी इस्राईल) ही को आख़िरी ग़लबा हासिल हो।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّ
مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ
جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ
فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ
مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾

फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी वाजेह निशानियों के साथ पहुंचा, उन्होंने कहा कि यह महज गढ़ा हुआ जादू है। और यह बात हमने अपने अगले बाप दादा में नहीं सुनी। और मूसा ने कहा मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो उसकी तरफ से हिदायत लेकर आया है और जिसे आख़िरत का घर मिलेगा। बेशक जालिम फलाह न पाएंगे। और फिरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद (पूज्य) को नहीं जानता। तो ऐ हामान मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं मूसा के रब को झांक कर देखूं, और मैं तो इसे एक झूठा आदमी समझता हूं। (36-38)

एक शख़्स अपने को बड़ा समझता हो, उसके सामने एक बजाहिर मामूली आदमी आए और उस पर बराहेरास्त तंकीद करे तो वह फौरन बिफर उठता है। वह उसका इस्तहजा (परिहास) करता है और उसका मजाक उड़ाने के लिए तरह-तरह की बातें करता है। यही उस वक्त फिरऔन ने हजरत मूसा के मुक़ाबले में किया।

'मैं अपने सिवा कोई माबूद नहीं जानता' कोई संजीदा जुमला नहीं है। इन अल्फाज से फिरऔन का मक्सूद बयाने हकीकत नहीं बल्कि तहकीरे मूसा है। इसी तरह फिरऔन ने जब अपने वजीर हामान से कहा कि पुख़्ता ईंट तैयार करके एक ऊंची इमारत बनाओ ताकि मैं आसमान में झांक कर मूसा के ख़ुदा को देखूं, तो यह कोई संजीदा हुक्म नहीं था। इसका मतलब यह नहीं था कि वाकेयातन वह अपने वजीर के नाम एक तामीरी फरमान जारी कर रहा है। यह सिर्फ हजरत मूसा का इस्तहजा (मज़ाक उड़ाना) था न कि फिलवाकअ तामीरे मकान का कोई हुक्म।

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا
لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ
مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا
الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

और उसने और उसकी फौजों ने जमीन में नाहक घमंड किया और उन्होंने समझा कि उन्हें हमारी तरफ लौट कर आना नहीं है। तो हमने उसे और उसकी फौजों को पकड़ा। फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। तो देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। और हमने उन्हें सरदार बनाया कि आग की तरफ बुलाते हैं। और कियामत के दिन उन्हें मदद नहीं मिलेगी। और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी। और कियामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे, और हमने अगली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी। लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) का सामान, और हिदायत और रहमत ताकि वे नसीहत पकड़ें। (39-43)

हजरत मूसा की तहरीक फर्दे इंसानी में रब्बानी इंक़िलाब बरपा करने की तहरीक थी। आपका मक़्सद यह था कि आदमी अल्लाह से डरे और अल्लाह का बंदा बनकर दुनिया में जिंदगी गुजारे। आपका यही पैग़ाम दूसरे अफराद के लिए भी था और यही उस फर्द के लिए भी जो मुल्क के तख़्त पर बैठा हुआ था।

यह एक आम बात है कि इख़्तियार व इक्तेदार पाकर आदमी घमंड की नफ्सियात में मुब्तिला हो जाता है। यही फिरऔन का हाल भी था। हजरत मूसा ने फिरऔन को डराया कि अगर तुम मुतकब्बिर (घमंडी) बनकर दुनिया में रहोगे तो ख़ुदा की पकड़ में आ जाओगे। मगर फिरऔन ने नसीहत कुबूल नहीं की। नतीजा यह हुआ कि उसे हलाक कर दिया गया।

फिरऔन क़दीम मुश्रिकाना (बहुदेववादी) तहजीब का इमाम था। मुश्रिकाना तहजीब में फिरऔन को ऊंचा मक़ाम हासिल था। मगर मुश्रिकाना तहजीब न सिर्फ मिस्र से बल्कि सारी दुनिया से ख़त्म हो गई। अब दुनिया की आबादी में ज्यादातर या तो मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई। और यह सबके सब मुत्तफिक़ तौर पर फिरऔन को लानतजदा समझते हैं। अब दुनिया में कोई भी फिरऔन की अज्मत को मानने वाला नहीं।

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ
الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَٰكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنتَ ثَاوِيًا
فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنتَ
بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا
مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾

और तुम पहाड़ के मग़रिबी (पश्चिमी) जानिब मौजूद न थे जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए और न तुम गवाहों में शामिल थे। लेकिन हमने बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उन पर बहुत जमाना गुजर गया। और तुम मदयन वालों में भी न रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते। मगर हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले। और तुम तूर के किनारे न थे जब हमने मूसा को पुकारा, लेकिन यह तुम्हारे रब का इनाम है, ताकि तुम एक ऐसी कौम को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि वे नसीहत पकड़ें। (44-46)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुरआन में हजरत मूसा के वाक़ेयात इस क़द्र तफ्सील के साथ बयान कर रहे थे जैसे कि आप वहीं मौके पर खड़े हों और सब कुछ देख और सुन रहे हों। हालांकि वाक़या यह है कि आप हजरत मूसा के दो हजार साल बाद मक्का में पैदा हुए। यह इस बात की वाजेह दलील थी कि क़ुरआन का कलाम ख़ुदा का कलाम है क्योंकि कोई इंसान इस तरह के बयान पर कादिर नहीं हो सकता।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में आजकल की तरह किताबें नहीं होती थीं। उस वक्त हजरत मूसा के वाक़ेयात का जिक्र यहूद की ग़ैर अरबी किताबों में था जिनके सिर्फ चन्द नुस्ख़े यहूदी इबादतख़ानों में महफूज थे और यक़ीनी तौर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दस्तरस से बाहर थे। मजीद यह कि क़ुरआन के बयानात और यहूदी किताबों के बयानात में बहुत से निहायत बामअना फर्क़ हैं और करीना बताता है कि क़ुरआन का बयान ही ज्यादा सही है। मिसाल के तौर पर हजरत मूसा के हाथ से क़िब्ती की मौत क़ुरआन के बयान के मुताबिक बग़ैर इरादे के हुई। जबकि बाइबल हजरत मूसा के बारे में कहती है :

'फिर उसने इधर-उधर निगाह की और जब देखा कि वहां कोई दूसरा आदमी नहीं है तो उस मिस्री को जान से मार कर उसे रेत में छुपा दिया।' (ख़ुरूज 2 : 12)

खुली हुई बात है कि हजरत मूसा जैसी मुक़द्दस शख़्सियत से क़ुरआन का बयान मुताबिकत रखता है न कि तौरात का बयान। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम किस तरह इस पर कादिर हुए कि किसी जाहिरी वसीले के बग़ैर हजरत मूसा के वाक़ेयात इस क़द्र सेहत के साथ क़ुरआन में पेश कर सकें। इसका कोई भी जवाब इसके सिवा नहीं हो सकता कि ख़ुदाए आलिमुलग़ैब ने यह बातें आपके ऊपर बजरिये 'वही' (प्रकाशना) नाजिल फरमाईं।

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا
أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَاءَ
هُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ
أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۖ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا
إِنَّا بِكُلٍّ كَافِرُونَ ﴿٤٨﴾

और अगर ऐसा न होता कि उन पर उनके आमाल के सबब से कोई आफत आई तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमारी तरफ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते। फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक (सत्य) आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसे वैसा मिला जैसा मूसा को मिला था। क्या लोगों ने उसका इंकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों का इंकार करते हैं। (47-48)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने कदीम मिस्रियों के सामने अपना पैग़ामे रिसालत पेश किया तो इसी के साथ आपने मोजिजे भी दिखाए। मगर उन लोगों ने नहीं माना और कह दिया कि यह तो जादू है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कदीम अरब में दलाइल की बुनियाद पर हक की दावत पेश की तो उन्होंने कहा कि अगर यह पैग़म्बर हैं तो मूसा जैसे मोजिजे क्यों नहीं दिखाते।

ये सब ग़ैर संजीदा जेहन से निकली हुई बातें हैं। मौजूदा दुनिया में हक को मानने के लिए सबसे जरूरी शर्त यह है कि आदमी संजीदा हो। जो शख़्स हक और नाहक के मामले में संजीदा न हो उसे कोई भी चीज हक के एतराफ पर मजबूर नहीं कर सकती। वह हर बार नए उज्र (बहाना) तलाश कर लेगा। वह हर बात के जवाब में नए अल्फ़ाज पा लेगा।

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾
فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ
اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनों से बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि वे सिर्फ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं। और उससे ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे। बेशक अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। और हमने उन लोगों के लिए पे दर पे अपना कलाम भेजा ताकि वे नसीहत पकड़ें। (49-51)

हक के पैग़ाम को मानने या न मानने का जो अस्ल मेयार है वह यह है कि पैग़ाम को ख़ुद उसके जाती जोहर की बुनियाद पर जांचा जाए। अगर वह अपनी जात पर बरतर सदाकत (सच्चाई) होना साबित कर रहा हो तो यही काफी है कि उसे मान लिया जाए। इसके बाद उसे मानने के लिए किसी और चीज की जरूरत नहीं।

सदाकत (सच्चाई) का जवाब सदाकत है। अगर आदमी सदाकत का इंकार करे और उसके जवाब में दूसरी आलातर (उच्चतर) सदाकत न पेश कर सके। तो इसका मतलब यह है कि वह ख़्वाहिशपरस्ती की वजह से उसका इंकार कर रहा है। जिन लोगों का यह हाल हो कि वे सदाकत को माकूलियत के जरिए रद्द न कर सकें और फिर भी ख़्वाहिश और तअस्सुब के जेरेअसर उसे न मानें वे बदतरीन गुमराह लोग हैं। ऐसे लोग ख़ुदा के यहां जालिमों में शुमार होंगे।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है वे इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं। और जब वह उन्हें सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए। बेशक यह हक (सत्य) है हमारे रब की तरफ से, हम तो पहले ही से इसे मानने वाले हैं। ये लोग हैं कि उन्हें उनका अज्र (प्रतिफल) दोहरा दिया जाएगा इस पर कि इन्होंने सब्र किया। और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें

से ख़र्च करते हैं और जब वे लग्व (घटिया निरर्थक) बात सुनते हैं तो उससे एराज (उपेक्षा) करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल। तुम्हें सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और वही ख़ूब जानता है जो हिदायत कुबूल करने वाले हैं। (52-56)

मानने की दो सूरते हैं। एक यह कि हक है इसलिए मानना। दूसरे यह कि अपने गिरोह का है इसलिए मानना। इन दोनों में सिर्फ पहली किस्म के इंसान हैं जिन्हें हिदायत की तौफ़ीक मिलती है। और इसी किस्म के लोग थे जो दौरे अव्वल में कुरआन और पैग़म्बर पर ईमान लाए।

ईसाइयों और यहूदियों में एक तादाद थी जो कुरआन को सुनते ही उसकी मोमिन बन गई। ये वे लोग थे जो साबिका पैग़म्बरों की हकीकी तालीमात पर क़ायम थे। इसलिए उन्हें पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पहचानने में देर नहीं लगी। उन्होंने नए पैग़म्बर को भी उसी तरह पहचान लिया जिस तरह उन्होंने पिछले पैग़म्बरों को पहचाना था। मगर अपने आपको इस काबिल रखने के लिए उन्हें 'सब्र' के मरहलों से गुजरना पड़ा।

उन्होंने अपने जेहन को उन असरात से पाक रखा जिसके बाद आदमी हक की मअरफ्त (अन्तर्ज्ञान) के लिए नाअहल हो जाता है। ये वे तारीख़ी और समाजी अवामिल (कारक) हैं जो आदमी के जेहन में ख़ुदाई दीन को गिरोही दीन बना देते हैं। आदमी का यह हाल हो जाता है कि वह सिर्फ उस दीन को पहचान सके जो उसे अपने गिरोह से मिला हो। वह उस दीन को पहचानने में नाकाम रहे जो उसके अपने गिरोह के बाहर से उसके पास आए। इन असरात से महफूज़ रहने के लिए आदमी को ज़बरदस्त नफ़्सियाती (मानसिक, मनोवैज्ञानिक) कुर्बानी देनी पड़ती है। इसलिए इसे सब्र से ताबीर फरमाया। ऐसे लोगों को दोहरा अज्र दिया जाएगा। एक उनकी इस कुर्बानी का कि उन्होंने अपने साबिका (पहले के) ईमान को गिरोही ईमान बनने नहीं दिया। और दूसरे उनकी जौहरशनासी का कि उनके सामने नया पैग़म्बर आया तो उन्होंने उसे पहचान लिया और उसके साथ हो गए।

जिन लोगों के अंदर हक शनासी का माद्दा हो उन्हीं के अंदर आला अख़्लाकी औसाफ (गुण) परवरिश पाते हैं। लोग उनके साथ बुराई करें तब भी वे लोगों के साथ भलाई करते हैं। वे दूसरों की मदद करते हैं ताकि ख़ुदा उनकी मदद करे। उनका तरीका एराज (बचने) का तरीका होता है न कि लोगों से उलझने का तरीका।

وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर चलने लगें तो हम अपनी जमीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें अम्न व अमान वाले हरम में जगह नहीं दी। जहां हर किस्म के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी तरफ से रिज़्क के तौर पर, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (57)

जिस निजाम से आदमी के फायदे वाबस्ता हो जाएं वह समझने लगता है कि मुझे जो कुछ मिल रहा है वह इसी निजाम की बदौलत मिल रहा है। आदमी सिर्फ हाल (वर्तमान) के फायदों को जानता है, वह मुस्तकबिल (भविष्य) के फायदों को नहीं जानता।

यही मामला कदीम मक्का के मुश्रिकों का था। उन्होंने काबा में तमाम अरब कबीलों के बुत रख दिए थे। इस तरह उन्हें पूरे मुल्क की मजहबी सरदारी हासिल हो गई थी। इसी तरह उन बुतों के नाम पर जो नजराने आते थे वे भी उनकी मआश (जीविका) का ख़ास जरिया थे।

मगर यह सिर्फ उनकी तंगनजरी थी। ख़ुदा का रसूल उन्हें एक ऐसे दीन की तरफ बुला रहा था जो उन्हें आलम की इमामत (नेतृत्व) देने वाला था, और वे एक ऐसे दीन की ख़ातिर उसे छोड़ रहे थे जिसके पास मुल्क के कबीलों की मामूली सरदारी के सिवा और कुछ न था।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٩﴾

और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं जो अपने सामाने मईशत (जीविका के साधनों) पर नाज़ (गौरवांवित) थीं। पस ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुईं मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए और तेरा रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था जब तक उनकी बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम हरगिज बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं मगर जबकि वहां के लोग जालिम हों। (58-59)

दुनिया में किसी को माद्दी इस्तहकाम (आर्थिक सम्पन्नता) हासिल हो तो वह बड़ाई के एहसास में मुब्तिला हो जाता है। हालांकि तारीख़ मुसलसल यह सबक दे रही है कि किसी भी शख़्स या कौम का माद्दी इस्तहकाम मुस्तकिल नहीं। जब भी किसी कौम ने हक (सत्य) को नजरअंदाज किया, सारी अज़्मत के बावजूद वह हलाक कर दी गई।

अरब के भू-क्षेत्र में इस्लाम से पहले मुख़्तलिफ कौमें उभरीं। मसलन आद, समूद, सबा, मदयन, कौमे लूत वग़ैरह। हर एक किब्र (अहं, बड़ाई) में मुब्तिला हो गई। मगर हर एक का

किब्र जमाने ने बातिल कर दिया। और बिलआख़िर उनकी हैसियत गुजरी हुई कहानी के सिवा और कुछ न रही। इन कौमों के खंडहर चारों तरफ फैले इंसानी अज़्मतों की नफ़ी कर रहे थे। इसके बावजूद पैग़म्बरे इस्लाम के जमाने में जिन लोगों को बड़ाई हासिल थी उन्होंने पैग़म्बर को इस तरह झुठला दिया जैसे कि माजी के वाकेयात में उनके हाल के लिए कोई नसीहत नहीं।

وَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾ أَفَمَن وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾

और जो चीज भी तुम्हें दी गई है तो वह बस दुनिया की जिंदगी का सामान और उसकी रौनक है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाकी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं। भला वह शख़्स जिससे हमने अच्छा वादा किया है फिर वह उसे पाने वाला है, क्या उस शख़्स जैसा हो सकता है जिसे हमने सिर्फ दुनियावी जिंदगी का फायदा दिया है, फिर कियामत के दिन वह हाजिर किए जाने वालों में से है। (60-61)

दुनिया में आदमी के पास कितना ही ज्यादा साजोसामान हो, बहरहाल वह मौत के वक्त आदमी का साथ छोड़ देता है। मौत के बाद जो चीज आदमी के साथ जाती है वे उसके नेक आमाल हैं न कि दुनियावी इज्जत और माद्दी साजोसामान।

ऐसी हालत में अक्लमंदी यह है कि आदमी चन्द दिन की कामयाबी के मुकाबले में अबदी कामयाबी को तरजीह दे। वह दुनिया की तामीर के बजाए आख़िरत की तामीर की फ़िक्र करे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾

और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम दावा करते थे। जिन पर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब ये लोग हैं जिन्होंने हमें बहकाया। हमने उन्हें उसी तरह बहकाया जिस तरह हम ख़ुद बहके थे। हम इनसे बरा-त (विरक्ति) करते हैं। ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे। (62-63)

यहां 'शरीक' से मुराद गुमराह लीडर हैं। यानी वे बड़े लोग जिनकी बात लोगों ने इस तरह

मानी जिस तरह ख़ुदा की बात माननी चाहिए। कियामत में जब इन बड़ों का साथ देने वाले लोग अपना बुरा अंजाम देखेंगे तो उनका अजीब हाल होगा। वे पाएंगे कि जिन बड़ों से वाबस्ता होने पर वे फख़्र करते थे, उन बड़ों ने उन्हें सिर्फ जहन्नम तक पहुंचाया है। उस वक्त वे बेजार होकर उनसे कहेंगे कि हमारी बर्बादी के जिम्मेदार तुम हो। उनके बड़े जवाब देंगे कि तुम्हारी अपनी जात के सिवा कोई तुम्हारी बर्बादी का जिम्मेदार नहीं। अगरचे बजाहिर तुम हमारे कहने पर चले मगर हमारा साथ तुमने इसलिए दिया कि हमारी बात तुम्हारी ख़्वाहिशात के मुताबिक थी। तुम दरहकीकत अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले थे न कि हमारे पैरोकार। हम भी अपनी ख़्वाहिशात पर चले और तुम भी अपनी ख़्वाहिशात पर चले। अब दोनों को एक ही अंजाम भुगतना है। एक दूसरे को बुरा कहने से कोई फायदा नहीं।

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ तो वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उन्हें जवाब न देंगे। और वे अजाब को देखेंगे। काश वे हिदायत इख़्तियार करने वाले होते। और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा और फरमाएगा कि तुमने पैग़ाम पहुंचाने वालों को क्या जवाब दिया था। फिर उस दिन उनकी तमाम बातें गुम हो जाएंगी। तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे। अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वालों में से होगा। (64-67)

दुनिया में आदमी जब हक का इंकार करता है तो वह किसी भरोसे पर हक का इंकार करता है। आख़िरत में उससे कहा जाएगा कि जिनके भरोसे पर तुमने हक को नहीं माना था आज उन्हें बुलाओ ताकि वे तुम्हें हक के इंकार के बुरे अंजाम से बचाएं। मगर यह ख़ुदा के जुहूर का दिन होगा। और कौन है जो ख़ुदा के मुकाबले में किसी की मदद कर सके।

दुनिया में आदमी किसी हाल में चुप नहीं होता। हर दलील को रद्द करने के लिए उसे यहां अल्फाज मिल जाते हैं। मगर यह सारे अल्फाज कियामत में झूठे अल्फाज साबित होंगे। वहां आदमी अफसोस करेगा कि कितनी छोटी चीज की ख़ातिर उसने कितनी बड़ी चीज को खो दिया।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا

يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

और तेरा रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसे चाहे। उनके हाथ में नहीं है पसंद करना। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है दुनिया में और आख़िरत में। और उसी के लिए फैसला है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (68-70)

अल्लाह तआला इंसानों को पैदा करता है। फिर इंसानों में से किसी शख़्स को वह किसी ख़ास काम के लिए मुंतख़ब कर लेता है। यह इंतिख़ाब (चयन) उसके जाती तख़स्सुस की बिना पर नहीं होता। बल्कि ख़ुदा के अपने फैसले के तहत होता है। इसलिए ऐसी शख़्सियतों को मुकद्दस मान कर उन्हें ख़ुदा का दर्जा देना सरासर बेबुनियाद है। ख़ुदा की दुनिया में इसकी कोई गुंजाइश नहीं।

आदमी हक का इंकार करने के लिए जबान से कुछ अल्फाज बोल देता है। मगर उसके दिल में कुछ और बात होती है। वह जाती मस्लेहतों की बिना पर हक को नहीं मानता और अल्फाज के जरिए यह जाहिर करता है कि वह दलील और माकूलियत की बिना पर उसका इंकार कर रहा है। आख़िरत में यह पर्दा बाकी नहीं रहेगा। उस वक्त खुले तौर पर मालूम हो जाएगा कि उसके दिल में कुछ और था मगर अपनी बड़ाई को बाकी रखने के लिए वह कुछ दूसरे अल्फाज बोलता रहा।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

कहो कि बताओ, अगर अल्लाह कियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए। तो क्या तुम लोग सुनते नहीं। कहो कि बताओ अगर अल्लाह कियामत तक तुम पर हमेशा के

लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो। क्या तुम लोग देखते नहीं। और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फल (जीविका) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (71-73)

जिस जमीन पर इंसान आबाद है उसके बेशुमार हैरतनाक पहलुओं में से एक हैरतनाक पहलू यह है कि वह मुसलसल सूरज के गिर्द घूम रही है। सूरज के गिर्द उसकी महवरी (धुरीय) गर्दिश इस तरह होती है कि हर चौबीस घंटे में इसका एक चक्कर पूरा हो जाता है। यही वजह है कि इसके ऊपर बार-बार रात और दिन आते रहते हैं। अगर जमीन की यह महवरी गर्दिश न हो तो जमीन के एक हिस्से में मुस्तकिल रात होगी और दूसरे हिस्से में मुस्तकिल दिन। इसका नतीजा यह होगा कि मौजूदा पुरराहत जमीन इंसान के लिए एक नाकाबिले बयान अजाबख़ाना बन जाएगी।

ख़ला (अंतरिक्ष) में जमीन का इस तरह हददर्जा सेहत के साथ मुसलसल गर्दिश करना इतना बड़ा वाक़्या है कि इस वाक़्ये को ज़ुहूर में लाने के लिए तमाम जिन्न व इन्स की ताक़तें भी नाकाफ़ी हैं। क़ादिरे मुतलक़ ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जो इतने बड़े वाक़्ये को ज़ुहूर में ला सके। ऐसी हालत में यह कितनी बड़ी गुमराही है कि इंसान अपने ख़ौफ व मुहब्बत के जज्बात को एक ख़ुदा के सिवा किसी और के साथ वाबस्ता करे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾ وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे। और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे। फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक़ अल्लाह की तरफ है। और वे बातें उनसे गुम हो जाएंगी जो वे गढ़ते थे। (74-75)

पैग़म्बर और पैग़म्बर की सच्ची पैरवी करने वाले दाओ़ी कियामत में ख़ुदा के गवाह बनाकर खड़े किए जाएंगे। जिन कौमों पर उन्होंने ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाने का फर्ज अंजाम दिया था उनके बारे में वे वहां बताएंगे कि पैग़ाम को सुनकर उन्होंने किस किस्म का रद्देअमल पेश किया। उस दिन उन लोगों के तमाम भरोसे ख़त्म हो जाएंगे जिन्होंने ग़ैर अल्लाह के एतमाद पर हक़ की दावत को नजरअंदाज किया था। उस दिन उनका यह हाल होगा कि वे अपनी सफ़ाई पेश करना चाहेंगे मगर वे अपनी सफ़ाई के लिए अल्फ़ाज न पाएंगे।

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِن كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

कारून मूसा की कौम में से था। फिर वह उनके ख़िलाफ सरकश हो गया। और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुंजियां उठाने से कई ताकतवर मर्द थक जाते थे। जब उसकी कौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता। और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें आख़िरत के तालिब बनो। और दुनिया में से अपने हिस्से को न भूलो। और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है। और जमीन में फसाद के तालिब न बनो, अल्लाह फसाद करने वालों को पसंद नहीं करता। (76-77)

कारून का नाम यहूदी किताबों में कोरह (Korah) आया है। वह बनी इस्राईल का एक फर्द था। मगर वह अपनी कौम से कटकर फिरऔन का वफ़ादार बन गया। इसकी उसे यह कीमत मिली कि वह फिरऔन का मुकर्रब बन गया। उसने अपनी दुनियादाराना सलाहियत के जरिए इतना कमाया कि वह मिस्र का सबसे ज्यादा दौलतमंद शख़्स बन गया। दौलत पाकर उसके अंदर शुक्र का जज्बा उभरना चाहिए था। मगर दौलत ने उसके अंदर फख़्र का जज्बा पैदा किया। अपने मआशी वसाइल (आर्थिक संसाधनों) से उसे जो नेकी कमानी चाहिए थी वह नेकी उसने नहीं कमाई।

जमीन में फ़साद करना क्या है। इस आयत (77) के मुताबिक, जमीन में फ़साद बरपा करने की एक सूरत यह है कि एक शख़्स को ज्यादा दौलत मिले तो वह उसे सिर्फ अपनी जात के लिए ख़र्च करे। समुद्र में जमीन का पानी आकर जमा होता है तो समुद्र पानी को भाप की शक्ल में उड़ाकर दुबारा उसे पूरी जमीन पर फैला देता है। यह ख़ुदा की दुनिया में इस्लाह का एक नमूना है। यही चीज इंसान से इस तरह मत्लूब (अपेक्षित) है कि अगर किसी वजह से एक शख़्स के पास ज्यादा दौलत इकट्ठा हो जाए तो उसे चाहिए कि वह उसे मुख़्तलिफ तरीकों से उन लोगों की तरफ लौटाए जिन्हें मआशी तक़्सीम में कम हिस्सा मिला है। गोया जमाशुदा दौलत को गर्दिश में लाना इस्लाह है और जमाशुदा दौलत को जमा रखना फसाद।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

उसने कहा, यह माल मुझे एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुका है जो उससे ज्यादा कुव्वत और जमीयत (जन-समूह) रखती थीं। और मुजरिमों से उनके गुनाह पूछे नहीं जाते। (78)

कारून का जो किरदार यहां बयान हुआ है यही हमेशा दौलत वालों का किरदार रहा है। दौलतमंद आदमी समझता है कि उसे जो कुछ मिला है वह उसके इल्म की बदौलत मिला है। मगर किसी दौलतमंद का इल्म उसे यह नहीं बताता कि तुमसे पहले भी बहुत से लोगों को दौलत मिली मगर उनकी दौलत उन्हें मौत या हलाकत से न बचा सकी। फिर तुम्हें वह किस तरह बचाने वाली साबित होगी।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨٠﴾

पस वह अपनी कौम के सामने अपनी पूरी आराइश (भव्यता) के साथ निकला। जो लोग हयाते दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, काश हमें भी वही मिलता जो कारून को दिया गया है, बेशक वह बड़ी किस्मत वाला है, और जिन लोगों को इल्म मिला था उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख़्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे। और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं। (79-80)

जिस आदमी के पास दौलत हो उसके गिर्द लाजिमी तौर पर दुनिया की रौनक जमा हो जाती है। उसे देखकर बहुत से नादान लोग उसके ऊपर रश्क करने लगते हैं। मगर जिन लोगों को हकीकत का इल्म हासिल हो जाए उन्हें यह जानने में देर नहीं लगती कि यह महज चन्द दिन की रौनक है और जो चीज चन्द रोजा हो उसकी कोई कीमत नहीं।

इल्मे हकीकत इस दुनिया में सबसे ज्यादा कीमती चीज है। मगर इल्मे हकीकत का

मालिक बनने के लिए सब्र की सलाहियत दरकार होती है। यानी ख़ारजी (वाह्य) हालात का दबाव कुबूल न करते हुए अपना जेहन बनाना। जाहिरी चीजों से ग़ैर मुतअस्सिर रहकर सोचना। वक्ती कशिश की चीजों को नजरअंदाज करके राय कायम करना। यह बिलाशुबह सब्र की मुश्किलतरीन किस्म है। मगर इसी मुश्किलतरीन इम्तेहान में पूरा उतरने के बाद आदमी को वह चीज मिलती है जिसे इल्म और हिक्मत (तत्वदर्शिता) कहा जाता है।

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾

फिर हमने उसे और उसके घर को जमीन में धंसा दिया। फिर उसके लिए कोई जमाअत न उठी जो अल्लाह के मुकाबले में उसकी मदद करती। और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका। और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वे कहने लगे कि अफसोस, बेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी जमीन में धंसा देता। अफसोस, बेशक इंकार करने वाले फलाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। (81-82)

बाइबल के बयान के मुताबिक, हजरत मूसा ने कारून के बुरे आमाल की वजह से उसके लिए बददुआ फरमाई और वह अपने साथियों और ख़जाने सहित जमीन में धंसा दिया गया। यह अल्लाह की तरफ से मुशाहिदाती (अवलोकनीय) सतह पर दिखाया गया कि ख़ुदापरस्ती को छोड़कर दौलतपरस्ती इख़्तियार करने का आख़िरी अंजाम क्या होता है।

दुनिया का रिज़्क दरअस्ल इम्तेहान का सामान है। यह हर आदमी को ख़ुदा के फैसले के तहत कम या ज्यादा दिया जाता है। आदमी को चाहिए कि रिज़्क कम मिले तो सब्र करे। और अगर रिज़्क ज्यादा मिले तो शुक्र करे। यही किसी इंसान के लिए नजात और कामयाबी का वाहिद रास्ता है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

यह आख़िरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो जमीन में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फसाद करना। और आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है। जो शख़्स नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया। (83-84)

जन्नत की आबादी में बसने के काबिल वे लोग हैं जिनके सीने अपनी बड़ाई के एहसास से ख़ाली हों। जो ख़ुदा की बड़ाई को इस तरह पाएं कि अपनी तरफ उन्हें छोटाई के सिवा और कुछ नजर न आए।

फसाद यह है कि आदमी ख़ुदा की स्कीम से मुवाफिक़त न करे। वह ख़ुदा की दुनिया में ख़ुदा की मर्जी के ख़िलाफ चलने लगे। जो लोग किब्र (बड़ाई) से ख़ाली हो जाएं वे लाजिमी तौर पर फसाद से भी ख़ाली हो जाते हैं। और जिन लोगों के अंदर ये आला औसाफ (सद्गुण) पैदा हो जाएं वही वे लोग हैं जो ख़ुदा के अबदी बाग़ों में बसाए जाएंगे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ مَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

बेशक जिसने तुम पर क़ुरआन को फर्ज किया है वह तुम्हें एक अच्छे अंजाम तक पहुंचा कर रहेगा। कहो कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही में है। और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी। मगर तुम्हारे रब की महरबानी से। पस तुम मुंकिरों के मददगार न बनो। और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वे तुम्हारी तरफ उतारी जा चुकी हैं। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ और मुश्रिकों में से न बनो। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। हर चीज हलाक (विनष्ट) होने वाली है सिवा उसकी जात के। फ़ैसला उसी के लिए है और तुम लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (85-88)

पैग़म्बर का मामला हर एतबार से ख़ुदाई मामला होता है। उसे पैग़म्बरी किसी तलब के

बग़ैर यकतरफा तौर पर ख़ुदा की तरफ से दी जाती है। वह अपने पूरे वजूद के साथ हक पर कायम होता है। वह मामूर (नियुक्त) होता है कि ख़ालिस बेआमेज सदाकत (विशुद्ध सच्चाई) का एलान करे, चाहे वह लोगों को कितना ही नागवार हो। उसके लिए मुकद्दर होता है कि वह लाजिमी तौर पर अपनी मत्लूबा मंजिल तक पहुंचे और कोई रुकावट उसके लिए रुकावट न बनने पाए।

यही मामला पैग़म्बर के बाद पैग़म्बर की पैरवी में उठने वाले दाओ का होता है। वह जिस हद तक पैग़म्बर की मुशाबिहत (समानता) करे उसी क़द्र वह ख़ुदा के उन वादों का मुस्तहिक होता चला जाएगा जो उसने अपने पैग़म्बरों से अपनी किताब में किए हैं।

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ تِسْعٌ وَسِتُّونَ آيَةً سَبْعُ رُكُوعَاتٍ

الم ﴿١﴾ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿٣﴾

आयतें-69 सूरह-29. अल-अनकबूत रुकूअ-7

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। क्या लोग यह समझते हैं कि वे महज यह कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जांचा न जाएगा। और हमने उन लोगों को जांचा है जो इनसे पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी जरूर मालूम करेगा। (1-3)

आदमी के मोमिन व मुस्लिम होने का फ़ैसला सामान्य हालात में किए जाने वाले अमल पर नहीं होता। बल्कि उस अमल पर होता है जो आदमी ग़ैर मामूली हालात में करता है। ये ग़ैर मामूली हालात वे ग़ैर मामूली मवाकेअ (अवसर) हैं जबकि यह खुल जाता है कि आदमी हकीकत में वह है या नहीं जिसका दावा वह अपने जाहिरी अमल से कर रहा है। जो लोग ग़ैर मामूली हालात में ईमान व इस्लाम पर कायम रहने का सुबूत दें वही ख़ुदा के नजदीक हकीकी मअनों में मोमिन व मुस्लिम क़रार पाते हैं।

जांच में पूरा उतरना, बाअल्फ़ाज दीगर, क़ुर्बानी की सतह पर ईमान व इस्लाम वाला बनना है। यानी जब आम लोग इंकार कर देते हैं उस वक्त तस्दीक करना। जब लोग शक करते हैं उस वक्त यकीन कर लेना। जब अपनी अना (अंहकार) को कुचलने की कीमत पर मोमिन बनना हो उस वक्त मोमिन बन जाना। जब न मान कर कुछ बिगड़ने वाला न हो उस वक्त मान लेना। जब हाथ रोकने के तकाजे हों उस वक्त ख़र्च करना। जब फ़रार के हालात

हों उस वक्त जमने का सुबूत देना। जब अपने आपको बचाने का वक्त हो उस वक्त अपने आपको हवाले कर देना। जब सरकशी का मौका हो उस वक्त सरे तस्लीमख़म कर देना। जब सब कुछ लुटा कर साथ देना हो उस वक्त साथ देना। ऐसे ग़ैर मामूली मौकों पर अंदर वाला इंसान बाहर आ जाता है। इसके बाद किसी के लिए यह मौका नहीं रहता कि वह फर्जी अल्फाज बोलकर अपने को वह जाहिर करे जो कि हकीकत में वह नहीं है।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ④ مَنْ كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤ وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑥ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑦

क्या जो लोग बुराइयां कर रहे हैं वे समझते हैं कि वे हमसे बच जाएंगे। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है तो अल्लाह का वादा जरूर आने वाला है। और वह सुनने वाला है, जानने वाला है। और जो शख़्स मेहनत करे तो वह अपने ही लिए मेहनत करता है। बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज (निस्पृह) है। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला देंगे। (4-7)

मोमिन बनना अक्सर हालात में जमाने के ख़िलाफ चलने के हममअना होता है। यह अकाबिरपरस्ती (व्यक्ति-पूजा) के माहौल में ख़ुदापरस्त बनना है। ख़्वाहिश को ऊंचा मकाम देने के माहौल में उसूल को ऊंचा मकाम देना है। दुनियावी मफाद के लिए जीने के माहौल में आख़िरत के मफाद के लिए जीने का हौसला करना है।

इस तरह की जिंदगी के लिए सख़्त मुजाहिदा (संघर्षशीलता) दरकार है। और इस सख़्त मुजाहिदे पर वही लोग कायम रह रह सकते हैं जो ख़ुदा पर कामिल यकीन रखते हों। जो ख़ुदा की तरफ से मिलने वाले इनाम ही को अपनी उम्मीदों का अस्ल मर्कज बनाए हुए हों।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑧ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ⑨

और हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करे। और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज को मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत (आज्ञापालन) न कर। तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते थे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए तो हम उन्हें नेक बंदों में दाख़िल करेंगे। (8-9)

इंसान पर तमाम मख़्लूकात में सबसे ज्यादा जिसका हक है वह उसके मां-बाप हैं। मगर हर चीज की एक हद होती है, इसी तरह मां-बाप के हुकूक की भी एक हद है। और हदीस के अल्फाज में वह हद यह है कि ख़ालिक की नाफरमानी में किसी मख़्लूक की इताअत नहीं।

मां-बाप के हुकूक उसी वक्त तक काबिले लिहाज हैं जब तक वे ख़ुदा के हुकूक से न टकराएं। मां-बाप का हुक्म जब ख़ुदा के हुक्म से टकराने लगे तो उस वक्त मां-बाप का हुक्म न मानना उतना ही जरूरी हो जाएगा जितना आम हालात में मां-बाप का हुक्म मानना जरूरी होता है। इस्लाम में मां-बाप के हुकूक से मुराद मां-बाप की ख़िदमत है न कि मां-बाप की इबादत।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ⑩ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ⑪

और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाए। फिर जब अल्लाह की राह में उसे सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अजाब की तरह समझ लेता है। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से कोई मदद आ जाए तो वे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के दिलों में है। और अल्लाह जरूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह जरूर मालूम करेगा मुनाफिकीन (पाखंडियों) को। (10-11)

एक शख़्स अपने को मोमिन कहे। मगर उसका हाल यह हो कि जब मोमिन बनने में फायदा हो तो वह बढ़-चढ़कर अपने मोमिन होने का इज्हार करे। मगर जब मोमिन बनने में दुनियावी नुक्सान नजर आए तो वह फौरन वापस जाने लगे। ऐसा आदमी कुरआन की इस्तिलाह (शब्दावली) में मुनाफिक है। ये वे लोग हैं जो बजाहिर मोमिन थे मगर वे अपने ईमान की कीमत देने के लिए तैयार नहीं हुए। वे ऐन उसी मकाम पर नाकाम हो गए जहां उन्हें सबसे ज्यादा कामयाबी का सुबूत देना चाहिए था।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

और मुंकिर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे। और वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। बेशक वे झूठे हैं। और वे अपने बोझ उठाएंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी। और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं कियामत के दिन उसके बारे में उनसे पूछ होगी। (12-13)

इफ्तरा (झूठ गढ़ना) यह है कि आदमी ख़ुद एक बात कहे और उसे ख़ुदा की तरफ मंसूब कर दे। हर किस्म की बिदआत (कुरीतियां) और ग़लत ताबीरात इसमें दाख़िल हैं। इस इफ्तरा की एक सूरत यह है कि इंकार करने वाले बड़े अपने छोटों से यह कहें कि तुम हमारे रास्ते पर चलते रहो, अगर ख़ुदा के यहां इस पर पूछा गया तो हम इसके जिम्मेदार हैं। ख़ुदा ने किसी को इस किस्म का हक नहीं दिया है इसलिए ऐसी बात कहना ख़ुदा पर झूठ बांधना है।

आदमी बहुत सी बातें सिर्फ कहने के लिए कह देता है। अगर वह उसके अंजाम को देख ले तो वह कभी ऐसे अल्फ़ाज अपने मुंह से न निकाले। चुनांचे ये लोग जब कियामत की हौलनाकी को देखेंगे तो उस वक्त उनका हाल उससे बिल्कुल मुख़्तलिफ होगा जो आज की दुनिया में उनका नजर आ रहा है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हजार साल रहा। फिर उन्हें तूफ़ान ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। फिर हमने नूह को और कश्ती वालों को बचा लिया। और हमने इस वाकये को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (14-15)

हजरत नूह की उम्र साढ़े नौ सौ साल थी। नुबुव्वत से पहले भी आप एक सालेह (नेक) इंसान थे और शरीअते आदम पर कायम थे। नुबुव्वत मिलने के बाद आप बाकायदा ख़ुदा के दाओ बनकर अपनी कौम को डराते रहे। मगर सैंकड़ों साल की मेहनत के बावजूद कौम न

मानी। आख़िरकार चन्द इस्लाहयाफ्ता (ईमान वाले) अफ़राद को छोड़कर पूरी कौम एक अजीम तूफ़ान में ग़र्क़ कर दी गई।

टर्की और रूस की सरहद पर मश्रिकी अनातूलिया के पहाड़ी सिलसिले में एक ऊंची चोटी है जिसे अरारात (Ararat) कहा जाता है। इसकी बुलन्दी पांच हजार मीटर से ज्यादा है। इस पहाड़ के ऊपर से उड़ने वाले जहाजों का बयान है कि उन्होंने अरारात की बर्फ से ढकी हुई चोटी पर एक कश्ती जैसी चीज देखी है। चुनांचे उस कश्ती तक पहुंचने की कोशिशें जारी हैं। अहले इल्म का ख़्याल है कि यह वही चीज है जिसे मजहबी रिवायात में कश्ती नूह कहा जाता है।

अगर यह इत्तिला सही है तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने हजरत नूह की कश्ती को आज भी बाकी रखा है ताकि वह लोगों के लिए इस बात की निशानी हो कि ख़ुदा के तूफ़ान से बचने के लिए आदमी को 'पैग़म्बर की कश्ती' दरकार है। कोई दूसरी चीज आदमी को ख़ुदा के तूफ़ान से बचाने वाली साबित नहीं हो सकती।

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِنْ قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

और इब्राहीम को जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज बुतों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो। अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते हो वे तुम्हें रिज्क देने का इख़्तियार नहीं रखते। पस तुम अल्लाह के पास रिज्क तलाश करो और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी कौमें झुठला चुकी हैं। और रसूल पर साफ-साफ पहुंचा देने के सिवा कोई जिम्मेदारी नहीं। (16-18)

एक ख़ुदा के सिवा जिसे भी आदमी अपने आला जज्बात का मर्कज बनाता है वह एक झूठ होता है। क्योंकि वह ग़ैर ख़ुदा में ख़ुदाई औसाफ को फर्ज करता है। वह बरतर सिफ़ात जो सिर्फ ख़ुदा के लिए ख़ास हैं उन्हें आदमी ग़ैर ख़ुदा में फर्ज करता है, इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह किसी ग़ैर ख़ुदा का परस्तार बने।

क़दीम मुश्रिकाना दौर में इंसान इस किस्म की सिफ़ात बुतों में फर्ज करता था, आज का

इंसान भी यही कर रहा है। अलबत्ता आज के इंसान के बुतों के नाम उनसे मुख़्तलिफ हैं जो क़दीम मुश्रिकों के हुआ करते थे। क़दीम व जदीद का फर्क़ सिर्फ यह है कि क़दीम इंसान अगर खेत की पैदावार को किसी मफरूज़ा देवता की महरबानी समझता था तो आज का इंसान इसके लिए ये अल्फाज बोलता है हमारा ग्रीन रेवॉल्यूशन हमारी ऐग्रीकल्चर साइंस का करिश्मा है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह ख़ल्क (सृष्टि) को शुरू करता है, फिर वह उसे दोहराएगा। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। कहो कि जमीन में चलो फिरो फिर देखो कि अल्लाह ने किस तरह ख़ल्क को शुरू किया, फिर वह उसे दुबारा उठाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। वह जिसे चाहेगा अजाब देगा और जिस पर चाहेगा रहम करेगा। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और तुम न जमीन में आजिज करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज है और न कोई मददगार। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इंकार किया तो वही मेरी रहमत से महरूम हुए और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (19-23)

इंसान नहीं था, इसके बाद वह हो जाता है। फिर जो तख़्लीक एक बार मुमकिन हो वह दूसरी बार क्यों मुमकिन न होगी। शाह अब्दुल कादिर देहलवी ने इस मौके पर यह बामअना नोट लिखा है : 'शुरू तो देखते हो, दोहराना इसी से समझ लो।'

हर आदमी अपनी जात में तख़्लीके अव्वल (प्रथम सृजन) की एक मिसाल है। अगर आदमी को मजीद मिसालें दरकार हैं तो वह ख़ुदा की वसीअ दुनिया में मुतालआ और मुशाहिदा करे। वह देखेगा कि पूरी दुनिया इसी वाकये का जिंदा नमूना है। ख़ुदा ने अपनी दुनिया में ये नमूने इसलिए कायम किए कि इंसान तख़्लीके सानी (दूसरे सृजन) के मामले को समझे और फिर वह अमल करे जो अगले हयात के मरहले में उसके काम आने वाला हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَآمَنَ لَهُ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसे कत्ल कर दो या उसे जला दो। तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए। और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं, बस वह तुम्हारे आपसी दुनिया के तअल्लुकात की वजह से है, फिर कियामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का इंकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा मददगार न होगा। फिर लूत ने उसे माना और कहा कि मैं अपने रब की तरफ हिजरत करता हूं। बेशक वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और हमने अता किए उसे इस्हाक और याकूब और उसकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब रख दी। और हमने दुनिया में उसे अज्र (प्रतिफल) अता किया और आख़िरत में यकीनन वह सालिहीन में से होगा। (24-27)

जो चीज किसी मआशिरे में कौमी रवाज की हैसियत हासिल कर ले वह उसके हर फर्द की जरूरत बन जाती है। इसी की बुनियाद पर आपसी तअल्लुकात पैदा होते हैं। इसी से हर किस्म के मफादात वाबस्ता होते हैं। इसी के एतबार से लोगों के दर्मियान किसी आदमी की कीमत मुक़र्रर होती है। क़दीम जमाने में शिर्क की हैसियत इसी किस्म के कौमी रवाज की हो गई थी।

हजरत इब्राहीम ने इराक के लोगों को बताया कि तुम जिस बुतपरस्ती को पकड़े हुए हो वह महज एक कौमी रवाज है न कि कोई वाकई सदाक़त। तुम्हारी मौजूदा जिंदगी के ख़त्म होते ही उसकी सारी अहमियत ख़त्म हो जाएगी। मगर सिर्फ एक आपके भतीजे लूत थे जिन्होंने आपका साथ दिया। कौम आपकी इतनी दुश्मन हुई कि उसने आपको आग में डाल दिया। ताहम अल्लाह ने आपको बचा लिया। आपको न सिर्फ आख़िरत का आला इनाम मिला

बल्कि आपको ऐसी सालेह औलाद दी गई जिसके अंदर चार हजार साल से नुबुव्वत का सिलसिला जारी है। आपके बेटे इस्हाक़ पैग़म्बर थे। फिर उनके बेटे याक़ूब पैग़म्बर हुए और इसके बाद हजरत ईसा तक मुसलसल इसी ख़ानदान में पैग़म्बरी का सिलसिला जारी रहा। हजरत इब्राहीम के एक और बेटे मदयान की नस्ल में हजरत शुऐब अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इसी तरह आपके बेटे इस्माईल ख़ुद पैग़म्बर थे और इन्हीं की नस्ल में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए जिनकी पैग़म्बरी क़ियामत तक जारी है।

हजरत इब्राहीम की इस तारीख़ में बातिलपरस्तों के लिए भी नसीहत है और उन लोगों के लिए भी रोशनी है जो हक़ की बुनियाद पर अपने आपको खड़ा करें।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ ٱلْفَٰحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ ٱلرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ ٱلسَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِى نَادِيكُمُ ٱلْمُنكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ ٱئْتِنَا بِعَذَابِ ٱللَّهِ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ ٱنصُرْنِى عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

और लूत को, जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। क्या तुम मर्दों के पास जाते हो और राह मारते हो। और अपनी मज्लिस में बुरा काम करते हो। पस उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उसने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का अजाब लाओ। लूत ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुफ्सिद (उपद्रवी) लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा। (28-30)

हजरत लूत बाबिल को छोड़कर उर्दुन के इलाक़े में आ गए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें पैग़म्बर बनाया और उन्हें क़ौमे लूत की इस्लाह के काम पर मुक़र्रर किया। यह क़ौम बहरे मुर्दार (Dead Sea) के क़रीब सदूम के इलाक़े में रहती थी और हमजिंसी (समलैंगिकता) की ग़ैर फ़ितरी आदत में मुब्तिला थी। इसी निस्बत से दूसरी बुराइयां भी उनके अंदर आम हो चुकी थीं। मगर उन्होंने इस्लाह क़ुबूल न की।

'अल्लाह का अजाब लाओ' का अस्ल रुख़ हजरत लूत की तरफ़ था न कि अल्लाह की तरफ़। उन्होंने हजरत लूत को इतना हक़ीर (तुच्छ) समझा कि उनके नजदीक यह नामुमकिन था कि उनकी बात न मानने से वे ख़ुदा की पकड़ में आ जाएंगे। चुनांचे बतौर मजाक़ उन्होंने कहा कि अगर तुम वाक़ई सच्चे हो तो हमारे ऊपर ख़ुदा का अजाब लाओ।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ إِبْرَٰهِيمَ بِٱلْبُشْرَىٰ قَالُوٓا۟ إِنَّا مُهْلِكُوٓا۟ أَهْلِ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا۟ ظَٰلِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا۟ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَن فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُۥ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ كَانَتْ مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ أَن جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا۟ لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا ٱمْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا مُنزِلُونَ عَلَىٰٓ أَهْلِ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَد تَّرَكْنَا مِنْهَآ ءَايَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾

और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास बशारत लेकर पहुंचे, उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं। बेशक इसके लोग सख़्त जालिम हैं। इब्राहीम ने कहा कि इसमें तो लूत भी है। उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहां कौन है। हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे मगर उसकी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। फिर जब हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ। और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न ग़म करो। हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे मगर तुम्हारी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। हम इस बस्ती के बाशिंदों पर एक आसमानी अजाब उनकी बदकारियों की सजा में नाजिल करने वाले हैं। और हमने उस बस्ती के कुछ निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इबरत (सीख) के लिए जो अक़्ल रखते हैं। (31-35)

क़ौमे लूत का इलाक़ा (सदूम, अमूरा) शदीद जलजले से तबाह कर दिया गया। वह सरसब्ज व शादाब वादी जहां चार हजार साल पहले यह क़ौम आबादी थी, अब वहां बहरे मुर्दार का कसीफ़ (मलिन) पानी फैला हुआ है।

क़ुरआन के बयान के मुताबिक़, तबाही का यह वाक़या ख़ुदा के फ़रिश्तों के जरिए जुहूर में आया। मगर भूगोल और पुरातत्व विशेषज्ञों का कहना है कि इस इलाक़े में जब अरजी अमल (भू-प्रक्रिया) से पहाड़ उभरे तो इसी के साथ जमीन के एक हिस्से में ढाल (Escarpment) पैदा हो गया। बाद को इस ढाल के जुनूबी (दक्षिणी) हिस्से में समुद्र का पानी भर गया। इस तरह वह ख़ुश्क हिस्सा पानी के नीचे आ गया जिसे अब बहरे मुर्दार का कम गहरा जुनूबी किनारा कहा जाता है। क़ुरआन में जो चीज ख़ुदाई निशान है वह ग़ैर क़ुरआनी मुशाहिदे (अवलोकन) में सिर्फ़ एक तबीई वाक़या (भौतिक घटना) नजर आती है।

माहिरीन का ख़्याल है कि इस बर्बादशुदा बस्ती के खंडहर अब भी समुद्र में पानी के नीचे पाए जाते हैं। बिलाशुबह इसमें बहुत बड़ी इबरत (सीख) है। मगर यह इबरत सिर्फ उन लोगों के लिए है जो बातों को उसकी गहराई के साथ समझने की कोशिश करें।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝

और मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को। पस उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो और जमीन में फसाद फैलाने वाले न बनो। तो उन्होंने उसे झुठला दिया। पस जलजले ने उन्हें आ पकड़ा। फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (36-37)

हजरत शुऐब जिस कौम में आए वह एक तिजारत पेशा कौम थी। वे लोग माल की हिर्स में इतना बढ़े कि धोखा और फरेब के जरिए माल कमाने लगे। यही उनका जमीन में फ़साद करना था। जाइज तिजारत हुसूले मआश (जीविका) का इस्लाही तरीका है और धोखा और लूट खसोट हुसूले मआश का मुफ्सिदाना तरीका।

हजरत शुऐब ने कौम से कहा कि तुम दुनिया के पीछे आख़िरत से ग़ाफिल न हो जाओ। तुम लोग उस तरीके पर काम करो जिससे तुम आख़िरत में अपने लिए अच्छे अंजाम की उम्मीद कर सको। मगर पैग़म्बर की सारी कोशिशों के बावजूद कौम न मानी। यहां तक कि वह ख़ुदा के कानून के मुताबिक हलाक कर दी गई। जिन घरों को उन्होंने अपने लिए जिंदगी का घर समझा था वह उनके लिए मौत का घर बन गया।

وَعَادًا وَثَمُودَ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسَاكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝

और आद और समूद को, और तुम पर हाल खुल चुका है उनके घरों से। और उनके आमाल को शैतान ने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया। फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया और वे होशियार लोग थे। (38)

आद और समूद को भी ख़ुदा के अजाब ने पकड़ लिया। वे अपने दुनिया के मामलात में बहुत होशियार थे मगर वे आख़िरत के मामले मे बिल्कुल नादान निकले। उन्होंने पहाड़ों के जरिए घर बनाने के राज को जान लिया। मगर वे पैग़म्बर के जरिए जिंदगी बनाने का राज न जान सके। इसकी वजह वह चीज थी जिसे तजईने आमाल कहा गया है। शैतान ने उन्हें

इस धोखे में रखा कि दुनिया की तामीर ही सारी तामीर है। अगर दुनिया को बना लिया तो इसके बाद कोई मसला मसला नहीं। मगर यह फरेब उनके काम न आया और न इस किस्म का फरेब आइंदा किसी के कुछ काम आने वाला है।

जुनूबी (दक्षिणी) अरब का इलाका जो अब यमन, अहकाफ और हज़्रमौत के नाम से जाना जाता है यही क़दीम जमाने में आद का इलाका था। इसी तरह हिजाज के शिमाली (उत्तरी) हिस्से में राबिग़ से अकबह तक और मदीना और ख़ैबर से तेमा और तबूक तक का इलाका वह था जिसमें समूद की आबादियां पाई जाती थीं।

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۝ فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

और कारून को और फिरऔन को और हामान को और मूसा उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने जमीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे। पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी। और उनमें से कुछ को कड़क ने आ पकड़ा। और उनमें से कुछ को हमने जमीन में धंसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने ग़र्क कर दिया। और अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। (39-40)

अंबिया की मुख़ातब कौमों ने जब अपने नबी का इंकार किया तो उन्हें जमीनी और आसमानी अजाब से हलाक कर दिया गया। कौमे लूत पर हासिब (पत्थर बरसाने वाली तूफानी हवा) का अजाब आया। आद और समूद और असहाबे मदयन पर सइहह (बिजली और कड़क) का अजाब आया। कारून के लिए ख़स्फ (जमीन में धंसा देने) का अजाब आया। फिरऔन और हामान के लिए ग़र्क (समुद्र के पानी में डुबा देने) का अजाब आया।

इन तमाम अजाबों का मुशतरक सबब लोगों का घमंड था। यानी हक की दावत को इसलिए न मानना कि उसे मानने से अपनी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी।

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ

مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है। उसने एक घर बनाया। और बेशक तमाम घरों से ज्यादा कमजोर मकड़ी का घर है। काश कि लोग जानते। बेशक अल्लाह जानता है उन चीजों को जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और ये मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और इन्हें वही लोग समझते हैं जो इल्म वाले हैं। अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बरहक पैदा किया है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (41-44)

यहां बताया गया है कि 'मकड़ी' के घर को देखकर जो शख़्स हकीकत का सबक पा ले वही दरअस्ल आलिम है। इससे मालूम होता है कि ख़ुदा के नजदीक सच्चे इल्म वाले कौन हैं। ये वे लोग नहीं हैं जो किताबी बहसों के माहिर बने हुए हों। बल्कि ये वे लोग हैं जो ख़ुदा की दुनिया में फैली हुई कुदरती निशानियों से नसीहत की ग़िजा ले सकें। दुनिया के छोटे-छोटे वाकेयात जिनके जेहन में दाख़िल होकर बड़े-बड़े सबक में तब्दील हो जाएं। यही इल्म जब आख़िरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) तक पहुंच जाए तो इसी का दूसरा नाम ईमान है।

اتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٥﴾

तुम उस किताब को पढ़ो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और नमाज कायम करो। बेशक नमाज बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज है। ओर अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (45)

'नमाज बुराई से रोकती है' का मतलब यह है कि कैफ़ियते नमाज बुराई से रोकती है। अगर आदमी वाकेअतन ख़ुदा के आगे रुकूअ और सज्दा करने वाला हो तो उसके अंदर जिम्मेदारी और तवाजेअ (विनम्रता) का एहसास पैदा हो जाता है। और जिम्मेदारी और तवाजोअ के एहसास से जो किरदार उभरता है वह यही होता है कि आदमी वह करता है जो उसे करना चाहिए और वह नहीं करता जो उसे नहीं करना चाहिए।

जिक्र से मुराद ख़ुदा की याद है। जब आदमी को ख़ुदा की कामिल मअरफत हासिल होती है। जब वह पूरी तरह ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाता है तो इसका नतीजा यह होता

है कि उसके ऊपर ख़ुदा का तसव्वुर छा जाता है। उसके अंदर ख़ुदा की याद का चशमा बह पड़ता है। इस रूहानी दर्जे को पहुंच कर आदमी की जबान से ख़ुदा के लिए जो आला कलिमात निकलते हैं उन्हीं का नाम जिक्र है। यह जिक्र बिलाशुबह आलातरीन इबादत है।

'वही' की तिलावत से मुराद 'वही' की तब्लीग़ है। यानी लोगों को कुरआन सुनाना और उसके जरिए से उन्हें ख़ुदा की मर्जी से बाख़बर करना। दावत व तब्लीग़ का यह काम बेहद सब्र आजमा काम है। इसमें अपने मुख़ालिफ़ीन का ख़ैरख़्वाह बनना पड़ता है। इसमें फ़रीके सानी (प्रतिपक्ष) की ज्यादतियों को यकतरफ़ा तौर पर नजरअंदाज करना पड़ता है। इसमें अपने मुख़ातबीन को मदऊ (जिन्हें दावत दी जाए) की नजर से देखना पड़ता है चाहे वे ख़ुद दाओी (आह्वानकर्ता) के लिए रकीब व हरीफ (विरोधी, प्रतिपक्षी) बने हुए हों।

नमाज जिस तरह आम जिंदगी में एक मोमिन को बुराई से रोकती है, उसी तरह वह दाओी को ग़ैर दाअियाना रविश से बचाती है। ख़ुदा का दाओी वही शख़्स बन सकता है जिसके सीने में ख़ुदा की याद समाई हुई हो, जो अपने पूरे वजूद के साथ ख़ुदा के आगे झुकने वाला बन गया हो।

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلَٰهُنَا وَإِلَٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾

और तुम अहले किताब से बहस न करो मगर उस तरीके पर जो बेहतर है, मगर जो उनमें बेइंसाफ हैं। और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज पर जो हमारी तरफ भेजी गई है। और उस पर जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है। हमारा माबूद (पूज्य) और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फरमांबरदारी करने वाले हैं। (46)

दाओी के लिए सही तरीका यह है कि जो लोग बहस करें और उलझें उनसे वह सलाम करके जुदा हो जाए। और जो लोग संजीदा हों उन पर वह अम्रे हक को वाजेह करने की कोशिश करे। साथ ही, यह कि दावती कलाम को हकीमाना कलाम होना चाहिए। और हकीमाना कलाम की एक ख़ास पहचान यह है कि उसमें मदऊ की नफ्सियात का पूरा लिहाज किया जाता है। दाओी अपनी बात को ऐसे उस्लूब (शैली) से कहता है कि मदऊ उसे अपने दिल की बात समझे न कि ग़ैर की बात समझ कर उससे भयभीत हो जाए। दाअियाना कलाम नासिहाना कलाम (उपदेश) होता है न कि मुनाजिराना कलाम (शास्त्रार्थ)।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمِنْ هَٰؤُلَاءِ مَن يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾ وَ

مَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝

और इसी तरह हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। तो जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस पर ईमान लाते हैं। और इन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं। और हमारी आयतों का इंकार सिर्फ मुंकिर ही करते हैं। और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते थे। ऐसी हालत में बातिलपरस्त (असत्यवादी) लोग शुबह में पड़ते। बल्कि ये खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें इल्म अता हुआ है। और हमारी आयतों का इंकार नहीं करते मगर वे जो जालिम हैं। (47-49)

लोगों में दो किस्म के अफराद होते हैं। एक वे जिन्हें पहले से सच्चाई का इल्म हासिल होता है। और दूसरे वे लोग जो बजाहिर सच्चाई का इल्म नहीं रखते। ताहम ये दूसरी किस्म के लोग भी फितरत की सतह पर सच्चाई से आशना (भिज्ञ) होते हैं। पहले, अगर हामिले किताब हैं तो दूसरे, हामिले फ़ित्रत।

अगर लोग फ़िलवाकअ संजीदा हों तो वे फ़ौरन हक को पहचान लेंगे। एक गिरोह अगर उसे किताबे आसानी की सतह पर पहचान लेगा तो दूसरा गिरोह किताबे फ़ितरत की सतह पर। हर एक को सच्चाई की बात अपने दिल की बात नजर आएगी। मगर अक्सर हालात में लोग तरह-तरह की नफ़्सियाती पेचीदगी में मुब्तिला हो जाते हैं। इसकी वजह से उनके अंदर इंकार का मिजाज आ जाता है। वे सच्चाई का इंकार ही करते रहते हैं, चाहे उसकी पुश्त पर कितने ही कराइन जमा हों और उसके हक में कितने ही ज्यादा दलाइल दे दिए जाएं।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

और वे कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं। कहो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। क्या उनके लिए यह काफी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है।

बेशक इसमें रहमत और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह का इंकार किया वही ख़सारे (घाटे) में रहने वाले हैं। (50-52)

जो लोग कहते थे कि पैग़म्बरे इस्लाम को उस तरह की निशानियां क्यों नहीं दी गईं जैसी निशानियां मिसाल के तौर पर मूसा को दी गई थीं। फरमाया कि निशानियां अल्लाह के पास हैं। यानी निशानियों (मोजिजे) का तअल्लुक ख़ुदा से है न कि पैग़म्बर से। पैग़म्बर की दावत का अस्ल इंहिसार दलाइल पर होता है। पैग़म्बर हमेशा दलाइल के जोर पर अपनी दावत पेश करता है। अलबत्ता दूसरे मसालेह के तहत ख़ुदा कभी किसी पैग़म्बर को निशानी (मोजिजा) दे देता है और कभी नहीं देता।

ईमान एक शुऊरी वाकया है। वही ईमान ईमान है जो दलील से मुतमइन होकर किसी बंदे के दिल में उभरा हो। जो शख़्स दलील की रोशनी में जांच कर किसी चीज को माने वह हकपरस्त है और जो शख़्स दूसरी ग़ैर मुतअल्लिक बहसें निकाले वह बातिलपरस्त।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

और ये लोग तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और अगर एक वक्त मुकर्रर न होता तो उन पर अजाब आ जाता। और यकीनन वह उन पर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। वे तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। जिस दिन अजाब उन्हें ऊपर से ढांक लेगा और पांव के नीचे से भी, और कहेगा कि चखो उसे जो तुम करते थे। (53-55)

इंसान के आमाल ही उसकी जन्नत हैं और इंसान के आमाल ही उसकी दोजख़। एक शख़्स जो इंकार और सरकशी का रवैया इख़्तियार किए हुए हो, उसकी जिंदगी को अगर उसके मअनवी अंजाम के एतबार से देखना मुमकिन हो तो नजर आएगा कि उसके बुरे आमाल उसे अजाब बनकर घेरे हुए हैं। और सिर्फ इतनी सी देर है कि मौत आए और उसे उसकी बनाई हुई दुनिया में डाल दे।

इंसान की बहुत सी सरकशी सिर्फ अपनी हकीकत से बेख़बरी का नतीजा होती है। अगर उसकी यह बेख़बरी ख़त्म हो जाए तो अचानक वह बिल्कुल दूसरा इंसान बन जाए।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾

ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, बेशक मेरी जमीन वसीअ (विस्तृत) है तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जान को मौत का मजा चखना है। फिर तुम हमारी तरफ लौटाए जाओगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें हम जन्नत के बालाख़ानों (उच्च भवनों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। क्या ही अच्छा अज्र है अमल करने वालों का। जिन्होंने सब्र किया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं। और कितने जानवर हैं जो अपना रिज़्क उठाए नहीं फिरते। अल्लाह उन्हें रिज़्क देता है और तुम्हें भी। और वह सुनने वाला जानने वाला है। (56-60)

हिजरत एक एतबार से तरीक़ेकार की तब्दीली है। यह तब्दीली कभी मकामे अमल बदलने की सूरत में होती है, जैसे मक्का को छोड़कर मदीना जाना। कभी मैदाने अमल बदलने की सूरत में होती है, जैसे सुलह हुदैबिया के जरिए जंग के मैदान से हटकर दावत के मैदान में आना।

इन आयात में मक्का के अहले ईमान से कहा गया कि मक्का के लोग अगर तुम्हें सताते हैं तो तुम मक्का को छोड़कर दूसरे इलाके में चले जाओ और वहां अल्लाह की इबादत करो। इससे मालूम हुआ कि सब्र और तवक्कुल का मतलब इबादत पर जमना है न कि दुश्मन से टकराव पर जमना। अगर हर हाल में दुश्मन से टकराते रहना मक्सूद होता तो उनसे कहा जाता कि मुख़ालिफीन (विरोधियों) से लड़ते रहो और वहां से किसी हाल में क़दम बाहर न निकालो।

وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ

نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने पैदा किया आसमानों और जमीन को, और मुसख़्ख़र किया सूरज को और चांद को, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां से फेर दिए जाते हैं। अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका चाहता है रिज़्क कुशादा कर देता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसने जमीन को जिंदा किया उसके मर जाने के बाद, तो जरूर वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं समझते। (61-63)

जमीन व आसमान को पैदा करना इतना बड़ा वाक्या है कि एक क़ादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) ख़ुदा ही इसे अंजाम दे सकता है। सूरज और चांद की गर्दिश, बारिश का बरसना और जमीन से नबातात (पौध) का उगना ये सब इससे ज्यादा बड़े वाक़ेयात हैं कि कोई ग़ैर ख़ुदा इन्हें वजूद में ला सके।

जो लोग किसी नौइयत के शिर्क में मुब्तिला हैं वे भी अपने मफरूजा (काल्पनिक) हस्तियों के बारे में यह अक़ीदा नहीं रखते कि वे इन अजीम वाकेयात को जहूर में लाए हैं। इसके बावजूद बहुत से लोग ख़ुदा के सिवा दूसरों की इस उम्मीद में परस्तिश करते हैं कि वे उनका रिज़्क बढ़ा दें। हालांकि जब हर किस्म के आला इख़्तियारात सिर्फ़ ख़ुदा को हासिल हैं तो दूसरा कौन है जो रिज़्क की तक्सीम में असरअंदाज हो सके।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

और यह दुनिया की जिंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। और आख़िरत का घर ही अस्ल जिंदगी की जगह है, काश कि वे जानते। पस जब वे कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ ले जाता है तो वे फौरन शिर्क करने

लगते हैं। ताकि हमने जो नेमत उन्हें दी है उसकी नाशुक्री करें और चन्द दिन फायदा उठाएं। पस वे अनकरीब जान लेंगे। (64-66)

इंसान की गुमराही का अस्ल सबब यह है कि वह दुनिया की रौनकों और दुनिया के मसाइल में इतना गुम होता है कि इससे ऊपर उठकर सोच नहीं पाता। हकीकत को पाने के लिए अपने आपको जाहिर से ऊपर उठाना पड़ता है। बेशतर लोग अपने आपको जाहिर से उठा नहीं पाते इसलिए बेशतर लोग हकीकत को पाने वाले भी नहीं बनते।

दुनिया में आदमी को बार-बार ऐसे तजर्बात पेश आते रहते हैं जो उसे उसका इज्ज याद दिलाते हैं। उस वक्त उसके तमाम मस्नूई ख़्यालात ख़त्म हो जाते हैं और हकीकी फितरत वाला इंसान जाग उठता है। मगर जैसे ही हालात मोअतदिल (सहज) हुए वह दुबारा पहले की तरह ग़ाफिल और सरकश बन जाता है। इन्हीं नाज़ुक तजर्बात में से सफर का वह तजर्बा है जिसका जिक्र आयत में किया गया है।

आदमी को जानना चाहिए कि आजादी का यह मौका उसे सिर्फ चन्द दिन की ज़िंदगी तक हासिल है। मौत के बाद उसके सामने बिल्कुल दूसरी दुनिया होगी और बिल्कुल दूसरे मसाइल।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुरअम्न हरम बनाया। और उनके गिर्द व पेश (आस पास) लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या वे बातिल (असत्य) को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। और उस शख़्स से बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या हक को झुठलाए जबकि वह उसके पास आ चुका। क्या मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग हमारी ख़ातिर मशक्कत उठाएंगे उन्हें हम अपने रास्ते दिखाएंगे। और यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है। (67-69)

मक्का का हरम अल्लाह तआला की एक अजीब नेमत है। अल्लाह ने लोगों के ऊपर उसका ऐसा रौब बिठा रखा है कि वहां पहुंच कर जालिम और सरकश भी अपना जुल्म और सरकशी भूल जाते हैं। हरम का यह तकद्दुस (पवित्रता) ख़ुदा की कुदरत की एक निशानी

था। इसका तकाजा था कि लोगों के दिल ख़ुदा के लिए झुक जाएं। मगर बातिलपरस्तों ने यह किया कि ग़ैर ख़ुदा में ख़ुदा के औसाफ फर्ज करके लोगों के जज्बाते परस्तिश को बिल्कुल ग़लत तौर पर उनकी तरफ फेर दिया। उनका मजीद जुल्म यह है कि अल्लाह के रसूल ने जब उन्हें नसीहत की कि इन मफरूजा (काल्पनिक) ख़ुदाओं को छोड़ो और एक ख़ुदा के आगे झुक जाओ तो वे रसूल के दुश्मन बन गए।

नाहकपरस्ती के माहौल में हकपरस्त बनना एक शदीद मुजाहिदे (संघर्षशीलता) का अमल है। इसमें मिली हुई चीज छिनती है। हासिलशुदा सुकून दरहम-बरहम हो जाता है। मगर इसी महरूमी में एक अजीम याफ्त (प्राप्ति) का राज छुपा हुआ है। और वह मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और बसीरत (अन्तर्दृष्टि) है। ऐसे लोगों के लिए इंसानों के दरवाज बंद होते हैं। मगर उनके लिए ख़ुदा के दरवाजे खुल जाते हैं। वे दुनिया से खोकर ख़ुदा से पाने लगते हैं। वे माद्दी राहतों से दूर होकर रब्बानी कैफियात से करीब हो जाते हैं। जाहिरी चीजें उनसे ओझल होती हैं मगर मअनवी चीजें उन पर मुंकशिफ हो जाती हैं। उन पर वे गहरे भेद खुलने लगते हैं जिनकी बड़े-बड़े लोगों को ख़बर भी नहीं होती।

سُورَةُ الرُّومِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّونَ آيَةً وَسِتَّةُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الم ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّومُ ﴿٢﴾ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ ﴿٣﴾ فِي بِضْعِ سِنِينَ ۗ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۚ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾ بِنَصْرِ اللَّهِ ۚ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥﴾ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَافِلُونَ ﴿٧﴾

आयतें-60 सूरह-30. अर-रूम रुकूअ-6

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। रूमी पास के इलाके में मग़लूब (परास्त) हो गए, और वे अपनी मग़लूबियत के बाद अनकरीब ग़ालिब होंगे। चन्द वर्षों में। अल्लाह ही के हाथ में सब काम है, पहले भी और पीछे भी। और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे, अल्लाह की मदद से। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। और वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता। लेकिन अक्सर

लोग नहीं जानते। वे दुनिया की जिंदगी के सिर्फ जाहिर को जानते हैं, और वे आख़िरत से बेख़बर हैं। (1-7)

ज़ुहूरे इस्लाम के वक्त दुनिया में दो बहुत बड़ी सल्तनतें थीं। एक मसीही रूमी सल्तनत। दूसरे मजूसी ईरानी सल्तनत। दोनों में हमेशा रकीबाना कशमकश जारी रहती थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के बाद 603 ई० का वाकया है कि कुछ कमजोरियों से फायदा उठाकर ईरान ने रूमी सल्तनत पर हमला कर दिया। रूमियों को शिकस्त पर शिकस्त हुई। यहां तक कि 616 ई० तक यरोशलम सहित रूम की मश्रिकी सल्तनत का बड़ा हिस्सा ईरानियों के कब्जे में चला गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबुव्वत 610 ई० में मिली और आपने मक्का में तौहीद की दावत का काम शुरू किया। इस लिहाज से यह ऐन वही जमाना था जबकि मक्का में तौहीद और शिर्क की कशमकश जारी थी। मक्का के मुश्रिकीन ने सरहदी वाकये से फाल लेते हुए मुसलमानों से कहा कि हमारे मुश्रिक भाइयों (मजूस) ने तुम्हारे अहले किताब भाइयों (मसीही) को शिकस्त दी है। इसी तरह हम भी तुम्हारा ख़ात्मा कर देंगे।

उस वक्त कुरआन में हालात के सरासर ख़िलाफ यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) उतरी कि दस साल के अंदर रूमी दुबारा ईरानियों पर ग़ालिब आ जाएंगे। रूमी इतिहासकार बताते हैं कि इसके जल्द ही बाद रूम के पराजित बादशाह (हिरकल) में पुरअसरार तौर पर तब्दीली पैदा होना शुरू गई। यहां तक कि 623 ई० में उसने ईरान पर जवाबी हमला किया। 624 ई० में उसने ईरान पर फैसलाकुन फत्ह हासिल की। 627 ई० तक उसने अपने सारे मक्बूजा इलाके ईरानियों से वापस ले लिए। कुरआन की पेशीनगोई लफ्ज-ब-लफ्ज पूरी हुई। इससे साबित होता है कि कुरआन का मुसन्निफ (लेखक) ख़ुदा है। ख़ुदा के सिवा कोई भी मुस्तकबिल के बारे में इतना सही बयान नहीं दे सकता।

मजीद यह वाकया बताता है कि हार और जीत बराहेरास्त ख़ुदा के इख़्तियार में है। उसी के फैसले से किसी को इक्तेदार (सत्ता) मिलता है और किसी से इक्तेदार छिन जाता है। एक कौम का गिरना और दूसरी कौम का उठना बजाहिर आम दुनियावी वाकया है। मगर इस जाहिर का एक बातिन (भीतर) है। हर वाक्ये के पीछे ख़ुदा के फरिश्ते फैसलाकुन तौर पर काम कर रहे होते हैं, अगरचे वे आम इंसानी आंखों को दिखाई नहीं देते। इसी तरह मौजूदा आलमे जाहिर का भी एक बातिन (भीतर) है और वह आलमे आख़िरत है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ﴿٨﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا

أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾

क्या उन्होंने अपने जी में ग़ौर नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और जमीन को और जो कुछ इनके दर्मियान है बरहक पैदा किया है। और सिर्फ एक मुकर्रर मुद्दत के लिए। और लोगों में बहुत से हैं जो अपने रब से मुलाकात के मुंकिर हैं। क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे। वे उनसे ज्यादा ताकत रखते थे। और उन्होंने जमीन को जोता और उसे उससे ज्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है। और उनके पास उनके रसूल वाजेह निशानियां लेकर आए। पस अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे ख़ुद ही अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। फिर जिन लोगों ने बुरा काम किया था उनका अंजाम बुरा हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और वे उनकी हंसी उड़ाते थे। (8-10)

ख़ुदा किसी आदमी को जिक्र व फिक्र की सतह पर मिलता है। यानी आदमी सोच के जरिए से ख़ुदा को पाता है। ख़ुदा ने मौजूदा दुनिया में अपने दलाइल बिखेर दिए हैं, आदमी की अपनी जात में, बाहर की कायनात में और फिर पैग़म्बर की तालीमात में। जो लोग इन ख़ुदाई निशानियों में ग़ौर करेंगे वही ख़ुदा को पाएंगे।

दलील इस दुनिया में ख़ुदा की नुमाइंदा (प्रतिनिधि) है। एक शख़्स के सामने सच्ची दलील आए और वह उसे नजरअंदाज कर दे तो गोया कि उसने ख़ुदा को नजरअंदाज किया। ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा के यहां अबदी महरूमी के सिवा और कुछ नहीं।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٢﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ﴿١٣﴾ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٥﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾

अल्लाह ख़ल्क (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसे पैदा करेगा। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे और जिस दिन कियामत बरपा होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरतजदा रह जाएंगे। और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफारिशी न होगा और वे अपने शरीकों के मुंकिर हो जाएंगे। और जिस दिन कियामत बरपा होगी उस दिन सब लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे एक बाग़ में मसरूर (प्रसन्न) होंगे। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया तो वे अजाब में पकड़े हुए होंगे। पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो। और असामानों और जमीन में उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है और तीसरे पहर और जब तुम जुहर करते हो। (11-18)

एक मुकम्मल दुनिया का मौजूद होना पहली तख़्लीक (सृजन) का यकीनी सुबूत है। फिर जब पहली तख़्लीक मुमकिन है तो दूसरी तख़्लीक क्यों मुमकिन नहीं। जो शख़्स मौजूदा दुनिया को माने और आख़िरत को न माने वह ख़ुद अपनी मानी हुई बात के लाजिमी तकाजे का इंकार कर रहा है।

'मुजरिमीन' से मुराद वे बड़े लोग हैं जिन्होंने इंकारे हक की मुहिम की कयादत की। जिन्होंने इंकारे हक के लिए दलाइल फराहम किए। कियामत का धमाका जब निजामे आलम को बदलेगा तो अचानक ये मुजरिमीन देखेंगे कि वे तमाम सहारे बिल्कुल बेबुनियाद थे जिन पर उन्हें बड़ा नाज था। वे तमाम अल्फाज झूठे अल्फाज साबित हुए जिन्हें वे अपने मौकिफ़ के हक में नाकाबिले तरदीद (अकाट्य) दलील समझते थे। अपनी उम्मीदों और ख़ुशख़्यालियों के बरअक्स जब वे इस सूरतेहाल को देखेंगे तो वे बिल्कुल हैरतजदा होकर रह जाएंगे।

कियामत में इंसानों की दो तक्सीम की जाएगी। एक, ख़ुदा की हम्द व तस्बीह करने वाले लोग। दूसरे, हम्द व तस्बीह से ख़ाली लोग। ख़ुदा की हम्द व तस्बीह करने वाले लोग वे हैं जो ख़ुदा को इस तरह पाएं कि वह उनकी यादों में समा जाए। वह उनके दिमाग़ की सोच और उनकी जबान का तज्किरा बन जाए। इसी हम्द व तस्बीह की एक मुतअय्यन सूरत का नाम पांच वक्त की नमाज है। आयत में सुबह की तस्बीह से मुराद फज्र की नमाज है। शाम की तस्बीह में मग़्रिब और इशा की नमाजें शामिल हैं। दोपहर ढलने के बाद की तस्बीह से मुराद जुहर की नमाज है। और दिन के पिछले वक्त की तस्बीह से मुराद अस्र की नमाज ।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

वह जिंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को जिंदा से निकालता है। और वह जमीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद जिंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है। फिर यकायक तुम बशर इंसान बनकर फैल जाते हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत रख दी। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (19-21)

मौजूदा दुनिया का एक अजीब व ग़रीब करिश्मा एक चीज का दूसरी चीज में तब्दील होना है। यहां अवृद्धिशील पदार्थ वृद्धिशील पदार्थ में तब्दील हो रहा है। यहां बेजान मिट्टी (दूसरे शब्दों में भूमि के तत्व) तब्दील होकर चलने और बोलने वाले इंसान की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं। मजीद यह कि यह सब कुछ हददर्जा बामअना तौर पर हो रहा है। मिसाल के तौर पर 'मिट्टी' जब तब्दील होकर इंसान बनती है तो उसका तकरीबन आधा हिस्सा मर्द की सूरत में ढल जाता है और तकरीबन निस्फ (आधा) हिस्सा औरत की सूरत में। इसी तक्सीम की बदौलत इंसानी तहजीब हजारों साल से कायम है। यह तब्दीली और फिर मुनज्जम और मुतनासिब (संतुलित) तब्दीली इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि उसके पीछे एक कादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) ख़ुदा की कारफरमाई मानी जाए।

हकीकत यह है कि आदमी अगर ख़ुदा की तख़्लीक पर ग़ौर करे तो उसे ऐसा लगेगा जैसे हर चीज में ख़ुदा का जलवा हो। हर चीज से ख़ुदा झांक रहा हो।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِلْعَالِمِينَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾

और उसकी निशानियों में से आसमानों और जमीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों ओर तुम्हारे रंगों का इख़्तेलाफ (अंतर) है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं इल्म वालों के लिए। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और तुम्हारा उसके फज्ल (जीविका) को तलाश करना है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें

बिजली दिखाता है, ख़ौफ के साथ और उम्मीद के साथ। और वह आसमान से पानी उतारता है फिर उससे जमीन को जिंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। (22-24)

कायनात अपने पूरे वजूद के साथ ख़ुदा की निशानी है। इसका अदम से वुजूद में आना ख़ुदा की कुव्वते तख़्लीक को बताता है। इसके अंदर बेशुमार तनव्वोअ (विविधता) ख़ुदा की कुदरत की तरफ इशारा कर रही है। तमाम चीजों में हददर्जा मअनवियत (अर्थपूर्णता) ख़ुदा की सिफ्ते रहमत का आइना है। बिजली जैसी तबाहकुन चीजों की मौजूदगी ख़ुदा की सिफ्ते इंतिकाम का तआरुफ है। जमीन का ख़ुश्क हो जाने के बाद दुबारा हरा भरा हो जाना तख़्लीके सानी (दुबारा पैदा करने) के इम्कान को बता रहा है।

ये सब ख़ुदा की निशानियां हैं। मगर ये निशानियां सिर्फ उन लोगों के लिए हैं जो कायनात की ख़ामोश पुकार पर कान लगाएं। जो अपनी अक्ल और अपने इल्म को सही रुख़ पर इस्तेमाल करें।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۚ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और जमीन उसके हुक्म से कायम है। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा तो तुम उसी वक्त जमीन से निकल पड़ोगे। और आसमानों और जमीन में जो भी है उसी का है। सब उसी के ताबेअ (अधीन) हैं और वही है जो अव्वल बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा। और यह उसके लिए ज्यादा आसान है। और आसमानों और जमीन में उसी के लिए सबसे बरतर सिफ्त है। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

अथाह ख़ला में जमीन और सूरज और सय्यारों (ग्रहों) और सितारों का निजाम इस कद्र हैरतनाक हद तक नादिर वाक्या है कि वह ख़ुद बोल रहा है कि वह किसी कायम रखने वाले की कुदरत से कायम है। और किसी चलाने वाले के जोर पर चल रहा है। यह ग़ैर मामूली मदद अगर एक लम्हा के लिए भी उससे जुदा हो तो वह बिल्कुल दरहम बरहम हो जाए। एक दुनिया में इस मामूली हवाई जहाज भी पायलेट का कंट्रोल खोने के बाद बर्बाद हो जाता है, फिर कायनात का इतना बड़ा कारख़ाना किसी कंट्रोलर के कंट्रोल के बग़ैर कैसे चल सकता है।

कायनात का ख़ालिक कायनात में अपनी कुदरत का जो मुजाहिरा कर रहा है उसके

लिहाज से उसके लिए यह काम आसानतर है कि वह इंसान को मौत के बाद दुबारा पैदा करे। तख़्लीके अव्वल का जो मुजाहिरा कायनात में हर आन हो रहा है उसके बाद तख़्लीके सानी को मानना ऐसा ही है जैसे एक साबितशुदा चीज को मानना। कायनात में ख़ुदा की कुदरत और उसकी हिक्मत का इज्हार इतनी आला सतह पर हो रहा है कि इसके बाद किसी भी कारनामे को ख़ुदा की तरफ मंसूब करना कोई अनहोनी चीज नहीं।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۚ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

वह तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारी जात से एक मिसाल बयान करता है। क्या तुम्हारे ग़ुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुम्हें दिया है कि तुम और वह उसमें बराबर हों। और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज करते हो। इस तरह हम आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। बल्कि अपनी जानों पर जुल्म करने वालों ने बग़ैर दलील अपने ख़्यालात की पैरवी कर रखी है तो उसे कौन हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो। और कोई उनका मददगार नहीं। (28-29)

एक मुशतरक (साझा) माल या जायदाद हो तो उसमें उसके तमाम शरीकों का हक होता है और हर शरीक को दूसरे शरीक का लिहाज रखना पड़ता है। मगर ख़ुदा का मामला इस किस्म का मामला नहीं। ख़ुदा तंहा तमाम कायनात का मालिक है। ख़ुदा के लिए सही मिसाल आका (स्वामी) और ग़ुलाम की है न कि जायदाद के शरीकों की। ख़ुदा और उसकी मख़्लूकात के दर्मियान ज्यादा बड़े पैमाने पर वही निस्बत है जो एक आका और एक ग़ुलाम के दर्मियान पाई जाती है। कोई शख़्स अपने ग़ुलाम या नौकर को अपने बराबर का दर्जा नहीं देता। इसी तरह कायनात में कोई भी नहीं है जिसे ख़ुदा के साथ बराबरी की हैसियत हासिल हो। ख़ुदा की तरफ सिर्फ आकाई है और बकिया मख़्लूकात की तरफ सिर्फ महकूमी और ग़ुलामी।

मख़्लूकात का अपने-अपने तख़्लीकी निजाम का पाबंद होना बताता है कि ख़ुदा और मख़्लूकात के दर्मियान सही निस्बत आका और ग़ुलाम की है। इसके सिवा जो निस्बत भी कायम की जाएगी उसकी बुनियाद महज इंसानी मफरूजा पर होगी न कि किसी वाकई दलील पर।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ
لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾ مُنِيبِينَ
إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ
وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾

पस तुम यकसू होकर अपना रुख़ इस दीन की तरफ रखो, अल्लाह की फ़ितरत जिस पर उसने लोगों को बनाया है। उसके बनाए हुए को बदलना नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। उसी की तरफ मुतवज्जह होकर और उसी से डरो और नमाज कायम करो और मुश्रिकीन में से न बनो जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया। और बहुत से गिरोह हो गए। हर गिरोह अपने तरीके पर नाज़ां (मग्न) है जो उसके पास है। (30-32)

अस्ल दीन यह है। और वह हर पैग़म्बर पर अपनी कामिल शक्ल में उतरा है। वह है एक अल्लाह की तरफ रुजूअ (प्रवृत्त होना), एक अल्लाह का डर, एक अल्लाह की परस्तारी, हमह-तन एक अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो जाना, यही दीने फितरत है। यह दीन अबदी तौर पर हर इंसान की नफ्सियात में समाया हुआ है। तमाम पैग़म्बरों ने इसी एक दीन की तालीम दी। मगर उनके पैरोकारों की बाद की नस्लों ने एक दीन को कई दीन बना डाला।

कई दीन हमेशा उन इजाफी (अतिरिक्त) बहसों से बनता है जो बाद के लोग पैग़म्बरों की इब्तिदाई तालीमात में पैदा करते हैं। अकाइद में नई ईजाद की गई मूशिगाफियां, इबादात में ख़ुदसाख़्ता मसाइल, जमाने के तास्सुर के तहत दीन की नई-नई ताबीरें। यही वे चीजें हैं जो बाद के दौर में एक दीन को कई दीन बना देती हैं। जब ये इजाफे वजूद में आते हैं तो लोग अस्ल दीन के बजाए अपने इन्हीं इजाफों पर सबसे ज्यादा जोर देने लगते हैं जिनकी बदौलत वे दूसरे गिरोह से जुदा होकर अलग गिरोह बने हैं। एक गिरोह एक किस्म के इजाफे पर जोर देता है, और दूसरा गिरोह दूसरे किस्म के इजाफे पर। इस तरह बिलआख़िर यह नौबत आती है कि एक दीन को मानने वाले अमलन कई दीनी गिरोहों में बट कर रह जाते हैं।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ
رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं उसी की

तरफ मुतवज्जह होकर। फिर जब वह अपनी तरफ से उन्हें महरबानी चखाता है तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके मुंकिर हो जाएं। तो चन्द दिन फायदा उठा लो, अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। क्या हमने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उन्हें ख़ुदा के साथ शिर्क करने को कह रही है। (33-35)

आम हालात में आदमी अपने को बाइख़्तियार पाता है। इसलिए आम हालात में वह मस्नूई (बनावटी) तौर पर सरकश बना रहता है। मगर जब नाज़ुक हालात उसे उसकी बेबसी का तजर्बा कराते हैं, उस वक्त उसके जेहन के पर्दे हट जाते हैं। वह उस वक्त अस्ली इंसान (Man cut to size) बन जाता है जो कि वह हकीकतन है। उस वक्त वह अपनी आजिज़ाना हैसियत का एतराफ करते हुए ख़ुदा को पुकारने लगता है।

यह नफ्सियात की सतह पर तौहीदे इलाह (एक ही पूज्य) का सुबूत है। इस तरह इंसान को उसके जाती तजुर्बे में हकीकत का चेहरा दिखाया जाता है। मगर आदमी इतना नादान है कि जैसे ही हालात बदले वह दुबारा पहले की तरह ग़फलत और सरकशी में मुब्तिला हो जाता है।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ
إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ
السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾
وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ رِبًا لِيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا
آتَيْتُمْ مِنْ زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾

और जब हम लोगों को महरबानी चखाते हैं तो वे उससे ख़ुश हो जाते हैं। और अगर उनके आमाल के सबब से उन्हें कोई तकलीफ पहुंचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं। क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसे चाहे ज्यादा रोजी देता है और जिसे चाहे कम। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। पस रिश्तेदार को उसका हक दो और मिस्कीन को और मुसाफिर को। यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रिजा चाहते हैं और वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाए, तो अल्लाह के नजदीक वह नहीं बढ़ता। और जो जकात तुम दोगे अल्लाह की रिजा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के यहां अपने माल को बढ़ाने वाले हैं। (36-39)

मोमिन राहत और मुसीबत दोनों को ख़ुदा की तरफ से समझता है। इसलिए वह दोनों हालतों में ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह होता है। वह राहत में शुक्र करता है और मुसीबत में सब्र। इसके बरअक्स ग़ैर मोमिन का भरोसा अपने आप पर होता है। इसलिए वह अच्छे हालात में नाजां होता है और जब उसकी कुव्वतें जवाब दे जाएं तो वह मायूसी का शिकार हो जाता है। क्योंकि उसे महसूस होता है कि अब उसकी आख़िरी हद आ गई। यह गोया फितरत की शहादत है जो बताती है कि पहला जेहन हकीकी जेहन है और दूसरा जेहन ग़ैर हकीकी जेहन।

मोमिन की एक पहचान यह है कि वह अपने माल को रिजाए इलाही के लिए ख़र्च करता है। चुनांचे वह अपने माल में दूसरे जरूरमंदों का भी हिस्सा लगाता है, चाहे वे उसके रिश्तेदार हों या ग़ैर रिश्तेदार। वह अपने माल को आख़िरत का नफा कमाने के लिए ख़र्च करता है न कि सूद ख़्वारों की तरह सिर्फ दुनिया का नफा कमाने के लिए।

ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَفْعَلُ مِن ذَٰلِكُم مِّن شَىْءٍ ۚ سُبْحَـٰنَهُۥ وَتَعَـٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ ٱلْفَسَادُ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِى ٱلنَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ ٱلَّذِى عَمِلُوا۟ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَـٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُم مُّشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर उसने तुम्हें रोजी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो। वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। ख़ुश्की और तरी में फसाद फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह मजा चखाए उन्हें उनके कुछ आमाल का, शायद की वे बाज आएं। कहो कि जमीन में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो इससे पहले गुजरे हैं। उनमें से अक्सर मुश्रिक (बहुदेववादी) थे। (40-42)

एक इंसान का पैदा होना, उसका सुबह व शाम का रिज्क मिलना, उस पर मौत वाकेअ होना, ये वाकेयात इतने अजीम हैं कि इनके जुहूर के लिए कायनाती कुव्वत दरकार है। और ख़ालिके कायनात के सिवा कोई भी मफरूजा (काल्पनिक) हस्ती ऐसी नहीं जो इस किस्म की कायनाती कुव्वत रखती हो। हकीकत यह है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) अपनी दलील आप है और शिर्क (बहुदेववाद) अपनी तरदीद (रद्द) आप।

अगर इंसान एक ख़ुदा को अपना माबूद बनाए तो सबका मर्कजे तवज्जोह एक होता है। इससे इंसानों के दर्मियान इत्तेहाद की फजा पैदा होती है। इसके बरअक्स जब दूसरे-दूसरे

माबूद बनाए जाने लगें तो बेशुमार चीजें मर्कजे तवज्जोह बन जाती हैं। इससे अफराद और कौमों में इनाद (द्वेष) और इख़्तेलाफ पैदा होता है। ख़ुश्की और समुद्र और फजा सब फसाद (उपद्रव, बिगाड़) से भर जाते हैं।

इंसान की बेराहरवी (पथभ्रष्टता) का मुस्तकिल अंजाम मौत के बाद सामने आने वाला है। मगर इंसान की बेराहरवी का वक्ती अंजाम इसी दुनिया में दिखाया जाता है ताकि लोगों को याददिहानी हो।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ ٱلْقَيِّمِ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ﴿٤٣﴾ مَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُۥ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَـٰلِحًا فَلِأَنفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ مِن فَضْلِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْكَـٰفِرِينَ ﴿٤٥﴾

पस अपना रुख़ दीने कय्यिम (सीधे-सहज धर्म) की तरफ सीधा रखो। इससे पहले कि अल्लाह की तरफ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं है। उस दिन लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। जिसने इंकार किया तो उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और जिसने नेक अमल किया तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं। ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फज़्ल से जजा (प्रतिफल) दे। बेशक अल्लाह मुंकिरों को पसंद नहीं करता। (43-45)

मौजूदा दुनिया में अच्छे और बुरे दोनों किस्म के लोग मिले हुए हैं। आख़िरत इसलिए आएगी कि वह दोनों किस्म के लोगों को अलग-अलग कर दे। उस दिन ख़ुदा का इनाम उन लोगों के लिए होगा जो मौजूदा दुनिया में सिर्फ ख़ुदा वाले बनकर रहे। और जिन लोगों की दिलचस्पियां ग़ैर ख़ुदा के साथ वाबस्ता रहीं वे वहां अबदी (चिरस्थाई) तौर पर ख़ुदा की रहमतों से महरूम कर दिए जाएंगे।

وَمِنْ ءَايَـٰتِهِۦٓ أَن يُرْسِلَ ٱلرِّيَاحَ مُبَشِّرَٰتٍ وَلِيُذِيقَكُم مِّن رَّحْمَتِهِۦ وَلِتَجْرِىَ ٱلْفُلْكُ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَـٰتِ فَٱنتَقَمْنَا مِنَ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएं भेजता है ख़ुशख़बरी देने के लिए और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत से नवाजे। और ताकि कश्तियां उसके हुक्म से चलें।

और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो। और ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो। और हमने तुमसे पहले रसूलों को भेजा उनकी कौम की तरफ। पस वे उनके पास खुली निशानियां लेकर आए। तो हमने उन लोगों से इंतिकाम लिया जिन्होंने जुर्म किया था। और हम पर यह हक था कि हम मोमिनों की मदद करें। (46-47)

बारिश से पहले ठंडी हवाओं का आना इस बात का एलान है कि इस दुनिया का ख़ुदा रहमतों वाला ख़ुदा है। समुद्री जहाजरानी तमद्दुन (संस्कृति) के लिए इंतिहाई अहम है। मगर समुद्री जहाजरानी उसी वक्त मुमकिन होती है जबकि हवा एक ख़ास हद के अंदर रहे। इसी तरह मौजूदा जमाने में हवाई सफर का भी बहुत गहरा तअल्लुक इस इंतजाम से है कि ख़ुदा ने जमीन की सतह के ऊपर हवा का दबीज (मोटा) गिलाफ कायम कर रखा है।

यह सारा एहतिमाम इसलिए किया गया है ताकि इंसान ख़ुदा का शुक्रगुजार बंदा बनकर रहे। ख़ुदा के पैग़म्बर इन्हीं हकीकतों की तरफ लोगों को मुतवज्जह करने के लिए आए। फिर कुछ लोगों ने उन्हें माना, और कुछ लोगों ने उनका इंकार कर दिया। उस वक्त ख़ुदा ने मानने वालों की मदद की और इंकार करने वालों को हलाक कर दिया। यही मामला दोनों किस्म के इंसानों के साथ आख़िरत में ज्यादा बड़े पैमाने पर पेश आएगा।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۖ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٤٩﴾ فَانْظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾ فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। पस वे बादल को उठाती हैं। फिर अल्लाह उन्हें आसमान में फैला देता है जिस तरह चाहता है। और वह उन्हें तह-ब-तह करता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अंदर से निकलती है। फिर जब वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे पहुंचा देता है तो यकायक वे ख़ुश हो जाते हैं। और वे उसके

नाजिल किए जाने से पहले, ख़ुशी से पहले, नाउम्मीद थे। पस अल्लाह की रहमत के आसार (निशान) को देखो, वह किस तरह जमीन को जिंदा कर देता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक वही मुर्दों को जिंदा करने वाला है। और वह हर चीज पर कादिर है। और अगर हम एक हवा भेज दें, फिर वे खेती को जर्द हुई देखें तो इसके बाद वे इंकार करने लगेंगे। तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चले जा रहे हों। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो। तुम सिर्फ उसे सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो। पस यही लोग इताअत (आज्ञापालन) करने वाले हैं। (48-53)

आदमी हक का रास्ता इख़्तियार करे तो उसे अक्सर सख़्त दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है, जैसा कि दौरे अव्वल में रसूल और असहाबे रसूल के साथ पेश आया। मगर इन हालात में किसी के लिए मायूस होने का सवाल नहीं। जो ख़ुदा इतना रहीम है कि जब खेती को पानी की जरूरत होती है तो वह आलमी निजाम को मुतहर्रिक (सक्रिय) करके उसे सैराब करता है वह यकीनन अपने रास्ते पर चलने वालों की भी जरूर मदद फरमाएगा। ताहम यह मदद ख़ुदा के अपने अंदाजे के मुताबिक आएगी। इसलिए अगर इसमें देर हो तो आदमी को मायूस और बददिल नहीं होना चाहिए।

ख़ुदा की बात निहायत वाजेह और निहायत मुदल्लल (तर्कपूर्ण) बात है। मगर ख़ुदा की बात का मोमिन वही बनेगा जो चीजों को गहराई के साथ देखे, जो बातों को ध्यान के साथ सुने। जिसके अंदर यह मिजाज हो कि जो बात समझ में आ जाए उसे मान ले, जिस रास्ते का सही होना मालूम हो जाए उस पर चलने लगे।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत (शक्ति) दी, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया। वह जो चाहता है पैदा

करता है। और वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। और जिस दिन कियामत बरपा होगी, मुजरिम कसम खाकर कहेंगे कि वे एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। इस तरह वे फेरे जाते थे। और जिन लोगों को इल्म व ईमान अता हुआ था वे कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम हश्र (जीवित हो उठने) के दिन तक पड़े रहे। पस यह हश्र (जीवित हो उठने) का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे। पस उस दिन जालिमों को उनकी मअजरत (सफाई पेश करना) कुछ नफा न देगी और न उनसे माफ़ी मांगने के लिए कहा जाएगा। (54-57)

इंसान पैदा होता है तो वह निहायत कमजोर बच्चा होता है। फिर दर्मियान में ताकत और जवानी के कुछ साल गुजरने के बाद दुबारा बुढ़ापे की कमजोरी आ जाती है। इसका मतलब यह है कि इंसान की ताकत उसकी अपनी नहीं है। वह उसे देने से मिलती है। यह देने वाले के इख़्तियार में है कि वह जब चाहे दे और जब चाहे वापस ले ले।

दुनिया की जिंदगी में आदमी आख़िरत के लिए फ़िक्रमंद नहीं होता। क्योंकि कियामत उसे बहुत दूर की चीज मालूम होती है। मगर यह सिर्फ बेख़बरी की बात है। कियामत जब आएगी तो उसे ऐसा मालूम होगा कि बस एक घड़ी पिछली दुनिया में रहना हुआ था कि अगली दुनिया का मरहला पेश आ गया।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

और हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर किस्म की मिसालें बयान की हैं। और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इंकार किया है वे यही कहेंगे कि तुम सब बातिल (असत्य) पर हो। इस तरह अल्लाह मुहर कर देता है उन लोगों के दिलों पर जो नहीं जानते। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। और तुम्हें बेबरदाश्त न कर दें वे लोग जो यकीन नहीं रखते। (58-60)

मक्का में लोग कहते थे कि अगर तुम पैग़म्बर हो तो कोई ख़ारिके आदत (दिव्य) करिश्मा दिखाओ। मगर उनके इस मुतालबे को पूरा नहीं किया गया। इसकी वजह यह है कि ख़ारिके आदत करिश्मा अस्ल मक्सद के एतबार से बेफ़ायदा था। इस्लाम का मक्सद तो यह था कि लोगों के अमल में तब्दीली हो और अमल में तब्दीली फ़िक्र (विचार) की तब्दीली से आती है न कि ख़ारिके आदत करिश्मा दिखाकर लोगों को अचंभे में डाल देने से।

चुनांचे कुरआन का सारा जोर इस्तदलाल (तर्क) पर है। वह दलील के जरिए इंसान के जेहन को बदलना चाहता है। वह आदमी को इस काबिल बनाना चाहता है कि वाकेयात को सही रुख़ से देखे और मामलात पर सही राय कायम कर सके। हकीकत यह है कि इंसान का अस्ल मसला सेहते फ़िक्र (सुविचारता) है। अगर आदमी के अंदर सही फ़िक्र न जागा हो तो करिश्मों और मोजिजों को देखकर दुबारा वह कोई नासमझी का लफ़्ज बोल देगा जिस तरह वह इससे पहले नासमझी के अल्फ़ाज बोलता रहा है।

लाइल्मी की बिना पर मुहर लगना, सेहते फ़िक्र न होने की वजह से बातों को न समझना है। आदमी के अंदर राय कायम करने की सलाहियत न हो तो वह चीजों को उनके सही रुख़ से नहीं देख पाता। इस बिना पर वह चीजों से अपने लिए सही रहनुमाई भी हासिल नहीं कर पाता।

जो अल्लाह का बंदा बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठे उसे हमेशा लोगों की तरफ से हौसलाशिकन रद्दअमल का सामना पेश आता है। दाओ तमामतर आख़िरत की बात करता है जबकि लोगों का जेहन दुनिया के मसाइल में उलझा हुआ होता है। इस बिना पर लोग दाओ की तहकीर (अनादर) करते हैं। वे उसे हर लिहाज से नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। यहां तक कि माहौल में दाओ की बात बेवजन बात मालूम होने लगती है।

यह सूरतेहाल मदऊ के साथ दाओ को भी आजमाइश में डाल देती है। ऐसे वक्त में दाओ के लिए जरूरी हो जाता है कि वह अपने यकीन को न खोए। अगर हालात के दबाव के तहत उसने अपने यकीन को खो दिया तो वह ऐसी बात बोलने लगेगा जो आम लोगों को शायद अहम मालूम हो मगर अल्लाह की नजर में उससे ज्यादा ग़ैर अहम बात और कोई न होगी।

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

आयतें-34 **सूरह-31. लुकमान** **रुकूअ-4**

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। ये पुरहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) किताब की आयतें हैं, हिदायत और रहमत नेकी करने वालों के लिए। जो कि नमाज कायम करते हैं और जकात अदा

करते हैं। और वे आख़िरत पर यकीन रखते हैं। ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। (1-5)

एहसान का अस्ल मफहूम है, किसी काम को अच्छी तरह करना। मोहसिन के मअना हैं अच्छी तरह करने वाला। इस दुनिया में किसी काम के अच्छे होने का मेयार यह है कि वह हक़ीक़ते वाक्ये के मुताबिक हो। इस एतबार से मोहसिन वह शख़्स है जो हक़ीक़ते वाक्या का एतराफ करे, जिसका अमल वही हो जो होना चाहिए और वह न हो जो नहीं होना चाहिए।

जो लोग अपने आपको हक़ीक़ते वाक्या के मुताबिक ढालने का मिजाज रखें वही वे लोग हैं कि जब उनके सामने सदाक़त (सच्चाई) आती है तो वे किसी नफ्सियाती पेचीदगी में मुब्तिला हुए बग़ैर उसे मान लेते हैं। वे फौरन ही उसके अमली तक़ाजे पूरे करने लगते हैं। वे नमाजी बन जाते हैं जो ख़ुदा का हक अदा करने की एक अलामत है। वे ज़कात अदा करते हैं जो गोया माल के दायरे में बंदों का हक अदा करना है। वे दुनियापरस्ती को छोड़कर आख़िरतपसंद बन जाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि कामयाबी और नाकामयाबी का फैसला आख़िरकार जहां होना है वह आख़िरत ही है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है जो ग़ाफिल करने वाली हैं। ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे, बग़ैर किसी इल्म के। और उसकी हंसी उड़ाए। ऐसे लोगों के लिए जलील करने वाला अजाब है। और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह तकब्बुर (घमंड) करता हुआ मुंह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है। तो उसे एक दर्दनाक अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया। उनके लिए नेमत के बाग़ हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह का पुख़्ता वादा है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-9)

बातें दो किस्म की होती हैं। एक नसीहत दूसरे तफरीह। नसीहत की बात जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है। वह आदमी से कुछ करने और कुछ न करने के लिए कहती है। इसलिए हर दौर में बहुत कम ऐसे लोग हुए हैं जो नसीहत की बातों से दिलचस्पी लें। इंसान का आम

मिजाज हमेशा यह रहा है कि वह तफरीह की बातों को ज्यादा पसंद करता है। वह नसीहत की 'किताब' के मुक़ाबले में उस किताब का ज्यादा ख़रीदार बनता है जिसमें उसके लिए जेहनी तफरीह का सामान हो और वह उससे कुछ करने के लिए न कहे।

जिस शख़्स का हाल यह हो कि वह अपनी जात से आगे बढ़कर दूसरों को इस किस्म की तफरीही बातों में मशग़ूल करने लगे वह ज्यादा बड़ा मुजरिम है। क्योंकि वह इस जेहनी बेराहरवी (भटकाव) का क़ायद बना। उसने लोगों के जेहन को बेफ़ायदा बातों में मशग़ूल करके उन्हें इस काबिल न रखा कि वे ज्यादा संजीदा बातों में ध्यान दे सकें।

सबसे बुरी नफ्सियात घमंड की नफ्सियात है। जो शख़्स घमंड की नफ्सियात में मुब्तिला हो उसके सामने हक आएगा मगर वह अपने को बुलन्द समझने की वजह से उसका एतराफ नहीं करेगा। वह उसे हिक़ारत के साथ नजरअंदाज करके आगे बढ़ जाएगा। इसके बरअक्स मामला अहले ईमान का है। उनका नसीहतपसंद मिजाज उन्हें मजबूर करता है कि वे सच्चाई का एतराफ करें, वे अपनी जिंदगी को तमामतर उसके हवाले कर दें।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَاۗبَّةٍ ۭ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे सुतूनों (स्तंभों) के बग़ैर जो तुम्हें नजर आएं। और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए कि वे तुम्हें लेकर झुक न जाए। और उसमें हर किस्म के जानदार फैला दिए। और हमने आसमान से पानी उतारा फिर जमीन में हर किस्म की उम्दा चीजें उगाईं। यह है अल्लाह की तख़्लीक़, तो तुम मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है। बल्कि जालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (10-11)

कायनात लामुतनाही (अनंत) ख़ला है। इसके अंदर बेशुमार निहायत बड़े-बड़े अजराम (आकाशीय पिंड) मुसलसल गर्दिश कर रहे हैं। इन अजराम का इस तरह ख़ला (अंतरिक्ष) में गर्दिश करते हुए क़ायम रहना दहशतनाक हद तक अजीम वाक्या है। फिर हमारी जमीन मौजूदा कायनात में एक इंतिहाई विलक्षण ग्रह है जिसमें अनगिनत इंतिजामात ने इसके ऊपर इंसानी जिंदगी को मुमकिन बना दिया है। इन्हीं इंतजामात में से चन्द ये हैं जमीन की सतह पर पहाड़ों के उभार से तवाजुन (संतुलन) क़ायम होना। फिर पानी और जिंदगी और नबातात (वनस्पति) जैसी अजीब चीजों की जमीन पर इफ़रात (बहुलता) के साथ मौजूदगी।

एक ख़ुदाए बरतर के सिवा कोई नहीं जो इस अजीम निजाम को क़ायम रख सके। फिर

इंसान के लिए कैसे जाइज हो सकता है कि वह ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों को अपना मर्कज़े परस्तिश बनाए।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾

और हमने लुक़मान को हिक्मत (तत्वज्ञान) अता फरमाई कि अल्लाह का शुक्र करो। और जो शख़्स शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए शुक्र करेगा और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है। और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है। (12-13)

लुक़मान हकीम की तारीख़ी हैसियत के बारे में अभी तक कतई मालूमात हासिल नहीं हो सकी हैं। ताहम वह एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और ख़ुदापरस्त आदमी थे।

कुरआन बताता है कि लुक़मान हकीम ख़ुदा के एक शुक्रगुजार बंदे थे। और अपने बेटे को उन्होंने शिर्क से बचने की तल्क़ीन की। ये दोनों बातें एक हैं। तौहीद अल्लाह को अपना मोहसिन (उपकारक) समझने के एहसास से उभरती है। और शिर्क यह है कि आदमी अल्लाह के सिवा किसी और को अपना मोहसिन समझ ले और उसके लिए अपने एहसानमंदी के जज्बात न्यौछावर करने लगे। जब देने वाला सिर्फ एक है तो शुक्रगुजारी भी सिर्फ एक ही की होनी चाहिए।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

और हमने इंसान को उसके मां-बाप के मामले में ताकीद की। उसकी मां ने दुख पर दुख उठाकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ। कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन का। मेरी ही तरफ लौट कर आना है और अगर वे दोनों तुझ पर जोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज को शरीक ठहराए जो तुझे मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना। और दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करना। और तुम उस शख़्स

के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ रुजूअ किया है। फिर तुम सबको मेरे पास आना है। फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते रहे। (14-15)

ख़ुदा के बाद इंसान के ऊपर सबसे ज्यादा हक मां-बाप का है। अलबत्ता अगर मां-बाप का हुक्म ख़ुदा के हुक्म से टकराए तो उस वक्त ख़ुदा का हुक्म लेना है और मां-बाप का हुक्म छोड़ देना है। ताहम उस वक्त भी यह जरूरी है कि मां-बाप की ख़िदमत को बदस्तूर जारी रखा जाए।

दो मुख़्तलिफ तकाज़ों में यह तवाज़ुन हिक्मते इस्लाम की आलातरीन शक्ल है। और इसी आला हिक्मत में तमाम आला कामयाबियों का राज छुपा हुआ है।

يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾ وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾

ऐ मेरे बेटे, कोई अमल अगर राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो या आसमानों में हो या जमीन में हो, अल्लाह उसे हाजिर कर देगा। बेशक अल्लाह बारीकबीं है, बाख़बर है। ऐ मेरे बेटे नमाज कायम करो, अच्छे काम की नसीहत करो और बुराई से रोको और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचे उस पर सब्र करो। बेशक यह हिम्मत के कामों में से है। और लोगों से बेरुख़ी न कर। और जमीन में अकड़ कर न चल। बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। और अपनी चाल में मियानारवी (शालीनता) इख़्तियार कर और अपनी आवाज को पस्त कर। बेशक सबसे बुरी आवाज गधे की आवाज है। (16-19)

मौजूदा जमाने में साइंस की तरक्की ने साबित किया है कि आड़ और फासला इजाफी (अतिरिक्त) अल्फाज हैं। एक्सरे किरणें जिस्म के अंदर तक देख लेती हैं। दूरबीन और ख़ुर्दबीन (Micro Scope) के जरिए वे चीजें दिखाई देने लगती हैं जो ख़ाली आंख से नजर नहीं आतीं। यह इम्कान जिसका तजर्बा हमें महदूद सतह पर हो रहा है यही ख़ुदा के यहां लामहदूद (असीम) तौर पर मौजूद है।

दीन पर ख़ुद अमल करना या दूसरों को दीन की तरफ बुलाना, दोनों ही सब्र चाहते हैं।

इसके लिए करने से पहले सोचना पड़ता है। नफ्स की ख़्वाहिश पर चलने के बजाए नफ्स के ख़िलाफ चलना पड़ता है। अपनी बड़ाई को महफूज़ करने के बजाए अपनी बड़ाई को खो देना पड़ता है। दूसरों की तरफ से पेश आने वाली तकलीफों को यकतरफा तौर पर बर्दाश्त करना पड़ता है।

ये सब हौसलामंदी के काम हैं, और हौसलामंद किरदार (चरित्र) ही का दूसरा नाम इस्लामी किरदार है।

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٢١﴾

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं। और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, किसी इल्म और किसी हिदायत और किसी रोशन किताब के बग़ैर। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज की जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं, हम उस चीज की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर शैतान उन्हें आग के अजाब की तरफ बुला रहा हो तब भी। (20-21)

मौजूदा दुनिया इस तरह बनी है कि वह इंसान के लिए कामिल तौर पर साजगार है। नीज यह कि मौजूदा दुनिया में हर वह चीज इफरात (बहुलता) के साथ मौजूद है जिसकी इंसान को जरूरत है। इसके बावजूद इंसान का यह हाल है कि वह ख़ालिके कायनात का शुक्र नहीं करता। वह बेमअना बहसें पैदा करके चाहता है कि लोगों की तवज्जोह ख़ुदा की तरफ से फेर दे।

इंसान के बेराह होने का सबब अक्सर हालात में यह होता है कि वह अपनी अक्ल को काम में नहीं लाता। वह रवाजे आम से हटकर नहीं सोचता। आदमी अगर रवाज से ऊपर उठ जाए तो ख़ुदा की दी हुई अक्ल ख़ुद उसे सही सम्त में रहनुमाई के लिए काफी हो जाए।

وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾ وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ

عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾

और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेक अमल करने वाले भी हो तो उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह ही की तरफ है तमाम मामलात का अंजामकार। और जिसने इंकार किया तो उसका इंकार तुम्हें ग़मगीन न करे। हमारी ही तरफ है उनकी वापसी। तो हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया। बेशक अल्लाह दिलों की बात से भी वाकिफ है। उन्हें हम थोड़ी मुद्दत फायदा देंगे। फिर उन्हें एक सख़्त अजाब की तरफ खींच लाएंगे। (22-24)

हर आदमी का एक रुख़ होता है जिधर वह अपने पूरे फिक्री (वैचारिक) और अमली वजूद के साथ मुतवज्जह रहता है। मोमिन वह है जिसका रुख़ पूरी तरह ख़ुदा की तरफ हो जाए। मोमिनाना जिंदगी दूसरे लफ्ज़ों में ख़ुदा रुख़ी (God-oriented) जिंदगी का नाम है। और ग़ैर मोमिनाना जिंदगी ग़ैर ख़ुदा रुख़ी जिंदगी का।

जिस शख़्स ने ख़ुदा की तरफ रुख़ किया उसने सही मंजिल की तरफ रुख़ किया। वह यकीनन अच्छे अंजाम को पहुंचेगा। इसके बरअक्स जो शख़्स ख़ुदा से ग़ाफिल होकर किसी और तरफ मुतवज्जह हो जाए वह बेरुख़ और बेमंजिल हो गया। उसे आज की वक्ती जिंदगी में कुछ फायदे हो सकते हैं। मगर आख़िरत की मुस्तकिल जिंदगी में उसके लिए अजाब के सिवा और कुछ नहीं।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें से अक्सर नहीं जानते। अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जमीन में। बेशक अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है। और अगर जमीन में जो दरख़्त हैं वे कलम बन जाएं और समुद्र, सात अतिरिक्त समुद्रों के साथ, रोशनाई बन जाएं, तब भी अल्लाह की बातें ख़त्म न हों। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

कायनात इतनी वसीअ और इतनी अजीम है कि कोई भी शख़्स होश व हवास के साथ यह दावा नहीं कर सकता कि इसे ख़ुदा के सिवा किसी और ने बनाया है। मगर इस हकीकत

को मानने के बावजूद इंसान का हाल यह है कि वह ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों को अज्मत का मकाम देता है। यही वह ग़ैर माक़ूल रवैया है जिसका दूसरा नाम शिर्क है।

ख़ुदा की अज्मत इससे ज्यादा है कि वह लफ़्ज़ों में बयान की जा सके। उलूमे तबीई (भौतिक विज्ञानों) की तारीख़ हजारों वर्ष के दायरे में फैली हुई है। मगर बेशुमार तहकीकात के बावजूद अभी तक किसी एक चीज के बारे में भी पूरी मालूमात हासिल न हो सकीं। इंसान को आज भी यह नहीं मालूम कि ख़ला (अंतरिक्ष) में कितने सितारे हैं। जमीन में नबातात (पेड़-पौधों) और हैवानात की कितनी किस्में हैं। दरख़्त की एक पत्ती और रेत के एक जर्रे की माहियत (पूर्ण संरचना) क्या है। समुद्र के अंदर कितने अजायबात छुपे हुए हैं। ग़रज इस दुनिया की कोई भी छोटी या बड़ी चीज ऐसी नहीं जिसके बारे में इंसान को पूरी मालूमात हासिल हो चुकी हों। यही वाक़्या यह साबित करने के लिए काफ़ी है कि दरख़्तों के कलम और समुद्रों की स्याही भी ख़ुदा के अनगिनत करिश्मों को तहरीर करने के लिए काफ़ी नहीं।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٩﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣٠﴾

तुम सबका पैदा करना और जिंदा करना बस ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है। हर एक चलता है एक मुक़र्रर वक्त तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक है। और उसके सिवा जिन चीजों को वे पुकारते हैं वे बातिल हैं और बेशक अल्लाह बरतर (सर्वोच्च) है, बड़ा है। (28-30)

इंसान अपनी जात में इस बात का सुबूत है कि एक जिंदगी का वुजूद में आना मुमकिन है। और जब एक जिंदगी का वजूद मुमकिन हो तो उसी किस्म की दूसरी जिंदगियों का वुजूद में आना और भी मुमकिन हो जाता है। इसी तरह हर आदमी इस वाकये का तजर्बा कर रहा है कि वह एक आवाज को सुन सकता है। वह एक मंजर को देख सकता है और जब एक आवाज का सुनना और एक मंजर का देखना मुमकिन हो तो बहुत सी आवाजों को सुनना और बहुत से मनाजिर को देखना नामुमकिन क्यों होगा।

रात को दिन में दाख़िल करना और दिन को रात में दाख़िल करना किनाया (संकेत) की जबान में उस वाकये की तरफ इशारा है जिसे मौजूदा जमाने में जमीन की महवरी गर्दिश कहा

जाता है। अपने महवर (धुरी) पर कामिल सेहत के साथ जमीन की मुसलसल गर्दिश और इस तरह के दूसरे वाक़ेआत बताते हैं कि इस कायनात का ख़ालिक व मालिक नाक़ाबिले क़यास हद तक अजीम है। ऐसी हालत में उसके सिवा कौन है जिसकी इबादत की जाए। जिसे अपनी जिंदगी में बड़ाई का मकाम दिया जाए। हकीकत यह है कि एक ख़ुदा को छोड़कर जिसे भी अज्मत का मकाम दिया जाता है वह सिर्फ एक झूठ होता है। क्योंकि एक ख़ुदा के सिवा किसी को कोई अज्मत हासिल नहीं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣١﴾ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٢﴾

क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुद्र में अल्लाह के फ़ज्ल (अनुग्रह) से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाए। बेशक इसमें निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब मौत उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है, वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ ले आता है तो उनमें कुछ एतदाल (संतुलित मार्ग) पर रहते हैं। और हमारी निशानियों का इंकार वही लोग करते हैं जो बदअहद (वचन तोड़ने वाले) और नाशुक्रगुजार हैं। (31-32)

समुद्र में कोई चीज डाली जाए तो वह फौरन डूब जाएगी। मगर अल्लाह तआला ने पानी को एक ख़ास कानून का पाबंद बना रखा है। इस वजह से कश्ती और जहाज अथाह समुद्रों में नहीं डूबते, वे इंसान को और उसके सामान को बहिफ़ाजत एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देते हैं। यह बिलाशुबह एक अजीम निशानी है। मगर इस निशानी से सिर्फ साबिर और शाकिर इंसान सबक लेते हैं। साबिर वह है जो अपने आपको ग़लत एहसासात के जेरेअसर जाने से रोके। और शाकिर वह है जो अपने बाहर पाई जाने वाली हकीकत का एतराफ़ कर सके।

ताहम जब समुद्र में तूफ़ान आता है तो आदमी को मालूम हो जाता है कि वह किस कद्र बेबस है। उस वक्त वह हर एक की बड़ाई को भूलकर सिर्फ ख़ुदा को पुकारने लगता है। यह तजर्बा जो कश्ती के मुसाफ़िरों को पेश आता है उससे लोगों को सबक लेना चाहिए। मगर बहुत कम लोग हैं जो इन वाक़ेआत से सबक लें और हक और अद्ल की राह पर क़ायम रहें। बेशतर लोगों का हाल यह है कि मुसीबत में पड़े तो ख़ुदा को याद कर लिया और मुसीबत हटी तो दुबारा सरकश और एहसान फ़रामोश बन गए।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿٣٣﴾ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٣٤﴾

ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जबकि कोई बाप अपने बेटे की तरफ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ से कुछ बदला देने वाला होगा। बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की जिंदगी तुम्हें धोखे में न डाले न धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक अल्लाह ही को कियामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ रहम (गर्भ) में है। और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा। और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस जमीन में मरेगा। बेशक अल्लाह जानने वाला, बाख़बर है। (33-34)

मौजूदा दुनिया में इम्तेहान की मस्लेहत से लोगों को आजादी दी गई है। इस इम्तेहानी आजादी को आदमी हकीकी आजादी समझ लेता है। यही सबसे बड़ा धोखा है। तमाम इंसानी बुराइयां इसी धोखे की वजह से पैदा होती हैं। यहां बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि इंसान जो चाहे करे कोई उसे पकड़ने वाला नहीं। हालांकि आख़िरकार आदमी के ऊपर इतना कठिन वक्त आने वाला है कि बाप बेटा भी एक दूसरे का साथ देने वाले न बन सकेंगे।

'कियामत आने वाली है तो वह कब आएगी' ऐसा सवाल करना अपनी हद से तजावुज करना है। इंसान अपनी करीबी और मालूम दुनिया के बारे में भी कल की ख़बर नहीं रखता। मसलन बारिश, पेट का बच्चा, मआशी मुस्तकबिल (आर्थिक भविष्य), मौत, इन चीजों के बारे में कोई कतई पेशीनगोई नहीं की जा सकती। ताहम इस इल्मी महदूदियत के बावजूद इंसान इन हकीकतों के सच होने को मानता है। इसी तरह कियामत की घड़ी के बारे में भी उसे मुजमल (संक्षिप्त) ख़बर की बुनियाद पर यकीन करना चाहिए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الم ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣﴾

आयतें-30 **सूरह-32. अस-सज्दह** रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। यह नाजिल की हुई किताब है, इसमें कुछ शुबह नहीं, ख़ुदावंद आलम की तरफ से है। क्या वे कहते हैं कि इस शख़्स ने इसे ख़ुद गढ़ लिया है। बल्कि यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पर आ जाएं। (1-3)

'यह ख़ुदा की किताब है' बजाहिर चन्द अल्फ़ाज का एक जुमला है। मगर यह इतना मुश्किल जुमला है कि तारीख़ में यह जुमला कहने की हिम्मत हकीकी तौर पर उन ख़ास अफराद के सिवा किसी को न हो सकी जिन पर वाकेअतन ख़ुदा की किताब उतरी थी। अगर कभी किसी और शख़्स ने यह जुमला बोलने की जुरअत की है तो वह या तो मसख़रा था या पागल। और उसका मसख़रा या पागल होना बाद को पूरी तरह साबित हो गया।

क़ुरआन अपना सुबूत आप है। इसका मोजिजाती उस्लूब (दिव्य शैली), इसकी किसी बात का सैंकड़ों साल में ग़लत साबित न होना, इसका अपने मुख़ालिफीन पर पूरी तरह ग़ालिब आना, ये और इस तरह के दूसरे वाकेयात इस बात का कतई सुबूत हैं कि क़ुरआन ख़ुदा की तरफ से आई हुई किताब है। और जब वह ख़ुदा की किताब है तो लाजिम है कि हर शख़्स उसकी चेतावनी पर ध्यान दे, वह इंतिहाई संजीदगी के साथ इस पर ग़ौर करे।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٥﴾ ذَٰلِكَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦﴾ الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۖ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ﴿٩﴾

अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो इनके दर्मियान है छः दिनों में, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर कायम हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते। वह

आसमान से जमीन तक तमाम मामलात की तदबीर करता है। फिर वे उसकी तरफ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी मिक्दार तुम्हारी गिनती से हजार साल के बराबर है। वही है पोशीदा और जाहिर को जानने वाला। जबरदस्त है, रहमत वाला है। उसने जो चीज भी बनाई ख़ूब बनाई। और उसने इंसान की तख़्लीक की इब्तिदा मिट्टी से की। फिर उसकी नस्ल हकीर पानी के ख़ुलासा (सत्त) से चलाई। फिर उसके आजा (शरीरांग) दुरुस्त किए। और उसमें अपनी रूह फूंकी। तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (4-9)

छः दिनों (छः चरणों) में पैदा करने से मुराद तदरीज (क्रम) व एहतिमाम के साथ पैदा करना है। कायनात की तदरीजी तख़्लीक और इसका पुरहिक्मत निजाम बताता है कि इस तख़्लीक से ख़ालिक का कोई ख़ास मक्सद वाबस्ता है। फिर कायनात में मुसलसल तौर पर बेशुमार अमल जारी हैं। इससे मजीद यह साबित होता है कि कायनात को पैदा करने वाला उसे मंसूबाबंद तौर पर चला रहा है। इंसान एक हैरतनाक किस्म का जिंदा वजूद है मगर उसके जिस्म का तज्जिया किया जाए तो मालूम होता है कि वह सिर्फ मिट्टी (भूमि के तत्वों) का मुरक्कब है। फिर यह इब्तिदाई तख़्लीक ख़त्म नहीं हो जाती बल्कि तवालुद व तनासुल (प्रजनन क्रिया) के जरिए इसका सिलसिला मुस्तकिल तौर पर जारी है।

इन वाकेयात पर जो शख़्स ग़ौर करे उसके जेहन से एक ख़ुदा की अज्मत के सिवा दूसरी तमाम अज्मतें मिट जाएंगी। वह ख़ुदा का शुक्रगुजार बंदा बन जाएगा। मगर बहुत कम लोग हैं जो गहराई के साथ ग़ौर करें। यही वजह है कि बहुत कम लोग हैं जो हम्द और शुक्र वाले बनें।

وَقَالُوٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِى الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝١٢ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝١٣ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٤

और उन्होंने कहा कि क्या जब हम जमीन में गुम हो जाएंगे तो हम फिर नए सिरे से पैदा किया जाएंगे। बल्कि वे अपने रब की मुलाकात के मुंकिर हैं। कहो कि मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी जान कब्ज करता है जो तुम पर मुकर्रर किया गया है। फिर तुम अपने

रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश तुम देखो जबकि ये मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे। ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और हमने सुन लिया तू हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें। हम यकीन करने वाले बन गए। और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते। लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूंगा। तो अब मजा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया। हमने भी तुम्हें भुला दिया। और अपने किए की बदौलत हमेशा का अजाब चखो। (10-14)

इंसान की तख़्लीके अव्वल उसकी तख़्लीके सानी (पुनःसृजन) के मामले को समझने के लिए बिल्कुल काफी है। मगर जब ख़ुदा के सामने जवाबदेही का यकीन न हो तो आदमी तख़्लीके सानी का मजाक उड़ाता है, वह ग़ैर संजीदा तौर पर मुख़्लिफ बातें करता है।

मगर यह जसारत (दुस्साहस) सिर्फ उस वक्त तक है जब तक आदमी की इम्तेहानी आजादी की मुद्दत ख़त्म न हुई हो। जब यह मुद्दत ख़त्म होगी और आदमी मरकर ख़ुदाए जुलजलाल के सामने हिसाब के लिए खड़ा होगा तो उसके सारे अल्फ़ाज गुम हो जाएंगे। उस वक्त सरकश लोग कहेंगे कि हमने मान लिया। हमें दुबारा जमीन में भेज दीजिए ताकि हम नेक अमल करें। मगर उनका यह मानना बेफायदा होगा। ख़ुदा को अगर इस तरह मनवाना होता तो वह दुनिया ही में लोगों को मानने के लिए मजबूर कर देता।

ख़ुदा के यहां उस एतराफ की कीमत है जो बग़ैर देखे किया गया हो। देखने के बाद जो एतराफ किया जाए उसकी कोई कीमत नहीं।

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝١٥ تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝١٦ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٧

हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके जरिए से याददिहानी की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करते हैं। और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं। वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। तो किसी को ख़बर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के बदले में आंखों की क्या ठंडक छुपा रखी गई है। (15-17)

हिदायत के सिलसिले में सबसे अहम चीज माद्दा-ए-एतराफ (स्वीकार की क्षमता) है।

हिदायत सिर्फ उन लोगों को मिलती है जिनके अंदर यह मिजाज हो कि जब सच्चाई उनके सामने आए तो वे फौरन उसे मान लें। चाहे सच्चाई बजाहिर एक छोटे आदमी के जरिये सामने आई हो, चाहे उसे मानना अपने आपको ग़लत करार देने के हममअना हो, चाहे उसे मानकर अपनी जिंदगी का नक्शा दरहम बरहम होता हुआ नजर आए। जिन लोगों के अंदर यह हौसला हो वही सच्चाई को पाते हैं। जो लोग यह चाहें कि वे सच्चाई को इस तरह मानें कि उनकी बड़ाई बदस्तूर कायम रहे ऐसे लोगों को सच्चाई कभी नहीं मिलती।

जो आदमी हक की ख़ातिर अपनी बड़ाई को खो दे वह सबसे बड़ी चीज को पा लेता है और वह ख़ुदा की बड़ाई है। उसकी जिंदगी में ख़ुदा इस तरह शामिल हो जाता है कि वह उसकी यादों के साथ सोए और वह उसकी यादों के साथ जागे। उसके ख़ौफ और उम्मीद के जज्बात तमामतर ख़ुदा के साथ वाबस्ता हो जाएं। वह अपना असासा (धन-सम्पत्ति) इस तरह ख़ुदा के हवाले कर देता है कि उसमें से कुछ बचाकर नहीं रखता। यही वे लोग हैं जिनकी आंखें जन्नत के अबदी बाग़ों में ठंडी होंगी।

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

तो क्या जो मोमिन है वह उस शख़्स जैसा होगा जो नाफरमान है। दोनों बराबर नहीं हो सकते। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की कियामगाहें हैं, जियाफ्त (सत्कार) उन कामों की वजह से जो वे करते थे। और जिन लोगों ने नाफरमानी की तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे। और उनसे कहा जाएगा कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। और हम उन्हें बड़े अजाब से पहले करीब का अजाब चखाएंगे शायद कि वे बाज आ जाएं। और उस शख़्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाए। फिर वह उनसे मुंह मोड़े। हम ऐसे मुजरिमों से जरूर बदला लेंगे। (18-22)

मोमिन वह है जो ख़ुदाई सच्चाई का एतराफ करे। और फासिक (अवज्ञाकारी) वह है

जिसके सामने सच्चाई आए तो वह अपनी जात के तहफ्फुज (संरक्षण) की ख़ातिर उसका इंकार कर दे। ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल मुख़्तलिफ किरदार हैं और दो मुख़्तलिफ किरदार का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता।

मौजूदा दुनिया में जो शख़्स सच्चाई का एतराफ करता है वह इस बात का सुबूत देता है कि वह सच्चाई को सबसे बड़ी चीज समझता है। ऐसा शख़्स आख़िरत में बड़ा बनाया जाएगा। इसके बरअक्स जो शख़्स सच्चाई को नजरअंदाज करे उसने अपनी जात को बड़ा समझा, ऐसा शख़्स आख़िरत की हकीकी दुनिया में छोटा कर दिया जाएगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

और हमने मूसा को किताब दी। तो तुम उसके मिलने में कुछ शक न करो। और हमने उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हमने उनमें पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे। जबकि उन्होंने सब्र किया। और वे हमारी आयतों पर यकीन रखते थे। बेशक तेरा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान उन मामलों में फैसला कर देगा जिनमें वे बाहम इख़्तेलाफ (परस्पर मतभेद) करते थे। क्या उनके लिए यह चीज हिदायत देने वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी कौमों को हलाक कर दिया। जिनकी बस्तियों में ये लोग आते जाते हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं। (23-26)

ख़ुदा की किताब किसी गिरोह को मिलना उसे इमामते आलम (विश्व नेतृत्व) की कुंजी अता करना है। मगर इमामते आलम का मकाम किसी गिरोह को उस वक्त मिलता है जबकि वह सब्र का सुबूत दे। यानी पेशवाई का मकाम उन्हें उस वक्त मिला जबकि उन्होंने दुनिया से सब्र किया। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

लोग उसी शख़्स या गिरोह को अपना इमाम तस्लीम करते हैं जो उन्हें अपने से बुलन्द दिखाई दे। जो उस वक्त उसूल के लिए जिए जबकि लोग मफाद के लिए जीते हैं। जो उस वक्त इंसाफ की हिमायत करे जबकि लोग कौम की हिमायत करने लगते हैं। जो उस वक्त बर्दाश्त करे जबकि लोग इंतिकाम लेते हैं। जो उस वक्त अपने को महरूमी पर राजी कर ले जबकि लोग पाने के लिए दौड़ते हैं। जो उस वक्त हक के लिए कुर्बान हो जाए जबकि लोग

सिर्फ अपनी जात के लिए कुर्बान होना जानते हैं। यही सब्र है और जो लोग इस सब्र का सुबूत दें वही कौमों के इमाम बनते हैं।

दीन में नई-नई तशरीह व ताबीर निकाल कर जो लोग इख़्तेलाफात खड़े करते हैं वे अपने लिए यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि आख़िरकार ख़ुदा उनकी बात को रद्द कर दे और इसके बाद अबदी जिल्लत के सिवा और कुछ उनके हिस्से में न आए। आदमी अक्सर हालात में सबक नहीं लेता, यहां तक कि जो कुछ दूसरों पर गुज़रा वही उस पर भी न गुजर जाए।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल जमीन की तरफ हांककर ले जाते हैं। फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाए खाते हैं और वे ख़ुद भी। फिर क्या वे देखते नहीं। और वे कहते हैं कि यह फैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि फैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफा न देगा जिन्होंने इंकार किया। और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। तो उनसे दूर रहो और इंतिजार करो, ये भी मुंतजिर हैं। (27-30)

कदीम मक्का में मुश्रिकीन हर एतबार से ग़ालिब और सरबुलन्द थे और इस्लाम हर एतबार से पस्त और मग़लूब हो रहा था। चुनांचे मुश्रिकीन इस्लाम और मुसलमानों का मजाक उड़ाते थे। इसका जवाब अल्लाह तआला ने एक मिसाल के जरिये दिया। फरमाया, क्या तुम ख़ुदा की इस कुदरत को नहीं देखते कि एक जमीन बिल्कुल ख़ुश्क और चटियल पड़ी होती है। बजाहिर यह नामुमकिन मालूम होता है कि वह कभी सरसब्ज व शादाब हो सकेगी। मगर इसके बाद ख़ुदा बादलों को लाकर उसके ऊपर बारिश बरसाता है तो चन्द दिन में यह हाल हो जाता है कि जहां ख़ाक उड़ रही थी वहां सब्जा लहलहाने लगता है। ख़ुदा की यही कुदरत यह भी कर सकती है कि इस्लाम को इस तरह फरोग दे कि वही वक्त का गालिब फिक्र बन जाए।

سُورَةُ الْأَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٢﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٣﴾

आयतें-73 **सूरह-33. अल-अहज़ाब** रुकूअ-9

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी, अल्लाह से डरो और मुंकिरों और मुनाफिकों (पाखंडियों) की इताअत (आज्ञापालन) न करो, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और पैरवी करो उस चीज की जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम लोग करते हो। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह कारसाज (कार्यपालक) होने के लिए काफी है। (1-3)

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेआमेज (विशुद्ध) हक के दाओ थे। इस दुनिया में जो शख़्स बेआमेज हक का दाओ बनकर उठे उसे निहायत हौसलाशिकन (निराशाजनक) हालात का सामना करना पड़ता है। वह पूरे माहौल में अजनबी बनकर रह जाता है। किसी का दुनियापरस्ताना मजहब दाओ के आख़िरपसंदाना दीन से मेल नहीं खाता। किसी की जमानासाजी (महत्वाकांक्षा) दाओ की बेलाग हकपरस्ती से टकराती है। कोई दीन को अपनी कौमपरस्ती का जमीमा (परिशिष्ट) बनाए हुए होता है, जबकि दाओ का मुतालबा यह होता है कि दीन को ख़ालिस ख़ुदापरस्ती की बुनियाद पर कायम किया जाए।

ऐसी हालत में दाओ अगर माहौल का दबाव कुबूल कर ले तो बहुत से लोग उसका साथ देने वाले मिल जाएंगे। और अगर वह ख़ालिस हक पर कायम रहे तो एक ख़ुदा के सिवा कोई और उसका सहारा नजर नहीं आता। मगर दाओ को किसी हाल में पहला रास्ता नहीं इख़्तियार करना है। उसे अल्लाह के भरोसे पर ख़ालिस हक पर कायम रहना है। और यह उम्मीद रखना है कि ख़ुदा हकीम और अलीम है, वह जरूर अपने बंदे की मदद फरमाएगा।

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ اللَّائِي تُظَاهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ﴿٤﴾ ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَٰكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٥﴾

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे, और न तुम्हारी बीवियों को जिनसे तुम जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता था कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हो।) करते हो तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे मुंह

बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया। ये सब तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं। और अल्लाह हक बात कहता है और वह सीधा रास्ता दिखाता है। मुंह बोले बेटों को उनके बापों की निस्बत से पुकारो यह अल्लाह के नजदीक ज्यादा मुंसिफ़ाना बात है। फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे रफ़ीक हैं। और जिस चीज में तुमसे भूल चूक हो जाए तो उसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो। और अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (4-5)

आदमी के सीने में दो दिल न होना बताता है कि तजादे फ़िक्री (वैचारिक द्वंद्व) ख़ुदा के तख़्लीकी मंसूबे के ख़िलाफ है। जब इंसान को एक दिल दिया गया है तो उसकी सोच भी एक होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि एक ही दिल में बयकवक्त इख़्लास (निष्ठा) भी हो और निफ़ाक़ (कपट) भी, ख़ुदापरस्ती भी हो और जमानापरस्ती भी, इंसाफ भी हो और जुल्म भी, घमंड भी हो और तवाजोअ भी। आदमी दोनों में से कोई एक ही हो सकता है और उसे एक ही होना चाहिए।

यह एक उसूली बात है। इसी के तहत जमानए जाहिलियत की रस्में मसलन जिहार व तबन्नियत आती हैं। अरब जाहिलियत का एक रवाजी कानून यह था कि अगर कोई शख़्स अपनी बीवी से यह कह दे कि : 'तू मेरे ऊपर मेरी मां की पीठ की तरह है' तो उसकी बीवी उसके ऊपर हमेशा के लिए हराम हो जाती थी जिस तरह किसी की मां उसके लिए हराम होती है। इसे जिहार कहते हैं। इसी तरह मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) के मामले में भी उनका अकीदा था कि वह बिल्कुल सुलबी (सगे) बेटे की तरह हो जाता है। उसे हर मामले में वही दर्जा दे दिया गया था जो हकीकी औलाद का होता है। कुरआन ने इस रवाज को बिल्कुल ख़त्म कर दिया। कुरआन में एलान किया गया कि यह तख़्लीकी निजाम के सरासर ख़िलाफ है कि हकीकी मां और जबान से कही हुई मां या हकीकी बेटा और मुंह बोला बेटा दोनों की हैसियत बिल्कुल एक हो जाए।

आदमी अगर बेख़बरी में कोई ग़लती करे तो वह ख़ुदा के यहां काबिले माफी है। मगर जब किसी मामले की हकीकत पूरी तरह वाजेह हो जाए, इसके बावजूद आदमी अपनी ग़लत रविश को न छोड़े तो इसके बाद वह काबिले माफी नहीं रहता।

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَن تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

और नबी का हक मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज्यादा है, और नबी की बीवियां उनकी माएं हैं। और रिश्तेदार ख़ुदा की किताब में, दूसरे मोमिनीन और मुहाजिरीन की बनिस्बत, एक दूसरे से ज्यादा तअल्लुक रखते हैं। मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है। (6)

पैग़म्बर अपनी जिंदगी में जाती तौर पर और वफ़ात के बाद उसूली तौर पर अहले ईमान के लिए सबसे ज्यादा मुकद्दम हैसियत रखता है। इसकी वजह यह है कि पैग़म्बर दुनिया में ख़ुदा का नुमाइंदा होता है। पैग़म्बर की तालीमात की अज्मत को कायम रखने के लिए जरूरी है कि उसका वजूद लोगों की नजर में मुकद्दस वजूद हो। यहां तक कि उसकी बीवियां भी लोगों के लिए माओं की तरह काबिले एहतराम करार पाएं। पैग़म्बर और आपकी बीवियों के बाद उम्मत के बकिया लोगों के तअल्लुकात की बुनियाद यह है कि रहमी (ख़ून के) रिश्ते रखने वाले 'करीबी रिश्तेदार सबसे पहले हकदार' के उसूल पर एक दूसरे के हकदार ठहरेंगे। दीनी जरूरत के तहत वक्ती तौर पर ग़ैर रिश्तेदारों में हुकूक की शिरकत कायम की जा सकती है। जैसा कि हिजरत के बाद इब्तिदाई जमाने में मदीना में किया गया। मगर मुस्तकिल मआशिरती इंतिजाम के एतबार से हकीकी रिश्तेदार ही सबसे पहले हकदार हैं और हमेशा रहेंगे।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝ لِّيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

और जब हमने पैग़म्बरों से उनका अहद (वचन) लिया और तुमसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से। और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया। ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुंकिरों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (7-8)

अल्लाह तआला ने इंसान को जिस मंसूबे के तहत पैदा किया है वह इम्तेहान है। यानी मौजूदा दुनिया में हर किस्म के असबाबे हयात देकर उसे आजादाना माहौल में रखना और फिर हर एक के अमल के मुताबिक उसे अबदी (चिरस्थाई) इनाम या अबदी सजा देना।

जिंदगी की यह इम्तेहानी नौइयत लाजिमन यह चाहती है कि आदमी को अस्ल सूरतेहाल से पूरी तरह बाख़बर कर दिया जाए। इस मक्सद के लिए अल्लाह तआला ने पैग़म्बरी का सिलसिला कायम फरमाया। पैग़म्बरी कोई लाउडस्पीकर का एलान नहीं है। यह एक बेहद सब्र आजमा काम है। इसलिए तमाम पैग़म्बरों से निहायत एहतिमाम के साथ यह अहद लिया गया कि वे पैग़ामरसानी के इस नाजुक काम को उसके तमाम आदाब और तकाजों के साथ अंजाम देंगे। और इसमें हरगिज कोई अदना कोताही न करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ إِذْ جَاءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ

بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब तुम पर फौजें चढ़ आईं तो हमने उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फौज जो तुम्हें दिखाई न देती थी। और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। जबकि वे तुम पर चढ़ आए, तुम्हारे ऊपर की तरफ से और तुम्हारे नीचे की तरफ से। और जब आंखें खुल गईं और दिल गलों तक पहुंच गए और तुम अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक्त ईमान वाले इम्तेहान में डाले गए और बिल्कुल हिला दिए गए। (9-11)

ग़ज़्वए अहज़ाब (5 हि०) अरब कबाइल और यहूद की तरफ से मदीना पर मुशतरक हमला था। इसमें हमलाआवरों की तादाद तकरीबन 12 हजार थी। मुसलमान इस अजीम फौज से लड़ने की ताकत न रखते थे। मगर अल्लाह तआला ने अपनी ख़ुसूसी तदबीरों के जरिए दुश्मनों को इस कद्र ख़ौफ़ज़दा किया कि तकरीबन एक महीने के मुहासिरे (घेराव) के बाद वे ख़ुद मदीना को छोड़कर चले गए।

इस तरह के सख़्त हालात इस्लामी दावत के साथ इसलिए पेश आते हैं कि मुसलमानों के गिरोह से मुख़्लिसीन (निष्ठावानों) और ग़ैर मुख़्लिसीन को अलग कर दें। और दूसरे यह कि दुश्मन ताकतों को दिखा दें कि ख़ुदा अपने दीन का ख़ुद हामी है। वह किसी हाल में उसे मग़लूब (परास्त) होने नहीं देगा।

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۗ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ۝ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۗ

وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝

और जब मुनाफ़िकीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था वह सिर्फ फरेब था। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब वालो, तुम्हारे लिए ठहरने का मौका नहीं, तो तुम लौट चलो। और उनमें से एक गिरोह पैग़म्बर से इजाजत मांगता था, वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर महफूज़ हैं और वे ग़ैर महफूज़ नहीं। वे सिर्फ भागना चाहते थे। और अगर मदीना के अतराफ से उन पर कोई घुस आता और उन्हें फितने की दावत देता तो वे मान लेते और वे इसमें बहुत कम देर करते। और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) की पूछ होगी। कहो कि अगर तुम मौत से या कत्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा। और इस हालत में तुम्हें सिर्फ थोड़े दिनों फायदा उठाने का मौका मिलेगा। कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचाए अगर वह तुम्हें नुक्सान पहुंचाना चाहे, या वह तुम पर रहमत करना चाहे। और वे अपने लिए अल्लाह के मुकाबले में कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे। (12-17)

ग़ज़्वए अहज़ाब में ख़तरात का तूफ़ान देखकर मुनाफ़िक किस्म के लोग घबरा उठे और भागने की राहें तलाश करने लगे। मगर जो सच्चे अहले ईमान थे वे अल्लाह के एतमाद पर कायम रहे। वे जानते थे कि आगे भी ख़ुदा है और पीछे भी ख़ुदा है। इस्लाम दुश्मनों के ख़तरे से भागना अपने आपको ख़ुदा के ख़तरे में डालना है जो कि इससे ज्यादा सख़्त है। उन्हें यकीन था कि अगर हम दुश्मनों के मुकाबले में जमे रहे तो अल्लाह की मदद हमें हासिल होगी और अगर हम इस्लाम के महाज को छोड़कर भाग जाएं तो आख़िरकार दुनिया में भी अपने आपको हलाकत से बचा नहीं सकते और आख़िरत में ख़ुदा की हौलनाक पकड़ इसके अलावा है।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۗ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْۤا اِلَّا قَلِيْلًا ۝

अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से रोकने वाले हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ। और वे लड़ाई में कम ही आते हैं। वे तुमसे बुख़्ल (कृपणता) करते हैं। पस जब ख़ौफ पेश आता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें उस शख़्स की आंखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब ख़तरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिर्स में तुमसे तेज जबानी के साथ मिलते हैं। ये लोग यकीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। और यह अल्लाह के लिए आसान है। वे समझते हैं कि फौजें अभी गई नहीं हैं। और अगर फौजें आ जाएं तो ये लोग यही पसंद करें कि काश हम बद्दुओं के साथ देहात में हों, तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें। और अगर वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते। (18-20)

एक आदमी वह है जो कुर्बानी के वक़्त पीछे रह जाए तो उस पर शर्मिंदगी तारी होती है। उसका बोलना बंद हो जाता है। दूसरा शख़्स वह है जो कुर्बानी के वक्त कुर्बानी नहीं देता। और फिर दूसरों को भी इससे रोकता है। यह कोताही पर ढिठाई का इजाफा है। कोताही काबिले माफी हो सकती है मगर ढिठाई काबिले माफी नहीं।

जिन लोगों के अंदर ढिठाई की नफ्सियात हो वे बजाहिर कोई अच्छा अमल करें तब भी वे बेकीमत हैं। क्योंकि अमल की अस्ल रूह इख़्लास है और वही उनके अंदर मौजूद नहीं।

दीन के लिए कुर्बानी न देना हमेशा दुनिया की मुहब्बत में होता है। आदमी अपनी दुनिया को बचाने के लिए अपने दीन को खो देता है। इसलिए ऐसे लोग जहां देखते हैं कि दीन में दुनिया का फायदा भी जमा हो गया है तो वहां वे ख़ूब अपने बोलने का कमाल दिखाते हैं ताकि दीन के साथ ज्यादा से ज्यादा तअल्लुक जाहिर करके ज्यादा से ज्यादा फायदा हासिल कर सकें। मगर जहां दीन का मतलब कुर्बानी हो वहां दीनदार बनने से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं होती।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ لِّيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ

بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٤﴾

तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना था, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे। और जब ईमान वालों ने फौजों को देखा, वे बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा। और इसने उनके ईमान और इताअत में इजाफा कर दिया। ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) को पूरा कर दिखाया। पस उनमें से कोई अपना जिम्मा पूरा कर चुका और उनमें से कोई मुंतजिर है। और उन्होंने जरा भी तब्दीली नहीं की। ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफिकों (पाखंडियों) को अजाब दे अगर चाहे या उनकी तौबा कुबूल करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (21-24)

रसूल और असहाबे रसूल (रसूल के साथियों) की जिंदगियां कियामत तक के अहले ईमान के लिए ख़ुदापरस्ताना जिंदगी का नमूना हैं, इस बात का नमूना कि अल्लाह और आख़िरत की उम्मीदवारी के मअना क्या हैं। अल्लाह को याद करने का मतलब क्या होता है। मुश्किल हालात में साबितकदमी किसे कहते हैं। ख़ुदा के वादों पर भरोसा किस तरह किया जाता है। इजाफापज़ीर (वृद्धिशील) ईमान क्या है और वह क्योंकर हासिल होता है। ख़ुदा से किए हुए अहद को पूरा करने का तरीका क्या है।

रसूल और असहाबे रसूल ने इन चीजों का आख़िरी नमूना कायम कर दिया। शदीदतरीन हालात में भी उन्होंने कोई कमजोरी नहीं दिखाई। उन्होंने हर मामले में इस्लामी फिक्र और इस्लामी किरदार का कामिल सुबूत दिया। इम्तेहान का लम्हा आने से पहले भी वे हक पर कायम थे और इम्तेहान का लम्हा आने के बाद भी वे हक पर कायम रहे।

फिर रसूल और असहाबे रसूल की जिंदगियां ही इस बात का नमूना भी हैं कि ख़ुदा के यहां किसी का फैसला इम्तेहान के बग़ैर नहीं किया जाता। ख़ुदा का तरीका यह है कि वह शदीद हालात पैदा करता है ताकि सच्चे अहले ईमान और झूठे दावेदार एक दूसरे से अलग हो जाएं। इस ख़ुदाई कानून में न पहले किसी का इस्तसना (अपवाद) था और न आइंदा किसी का इस्तसना होगा।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۚ وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ﴿٢٥﴾ وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُم مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِن

صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ﴿٢٦﴾ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَئُوهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢٧﴾

और अल्लाह ने मुंकिरों को उनके गुस्से के साथ फेर दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई और मोमिनीन की तरफ से अल्लाह लड़ने के लिए काफी हो गया। अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला जबरदस्त है। और अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने हमलाआवरों का साथ दिया उनके किलों से उतारा। और उनके दिलों में उसने रौब डाल दिया, तुम उनके एक गिरोह को कत्ल कर रहे हो और एक गिरोह को कैद कर रहे हो। और उसने उनकी जमीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम्हें वारिस बना दिया। और ऐसी जमीन का भी जिस पर तुमने कदम नहीं रखा। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। (25-27)

ग़जवए ख़ंदक (अहजाब) में हालात बेहद सख़्त थे। मगर उसमें बाकायदा जंग की नौबत नहीं आई। अल्लाह तआला ने हवा का तूफान और फरिश्तों का लश्कर भेजकर दुश्मनों को इस तरह सरासीमा (हतोत्साहित) किया कि वे ख़ुद ही मैदान छोड़कर चले गए।

मदीना के यहूद (बनू कुरैजा) का मुसलमानों से सुलह और अम्न का मुआहिदा था। मगर जंगे अहजाब के मौके पर उन्होंने ग़द्दारी की। वे मुआहिदे को तोड़कर मुश्रिकीन के साथी बन गए। जब हमलाआवरों का लश्कर मदीना से वापस चला गया तो अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू कुरैजा की बस्तियों पर चढ़ाई की। इस्लामी फौज ने उनके किलों को घेर लिया। 25 दिन तक मुहासिरा (घेराव) जारी रहा। आख़िर में ख़ुद उनकी दरख़्वास्त पर साद बिन मुआज हकम (निर्णायक) मुकर्रर हुए। हजरत साद बिन मुआज ने वही फैसला किया जो ख़ुद उनकी किताब तौरात में ऐसे मुजरिमीन के लिए मुकर्रर है। यानी बनू कुरैजा के सब जवान कत्ल कर दिए जाएं। औरतें और लड़के कैदे ग़ुलामी में ले लिए जाएं। और उनके माल और जायदाद को जब्त कर लिया जाए। (इस्तसना 20 : 10-14)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٢٨﴾ وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾ يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ يُضَاعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो कि अगर तुम दुनिया की जिंदगी और उसकी जीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ माल व मताअ देकर ख़ूबी के साथ रुख़्सत कर दूं। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से नेक किरदारों के लिए बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है। ऐ नबी की बीवियो, तुम में से जो कोई खुली बेहयाई करेगी, उसे दोहरा अजाब दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए आसान है। (28-30)

हिजरत ने मुसलमानों की मआशयात को दरहम बरहम कर दिया था। मजीद यह कि हिजरत के बाद इस्लाम दुश्मनों ने मुसलमानों को मुसलसल जंग में उलझा दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों की मआशी (आर्थिक) हालत बिल्कुल बर्बाद होकर रह गई।

इसका सबसे ज्यादा असर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ा। आपके घर वालों का हाल यह हुआ कि नागुजीर (मूलभूत) जरूरत की फराहमी भी मुश्किल हो गई। यहां तक कि आपकी अजवाज (बीवियों) ने तंग आकर आप से नफका (ख़र्च) का मुतालबा शुरू कर दिया।

अजवाज की तरफ से सिर्फ जरूरी ख़र्च का मुतालबा किया गया था। उसे अल्लाह ने जीनते दुनिया के मुतालबे से ताबीर फरमाया। यह दरअस्ल शिद्दते इज्हार है। इसी तरह 'बेहयाई' का लफ्ज भी यहां शिद्दते इज्हार के लिए आया है। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तारीख़ के एक अहमतरीन मिशन की तक्मील पर मामूर (नियुक्ति) थे। यानी दौरे शिर्क का ख़ात्मा और दौरे तौहीद का कियाम। ऐसी हालत में किसी भी दूसरी चीज को अहमियत देना आपके लिए मुमकिन न था। इसलिए अजवाजे रसूल से फरमाया गया कि या तो सब्र और कनाअत (संतोष) के साथ रसूल के साथ रहो। और अगर यह मंजूर नहीं है तो ख़ुश उस्लूबी के साथ अलग हो जाओ। ख़ानगी निजाअ (विवाद) खड़ी करके पैग़म्बर के जेहन को मुंतशिर करना किसी तरह भी काबिले बर्दाश्त नहीं।

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُؤْتِهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ ۚ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٣٢﴾

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसे उसका दोहरा अज्र देंगे। और हमने उसके लिए बाइज्जत रोजी तैयार कर रखी है। ऐ नबी की बीवियो, तुम आम औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह से डरो तो तुम लहजे में नर्मी न इख़्तियार करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए और मारूफ (सामान्य नियम) के मुताबिक बात कहो। (31-32)

पैग़म्बर की बीवियों को मआशिरे में एक तरह का कायदाना (नेतृत्वपरक) मकाम हासिल था। ऐसे लोगों को हक के आगे झुकने के लिए उससे ज्यादा क़ुर्बानी देनी पड़ती है। जितनी एक आम आदमी को देनी पड़ती है। यही वजह है कि ऐसे लोगों से अल्लाह तआला ने दोहरा इनाम का वादा फरमाया है। वे अमल करने के लिए दूसरों से ज्यादा कुव्वते इरादी इस्तेमाल करते हैं। इसलिए वे अपने अमल की कीमत भी दूसरों से ज्यादा पाते हैं।

पैगम्बर की औरतों की इसी ख़ुसूसियत की वजह से उनका रब्त बार-बार दूसरों से कायम होता था। लोग दीनी उमूर (मामलों) में रहनुमाई के लिए उनके पास आते थे। इसलिए हुक्म दिया गया कि दूसरों से बात करो तो किसी कद्र ख़ुश्क अंदाज में बात करो। इस तरह बेतकल्लुफ अंदाज में बात न करो जिस तरह एक महरम रिश्तेदार से बात की जाती है।

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿٣٤﴾

और तुम अपने घर में करार से रहो और पहले की जाहिलियत की तरह दिखलाती न फिरो। और नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहलेबैत (रसूल के घर वालों) से आलूदगी को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और हिक्मत (तत्वज्ञान) की जो तालीम होती है उसे याद रखो। बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है ख़बर रखने वाला है। (33-34)

यहां अजवाजे रसूल को ख़िताब करते हुए मुस्लिम ख़्वातीन को आम हिदायत दी गई है कि वे अपने घरों में किस तरह रहें। उन्हें उसूलन अपने घर के दायरे में रहना चाहिए। दुनियादार औरतों की तरह जेब व जीनत (बनाव-सिंगार) की नुमाइश उनका मक्सूद नहीं होना चाहिए। उनकी तवज्जोह का मर्कज यह होना चाहिए कि वे अल्लाह की इबादतगुजार बन जाएं। वे अपने असासे (पूंजी) को अल्लाह के लिए ख़र्च करें। जिंदगी के मामलात में अल्लाह और रसूल का जो हुक्म मिले उसे फौरन इख़्तियार कर लें। वे अल्लाह और रसूल की बातों को सुनने और समझने में अपना वक्त गुजारें।

यह तर्जे जिंदगी वह है जो आदमी को पाकबाज बनाता है। और पाकबाज आदमी ही अल्लाह तआला को पसंद है।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٣٥﴾

बेशक इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें। और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें। और फरमांबरदारी करने वाले मर्द और फरमांबरदारी करने वाली औरतें। और रास्तबाज (सत्यनिष्ठ) मर्द और रास्तबाज औरतें। और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें। और ख़ुशूअ (विनय) करने वाले मर्द और ख़ुशूअ करने वाली औरतें। और सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और रोजा रखने वाले मर्द और रोजा रखने वाली औरतें। और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले मर्द और हिफाजत करने वाली औरतें। और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें। इनके लिए अल्लाह ने मग़्फिरत और बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है। (35)

इस आयत में बताया गया है कि अल्लाह तआला एक मर्द या एक औरत को जैसा देखना चाहता है वह क्या है। वे ये सिफात हैं इस्लाम, ईमान, फरमांबरदारी, सिद्क (सच्चाई), सब्र, ख़ुशूअ (विनय), सदका, रोजा, इफ्फत (अस्मिता), अल्लाह का जिक्र।

इन दस अल्फाज में इस्लामी अकीदे और इस्लामी किरदार के तमाम पहलू सिमट आए हैं। इसका ख़ुलासा यह है कि हर वह शख़्स जो अल्लाह के यहां मग़्फिरत और इनाम का उम्मीदवार हो उसे ऐसा बनना चाहिए कि वह अल्लाह के हुक्म के आगे झुकने वाला हो। वह अल्लाह पर यकीन करने वाला हो। वह अपने पूरे वजूद के साथ अल्लाह के लिए यकसू हो जाए। उसकी जिंदगी कौल और फेअल के तज़ाद (अन्तर्विरोध) से ख़ाली हो। वह हर हाल में जमा रहने वाला हो। अल्लाह की बड़ाई के एहसास ने उसे मुतवाजेअ (विनम्र) बना दिया हो। वह दूसरों की जरूरत पूरी करने को भी अपनी जिम्मेदारी शुमार करता हो। वह रोजादार हो जो नफ्स को कंट्रोल करने की तर्बियत है। वह शहवानी ख़्वाहिशात के मुकाबले में अफीफ (सुशील) और पाक दामन हो। उसके सुबह व शाम अल्लाह की याद में बसर होने लगें।

ये औसाफ जिस तरह मर्दों से मत्लूब हैं उसी तरह वे औरतों से भी मत्लूब हैं। इन औसाफ के इज्हार का दायरा कुछ एतबार से दोनों के दर्मियान मुख़्तलिफ है। मगर जहां तक ख़ुद औसाफ का तअल्लुक है वह दोनों के लिए यकसां (समान) हैं। कोई औरत हो या कोई

मर्द वह उसी वक्त ख़ुदा के यहां काबिले कुबूल ठहरेगा जबकि वह इन दस सिफ्तों को अपना कर ख़ुदा के यहां पहुंचे।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُولُهٗٓ أَمْرًا أَنْ يَّكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِينًا ﴿٣٦﴾

किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इख़्तियार बाकी रहे। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा तो वह सरीह गुमराही में पड़ गया। (36)

इंसान को ख़ुदमुख़्तार (इच्छानुसार काम करने वाला) पैदा किया गया है। इस ख़ुदमुख़्तारी को उसे ख़ुदा के हवाले करना है। यही मौजूदा दुनिया में इंसान का अस्ल इम्तेहान है। वही शख़्स हिदायत पर है जो इस नाजुक इम्तेहान में पूरा उतरे।

इसकी एक मिसाल दौरे अव्वल में जैद और जैनब के निकाह का वाक्या है। जैद एक आजादकरदा ग़ुलाम थे। इसके बरअक्स जैनब कुरैश के आला ख़ानदान से तअल्लुक रखती थीं। क्योंकि वह उमैमा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब की साहबजादी थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जैद का निकाह जैनब से करना चाहा तो जैनब के घर वाले इसके लिए तैयार नहीं हुए। ख़ुद जैनब ने कहा कि : 'मैं नसब (वंश) में जैद से बेहतर हूं।' मगर जब उन लोगों को कुरआन की मज्कूरा आयत सुनाई गई तो वे लोग फौरन राजी हो गए। सन् 4 हि० में उनका निकाह कर दिया गया।

यही इस्लाम का मिजाज है और यही मिजाज हर मुसलमान मर्द और औरत में होना चाहिए।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشٰىهُ ۗ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِيٓ أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾

और जब तुम उस शख़्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और तुमने इनाम

किया कि अपनी बीवी को रोके रखो और अल्लाह से डरो। और तुम अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसे अल्लाह जाहिर करने वाला था। और तुम लोगों से डर रहे थे, और अल्लाह ज्यादा हक्दार है कि तुम उससे डरो। फिर जब जैद उससे अपनी ग़रज तमाम कर चुका, हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों के बारे में कुछ तंगी न रहे। जबकि वे उनसे अपनी ग़रज पूरी कर लें। और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था। (37)

हजरत जैद के साथ हजरत जैनब का निकाह सन् 4 हि० में हुआ। मगर निबाह न हो सका, अगले साल दोनों में अलेहिदगी हो गई। हजरत जैद ने जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तलाक का इरादा जाहिर किया तो आपने सबब पूछा। उन्होंने कहा कि वह अपने ख़ानदानी शरफ (यश) की वजह से मेरे मुकाबले में बड़ाई का एहसास रखती हैं। ताहम आपने उन्हें रोका। बार-बार की दरख़्वास्त पर आख़िरकार आपने उन्हें अलेहिदगी की इजाजत दे दी।

जैद और जैनब के निकाह से अव्वलन यह रस्म तोड़ी गई थी कि मआशिरती फर्क को निकाह में हायल नहीं होना चाहिए। मगर जब उनके दर्मियान अलाहिदगी हो गई तो अब अल्लाह तआला की मर्जी यह हुई कि जैनब को एक और ग़लत रस्म के तोड़ने का जरिया बनाया जाए।

कदीम जाहिलियत में यह रवाज था कि मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) को बिल्कुल हकीकी बेटे की तरह समझते थे। हर एतबार से उसके वही हुकूक थे जो हकीकी बेटे के होते हैं। इस रस्म को तोड़ने की बेहतरीन सूरत यह थी कि तलाक के बाद हजरत जैनब का निकाह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कर दिया जाए। जैद अल्लाह के रसूल के मुतबन्ना थे। यहां तक कि उन्हें जैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा था। ऐसी हालत में मुंह बोले बेटे की तलाकशुदा औरत से आपका निकाह करना उस रस्म के ख़िलाफ एक धमाके की हैसियत रखता था। क्योंकि उनका ख़्याल था कि मुतबन्ना की मंकूहा (निकाह में आई औरत) बाप पर हराम है जिस तरह हकीकी बेटे की मंकूहा बाप पर हराम होती है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेशगी तौर पर बताया जा चुका था कि अगर दोनों में अलाहिदगी हुई तो इस जाहिली रस्म को तोड़ने की तदबीर के तौर पर जैनब को आपके निकाह में दे दिया जाएगा। चूंकि इस किस्म का निकाह कदीम माहौल में जबरदस्त बदनामी का जरिया होता। इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत जैद को रोकते रहे कि अगर वह तलाक न दें तो मैं इस शदीद आजमाइश से बच जाऊंगा। मगर जो चीज इल्मे इलाही में मुकद्दर थी वह होकर रही। जैद ने जैनब को तलाक दे दी और उस रस्म को तोड़ने की अमली तदबीर के तौर पर सन् 5 हि० में जैनब का निकाह आप से कर दिया गया।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَٰكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

पैगम्बर के लिए इसमें कोई हरज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया हो। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीका) उन पैगम्बरों के साथ रही है जो पहले गुजर चुके हैं। और अल्लाह का हुक्म एक कतई फैसला होता है। वे अल्लाह के पैग़ामों को पहुंचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (समापक) हैं। और अल्लाह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (38-40)

इस वाकये के बाद हस्बे तवक्कोअ आपके ख़िलाफ जबरदस्त प्रोपेगंडा शुरू हो गया। कहा जाने लगा कि पैगम्बर ने अपनी बहू से निकाह कर लिया, हालांकि बेटे की मंकूहा बाप पर हराम होती है। फरमाया कि मुहम्मद का मामला तो यह है कि उनकी सिर्फ लड़कियां हैं। वह मर्दों में से किसी के बाप ही नहीं। जैद बिन हारिसा उनके सिर्फ मुंह बोले बेटे थे और मुंह बोला बेटा वाकई बेटा कैसे हो सकता है कि उसकी तलाकशुदा बीवी से निकाह आपके लिए जाइज न हो।

आप ख़ुदा के पैग़म्बर थे, फिर भी आपके साथ इतने उतार चढ़ाव के वाकेयात क्यों पेश आए। इसका जवाब यह है कि पैग़म्बर पर अगरचे ख़ुदा की 'वही' आती है। मगर उसे आम इंसानों की तरह रहना होता है। मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में उसे भी वैसे ही हालात पेश आते हैं जैसे हालात दूसरों को पेश आते हैं। अगर ऐसा न हो तो पैग़म्बर की जिंदगी आम इंसानों पर हुज्जत (तर्कोक्ति) न बन सके। यही वजह है कि पैग़म्बराना रहनुमाई हकीकी हालात के ढांचे में दी जाती है न कि मस्नूई हालात के ढांचे में।

ख़ातमुंनबिय्यीन का लफ्ज़ी तर्जुमा यह है कि आप नबियों की मुहर हैं। ख़ातम का लफ्ज स्टेम्प (Stamp) के लिए नहीं आता है बल्कि सील (Seal) के लिए आता है। यानी आख़िरी अमल। लिफाफे को सील करने का मतलब उसे आख़िरी तौर पर बंद करना है कि इसके बाद न कोई चीज उसके अंदर से बाहर निकले और न बाहर से अंदर जाए। चुनांचे अरबी में कौम का ख़ातम कौम के आख़िरी शख़्स को कहा जाता है।

इस वाकये के जेल में आपके ख़ातमुंनबिय्यीन (अंतिम नबी) होने के एलान का मतलब यह है कि आपके बाद चूंकि कोई और नबी आने वाला नहीं, इसलिए जरूरी है कि तमाम ख़ुदाई बातों का इज्हार आपके जरिए से कर दिया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो। और उसकी तस्बीह करो सुबह और शाम। वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फरिश्ते भी ताकि तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशनी में लाए। और वह मोमिनों पर बहुत महरबान है। जिस रोज वे उससे मिलेंगे, उनका इस्तकबाल सलाम से होगा। और उसने उनके लिए बाइज्जत सिला (प्रतिफल) तैयार कर रखा है। (41-44)

जब मिलावटी दीन का ग़लबा हो, उस वक्त सच्चे दीन को इख़्तियार करना हमेशा मुश्किलतरीन काम होता है। ऐसी हालत में अहले ईमान के दिल में बअज औकात दिल शिकस्तगी और मायूसी के जज्बात तारी होने लगते हैं। उससे बचने की सिर्फ एक ही यकीनी सूरत है जाहिरी नाख़ुशगवारियों के पीछे जो ख़ुशगवार पहलू छुपा हुआ है, उस पर नजर को जमाए रखना।

लोग माद्दियात (भौतिक वस्तुओं) के बल पर जीते हैं। मोमिन को अफ्कार (Ideas) के बल पर जीना पड़ता है। अफ्कार की सतह पर जीना यह है कि आदमी अल्लाह की यादों में जीने लगे। फरिश्तों का न सुनाई देने वाला कलाम उसे सुनाई देने लगे। उसे सही मक्सद की शक्ल में जो फिक्री (वैचारिक) दरयाफ्त हुई है उसे वह सबसे बड़ी चीज समझे। दुनिया को देकर आख़िरत में जो कुछ मिलने वाला है उस पर वह पूरी तरह राजी और मुतमइन हो जाए।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾

ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। और अल्लाह की तरफ, उसके इज्न (आज्ञा) से, दावत देने वाला (आह्वानकर्ता)

और एक रोशन चराग़। और मोमिनों को बिशारत दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ से बहुत बड़ा फज्ल (अनुग्रह) है। और तुम मुंकिरों और मुनाफिक़ों (पाखंडियों) की बात न मानो और उनके सताने को नजरअंदाज करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। (45-48)

शाहिद (गवाह), मुबश्शिर (ख़ुशख़बरी देने वाला), नजीर (डराने वाला), दाओ (आह्वानकर्ता) ये सब एक ही हकीक्त के मुख़्तलिफ पहलू हैं। पैग़म्बर का मिशन यह होता है के वह लोगों को ज़िंदगी की हकीकत से आगाह करे। वह लोगों को जन्नत और जहन्नम की ख़बर दे। यह एक दावती अमल है और इसी दावती अमल की बुनियाद पर पैग़म्बर आख़िरत की अदालत में उन लोगों की बारे में गवाही देगा जिन पर उसने अम्र हक पंहुचाया और फिर किसी ने माना और किसी ने न माना।

पैग़म्बर का जो मिशन है वह उम्मते मुस्लिमा का मिशन भी है। इस राह में लोगों की तरफ से अजिय्यतें (यातनाएं) पेश आती हैं। कोई साथ नहीं देता और कोई वक्ती तौर पर साथ देता है और फिर झूठे अल्फ़ाज बोलकर अलग हो जाता है। ऐसे हालात में सिर्फ ख़ुदा पर भरोसा ही वह चीज है जो पैग़म्बर (या उसकी पैरवी करने वाले दाओ) को दावती अमल पर साबित कदम रख सकता है। लोगों की तरफ से जो कुछ पेश आए उस पर सब्र करना और उसे नजरअंदाज करना और हर हाल में ख़ुदा पर अपनी नजर जमाए रखना, यही इस्लामी दावत का काम करने वाले का अस्ल सरमाया है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَكَحْتُمُ ٱلْمُؤْمِنَٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۖ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾

ऐ ईमान वालो, जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्दत लाजिम नहीं है जिसका तुम शुमार करो। पस उन्हें कुछ मताअ (सामग्री) दे दो और ख़ूबी के साथ उन्हें रुख़्सत कर दो। (49)

एक शख़्स किसी औरत से निकाह करे लेकिन मुलाकात की नौबत आने से पहले उसे तलाक दे दे तो ऐसी हालत में इद्दत की वह पाबंदी नहीं है जो आम निकाह में होती है। अलबत्ता इस्लामी अख़्लाक का तकाजा है कि जिस तरह बाइज्जत अंदाज में दोनों के दर्मियान तअल्लुक का मामला हुआ था उसी तरह बाइज्जत तौर पर दोनों के दर्मियान जुदाई का मामला भी किया जाए। उस ख़ातून का अगर महर बांधा गया था तो मर्द को मुकर्ररह महर का निस्फ (आधा) देना होगा वर्ना उर्फ (आम रवाज) और हैसियत के मुताबिक कुछ देकर ख़ूबसूरती से रुख़्सत कर दिया जाए। औरत अगर चाहे तो फौरन ही दूसरा निकाह कर सकती है। इस सूरत में उसके लिए इद्दत गुजारने की शर्त नहीं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ إِنَّآ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَٰجَكَ ٱلَّٰتِىٓ ءَاتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّٰتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَٰلَٰتِكَ ٱلَّٰتِى هَاجَرْنَ مَعَكَ وَٱمْرَأَةً مُّؤْمِنَةً إِن وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِىِّ إِنْ أَرَادَ ٱلنَّبِىُّ أَن يَسْتَنكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِىٓ أَزْوَٰجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٠﴾

ऐ नबी हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दीं तुम्हारी वे बीवियां जिनकी महर तुम दे चुके हो और वे औरतें भी जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हैं जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हो। और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को दे दे, बशर्ते कि पैग़म्बर उसे निकाह में लाना चाहे, यह ख़ास तुम्हारे लिए है, मुसलमानों से अलग। हमें मालूम है जो हमने उन पर उनकी बीवियों और उनकी दासियों के बारे में फर्ज किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (50)

आम मुसलमानों के लिए बीवियों की आख़िरी तादाद को चार तक महदूद रखा गया है। मगर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह पाबंदी नहीं थी। आपने अल्लाह तआला की ख़ुसूसी इजाजत के तहत चार से ज्यादा निकाह किया। इसकी मस्लेहत यह थी कि रसूल के ऊपर कोई तंगी न रहे।

तंगी के मुराद पैग़म्बराना मिशन की अदायगी में तंगी है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़्तलिफ दावती (आह्वानपरक) और इस्लाही (सुधारवादी) तकाज़ों के तहत जरूरत महसूस होती थी कि आप ज्यादा औरतों को अपने निकाह में ला सकें। इसी दीनी मस्लेहत की बिना पर अल्लाह तआला ने आपके लिए चार की कैद नहीं रखी। मिसाल के तौर पर हजरत आइशा से निकाह में यह मस्लेहत थी कि एक कम उम्र और जहीन ख़ातून आपकी मुस्तकिल सोहबत (समीपता) में रहें ताकि आपके बाद लम्बी मुद्दत तक लोगों को दीन सिखाती रहें। चुनांचे हजरत आइशा आपकी वफ़ात के बाद निस्फ (आधी) सदी तक उम्मत के लिए एक जिंदा कैसेट रिकॉर्डर बनी रहीं। इसी तरह हजरत उम्मे सलमा और हजरत उम्मे हबीबा से निकाह का यह फायदा हुआ कि ख़ालिद बिन वलीद और अबू सुफ़ियान बिन हरब की मुख़ालिफत हमेशा के लिए ख़त्म हो गई। वग़ैरह

تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ﴿٥٢﴾

तुम उनमें से जिस-जिसको चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो। और जिन्हें दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। इसमें ज्यादा तवक्कोअ (संभावना) है कि उनकी आंखें ठंडी रहेंगी, और वे रंजीदा न होंगी। और वे इस पर राजी रहें जो तुम उन सबको दो। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानने वाला है, बुर्दबार (उदार) है। इनके अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं। और न यह दुरुस्त है कि तुम उनकी जगह दूसरी बीवियां कर लो, अगरचे उनकी सूरत तुम्हें अच्छी लगे। मगर जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत) हो। और अल्लाह हर चीज पर निगरां है। (51-52)

जहां कई ख़्वातीन का मसला हो वहां शिकायत का इम्कान बढ़ जाता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कई बीवियां थीं। इस बिना पर अंदेशा था कि हुक़ूके जौजियत (दाम्पत्य अधिकारों) के बारे में ख़्वातीन को अदम मुसावात (असमानता) की शिकायत हो और इसका नतीजा यह निकले कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यकसूई के साथ दीनी मुहिम की अदायगी न फरमा सकें। इसलिए एलान फरमाया कि पैग़म्बर का मामला ख़ुसूसी मामला है। वह आम मुसलमानों की तरह हुक़ूके जोजियत में मुसावात (समानता) के पाबंद नहीं हैं। हुक़ूके जोजियत की रिआयत और हुक़ूके इस्लाम की रिआयत में टकराव हो तो पैग़म्बर के लिए जाइज होगा कि वह हुक़ूके इस्लाम की रिआयत को तरजीह दें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आम जाब्ते से मुस्तसना (अपवाद) करने का मक्सद यह था कि ख़्वातीन के अंदर शिकायती जेहन की पैदाइश को रोका जा सके। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस इख़्तियार को अमलन बहुत ही कम इस्तेमाल फरमाया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ

طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾ إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

ऐ ईमान वालो, नबी के घरों में मत जाया करो मगर जिस वक्त तुम्हें खाने के लिए इजाजत दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुंतजिर न रहो। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो। फिर जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से नबी को नागवारी होती है। मगर वह तुम्हारा लिहाज करते हैं। और अल्लाह हक बात कहने में किसी का लिहाज नहीं करता। और जब तुम रसूल की बीवियों से कोई चीज मांगो तो पर्दे की ओट से मांगो। यह तरीका तुम्हारे दिलों के लिए ज्यादा पाकीजा है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ दो और न यह जाइज है कि तुम उनके बाद उनकी बीवियों से कभी निकाह करो। यह अल्लाह के नजदीक बड़ी संगीन बात है। तुम किसी चीज को जाहिर करो या उसे छुपाओ तो अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (53-54)

यहां अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिलसिले में हुक्म देते हुए मुसलमानों को बताया गया है कि उनकी घरेलू मआशिरत के आदाब किस किस्म के होने चाहिएं। वे दूसरों के घरों में दाख़िल हों तो इजाजत लेकर दाख़िल हों। खाने या किसी और जरूरत के लिए किसी के यहां बुलाया जाए तो सिर्फ बक्द्र जरूरत वहां बैठें और फराग़त के बाद फौरन वापस हो जाएं। दूसरों से मिलने जाएं तो ग़ैर जरूरी बातों से शदीद परहेज करें। औरतों से मुतअल्लिक कोई काम हो तो पर्दे की आड़ से उसे अंजाम दें, वग़ैरह।

मआशिरती (सामाजिक) जिंदगी में आदमी को सिर्फ अपनी ख़्वाहिश या जरूरत नहीं देखना चाहिए बल्कि उसे निहायत शिद्दत से यह बात मल्हूज रखना चाहिए कि उसके रवैये से दूसरे शख़्स को तकलीफ न पहुंचे। उसकी ग़ैर जरूरी बातें दूसरे का वक्त जाया करने वाली न हों।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿55﴾

पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं है। और न अपने बेटों के बारे में और न अपने भाइयों के बारे में और न अपने भतीजों के बारे में और न अपने भांजों के बारे में और न अपनी औरतों के बारे में और न अपनी दासियों के बारे में। और तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज पर निगाह रखता है। (55)

ऊपर की आयत में मर्दों के लिए यह मुमानिअत (मनाही) थी कि वे रसूल की बीवियों के सामने न आएं। इस आयत में बताया गया है कि महरम रिश्तेदार और मेलजोल की औरतें इन पाबंदियों से मुस्तसना (अपवाद) हैं। यहां जिन रिश्तों का जिक्र है उसमें वे रिश्ते भी आ जाएंगे जो उनके हुक्म में दाख़िल हों। इस क़ुरआनी हिदायत की मजीद तफ़्सील सूरह नूर (आयत 31) में मौजूद है।

तमाम अहकाम का ख़ुलासा यह है कि औरत हो या मर्द उसके दिल में अल्लाह का डर हो। वह यह समझ कर जिंदगी गुजारे कि अल्लाह हर हाल में उसकी निगरानी कर रहा है।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰۗئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَي النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿56﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿57﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿58﴾

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी उस पर दुरूद व सलाम भेजो। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अजिय्यत (यातना) देते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की और उनके लिए जलील करने वाला अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अजिय्यत देते हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने बोहतान का और सरीह गुनाह का बोझ उठाया। (56-58)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में ख़ुदा के दीन का

इज्हार करने के लिए भेजे गए। अल्लाह का जो बंदा इस तरह के मुक़द्दस (पावन) काम के लिए उठे उसे ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों की कामिल ताईद हासिल होती है। उसकी हमनवाई करना ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों की हमनवाई करना होता है। और उससे एराज (उपेक्षा) करना ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों से एराज करना होता है।

जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सताया वे अपने ख़्याल के मुताबिक सिर्फ एक इंसान को सता रहे थे। मगर वे भूल गए कि वे ख़ुदा के नुमाइंदे को सता रहे हैं। और जो लोग ख़ुदा के नुमाइंदे को सताएं, उन्होंने मालिके कायनात की नजर में हमेशा के लिए अपने आपको मलऊन (पतित) बना लिया।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓي اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿59﴾ لَىِٕنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿60﴾ ڔ مَّلْعُوْنِيْنَ ڔ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿61﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿62﴾

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कि नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें इससे जल्दी पहचान हो जाएगी तो वे सताई न जाएंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी ख़बरें फैलाने वाले हैं, अगर वे बाज न आए तो हम तुम्हें उनके पीछे लगा देंगे। फिर वे तुम्हारे साथ मदीना में बहुत कम रहने पाएंगे। फिटकारे हुए, जहां पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह मारे जाएंगे। यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के बारे में जो पहले गुजर चुके हैं। और तुम अल्लाह के दस्तूर में कोई तब्दीली न पाओगे। (59-62)

मुसलमान औरत जब किसी जरूरत से अपने घर से बाहर निकले तो वह किस तरह निकले। उसे ऐसे लिबास में निकलना चाहिए जो इस बात का एक ख़ामोश एलान हो कि वह एक शरीफ और हयादार औरत है। वह संजीदा जरूरत के तहत बाहर निकली है न कि तफरीह और दिल्लगी के लिए। सादा कपड़े, हयादार चाल, चादर या बुरके से जिस्म ढका हुआ होना इसी की एक अलामत है। हकीक़त यह है कि जिस्मानी नुमाइश के साथ बाहर निकलना दूसरों को दावते इल्तफात देना (आकर्षित करना) है। और जिस्मानी नुमाइश के बग़ैर

निकलना गोया अमल की जबान में दूसरों से यह कहना है कि मैं सिर्फ अपने काम से बाहर निकली हूं, मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं।

'दिल के मरीजों' से यहां मुराद ग़ालिबन यहूद हैं। क्योंकि वही लोग मुसलमानों को और मुस्लिम ख़्वातीन को ज्यादा परेशान कर रहे थे और यही लोग थे जो मज्कूरा तंबीह के मुताबिक क़त्ल किए गए या शहर से निकाल दिए गए थे।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ۝ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ۝

लोग तुमसे कियामत के बारे में पूछते हैं। कहो कि उसका इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है। और तुम्हें क्या ख़बर, शायद कियामत करीब आ लगी हो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों को रहमत से दूर कर दिया है। और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार है, उसमें वे हमेशा रहेंगे। वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएंगे, वे कहेंगे, ऐ काश हमने अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) की होती और हमने रसूल की इताअत की होती। और वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे रब, उन्हें दोहरा अजाब दे और उन पर भारी लानत कर। (63-68)

कियामत की तारीख़ पूछने का मतलब यह नहीं है कि वे लोग कियामत के आने को सिरे से मानते ही न थे। यह दरअस्ल कियामत का इस्तहजा (मज़ाक उड़ाना) न था बल्कि कियामत की ख़बर देने वाले का इस्तहजा था। वे नफ्से कियामत के मुंकिर न थे बल्कि कियामत की उस नौइयत के मुंकिर थे जिसकी रसूल और असहाबे रसूल उन्हें ख़बर दे रहे थे।

उनकी अस्ल ग़लती यह थी कि उन्होंने अपने कौमी अकाबिर (नायकों) को बड़ा समझा और पैग़म्बर को बड़ा न समझा। इसलिए उन्हें अपने कौमी अकाबिर की बात काबिले लिहाज नजर आई और पैग़म्बर की बात काबिले लिहाज नजर न आई। चुनांचे कियामत में जब अस्ल हकीकत खुलेगी तो वे अफसोस करेंगे कि काश हम झूठी बड़ाई और सच्ची बड़ाई के फर्क को समझते और झूठी बड़ाई के फरेब में मुब्तिला होकर गुमराह न होते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

ऐ ईमान वालो, तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को अजिय्यत (यातना) पहुंचाई तो अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी साबित किया। और वह अल्लाह के नजदीक बाइज्जत था। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो। वह तुम्हारे आमाल सुधारेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (69-71)

'यहूदियों की तरह पैग़म्बर को न सताओ' से क्या मुराद है, इसकी वजाहत एक वाकये से होती है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में थे कि एक बार आपके पास कुछ माल आया। आपने उसे लोगों के दर्मियान तक्सीम किया। इसके बाद अंसार में से एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से कहा : ख़ुदा की कसम मुहम्मद ने इस तक्सीम से अल्लाह की रिजा और आख़िरत का घर नहीं चाहा है। इस वाकये की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दी गई तो आप ने फरमाया कि अल्लाह की रहमत मूसा पर हो। उन्हें इससे ज्यादा अजिय्यत दी गई मगर उन्होंने सब्र किया। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

कलाम की दो किस्में हैं। एक है सदीद कलाम। दूसरा है ग़ैर सदीद कलाम। सदीद कलाम वह है जो ऐन मुताबिके हकीकत हो। जो वाकयाती तज्जिया (विश्लेषण) पर मबनी हो। जो ठोस दलाइल के साथ पेश किया जाए। इसके बरअक्स ग़ैर सदीद कलाम वह है जिसमें हकीकत की रिआयत शामिल न हो। जिसकी बुनियाद जन व गुमान (पूर्वाग्रह) पर कायम हो। जिसकी हैसियत महज रायजनी की हो न कि हकीकते वाकया के इज्हार की। पहला कलाम मोमिनाना कलाम है और दूसरा कलाम मुनाफिकाना कलाम।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝ لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

हमने अमानत को आसमानों और जमीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने

उसे उठाने से इंकार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसे उठा लिया। बेशक वह जालिम और जाहिल था। ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को सजा दे। और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फरमाए। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (72-73)

अमानत से मुराद इख़्तियार है। इख़्तियार को अमानत इसलिए फरमाया कि वह अल्लाह की एक चीज है जिसे उसने आरजी मुद्दत के लिए इंसान को बतौर आजमाइश दिया है ताकि इंसान ख़ुद अपने इरादे से ख़ुदा का ताबेदार बने। अमानत, दूसरे लफ़्जों में, अपने ऊपर ख़ुदा का कायम मकाम बनना है। अपने आप पर वह करना है जो ख़ुदा सितारों और सय्यारों पर कर रहा है। यानी अपने इख़्तियार से अपने आपको ख़ुदा के कंट्रोल में दे देना।

इस कायनात में सिर्फ अल्लाह हाकिम है और तमाम चीजें उसी की महकूम हैं। मगर अल्लाह तआला की मर्जी हुई कि वह एक ऐसी आजाद मख़्लूक पैदा करे जो किसी जब्र (दबाव) के बग़ैर ख़ुद अपने इख़्तियार से वही करे जो ख़ुदा उससे करवाना चाहता है। यह इख़्तियारी इताअत बड़ी नाज़ुक आजमाइश थी। आसमान और जमीन और पहाड़ भी उसका तहम्मुल नहीं कर सकते। ताहम इंसान ने शदीद अंदेशे के बावजूद इसे क़ुबूल कर लिया। अब इंसान मौजूदा दुनिया में ख़ुदा की एक अमानत का अमीन (धारक) है। उसे अपने ऊपर वही करना है जो ख़ुदा दूसरी चीजों पर कर रहा है। इंसान को अपने आप पर ख़ुदा का हुक्म चलाना है। इंसान हालते इम्तेहान में है और मौजूदा दुनिया उसके लिए वसीअ इम्तेहानगाह।

यह अमानत एक बेहद नाज़ुक जिम्मेदारी है। क्योंकि इसी की वजह से जजा व सजा का मसला पैदा होता है। दूसरी मख़्लूकात मजबूर व मक्हूर (बाध्य) हैं। इसलिए उनके वास्ते जजा व सजा का मसला नहीं। इंसान आजाद है। इसलिए वह जजा व सजा का मुस्तहिक बनता है। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने अमानत को आदम के सामने पेश किया, तो आदम ने पूछा कि अमानत क्या है। अल्लाह तआला ने फरमाया, अगर तुम अच्छा करोगे तो तुम्हें उसका बदला मिलेगा और अगर तुम बुरा करोगे तो तुम्हें सजा दी जाएगी। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

سُوْرَةُ سَبَاٍ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ① يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ②

आयतें-54 **सूरह-34. सबा** रुकूअ-6

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ ख़ुदा के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो जमीन में है और उसी की तारीफ है आख़िरत में और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) **वाला जानने वाला है। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है। और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है। और वह रहमत वाला बख़्शने वाला है।** (1-2)

कायनात अपने ख़ालिक का तआरुफ है। उसकी हैबतनाक वुस्अत (व्यापक) ख़ालिक की अज्मत को बताती है। उसका हदे कमाल तक मौज़ूं (उपयुक्त) होना बताता है कि उसका पैदा करने वाला एक कामिल व मुकम्मल हस्ती है। इसके तमाम अज्जा का हददर्जा तवाफ़ुक (सहजता) के साथ अमल करना साबित करता है कि उसका चलाने वाला इंतिहाई हद तक हकीम और अलीम है। कायनात का इंसान के लिए मुकम्मत तौर पर साजगार होना जाहिर करता है कि उसका ख़ालिक अपनी मख़्लूकात के लिए बेहद रहीम व करीम है।

जो शख़्स कायनात पर ग़ौर करेगा वह ख़ुदा के जलाल (प्रताप) व कमाल के एहसास से सरशार हो जाएगा। वह यकीन कर लेगा कि अजल (आदि) से अबद (अंत) तक तमाम अज्मतें सिर्फ एक ख़ुदा के लिए हैं। उसके सिवा किसी और के लिए नहीं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ③ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑤ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ⑥

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि हम पर कियामत नहीं आएगी। कहो कि क्यों नहीं, कसम है मेरे परवरदिगार आलिमुलग़ैब की, वह जरूर तुम पर आएगी। उससे जर्रा बराबर कोई चीज छुपी नहीं, न आसमानों में और न जमीन में। और न कोई चीज उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है। ताकि वह

उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किया। यही लोग हैं जिनके लिए माफी है और इज्जत की रोजी। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को आजिज (मात) करने की कोशिश की, उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अजाब है। और जिन्हें इल्म दिया गया वे, उस चीज को जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास भेजा गया है, जानते हैं कि वह हक है और वह ख़ुदाए अजीज (प्रभत्वशाली) व हमीद (प्रशंस्य) का रास्ता दिखाता है। (3-6)

कुरआन के मुख़ातबीन क़ियामत के मुंकिर न थे। वे सिर्फ इसके मुंकिर थे कि क़ियामत उनके लिए रुसवाई और अजाब बनकर आएगी। मौजूदा दुनिया में वे अपने को माद्दी (भौतिक) एतबार से महफूज हालत में पाते थे। इसलिए उनकी समझ में न आता था कि अगली दुनिया में पहुंच कर वे ग़ैर महफूज क्योंकर हो जाएंगे।

मगर यह क़यास सरासर बातिल है। मौजूदा दुनिया का मुतालआ बताता है कि इसकी तख़्लीक़ अख़्लाक़ी उसूलों पर हुई है। और जब कायनात की तख़्लीक़ अख़्लाक़ी बुनियाद पर हुई है तो उसका आख़िरी फ़ैसला भी लाजिमन अख़्लाक़ी बुनियाद पर होना चाहिए न कि किसी और मजऊमा (कल्पित) बुनियाद पर।

हयात और कायनात की यह हक़ीक़त तमाम आसमानी किताबों में मौजूद है। कुरआन का मिशन यह है कि इस हक़ीक़त को वह उसकी ख़ालिस और बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में जाहिर कर दे। अब जो लोग इसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हों वे जबरदस्त जसारत (दुस्साहस) कर रहे हैं। ख़ुदा के यहां वे सख़्ततरीन सजा के मुस्तहिक़ क़रार दिए जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٧﴾ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ﴿٩﴾

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं, क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएं जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेजा-रेजा हो जाओगे तो फिर तुम्हें नए सिरे से बनना है। क्या उसने अल्लाह पर झूठ बांधा है या उसे किसी तरह का जुनून है। बल्कि जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते वही अजाब में और दूर की गुमराही में मुब्तिला हैं। तो क्या उन्होंने आसमान और जमीन की तरफ नजर नहीं की जो उनके आगे है

और उनके पीछे भी। अगर हम चाहें तो उन्हें जमीन में धंसा दें या उन पर आसमान से टुकड़ा गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बंदे के लिए जो मुतवज्जह होने वाला हो। (7-9)

मक्का के लोग रसूल और असहाबे रसूल को हकीर (तुच्छ) समझते थे, इसलिए वे उनकी हर बात का मजाक उड़ाते रहे। इसकी अस्ल वजह आख़िरत के बारे में उनकी बेयक़ीनी थी। आख़िरत की पकड़ का अंदेशा उनके दिलों में न था। इसलिए वे आख़िरत की बातों के मुतअल्लिक ज्यादा संजीदा भी न हो सके।

इस दुनिया में सबसे बड़ा अजाब यह है कि आदमी सेहते फ़िक्र (सही सोच) से महरूम हो जाए। ऐसा आदमी किसी चीज को उसके सही रूप में नहीं देख पाता। खुली हुई हक़ीक़तों से भी उसे नसीहत हासिल नहीं होती। मसलन ऊपरी फजा से मुसलसल बेशुमार पत्थर निहायत तेज रफ्तारी के साथ जमीन की तरफ आते रहते हैं। अगर ये पत्थर इंसानी बस्तियों पर बरसने लगें तो इंसानी नस्ल का ख़ात्मा हो जाए। इसी तरह जमीन के नीचे का ज्यादा हिस्सा गर्म पिघला हुआ लावा है। अगर वह ग़ैर महदूद तौर पर फट पड़े तो सतह जमीन की हर चीज जल कर ख़त्म हो जाए। मगर ख़ुदा अपने ख़ुसूसी इंतिजाम के तहत ऐसा होने नहीं देता। आसमान और जमीन में इस क़िस्म की वाजेह निशानियां हैं जो इंसान के इज्ज (निर्बलता) को बता रही हैं। मगर आदमी जब सेहते फ़िक्र से महरूम हो जाए तो कोई निशानी उसे हिदायत देने वाली नहीं बनती।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾ أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ी नेमत दी। ऐ पहाड़ो तुम भी उसके साथ तस्बीह में शिरकत करो। और इसी तरह परिंदों को हुक्म दिया। और हमने लोहे को उसके लिए नर्म कर दिया कि तुम कुशादा जिरहें (कवच) बनाओ और कड़ियों को अंदाजे से जोड़ो। और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देख रहा हूं। (10-11)

एक मोमिन जब ख़ुदा की याद से सरशार होकर उसकी तस्बीह करता है तो उस वक्त वह सारी कायनात का हमनवा होता है। जमीन व आसमान की तमाम चीजें तस्बीहे ख़ुदावंदी में उसकी शरीके आवाज हो जाती हैं। ताहम कायनात की यह हमनवाई ख़ामोश जबान में होती है। मगर हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने यह ख़ुसूसियत दी कि जब

वह तस्बीह करते तो पहाड़ और चिड़ियां महसूस तौर पर आपके साथ तस्बीह ख़्वानी में शरीक हो जातीं।

इसी तरह हजरत दाऊद को अल्लाह तआला ने लोहे की सनअत (शिल्पकला) सिखाई। उन्होंने लोहे के पिघलाने और ढालने के फन को इतनी तरक्की दी कि वह निहायत बारीक लड़ियों की जिरहें बनाने लगे जिन्हें आदमी कपड़े की तरह पहन सके। उस वक्त दुनिया में यह फन मौजूद न था। अल्लाह तआला ने बराहेरास्त तौर पर फ़रिश्तों के जरिए यह फन आपको सिखाया।

मोमिन उद्योग और साइंस में बड़ी-बड़ी तरक्कियां कर सकता है। मगर उसके लिए लाजिम है कि वह इंसानी तरक्की को सिर्फ इस्लाह (सुधार) के दायरे में इस्तेमाल करे। वह जो कुछ करे इस एहसास के तहत करे कि आख़िरकार उसे जवाबदेही के लिए ख़ुदा के सामने हाजिर होना है।

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾ يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾

और सुलैमान के लिए हमने हवा को मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया, उसकी सुबह की मंजिल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंजिल एक महीने की। और हमने उसके लिए तांबे का चशमा बहा दिया। और जिन्नात में से ऐसे थे जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसे आग का अजाब चखाएंगे। वे उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तस्वीरें और हौज जैसे लगन (थाल) और जमी हुई देगें। ऐ आले दाऊद, शुक्रगुजारी के साथ अमल करो और मेरे बंदों में कम ही शुक्रगुजार हैं। (12-13)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने समुद्री सफर और समुद्री तिजारत को बहुत तरक्की दी थी। उन्होंने आला दर्जे के बादबानी जहाज तैयार किए। उनके साथ अल्लाह तआला का मजीद फज़्ल यह हुआ कि उनके समुद्री जहाजों को अक्सर मुवाफ़िक़ हवा मिलती थी। इसी तरह तांबा पिघला कर सामान बनाने का फन भी उनके जमाने में बहुत तरक्की कर गया। इन ग़ैर मामूली कुव्वतों से हजरत सुलैमान मुख़्तलिफ किस्म का तामीरी और इस्लाही काम लेते थे। इन्हीं में से उन चीजों की तैयारी भी थी जिनका जिक्र आयत में किया गया है।

इंसान सरापा ख़ुदा का एहसान है। इसलिए उसके अंदर सबसे ज्यादा ख़ुदा के शुक्र और एहसानमंदी का जज्बा होना चाहिए। मगर यही वह चीज है जो इंसान के अंदर सबसे कम पाई जाती है। इसकी वजह यह है कि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इंसान को जो कुछ मिलता है वह असबाब के पर्दे में मिलता है। इसलिए आदमी उसे असबाब का नतीजा समझ लेता है। मगर यही इंसान का अस्ल इम्तेहान है। इंसान से यह मत्लूब (अपेक्षित) है कि वह असबाब के जरिए मिलती हुई चीज को ख़ुदा से मिलता हुआ देखे। बजाहिर अपनी अक्ल और मेहनत से हासिल होने वाली चीज को बराहेरास्त ख़ुदा का अतिय्या (देन) समझे।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

फिर जब हमने उस पर मौत का फ़ैसला नाफिज किया तो किसी चीज ने उन्हें उसके मरने का पता नहीं दिया मगर जमीन के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था। पस जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर खुला कि अगर वे ग़ैब (अप्रकट) को जानते तो इस जिल्लत की मुसीबत में न रहते। (14)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम की मौत का वक्त आया तो वह अपनी लाठी टेके हुए थे और जिन्नों से कोई तामीरी काम करा रहे थे। मौत के फ़रिश्ते ने आपकी रूह कब्ज कर ली। मगर आपका बेजान जिस्म लाठी के सहारे बदस्तूर कायम रहा। जिन्नात यह समझ कर अपने काम में लगे रहे कि आप उनके करीब मौजूद हैं और निगरानी कर रहे हैं। इसके बाद लाठी में दीमक लग गई। एक अर्से के बाद दीमक ने लाठी को खोखला कर दिया तो आपका जिस्म जमीन पर गिर पड़ा। उस वक्त जिन्नों को मालूम हुआ कि आप वफ़ात पा चुके हैं।

यह वाकया इस सूरत में ग़ालिबन इसलिए पेश आया ताकि लोगों के इस ग़लत अकीदे की अमली तरदीद (रद्द) हो जाए कि जिन्नात ग़ैब का इल्म रखते हैं।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ﴿١٥﴾ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿١٦﴾ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿١٧﴾

सबा के लिए उनके अपने मस्कन (आवासीय क्षेत्र) में निशानी थी। दो बाग़ दाएं और बाएं, अपने रब के रिज़्क़ से खाओ और उसका शुक्र करो। उम्दा शहर और बख़्शने वाला रब। पस उन्होंने सरताबी (विमुखता) की तो हमने उन पर बांध का सैलाब भेज दिया और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें बदमजा फल और झाव के दरख़्त और कुछ थोड़े से बेर। यह हमने उनकी नाशुक्री का बदला दिया और ऐसा बदला हम उसी को देते हैं जो नाशुक्र हो। (15-17)

सबा क़दीम जमाने में एक निहायत तरक़्क़ीयाफ़्ता क़ैम थी। उसकी आबादियां मौजूदा यमन में फैली हुई थीं। उसका मर्कजी शहर मारिब था। जमाना कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) में उसने ज़बरदस्त तरक़्क़ी की। और तक़रीबन एक हजार साल तक उरूज पर रही। एक तरफ़ वे लोग ख़ुश्की और समुद्र के जरिए अपनी तिजारतें फैलाए हुए थे। दूसरी तरफ़ उन्होंने बांध बनाए। मारिब के करीब उनका एक बड़ा बांध था जो 14 मीटर ऊंचा और तकरीबन 600 मीटर लम्बा था। उसके जरिए पहाड़ी नालों का पानी रोक कर नहरें निकाली गई थीं। और उनसे जमीनों को सैराब किया जाता था। इस तरह इलाके में इतनी सरसब्जी आई कि आदमी जहां खड़ा हो तो दाएं और बाएं उसे बाग़ ही बाग़ दिखाई दें।

ये तमाम तरक्कियां ख़ुदाई इंतिजामात की वजह से मुमकिन हुई। इसलिए सबा के लोगों को ख़ुदा का शुक्रगुजार बनना चाहिए था। मगर वे ग़फ़लत और सरकशी में पड़ गए जैसा कि आम तौर पर ख़ुशहाल कौमों में होता है। इसके बाद मारिब बांध (Marib Dam) में शिगाफ पड़ना शुरू हुआ। यह गोया इब्तिदाई तंबीह थी। मगर वे होश में न आए। एंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के बयान के मुताबिक, सातवीं सदी ईस्वी में एक जलजले ने बांध को नाक़ाबिले मरम्मत हद तक तोड़ दिया। इसके नतीजे में ऐसा सैलाब आया जिससे पूरा इलाक़ा तबाह हो गया। मजीद यह कि जरख़ेज (उपजाऊ) मिट्टी ख़त्म हो जाने की वजह से यह इलाक़ा बाद को सिर्फ जंगली झाड़ियों के लिए मौज़ूं रह गया।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ﴿١٨﴾ فَقَالُوا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿١٩﴾

और हमने उनके और उनकी बस्तियों के दर्मियान, जहां हमने बरकत रखी थी, ऐसी बस्तियां आबाद कीं जो नजर आती थीं। और हमने उनके दर्मियान सफ़र की मंजिलें ठहरा दीं। उनमें रात दिन अम्न के साथ चलो। फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब, हमारे

सफ़रों के दर्मियान दूरी डाल दे। और उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया तो हमने उन्हें अफ़साना बना दिया और हमने उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर दिया। बेशक इसमें निशानी है हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (18-19)

बरकत वाली बस्तियों से मुराद शाम का सरसब्ज व शादाब इलाक़ा है। इस सरसब्ज इलाके में यमन से शाम तक ख़ूबसूरत आबादियों की कतारें चली गई थीं। उनके दर्मियान सफ़र एक क़िस्म की ख़ुशगवार सैर बन गया था। यह माहौल अपनी हक़ीक़त के एतबार से रब्बानी जज्बात पैदा करने वाला था। गोया कि ख़ुदा ने यहां एक ख़ामोश कतबा (बोर्ड) लगा दिया हो कि बेख़ौफ़ व ख़तर चलो और अपने रब का शुक्र करो।

मगर सबा के ग़ाफ़िल लोग उस ख़ुदाई कतबे को न पढ़ सके। उन्होंने अपने रवैये से उन ख़ुदाई नेमतों का इस्तहक़ाक़ खो दिया। चुनांचे वे इस तरह मिटे कि वे माजी की दास्तान बन गए। इलाके की तबाही के बाद सबा के मुख़्तलिफ़ क़बाइल अपने वतन से निकल कर दूर-दूर के इलाक़ों में मुंतशिर हो गए।

ये वाक़ेयात तारीख़ के मालूम वाक़ेयात हैं। मगर इन्हें जानने वाला हक़ीक़तन वह है जो उनसे यह सबक़ ले कि उसे ख़ुशहाली मिले तो वह नाज में मुब्तिला न हो। उसे जो कुछ मिले उसे ख़ुदा का अतिय्या (देन) समझ कर वह ख़ुदा का शुक्रगुजार बन जाए।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾

और इब्लीस (शैतान) ने उनके ऊपर अपना गुमान सच कर दिखाया। पस उन्होंने उसकी पैरवी की मगर ईमान वालों का एक गिरोह। और इब्लीस को उनके ऊपर कोई इख़्तियार न था, मगर यह कि हम मालूम कर लें उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके जो उसकी तरफ़ से शक में हैं) और तुम्हारा रब हर चीज पर निगरां (निगरानी करने वाला) है। (20-21)

इब्लीस या उसके नुमाइंदे हमेशा इंसान के ख़िलाफ़ अपना मंसूबा बनाते हैं। ऐसे मौक़े पर इंसान का काम यह है कि वह उनके मंसूबे का शिकार न हो। और इस तरह वह उन्हें नाकाम बना दे। मगर सबा के लोग दूसरे लोगों की तरह इस दानाई (समझदारी) का सुबूत न दे सके। वे शैतानी तर्ग़ीबात के जेरेअसर आकर तबाही के रास्ते पर चल पड़े। सिर्फ थोड़े से हक़परस्त थे जो इस इम्तेहान में कामयाब हुए।

शैतान को या उसके नुमाइंदे को ख़ुदा ने किसी के ऊपर अमली इख़्तियार नहीं दिया है। उसे सिर्फ बहकाने का इख़्तियार है। यह इसलिए है ताकि इंसान की आजमाइश हो। इस आजमाइश में पूरा उतरने वाला शख़्स वह है जो शैतानी तर्ग़ीबात (बहकावों) से ग़ैर मुतअस्सिर रहकर हक व सदाकत पर कायम रहे।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है, वे न आसमानों में जर्रा बराबर इख़्तियार रखते और न जमीन में और न इन दोनों में उनकी कोई शिरकत है। और न इनमें से कोई उसका मददगार है। और उसके सामने कोई शफाअत (सिफारिश) काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाजत दे। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया। वे कहेंगे कि हक बात का हुक्म फरमाया। और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (22-23)

अगरचे हर दौर में बेशतर लोग आख़िरत को मानते रहे हैं। मगर हर दौर में शैतान ने ऐसे ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) अकीदे लोगों के दर्मियान राइज कर दिए जिन्होंने उन्हें आख़िरत की पकड़ से बेख़ौफ कर दिया। उन्हीं में से एक यह फर्ज़ी अकीदा भी है कि कुछ हस्तियों को ख़ुदा के यहां इतना मकाम हासिल है कि वे अपनी सिफारिश से जिसे चाहें बख़्शवा सकते हैं।

मगर इस किस्म का हर अकीदा ख़ुदा की ख़ुदाई का कमतर अंदाजा है। यह वाकया भी कैसा अजीब है कि जिन हस्तियों का अपना यह हाल है कि ख़ुदा की अज़्मत के एहसास ने उन्हें सरासीमा (शिथिल) कर रखा है, उनके बारे में उनके परस्तारों ने यह समझ रखा है कि वे ख़ुदा के यहां उनकी नजात के लिए काफी हो जाएंगे।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

कहो कि कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रिज़्क देता है। कहो कि अल्लाह। और हम में से और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में। कहो कि जो कुसूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी। और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी बाबत हमसे नहीं पूछा जाएगा। कहो कि हमारा रब हमें जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान हक के मुताबिक फैसला फरमाएगा। और वह फैसला फरमाने वाला है, इल्म वाला है। कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक बनाकर ख़ुदा के साथ मिला रखा है। हरगिज नहीं, बल्कि वह अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (24-27)

कायनात नाकाबिले कयास हद तक अजीम है। इसी के साथ उसके अंदर कमाल दर्जे की हिक्मत और मअनवियत पाई जाती है। ऐसी कायनात ख़ुदाए अजीज व हकीम ही का कारनामा हो सकती है। कोई भी शख़्स संजीदा तौर पर यह गुमान नहीं कर सकता कि वे दूसरी हस्तियां उसकी ख़ालिक व मालिक हैं जिन्हें जदीद (आधुनिक) या कदीम (प्राचीन) इंसान ने ख़ुदा के सिवा फर्ज कर रखा है। फिर ख़ुदा के सिवा कौन हो सकता है जिसे इस कायनात में बड़ाई का मकाम हासिल हो।

हकीकत यह है कि कायनात का मुतालआ (अवलोकन) तमाम मुश्रिकाना नजरियात को बातिल (झूठा) ठहराता है। इस कायनात में वे तमाम अकीदे बेजोड़ साबित होते हैं जिनमें एक ख़ुदा के सिवा किसी और के लिए किसी किस्म की बड़ाई तस्लीम की गई हो। ऐसी हालत में वही नजरिया सही हो सकता है जो एक ख़ुदा की बुनियाद पर बने। जिस नजरिये में एक ख़ुदा के सिवा किसी और हस्ती की कारफरमाई मानी जाए वह अपनी तरदीद (रद्द) आप है।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾

और हमने तुम्हें तमाम इंसानों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। (28-30)

हर नबी ने बराहेरास्त तौर पर सिर्फ अपनी कौम के ऊपर दावती काम किया। और यही अमलन मुमकिन था। इसी तरह पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बराहेरास्त तौर पर अपनी ही कौम के लिए मुंजिर और मुबश्शिर बने (अल-अनआम 92)। मगर चूंकि आप पर नुबुव्वत ख़त्म हो गई इसलिए अब तमाम कौमों के लिए हुक्मन आप ही मुंजिर और

मुबश्शिर (डराने वाले और ख़ुशख़बरी देने वाले) हैं। अपने जमाने में अपने मुख़ातबीने अव्वल पर जिस तरह आपने इंजार व तबशीर (डराने और ख़ुशख़बरी देने) का काम किया उसी तरह बाद के जमाने में दूसरे तमाम मुख़ातबीन पर आपकी उम्मत को आपके नायब के तौर पर इंजार व तबशीर का काम करना है। यह सारा काम आपकी नुबुव्वत के तलसलुल में शुमार होगा। आपकी जिंदगी में किया जाने वाला दावती काम बराहेरास्त तौर पर आपके दायराए नुबुव्वत में दाख़िल है। और आपकी दुनियावी जिंदगी के बाद किया जाने वाला काम बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर।

पैग़म्बर का काम हमेशा सिर्फ पहुंचाना होता है। इसके बाद कौमों के अमली अंजाम का फैसला करना ख़ुदा का काम है, मौजूदा दुनिया में भी और आइंदा आने वाली दुनिया में भी।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ
تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ
الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ
جَاءَكُم ۖ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۚ وَأَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ
يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज न इस कुरआन को मानेंगे और न उसे जो इसके आगे है। और अगर तुम उस वक्त को देखो जबकि ये जालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। एक दूसरे पर बात डालता होगा। जो लोग कमजोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरूर ईमान वाले होते। बड़ा बनने वाले कमजोर लोगों को जवाब देंगे, क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था। जबकि वह तुम्हें पहुंच चुकी थी, बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम हो। और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और उसके शरीक ठहराएं। और वे अपनी पशेमानी (पछतावे) को छुपाएंगे जबकि वे अजाब देखेंगे। और हम मुंकिरों की गर्दन में तौक डालेंगे। वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे। (31-33)

हकीकत का इंकार सबसे बड़ा जुर्म है। दुनिया में इस जुर्म का अंजाम सामने नहीं आता। इसलिए दुनिया में आदमी बेख़ौफ होकर हकीकत का इंकार कर देता है। मगर आख़िरत में जब इंकारे हक का बुरा अंजाम लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा तो उस वक्त लोगों का अजीब हाल होगा।

अवाम अपने जिन बड़ों पर दुनिया में फख़्र करते थे वहां उन बड़ों को अपनी गुमराही का जिम्मेदार ठहरा कर वे उन पर लानत करेंगे। बड़े उन्हें जवाब देंगे कि अपने आपको शर्मिंदगी से बचाने के लिए हमें मुल्जिम न ठहराओ यह हम न थे बल्कि तुम्हारी अपनी ख़्वाहिशें थीं जिन्होंने तुम्हें गुमराह किया। हमारा साथ तुमने सिर्फ इसलिए दिया कि हमारी बात तुम्हारी अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक थी। तुम ऐसा दीन चाहते थे जिसमें अपने आपको बदले बग़ैर दीनदार बनने का क्रेडिट हासिल हो जाए और वह हमने तुम्हें फराहम कर दिया। तुमने हमारा फंदा ख़ुद अपनी गर्दन में डाला, वर्ना हमारे पास कोई ताकत न थी कि हम उसे तुम्हारी गर्दन में डाल देते।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ
كَافِرُونَ ﴿٣٤﴾ وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾ قُلْ إِنَّ
رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَ
مَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٣٧﴾
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾ قُلْ إِنَّ
رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنفَقْتُم مِّن
شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾

और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। और उन्होंने कहा कि हम माल और औलाद में ज्यादा हैं और हम कभी सजा पाने वाले नहीं। कहो कि मेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रोजी देता है। और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज नहीं जो दर्जे में तुम्हें हमारा मुकर्रब (निकटवर्ती) बना दे, अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक

अमल किया, ऐसे लोगों के लिए उनके अमल का दुगना बदला है। और वे बालाख़ानों (उच्च भवनों) में इत्मीनान से रहेंगे। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगर्म हैं वे अजाब में दाख़िल किए जाएंगे। कहो कि मेरा रब अपने बंदों में से जिसे चाहता है कुशादा रोजी देता है और जिसे चाहता है तंग कर देता है। और जो चीज भी तुम ख़र्च करोगे तो वह उसका बदला देगा। और वह बेहतर रिज़्क देने वाला है। (34-39)

जिन लोगों के पास कुव्वत और माल आ जाए उन्हें मौजूदा दुनिया में बड़ाई का मकाम हासिल हो जाता है। यह चीज उनके अंदर झूठा एतमाद पैदा कर देती है। ऐसे लोगों को जब आख़िरत से डराया जाता है तो वे उसे अहमियत नहीं दे पाते। उन्हें यकीन नहीं आता कि दुनिया में जब ख़ुदा ने उन्हें इज्जत दी है तो आख़िरत में वह उन्हें कैसे बेइज्जत कर देगा।

यही झूठा एतमाद हर दौर के बड़ों के लिए हक की दावत को न मानने का सबसे बड़ा सबब रहा है। और वक्त के बड़े लोग जब एक चीज को हकीर (तुच्छ) कर दें तो छोटे लोग भी उसे हकीर समझ लेते हैं। इस तरह ख़वास और अवाम दोनों हक को कुबूल करने से महरूम रह जाते हैं।

दुनिया का माल व असबाब इम्तेहान है न कि इनाम। दुनिया के माल व असबाब की ज्यादती न किसी आदमी के मुकर्रब होने की अलामत है और न इसकी कमी उसके ग़ैर मुकर्रब होने की। अल्लाह के यहां कुरबत (निकटता) का मकाम उसी शख़्स के लिए है जो इस बात का सुबूत दे कि जो कुछ उसे दिया गया था उसमें वह ख़ुदा की यादों के साथ जिया और ख़ुदा की मुकर्रर की हुई हदों का अपने आपको पाबंद रखा। यही लोग हैं जो आख़िरत में ख़ुदा के अबदी इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा फिर वह फरिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे। वे कहेंगे पाक है तेरी जात, हमारा तअल्लुक तुझसे है न कि इन लोगों से। बल्कि ये जिन्नों की इबादत करते थे। उनमें से अक्सर लोग उन्हीं के मोमिन थे। पस आज तुम में से कोई एक दूसरे को न फायदा पहुंचा सकता है और न नुक्सान। और हम जालिमों से कहेंगे कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। (40-42)

फरिश्ते इंसान को नजर नहीं आते। ये दरअस्ल पैग़म्बर हैं जिन्होंने इंसान को फरिश्तों के वुजूद की ख़बर दी। यह ख़बर उन्हें इसलिए दी गई थी कि वे ख़ुदा के अज्मत व जलाल को महसूस करें और पूरी तरह उसकी इबादत में लग जाएं। मगर शैतान ने अजीब व ग़रीब तौर पर लोगों को सिखाया कि बराहेरास्त ख़ुदा का तकर्रुब (समीपता) हासिल करना मुश्किल है। इसलिए उन्हें चाहिए कि वे फरिश्तों की इबादत करें और उनके जरिये से ख़ुदा का तकर्रुब हासिल करें। चुनांचे सारी दुनिया में फरिश्तों के बुत बनाकर उनकी इबादत शुरू कर दी गई। देवी देवताओं का अकीदा भी दरअस्ल फरिश्तों ही की बिगड़ी हुई शक्ल है। जो फरिश्ता बारिश पर मुकर्रर था उसे बारिश का देवता समझ लिया। जो फरिश्ता हवा पर मुकर्रर था उसे हवा का देवता समझ लिया। वग़ैरह।

फरिश्ते आख़िरत में ऐसे इबादत गुजारों से बरा-त (विरक्ति) जाहिर करेंगे। आख़िरत में उन्हें न ख़ुदा की मदद हासिल होगी और न फरिश्तों की। वे हमेशा के लिए बेयारो मददगार होकर रह जाएंगे।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٤٣﴾ وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख़्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और उन्होंने कहा, यह तो महज एक झूठ है गढ़ा हुआ। और उन मुंकिरों के सामने जब हक आया तो उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। और हमने उन्हें किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों। और हमने तुमसे पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा। और उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया। और ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था। पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो कैसा था उन पर मेरा अजाब। (43-45)

कुरआन अपने मुख़ातबीन (संबोधित लोगों) के सामने खुले-खुले दलाइल दे रहा था। मुख़ातबीन दलील से उसका तोड़ नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद वे अवाम को उससे रोकने में कामयाब हो गए। उनकी इस कामयाबी का वाहिद राज यह था कि उन्होंने लोगों को यह

कहकर उसकी तरफ से मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया कि यह हमारे असलाफ (पूर्वजों) के तरीके के ख़िलाफ है। क़ुरआन में जो मोजिजाना अदब (दिव्य साहित्य) था उसका इंकार नामुमकिन था। उसके बारे में लोगों को यह कहकर मुतमइन कर दिया गया कि यह महज जादू बयानी का करिश्मा है, ख़ुदाई 'वही' होने से इसका कोई तअल्लुक़ नहीं। यह महज क़लम का जोर है न कि इल्मे हक़ीक़त का जोर। तारीख़ का यह तजर्बा निहायत अजीब है कि हर दौर के लोगों के लिए दलील के मुक़ाबले में तअस्सुब (विद्वेष) ज्यादा ताक़तवर साबित हुआ है।

क़ुरआन के मुख़ातबीन के पास क़ुरआन का इंकार करने के लिए या तो अक़्ली दलाइल होते जिनके जरिए वे उसे रद्द कर सकते या उनके पास कोई दूसरी आसमानी किताब होती जिससे क़ुरआन की तरदीद निकाली जा सकती। मुख़ातबीन क़ुरआन के पास इन दोनों में से कोई चीज मौजूद न थी। मजीद यह कि दुनियावी तरक़्क़ी में भी वे दूसरी क़ौमों से बहुत ज्यादा पीछे थे। जिन लोगों का यह हाल हो वे अगर हक़ की दावत (आह्वान) का इंकार करते हैं तो इसकी वजह हठधर्मी है न कि माक़ूलियत (तार्किकता)।

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

कहो मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूं। यह कि तुम ख़ुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे साथी को जुनून नहीं है। वह तो बस एक सख़्त अजाब से पहले तुम्हें डराने वाला है। कहो कि मैंने तुमसे कुछ मुआवजा मांगा हो तो वह तुम्हारा ही है। मेरा मुआवजा तो बस अल्लाह के ऊपर है। और वह हर चीज पर गवाह है। (46-47)

पैग़म्बर के मुआसिरीन (समकालीन) ने पैग़म्बर की दावत का इंकार कर दिया। मगर इनके पीछे जिद और तअस्सुब के सिवा और कुछ न था। हक़ीक़त यह है कि अगर वे जिद और तअस्सुब से ख़ाली होकर सोचते, चाहे अकेले अकेले सोचते, या चन्द आदमी मिलकर इज्तिमाई (सामूहिक) तौर पर ग़ौर करते, तो वे पाते कि उनका पैग़म्बर कोई दीवाना आदमी नहीं है। आपकी साबिक़ा (पहले की) जिंदगी आपकी संजीदगी की गवाही देती। आपका दर्दमंदाना अंदाज बताता कि आप जो कुछ कह रहे हैं वही आपके दिल की आवाज है। आपके कलाम का हकीमाना उस्लूब उसकी सेहत की दाख़िली शहादत (भीतरी साक्ष्य) नजर आता। आपका किसी मुआवजे का तालिब न होना जाहिर करता है कि आपने इस काम को महज अल्लाह की ख़ातिर शुरू किया है न कि जाती तिजारत की ख़ातिर। ग़ैर जानिबदाराना

ग़ौरोफ़िक्र (निष्पक्ष चिंतन) में वे जान लेते कि आपकी बेक़रारी जुनून की बेक़रारी नहीं है बल्कि इसका सबब यह है कि आप जिस ख़तरे से डराने के लिए उठे हैं उसे अपनी आंखों से आता हुआ देख रहे हैं। मगर वे हक़ की दावत के बारे में संजीदा न थे इसलिए ये खुले हुए हक़ाइक़ उन्हें नजर भी न आ सके।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

कहो कि मेरा रब हक़ को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीजों को जानने वाला है। कहो कि हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) न आग़ाज करता है और न इआदा (पुनरावृत्ति)। कहो कि अगर मैं गुमराही पर हूं तो मेरी गुमराही का वबाल मुझ पर है और अगर मैं हिदायत पर हूं तो यह उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की बदौलत है जो मेरा रब मेरी तरफ भेज रहा है। बेशक वह सुनने वाला है, क़रीब है। (48-50)

दुनिया की तख़्लीक़ हक़ (सत्य) हुई है। यहां सारा जोर हक़ की तरफ है। यहां तमाम दलाइल हक़ की ताईद करते हैं। हक़ीक़ते वाक़या के एतबार से यहां बातिल (असत्य) को कोई जोर और कोई दलील हासिल नहीं। ऐसी हालत में यह होना चाहिए कि हक़ यहां हमेशा सरबुलन्द रहे और बातिल यहां सरासर बेवजन होकर रह जाए। मगर अमलन ऐसा नहीं होता। इस दुनिया में हक़ इतना ताक़तवर नहीं कि वह ख़ुद अपने जोर पर बातिल का ख़ात्मा कर दे और बातिल इतना बेवक़अत नहीं कि उसकी बुनियाद पर किसी शख़्स के लिए इज्जत और सरबुलन्दी हासिल करना मुमकिन न हो।

इसकी वजह यह है कि यह दुनिया इम्तेहान की जगह है। यहां आजमाइश का क़ानून जारी है। इसलिए यहां बातिल को भी उभरने का मौक़ा मिल जाता है। मगर यह सूरतेहाल आरजी तौर पर सिर्फ़ इम्तेहान की मुद्दत तक है। क़ियामत आते ही यह ग़ैर वाक़ई सूरतेहाल यकसर ख़त्म हो जाएगी। उस वक़्त तमाम नज़री और अमली जोर सिर्फ़ हक़ की तरफ होगा और बातिल सरासर बेक़ीमत होकर रह जाएगा।

यह वाक़या अपनी कामिल सूरत में क़ियामत में जाहिर होगा। मगर जब अल्लाह चाहता है उसे जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में भी जाहिर कर देता है ताकि लोगों के लिए सबक़ हो। दौरे अव्वल में इस्लाम का ग़लबा इसी क़िस्म का एक जुजई इज़्हार (आंशिक प्रदर्शन) था। चुनांचे जब मक्का फ़तह हुआ और तौहीद को शिर्क के ऊपर बालातरी हासिल हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जबान पर यह आयत थी : 'जाअल हक़्क़ु व जहक़ल बातिलु, इन्नल बातिल कान जहूक़ा०' (हक़ आया और बातिल

मिट गया, बेशक बातिल मिटने ही वाला था। बनी इस्राईल 81)

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

और अगर तुम देखो, जब ये घबराए हुए होंगे। पस वे भाग न सकेंगे और करीब ही से पकड़ लिए जाएंगे। और वे कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाए। और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहां। और इससे पहले उन्होंने उसका इंकार किया। और बिना देखे दूर जगह से बातें फेंकते रहे। और उनकी और उनकी आरजू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ किया गया। वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे। (51-54)

मौजूदा दुनिया में आदमी हक का इंकार करता है तो फौरन उसका अंजाम सामने नहीं आता। यह सूरतेहाल उसे इंकारे हक के मामले में ढीठ बना देती है। वह हक की दावत को संजीदा तवज्जोह के काबिल नहीं समझता। वह हिकारतआमेज (तिरस्कारपूर्ण) अल्फाज में उसका जिक्र करता है। वह बेपरवाही के साथ उसे रद्द कर देता है। वह उस पर इस तरह ग़ैर जिम्मेदाराना अंदाज में तबसिरा करता है जैसे कि वह किसी लिहाज का मुस्तहिक ही नहीं।

मगर जब दुनिया का मौजूदा निजाम ख़त्म होगा तो अचानक सारा मामला बिल्कुल बदल जाएगा। अब आदमी को नजर आएगा कि वही चीज सबसे ज्यादा अहम थी जिसे वह सबसे ज्यादा नजरअंदाज किए हुए था। यह देखकर उसकी सारी अकड़ ख़त्म हो जाएगी। वह उस हक का वालिहाना (आतुरतापूर्ण) एतराफ करने लगेगा जिसे वह दुनिया में किसी तवज्जोह के लायक नहीं समझता था। मगर अब वक्त निकल चुका होगा। उससे कहा जाएगा कि एतराफ की कीमत आलमे ग़ैब (अदृश्य-स्थिति) में थी, आलमे शुहूद (प्रकट स्थिति) में एतराफ की कोई कीमत नहीं।

'शक मुरीब' का मतलब यह है तरद्दुद (दुविधा) में डालने वाला शक। यह मुंकिरीन की नफ्सियाती हालत की तस्वीर है। दुनिया में जो हक उनके सामने पेश किया जा रहा था वह जबान व बयान के एतबार से इतना ताकतवर था कि वह अपने आपको इससे बेबस पाते थे कि दलील के जरिए उसे रद्द कर सकें। मगर यह हक चूंकि उनके जेहनी सांचे के ख़िलाफ था इसलिए वे उसे कुबूल करने पर भी आमादा न हो सके। इस दोतरफा सूरतेहाल ने उन्हें एक किस्म के अंदरूनी ख़लजान (असमंजस) में मुब्तिला रखा। यहां तक कि मौत के फरिश्ते ने आकर वह पर्दा उनकी आंख से हटा दिया जिसे उन्हें ख़ुद अपने हाथ से हटाना था। मगर

वे उसे हटाने में कामयाब न हो सके।

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَأَرْبَعُونَ وَخَمْسُ آيَاتٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا أُولِي أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ مَّا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِن بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾

आयतें-45 **सूरह-35. फातिर** रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ अल्लाह के लिए है, आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला, फरिश्तों को पैग़ामरसां (संदेशवाहक) बनाने वाला जिनके पर हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार। वह पैदाइश में जो चाहे ज्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं। और जिसे वह रोक ले तो कोई उसे खोलने वाला नहीं। और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

फरिश्तों को अल्लाह तआला ने पैग़ाम रसानी के लिए और अपने पैग़ाम की तंफीज (लागू करने) के लिए पैदा किया है। मगर शैतान ने लोगों को सिखाया कि फरिश्ते मुस्तकिल बिज्जात (स्वयं में) हैसियत रखते हैं। वे दुनिया में बरकत और आख़िरत में नजात का जरिया बन सकते हैं। चुनांचे कुछ कौमें लात और मनात जैसे नामों से उनकी फर्जी तस्वीरें बनाकर उनकी इबादत करने लगीं। कुछ कौमों ने उन्हें देवी देवता करार देकर उन्हें पूजना शुरू कर दिया। मौजूदा जमाने में कानूने फित्रत (Law of Nature) की ताजीम भी इसी गुमराही का जदीद (आधुनिक) एडीशन है। मगर हकीकत यह है कि फरिश्ते हों या कानूने फित्रत, सब एक ख़ुदा के महकूम हैं। सब एक ख़ुदा के कारगुजार हैं, चाहे वे दो बाजुओं वाले हों या 600 बाजुओं वाले या 600 करोड़ बाजुओं वाले।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٣﴾ وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ

كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ④

ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक है जो तुम्हें आसमान और जमीन से रिज्क देता हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तो तुम कहां से धोखा खा रहे हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) होने वाले हैं। (3-4)

इंसान अपनी जिंदगी के लिए बेशुमार चीजों का मोहताज है। मसलन रोशनी, पानी, हवा, ख़ुराक, मादनियात (खनिज, धातु) वग़ैरह। इनमें से हर चीज ऐसी है कि उसे वजूद में लाने के लिए कायनाती ताकतों का मुत्तहिदा अमल (संयुक्त-प्रक्रिया) दरकार है। एक ख़ुदा के सिवा कौन है जो इतने बड़े वाक्ये को ज़ुहूर में लाने की ताकत रखता हो। मुश्रिक और मुल्हिद (नास्तिक) लोग भी यह दावा नहीं कर सके कि इन असबाबे हयात की फराहमी एक ख़ुदा के सिवा कोई और कर सकता है। फिर जब इन तमाम चीजों का ख़ालिक और मुंतजिम एक ख़ुदा है तो उसके सिवा दूसरों को माबूद बनाना क्योंकर दुरुस्त हो सकता है।

तारीख़ का यह अजीब तजर्बा है कि जो लोग ख़ुदा के सिवा दूसरों को बड़ाई का मकाम दिए हुए हों वे उन्हें छोड़कर ख़ुदा को अपना बड़ा बनाने पर राजी नहीं होते, चाहे उसकी दावत पैग़म्बराना सतह पर क्यों न दी जा रही हो। इसकी वजह यह है कि लोग हमेशा माने हुए को मानते हैं। जबकि पैग़म्बर पर यकीन करने का मतलब उस वक्त यह होता है कि आदमी न माने हुए को माने। इस किस्म के ईमान को हासिल करने की शर्त यह है कि आदमी ख़ुद अपनी फिक्री (वैचारिक) कुव्वतों को बेदार करे, वह अपनी जाती बसीरत (सूझबूझ) से सच्चाई को दरयाफ्त करे। और बिलाशुबह यह किसी इंसान के लिए हमेशा सबसे ज्यादा मुश्किल काम रहा है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ⑤ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑥ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑦

ऐ लोगो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। तो दुनिया की जिंदगी तुम्हें धोखे में न डाले। और न वह बड़ा धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे दुश्मन ही समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है कि वे दोजख़ वालों में से हो जाएं। जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए सख़्त अजाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए माफी है और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (5-7)

ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों के जरिए जिंदगी की नौइयत के बारे में जो ख़बर दी है वह बजाहिर एक ख़्याली बात मालूम होती है। क्योंकि आदमी फौरन उनसे दो चार नहीं होता। इसके बरअक्स दुनिया की चीजें हकीकी नजर आती हैं। क्योंकि आदमी आज ही उनसे दो चार हो रहा है। मौत और जलजला और हादसात आदमी को चौकन्ना करते हैं। यह गोया कियामत से पहले कियामत की इत्तिला हैं। मगर शैतान फौरन ही लोगों के जेहन को यह कहकर फेर देता है कि ये सब असबाब के तहत पेश आने वाले वाकेयात हैं न कि ख़ुदाई मुदाख़लत के तहत। मगर इस किस्म का हर ख़्याल शैतान का फरेब है। वह दिन आना लाजिमी है जबकि झूठ और सच में तफ़रीक (विभेद) हो। जबकि अच्छे लोगों को उनकी अच्छाई का इनाम मिले और बुरे लोगों को उनकी बुराई की सजा दी जाए।

أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرَاتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ⑧

क्या ऐसा शख़्स जिसे उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगे, पस अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। पस उन पर अफसोस करके तुम अपने को हल्कान (व्यथित) न करो। अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (8)

अल्लाह तआला ने हर आदमी को यह सलाहियत दी है कि वह सोचे और हक और नाहक के दर्मियान तमीज कर सके। जो आदमी अपनी इस फित्री सलाहियत को इस्तेमाल करता है वह हिदायत पाता है। और जो शख़्स इस फितरी सलाहियत को इस्तेमाल नहीं करता वह हिदायत नहीं पाता।

आदमी के सामने जब हक आए तो फौरन उसके जेहन को झटका लगता है। उस वक्त उसके लिए दो रास्ते होते हैं। अगर वह हक का एतराफ कर ले तो उसका जेहन सही सम्त मे चल पड़ता है। वह हक का मुसाफिर बन जाता है। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि कोई मस्लेहत या कोई नफ्सियाती पेचीदगी उसके सामने आए और वह उससे मुतअस्सिर होकर हक का एतराफ करने से रुक जाए तो उसका जेहन अपने अदम एतराफ (अस्वीकार) को जाइज साबित करने के लिए बातें गढ़ना शुरू करता है। वह अपने बुरे अमल को अच्छा साबित करने की कोशिश करता है। यह एक जेहनी बीमारी है। और जो लोग इस किस्म की जेहनी बीमारी में मुब्तिला हो जाएं वे कभी हक का एतराफ नहीं कर पाते। यहां तक कि इसी हाल में मर कर वे ख़ुदा के यहां पहुंच जाते हैं। ताकि अपने किए का अंजाम पाएं।

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَٰلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ﴿١٠﴾

और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं। फिर हम उसे एक मुर्दा देस की तरफ ले जाते हैं। पस हमने उससे उस जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद फिर जिंदा कर दिया। इसी तरह होगा दुबारा जी उठना। जो शख़्स इज्जत चाहता हो तो इज्जत तमामतर अल्लाह के लिए है। उसकी तरफ पाकीजा (पावन) कलाम चढ़ता है और अमले सालेह (सत्कर्म) उसे ऊपर उठाता है। और जो लोग बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अजाब है। और उनकी तदबीरें नाबूद (विनष्ट) होकर रहेंगी। (9-10)

मौजूदा दुनिया आख़िरत की तमसील है। बारिश एक मालूम वाकये की सूरत में नामालूम वाकये को मुमसिल कर रही है। बारिश क्या है। बारिश पूरी कायनात के एक मुत्तहिदा अमल का नतीजा है। सूरज और हवा और समुद्र और कशिश और दूसरे बहुत से आलमी असबाब कामिल हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ अमल करते हैं। इस तरह वह बारिश जुहूर में आती है जो ख़ुश्क जमीन पर जिंदगी पैदा कर दे।

बारिश का यह अमल साबित करता है कि कायनात का नाजिम पूरी कायनात पर कामिल इख़्तियार रखता है। वह एक वाकये को अपने मंसूबे के तहत जुहूर में लाता है। और फिर उसके मिटने के बाद उसे दुबारा जाहिर कर देता है, चाहे उसे दुबारा जाहिर करने के लिए पूरी कायनात को मुतहर्रिक (सक्रिय) करना पड़े।

मुर्दा जमीन को दुबारा सरसब्ज करना, और मुर्दा इंसान को दुबारा जिंदा करना, दोनों यकसां (समान) दर्जे के वाकेयात हैं। फिर जब पहला वाकया मुमकिन साबित हो जाए तो इसके बाद उसी के मुमासिल (समरूप) दूसरे वाकये का मुमकिन होना अपने आप साबित हो जाता है।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की जगह है, इसलिए यहां इज्जत वक्ती तौर पर एक ग़ैर मुस्तहिक को भी मिल जाती है। मगर आख़िरत में सारी इज्जत उन लोगों का हिस्सा होगी जो वाकई इसका इस्तहक़ाक (अधिकार) रखते हों। इस इस्तहक़ाक का मेयार कलमा तय्यिबा और अमले सालेह (नेक काम) है। यानी अल्लाह को इस तरह पाना कि वही आदमी की याद बन जाए जिसमें वह जिए। वही उसका अमल बन जाए जिसमें वह अपनी कुव्वतें सर्फ करे। जो लोग इस तरह अपनी जिंदगी की तामीर करें ख़ुदा उनका मददगार बन जाता है और जिन लोगों का ख़ुदा मददगार बन जाए उन्हें जेर करने वाला कोई नहीं।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई औरत न हामिला (गर्भवती) होती है और न जन्म देती है मगर उसके इल्म से। और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है मगर वह एक किताब में दर्ज है। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (11)

पहला इंसान जमीनी अज्जा (तत्वों) से बनाया गया। फिर ख़ुदा ने इंसान को एक बूंद में बशक्ल बीज रख दिया। फिर इंसानों को औरत और मर्द में तक्सीम करके उनके जोड़े से इंसानी नस्ल चलाई। यह वाकया ख़ुदा की बेपनाह कुदरत को बताता है।

फिर एक बच्चा जब पेट में परवरिश पाना शुरू होता है तो वह पाता है कि पेट के अंदर वे तमाम मुवाफ़िक असबाब बग़ैर तलब के मौजूद हैं जो उसे नागुजीर (अपरिहार्य) तौर पर मत्लूब थे। यह वाकया मजीद साबित करता है कि बच्चे को पैदा करने वाला बच्चे की जरूरतों को पहले से जानता था वर्ना वह पेशगी तौर पर इसका इतना मुकम्मल इंतिजाम किस तरह करता।

यही मामला उम्र का है। कोई शख़्स इस पर कादिर नहीं कि वह अपनी मर्जी के मुताबिक अपनी उम्र का तअय्युन कर सके। ऐसा मालूम होता है कि उम्र का मामला तमामतर किसी ख़ारजी (वाह्य) हस्ती के हाथ में है। वह जिसे चाहता है कम उम्र में उठा लेता है और जिसे चाहता है लम्बी उम्र दे देता है। इन सारे वाकेयात में एक ख़ुदा के सिवा किसी का कोई दख़ल नहीं। फिर कैसे दुरुस्त हो सकता है कि आदमी एक ख़ुदा के सिवा किसी और से अंदेशा रखे, वह किसी और से उम्मीदें कायम करे।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾

إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۖ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

और दोनों दरिया यकसां (समान) नहीं। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए ख़ुशगवार। और यह खारी कड़ुवा है। और तुम दोनों से ताजा गोश्त खाते हो और जीनत की चीज निकालते हो जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो जहाजों को कि वे उसमें फाड़ते हुए चलते हैं। ताकि तुम उसका फज्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। वह दाख़िल करता है रात को दिन में और वह दाख़िल करता है दिन को रात में। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र (सक्रिय) कर दिया है। हर एक चलता है एक मुकर्रर वक्त के लिए। यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है। और उसके सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे। और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फरयादरसी नहीं कर सकते। और वे कियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इंकार करेंगे। और एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें नहीं बता सकता। (12-14)

जमीन पर पानी का अजीमुश्शान ज़ख़ीरा है, वसीअ (विस्तृत) समुद्रों में खारी पानी की सूरत में, और दरियाओं और झीलों और चशमों में मीठे पानी की सूरत में। यह पानी आदमी के लिए बेशुमार फायदों का जरिया है। वह पीने के लिए और आबपाशी (सिंचाई) के लिए इस्तेमाल होता है। इससे आबी जानवर हासिल होते हैं जो इंसान के लिए कीमती ख़ुराक हैं। धरती के तीन चौथाई हिस्से में फैले हुए समुद्र गोया वसीअ आबी (जलीय) सड़कें हैं जिन्होंने सफर और बारबरदारी (यातायात) को बेहद आसान कर दिया है। समुद्रों से मोती और दूसरी कीमती चीजें हासिल होती हैं वग़ैरह।

फिर वसीअ ख़ला में ख़ुदा ने सूरज और चांद को सक्रिय कर रखा है जिनमें बेशुमार फायदे हैं। उसने जमीन को सूरज के गिर्द अपने महवर (धुरी) पर कामिल हिसाब के साथ घुमा रखा है जिससे रात और दिन पैदा होते हैं। इस तरह के बेशुमार कायनाती इंतिजामात हैं जो सिर्फ ख़ुदा के कायम करदा हैं। फिर ख़ुदा के सिवा कौन है जो इंसान के जज्बए शुक्र का मुस्तहिक हो। अथाह ताकतें रखने वाला ख़ुदा इंसान की हाजतें पूरी कर सकता है या वे मफरूजा (काल्पनिक) माबूद जो किसी किस्म का कोई इख़्तियार नहीं रखते।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ

إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾

ऐ लोगो, तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो बेनियाज (निस्पृह) है तारीफ वाला है। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से जरा भी न उठाया जाएगा, अगरचे वह करीबी संबंधी क्यों न हो। तुम तो सिर्फ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज कायम करते हैं। और जो शख़्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है और अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है। (15-18)

मौजूदा दुनिया में इंसान इंतिहाई हद तक ग़ैर महफूज (Vulnerable) है। इंसान का सारा मामला फित्रत के ख़ास तवाजुन (संतुलन) पर मुंहसिर है। यह तवाजुन बाकी न रहे तो एक लम्हे में इंसानी जिंदगी का ख़ात्मा हो जाए।

सूरज अगर अपने मौजूदा फासले को ख़त्म करके जमीन के करीब आ जाए तो अचानक तमाम इंसान जल भुनकर ख़ाक हो जाएं। जमीन के अंदर इसका बड़ा हिस्सा बेहद गर्म माद्दे की सूरत में है। इस गर्म माद्दे की हरकत ऊपर की तरफ हो जाए तो सतह जमीन पर ऐसा जलजला पैदा हो कि तमाम आबादियां खंडहर बनकर रह जाएं। ऊपरी फजा से हर वक्त शहाबी पत्थर (Meteors) बरसते रहते हैं। अगर मौजूदा इंतिजाम बिगड़ जाए तो ये शहाबी पत्थर एक ऐसी संगबारी की सूरत इख़्तियार कर लें जिससे किसी हाल में भी बचाव मुमकिन न हो। इस तरह के बेशुमार हलाकतख़ेज इम्कानात हर वक्त इंसान को घेरे में लिए हुए हैं। हकीकत यह है कि इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो मुकम्मल तौर पर मोहताज है। इंसान को ख़ुदा की जरूरत है न कि ख़ुदा को इंसान की जरूरत।

कियामत का बोझ ख़ुद अपने गुनाहों का बोझ होगा न कि ईंट पत्थर का बोझ। ईंट पत्थर के बोझ में एक शख़्स किसी दूसरे शख़्स का हिस्सेदार बन सकता है मगर ख़ुद अपने बुरे अमल से जो रुसवाई और तकलीफ किसी शख़्स को लाहिक हो वह इंतिहाई जाती नौइयत का अजाब होता है। इसमें किसी दूसरे के लिए हिस्सेदार बनने का सवाल नहीं।

हकीकत निहायत वाजेह है मगर हकीकत को वही शख़्स समझता है जो उसे समझना चाहे। जो शख़्स इस बारे में संजीदा ही न हो कि हकीकत क्या है और बेहकीकत क्या, उसे कोई बात समझाई नहीं जा सकती।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا

الْحَرُورُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنتَ
بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾ إِنْ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَ
نَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾ وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَخَذْتُ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं। और न अंधेरा और न उजाला। और न साया और न धूप। और जिंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे वह चाहता है। और तुम उन्हें सुनाने वाले नहीं बन सकते जो क़ब्रों में हैं। तुम तो बस एक ख़बरदार करने वाले हो। हमने तुम्हें हक (सत्य) के साथ भेजा है, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं। उन्होंने भी झुठलाया। उनके पास उनके पैग़म्बर खुले दलाइल और सहीफे (ग्रंथ) और रोशन किताब लेकर आए। फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ उनके ऊपर मेरा अजाब। (19-26)

यह एक हकीकत है कि जो उम्मीद रोशनी से की जा सकती है वह तारीकी से नहीं की जा सकती। इसी तरह साये से जो चीज मिलेगी वह धूप से मिलने वाली नहीं। यही मामला इंसान का है। इंसानों में कुछ आंख वाले होते हैं और कुछ अंधे होते हैं। आंख वाला फौरन अपने रास्ते को देखकर उसे पहचान लेता है। मगर जो अंधा हो वह सिर्फ भटकता फिरेगा। उसे कभी अपने रास्ते की पहचान नहीं हो सकती।

इसी तरह अंदरूनी मअरफत के एतबार से भी दो किस्म के लोग होते हैं। एक जानदार और दूसरे बेजान। जानदार इंसान वह है जो बातों को उसकी गहराई के साथ देखता है। जो लफ़्जी फरेब का पर्दा फाड़कर मआनी का इदराक करता है। जो सतही पहलुओं से गुजर कर हकीकते वाकये को जानने की कोशिश करता है। जो चीजों को उनके जौहर के एतबार से परखता है न कि महज उनके जाहिर के एतबार से। जिसकी निगाह हमेशा अस्ल हकीकत पर रहती है न कि ग़ैर मुतअल्लिक मूशिगाफियों (कुतर्कों) पर। जो इसे सहन नहीं कर सकता कि सच्चाई को जान लेने के बाद वह अपने आपको उससे वाबस्ता न करे। यही जानदार लोग हैं। और यही वे लोग हैं जिन्हें मौजूदा दुनिया में हक को क़ुबूल करने की तौफ़ीक मिलती है। और जो लोग इसके बरअक्स सिफात रखते हों वे मुर्दा इंसान हैं। वे इम्तेहान की इस दुनिया में कभी क़ुबूले हक की तौफ़ीक नहीं पाते। वे हक की दावत के मुक़ाबले में अंधे बने रहते हैं। यहां तक कि मर कर ख़ुदा के यहां चले जाते हैं ताकि अपने अंधेपन का अंजाम भुगतें।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَ
مِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ
النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ
عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे मुख़्तलिफ रंगों के फल पैदा कर दिए। और पहाड़ों में भी सफेद और सुर्ख़ मुख़्तलिफ रंगों के टुकड़े हैं और गहरे स्याह भी। और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी मुख़्तलिफ रंग के हैं। अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। (27-28)

बादल से एक ही पानी बरसता है मगर उससे मुख़्तलिफ किस्म की चीजें उगती हैं। अच्छे दरख़्त भी और झाड़ झंकाड़ भी। इसी तरह एक ही माद्दा है जो पहाड़ों की सूरत में जमा हुआ होता है मगर उनमें कुछ सुर्ख़ व सफेद हैं और कुछ बिल्कुल काले। इसी तरह जानदार भी एक ग़िजा खाते हैं। मगर उनमें से कोई इंसान के लिए कारआमद है और कोई बेकार।

इससे मालूम हुआ कि फैज (प्रदत्तता) चाहे आम हो मगर उससे फ़ायदा हर एक को उसकी अपनी इस्तेदाद (सामर्थ्य) के मुताबिक पहुंचता है। यही मामला इंसान का भी है। हक की दावत की सूरत में ख़ुदा की जो रहमत बिखेरी जाती है वह अगरचे बजाते ख़ुद एक होती है मगर मुख़्तलिफ इंसान अपने अंदरूनी मिजाज के मुताबिक उससे मुख़्तलिफ किस्म का तास्सुर क़ुबूल करते हैं। कोई शख़्स हक की दावत में अपनी रूह की ग़िजा पा लेता है। वह फौरन उसे क़ुबूल करके अपने आपको उससे वाबस्ता कर देता है और किसी की नफ्सियात उसके लिए हक को मानने में रुकावट बन जाती है। वह उससे बिदकता है, यहां तक कि उसका मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

हक की दावत जिस शख़्स के लिए उसके दिल की आवाज साबित हो वही इल्म वाला इंसान है। उसके अंदर फ़ितरत की ख़ुदाई रोशनी ज़िंदा थी। इसलिए उसने हक के जाहिर होते ही उसे पहचान लिया। इसके मुकाबले में वे लोग जाहिल हैं जो अपनी फितरत की रोशनी पर पर्दा डाले हुए हों और जब हक उनके सामने बेनक़ाब हो तो उसे पहचानने में नाकाम रहें।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن

فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मांद न होगी ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र दे। और उनके लिए अपने फ़ज़्ल से और ज्यादा कर दे। बेशक वह बख़्शने वाला है, क़द्रदां है। और हमने तुम्हारी तरफ़ जो किताब 'वही' (प्रकाशना) की है वह हक़ है, उसकी तस्दीक करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है। बेशक अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है। (29-31)

इल्म वाला वह है जो मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) वाला हो। और जिस शख़्स को मअरफ़त हासिल हो जाए वह ख़ुदा की किताब को अपना फ़िक्री रहबर बना लेता है। वह अल्लाह का इबादतगुजार बंदा बन जाता है। इंसानों के हक में वह इतना महरबान हो जाता है कि अपनी महनत की कमाई में से उनके लिए भी हिस्सा लगाता है। उसके अंदर यह हौसला पैदा हो जाता है कि हमह-तन (पूर्णतः) अपने आपको ख़ुदा के काम में लगा दे और इस पर कानेअ (संतुष्ट) रहे कि उसका इनाम उसे आख़िरत में दिया जाएगा।

कुरआन की सदाक़त का एक सुबूत यह भी है कि वह ऐन उन पेशीनगोइयों के मुताबिक है जो पिछली किताबों में इससे पहले आ चुकी थीं। अगर कोई शख़्स संजीदा हो तो यही वाक्या उसके लिए कुरआन पर ईमान लाने के लिए काफ़ी हो जाए।

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَ
مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ
فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝
الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا
لُغُوْبٌ ۝

फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया। पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफ़ीक़ से भलाइयों में सबक़त

(अग्रसरता) करने वाले हैं। यही सबसे बड़ा फ़ज़्ल है। हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे, वहां उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां उनका लिबास रेशम होगा। और वे कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे ग़म को दूर किया। बेशक हमारा रब माफ करने वाला, क़द्र करने वाला है। जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से आबाद रहने के घर में उतारा, इसमें हमें न कोई मशक़्क़त पहुंचेगी और न कभी थकान लाहिक होगी। (32-35)

हज़रत याक़ूब हज़रत इब्राहीम के पोते थे। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम से लेकर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम तक तमाम पैग़म्बर बनी इस्राईल की नस्ल में पैदा होते रहे। इस तरह तकरीबन दो हजार साल तक पैग़म्बरी का सिलसिला यहूद की नस्ल में जारी रहा। मगर बाद के दौर में यहूद इस काबिल न रहे कि वे किताबे इलाही के हामिल (धारक) बन सकें। चुनांचे दूसरी जिंदा कौम (बनू इस्माईल) को किताबे इलाही का हामिल बनने के लिए मुंतख़ब किया गया। बनू इस्माईल में पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश इसी इलाही फैसले की तामील थी। इस आयत में 'मुंतख़ब बंदों' से मुराद यही बनू इस्माईल हैं।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब बनू इस्माईल के सामने कुरआन पेश किया तो उनमें तीन किस्म के लोग निकले। एक वे जो उसके ख़िलाफ़ मुख़ालिफ़ बनकर खड़े हो गए। दूसरे वे जिन्होंने दर्मियानी राह इख़्तियार की। तीसरा गिरोह आगे बढ़ने वालों का था। यही वे लोग हैं जिन्होंने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देकर इस्लाम की अजीम तारीख़ बनाई।

कुरआन का साथ देने के लिए उन्हें हर किस्म की राहत से महरूम हो जाना पड़ा। इसके नतीजे में उनकी जिंदगी अमलन सब्र और मशक़्क़त की जिंदगी बन गई। इस कुर्बानी की कीमत उन्हें आख़िरत में इस तरह मिलेगी कि ख़ुदा उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जहां वे हमेशा के लिए ग़म और तकलीफ से महफूज़ हो जाएंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ
مِّنْ عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ
جَاۗءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝

और जिन्होंने इंकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनकी कज़ा! आएगी कि वे मर जाएं और न दोज़ख़ का अजाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर मुंकिर को ऐसी ही सजा देते हैं। और वे लोग उसमें चिल्लाएंगे। ऐ हमारे रब हमें निकाल ले।

हम नेक अमल करेंगे, उससे मुख़्तलिफ जो हम किया करते थे। क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी कि जिसे समझना होता वह समझ सकता। और तुम्हारे पास डराने वाला आया। अब चखो कि जालिमों का कोई मददगार नहीं। (36-37)

दुनिया में हक का इंकार करने वाले आख़िरत में हक का मुकम्मल एतराफ करेंगे। मगर यह एतराफ उनके कुछ काम न आएगा। क्योंकि आख़िरत का एतराफ मजबूर इंसान का एतराफ है। और अल्लाह तआला को जो एतराफ मत्लूब है वह इख़्तियारी एतराफ है न कि जबरी एतराफ।

إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

अल्लाह आसमानों और जमीन के ग़ैब (अप्रकट) को जानने वाला है। बेशक वह दिल की बातों से भी बाख़बर है। वही है जिसने तुम्हें जमीन में आबाद किया। तो जो शख़्स इंकार करेगा उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार, उनके रब के नजदीक, नाराजी ही बढ़ने का सबब होता है। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार ख़सारे (घाटे) ही में इजाफा करेगा। (38-39)

इस आयत में ख़लीफा से मुराद पिछली कौमों का ख़लीफा बनना है। 'तुम्हें जमीन में ख़लीफा बनाया' का मतलब है पिछली कौमों के गुजरने के बाद तुम्हें उसकी जगह जमीन में आबाद किया। अल्लाह तआला का यह तरीका है कि वह एक कौम को जमीन में बसने और अमल करने का मौका देता है। फिर जब वह कौम अपनी नाअहली साबित कर देती है तो उसे हटाकर दूसरी कौम को उसकी जगह ले आता है। इस तरह जमीन पर एक के बाद एक कौम की आबादकारी का सिलसिला जारी रहेगा। यहां तक कि कियामत आ जाए।

मौजूदा जमाने में फित्रत के जो कवानीन (सिद्धांत) दरयाफ्त हुए हैं वे बताते हैं कि यहां इसका इम्कान है कि अंधेरे में किसी चीज का फोटो लिया जाए। बजाहिर न सुनाई देने वाली आवाज को मशीन की मदद से काबिले समाअत (सुनने योग्य) बनाया जा सके। तख़्लीक में इस तरह के इम्कानात ख़ालिक की कुदरत का तआरुफ हैं। इससे मालूम होता है कि इस कायनात का ख़ालिक एक ऐसी हस्ती है जो ग़ैब को जाने और दिल के अंदर छुपी हुई बात को सुन सके। गोया इंसान का मामला एक ऐसे अलीम और कदीर ख़ुदा से है जिससे न किसी जुर्म को छुपाया जा सकता और न यही मुमकिन है कि उसके फैसले को बदलवाया जा सके।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ

الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

कहो, जरा तुम देखो अपने उन शरीकों को जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो। मुझे दिखाओ कि उन्होंने जमीन में से क्या बनाया है। या उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है। या हमने उन्हें कोई किताब दी है तो वे उसकी किसी दलील पर हैं। बल्कि ये जालिम एक दूसरे से सिर्फ धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं। बेशक अल्लाह ही आसमानों और जमीनों को थामे हुए है कि वे टल न जाएं। और अगर वे टल जाएं तो उसके सिवा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता। बेशक वह तहम्मुल (उदारता) वाला है, बख़्शने वाला है। (40-41)

कायनात की तख़्लीक और अथाह ख़ला में बेशुमार अजरामे समावी (आकाशीय रचनाओं) का निजाम हैबतनाक हद तक अजीम है। यह बिल्कुल नाकाबिले कयास है कि इस अजीम कारनामे को जुज़्ई (आंशिक) या कुल्ली तौर पर उन हस्तियों में से किसी की तरफ मंसूब किया जा सके जिन्हें लोग बतौर ख़ुद माबूद बनाकर पूजते हैं। इसी तरह इसका भी कोई सुबूत नहीं कि ख़ुदा ने ख़ुद यह ख़बर दी हो कि कोई और है जो उसके साथ ख़ुदाई में शरीक है।

हकीकत यह है कि ग़ैर अल्लाह की परस्तिश का सारा मामला सिर्फ फरेब पर कायम है। इस किस्म का फरेब उसी वक्त तक चलेगा जब तक कियामत न आए। कियामत के आते ही उनका इस तरह ख़ात्मा हो जाएगा जैसे कि उनका कोई वजूद ही न था।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾ اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿٤٣﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

और उन्होंने अल्लाह की ताकीदी कसमें खाई थीं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे हर एक उम्मत से ज्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले होंगे। फिर जब उनके पास एक डराने वाला आया तो सिर्फ उनकी बेजारी (अरुचि) ही को तरक्की हुई, जमीन में अपने को बड़ा समझने की वजह से, और उनकी बुरी तदबीरों को। और बुरी तदबीरों का वबाल तो बुरी तदबीर करने वालों ही पर पड़ता है। तो क्या ये उसी दस्तूर के मुंतजिर हैं जो अगले लोगों के बारे में जाहिर हुआ। पस तुम ख़ुदा के दस्तूर में न कोई तब्दीली पाओगे और न ख़ुदा की दस्तूर को टलता हुआ पाओगे। क्या ये लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ अंजाम उन लोगों का जो इनसे पहले गुजरे हैं, और वे क़ुव्वत (शक्ति) में इनसे बढ़े हुए थे। और ख़ुदा ऐसा नहीं कि कोई चीज उसे आजिज (निर्बल) कर दे, न आसमानों में और न जमीन में। बेशक वह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है। (42-44)

अरब के लोग जब सुनते कि यहूद ने और दूसरी कौमों ने अपने नबियों की नाफ़रमानी की तो वे पुरजोश तौर पर कहते कि अगर ऐसा हो कि हमारे दर्मियान कोई नबी आए तो हम उसे पूरी तरह मानें और उसकी इताअत करें। मगर जब उनके दर्मियान एक पैग़म्बर आया तो वे उसके मुख़ालिफ बन गए।

यह नफ्सियात किसी न किसी शक्ल में तमाम लोगों में पाई जाती है। इस दुनिया में हर आदमी का यह हाल है कि वह अपने को हकपसंद के रूप में जाहिर करता है। वह कहता है कि जब भी कोई सही बात उसके सामने आएगी तो वह जरूर उसे मान लेगा। मगर जब हक खुले-खुले दलाइल के साथ आता है तो वह उसे नजरअंदाज कर देता है। यहां तक कि उसका मुख़ालिफ बन जाता है।

इसकी वजह यह है कि इंकारे हक किसी ख़ास कौम की ख़ुसूसियत नहीं। वह इंसानी नफ्सियात की आम ख़ुसूसियत है। हक को मानना अक्सर हालात में अपनी बड़ाई को ख़त्म करने के हममअना होता है। आदमी अपनी बड़ाई को खोना नहीं चाहता। इसलिए वह हक को मानने के लिए भी तैयार नहीं होता। वह भूल जाता है कि हक का इंकार जरूर उसके बस में है, मगर हक के इंकार के अंजाम से अपने आपको बचाना हरगिज उसके बस में नहीं।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो जमीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता। लेकिन वह उन्हें एक मुकर्रर मुद्दत तक मोहलत देता है। फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को ख़ुद देखने वाला है। (45)

इंसान को दुनिया में अमल की आजादी दी गई थी। मगर उसने उसका ग़लत इस्तेमाल

किया। यह ग़लतियां इतनी ज्यादा हैं कि अगर इंसान को उसकी ग़लतकारियों पर फौरन पकड़ा जाने लगे तो जमीन में इंसानी नस्ल का ख़ात्मा हो जाए। मगर इंसान की आजादी बराए इम्तेहान है। और इस इम्तेहान की एक मुद्दत मुकर्रर है। एक फर्द (व्यक्ति) की मुद्दत मौत तक है और मज्मूई तौर पर पूरी इंसानियत की मुद्दत कियामत तक। इसी बिना पर इंसान की नस्ल जमीन पर बाकी है। ताहम जिस तरह यह एक हकीकत है कि अल्लाह तआला मोहलत की मुकर्रर मुद्दत से पहले किसी को नहीं पकड़ता। इसी तरह यह भी एक संगीन हकीकत है कि मोहलत की मुकर्रर मुद्दत गुजर जाने के बाद वह जरूर इंसान को पकड़ेगा। कोई शख़्स उसकी पकड़ से बचने वाला नहीं।

سُورَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يس ﴿١﴾ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤﴾ تَنزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٥﴾ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ﴿٦﴾

आयतें-83 | **सूरह-36. या० सीन०** | रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

या० सीन०। कसम है बाहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) क़ुरआन की। बेशक तुम रसूलों में से हो। निहायत सीधे रास्ते पर। यह ख़ुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व रहीम (दयावान) की तरफ से उतारा गया है। ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके अगलों को नहीं डराया गया। पस वे बेख़बर हैं। (1-6)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुदा के पैग़म्बर होने का सुबूत ख़ुद वह क़ुरआन हकीम है जिसे आपने यह कहकर पेश किया कि यह मेरे ऊपर ख़ुदा की तरफ से उतरा है। क़ुरआन के हकीम होने का मतलब यह है कि वह सिराते मुस्तकीम का दाओ है। यानी वह उस रास्ते की तरफ रहनुमाई कर रहा है जो बिल्कुल सीधा और सच्चा है। इसकी कोई बात अक्ल व फ़ितरत से टकराने वाली नहीं। क़ुरआन के नुज़ूल (अवतरण) को अब ढेड़ हजार साल हो रहे हैं। मगर आज तक इसमें किसी ख़िलाफे अक्ल या ख़िलाफे फ़ितरत बात की निशानदेही न की जा सकी। क़ुरआन की यही इम्तियाजी सिफत (विशिष्टता)था उसके किताबे इलाही होने की सबसे बड़ी दलील है।

'ताकि तुम कौम को डरा दो' में कौम से मुराद बनू इस्माईल हैं। हर नबी अव्वलन अपनी

कौम के लिए आता है। इसी तरह पैग़म्बरे इस्लाम की अव्वलीन मुख़ातब भी उनकी अपनी कौम थी। मगर चूंकि आपके बाद नुबुव्वत ख़त्म हो गई इसलिए अब कियामत तक के लिए आपकी नुबुव्वत का तसलसुल जारी है। फ़र्क यह है कि बनू इस्माईल पर आपने बराहेरास्त हुज्जत तमाम (आह्वान की पूर्ति) की और अपके बाद मुख़्तलिफ कौमों पर दावत और इतमामेहुज्जत का काम आप की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में आप की उम्मत को अंजाम देना है।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ﴿١١﴾

उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएंगे। हमने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिए हैं सो वे ठोडियों तक हैं, पस उनके सिर ऊंचे हो रहे हैं। और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी। फिर हमने उन्हें ढांक दिया तो उन्हें दिखाई नहीं देता। और उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे ईमान नहीं लाएंगे। तुम तो सिर्फ उस शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और ख़ुदा से डरे, बिना देखे। तो ऐसे शख़्स को माफी की और बाइज़्ज़त सवाब की बशारत (शुभ सुचना) दे दो। (7-11)

आदमी की गर्दन में तौक भरा हुआ हो तो उसका सिर उठा रह जाएगा और वह नीचे की चीज को न देख सकेगा। यह उन मग़रूर (अभिमानी) लोगों की तस्वीर है जो अपनी बड़ाई में इतना गुम हों कि अपने से बाहर की कोई हकीकत उन्हें दिखाई ही न दे। ऐसे लोगों को कभी हक के एतराफ की तौफ़ीक हासिल नहीं होती।

हिदायत पाने के लिए सबसे ज्यादा अहमियत इस बात की है कि आदमी के अंदर एतराफ का माद्दा हो, उसे ख़ुदा के सामने हाजिरी का खटका लगा हुआ हो। वह कुल्ली सदाक़त से कम किसी चीज पर राजी न हो सके। यही वे लोग हैं जो हक के जाहिर होते ही उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं और इसके नतीजे में अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम पाते हैं।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ﴿١٢﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا

الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾

यकीनन हम मुर्दों को जिंदा करेंगे। और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा। और हर चीज हमने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में और उन्हें बस्ती वालों की मिसाल सुनाओ, जबकि उसमें रसूल आए। (12-13)

जदीद तहकीकात ने बताया कि इंसान अपने मुंह से जो आवाज निकालता है वह नक़्श की सूरत में फ़जा में महफ़ूज हो जाती है। इसी तरह इंसान जो अमल करता है उसका अक्स (बिंब) भी हरारती (ताप) लहरों की शक्ल में मुस्तकिल तौर पर दुनिया में मौजूद हो जाता है। गोया इस दुनिया में हर आदमी की वीडियो रिकॉर्डिंग हो रही है। यह तजर्बा बताता है कि इस दुनिया में यह मुमकिन है कि इंसान के इल्म के बग़ैर और उसके इरादे से आजाद उसका कौल और अमल मुकम्मल तौर पर महफूज किया जा रहा हो और किसी भी लम्हा उसे दोहराया जा सके।

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ ﴿١٤﴾ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿١٥﴾ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾ قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ ۚ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ﴿١٩﴾

जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे बशर (इंसान) हो और रहमान ने कोई चीज नहीं उतारी है, तुम महज झूठ बोलते हो। उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं। और हमारे जिम्मे तो सिर्फ वाज़ेह तौर पर पहुंचा देना है। लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें मनहूस समझते हैं, अगर तुम लोग बाज न आए तो हम तुम्हें संगसार करेंगे और तुम्हें हमारी तरफ से सख़्त तकलीफ पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुम्हें नसीहत की गई। बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (14-19)

बस्ती से मुराद ग़ालिबन मिस्र की बस्ती है। यहां बयकवक्त दो पैग़म्बर (हजरत मूसा

और हजरत हारून) लोगों को ख़बरदार करने के लिए भेजे गए। मगर उन्होंने इंकार किया। फिर उनकी अपनी कौम से तीसरा शख़्स उठा और उसने दोनों रसूलों की ताईद की। उस तीसरे शख़्स से मुराद ग़ालिबन वही मर्दे मोमिन है जिसका जिक्र कुरआन में सूरह मोमिन में तफ़्सील से आया है। (मोमिन : 28)

हर जमाने में आदमी के लिए सबसे ज्यादा तल्ख़ चीज यह रही है कि उसे ऐसी नसीहत की जाए जो उसके मिजाज के ख़िलाफ हो। ऐसी बात सुनकर आदमी फौरन बिगड़ जाता है। नतीजा यह होता है कि वह मोअतदिल (सहज) जेहन के साथ उस पर ग़ौर नहीं कर पाता। वह उसे दलील के एतबार से नहीं जांचता बल्कि जिद और नफरत के तहत उसके ख़िलाफ ग़ैर मुतअल्लिक बातें कहता रहता है। किसी बात को दलील से जांचना हद के अंदर रहना है और बेदलील मुख़ालिफत करना हद से बाहर निकल जाना।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝٢٠ اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۝٢١

और शहर के दूर मकाम से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, ऐ मेरी कौम रसूलों की पैरवी करो। उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं मांगते। और वे ठीक रास्ते पर हैं। (20-21)

दोनों रसूल उस वक्त बजाहिर बिल्कुल बेजोर थे। मगर तीसरे शख़्स ने अपने आपको उन्हीं के साथ वाबस्ता किया। हक और नाहक के मुकाबले में आदमी को हक का साथ देना पड़ता है, चाहे वह ताकतवर के मुकाबले में कमजोर का साथ देने के हममअना क्यों न हो।

तीसरे शख़्स ने कौम के लोगों से कहा कि ये रसूल तुमसे अज्र नहीं मांगते, और वे हिदायतयाब भी हैं। इससे मालूम हुआ कि सिर्फ बेग़रजी आदमी के हिदायतयाब होने की काफी दलील नहीं है। बेग़रज और नेक नीयत होने के बावजूद आदमी की बात दलील के मेयार पर परखी जाएगी और वह उसी वक्त सही समझी जाएगी जबकि वह दलील के मेयार पर पूरी उतरे।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٢٢ أَأَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ آلِهَةً إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ۝٢٣ إِنِّي إِذًا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝٢٤ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ۝٢٥ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝٢٦ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝٢٧

और मैं क्यों न इबादत करूं उस जात की जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाऊं। अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ पहुंचाना चाहे तो उनकी सिफारिश मेरे कुछ काम न आएगी और

न वे मुझे छुड़ा सकेंगे। बेशक उस वक्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूंगा। मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो। इर्शाद हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उसने कहा काश मेरी कौम जानती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज्जतदारों में शामिल कर दिया। (22-27)

मर्दे हक ने अपनी जिंदगी ख़तरे में डाल कर पैग़म्बरों की दावत की ताईद की थी। उसका यह अमल इतना कीमती था कि इसके बाद उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। जन्नत में दाख़िल होने के बाद वह अपनी जालिम कौम को बुरा नहीं कहता। बल्कि यह तमन्ना करता कि काश वे लोग मेरा अंजाम जानते तो वे हक के मुख़ालिफ न बनते। यह सच्चे मोमिन की तस्वीर है। मोमिन हर हाल में लोगों का ख़ैरख़्वाह (हितैषी) होता है, चाहे लोग उसके साथ कैसा ही जालिमाना सुलूक करें।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ۝٢٨ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ۝٢٩ يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝٣٠ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝٣١ وَإِنْ كُلٌّ لَمَّا جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝٣٢

और इसके बाद उसकी कौम पर हमने आसमान से कोई फौज नहीं उतारी, और हम फौज नहीं उतारा करते। बस एक धमाका हुआ तो यकायक वे सब बुझकर रह गए। अफसोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मजाक ही उड़ाते रहे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही कौमें हलाक कर दीं। अब वे उनकी तरफ वापस आने वाली नहीं। और उनमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा होकर हमारे पास हाजिर न किया जाए। (28-32)

अल्लाह तआला की तरफ से जब किसी कौम की हलाकत का फैसला किया जाता है तो इतना ही काफी होता है कि जमीनी असबाब को उसके ख़िलाफ कर दिया जाए। सारी आसमानी ताकतों को उसके ख़िलाफ इस्तेमाल करने की जरूरत पेश नहीं आती।

पैग़म्बरों का मज़ाक क्यों उड़ाया गया, इसका जवाब ख़ुद लफ्ज 'इस्तहजा' (मज़ाक उड़ाना) में मौजूद है। इस्तहजा करने वाले हमेशा उस इंसान का इस्तहजा करते हैं जो उन्हें हकीर (तुच्छ) दिखाई देता हो। पैग़म्बरों के साथ यही मामला पेश आया। पैग़म्बर की शख़्सियत को उनके हमजमाना (समकालीन) लोगों ने इससे कम समझा कि उनकी जबान से ख़ुदाई सदाकत का एलान हो। इसलिए उन्होंने पैग़म्बरों को मानने से इंकार कर दिया।

وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

और एक निशानी उनके लिए मुर्दा जमीन है। उसे हमने जिंदा किया और उससे हमने ग़ल्ला निकाला। पस वे उसमें से खाते हैं। और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाए। और उसमें हमने चशमे (स्रोत) जारी किए। ताकि लोग उसके फल खाएं। और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वे शुक्र नहीं करते। पाक है वह जात जिसने सब चीज के जोड़े बनाए, उनमें से भी जिन्हें जमीन उगाती है और ख़ुद उनके अंदर से भी। और उनमें से भी जिन्हें वे नहीं जानते। (33-36)

जमीन की सतह पर जरख़ेज (उपजाऊ) मिट्टी का जमा होना, उसके लिए पानी और धूप और हवा का इंतिजाम, फिर बीज के अंदर नशो व नुमा (विकास) की सलाहियत, इस तरह के बेशुमार मालूम और ग़ैर मालूम असबाब हैं जो बिलआख़िर ग़ल्ला और फल और सब्जी की शक्ल इख़्तियार करके इंसान की ख़ुराक बनते हैं। यह पूरा निजाम इंसान के बनाए बग़ैर बना है। इसे वजूद में लाना और इसे कायम रखना सरासर ख़ुदा की रहमत से होता है। अगर इंसान इस पर सोचे तो वह शुक्र के जज्बे से भर जाए।

फिर इसी निजाम में एक अजीमतर हकीकत की निशानी भी मौजूद है। मुतालआ बताता है कि दुनिया की तमाम चीजों में जोड़े का उसूल कारफरमा है। फिर जब कायनात का निजाम इस उसूल पर कायम है कि यहां तमाम चीजें अपने जोड़े के साथ मिलकर अपनी तक्मील (पूर्णता) करें तो मौजूदा दुनिया का भी एक जोड़ा होना चाहिए जिसके मिलने से उसकी तक्मील होती हो। इस तरह मौजूदा दुनिया में जोड़े का निजाम आख़िरत के इम्कान को साबित कर देता है।

وَآيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾

और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में

रह जाते हैं। और सूरज, वह अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है। यह अजीज (प्रभुत्वशाली) व अलीम (ज्ञानवान) का बांधा हुआ अंदाजा है। और चांद के लिए हमने मंजिलें मुकर्रर कर दीं, यहां तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख़। न सूरज के वश में है कि वह चांद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है। और सब एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (37-40)

जमीन और चांद और सूरज सब का एक मदार (कक्ष) मुकर्रर है। सब अपने-अपने मदार पर हददर्जा सेहत के साथ घूम रहे हैं। इस गर्दिश से मुख़्तलिफ मजाहिर वजूद में आते हैं। मसलन जमीन पर रात और दिन का पैदा होना, चांद का कम व बेश होकर फल्कियाती (आकाशीय) केलेंडर का काम करना, वग़ैरह। यह निजाम करोड़ों साल से कायम है और फिर भी इसमें किसी किस्म का कोई ख़लल वाकेअ नहीं हुआ।

यह मुशाहिदा ख़ुदा की अथाह कुदरत का एक तआरुफ है। अगर आदमी इससे सबक ले जो एक ख़ुदा की अज्मत उसके जेहन पर इस तरह छाए कि दूसरी तमाम अज्मतें अपने आप उसके जेहन से हज्फ हो जाएं।

وَآيَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ﴿٤٣﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया। और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीजें पैदा कीं जिन पर वे सवार होते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क कर दें, फिर न कोई उनकी फरयाद सुनने वाला हो और न वे बचाए जा सकें। मगर यह हमारी रहमत है और उन्हें एक निर्धारित वक्त तक फायदा देना है। (41-44)

हमारी दुनिया में ख़ुश्की भी है और समुद्र भी। और हमारे ऊपर वसीअ फजा भी। ख़ुदा ने इस दुनिया में ऐसे इम्कानात रख दिए हैं कि आदमी तीनों में से किसी हिस्से में भी सफर से आजिज न हो। वह ख़ुश्की में और पानी और फजा में यकसां तौर पर सफर कर सके।

ये तमाम सफर सरासर ख़ुदा के इंतिजाम के तहत मुमकिन होते हैं। यह इंसान के लिए इतनी बड़ी रहमत हैं कि इंसान अगर इन पर ग़ौर करे तो वह बिल्कुल अपने आपको ख़ुदा के आगे डाल दे। और कभी सरकशी का तरीका इख़्तियार न करे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾ وَمَا

تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾

और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर रहम किया जाए। और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिसकी वे उपेक्षा न करते हों। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो तो जिन लोगों ने इंकार किया वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिन्हें अल्लाह चाहता तो वह उन्हें खिला देता। तुम लोग तो खुली गुमराही में हो। (45-47)

आदमी के पीछे उसके आमाल हैं, और उसके आगे हिसाब-किताब का दिन है। जिंदगी गोया अमल की दुनिया से अंजाम की दुनिया की तरफ सफर है। यह बेहद नाज़ुक सूरतेहाल है। आदमी को इसका वाकई एहसास हो तो वह कांप उठे। मगर आदमी न ग़ौर करता और न कोई निशानी उसकी आंख खोलने वाली साबित होती। वह झूठी तावीलों के जरिए अपने आमाल को सही साबित करता रहता है। यहां तक कि मर जाता है।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। ये लोग बस एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएंगे। फिर वे न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ लौट सकेंगे। और सूर फूंका जाएगा तो यकायक वे क़ब्रों से अपने रब की तरफ चल पड़ेंगे। वे कहेंगे, हाय हमारी बदबख़्ती, हमारी कब्र से किसने हमें उठाया यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाजिर कर दिए जाएंगे। (48-53)

जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते वे आख़िरत की तरफ से इस तरह बेफिक्र रहते हैं गोया कि आख़िरत कोई बहुत दूर की चीज है। उनमें से जो लोग ज्यादा ग़ैर संजीदा हैं वे बअज औक़ात आख़िरत का मजाक भी उड़ाने लगते हैं। इस तरह के लोग अपनी इसी ग़फ़लत में पड़े रहेंगे यहां तक कि कियामत आ जाए। कियामत उन्हें इस तरह यकायक पकड़ लेगी कि वे उसके ख़िलाफ कुछ भी न कर सकेंगे।

हदीस में है कि इस्राफील सूर अपने मुंह में लिए हुए अर्श की तरफ देख रहे हैं और इस बात के मुंतज़िर हैं कि कब हुक्म हो और वह उसमें फूंक मार दें। सूर का फूंका जाना ऐसा ही है जैसे इम्तेहान का वक्त ख़त्म हो जाने का घंटा बजना। इसके फौरन बाद दुनिया का निजाम बदल जाएगा। इसके बाद अंजाम का मरहला शुरू होगा, जबकि आज हम अमल के मरहले से गुजर रहे हैं।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾

पस आज के दिन किसी शख़्स पर कोई जुल्म न होगा। और तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे। बेशक जन्नत के लोग आज अपने मशगलों में ख़ुश होंगे। और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे। उनके लिए वहां मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे मांगेंगे। उन्हें सलाम कहलाया जाएगा महरबान रब की तरफ से। (54-58)

मौजूदा दुनिया में आदमी के अमल के मअनवी नताइज सामने नहीं आते। आख़िरत वह जगह है जहां हर आदमी अपने अमल के मअनवी नताइज को पाएगा। जो शख़्स यहां सिर्फ वक्ती मफ़ादात के लिए सरगर्म रहा वह आख़िरत की अबदी दुनिया में इस तरह उठेगा कि वहां वह बिल्कुल ख़ाली हाथ होगा। इसके बरअक्स जो लोग आला मक्सद के लिए जिए वे वहां शानदार अंजाम में ख़ुश हो रहे होंगे। अल्लाह तआला की ख़ुसूसी इनायात इसके अलावा होंगी।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي

كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

और ऐ मुजरिमो, आज तुम अलग हो जाओ। ऐ औलादे आदम, क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना। बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। और उसने तुम में से बहुत से गिरोहों को गुमराह कर दिया। तो क्या तुम समझते नहीं थे। यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था। अब अपने कुफ्र के बदले में इसमें दाख़िल हो जाओ। आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पांव गवाही देंगे जो कुछ ये लोग करते थे। (59-65)

मौजूदा जिंदगी में अच्छे लोग और बुरे लोग एक ही दुनिया में रहते हैं। अगली जिंदगी में दोनों की दुनियाएं अलग-अलग कर दी जाएंगी। शैतान के बंदे शैतान के साथ और रहमान के बंदे रहमान के साथ।

कोई आदमी शैतान के नाम पर शैतान की परस्तिश नहीं करता। मगर बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर ग़ैर अल्लाह का हर परस्तार (पूजक) दरअस्ल शैतान का परस्तार है। क्योंकि वह शैतान ही के बहकावे में ऐसा कर रहा है। मसलन फरिश्तों और कौमी बुजुर्गों की परस्तिश इस तरह शुरू हुई कि शैतान ने उनके बारे में झूठे अकीदे लोगों के जेहन में डाले और लोग इन शैतानी तर्ग़ीबात (बहकावों) से मुतअस्सिर होकर उनकी परस्तिश करने लगे।

जदीद तहकीकात (नवीन खोजों) से यह साबित हुआ है कि इंसान की खाल एक किस्म का रिकॉर्डर है जिस पर आदमी की बोली हुई आवाजें मुरतसिम (प्रतिबिंबित) हो जाती हैं और उन्हें दोहराया जा सकता है। यह एक निशानी है जो इस बात को काबिलेफहम बना रही है कि किस तरह आख़िरत में आदमी के हाथ और पांव आदमी के अहवाल सुनाने लगेंगे।

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ۭ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ۝

और अगर हम चाहते तो उनकी आंखों को मिटा देते। फिर वे रास्ते की तरफ दौड़ते तो उन्हें कहां नजर आता। और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो वे न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते। और हम जिसकी उम्र ज्यादा कर देते हैं तो उसे उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं। (66-68)

इंसान को आंख और हाथ पांव और दूसरी जो सलाहियतें हासिल हैं उन्हें पाकर वह सरकश बन जाता है। हालांकि अगर वह सोचे तो यही वाकया उसकी नसीहत के लिए काफी हो जाए कि ये सलाहियतें उसकी अपनी बनाई हुई नहीं हैं बल्कि ख़ालिक के देने से उसे मिली हैं। और जब देने वाला कोई और हो तो उसने जिस तरह दिया है उसी तरह वह उन्हें वापस ले सकता है।

मजीद यह कि बुढ़ापे की सूरत में इस इम्कान की एक झलक अमलन भी लोगों को दिखाई जा रही है। आदमी जब ज्याद बूढ़ा होता है तो उसकी तमाम ताकतें भी छिन जाती हैं। यहां तक कि वह दुबारा वैसा ही कमजोर और मोहताज हो जाता है जैसा कि वह उस वक्त था जबकि वह एक छोटा बच्चा था। मगर इंसान इतना नादान है कि इसके बावजूद वह कोई सबक नहीं लेता।

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

और हमने उसे शेअर (काव्य) नहीं सिखाया और न यह उसके लायक है। यह तो सिर्फ एक नसीहत है और वाजेह (सुस्पष्ट) कुरआन है ताकि वह उस शख़्स को ख़बरदार कर दे जो जिंदा हो और इंकार करने वालों पर हुज्जत कायम हो जाए। (69-70)

कुरआन का मोजिजाना उस्लूब सुनने वालों को अपनी तरफ खींचता है। चुनांचे मुख़ालिफीन ने लोगों के तअस्सुर को घटाने के लिए यह कहना शुरू किया कि यह एक शायराना कलाम है न कि कोई ख़ुदाई कलाम।

मगर यह सरासर बेअस्ल बात है। कुरआन में अथाह हद तक जो संजीदा फजा है। उसमें हकाइके.गैब का जो बेमिसाल इंकिशाफ (प्रकटन) है, उसमें मअरफते हक की जो आलातरीन तालीमात हैं। उसमें शुरू से आख़िर तक जो नादिर इत्तेहादे ख़्याल (अद्वितीय वैचारिक एकरूपता) है। उसमें ख़ुदा की ख़ुदाई की जो नाकाबिले बयान झलकियां हैं। ये सब यकीनी तौर पर इशारा कर रही हैं कि कुरआन इससे बरतर कलाम है कि उसे इंसानी शायरी कहा जा सके।

मगर हकीकत को हमेशा जिंदा लोग मानते हैं। इसी तरह कुरआन की सदाकत भी सिर्फ जिंदा इंसानों को नजर आएगी, मुर्दा इंसान उसे देखने वाले नहीं बन सकते।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ۝ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीजों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं। और हमने उन्हें उनका ताबेअ (अधीन) बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें फायदे हैं और पीने की चीजें भी, तो क्या वे शुक्र नहीं करते। और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए। वे उनकी मदद न कर सकेंगे, और वे उनकी फौज होकर हाजिर किए जाएंगे। तो उनकी बात तुम्हें ग़मगीन न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। (71-76)

मवेशी जानवर एक किस्म की जिंदा अलामत हैं जो बताते हैं कि माद्दी दुनिया को उसके बनाने वाले ने इस तरह बनाया है कि इंसान उसे मुसख़्ख़र (अधीन) करके उसे इस्तेमाल कर सके। माद्दी दुनिया की इसी सलाहियत के ऊपर इंसानी तहजीब की पूरी इमारत कायम है। अगर घोड़े और बैल में भी वही वहशियाना मिजाज हो जो रीछ और भेड़िये में होता है। या लोहा और पेट्रोल इसी तरह इंसान के काबू से बाहर हों जिस तरह जमीन के अंदर का आतिशफशानी (प्रज्वलनशील) माद्धा इंसान के काबू से बाहर है तो तहजीबे इंसानी का इरतिका (विकास) नामुमकिन हो जाए।

जिस ख़ालिक ने ये अजीम एहसानात किए हैं, इंसान को चाहिए था कि वह उसी का शुक्र करे और उसी का इबादतगुजार बने। मगर वह दूसरों को अपना माबूद बनाता है, और जब उसे नसीहत की जाए तो वह उस पर ध्यान नहीं देता। यह बिलाशुबह सबसे बड़ी सरकशी है जिसके अंजाम से बचना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۚ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ أَنْشَأَهَآ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَآ أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلٰى وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ إِنَّمَآ أَمْرُهٗٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ

شَيْءٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया, फिर वह सरीह झगड़ालू बन गया। और वह हम पर मिसाल चसपां करता है और वह अपनी पैदाइश को भूल गया। वह कहता है कि हड्डियों को कौन जिंदा करेगा जबकि वे बोसीदा हो गई हों। कहो, उन्हें वही जिंदा करेगा जिसने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया। और वह सब तरह पैदा करना जानता है। वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे आग जलाते हो। क्या जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे। हां वह कादिर है। और वही है अस्ल पैदा करने वाला, जानने वाला। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। पस पाक है वह जात जिसके हाथ में हर चीज का इख़्तियार है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (77-83)

इंसान अपना ख़ालिक (सृजक) आप नहीं। वह बिलाशुबह ख़ालिक की मख़्लूक है। इस वाक्ये का तकाजा था कि इंसान के अंदर इज्ज की सिफ्त पाई जाए। मगर वह हकीकतपसंदी को खोकर ऐसी बहसें करता है जो उसकी हैसियते इज्ज से मुताबिकत नहीं रखतीं।

इंसान की और कायनात की तख़्लीक अव्वल ही इस बात का काफी सुबूत है कि यह तख़्लीक दूसरी बार भी मुमकिन है। मगर इसे नजरअंदाज करके इंसान यह बहस निकालता है कि मुर्दा इंसान दुबारा जिंदा इंसान कैसे बन जाएगा। इंसान का मुर्दा होकर फिर जिंदा हालत में तब्दील होने का वाक्या बिलाशुबह कियामत में होगा। मगर दूसरी चीजों में यह इम्कान आज ही नजर आ रहा है। मसलन दरख़्त को देखो। दरख़्त बजाहिर हरा भरा होता है। मगर जब वह काट कर लकड़ी की सूरत में जलाया जाता है तो वह बिल्कुल एक मुख़्तलिफ सूरत इख़्तियार कर लेता है जिसे आग कहते हैं।

एक चीज का बदल कर बिल्कुल दूसरी चीज बन जाना एक साबितशुदा वाक्या है। बकिया चीजों में ख़ुदा आज ही इसे मुमकिन बना रहा है। इंसानों के लिए वह कियामत में इसे मुमकिन बनाएगा। मगर यह मनवाने के लिए नहीं होगा बल्कि इसलिए होगा कि इंसान को उसकी सरकशी का बदला दिया जाए।

سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَانِ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾ إِنَّ إِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾

आयतें-182 **सूरह-37. अस-साफ्फ़ात** रुकूअ-5

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है क़तार दर क़तार सफ बांधने वाले फ़रिश्तों की। फिर डांटने वालों की झिड़क कर। फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं। कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही है। आसमानों और जमीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है और सारे मश्रिकों (पूर्वी दिशाओं) का रब। (1-5)

पैग़म्बर के ज़रिए जिन ग़ैबी हक़ीक़तों की ख़बर दी गई है उनमें से एक फ़रिश्ते का वजूद है। यहां फ़रिश्तों के तीन ख़ास काम बताए गए हैं। एक यह कि वे मुकम्मल तौर पर ख़ुदा के ताबेअ हैं, वे अदना सरताबी (अवज्ञा) के बग़ैर सफ़-ब-सफ़ उसकी तामील के लिए हाजिर रहते हैं। फिर फ़रिश्तों का एक गिरोह वह है जो इंसानों पर ख़ुदाई सजा का निफ़ाज करता है, चाहे वह आफ़ात और हादसात की सूरत में हो या किसी और सूरत में। फ़रिश्तों का तीसरा अमल यह बताया गया कि वे ख़ुदा के बंदों पर ख़ुदा की नसीहत उतारते हैं, आम इंसानों पर इल्हाम (दिव्य निर्देश) या इल्का (संप्रेषण) की शक्ल में और पैग़म्बरों पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की शक्ल में।

ख़ुदा ही उन फ़रिश्तों का मालिक है जिन्हें आम इंसान नहीं देखता। और ख़ुदा ही आसमान व जमीन का मालिक भी है जिन्हें हर आदमी अपनी आंखों से देख रहा है। ऐसी हालत में ख़ुदा के सिवा जिसे भी माबूद बनाया जाएगा वह ऐसा माबूद होगा जिसे माबूद बनने का हक़ नहीं।

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ﴿٧﴾ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ﴿٩﴾ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾

हमने आसमाने दुनिया को सितारों की जीनत (शोभा) से सजाया है। और हर शैतान सरकश से उसे महफ़ूज़ किया है। वे मलए आला (आकाश लोक) की तरफ कान नहीं लगा सकते और वे हर तरफ से मारे जाते हैं, भगाने के लिए। और उनके लिए एक दाइमी (स्थाई) अजाब है। मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है। (6-10)

आसमाने दुनिया से मुराद ग़ालिबन वसीअ ख़ला (अंतरिक्ष) का वह हिस्सा है जो इंसान के करीब वाकेअ है और जिसे आदमी किसी आला (उपकरण) की मदद के बग़ैर ख़ाली आंख से देख सकता है।

जिस तरह इंसान एक बाइख़्तियार मख़्लूक़ है उसी तरह जिन्नात भी बाइख़्तियार मख़्लूक़ हैं। चुनांचे वे ख़ला में परवाज करते हैं और कोशिश करते हैं कि ऊपर उठकर मलए आला (आलमे बाला) तक पहुंचें और वहां से मुस्तकबिल की ख़बरें ले आएं। मगर आसमाने दुनिया में अल्लाह तआला ने ऐसे मोहकम इंतिजामात फरमाए हैं कि वे यहीं से मार कर लौटा दिए जाते हैं और उससे ऊपर जाने का मौका नहीं पाते।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ﴿١١﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ﴿١٣﴾ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ﴿١٤﴾ وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿١٦﴾ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٨﴾

पस उनसे पूछो कि उनकी पैदाइश ज्यादा मुश्किल है या उन चीजों की जो हमने पैदा की हैं। हमने उन्हें चिपकती मिट्टी से पैदा किया है। बल्कि तुम ताज्जुब करते हो और वे मजाक उड़ा रहे हैं। और जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं। और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हंसी में टाल देते हैं। और कहते हैं कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे तो फिर हम उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि हां, और तुम ज़लील भी होगे। (11-18)

जमीन व आसमान की सूरत में जो कायनात हमारे मुशाहिदे में आती है वह इतनी पेचीदा और इतनी अजीम है कि इसके बाद इंसानों को दूसरी दुनिया में पैदा करना मुकाबिलतन एक छोटा काम नजर आने लगता है। जिस ख़ालिक की कुव्वते तख़्लीक का अजीमतर नमूना हमारे सामने मौजूद है उसी ख़ालिक से इससे छोटी तख़्लीक नामुमकिन या मुश्किल क्यों।

इंसानी जिस्म का तज्जिया (विश्लेषण) करने से मालूम होता है कि वह तमामतर जमीनी अज्जा का एक मज्मूआ है। जमीन में पाए जाने वाले माद्दे (पानी, कैल्शियम, लोहा, सोडियम, टंगस्टन, वग़ैरह) की तर्कीब से इंसान बना है। ये तमाम अज्जा हमारी दुनिया में बहुत इफरात (अधिकता) के साथ पाए जाते हैं। फिर जिन अज्जा की तर्कीब से ख़ालिक ने एक बार इंसान को बनाकर खड़ा कर दिया उन्हीं अज्जा की तर्कीब से वह दुबारा क्यों ऐसा नहीं कर सकता।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢٠﴾ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾

وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾

पस वह तो एक झिड़की होगी, फिर उसी वक्त वे देखने लगेंगे और वे कहेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती यह तो जजा (बदले) का दिन है। यह वही फैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे। जमा करो उन्हें जिन्होंने जुल्म किया और उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, फिर उन सबको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ और उन्हें ठहराओ, इनसे कुछ पूछना है। तुम्हें क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। बल्कि आज तो वे फरमांबरदार हैं। (19-26)

मौजूदा दुनिया में अगली जिंदगी का मामला एक ख़बर के तौर पर बताया जा रहा है। आदमी इस ख़बर को कोई अहमियत नहीं देता। मगर आख़िरत में अगली जिंदगी का मामला एक संगीन हकीकत बनकर लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा। उस वक्त आदमी अपनी सरकशी भूल कर अपने आपको ख़ुदा के सामने डाल देगा। यह नाकाबिले बयान हद तक हौलनाक मंजर होगा। उस वक्त मैदाने हश्र में लोगों का जो हाल होगा उसका एक नक्शा इन आयतों में दिया गया है।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾ قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾ فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾ فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

और वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे। कहेंगे तुम हमारे पास दाईं तरफ से आते थे। वे जवाब देंगे, बल्कि तुम ख़ुद ईमान लाने वाले नहीं थे। और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे। पस हम सब पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही, हमें उसका मजा चखना ही है। हमनें तुम्हें गुमराह किया, हम ख़ुद भी गुमराह थे। पस वे सब उस दिन अजाब में मुशतरक (सह भागी) होंगे। (27-33)

यह अवाम और लीडरों की गुफ्तगू है। कियामत में अवाम अपनी बर्बादी की जिम्मेदारी अपने गुमराह लीडरों पर डालेंगे और कहेंगे कि आप लोगों ने हमें तरह-तरह से बहकाया।

लीडर कहेंगे कि तुम्हारा यह इल्जाम ग़लत है। कोई बहकाने वाला किसी को नहीं बहकाता। तुम लोगों के अंदर ख़ुद सरकशी का मिजाज था। हमारी बात तुम्हें अपने मिजाज के मुवाफिक़ नजर आई इसलिए तुमने उसे मान लिया। तुमने हकीकतन अपनी ख़्वाहिशात का साथ दिया न कि हमारा। दोनों का जुर्म एक है।

हकीकत यह है कि कियामत में लीडर और पैरोकार दोनों एक ही मुशतरक अंजाम से दो चार होंगे। न लीडर की अज्मत उसे अजाब से बचा सकेगी और न अवाम का यह उज़्र उन्हें बचाने वाला बनेगा कि हम तो बेइल्म थे, हमें हमारे लीडरों ने गुमराह किया।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾ إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ये वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो वे तकब्बुर (घमंड) करते थे। और वे कहते थे कि क्या हम एक शायर दीवाने के कहने से अपने माबूदों को छोड़ दें। बल्कि वह हक लेकर आया है। और वह रसूलों की पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) का मिस्दाक (पुष्टि-रूप) है। बेशक तुम्हें दर्दनाक अजाब चखना होगा। और तुम उसी का बदला दिए जा रहे हो जो तुम करते थे। (34-39)

'जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं तो वे घमंड करते थे' इसका मतलब यह नहीं कि वे ख़ुदा के मुकाबले में घमंड करते थे। ऐसा कोई भी नहीं करता। ख़ुदा की अज्मत इससे ज्यादा है कि कोई उसके मुकाबले में बड़ा बनने की जुरअत करे। उनका घमंड दरअस्ल ख़ुदा के पैग़म्बर के मुकाबले में था न कि ख़ुद ख़ुदा के मुक़ाबले में।

पैग़म्बर के पैग़ामे तौहीद की जद उन अकाबिर (बड़ों) पर पड़ती थी जिनके नाम पर वे अपने मुश्रिकाना आमाल में मुब्तिला थे। अब एक तरफ पैग़म्बर होता और दूसरी तरफ उनके मफरूजा (मान्य) अकाबिर। चूंकि पैग़म्बर बजाहिर उन्हें अपने अकाबिर से कम दिखाई देता था, इसलिए वे पैग़म्बर को छोटा समझ कर नजरअंदाज कर देते। वे अपने मफरूजा अकाबिर के साथ वाबस्ता रहकर समझते कि वे बड़ों के साथ वाबस्ता हैं। दलील का जोर बिलाशुबह पैग़म्बर की तरफ होता था। मगर जाहिरी अज्मत उन्हें अपने बड़ों में दिखाई देती थी। और तारीख़ बताती है कि जाहिरी अज्मत के मुक़ाबले में दलील की ताक़त हमेशा बेअसर साबित हुई है।

إلا عباد الله المخلصين ﴿٤٠﴾ أولئك لهم رزق معلوم ﴿٤١﴾ فواكه وهم مكرمون ﴿٤٢﴾ في جنات النعيم ﴿٤٣﴾ على سرر متقابلين ﴿٤٤﴾ يطاف عليهم بكأس من معين ﴿٤٥﴾ بيضاء لذة للشاربين ﴿٤٦﴾ لا فيها غول ولا هم عنها ينزفون ﴿٤٧﴾ وعندهم قاصرات الطرف عين ﴿٤٨﴾ كأنهن بيض مكنون ﴿٤٩﴾

मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। उनके लिए मालूम रिज़्क़ होगा। मेवे, और वे निहायत इज़्ज़त से होंगे, आराम के बाग़ों में। तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। साफ शफ्फ़ाफ़ पीने वालों के लिए लज़्ज़त। न उसमें कोई ज़रर (हानिकारकता) होगा और न उससे अक्ल ख़राब होगी। और उनके पास नीची निगाह वाली, बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी। गोया कि वे अंडे हैं जो छुपे हुए रखे हों। (40-49)

मौजूदा दुनिया आजमाइश की दुनिया है। यहां लोगों को आजादाना अमल का मौका देकर उनका इंतिख़ाब किया जा रहा है। जो लोग अपने कौल व अमल से इसका सुबूत देंगे कि वे जन्नत की लतीफ (आनंदमय) और नफीस (उत्तम) दुनिया में बसाए जाने के काबिल हैं, उन्हें उनका ख़ुदा अपनी जन्नत में बसाने के लिए चुन लेगा। वहां उन्हें हर किस्म की आला नेमतें फराहम की जाएंगी। और फिर उनसे कहा जाएगा कि राहतों और लज़्ज़तों के बाग़ात में अबदी (चिरस्थाई) तौर पर आबाद रहो।

فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ﴿٥٠﴾ قال قائل منهم إني كان لي قرين ﴿٥١﴾ يقول أإنك لمن المصدقين ﴿٥٢﴾ أإذا متنا وكنا ترابا وعظاما أإنا لمدينون ﴿٥٣﴾ قال هل أنتم مطلعون ﴿٥٤﴾ فاطلع فرآه في سواء الجحيم ﴿٥٥﴾ قال تالله إن كدت لتردين ﴿٥٦﴾ ولولا نعمة ربي لكنت من المحضرين ﴿٥٧﴾ أفما نحن بميتين ﴿٥٨﴾ إلا موتتنا الأولى وما نحن بمعذبين ﴿٥٩﴾ إن هذا لهو الفوز العظيم ﴿٦٠﴾ لمثل هذا فليعمل العاملون ﴿٦١﴾

फिर वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाकाती था। वह कहा करता था कि क्या तुम भी तस्दीक (पुष्टि) करने वालों में से हो। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो

क्या हमें जज़ा मिलेगी। कहेगा, क्या तुम झांक कर देखोगे। तो वह झांकेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा कि ख़ुदा की कसम तुम तो मुझे तबाह कर देने वाले थे। और अगर मेरे रब का फज़्ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आए हैं। क्या अब हमें मरना नहीं है, मगर पहली बार जो हम मर चुके और अब हमें अज़ाब न होगा। बेशक यही बड़ी कामयाबी है। ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। (50-61)

जन्नत लतीफतरीन सरगर्मियों की दुनिया है। वहां दिलचस्प मुलाकातें होंगी। वहां पुरलुत्फ़ मुशाहिदात होंगे। वहां एक दूसरे के दर्मियान आफाकी सतह पर गुफ़्तगुएं होंगी। हर किस्म की महदूदियत (सीमितता) और हर किस्म की नाख़ुशगवारी का वहां ख़ात्मा हो चुका होगा।

आख़िरत को मानने से मुराद सादा तौर पर सिर्फ उसे मान लेना नहीं है। बल्कि आख़िरत के मामले को इतना हकीकी और इतना अहम समझना है कि वह आदमी की पूरी जिंदगी पर छा जाए। आदमी अपना सब कुछ आख़िरत के लिए लगा दे। जो लोग ऐसे आख़िरतपसंदों को दीवाना समझते थे वे आख़िरत में उनकी कामयाबियां देखकर दमबख़ुद (स्तब्ध) रह जाएंगे। दूसरी तरफ आख़िरतपसंदों का हाल यह होगा कि वे अपने शानदार अंजाम को इस तरह हैरत के साथ देखेंगे जैसे कि उन्हें यकीन न आ रहा हो कि उनके छोटे से अमल का ख़ुदा ने उन्हें इतना बड़ा बदला दे दिया है। कैसा अजीब होगा वह इंसान जो ऐसी जन्नत का हरीस न हो, जो ऐसी जन्नत के लिए अमल न करे!

أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم ﴿٦٢﴾ إنا جعلناها فتنة للظالمين ﴿٦٣﴾ إنها شجرة تخرج في أصل الجحيم ﴿٦٤﴾ طلعها كأنه رءوس الشياطين ﴿٦٥﴾ فإنهم لآكلون منها فمالئون منها البطون ﴿٦٦﴾ ثم إن لهم عليها لشوبا من حميم ﴿٦٧﴾ ثم إن مرجعهم لإلى الجحيم ﴿٦٨﴾ إنهم ألفوا آباءهم ضالين ﴿٦٩﴾ فهم على آثارهم يهرعون ﴿٧٠﴾ ولقد ضل قبلهم أكثر الأولين ﴿٧١﴾ ولقد أرسلنا فيهم منذرين ﴿٧٢﴾ فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ﴿٧٣﴾ إلا عباد الله المخلصين ﴿٧٤﴾

यह ज़ियाफ़्त (सत्कार) अच्छी है या ज़क्कूम का दरख़्त। हमने उसे ज़ालिमों के लिए फ़ितना बनाया है। वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की तह से निकलता है। उसका ख़ोशा ऐसा है जैसे शैतान का सर। तो वे लोग उससे खाएंगे। फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन्हें खौलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा। फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही की तरफ

होगी। उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराही में पाया। फिर वे भी उन्हीं के कदम बकदम दौड़ते रहे, और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हुए। और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे। तो देखो, उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन्हें डराया गया था। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे। (62-74)

क़ुरआन में बताया गया है कि दोज़ख़ में जक्कूम का दरख़्त होगा और दोज़ख़ी लोग जब भूख से बेकरार होंगे तो उसे खाएंगे। (अल-वाक्या 52)

क़ुरआन में यह ख़बर दी गई तो क़दीम अरब के लोगों ने उसका मजाक उड़ाना शुरू किया। एक सरदार ने कहा कि दोज़ख़ की आग के दर्मियान दरख़्त कैसे उगेगा। जबकि आग दरख़्त को जला देती है। एक और सरदार ने कहा : मुहम्मद हमें जक्कूम से डराते हैं। हालांकि जक्कूम आम जबान में खजूर और मक्ख़न को कहते हैं। अबू जहल कुछ लोगों को अपने घर ले गया और अपनी ख़ादिमा से कहा कि खजूर और मक्खन ले आओ। वह लाई तो अबू जहल ने अपने साथियों से कहा कि लो इसे खाओ। यही वह जक्कूम है जिसकी मुहम्मद तुम्हें धमकी दे रहे हैं।

इस किस्म के क़ुरआनी बयानात मुख़ालिफ़ीन के लिए बेहतरीन हथियार थे जिनके जरिए वे अवाम की नजर में क़ुरआन को ग़ैर मोतबर साबित कर सकें। अल्लाह के लिए यह मुमकिन था कि वह क़ुरआन में ऐसा लफ़्ज इस्तेमाल न करे जिसमें मुख़ालिफ़ीन के लिए शोशा निकालने का मौका हो। मगर अल्लाह ने ऐसा नहीं किया। इसकी वजह यह है कि यही वह मकाम है जहां आदमी का इम्तेहान हो रहा है। आदमी को नजातयाफ़्ता (मुक्ति-प्राप्त) बनने के लिए यह सुबूत देना है कि उसने शोशे की बातों से बचकर अस्ल हकीकत पर ध्यान दिया। उसने ग़लतफ़हमियों को उबूर (पार) करके कलाम के हकीकी उद्देश्य को पाया। उसने जेहनी इंहिराफ (भटकाव) के अवसर होते हुए अपने जेहन को इंहिराफ से बचाया।

अल्लाह के चुने हुए बंदे वे हैं जो रवाजी दीन से ऊपर उठकर सच्चाई को दरयाफ़्त करें। जो जवाहिर (प्रकट) से बुलन्द होकर मआनी (निहितार्थ) का इदराक (भान) करें। जो ख़ुदा के बशरी नुमाइंदे (मानव-प्रतिनिधि) को पहचान कर उसके साथी बन जाएं।

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝

और हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं। और हमने उसे और

उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया। और हमने उसकी नस्ल को बाकी रहने वाला बनाया। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। फिर हमने दूसरों को ग़र्क कर दिया। (75-82)

हजरत नूह अलैहिस्सलाम की कौम उनकी दुश्मन हो गई। उन्होंने कौम के मुक़ाबले में मदद के लिए अल्लाह को पुकारा तो अल्लाह ने बेहतरीन तौर पर आपकी मदद की। ये अल्फ़ाज बताते हैं कि जब अल्लाह का एक बंदा अल्लाह को पुकारता है तो अल्लाह की तरफ से वह उसका बेहतरीन जवाब पाता है। मगर इस मामले को समझने के लिए जरूरी है कि इसमें एक और बात को शामिल किया जाए। वह यह कि हजरत नूह साढ़े नौ सौ साल तक काम करते रहे। उन्होंने सब्र और हिक्मत और ख़ैरख़्वाही के तमाम आदाब को मल्हूज रखते हुए कौम को दावत दी। इस तरह लम्बी मुद्दत के बाद वह वक्त आया कि वह कौम के ख़िलाफ अल्लाह को पुकारें। और अल्लाह अपनी तमाम ताकतों के साथ उनकी मदद पर आ जाए।

हजरत नूह के मुख़ालिफ़ीन एक हौलनाक तूफ़ान में इस तरह हलाक हुए कि उनकी पूरी नस्ल ख़त्म हो गई। इसके बाद दुबारा जो नस्ल चली वह उन्हीं चन्द अफराद के जरिए चली जो हजरत नूह के साथ कश्ती में बचा लिए गए थे।

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۝ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۝ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

और उसी के तरीके वालों में से इब्राहीम भी था। जबकि वह आया अपने रब के पास कल्बे सलीम (पाक दिल) के साथ। जब उसने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि तुम किस चीज की इबादत करते हो। क्या तुम अल्लाह के सिवा मनगढ़त माबूदों को चाहते हो तो ख़ुदावंद आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है। (83-87)

हजरत इब्राहीम भी उसी दीन पर थे जिस दीन पर हजरत नूह थे। तमाम नबियों की दावत हमेशा एक रही है। वह यह कि आदमी कल्बे सलीम के साथ ख़ुदा के यहां पहुंचे।

कल्बे सलीम के मअना हैं पाक दिल। यानी फ़ित्नों से महफ़ूज़ दिल। यही अस्ल चीज है जो अल्लाह तआला को इंसान से मत्लूब है। अल्लाह ने इंसान को फितरते सही पर पैदा करके दुनिया में भेजा। अब उसका इम्तेहान यह है कि वह दुनिया के फितनों से अपने आपको बचाए। वह हर किस्म की नफ्सी और शैतानी आलूदगी से पाक रहकर ख़ुदा के यहां पहुंचे। यही पाक और महफ़ूज़ इंसान हैं जिन्हें ख़ुदा अपनी जन्नतों में बसाएगा।

शिर्क ख़ुदा की तसग़ीर (छोटा मानना) है। आदमी ख़ुदा को सबसे बड़े की हैसियत से नहीं पाता इसलिए वह दूसरी बड़ाइयों में गुम होकर उनकी परस्तिश करने लगता है।

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾ وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾

फिर इब्राहीम ने सितारों पर एक नजर डाली। पस कहा कि मैं बीमार हूं। फिर वे लोग उसे छोड़कर चले गए। तो वह उनके बुतों में घुस गया, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो। तुम्हें क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं। फिर उन्हें मारा पूरी कुव्वत के साथ। फिर लोग उसके पास दौड़े हुए आए। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीजों को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो। और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुम्हें भी और उन चीजों को भी जिन्हें तुम बनाते हो। उन्होंने कहा, इसके लिए एक मकान बनाओ फिर इसे दहकती आग में डाल दो। पस उन्होंने उसके ख़िलाफ एक कार्रवाई करनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया। और उसने कहा कि मैं अपने रब की तरफ जा रहा हूं, वह मेरी रहनुमाई फरमाएगा। ऐ मेरे रब, मुझे नेक औलाद अता फरमा। तो हमने उसे एक बुर्दबार (संयमी) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। (88-101)

हजरत इब्राहीम की कौम के लोग ग़ालिबन किसी त्यौहार में शिर्कत के लिए शहर से बाहर जा रहे थे। आपके घर वालों ने आपसे भी चलने के लिए कहा। आपने अपने एक छुपे अंदाज में उनसे मअजरत कर ली। जब तमाम लोग चले गए तो रात के वक्त आप बुतख़ाने में दाख़िल हुए और उनके बुतों को तोड़ डाला। यह आपने उस वक्त किया जबकि मुसलसल दावत (आह्वान) के जरिए आप उन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) कर चुके थे। जब उन्होंने दलाइल से बुतों का बेहकीकत होना तस्लीम नहीं किया तो बुतों को तोड़कर आपने अमल की ज़बान में बताया कि इन बुतों की कोई हकीकत नहीं। अगर हकीकत होती तो वे अपने आपको तोड़े जाने से बचा लेते।

आपकी इस आख़िरी कार्रवाई के बाद कौम ने भी अपनी आख़िरी कार्रवाई की। उन्होंने आपको आग में डाल दिया मगर अल्लाह ने आपको आग से बचा लिया। इसके बाद आप

अपने वतन (इराक) को छोड़कर चले गए। उस वक्त आपने दुआ की कि ख़ुदाया तू मेरे यहां सालेह (नेक) औलाद कर ताकि मैं उसे तालीम व तर्बियत के जरिए मोमिन व मुस्लिम बनाऊं और वह मेरे बाद दावते तौहीद का तसलसुल जारी रखे।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾

पस जब वह उसके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुंचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे, मैं ख़्वाब में देखता हूं कि तुम्हें जबह कर रहा हूं पस तुम सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है। उसने कहा कि ऐ मेरे बाप, आपको जो हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे। पस जब दोनों मुतीअ (आज्ञाकारी) हो गए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल डाल दिया। और हमने उसे आवाज दी कि ऐ इब्राहीम, तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया। बेशक हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। यकीनन यह एक खुली हुई आजमाइश थी और हमने एक बड़ी कुर्बानी के एवज उसे छुड़ा लिया। और हमने उस पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इब्राहीम पर। हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। और हमने उसे इस्हाक की ख़ुशख़बरी दी, एक नबी सालेहीन (नेकों) में से। और हमने उसे और इस्हाक को बरकत दी। और इन दोनों की नस्ल में अच्छे भी हैं और ऐसे भी जो अपने नफ्स पर सरीह जुल्म करने वाले हैं। (102-113)

हजरत इब्राहीम के जमाने में शिर्क का इस तरह उमूमी ग़लबा हुआ कि तारीख़ में उसका तसलसुल कायम हो गया। अब जो बच्चा पैदा होता वह माहौल के असर से शिर्क में इतना

पुख़्ता हो जाता कि कोई भी दावती कोशिश उसके जेहन को शिर्क से हटाने में कामयाब नहीं होती थी। हजरत इब्राहीम जब तवील (दीर्घ) दावती जद्दोजहद के बाद इराक से निकले तो उनके साथ सिर्फ दो मोमिन थे। एक आपकी बीवी सारा, दूसरे आपके भतीजे लूत।

लोग दावत (आह्वान) के जरिए तौहीद के रास्ते पर नहीं आ रहे थे। इसलिए अल्लाह तआला का यह मंसूबा हुआ कि एक ऐसी नस्ल तैयार की जाए जो शिर्क की फजा से अलग होकर परवरिश पाए। इसके लिए हिजाज (अरब) के इलाके का इंतिख़ाब हुआ जो बेआब व गयाह (निर्जन) होने की वजह से बिल्कुल ग़ैर आबाद पड़ा हुआ था। मंसूबा यह था कि इस ग़ैर आबाद इलाके में एक शख़्स को आबाद किया जाए और उससे तवालुद व तनासुल (वंश-क्रम) के जरिए एक महफूज़ नस्ल तैयार की जाए। मगर उस वक्त हिजाज मुकम्मल तौर पर एक ख़ुश्क सहरा (रेगिस्तान) था और उस ख़ुश्क सहरा में किसी शख़्स को आबाद करना उसे जीते जी जबह कर देने के हममअना था। हजरत इब्राहीम को अल्लाह तआला ने अपने बेटे के हक में इसी जबीहा का हुक्म दिया और उन्होंने पूरी तरह मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर अपने बेटे को इस जबीहा के लिए हाजिर कर दिया।

हजरत इब्राहीम के दूसरे बेटे हजरत इस्हाक थे। उनकी नस्ल में मुसलसल नुबुव्वत जारी रही यहां तक कि बनू इस्माईल में आख़िरी नबी पैदा हो गए। उन्होंने मज्कूरा 'महफूज नस्ल' को इस्तेमाल करके वह इंकिलाब बरपा किया जिसने हमेशा के लिए शिर्क को ग़ालिब फिक्र (वर्चस्व प्राप्त विचारधारा) की हैसियत से ख़त्म कर दिया।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٦﴾ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ﴿١١٩﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٢﴾

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया। और उन्हें और उनकी कौम को एक बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने। और हमने उन दोनों को वाजेह किताब दी। और हमने उन दोनों को सीधा रास्ता दिखाया। और हमने उनके तरीके पर पीछे वालों के एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो मूसा और हारून पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे। (114-122)

अल्लाह तआला ने हजरत मूसा और उनकी कौम की मदद की और उन्हें फिरऔन के जुल्म से नजात दी। यहां सवाल यह है कि यह कैसे हुआ। यह दावत इलल्लाह के जरिए हुआ। हजरत मूसा ने फिरऔन पर हक की तब्लीग़ की। लम्बी जद्दोजहद के जरिए आपने उसे

इतमामेहुज्जत तक पहुंचाया। इसके बाद वह वक्त आया कि फिरऔन को मुजरिम करार देकर उसे हलाक किया जाए। और हजरत मूसा और उनकी कौम को ग़लबा हासिल हो।

इस सियाक (प्रसंग) में सिराते मुस्तकीम (सीधा रास्ता) दिखाने का एक मतलब यह है कि फिरऔन के मसले का सही हल उन पर खोला गया। बनी इस्राईल के लिए अगरचे यह एक कौमी मसला था मगर इसका हल उन्हें दावत (आह्वान) की शक्ल में बताया गया। चुनांचे उन्हें जो गलबा मिला वह उन्हें दावती जद्दोजहद के नतीजे में मिला न कि फिरऔन के ख़िलाफ मअरूफ किस्म की कौमी जद्दोजहद के नतीजे में।

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿١٢٥﴾ اللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ إِلْ يَاسِينَ ﴿١٣٠﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

और इलयास भी पैग़म्बरों में से था। जबकि उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम डरते नहीं। क्या तुम बअल (एक बुत का नाम) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक को छोड़ देते हो, अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी। पस उन्होंने उसे झुठलाया तो वे पकड़े जाने वालों में से होंगे। मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इलयास पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। (123-132)

हजरत इलयास अलैहिस्सलाम ग़ालिबन हजरत हारून अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे। उनका जमाना नवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) है। उस जमाने में इस्राईल (फिलिस्तीन) का यहूदी बादशाह अख़ीअब (Ahab) और लुबनान में फनीकी कौम (Phoenicians) की हुकूमत थी जो मुश्रिक थी और बअल नामी बुत की पूजा करती थी। अख़ीअब ने मुश्रिक बादशाह की लड़की से शादी कर ली। उस मुश्रिक शहजादी के असर से यहूदियों के दर्मियान बअल की परस्तिश शुरू हो गई। उस वक्त हजरत इलयास ने यहूदियों को डराया और उन्हें ख़ुदाए वाहिद की परस्तिश की तरफ बुलाया जो उनका अस्ल आबाई दीन था। हजरत इलयास के हालात तफ्सील से बाइबल में मौजूद हैं।

हजरत इलयास के जमाने में सिर्फ थोड़े से यहूदियों ने आपका साथ दिया। बेशतर तादाद ने अपकी मुख़ालिफत की। यहां तक कि वे आपके कत्ल के दरपे हो गए। इसकी वजह से

अल्लाह तआला ने उन पर सजाएं भेजीं। मगर बाद को यहूदियों के यहां हजरत इलयास (ऐलिया) को बहुत ऊंचा मकाम मिला। अब वह यहूदियों की तारीख़ (इतिहास) में बहुत बड़े नबी शुमार किए जाते हैं।

وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾ وَبِاللَّيْلِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾

और बेशक लूत भी पैग़म्बरों में से था। जबकि हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी। मगर एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और तुम उनकी बस्तियों पर गुजरते हो सुबह को भी और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते। (133-138)

हजरत लूत अलैहि० हजरत इब्राहीम अलैहि० के भतीजे थे। वह बहरे मुर्दार (Dead Sea) के इलाके में सदूम और अमूरा की हिदायत के लिए भेजे गए जिनके बाशिंदे ग़ैर अल्लाह की परस्तिश में मुब्तिला थे। मगर उन्होंने हिदायत कुबूल नहीं की। आख़िरकार उन पर ख़ुदा की आफत आई और हजतर लूत और उनके चन्द साथियों को छोड़कर सबके सब हलाक कर दिए गए।

कौमे लूत की बस्तियों के खंडहर बहरे मुर्दार के किनारे मौजूद थे और कुरैश के लोग जब तिजारत के लिए शाम और फिलिस्तीन जाते तो वे रास्ते में इन बर्बादशुदा बस्तियों को देखते। मगर इंसान का हाल यह है कि वह सिर्फ उसी हादसे को जानता है जो ख़ुद उसके अपने ऊपर पड़े। दूसरों के अंजाम से वह कभी सबक नहीं लेता।

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿١٤٥﴾ وَأَنبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّن يَقْطِينٍ ﴿١٤٦﴾ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٧﴾ فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾

और बेशक यूनुस भी रसूलों में से था। जबकि वह भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुंचा। फिर कुरआ (कई में से एक का चयन) डाला तो वही ख़तावार निकला। फिर उसे मछली ने निगल लिया। और वह अपने को मलामत कर रहा था। पस अगर वह तस्बीह करने

वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहता। फिर हमने उसे एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था। और हमने उस पर एक बेलदार दरख़्त उगा दिया। और हमने उसे एक लाख या इससे ज्यादा लोगों की तरफ भेजा। फिर वे लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें फायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक। (139-148)

हजरत यूनुस अलैहिस्सलाम का जमाना आठवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) है। वह इराकके कदीम शहर नैनवा (Nineveh) में रसूल बनाकर भेजे गए। एक मुद्दत तक तब्लीग़ के बाद आपने अंदाजा किया कि कौम ईमान लाने वाली नहीं है। आपने शहर छोड़ दिया। आगे जाने के लिए आप ग़ालिबन दजला के किनारे एक कश्ती में सवार हो गए। कश्ती ज्यादा भरी हुई थी। दर्मियान में पहुंच कर डूबने का अंदेशा हुआ। चुनांचे कश्ती को हल्का करने के लिए कुरआ डाला गया कि जिसका नाम निकले उसे दरिया में फेंक दिया जाए। कुरआ हजरत यूनुस के नाम निकला और कश्ती वालों ने आपको दरिया में डाल दिया। उस वक्त ख़ुदा के हुक्म से एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया और आपको ले जाकर दरिया के किनारे ख़ुश्की में डाल दिया। हजरत यूनुस ने अपनी कौम को वक्त से पहले छोड़ दिया था। चुनांचे अल्लाह का हुक्म हुआ कि आप दुबारा अपनी कौम की तरफ वापस जाएं। आपने दुबारा आकर तब्लीग़ की तो शहर के तमाम सवा लाख बाशिंदे मोमिन बन गए।

इस वाक्ये से अंदाजा होता है कि दाओ के लिए सब्र इंतिहाई हद तक जरूरी है। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि लोगों का रवैया बजाहिर मायूसी पैदा करने वाला बन जाए।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾ أَلَا إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾ وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾ أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾ فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾

पस उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियां हैं और उनके लिए बेटे। क्या हमने फरिश्तों को औरत बनाया है और वे देख रहे थे। सुन लो, ये लोग सिर्फ मनगढ़त के तौर पर ऐसा कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और यकीनन वे झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटों के मुकाबले में बेटियां पसंद की हैं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो। फिर क्या तुम सोच से काम नहीं लेते। क्या तुम्हारे पास कोई वाजेह दलील है। तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो। (149-157)

शैतान की तर्ग़ीब या इंसानों की ग़लत ताबीर से अक्सर ग़ैबी हकीकतों के बारे में बहुत

बड़ी-बड़ी गुमराहियां पैदा हो जाती हैं। उन्हीं में से एक फरिश्तों के मुतअल्लिक कुछ लोगों का यह अकीदा है कि वे ख़ुदा की बेटियां हैं। यह इंतिहाई हद तक बेबुनियाद और ग़ैर माकूल बात है। इसकी ग़लती इस सादा सी बात से साबित होती है कि ख़ुदा को अगर अपनी मदद के लिए औलाद दरकार थी तो वह अपने लिए बेटे बनाता। वह अपने लिए बेटियां क्यों बनाता जो ख़ुद मुश्रिकीन के नजदीक कमजोरी की अलामत हैं।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ﴿١٦٢﴾ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾

और उन्होंने ख़ुदा और जिन्नात में भी रिश्तेदारी करार दी है। और जिन्नों को मालूम है कि यकीनन वे पकड़े हुए आएंगे। अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो, ख़ुदा से किसी को फेर नहीं सकते। मगर उसे जो जहन्नम में पड़ने वाला है। और हम में से हर एक का एक मुअय्यन (निश्चित) मकाम है। और हम ख़ुदा के हुज़ूर बस सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) रहने वाले हैं। और हम उसकी तस्बीह करने वाले हैं। (158-166)

गुमराह कौमें जिन्नात के बारे में इस तरह का अकीदा रखती हैं गोया कि जिन्नात ख़ुदा के हरीफ (प्रतिपक्षी) और मद्देमुकाबिल हैं। उनका ख़्याल है कि जिन्नों के हाथ में बदी की ताकतें हैं और फरिश्तों के हाथ में नेकी की ताकतें। ये दोनों जिसे चाहें मुसीबत में डाल दें और जिसे चाहें कामयाब बना दें। जैसा कि मजूस (पारसी) ख़ुदाई में दो के कायल हैं। उनके नजदीक यजदां नेकी का ख़ुदा है और अहरमन बुराई का ख़ुदा।

इंसान अपने झूठे मफरूजात (मान्यताओं) की बिना पर दुनिया में फरिश्तों की इबादत करता है। और ख़ुद फरिश्तों का हाल यह है कि वे अल्लाह के हुज़ूर ताबेदार ख़ादिम की तरह सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े रहते हैं और हर वक्त सिर्फ एक अल्लाह की बड़ाई का एलान करते हैं।

وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوا بِهِ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾ وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾

और ये लोग कहा करते थे कि अगर हमारे पास पहलों की कोई तालीम होती तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते। फिर उन्होंने उसका इंकार कर दिया तो अनकरीब वे जान लेंगे। और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फैसला पहले ही हो चुका है। कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएंगे। और हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है। तो कुछ मुद्दत तक उनसे रुख़ फेर लो और देखते रहो, अनकरीब वे भी देख लेंगे। (167-175)

कदीम जमाने में अरबों का हाल यह था कि जब वे सुनते कि यहूद ने और दूसरी कौमों ने अपने रसूलों का इंकार किया तो वे पुरफख़्र तौर पर कहते कि ये लोग बहुत बदबख़्त थे। अगर हमारे पास रसूल आता तो हम उसकी कद्रदानी करते और उसका साथ देते। मगर जब उनके अंदर अल्लाह ने एक रसूल भेजा तो वे उसके मुंकिर हो गए। जिस तरह दूसरे लोग अपने रसूलों के मुंकिर हुए थे। ऐसा हक आदमी को ख़ूब दिखाई देता है जिसकी जद दूसरों पर पड़ती हो। मगर जिस हक की जद ख़ुद आदमी की अपनी जात पर पड़े उससे वह इस तरह बेख़बर हो जाता है जैसे उसे देखने के लिए उसके पास आंख ही नहीं।

हक के दाजियों की बात को लोग नजरअंदाज करते हैं। वे भूल जाते हैं कि हक के दाई इस दुनिया में ख़ुदा के लश्कर हैं। हक के दाजियों की बात हर हाल में बुलन्द व बाला होकर रहती है, चाहे मुख़ालिफ्त करने वाले उसकी कितनी ही ज्यादा मुख़ालिफ्त करें।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾ فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾ وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

क्या वे हमारे अजाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। पस जब वह उनके सेहन में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिन्हें उससे डराया जा चुका है। तो कुछ मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो। और देखते रहो, अनकरीब वे ख़ुद देख लेंगे। पाक है तेरा रब, इज्जत का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं। और सलाम है पैग़म्बरों पर। और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (176-182)

पैग़म्बर लोगों से कहते थे कि अगर तुमने मेरी बात न मानी तो तुम्हारे ऊपर ख़ुदा का अजाब आ जाएगा। मगर लोग इस बात को बेहकीकत समझते रहे और उसका मजाक उड़ाते रहे। इसकी वजह यह थी कि उनका पैगम्बर उन्हें इससे बहुत कम नजर आता था कि उसकी बात न मानने से उन पर ख़ुदा का अजाब टूट पड़े।

ताहम उनके मज़ाक उड़ाने के बावजूद ऐसा नहीं हुआ कि फौरन उनके ऊपर अजाब आ जाए क्योंकि अजाबे इलाही के उतरने के लिए हुज्जत की तक्मील (आह्वान की पूर्णता) जरूरी है। इसलिए पैग़म्बरों को हुक्म होता है कि वे सब्र और एराज करते रहें, यहां तक कि इल्मे इलाही के मुताबिक मुकर्ररह मुद्दत पूरी हो जाए।

سُورَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ثَمَانٍ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسُ رُكُوعَاتٍ

صٓ وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ﴿٢﴾ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

आयतें-88 **सूरह-38. साद** रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

साद०। कसम है नसीहत वाले कुरआन की। बल्कि जिन लोगों ने इंकार किया, वे घमंड और जिद में हैं। उनसे पहले हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं, तो वे पुकारने लगे और वह वक्त बचने का न था। (1-3)

'जिक्र' के अस्ल मअना याददिहानी के हैं। याददिहानी किसी ऐसी चीज की कराई जाती है जो बतौर वाक्या पहले से मौजूद हो। कुरआन के 'जिजक्रि' होने का मतलब यह है कि कुरआन उन हकीकतों को मानने की दावत देता है जो इंसानी फित्रत में पहले से मौजूद हैं। कुरआन की कोई बात अब तक ख़िलाफे वाक्या या ख़िलाफे फित्रत नहीं निकली। यही इस बात का काफ़ी सुबूत है कि कुरआन सरासर हक है। इसके बावजूद जो लोग कुरआन को न मानें उनके न मानने का सबब यकीनी तौर पर नफ्सियाती है न कि अक्ली। उनका न मानना किसी दलील की बिना पर नहीं है बल्कि इसलिए है कि उसे मान कर उनकी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी।

कुरआन उस दावते तौहीद (एकेश्वरवाद के आह्वान) का तसलसुल है जो पिछले हर दौर में मुख़्तलिफ नबियों के जरिए जारी रही है। पिछले जमानों में जिन लोगों ने इस दावत का इंकार किया वे हलाक कर दिए गए। हाल के मुंकिरीन को माजी (अतीत) के मुंकिरीन के इस अंजाम से सबक लेना चाहिए।

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ ۖ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾ أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾ وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ﴿٦﴾ مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ إِنْ هَٰذَا إِلَّا

اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ أَأُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي ۖ بَلْ لَمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ﴿٨﴾

और उन लोगों ने ताज्जुब किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया। और इंकार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। क्या उसने इतने माबूदों (पूज्यों) की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है। और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है। हमने यह बात पिछले मजहब में नहीं सुनी, यह सिर्फ एक बनाई बात है। क्या हम सब में से इसी शख़्स पर कलामे इलाही नाजिल किया गया। बल्कि ये लोग मेरी याददिहानी की तरफ से शक में हैं। बल्कि उन्होंने अब तक मेरे अजाब का मजा नहीं चखा। (4-8)

'पैग़म्बरे इस्लाम' का नाम आज एक अजीम (महान) नाम है। क्योंकि बाद की पुरअज्मत तारीख़ ने इसे अजीम बना दिया है। मगर इब्तिदा में जब आपने मक्का में नुबुव्वत का दावा किया तो लोगों को आप सिर्फ एक मामूली आदमी दिखाई देते थे। लोगों के लिए यह यकीन करना मुश्किल हो गया कि यही मामूली आदमी वह शख़्स है जिसे ख़ुदा ने अपने कलाम का महबत (उतरने की जगह) बनने के लिए चुना है। जब तारीख़ (इतिहास) बन चुकी हो तो एक अंधा आदमी भी पैग़म्बर का पहचान लेता है। मगर तारीख़ बनने से पहले पैग़म्बर को पहचानने के लिए जौहरशनासी (यथार्थ की पहचान) की सलाहियत दरकार है, और यह सलाहियत वह है जो हर दौर में सबसे ज्यादा कम पाई जाती है।

कुरआन का ग़ैर मामूली तौर पर मुअस्सिर (प्रभावशाली) कलाम कुरआन के मुख़ालिफीन को हैरत में डाल देता था। मगर साहिबे कुरआन की मामूली तस्वीर दुबारा उन्हें शुबह में डाल देती थी। इसलिए वे उसे रद्द करने के लिए तरह-तरह की बातें करते थे। कभी उसे जादूगर कहते। कभी झूठा बताते। कभी कहते कि इसके पीछे कोई माद्दी ग़रज शामिल है। कभी कहते कि ऐसा क्योंकर हो सकता है कि हमारे बड़े-बड़े बुजुर्गों की बात सही न हो और इस मामूली आदमी की बात सही हो।

'अपने माबूदों पर जमे रहो' का लफ्ज बताता है कि दलील के मैदान में वे अपने आपको आजिज पा रहे थे, इसलिए उन्होंने तअस्सुब (विद्वेष) के नारे पर अपने लोगों को कुरआनी सैलाब से बचाने की कोशिश की।

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِنَ الْأَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ

أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۝ إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝ وَمَا يَنْظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝

क्या तेरे रब की रहमत के ख़ज़ाने उनके पास हैं जो ज़बरदस्त है, फ़य्याज (दाता) है। क्या आसमानों और ज़मीन और इनके दर्मियान की चीज़ों की बादशाही उनके इख़्तियार में है। फिर वे सीढ़ियां लगाकर चढ़ जाएं। एक लश्कर यह भी यहां तबाह होगा सब लश्करों में से। इनसे पहले कौमे नूह और आद और मेख़ों (कीलों) वाला फ़िरऔन। और समूद और कौमे लूत और ऐका वालों ने झुठलाया। ये लोग बड़ी-बड़ी जमाअतें थे। उन सब ने रसूलों को झुठलाया तो मेरा अज़ाब नाज़िल होकर रहा। और ये लोग सिर्फ एक चिंघाड़ के मुंतज़िर हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं। और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले दे दे। (9-16)

ख़ुदा की रहमते हिदायत इस तरह तक्सीम नहीं होती कि जिस शख़्स को दुनियावी अज़्मत मिली हुई हो उसी को ख़ुदा की हिदायत भी दे दी जाए। अगर दुनियावी अज़्मत लोगों को ख़ुदा के यहां अज़ीम बनाने वाली होती तो ऐसे लोगों के लिए मुमकिन होता कि वे जिस शख़्स को चाहें ख़ुदा की रहमत पहुंचाएं और जिससे चाहें उसे रोक दें। मगर हकीकत यह है कि ख़ुदा अपनी रहमत की तक्सीम ख़ुद अपने मेयार पर करता है न कि ज़ाहिरपरस्त इंसानों के बनाए हुए मेयार पर।

पैग़म्बर का इंकार करने वाले कहते कि जिस ख़ुदाई अज़ाब से तुम हमें डरा रहे हो उस ख़ुदाई अज़ाब को ले आओ। यह जुरअत उनके अंदर इसलिए पैदा होती थी कि वे समझते थे कि उन पर ख़ुदा का अज़ाब आने वाला ही नहीं। उन्हें बताया गया कि जिन बुतों के बल पर तुम अपने आपको महफ़ूज़ समझ रहे हो, उसी किस्म के बुतों के बल पर पिछली कौमों ने भी अपने को महफ़ूज़ समझा और अपने रसूलों के साथ सरकशी की मगर वे सब की सब हलाक कर दी गईं। फिर तुम आख़िर किस तरह बच जाओगे।

اِصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۝ وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ۝ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ۝

जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो कुव्वत वाला, रुजूअ करने वाला था। हमने पहाड़ों को उसके साथ मुसख़्ख़र (वशी भूत) कर दिया कि वे उसके साथ सुबह व शाम तस्बीह करते थे, और परिंदों को भी जमा होकर। सब अल्लाह की

तरफ रुजूअ करने वाले थे। और हमने उसकी सल्तनत मज़बूत की, और उसे हिक्मत अता की। और मामलात का फ़ैसला करने की सलाहियत दी। (17-20)

दीन में सब्र की बेहद अहमियत है। मगर इंसान की अज़ियतों (यातनाओं) पर सब्र वही शख़्स कर सकता है जो इंसान के मामले को ख़ुदा के ख़ाने में डाल सके। जो शख़्स ख़ुदा की हम्द व तस्बीह में डूबा हुआ हो उसी के लिए यह मुमकिन है कि वह इंसान की तरफ से कही जाने वाली नाख़ुशगवार बातों को नज़रअंदाज़ कर दे।

हज़रत दाऊद इस सिफ्त का आला नमूना थे। उन्हें अल्लाह तआला ने ग़ैर मामूली कुव्वत और सल्तनत दी थी। मगर उनका हाल यह था कि वह हर मामले में अल्लाह की तरफ रुजूअ करते थे। वह कायनात में बुलन्द होने वाली ख़ुदाई तस्बीहात में गुम रहते थे। वह पहाड़ के दामन मे बैठकर इतने वज्द के साथ हम्दे ख़ुदावंदी का नग़मा छेड़ते कि पूरा माहौल उनका हम आवाज़ हो जाता था। दरख़्त और पहाड़ भी उनके साथ तस्बीहख़्वानी में शामिल हो जाते थे।

अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद को जो हुकूमत दी थी वह निहायत मुस्तहकम (मज़बूत) हुकूमत थी। इस इस्तहकाम का राज़ था हिक्मत और फ़स्ल ख़िताब। हिक्मत से मुराद यह है कि वह मामलात में हमेशा हकीमाना और दानिशमंदाना अंदाज़ इख़्तियार करते थे। और फ़स्ल ख़िताब का मतलब यह है कि वह बरवक्त सही फ़ैसला लेने की सलाहियत रखते थे। यही दोनों चीज़ें हैं जो किसी हुक्मरां को सालेह हुक्मरां बनाती हैं। उसके अंदर हिक्मत होना इस बात का ज़ामिन है कि वह कोई ऐसा इक़्दाम नहीं करेगा जो फ़ायदे से ज़्यादा नुक़्सान का सबब बन जाए। और फ़स्ल ख़िताब इसका ज़ामिन है कि उसका फ़ैसला हमेशा मुंसिफ़ाना फ़ैसला होगा।

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝

और क्या तुम्हें ख़बर पहुंची है मुक़दमा वालों की जबकि वे दीवार फांदकर इबादतख़ाने में दाख़िल हो गए। जब वे दाऊद के पास पहुंचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम दो फ़रीके मामला (विवाद के पक्ष) हैं, एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हमारे दर्मियान हक के साथ फ़ैसला कीजिए, बेइंसाफ़ी न कीजिए और हमें राहेरास्त सन्मार्ग बताइए। (21-22)

कहा जाता है कि हज़रत दाऊद ने तीन दिन की बारी मुकर्रर कर रखी थी। एक दिन दरबार और मुक़दमात के फ़ैसलों के लिए। दूसरे दिन अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के साथ रहने के लिए। तीसरे दिन अलग रहकर ख़ालिस ख़ुदा की इबादत के लिए। एक रोज़ जबकि उनका इबादती दिन था वह अपने महल के मख़्सूस हिस्से में अकेले इबादत में मशग़ूल

थे कि दो आदमी दीवार फांदकर अंदर दाख़िल हो गए और उनके इबादत के कमरे में आकर खड़े हो गए। यह एक ग़ैर मामूली बात थी इसलिए आप कुछ घबरा उठे। उन दोनों आदमियों ने इत्मीनान दिलाया और कहा कि हम दो फरीक (पक्ष) हैं। आप से एक झगड़े का फैसला लेने के लिए यहां हाजिर हुए हैं।

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾

यह मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे दुंबियां हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुंबी है। तो वह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे। और उसने गुफ्तुगू में मुझे दबा लिया। दाऊद ने कहा, उसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने का मुतालबा करके वाकई तुम पर जुल्म किया है। और अक्सर शुरका (साझीदार) एक दूसरे पर ज्यादती किया करते हैं। मगर वे जो ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद को ख़्याल आया कि हमने उसका इम्तेहान किया है, तो उसने अपने रब से माफी मांगी और सज्दे में गिर गया। और रुजूअ हुआ। फिर हमने उसे वह माफ कर दिया। और बेशक हमारे यहां उसके लिए तकर्रुब (सान्निध्य) है और अच्छा अंजाम। (23-25)

आने वाले दोनों आदमियों ने जो मुक़दमा पेश किया वह कोई हकीकी मुक़दमा न था बल्कि तमसील की जबान में ख़ुद हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम की किसी बात पर उन्हें मुतनब्बह (सचेत) करना था। चुनांचे मुकदमे का फैसला देते-देते आपको अपना वह मामला याद आ गया जो मज्कूरा मिसाल से मिलता जुलता था। आपने फौरन उससे रुजूअ कर लिया और अल्लाह के आगे सज्दे में गिर पड़े।

हजरत दाऊद को उस वक्त जबरदस्त इक्तेदार (सत्ता) हासिल था। मगर उन्होंने आने वालों को न तो कोई सजा दी और न उन्हें बुरा भला कहा। यही अल्लाह के सच्चे बंदों का तरीका है। उनके अंदर किसी मामले में जिद नहीं होती। उन्हें जब उनकी किसी ख़ामी की तरफ तवज्जोह दिलाई जाए तो वे फौरन उसे मान कर अपनी इस्लाह कर लेते हैं, चाहे वे बाइक्तेदार हैसियत के मालिक हों और चाहे मुतवज्जह करने वाले ने उन्हें बेढंगे तरीके से मुतवज्जह किया हो।

يَا دَاوُودُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾

ऐ दाऊद हमने तुम्हें जमीन में ख़लीफा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दर्मियान इंसाफ के साथ फैसला करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करो वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देगी। जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अजाब है इस वजह से कि वे रोजे हिसाब को भूले रहे। (26)

एक हाकिम हमेशा दो चीजों के दर्मियान होता है। या तो वह मामलात का फैसला अपनी चाहत के मुताबिक करेगा या उसूले हक के मुताबिक। जो हाकिम मामलात का फैसला अपनी चाहत और ख़्वाहिश के मुताबिक करे वह राह से भटक गया। ख़ुदा के यहां उसकी सख़्त पकड़ होगी। इसके बरअक्स (विपरीत), जो हाकिम मामलात का फैसला हक व इंसाफ के उसूल का पाबंद रहकर करे वही राहेरास्त पर है। ख़ुदा के यहां उसे बेहिसाब इनामात दिए जाएंगे।

यह हिदायत जिस तरह एक हाकिम के लिए है उसी तरह वह आम इंसानों के लिए भी है। हर आदमी को अपने दायरए इख़्तियार में वही करना है जो इस आयत में बाइक्तेदार (सत्ताधारी) हाकिम के लिए बताया गया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

और हमने जमीन और आसमान और जो इनके दर्मियान है अबस (व्यर्थ) नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इंकार किया, तो जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए बर्बादी है आग से। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनकी मानिंद कर देंगे जो जमीन में फसाद करने वाले हैं। या हम परहेजगारों को बदकारों जैसा कर देंगे। यह एक बाबरकत किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक्ल वाले इससे नसीहत हासिल करें। (27-29)

दुनिया की चीजों पर ग़ौर कीजिए तो मालूम होता है कि इसका पूरा निजाम निहायत हकीमाना बुनियादों पर कायम है हालांकि यह भी मुमकिन था कि वह एक अललटप निजाम हो और उसमें कोई बात यकीनी न हो। दो इम्कान में से एक मुनासिबतर इम्कान का पाया जाना इस बात का करीना (संकेत) है कि इस दुनिया को पैदा करने वाले ने इसे एक बामक्सद मंसूबे के तहत बनाया है। फिर जो दुनिया अपनी इब्तिदा में बामक्सद हो वह अपनी इंतिहा में बेमक्सद क्योंकर हो जाएगी।

इसी तरह इस दुनिया में हर आदमी आजाद और ख़ुदमुख़्तार है। मुशाहिदा दुबारा बताता है कि लोगों में कोई शख़्स वह है जो हकीक्त का एतराफ करता है और अपने इख़्तियार से अपने आपको सच्चाई और इंसाफ का पाबंद बनाता है। इसके मुकाबले में दूसरा शख़्स वह है जो हकीक्त का एतराफ नहीं करता। वह बेक़ैद होकर जो चाहे बोलता है और जिस तरह चाहे अमल करता है। अक्ल इसे तस्लीम नहीं करती कि जब यहां दो किस्म के इंसान हैं तो उनका अंजाम यकसां होकर रह जाए।

दुनिया की इस सूरतेहाल को सामने रखा जाए तो जिंदगी के मुतअल्लिक कुरआन का बयान ही ज्यादा मुताबिके हाल नजर आएगा न कि उन लोगों का बयान जो जिंदगी की तशरीह (विवेचना) उसके बरअक्स अंदाज में करने की कोशिश करते हैं।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمٰنَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ اِنِّيْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۗ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝

और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। जब शाम के वक्त उसके सामने तेज रफ्तार, उम्दा घोड़े पेश किए गए। तो उसने कहा, मैंने दोस्त रखा माल की मुहब्बत को अपने रब की याद से, यहां तक कि छुप गया ओट में। उन्हें मेरे पास वापस लाओ। फिर वह झाड़ने लगा पिंडलियां और गर्दनें। (30-33)

हजरत सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम एक अजीम सल्तनत के हुक्मरां थे। एक दिन उनकी फौज के चुस्त और तर्बियतयाफ्ता घोड़े उनके सामने लाए गए। फिर उनकी दौड़ हुई। यहां तक कि घोड़े दौड़ते हुए दूर के मंजर में गुम हो गए। और फिर वे दुबारा वापस आए।

इस किस्म का मंजर हमेशा निहायत शानदार होता है। उन्हें देखकर आम इंसान फख़्र और घमंड में मुब्तिला हो जाता है। मगर हजरत सुलैमान का हाल यह हुआ कि वह इस पुरफख़्र मंजर को देखकर ख़ुदा की याद करने लगे। उन्होंने कहा कि मैंने यह घोड़े अपनी शान दिखाने के लिए पसंद नहीं किए हैं बल्कि सिर्फ ख़ुदा के लिए पसंद किए हैं। घोड़े की शक्ल

में उन्हें ख़ुदा की अजीम कारीगरी नजर आई। और वह ख़ुदा की अज्मत के एतराफ के तौर पर घोड़ों की गर्दनों और पिंडलियों पर हाथ फेरने लगे। मोमिन हर चीज में ख़ुदा की शान देखता है और ग़ैर मोमिन हर चीज में अपनी शान।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ۝ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ۝ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝

और हमने सुलैमान को आजमाया। और हमने उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उसने रुजूअ किया। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत दे जो मेरे बाद किसी के लिए सजावार (उपलब्ध) न हो। बेशक तू बड़ा देने वाला है। तो हमने हवा को उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया। वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वह चाहता। और जिन्नात को भी उसका ताबेअ कर दिया। हर तरह के कामगर और ग़ोताख़ोर। और दूसरे जो जंजीरों में जकड़े हुए रहते। यह हमारा अतिया (देन) है तो चाहे उसे दो या रोको, बेहिसाब। और उसके लिए हमारे यहां कुर्ब (समीपता) है और बेहतर अंजाम। (34-40)

हर इंसान से कोताही होती है। मगर ख़ुदा के नेक बंदों के लिए कोताही एक अजीम भलाई बन जाती है क्योंकि वे कोताही के बाद और ज्यादा ख़ुशूअ (विनय) के साथ अपने रब की तरफ पलटते हैं और फिर और ज्यादा इनाम के मुस्तहिक करार पाते हैं।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम से भी एक मौके पर भूलवश कोई कोताही हो गई। जब आप पर हकीक्त वाजेह हुई तो आप शदीद इनाबत (समर्पण-भाव) के साथ अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो गए। अल्लाह तआला ने आप से दरगुजर फरमाया और मजीद यह इनाम किया कि आपको अजीम सल्तनत अता फरमाई और आपको ऐसे ग़ैर मामूली इख़्तियारात दिए जो किसी और इंसान को हासिल नहीं हुए।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَاۤ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ

لَا تَحْنَثْ ۗ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۗ نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ

और हमारे बंदे अय्यूब को याद करो। जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे तकलीफ और अजाब में डाल दिया है। अपना पांव मारो। यह ठंडा पानी है, नहाने के लिए और पीने के लिए। और हमने उसे उसका कुंबा अता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत के तौर पर और अक्ल वालों के लिए नसीहत के तौर पर। और अपने हाथ में सींकों का एक मुट्ठा लो और उससे मारो और कसम न तोड़ो। बेशक हमने उसे साबिर (धैर्यवान) पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। (41-44)

हजरत अय्यूब अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के पैग़म्बरों में से थे। उनका जमाना ग़ालिबन नवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) है। उन्हें काफी माल व दौलत हासिल थी। मगर माल व दौलत में गुम होने के बजाए वह ख़ुदा की इबादत करते और लोगों को ख़ुदा की तरफ बुलाते थे।

कुछ ग़लत किस्म के लोगों ने यह कहना शुरू किया कि अय्यूब को जब इतना ज्यादा माल व दौलत हासिल है तो वह दीनदार न बनेंगे तो और क्या करेंगे। अल्लाह तआला ने लोगों पर हुज्जत कायम करने के लिए हजरत अय्यूब को मुफ्लिस बना दिया। मगर वह बदस्तूर अल्लाह के इबादतगुजार बंदे बने रहे। उन्होंने कहा कि 'ख़ुदावंद ने दिया और ख़ुदावंद ने ले लिया। ख़ुदावंद का नाम मुबारक हो।'

शरीर लोग अब भी चुप न हुए। उन्होंने कहा कि अस्ल इम्तेहान तो यह है कि वह जिस्मानी तकलीफ में मुब्तिला हों और फिर भी सब्र व शुक्र पर कायम रहें। अल्लाह तआला ने लोगों को यह नमूना भी दिखाया। हजरत अय्यूब को सख़्त जिल्दी (खाल की) बीमारी लाहिक हुई और उनके तमाम जिस्म पर फोड़े हो गए। मगर वह बदस्तूर सब्र व शुक्र की तस्वीर बने रहे। जब लोगों पर हुज्जत तमाम हो चुकी तो अल्लाह तआला ने हजरत अय्यूब के लिए एक चशमा (स्रोत) जारी किया जिसमें नहाने से उनका जिस्म बिल्कुल तंदुरुस्त हो गया। और माल व औलाद भी दुबारा मजीद इजाफे के साथ अता फरमाए।

हजरत अय्यूब ने बीमारी की हालत में किसी बात पर कसम खा ली थी कि अच्छे हो गए तो अपनी बीवी को सौ लकड़ियां मारेंगे। अल्लाह तआला ने इस कसम को पूरा करने की यह तदबीर उन्हें बताई कि एक झाड़ू लो जिसमें एक सौ सींकें हों और उससे हल्के तौर पर एक बार अपनी बीवी को मार दो। इससे मालूम हुआ कि मख़्सूस हालात में हीला (प्रतीकात्मक अमल) करना जाइज है, बशर्ते कि वह किसी शरई हुक्म को बातिल न करता हो।

ख़ुदा जब अपने दीन के लिए किसी को इस्तेमाल करे और वह शख़्स किसी संकोच के बग़ैर अपने आपको ख़ुदा के हवाले कर दे तो ख़ुदा उसे दुबारा उससे ज्यादा दे देता है जितना उससे मज्कूरा अमल के दौरान छिना था।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۗ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝

और हमारे बंदो, इब्राहीम और इस्हाक और याकूब को याद करो, वे हाथों वाले और आंखों वाले थे। हमने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था कि वह आख़िरत (परलोक) की याददिहानी है। और वे हमारे यहां चुने हुए नेक लोगों में से हैं। और इस्माईल और अल यसअ और जुलकिफ्ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे। (45-48)

यहां चन्द पैग़म्बरों का जिक्र करके इर्शाद हुआ कि वे हाथ वाले और आंख वाले थे। यानी उन्हें जिस्मानी कुव्वत और जेहनी बसीरत (सूझबूझ) दोनों आला दर्जे में हासिल थीं। एक तरफ वे अमली सलाहियत के मालिक थे। दूसरी तरफ उन्होंने उस मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का सुबूत दिया कि वे चीजों को सही नजर से देखने और मामलात में सही राय कायम करने की सलाहियत रखते हैं। चुनांचे ख़ुदा ने उन्हें अपने पैग़ाम की पैग़ाम्बरी के लिए चुन लिया।

ख़ुदा का ख़ास काम क्या है जिसके लिए वह इंसानों में से अपने पैग़म्बर चुनता है। वह है आख़िरत के घर की याददिहानी। पैग़म्बरों का ख़ास मिशन हमेशा यह रहा है कि वे इंसान को उस हकीकत से बाख़बर करें कि इंसान की अस्ल मंजिल आख़िरत है। और इंसान को उसी की तैयारी करना चाहिए। इंसान का सबसे बड़ा मसला यही है और इस दुनिया में सबसे बड़ा काम यह है कि उसे इस संगीन मसले से आगाह किया जाए।

هٰذَا ذِكْرٌ ۗ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝

यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है, हमेशा के बाग़ जिनके दरवाजे उनके लिए खुले होंगे। वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे। और बहुत से मेवे और मशरूबात (पेय पदार्थ) तलब करते होंगे। और उनके पास शर्मीली हमसिन (समान अवस्था वाली) बीवियां होंगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे रोजे हिसाब आने पर वादा किया जाता है। यह हमारा रिज्क है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (49-54)

जन्नत के दरवाजे उन लोगों के लिए खोले जाते हैं जो अपने दिल के दरवाजे नसीहत के लिए खोलें। जो ख़ुदा के जुहूर से पहले ख़ुदा से डरने वाले बन जाएं। यही वे ख़ुशनसीब लोग

हैं जो आख़िरत की अबदी नेमतों के हिस्सेदार होंगे।

कुरआन में आख़िरत की जिन नेमतों का जिक्र है वे सब वही हैं जो दुनिया में भी इंसान को हासिल होती हैं। मगर दोनों में जबरदस्त फ़र्क है। वह यह कि दुनिया में ये नेमतें वक्ती और इब्तिदाई शक्ल में दी गई हैं और आख़िरत में ये नेमतें अबदी और इंतिहाई शक्ल में दी जाएंगी। मजीद यह कि इन आला नेमतों के साथ हर क़िस्म के ख़ौफ़ और अंदेशे को हजफ कर दिया जाएगा जिनका हजफ होना मौजूदा दुनिया में किसी तरह मुमकिन नहीं।

هٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَآخَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُقْتَحِمٌ مَعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है। जहन्नम, उसमें वे दाख़िल होंगे। पस क्या ही बुरी जगह है। यह खौलता हुआ पानी और पीप है, तो ये लोग उन्हें चखें। और इस क़िस्म की दूसरी और भी चीजें होंगी। यह एक फौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई ख़ुशआमदीद (स्वागत) नहीं। वे आग में पड़ने वाले हैं। वे कहेंगे बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई ख़ुशआमदीद नहीं। तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, जो शख़्स इसे हमारे आगे लाया उसे तू दुगना अजाब दे, जहन्नम में। और वे कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहां नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। क्या हमने उन्हें मजाक बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं। बेशक यह बात सच्ची है, अहले दोजख़ का आपस में झगड़ना। (55-64)

जहन्नम उन तकलीफ़ों की अबदी और इंतिहाई शक्ल है जिनका मौजूदा दुनिया में कोई शख़्स तसव्वुर कर सकता है। दुनिया में सरकशी करने वाले सच्चाई को झुठलाने वाले लोग जब जहन्नम में इकट्ठा होंगे तो उनके लीडर और पैरोकार आपस में तकरार करेंगे। वे पैरोकार जो अपने लीडरों की अज्मत पर फ़ख़्र करते थे वे वहां अपना अंजाम देखकर उन पर लानत भेजेंगे। इसका एक नक्शा इन आयात में दिखाया गया है।

सच्चाई का इंकार करने वाले जब आख़िरत में अपना बुरा अंजाम देखेंगे तो वहां वे उन लोगों को याद करेंगे जिन्होंने सच्चाई का साथ दिया था और इस बिना पर वे अपने माहौल

में हकीर बन गए थे। उनके मुतअल्लिक मुंकिरीन कहते थे कि ये अकाबिर की तोहीन करने वाले हैं। ये आबाई (पैतृक) दीन से भटक गए हैं। इन्होंने मिल्लत से अलग अपना रास्ता बनाया है।

ये मुंकिरीन अपने आपको हक पर समझते थे और उन्हें नाहक पर। मगर आख़िरत में मामला बिल्कुल बरअक्स हो जाएगा। उस वक्त उन पर खुलेगा कि जिन्हें हकीर (तुच्छ) समझ कर वे उनका मजाक उड़ाते थे, वही आख़िरत की सरफ़राजी में सबसे आगे दर्जा पाए हुए हैं।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾ أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾ إِنْ يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٧٠﴾

कहो कि मैं तो सिर्फ एक डराने वाला हूं। और कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर अल्लाह, यकता (एक) और ग़ालिब (वर्चस्वशील)। वह रब है आसमानों और जमीन का और उन चीजों को जो इनके दर्मियान हैं, वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। कहो कि यह एक बड़ी ख़बर है, जिससे तुम बेपरवाह हो रहे हो। मुझे आलमे बाला (आकाश लोक) की कुछ ख़बर नहीं थी जबकि वे आपस में तकरार कर रहे थे। मेरे पास तो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) बस इसलिए आती है कि मैं एक खुला डराने वाला हूं। (65-70)

यहां जिस इख़्तिसाम (तकरार) का जिक्र है वह वही है जो अगली आयत में मंकूल है। यानी आदमी की तख़्लीक (रचना) के वक्त इब्लीस का बहस व तकरार करना।

कुरआन में बताया गया है कि शैतान पहले रोज से आदम का दुश्मन बन गया है। वह पुरफ़रेब बातों के जरिए औलादे आदम को सीधे रास्ते से भटकाता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह होशियार रहे और उससे पूरी तरह बचने की कोशिश करे। इस सिलसिले में आदम की पैदाइश के वक्त जो इख़्तिसाम (तकरार) हुआ और उसे कुरआन में बयान किया गया वह सरासर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) था। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक्त मलए आला में मौजूद न थे कि जाती वाकफ़ियत की बुनियाद पर उसे बयान कर सकते।

सबसे अहम ख़बर इंसान के लिए यह है कि उसे जिंदगी की इस नौइयत से आगाह किया जाए कि शैतान हर लम्हा उसके पीछे लगा हुआ है, वह उसकी सोच और उसके जज्बात में दाख़िल होकर उसे गुमराह कर रहा है। इंसान को चाहिए कि वह इस ख़तरे से अपने आपको बचाए। पैग़म्बर एक एतबार से इसीलिए आए कि इंसान को इस नाजुक ख़तरे से आगाह कर दें।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّي خَٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿٧١﴾ فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَٰجِدِينَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾ إِلَّآ إِبْلِيسَ ٱسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يَٰٓإِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ ٱلْعَالِينَ ﴿٧٥﴾ قَالَ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُۥ مِن طِينٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَٱخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٧﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيٓ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٧٨﴾

जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक बशर (इंसान) बनाने वाला हूं। फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सज्दे मे गिर पड़ना। पस तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने घमंड किया और वह इंकार करने वालों में से हो गया। फरमाया कि ऐ इब्लीस, किस चीज ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया। यह तूने तकब्बुर (घमंड) किया या तू बड़े दर्जे वालों में से है। उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूं। तूने मुझे आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से। फरमाया कि तू यहां से निकल जा, क्योंकि तू मर्दूद (धुत्कारा हुआ) है। और तुझ पर मेरी लानत है जजा के दिन तक। (71-78)

अल्लाह तआला ने इंसान को एक इंतिहाई आला मख़्लूक की हैसियत से बनाया। और इसकी अलामत के तौर पर फरिश्तों और जिन्नों को हुक्म दिया कि वे उसे सज्दा करें। इसके बाद जब ऐसा हुआ कि इब्लीस ने आदम को सज्दा नहीं किया तो वह हमेशा के लिए मलऊन करार पा गया। मगर इस संगीन वाक्ये की अहमियत सिर्फ इब्लीस के एतबार से न थी बल्कि ख़ुद आदम के लिए भी इसकी बेहद अहमियत थी।

आदम के आगे झुकने से इंकार करके इब्लीस अबदी तौर पर नस्ले आदम का हरीफ (प्रतिपक्षी) बन गया। इस तरह इंसानी तारीख़ अव्वल रोज से एक नए रुख़ पर चल पड़ी। इस वाक्ये ने तै कर दिया कि इंसान के लिए जिंदगी का सफर कोई सादा सफर नहीं होगा बल्कि शदीद मुजाहेमत (प्रतिरोध) का सफर होगा। उसे इब्लीस के बहकावों और उसकी पुरफरेब तदबीरों का मुकाबला करते हुए अपने आपको सही रास्ते पर कायम रखना होगा ताकि वह सलामती के साथ अपनी मंजिल तक पहुंच सके।

इंसान और जन्नत के दर्मियान शैतान की फरेबकारियां हायल हैं। जो शख़्स शैतान की फरेबकारियों से अपने आपको बचाए वही जन्नत के अबदी बाग़ों में दाख़िल होगा। और जो लोग शैतान की फरेबकारियों का पर्दा फाड़ने में नाकाम रहें वही वे लोग हैं जो जन्नत से महरूम रह गए।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِيٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلْمُنظَرِينَ ﴿٨٠﴾ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْوَقْتِ ٱلْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَٱلْحَقُّ وَٱلْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾

इब्लीस ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दुबारा उठाए जाएंगे। फरमाया कि तुझे मोहलत दी गई, मुअय्यन (निश्चित) वक्त तक के लिए। उसने कहा कि तेरी इज्जत की कसम, मैं उन सबको गुमराह करके रहूंगा, सिवाए तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने ख़ालिस कर लिया है। फरमाया, तो हक यह है और मैं हक ही कहता हूं कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूंगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे। (79-85)

मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में शैतान को पूरा मौका दिया गया है कि वह इंसान को बहकाए। मगर शैतान उसी वक्त तक बहका सकता है जब तक हकीकत ग़ैब में छुपी हुई हो। कियामत जब ग़ैब का पर्दा फाड़ेगी तो सब कुछ सामने आ जाएगा। इसके बाद न कोई बहकाने वाला बाकी रहेगा और न कोई बहकने वाला।

मुख़्लिस का मतलब है खोट से ख़ाली होना। मुख़्लिस बंदा वह है जो नफ्सियाती बीमारियों से पाक हो। शैतान का मामला यह है कि उसे कोई अमली जोर हासिल नहीं। वह हमेशा तजईन के जरिए इंसानों को बहकाता है। यानी बातिल को हक के रूप में दिखाना। बेअस्ल बातों को ख़ूबसूरत अल्फाज में पेश करना। सीधी बात में शोशा निकाल कर लोगों को उसकी तरफ से मुशतबह (संदिग्ध) कर देना। ताहम शैतान की इस तजईन से वही लोग फरेब खाते हैं जो अपने अंदर नफ्सियाती खोट लिए हुए हों। और जो लोग अपनी नफ्सियात को उसकी फितरी हालत पर बाकी रखें और अपनी अक्ल को खुले तौर पर इस्तेमाल करें वे फौरन शैतानी फरेब को पहचान लेते हैं। वे कभी उसकी तजईन से गुमराह नहीं होते।

قُلْ مَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُۥ بَعْدَ حِينٍۭ ﴿٨٨﴾

कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मेहनताना) नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ (बनावट) करने वालों में से हूं। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। और तुम जल्द उसकी दी हुई ख़बर को जान लोगे। (86-88)

दाऔ की एक लाजिमी सिफ्त यह है कि वह मदऊ (संबोधित पक्ष) से अज्र का तालिब नहीं होता। वह अपने और मदऊ के दर्मियान कोई माद्दी झगड़ा नहीं खड़ा करता। कुरआन की दावत

आख़िरत की दावत है। इसलिए जो शख़्स ऐसा करे कि वह एक तरफ़ क़ुरआन की दावते आख़िरत का अलमबरदार (ध्वजावाहक) हो, और इसी के साथ मदऊ क़ौम से माद्दी (भौतिक, आर्थिक) मुतालबात की मुहिम भी चलाए वह मदऊ की नज़र में एक ग़ैर संजीदा आदमी है। और जो आदमी ख़ुद अपनी ग़ैर संजीदगी साबित कर दे उसकी बात पर कौन ध्यान देगा।

इसी तरह दाओ अपनी तरफ़ से बनाकर कोई बात नहीं कहता। वह बस वही कहता है जो ख़ुदा की तरफ़ से उसे मिला है। मसरूक ताबई कहते हैं कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। उन्होंने कहा कि ऐ लोगो, जो शख़्स कुछ जानता हो तो उसे चाहिए कि बोले। और जो शख़्स न जानता हो तो उसे यह कहना चाहिए कि अल्लाह ही ज़्यादा जानता है। यह इल्म की बात है कि आदमी जिस चीज़ को न जाने उसके बारे में कह दे कि अल्लाह ज़्यादा जानता है। क्योंकि अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया है कि कहो कि मैं इस पर तुमसे अज्र नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ़ करने वालों में से नहीं हूं। (तफ़्सीर इब्नेकसीर)

इसी तरह दाओ की यह सिफ़त है कि वह दावत को नसीहत के रूप में पेश करे। उसका कलाम ख़ैरख़्वाहाना (परोपकारी) कलाम हो न कि मुनाज़िराना (वाद-विवाद का) कलाम।

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّثَمَانِ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ① اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ② اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۗ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③

आयतें-75 सूरह-39. अज़्-ज़ुमर रुकूअ-8

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है जो ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ उतारी है, पस तुम अल्लाह ही की इबादत करो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। आगाह, दीन ख़ालिस सिर्फ़ अल्लाह के लिए है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं, कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वे हमें ख़ुदा से क़रीब कर दें। बेशक अल्लाह उनके दर्मियान उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा, हक़ को न मानने वाला हो। (1-3)

क़ुरआन हक़ीक़ते वाक़्या का ख़ुदाई बयान है। इसका हकीमाना उस्लूब और इसके ग़ैर मामूली तौर पर पुख़्ता मज़ामीन इस बात का दाख़िली सुबूत हैं कि यह वाक़्यातन ख़ुदा ही की तरफ़ से है। कोई इंसान इस क़िस्म का ग़ैर मामूली कलाम पेश करने पर क़ादिर नहीं।

दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करने का मतलब है इबादत को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना। यानी यह कि तुम सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करो, अपनी इबादत को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए।

हर इंसान के अंदर पुरअसरार (रहस्यमयी) तौर पर इबादत का जज़्बा मौजूद है। यानी किसी को बड़ा तसव्वुर करके उसके लिए अजीब और बड़ा समझने (Awe) का एहसास पैदा होना। जिस हस्ती के बारे में आदमी के अंदर यह एहसास पैदा हो जाए उसे वह सबसे ज़्यादा मुक़द्दस समझता है। उसके आगे उसकी पूरी हस्ती झुक जाती है। उसकी जनाब में वह ग़ैर मामूली क़िस्म के एहतराम व आदाब का इज़्हार करता है। उससे वह सबसे ज़्यादा डरता है और उसी से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करता है। उसकी याद से उसकी रूह को लज़्ज़त मिलती है। वही उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा सहारा बन जाता है।

इसी का नाम इबादत (या परस्तिश) है। और यह इबादत सिर्फ़ एक ख़ुदा का हक़ है। मगर इंसान ऐसा करता है कि वह ख़ुदा को मानते हुए इबादत में ग़ैर ख़ुदा को शरीक करता है। वह ग़ैर ख़ुदा के लिए इबादती अफ़आल अंजाम देता है। यही इंसान की अस्ल गुमराही है। हक़ीक़त यह है कि जिस तरह ख़ुदाई नाक़ाबिले तक़्सीम है उसी तरह इबादत की भी तक़्सीम नहीं की जा सकती।

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۗ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ⑤

अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है। वह अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब। उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर रखा है। हर एक एक ठहरी हुई मुद्दत पर चलता है। सुन लो कि वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है। (4-5)

आदमी के अंदर फ़ितरी तौर पर यह जज़्बा है कि वह ख़ुदा की तरफ़ लपके, वह ख़ुदा की परस्तिश करे। शैतान की कोशिश हमेशा यह होती है कि वह इस जज़्बे को ख़ुदा की तरफ़ से हटाकर दूसरी तरफ़ मोड़ दे। इसलिए वह लोगों के ज़ेहन में डालता है कि ख़ुदा की बारगाह

ऊंची है, तुम बराहेरास्त ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकते। इसलिए तुम्हें बुज़ुर्गों के वसीले से ख़ुदा तक पहुंचने की कोशिश करना चाहिए। इसी तरह लोगों के जेहन में यह अकीदा बिठाता है कि जिस तरह इंसानों की औलाद होती है उसी तरह ख़ुदा की भी औलाद है। और ख़ुदा को ख़ुश रखने का आसान तरीका यह है कि तुम ख़ुदा की औलाद को ख़ुश रखो। जदीद माद्दापरस्ती (आधुनिक भौतिकवादिता) भी इसी की एक बिगड़ी हुई सूरत है जिसने आदमी के जज्बए परस्तिश को ख़ालिक से हटाकर मख़्लूक की तरफ कर दिया है।

इस किस्म की तमाम बातें ख़ुदा की तसग़ीर (छोटा बनाना) हैं। जो ख़ुदा शमसी निजाम को चला रहा है और जिसने अजीम कायनात को संभाल रखा है वह यकीनन इससे बुलन्द है कि उसके यहां किसी की सिफारिश चले या उसके बेटे-बेटियां हों।

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

अल्लाह ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चौपायों की आठ किस्में उतारीं। वह तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट में बनाता है, एक ख़िलकत (सृजन रूप) के बाद दूसरी ख़िलकत, तीन तारीकियों के अंदर। यही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहां से फेरे जाते हो। (6)

अव्वलन एक इंसान वजूद में आया। फिर ऐन उसके मुताबिक उसका एक जोड़ा निकाला गया। इस तरह इब्तिदाई मर्द व औरत के जरिए इंसानी नस्ल चली। फिर इंसान की जरूरत के लिए उससे बाहर अल्लाह तआला ने बेशुमार चीजें बनाईं। भेड़, बकरी, ऊंट और गाय (नर व मादा को मिलाकर आठ किस्में) तहजीब के इब्तिदाई दौर में हजारों साल तक इंसान की मईशत (अर्थव्यवस्था) का जरिया बनी रहीं। फिर जब तहजीब अगले मरहले में पहुंची तो दूसरी बेशुमार चीजों को इंसान ने इस्तेमाल करना शुरू किया जिन्हें ख़ुदा ने अव्वल रोज से ऐसा बना रखा था कि इंसान उन्हें अपने काम में ला सके। जिस तरह पालतू जानवर तबीई (भौतिक) तौर पर इंसान के अधिकार में हैं। इसी तरह गैसें और मादनियात (धातु, खनिज) भी प्रदान की हुई हैं, वर्ना इंसान उन्हें इस्तेमाल न कर सके। मज्कूरा आठ किस्मों की मिसाल बतौर अलामत है न कि बतौर हस्र (सीमांकन) ।

इंसान की पैदाइश के सिलसिले में यहां जिन तीन तारीकियों का जिक्र है उससे मुराद तीन पर्दे हैं। अव्वल पेट की दीवार, फिर रहमे मादर (गर्भाशय) का पर्दा, और फिर जनीन (भ्रूण) की बाहरी झिल्ली।

The mother's abdominal wall, the wall of the uterus, and the amniochorionic membrance.

यह सारा निजाम इतना हैरतनाक हद तक पेचीदा और अजीम है कि ख़ालिके कायनात के सिवा कोई और इन्हें जुहूर में नहीं ला सकता। फिर उसके सिवा कौन इस काबिल है कि उसे माबूद का दर्जा दिया जाए।

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

अगर तुम इंकार करो तो अल्लाह तुमसे बेनियाज (निस्पृह) है। और वह अपने बंदों के लिए इंकार को पसंद नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ तुम्हारी वापसी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की बात को जानने वाला है। (7)

ख़ुदा को मानना और उसका शुक्रगुजार बनना ख़ुद इंसानी अक्ल का तकाजा है क्योंकि यह हकीकते वाकया (यथार्थ) का एतराफ है और हकीकते वाकया का एतराफ बिलाशुबह सबसे बड़ा अक्ली तकाजा है।

आख़िरत अद्ले कामिल का जुहूर (पूर्ण न्याय का प्रकटन) है और यह नामुमकिन है कि अद्ले कामिल की दुनिया में वह नाकिस (त्रुटिपूर्ण) सूरतेहाल जारी रहे जो मौजूदा दुनिया में नजर आती है। अद्ल का तकाजा है कि हर आदमी ऐन वही साबित हो जो कि फ़िलवाकअ वह है, और ऐन वही पाए जिसका वह हकीकतन मुस्तहिक था। मौजूदा दुनिया में ऐसा नहीं होता। आख़िरत इसलिए आएगी कि वह दुनिया की इस कमी को दूर करे, वह नाकिस दुनिया को आख़िरी हद तक कामिल दुनिया बना दे।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

ع ۱۵

और जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह अपने रब को पुकारता है, उसकी तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) होकर। फिर जब वह उसे अपने पास से नेमत दे देता है तो वह उस चीज को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और वह दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे। कहो कि अपने कुफ्र से थोड़े दिन फायदा उठा ले, बेशक तू आग वालों में से है। भला जो शख़्स रात की घड़ियों में सज्दा और कियाम की हालत में आजिजी (विनय) कर रहा हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो, कहो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं। नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक्ल वाले हैं। (8-9)

हर आदमी पर ऐसे लम्हात आते हैं जबकि वह अपने आपको बेबस महसूस करने लगता है। वह जिन चीजों को अपना सहारा समझ रहा था वे भी इस नाजुक लम्हे में उसके मददगार नहीं बनते। उस वक्त आदमी सब कुछ भूलकर ख़ुदा को पुकारने लगता है। इस तरह मुसीबत की घड़ियों में हर आदमी जान लेता है कि एक ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं। मगर मुसीबत दूर होते ही वह दुबारा पहले की तरह बन जाता है।

इंसान की मजीद सरकशी यह है कि वह अपनी नजात को ख़ुदा के सिवा दूसरी चीजों की तरफ मंसूब करने लगता है। कुछ लोग उसे असबाब का करिश्मा बताते हैं और कुछ लोग फर्जी माबूदों का करिश्मा। आदमी अगर ग़लती करके ख़ामोश रहे तो यह सिर्फ एक शख़्स का गुमराह होना है। मगर जब वह अपनी ग़लती को सही साबित करने के लिए उसकी झूठी तौजीह करने लगे तो वह गुमराह होने के साथ गुमराह करने वाला भी बना।

एक इंसान वह है जिसे सिर्फ माद्दी ग़म बेकरार करे। दूसरा इंसान वह है जिसे ख़ुदा की याद बेकरार कर देती हो। यही दूसरा इंसान दरअस्ल ख़ुदा वाला इंसान है। उसका इकरारे ख़ुदा हालात की पैदावार नहीं होता, वह उसकी शऊरी दरयाफ्त (चेतनापूर्ण खोज) होता है। वह ख़ुदा को एक ऐसी बरतर हस्ती की हैसियत से पाता है कि उसकी उम्मीदें और उसके अंदेशे सब एक ख़ुदा की जात के साथ वाबस्ता हो जाते हैं। उसकी बेकरारियां रात के लम्हात में भी उसे बिस्तर से जुदा कर देती हैं। उसकी तंहाई ग़फलत की तंहाई नहीं होती बल्कि ख़ुदा की याद की तंहाई बन जाती है।

इल्म वाला वह है जिसकी नफ्सियात में ख़ुदा की याद से हलचल पैदा होती हो। और बेइल्म वाला वह है जिसकी नफ्सियात को सिर्फ माद्दी हालात बेदार करें। वह माद्दी झटकों से जागे और इसके बाद दुबारा ग़फलत की नींद सो जाए।

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۭ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

कहो कि ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, अपने रब से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला (प्रतिफल) है। और अल्लाह की जमीन वसीअ (विस्तृत) है। बेशक सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा। (10)

आदमी को जब अल्लाह की गहरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल होती है तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि वह अल्लाह से डरने वाला बन जाता है। अल्लाह की अज्मतों का इदराक उसे अल्लाह के आगे पस्त कर देता है। उसकी अमली जिंदगी अल्लाह के अहकाम की पाबंदी में गुजरने लगती है। वह इस मामले में इस हद तक संजीदा हो जाता है कि सब कुछ छोड़ दे मगर अल्लाह को न छोड़े।

ईमान के ऊपर जिंदगी की तामीर करना आदमी के लिए जबरदस्त इम्तेहान है। इस इम्तेहान में वही लोग पूरे उतरते हैं जिनके लिए ईमान इतनी कीमती दौलत हो कि उसकी ख़ातिर वे हर दूसरी चीज पर सब्र करने के लिए राजी हो जाएं। ईमानी जिंदगी अमल के एतबार से सब्र वाली जिंदगी का दूसरा नाम है। जो लोग सब्र की कीमत पर मोमिन बनने के लिए तैयार हों वही वे लोग हैं जो ख़ुदा के आला इनामात में हिस्सेदार बनाए जाएंगे।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ⑪ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ⑫ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑬ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ⑭ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ۭ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑮ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۭ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ۭ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ⑯

कहो, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ख़ुद मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूं। कहो कि अगर मैं अपने रब की नाफरमानी (अवज्ञा) करूं तो मैं एक हौलनाक दिन के अजाब से डरता हूं। कहो कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूं उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। पस तुम उसके सिवा जिसकी चाहे इबादत करो। कहो कि असली घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को कियामत के दिन घाटे में डाला। सुन लो यही खुला हुआ घाटा है। उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के सायबान होंगे और उनके नीचे से भी। यह चीज है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है। ऐ मेरे बंदो, पस मुझसे डरो। (11-16)

पैग़म्बर की अस्ल दावत यह होती है कि लोग सिर्फ एक ख़ुदा के परस्तार बनें। उसके सिवा

दूसरी तमाम चीजों की परस्तारी छोड़ दें। पैग़म्बर के लिए यह मारूफ (प्रचलित) मअनोंमेंसिर्फ कयादती (नेतृत्वपरक) मसला नहीं होता बल्कि वह उसका जाती मसला होता है। इसलिए वह सबसे पहले ख़ुद उस पर क़ायम होता है। पैग़म्बर को यकीन होता है कि आदमी के नफ़ा व नुक़सान का अस्ल फैसला आख़िरत में होने वाला है। इसलिए वह ख़ुद अपनी जिंदगी को आख़िरत की राह में लगाता है और दूसरों को उसकी तरफ लगने की दावत देता है।

पैग़म्बर के काम की यह नौइयत दाओी के काम की नौइयत को बता रही है। हक का दाओी वही शख़्स है जिसके लिए हक उसका जाती मसला बन जाए। जिसकी दावत उसकी अंदरूनी हालत का एक बेताबाना इज़्हार हो न कि लाउडस्पीकर की तरह सिर्फ एक ख़ारजी पुकार।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾

और जो लोग शैतान से बचे कि वे उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ रुजूअ हुए, उनके लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को ख़ुशख़बरी दे दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं। फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी है और यही हैं जो अक्ल वाले हैं। (17-18)

मौजूदा दुनिया फ़ित्ने की दुनिया है। यहां हकीक़तें अपनी आख़िरी बेनक़ाब शक्ल में जाहिर नहीं हुई हैं। यही वजह है कि यहां हर बात को ग़लत मअना पहनाया जा सकता है। शैतान इसी इम्कान को इस्तेमाल करके लोगों को राहेरास्त से भटकाता है।

जब भी कोई हक सामने आता है तो शैतान उसे ग़लत मअना पहनाकर लोगों के जेहन को फेरने की कोशिश करता है। वह कौल के अहसन (अच्छे) पहलू से हटाकर कौल के ग़ैर अहसन पहलू को लोगों के सामने लाता है। यही वह मकाम है जहां आदमी का अस्ल इम्तेहान है। आदमी को उस अक्ल का सुबूत देना है कि वह सही और ग़लत के दर्मियान तमीज करे। वह शैतानी फरेब का पर्दा फाड़कर हकीकत को देख सके। जो लोग इस बसीरत का सुबूत दें वही वे ख़ुशकिसमत लोग हैं जो ख़ुदाई सच्चाई को पाएंगे और जो लोग इस बसीरत (सूझबूझ) का सुबूत देने में नाकाम रहें, उनके लिए इस दुनिया में इसके सिवा कोई और अंजाम मुकद्दर नहीं कि वे कौल के ग़ैर अहसन (बुरे) पहलुओं में उलझे रहें और ख़ुदा के यहां शैतान के परस्तार की हैसियत से उठाए जाएं।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ

لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾

क्या जिस पर अजाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या तुम ऐसे शख़्स को बचा सकते हो जो कि आग में है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरे, उनके लिए बालाख़ाने (उच्च भवन) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, बने हुए। उनके नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता। (19-20)

हर आदमी अपने आमाल के अंजाम के दर्मियान घिरा हुआ है। जन्नत वाले को जन्नती फिज़ा घेरे हुए है और जहन्नम वाले को जहन्नमी फज़ा घेरे हुए है। ग़ैर महसूस हकीकतों को देखने वाली निगाह हो तो लोग जन्नत वाले इंसान को इसी दुनिया में जन्नत में देखें और जहन्नम वाले इंसान को इसी दुनिया में जहन्नम में घिरा हुआ पाएं।

जन्नत आरज़ुओं की उस दुनिया की आख़िरी मेयारी सूरत है जिसे आदमी दुनिया में हासिल करना चाहता है मगर वह उसे हासिल नहीं कर पाता। इस जन्नत की कीमत अल्लाह का तक्वा है। जो लोग दुनिया में ख़ौफ़े ख़ुदा का सुबूत देंगे वही जन्नत की बेख़ौफ जिंदगी के मालिक बनेंगे।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٢﴾

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसे जमीन के चशमों (स्रोतों) में जारी कर दिया। फिर वह उससे मुख़्तलिफ किस्म की खेतियां निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, तो तुम उसे जर्द देखते हो। फिर वह उसे रेज़ा-रेज़ा कर देता है। बेशक इसमें नसीहत है अक्ल वालों के लिए। क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने रब की तरफ से एक रोशनी पर है। तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के मामले में सख़्त हो गए। ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (21-22)

जमीन पर बारिश का हैरतअंगेज निज़ाम, फिर उससे सब्ज़ा का उगना, फिर फ़स्ल की तैयारी, इन माद्दी वाकेयात में बेशुमार मअनवी नसीहतें हैं। मगर इन नसीहतों को वही लोग पाते हैं जो बातों की गहराई में उतरने का मिजाज रखते हों।

एक तरफ अल्लाह ने ख़ारजी (वाह्य) दुनिया को इस ढंग पर बनाया कि उसकी हर चीज

हकीकते आला की निशानी बन गई। दूसरी तरफ इंसान के अंदर ऐसी सलाहियतें रख दीं कि वह इन निशानियों को पढ़े और उन्हें समझ सके। अब जो लोग अपनी फितरी सलाहियतों को जिंदा रखें और उनसे काम लेकर दुनिया की चीजों पर ग़ौर करें, उनके सीने में मअरफ्त (अन्तर्ज्ञान) के दरवाजे खुल जाएंगे। और जो लोग अपनी फितरी सलाहियतों को जिंदा न रख सकें वे नसीहतों के हुजूम में भी नसीहत लेने से महरूम रहेंगे। वे देखकर भी कुछ न देखेंगे और सुन कर भी कुछ न सुनेंगे।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है। एक ऐसी किताब आपस में मिलती-जुलती, बार-बार दोहराई हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं। फिर उनके बदन और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, इससे वह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

कुरआन की सूरत में अल्लाह तआला ने एक बेहतरीन किताब इंसान को अता की है। इसकी दो ख़ास सिफतें हैं। एक यह कि वह मुतशाबेह (मिलती-जुलती) है। यानी वह एक बेतजाद (अन्तर्विरोध से मुक्त) किताब है। इसके एक जुज और उसके दूसरे जुज में कोई टकराव नहीं। कुरआन की यह सिफ्त बताती है कि यह किताब बयाने हकीकत पर मबनी है। अगर इसके बयानात ऐन हकीकत न होते तो जरूर इसके मुख़्तलिफ अज्जा के दर्मियान इख़्तेलाफ (मतभेद) और बहुरूपता (Inconsistency) पैदा हो जाती।

कुरआन की दूसरी सिफ्त यह है कि वह मसानी (दोहराई हुई) किताब है। यानी इसके मजामीन बार-बार मुख़्तलिफ पैरायों से दोहराए गए हैं। कुरआन की यह सिफ्त उसके किताबे नसीहत होने को बताती है। नसीहत करने वाला हमेशा यह चाहता है कि उसकी बात सुनने वाले के जेहन में बैठ जाए। इस मक्सद के लिए वह अपनी बात को मुख़्तलिफ अंदाज से बयान करता है। यही हिक्मत आलातरीन अंदाज में कुरआन में भी है।

इंसान के अंदर यह खुसूसियत है कि जब वह कोई दहशतनाक ख़बर सुनता है तो उसके जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और उसके वजूद में एक किस्म की आजिजाना नर्मी पैदा हो जाती है। यही हाल संजीदा इंसान का कुरआन को पढ़कर होता है। कुरआन में जिंदगी की संगीन हकीकतों को इंतिहाई मुअस्सिर (प्रभावी) अंदाज में बयान किया गया है। इसलिए इंसान जैसी मख़्लूक अगर वाकेयतन उसे समझ कर पढ़े तो उसके जिस्म के ऊपर वही कैफियत तारी होगी जो किसी संगीन ख़बर को सुनकर फितरी तौर पर उसके ऊपर तारी होना चाहिए।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

क्या वह शख़्स जो कियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अजाब की सिपर (ढाल) बनाएगा, और जालिमों से कहा जाएगा कि चखो मजा उस कमाई का जो तुम करते थे। उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उन पर अजाब वहां से आ गया जिधर उनका ख़्याल भी न था। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की जिंदगी में रुसवाई का मजा चखाया और आख़िरत का अजाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (24-26)

आदमी की कोशिश हमेशा यह होती है कि वह अपने चेहरे को चोट से बचाए। मगर कियामत का अजाब आदमी को इस तरह घेरे हुए होगा कि वहां यह मुमकिन न होगा कि आदमी अपने जिस्म के किसी हिस्से को उसकी जद में आने से रोक सके। वह नाकाबिले दिफाअ अजाब के सामने इस तरह खड़ा हुआ होगा गोया वह ख़ुद अपने चेहरे को उसके मुकाबले में सिपर (ढाल) बनाए हुए है।

अल्लाह की नजर में सबसे बड़ा जुर्म यह है कि आदमी के सामने हक आए और वह उसका एतराफ न करे। ऐसे लोग किसी हाल में ख़ुदा की पकड़ से बच नहीं सकते।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

और हमने इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें बयान की हैं ताकि वे नसीहत हासिल करें। यह अरबी कुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरें। अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख़्स की जिसकी मिल्कियत में कई जिद्दी आका (स्वामी) शरीक हैं। और दूसरा शख़्स पूरा का पूरा एक ही आका का ग़ुलाम है। क्या इन दोनों का हाल यकसां (समान) होगा। सब तारीफ अल्लाह के लिए है लेकिन अक्सर लोग नहीं

जानते। तुम्हें भी मरना है और वे भी मरने वाले हैं। फिर तुम लोग कियामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुकदमा पेश करोगे। (27-31)

कुरआन के बयानात इंसान की मालूम जबान और इंसान के मालूम दायरे के अंदर होते हैं ताकि किसी के लिए उसका समझना मुश्किल न हो।

यहां तमसील की जबान में बताया गया है कि शिर्क (बहुदेववाद) के मुकाबले में तौहीद (एकेश्वरवाद) का उसूल ज्यादा माकूल और ज्यादा मुताबिके फ़ितरत है। एक तरफ ख़ारजी कायनात बताती है कि यहां एक ही इरादे की कारफरमाई है। अगर यहां कई इरादों की कारफरमाई होती तो कायनात का निजाम इस कद्र हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ नहीं चल सकता था। दूसरी तरफ इंसान की साख़्त भी ऐसी है जो वफादारी में वहदत (एकत्व) को पसंद करती है। यह बात इंसानी साख़्त के सरासर ख़िलाफ है कि एक इंसान पर बयकवक्त कई मुख़्तलिफ किस्म की वफादारियों की जिम्मेदारी हो और नतीजतन वह एक को भी निभा न सके।

तमाम दलाइल व कराइन यही बताते हैं कि सिर्फ एक ख़ुदा है जो इंसान का ख़ालिक और उसका माबूद है। मौजूदा दुनिया में यह हकीकत अपने जैसे इंसान की जबान से सुनाई जाती है। कियामत में ख़ुद ख़ालिके कायनात इस हकीकत का एलान फरमाएगा। उस वक्त किसी शख़्स के लिए यह मुमकिन न होगा कि वह इस बात का इंकार कर सके।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

उस शख़्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा। और सच्चाई को झुठला दिया जबकि वह उसके पास आई। क्या ऐसे मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो शख़्स सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तस्दीक (पुष्टि) की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे अमलों को दूर कर दे और उनके नेक कामों के एवज उन्हें उनका सवाब दे। (32-35)

हर वह नजरिया जो मुताबिके हकीकत न हो वह अल्लाह पर झूठ बांधना है। हर दौर में लोग इसी किस्म के झूठ पर जी रहे होते हैं। अल्लाह का दाई इसलिए उठता है कि वह ऐसे

झूठ का झूठ होना साबित करे। इसके बाद भी जो लोग झूठ पर कायम रहें वे ढिठाई करने वाले लोग हैं। वे जहन्नम की आग में डाले जाएंगे। और जो लोग रुजूअ करके हक के साथी बन जाएं वही वे लोग हैं जो अल्लाह से डरने वाले साबित हुए। अल्लाह तआला ऐसे लोगों की बुराइयों को उनके आमाल से हटा देगा और उनके नेक आमाल की बिना पर उनकी कद्रदानी फरमाएगा।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ۝

क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफी नहीं। और ये लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं, और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। और अल्लाह जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह जबरदस्त, इंतिकाम (प्रतिशोध) लेने वाला नहीं। (36-37)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीद के दाओ थे। मगर आपका तरीका यह न था कि 'ख़ुदा एक है' के मुस्बत (सकारात्मक) एलान पर रुक जाएं। इसी के साथ आप उन ग़ैर ख़ुदाई हस्तियों की तरदीद (रद्द) भी फरमाते थे जिन्हें लोगों ने बतौर ख़ुद माबूद का दर्जा दे रखा था। आपकी दावत का यही दूसरा जुज लोगों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त बन गया।

ये ग़ैर ख़ुदाई हस्तियां दरअस्ल उनके कौमी अकाबिर (महापुरुष) थे। सदियों से वे उनकी करामत की मुबालग़ाआमेज (अतिरंजनापूर्ण) दास्तानें सुनते आ रहे थे। उनके जेहन पर उन हस्तियों की अज्मत इस तरह छा गई थी कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके तकद्दुस (पवित्रता) की तरदीद फरमाई तो उनकी समझ में किसी तरह न आया कि वे ग़ैर मुकद्दस कैसे हो सकते हैं। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि तुम हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दो वर्ना तुम तबाह हो जाओगे। या तुम्हें जुनून हो जाएगा।

मगर हक के दाओ को हुक्म है कि वह इस किस्म की बातों की परवाह न करे। वह अल्लाह के भरोसे पर इस्बाते तौहीद (एक ख़ुदा की पुष्टि) और शिर्क के रद्द का दुगना काम जारी रखे। क्योंकि इसके बग़ैर अम्रे हक पूरी तरह वाजेह नहीं हो सकता।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ

حَسْبِيَ اللّٰهُ ۭ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और जमीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ पहुंचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई महरबानी करना चाहे तो क्या ये उसकी महरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं। कहो कि अल्लाह मेरे लिए काफी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। कहो कि ऐ मेरी कौम, तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूं, तो तुम जल्द जान लोगे कि किस पर रुसवा करने वाला अजाब आता है और किस पर वह अजाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं। हमने लोगों की हिदायत के लिए यह किताब तुम पर हक के साथ उतारी है। पस जो शख़्स हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा। और जो शख़्स बेराह होगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा। और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं हो। (38-41)

इंसान हर दौर में ग़ैर अल्लाह की इबादत करता रहा है। मगर कोई शख़्स यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि उसकी इन्हीं पसंदीदा हस्तियों ने जमीन आसमान को बनाया है। या तकलीफ और आराम के वाकेयात के हकीकी असबाब उनके इख़्तियार में हैं। इस बेयकीनी के बावजूद लोगों का यकीन बड़ा अजीब है कि वे अपने झूठे माबूदों को छोड़ने पर राजी नहीं होते।

जब दाओ की दलीलें मदऊ पर बेअसर साबित हों तो उस वक्त उसके पास कहने की जो बात होती है वह यह कि तुम जो चाहे करो, जब आख़िरी फैसले का दिन आएगा तो वह बता देगा कि कौन हक पर था और कौन नाहक पर। यह दलील के बाद यकीन का इज्हार है, और दाओ का आख़िरी कलिमा हमेशा यही होता है।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह ही वफात देता है जानों को उनकी मौत के वक्त, और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें सोने के वक्त। फिर वह उन्हें रोक लेता है जिनकी मौत का फैसला कर चुका है और दूसरों को एक वक्त मुकर्रर तक के लिए रिहा कर देता है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (42)

नींद के वक्त आदमी पर बेख़बरी की हालत तारी हो जाती है। इस एतबार से नींद गोया मौत की तरह है। फिर जब आदमी सोकर उठता है तो दुबारा वह होश की हालत में आ जाता है। यह गोया मौत के बाद दुबारा जी उठने की तस्वीर है।

इस कानूने फितरत के तहत हर आदमी को आज ही इब्तिदाई सतह पर दिखाया जा रहा है कि वह किस तरह मरेगा और किस तरह वह दुबारा उठ खड़ा होगा। आदमी अगर संजीदगी के साथ ग़ौर करे तो वह इसी दुनियावी वाकये में अपने लिए आख़िरत का सबक पा लेगा।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ۝ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْۗءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफारिशी बना रखा है। कहो, अगरचे वे न कुछ इख़्तियार रखते हों और न कुछ समझते हों। कहो, सिफारिश सारी की सारी अल्लाह के इख़्तियार में है। आसमानों और जमीन की बादशाही उसी की है। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे। और जब अकेले अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उसके सिवा

दूसरों का जिक्र होता है तो उस वक्त वे ख़ुश हो जाते हैं। कहो कि ऐ अल्लाह, आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, ग़ायब और हाजिर के जानने वाले, तू अपने बंदों के दर्मियान उस चीज का फैसला करेगा जिसमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं। और अगर जुल्म करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे क़ियामत के दिन सख़्त अजाब से बचने के लिए उसे फिदये (बदल) में दे दें। और अल्लाह की तरफ से उन्हें वह मामला पेश आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उनके सामने आ जाएंगे उनके बुरे आमाल और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। (43-48)

अरब के मुश्रिकीन जिन के मुतअल्लिक यह अकीदा रखते थे कि ख़ुदा के यहां वे उनकी शफ़ाअत (सिफारिश) करने वाले बन जाएंगे वे हकीकतन पत्थर के बुत न थे। ये वे बुज़ुर्ग हस्तियां थीं जिनकी अलामत के तौर पर उन्होंने पत्थर के बुत बना रखे थे। उनके शुफआ (शफाअत करने वाले) दरअस्ल उनके कौमी अकाबिर (महापुरुष) थे जिनके मुतअल्लिक उनका अकीदा था कि उनका दामन पकड़े रहो, वे ख़ुदा के यहां तुम्हारे लिए काफी हो जाएंगे।

जो लोग ग़ैर अल्लाह के बारे में इस किस्म का अकीदा बनाएं, धीरे-धीरे उनका हाल यह हो जाता है कि उनकी सारी अकीदतें और शेफ़्तगियां (आस्था एवं मुहब्बतें) उन्हीं ग़ैर ख़ुदाई शख़्सियतों के साथ वाबस्ता हो जाती हैं। उन शख़्सियतों की बड़ाई का चर्चा किया जाए तो उसे सुनकर वे ख़ूब ख़ुश होते हैं। लेकिन अगर एक ख़ुदा की बड़ाई बयान की जाए तो उनकी रूह को उससे कोई ग़िजा नहीं मिलती।

ऐसे लोगों के सामने ख़्वाह कितने ही ताकतवर दलाइल के साथ तौहीद ख़ालिस को बयान किया जाए वे उसे मानने वाले नहीं बनते। उनकी आंख सिर्फ उस वक्त खुलती है जबकि क़ियामत का पर्दा फाड़कर ख़ुदा का जलाल बेनकाब हो जाए। आज आदमी का हाल यह है कि वह एतराफ के अल्फाज देने के लिए भी तैयार नहीं होता। मगर जब वह वक्त आएगा तो वह चाहेगा कि जो कुछ उसके पास है सब उससे बचने के लिए फिदये (बदल) में दे डाले। मगर वहां आदमी के अपने आमाल के सिवा कोई चीज न होगी जो उसके काम आ सके।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا

كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

पस जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ से उसे नेमत दे देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे इल्म की बिना पर दिया गया है। बल्कि यह आजमाइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया। पस उन पर वे बुराइयां आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं। और उन लोगों में से जो जालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई के बुरे नताइज जल्द आएंगे। वे हमें आजिज (निर्बल) कर देने वाले नहीं हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क कुशादा कर देता है। और वही तंग कर देता है। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं। (49-52)

दुनिया में आदमी को जब कोई चीज मिलती है तो वह उसे अपनी लियाकत (योग्यता) का नतीजा समझ कर ख़ुश होता है। हालांकि दुनिया की चीजें आजमाइश का सामान हैं न कि लियाकत का इनाम। इसी हकीकत को जानना सबसे बड़ा इल्म है। दुनिया की चीजों को आदमी अगर अपनी लियाकत का नतीजा समझ ले तो इससे उसके अंदर फख़्र और घमंड की नफ्सियात उभरेगी। इसके बरअक्स, जब आदमी उन्हें आजमाइश का सामान समझता है तो उसके अंदर शुक्र और तवाजोअ (विनम्रता) के जज्बात पैदा होते हैं।

रिज़्के दुनिया की कमी या ज्यादती तमामतर इंसानी इख़्तियार से बाहर की चीज है। ऐसा मालूम होता है कि इंसान के बाहर कोई कुव्वत है जो यह फैसला करती है कि किस को ज्यादा मिले और किस को कम दिया जाए। यह वाक्या बताता है कि रिज़्क का फैसला शख़्सी लियाकत की बुनियाद पर नहीं होता। इसका फैसला किसी और बुनियाद पर होता है। वह बुनियाद यही है कि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की जगह है न कि इनाम की जगह। इसलिए यहां किसी को जो कुछ मिलता है वह उसके इम्तेहान का पर्चा होता है। इम्तेहान लेने वाला अपने फैसले के तहत किसी को कोई पर्चा देता है और किसी को कोई पर्चा। किसी को एक किस्म के हालात में आजमाता है और किसी को दूसरे किस्म के हालात में।

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾ وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ﴿٥٤﴾

कहो कि ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ कर देता है, वह बड़ा बख़्शने वाला महरबान है। और तुम अपने रब की तरफ रुजूअ करो और उसके फरमांबरदार बन जाओ। इससे पहले कि तुम पर अजाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए। (53-54)

जिन लोगों के सीने में हस्सास (संवेदनशील) दिल है उन्हें जब खुदा की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल होती है तो उन्हें यह ख़्याल सताने लगता है कि अब तक उनसे जो गुनाह हुए हैं उनका मामला क्या होगा। इसी तरह ख़ुदापरस्ताना जिंदगी इख़्तियार करने के बाद भी आदमी से बार-बार कोताहियां होती हैं और उसकी हस्सासियत दुबारा उसे सताने लगती है। यहां तक कि यह एहसास कुछ लोगों को मायूसी की हद तक पहुंचा देता है।

ऐसे लोगों के लिए अल्लाह ने अपनी किताब में यह एलान फरमाया कि उन्हें यकीन करना चाहिए कि उनका मामला एक ऐसे ख़ुदा से है जो ग़फूर व रहीम है। वह आदमी के माजी (अतीत) को नहीं बल्कि उसके हाल (वर्तमान) को देखता है। वह आदमी के जाहिर को नहीं बल्कि उसके बातिन (भीतर) को देखता है। वह आदमी से वुस्अत (सहृदयता) का मामला फरमाता है न कि ख़ुरदागीरी (निष्ठुरता) का। यही वजह है कि आदमी जब उसकी तरफ रुजूअ करता है तो वह नए सिरे से उसे अपनी रहमत के साये में ले लेता है, चाहे उससे कितना ही बड़ा कुसूर क्यों न हो गया हो।

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى
مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ
اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ
اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ
بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا
عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَيُنَجِّي
اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

और तुम पैरवी करो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, इससे पहले कि तुम पर अचानक अजाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। कहीं कोई शख़्स यह

कहे कि अफसोस मेरी कोताही पर जो मैंने ख़ुदा की जनाब में की, और मैं तो मजाक उड़ाने वालों में शामिल रहा। या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों में से होता। या अजाब को देखकर कोई शख़्स यह कहे कि काश मुझे दुनिया में फिर जाना हो तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं। हां तुम्हारे पास मेरी आयतें आईं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकब्बुर (घमंड) किया और तू मुंकिरों में शामिल रहा। और तुम कियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग डरते रहे। अल्लाह उन लोगों को कामयाबी के साथ नजात (मुक्ति) देगा, और उन्हें कोई तकलीफ न पहुंचेगी और न वे ग़मगीन होंगे। (55-61)

ख़ुदा के कलाम में बेहतर और ग़ैर बेहतर की तक्सीम नहीं। न कुरआन में ऐसा है कि उसकी कुछ आयतें बेहतर हैं और कुछ आयतें ग़ैर बेहतर। और न कुरआन और दूसरी आसमानी किताबों में यह फर्क है कि उनमें से कोई किताब ब-एतबार हकीकत बेहतर है और कोई किताब ग़ैर बेहतर।

अस्ल यह है कि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में आदमी को अमल की आजादी है। यहां उसके लिए यह मौका है कि एक कलाम को चाहे सीधे रुख़ से ले या उल्टे रुख़ से। वह चाहे कलाम के अस्ल मुद्दे पर ध्यान दे या उसमें बेजा शोशे निकाले और उसे ग़लत मअना पहनाए। कलामे इलाही का मजाक उड़ाना इसी की एक मिसाल है। आदमी एक आयत को लेकर उसमें उल्टा मफहूम निकालता है और फिर उस ख़ुदसाख़्ता (स्वयंनिर्मित) मफहूम की बिना पर उसका मजाक उड़ने लगता है।

दुनिया में आदमी अपने आपको छुपाए हुए है। वह महज तकब्बुर (घमंड) की बुनियाद पर हक को नहीं मानता और ऐसे अल्फ़ाज बोलता है गोया कि वह उसूल की बुनियाद पर उसका इंकार कर रहा है। मगर कियामत के दिन आदमी का चेहरा उसकी अंदरूनी हालत का मजहर (प्रकट रूप) बन जाएगा। उस वक्त आदमी का अपना चेहरा बताएगा कि वह जिस हक में 'ग़ैर बेहतर' पहलू निकाल कर उसका मुंकिर बना रहा वे सिर्फ उसके झूठे अल्फ़ाज थे। वर्ना हक बजातेख़ुद बिल्कुल साफ और वाजेह था। उस वक्त वह अफसोस करेगा मगर उस वक्त का अफसोस करना उसके कुछ काम न आएगा।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝
قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ
وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

अल्लाह हर चीज का ख़ालिक है और वही हर चीज पर निगहबान है। आसमानों और जमीन की कुंजियां उसी के पास हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही घाटे में रहने वाले हैं। कहो कि ऐ नादानो, क्या तुम मुझे ग़ैर अल्लाह की इबादत करने के लिए कहते हो। और तुमसे पहले वालों की तरफ भी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल जाया हो जाएगा। और तुम ख़सारे (घाटे) में रहोगे। बल्कि सिर्फ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से बनो। (62-66)

कायनात की मौजूदगी उसके ख़ालिक की मौजूदगी का सुबूत है। इसी तरह कायनात जितने बामअना और जिस कद्र मुनज्जम तौर पर चल रही है वह इसका सुबूत है कि हर आन एक निगरानी करने वाला उसकी निगरानी कर रहा है। आदमी अगर संजीदगी के साथ ग़ौर करे तो वह कायनात में उसके ख़ालिक की निशानी पा लेगा और इसी तरह उसके नाजिम और मुदब्बिर (व्यवस्थापक) की निशानी भी।

ऐसी हालत में जो लोग एक ख़ुदा के सिवा दूसरी हस्तियों के इबादतगुजार बनते हैं वे एक ऐसा अमल कर रहे हैं जिसकी मौजूदा कायनात में कोई कीमत नहीं। क्योंकि ख़ालिक और वकील (कार्य-साधक) जब सिर्फ एक है तो उसी की इबादत आदमी को नफा दे सकती है। उसके सिवा किसी और की इबादत करना गोया ऐसे माबूद को पुकारना है जिसका सिरे से कोई वजूद ही नहीं।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْۗءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَاۗءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾

और लोगों ने अल्लाह की कद्र न की जैसा कि उसकी कद्र करने का हक है। और जमीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी कियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। और सूर फूंका जाएगा तो आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर

जिसे अल्लाह चाहे। फिर दुबारा उसमें फूंका जाएगा तो यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे और जमीन अपने रब के नूर (आलोक) से चमक उठेगी। और किताब रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह हाजिर किए जाएंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा। और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा। और वह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं। (67-70)

अक्सर गुमराहियों की जड़ ख़ुदा का कमतर अंदाजा है। आदमी दूसरी अज्मतों में इसलिए गुम होता है कि उसे ख़ुदा की अथाह अज्मत का पता नहीं। वह अपने अकाबिर (महापुरुषों) से वाबस्तगी को नजात का जरिया समझता है तो इसीलिए समझता है कि उसे मालूम नहीं कि ख़ुदा इससे ज्यादा बड़ा है कि वहां कोई शख़्स अपनी जबान खोलने की जुर्रत कर सके। कियामत जब लोगों की आंख का पर्दा हटाएगी तो उन्हें मालूम होगा कि ख़ुदा तो इतना अजीम था जैसे कि जमीन एक छोटे सिक्के की तरह उसकी मुट्ठी में हो और आसमान एक मामूली काग़ज की तरह उसके हाथ में लिपटा हुआ हो।

जिस तरह इम्तेहान हॉल में इम्तेहान के ख़त्म होने पर अलार्म बजता है उसी तरह मौजूदा दुनिया की मुद्दत ख़त्म होने पर सूर फूंका जाएगा। इसके बाद सारा निजाम बदल जाएगा। इसके बाद एक नई दुनिया बनेगी। हमारी मौजूदा दुनिया सूरज की रोशनी से रोशन होती है जो सिर्फ महसूस माद्दी अशया (भौतिक पदार्थों) को हमें दिखा पाती है। आख़िरत की दुनिया बराहेरास्त ख़ुदा के नूर से रोशन होगी। इसलिए वहां यह मुमकिन होगा कि मअनवी (अर्थपूर्ण) हकीकतों को भी खुली आंख से देखा जा सके। उस वक्त तमाम लोग ख़ुदा की अदालत में हाजिर किए जाएंगे। दुनिया में लोगों ने पैग़म्बरों को और उनकी पैरवी में उठने वाले दाजियों को नजरअंदाज किया था। मगर आख़िरत में लोग यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि लोगों के मुस्तकबिल का फैसला वहां इसी बुनियाद पर किया जा रहा है कि किसने उनका साथ दिया और किसने उनका इंकार कर दिया।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾

और जिन लोगों ने इंकार किया वे गिरोह-गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ हांके जाएंगे। यहां तक कि जब वे उसके पास पहुंचेंगे उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए

जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से डराते थे। वे कहेंगे कि हां, लेकिन अजाब का वादा मुंकिरों पर पूरा होकर रहा। कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का। (71-72)

हक से एराज (उपेक्षा) व इंकार करने के दर्जे हैं। इसी लिहाज से जहन्नम वालों के भी दर्जे हैं। आख़िरत में उन्हें उनके दर्जात के लिहाज से मुख़्तलिफ गिरोहों में तक्सीम किया जाएगा और फिर हर गिरोह को जहन्नम के उस तबके में डाल दिया जाएगा जिसका वह मुस्तहिक है। इस मौके पर जहन्नम की निगरानी करने वाले फरिश्तों की गुफ्तुगू से उस मंज़र की तस्वीरकशी हो रही है जो लोगों के जहन्नम में दाख़िल होने के वक्त पेश आएगा।

जो लोग मौजूदा दुनिया में हक को नहीं मानते उनके न मानने की अस्ल वजह हमेशा तकब्बुर (घमंड) होता है। ताहम उनका तकब्बुर हकीकतन हक के मुकाबले में नहीं होता बल्कि वह हक को पेश करने वाले शख़्स के मुकाबले में होता है। हक को पेश करने वाला बजाहिर एक आदमी को अपने से छोटा दिखाई देता है इसलिए वह आदमी हक को भी छोटा समझ लेता है और उसे हकारत (तिरस्कार) के साथ नजरअंदाज कर देता है।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾

और जो लोग अपने रब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ ले जाए जाएंगे। यहां तक कि जब वे वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, ख़ुशहाल रहो, पस इसमें दाख़िल हो जाओ हमेशा के लिए। और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें इस जमीन का वारिस बना दिया। हम जन्नत में जहां चाहें रहें। पस क्या ख़ूब बदला है अमल करने वालों का। और तुम फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द हलका बनाए हुए अपने रब की हम्द व तस्बीह करते होंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी हम्द अल्लाह के लिए है, आलम का ख़ुदावंद। (73-75)

जन्नत में जाने वाले वे लोग हैं जिनमें तकवा की सिफत पाई जाए। जब आदमी ख़ुदा की बड़ाई को इस तरह पाए कि उसके अंदर से अपनी बड़ाई का एहसास ख़त्म हो जाए तो इसका कुदरती नतीजा यह होता है कि वह ख़ुदा से डरने लगता है। अपने इज्ज (निर्बलता) और ख़ुदा की कुदरत का एहसास उसे अंदेशानाक बना देता है। वह ख़ुदा के मामले में हददर्जा मोहतात हो जाता है। उसे हर वक्त यह खटका लगा रहता है कि आख़िरत में उसका ख़ुदा उसके साथ क्या मामला फरमाएगा। जिन लोगों ने दुनिया में इसी तरह ख़ौफ किया वही आख़िरत की बेख़ौफ जिंदगी के वारिस करार दिए जाएंगे।

अहले जन्नत के साथ आख़िरत में वह मामला किया जाएगा जो दुनिया में शाही मेहमानों के साथ किया जाता है। उन्हें कमाले एजाज व इकराम के साथ उनकी कियामगाहों की तरफ ले जाया जाएगा। जब वे जन्नत को अपनी आंख से देखेंगे तो बेइख़्तियार उनकी जबान पर हम्द और शुक्र के कलिमात जारी हो जाएंगे। जन्नत में उनके लिए न सिर्फ आला कियामगाहें होंगी बल्कि वहां सैर और मुलाकात के लिए आने जाने पर कोई रोक न होगी। सफर और मुवासिलात (संचार) की आलातरीन सहूलतें वाफिर मिक्दार में हासिल होंगी।

हम्द की मुस्तहिक सिर्फ एक अल्लाह की जात है। मगर मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इसका जहूर नहीं होता। आख़िरत हम्दे इलाही के कामिल जुहूर का दिन होगा। उस वक्त तमाम जबानें और सारा माहौल हम्दे ख़ुदावंदी के नग़मे से मअमूर हो जाएगा। तमाम झूठी बड़ाइयां ख़त्म हो जाएंगी। वहां सिर्फ एक हस्ती होगी जिसका आदमी नाम ले। वहां सिर्फ एक बड़ाई होगी जिसकी बड़ाई से सरशार (अभिभूत) होकर वह उसकी हम्द करे।

سُورَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٣﴾

आयतें-85 सूरह-40. अल-मोमिन रुकूअ-9

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ से जो जबरदस्त है, जानने वाला है। माफ करने वाला और तौबा कुबूल करने वाला है, सख़्त सजा देने वाला, बड़ी कुदरत वाला है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी की तरफ लौटना है। (1-3)

'अजीज व अलीम' के अल्फाज यहां कुरआन के हक में बतौर दलील इस्तेमाल हुए हैं। कुरआन के उतरने के वक्त यह एक पेशीनगोई (भविष्यवाणी) थी, आज यह एक साबितशुदा वाकया है।

क़ुरआन दौरे साइंस से पहले इंतिहाई नामुवाफ़िक़ (विषम) हालात में उतरा। मगर ऐन अपने दावे के मुताबिक़ उसने अपने मुख़ालिफ़ों के ऊपर ग़लबा हासिल किया। अरब के मुश्रिकीन और यहूद और अजीम रूमी और ईरानी सल्तनतें सबकी सब उसकी दुश्मन थीं मगर इसने बहुत थोड़े अर्से में सबको मग़लूब कर लिया। यह एक ऐसा वाकया है जिसकी कोई दूसरी मिसाल इंसानी तारीख़ में नहीं मिलती। यह इस बात का सुबूत है कि क़ुरआन ख़ुदाए अजीज व ग़ालिब की तरफ से भेजा गया है।

क़ुरआन की दूसरी सिफ़त यह है कि वह कामिल तौर पर एक सही किताब है। डेढ़ हजार वर्ष बाद भी क़ुरआन की कोई बात हक़ीक़ते वाक़या के ख़िलाफ़ नहीं निकली। यह इस बात का सुबूत है कि इसका नाजिल करने वाला अलीम व ख़बीर है उससे जमीन व आसमान की कोई बात मख़्फ़ी (छुपी) नहीं। वह माजी, हाल और मुस्तक़बिल से यकसां तौर पर बाख़बर है।

यही ख़ुदा इंसान का हक़ीक़ी माबूद है। उसकी क़ुदरत और उसके इल्म का यह तक़ाज़ा है कि वह तमाम इंसानों को जमा करके उनका हिसाब ले। फिर पूरे अद्ल (न्याय) के साथ हर एक का फ़ैसला करे। जो लोग ख़ुदा की तरफ रुजूअ हुए उन्हें माफ कर दे और जिन्होंने सरकशी की उन्हें उनके बुरे आमाल की सजा दे।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾

अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो मुंकिर हैं। तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखे में न डाले। उनसे पहले नूह की कौम ने झुठलाया। और उनके बाद के गिरोह ने भी। और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें और उन्होंने नाहक के झगड़े निकाले ताकि उससे हक को पसपा (परास्त) कर दें तो मैंने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी थी मेरी सजा। और इसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने इंकार किया कि वे आग वाले हैं। (4-6)

यहां अल्लाह की आयतों से मुराद वे दलाइल हैं जो हक की दावत को साबित करने के लिए पेश किए गए हों। जो लोग ख़ुदा के मामले में संजीदा न हों वे इन दलाइल में ग़ैरमुतअल्लिक़ बहसें पैदा करके लोगों को इस शुबह में डालते हैं कि यह दावत हक की दावत नहीं है। बल्कि महज एक शख़्स (दाओ) की जेहनी उपज है।

इस किस्म का झूठा मुजादिला (निरर्थक बीस) बहुत बड़ा जुर्म है। ताहम मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में ऐसे लोगों को एक मुकर्रर मुद्दत तक मोहलत हासिल रहती है। इसके बाद उनके लिए वही बुरा अंजाम मुक़द्दर है जो क़ौमे नूह, क़ौमे आद, क़ौमे समूद वग़ैरह का हुआ। जिन लोगों ने अपने को बड़ा समझा था वे छोटे कर दिए गए। और जिन लोगों को छोटा समझ लिया गया था वे अल्लाह के नजदीक बड़े क़रार पाए।

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ۣ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٨﴾ۙ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾

जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह करते हैं, उसकी हम्द के साथ। और वे उस पर ईमान रखते हैं। और वे ईमान वालों के लिए मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ करते हैं। ऐ हमारे रब तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज का इहाता किए हुए है। पस तू माफ कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब, और तू उन्हें हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है। और उन्हें भी जो सालेह हों उनके वालिदैन और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और उन्हें बुराइयों से बचा ले। और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उन पर तूने रहम किया। और यही बड़ी कामयाबी है। (7-9)

जो अल्लाह के बंदे बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठते हैं उन्हें हमेशा सताया जाता है। उन्हें माहौल में हक़ीर बना दिया जाता है। मगर ऐन उस वक्त जबकि जाहिरपरस्त इंसानों के दर्मियान उनका यह हाल होता है, ऐन उसी वक्त जमीन व आसमान उनके बरसरे हक होने की तस्दीक कर रहे होते हैं। कायनात का इंतिजाम करने वाले फ़रिश्ते उनके हुस्ने अंजाम सुखद परिणाम के मुंतजिर होते हैं। वक्ती दुनिया में नाक़ाबिले तज़्किरा समझे जाने वाले लोग अबदी दुनिया में उस मक़ामे इज्जत पर होते हैं कि अल्लाह के मुक़र्रबतरीन (निकटतम) फ़रिश्ते भी उनके हक में दुआएं कर रहे हों।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِن مَّقْتِكُمْ أَنفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ﴿١١﴾ ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۖ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾

जिन लोगों ने इंकार किया, उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, ख़ुदा की बेजारी (खिन्नता) तुमसे इससे ज्यादा है जितनी बेजारी तुम्हें अपने आप पर है। जब तुम्हें ईमान की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार हमें जिंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इकरार किया, तो क्या निकलने की कोई सूरत है। यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। और जब उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते। पस फैसला अल्लाह के इख़्तियार में है जो अजीम है, बड़े मर्तबे वाला है। (10-12)

मौजूदा दुनिया में अल्लाह तआला ने हिदायत की शक्ल में अपनी रहमत भेजी। मगर लोगों ने उसे कुबूल नहीं किया। इसका अंजाम आख़िरत में यह सामने आएगा कि इस किस्म के लोग अल्लाह की रहमत से बिल्कुल महरूम कर दिए जाएंगे। दुनिया में उन्होंने ख़ुदा की रहमत को नजरअंदाज किया था, आख़िरत में ख़ुदा की रहमत उन्हें नजरअंदाज कर देगी।

उस वक्त इंकार करने वाले लोग कहेंगे कि ख़ुदाया, तूने हमें मिट्टी से पैदा किया। गोया कि हम मुर्दा थे फिर तूने हमारे अंदर जान डाली। इसके बाद अपनी उम्र पूरी करके दूसरी बार हम पर मौत आई। और अब हम दुबारा आख़िरत की दुनिया में उठाए गए हैं। इस तरह तू हमें दो बार मौत और दो बार जिंदगी दे चुका है। अब अगर तू हमें तीसरा मौका दे और फिर हमें दुनिया में भेज दे कि हम वहां रहें और फिर मर कर आलमे आख़िरत में हाजिर हों तो हम वहां तेरी सच्चाई का एतराफ करेंगे और नेक अमली की जिंदगी गुजारेंगे।

मगर उनकी यह दरख़्वास्त सुनी नहीं जाएगी। क्योंकि उन्होंने अपने बारे में यह सुबूत दिया कि वे सच्चाई का इदराक उस वक्त नहीं कर सकते जबकि सच्चाई अभी ग़ैब में छुपी हुई हो। वे सिर्फ जाहिरी ख़ुदाओं को पहचान सकते हैं, वे ग़ैबी ख़ुदा को पहचानने की सलाहियत नहीं रखते। और ख़ुदा के यहां ऐसे जाहिरपरस्तों की कोई कीमत नहीं।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾ رَفِيعُ

الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिज्क उतारता है। और नसीहत सिर्फ वही शख़्स कुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ रुजूअ करने वाला हो। पस अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके, चाहे मुंकिरों को नागवार क्यों न हो। वह बुलन्द दर्जों वाला, अर्श का मालिक है। वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजता है ताकि वह मुलाकात के दिन से डराए। जिस दिन कि वे जाहिर होंगे। अल्लाह से उनकी कोई चीज छुपी हुई न होगी। आज बादशाही किस की है, अल्लाह वाहिद कह्हार (वर्चस्वशाली) की। आज हर शख़्स को उसके किए का बदला मिलेगा, आज कोई जुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (13-17)

कायनात में बेशुमार निशानियां हैं जो तमसील (मिसालों) की जबान में हकीकत का दर्स दे रही हैं। उन्हीं में से एक निशानी बारिश का निजाम है। यह माद्दी वाकया 'वही' के मअनवी मामले को मुमस्सल (प्रतिरूपता) कर रहा है। जिस तरह बारिश जरख़ेज जमीन के लिए मुफीद है और बंजर जमीन के लिए ग़ैर मुफीद, इसी तरह 'वही' भी ख़ुदा की मअनवी बारिश है। जिन लोगों ने अपने सीने खुले रखे हों उनके अंदर यह बारिश दाख़िल होकर उनके वजूद को सरसब्ज व शादाब कर देती है। इसके बरअक्स जिन लोगों के दिल ग़ैर ख़ुदाई बड़ाइयों से भरे हुए हों वे गोया बंजर जमीन हैं। वे 'वही' के फायदों से महरूम रहेंगे।

अल्लाह अपने बंदों से पूरी तरह वाकिफ है। वह जिस बंदे को अहल पाता है उसे अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी (संदेश-वाहन) के लिए चुन लेता है। इस पैग़ाम का ख़ास निशाना यह होता है कि लोगों को उस आने वाले दिन से आगाह किया जाए जबकि वे बादशाहे कायनात के सामने खड़े किए जाएंगे जिससे किसी की कोई बात छुपी हुई नहीं। और न कोई है जो उसके फैसले पर असरअंदाज हो सके।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

और उन्हें करीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराओ जबकि दिल हलक तक आ पहुंचेंगे, वे ग़म से भरे हुए होंगे। जालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारिशी जिसकी बात मानी जाए। वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिन्हें सीने छुपाए हुए हैं। और अल्लाह हक के साथ फैसला करेगा। और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज का फैसला नहीं करते। बेशक अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है। (18-20)

मौजूदा दुनिया में इंसान को हर तरह के मौके हासिल हैं। वह आजाद है कि जो चाहे करे। इससे आदमी ग़लतफहमी में पड़ जाता है। वह अपनी मौजूदा आरजी हालत को मुस्तकिल हालत समझ लेता है। हालांकि ये मौके जो इंसान को मिले हैं वे बतौर इम्तेहान हैं न कि बतौर इस्तहकाक (अधिकार)। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही मौजूदा तमाम मौके उससे छिन जाएंगे। उस वक्त इंसान को मालूम होगा कि उसके पास इज्ज (निर्बलता) के सिवा और कुछ नहीं जिसके सहारे वह खड़ा हो सके।

आदमी चाहता है कि बेकैद जिंदगी गुजारे। इसी मिजाज की वजह से आदमी ग़ैर ख़ुदा को बतौर ख़ुद ख़ुदाई में शरीक बनाता है ताकि उनके नाम पर वह अपनी बेराहरवी को जाइज साबित कर सके। मगर कियामत में जब हकीकत बेपर्दा होकर सामने आएगी तो आदमी जान लेगा कि यहां ख़ुदा के सिवा कोई न था जिसे किसी किस्म का इख़्तियार हासिल हो।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ﴿٢١﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुजर चुके हैं। वे इनसे बहुत ज्यादा थे कुव्वत में और उन आसार के एतबार से भी जो उन्होंने जमीन में छोड़े। फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न था। यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां लेकर आए तो उन्होंने इंकार किया। तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। यकीनन वह ताक्तवर है सख़्त सजा देने वाला है। (21-22)

दुनिया की तारीख़ में कसरत से ऐसे वाकेयात हैं कि एक कौम उभरी और फिर मिट

गई। एक कौम जिसने जमीन पर शानदार तमद्दुन (सभ्यता) खड़ा किया, आज उसका तमद्दुन खंडहर की सूरत में जमीन के नीचे दबा हुआ पड़ा है। एक कौम जिसे किसी वक्त एक जिंदा वाक्ये की हैसियत हासिल थी, आज वह सिर्फ एक तारीख़ी वाक्ये के तौर पर काबिले जिक्र समझी जाती है।

इस किस्म के वाकेयात लोगों के लिए मालूम वाकेयात हैं मगर लोगों ने इन वाकेयात को अरजी हवादिस (भू-घटनाओं) या सियासी इंकिलाबात के ख़ाने में डाल रखा है। लेकिन अस्ल हकीकत यह है कि ये सब ख़ुदाई फैसले थे जो सच्चाई के इंकार के नतीजे में उन कौमों पर नाजिल हुए। अगर हमें वह निगाह हासिल हो जिससे हम मअनवी हकीकतों को देख सकें तो हमें नजर आएगा कि हर वाक्या ख़ुदा के फरिश्तों के जरिए अंजाम पा रहा था, अगरचे बजाहिर देखने वालों को वह दुनियावी असबाब के तहत होता हुआ दिखाई दिया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٢٣﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुली दलील के साथ, फिरऔन और हामान और कारून के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है। फिर जब वह हमारी तरफ से हक लेकर उनके पास पहुंचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों को कत्ल कर डालो जो इसके साथ ईमान लाएं और उनकी औरतों को जिंदा रखो। और उन मुंकिरों की तदबीर महज बेअसर रही। (23-25)

पैग़म्बरों को आम दलाइल के साथ मजीद ऐसी मोजिजाती ताईद हासिल रहती है जो उनके फरसतादाए ख़ुदा (ईश-दूत) होने का इंतिहाई वाजेह सुबूत होती है। मगर हक को मानना हमेशा अपनी नफी (नकार) की कीमत पर होता है जो बिलाशुबह किसी इंसान के लिए मुश्किलतरीन कुर्बानी है। यही वजह है कि इंतिहाई खुले-खुले दलाइल के बावजूद फिरऔन और उसके दरबारियों ने हजरत मूसा की नुबुव्वत का इकरार नहीं किया।

इसके बजाए उन्होंने एक तरफ अवाम को यह तअस्सुर (प्रभाव) देना शुरू किया कि मूसा का पैग़म्बरी का दावा बेहकीकत है और उनके मोजिजे (चमत्कार) महज जादू का करिश्मा हैं। दूसरी तरफ उन्होंने यह फैसला किया कि बनी इस्राईल की तादाद को घटाने के लिए अपनी साबिका पॉलिसी को मजीद शिद्दत के साथ जारी कर दिया जाए। ताकि मूसा अपनी कौम (बनी इस्राईल) के अंदर अपने लिए मजबूत बुनियाद न पा सकें। मगर उन्हें यह मालूम न था कि वे अपनी ये तदबीरें मूसा के मुकाबले में नहीं बल्कि ख़ुदा के मुकाबले में कर रहे हैं और ख़ुदा के मुकाबले में किसी की कोई तदबीर कभी कारगर नहीं होती।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

और फिरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा को कत्ल कर डालूं और वह अपने रब को पुकारे, मुझे अंदेशा है कि कहीं वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डाले या मुल्क में फसाद फैला दे। और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर (घमंडी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। (26-27)

'तुम्हारा दीन बदल डाले' का मतलब है तुम्हारा मजहब बदल डाले। यानी तुम जिस मजहबी तरीके पर हो और जो तुम्हारे अकाबिर (पूर्वजों) से चला आ रहा है, वह ख़त्म हो जाए और लोगों के दर्मियान नया मजहब राइज हो जाए। यह ऐसा ही है जैसे हिन्दुस्तान में कुछ इंतिहापसंद हिन्दू कहते हैं कि मजहब की तब्लीग़ को कानूनी तौर पर बन्द करो, वर्ना दूसरे मजहब वाले अपनी तब्लीग़ से देश के धर्म को बदल डालेंगे।

फसाद से मुराद बदअमनी (अशांति) है। यानी मूसा को अपने हमकौमों में साथ देने वाले मिल जाएंगे। और उन्हें लेकर वह मुल्क में इंतिशार पैदा करने की कोशिश करेंगे। इसलिए हमें चाहिए कि हम शुरू ही में उन्हें कत्ल कर दें।

हक को मानने में सबसे बड़ी रुकावट आदमी की मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) होती है। वह अपने को ऊंचा रखने की ख़ातिर हक को नीचा कर देना चाहता है। मगर हक का मददगार अल्लाह रब्बुल आलमीन है। इब्तिदा में चाहे उसके मुख़ालिफीन बजाहिर उसे दबा लें मगर अल्लाह की मदद इस बात की जमानत है कि आख़िरी कामयाबी बहरहाल हक को हासिल होगी।

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَاۗءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَاۗءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

और आले फिरऔन में से एक मोमिन शख़्स, जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, बोला, क्या तुम लोग एक शख़्स को सिर्फ इस बात पर कत्ल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालांकि वह तुम्हारे रब की तरफ से खुली दलीलें भी लेकर आया है। और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और अगर वह सच्चा है तो उसका कोई हिस्सा तुम्हें पहुंच कर रहेगा। जिसका वादा वह तुमसे करता है। बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुजरने वाला हो, झूठा हो। ऐ मेरी कौम, आज तुम्हारी सल्तनत है कि तुम जमीन में ग़ालिब हो। फिर अल्लाह के अजाब के मुकाबिल हमारी कौन मदद करेगा, अगर वह हम पर आ गया। फिरऔन ने कहा, मैं तुम्हें वही राय देता हूं जिसे मैं समझ रहा हूं, और मैं तुम्हारी रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ कर रहा हूं। (28-29)

यहां जिस मर्दे मोमिन का जिक्र है वह फिरऔन के शाही ख़ानदान का एक फर्द था और ग़ालिबन वह दरबार के आला ओहदेदारों में से था। यह बुजुर्ग हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की तौहीद की दावत से मुतअस्सिर (प्रभावी) हुए, ताहम वह अपना ईमान छुपाए हुए थे। मगर जब उन्होंने देखा कि फिरऔन हजरत मूसा को कत्ल करने का इरादा कर रहा है तो वह खुल कर हजरत मूसा की हिमायत पर आ गए। उन्होंने निहायत मुअस्सिर (प्रभावी) और निहायत हकीमाना अंदाज में हजरत मूसा की मुदाफअत (प्रतिरक्षा) फरमाई।

इस वाकये में एक नसीहत यह है कि तब्लीग़ एक ऐसी ताकत है कि ख़ुद दुश्मन की सफों में अपने हमदर्द और साथी पैदा कर लेती है, चाहे वह दुश्मने ख़ानदाने फिरऔन जैसा जालिम और मुतकब्बिर क्यों न हो।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूं कि तुम पर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए, जैसा दिन कौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया। और अल्लाह अपने बंदों पर कोई जुल्म करना नहीं चाहता। और ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूं कि तुम पर चीख़ पुकार का दिन आ जाए, जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे। और तुम्हें ख़ुदा से बचाने वाला कोई न होगा। और जिसे ख़ुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (30-33)

फिरऔन ने हजरत मूसा को दुनिया की सजा से डराया था, इसके जवाब में मर्दे मोमिन ने फिरऔन को आख़िरत की सजा से डराया। हक के दाओ का तरीका हमेशा यही होता है। लोग दुनिया की फिक्र करते हैं, दाओ आख़िरत के लिए फिक्रमंद होता है। लोग दुनिया की इस्तेलाहों (शब्दावलियों) में बोलते हैं, दाओ आख़िरत की इस्तेलाहों में कलाम करता है। लोग दुनिया के मसाइल को सबसे ज्यादा काबिले जिक्र समझते हैं दाओ के नजदीक सबसे ज्यादा काबिले जिक्र मसला वह होता है जिसका तअल्लुक आख़िरत से हो।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِالْبَيِّنَٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِى شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُم بِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ ٱللَّهُ مِنۢ بَعْدِهِۦ رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ﴿٣٤﴾ ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِىٓ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَٰنٍ أَتَىٰهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ وَعِندَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾

और इससे पहले यूसुफ तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई बातों की तरफ से शक ही में पड़े रहे। यहां तक कि जब उनकी वफात हो गई तो तुमने कहा कि अल्लाह इनके बाद हरगिज कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुजरने वाले और शक करने वाले होते हैं। जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो। अल्लाह और ईमान वालों के नजदीक यह सख़्त मबग़ूज अप्रिय है। इसी तरह अल्लाह मुहर कर देता है हर मग़रूर (अभिमानी), सरकश के दिल पर। (34-35)

हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम की जिंदगी में मिस्र के लोगों की अक्सरियत आपकी नुबुव्वत की कायल नहीं हुई। मगर आपकी वफात के बाद जब मुल्की सल्तनत का निजाम बिगड़ने लगा तो मिस्रियों को आपकी अज्मत का एहसास हुआ। अब वे कहने लगे कि यूसुफ का वुजूद मिस्र के लिए बहुत बाबरकत था, ऐसा रसूल अब कहां आएगा। हजरत यूसुफ अगरचे ख़ुदा के पैग़म्बर थे मगर इसी के साथ वह एक इंसान भी थे। इस बिना पर लोगों के लिए यह कहने की गुंजाइश थी कि 'क्या जरूरी है कि यूसुफ के कमालात पैग़म्बरी की बिना पर हों, यह भी हो सकता है कि वह एक जहीन इंसान हों और इस बिना पर उन्होंने कमालात जाहिर किए हों।' इसी तरह की बातें थीं जिन्हें लेकर मिस्र के लोग आपके बारे में शक में मुब्तिला हो गए।

हक चाहे कितना ही वाजेह हो, मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में हमेशा इसका इम्कान बाकी रहता है कि आदमी कोई शुबह का पहलू निकाल कर उसका मुंकिर बन जाए। अब जो लोग

अपने अंदर सरकशी और घमंड का मिजाज लिए हुए हों, जो यह समझते हों कि हक को मान कर वे अपनी बड़ाई खो देंगे। वे ऐन अपने मिजाज के तहत इन्हीं शुबहात में अटक कर रह जाते हैं। वे इन शुबहात को इतना बढ़ाते हैं कि वही उनके दिल व दिमाग़ पर छा जाता है। नतीजा यह होता है कि वे हक के मामले में सीधे अंदाज से सोच नहीं पाते। वे हमेशा उसके मुंकिर बने रहते हैं, यहां तक कि इसी हाल में मर जाते हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَٰهَٰمَٰنُ ٱبْنِ لِى صَرْحًا لَّعَلِّىٓ أَبْلُغُ ٱلْأَسْبَٰبَ ﴿٣٦﴾ أَسْبَٰبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَأَظُنُّهُۥ كَٰذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوٓءُ عَمَلِهِۦ وَصُدَّ عَنِ ٱلسَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِى تَبَابٍ ﴿٣٧﴾

और फिरऔन ने कहा कि ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं रास्तों पर पहुंचूं, आसमानों के रास्तों तक, पस मूसा के माबूद (पूज्य) को झांक कर देखूं, और मैं तो उसे झूठा ख़्याल करता हूं। और इस तरह फिरऔन के लिए उसकी बदअमली ख़ुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया। और फिरऔन की तदबीर ग़ारत होकर रही। (36-37)

फिरऔन ने अपने वजीर हामान से जो बात कही वह कोई संजीदा बात नहीं थी बल्कि महज एक वक्ती तदबीर के तौर पर थी। उसने देखा कि मर्दे मोमिन की माकूल और मुदल्लल तकरीर से दरबार के लोग मुतअस्सिर हो रहे हैं, इसलिए उसने चाहा कि एक शोशे की बात निकाले ताकि हजरत मूसा की दावत संजीदा बहस का मौजूअ (विषय) न बने बल्कि मजाक का मौजूअ बनकर रह जाए।

'बदअमली का ख़ुशनुमा बनना' यह है कि आदमी कुछ ख़ुशनुमा अल्फ़ाज बोलकर हक बात को रद्द कर दे। यही आदमी की गुमराही की अस्ल जड़ है। यानी हकीकी दलाइल के मुकाबले में शोशे की बात को अहमियत देना, खुली बेराहरवी को झूठी तौजीहात (तर्कों) में छुपाने की कोशिश करना वग़ैरह। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जो हक मोहकम (ठोस) दलील के ऊपर खड़ा हुआ हो उसे बेबुनियाद शोशे निकाल कर मग़लूब (परास्त) नहीं किया जा सकता।

وَقَالَ ٱلَّذِىٓ ءَامَنَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ ٱلرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ يَٰقَوْمِ إِنَّمَا هَٰذِهِ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا مَتَٰعٌ وَإِنَّ ٱلْءَاخِرَةَ هِىَ دَارُ ٱلْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُو۟لَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ ٱلْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيَٰقَوْمِ مَا لِىٓ

أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُونَنِيٓ إِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾ تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَأُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِي بِهٖ عِلْمٌ وَّأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِيٓ إِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَآ إِلَى اللّٰهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُونَ مَآ أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِيٓ إِلَى اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بَصِيرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बता रहा हूं। ऐ मेरी कौम, यह दुनिया की जिंदगी महज चन्द रोजा है और अस्ल ठहरने का मकाम आख़िरत (परलोक) है। जो शख़्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला पाएगा। और जो शख़्स नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहां वे बेहिसाब रिज़्क पाएंगे। और ऐ मेरी कौम, क्या बात है कि मैं तो तुम्हें नजात (मुक्ति) की तरफ बुलाता हूं और तुम मुझे आग की तरफ बुला रहे हो। तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं ख़ुदा के साथ कुफ्र करूं और ऐसी चीज को उसका शरीक बनाऊं जिसका मुझे कोई इल्म नहीं। और मैं तुम्हें जबरदस्त मग्फिरत (क्षमा) करने वाले ख़ुदा की तरफ बुला रहा हूं। यकीनी बात है कि तुम जिस चीज की तरफ मुझे बुलाते हो उसकी कोई आवाज न दुनिया में है और न आख़िरत में। और बेशक हम सबकी वापसी अल्लाह ही की तरफ है और हद से गुजरने वाले ही आग में जाने वाले हैं। पस तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगरां (निगाह रखने वाला) है। (38-44)

दरबारे फिरऔन के मोमिन की यह तकरीर निहायत वाज़ेह है। साथ ही, वह एक नमूने की तकरीर है जो यह बताती है कि हक के दाओ का अंदाजे ख़िताब क्या होना चाहिए और यह कि हक की दावत का अस्ल नुक्ता क्या है।

'मैं तुम्हें ख़ुदावंद आलम की तरफ बुलाता हूं। और तुम जिसकी तरफ मुझे बुला रहे हो उसे पुकारने का कोई फायदा न दुनिया में है और न आख़िरत में' यह फिक़रा (वाक्य) मर्दे मोमिन की पूरी तकरीर का ख़ुलासा है। इससे अंदाजा होता है कि फिरऔन के दरबार में जो चीज जेरे बहस थी वह क्या थी। वह यह थी कि ख़ुदा को पुकारा जाए या इंसान के बनाए हुए बुतों को पुकारा जाए। मर्दे मोमिन ने कहा कि ख़ुदा तो एक जिंदा और ग़ालिब हकीकत है, उसे पुकारना एक हकीकी माबूद को पुकारना है। मगर तुम्हारे असनाम (बुत) सिर्फ तुम्हारे वहम की ईजाद हैं। वे न दुनिया में तुम्हें कोई फायदा दे सकते और न आख़िरत में। जब उनका कोई हकीकी वजूद ही नहीं तो उनसे कोई हकीकी फायदा कैसे मिल सकता है।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ ۟ أَدْخِلُوٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

फिर अल्लाह ने उसे उनकी बुरी तदबीरों से बचा लिया। और फिरऔन वालों को बुरे अजाब ने घेर लिया। आग, जिस पर वे सुबह व शाम पेश किए जाते हैं। और जिस दिन कियामत कायम होगी, फिरऔन वालों को सख़्ततरीन अजाब में दाख़िल करो। (45-46)

फिरऔन के दरबार का मर्दे मोमिन पैग़म्बर नहीं था। मगर तंहा होने के बावजूद अल्लाह ने उसे फिरऔन के जालिमाना मंसूबे से बचा लिया। इससे मालूम हुआ कि ग़ैर अंबिया को भी हक की हिमायत की वह नुसरत मिलती है जिसका वादा अंबिया (नबियों) से किया गया है।

इंसानों के उख़रवी (परलोक के) अंजाम का बाकायदा फैसला अगरचे कियामत मे होगा, मगर मौत के बाद जब आदमी अगली दुनिया में दाख़िल होता है तो फौरन ही उस पर खुल जाता है कि वह पिछली दुनिया में क्या करके यहां आया है और अब उसके लिए कौन सा अंजाम मुकद्दर है। इस तरह शुऊर की सतह पर वह मौत के बाद ही अपने अंजाम से दो चार हो जाता है और जिस्मानी सतह पर वह कियामत में ख़ुदा की अदालत कायम होने के बाद उससे दो चार होगा।

وَإِذْ يَتَحَآجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُلٌّ فِيهَآ ۙ إِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوٓا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۖ قَالُوا بَلٰى ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾

और जब वे दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमजोर लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो। बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इसमें हैं। अल्लाह ने बंदों के दर्मियान फैसला कर दिया। और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने रब से दरख़्वास्त करो कि हमारे अजाब में से एक दिन की तख़्फीफ (कमी) कर दे। वे

कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल वाजेह दलीलें लेकर नहीं आए। वे कहेंगे कि हां। निगहबान कहेंगे फिर तुम ही दरख़्वास्त करो। और मुंकिरों की पुकार अकारत ही जाने वाली है। (47-50)

इन आयतों में जहन्नम का एक मंजर दिखाया गया है। दुनिया में जो लोग बड़े बने हुए थे वे वहां अपनी सारी बड़ाई भूल जाएंगे। वे अवाम जो यहां अपने बड़ों पर फख्र करते थे वे वहां अपने बड़ों से बेजारी का इज़्हार करेंगे। दुनिया में जो लोग हक के आगे झुकने के लिए तैयार नहीं होते थे वे वहां आजिजाना तौर पर हक के आगे झुक जाएंगे। मगर आख़िरत का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾ يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾ هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

बेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की जिंदगी में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे, जिस दिन जालिमों को उनकी मअजरत (सफाई पेश करना) कुछ फायदा न देगी और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा। और हमने मूसा को हिदायत अता की और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया, रहनुमाई और नसीहत अक्ल वालों के लिए। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक है और अपने कुसूर की माफ़ी चाहो। और सुबह व शाम अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ। (51-55)

पैग़म्बर और पैग़म्बर के पैरोकारों के लिए ख़ुदा की मदद का यकीनी वादा है। मगर इस मदद का इस्तहकाक (अधिकार) हमेशा सब्र के बाद पैदा होता है। सब्र की यह अहमियत इसलिए है ताकि अहले हक मुकम्मल तौर पर अहले हक ठहरें और जालिम मुकम्मल तौर पर जालिम साबित हो जाएं। इस तफरीकी (विभेद के) मरहले को लाने के लिए अहले हक को यकतरफा तौर पर सब्र करना पड़ता है।

अहले हक का यह सब्र उन्हें दुनिया में ख़ुदा की मदद का मुस्तहिक बनाता है। और इसी सब्र के जरिए वे इस काबिल साबित होते हैं कि वे कियामत के दिन जालिमों के मुकाबले में ख़ुदा के गवाह बनकर खड़े हों।

ख़ुदा की तरफ से जो किताब आती है वह इंसानों की हिदायत और नसीहत ही के लिए

आती है। मगर यह नसीहत सिर्फ उन लोगों को फायदा देती है जो अक्ल वाले हों। यानी वे लोग जो मस्लेहतों में बंधे हुए न हों। जो नफ्सियाती पेचीदगियों (पूर्वाग्रहों) से आजाद होकर उस पर ग़ौर कर सकें। जो बातों को दलील के एतबार से जांचते हों न कि किसी और एतबार से। यही ख़ुदा की हिदायत के साथ अक्ल वाला मामला करना है। जो लोग ख़ुदा की हिदायत के साथ बेअक्ली का मामला करें वे जालिम हैं और जो लोग ख़ुदा की हिदायत के साथ अक्ल वाला मामला करें वही वे लोग हैं जो कामयाब हुए।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ إِن فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُم بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

जो लोग किसी सनद के बग़ैर जो उनके पास आई हो, अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में सिर्फ बड़ाई है कि वे उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं। पस तुम अल्लाह की पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला है, देखने वाला है। (56)

हक इतना वाजेह और इतना मुदल्लल (तर्कपूर्ण) है कि उसे समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं। मगर जब भी हक जाहिर होता है तो वह किसी 'इंसान' के जरिए जाहिर होता है। इसलिए हक का एतराफ अमलन हामिले हक (सत्य के धारक) के एतराफ के हममअना बन जाता है। यही वजह है कि वे लोग हक को मानने पर राजी नहीं होते जो अपने अंदर बड़ाई की नफ्सियात लिए हुए हों।

ऐसे लोगों को डर होता है कि हक का एतराफ करते ही वे हामिले हक के मुकाबले में अपनी बरतरी खो देंगे। अपनी इसी नफ्सियात की वजह से वे उसके मुख़ालिफ बन जाते हैं। मगर ख़ुदा ने अपनी दुनिया के लिए मुकद्दर कर दिया है कि ऐसे लोग कभी कामयाब न हों।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

यकीनन आसमानों और जमीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निस्बत ज्यादा बड़ा काम है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और अंधा और आंखों वाला यकसां (समान) नहीं हो सकता, और न ईमानदार और नेकोकार (सत्कर्मी) और वे जो बुराई करने वाले हैं। तुम लोग बहुत कम सोचते हो। बेशक कियामत आकर रहेगी। इसमें कोई शक नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (57-59)

कायनात की अज़्मत अपने ख़ालिक की अज़्मत का तआरुफ (परिचय) है। यह अज़्मत इतनी बेपनाह है कि इसके मुकाबले में इंसान को दुबारा पैदा करना निस्बतन (अपेक्षाकृत) एक बहुत ज्यादा आसान काम है। इस तरह कायनात की मौजूदा तख़्लीक इंसान के तख़्लीक सानी (पूनःसृजन) के इम्कान को साबित कर रही है।

इसके बाद इंसानी समाज को देखा जाए तो आख़िरत की दुनिया का आना एक अख़्लाकी जरूरत मालूम होने लगता है। समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हकीकत को देखने वाली बसीरत का सुबूत देते हैं और ऐसे लोग भी हैं जो हकीकत के मुकाबले में बिल्कुल अंध ो बने हों। इसी तरह समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हर हाल में इंसाफ पर कायम रहते हैं। और ऐसे लोग भी जो इंसाफ से हट जाते हैं और मामलात में जालिमाना रवैया इख़्तियार करते हैं। इंसान का अख़्लाकी एहसास कहता है कि इन दोनों किस्म के इंसानों का अंजाम यकसां (एक जैसा) नहीं होना चाहिए।

इन बातों पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि आख़िरत का जुहूर अक्ली तौर पर मुमकिन भी है और अख़्लाकी तौर पर जरूरी भी।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾ كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾

और तुम्हारे रब ने फरमा दिया है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से सरताबी विमुखता करते हैं वे अनकरीब जलील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को रोशन किया। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। फिर तुम कहां से बहकाए जाते हो। इसी तरह वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे। (60-63)

जमीन पर रात और दिन का बाक़ायदा निजाम और इस तरह के दूसरे हयातबख़्श (जीवनदायी) वाकेयात इससे ज्यादा बड़े हैं कि कोई इंसान या तमाम मख़्लूक़ात मिलकर भी इन्हें जुहूर में ला सकें। यह एक खुला हुआ करीना (संकेत) है जो बताता है कि जो ख़ालिक है वही इस लायक है कि उसे माबूद बनाया जाए। आदमी को चाहिए कि उसी के आगे झुके

और उसी से उम्मीदें कायम करे।

मगर आदमी ख़ालिके कायनात से इबादत और दुआ का हकीकी तअल्लुक कायम नहीं कर पाता। इसकी वजह यह है कि वह किसी ग़ैर ख़ालिक में अटका हुआ होता है। कुछ लोग जिंदा या मुर्दा बुतों में अटके हुए होते हैं जिसे शिर्क कहा जाता है। और कुछ लोग ख़ुद अपनी जात में अटके हुए होते हैं जिसका दूसरा नाम किब्र (अहं) है। ख़ुदा बार-बार ऐसे दलाइल जाहिर करता है जो इस फरेब की तरदीद (खंडन) करने वाले हों। मगर इंसान कोई न कोई झूठी तौजीह करके उन्हें नजरअंदाज कर देता है।

इस किस्म का हर रवैया ख़ालिके कायनात की नाक़द्री है। और जो लोग ख़ालिके कायनात की नाक़द्री करें वे जहन्नम के सिवा कहीं और जगह नहीं पा सकते।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَيُّ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा नक्शा बनाया पस उम्दा नक्शा बनाया। और उसने तुम्हें उम्दा चीजों का रिज़्क दिया। यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। वही जिंदा है उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम उसी को पुकारो। दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (64-65)

जमीन पर अनगिनत असबाब जमा किए गए हैं। इसके बाद ही यह मुमकिन हुआ है कि इंसान जैसी मख़्लूक इसके ऊपर तमद्दुन (सभ्यता) की तामीर कर सके। इसी तरह जमीन के ऊपर जो फजा है उसमें बेशुमार मुवाफ़िक़ इंतिजामात हैं जिनमें अगर मामूली फर्क भी पैदा हो जाए तो इंसानी जिंदगी का निजाम दरहम बरहम हो जाए। फिर इंसान की बनावट इतने आला अंदाज में हुई है कि वह जेहनी और जिस्मानी एतबार से इस दुनिया की सबसे बरतर मख़्लूक बन गया है। जिस ख़ालिक ने यह सब किया है उसके सिवा कौन इस काबिल हो सकता है कि इंसान उसका परस्तार बने।

ख़ुदा के लिए दीन को ख़ालिस करके उसे पुकारना यह है कि दीनी व मजहबी नौइयत का तअल्लुक सिर्फ एक अल्लाह से हो। अल्लाह के सिवा किसी से दीनी व मजहबी किस्म का लगाव बाक़ी न रहे।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّىٰ مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾

कहो, मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास खुली दलीलें आ चुकीं। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रब्बुल आलमीन (सृष्टि के प्रभु) के हवाले कर दूं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लौथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुम्हें बढ़ाता है ताकि तुम अपनी पूरी ताकत को पहुंचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है। और ताकि तुम मुकर्रर वक्त तक पहुंच जाओ और ताकि तुम सोचो। वही है जो जिलाता है और मारता है। पस जब वह किसी अम्र (काम) का फैसला कर लेता है तो बस उसे कहता है कि हो जा पस वह हो जाता है। (66-68)

इन आयात में फ़ितरत के कुछ वाक़ेयात का ज़िक्र है। इसके बाद इर्शाद हुआ है 'यह इसलिए है ताकि तुम ग़ौर करो' गोया फ़ितरत के ये माद्दी (भौतिक) वाक़ेयात अपने अंदर कुछ मअनवी (अर्थपूर्ण) सबक लिए हुए हैं। और इंसान से यह मत्लूब है कि वह ग़ौर करके उस छुपे हुए सबक तक पहुंचे।

फ़ितरत के जिन वाक़ेयात का यहां ज़िक्र किया गया है वे हैं बेजान माद्दा (पदार्थ) का तब्दील होकर जानदार चीज बन जाना। इंसान का तदरीजी (चरणबद्ध) अंदाज में विकसित होना। जवानी तक पहुंच कर फिर आदमी पर बुढ़ापा तारी होना, जिंदा इंसान का दुबारा मर जाना, कभी कम उम्र में और कभी ज्यादा उम्र में। ये वाक़ेयात ख़ालिक की मुख़्तलिफ सिफ़ात का तआरुफ हैं। इससे मालूम होता है कि इस कायनात को वजूद में लाने वाला एक ऐसा ख़ुदा है जो क़ादिर और हकीम (तत्वदर्शी) है, वह सब पर ग़ालिब और बालादस्त (शीर्षस्थ) है।

अगर आदमी इन वाक़ेयात से हकीकी सबक ले तो उसका ज़ेहन पुकार उठेगा कि एक ख़ुदा ही इसका हकदार है कि उसकी इबादत की जाए और उसे अपना आख़िरी मत्लूब समझा जाए। आलम का यह नक्शा बजबाने हाल उन तमाम माबूदों की तरदीद कर रहा है जो एक ख़ुदा को छोड़कर बनाए गए हों।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾ إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُو مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾ ذَٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं। वे कहां से फेरे जाते हैं। जिन्होंने किताब को झुठलाया और उस चीज को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा। तो अनकरीब वे जानेंगे, जबकि उनकी गर्दनों में तौक होंगे। और जंजीरें, वे घसीटे जाएंगे जलते हुए पानी में। फिर वे आग में झोंक दिए जाएंगे। फिर उनसे कहा जाएगा, कहां हैं वे जिन्हें तुम शरीक करते थे अल्लाह के सिवा। वे कहेंगे, वे हमसे खोए गए बल्कि हम इससे पहले किसी चीज को पुकारते न थे। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है मुंकिरों को। यह इस सबब से कि तुम जमीन में नाहक ख़ुश होते थे और इस सबब से कि तुम घमंड करते थे। जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का। (69-76)

नाहक पर ख़ुश होने वाले और घमंड करने वाले कौन थे, ये वक्त के बड़े लोग थे। उन्हें कुछ दुनिया का सामान और दुनिया की बड़ाई मिल गई। इसकी वजह से वे नाज और घमंड में मुब्तिला हो गए। उनकी माद्दी कामयाबी ने उनके अंदर ग़लत तौर पर यह एहसास पैदा कर दिया कि वे पाए हुए लोग हैं। हालांकि हकीकत के एतबार से वे सिर्फ महरूम लोग थे।

वक्त के ये बड़े अव्वलन हक के मुंकिर बनते हैं। फिर उनकी पैरवी में अवाम भी हक का इंकार करने लगते हैं। इन आयात में अगली दुनिया का वह मंजर दिखाया गया है जबकि ये लोग अपनी मुतकब्बिराना रविश की सजा पाने के लिए जहन्नम में डाल दिए जाएंगे। उनकी झूठी बड़ाई आख़िरकार उन्हें जहां पहुंचाएगी वह सिर्फ अबदी जिल्लत है जिससे निकलने की कोई सूरत उनके लिए न होगी।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

पस सब्र करो बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा देंगे। या तुम्हें वफात देंगे, पस उनकी वापसी हमारी ही तरफ है। (77)

यह अल्लाह का वादा है कि वह हक के दाजियों की मदद करेगा और हक के मुख़ालिफीन को मग़लूब (परास्त) करेगा। मगर इस वादे का तहक्कुक़ सब्र के बाद होता है। दाओ को यकतरफा तौर पर फरीके सानी (प्रतिपक्षी) की ईजाओं (यातनाओं) को बर्दाश्त करना पड़ता है यहां तक कि ख़ुदा की सुन्नत के मुताबिक उसके वादे के ज़ुहूर का वक्त आ जाए।

मुख़ालिफीने हक की अस्ल सजा वह है जो उन्हें आख़िरत में मिलेगी। ताहम मौजूदा दुनिया में भी उन्हें उसका इब्तिदाई तजर्बा कराया जाता है, अगरचे हमेशा ऐसा किया जाना जरूरी नहीं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

और हमने तुमसे पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुम्हें नहीं सुनाए। और किसी रसूल को यह मकदूर (सामर्थ्य) न था कि वह अल्लाह की मर्जी के बग़ैर कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक के मुताबिक फैसला कर दिया गया। और ग़लतकार लोग उस वक्त ख़सारे (घाटे) में रह गए। (78)

कुरआन में रसूलों के अहवाल (वृत्तांत) बतौर तारीख़ नहीं बयान हुए हैं बल्कि बतौर नसीहत बयान हुए हैं। इसलिए कुरआन में रसूलों के अहवाल महदूद तौर पर सिर्फ इतना ही बताए गए हैं जितना अल्लाह तआला के नजदीक नसीहत के लिए जरूरी थे।

रसूल का अस्ल काम सिर्फ यह होता है कि वह ख़ुदा का पैग़ाम उसके तमाम जरूरी आदाब और तकाज़ों के साथ लोगों तक पहुंचा दे। इसके बाद जहां तक मोजिजे का तअल्लुक है वह तमामतर अल्लाह के इख़्तियार में है, वह अपनी मस्लेहत के तहत कभी उन्हें जाहिर करता है और कभी जाहिर नहीं करता।

मोजिजे ज्यादा उन कौमों को दिखाए गए हैं जिनकी सरकशी की बिना पर ख़ुदा का

फैसला था कि उन्हें हलाक कर दिया जाए। इसलिए आख़िरी तौर पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के लिए उन्हें मोजिजा भी दिखा दिया गया। मगर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कौम का मामला यह था कि उसका बड़ा हिस्सा बिलआख़िर मोमिन बनने वाला था। ये वे लोग थे जो इम्कानी तौर पर यह सलाहियत रखते थे कि वे तारीख़ के पहले गिरोह बनें जिसने महज दलील की बुनियाद पर हक का एतराफ किया और अपने आजाद इरादे से अपने आपको उसके हवाले कर दिया। इसलिए उन लोगों के मुतालबे को नादानी पर महमूल करते हुए उन्हें ख़ारिके आदत मोजिजे (दिव्य चमत्कार) नहीं दिखाए गए।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ﴿٨١﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उनमें और भी फायदे हैं। और ताकि तुम उनके जरिए से अपनी जरूरत तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उन पर और कश्ती पर तुम सवार किए जाते हो और वह तुम्हें और भी निशानियां दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इंकार करोगे। (79-81)

इंसान को अपनी जिंदगी और सभ्यता के लिए बहुत सी चीजों की जरूरत है। मसलन ग़िजा, सवारी, मुख़्तलिफ किस्म की सनअतें (उद्योग), सामान को एक जगह से दूसरे जगह ले जाना। ये सब चीजें मौजूदा दुनिया में बड़ी मिक्दार में मौजूद हैं। ख़ुदा ने दुनिया की चीजों को इस तरह बनाया है कि वे हमेशा इंसान के ताबेअ रहें और इंसान उन्हें अपनी जरूरतों के लिए जिस तरह चाहे इस्तेमाल कर सके।

ये तमाम चीजें गोया ख़ुदा की निशानियां हैं। वे ग़ैबी हकीकतों का माद्दी जबान में एलान कर रही हैं। यह एलान अगरचे बिलवास्ता (परोक्ष) जबान में है मगर इंसान का भला इसी में है कि वह बिलवास्ता जबान में कही हुई बात को समझे। क्योंकि ख़ुदा जब बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) जबान में कलाम करे तो वह मोहलते अमल के ख़त्म होने का एलान होता है न कि अमल शुरू करने का।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ

الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ۭ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुजरे हैं। वे इनसे ज्यादा थे, और कुव्वत (शक्ति) में और निशानियों में जो कि वे जमीन पर छोड़ गए, बढ़े हुए थे। पस उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। पस जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर नाजां रहे जो उनके पास था, और उन पर वह अजाब आ पड़ा जिसका वे मजाक उड़ाते थे। फिर जब उन्होंने हमारा अजाब देखा, कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद (एकेश्वर) पर ईमान लाए और हम इंकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे। पस उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारा अजाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो उसके बंदों में जारी रही है, और उस वक्त इंकार करने वाले ख़सारे (घाटे) में रह गए। (82-85)

इल्म की दो किस्में हैं। एक वह इल्म जिससे दुनिया की तरक्कियां हासिल होती हैं। दूसरा इल्म वह है जो आख़िरत की कामयाबी का रास्ता बताता है। जिन लोगों के पास दुनिया का इल्म हों उनके इल्म का शानदार नतीजा फौरी तौर पर दुनिया की तरक्कियों की सूरत में सामने आ जाता है। इसके बरअक्स जिस शख़्स के पास आख़िरत का इल्म हो उसके इल्म के नताइज फौरी तौर पर महसूस शक्ल में सामने नहीं आते।

यह फर्क उन लोगों के अंदर बरतरी की नफ्सियात पैदा कर देता है जो दुनिया का इल्म रखते हो। चुनांचे ऐसी कौमों के पास जब उनके पैग़म्बर आए तो उन्होंने अपने को ज्यादा समझा और पैग़म्बर को कम ख़्याल किया। यहां तक कि वे उनका मजाक उड़ाने लगे। मगर अल्लाह ने उन कौमों को उनकी तमाम कुव्वतों और शानदार तरक्क़ियों के बावजूद हलाक कर दिया। अब उनके तारीख़ी आसार (अवशेष) या तो खंडहर की शक्ल में हैं या जमीन के नीचे दबे हुए हैं। इस तरह अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों के लिए एक तारीख़ी मिसाल कायम कर दी कि मुस्तकिल कामयाबी का राज इल्मे आख़िरत में है न कि इल्मे दुनिया में।

इन कौमों ने इब्तिदा में अपने पैग़म्बरों का इंकार किया। पैग़म्बरों के पास दलील की कुव्वत थी। मगर ये कौमें दलील की कुव्वत के आगे झुकने के लिए तैयार न हुईं। आख़िरकार ख़ुदा ने अजाब की जबान में उन्हें अम्र वाकई (यथार्थ) से आगाह किया। उस वक्त वे लोग झुक कर इकरार करने लगे। मगर यह इकरार उनके काम न आया। क्योंकि इकरार वह मत्लूब (अपेक्षित) है जो दलील की बुनियाद पर हो। उस इकरार की कोई कीमत नहीं जो अजाब को देखकर किया जाए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

आयतें-54 रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह बड़े महरबान, निहायत रहम वाले की तरफ से उतारा हुआ कलाम है। यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं, अरबी जबान का कुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। पस उन लोगों में से अक्सर ने इससे मुंह मोड़ा। पस वे नहीं सुन रहे हैं। और उन्होंने कहा हमारे दिल उससे पर्दे में हैं जिसकी तरफ तुम हमें बुलाते हो और हमारे कानों में डाट है। और हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एक हिजाब (ओट) है। पस तुम अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं। (1-5)

पैग़म्बर की दावत बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत होती है। इसके बरअक्स लोगों का हाल यह है कि अक्सर वे अपने अकाबिर (बड़ों) के दीन पर होते हैं। उनके ऊपर उनकी कौमी रिवायात और जमानी अफ्कार (तात्कालिक विचारों) का ग़लबा होता है। इस बिना पर पैग़म्बर का बेआमेज दीन उनके फिक्री ढांचे में नहीं बैठता। वह उन्हें अजनबी दिखाई देता है। यह फर्क पैग़म्बर और लोगों के दर्मियान एक ज़मानी दीवार की तरह हायल हो जाता है। लोग पैगम्बर की दावत को उसके अस्ल रूप में देख नहीं पाते, इसलिए वे उसे मानने पर भी तैयार नहीं होते।

पैग़म्बर की दावत बजाए ख़ुद इंतिहाई मुदल्लल होती है। वह अपनी जात में इस बात का सुबूत होती है कि वह ख़ुदा की तरफ से आई हुई बात है। मगर मज्कूरा जेहनी दीवार इतनी ताकतवर साबित होती है कि इंसान उससे निकल कर पैग़म्बर की दावत को देख नहीं पाता। ख़ुदा इंसान के लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोलता है मगर इंसान उसके अंदर दाख़िल नहीं होता।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ﴿٦﴾ الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٨﴾

कहो, मैं तो एक बशर (इंसान) हूं तुम जैसा। मेरे पास यह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) बस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो उसी की तरफ और उससे माफी चाहो। और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए, जो जकात नहीं देते और वे आख़िरत के मुंकिर हैं। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए ऐसा अज्र (प्रतिफल) है जो मौकूफ़ (बाधित) होने वाला नहीं। (6-8)

हक की दावत जब भी उठती है 'बशर' (इंसान) की सतह पर उठती है। लोगों की समझ में नहीं आता कि यह कैसे मुमकिन है कि एक बशर ख़ुदा की जबान में कलाम करे। इसलिए वे उसके मुंकिर बन जाते हैं मगर ख़ुदा की सुन्नत (तरीका) यही है कि वह बशर की जबान से अपनी बात का एलान कराए। जो शख़्स दाओ की बशरियत से गुजर कर उसके इलाही कलाम को न पहचान सके वह मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में हिदायत से महरूम रहेगा।

आख़िरत का मानना वही मोतबर है जिसके साथ कामिल तौहीद और इंफ़ाक फ़ी सबीलिल्लाह (अल्लाह की राह में ख़र्च करना) पाया जाए। जो शख़्स अल्लाह को हकीकी तौर पर पा ले वह किसी और अज्मत में अटका हुआ नहीं रह सकता। इसी तरह जो शख़्स अल्लाह को हकीकी तौर पर पा ले वह अपने माल को ख़ुदा से बचाकर नहीं रख सकता।

फस्तकीमू इलैहि का मतलब है अख़्लिसू लहुल इबादह यानी तुम्हारी सारी तवज्जोह सिर्फ अल्लाह की तरफ हो तुम्हारी दुआ और इबादत का केन्द्र सिर्फ एक अल्लाह हो। तुम्हारी सोच तमामतर ख़ुदा रुख़ी सोच बन जाए। यही वे लोग हैं जिन्हें ख़ुदा के अबदी इनामात दिए जाएंगे।

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

कहो क्या तुम लोग उस हस्ती का इंकार करते हो जिसने जमीन को दो दिन में बनाया, और तुम उसके हमसर (समकक्ष) ठहराते हो। वह रब है तमाम जहान वालों का। और उसने जमीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए। और उसमें फ़ायदे की चीजें रख दीं। और उसमें उसकी ग़िजाएं ठहरा दीं चार दिन में, पूरा हुआ पूछने वालों के लिए। फिर वह आसमान की तरफ मुतवज्जह हुआ, और वह धुवां था। फिर उसने आसमान और जमीन से कहा कि तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से। दोनों ने कहा कि हम ख़ुशी से हाजिर हैं। फिर उसने दो दिन में उसके सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया। और हमने आसमाने दुनिया को चराग़ों से जीनत (साज-सज्जा) दी, और उसे महफ़ूज कर दिया। यह अजीज (प्रभुत्वशाली) व अलीम (सर्वज्ञ) की मंसूबाबंदी है। (9-12)

कायनात का मुतालआ बताता है कि उसकी तख़्लीक कई दौरों में तदरीजी (चरणबद्ध) तौर पर हुई है। तदरीजी तख़्लीक दूसरे लफ़्जों में मंसूबाबंद तख़्लीक है। और जब कायनात की तख़्लीक मंसूबाबंद अंदाज में हुई है तो यकीनी है कि इसका एक मंसूबासाज हो जिसने अपने मुकर्ररह मंसूबे के तहत इसे इरादतन बनाया हो।

इसी तरह यहां जमीन के ऊपर जगह-जगह पहाड़ हैं जो जमीन के तवाजुन (संतुलन) को बरकरार रखते हैं। इस दुनिया में करोड़ों किस्म के जीहयात (जीव) हैं। हर एक को अलग-अलग रिज़्क दरकार है। मगर हर एक का रिज़्क इस तरह कामिल मुताबिकत के साथ मौजूद है कि जिसे जो रोजी दरकार है वह अपने करीब ही उसे पा लेता है। इसी तरह कायनात का मुतालआ बताता है कि तमाम चीजें इब्तिदा में मुंतशिर (बिखरे हुए) एटम की सूरत में थीं। फिर वे आपस में मिलकर अलग-अलग चीज़ों की सूरत में विकसित हुईं। इसी तरह कायनात के मुतालअे से मालूम होता है कि वसीअ कायनात की तमाम चीजें एक ही कानूने फ़ितरत में निहायत मोहकम (सुदृढ़) तौर पर जकड़ी हुई हैं।

ये मुशाहिदात वाजेह तौर पर साबित करते हैं कि कायनात का ख़ालिक अलीम और ख़बीर है। वह कुव्वत और ग़लबे वाला है। फिर दूसरा कौन है जिसे इंसान अपना माबूद करार दे।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾ إِذْ جَاءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿١٤﴾

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करते हैं तो कहो कि मैं तुम्हें उसी तरह के अजाब से डराता हूं जैसा अजाब आद व समूद पर नाजिल हुआ। जबकि उनके पास रसूल आए, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो। उन्होंने

कहा कि अगर हमारा रब चाहता तो वह फरिश्ते उतारता, पस हम उस चीज के मुंकिर हैं जिसे देकर तुम भेजे गए हो। (13-14)

हक की दावत का इंकार ख़ुदा के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म है। यह इंकार अगर पैग़म्बर की दावत के मुकाबले में हो तो उसकी सजा इसी मौजूदा दुनिया से शुरू हो जाती है, जैसा कि आद व समूद वग़ैरह कौमों के साथ पेश आया। और अगर आम दाअियों का मामला हो तो उनके इंकार का अंजाम आख़िरत में सामने आएगा।

हक की दावत का अस्ल नुक्ता यह रहा है कि इंसान ख़ुदा का इबादतगुजार बने। वह ग़ैर अल्लाह को छोड़कर सिर्फ एक अल्लाह से अपने ख़ौफ व मुहब्बत के जज्बात वाबस्ता करे। मगर हर दौर में ऐसा हुआ कि पैग़म्बर की शख़्सियत उनके मुआसिरीन (समकालीन) को इससे कम नजर आई कि ख़ुदा उन्हें अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए चुने। इसलिए उन्होंने पैग़म्बरों को मानने से इंकार कर दिया।

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَحِسَاتٍ لِنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ ۖ وَهُمْ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٦﴾ وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾

आद का यह हाल था कि उन्होंने जमीन में बग़ैर किसी हक के घमंड किया, और उन्होंने कहा, कौन है जो कुव्वत (शक्ति) में हमसे ज्यादा है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने उन्हें पैदा किया है वह कुव्वत में उनसे ज्यादा है और वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। तो हमने चन्द मनहूस दिनों में उन पर सख़्त तूफानी हवा भेज दी ताकि उन्हें दुनिया की जिंदगी में रुसवाई का अजाब चखाएं, और आख़िरत का अजाब इससे भी ज्यादा रुसवाकुन है और उन्हें कोई मदद न पहुंचेगी। और वे जो समूद थे, तो हमने उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाया मगर उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में अंधेपन को पसंद किया, तो उन्हें अजाबे जिल्लत के कड़के ने पकड़ लिया उनकी बदकिरदारियों की वजह से। और हमने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और डरने वाले थे। (15-18)

आदमी एक ऐसी दुनिया में है जहां जमीन व आसमान की अज़्मतें उसकी बड़ाई की नफ़ी

कर रही हैं। जहां मौत का वाक़्या हर रोज इंसान को हक़ीर और बेज़ोर साबित कर रहा है। इसके बावजूद आदमी बड़ा बनता है। फिर भी वह इस गुमान में रहता है कि वह जोर वाला है।

ख़ुदा बार-बार हकीकत का एलान कराता है। वह बार-बार इंसान की बड़ाई के दावे को बातिल साबित कर रहा है। मगर कोई उस वक्त तक नसीहत नहीं लेता जब तक उसे मिटा न दिया जाए। आद व समूद और दूसरी कौमों के खंडहर इसी के मिसाल हैं। उन्होंने जिन दिनों को अपने लिए मुबारक समझ रखा था वही दिन ख़ुदा के हुक्म से उनके लिए मनहूस दिन बनकर रह गए।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ जमा किए जाएंगे, फिर वे जुदा-जुदा किए जाएंगे, यहां तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे, उनके कान और उनकी आंखें और उनकी खालें उन पर उनके आमाल की गवाही देंगी। और वे अपनी खालों से कहेंगे, तुमने हमारे ख़िलाफ क्यों गवाही दी। वे कहेंगी कि हमें उसी अल्लाह ने गोयाई (बोलने की ताकत) दी है जिसने हर चीज को गोया कर दिया है। और उसी ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो। और तुम अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे ख़िलाफ गवाही दें, लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन आमाल को नहीं जानता जो तुम करते हो। और तुम्हारे उसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुम्हें बर्बाद किया, पस तुम ख़सारा (घाटा) उठाने वालों में से हो गए। पस अगर वे सब्र करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वे माफी मांगें तो उन्हें माफ़ी नहीं मिलेगी। (19-24)

क़ुरआन में बताया गया है कि कियामत में इंसान की खाल और उसके आजा (शरीरांग) उसके आमाल की गवाही देंगे। मौजूदा जमाने में नुत्के जिल्दी (Skin speech) के नजरिये ने इसे अमली तौर पर साबित कर दिया है। अब यह मालूम किया गया है कि इंसान का हर बोल उसके जिस्म की खाल पर मुरतसिम (प्रतिबिंबित) होता रहता है। और उसे दुबारा उसी तरह सुना जा सकता है जिस तरह मशीनी तौर पर रिकॉर्ड की हुई आवाज को दुबारा सुना जाता है।

ख़ुदा चूंकि बजाहिर दिखाई नहीं देता इसलिए इंसान समझता है कि ख़ुदा उसे देखता नहीं है। यही ग़लतफ़हमी आदमी के अंदर सरकशी पैदा करती है। अगर आदमी जान ले कि ख़ुदा हर लम्हा उसे देख रहा है तो उसका सारा रवैया बिल्कुल बदल जाए।

आख़िरत में ख़ुदा के सामने आने के बाद आदमी इताअत (आज्ञापालन) का इज्हार करेगा। मगर वह उसके लिए बेफ़ायदा होगा। क्योंकि इताअत हालते ग़ैब में काबिले एतबार है न कि हालते शुहूद (प्रकट स्थिति) में।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾

और हमने उन पर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज उन्हें ख़ुशनुमा बनाकर दिखाई। और उन पर वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई जो इनसे पहले गुजर चुके थे। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रह जाने वाले थे। (25)

मौजूदा दुनिया में एक तरफ़ ख़ुदा के दाओ हैं जो इंसान को हक की नसीहत करते हैं। दूसरी तरफ़ इस्तहसालपसंद (शोषक) लीडर हैं जो ख़ुशनुमा बातें करके इंसान को अपनी तरफ़ मायल करना चाहते हैं। जो लोग ख़ुदा की नसीहत पर तवज्जोह न दें वे उन लीडरों की बातों में आकर ग़ैर हकीकी रास्तों में दौड़ पड़ते हैं।

ये इस्तहसालपसंद लीडर लोगों को उनके माजी का हसीन ख़्वाब दिखाते हैं। वे उनके सामने उनके मुस्तकबिल का ख़ूबसूरत नक्शा पेश करते हैं। जो लोग ऐसे लीडरों के झूठे अल्फ़ाज से धोखा खाकर उनके पीछे दौड़ पड़ते हैं उनका अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं होता कि वे हमेशा के लिए तबाह होकर रह जाएं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ

أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

और कुफ्र करने वालों ने कहा कि इस क़ुरआन को न सुनो और इसमें ख़लल डालो, ताकि तुम ग़ालिब रहो। पस हम इंकार करने वालों को सख़्त अजाब चखाएंगे और उन्हें उनके अमल का बदतरीन बदला देंगे। यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है, यानी आग। उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (26-28)

वल ग़ौ फ़ीहि० की तशरीह हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने अय्यबूह के लफ़्ज से की है (तफ़्सीर इब्ने कसीर)। यानी क़ुरआन और साहिबे क़ुरआन में ऐब लगाओ और इस तरह लोगों को उससे दूर कर दो।

किसी बात या किसी शख़्स के बारे में इज्हारे राय के दो तरीके हैं। एक तंकीद, दूसरा तअयीब। तंकीद का मतलब है हकाइक की बुनियाद पर जेरेबहस अम्र का तज्ज़िया (विश्लेषण) करना। इसके बरअक्स तअयीब यह है कि आदमी जेरेबहस मसले पर दलाइल पेश न करे। वह सिर्फ़ उसमें ऐब निकाले वह उस पर इल्जाम लगाकर उसे मतऊन (लांछित) करे।

तंकीद का तरीका सरासर जाइज तरीका है। मगर तअयीब का तरीका अहले कुफ्र का तरीका है। मजीद यह कि तअयीब का तरीका ख़ुदा की निशानियों का इंकार है। क्योंकि हर सच्ची दलील ख़ुदा की एक निशानी है। जो लोग दलील के आगे न झुकें और ऐबजोई और इल्जामतराशी का तरीका इख़्तियार करके उसे दबाना चाहें वे गोया ख़ुदा की निशानी का इंकार कर रहे हैं। ऐसे लोग आख़िरत में निहायत सख़्त सजा के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾

और कुफ्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें गुमराह किया, हम उन्हें अपने पांवों के नीचे डालेंगे ताकि वे जलील हों। जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे साबितकदम रहे, यकीनन उन पर फरिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो और उस जन्नत की बशारत (शुभ सूचना) से ख़ुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है। हम दुनिया की जिंदगी में तुम्हारे साथी हैं और आख़िरत में भी। और तुम्हारे लिए वहां हर चीज है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज है जो तुम तलब करोगे, ग़फूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) की तरफ से मेहमानी के तौर पर। (29-32)

इंसानों में दो किस्म के इंसान हैं। एक वे जो शैतानों और झूठे लीडरों को अपना रहनुमा बनाते हैं। ये लोग दुनिया में ख़ूब एक दूसरे से दोस्ती रखते हैं। मगर आख़िरत में सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होगी। वहां पैरवी करने वाले लोग जब देखेंगे कि उनके झूठे रहनुमाओं ने उन्हें सिर्फ जहन्नम में पहुंचाया है तो वे उनसे सख़्त मुतनफ्फिर (नफ़रतज़दा) हो जाएंगे। और चाहेंगे कि उन्हें हकीर व जलील करके अपने दिल की तस्कीन हासिल करें।

दूसरे इंसान वे हैं जो ख़ुदा के फरिश्तों को अपना साथी बनाएं। ऐसे लोग दुनिया से लेकर आख़िरत तक फरिश्तों को अपना हमनशीं (साथी) पाते हैं। फरिश्ते उनके दिल पर रब्बानी एहसासात उतारते हैं। वे मुश्किल हालात में उन्हें कल्बी सुकून अता करते हैं। वे लतीफ तजर्बात के जरिए उन्हें ख़ुदा की बिशारतें सुनाते हैं। फिर यही फरिश्ते आख़िरत में उनका इस्तकबाल करके उन्हें जन्नत के बाग़ात में दाख़िल करेंगे।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और उससे बेहतर किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की तरफ बुलाया और नेक अमल किया और कहा कि मैं फरमांबरदारों में से हूं। और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं, तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर हो फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमें दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त कराबत (घनिष्टता) वाला। और यह बात उसी को मिलती है जो सब्र करने वाले हैं, और यह बात उसी को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला है। और अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ वसवसा डाले तो अल्लाह की

पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (33-36)

कुरआन की दावत अल्लाह की तरफ बुलाने की दावत है। इंसान को उसके रब से जोड़ना, इंसान को ख़ुदा की याद में जीने वाला बनाना, इंसान के अंदर यह शुऊर उभारना कि वह एक ख़ुदा को अपना मर्कजे तवज्जोह बना ले, यही कुरआनी दावत का अस्ल निशाना है। और बिलाशुबह इस पुकार से बेहतर कोई पुकार नहीं।

मगर ख़ुदा का दाओी सिर्फ वह शख़्स बनता है जो अपनी दावत में इस हद तक संजीदा हो कि जो कुछ वह दूसरों से मनवाना चाहता है उसे वह ख़ुद सबसे पहले मान चुका हो, वह दूसरों से जो कुछ करने के लिए कह रहा है, ख़ुद सबसे पहले उसका करने वाला बन जाए।

दाओी का सबसे बड़ा हथियार यह है कि वह लोगों के साथ यकतरफा हुस्ने सुलूक करे। दूसरे लोग बुराई करें तब भी वह दूसरों के साथ भलाई करे। वह इशतिआल (उत्तेजना) के मुक़ाबले में एराज और अज़िय्यतरसानी (उत्पीड़न) के मुक़ाबले में सब्र का तरीक़ा इख़्तियार करे। यकतरफा हुस्ने सुलूक में अल्लाह तआला ने जबरदस्त तस्ख़ीरी (अपना बनाने की) ताकत रखी है। ख़ुदा का दाओी ख़ुदा की बनाई हुई इस फितरत को जानता है और उसे आख़िरी हद तक इस्तेमाल करता है, चाहे इसके लिए उसे अपने जज्बात को कुचलना पड़े, चाहे इसकी ख़ातिर अपने अंदर पैदा होने वाले रद्देअमल को जबह करने की नौबत आ जाए।

जब भी दाओी के अंदर इस किस्म का ख़्याल आए कि फलां बात का जवाब देना जरूरी है, फलां जुल्म के ख़िलाफ जरूर कार्रवाई की जानी चाहिए वर्ना दुश्मन दिलेर होकर और ज्यादा ज्यादतियां करेगा तो समझ लेना चाहिए कि यह एक शैतानी वसवसा है। मोमिन और दाओी का फर्ज है कि वह ऐसे ख़्याल से ख़ुदा की पनाह मांगे, न कि वह उसके पीछे दौड़ना शुरू कर दे।

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۩ ۝

और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चांद। तुम सूरज और चांद को सज्दह न करो बल्कि उस अल्लाह को सज्दह करो जिसने इन सबको पैदा किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो। पस अगर वे तकब्बुर (घमंड) करें तो जो लोग तेरे रब के पास हैं वे शब व रोज उसी की तस्बीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते। (37-38)

इंसान की सबसे बड़ी गुमराही उसकी जाहिरपरस्ती है। क़दीम जमाने के इंसान को सूरज और चांद और सितारे सबसे ज्यादा नुमायां नजर आए। इसलिए उसने इन मजाहिर (जाहिरी रूपों) को ख़ुदा समझ लिया और उन्हें पूजना शुरू कर दिया। मौजूदा जमाने में माद्दी (भौतिक) तहजीब की जगमगाहट लोगों को नुमायां दिखाई दे रही है इसलिए अब माद्दी तहजीब को वह मक़ाम दे दिया गया है जो क़दीम जमाने में सूरज और चांद को हासिल था। हालांकि चाहे सूरज और चांद हों या दूसरे मजाहिर सबके सब ख़ुदा की मख़्लूक़ हैं। इंसान को चाहिए कि वह ख़ालिक़ का परस्तार बने न कि उसकी मख़्लूक़ात का।

तकब्बुर (घमंड) करने वालों का तकब्बुर (आह्वान) दावत के मुक़ाबले में नहीं होता, बल्कि हमेशा दाओ के मुक़ाबले में होता है। वक्त के बड़ों को बजाहिर दाओ अपने से छोटा नजर आता है इसलिए वह उसे छोटा समझ लेते हैं और इसी के साथ उसकी तरफ से पेश किए जाने वाले पैग़ाम को भी।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؀ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۭ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ؀

और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम जमीन को फरसूदा (मृत) हालत में देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है। बेशक जिसने उसे जिंदा कर दिया वह मुर्दों को भी जिंदा कर देने वाला है। बेशक वह हर चीज पर क़ादिर है। जो लोग हमारी आयतों को उल्टे मअना पहनाते हैं वे हमसे छुपे हुए नहीं हैं। क्या जो आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अम्न के साथ आएगा। जो कुछ चाहे कर लो, बेशक वह देखता है जो तुम कर रहे हो। (39-40)

सूखी जमीन में बारिश का बरसना और उससे सब्जा का उगना एक ऐसा मजहर (जाहिरी रूप) है जो हर आदमी के सामने बार-बार आता है। यह एक मअनवी हक़ीक़त की माद्दी तमसील है। इस तरह इंसान को बताया जाता है कि ख़ुदा ने यहां उसके खुश्क वजूद को सरसब्ज व शादाब करने का वसीअ इंतिजाम कर रखा है। जमीन की मिट्टी पानी को अपने अंदर दाख़िल होने देती है उसी वक्त यह मुमकिन होता है कि बारिश उसे सरसब्ज व शादाब करने का जरिया बने। इसी तरह इंसान अगर ख़ुदा की हिदायत को अपने अंदर उतरने दे तो उसका वजूद भी हिदायत पाकर लहलहा उठेगा।

ख़ुदा की हिदायत से फैजयाब न होने की सबसे बड़ी वजह यह होती है कि इंसान ख़ुदा की बातों में इल्हाद (उलट-फेर) करता है। ख़ुदा की रहनुमाई उसके सामने आती है तो वह उसे सीधे मफहूम में नहीं लेता। बल्कि उसमें टेढ़ निकाल कर उसे उलट देता है। इस तरह ख़ुदा की रहनुमाई उसके जेहन का जुज (अंग) नहीं बनती। वह उसकी रूह को ग़िजा देने वाली साबित नहीं होती।

ख़ुदा की रहनुमाई को सीधी तरह क़ुबूल करने वालों के लिए जन्नत का इनाम है और ख़ुदा की रहनुमाई में टेढ़ा मफहूम (भावार्थ) निकालने वालों के लिए जहन्नम का अजाब।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ؀ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ۭ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ؀ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ؀

जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत का इंकार किया जबकि वह उनके पास आ गई, और बेशक यह एक जबरदस्त किताब है। इसमें बातिल (असत्य) न इसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, यह हकीम (तत्वदर्शी) व हमीद (प्रशंस्य) की तरफ से उतारी गई है। तुम्हें वही बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले रसूलों को कही गई हैं। बेशक तुम्हारा रब मग्फ़िरत (क्षमाशील) वाला है और दर्दनाक सजा देने वाला भी। (41-43)

क़ुरआन एक जबरदस्त किताब है। और इसके जबरदस्त होने का सुबूत यह है कि बातिल न आगे से इसमें आ सकता है और न पीछे से। यानी इसमें किसी तरफ से दख़लअंदाजी का कोई इम्कान नहीं, न बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) इसमें कोई बिगाड़ पैदा किया जा सकता है और न बिलवास्ता (परोक्ष रूप में)।

यह एक इंतिहाई ग़ैर मामूली पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है। इस आलमे असबाब में इस पेशीनगोई के पूरा होने के लिए जरूरी है कि क़ुरआन की हामिल (धारक) एक ताक़तवर क़ौम मुस्तक़िल तौर पर मौजूद रहे। पिछले नबियों की तालीमात से इसकी अदम मुताबिक़त (प्रतिकूलता) जाहिर न हो सकी। कोई शख़्स कभी क़ुरआन का जवाब लिखने पर क़ादिर न हो। उलूम का इरतिक़ा (विकास) इसकी किसी बात को कभी ग़लत साबित न करे। तारीख़ का उतार चढ़ाव कभी इस पर असरअंदाज न होने पाए। क़ुरआन की जबान (अरबी) हमेशा एक जिंदा जबान के तौर पर बाक़ी रहे।

क़ुरआन के नुजूल के बाद की लम्बी तारीख़ बताती है कि ये तमाम असबाब हैरतअंगेज तौर पर इसके हक़ में जमा रहे हैं। इन तमाम वाक़ेयात का जमा होना इस क़द्र ग़ैर मामूली है कि

क़ुरआन के सिवा कोई भी दूसरी किताब नहीं जिसके हक में वे डेढ़ हजार वर्ष की मुद्दत तक मुसलसल जमा रहे हों। यही इस बात की काफी दलील है कि क़ुरआन ख़ुदा की किताब है।

क़ुरआन की अज़्मत को दलील की सतह पर पाना मत्लूब है न कि ताक़त की सतह पर। ताक़त की सतह पर उसकी अज़्मत क़ियामत में जाहिर होगी मगर यह ज़ुहूर सिर्फ इसलिए होता कि जिन लोगों ने दलील की सतह पर ख़ुदा की सच्चाई को नहीं माना था उन्हें जलील करके ख़ुदा की सच्चाई को मानने पर मजबूर किया जाए।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ

और अगर हम इसे अजमी (ग़ैर-अरबी) क़ुरआन बनाते तो वे कहते कि इसकी आयतें साफ-साफ क्यों नहीं बयान की गईं। क्या अजमी किताब और अरबी लोग। कहो कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफा (निदान) है, और लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है और वह उनके हक में अंधापन है। ये लोग गोया कि दूर की जगह से पुकारे जा रहे हैं। (44)

क़ुरआन अरबी जबान में उतरा तो मुख़ालिफ़ीन ने कहा कि यह तो मुहम्मद सल्ल० की अपनी मादरी जबान (मातृ-भाषा) है, अरबी में कोई किताब बनाकर पेश कर देना उनके लिए क्या मुश्किल है। अगर वह वाक़ई पैग़म्बर होते तो ख़ुदा की मदद से वह अचानक किसी अजनबी जबान में कलाम करने लगते।

इस तरह की बात हमेशा ग़ैर संजीदा लोग करते हैं। और जो लोग ग़ैर संजीदा हों उनकी जबान कभी बंद नहीं की जा सकती। मसलन अगर ऐसा हो कि पैग़म्बर आकर अरब के लोगों से यूनानी या सुरयानी या फ़ारसी जबान में कलाम करने लगे तो उस वक्त लोगों को कहने के लिए ये अल्फाज मिल जाएंगे। कैसा अजीब है यह पैग़म्बर। इसका कहना है कि वह लोगों की हिदायत के लिए आया है। मगर वह ऐसी जबान में बोलता है जिसे उसके मुख़ातबीन समझ ही न सकते हों।

हक़ीक़त यह है कि हक को सिर्फ वे लोग क़ुबूल कर पाते हैं जो हक के मामले में संजीदा (गंभीर) हों। जो लोग हक के मामले में संजीदा न हों वे वाजेहतरीन (सबसे स्पष्ट) बात को भी समझ नहीं सकते। उनकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी को बहुत दूर से पुकारा जाए। ऐसा शख़्स कुछ आवाज तो सुनेगा मगर वह अस्ल बात को समझने से महरूम रहेगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ

और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) पैदा किया गया। और अगर तेरे रब की तरफ से एक बात पहले तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और ये लोग उसकी तरफ से ऐसे शक में हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल रखा है। जो शख़्स नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो शख़्स बुराई करेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा। और तेरा रब बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (45-46)

पिछले पैग़म्बरों के जरिए जब ख़ुदाई सच्चाई मुंकशिफ (उद्घटित) की गई तो कुछ लोगों ने उसे माना और कुछ लोगों ने नहीं माना। यही मामला उस वक्त भी पेश आया जबकि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बेअसत (आगमन) हुई।

ख़ुदाई सच्चाई के साथ यह इख़्तिलाफी मामला इंसान क्यों करता है। इसकी वजह मौजूदा इम्तेहानी हालत है। मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में सच्चाई जब भी जाहिर होती है तो उसके साथ एक पर्दा भी लगा रहता है। लोग उसी पर्दे में अटक कर रह जाते हैं जिस पर्दे को उन्हें फाड़ना था। उसे वे अपने लिए शक व शुबह का सबब बना लेते हैं।

मगर यह शक क़ियामत में किसी के लिए उज़्र (विवशता) नहीं बन सकता। क्योंकि यह सिर्फ इस बात का सुबूत है कि इंसान हक के मामले में संजीदा नहीं था। इंसान अपने दुनिया के मफाद के मामले में पूरी तरह संजीदा होता है इसलिए वह तमाम पर्दों को फाड़कर उसकी हक़ीक़त तक पहुंच जाता है। इसी तरह अगर वह अपने आख़िरत के मफाद के बारे में संजीदा हो जाए तो वह शक के तमाम पर्दों को फाड़कर हक़ीक़त को उसकी बेनक़ाब सूरत में देख ले।

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ قَالُوْۤا اٰذَنّٰكَ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ

क़ियामत का इल्म अल्लाह ही से मुतअल्लिक है। और कोई फल अपने ख़ोल से नहीं निकलता और न कोई औरत हामिला (गर्भवती) होती और न जनती है मगर यह सब उसकी इत्तला से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा कि मेरे शरीक कहां हैं, वे कहेंगे कि हम आपसे यही अर्ज करते हैं कि हम में कोई इसका दावेदार नहीं। और जिन्हें वे पहले पुकारते थे वे सब उनसे गुम हो जाएंगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव की सूरत नहीं। (47-48)

दरख़्त से एक फल का निकलना या मां के पेट से एक जिंदा वजूद का पैदा होना अपनी नौइयत के एतबार से वैसा ही वाकया है जैसा मौजूदा दुनिया के अंदर से आख़िरत की दुनिया का बरामद होना।

फल क्या है, वह बेफल का फल में तब्दील होना है। इंसान क्या है, वह बेइंसान का इंसान की सूरत इख़्तियार करना है। यही आख़िरत का मामला भी है। आख़िरत भी दरअस्ल ग़ैर आख़िरत का आख़िरत में तब्दील होने का दूसरा नाम है। पहली किस्म की तब्दीली हर रोज हमारे सामने वाकया बन रही है। फिर इसी नौइयत के एक और वाकया (मौजूदा दुनिया का आख़िरत में तब्दील होना) नाकाबिले कयास (असंभाव्य) क्यों हो।

आख़िरत का दिन हकीकतों के आख़िरी ज़ुहूर का दिन होगा। जब वह दिन आएगा तो तमाम झूठी बुनियादें ढह पड़ेंगी जिन पर लोगों ने मौजूदा दुनिया में अपनी जिंदगियों को खड़ा कर रखा था।

لَا يَسْأَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ ۖ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾

और इंसान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई तकलीफ पहुंच जाए तो मायूस व दिल शिकस्ता हो जाता है। और अगर हम उसे तकलीफ के बाद जो कि उसे पहुंची थी, अपनी महरबानी का मजा चखा देते हैं तो वह कहता है यह तो मेरा हक ही है, और मैं नहीं समझता कि कियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया तो उसके पास भी मेरे लिए बेहतरी ही है। पस हम उन मुंकिरों को उनके आमाल से जरूर आगाह करेंगे। और उन्हें सख़्त अजाब का मजा चखाएंगे। (49-50)

मुसीबत का लम्हा इंसान के लिए अपनी दरयाफ्त का लम्हा होता है। चुनांचे जब मुसीबत पड़ती है तो वह ख़ुदसरी (उद्‌दंडता) को भूलकर ख़ुदा को याद करने लगता है। उस वक्त वह जान लेता है कि वह अब्द (बंदा, ग़ुलाम) है और ख़ुदा उसका माबूद।

मगर जब ख़ुदा उसकी मुसीबत को उससे दूर कर देता है और उसे आसाइश (सुख-सम्पन्नता) का सामान अता करता है तो इसके बाद वह फौरन अपनी साबिका (पूर्ववर्ती) हालत को भूल जाता है। वह मिली हुई नेमत को असबाब के साथ जोड़ देता है और उसे अपनी तदबीर और लियाकत का नतीजा समझने लगता है। उसकी नफ्सियात ऐसी हो जाती है गोया कि जिंदगी बस इसी दुनिया की जिंदगी है। इसके बाद न दुबारा उठना है और न ख़ुदा की अदालत में

खड़ा होना है। मजीद यह कि उसकी आसूदाहाली (सम्पन्नता) उसे इस ग़लतफ़हमी में डाल देती है कि यहां जब मेरा हाल अच्छा है तो अगली दुनिया में भी जरूर मेरा हाल अच्छा होगा।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

और जब हम इंसान पर फ़ज़्ल करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और अपनी करवट फेर लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह लम्बी-लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है। कहो कि बताओ, अगर यह कुरआन अल्लाह की तरफ से आया हो, फिर तुमने इसका इंकार किया तो उस शख़्स से ज्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुख़ालिफत (विरोध) में बहुत दूर चला जाए। (51-52)

इंसान को नेमत इसलिए दी जाती है कि वह उसे ख़ुदा का अतिय्या (देन) करार देकर उसका शुक्र अदा करे। मगर इंसान का हाल यह है कि वह नेमत पाकर सरकश बन जाता है। अलबत्ता जब इंसान पर कोई तकलीफ पड़ती है तो उस वक्त वह ख़ुदा को पुकारने लगता है। मगर मजबूराना पुकार की ख़ुदा के यहां कोई कीमत नहीं। इंसान की ख़ूबी यह है कि वह नेमत के वक्त भी ख़ुदा के आगे झुके और तकलीफ के वक्त भी।

इंसान की यही नफ्सियात है जो उसे हक के इंकार पर आमादा करती है। हक किसी को मजबूर नहीं करता, वह इख़्तियाराना झुकाव का तालिब होता है। चुनांचे जिन लोगों के अंदर इख़्तियाराना झुकाव का माद्दा नहीं होता वे ऐसे हक को नजरअंदाज कर देते हैं जिसके नजरअंदाज कर देने से बजाहिर उनके ऊपर कोई आफ्त टूट पड़ने वाली न हो।

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُحِيطٌ ﴿٥٤﴾

हम उन्हें अपनी निशानियां दिखाएंगे आफाक (वाह्य क्षेत्रों) में भी और ख़ुद उनके अंदर भी। यहां तक कि उन पर जाहिर हो जाएगा कि यह कुरआन हक है। और क्या यह बात काफी नहीं कि तेरा रब हर चीज का गवाह है। सुन लो, ये लोग अपने रब की मुलाकात में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (53-54)

दुनिया में जितने लोग भी उठे हैं सबकी कहानी हाल (वर्तमान) की कहानी है, किसी की कहानी मुस्तकबिल (भविष्य) की कहानी नहीं। क्योंकि किसी का मुस्तकबिल भी उसके हाल की तस्दीक करने वाला न बन सका। ऐसी दुनिया में डेढ़ हजार साल पहले यह पेशीनगोई की गई कि क़ुरआन के बाद जाहिर होने वाले वाकेयात व हकाइक क़ुरआन की तस्दीक करते चले जाएंगे। क़ुरआन आइंदा आने वाले तमाम जमानों में अपनी सदाक़त (सच्चाई) को न सिर्फ बाकी रखेगा बल्कि मजीद वाज़ेह और मुदल्लल करता चला जाएगा। क़ुरआन हमेशा वक्त की किताब रहेगा।

यह बात हैरतअंगेज तौर पर सद फी सद दुरुस्त साबित हुई है। इल्मी तहकीकात, तारीख़ी वाकेयात, जमानी इंक़िलाबात सब क़ुरआन के हक में जमा होते चले गए। यहां तक कि आज ग़ैर मुस्लिम मुहक्किक़ीन (शोधकर्ता) भी गवाही दे रहे हैं कि क़ुरआन अपनी नादिर ख़ुसूसियात (अद्वितीय विशिष्टताओं) की बिना पर ख़ुद इस बात का सुबूत है कि वह ख़ुदा की किताब है। किसी इंसानी तस्नीफ (कृति) में ऐसी अबदी (शाश्वत) ख़ुसूसियात पाई नहीं जा सकतीं।

इस खुली हुई हकीकत के बावजूद जो लोग क़ुरआन की सदाक़त के आगे न झुकें वे सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि उनकी बेख़ौफी की नफ्सियात ने उन्हें ग़ैर संजीदा बना दिया है। क्योंकि ग़ैर संजीदा इंसान ही से इस किस्म की ग़ैर माकूल रविश जाहिर हो सकती है कि वह खुले-खुले शवाहिद (प्रमाणों) को देखे और इसके बावजूद उसका इकरार न करे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

आयतें-53 **सूरह-42. अश-शूरा** रुकूअ-5

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। अइन० सीन० काफ०। इसी तरह अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) व हकीम (तत्वदर्शी) 'वही' (प्रकाशना) करता है तुम्हारी तरफ और उनकी तरफ जो तुमसे पहले गुजरे हैं। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, वह सबसे ऊपर

है, सबसे बड़ा। करीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फरिश्ते अपने रब की तस्बीह करते हैं उसी की हम्द (प्रशंसा) के साथ और जमीन वालों के लिए माफी मांगते हैं। सुन लो कि अल्लाह ही माफ करने वाला, रहमत करने वाला है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बनाए हैं, अल्लाह उनके ऊपर निगहबान है और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं। (1-6)

अगर आदमी को लामहदूद (असीम) निगाह हासिल हो जाए तो वह देखेगा कि यहां एक ख़ुदा है जो सारे जमीन व आसमान का मालिक है। उसकी ताक़त इतनी जबरदस्त है कि कायनात उसकी हैबत से गोया फटी जा रही है। फरिश्ते जो बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) ख़ुदा की ख़ुदाई से बाख़बर हैं वे हर आन ख़शिय्यत (ख़ौफ) में डूबे हुए उसकी हम्द व तस्बीह कर रहे हैं। फिर वह देखेगा कि ख़ुदा अपनी कुदरते ख़ास से इंसानों में से कुछ अफराद को चुनता है और उन्हें बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में अपना कलाम पहुंचाता है ताकि वे तमाम इंसानों को हकीकते वाकया से बाख़बर कर दें।

इंसान अगरचे इन हकीकतों को बराहेरास्त तौर पर नहीं देखता मगर वह अक्ल के जरिए बिलवास्ता तौर पर इनका इदराक (भान) कर सकता है। यही आदमी का अस्ल इम्तेहान है। इंसान की यह जिम्मेदारी है कि वह बसारत (आंख) से दिखाई न देने वाली चीजों को बसीरत (सूझबूझ) की नजर से देखे। वह पैग़म्बरों के कलाम में ख़ुदा की आवाज सुने और उसके आगे अपने आपको झुका दे। वह देखे बग़ैर इस तरह मान ले गोया कि वह अपनी आंखों से सब कुछ देख रहा है।

कियामत के दिन किसी के लिए यह बात उज्र (विवशता) न बन सकेगी कि उसने हकीकत को बराहेरास्त न देखा था। क्योंकि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में हकीकत को बराहेरास्त दिखाना मत्लूब ही नहीं। अगर अस्ल पैग़ाम किसी शख़्स तक पूरी तरह पहुंच जाए तो इसके बाद ख़ुदा के नजदीक उस पर हुज्जत कायम हो जाती है। हकीकत का दलील की जबान में जाहिर हो जाना ही काफी है कि उसे इंकारे हक का मुजरिम करार देकर वह सजा दी जाए जो मुंकिरीने हक के लिए मुक़द्दर है।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝

और हमने इसी तरह तुम्हारी तरफ अरबी क़ुरआन उतारा है ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डरा दो और उन्हें जमा होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह आग में। (7)

पैग़म्बर की दावत (आह्वान) का अस्ल निशाना यह होता है कि लोगों को इस हकीकत

से आगाह कर दिया जाए कि आख़िरकार वे ख़ुदा के सामने हाजिर किए जाने वाले हैं। इसके बाद लोगों के अमल के मुताबिक किसी के लिए अबदी (चिरस्थाई) जन्नत का फैसला होगा और किसी के लिए अबदी जहन्नम का।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी हकीकत से आगाह करने के लिए आए। आपकी बेअसत (प्रस्थापन) के दो दौर हैं एक बराहेरास्त (प्रत्यक्ष), दूसरा बिलवास्ता (परोक्ष)। आपकी बराहेरास्त बेअसत मक्का और इतराफे मक्का के लिए थी। इसकी तक्मील आपने ख़ुद अपनी जिंदगी में फरमा दी। आपकी बिलवास्ता बेअसत बवास्तए उम्मत तमाम आलम के लिए है। आपकी यह दूसरी बेअसत जारी है और कियामत तक जारी रहेगी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले अरब के सामने अरबी जबान में अपना पैग़ाम पहुंचाया। आपके बाद आपकी उम्मत को भी आपकी नियाबत (प्रतिनिधित्व) में इसी उसूल पर अपना दावती फरीजा अंजाम देना है। उसे हर कौम के सामने उसकी अपनी जबान में हक का पैग़ाम पहुंचाना है। जब तक किसी कौम को उसकी अपनी जबान में पैग़ाम न पहुंचाया जाए उस पर पैग़ामरसानी का हक अदा न होगा।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ
وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ
مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝

और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता। लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और जालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं। क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज है और वही मुर्दों को जिंदा करता है और वह हर चीज पर कादिर है। और जिस किसी बात में तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) करते हो उसका फैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है। वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूं। (8-10)

इंसान के लिए अल्लाह तआला ने एक ग़ैर मामूली रहमत का दरवाजा खोला है जो किसी और के लिए नहीं खोला। वह है ख़ुद अपने इरादे से अल्लाह की हिदायत को इख़्तियार करना। और इसके नतीजे में अल्लाह के ग़ैर मामूली इनाम का मुस्तहिक बनना। लोगों का मुख़्तलिफ रास्ते इख़्तियार करना इसी आजादी की कीमत है। यह इख़्तेलाफ यकीनन एक नापसंदीदा चीज है मगर उस कीमती इंसान को चुनने की इसके सिवा कोई दूसरी सूरत नहीं।

ख़ुदा ने अगरचे इंसान को आजाद पैदा किया है। मगर उसकी हिदायत के लिए इंसान

के अंदर और उसके बाहर इतना ज्यादा सामान रखा गया है कि अगर आदमी वाकई संजीदा हो तो वह कभी ग़लत रास्ता इख़्तियार न करे। इसी हालत में जो लोग ग़लत रास्ता इख़्तियार करें वे बहुत बड़े जालिम हैं। वे ख़ुदा के यहां हरगिज माफी के काबिल न ठहरेंगे।

अहले हक और अहले बातिल के दर्मियान दुनिया में जो इख़्तेलाफ पैदा होता है उसका आख़िरी फैसला दुनिया में नहीं हो सकता। दुनिया का हाल यह है कि यहां हर आदमी अपने मुवाफिक अल्फाज पा लेता है। यहां यह मुमकिन है कि झूठ को भी सच के रूप में जाहिर किया जा सके। मगर यह सिर्फ मौजूदा जिंदगी के मरहले तक है। जहां इंसान का मुकाबला इंसान से है। अगली जिंदगी में इंसान का मुकाबला ख़ुदा से होगा। वहां किसी के लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि अपने आपको पुरफरेब अल्फाज के पर्दे में छुपा सके।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ
اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ
مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

वह आसमानों का और जमीन का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए। उसके जरिए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है। कोई चीज उसके मिस्ल (सदृश) नहीं और वह सुनने वाला, देखने वाला है। उसी के इख़्तियार में आसमानों और जमीन की कुंजियां हैं। वह जिसके लिए चाहता है ज्यादा रोजी कर देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है। बेशक वह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (11-12)

जमीन और आसमान की सूरत में जो वाकया हमारे सामने है वह इतना अजीम वाकया है कि यह नाकाबिले कयास है कि उन माबूदों में से किसी माबूद ने उसे वुजूद अता किया हो जिनकी लोग ख़ुदा के सिवा ताजीम व तकदीस (मान-सम्मान) करते हैं। इसी तरह इंसानों और जानवरों के अंदरूनी निजाम में उनकी नस्ल की बका का इंतजाम इतना पेचीदा है कि उसे हकीकी तौर पर न किसी इंसान की तरफ मंसूब किया जा सकता है और न ख़ुदा के सिवा माबूदों में से किसी माबूद की तरफ। ये सब काम इतने ग़ैर मामूली हैं कि बेमिस्ल ख़ुदा ही की तरफ उन्हें जाइज तौर पर मंसूब किया जा सकता है।

ख़ालिक की जो सिफात उसकी मख़्लूकात के मुशाहिदे के जरिए हमारे इल्म में आती हैं वही यह साबित करने के लिए काफी हैं कि यह ख़ालिक किस कद्र अजीम है। वह समीअ और बसीर (सुनने, देखने वाला) है। वह हर किस्म के आला इख़्तियारात का मालिक है।

किसी को जो कुछ मिलता है उसी के दिए से मिलता है और किसी से जो कुछ छिनता है उसी के छीनने से छिनता है। वह अपनी मिसाल आप है, उसके जैसा कोई और नहीं।

شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾

अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) मुकर्रर किया है जिसका उसने नूह को हुक्म दिया था और जिसकी 'वही' (प्रकाशना) हमने तुम्हारी तरफ की है और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को कायम रखो और उसमें इख़्तेलाफ (मत भिन्नता, बिखराव) न डालो। मुश्रिकीन पर वह बात बहुत गिरां (भार) है जिसकी तरफ तुम उन्हें बुला रहे हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी तरफ चुन लेता है। और वह अपनी तरफ उनकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह होते हैं। (13)

तमाम पैग़म्बर एक ही दीन लेकर आए। और वह दीने तौहीद है। मगर इन पैग़म्बरों के मानने वाले बाद को अलग-अलग दीनी फिरक़ों में तक़सीम हो गए। इसकी वजह मर्कज़े तवज्जोह में तब्दीली थी। पैग़म्बरों के अस्ल दीन में मर्कज़े तवज्जोह तमामतर ख़ुदा था। हर एक की तालीम यह थी कि सिर्फ एक ख़ुदा के परस्तार बनो। मगर उनकी उम्मतों ने बाद को अपना मर्कज़े तवज्जोह तब्दील कर दिया। वे ख़ुदा के बजाए ग़ैर ख़ुदा के परस्तार बन गए।

कदीम अरब के लोग इब्तिदा में हजरत इब्राहीम की उम्मत थे। मगर बाद को अपने कुछ बुज़ुर्गों की अज़्मत उनके ज़ेहनों पर इस तरह छाई कि उन्हीं को उन्होंने अपना मर्कज़े तवज्जोह बना लिया। यहां तक कि उनके बुत बनाकर वे उन्हें पूजने लगे। यहूद हजरत मूसा की उम्मत थे। मगर उन्होंने अपनी नस्ल को मख़्सूस नस्ल समझ लिया। उनकी तवज्जोहात अपनी नस्ल की तरफ इतनी ज्यादा मायल हुई कि बिलआख़िर ख़ुदाई दीन उनके यहां नस्ली दीन बनकर रह गया। वे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सिर्फ इसलिए मुंकिर हो गए कि वह उनकी अपनी नस्ल में पैदा नहीं हुए थे। इसी तरह ईसाई हजरत ईसा की उम्मत थे। उन्होंने हजरत ईसा को ख़ुदा का पैग़म्बर मानने के बजाए उन्हें ख़ुदा का बेटा फर्ज कर लिया। इस तरह बाद को उन्होंने जो दीन बनाया उसमें मसीह को ख़ुदा का बेटा मानने ने सबसे ज्यादा अहमियत हासिल कर ली।

ख़ुदा को अपने बंदों से जो दीन मत्लूब है वह यह है कि वह ख़ालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) पर कायम हों। सिर्फ एक ख़ुदा उनकी तमाम तवज्जोहात का मर्कज बन जाए। यही इकामते दीन (दीन की स्थापना) है। इस मर्कज़े तवज्जोह में तब्दीली का दूसरा नाम शिर्क

है। और जब लोगों में शिर्क आता है तो फौरन तफरीक (विभेद) और इख़्तेलाफ शुरू हो जाता है। क्योंकि तौहीद की सूरत में मर्कज़े तवज्जोह एक रहता है, जबकि शिर्क की सूरत में मर्कज़े तवज्जोह कई बन जाते हैं।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन अगरचे अपने मत्न (मूल रूप) के एतबार से महफ़ूज़ दीन है। मगर आपकी उम्मत महफ़ूज़ उम्मत नहीं। उम्मत के लोगों के लिए बदस्तूर यह इम्कान खुला हुआ है कि वे नई-नई चीजों को अपना मर्कज़े तवज्जोह बनाएं। वे ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तशरीह व ताबीर के जरिए अस्ल दीन में तब्दीलियां करें और फिर एक दीन को अमलन कई दीन बनाकर रख दें।

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِن بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٤﴾

और जो लोग मुतफर्रिक (विभाजित) हुए वे इल्म आने के बाद हुए, सिर्फ आपस की जिद की वजह से। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक वक्त मुअय्यन (निर्धारित) तक की बात तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई वे उसकी तरफ से शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल दिया है। (14)

इल्म आने के बाद मुतफर्रिक होने का मतलब यह है कि दीने हक की दावत बुलन्द हो और फिर भी आदमी उससे अलग रहे। या उसका मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो जाए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए अल्लाह तआला ने दीन को उसके ख़ालिस अंदाज में खोला। अब चाहिए था कि तमाम वे लोग जो ख़ुदा के तालिब हैं वे आपके साथ जुड़ जाएं। मगर वे आपके साथ जुड़ने के लिए तैयार नहीं हुए। पिछले नबियों के साथ अपने आपको मंसूब करके वे लोगों के दर्मियान दीनदारी का मकाम हासिल किए हुए थे। उन्होंने समझा कि यही उनके लिए काफी है हालांकि जब दीने सही की दावत बुलन्द हो तो तमाम लोगों के लिए लाजिम हो जाता है कि वे अपने घरौंदों को ढा दें और दीने सही के साथ अपने आपको वाबस्ता करें। जो लोग ऐसा न करें वे ख़ुदा के नजदीक मुजरिम हैं, चाहे वे ग़ैर-दीनदार हों या बजाहिर दीनदार।

दीने हक की दावत जब उठती है तो कुछ लोग 'बग़ी' की बुनियाद पर उसके मुंकिर बन जाते हैं। और कुछ लोग शक की बुनियाद पर उससे दूर रहते हैं। बग़ी से मुराद हसद और तकब्बुर (घमंड) है। यह उन लोगों का मामला है जो माहौल में बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हों। हक को मानने में उन्हें बड़ाई के मकाम से नीचे उतरना पड़ता है। चूंकि वे अपने आपको छोटा करने पर राजी नहीं होते इसलिए वे हक की दावत को छोटा करने में सरगर्म

हो जाते हैं। ताकि अपने मौक़िफ़ को जाइज साबित कर सकें।

शक और तरद्दुद (असमंजस) का मामला अक्सर अवामुन्नास (जन साधारण) के साथ पेश आता है। दाओ की बात उन्हें दलील की सतह पर वजनी मालूम होती है। मगर उन अकाबिर (बड़ों) को छोड़ना भी उनके लिए मुश्किल होता है जिनकी अज़्मत उनके जेहन पर पहले से क़ायम हो चुकी हो। ये दोतरफ़ा तक़ाज़े उनके लिए आख़िरी फ़ैसले तक पहुंचने में रुकावट बन जाते हैं। पहले गिरोह ने अगर तकब्बुर की नफ़्सियात के तहत हक को नजरअंदाज किया था तो दूसरा गिरोह शक की नफ़्सियात के तहत उसे इख़्तियार नहीं कर पाता। हक को क़ुबूल करने से यह भी महरूम रहता है और वह भी।

فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَقُلْ آمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾ وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾

पस तुम उसी की तरफ बुलाओ और उस पर जमे रहो जिस तरह तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूं। और मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दर्मियान इंसाफ करूं। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी। हमारा अमल हमारे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और उसी के पास जाना है। और जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत कर रहे हैं, बाद इसके कि वह मान लिया गया, उनकी हुज्जत उनके रब के नजदीक बातिल (झूठ) है और उन पर ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त अजाब है। (15-16)

यहां 'किताब' से मुराद वह अस्ल दीन है जो पैग़म्बरों के ज़रिए भेजा गया। 'अहवा' से मुराद वे ख़ुदसाख़्ता स्वनिर्मित इजाफ़े हैं जो इंसानों ने ख़ुद अपनी तरफ से दीने हक में किए। पैग़म्बर को हुक्म दिया गया कि तुम बस अस्ल दीन पर जमे रहो। यहां तक कि दावती मस्लेहत की बिना पर भी तुम्हें ऐसा नहीं करना है कि लोगों के ख़ुदसाख़्ता दीन के साथ रिआयत करने लगो। तुम्हारा काम अद्ल (इंसाफ) करना है। यानी मजहबी इख़्तेलाफ़ात का फ़ैसला करके यह बताना कि हक क्या है और बातिल क्या। कौन सा हिस्सा वह है जो ख़ुदा की तरफ से है और कौन-सा हिस्सा इंसानी आमेजिश (मिलावट) के तहत दीन में शामिल कर लिया गया है।

'हमारे और तुम्हारे दर्मियान कोई झगड़ा नहीं' का मतलब यह है कि तुम्हारे झगड़ने के बावजूद हम ऐसा नहीं करेंगे कि हम भी तुमसे झगड़ने लगें। तुम मंफ़ी (नकारात्मक) रवैया इख़्तियार करो तब भी हम यकतरफ़ा तौर पर अपने मुस्बत (सकारात्मक) रवैये पर क़ायम रहेंगे। दाओ की जिम्मेदारी सिर्फ हक का पैग़ाम पहुंचाने की है। इसके अलावा जो चीजें हैं उन्हें वह ख़ुदा के हवाले कर देता है।

जो लोग हक को क़ुबूल कर लें उन्हें तंग करना और उन्हें बेकार बहसों में उलझाना निहायत जालिमाना काम है। ऐसा करने वाले अपने आपको उस ख़तरे में मुब्तिला कर रहे हैं कि आख़िरत में उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो और उन्हें सख़्त अजाब में डाल दिया जाए।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿١٨﴾

अल्लाह ही है जिसने हक के साथ किताब उतारी और तराजू भी। और तुम्हें क्या ख़बर शायद वह घड़ी करीब हो। जो लोग उसका यकीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग यकीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वह बरहक है। याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं। (17-18)

जिस तरह माद्दी चीजों को तोलने के लिए तराजू होती है इसी तरह मअनवी हक़ीक़तों को तोलने के लिए ख़ुदा ने अपनी किताब उतारी है। ख़ुदा की किताब हक और बातिल को एक दूसरे से अलग करने की कसौटी है। हर दूसरी चीज को ख़ुदा की किताब पर जांचा जाएगा, न यह कि ख़ुदा की किताब को दूसरी चीजों पर जांचा जाने लगे।

पैग़म्बर के जमाने में जो लोग आपकी मुख़ालिफ़त कर रहे थे उनकी ग़लती यह थी कि उनकी क़ौमी रिवायात और उनके अकाबिर के अक़वाल (कथन) व आमाल से उनके यहां जो दीन बना था उसे मेयार मान कर उसी की रोशनी में वे ख़ुदा की किताब को देखते थे। हालांकि उनके लिए सही बात यह थी कि वे क़ौमी रिवायात और बुज़ुर्गों के अक़वाल व अफ़आल (कथनी-करनी) को ख़ुदा की किताब की रोशनी में देखें। जो चीज ख़ुदा की किताब के मेयार पर पूरी उतरे उसे लें और जो चीज ख़ुदा की किताब के मेयार पर पूरी न उतरे उसे छोड़ दें।

जांचने का यह काम मौजूदा दुनिया में आदमी को ख़ुद करना है। आख़िरत में यह काम ख़ुदा की तरफ से अंजाम दिया जाएगा। अक़्लमंद वह है जो कियामत में तौले जाने से पहले अपने आपको तौल ले। क्योंकि कियामत की तौल आख़िरी फ़ैसले के लिए होगी न कि अमल की मोहलत देने के लिए।

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿١٩﴾ مَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِن نَّصِيبٍ ﴿٢٠﴾

अल्लाह अपने बंदों पर महरबान है। वह जिसे चाहता है रोजी देता है। और वह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहे हम उसे उसकी खेती में तरक्की देंगे। और जो शख़्स दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (19-20)

दुनिया की ज़िंदगी इम्तेहान के लिए है। यहां हर आदमी को बक़द्र इम्तेहान जरूरी असबाब दिए जाते हैं। अब जो शख़्स आख़िरतपसंद हो वह मौजूदा दुनिया के असबाब को आख़िरत की तामीर के लिए इस्तेमाल करेगा और इसके नतीजे में आख़िरत में मजीद इजाफे के साथ अपना इनाम पाएगा।

इसके बरअक्स जो शख़्स दुनियापसंद हो वह सिर्फ मौजूदा दुनिया के पेशेनजर अमल करेगा। ऐसा शख़्स यकीनन मौजूदा दुनिया में अपना फल पा सकता है। मगर आख़िरत में वह सरासर महरूम रहेगा। जब उसने आख़िरत के लिए कुछ किया ही न था तो कैसे मुमकिन है कि आख़िरत में उसे कुछ दिया जाए।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُم مِّنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَن بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ ۖ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٢﴾ ذَٰلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ ۗ وَمَن يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٢٣﴾

क्या उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है जिसकी अल्लाह ने इजाजत नहीं दी। और अगर फैसले की बात तै न पा चुकी होती तो उनका फैसला कर दिया जाता। और बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। तुम जालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया। और वह उन पर जरूर पड़ने वाला है। और

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नत के बाग़ों में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनाम है। यह चीज है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर कराबतदारी की मुहब्बत। और जो शख़्स कोई नेकी करेगा हम उसके लिए इसमें भलाई बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, कद्रदां है। (21-23)

जब एक बात ख़ुदा की किताब से साबित न हो, इसके बावजूद आदमी उसके हक होने पर इसरार करे तो इसका मतलब यह है कि वह दूसरों को ख़ुदा के बराबर ठहरा रहा है। वह ख़ुदा के सिवा दूसरों को यह हक दे रहा है कि वह इंसान के लिए उसका दीन वजअ करें।

यह एक बेहद संगीन बात है। हकीकत यह है कि 'दीन' की नौइयत की कोई चीज मुकर्रर करने का हक सिर्फ एक ख़ुदा को है। ख़ुदा के सिवा किसी और को यह हक देना खुला हुआ शिर्क है। और शिर्क एक ऐसा जुर्म है जो ख़ुदा के यहां किसी तरफ माफ होने वाला नहीं।

'मैं तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर यह कि कराबतदारी की मुहब्बत' यह बात पैग़म्बर की जबान से उस वक्त कहलाई गई जबकि आपके कबीला कुरैश के लोग आपकी दावत की राह में सख़्ततरीन रुकावटें डाल रहे थे। इन हालात में इसका मतलब यह था कि अगर तुम मेरा दीन कुबूल नहीं करते तो न करो मगर कम से कम कराबतदारी (नातेदारी) का लिहाज करते हुए अजिय्यतरसानी (उत्पीड़न) से तो बाज रहो। बअल्फ़ाज दीगर, अगर तुम्हें मुझसे मजहबी इख़्तेलाफ है तो अपने इख़्तेलाफ में तुम अख़्लाक और शराफत की सतह से न गिर जाओ। इस तरह गोया बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में यह बताया गया कि आपकी दावत के मुख़ालिफीन सिर्फ मुख़ालिफीन नहीं हैं बल्कि वे अख़्लाकी मुजरिम भी हैं। वे अपने आपको अख़्लाक की सतह पर ग़लत साबित कर रहे हैं जिसकी अहमियत ख़ुद उनके नजदीक भी मुसल्लम (सुस्थापित) है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَإِن يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾

क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक (सत्य) को साबित करता है अपनी बातों से। बेशक वह दिलों की बातें जानता है। और वही है जो अपने बंदों की तौबा कुबूल करता है और बुराइयों को माफ करता है और वह

जानता है जो कुछ तुम करते हो। और वह उन लोगों की दुआएं कुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। और वह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा दे देता है। और जो इंकार करने वाले हैं उनके लिए सख़्त अजाब है। (24-26)

इस दुनिया के लिए ख़ुदा का क़ानून यह है कि यहां हक़, हक़ के रूप में सामने आता है और बातिल, बातिल के रूप में नुमायां होता है। अगर एक झूठी रूह है तो उससे कभी सच्चा कलाम जाहिर नहीं हो सकता। यही वजह है कि यहां किसी ग़ैर पैग़म्बर के लिए मुमकिन नहीं कि वह पैग़म्बर की जबान में कलाम कर सके। एक शख़्स पैग़म्बर न हो और झूठ बोलकर अपने को पैग़म्बर बताए तो उसके कलाम में लाजिमन झूठे पैग़म्बर का अंदाज पैदा हो जाएगा। कोई शख़्स मस्नूई (बनावटी) तौर पर कभी सच्चे पैग़म्बर के अंदाज में नहीं बोल सकता।

'अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे' इसका मतलब बदले हुए अल्फ़ाज में यह है कि अगर तुम अल्लाह पर झूठ बांधते तो उस वक्त मशीयते ख़ुदावंदी के तहत तुम्हारे दिल पर मुहर लग जाती। ऐसी हालत में ख़ुद क़ानूने कुदरत के तहत यह होता कि तुम्हारी जबान उस पाकीजा रब्बानी कलाम के इज़्हार से आजिज हो जाती जिसका खुला हुआ नमूना तुम्हारे कलाम में नजर आता है। हकीकत यह है कि पैग़म्बर का आला कलाम ख़ुद उसके पैग़म्बरे ख़ुदा होने का सुबूत है। अगर वह वाकई ख़ुदा का पैग़म्बर न होता तो उसकी जबान से कभी ऐसा आला कलाम जाहिर नहीं हो सकता था।

जो लोग हक की मुख़ालिफ़त करते हैं वे अपने दिल की आवाज के तहत ऐसा नहीं करते। बल्कि महज जिद और इनाद (द्वेष) के तहत उसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हो जाते हैं। ऐसे लोग गोया ख़ुद अपने जमीर की अदालत के सामने मुजरिम बन रहे हैं। उनके ऊपर ख़ुदा की हुज्जत तमाम हो चुकी है, इल्ला यह कि आदमी तौबा करे और अल्लाह से माफी का ख़्वास्तगार हो।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۭ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَاۗبَّةٍ ۭ وَهُوَ عَلٰي جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَاۗءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोजी को खोल देता तो वे जमीन में फसाद करते। लेकिन वह अंदाजे के साथ उतारता है जितना चाहता है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला है, देखने वाला है। और वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, क़ाबिले तारीफ है। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और जमीन का पैदा

करना। और वे जानदार जो उसने इनके दर्मियान फैलाए हैं। और वह उन्हें जमा करने पर कादिर है जब वह उन्हें जमा करना चाहे। (27-29)

जमीन पर इंसानी जिंदगी का इंहिसार पानी पर है। मगर पानी तमामतर ख़ुदा के इख़्तियार में है। ख़ुदा अगर पानी फराहम न करे तो इंसान ख़ुद से पानी हासिल नहीं कर सकता। इसी तरह रिज़्क की तक़सीम भी ख़ुदा की तरफ से होती है। इस तक़सीम में ख़ुदा आदमी के जर्फ को देखता है। और हर एक को उसके जर्फ के बक़द्र अता करता है। अगर लोगों को उनके जर्फ से ज़्यादा दिया जाने लगे तो लोग सरकश बन जाएं और जमीन में हर तरफ जुल्म व फसाद फैल जाए।

हम देखते हैं कि एक किसान जब दाने को बिखेरता है तो वह उसे समेटने पर भी कादिर होता है। यह इंसानी मुशाहिदा इस बात का करीना है कि ख़ुदा भी इसी तरह अपनी बिखरी हुई मख़्लूक़ात को समेट कर अपनी अदालत में ला सकता है। जहां यकजाई तौर पर लोगों के मुस्तकबिल का फैसला किया जाए। जिस ख़ालिक के लिए पैदा करके बिखेरना मुमकिन था उसके लिए मौत के बाद दुबारा समेटना क्यों न मुमकिन हो जाएगा।

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٠﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ښ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٣١﴾

और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचती है तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही से, और बहुत से कुसूरों को वह माफ कर देता है। और तुम जमीन में ख़ुदा के काबू से निकल नहीं सकते। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार। (30-31)

मौजूदा दुनिया को असबाब के कानून के तहत बनाया गया है। यहां आदमी पर जब कोई मुसीबत आती है तो वह वाजेह तौर पर उसकी अपनी ही कोताही का नतीजा होती है। और कभी ऐसा होता है कि एक शख़्स कोताही करता है मगर वह उसके बुरे अंजाम से बच जाता है।

दुनिया के ये वाकेयात इसलिए हैं कि आदमी उनसे सबक ले। जब वह देखे कि लोग जो कुछ पा रहे हैं वे अपने अमल के बक़द्र पा रहे हैं तो उससे वह यह नसीहत ले कि आख़िरत में भी इसी तरह हर शख़्स अपने अमल के मुताबिक अपना अंजाम पाएगा। इसी तरह जब वह देखे कि आदमी ने एक कोताही की मगर वह उसके अंजाम से बच गया तो वह उससे यह सबक हासिल करे कि ख़ुदा निहायत महरबान है। अगर आदमी उसकी तरफ रुजूअ हो तो वह अपनी रहमते ख़ास से उसे उसकी कोताहियों के अंजाम से बचा सकता है। ईमान जब गहरा हो तो आदमी का यही हाल हो जाता है। वह दुनिया के वाकेयात में आख़िरत की तस्वीर देखने लगता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ إِن يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾ أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَن كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٣٥﴾

और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज समुद्र में चलते हैं जैसे पहाड़। अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वे समुद्र की सतह पर ठहरे रह जाएं। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला है। या वह उन्हें तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और माफ कर दे बहुत से लोगों को। और ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं। (32-35)

इंसान समुद्र में अपनी कश्ती दौड़ाता है और फजा में अपने जहाज उड़ाता है। यह सिर्फ इसलिए मुमकिन होता है कि ख़ुदा ने फ़ितरत के कानून को हमारे लिए साजगार बना रखा है। फ़ितरत के कवानीन अगर हमसे साजगारी न करें तो न हमारी कश्तियां समुद्रों में दौड़ें और न हमारे जहाज हवाओं में उड़ें।

जिंदगी के हर वाक्ये में नसीहत है मगर वाक़ेयात से नसीहत की ख़ुराक लेने के लिए सब्र व शुक्र का मिजाज जरूरी है। जिंदगी में कभी तकलीफ पेश आती है और कभी आराम। तकलीफ के वक्त आदमी को जाहिरी हालात से ऊपर उठना पड़ता है ताकि वह वाक्ये को दूसरे रुख़ से देख सके। और यह चीज सब्र के बग़ैर मुमकिन नहीं। इसी तरह आराम के वक्त इसकी जरूरत होती है कि बजाहिर अपनी कोशिशों से मिलने वाली चीज को ख़ुदा की तरफ से मिलने वाली चीज समझा जाए। और यह वही शख़्स कर सकता है जिसके अंदर वह आला शुऊर पैदा हो चुका हो जिसे शुक्र कहा जाता है।

निशानियों में झगड़ना यह है कि जब किसी वाकये में ख़ुदाई नसीहत के पहलू की निशानदही की जाए तो आदमी उसे न माने और वाकये को दूसरे-दूसरे मअना पहनाने की कोशिश करे। ऐसे लोग ख़ुदा की नजर में सरकश हैं और किसी की सरकशी सिर्फ मौजूदा दुनिया में चल सकती है, वह आख़िरत में हरगिज चलने वाली नहीं।

فَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾

पस जो कुछ तुम्हें मिला है वह महज दुनियावी जिंदगी के बरतने के लिए है। और जो

कुछ अल्लाह के पास है वह ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अल्लाह पर भरोसा रखते हैं। (36)

आख़िरत का चाहने वाला वही बन सकता है जो अल्लाह पर भरोसा करने वाला हो। जब भी आदमी आख़िरत की तरफ बढ़ता है तो दुनिया के फ़ायदे उसे ख़तरे में नजर आने लगते हैं। दुनिया की मस्लेहतें उसे छूटती हुई दिखाई देती हैं। ऐसी हालत में जो चीज आदमी को आख़िरत के रास्ते पर साबितकदम रखती है वह सिर्फ यह कि उसे ख़ुदा के वादों पर भरोसा हो। उसे यकीन हो कि ख़ुदा की ख़ातिर वह दुनिया में जितना खोएगा उससे बहुत ज्यादा वह आख़िरत में ख़ुदा की तरफ से पा लेगा।

दुनिया की हर नेमत वक्ती है और आख़िरत की नेमतें अबदी हैं जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं। और अबदी नेमत के मुक़ाबले में वक्ती नेमत की कोई हक़ीक़त नहीं।

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿٣٧﴾ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنتَصِرُونَ ﴿٣٩﴾ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾ وَلَمَنِ انتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِم مِّن سَبِيلٍ ﴿٤١﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

और वे लोग जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें ग़ुस्सा आता है तो वे माफ कर देते हैं और वे जिन्होंने अपने रब की दावत (आह्वान) को कुबूल किया और नमाज कायम की और वे अपना काम आपस के मश्विरे से करते हैं। और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। और वे लोग कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं। और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई। फिर जिसने माफ कर दिया और इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह के जिम्मे है। बेशक वह जालिमों को पसंद नहीं करता। और जो शख़्स अपने मजलूम होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्जाम नहीं। इल्जाम सिर्फ उन पर है जो लोगों के ऊपर ज़ुल्म करते हैं और जमीन में नाहक सरकशी करते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अजाब है।

और जिस शख़्स ने सब्र किया और माफ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (37-43)

ईमान जब हकीकी मअनों में किसी को हासिल होता है तो वह उसके अंदर इंकिलाब पैदा कर देता है। उसके अंदर एक नई शख़्सियत उभरती है। यहां एक बंदाए ख़ुदा की जिन ख़ुसूसियात का जिक्र है वे सब वही हैं जो इस ईमानी शख़्सियत के नतीजे में किसी के अंदर जाहिर होती हैं।

ऐसे शख़्स के अंदर हकीकते वाकया के एतराफ का मिजाज पैदा होता है। वह ख़ुदा के ख़ुदा होने और अपने बंदा होने की हैसियत का एतराफ करते हुए उसके आगे झुक जाता है। ख़ुदा की एक पुकार बुलन्द हो तो उसके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वह उस पर लब्बैक न कहे। ईमानी शुऊर उसे सही और ग़लत के बारे में हस्सास (संवेदनशील) बना देता है। वह वही करता है जो करना चाहिए और वह नहीं करता जो नहीं करना चाहिए।

अपनी हैसियते वाकई का एतराफ उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) पैदा करता है जो उससे ग़ुस्सा, जुल्म और सरकशी का मिजाज छीन लेता है। यही तवाजोअ उसे मजबूर करता है कि इज्तिमाई (सामूहिक) मामलात में वह दूसरों के मश्विरे से फायदा उठाए वह महज अपनी जाती राय की बुनियाद पर इक्दाम से परहेज करे। दूसरों के साथ उसका रिश्ता ख़ैरख़्वाही का होता है न कि जिद और इस्तहसाल (शोषण) का।

ऐसा आदमी दूसरों के ख़िलाफ कभी जारिहियत नहीं करता। दूसरों के ख़िलाफ वह जब भी इक्दाम करता है तो दिफाअ (प्रतिरक्षा) के तौर पर करता है और उतना ही करता है जितना उनके जुल्म को रोकने के लिए जरूरी हो। वह ऐन इश्तिआलअंगेज (उत्तेजक) हालात में भी इसके लिए तैयार रहता है कि लोगों को माफ कर दे और उन्होंने उसके साथ जो बुराई की है उसे भूल जाए।

बंदाए मोमिन ये सारे काम अपने जज्बए ईमान के तहत करता है ताहम अल्लाह उसकी कद्रदानी इस तरह फरमाता है कि उसे अहले हिम्मत और उलुलअज्म (उत्साही) के ख़िताब से नवाजता है। और उसे अबदी नेमतों के बाग़ में दाख़िल कर देता है।

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ۭ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا
رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا
خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۭ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ
الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ
فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَاۗءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ

और जिस शख़्स को अल्लाह भटका दे तो इसके बाद उसका कोई कारसाज (संरक्षक) नहीं। और तुम जालिमों को देखोगे कि जब वे अजाब को देखेंगे तो वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई सूरत है। और तुम उन्हें देखोगे कि वे दोजख़ के सामने लाए जाएंगे, वे जिल्लत से झुके हुए होंगे। छुपी निगाह से देखते होंगे। और ईमान वाले कहेंगे कि ख़सारे (घाटे) वाले वही लोग हैं जिन्होंने कियामत के दिन अपने आपको और अपने मुतअल्लिकीन (संबंधियों) को ख़सारे में डाल दिया। सुन लो, जालिम लोग दाइमी (स्थाई) अजाब में रहेंगे। और उनके लिए कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह के मुकाबले में उनकी मदद करें। और ख़ुदा जिसे भटका दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं। (44-46)

इस दुनिया में हिदायत को दलील के जरिए खोला जाता है। यही इस दुनिया के लिए ख़ुदा का कानून है। इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में सिर्फ वह शख़्स हिदायत पाता है जो इस सलाहियत का सुबूत दे कि वह दलील की जबान में बात को समझ सकता है। दलील के जरिए किसी बात का साबित हो जाना इसके लिए काफी है कि वह उसके आगे झुक जाए। जो लोग दलील से न मानें उन्हें इस दुनिया में कभी हिदायत नहीं मिल सकती।

जो शख़्स मौजूदा दुनिया में दलील के आगे नहीं झुकता वह अपने आपको उस ख़तरे में डालता है कि कियामत में उसे ख़ुदाई ताकत के आगे झुकाया जाए। मगर कियामत का झुकना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह आदमी को जलील करने के लिए होगा न कि उसे इनाम का मुस्तहिक बनाने के लिए।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ
مَّلْجَاٍ يَّوْمَىِٕذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيْظًا ۭ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ۭ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ
وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ

तुम अपने रब की दावत (आह्वान) कुबूल करो इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए ख़ुदा की तरफ से हटना न होगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह न होगी और न तुम किसी चीज को रद्द कर सकोगे। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा जिम्मा सिर्फ पहुंचा देना है। और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाजते हैं तो वह उस पर ख़ुश हो जाता है। और अगर उनके आमाल के बदले में उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने लगता है। (47-48)

मौजूदा दुनिया में आदमी का अस्ल इम्तेहान यह है कि जो सूरतेहाल भी उसके सामने आए, वह उसमें सही रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश करे। मगर इंसान ऐसा नहीं करता। उसे जब कोई कामयाबी मिलती है तो वह फ़ख्र व नाज की नफ़्सियात में मुब्तिला हो जाता है। और जब वह किसी मुसीबत में पड़ता है तो वह मंफ़ी जज़्बात का इज़्हार करने लगता है।

यही वे लोग हैं जो हक की दावत के मुक़ाबले में सही रद्देअमल पेश नहीं कर पाते। उनका ग़ैर हकीक़तपसंदाना मिजाज यहां भी उन्हें ग़ैर हकीक़तपसंद बना देता है। हक़ की दावत का सही रद्देअमल यह है कि आदमी फ़ौरन उसकी हक़्क़ानियत (सत्यता) का एतराफ कर ले। मगर आदमी यह करता है कि वह उसे अपनी साख का मसला बना लेता है। वह समझता है कि दावत को मान कर मैं उसे पेश करने वाले के सामने छोटा हो जाऊंगा। यह एहसास उसके लिए हक को क़ुबूल करने की राह में रुकावट बन जाता है। वह उसकी सदाक़त पर यक़ीन करने के बावजूद अपनी ज़ाती मस्लेहतों की बिना पर उसे नजरअंदाज कर देता है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَاۗءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है। वह जिसे चाहता है बेटियां अता करता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है या उन्हें जमा कर देता है बेटे भी और बेटियां भी। और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह जानने वाला है, कुदरत वाला है। (49-50)

दीन की असास (बुनियाद) इस तसव्वुर पर कायम है कि इस कायनात में हर किस्म का इख़्तियार सिर्फ एक ख़ुदा को हासिल है। उसके सिवा किसी के पास कोई इख़्तियार नहीं, चाहे वह जमीन व आसमान के निजाम को चलाना हो या एक इंसान को औलाद अता करना। आदमी जो कुछ पाता है ख़ुदा के दिए से पाता है और वही जब चाहता है उसे उससे छीन लेता है।

ख़ुदा के बारे में यह अकीदा ही आदमी के अंदर वह सही एहसास पैदा करता है जिसे 'अब्दियत' (बंदा होने का एहसास) कहा जाता है। और ख़ुदा के बारे में यह अकीदा ही आदमी को मजबूर करता है कि वह अपनी जिंदगी में उस रविश को अपनाए जिसका इलाही शरीअत में हुक्म दिया गया है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَاۗئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا

فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝

और किसी आदमी की यह ताकत नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे, मगर 'वही' (प्रकाशना) के जरिए से या पर्दे के पीछे से या वह किसी फरिश्ते को भेजे कि वह 'वही' कर दे उसके इज्न (आज्ञा) से जो वह चाहे। बेशक वह सबसे ऊपर है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ भी 'वही' की है, एक रूह अपने हुक्म से। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है। लेकिन हमने उसे एक नूर बनाया, उससे हम हिदायत देते हैं अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं। और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कर रहे हो। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और जमीन में है। सुन लो, सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटने वाले हैं। (51-53)

मौजूदा दुनिया में कोई इंसान बराहेरास्त ख़ुदा से हमकलाम नहीं हो सकता। इंसान का इज्ज (निर्बलता) इस किस्म के कलाम में मानेअ (रुकावट) है। चुनांचे पैग़म्बरों पर ख़ुदा का जो कलाम उतरा वह बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में उतरा। बिलवास्ता ख़िताब के कई तरीके हैं उनकी मिसालें मुख़्तलिफ पैग़म्बरों की जिंदगी में पाई जाती हैं।

एक आलिम जब कोई किताब लिखता है या एक मुफक्किर (विचारक) जब कोई कलाम पेश करता है तो उसके माजी (अतीत) में ऐसे असबाब मौजूद होते हैं जो उसके इल्मी और फ़िक्री कारनामे की तौजीह कर सकें। मगर पैग़म्बर का मामला इससे बिल्कुल मुख़्तलिफ है। पैग़म्बर की नुबुव्वत के बाद की जिंदगी उसकी नुबुव्वत से पहले की जिंदगी से सरासर मुख़्तलिफ होती है। ग़ैर पैग़म्बर का हाल का कलाम उसकी माजी की जिंदगी का तसलसुल नजर आता है। मगर पैग़म्बर की जबान से नुबुव्वत के बाद जो कलाम जारी होता है वह उसके नुबुव्वत से पहले के कलाम से इतना ज्यादा मुमताज होता है कि पैग़म्बर के माजी से उसकी तौजीह नहीं की जा सकती। यह एक वाजेह करीना है जो यह साबित करता है कि पैग़म्बर का कलाम ख़ुदाई कलाम है न कि आम इंसानी कलाम।

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़ुसूसियत हासिल है कि आपका दिया हुआ कुरआन और आपकी अपनी जबान से निकला हुआ कलाम, दोनों आज भी अपनी अस्ल हालत में मौजूद हैं। कोई शख़्स जो अरबी जबान जानता हो और वह इन दोनों को तकाबुली (तुलनात्मक) तौर पर देखे तो वह दोनों के दर्मियान खुला हुआ फ़र्क

पाएगा। हदीस की जबान वाजेह तौर पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की जबान है और कुरआन की जबान वाजेह तौर पर ख़ुदा की जबान।

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٤﴾

आयतें-89 सूरह-43. अज़-ज़ुख़रुफ रुकूअ-7

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। क़सम है इस वाजेह किताब की। हमने इसे अरबी जबान का कुरआन बनाया है ताकि तुम समझो। और बेशक यह अस्ल किताब में हमारे पास है, बुलन्द और पुरहिक्मत (तत्वदर्शितापूर्ण) । (1-4)

उम्मुल किताब से मुराद लौहे महफ़ूज (मूल ग्रंथ) है जो अल्लाह के पास है। लौहे महफ़ूज में अल्लाह तआला ने उस अस्ल दीन को सब्त (संरक्षित) कर रखा है जो उसे इंसानों से मत्लूब है। यही अस्ल दीन मुख़्तलिफ जबानों में मुख़्तलिफ पैग़म्बरों पर उतरा। और वह पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अरबी जबान में उतारा गया। अब अरबी कुरआन ही मौजूदा दुनिया में अस्ल दीने ख़ुदावंदी का नुमाइंदा है। हामिलीने कुरआन की यह जिम्मेदारी है कि वे इसे हर जबान में मुंतकिल करके इसे तमाम कौमों तक पहुंचाएं। ताकि इस दीन को जिस तरह अरबों ने समझा उसी तरह दूसरे लोग भी इसे समझ सकें।

कुरआन का बुलन्द और पुरहिक्मत होना इसके किताबे इलाही होने का सुबूत है। कुरआन की जबान और इसके मजामीन ख़ुदाई अज्मत के हमसतह हैं और यही इस बात का सुबूत है कि वह ख़ुदा की किताब है। कुरआन अगर इंसानी कलाम होता तो इसमें वह ग़ैर मामूली अज्मत न पाई जाती जो अब इसमें पाई जा रही है।

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

क्या हम तुम्हारी नसीहत से इसलिए नजर फेर लेंगे कि तुम हद से गुजरने वाले हो और हमने अगले लोगों में कितने ही नबी भेजे। और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया जिसका उन्होंने मजाक न उड़ाया हो। फिर जो लोग उनसे ज्यादा ताक़तवर थे उन्हें हमने हलाक कर दिया। और अगले लोगों की मिसालें गुजर चुकीं। (5-8)

आज दुनिया में बेशुमार ऐसे लोग पाए जाते हैं जो पिछले पैग़म्बरों का नाम इज्जत के साथ लेते हैं। ऐसी हालत में यह बात बड़ी अजीब मालूम होती है कि इन पैग़म्बरों का (पैग़म्बरे इस्लाम सहित) उनके हमजमाना लोगों ने मजाक क्यों उड़ाया।

इसकी वजह यह नहीं है कि पिछले लोग वहशी थे और आज के लोग मुहज्जब हैं। यह सिर्फ जमाने का फ़र्क़ है। आज लम्बी मुद्दत गुजरने के बाद हर पैग़म्बर के साथ तारीख़ी अज्मत का जोर शामिल हो चुका। इसलिए आज हर जाहिरबीं पैग़म्बर को पहचान लेता है। मगर पैग़म्बर अपने जमाने के लोगों को सिर्फ एक आम इंसान नजर आता था। उस वक्त पैग़म्बर की पैग़म्बराना हैसियत को पहचानने के लिए हकीकतबीं (यथार्थदर्शी) निगाह दरकार थी। और बिलाशुबह हकीकतबीं निगाह दुनिया में हमेशा सबसे कम पाई गई है।

हक की दावत के मुख़ातबीन चाहे कितना ही ज्यादा ग़लत रवैया इख़्तियार करें, दाओ यकतरफा तौर पर सब्र करते हुए अपने दावती अमल को जारी रखता है। यहां तक कि वह वक्त आ जाए जबकि ख़ुदा अपनी तरफ से कोई फ़ैसला फ़रमा दे।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١١﴾ وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿١٢﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿١٣﴾ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया तो वे जरूर कहेंगे कि उन्हें जबरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया। जिसने तुम्हारे लिए जमीन को फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और जिसने आसमान से पानी उतारा एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उससे मुर्दा जमीन को जिंदा

कर दिया, इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और जिसने तमाम किस्में बनाईं और तुम्हारे लिए वे कश्तियां और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो। फिर तुम अपने रब की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीजों को हमारे वश में कर दिया, और हम ऐसे न थे कि उन्हें काबू में करते। और बेशक हम अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। (9-14)

हर जमाने में बेशतर इंसान यह मानते रहे हैं कि कायनात का ख़ालिक व मालिक ख़ुदा है और वही है जिसने हमें जिंदगी के तमाम सामान दिए हैं। कायनात को वजूद में लाना और जमीन पर सामाने हयात की फराहमी इतना बड़ा काम है कि किसी शख़्स के लिए नामुमकिन है कि वह इसे एक ख़ुदा के सिवा किसी और की तरफ मंसूब कर सके।

इस इक़रार का तकाजा है कि इंसान सबसे ज्यादा ख़ुदा की तरफ मुतवज्जह हो। उसकी जिंदगी ख़ुदा रुख़ी जिंदगी हो जाए। मगर इंसान दूसरी चीजों को अपना मक्सूद बनाता है, वह ग़ैर ख़ुदा को अपनी तवज्जोहात का मर्कज ठहरा लेता है।

अल्लाह तआला ने हकीकत को अपने पैग़म्बरों के जरिए खोला है। इसी के साथ उसने दुनिया की तख़्लीक इस तरह की है कि वह हकाइके मअनवी की अमली तम्सील बन गई है। मसलन यह एक हकीकत है कि इंसान को मरकर दुबारा जिंदा होना है। इस हकीकत को नबातात (पेड़-पौधों) की सतह पर बार-बार दिखाया जा रहा है। इंसान हर साल यह देखता है कि जमीन ख़ुश्क हो गई। इसके बाद बारिश होती है और जमीन दुबारा सरसब्ज हो जाती है। यह एक इशारा है कि इसी तरह इंसान भी मरने के बाद दुबारा जिंदा किया जाएगा।

मौजूदा दुनिया की दूसरी ख़ुसूसियत यह है कि वह हैरतअंगेज तौर पर इंसान के मुवाफिक है। यहां की तमाम चीजें इस अंदाज पर बनाई गई हैं कि इंसान उन्हें जिस तरह चाहे अपने मक्सद के लिए इस्तेमाल करे। इसका तकाजा है कि आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा पैदा हो। वह जब ख़ुदा की दुनिया की किसी चीज को अपने लिए इस्तेमाल करे तो उसका दिल ख़ुदा के आगे झुक जाए, उसकी जबान से एतराफ व दुआ के कलिमात उबलने लगें।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾ أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾ أَوَمَنْ يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾

और उन लोगों ने ख़ुदा के बंदों में से ख़ुदा का जुज (अंश) ठहराया, बेशक इंसान खुला नाशुक्रा है। क्या ख़ुदा ने अपनी मख़्लूकात में से बेटियां पसंद कीं और तुम्हें बेटों से नवाजा। और जब उनमें से किसी को उस चीज की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान की तरफ मंसूब करता है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है। क्या वह जो आराइश (आभूषणों) में परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके। और फरिश्ते जो रहमान के बंदे हैं उन्हें उन्होंने औरत करार दे रखा है। क्या वे उनकी पैदाइश के वक्त मौजूद थे। उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी। (15-19)

ख़ुदा के साथ ग़ैर ख़ुदा को शरीक करने की एक सूरत यह है कि आदमी किसी को ख़ुदा का शरीके जात ठहराए। मसलन फरिश्तों को ख़ुदा की बेटी मानना, हजरत मसीह को ख़ुदा का बेटा बताना, या वहदतुल वजूद का नजरिया (अद्वैत मत) जो तमाम चीजों को ख़ुदा के अज्जा (अंश) करार देकर कायनात की तशरीह करता है। इस किस्म के तमाम अकीदे महज बेबुनियाद मफरूजे (कल्पनाएं) हैं। इनके हक में कोई भी हकीकी दलील मौजूद नहीं।

यहां औरत की सिंफी (लैंगिक) ख़ुसूसियात को दो जामअ लफ्ज में बयान कर दिया गया है। एक यह कि वह तबअन आराइशपसंद होती है। दूसरे यह कि वह मुकाबले के वक्त पुरजोर अंदाज में कलाम नहीं कर पाती। औरत का यह सिंफी मिजाज एक हकीकत है और इसी बिना पर इस्लाम में यह तक्सीम की गई है कि मर्द बेरूनी (बाहर) काम का जिम्मेदार है और औरत अंदरूनी काम की जिम्मेदार।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۗ مَا لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِمْ مُهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾ وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِمْ مُقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ أَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

और वे कहते हैं कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं। वे महज बेतहकीक बात कह रहे हैं। क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है तो उन्होंने उसे मजबूत पकड़ रखा है। बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने

बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं। और इसी तरह हमने तुमसे पहले जिस बस्ती में भी कोई नजीर (डराने वाला) भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं। नजीर ने कहा, अगरचे मैं उससे ज्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊं जिस पर तुमने अपने बाप दादा को पाया है। उन्होंने कहा कि हम उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। तो हमने उनसे इंतिकाम (प्रतिशोध) लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। (20-25)

मौजूदा दुनिया में इंसान जो भी काम करना चाहता है वह उसके मौके पा लेता है। इससे अक्सर लोग इस ग़लतफहमी में पड़ जाते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं सही कर रहे हैं। अगर वे ग़लती पर होते तो वे अपने तरीके को चलाने में कामयाब न होते। इस किस्म की बातें अक्सर वे लोग करते हैं जिन्हें ख़ुशहाल तबका कहा जाता है।

मगर यह जबरदस्त ग़लतफहमी है। मौजूदा दुनिया में हर तरीके का चल पड़ना इसलिए है कि यहां इम्तेहान की आजादी है। आख़िरत की दुनिया में इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म हो जाएगी। इसलिए वहां किसी के लिए यह मौका भी बाकी न रहेगा।

हर दौर में पैग़म्बरों के दीन का मुकाबला सबसे ज्यादा आबाई (पैतृक) दीन से पेश आया है। 'पूर्वज' कौमों की नजर में अकाबिर का दर्जा हासिल कर चुके होते हैं। इसके मुकाबले में वक्त का पैगम्बर उन्हें असाग़िर (छोटों) में से नजर आता है। इस बिना पर उनके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वे बड़ों के दीन को छोड़कर छोटे के दीन को इख़्तियार कर लें। मगर इन्हीं 'छोटों' की तकजीब (अवहेलना, इंकार) पर उन कौमों पर वह अजाब आया जिसके मुतअल्लिक उनका गुमान था कि वह सिर्फ 'बड़ों' की तकजीब पर आ सकता है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾

और जब इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि मैं उन चीजों से बरी हूं जिसकी तुम इबादत करते हो। मगर वह जिसने मुझे पैदा किया, पस बेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा और इब्राहीम यही कलिमा अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहां तक कि उनके पास हक (सत्य) आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला।

और जब उनके पास हक आ गया उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसके मुंकिर हैं। (26-30)

यहां हजरत इब्राहीम अलैहि० के जिस कलिमए तौहीद का जिक्र है वह उनकी दावती जिंदगी के आख़िरी दौर में निकला था। यह कलमा महज चन्द अल्फ़ाज का मज्मूआ न था। वह एक अजीम तारीख़ का ख़ुलासा था। हजरत इब्राहीम जब सिने शुऊर (प्रौढ़ता) को पहुंचे तो उन्हें यह दरयाफ्त हुई कि इंसान का माबूद सिर्फ एक है। उसके सिवा तमाम माबूद बातिल और बेहकीकत हैं। उन्होंने अपनी जिंदगी की तामीर इसी अकीदे पर की। ख़ानदान और कौम के अंदर इसी की तब्लीग़ की। वह किसी मस्लेहत का लिहाज किए बग़ैर लम्बी मुद्दत तक इसी पर कायम रहे। यहां तक कि उनका मोहिद (एकेश्वरवादी) होना ही उनकी हैसियते उरफ़ी (पहचान) बन गया। इस तरह की एक लम्बी जिंदगी गुजारने के बाद जब वह मज्कूरा कलिमा कहकर अपने वतन से रवाना हुए तो उनका कलिमा कुदरती तौर पर कलिमए बाकिया (स्थापित कलिमा) बन गया। वह एक ऐसा वाक्या था कि हजरत इब्राहीम का जिक्र आते ही वह लोगों को याद आ जाता था।

हजरत इब्राहीम की इस ताकतवर रिवायत को उनकी बाद की नस्ल में निशानेराह का काम देना चाहिए था। मगर दुनिया की दिलचस्पियों ने बाद के लोगों को इससे ग़ाफिल कर दिया। यहां तक कि वे इस मामले में इतने बेशुऊर हो गए कि बाद के जमाने में जब ख़ुदा का एक बंदा उन्हें उनका माजी (अतीत) का सबक याद दिलाने के लिए उठा तो उन्होंने उसका इंकार कर दिया।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾ أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُم بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُونَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

और उन्होंने कहा कि यह कुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया। क्या ये लोग तेरे रब की रहमत को तक्सीम करते हैं। दुनिया की जिंदगी में उनकी रोजी को तो हमने तक्सीम किया है और हमने एक को दूसरे पर फौकियत

(उच्चता) दी है ताकि वे एक दूसरे से काम लें। और तेरे रब की रहमत इससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं। और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीके के हो जाएंगे तो जो लोग रहमान का इंकार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की बना देते और जीने भी जिन पर वे चढ़ते हैं। और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिन पर वे तकिया लगाकर बैठते हैं। और सोने के भी, और ये चीजें तो सिर्फ दुनिया की ज़िंदगी का सामान हैं और आख़िरत तेरे रब के पास मुत्तक़ियों (ईश-परायण लोगों) के लिए है। (31-35)

पैग़म्बरे इस्लाम जब मक्का में जाहिर हुए तो उस वक्त वे लोगों को एक मामूली इंसान नजर आते थे। लोगों ने कहा कि ख़ुदा को अगर अपना कोई नुमाइंदा हमारी हिदायत के लिए भेजना था तो उसने अरब की मर्कजी बस्तियों (मक्का और तायफ) की किसी अजीम शख़्सियत को इसके लिए क्यों नहीं चुना। मगर यह उनकी नजर की कोताही थी। इंसान सिर्फ हाल (वर्तमान) को देख पाता है जबकि पैग़म्बरे इस्लाम की अज्मत को समझने के लिए मुस्तकबिल (भविष्य) को देखने वाली नजर दरकार थी। चूंकि लोगों को इस किस्म की दूरबीं नजर हासिल न थी, वे पैग़म्बरे इस्लाम की अज्मत को समझने में नाकाम रहे।

पैग़म्बरे इस्लाम को कम समझने की वजह यह थी कि आपकी जिंदगी में माद्दी चीजों की रौनक लोगों को दिखाई न देती थी मगर इन माद्दी चीजों की ख़ुदा की नजर में कोई अहमियत नहीं। हकीकत यह है कि ये चीजें ख़ुदा की नजर में इतनी ग़ैर अहम हैं कि वह चाहे तो लोगों को सोने चांदी का ढेर दे दे। मगर ख़ुदा ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि लोग इन्हीं चीजों में अटक कर रह जाएंगे। वे इससे आगे बढ़कर हकीकत को न पा सकेंगे।

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾ وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾ وَلَن يَنفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾

और जो शख़्स रहमान की नसीहत से एराज (उपेक्षा) करता है तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह उसका साथी बन जाता है और वे उन्हें राहे हक (सन्मार्ग) से रोकते रहते हैं। और ये लोग समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं। यहां तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश मेरे और तेरे दर्मियान मश्रिक और मग़्रिब की दूरी होती। पस क्या ही बुरा साथी था। और जबकि तुम जुल्म कर चुके तो आज यह बात तुम्हें कुछ भी फायदा नहीं देगी कि तुम अजाब में एक दूसरे के शरीक हो। (36-39)

नसीहत से एराज करना यह है कि आदमी हकीकत का एतराफ न करे। ख़ुदाई हकीकत उसके सामने ऐसे दलाइल के साथ आए जिसका वह इंकार न कर सकता हो मगर वह अपनी मस्लेहतों (स्वार्थों) के तहफ़्फ़ुज की ख़ातिर उसे नजरअंदाज कर दे।

ऐसा शख़्स अपने मौकिफ को दुरुस्त साबित करने के लिए उसके ख़िलाफ झूठी बातें करता है। यही वह वक्त है जबकि शैतान को यह मौका मिल जाता है कि वह उसके ऊपर मुसल्लत हो जाए, वह उसकी अक्ल को ग़लत रुख़ पर दौड़ाने लगे। फर्जी तौजीहात में मशग़ूल करके शैतान उसे यकीन दिलाता रहता है कि तुम हक पर हो। यह फरेब सिर्फ उस वक्त टूटता है जबकि आदमी की मौत आती है और वह ख़ुदा के सामने आख़िरी हिसाब के लिए खड़ा कर दिया जाता है।

दुनिया में आदमी का हाल यह है कि वह उसे अपना दोस्त और साथी बना लेता है जो उसके झूठ की ताईद करे। मगर आख़िरत में वह ऐसे साथियों पर लानत करेगा। वह चाहेगा कि वे उससे इतना दूर हो जाएं कि वह न उनकी शक्ल देखे और न उनकी आवाज सुने।

أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَن كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾ فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿٤١﴾ أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾ وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

पस क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को राह दिखाओगे और उन्हें जो खुली हुई गुमराही में हैं। पस अगर हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं। या तुम्हें दिखा देंगे वह चीज जिसका हमने उनसे वादा किया है। पस हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। पस तुम उसे मजबूती से थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। बेशक तुम एक सीधे रास्ते पर हो। और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए नसीहत है। और अनकरीब तुमसे पूछ होगी। और जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा है उनसे पूछ लो कि क्या हमने रहमान से सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) ठहराए थे कि उनकी इबादत की जाए। (40-45)

आंख वाला अपनी आंख को बंद कर ले तो उसे कुछ दिखाई नहीं देगा। कान वाला अपने कान को बंद कर ले तो उसे कुछ सुनाई नहीं देगा। इसी तरह जो शख़्स अपनी अक्ल को इस्तेमाल न करे, वह अक्ल को मुअत्तल करके अपनी ख़्वाहिश के रुख़ पर चलने लगे तो ऐसे शख़्स को समझाना बुझाना बिल्कुल बेकार होता है। समझने का काम अक्ल के जरिए

होता है और अपनी अक्ल के ऊपर उसने अपनी ख़्वाहिशात का पर्दा डाल रखा है। ताहम मदऊ (संबोधित पक्ष) का रवैया चाहे कुछ भी हो, दाओी (आह्वानकर्ता) को अपना दावती काम हर हाल में जारी रखना है, यहां तक कि वह इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के मरहले तक पहुंच जाए।

हक का दाओी अगरचे एक इंसान होता है मगर हक का मामला ख़ुदा का मामला है। आदमी हक के दाओी का इंकार करके समझता है कि वह हक की जद से बच गया। हालांकि ऐन उसी वक्त वह ख़ुदा की जद में आ जाता है। आदमी अगर इस राज को जाने तो वह हक के दाओी को नजरअंदाज करते हुए कांप उठेगा। क्योंकि वह जानेगा कि हक के दाओी को नजरअंदाज करना ख़ुद हक को नजरअंदाज करना है। और हक को नजरअंदाज करना ख़ुदा को नजरअंदाज करना।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيهِم مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿٥٠﴾

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं ख़ुदावंद आलम का रसूल हूं। पस जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उस पर हंसने लगे। और हम उन्हें जो निशानियां दिखाते थे वह पहली से बढ़कर होती थीं। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा ताकि वे रुजूअ करें। और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर, हमारे लिए अपने रब से दुआ करो, उस अहद (वचन) की बिना पर जो उसने तुमसे किया है, हम जरूर राह पर आ जाएंगे। फिर जब हमने वह अजाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया। (46-50)

हजरत मूसा ने फिरऔन के सामने तौहीद की दावत पेश की और असा और यदेबेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा दिखाया। उसे देखकर फिरऔन और उसके दरबारी हंसने लगे। इसकी वजह यह थी कि उन्होंने हजरत मूसा को उनकी दावत में नहीं देखा बल्कि उनकी शख़्सियत में देखा। उन्हें नजर आया कि मूसा की शख़्सियत बजाहिर उनकी अपनी शख़्सियत से कम है। इसी तरह मोजिजे के मुतअल्लिक उन्होंने ख़्याल किया कि यह महज जादू है, और ऐसा जादू मुल्क के दूसरे जादूगर भी दिखा सकते हैं।

हक की दावत के सिलसिले में हमेशा यही होता है। लोग दाओी की शख़्सियत को देखकर दावत को रद्द कर देते हैं। वे निशानियों को आम वाकेयात पर कयास करके उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

फिरऔन और उसके साथियों ने जब हजरत मूसा का इंकार किया तो अल्लाह तआला ने उन पर बहुत से तंबीही अजाब भेजे ताकि वे दुबारा रुजूअ करें। इन तंबीही अजाबों का जिक्र सूरह आराफ (133-135) में मौजूद है। ये तमाम अजाब हजरत मूसा की दुआ पर आए और हजरत मूसा की दुआ पर ख़त्म हुए। यह एक मजीद सबब था कि उनके अंदर रुजूअ की कैफियत पैदा हो। मगर वे रुजूअ न हुए। हकीकत यह है कि जो लोग दलील से न मानें वे तंबीह से भी नहीं मानते, इल्ला यह कि आख़िरत का न लौटने वाला अजाब उन्हें आख़िरी तौर पर अपने घेरे में ले ले।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا آسَفُونَا انتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

और फिरऔन ने अपनी कौम के दर्मियान पुकार कर कहा कि ऐ मेरी कौम क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं। बल्कि मैं बेहतर हूं उस शख़्स से जो कि हकीर (तुच्छ) है। और साफ बोल नहीं सकता। फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े या फरिश्ते उसके साथ परा बांध कर (पार्श्ववर्ती होकर) आते। पस उसने अपनी कौम को बेअक्ल कर दिया। फिर उन्होंने उसकी बात मान ली। ये नाफरमान किस्म के लोग थे। फिर जब उन्होंने हमें गुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया। और हमने उन सबको ग़र्क कर दिया। फिर हमनें उन्हें माजी की दास्तान बना दिया और दूसरों के लिए एक नमूनए इबरत (सीख) । (51-56)

हक का इंकार करने वालों ने हमेशा हक के दाओी की मामूली हैसियत को देखकर हक का इंकार किया है। मिस्र में फिरऔन की हैसियत यह थी कि वह मुल्क का हुक्मरां था। दरियाए नील से निकली हुई नहरें उसके हुक्म से जारी थीं। इज्जत के तमाम सरोसामान उसके गिर्द जमा थे। इसके मुकाबले में हजरत मूसा बजाहिर एक मामूली इंसान दिखाई देते थे। इसी फर्क को पेश करके फिरऔन ने अपनी कौम को बहकाया। हजरत मूसा का इंकार करने में कौम उसके साथ हो गई।

बजाहिर इसी किस्म के दलाइल की बुनियाद पर फिरऔन की कौम ने फिरऔन का साथ दिया। मगर हकीकत यह है कि इसकी वजह कौम की अपनी कमजोरी थी न कि फिरऔन के दलाइल की मजबूती। उस वक्त हजरत मूसा का साथ देना अपनी जिंदगी के बने बनाए

नक़्शे को तोड़ना था। और बहुत कम आदमी ऐसे होते हैं जो अपने बने हुए नक़्शे को तोड़कर हक का साथ देने की जुरअत करें। चुनांचे फिरऔन पर जब इंकारे हक के नतीजे में ख़ुदा का अज़ाब आया तो उसकी कौम भी उसके साथ अज़ाबे इलाही की ज़द में आ गई।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَقَالُوٓا ءَأٰلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنكُم مَّلٰٓئِكَةً فِى الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هٰذَا صِرٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

और जब इब्ने मरयम की मिसाल दी गई तो तुम्हारी कौम के लोग उस पर चिल्ला उठे। और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह। यह मिसाल वे तुमसे सिर्फ झगड़ने के लिए बयान करते हैं। बल्कि ये लोग झगड़ालू हैं। ईसा तो बस हमारा एक बंदा था जिस पर हमने फ़ज़्ल फरमाया और उसे बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बना दिया। और अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फरिश्ते बना दें जो ज़मीन में तुम्हारे जानशीन (उत्तराधिकारी) हों। और बेशक ईसा कियामत का एक निशान हैं, तो तुम इसमें शक न करो और मेरी पैरवी करो। यही सीधा रास्ता है। और शैतान तुम्हें इससे रोकने न पाए। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (57-62)

मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि आदमी हर बात का उल्टा मफहूम (भावार्थ) निकाल सके। मसलन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फरमाया : 'अल्लाह के सिवा जिसकी परस्तिश की जाए उसमें कोई ख़ैर नहीं' इसे सुनकर मुख़ालिफीन ने कहा कि ईसाई लोग मसीह को पूजते हैं फिर क्या मसीह में भी कोई ख़ैर नहीं। ज़ाहिर है कि यह महज़ एक शोशा था। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बात फरमाई थी वह आबिद (पूजक) की निस्बत से थी न कि माबूद (पूज्य) की निस्बत से। और अगर उसे माबूद की निस्बत से माना जाए तब भी वाजेह तौर पर इससे मुराद वे ग़ैर माबूद थे जो अपने माबूद बनाए जाने पर राज़ी हों। आदमी अगर बात को उसके सही रुख़ से न ले तो हर बात को वह उल्टे मअना पहना सकता है, चाहे वह कितनी ही दुरुस्त बात क्यों न हो।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शख़्सियत एक एतबार से फरिश्तों की मुशाबह थी। इस पर आंजनाब को बहुत से लोगों ने माबूद बना लिया। मगर हज़रत मसीह की मलकूती तख़्लीक (फरिश्तों जैसी उत्पत्ति) ख़ुदा की कुदरत की मिसाल थी न कि ख़ुद हज़रत मसीह की ज़ाती कुदरत की मिसाल। हकीकत यह है कि अल्लाह के लिए इस किस्म की तख़्लीक कुछ

भी मुश्किल नहीं। वह चाहे तो ज़मीन की तमाम आबादी को फरिश्तों की आबादी बना दे। फिर भी ये फरिश्ते, फरिश्ते ही रहेंगे, वे माबूद नहीं हो जाएंगे।

हज़रत मसीह को यह मोजिज़ा दिया गया कि वह मुर्दों को ज़िंदा कर देते थे। मिट्टी के पुतले में फूंक मार कर उसे जानदार बना देते थे। यह दरअस्ल एक ख़ुदाई निशानी थी जो ज़िंदगी बाद मौत के इम्कान को बताने के लिए ज़ाहिर की गई थी। मगर लोगों ने इससे अस्ल सबक तो नहीं लिया। अलबत्ता हज़रत मसीह को फौकुल बशर (अलौकिक व्यक्ति) समझ कर उन्हें पूजने लगे। इसी तरह ख़ुदाई निशानियां हमेशा मुख़्तलिफ शक्लों में ज़ाहिर होती हैं। उन्हें अगर निशानी समझा जाए तो उनसे ज़बरदस्त नसीहत मिलती है। और अगर उन्हें निशानी के बजाए कुछ और समझ लिया जाए तो वह आदमी को सिर्फ गुमराही में डालने का सबब बन जाएंगी।

शैतान की हमेशा यह कोशिश रहती है कि वह ख़ुदाई निशानियों से आदमी को सबक न लेने दे। यही वह मकाम है जहां यह फैसला होने वाला है कि शैतान को आदमी के ऊपर कामयाबी हासिल हुई या आदमी को शैतान के ऊपर।

وَلَمَّا جَآءَ عِيسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم بَعْضَ الَّذِى تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّى وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هٰذَا صِرٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنۢ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝

और जब ईसा खुली निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (तत्वदर्शिता) लेकर आया हूं और ताकि मैं तुम पर वाजेह कर दूं कुछ बातें जिनमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। तो तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तेलाफ किया। पस तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया, एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से। (63-65)

यहां हिक्मत से मुराद दीन की रूह (मूल भावना) है और सिराते मुस्तकीम से मुराद वही चीज़ है जिसे आयत में ख़ुदा का ख़ौफ, उसकी इबादत और रसूल की इताअत कहा गया है। यही अस्ल दीन है। यहूद ने बाद को यह किया कि उन्होंने रूहे दीन खो दी और दीन के बुनियादी अहकाम में मूशिगाफियों (कुतर्कों) के ज़रिए बेशुमार नए-नए मसाइल पैदा किए। ये मसाइल आज भी यहूद की किताबों में मौजूद हैं।

इन्हीं ख़ुदसाख़्ता इज़ाफों की वजह से उनके अंदर इख़्तेलाफी फिरके बने। किसी ने एक इख़्तेलाफी मसले पर ज़ोर दिया, किसी ने दूसरे इख़्तेलाफी मसले पर। इस तरह उनके यहां

एक दीन कई दीन बन गया। हजरत मसीह इसलिए आए कि वे यहूद को बताएं कि दीन में अस्ल अहमियत रूह (मूल भावना) की है न कि जवाहिर (जाहिरी चीजों) की। और यह कि आदमी को नजात जिस चीज पर मिलेगी वह उस दीन की पैरवी पर मिलेगी जो ख़ुदा ने भेजा है न कि उस दीन पर जो तुम लोगों ने बतौर ख़ुद वजअ कर रखा है।

हजरत मसीह ने बताया कि अस्ल दीन यह है कि तुम अल्लाह से डरो। सिर्फ एक अल्लाह के इबादतगुजार बनो। जिंदगी के मामलात में रसूल के नमूने की पैरवी करो। उसके सिवा तुमने अपनी बहसों और मूशिगाफियों से जो बेशुमार मसाइल बना रखे हैं वे तुम्हारे अपने इजाफे हैं। इन इजाफों को छोड़कर अस्ल दीन पर कायम हो जाओ। हजरत मसीह की ये बातें आज भी इंजीलों में मौजूद हैं।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾ يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

ये लोग बस कियामत का इंतिजार कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो। तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाए डरने वालों के। ऐ मेरे बंदो आज तुम पर न कोई ख़ौफ है और न तुम ग़मगीन होगे। जो लोग ईमान लाए और फरमांबरदार रहे। जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां, तुम शाद (हर्षित) किए जाओगे। उनके सामने सोने की रिकाबियां और प्याले पेश किए जाएंगे। और वहां वे चीजें होंगी जिन्हें जी चाहेगा और जिनसे आंखों को लज्जत होगी। और तुम यहां हमेशा रहोगे। और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए इसमें बहुत से मेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे। (66-73)

इंसान आजाद नहीं है। उसे बहरहाल हकीकत के आगे झुकना है। अगर वह दाओ की दलील के आगे नहीं झुकता तो उसे ख़ुदाई ताकत के आगे झुकना पड़ेगा। मगर ख़ुदाई ताकत फैसले के लिए जाहिर होती है। इसलिए उस वक्त का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

दुनिया में आदमी जब हक के ख़िलाफ रवैया इख़्तियार करता है तो उसे बहुत से दोस्त मिल जाते हैं जो उसका साथ देते हैं। आदमी इन दोस्तों के बल पर ढीठ बनता चला जाता है। मगर ये सारे दोस्त कियामत में उसका साथ छोड़ देंगे। कियामत में सिर्फ वह दोस्ती बाकी रहेगी जो अल्लाह के ख़ौफ की बुनियाद पर कायम हुई हो।

दुनिया में हकपरस्ती की जिंदगी ख़तरात में घिरी हुई होती है। मगर आख़िरत में उसका बदला इस शानदार सूरत में मिलेगा कि आदमी वहां हर किस्म के अंदेशे और तकलीफ से हमेशा के लिए नजात हासिल कर लेगा। इस ख़ुदाई वादे पर जो लोग यकीन करें वही मौजूदा दुनिया में हक पर कायम रह सकेंगे। ख़ुदा आख़िरत में उन्हें वह सब कुछ मजीद इजाफे के साथ दे देगा जो उन्होंने दुनिया में ख़ुदा की ख़ातिर खोया था।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّاكِثُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنَاكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾ أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُم ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोजख़ के अजाब में रहेंगे। वह उनसे हल्का न किया जाएगा और वे उसमें मायूस पड़े रहेंगे। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही जालिम थे। और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक, तुम्हारा रब हमारा ख़ात्मा ही कर दे। फरिश्ता कहेगा तुम्हें इसी तरह पड़े रहना है। हम तुम्हारे पास हक (सत्य) लेकर आए मगर तुम में से अक्सर हक से बेजार रहे। क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे। क्या उनका गुमान है कि हम उनके राजों को और उनके मश्विरों को नहीं सुन रहे हैं। हां, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं। (74-80)

उम्मीद हमेशा तकलीफ के एहसास को कम कर देती है। आदमी किसी तकलीफ में मुब्तिला हो और इसी के साथ उसे यह उम्मीद हो कि यह तकलीफ एक रोज ख़त्म हो जाएगी तो आदमी के अंदर उसे सहने की ताकत पैदा हो जाती है। मगर जहन्नम की तकलीफ वह तकलीफ है जिससे निकलने की कोई उम्मीद इंसान के लिए न होगी। जहन्नम में फरिश्तों को मदद के लिए पुकारना जहन्नम वालों की बेबसी का बेताबाना इज्हार होगा। वर्ना पुकारने वाला ख़ुद जानता होगा कि ख़ुदा का फैसला आख़िरी तौर पर हो चुका है। अब वह किसी तरह टलने वाला नहीं।

जहन्नम में किसी का दाख़िल होना सरासर अपनी कोताही का नतीजा होगा। इंसान को अल्लाह तआला ने आला दर्जे की समझ दी। उसके सामने हक की राहें खोलीं। मगर इंसान ने जानते बूझते हक को नजरअंदाज किया। उसकी सरकशी यहां तक पहुंची कि वह हक के दाओी को मिटाने और बर्बाद करने के दरपे हो गया। ऐसी हालत में उसका अंजाम इसके सिवा और क्या हो सकता था कि उसे दाइमी तौर पर अजाब में डाल दिया जाए।

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾ سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

कहो कि अगर रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला हूं। आसमानों और जमीन का ख़ुदावंद, अर्श का मालिक। वह उन बातों से पाक है जिसे लोग बयान करते हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बहस करें और खेलें यहां तक कि वे उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (81-83)

'अगर ख़ुदा के औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करूं' यह जुमला बताता है कि पैग़म्बर जिस अकीदे का एलान कर रहा है वह उसी को ऐन हकीकत समझता है। वह कौमी तक्लीद और गिरोही तअस्सुब की जमीन पर नहीं खड़ा हुआ है बल्कि दलील की जबान पर खड़ा हुआ है। वह इस अकीदे का दाओी इसलिए है कि तमाम हकाइक इसकी सदाकत (सच्चाई) की ताईद करते हैं। इससे अंदाजा होता है कि दाओी का मामला शुऊरे हकीकत का मामला होता है न कि कौमी तक्लीद (अनुसरण) का मामला।

ख़ुदा का तख़्लीकी कारख़ाना जो जमीन व आसमान की सूरत में फैला हुआ है वह बताता है कि उसका ख़ुदा सिर्फ एक ख़ुदा है। कायनात अपने वसीअ (विस्तृत) निजाम के साथ इससे इंकार करती है कि उसका ख़ुदा एक से ज्यादा हो सकता है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

और वही है जो आसमान में ख़ुदावंद है और वही जमीन में ख़ुदावंद है और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, इल्म वाला है। और बड़ी बाबरकत है वह जात जिसकी बादशाही आसमानों और जमीन में है और जो कुछ उनके दर्मियान है। और उसी के पास कियामत की ख़बर है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (84-85)

जमीन व आसमान निहायत हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ मुसलसल अमल कर रहे हैं। उनके अंदर कामिल तौर पर वाहिद (एकीय) हिक्मत और वाहिद इल्म पाया जाता है। यह इस बात का सुबूत है कि यहां एक ही ख़ुदा है जो जमीन व आसमान दोनों का निजाम तंहा चला रहा है।

कायनात बयकवक्त ख़ुदा की बेपनाह कुदरत का भी तआरुफ कराती है और इसी के साथ ख़ुदा की बेपनाह रहमत का भी। इसका तकाजा है कि आदमी सबसे ज्यादा ख़ुदा से डरे, वह सबसे ज्यादा उसी से उम्मीद रखे। जो लोग दुनिया में इस शुऊर और इस किरदार का सुबूत दें वही वे लोग हैं कि जब वे ख़ुदा के यहां पहुंचेंगे तो ख़ुदा उन्हें अपनी बेपायां रहमतों से नवाजेगा।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾ وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे सिफारिश का इख़्तियार नहीं रखते, मगर वे जो हक की गवाही देंगे और वे जानते होंगे। और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां भटक जाते हैं। और उसे रसूल के इस कहने की ख़बर है कि ऐ मेरे रब, ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। पस उनसे दरगुजर करो (रुख़ फेर लो) और कहो कि सलाम है तुम्हें, अनकरीब उन्हें मालूम हो जाएगा। (86-89)

कियामत में पैग़म्बर और दाओयाने हक जो शफाअत करेंगे वह हकीकतन शफाअत नहीं है बल्कि शहादत है। यानी ऐसी बात की गवाही देना जिसे आदमी जाती तौर पर जानता हो। आख़िरत में जब लोगों का मुकदमा पेश होगा तो सारे इल्म के बावजूद अल्लाह मजीद ताईद के तौर पर उन लोगों को खड़ा करेगा जो कौमों के हमअस्र (समकालीन) थे। उन्होंने उनके सामने हक का पैग़ाम पेश किया। फिर किसी ने माना और किसी ने नहीं माना। किसी ने हक का साथ दिया और कोई हक का मुख़ालिफ बनकर खड़ा हो गया। यही तजर्बा जो इन सालिहीन (नेक लोगों) पर बराहेरास्त गुजरा उसे वे ख़ुदा के सामने पेश करेंगे। यह ऐसा ही होगा जैसे कि कोई गवाह अदालत में अपने मुशाहिदे की बुनियाद पर एक सच्चा बयान दे। उसके सिवा किसी को कियामत में यह इख़्तियार हासिल न होगा कि वह किसी मुजरिम का शाफेअ (सिफारिशी) बनकर खड़ा हो और उसके बारे में उस ख़ुदाई फैसले को बदल दे जो अजरुए वाकया उसके बारे में होने वाला था। ख़ुदा इससे बहुत बुलन्द है कि उसके हुजूर कोई शख़्स ऐसा करने की कोशिश करे।

हक की दावत का काम सरासर नसीहत का काम है। आख़िरी मरहले में जबकि दाओी

पर यह वाजेह हो जाए कि लोग किसी तरह मानने वाले नहीं हैं उस वक्त भी दाअी लोगों के लिए ख़ुदा से दुआ करता है। लोगों की ईजारसानी (उत्पीड़न) पर सब्र करते हुए वह लोगों का ख़ैरख़्वाह बना रहता है।

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۚ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ

आयतें-59 **सूरह-44. अद-दुख़ान** रुकूअ-3

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। कसम है इस वाजेह (सुस्पष्ट) किताब की। हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे। इस रात में हर हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला मामला तै किया जाता है, हमारे हुक्म से। बेशक हम थे भेजने वाले। तेरे रब की रहमत से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है। आसमानों और जमीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है, अगर तुम यकीन करने वाले हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वही जिंदा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब। (1-8)

कुरआन का किताबे मुबीन (सुस्पष्ट ग्रंथ) होना ख़ुद इस बात की दलील है कि वह ख़ुदा की किताब है। और जब वह ख़ुदा की किताब है तो उसकी ख़बरें और पेशीनगोइयां भी कतई हैं, उनके बारे में शक की कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन के नुज़ूल का आग़ाज एक ख़ास रात को हुआ। यह रात अहम ख़ुदाई फैसलों के लिए मुकर्रर है। कुरआन का नुज़ूल कोई सादा वाक्या न था। यह एक नई तारीख़ (इतिहास) के ज़ुहूर का फैसला था। यही वजह है कि इसे फैसले की रात में नाज़िल किया गया। कुरआन अव्वलन हक का एलान था। वह शिर्क को बातिल और तौहीद को बरहक बताने के लिए आया। फिर वह इसी बुनियाद पर कौमों के दर्मियान फर्क करने वाला था। चुनांचे यह फर्क अमलन किया गया। यहां तक कि तारीख़ (इतिहास) में पहली बार शिर्क का दौर ख़त्म होकर तौहीद का दौर शुरू हो गया।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَاۗىِٕدُوْنَ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ

बल्कि वे शक में पड़े हुए खेल रहे हैं। पस इंतिजार करो उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धुवें के साथ जाहिर होगा। वह लोगों को घेर लेगा। यह एक दर्दनाक अजाब है। ऐ हमारे रब, हम पर से अजाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं। उनके लिए नसीहत कहां, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला। फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है। हम कुछ वक्त के लिए अजाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़ उस दिन हम पूरा बदला लेंगे। (9-16)

कुरआन के ये मुख़ातबीन जिस मामले में शक में पड़े हुए थे वह ख़ुदा के वुजूद का मामला न था। बल्कि ख़ुदा की तौहीद का मामला था। वह रिवायती तौर पर ख़ुदा को मानते हुए अमलन अपने अकाबिर (महापुरुषों) के दीन पर कायम थे।

कुरआन ने इन अकाबिर को बेबुनियाद साबित किया। मगर वे उसे मानने के लिए तैयार न हुए। एक तरफ वे अपने आपको बेदलील पा रहे थे। दूसरी तरफ अपने अकाबिर की अज़्मत को अपने ज़ेहन से निकालना भी उन्हें नामुमकिन नजर आता था। इस दोतरफ़ा तकाज़ों ने उन्हें शक में मुब्तिला कर दिया। ख़ुदा का दाअी उन्हें इससे कम नजर आया कि उसके कहने से वे अपने मफरूज़ा (मान्य) अकाबिर को छोड़ दें।

जो लोग नसीहत के जरिए हक को न मानें वे अपने आपको इस ख़तरे में डाल रहे हैं कि उन्हें अजाब के जरिए से उसे मानना पड़े। उस वक्त वे एतराफ करेंगे। मगर उस वक्त का एतराफ करना उनके कुछ काम न आएगा।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَي اللّٰهِ ۚ اِنِّىْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ وَاِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ

और उनसे पहले हमने फ़िरऔन की कौम को आजमाया। और उनके पास एक मुअज़्ज़ज़ (सम्मानीय) रसूल आया कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो। मैं तुम्हारे लिए एक

मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। और यह कि अल्लाह के मुकाबले में सरकशी न करो। मैं तुम्हारे सामने एक वाजेह दलील पेश करता हूं। और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूं इस बात से कि तुम मुझे संगसार (पत्थरों से मार डालना) करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझसे अलग रहो। (18-21)

हक की दावत (आह्वान) का उठना गोया ख़ुदा की ताक्त का दलील के रूप में जाहिर होना है। इस तरह ख़ुदा ग़ैब (अप्रकट) में रहकर इंसान की सतह पर अपना एलान कराता है। इस बिना पर हक की दावत उसके मुख़ातबीन के लिए आजमाइश बन जाती है। हकीक्त शनास लोग उसे पहचान कर उसके आगे झुक जाते हैं। और जो जाहिरबीं हैं वे उसे ग़ैर अहम समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

मगर हक की दावत को ठुकराने के बाद आदमी उसके अंजाम से बच नहीं सकता। पैग़म्बर के जमाने में इस बुरे अंजाम का आग़ाज मौजूदा जिंदगी ही में हो जाता है, जैसा कि फिरऔने मिस्र का हुआ। और पैग़म्बर के बाद ऐसे लोगों का अंजाम मौत के बाद सामने आएगा। मजीद यह कि पैग़म्बर को ख़ुदा की ख़ुसूसी नुसरत (मदद) हासिल होती है। किसी के लिए मुमकिन नहीं होता कि वह उसे हलाक कर सके।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾ كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ﴿٢٩﴾

पस मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग मुजरिम हैं। तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा। और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है। उन्होंने कितने ही बाग़ और चशमे (स्रोत) और खेतियां और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिनमें वे ख़ुश रहते थे सब छोड़ दिए। इसी तरह हुआ और हमने दूसरी कौम को उनका मालिक बना दिया। पस न उन पर आसमान रोया और न जमीन, और न उन्हें मोहलत दी गई। (22-29)

लम्बी मुद्दत तक हजरत मूसा की तब्लीग़ी कोशिशों के बाद कौमे फिरऔन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) हो गया। अब यह साबित हो गया कि वे मुजरिम हैं। उस वक्त हजरत मूसा को हुक्म हुआ कि वह अपनी कौम (बनी इस्राईल) के साथ मिस्र से निकल कर बाहर चले जाएं। हजरत मूसा रवाना हुए यहां तक वे दरिया के किनारे पहुंच गए। उस वक्त दरिया का पानी हट गया और आपके लिए पार होने का रास्ता निकल आया।

फिरऔन अपने लश्कर के साथ हजरत मूसा और बनी इस्राईल का पीछा करता हुआ आ रहा था। उसने जब दरिया में रास्ता बनते हुए देखा तो उसने समझा कि जिस तरह मूसा पार हो गए हैं वह भी उसी तरह पार हो सकता है। मगर दरिया का रास्ता सादा मअनों में सिर्फ रास्ता न था बल्कि वह ख़ुदा का हुक्म था और ख़ुदा का हुक्म उस वक्त मूसा के लिए नजात का था और फिरऔन के लिए हलाकत का। चुनांचे जब फिरऔन और उसका लश्कर दरिया में दाख़िल हुए तो दोनों तरफ का पानी बराबर हो गया। फिरऔन अपने लश्कर के साथ उसमें ग़र्क़ हो गया।

दुनिया की नेमतें जिसे मिलती हैं अक्सर वह उन्हें अपनी जाती चीज समझ लेता है हालांकि किसी के लिए भी वे जाती नहीं हैं। ख़ुदा जब चाहे किसी को दे और जब चाहे उससे छीन कर उसे दूसरे के हवाले कर दे।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَآتَيْنَاهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُبِينٌ ﴿٣٣﴾

और हमने बनी इस्राईल को जिल्लत वाले अजाब से नजात दी। यानी फिरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था। और हमने उन्हें अपने इल्म से दुनिया वालों पर तरजीह (वरीयता) दी। और हमने उन्हें ऐसी निशानियां दीं जिनमें खुला हुआ इनाम था। (30-33)

दुनिया में एक कौम का गिरना और दूसरी कौम का उभरना इत्तिफ़ाक़ी तौर पर नहीं होता। और न इसका मतलब यह है कि एक जालिम कौम अपनी जालिमाना कार्रवाइयों से दूसरी कौम पर ग़ालिब आ गई। यह तमामतर ख़ुदा के फैसले के मुताबिक होता है। यह ख़ुदा है जो अपने फैसले के तहत एक के लिए मग़लूबियत (पराभाव) का और दूसरे के लिए ग़लबे (वर्चस्व) का फैसला करता है। और वह जो कुछ फैसला करता है अपने इल्म की बिना पर करता है न कि अललटप तौर पर।

इल्मे इलाही के मुताबिक फैसला होने का मतलब दूसरे लफ्जों में यह है कि जो कुछ होता है इस्तहकाक (पात्रता) की बुनियाद पर होता है। ख़ुदा अपने कुल्ली इल्म के तहत कौमों को देखता है। फिर वह जिसे बाइस्तहकाक पाता है उसके हक में ग़लबे का फैसला करता है और जिसे बेइस्तहकाक देखता है उसे मग़लूब (परास्त) व मअजूल (निलंबित) कर देता है।

अक्वाम (कौमों) की जिंदगी में ऐसी निशानियां जाहिर होती हैं जो ये बताती हैं कि उनके साथ जो फैसला हुआ है वह ख़ुदा की तरफ से हुआ है। अगर आदमी की बसीरत (सूझबूझ) जिंदा हो तो वह उन निशानियों में उन असबाब की झलक पा लेगा जिसके तहत ख़ुदा ने कौमों के हक में अपना फैसला सादिर फरमाया है।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ۝ فَأْتُوا
بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ
إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝

ये लोग कहते हैं, बस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे। अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को। क्या ये बेहतर हैं या तुब्बअ की कौम और जो उनसे पहले थे। हमने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक वे नाफरमान थे। (34-37)

हर दौर में इंसान की गुमराही की जड़ यह रही है कि उसने मौत के बाद जिंदगी में अपना यकीन खो दिया। कुछ लोगों की बेयकीनी का इज्हार उनकी जबान से भी हो जाता है, और कुछ लोग जबान से नहीं कहते। मगर उनका दिल इस यकीन से ख़ाली होता है कि उन्हें मर कर दुबारा उठना है और अल्लाह के सामने अपने आमाल का हिसाब देना है।

इस ग़लतफ़हमी का नफ्सियाती सबब अक्सर यह होता है कि दुनिया में अपनी मजबूत हैसियत को देखकर आदमी गुमान कर लेता है कि वह कभी बेहैसियत होने वाला नहीं। हालांकि पिछली कौमों के वाकेयात इस फरेब की तरदीद करने के लिए काफी हैं।

तुब्बअ कदीम यमन के हुमैर कबीले के बादशाहों का लकब था। 115 कब्ल मसीह ईसा पूर्व से 300 कब्ल मसीह तक उन्हें उरूज हासिल रहा। कदीम अरब में उनकी अज्मत का बड़ा चर्चा था। कुरआन के इब्तिदाई मुख़ातबीन (कुरैश) के लिए कौम तुब्बअ का उभरना और गिरना एक मालूम और मशहूर बात थी। यह उनके लिए इस बात का सुबूत था कि इस दुनिया में मुजाजात (उत्थान-पतन) का कानून जारी है। इसी तरह तमाम लोगों के लिए कोई न कोई 'कौम तुब्बअ' है जो अपने अंजाम से उन्हें सबक दे रही है। मगर इंसान हमेशा यह करता है कि इस तरह के वाकेयात को आदत के मुताबिक होने वाला वाकया समझ लेता है। इसका नतीजा यह होता है कि वह उनसे वह सबक नहीं ले पाता जो उनके अंदर ख़ुदा ने छुपा रखा था।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ۝ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن
مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। इन्हें हमने हक के साथ बनाया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते। बेशक फैसले का दिन उन सबका तैशुदा वक्त है। जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी

रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। हां मगर वह जिस पर अल्लाह रहम फरमाए। बेशक वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (38-42)

जमीन व आसमान के निजाम पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होता है कि उसकी तख़्लीक निहायत बामअना अंदाज में हुई है। पूरी कायनात एक मक्सद के तहत अमल करती है। अगर ऐसा न हो तो इस दुनिया में इंसान के लिए शानदार तमद्दुन (सभ्यता) की तामीर नामुमकिन हो जाए।

आख़िरत का अकीदा इसी कायनाती मअनवियत की तौसीअ (विस्तार) है। जो कायनात इतने बामअना (सार्थक) अंदाज में बनाई गई हो। नामुमकिन है कि वह सरासर बेमअना (निरर्थक) तौर पर ख़त्म हो जाए। कायनात की मौजूदा मअनवियत इस बात का करीना है कि वह एक बामअना और बामक्सद अंजाम पर ख़त्म होने वाली है। आख़िरत इसी बामअना और बामक्सद अंजाम का दूसरा नाम है।

दुनिया का मौजूदा मरहला आजमाइश का मरहला है, इसलिए आज दुनिया की मअनवियत (सार्थकता) में हर आदमी अपना हिस्सा पा रहा है। मगर जब आख़िरत आएगी तो उस वक्त दुनिया की मअनवियत में सिर्फ उन लोगों को हिस्सा मिलेगा जो ख़ुदा के नजदीक फिलवाकेअ उसके मुस्तहिक करार पाएं।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ
عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ۝

जक्कूम का दरख़्त गुनाहगार का खाना होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेट में खौलेगा जिस तरह गर्म पानी खौलता है। उसे पकड़ो और उसे घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ। फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अजाब उंडेल दो। चख इसे, तू बड़ा मुअज्जज, मुकर्रम है। यह वही चीज है जिसमें तुम शक करते थे। (43-50)

यहां और दूसरे मकामात पर जहन्नम की जो तस्वीर कुरआन में पेश की गई है वह हर जिंदा शख़्स को तड़पा देने के लिए काफी है। जो शख़्स भी अपने मुस्तकबिल के बारे में संजीदा हो उसे ये अल्फाज हिलाकर रख देंगे। वह जहन्नमी रास्ते को छोड़कर जन्नती रास्ते की तरफ दौड़ पड़ेगा।

मगर जो लोग हकीकतों के बारे में संजीदा न हों, जो सिर्फ अपनी ख़्वाहिशात को जानते हों और उनकी अपनी ख़्वाहिशात के बाहर हकाइक (यथार्थ) की जो दुनिया है उसके बारे में

वे ग़ौर करने की जरूरत महसूस न करते हों, वे इस ख़बर को सुनेंगे और इसे नजरअंदाज कर देंगे। ऐसे लोगों के लिए ये अल्फाज ऐसे ही हैं जैसे पत्थर पर पानी डाला जाए और वह उसके अंदरून को तर किए बग़ैर बह जाए।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

बेशक ख़ुदा से डरने वाले अम्न की जगह में होंगे, बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में। बारीक रेशम और दबीज रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। यह बात इसी तरह है, और हम उनसे ब्याह देंगे हूरें बड़ी-बड़ी आंखों वाली। वे उसमें तलब करेंगे हर किस्म के मेवे निहायत इत्मीनान से। वे वहां मौत को न चखेंगे मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा लिया। यह तेरे रब के फ़ज़्ल से होगा, यही है बड़ी कामयाबी। (51-57)

इन अल्फाज में इंसान की पसंद की उस दुनिया की तस्वीर है जो उसके ख़्वाबों में बसी हुई है। हर आदमी पसंद की इस दुनिया को पाना चाहता है। मगर मौजूदा दुनिया में वह उसे हासिल नहीं कर पाता। यह ख़्वाबों की दुनिया मजीद इजाफे के साथ उसे जन्नत में हासिल हो जाएगी।

हर किस्म के डर से ख़ाली यह दुनिया उन लोगों को मिलेगी जो दुनिया में अल्लाह से डरे थे। अबदी नेमतों से भरी हुई यह जिंदगी उनका हिस्सा होगी जिन्होंने इसकी ख़ातिर दुनिया की वक्ती नेमतों को कुर्बान किया था। आख़िरत की इस अजीम कामयाबी में वे लोग दाख़िल होंगे जिन्होंने उसे पाने के लिए अपनी दुनिया की कामयाबी को ख़तरे में डालने का हौसला किया था।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

पस हमने इस किताब को तुम्हारी जबान में आसान बना दिया है ताकि लोग नसीहत हासिल करें। पस तुम भी इंतिजार करो, वे भी इंतिजार कर रहे हैं। (58-59)

क़ुरआन बिलाशुबह एक अजीम किताब है। इसी के साथ यह भी एक हक़ीकत है कि वह निहायत आसान किताब है। मगर इसका आसान होना नसीहत के एतबार से है। यानी जो शख़्स इससे हक को जानना चाहे वह इसे अपने लिए निहायत आसान पाएगा। मगर जो

शख़्स तलाशे हक के मामले में संजीदा न हो उसके लिए क़ुरआन में कोई आसानी नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी के संजीदा होने की एक शर्त यह है कि वह 'इंतिजार' की नफ्सियात न रखता हो। यानी हक़ीकत का दलील की सतह पर जाहिर होना ही उसके लिए काफी हो जाए कि वह उसे मान ले। जो शख़्स दलील की सतह पर साबितशुदा हो जाने के बाद उसे न माने वह गोया कि इस बात का इंतिजार कर रहा है कि हक़ीकत खुले रूप में उसके सामने आ जाए। मगर जब हक़ीकत खुले रूप में सामने आती है तो वह मनवाने के लिए नहीं आती बल्कि इसलिए आती है कि एतराफ करने वालों की क़द्रदानी करे और जिन्होंने इससे पहले एतराफ नहीं किया था उन्हें हमेशा के लिए अंधेपन के ग़ार में डाल दे।

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ﴿١﴾ تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٥﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

आयतें-37 **सूरह-45. अल-जासियह** **रुकूअ-4**

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह नाजिल की हुई किताब है। अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ से। बेशक आसमानों और जमीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिए। और तुम्हारे बनाने में और उन हैवानात में जो उसने जमीन में फैला रखे हैं, निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं और रात और दिन के आने जाने में और उस रिज़्क में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे जमीन को जिंदा कर दिया उसके मर जाने के बाद, और हवाओं की गर्दिश में भी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम हक के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है जिस पर वे ईमान लाएंगे। (1-6)

यह कहना कि क़ुरआन अजीज व हकीम ख़ुदा की तरफ से उतरा है, गोया ख़ुद अपनी तरफ से एक ऐसा कतई मेयार देना है जिस पर उसकी सदाकत को जांचा जा सके। ख़ुदाए अजीज की तरफ से उसके उतरने का मतलब यह है कि कोई इस किताब को जेर (अवनत)

न कर सकेगा। क़ुरआन हर हाल में अपने मुख़ालिफ़ीन पर ग़ालिब आकर रहेगा।

यह बात मक्की दौर में कही गई थी। उस वक्त हालात सरासर क़ुरआन के ख़िलाफ थे। मगर बाद की तारीख़ (इतिहास) ने हैरतअंगेज तौर पर इसकी तस्दीक की। क़ुरआन की दावत को तारीख़ की सबसे बड़ी कामयाबी हासिल हुई।

इसी तरह ख़ुदाए हकीम की तरफ से उतरने का तकाजा यह है कि उसके मजामीन (विषय) सबके सब अक्ल व दानिश पर मबनी हों। यह बात भी डेढ़ हजार साल से मुसलसल दुरुस्त साबित होती जा रही है। क़ुरआन दौरे साइंस से पहले उतरा। मगर दौरे साइंस में भी क़ुरआन की कोई बात अक्ल के ख़िलाफ साबित न हो सकी।

इसके अलावा जो कायनात इंसान के चारों तरफ फैली हुई है, उसकी तमाम चीजें क़ुरआन के पैग़ाम की तस्दीक (पुष्टि) बन गई हैं। ताहम यह तस्दीक सिर्फ उन लोगों के लिए तस्दीक बनेगी जिनके अंदर यकीन करने का जेहन हो जो निशानियों की जबान में जाहिर की जाने वाली बात को पाने की इस्तेदाद (सामर्थ्य) रखते हों।

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾ يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾ وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾ مِّن وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُم مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ﴿١١﴾

ख़राबी है हर शख़्स के लिए जो झूठा हो। जो ख़ुदा की आयतों को सुनता है जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकब्बुर (घमंड) के साथ अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं। पस तुम उसे एक दर्दनाक अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज की ख़बर पाता है तो वह उसे मजाक बना लेता है। ऐसे लोगों के लिए जिल्लत का अजाब है। उनके आगे जहन्नम है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम आने वाला नहीं। और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज बनाया। और उनके लिए बड़ा अजाब है। यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का इंकार किया उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अजाब है। (7-11)

हक का एतराफ अक्सर हालात में अपनी बड़ाई को खोने के हममअना होता है। आदमी अपनी बड़ाई को खोना नहीं चाहता इसलिए वह हक का एतराफ भी नहीं करता। मगर हक के आगे न झुकना ख़ुदा के आगे न झुकना है। ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा के यहां सख़्ततरीन अजाब है।

आदमी अगरचे तकब्बुर (घमंड) की बिना पर हक से एराज करता है ताहम अपने

रवैये के जवाज (औचित्य) के लिए वह नजरियाती दलील पेश करता है। मगर इस दलील की हकीकत झूठे अल्फाज से ज्यादा नहीं होती। ऐसा आदमी किसी चीज को ग़लत मफ्हूम देकर उसे शोशा बनाता है। और इस शोशे की बुनियाद पर हक का और उसके दाओ का मजाक उड़ाने लगता है। ऐसे लोग सख़्ततरीन सजा के मुस्तहिक हैं। क्योंकि वे बदअमली पर सरकशी का इजाफा कर रहे हैं। इस सरकशी पर उन्हें जो चीज आमादा करती है वह उनकी दुनियावी हैसियत है। मगर किसी की दुनियावी हैसियत आख़िरत में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। और उसने आसमानों और जमीन की तमाम चीजों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया, सबको अपनी तरफ से। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (12-13)

पानी बजाहिर डुबाने वाली चीज है। मगर अल्लाह तआला ने उसे ऐसे कवानीन (नियमों) का पाबंद बनाया है कि अथाह समुद्रों के ऊपर बड़े-बड़े जहाज एक तरफ से दूसरी तरफ चलते हैं और बहिफ़ाजत अपनी मंजिल पर पहुंच जाते हैं। यही मामला पूरी कायनात का है। कायनात इस तरह बनाई गई है कि वह पूरी तरह इंसान के ताबेअ (अधीन) है। इंसान जिस तरह चाहे उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सकता है। मौजूदा दुनिया की यही ख़ुसूसियत है जिसकी बिना पर यह मुमकिन हुआ है कि यहां इंसान अपने लिए शानदार तमद्दुन (सभ्यता) की तामीर कर सके।

कायनात का मौजूदा ढांचा ही उसका आख़िरी और वाहिद ढांचा नहीं है। वह दूसरे बेशुमार तरीकों से भी बन सकती थी। मगर मुख़्तलिफ इम्कानात में से वही एक इम्कान वाकया बना जो हमारे लिए मुफीद था। यह एक निशानी है जिसमें ग़ौर करने वाले ग़ौर करें तो वे उसमें अपने लिए अजीमुश्शान (अनुपम महान) सबक पा सकते हैं।

قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

ईमान वालों से कहो कि उन लोगों से दरगुजर करें जो ख़ुदा के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह एक कौम को उसकी कमाई का बदला दे। जो शख़्स नेक अमल करेगा तो उसका फायदा उसी के लिए है। और जिस शख़्स ने बुरा किया तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा। फिर तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। (14-15)

जिन लोगों को यह यकीन न हो कि उनके ऊपर ख़ुदाई फैसले का दिन आने वाला है। वे ज़ुल्म करने में जरी होते हैं। वे हक के दाओ को हर मुमकिन तरीके से सताते हैं। उस वक्त दाओ के दिल में इंतिकाम का जज्बा पैदा होता है। मगर दाओ को चाहिए कि वह आख़िर वक्त तक मदऊ से दरगुजर करे। वह अपनी तवज्जोह तमामतर दावत (आह्वान) पर लगाए रहे और लोगों की बदआमालियों पर गिरफ्त के मामले को ख़ुदा के हवाले कर दे।

दाओ की कोशिश की कद्र व कीमत इस एतबार से मुतअय्यन नहीं होती कि उसने कितने लोगों को हक की तरफ मोड़ा। उसकी कोशिश की कद्र व कीमत ख़ुदा के यहां इस एतबार से मुतअय्यन होती है कि वह ख़ुद कितना ज्यादा हक पर कायम रहा। हक का दाओ होने के तकाजों को ख़ुद उसने कितना ज्यादा पूरा किया।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

और हमने बनी इस्राईल को किताब और हुक्म और नुबुव्वत दी और उन्हें पाकीजा रिज्क अता किया और हमने उन्हें दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) बख़्शी। और हमने उन्हें दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, आपस की जिद की वजह से। बेशक तेरा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा उन चीजों के बारे में जिनमें वे आपस में इख़्तेलाफ (मतभेद) करते थे। फिर हमने तुम्हें दीन के एक वाजेह (स्पष्ट) तरीके पर कायम किया। पस तुम उसी पर चलो और उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। ये लोग अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते। और जालिम लोग एक दूसर के साथी हैं, और डरने वालों का साथी अल्लाह है। ये लोगों को लिए बसीरत (सूझबूझ) की बातें हैं और हिदायत और रहमत उन लोगों के लिए जो यकीन करें। (16-20)

'बनी इस्राईल को हमने दुनिया वालों पर फजीलत दी' यह वही बात है जो उम्मते मुहम्मदी के जेल में इन अल्फाज में कही गई है कि 'तुम ख़ैरे उम्मत हो।' किसी गिरोह को ख़ुदा की किताब का हामिल (धारक) बनाना उसे दूसरी कौमों पर हिदायत का जिम्मेदार बनाना है। यही उसका अफजलुल उमम (श्रेष्ठ समुदाय) या ख़ैरुल उमम (कल्याणकारी समुदाय) होना है।

उसूली तौर पर बनी इस्राईल की हैसियत भी इसी तरह आलमी थी जिस तरह उम्मते मुस्लिमा की हैसियत आलमी है। मगर बनी इस्राईल ने अपनी किताब में तहरीफात (परिवर्तन) करके हमेशा के लिए अपना यह इस्तहकाक (अधिकार) खो दिया।

दीन की अस्ल तालीमात में हमेशा वहदत (एकत्व) होती है। मगर उलमा के इजाफे उसमें इख़्तेलाफ और तअद्दुद (मत-भिन्नता) पैदा कर देते हैं। हर आलिम अपने जौक के लिहाज से अलग-अलग इजाफे करता है। इसके बाद हर आलिम और उसके मुत्तबिईन (अनुयायी) अपने इजाफों को सही और दूसरे के इजाफों को ग़लत साबित करने में मसरूफ हो जाते हैं। इस तरह दीनी फिरके बनना शुरू होते हैं और आख़िरकार यहां तक नौबत पहुंचती है कि एक दीन कई दीनों में तक्सीम हो जाता है।

बनी इस्राईल ने जब नाज़िल हुए दीन को बदले हुए दीन की हैसियत दे दी उस वक्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए अल्लाह ने कुरआन उतारा। चूंकि आपके बाद कोई पैग़म्बर आने वाला न था। इसलिए अल्लाह ने ख़ुसूसी एहतिमाम के साथ कुरआन को महफूज़ (सुरक्षित) कर दिया। ताकि दुबारा यह सूरत पैदा न हो कि अल्लाह का दीन इंसानी इजाफों में गुम होकर रह जाए।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

क्या वे लोग जिन्होंने बेरे कार्य किए हैं यह ख़्याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिंद कर देंगे जो ईमान लाए और नेक अमल किया, उन सबका जीना और मरना यकसां (समान) हो जाए। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। और अल्लाह ने आसमानों और जमीन को हिक्मत (तत्वदर्शिता) के साथ पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाए और उन पर कोई जुल्म न होगा। (21-22)

जो शख़्स यह ख़्याल करे कि आदमी अच्छा बनकर रहे या बुरा बनकर, सब बराबर है। आख़िरकार दोनों ही को मरकर मिट जाना है, वह निहायत ग़लत ख़्याल अपने दिमाग़ में कायम करता है। ऐसा समझना उस शुऊरे अद्ल (न्याय-भाव) के ख़िलाफ है जो हर आदमी की फितरत में पैदाइशी तौर पर मौजूद है। साथ ही, यह कायनात की उस मअनवियत का इंकार करना है जो उसके निजाम में कमाल दर्जे में पाई जाती है। हकीकत यह है कि इंसान की अंदरूनी फितरत और उसके बाहर की वसीअ कायनात दोनों इसे सरासर बातिल (असत्य) साबित करते हैं कि जिंदगी को एक ऐसी बेमक्सद चीज समझ लिया जाए जिसका कोई अंजाम सामने आने वाला नहीं।

أَفَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ وَأَضَلَّهُ ٱللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِۦ وَقَلْبِهِۦ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِۦ غِشَٰوَةً فَمَن يَهْدِيهِ مِنۢ بَعْدِ ٱللَّهِ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश (इच्छा) को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसे गुमराही में डाल दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया। पस ऐसे शख़्स को कौन हिदायत दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (23)

ख़्वाहिश को अपना माबूद बनाने का मतलब ख़्वाहिश को अपनी जिंदगी में सबसे बरतर मकाम देना है। जो शख़्स अपनी ख़्वाहिश के तहत सोचे और अपनी ख़्वाहिश के तहत अमल करे वह गोया अपनी ख़्वाहिश ही को अपना माबूद बनाए हुए है।

आदमी की अक्ल सही और गलत को पहचानने की कामिल सलाहियत रखती है। मगर जो शख़्स अपनी अक्ल को अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ (अधीन) बना ले उसका हाल यह हो जाता है कि उसके सामने हक के दलाइल आते हैं मगर वह उनके वजन को महसूस नहीं कर पाता। वह हर बात के जवाब में एक झूठी तौजीह पेश करके उसे रद्द कर देता है। आदमी की यह रविश आख़िरकार उसकी अक्ली कुव्वतों को मस्ख़ कर देती है। उसके कान अल्फाज सुनते हैं मगर उनके मअना तक उनकी पहुंच नहीं होती। उसकी आंख हकीकत को देखती है मगर वह उससे सबक नहीं ले पाती। उसके दिल तक एक बात पहुंचती है मगर वह उसके दिल को तड़पाने वाली नहीं बनती।

अक्ली कुव्वतों को ख़ुदा ने हिदायत के दाख़िले का दरवाजा बनाया है। मगर जो शख़्स अपनी ख़्वाहिशपरस्ती में इन दरवाजों को बंद कर ले उसके अंदर हिदायत दाख़िल होगी तो किस रास्ते से दाख़िल होगी।

وَقَالُوا۟ مَا هِىَ إِلَّا حَيَاتُنَا ٱلدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ إِلَّا ٱلدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُم

بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ ٱئْتُوا۟ بِـَٔابَآئِنَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلِ ٱللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की जिंदगी के सिवा कोई और जिंदगी नहीं। हम मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ जमाने की गर्दिश (कालचक्र) हलाक करती है। और उन्हें इस बारे में कोई इल्म नहीं। वे महज गुमान की बिना पर ऐसा कहते हैं। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे बाप दादा को जिंदा करके लाओ अगर तुम सच्चे हो। कहो कि अल्लाह ही तुम्हें जिंदा करता है फिर वह तुम्हें मारता है फिर वह कियामत के दिन तुम्हें जमा करेगा, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (24-26)

'हमें जमाने की गर्दिश हलाक करती है' यह आम लोगों का कौल नहीं। इस तरह की बातें हमेशा मख़्सूस अफराद करते हैं। ये वे अफराद हैं जो अपनी जहानत की वजह से अक्सर समाज के फिक्री (वैचारिक) नुमाइंदे की हैसियत हासिल कर लेते हैं। ताहम ये बातें वे महज कयास (अनुमान) की बुनियाद पर कहते हैं। वे किसी हकीकी इल्म की बुनियाद पर ऐसा नहीं कहते। इसके मुकाबले में पैग़म्बर जो बात कहता है उसकी बुनियाद ठोस हकीकत पर कायम है।

हम रोजाना देखते हैं कि एक शख़्स नहीं था। फिर वह पैदा होकर मौजूद हो गया। इसके बाद वह दुबारा मर जाता है। गोया यहां हर आदमी को मौत के बाद जिंदगी मिलती है और जिंदगी के बाद वह दुबारा मर जाता है। यह इस बात का करीना (संकेत) है कि जिस तरह पहली बार मौत के बाद जिंदगी हुई, इसी तरह दूसरी बार भी मौत के बाद जिंदगी होगी।

इससे वाजेह तौर पर जिंदगी बाद मौत का मुमकिन होना साबित होता है। इसके बाद यह मुतालबा करना ग़लत है कि जो लोग कल दुबारा पैदा होने वाले हैं उन्हें आज पैदा करके दिखाओ। क्योंकि मौजूदा दुनिया इम्तेहान के लिए है। और अगर मौजूदा दुनिया में अगली दुनिया का हाल दिखा दिया जाए तो इम्तेहान की मस्लेहत बाकी नहीं रह सकती।

وَلِلَّهِ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾ وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰٓ إِلَىٰ كِتَٰبِهَا ٱلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ هَٰذَا كِتَٰبُنَا يَنطِقُ عَلَيْكُم بِٱلْحَقِّ ۚ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾

और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और जमीन में और जिस दिन कियामत

कायम होगी उस दिन अहले बातिल (असत्यवादी) ख़सारे (घाटे) में पड़ जाएंगे। और तुम देखोगे कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा। हर गिरोह अपने नामए आमाल (कर्म-फल) की तरफ बुलाया जाएगा। आज तुम्हें उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे। यह हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे। (27-29)

जो लोग अल्लाह की बुनियाद पर दुनिया में खड़े हों वे हक की बुनियाद पर खड़े होते हैं। और जो लोग इसके सिवा किसी और बुनियाद पर खड़े हों वे बातिल की बुनियाद पर खड़े हुए हैं। ऐसे तमाम लोग आख़िरत में बेजमीन होकर रह जाएंगे। क्योंकि उन्होंने जिस चीज को बुनियाद समझ रखा था वह कोई बुनियाद ही न थी। वह महज धोखा था जो हकीकते हाल के खुलते ही ख़त्म हो गया।

आमाल को लिखवाने से मुराद मअरूफ (प्रचलित) मअनों में कलम से लिखवाना नही है। बल्कि आमाल को रिकॉर्ड कराना है। इंसान की नियत, उसका कौल और उसका अमल सब निहायत सेहत के साथ ख़ुदाई इंतिजाम के तहत रिकॉर्ड हो रहा है। आख़िरत में इंसान के साथ जो मामला किया जाएगा वह ऐन उस रिकॉर्ड के मुताबिक होगा। यह रिकॉर्ड इतना ज्यादा हकीकी होगा कि किसी के लिए मुमकिन न होगा कि उससे इंकार कर सके।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ﴿٣٢﴾

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यही खुली कामयाबी है। और जिन्होंने इंकार किया, क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं। पस तुमने तकब्बुर (घमंड) किया और तुम मुजरिम लोग थे। और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक है और कियामत में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि कियामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम इस पर यकीन करने वाले नहीं। (30-32)

तकब्बुर (घमंड) से मुराद ख़ुदा के मुकाबले में तकब्बुर नहीं है बल्कि ख़ुदा के दाऔ के मुकाबले में तकब्बुर है। ख़ुदा की बात को मानना मौजूदा दुनिया में अमलन ख़ुदा के दाऔ की बात को मानने के हममअना होता है। अब जो लोग तकब्बुर में मुब्तिला हों वे उसे अपने मर्तबे से कमतर समझते हैं कि वे अपने जैसे एक इंसान की बात मान लें। चुनांचे वे उसे नजरअंदाज

कर देते हैं। इसके बरअक्स जो लोग तकब्बुर की नफ्सियात से ख़ाली हों वे फौरन उसके आगे झुक जाते हैं। पहले गिरोह के लिए ख़ुदा का ग़जब है और दूसरे गिरोह के लिए ख़ुदा की रहमत।

एक इंसान जब हक का इंकार करता है तो अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए वह तरह-तरह की बातें करता है। वह कभी दाऔ को नाकाबिले एतमाद साबित करता है। कभी दाऔ के पैग़ाम में शक व शुबह का पहलू निकालता है। मगर कियामत के दिन खुल जाएगा कि ये सब मुजरिमाना जेहन से निकली हुई बातें थीं। न कि हकपरस्ताना जेहन से निकली हुई बातें।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٣﴾ وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٤﴾ ذَٰلِكُم بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾

और उन पर उनके आमाल की बुराइयां खुल जाएंगी और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा। और तुम्हारा ठिकाना आग है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का मजाक उड़ाया। और दुनिया की जिंदगी ने तुम्हें धोखे में रखा। पस आज न वे उससे निकाले जाएंगे और न उनका उज्र कुबूल किया जाएगा। (33-35)

मौजूदा दुनिया में आदमी जब बुराई करता है तो उसके बुरे नताइज फौरन उसके सामने नहीं आते। यह चीज उसे दिलेर बना देती है। उसे जब उसकी बदअमली से डराया जाता है तो वह संजीदगी के साथ उसे सुनने के लिए तैयार नहीं होता। मगर आख़िरत में उसकी बुराइयों के नताइज उसकी आंखों के सामने आ जाएंगे। वह अपनी बदआमालियों में पूरी तरह घिर चुका होगा। उस वक्त वह उस हक का इकरार कर लेगा जिसे दुनिया में उसने इतना बेकीमत समझा था कि वह उसका मजाक उड़ाता रहा।

आख़िरत में इंसान उस हक का इकरार करेगा जिसे वह दुनिया में झुठलाता रहा। मगर वहां उसे कुबूल नहीं किया जाएगा। क्योंकि हक का इकरार ग़ैब (अप्रकट) की सतह पर कीमत रखता है न कि शुहूद (प्रकट) की सतह पर।

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾ وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾

पस सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है आसमानों का और रब है जमीन का, रब है तमाम आलम का। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और जमीन में। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (36-37)

कायनात बेपनाह हद तक अजीम (महान) है, इसलिए उसका ख़ालिक व मालिक भी वही हो सकता है जो बेपनाह हद तक अजीम हो। और यह अजीम हस्ती एक ख़ुदा के सिवा कोई और नहीं हो सकती। कोई आदमी संजीदगी के साथ यह जुरअत नहीं कर सकता कि वह एक ख़ुदा के सिवा किसी और को कायनात का ख़ालिक व मालिक करार दे। फिर जब कायनात का ख़ालिक व मालिक सिर्फ एक हस्ती है तो लाजिम है कि सारी तारीफ भी उसी की हो। इंसान अपनी सारी तवज्जोह उसी की तरफ लगाए, वह उसी को अपना सब कुछ बना ले।

मौजूदा दुनिया में इंसान का वही रवैया सही रवैया है जो कायनात की अज्मत व हिक्मत के मुताबिक हो। जिस रवैये में कायनात की अज्मत व हिक्मत से मुताबिकत न पाई जाए वह बातिल है। ऐसा रवैया इंसान को कामयाबी तक पहुंचाने वाला नहीं।

سُورَةُ الْأَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ مَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنْذِرُوا مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾

आयतें-35 सूरह-46. अल-अहक़ाफ़ रुकूअ-4

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह किताब अल्लाह जबरदस्त हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ से उतारी गई है। हमने आसमानों और जमीन को और उनके दर्मियान की चीजों को नहीं पैदा किया मगर हक के साथ और मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत के लिए। और जो लोग मुंकिर हैं वे उससे बेरुख़ी करते हैं जिससे उन्हें डराया गया है। (1-3)

कायनात का मुतालआ बताता है कि इसमें हर तरफ हिक्मत और मअनवियत है। फिर एक ऐसा कारख़ाना जो अपने आग़ाज में बामअना हो वह अपने इख़्तिताम (अंत) में बेमअना कैसे हो जाएगा।

हक अपनी जात में निहायत मोहकम (दृढ़) चीज है। वह कायनात की सबसे बड़ी ताक़त

है। इसके बावजूद क्यों ऐसा है कि जब लोगों के सामने हक पेश किया जाता है तो वे उसका इंकार कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि मौजूदा दुनिया में लोगों को हक की सिर्फ ख़बर दी जा रही है। आख़िरत में यह होगा कि हक वाकया बनकर लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा। उस वक्त वही लोग हक के सामने ढह पड़ेंगे जो इससे पहले हक को ग़ैर अहम समझ कर उसे नजरअंदाज कर रहे थे।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ ۖ ائْتُونِي بِكِتَابٍ مِنْ قَبْلِ هَٰذَا أَوْ أَثَارَةٍ مِنْ عِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤﴾ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ﴿٥﴾

कहो कि तुमने ग़ौर भी किया उन चीजों पर जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने जमीन में क्या बनाया है। या उनका आसमान में कुछ साझा है। मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या कोई इल्म जो चला आता हो, अगर तुम सच्चे हो। और उस शख़्स से ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो कियामत तक उसका जवाब नहीं दे सकते, और उन्हें उनके पुकारने की भी ख़बर नहीं। और जब लोग इकट्ठा किए जाएंगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत के मुंकिर बन जाएंगे। (4-6)

मुफस्सिर इब्ने कसीर ने यहां 'किताब' से मुराद उद्धृत दलील (आसमानी किताब की दलील) और 'असारतिम मिन इल्म' से मुराद अक्ली (बौद्धिक) दलील ली है।

इल्म हकीकतन सिर्फ दो हैं। एक इल्हामी इल्म (Revealed knowledge) यानी वह इल्म जो पैग़म्बरों के जरिए से इंसानों तक पहुंचा। दूसरा साबितशुदा इल्म (Established knowledge) यानी वह इल्म जिसका इल्म होना इंसानी तहकीकात और तजर्बात से साबित हो गया हो। इन दोनों में से कोई भी इल्म यह नहीं बताता कि इस कायनात में एक ख़ुदा के सिवा कोई और हस्ती है जो ख़ुदाई के लायक है। और जब इल्म के दो जरियों में से कोई जरिया शिर्क की गवाही न दे तो मुश्रिकाना अकीदा इंसान के लिए क्योंकर दुरुस्त हो सकता है। जो शख़्स ख़ुदा को छोड़कर किसी और चीज और अपना सहारा बनाए वह सहारा आख़िरत के दिन उससे बरा-त (विरक्ति) करेगा न कि वह उसका मददगार बने।

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ﴿٦﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ

مُّبِينٌ ۝٧ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝٨

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुंकिर लोग इस हक की बाबत, जबकि वह उनके पास पहुंचता है, कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है। क्या ये लोग कहते हैं कि उसने इसे अपनी तरफ से बना लिया है, कहो कि अगर मैंने इसे अपनी तरफ से बनाया है तो तुम लोग मुझे जरा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते। जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है। वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। और वह बख़्शने वाला, रहमत वाला है। (7-8)

कदीम अरब में क़ुरआन के मुख़ातबीन क़ुरआन के पैग़ाम को यह कहकर रद्द कर देते थे कि यह हमारे अकाबिर (महापुरुषों) के दीन के ख़िलाफ है। और चूंकि लोगों के ऊपर अकाबिर की अज़्मत बैठी हुई थी वे उसे मान कर क़ुरआन के पैग़ाम से मुतवह्हिश (भयभीत) हो जाते थे। मगर क़ुरआन का एक और पहलू था और वह उसका अदबी एजाज़ (साहित्यिक विलक्षणता) था। हर अरबीदां महसूस कर रहा था कि यह एक ग़ैर मामूली कलाम है। इस दूसरे पहलू से क़ुरआन की अहमियत को घटाने के लिए उन्होंने कह दिया कि यह 'सहर' है यानी यह जादू बयानी का करिश्मा है न कि हकीक़त बयानी का कमाल।

यह सही है कि कुछ इंसानों के कलाम में ग़ैर मामूली अदबियत (साहित्यिकता) होती है मगर इंसानी कलाम की अदबियत की एक हद है। क़ुरआन का अदबी एजाज इस हद से बहुत आगे है। क़ुरआन की अदबी अज़्मत इससे ज्यादा है कि उसे इंसानी दिमाग़ का करिश्मा कहा जा सके।

जब फ़रीक़ सानी (सामने वाला पक्ष) जिद पर उतर आए तो उस वक़्त एक संजीदा इंसान यह करता है कि वह यह कहकर चुप हो जाता है कि मेरा और तुम्हारा मामला अल्लाह के हवाले है। ताहम यह पसपाई नहीं बल्कि एक इक़्दामी तदबीर है। आदमी जब एक जिद्दी के सामने चुप हो जाए तो वह अपने आपको उसके सामने से हटाकर ख़ुद उसे उसके जमीर (अन्तरात्मा) के सामने खड़ा कर देता है ताकि उसके अंदर एहसास का कोई दर्जा हो तो वह बेदार हो जाए।

قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٩ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝١٠ ع

कहो कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूं। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या। मैं तो सिर्फ उसी का इत्तिबाअ करता हूं जो मेरी तरफ 'वही' (प्रकाशना) के जरिए आता है और मैं तो सिर्फ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूं। कहो, क्या तुमने कभी सोचा कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की जानिब से हो और तुमने इसे नहीं माना, और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है। पस वह ईमान लाया और तुमने तकब्बुर (घमंड) किया। बेशक अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। (9-10)

मुश्रिकीने मक्का की नजर में यहूद उलूमे दीन के हामिल (धारक) थे। उन्हें वे पैग़म्बरों वाली कौम समझते थे। तिजारती सफ़रों में मुश्रिकीन और यहूद की बाहमी मुलाक़ातें भी होती रहती थीं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का में एक निजाई (विवादित) शख़्सियत बने हुए थे तो मक्का के कुछ मुश्रिकीन ने कुछ यहूदियों से आपके बारे में पूछा। उस दौरान किसी यहूदी आलिम ने उन्हें बताया कि हमारी किताबों के मुताबिक एक पैग़म्बर इस इलाके में आने वाले हैं। हो सकता है कि यह वही पैग़म्बर हों। उस यहूदी शख़्स ने बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में आपकी नुबुव्वत का इक़रार किया।

अब सूरतेहाल यह थी कि तारीख़ से साबित हो रहा था कि ख़ुदा के पैग़म्बर ख़ुदा की किताब लेकर आते हैं। कदीम आसमानी किताबों में यह लिखा हुआ था कि बनू इस्माईल में एक ऐसा पैग़म्बर आने वाला है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम और आपकी जिंदगी में वे तमाम अलामतें वाजेह तौर पर पाई जा रही थीं जो पैग़म्बरों में होती हैं। इन अलामात और कराइन की मौजूदगी में जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बरी का इंकार कर रहे थे वह किसी माकूलियत की वजह से नहीं कर रहे थे बल्कि महज इसलिए कर रहे थे कि एक शख़्स जिसे अब तक वे एक मामूली आदमी समझते थे उसे ख़ुदा का पैग़म्बर मानने में उनकी बड़ाई टूट जाएगी।

जिन लोगों का हाल यह हो कि उनके सामने हक आए तो वे मुतकब्बिराना नफ्सियात (घमंड-भाव) का शिकार हो जाएं। ऐसे लोगों का जेहन हमेशा उन्हें ग़लत रुख़ पर ले जाता है। वह सही सम्त में उनकी रहनुमाई नहीं करता।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝١١

और इंकार करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज होती तो वे इस पर हमसे पहले न दौड़ते। और चूंकि उन्होंने इससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है। (11)

इब्तिदा में जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी बने उनमें कई ऐसे लोग थे जो ज़ईफ़ (बूढ़े) और ग़ुलाम तबके से तअल्लुक रखते थे। मसलन बिलाल, अम्मार, सुहैब, ख़ब्बाब वग़ैरह। इसी के साथ आप पर ईमान लाने वालों में वे लोग भी थे जो अरब के मुअज्ज़ज़ ख़ानदानों से तअल्लुक रखते थे। मसलन अबूबक्र बिन अबी क़हाफ़, उस्मान बिन अफ़्फ़ान, अली इब्ने अबी तालिब वग़ैरह। मगर आपके मुख़ालिफ़ीन सिर्फ़ पहली क़िस्म के लोगों का ज़िक्र करते थे, वे दूसरी क़िस्म के लोगों का ज़िक्र नहीं करते थे। इसकी वजह यह है कि आदमी को जब किसी से ज़िद हो जाती है तो वह उसके बारे में यकरुख़ा हो जाता है। वह उसके अच्छे पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर देता है और सिर्फ़ उन्हीं पहलुओं का ज़िक्र करता है जिसके ज़रिए उसे उसकी तहक़ीर (तुच्छ समझने) का मौक़ा मिलता हो।

इसी तरह यह एक वाक़या था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत वही थी जो पिछले तमाम पैग़म्बरों की दावत थी। आप एक अबदी सदाक़त (सच्चाई) को लेकर आए थे। इस वाक़्ये को आपके मुख़ालिफ़ीन इन लफ़्ज़ों में भी बयान कर सकते थे कि 'यह एक बहुत पुराना सच है' मगर उन्होंने यह कह दिया कि 'यह एक बहुत पुराना झूठ है' नाइंसाफ़ी की यह क़िस्म क़दीम ज़माने के इंसानों में भी पाई जाती थी और आज भी वह पूरी तरह लोगों के अंदर पाई जा रही है।

وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

और इससे पहले मूसा की किताब थी रहनुमा और रहमत। और यह एक किताब है जो उसे सच्चा करती है, अरबी ज़बान में, ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने ज़ुल्म किया। और वह ख़ुशख़बरी है नेक लोगों को लिए। बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन आमाल के बदले जो वे दुनिया में करते थे। (12-14)

क़ुरआन की सदाक़त की एक दलील यह है कि पिछली आसमानी किताबें इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) करती हैं। यह पेशीनगोइयां आज भी इंजील और तौरात में मौजूद हैं। इस तरह क़ुरआन अपनी साबिक़ (पूर्ववर्ती) आसमानी पेशीनगोइयों का मिस्दाक़ (पुष्टि रूप) बनकर आया है। वह उनकी पेशगी इत्तिलाअ (पूर्व सूचना) को सच कर दिखाता है। यह

एक वाज़ेह क़रीना है जो साबित करता है कि क़ुरआन वाक़ेयतन एक ख़ुदाई किताब है। वर्ना सैंकड़ों और हज़ारों साल पहले उसकी पेशगी ख़बर देना कैसा मुमकिन होता।

'क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस तक़ामू' के सिलसिले में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा है कि इससे मुराद उसके फ़राइज़ की अदायगी पर क़ायम रहना है।

ईमान एक मुक़द्दस अहद है। ज़िंदगी में बार-बार ऐसे मौक़े आते हैं कि एक रविश आदमी के अहदे ईमान के मुताबिक होती है और एक रविश उसके अहदे ईमान के ग़ैर मुताबिक। ऐसे मौक़े पर जिस शख़्स ने अपने अहदे ईमान के मुताबिक अमल किया उसने इस्तिक़ामत (दृढ़ता) दिखाई और जो शख़्स अपने अहदे ईमान के मुताबिक अमल न कर सका वह इस्तिक़ामत दिखाने में नाकाम रहा।

इस्तिक़ामत का सुबूत न देने वाले लोग ज़ालिम लोग हैं। उनका दावए ईमान उन्हें कुछ फ़ायदा न देगा और जिन लोगों ने इस्तिक़ामत का सुबूत दिया वही वे लोग हैं जो जन्नत के अबदी बाग़ों में बसाए जाएंगे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने मां-बाप के साथ भलाई करे। उसकी मां ने तकलीफ़ के साथ उसे पेट में रखा। और तकलीफ़ के साथ उसे जना। और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में हुआ। यहां तक कि जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुंचा और चालीस वर्ष को पहुंच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर किया और मेरे मां-बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूं जिससे तू राज़ी हो। और मेरी औलाद में भी मुझे नेक औलाद दे। मैंने तेरी तरफ़ रुजूअ किया और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। ये लोग हैं जिनके अच्छे आमाल को हम क़ुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों से दरगुज़र करेंगे, वे अहले जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता था। (15-16)

इंसानी नस्ल का तरीक़ा यह है कि आदमी एक मां और एक बाप के जरिए वुजूद में आता है जो उसकी परवरिश करके उसे बड़ा बनाते हैं। यह गोया इंसान की तर्बियत का फ़ितरी निजाम है। यह इसलिए है कि इसके जरिए से इंसान के अंदर हुक़ूक़ व फ़राइज का शुऊर पैदा हो। उसके अंदर यह जज्बा पैदा हो कि उसे अपने मोहसिन का एहसान मानना है और उसका हक़ अदा करना है। यह जज्बा बयकवक्त इंसान को दूसरे इंसानों के हुक़ूक़ अदा करने की तालीम देता है। और इसी के साथ ख़ालिक़ व मालिक ख़ुदा के अजीमतर हुक़ूक़ को अदा करने की तालीम भी।

जो लोग फ़ितरत के मुअल्लिम (शिक्षक) से सबक़ लें। जो लोग अपने शुऊर को इस तरह बेदार करें कि वे अपने वालिदैन से लेकर अपने ख़ुदा तक हर एक के हुक़ूक़ को पहचानें और उन्हें ठीक-ठीक अदा करें, वही वे लोग हैं जो आख़िरत में ख़ुदा की अबदी रहमतों के मुस्तहिक़ क़रार दिए जाएंगे।

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

और जिसने अपने मां-बाप से कहा कि मैं बेजार हूं तुमसे। क्या तुम मुझे यह ख़ौफ़ दिलाते हो कि मैं क़ब्र से निकाला जाऊंगा, हालांकि मुझ से पहले बहुत सी क़ौमें गुजर चुकी हैं और वे दोनों अल्लाह से फ़रयाद करते हैं कि अफ़सोस है तुझ पर, तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। पस वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियां हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का क़ौल पूरा हुआ उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुजरे जिन्नों और इंसानों में से। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रहे। (17-18)

जो औलाद अपने वालिदैन की फ़रमांबरदार हो वह ख़ुदा की भी फ़रमांबरदार होती है। इसके बरअक्स नाफ़रमान औलाद का हाल यह होता है कि वह बड़ी उम्र को पहुंचते ही भूल जाते हैं कि उनके वालिदैन ने बेशुमार मुसीबतें उठाकर उन्हें इस मक़ाम तक पहुंचाया है।

किसी शख़्स के सबसे ज्यादा ख़ैरख़्वाह उसके वालिदैन होते हैं। वालिदैन अपनी औलाद को जो मश्विरा देते हैं वह सरासर बेगर्जाना ख़ैरख़्वाही पर मबनी होता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपने सालेह वालिदैन के मश्विरों का सबसे ज्यादा लिहाज करे। जो शख़्स अपने सालेह वालिदैन के मश्विरों पर उन्हें झिड़क दे वह अपनी इस रविश से जाहिर करता है कि वह निहायत संगदिल इंसान है। यही वे लोग हैं जो सबसे ज्यादा ख़सारे में पड़ने वाले हैं।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾

और हर एक के लिए उनके आमाल के एतबार से दर्जे होंगे। और ताकि अल्लाह सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उन पर जुल्म न होगा। और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, तुम अपनी अच्छी चीजें दुनिया की जिंदगी में ले चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें जिल्लत की सजा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ तकब्बुर (घमंड) करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी करते थे। (19-20)

एक शख़्स के सामने हक़ आता है और वह दुनियावी मस्लेहत और माद्दी मफ़ाद के ख़ातिर उसे इख़्तियार नहीं करता। इसका मतलब यह है कि उसने आख़िरत के मुकाबले में दुनिया को अहमियत दी। उसने तय्यिबाते आख़िरत (परलोक की अच्छी चीज़ों) के मुकाबले में तय्यिबाते दुनिया को अपने लिए पसंद कर लिया।

इसी तरह अपनी बड़ाई का एहसास आदमी के लिए बेहद लजीज चीज है। जब ऐसा हो कि अपनी बड़ाई का घरौंदा तोड़कर हक़ को क़ुबूल करना हो और आदमी अपनी बड़ाई को बचाने के लिए हक़ को क़ुबूल न करे, उस वक्त भी गोया उसने तय्यिबाते दुनिया को तरजीह दी और तय्यिबाते आख़िरत को नाक़ाबिले लिहाज समझ कर छोड़ दिया।

ऐसे तमाम लोग जिन्होंने दुनिया की तय्यिबात की ख़ातिर आख़िरत की तय्यिबात को नजरअंदाज किया वे आख़िरत में जिल्लत के अजाब से दो चार होंगे। जिसका अमल जिस दर्जे का होगा उसी के बक़द्र वह अपने अमल का अंजाम आख़िरत में पाएगा।

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٢﴾ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

और आद के भाई (हूद) को याद करो। जबकि उसने अपनी कौम को अहक़ाफ़ में डरायाऔर डराने वाले उससे पहले भी गुजर चुके थे और उसके बाद भी आएकि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक हौलनाक दिन के अजाब से डरता हूं। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से फेर दो। पस अगर तुम सच्चे हो तो वह चीज हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो। उसने कहा कि इसका इल्म तो अल्लाह को है, और मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा रहा हूं जिसके साथ मुझे भेजा गया है। लेकिन मैं तुम्हें देखता हूं कि तुम लोग नादानी की बातें करते हो। (21-23)

कौमे आद जुनूबी (दक्षिणी) अरब के उस इलाके में आबाद थी जिसे अब 'अररुबउ ख़ाली' कहा जाता है। इस कौम ने काफी तरक्की की। मगर उसकी तरक्कियोंने उसे ग़फ़लत और सरकशी में मुब्तिला कर दिया। फिर अल्लाह तआला ने उसके एक फर्द हजरत हूद अलैहिस्सलाम को पैग़म्बर बनाकर उसकी तरफ भेजा।

हजरत हूद ने कौम को डराया। मगर वह इस्लाह कुबूल करने के लिए तैयार न हुई। उसने अपने पैग़म्बर का इस्तकबाल जहालत से किया। आख़िरकार वह ख़ुदा की पकड़ में आ गई। उस पर ऐसा सख़्त अजाब आया कि उसका सरसब्ज और शानदार इलाक़ा महज एक ख़ुश्क सहरा बन कर रह गया।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۴﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ ۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۵﴾

पस जब उन्होंने उसे बादल की शक्ल में अपनी वादियों की तरफ आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि यह वह चीज है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अजाब है। वह हर चीज को अपने रब के हुक्म से उखाड़ फेंकेगी। पस वे ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा वहां कुछ नजर न आता था। मुजरिमों को हम इसी तरह सजा देते हैं। (24-25)

अजाब के बादल को आद के लोग बारिश का बादल समझे। वे उसकी हकीकत को सिर्फ उस वक्त समझ सके जबकि अजाब की आंधी ने उनकी बस्तियों में दाख़िल होकर उन्हें बिल्कुल खंडहर बना दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह एक लम्हे पहले तक भी हक का एतराफ नहीं करता। वह सिर्फ उस वक्त एतराफ करता है जबकि एतराफ करने का मौक़ा उससे छिन गया हो।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۸﴾

और हमने उन लोगों को उन बातों में कुदरत दी थी कि तुम्हें उन बातों में कुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आंख और दिल दिए। मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आंखें और न दिल। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे और उन्हें उस चीज ने घेर लिया जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियां भी तबाह कर दीं। और हमने बार-बार अपनी निशानियां बताईं ताकि वे बाज आएं। पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने जिनको उन्होंने ख़ुदा के तकर्रुब (समीपता) के लिए माबूद (पूज्य) बना रखा था। बल्कि वे सब उनसे खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी। (26-28)

कुरैश के सरदारों को जो दुनियावी मर्तबा हासिल था उसने उन्हें सरकश बना रखा था। उन्हें याद दिलाया गया कि अपने पड़ौस की कौम आद को देखो। उसे तमद्दुनी एतबार से तुमसे भी ज्यादा बड़ा दर्जा हासिल था। इसके बावजूद जब ख़ुदा का फैसला आया तो उसकी सारी बड़ाई ग़ारत होकर रह गई। उन चीजों में से कोई चीज उसका सहारा न बन सकी जिन्हें उन्होंने अपना सहारा समझ रखा था।

इंसान आख़िरकार ख़ुदा की बड़ाई के मुकाबले में छोटा होने वाला है। मगर दुनिया का निजाम कुछ इस तरह बनाया गया है कि इसी दुनिया में आदमी को बार-बार दूसरों के मुकाबले में छोटा होना पड़ता है। इस तरह के वाकेयात ख़ुदा की निशानियां हैं। आदमी अगर इन निशानियों से सबक ले तो आख़िरत के दिन छोटा किए जाने से पहले वह ख़ुद अपने आपको छोटा कर ले। वह आख़िरत से पहले इसी दुनिया में हकीकतपसंद बन जाए।

इंसान के सामने मुख़्तलिफ किस्म के वाकेयात ख़ुदाई निशानी बनकर जाहिर होते हैं। मगर वह अंधा बहरा बना रहता है। वह उनसे सबक लेने के लिए तैयार नहीं होता।

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿٢٩﴾ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾ يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣١﴾ وَمَن لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾

और जब हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ ले आए, वे कुरआन सुनने लगे। पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब कुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी कौम की तरफ वापस गए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारी कौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तस्दीक (पुष्टि) करती हुई जो उसके पहले से मौजूद हैं। वह हक की तरफ और एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है। ऐ हमारी कौम, अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की दावत (आह्वान) कुबूल करो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अजाब से बचाएगा। और जो शख़्स अल्लाह के दाओ (आह्वानकर्ता) की दावत पर लब्बैक नहीं कहेगा तो वह जमीन में हरा नहीं सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार न होगा। ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (29-32)

नुबुव्वत के दसवें साल मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात बेहद सख़्त हो चुके थे। उस वक्त आपने मक्का से तायफ की तरफ सफर फरमाया कि शायद आपको कुछ साथ देने वाले मिल सकें। मगर वहां के लोगों ने आपका बहुत बुरा इस्तकबाल किया। वापसी में आप रात गुजारने के लिए नख़ला के मकाम पर ठहरे। यहां आप नमाज में कुरआन की तिलावत फरमा रहे थे कि जिन्नात के एक गिरोह ने कुरआन को सुना। और वे उसी वक्त उसके मोमिन बन गए। एक गिरोह कुरआन को रद्द कर रहा था। मगर ऐन उसी वक्त दूसरा गिरोह कुरआन को कुबूल कर रहा था। और इतनी शिद्दत के साथ कुबूल कर रहा था कि उसी वक्त वह उसका मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन गया।

अल्लाह के दाओ की बात को रद्द करना गोया ख़ुदा के मंसूबे को रद्द करना है। मगर इंसान के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह ख़ुदा के मंसूबे को रद्द कर सके। इसलिए ऐसी कोशिश करने वाले का अंजाम सिर्फ यह होता है कि वह ख़ुद रद्द होकर रह जाता है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों और जमीन को पैदा किया और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इस पर कुदरत रखता है कि वह मुर्दों को जिंदा कर दे, हां वह हर चीज पर कादिर है। और जिस दिन ये इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, क्या यह हकीकत नहीं है। वे कहेंगे कि हां, हमारे रब की कसम। इर्शाद होगा फिर चखो अजाब उस इंकार के बदले जो तुम कर रहे थे। (33-34)

जमीन व आसमान जैसी अजीम कायनात का वुजूद में आना, और फिर अरबों साल से उसका निहायत सेहत और हमआहंगी के साथ चलते रहना यह साबित करता है कि इस कायनात का पैदा करने वाला अजीमतरीन ताक़तों का मालिक है। नीज यह कि इस कायनात को वुजूद में लाना उसके लिए इज्ज (निर्बलता) का सबब नहीं बना। तख़्लीक का अमल अगर उसे थका देता तो तख़्लीक के बाद वह इतनी सेहत के साथ चलती हुई नजर न आती।

ख़ुदा की अजीम ताक़त व कुदरत का मुजाहिरा जो कायनात की सतह पर हो रहा है वह यह यकीन करने के लिए काफ़ी है कि इंसानी नस्ल को दुबारा जिंदा करना और उससे उसके आमाल का हिसाब लेना उसके लिए कुछ मुश्किल नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी के सामने हकीक़त आती है मगर वह उसे नहीं मानता। इसकी वजह यह है कि मौजूदा दुनिया में हकीक़त के इंकार का अंजाम फौरन सामने नहीं आता। आख़िरत में इंकार का हौलनाक अंजाम हर आदमी के सामने होगा। उस वक्त वह इंतिहाई हद तक संजीदा हो जाएगा और उस हकीक़त का फौरन इकरार कर लेगा जिसे मौजूदा दुनिया में वह मानने के लिए तैयार न होता था।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

पस तुम सब्र करो जिस तरह हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया। और उनके लिए जल्दी

न करो। जिस दिन ये लोग उस चीज को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे दिन की एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। यह पहुंचा देना है। पस वही लोग बर्बाद होंगे जो नाफरमानी करने वाले हैं। (35)

हक की दावत देने वाले को हमेशा सब्र की जमीन पर खड़ा होना पड़ता है। सब्र दरअस्ल इसका नाम है कि मदऊ (संबोधित पक्ष) की ईजारसानियों (उत्पीड़न) को दाओ यकतरफा तौर पर नजरअंदाज करे। वह मदऊ के जिद और इंकार के बावजूद मुसलसल उसे दावत पहुंचाता रहे। दाओ अपने मदऊ का हर हाल में ख़ैरख़्वाह बना रहे। चाहे मदऊ की तरफ से उसे कितनी ही ज्यादा नाख़ुशगवारियों का तजर्बा क्यों न हो रहा हो। यह यकतरफा सब्र इसलिए जरूरी है कि इसके बग़ैर मदऊ के ऊपर ख़ुदा की हुज्जत तमाम नहीं होती।

ख़ुदा के तमाम पैग़म्बरों ने हर जमाने में इसी तरह सब्र व इस्तिकामत के साथ हक की दावत का काम किया है। आइंदा भी पैग़म्बरों की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में जो लोग हक की दावत का काम करें उन्हें इसी नमूने पर दावत का काम करना है। ख़ुदा के यहां दाओ का मकाम सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए मुक़द्दर है जो यकतरफा बर्दाश्त का हौसला दिखा सकें।

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٍ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝

आयतें-38 **सूरह-47. मुहम्मद** रुकूअ-4

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को रायगां (अकारत) कर दिया। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज को माना जो मुहम्मद पर उतारा गया है, और वह हक है उनके रब की तरफ से, अल्लाह ने उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका हाल दुरुस्त कर दिया। यह इसलिए कि जिन लोगों ने इंकार किया उन्होंने बातिल (असत्य) की पैरवी की। और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक (सत्य) की पैरवी की जो उनके रब की तरफ से है। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है। (1-3)

कदीम अरब में जिन लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया और आपकी मुख़ालिफ़त की उनके आमाल जाया हो गए। इसका मतलब दूसरे लफ़्ज़ों में यह है कि उन्होंने चूंकि शुऊरी सतह पर दीनदारी का सुबूत नहीं दिया इसलिए उनके वे आमाल भी बेकीमत करार पाए जो वे रिवायती दीनदारी की सतह पर अंजाम दे रहे थे।

कदीम अरब के लोग अपने आपको इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की उम्मत समझते थे। उन्हें ख़ाना काबा का मुंतजिम (प्रबंधक) होने का एजाज हासिल था। उनके यहां किसी न किसी शक्ल में नमाज, रोजा, हज का रवाज भी मौजूद था। हाजियों की ख़िदमत, रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक, मेहमानों की तवाजोअ का भी उनके यहां रवाज था। ये सब काम अगरचे वे बजाहिर कर रहे थे मगर वे उनकी शुऊरी दीनदारी का हिस्सा न थे। वे महज रिवायती तौर पर उनकी जिंदगी का जुज बने हुए थे। इन आमाल को वे इसलिए कर रहे थे कि वे सदियों से उनके दर्मियान राइज चले आ रहे थे।

मगर वक्त के पैग़म्बर को पहचानने के लिए जरूरी था कि वे अपने शुऊर को मुतहर्रिक करें। वे जाती मअरफत (अन्तर्ज्ञान) की सतह पर उसे पाएं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उस वक्त कदीम रिवायात का जोर शामिल न था इसलिए आपको वही शख़्स पहचान सकता था जो जाती शुऊर की सतह पर हकीक्त को पहचानने की सलाहियत रखता हो। जब उन्होंने वक्त के पैग़म्बर का इंकार किया तो यह साबित हो गया कि उनकी दीनदारी महज रिवायत के तहत है न कि शुऊर के तहत। और अल्लाह को शुऊरी दीनदारी मत्लूब है न कि महज रिवायती दीनदारी।

इसके बरअक्स जो लोग वक्त के पैग़म्बर पर ईमान लाए उन्होंने यह सुबूत दिया कि वे शुऊर की सतह पर दीनदार बनने की सलाहियत रखते हैं। चुनांचे वे ख़ुदा के यहां काबिले कुबूल और काबिले इनाम करार पाए। तारीख़ का तजर्बा बताता है कि माजी (अतीत) के जोर पर मानने वाले लोग हाल की मअरफत के इम्तेहान में फेल हो जाते हैं। दूसरों की नजर से देखने वाले अपनी नजर से देखने में हमेशा नाकाम रहते हैं।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ
فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڃ ذٰلِكَ ڔ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ
لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ
عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝

पस जब मुंकिरों से तुम्हारा मुकाबला हो तो उनकी गर्दनें मारो। यहां तक कि जब ख़ूब

क़त्ल कर चुको तो उन्हें मजबूत बांध लो। फिर इसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है या मुआवजा लेकर, यहां तक कि जंग अपने हथियार रख दे। यह है काम। और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, मगर ताकि वह तुम लोगों को एक दूसरे से आजमाए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएंगे, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज जाए (नष्ट) नहीं करेगा। वह उनकी रहनुमाई फरमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा। और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है। (4-6)

यहां इंकार करने वालों से मुराद वे लोग हैं जो इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद ईमान नहीं लाए और मजीद यह कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ नाहक जंग छेड़ दी और इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिफाई (रक्षात्मक) कदम उठाने पर मजबूर कर दिया। ऐसे लोगों के बारे में हुक्म दिया गया कि जब उनसे तुम्हारी मुठभेड़ हो तो उनसे लड़कर उनका जोर तोड़ दो, ताकि वे आइंदा हक की दावत (आह्वान) की राह में रुकावट न बन सकें।

अल्लाह तआला का यह कानून रहा है कि जिन कौमों ने अपने पैग़म्बरों का इंकार किया वे इतमामेहुज्जत के बाद हलाक कर दी गईं। मगर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सिलसिले में अल्लाह तआला को यह मत्लूब था कि आप और आपके साथियों के जरिए शिर्क का दौर ख़त्म किया जाए और तौहीद की बुनियाद पर एक नई तारीख़ वुजूद में लाई जाए। ऐसे तारीख़साज इंसानों का इंतख़ाब सख़्ततरीन हालात ही में हो सकता था। चुनांचे मुख़ालिफीन की तरफ से छेड़ी हुई जंग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों को दाख़िल करके यही फायदा हासिल किया गया।

जन्नत मोमिन की एक इंतिहाई मालूम चीज है। वह न सिर्फ पैग़म्बर से उसकी ख़बर सुनता है बल्कि अपनी बढ़ी हुई मअरफत (अन्तर्ज्ञान) के जरिए वह उसका तसव्वुराती इदराक (परिकल्पना-भान) भी कर लेता है। ग़ैब में छुपी हुई जन्नत का यही गहरा इदराक है जो आदमी को यह हौसला देता है कि वह क़ुर्बानी की कीमत पर उसका तालिब बन सके। अगर ऐसा न हो तो कोई शख़्स आज की दुनिया को क़ुर्बान करके कल की जन्नत का उम्मीदवार न बने।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۡ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝١٠ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١

ع ٥

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदमों को जमा देगा। और जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को जाया कर देगा। यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है। पस अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। क्या ये लोग मुल्क मे चले फिरे नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते जो उनसे पहले गुजर चुके हैं, अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और मुंकिरों के सामने उन्हीं की मिसालें आनी हैं। यह इस सबब से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज (संरक्षक) है और मुंकिरों का कोई कारसाज नहीं। (7-11)

वाक़ेयात को ज़ुहूर में लाने वाला ख़ुदा है। मगर वह वाक़ेयात को असबाब के पर्दे में ज़ुहूर में लाता है। यही मामला दीन का भी है। अल्लाह तआला को यह मत्लूब है कि बातिल का जोर टूटे और हक को दुनिया में ग़लबा और इस्तहकाम हासिल हो। मगर इस वाक़्ये को ज़ुहूर में लाने के लिए अल्लाह तआला को कुछ ऐसे अफराद दरकार हैं जो इस ख़ुदाई अमल का इंसानी पर्दा बनें। यही वह मामला है जिसे यहां ख़ुदा की नुसरत (मदद) करना कहा गया है।

जब एक गिरोह ख़ुदा की नुसरत के लिए उठता है तो वह इसी के साथ दूसरा काम यह करता है कि वह मुंकिरीन का मुंकिरीन होना साबित करता है। ख़ुदा की नुसरत करने वाले अफराद इंतिहाई संजीदगी और ख़ैरख़्वाही के साथ लोगों को ख़ुदा की तरफ बुलाते हैं। वे हर ख़िलाफे हक रवैये से बचते हुए दीन की गवाही देते हैं। वे हक के हक होने को आख़िरी हद तक साबितशुदा बना देते हैं। इस तरह मुंकिरीन के ऊपर वह इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) हो जाता है जो आख़िरत के फैसले के लिए अल्लाह तआला को मत्लूब है।

बातिलपरस्त लाजिमन जेर होते हैं और हकपरस्त लाजिमन उनके ऊपर ग़ालिब आते हैं बशर्ते कि हकपरस्त गिरोह उस अमल को अंजाम दे जो ख़ुदा की सुन्नत (तरीके) के मुताबिक ख़ुदा की हिमायत को हासिल करने के लिए अंजाम देना चाहिए।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝١٢ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝١٣

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जिन लोगों ने इंकार किया वे बरत रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है।

और कितनी ही बस्तियां हैं जो कुव्वत (शक्ति) में तुम्हारी उस बस्ती से ज्यादा थीं जिसने तुम्हें निकाला है। हमने उन्हें हलाक कर दिया। पस कोई उनका मददगार न हुआ। (12-13)

अरब में जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया उन्हें आपने यह पेशगी ख़बर दी कि तुम जो कुछ खा पी रहे हो तो यह मत समझो कि तुम आजाद हो। तुम पूरी तरह ख़ुदा की गिरफ्त में हो। और इसका सुबूत यह है कि अगर तुम अपने इंकार पर कायम रहे तो ख़ुदा के कानून के मुताबिक तुम तबाह कर दिए जाओगे।

यह वाक्या ऐन पेशीनगोई के मुताबिक जुहूर में आया। तौहीद के अलमबरदार ग़ालिब आए और जो लोग शिर्क के अलमबरदार बने हुए थे वे हमेशा के लिए नाबूद (विनष्ट) हो गए।

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۖ فِيْهَآ أَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾

क्या वह जो अपने रब की तरफ से एक वाजेह (स्पष्ट) दलील पर है। वह उसकी तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए ख़ुशनुमा बना दी गई है और वे अपनी ख़्वाहिशात (इच्छाओं) पर चल रहे हैं। जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है उसकी कैफियत यह है कि उसमें नहरें हैं ऐसे पानी की जिसमें तब्दीली न होगी और नहरें होंगी दूध की जिसका मजा नहीं बदला होगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लजीज होंगी और नहरें होंगी शहद की जो बिल्कुल साफ होगा। और उनके लिए वहां हर किस्म के फल होंगे। और उनके रब की तरफ से बख़्शिश (क्षमा) होगी। क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे और उन्हें खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा, पस वह उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (14-15)

बय्यिनह (दलील) पर खड़ा होना अपनी जिंदगी की तामीर हकीकते वाक्या की बुनियाद पर करना है। इसके बरअक्स जो शख़्स अहवा (अपनी ख़्वाहिशात) पर खड़ा होता है वह हकीकते वाक्या से इंहिराफ करता है, वह ख़ुदा की दुनिया में ख़ुदा की मर्जी के ख़िलाफ अपनी दुनिया बनाना चाहता है।

मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में दोनों गिरोह बजाहिर यकसां (समान) मौके पा रहे हैं। मगर आख़िरत की हकीकी दुनिया में सिर्फ पहला गिरोह ख़ुदा की अबदी नेमतों में हिस्सा पाएगा और दूसरा गिरोह हमेशा के लिए जलील और नाकाम होकर रह जाएगा।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ حَتّٰىٓ إِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۚ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा। यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी। और वे अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो अल्लाह उन्हें और ज्यादा हिदायत देता है और उन्हें उनकी परहेजगारी (ईश-परायणता) अता करता है। (16-17)

मुनाफिक आदमी की एक पहचान यह है कि वह संजीदा मज्लिस में बैठता है तो बजाहिर बहुत बाअदब नजर आता है मगर उसका जेहन दूसरी-दूसरी चीजों में लगा रहता है। वह मज्लिस में बैठकर भी मज्लिस की बात नहीं सुन पाता। चुनांचे जब वह मज्लिस से बाहर आता है तो दूसरे असहाबे इल्म से पूछता है कि 'हजरत ने क्या फरमाया।'

यह वह कीमत है जो अपनी ख़्वाहिशपरस्ती की बिना पर उन्हें अदा करनी पड़ती है। वे अपने ऊपर अपनी ख़्वाहिश को ग़ालिब कर लेते हैं। वे दलील की पैरवी करने के बजाए अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि धीरे-धीरे उनके एहसासात कुंद हो जाते हैं। उनकी अक्ल इस काबिल नहीं रहती कि वह बुलन्द हकीकतों का इदराक कर सके।

इसके बरअक्स जो लोग हकीकतों को अहमियत दें, जो सच्ची दलील के आगे झुक जाएं, वे इस अमल से अपनी फिक्री सलाहियत (वैचारिक क्षमता) को जिंदा करते हैं। ऐसे लोगों की मअरफत में दिन-ब-दिन इजाफा होता रहता है। उन्हें अबदी तौर पर जुमूद नाआशना (क्रियाशील) ईमान हासिल हो जाता है।

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنّٰى لَهُمْ إِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾ فَاعْلَمْ أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾

ये लोग तो बस इसके मुंतजिर हैं कि कियामत उन पर अचानक आ जाए तो उसकी अलामतें जाहिर हो चुकी हैं। पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का मौका कहां रहेगा। पस जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और माफी मांगों अपने कुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए। और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को। (18-19)

ज़लज़ले के आने की पेशगी इत्तिलाअ से जो शख़्स चौकन्ना न हो वह गोया ज़लज़ले के आने का मुंतज़िर है। क्योंकि हर अगला लम्हा ज़लज़ले को उसके करीब ला रहा है। इसी तरह कियामत की चेतावनी से आदमी मुतनब्बह (सतर्क) नहीं होता मगर जब कियामत उसके सिर पर टूट पड़ेगी तो वह एतराफ करने लगेगा। मगर उस वक्त का एतराफ उसे फायदा न देगा। क्योंकि एतराफ वह है तो पर्दा उठने से पहले किया जाए। पर्दा उठने के बाद एतराफ की कोई कीमत नहीं।

इस्तिग़्फार (माफी) दरअस्ल एहसासे इज्ज (निर्बलता-भाव) का एक इज़्हार है। कियामत की हौलनाकी का यकीन और अल्लाह की कुदरत और उसके हर चीज से बाख़बर होने का एहसास आदमी के अंदर जो नफ्सियाती हैजान पैदा करता है वह हर लम्हा लतीफ कलिमात में ढलता रहता है। उन्हीं कलिमात को जिक्र और दुआ और इस्तिग़फार कहा जाता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۖ فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

और जो लोग ईमान लाए हैं वे कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती। पस जब एक वाजेह सूरह उतार दी गई और उसमें जंग का भी जिक्र था तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है वे तुम्हारी तरफ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत छा गई हो। पस ख़राबी है उनकी। हुक्म मानना है और भली बात कहना है। पस जब मामले का कतई फैसला हो जाए तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता। पस अगर तुम फिर गए तो इसके सिवा तुमसे कुछ उम्मीद नहीं कि तुम जमीन में फसाद करो और आपस के रिश्तों को तोड़ दो। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर किया, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया। (20-23)

मुनाफ़िक़ (पाखंडी) की पहचान यह है कि वह अल्फ़ाज में सबसे आगे और अमल में सबसे पीछे हो। जिहाद से पहले वह जिहाद की बातें करे और जब जिहाद वाकेयतन पेश आ जाए तो वह उससे भाग खड़ा हो।

सच्चे अहले ईमान का तरीका यह है कि वह हर वक्त सुनने और मानने के लिए तैयार रहे और जब किसी सख़्त इक्दाम का फैसला हो जाए तो अपने अमल से साबित कर दे कि उसने ख़ुदा को गवाह बनाकर जो अहद किया था उस अहद में वह पूरा उतरा।

मुनाफ़िक़ लोग जिहाद से बचने के लिए बजाहिर अम्नपसंदी की बातें करते हैं। मगर अमलन सूरतेहाल यह है कि जहां उन्हें मौका मिलता है वे फौरन शर फैलाना शुरू कर देते हैं। यहां तक कि जिन मुसलमानों से उनकी कराबतें (रिश्ते-नाते) हैं उनकी मुतलक परवाह न करते हुए उनके दुश्मनों के मददगार बन जाते हैं। ऐसे लोग ख़ुदा की नजर में मलऊन हैं। मलऊन होने का मतलब यह है कि आदमी के सोचने समझने की सलाहियत उससे छिन जाए। वह आंख रखते हुए भी न देखे और कान रखते हुए भी कुछ न सुने।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

क्या ये लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं। जो लोग पीठ फेरकर हट गए, बाद इससे कि हिदायत उन पर वाजेह हो गई, शैतान ने उन्हें फरेब दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि ख़ुदा की उतारी हुई चीज को नापसंद करते हैं, कहा कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे। और अल्लाह उनकी राजदारी को जानता है। पस उस वक्त क्या होगा जबकि फरिश्ते उनकी रूहें कब्ज करते होंगे, उनके मुंह और उनकी पीठों पर मारते हुए यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज की पैरवी की जो अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी रिजा को नापसंद किया। पस अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। (24-28)

कुरआन नसीहत की किताब है मगर किसी चीज से नसीहत लेने के लिए जरूरी है कि आदमी नसीहत के बारे में संजीदा हो। अगर कोई ग़लत जज्बा आदमी के अंदर दाख़िल होकर

उसे नसीहत के बारे में ग़ैर संजीदा बना दे तो वह कभी नसीहत से फायदा नहीं उठा सकता, चाहे नसीहत को कितना ही अच्छे अंदाज में बयान किया गया हो।

दीन का कोई ऐसा हुक्म सामने आए जिसमें आदमी को अपनी ख़्वाहिशात और मफ़ादात की कुर्बानी देनी हो तो शैतान फौरन आदमी को कोई झूठा उज़्र समझा देता है। और मौजूदा दुनिया में मोहलते इम्तेहान की वजह से आदमी को मौका मिल जाता है कि वह इस झूठे उज़्र को अमलन भी इख़्तियार कर ले। मगर यह सब कुछ सिर्फ चन्द दिनों तक के लिए है। मौत का वक्त आते ही सारी सूरतेहाल बिल्कुल मुख़ालिफ हो जाएगी।

यहां निफ़ाक़ के लिए इरतिदाद (धर्म त्याग) का लफ़्ज इस्तेमाल किया गया है। मगर मालूम है कि मदीना के उन मुनाफ़िक़ों को इरतिदाद की मुक़र्ररह सजा नहीं दी गई। इससे मालूम हुआ कि इरतिदाद की शरई सजा सिर्फ उन लोगों के लिए है जो एलान के साथ मुरतद (दीन को छोड़ने वाले) हो जाएं। हम ऐसा नहीं कर सकते कि किसी शख़्स को बतौर ख़ुद क़ल्बी मुरतद करार दें और फिर उसे वह सजा देने लगें जो शरीअत में मुरतदीन के लिए मुक़र्रर है।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

जिन लोगों के दिलों में बीमारी है क्या वे ख़्याल करते हैं कि अल्लाह उनके कीने (द्वेषों) को कभी जाहिर न करेगा। और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस तुम उनकी अलामतों से उन्हें पहचान लेते। और तुम उनके अंदाजे कलाम से जरूर उन्हें पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (29-30)

मुनाफ़िक़ीन की बीमारी यह थी कि उनके सीनों में हसद था। मुनाफ़िक़ मुसलमानों को अपने मुख़्लिस बिरादराने दीन से यह हसद क्यों था। इसकी वजह यह थी कि इस्लाम की हर तरक्क़ी उन्हें मुख़्लिस मुसलमानों के हिस्से में जाती हुई नजर आती थी। यह चीज मुनाफ़िकीन के लिए बेहद शाक (असहनीय) थी। वे सोचते थे कि हम ऐसी मुहिम में अपना जान व माल क्यों खपाएं जिसमें दूसरों की हैसियत बढ़े, जिसमें दूसरों को बड़ाई हासिल होती हो।

मुनाफ़िक़ीन अपने जाहिरी रवैये में अपनी इस अंदरूनी हालत को छुपाते थे मगर समझदार लोगों के लिए वह छुपा हुआ न था। मुनाफ़िकीन का मस्नूई (बनावटी) लहजा, उनकी दर्द से ख़ाली आवाज बता देती थी कि इस्लाम से उनका तअल्लुक़ महज दिखावे का तअल्लुक़ है न कि हक़ीक़ी मअनों में क़ल्बी तअल्लुक़।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और साबितकदम रहने वाले हैं और हम तुम्हारे हालात की जांच कर लें। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफत की जबकि हिदायत उन पर वाजेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ नुक्सान न पहुंचा सकेंगे। और अल्लाह उनके आमाल को ढा देगा। (31-32)

आदमी जब ईमान को लेकर खड़ा होता है तो उस पर मुख़ालिफ हालात पेश आते हैं। ये हालात उसके ईमान का इम्तेहान होते हैं। वे तक़ाजा करते हैं कि वह कुर्बानी की कीमत पर अपने मोमिन होने का सुबूत दे। वह अपने नफ़्स को कुचले। वह अपने माद्दी मफ़ादात (हितों) को नजरअंदाज करे। वह लोगों की ईजारसानी (उत्पीड़न) को बर्दाश्त करे। यहां तक कि जान व माल को खपाकर अपने ईमान पर कायम रहे।

मोमिन को इस किस्म के हालात में डालने के लिए जरूरी है कि ग़ैर मोमिनीन को खुली आजादी हासिल हो ताकि वे अहले ईमान के ख़िलाफ हर किस्म की कार्रवाइयां कर सकें। इन कार्रवाइयों के जरिए एक तरफ मुख़ालिफ़ीन का जुर्म साबितशुदा बनता है। दूसरी तरफ उन शदीद हालात में अहले ईमान साबितकदम रहकर दिखा देते हैं कि वे वाकई मोमिन हैं और इस काबिल हैं कि ख़ुदा की मेयारी दुनिया में बसाने के लिए उनका इंतिख़ाब किया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बर्बाद न करो। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका। फिर वे मुंकिर ही मर गए, अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा। पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख़्वास्त न करो। और तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह हरगिज तुम्हारे आमाल में कमी न करेगा। (33-35)

एक रिवायत में आता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में

कुछ मुसलमानों ने यह ख़्याल जाहिर किया कि अगर वे ला इला-ह इल्लल्लाहु का इकरार कर लें तो कोई गुनाह उन्हें नुक्सान न पहुंचाएगा। इस पर यह आयत (33) उतरी। इसकी रोशनी में आयत का मतलब यह है कि आदमी को चाहिए कि वह ईमान के साथ इताअत को जमा करे। वह न सिर्फ बेजरर (सरल) अहकाम की पैरवी करे बल्कि वह उन अहकाम का भी पैरोकार बने जिनके लिए अपने नफ्स को कुचलना और अपने मफाद को ख़तरे में डालना पड़ता है। अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसके साबिका आमाल उसे कुछ फायदा नहीं देंगे।

कमजोर मुसलमानों का हाल यह होता है कि वे हक का साथ इस शर्त पर देते हैं कि वक्त के बड़ों की नाराजगी मोल न लेनी पड़े। जब वे देखते हैं कि हक का साथ देना वक्त के बड़ों को नाराज करने का सबब बन रहा है तो वे उनकी तरफ झुक जाते हैं, चाहे ये बड़े हक के मुंकिर हों और चाहे वे हक को रोकने वाले बने हुए हों।

जो लोग हक का इंकार करें और उसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हो जाएं वे कभी अल्लाह की रहमत नहीं पा सकते। फिर जो लोग ऐसे मुंकिरीन का साथ दें, उनका अंजाम उनसे मुख़्तलिफ क्यों होगा।

इस्लाम में जंग भी है और सुलह भी। मगर वह जंग इस्लामी जंग नहीं जो इश्तिआल (उत्तेजना) की बिना पर लड़ी जाए। इसी तरह वह सुलह भी इस्लामी सुलह नहीं जिसका मुहर्रिक (प्रेरक) बुजदिली और कमहिम्मती हो। कामयाबी हासिल करने के लिए जरूरी है कि दोनों चीजें सोचे समझे फैसले के तहत की जाएं न कि महज जज्बाती रद्देअमल के तहत।

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِن يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ﴿٣٨﴾

दुनिया की जिंदगी तो महज एक खेल तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओ और तक्वा (ईशपरायणता) इख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुमसे न मांगेगा। अगर वह तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर आख़िर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करने लगो और अल्लाह तुम्हारे कीने को जाहिर कर दे। हां, तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, पस तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं। और जो शख़्स बुख़्ल करता। तो वह अपने ही से बुख़्ल करता है। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तुम मोहताज हो। और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (36-38)

ईमान और तक्वे की जिंदगी इख़्तियार करने में जो चीज रुकावट बनती है वह दुनिया के फायदे और दुनिया की रौनकें हैं। आदमी जानता है कि वह कौन सा रवैया है जो आख़िरत में उसे कामयाब बनाने वाला है। मगर वक्ती मस्लेहतों का ख़्याल उसके ऊपर ग़ालिब आता है और वह बेराहरवी की तरफ चला जाता है। हालांकि वाकया यह है कि अल्लाह अपने बंदों के हक में बेहद महरबान है। वह कभी इंसान से इतना बड़ा मुतालबा नहीं करता जो उसके लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो। जिसके नतीजे में यह हो कि उसका भरम खुल जाए और उसकी छुपी हुई बशरी (इंसानी) कमजोरियां लोगों के सामने आ जाएं।

इस्लाम ख़ुदा का दीन है। मगर इसकी इशाअत (प्रचार-प्रसार) और हिफाजत का काम इस आलमे असबाब में इंसानी गिरोह के जरिये अंजाम पाना है। मुसलमान यही इंसानी गिरोह हैं। मुसलमान अगर अपने फरीजे को अंजाम दें तो वे ख़ुदा की नजर में बाकीमत ठहरेंगे। लेकिन अगर वे इस फरीजे को अंजाम देने में नाकाम रहें तो अल्लाह दूसरी कौमों को ईमान की तौफीक देगा और उनके जरिए अपने दीन का तसलसुल बाकी रखेगा।

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ ﴿٤٨﴾ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢﴾ وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ﴿٣﴾

आयतें-29 सूरह-48. अल-फत्ह रुकूअ-4

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक हमने तुम्हें खुली फतह दे दी। ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ख़ताएं माफ कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत की तक्मील कर दे। और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाए। और तुम्हें जबरदस्त मदद अता करे। (1-3)

सन् 6 हि० में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने असहाब के साथ मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए ताकि वहां उमरा अदा कर सकें। आप हुदैबिया के मकाम पर पहुंचे थे कि मक्का के मुश्रिकीन ने आगे बढ़कर आपको रोक दिया और कहा कि हम आपको मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे। इसके बाद बातचीत शुरू हुई जिसके नतीजे में फरीकैन (पक्षों) के दर्मियान एक मुआहिदा सुलह करार पाया।

यह मुआहिदा बजाहिर यकतरफा तौर पर मुश्रिकीन की शराइत पर हुआ था। असहाबे रसूल उससे सख़्त कुबीदाख़ातिर (हताश) थे। वे इसे जिल्लत की सुलह समझते थे। मगर आप हुदैबिया से वापस होकर अभी रास्ते ही में थे कि यह आयत उतरी 'हमने तुम्हें खुली फतह

दे दी' इसकी वजह यह थी कि इस मुआहिदे के तहत यह करार पाया था कि दस साल तक मुसलमानों और मुश्रिकीन के दर्मियान लड़ाई नहीं होगी। लड़ाई का बंद होना दरअस्ल दावत का दरवाजा खुलने के हममअना था। हिजरत के बाद मुसलसल जंगी हालत के नतीजे में दावत का काम रुक गया था। अब जंगबंदी ने दोनों फरीकों के दर्मियान खुले तबादले ख़्याल की फ़ज़ा पैदा कर दी।

इस तरह इस मुआहिदे ने मैदान मुक़ाबले को बदल दिया। पहले दोनों फरीकों का मुक़ाबला जंग के मैदान में होता था जिसमें फरीके सानी (प्रतिपक्षी) बरतर हैसियत रखता था। अब मुक़ाबला नजरिये के मैदान में आ गया। और नजरिये के मैदान में शिर्क के मुक़ाबले में तौहीद को वाजेह तौर पर बरतर हैसियत हासिल थी। यही इस मामले में 'सीधा रास्ता' था यानी वह रास्ता जिसमें तौहीद के अलमबरदारों के लिए फ़तह को यकीनी बनाया।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّاۗنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

वही है जिसने मोमिनों के दिल में इत्मीनान उतारा ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाए। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे। और ताकि उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दे। और यह अल्लाह के नजदीक बड़ी कामयाबी है। और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अजाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते थे। बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है। और उन पर अल्लाह का ग़जब हुआ और उन पर उसने लानत की। और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4-7)

यहां 'सकीनत' से मुराद इश्तिआल (उत्तेजना) के बावजूद मुशतइल (उत्तेजित) न होना है। हुदैबिया के सफर में मुख़ालिफीने इस्लाम ने तरह-तरह से मुसलमानों को इश्तिआल दिलाने की कोशिश की ताकि वे मुशतइल होकर कोई ऐसी कार्रवाई करें जिसके बाद उनके ख़िलाफ जारिहियत का जवाज मिल जाए। मगर मुसलमान हर इश्तिआल को यकतरफ़ा तौर पर बर्दाश्त करते रहे। वे आख़िरी हद तक एराज की पॉलिसी पर कायम रहे।

ख़ुदा चाहे तो अपनी बराहेरास्त कुव्वत से बातिल को जेर कर दे। और हक को गलबा अता फरमाए। फिर ख़ुदा क्यों ऐसा करता है कि वह 'सुलह हुदैबिया' जैसे हालात में डाल कर अहले ईमान को उनका सफर कराता है। इसका मक्सद ईमान वालों के ईमान में इजाफ़ा है। आदमी जब अपने अंदर इंतकाम की नफ़्सियात को दबाए और एक सरकश कौम से इसलिए सुलह कर ले कि हक की दावत का तक़ाजा यही है तो वह अपने शुऊरी फ़ैसले के तहत वह काम करता है जिसे करने के लिए उसका दिल राजी न था। इस तरह वह अपने शुऊरी ईमान को बढ़ाता है। वह अपने आपको ऐसी रब्बानी कैफ़ियत का महबित (उतरने की जगह) बनाता है जिसे किसी और तदबीर से हासिल नहीं किया जा सकता। फिर इस अमल का यह फायदा भी है कि इसके जरिए से जन्नत वाले लोग अलग हो जाते हैं और जहन्नम वाले लोग अलग।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۭ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۭ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰي نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝

बेशक हमने तुम्हें गवाही देने वाला और बशारत (शुभ-सूचना) देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी ताजीम (सम्मान) करो। और तुम अल्लाह की तस्बीह करो सुबह व शाम। जो लोग तुमसे बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं वे दरहकीकत अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। फिर जो शख़्स उसे तोड़ेगा उसके तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख़्स उस अहद (वचन) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज्र अता फरमाएगा। (8-10)

शाह वलीउल्लाह साहब ने शाहिद का तर्जुमा इज़्हारे हक कुनिंदा (हक का इज़्हार करने वाला) किया है। यही इस लफ़्ज का सहीतरीन मफ़्हूम है। पैग़म्बर का अस्ल काम यह होता है कि वह हकीकत का एलान व इज़्हार कर दे। वह वाजेह तौर पर बता दे कि मौत के बाद की अबदी जिंदगी में किन लोगों के लिए ख़ुदा का इनाम है और किन लोगों के लिए ख़ुदा की सजा।

ऐसे एक शाहिदे हक का खड़ा होना उसके मुख़ातबीन के लिए सबसे ज्यादा सख़्त इम्तेहान होता है। उन्हें एक बशर की आवाज में ख़ुदा की आवाज को सुनना पड़ता है। एक बजाहिर इंसान को ख़ुदा के नुमाइंदे के रूप में देखना पड़ता है। एक इंसान के हाथ में अपना हाथ देते हुए यह समझना पड़ता है कि वे अपना हाथ ख़ुदा के हाथ में दे रहे हैं। जो लोग इस आला मअरफत का सुबूत दें उनके लिए ख़ुदा के यहां बहुत बड़ा अज्र है और जो लोग इस इम्तेहान में नाकाम रहें उनके लिए सख़्ततरीन सजा।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ
يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾ بَلْ
ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي
قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾ وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٤﴾

जो देहाती पीछे रह गए वे अब तुमसे कहेंगे कि हमें हमारे अमवाल (धन-सम्पत्ति) और हमारे बाल बच्चों ने मशग़ूल रखा, पस आप हमारे लिए माफी की दुआ फरमाएं। यह अपनी जबानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इख़्तियार रखता हो। अगर वह तुम्हें कोई नुक्सान या नफा पहुंचाना चाहे। बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो। बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ लौटकर न आएंगे। और यह ख़्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नजर आया और तुमने बहुत बुरे गुमान किए। और तुम बर्बाद होने वाले लोग हो गए। और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुंकिरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। और आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अजाब दे। और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (11-14)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में ख़्वाब देखा था कि आप मक्का का सफर बराए उमरा कर रहे हैं। उसके मुताबिक आप असहाब (साथियों) के साथ मक्का के लिए रवाना हुए। मगर उस वक्त हालात बेहद ख़राब थे। शदीद अंदेशा था कि

कुरैश से टकराव हो और मुसलमान बुरी तरह मारे जाएं। चुनांचे मक्का के करीब पहुंच कर कुरैश ने मुसलमानों की जमाअत पर पत्थर फेंके और तरह-तरह से छेड़ा ताकि वे मुशतइल (उत्तेजित) होकर लड़ने लगें। और कुरैश को उनके ख़िलाफ जारिहियत का मौका मिले। मगर मुसलमानों के यकतरफा सब्र व एराज ने इसका मौका आने नहीं दिया।

अतराफ मदीना के बहुत से कमजोर मुसलमान इसी अंदेशे की बिना पर सफर में शरीक नहीं हुए थे। जब आप बहिफाजत वापस आ गए तो ये लोग आपके पास अपनी वफादारी जाहिर करने के लिए आए। और आपसे माफी मांगने लगे। मगर उन्हें माफी नहीं दी गई। इसकी वजह यह थी कि उनका उज़्र झूठा उज़्र था न कि सच्चा उज़्र। अल्लाह के यहां हमेशा सच्चा उज़्र काबिले कुबूल होता है और झूठा उज़्र हमेशा नाकाबिले कुबूल।

उन लोगों का ख़ुदा के रसूल के साथ सफर में शरीक न होना बेयकीनी की वजह से था न कि किसी वाकई उज़्र की बिना पर। वे समझते थे कि ऐसे पुरख़तर सफर से दूर रहकर वे अपने मफादात को महफूज कर रहे हैं। उन्हें मालूम न था कि नफा और नुक्सान का मालिक ख़ुदा है। अगर ख़ुदा न बचाए तो किसी की हिफाजती तदबीरें उसे बचाने वाली नहीं बन सकतीं। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में भी बर्बादी है और आख़िरत में भी बर्बादी।

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ
أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ
تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾

जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें। कहो कि तुम हरगिज हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह पहले ही यह फरमा चुका है। तो वे कहेंगे बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो। बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं। (15)

सुलह हुदैबिया से पहले यहूद मुसलमानों की दुश्मनी में बहुत जरी थे। क्योंकि इससे पहले उन्हें इस मामले में कुरैश का पूरा तआवुन हासिल था। हुदैबिया में कुरैश से ना जंग मुआहिदा ने यहूद को कुरैश से काट दिया। इसके बाद वे अकेले रह गए। इससे ख़ैबर, तेमा, फिदक वग़ैरह के यहूदियों के हौसले टूट गए। चुनांचे सुलह के तीन महीने बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर पर चढ़ाई की तो वहां के यहूद ने लड़े भिड़े बग़ैर हथियार डाल दिए और उनके कसीर अमवाल (विपुल धन) मुसलमानों को ग़नीमत में मिले।

कमजोर ईमान के लोग जो हुदैबिया के सफर को पुरख़तर समझ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गए थे, अब उन्होंने चाहा कि वे यहूदियों के ख़िलाफ कार्रवाई में शरीक हों और माले ग़नीमत में अपना हिस्सा हासिल करें। मगर उन्हें साथ जाने से रोक दिया गया। ख़ुदा का कानून यह है कि जो ख़तरा मोल ले वह नफा हासिल करे।

आदमी जब ख़तरा मोल लिए बग़ैर हासिल करना चाहे तो गोया वह कानूने इलाही को बदल देना चाहता है। मगर इस दुनिया में ख़ुदा के कानून को बदलना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾

पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि अनकरीब तुम ऐसे लोगों की तरफ़ बुलाए जाओगे जो बड़े ज़ोरआवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वे इस्लाम लाएंगे। पस अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे जैसा कि तुम इससे पहले रूगर्दानी कर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अजाब देगा। न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख़्स रूगर्दानी करेगा उसे वह दर्दनाक अजाब देगा। (16-17)

जिन लोगों ने हुदैबिया (6 हि०) के मौके पर कमज़ोरी दिखाई थी वे उसके नतीजे में मिलने वाले इनाम से तो महरूम रहे। मगर उनके लिए दरवाज़ा अब भी बंद न था। क्योंकि तौहीद की मुहिम को अभी दूसरे बड़े-बड़े मअरके पेश आने बाकी थे। फ़रमाया गया कि अगर तुमने आइंदा पेश आने वाले इन मौकों पर कुर्बानी का सुबूत दिया तो दुबारा तुम ख़ुदा की रहमतों के मुस्तहिक हो जाओगे।

इस क़िस्म का इम्तेहान आदमी के मोमिन या मुनाफ़िक़ होने का फ़ैसला करता है। इससे मुस्तसना (अपवाद) सिर्फ़ वे लोग हैं जिन्हें कोई वाकई उज़्र लाहिक हो। मजबूराना कोताही को अल्लाह माफ़ फ़रमा देता है। मगर जो कोताही मजबूरी के बग़ैर की जाए वह अल्लाह के यहां काबिले माफ़ी नहीं।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا

فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾

अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हो गया जबकि वे तुमसे दरख़्त के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। पस उसने उन पर सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई और उन्हें इनाम में एक क़रीबी फ़तह दे दी। और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे। और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम लोगे, पस यह उसने तुम्हें फ़ौरी तौर पर दे दिया। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए और ताकि अहले ईमान के लिए यह एक निशानी बन जाए। और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए। और एक फ़तह और भी है जिस पर तुम अभी कादिर नहीं हुए। अल्लाह ने उसका इहाता (आच्छादन) कर रखा है। और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (18-21)

हुदैबिया के सफ़र में एक मौके पर यह ख़बर फैली कि कुरैश ने हज़रत उस्मान को क़त्ल कर दिया जो उनके यहां रसूलुल्लाह के सफ़ीर (संदेशवाहक) के तौर पर गए थे। यह एक जारिहियत का मामला था। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कीकर के एक दरख़्त के नीचे बैठकर अपने चौदह सौ असहाब से यह बैअत ली कि वे मर जाएंगे मगर दुश्मन को पीठ नहीं दिखाएंगे। इस्लाम की तारीख़ में इस बैअत का नाम बैअते रिज़वान है।

यह बैअत जिस मकाम पर ली गई वह मदीना से ढाई सौ मील और मक्का से सिर्फ़ बारह मील के फ़ासले पर था। गोया मुसलमान अपने मर्कज़ से बहुत दूर थे और कुरैश अपने मर्कज़ से बहुत करीब। मुसलमान उमरे की नियत से निकले थे। इसलिए उनके पास महज़ सफ़री सामान था, जबकि कुरैश हर क़िस्म के जंगी सामान से मुसल्लह थे। ऐसे नाज़ुक मौके पर यह सिर्फ़ लोगों का जज़्बए इख़्लास (निष्ठा-भाव) था जिसने उन्हें आमादा किया कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दें। क्योंकि कोई ज़ाहिरी दबाव वहां सिरे से मौजूद ही न था।

'अल्लाह ने उनके दिलों का हाल जाना और सकीनत नाज़िल फ़रमाई' इससे मुराद वह रंज व इज़तिराब (बेचैनी) है जो हुदैबिया की बज़ाहिर यकतरफ़ा सुलह से सहाबा के दिलों में पैदा हुआ था। ताहम उन्होंने ख़ुदा के इस हुक्म को सब्र व सुकून के साथ कुबूल कर लिया। इसके नतीजे में चन्द माह बाद ही उसके फ़ायदे ज़ाहिर होना शुरू हो गए। इस मुआहिदे ने कुरैश को यहूद के महाज़ से अलग कर दिया और इस तरह यहूद को मुसख़्ख़र करना आसान हो गया। जंगी हालात ख़त्म होने की वजह से इस्लाम की इशाअत बहुत तेज़ी से बढ़ी, यहां

तक कि ख़ुद कुरैश को दावत की राह से मुसख़्ख़र (विजित) कर लिया गया जिन्हें जंग की राह से मुसख़्ख़र करना मुश्किल बना हुआ था।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

और अगर ये मुंकिर लोग तुमसे लड़ते तो जरूर पीठ फेरकर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते और न मददगार। यह अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो पहले से चली आ रही है। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई तब्दीली न पाओगे। और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए। बाद इसके कि तुम्हें उन पर काबू दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है। (22-24)

पैग़म्बर के मुख़ातबीने अव्वल के लिए ख़ुदा का कानून यह है कि उनके इंकार के बाद वह उन्हें हलाक कर देता है। हुदैबिया के मौके पर कुरैश का इंकार आख़िरी तौर पर सामने आ गया था। ऐसी हालत में अगर जंग की नौबत आती तो मुसलमानों की तक्वियत (सशक्तता) के लिए ख़ुदा के फरिश्ते उतरते और वे मुसलमानों का साथ देकर उनके दुश्मनों का ख़ात्मा कर देते।

मगर मुश्रिकीन के सिलसिले में अल्लाह की मस्लेहत यह थी कि उन्हें हलाक न किया जाए। बल्कि उनकी ग़ैर मामूली इंसानी सलाहियतों को इस्लाम के मक्सद के लिए इस्तेमाल किया जाए। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को नाजंग मुआहिदे की तरफ रहनुमाई फरमाई।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

वही लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और कुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुंचें। और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम लाइल्मी में पीस डालते, फिर उनके कारण तुम पर बेख़बरी में इल्जाम आता, ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत

में दाख़िल करे। और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो मुंकिर थे उन्हें हम दर्दनाक सजा देते। (25)

कुरैश के सरदारों ने पैग़म्बर के ख़िलाफ अपनी दुश्मनाना हरकतों से अपने आपको अजाब का मुस्तहिक बना लिया था और इस काबिल बना लिया था कि उनसे जंग की जाए। मगर एक अजीमतर मस्लेहत की ख़ातिर उनसे जंग के बजाए सुलह कर ली गई। वह मस्लेहत यह थी कि इस वक्त कुरैश की जमाअत में बहुत से दूसरे लोग भी थे जो या तो अपने दिल में शिर्क से तौबा करके तौहीद पर ईमान ला चुके थे या ऐसे लोग थे जिनकी सालिहियत (सज्जनता) की बिना पर यकीनी था कि हालात के मोअतदिल (नॉर्मल) होते ही वे इस्लाम कुबूल कर लेंगे। इसलिए अल्लाह तआला ने दोनों फरीकों के दर्मियान जंग न होने दी। ताकि वे लोग मोमिन बनकर दुनिया में अपना इस्लामी हिस्सा अदा करें और आख़िरत में ख़ुदा का इनाम हासिल करें। अल्लाह की नजर में हर दूसरी मस्लेहत के मुकाबले में दावत की मस्लेहत ज्यादा अहमियत रखती है।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

जब इंकार करने वालों ने अपने दिलों में हमिय्यत (हठ) पैदा की, जाहिलियत की हमिय्यत, फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई अपने रसूल पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उन्हें तकवा (ईशपरायणता) की बात पर जमाए रखा और वे उसके ज्यादा हक्दार और उसके अहल थे। और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (26)

जिस आदमी के अंदर अल्लाह का डर पैदा हो जाए उसके दिल से एक अल्लाह के सिवा हर दूसरी चीज की अहमियत निकल जाती है। वह सिर्फ एक अल्लाह को सारी अहमियत देने लगता है। हुदैबिया का मौका सहाबा के लिए इसी किस्म का एक शदीद इम्तेहान था जिसमें वे पूरे उतरे। इस मौके पर फरीके सानी (प्रतिपक्ष) ने जाहिलाना जिद और कौमी अस्बियत का जबरदस्त मुजाहिरा किया। मगर सहाबा हर चीज को ख़ुदा के ख़ाने में डालते चले गए। उनके मुत्तकियाना मिजाज ने उन्हें इस सख़्त इम्तेहान में जवाबी जिद और जवाबी अस्बियत से बचाया। वे मुसलसल इश्तिआलअंगेजी के बावजूद आख़िर वक्त तक मुशतइल नहीं हुए।

لَّقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया जो वाकया के अनुसार है। बेशक अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे हराम में जरूर दाख़िल होगे, अम्न के साथ, बाल मूंडते हुए अपने सरों पर और कतरते हुए, तुम्हें कोई अंदेशा न होगा। पस अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने एक फतह (विजय) दे दी। (27)

हुदैबिया का सफर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक ख़्वाब पर हुआ था। आपने मदीना में ख़्वाब देखा कि आप मक्का पहुंच कर उमरा अदा फरमा रहे हैं। इस ख़्वाब को लोगों ने ख़ुदा की बिशारत समझा और मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए। मगर हुदैबिया में कुरैश ने रोका और बिलआख़िर उमरा अदा किए बग़ैर लोगों को वापस आना पड़ा। इससे कुछ लोगों को ख़्याल हुआ कि क्या पैग़म्बर का ख़्वाब सच्चा न था। मगर यह महज शुबह था। क्योंकि ख़्वाब में यह सराहत न थी कि उमरा इसी साल होगा। चुनांचे ख़ुद मुआहिदे की शराइत के मुताबिक अगले साल जीकअदह सन् 7 हि० में यह उमरा पूरे अम्न व अमान के साथ अदा किया गया। इस उमरे को इस्लामी तारीख़ में उमरतुल कजा कहा जाता है।

इस साल उमरा का इल्तिवा (स्थगन) एक अजीम मस्लेहत की कीमत पर हुआ था। यह मस्लेहत कि इसके जरिए कुरैश से दस साल का नाजंग मुआहिदा तै पाया और नतीजतन दावत के काम के लिए मुवाफ़िक़ फजा पैदा हुई। यह ख़ुद एक फतह थी। क्योंकि इसके जरिए से अलमबरदारे शिर्क (बहुदेववाद के ध्वजावाहकों) के ऊपर आख़िरी और कुल्ली फतह का दरवाजा खुला।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۭ

और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ भेजा ताकि वह इसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह काफी गवाह है। (28)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो हैसियतें थीं। एक यह कि आप पैग़म्बर थे। दूसरे यह कि आप पैग़म्बर आख़िरुज्जमां (अंतिम पैग़म्बर) थे। आपके बाद कोई और पैग़म्बर आने वाला नहीं। पहली हैसियत के एतबार से आपको भी वही काम करना था जो तमाम पैग़म्बरों ने किया, यानी तौहीद का एलान और आख़िरत का इंजार व तबशीर (डरावा और ख़ुशख़बरी)

दूसरी हैसियत का मामला मुख़्तलिफ था। दूसरी हैसियत के एतबार से आपके जरिए वे तारीख़ी हालात पैदा करना मत्लूब था जो किताबे इलाही और सुन्नते नबवी की हिफाजत की जमानत बन जाएं। ताकि दुबारा वह ख़ला (रिक्तता) पैदा न हो जिसके नतीजे में पैग़म्बर भेजना जरूरी हो जाता है। इस दूसरे पहलू का तकाजा था कि आपकी दावत सिर्फ 'एलान'

पर ख़त्म न हो बल्कि वह 'इंकिलाब' तक पहुंचे। इंकिलाब से मुराद आलमी तारीख़ में वह तब्दीली पैदा करना है जिसके बाद वे हालात हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएं जिनकी वजह से बार-बार ख़ुदा की हिदायत मादूम (विलुप्त) या तब्दील हो गई और इसकी जरूरत पेश आई कि नया पैग़म्बर आकर दुबारा हिदायत को असली सूरत में जिंदा करे।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَي الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ٻ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۾ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे मुंकिरों पर सख़्त हैं और आपस में महरबान हैं तुम उन्हें रुकूअ में और सज्दे में देखोगे, वे अल्लाह का फ़ज्ल और उसकी रिजामंदी की तलब में लगे रहते हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर है सज्दे के असर से, उनकी यह मिसाल तौरात में है। और इंजील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसे मजबूत किया, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है ताकि उनसे मुंकिरों को जलाए। उनमें से जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किया अल्लाह ने उनसे माफी का और बड़े सवाब का वादा किया है। (29)

पैग़म्बरे इस्लाम को एक अजीम तारीख़ी किरदार अदा करना था जिसे क़ुरआन में इज्हारे दीन कहा गया है। इस तारीख़ी किरदार के लिए आपको आला इंसानों की एक जमाअत दरकार थी। यह जमाअत हजरत इस्माईल को अरब के सहरा में आबाद करके ढाई हजार साल के अंदर तैयार की गई। यह एक हकीकत है कि बनू इस्माईल का यह गिरोह तारीख़ का जानदारतरीन गिरोह था। उनकी यह बिलक़ुव्वह (Potential) सलाहियत जब क़ुरआन से फैज़याब हुई तो प्रोफेसर मारगोलेथ के अल्फाज में अरब की यह कौम हीरोज़ (नायकों) की एक कौम (A nation of heroes) में तब्दील हो गई। इस गिरोह की अहमियत ख़ुदा की नजर में इतनी ज्यादा थी कि उनके बारे में उसने पेशगी तौर पर अपने पैग़म्बरों को बाख़बर कर दिया था। चुनांचे तौरात में उनकी इंफिरादी (व्यक्तिगत) ख़ुसूसियत दर्ज कर दी गई थी और इंजील में उनकी इज्तिमाई (सामूहिक) ख़ुसूसियत।

इस गिरोह के फर्द-फर्द की यह ख़ुसूसियत बताई कि वे मुंकिरों के लिए सख़्त और मोमिनों के लिए नर्म हैं। यानी उनका रवैया उसूल के तहत मुतअय्यन होता है न कि महज

ख़्वाहिशात और जज्बात के तहत। शाह अब्दुल कादिर साहब इसकी तशरीह में लिखते हैं 'जो तुंदी और नर्मी अपनी ख़ू (स्वभाव) हो वह सब जगह बराबर चले और जो ईमान से संवर कर आए वह तुंदी अपनी जगह और नर्मी अपनी जगह' इसी तरह उनके अफराद का मिजाज यह है कि वे ख़ुदा के आगे झुकने वाले और उसकी इबादत और जिक्र में लगे रहने वाले हैं। ख़ुदा की तरफ उनकी तवज्जोह इतनी बढ़ी हुई है कि उसका निशान उनके चेहरों पर नुमायां हो रहा है। असहाबे रसूल की ये सिफात इस तफ़्सील के साथ मौजूदा मुहर्रफ (परिवर्तित) तौरात में नहीं मिलतीं। ताहम किताब इस्तसना (बाब 33) में कुदसियों (Saints) का लफ्ज अभी तक मौजूद है।

अलबत्ता इंजील की पेशीनगोई आज भी मरकिस (बाब 4) और मत्ता (बाब 13) में मौजूद है। यह तमसील की जबान में इस बात का एलान है कि इस्लाम की दावत एक पौधे की तरह मक्का से शुरू होगी। फिर वह बढ़ते-बढ़ते एक ताकतवर दरख़्त बन जाएगी। यहां तक कि उसका इस्तहकाम इस दर्जे को पहुंच जाएगा कि अहले हक उसे देखकर ख़ुश होंगे और अहले बातिल ग़ैज व हसद में मुब्तिला होंगे कि वे चाहने के बावजूद उसका कुछ बिगाड़ नहीं सके।

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِيْ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

आयतें-18 सूरह-49. अल-हुजुरात रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

रसूल की राय से अपनी राय को ऊपर करना हराम है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिंदगी में इसकी सूरत यह थी कि मज्लिस में गुफ्तगू करते हुए कोई बढ़-बढ़कर बातें करे, वह आपकी बात पर अपनी बात को मुकद्दम करना चाहे। बाद के जमाने में इसका मतलब यह है कि आदमी ख़ुदा व रसूल की दी हुई हिदायत से आजाद होकर अपनी राय क़ायम करने लगे।

इस किस्म की ग़फलत हमेशा इसलिए होती है कि आदमी यह भूल जाता है कि अल्लाह उसके ऊपर निगरां है। अगर वह जाने कि उसके मुंह से निकली हुई आवाज इंसानों तक पहुंचने से पहले अल्लाह तक पहुंच रही है तो आदमी की जबान रुक जाए, वह बोलने से

ज्यादा चुप रहने को अपने लिए पसंद करने लगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ② اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ④ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

ऐ ईमान वालो, तुम अपनी आवाजें पैग़म्बर की आवाज से ऊपर मत करो और न उसे इस तरह आवाज देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाजें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक्वे (ईशपरायणता) के लिए जांच लिया है। उनके लिए माफी है और बड़ा सवाब है। जो लोग तुम्हें हुजरों कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। और अगर वे सब्र करते यहां तक कि तुम ख़ुद उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (2-5)

अतराफे मदीना के देहाती कबीले शुऊरी एतबार से ज्यादा पुख़्ता न थे। उनके सरदारों का हाल यह था कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आते तो आपको मुख़ातब करते हुए या रसूलल्लाह कहने के बजाए या मुहम्मद कहते। उनकी गुफ्तगू मुतवाजआना (विनम्र शालीन) न होती बल्कि मुतकब्बिराना (घमंडपूर्ण) होती। इससे उन्हें मना किया गया। रसूल दुनिया में ख़ुदा का नुमाइंदा होता है। उसके सामने इस तरह की नाशाइस्तगी (अभद्रता) ख़ुदा के सामने नाशाइस्तगी है जो कि आदमी को बिल्कुल बेकीमत बना देने वाली है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के बाद आपकी लाई हुई हिदायत दुनिया में आपकी क़ायम मकाम (स्थानापन्न) है। अब इस हिदायत के साथ वही ताबेदारी मत्लूब है जो ताबेदारी रसूल की जिंदगी में रसूल की जात के साथ मत्लूब होती थी।

अल्लाह का डर आदमी को संजीदा बनाता है। किसी के दिल में अगर वाकेयतन अल्लाह का डर पैदा हो जाए तो वह ख़ुद अपने मिजाज के तहत वे बातें जान लेगा जिसे दूसरे लोग बताने के बाद भी नहीं जानते।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, अगर कोई फासिक (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास ख़बर लाए तो तुम अच्छी तरह तहकीक कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुक्सान पहुंचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। और जान लो कि तुम्हारे दर्मियान अल्लाह का रसूल है। अगर वह बहुत से मामलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में मरग़ूब (प्रिय) बना दिया, और कुफ़ और फिस्क (अवज्ञा) और नाफरमानी से तुम्हें मुतनफ्फिर (खिन्न) कर दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के फज्ल और इनाम से राहेरास्त (सन्मार्ग) पर हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-8)

कोई आदमी दूसरे शख़्स के बारे में अगर ऐसी ख़बर दे जिसमें उस शख़्स पर कोई इल्जाम आता हो तो ऐसी ख़बर को महज सुनकर मान लेना ईमानी एहतियात के सरासर ख़िलाफ है। सुनने वाले पर लाजिम है कि वह इसकी जरूरी तहकीक करे, और जो राय कायम करे ग़ैर जानिबदाराना (निष्पक्ष) तहकीक के बाद करे न कि तहकीक से पहले।

अक्सर ऐसा होता है कि जब इस किस्म की ख़बर एक शख़्स को मिलती है तो उसके साथी फौरन उसके ख़िलाफ इक्दाम की बातें करने लगते हैं। यह सख़्त ग़ैर जिम्मेदारी की बात है। न किसी आदमी को ऐसी ख़बर पर तहकीक से पहले कोई राय कायम करना चाहिए और न उसके साथियों को तहकीक से पहले इक्दाम का मश्विरा देना चाहिए।

जो लोग वाकई हिदायत के रास्ते पर आ जाएं उनके अंदर बिल्कुल मुख़ालिफ मिजाज पैदा होता है। दूसरों पर इल्जाम तराशी से उन्हें नफरत हो जाती है। ग़ैर तहकीकी बात पर बोलने से ज्यादा वे उस पर चुप रहना पसंद करते हैं। उनका यह मिजाज इस बात की अलामत होता है कि उन्हें ख़ुदा की रहमतों में से हिस्सा मिला है। वह ईमान फिलवाकअ उनकी जिंदगियों में उतरा है जिसका वे अपनी जबान से इकरार कर रहे हैं।

وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا

عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके दर्मियान सुलह कराओ। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज्यादती करता है। यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए। फिर अगर वह लौट आए तो उनके दर्मियान अद्ल (न्याय) के साथ सुलह कराओ और इंसाफ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। मुसलमान सब भाई हैं, पस अपने भाइयों के दर्मियान मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (9-10)

मुसलमान आपस में किस तरह रहें, इसका जवाब एक लफ्ज में यह है कि वे इस तरह रहें जिस तरह भाई-भाई आपस में रहते हैं। दीनी रिश्ता ख़ूनी रिश्ते से किसी तरह कम नहीं। अगर दो मुसलमान आपस में लड़ जाएं तो बकिया मुसलमानों को हरगिज ऐसा नहीं करना चाहिए कि वे उनके दर्मियान मजीद आग भड़काएं। बल्कि उन्हें भाइयों वाले जज्बे के तहत दोनों के दर्मियान मुसालिहत के लिए उठ जाना चाहिए।

दो मुसलमान जब आपस में लड़ें तो एक सूरत यह है कि बकिया मुसलमान ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) बन जाएं। या अगर वे दख़ल दें तो इस तरह कि ख़ानदानी और गिरोही अस्बियत के तहत 'अपनों' से मिलकर 'ग़ैरों' से लड़ने लगें। ये तमाम तरीके इस्लाम के ख़िलाफ हैं। सही इस्लामी तरीका यह है कि अस्ल मामले की तहकीक की जाए और जो शख़्स हक पर हो उसका साथ दिया जाए और जो शख़्स नाहक पर हो उसे मजबूर किया जाए कि वह मामले के मुंसिफाना फैसले पर राजी हो।

अल्लाह से डरने वाला आदमी कभी ऐसा नहीं हो सकता कि वह दूसरों को लड़ते हुए देखकर उससे लज्जत ले। वह ऐसे मंजर देखकर तड़पेगा। उसका मिजाज उसे मजबूर करेगा कि वह दोनों के दर्मियान तअल्लुकात को दुरुस्त कराने की कोशिश करे। यही वे लोग हैं जिनके लिए अल्लाह पर ईमान अल्लाह की रहमतों का दरवाजा खोलने का सबब बन जाता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاۗءٌ مِّنْ نِّسَاۗءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो, न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे को बुरे लकब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना बुरा है। और जो बाज न आएं तो वही लोग जालिम हैं। (11)

हर आदमी के अंदर पैदाइशी तौर पर बड़ा बनने का जज्बा छुपा हुआ है। यही वजह है कि एक शख़्स को दूसरे शख़्स की कोई बात मिल जाए तो वह उसे ख़ूब नुमायां करता है ताकि इस तरह अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा साबित करे। वह दूसरे का मजाक उड़ाता है, वह दूसरे पर ऐब लगाता है, वह दूसरे को बुरे नाम से याद करता है ताकि उसके जरिए से अपने बड़ाई के जज्बे की तस्कीन हासिल करे।

मगर अच्छा और बुरा होने का मेयार वह नहीं है जो आदमी बतौर ख़ुद मुकर्रर करे। अच्छा दरअस्ल वह है जो ख़ुदा की नजर में अच्छा हो और बुरा वह है जो ख़ुदा की नजर में बुरा ठहरे। अगर आदमी के अंदर फिलवाकअ इसका एहसास पैदा हो जाए तो उससे बड़ाई का जज्बा छिन जाएगा। दूसरे का मजाक उड़ाना, दूसरे को ताना देना, दूसरे पर ऐब लगाना, दूसरे को बुरे लकब से याद करना, सब उसे बेमअना मालूम होने लगेंगे। क्योंकि वह जानेगा कि लोगों के दर्जे व मर्तबे का अस्ल फैसला ख़ुदा के यहां होने वाला है। फिर अगर आज मैं किसी को हकीर (तुच्छ) समझूं और आख़िरत की हकीकी दुनिया में वह बाइज्जत करार पाए तो मेरा उसे हकीर समझना किस कद्र बेमअना होगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ
وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ
مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

ऐ ईमान वालो, बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और टोह में न लगो। और तुम में से कोई किसी की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) न करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इसे तुम ख़ुद नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (12)

एक आदमी किसी शख़्स के बारे में बदगुमान हो जाए तो उसकी हर बात उसे ग़लत मालूम होने लगती है। उसके बारे में उसका जेहन मंफी रुख़ पर चल पड़ता है। उसकी ख़ूबियों से ज्यादा वह उसके ऐब तलाश करने लगता है। उसकी बुराइयों को बयान करके उसे बेइज्जत

करना उसका महबूब मशग़ला बन जाता है।

अक्सर समाजी ख़राबियों की जड़ बदगुमानी है। इसलिए जरूरी है कि आदमी इस सिलसिले में चौकन्ना रहे। वह बदगुमानी को अपने जेहन में दाख़िल न होने दे।

आपको किसी से बदगुमानी हो जाए तो आप उससे मिलकर गुफ़्तगू कर सकते हैं। मगर यह सख़्त ग़ैर अख़्लाकी फेअल है कि किसी की ग़ैर मौजूदगी में उसे बुरा कहा जाए जबकि वह अपनी सफाई के लिए वहां मौजूद न हो। वक्ती तौर पर कभी आदमी से इस किस्म की ग़लतियां हो सकती हैं। लेकिन अगर वह अल्लाह से डरने वाला है तो वह अपनी ग़लती पर ढीठ नहीं होगा। उसका ख़ौफे ख़ुदा उसे फौरन अपनी ग़लती पर मुतनब्बह (सचेत) कर देगा, वह अपनी रविश को छोड़कर अल्लाह से माफी का तालिब बन जाएगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ
لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

ऐ लोगो, हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुम्हें कौमों और ख़ानदानों में तक्सीम कर दिया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। बेशक अल्लाह के नजदीक तुम में सबसे ज्यादा इज्जत वाला वह है जो सबसे ज्यादा परहेजगार है। बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। (13)

इंसानों के दर्मियान मुख़्तलिफ किस्म के फर्क होते हैं। कोई सफेद है और कोई काला। कोई एक नस्ल से है और कोई दूसरी नस्ल से। कोई एक जुग़राफिया (भौगोलिक क्षेत्र) से तअल्लुक रखता है और कोई दूसरे जुग़राफिया से। ये तमाम फर्क सिर्फ तआरुफ (परिचय) के लिए हैं न कि इम्तियाज (विशिष्टता) के लिए। अक्सर ख़राबियों का सबब यह होता है कि लोग इस किस्म के फर्क की बिना पर एक दूसरे के दर्मियान फर्क करने लगते हैं। इससे वह तफरीक व तअस्सुब (विभेद एवं विद्वेष) वजूद में आता है जो कभी ख़त्म नहीं होता।

इंसान अपने आग़ाज के एतबार से सबके सब एक हैं। उनमें इम्तियाज की अगर कोई बुनियाद है तो वह सिर्फ यह है कि कौन अल्लाह से डरने वाला है और कौन अल्लाह से डरने वाला नहीं। और इसका भी सही इल्म सिर्फ ख़ुदा को है न कि किसी इंसान को।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا وَلَٰكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا
وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾

देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूं कहो कि हमने इस्लाम क़ुबूल किया, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। मोमिन तो बस वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (जद्दोजहद) किया, यही सच्चे लोग हैं। (14-15)

मदीना के अतराफ में कई छोटे-छोटे कबीले थे। ये लोग हिजरत के बाद इस्लाम में दाख़िल हो गए मगर उनका इस्लाम किसी गहरे जेहनी इंकिलाब का नतीजा न था। अल्लाह की नजर में इस्लाम पर ईमान लाने वाला वह है जो इस्लाम को एक ऐसी हकीकत के तौर पर पाए जो उसके दिल की गहराइयों में उतर जाए। जो लोग इस तरह ख़ुदा के दीन को कुबूल करें वे एक लाजवाल यकीन को पा लेते हैं। वे कुर्बानी की हद तक उस पर कायम रहने के लिए तैयार रहते हैं।

आदमी कोई अच्छा काम करे तो वह उसका इज्हार करना जरूरी समझता है। हालांकि इस किस्म का इज्हार उसके अमल को बातिल कर देने वाला है। अच्छा अमल हकीकतन वह है जो अल्लाह के लिए किया जाए। फिर अल्लाह जब ख़ुद हर बात को जानता है तो उसके एलान व इज्हार की क्या जरूरत।

قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो। हालांकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और अल्लाह हर चीज से बाख़बर है। ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम कुबूल किया है। कहो कि अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी। अगर तुम सच्चे हो। बेशक अल्लाह आसमानों और जमीन की छुपी बातों को जानता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। (16-18)

कोई शख़्स इस्लाम में दाख़िल हो या उसके हाथ से कोई इस्लामी काम अंजाम पाए तो

उसे समझना चाहिए कि यह अल्लाह की मदद से हुआ है। ईमान और अमल सबका इंहिसार अल्लाह की तौफीक पर है। इसलिए जब भी किसी को किसी ख़ैर की तौफीक मिले तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करे।

इसके बजाए अगर वह अपने हममजहबों पर इसका एहसान जताने लगे तो गोया वह जबानेहाल से कह रहा है कि यह काम मैंने अल्लाह को दिखाने के लिए नहीं किया था बल्कि इंसानों को दिखाने के लिए किया था। ख़ुदा हर चीज से बराहेरास्त वाकफियत रखता है, जो शख़्स ख़ुदा के लिए अमल करे उसे यकीन रखना चाहिए कि उसका ख़ुदा उसके अमल को बताए बग़ैर देख रहा है।

سُورَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قٓ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ﴿٥﴾

आयतें-45 सूरह-50. क़ाफ़ रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ाफ़०। क़सम है बाअज़्मत क़ुरआन की। बल्कि उन्हें तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुंकिरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे, यह दुबारा जिंदा होना बहुत बईद (दूर की बात) है। हमें मालूम है जितना जमीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ महफूज है। बल्कि उन्होंने हक को झुठलाया है जबकि वह उनके पास आ चुका है, पस वे उलझन में पड़े हुए हैं। (1-5)

पैग़म्बरों की तारीख़ बताती है कि उनके हमजमाना (समकालीन) लोग उन्हें मानने के लिए तैयार नहीं होते। अलबत्ता जब बाद का जमाना आता है तो लोग आसानी के साथ उनकी पैग़म्बराना हैसियत को तस्लीम कर लेते हैं।

इसकी वजह यह है कि पैग़म्बर अपने हमजमाना लोगों को 'अपने बराबर का एक शख़्स' नजर आता है। यह बात उनके लिए तअज्जुबख़ेज बन जाती है कि जिस शख़्स को वे अपने बराबर का समझे हुए थे वह अचानक बड़ा बनकर उन्हें नसीहत करने लगे। मगर बाद के

जमाने में पैग़म्बर के साथ अज़्मतों की तारीख़ वाबस्ता हो चुकी होती है। इसलिए बाद के लोगों को वह 'अपने से बरतर शख़्स' दिखाई देने लगता है। यही वजह है कि बाद के जमाने में पैग़म्बर की पैग़म्बराना हैसियत को मानना लोगों के लिए मुश्किल नहीं होता। बअल्फाज दीगर, इब्तिदाई दौर के लोगों के सामने पैग़म्बर एक निजाई (विवादित) शख़्सियत के रूप में होता है। और बाद के लोगों के सामने साबितशुदा शख़्सियत के रूप में। दौरे अव्वल के लोगों को अपने और पैग़म्बर के दर्मियान ख़ला (रिक्तता) को पुर करने के लिए शुऊरी सफर तै करना पड़ता है जबकि बाद के जमाने में यह ख़ला तारीख़ पुर कर चुकी होती है।

जो लोग पैग़म्बर की पैग़म्बरी पर शुबह कर रहे हों उनकी नजर में पैग़म्बर की हर बात मुशतबह हो जाती है यहां तक कि वह बात भी जिसका अकीदा रिवायती तौर पर उनके यहां मौजूद होता है। ताहम ये बातें लोगों के लिए उज़्र नहीं बन सकतीं। पैग़म्बर को न मानने वाले अगर उसकी किताब की नाक़ाबिले तक़्लीद (अद्वितीय) अदबी अज़्मत पर ग़ौर करें तो वे उसके लाने वाले को ख़ुदा का पैग़म्बर मानने पर मजबूर हो जाएंगे।

أَفَلَمْ يَنظُرُوٓا۟ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَٰهَا وَزَيَّنَّٰهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝ وَٱلْأَرْضَ مَدَدْنَٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ۝ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً مُّبَٰرَكًا فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ جَنَّٰتٍ وَحَبَّ ٱلْحَصِيدِ ۝ وَٱلنَّخْلَ بَاسِقَٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِۦ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ ٱلْخُرُوجُ ۝

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने कैसा उसे बनाया और उसे रौनक दी और उसमें कोई दरार नहीं। और जमीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिए और उसमें हर किस्म की रौनक की चीज उगाई, समझाने को और याद दिलाने को हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फसलें। और खजूरों के लम्बे दरख़्त जिनमें तह-ब-तह ख़ोशे लगते हैं, बंदों की रोजी के लिए। और हमने उसके जरिए से मुर्दा जमीन को जिंदा किया। इसी तरह जमीन से निकलना होगा। (6-11)

कायनात की मअनवियत, उसकी तख़्लीकी हिक्मत, उसका हर किस्म की कमी से ख़ाली होना, उसका इंसानी जरूरतों के ऐन मुताबिक होना, ये वाकेयात हर साहिबे अक्ल को ग़ौरोफ़िक्र पर मजबूर करते हैं। और जो शख़्स संजीदगी के साथ कायनात के निजाम पर ग़ौर करे वह मख़्लूकात के अंदर उसके ख़ालिक को पा लेगा। वह दुनिया के अंदर आख़िरत की

झलक देख लेगा, क्योंकि आख़िरत की दुनिया दरअस्ल मौजूदा दुनिया ही का दूसरा लाजिमी रूप है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَٰبُ ٱلرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَٰنُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَٰبُ ٱلْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ ٱلرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝ أَفَعَيِينَا بِٱلْخَلْقِ ٱلْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِى لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

उनसे पहले नूह की कौम और अर-रस वाले और समूद। और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई और ऐका वाले और तुब्बअ की कौम ने भी झुठलाया। सबने पैग़म्बरों को झुठलाया, पस मेरा डराना उन पर वाकेअ होकर रहा। क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज रहे। बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ से शुबह में हैं। (12-15)

कुरआन ने तारीख़ का जो तसव्वुर पेश किया है, उसके मुताबिक यहां बार-बार ऐसा हुआ है कि पैग़म्बरों के इंकार के नतीजे में उनकी मुख़ातब कौमें हलाक कर दी गईं। यहां उन्हीं हलाकशुदा कौमों में से कुछ कौमों का जिक्र बतौर मिसाल फ़रमाया गया है। कौमों की यह हिलाकत दरअस्ल आख़िरत का एक हिस्सा है। मुंकिरीने हक के लिए जो अजाब आख़िरत में मुक़द्दर है उसका एक जुज इसी आज की दुनिया में दिखा दिया जाता है।

दुनिया की पहली तख़्लीक (सृजन) उसकी दूसरी तख़्लीक के इम्कान को साबित कर रही है। अगर आदमी संजीदा हो तो आख़िरत को मानने के लिए इसके बाद उसे किसी और दलील की जरूरत नहीं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِۦ نَفْسُهُۥ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ ٱلْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى ٱلْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ ٱلْيَمِينِ وَعَنِ ٱلشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝

और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं। और हम रगे गर्दन से भी ज्यादा उससे करीब हैं। जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाईं और बाईं तरफ बैठे हैं। कोई लफ्ज वह नहीं बोलता मगर उसके पास एक मुस्तइद (चुस्त) निगरां (सतर्क निरीक्षक) मौजूद है। (16-18)

दुनिया का मुतालआ बताता है कि यहां 'रिकॉर्डिंग' का नाक़ाबिले ख़ता (अचूक) निजाम मौजूद है। इंसान की सोच उसके जेहनी पर्दे पर हमेशा के लिए नक्श हो रही है। इंसान का हर बोल हवाई लहरों की सूरत में मुस्तकिल तौर पर बाकी रहता है। इंसान का अमल हरारती लहरों

के जरिए ख़ारजी वाह्य दुनिया में इस तरह महफूज हो जाता है कि उसे किसी भी वक़्त दोहराया जा सके। ये सब आज की मालूम हक़ीक़तें हैं। और ये मालूम हक़ीक़तें क़ुरआन की इस ख़बर को क़ाबिलेफ़हम बना रही हैं कि इंसान की नियत, उसका क़ौल और उसका अमल सब कुछ ख़ालिक के इल्म में है। इंसान की हर चीज फ़रिश्तों के रजिस्टर में दर्ज की जा रही है।

وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت منه تحيد ﴿١٩﴾ ونفخ في الصور ذلك يوم الوعيد ﴿٢٠﴾ وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد ﴿٢١﴾ لقد كنت في غفلة من هذا فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد ﴿٢٢﴾ وقال قرينه هذا ما لدي عتيد ﴿٢٣﴾ ألقيا في جهنم كل كفار عنيد ﴿٢٤﴾ مناع للخير معتد مريب ﴿٢٥﴾ الذي جعل مع الله إلها آخر فألقياه في العذاب الشديد ﴿٢٦﴾ قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان في ضلال بعيد ﴿٢٧﴾ قال لا تختصموا لدي وقد قدمت إليكم بالوعيد ﴿٢٨﴾ ما يبدل القول لدي وما أنا بظلام للعبيد ﴿٢٩﴾

और मौत की बेहोशी हक के साथ आ पहुंची। यह वही चीज है जिससे तू भागता था। और सूर फूंका जाएगा, यह डराने का दिन होगा। हर शख़्स इस तरह आ गया कि उसके साथ एक हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला। तुम उससे ग़फ़लत में रहे, पस हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज है। और उसके साथ का फ़रिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था हाजिर है। जहन्नम में डाल दो नाशुक्र, मुख़ालिफ को। नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुबह डालने वाला। जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए, पस उसे डाल दो सख़्त अजाब में। उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब मैंने इसे सरकश नहीं बनाया बल्कि वह ख़ुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था। इर्शाद होगा, मेरे सामने झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुम्हें अजाब से डरा दिया था। मेरे यहां बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं हूं। (19-29)

इन आयात में मौत और उसके बाद कियामत का मंजर खींचा गया है। बताया गया है कि वहां उन लोगों पर क्या बीतेगी जो मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में अपने को आजाद पाकर सरकश बने हुए थे। हक़ीक़त यह है कि यह मंजरकशी इतनी भयानक है कि जिंदा आदमी को तड़पा देने के लिए काफ़ी है।

يوم نقول لجهنم هل امتلأت وتقول هل من مزيد ﴿٣٠﴾ وأزلفت الجنة للمتقين غير بعيد ﴿٣١﴾ هذا ما توعدون لكل أواب حفيظ ﴿٣٢﴾ من خشي الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب ﴿٣٣﴾ ادخلوها بسلام ذلك يوم الخلود ﴿٣٤﴾ لهم ما يشاءون فيها ولدينا مزيد ﴿٣٥﴾

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई। और वह कहेगी कि कुछ और भी है। और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी, कुछ दूर न रहेगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए। जो शख़्स रहमान से डरा बिना देखे और रुजूअ होने वाला दिल लेकर आया, दाख़िल हो जाओ उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा रहेगा। वहां उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें, और हमारे पास मजीद (और भी) है। (30-35)

ख़ुदा की अबदी जन्नत के मुस्तहिक कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जो दुनिया में अल्लाह के अजाब से डरते रहे। जो लोग बिना देखे डरे वही वे लोग हैं जो उस दिन डर और ग़म से महफूज रहेंगे जब डर लोगों की आंखों के सामने आ जाएगा। अल्लाह का ख़ौफ आदमी के अंदर जन्नत वाले औसाफ (गुण) पैदा करता है और अल्लाह से बेख़ौफ़ी जहन्नम वाले औसाफ।

وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أشد منهم بطشا فنقبوا في البلاد هل من محيص ﴿٣٦﴾ إن في ذلك لذكرى لمن كان له قلب أو ألقى السمع وهو شهيد ﴿٣٧﴾

और हम उनसे पहले कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं, वे कुव्वत (शक्ति) में उनसे ज्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह। इसमें याददिहानी है उस शख़्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाए मुतवज्जह होकर। (36-37)

कौमें उभरती हैं और उरूज को पहुंच जाती हैं मगर जब वे अपनी बदआमाली के नतीजे में ख़ुदा की जद में आती हैं तो उनका हाल यह होता है कि जमीन में कहीं कोई जगह नहीं होती जहां वे भाग कर पनाह ले सकें। तारीख़ के इन वाकेयात में जबरदस्त नसीहत है। मगर नसीहत वह शख़्स लेगा जिसके अंदर या तो सोचने की सलाहियत जिंदा हो कि वह ख़ुद वाकेयात के ख़ामोश पैग़ाम को अख़ज (ग्रहण) कर सके। या उसके अंदर सुनने की सलाहियत जिंदा हो कि जब उसे बताया जाए तो वह उसके अंदरून तक बिला रोकटोक पहुंचे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿۳۸﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿۳۹﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿۴۰﴾

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में बनाया और हमें कुछ थकान नहीं हुई। पस जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो और अपने रब की तस्बीह करो हम्द (प्रशंसा) के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले। और रात में उसकी तस्बीह करो और सज्दों के पीछे। (38-40)

जमीन व आसमान को छः दिनों, बअल्फ़ाज दीगर छः दौरों में पैदा करना बताता है कि ख़ुदा का तरीक़ा तदरीजी (क्रमबद्ध) अमल का तरीक़ा है। और जब ख़ुदा सारी ताक़तों का मालिक होने के बावजूद वाक़ेयात को तदरीज के साथ लम्बी मुद्दत में जुहूर में लाता है तो इंसान को भी चाहिए कि वह जल्दबाजी से बचे, वह साबिराना (धैर्यपूर्ण) अमल के जरिए नतीजे तक पहुंचने की कोशिश करे।

दावत (आह्वान) का अमल शरू से आख़िरत तक सब्र का अमल है। इसमें इंसान की तरफ से पेश आने वाली तल्ख़ियों को सहना पड़ता है। इसमें नतीजा सामने दिखाई न देने के बावजूद अपने अमल को जारी रखना पड़ता है। इस सब्रआजमा (धैर्यपरक) अमल पर वही शख़्स क़ायम रह सकता है जिसके सुबह व शाम जिक्र व इबादत में गुजरते हों, जो इंसानों से न पाकर ख़ुदा से पा रहा हो, जो सब कुछ खोकर भी एहसासे महरूमी का शिकार न हो सके।

'हमें थकान नहीं हुई' एक जिमनी (पूरक) फ़िक़रा है। मौजूदा मुर्हर्फ़ (परिवर्तित) बाइबल में है कि ख़ुदा ने छः दिनों में आसमान और जमीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम किया। यह फ़िक़रा इसी की तस्हीह व तरदीद है। आराम वह करता है जो थके। ख़ुदा को थकान नहीं होती इसलिए उसे आराम करने की जरूरत भी नहीं।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿۴۱﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۗ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿۴۲﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿۴۳﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۗ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿۴۴﴾

और कान लगाए रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत करीब से पुकारेगा। जिस दिन लोग यकीन के साथ चिंघाड़ को सुनेंगे वह निकलने का दिन होगा। बेशक हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन जमीन उन पर से खुल जाएगी, वे सब दौड़ते होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। (41-44)

क़ियामत की कोई तारीख़ मुक़र्रर नहीं। किसी भी वक़्त अल्लाह तआला का हुक्म होगा और इस्राफ़ील सूर में फूंक मारकर उसकी अचानक आमद की इत्तला दे देंगे।

जो लोग ख़ुदा से ग़ाफ़िल हैं वे क़ियामत को दूर की चीज समझते हैं। मगर जो सच्चा मोमिन है वह हर आन इस अंदेशे में रहता है कि कब सूर फूंक दिया जाए और कब क़ियामत आ जाए। सूर फूंके जाने के बाद जमीन व आसमान का नक़्शा बदल चुका होगा और तमाम लोग एक नई दुनिया में जमा किए जाएंगे ताकि अपने-अपने अमल के मुताबिक अपना अबदी (चिरस्थाई) अंजाम पा सकें।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿۴۵﴾

हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं। और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं हो। पस तुम क़ुरआन के जरिए उस शख़्स को नसीहत करो जो मेरे डराने से डरे। (45)

क़ुरआन में बार-बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में इर्शाद हुआ है कि तुम्हारा काम सिर्फ़ पहुंचा देना है तुम्हारा काम लोगों को बदलना नहीं है। दूसरी तरफ क़ुरआन में एक से ज्यादा मक़ाम पर यह भी इर्शाद हुआ है कि ख़ुदा तुम्हारे जरिए से दीने हक़ को तमाम दीनों पर ग़ालिब करेगा।

यह दो बात दरअस्ल पैग़म्बरे इस्लाम की दो मुख़्तलिफ़ हैसियतों के एतबार से है। आप एक एतबार से 'अल्लाह के रसूल' थे। दूसरे एतबार से आप 'ख़ातमुन नबिय्यीन' (अंतिम नबी) थे। अल्लाह का रसूल होने की हैसियत से आपका काम वही था जो तमाम पैग़म्बरों का था। यानी अम्रे हक़ को लोगों तक पूरी तरह पहुंचा देना। मगर ख़ातमुन नबिय्यीन होने की हैसियत से अल्लाह तआला को यह भी मत्लूब था कि आपके जरिए से वे असबाब पैदा किए जाएं जो हिदायते इलाही को मुस्तक़िल तौर पर महफ़ूज कर दें। ताकि दुबारा पैग़म्बर भेजने की जरूरत पेश न आए। आपकी इस दूसरी हैसियत का तक़ाज़ा था कि आपके जरिए से वह इंक़िलाब लाया जाए जो शिर्क के ग़लबे (वर्चस्व) को ख़त्म कर दे और इस्लाम को एक ऐसी ग़ालिब क़ुव्वत की हैसियत से क़ायम कर दे जो हमेशा के लिए हिदायते इलाही की हिफ़ाज़त की जमानत बन जाए।

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿۱﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿۲﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿۳﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿۴﴾ اِنَّمَا

تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝ إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُخْتَلِفٍ ۝ يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ۝

आयतें-60 — सूरह-51. अज़्-ज़ारियात — रुकूअ-3

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं फिर वे उठा लेती हैं बोझ। फिर वे चलने लगती हैं आहिस्ता। फिर अलग-अलग करती हैं मामला। बेशक तुमसे जो वादा किया जा रहा है वह सच है। और बेशक इंसाफ होना जरूर है। कसम है जालदार आसमान की। बेशक तुम एक इख़्तेलाफ (बिखराव, मत-भिन्नता) में पड़े हुए हो। उससे वही फिरता है जो फेरा गया। (1-9)

यहां बारिश के अमल की तस्वीरकशी की गई है। पहले तेज हवाएं उठती हैं। फिर मुख़्तलिफ मराहिल से गुजर कर वे बादलों को चलाती हैं। और फिर वे किसी गिरोह पर बाराने रहमत (सुखद वर्षा) बरसाती हैं और किसी गिरोह पर सैलाब की सूरत में तबाहकारियां लाती हैं।

यह वाक़्या बताता है कि ख़ुदा की इस दुनिया में 'तक्सीमे अम्र' का कानून है। यहां किसी को कम मिलता है और किसी को ज्यादा। किसी को दिया जाता है और किसी से छीन लिया जाता है। यह एक इशारा है जो बताता है कि मौत के बाद आने वाली दुनिया में इंसान के साथ क्या मामला पेश आने वाला है। वहां तक्सीमे अम्र का यह उसूल अपनी कामिल सूरत में नाफिज होगा। हर एक को हददर्जा इंसाफ के साथ वही मिलेगा जो उसे मिलना चाहिए और वह नहीं मिलेगा जिसे पाने का वह मुस्तहिक न था।

आसमान में बेशुमार सितारे हैं। ये सबके सब अपने अपने मदार (कक्ष) में घूम रहे हैं। अगर उनकी मज्मूई तस्वीर बनाई जाए तो वह किसी ख़ानेदार जाल की मानिंद होगी। इस किस्म का हैरतनाक निजाम अपने अंदर गहरी मअनवियत का इशारा करता है। जो लोग अपनी अक्ल को इस्तेमाल करें वे उसमें सबक पाएंगे। और जो लोग अपनी अक्ल को इस्तेमाल न करें उनके लिए वह एक बेमअना रक्स (नृत्य) है जिसके अंदर कोई सबक नहीं।

قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝ يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۝ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۝ ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ ۝ كَانُوا قَلِيلًا مِنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۝ وَ

بِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝ وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝

मारे गए अटकल से बातें करने वाले। जो ग़फलत में भूले हुए हैं। वे पूछते हैं कि कब है बदले का दिन। जिस दिन वे आग पर रखे जाएंगे। चखो मजा अपनी शरारत का, यह है वह चीज जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। बेशक डरने वाले लोग बाग़ों में और चशमों (स्रोतों) में होंगे। ले रहे होंगे जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे इससे पहले नेकी करने वाले थे। वे रातों को कम सोते थे। और सुबह के वक्तों में वे माफी मांगते थे। और उनके माल में साइल (मांगने वाले) और महरूम (असहाय) का हिस्सा था। (10-19)

किसी बात को समझने के लिए सबसे जरूरी शर्त संजीदगी है। जो लोग एक बात के मामले में संजीदा न हों वे उसके कराइन व दलाइल पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे उसे समझ भी नहीं सकते। वे उसका मजाक उड़ाकर यह जाहिर करते हैं कि वह इस काबिल ही नहीं कि उसे संजीदा ग़ौरोफिक्र का मौजूअ समझा जाए। ऐसे लोगों को मनवाना किसी तरह मुमकिन नहीं। वे सिर्फ उस वक्त एतराफ करेंगे जबकि उनकी ग़लत रविश एक ऐसा अजाब बनकर उनके ऊपर टूट पड़े जिससे छुटकारा पाना किसी तरह उनके लिए मुमकिन न हो।

संजीदा लोगों का मामला इससे बिल्कुल मुख़्तलिफ होता है। उनकी संजीदगी उन्हें मोहतात (सजग) बना देती है। उनसे सरकशी का मिजाज रुख़्सत हो जाता है। उनका बढ़ा हुआ एहसास उन्हें रातों को भी बेदार रहने पर मजबूर कर देता है। उनके औकात (समय) ख़ुदा की याद में बसर होने लगते हैं। वे अपने माल को अपनी मेहनत का नतीजा नहीं समझते बल्कि उसे ख़ुदा का अतिय्या (देन) समझते हैं। यही वजह है कि वे उसमें दूसरों का भी हक समझने लगते हैं जिस तरह वे उसमें अपना हक समझते हैं।

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِلْمُوقِنِينَ ۝ وَفِي أَنْفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝ وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ۝

और जमीन में निशानियां हैं यकीन करने वालों के लिए। और ख़ुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं। और आसमान में तुम्हारी रोजी है और वह चीज भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। पस आसमान और जमीन के रब की कसम, वह यकीनी है जैसा कि तुम बोलते हो। (20-23)

अल्लाह तआला ने दुनिया को इस तरह बनाया है कि मौजूदा मालूम दुनिया बाद को आने वाली नामालूम दुनिया की निशानी बन गई है। जमीन में फैले हुए माद्दी वाकेयात और इंसान के अंदर छुपे हुए एहसासात दोनों बिलवास्ता अंदाज में उस वाकये की पेशगी ख़बर दे रहे हैं जो मौत के बाद बराहेरास्त अंदाज में इंसान के सामने आने वाला है। इन्हीं निशानियों

में से एक निशानी नुत्क (बोलना) है।

हदीस में इर्शाद हुआ है कि आख़िरत में जो कुछ मिलेगा वे ख़ुद आदमी के अपने आमाल होंगे जो उसकी तरफ लौटा दिए जाएंगे। गोया आख़िरत की दुनिया मौजूदा दुनिया ही का मुसन्ना (Double) है। आदमी का नुत्क (बोलना) इसी इम्कान का एक जुजई मुज़ाहिरा है। आदमी की आवाज टेप पर रिकॉर्ड कर दी जाए और फिर टेप को बजाया जाए तो ऐन वही आवाज उससे निकलती है जो इंसान की आवाज थी। टेप की आवाज इंसान की अस्ल आवाज का मुसन्ना (Double) है। इस तरह आवाज जुजई सतह पर उस वाक्ये का तजर्बा करा रही है जो कुल्ली सतह पर आख़िरत में जाहिर होने वाला है।

'वह यकीनी है तुम्हारे नुत्क की तरह' यानी जब तुम्हारे नुत्क (बोलने) की तकरार (पुनरावृत्ति) मुमकिन है तो तुम्हारे वजूद की तकरार क्यों मुमकिन नहीं। इंसानी हस्ती के एक जुज (अंश) की कामिल तकरार का मुशाहिदा इसी दुनिया में हो रहा है, इसी से क्यास किया जा सकता है कि इंसानी हस्ती के कामिल मज्मूअह (कुल) की तकरार भी हो सकती है।

هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرٰهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا ۖ قَالَ سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٢٥﴾ فَرَاغَ إِلٰىٓ أَهْلِهِۦ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾ فَقَرَّبَهُۥٓ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُۥ فِى صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوا كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

क्या तुम्हें इब्राहीम के मुअज्जज (आदरणीय) मेहमानों की बात पहुंची। जब वे उसके पास आए। फिर उन्हें सलाम किया। उसने कहा तुम लोगों को भी सलाम है। कुछ अजनबी लोग हैं। फिर वह अपने घर की तरफ चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया। फिर उसे उनके पास रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं। फिर वह दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो मत। और उन्हें जीइल्म (ज्ञानवान) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। फिर उसकी बीवी बोलती हुई आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बांझ। उन्होंने कहा कि ऐसा ही फरमाया है तेरे रब ने। बेशक वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, जानने वाला है। (24-30)

इन आयतों में उस मंजर का बयान है जबकि हजरत इब्राहीम के पास ख़ुदा के फ़रिश्ते आए ताकि उन्हें बुढ़ापे में औलाद की बशारत दें। हजरत इब्राहीम कदीम इराक में पैदा हुए। वह लम्बी मुद्दत तक अपनी कौम को तौहीद और आख़िरत का पैग़ाम देते रहे। मगर आपकी बीवी और आपके एक भतीजे के सिवा कोई भी शख़्स आपकी बात मानने के लिए तैयार न

हुआ। यहां तक कि आप बुढ़ापे की उम्र को पहुंच गए।

अब आपके मिशन का तसलसुल (निरंतरता) बाकी रखने के लिए दूसरी मुमकिन सूरत सिर्फ यह थी कि आपके यहां औलाद पैदा हो और आप उसे तर्बियत देकर तैयार करें। बाप और बेटे के दर्मियान ख़ूनी तअल्लुक होता है। यह ख़ूनी तअल्लुक एक इजाफी ताकत बन जाता है जो बेटे को अपने बाप के साथ हर हाल में जोड़े रखे और उसे उसका हमख़्याल बनाए।

अल्लाह तआला ने हजरत इब्राहीम को आख़िर उम्र में दो लड़के अता किए। एक हजरत इस्हाक जिनके जरिए से बनी इस्राईल में दावते तौहीद का तसलसुल जारी रहा। दूसरे हजरत इस्माईल जिनके जरिए अरब के सहरा में एक ऐसी नस्ल तैयार करने का काम लिया गया जो पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देकर आपके तारीख़ी मिशन की तक्मील कर सके।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾ قَالُوٓا إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيهَآ ءَايَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾

इब्राहीम ने कहा कि ऐ फरिश्तो, तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम (कौमे लूत) की तरफ भेजे गए हैं। ताकि उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं। जो निशान लगाए हुए हैं तुम्हारे रब के पास उन लोगों के लिए जो हद से गुजरने वाले हैं। फिर वहां जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया। पस वहां हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर न पाया और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अजाब से डरते हैं। (31-37)

हजरत इब्राहीम उस वक्त फ़िलिस्तीन में थे। करीब ही बहरे मुर्दार के पास सदूम व अमूरा की बस्तियां थीं जहां कौमे लूत के लोग आबाद थे। हजरत लूत की तवील तब्लीग़ के बावजूद वे लोग ख़ुदाफरामोशी की जिंदगी से निकलने के लिए तैयार नहीं हुए। चुनांचे हजरत लूत और उनके साथी अल्लाह के हुक्म से बाहर आ गए। मज्कूरा फ़रिश्तों ने जलजला और आंधी और कंकरों की बारिश से पूरी कौम को हलाक कर दिया।

कौमे लूत दो हजार साल पहले ख़त्म हो गई। मगर उसका तबाहशुदा आवास-क्षेत्र (बहरे मुर्दार का जुनूबी इलाका) आज भी उन लोगों को सबक दे रहा है जो वाकेयात से सबक लेने का मिजाज रखते हैं।

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِن شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنظُرُونَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾

और मूसा में भी निशानी है जबकि हमने उसे फ़िरऔन के पास एक खुली दलील के साथ भेजा तो वह अपनी कुव्वत के साथ फिर गया। और कहा कि यह जादूगर है या मजनून है। पस हमने उसे और उसकी फौज को पकड़ा, फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह सजावारे मलामत (निन्दनीय) था। और आद में भी निशानी है जबकि हमने उन पर एक बेनफा हवा भेज दी। वह जिस चीज पर से भी गुजरी उसे रेजा-रेजा करके छोड़ दिया। और समूद में भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के लिए फायदा उठा लो। पस उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। और वे देख रहे थे। फिर वे न उठ सके। और न अपना बचाव कर सके। और नूह की कौम को भी इससे पहले, बेशक वे नाफरमान लोग थे। (38-46)

फ़िरऔने मिस्र ने हज़रत मूसा के मोजिज़े (चमत्कारों) को जादू करार दिया। आपका वह यकीन जो आपके बरसरे हक होने को जाहिर कर रहा था उसे उसने जुनून से ताबीर किया था। इसी का नाम तल्बीस (ग़लत नाम देना) है और यही तल्बीस हमेशा उन लोगों का तरीका रहा है जो दलील के बावजूद हक को मानने के लिए तैयार नहीं होते।

हक के मुक़ाबले में इस किस्म की सरकशी करने वाले लोग कभी ख़ुदा की पकड़ से नहीं बचते। फ़िरऔन इसी बिना पर हलाक किया गया। और कौमे आद और कौमे समूद और कौमे नूह भी इसी बिना पर तबाह व बर्बाद कर दी गई। ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा की दुनिया में कोई और फ़ायदा उस थोड़े से फ़ायदे के सिवा मुक़द्दर नहीं जो इम्तेहान की मस्लेहत के तहत उन्हें महदूद मुद्दत के लिए हासिल हुआ था।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِن كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

और हमने आसमान को अपनी कुदरत से बनाया और हम कुशादा (व्यापक) करने वाले हैं। और जमीन को हमने बिछाया, पस क्या ही खूब बिछाने वाले हैं। और हमने हर चीज को जोड़ा जोड़ा बनाया है ताकि तुम ध्यान करो। पस दौड़ो अल्लाह की तरफ, मैं उसकी तरफ से एक खुला डराने वाला हूं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाओ, मैं उसकी तरफ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूं। (47-51)

'हम आसमान को कुशादा करने वाले हैं' इस फ़िकरे में ग़ालिबन कायनात की उस नौइयत की तरफ इशारा है जो सिर्फ हाल में दरयाफ़्त हुई है। यानी कायनात का मुसलसल अपने चारों तरफ फैलना। कायनात का इस तरह फैलना इस बात का सुबूत है कि उसे किसी पैदा करने वाले ने पैदा किया है। क्योंकि इस फैलाव का मतलब यह है कि अपनी इब्तिदा (प्रारंभ) में वह सुकड़ी हुई थी। मालूम माद्दी कानून के मुताबिक, कायनात के इस इब्तिदाई गोले के तमाम अज्जा अंदर की तरफ खिंचे हुए थे। ऐसी हालत में उनका बाहर की तरफ सफर करना किसी ख़ारजी मुदाख़लत (वाह्य हस्तक्षेप) के बग़ैर नहीं हो सकता। और ख़ारजी मुदाख़लत को मानने के बाद ख़ुदा का मानना लाजिम हो जाता है।

हमारी दुनिया का निजाम इंतिहाई बामअना निजाम है। इससे साबित होता है कि मौजूदा दुनिया की तख़्लीक किसी आला मक्सद के तहत हुई है। मगर हम देखते हैं कि इंसान ने जमीन को फ़साद से भर रखा है। बामअना कायनात में यह बेमअना वाक़्या बिल्कुल बेजोड़ है। यह सूरतेहाल तक़ाजा करती है कि एक ऐसी दुनिया बने जो हर किस्म की बुराइयों से पाक हो।

यहां दुबारा मौजूदा दुनिया के अंदर एक ऐसा वाकया मौजूद है जो इस सवाल का जवाब देता है। और वह है यहां की तमाम चीजों का जोड़े-जोड़े होना। माद्दा (Element) में मुसबत (Positive) और मंफ़ी (Negative) जर्रे, नबातात (वनस्पति) में नर और मादा, इंसान में औरत और मर्द। इससे कायनात का यह मिजाज मालूम होता है कि यहां अशया (चीजों) की कमी को उसके जोड़े के जरिए मुकम्मल करने का कानून राइज है। यह एक करीना है जो आख़िरत के इम्कान को साबित करता है। आख़िरत की दुनिया गोया मौजूदा दुनिया का दूसरा जोड़ा है जिससे मिलकर हमारी दुनिया अपने आपको मुकम्मल करती है।

كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾ وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾

इसी तरह उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसे उन्होंने साहिर (जादूगर) या मजनून न कहा हो। क्या ये एक दूसरे को इसकी वसीयत करते चले आ रहे हैं, बल्कि ये सब सरकश लोग हैं। पस तुम उनसे एराज (विमुखता) करो, तुम पर कुछ इल्जाम नहीं। और समझाते रहो क्योंकि

समझाना ईमान वालों को नफा देता है। (52-55)

एक संजीदा आदमी अगर किसी बात की दलील मांगे तो दलील सामने आने के बाद वह उसे मान लेता है। मगर जो लोग सरकशी का मिजाज रखते हों उन्हें किसी भी दलील से चुप नहीं किया जा सकता। वे हर दलील को न मानने के लिए दुबारा कुछ नए अल्फाज पा लेंगे। यहां तक कि अगर उनके सामने ऐसी दलील पेश कर दी जाए जिसका तोड़ मुमकिन न हो तो वे यह कहकर उसे नजरअंदाज कर देंगे कि यह तो जादू है।

यह उन लोगों का हाल है जिन्हें कौम के अंदर बड़ाई का दर्जा मिल गया हो। ऐसे लोगों के लिए उनकी बड़ाई का एहसास इसमें रुकावट बन जाता है कि वे किसी दूसरे शख़्स की जबान से जारी होने वाली सच्चाई को मान लें। ऐसे लोग अगर हक की दावत को न मानें तो दाओ को मायूस न होना चाहिए। वह उन दूसरे लोगों में अपने हामी पा लेगा जो झूठी बड़ाई के एहसास में मुब्तिला होने से बचे हुए हों।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝٥٦ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعِمُونِ ۝٥٧ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝٥٨ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝٥٩ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝٦٠

और मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। मैं उनसे रिज़्क नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं। बेशक अल्लाह ही रोजी देने वाला है, जोरआवर (सशक्त), जबरदस्त है। पस जिन लोगों ने जुल्म किया उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भर चुके थे, पस वे जल्दी न करें। पस मुंकिरों के लिए ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (56-60)

ख़ुदा हर किस्म का जाती इख़्तियार रखता है। ताहम फरिश्तों को उसने अपनी वसीअ सल्तनत का इंतिजाम करने के लिए पैदा किया है। मगर इंसानों का मामला इससे मुख़्तलिफ है। इंसान इसलिए पैदा नहीं किए गए कि वे ख़ुदा की किसी शख़्सी या इंतिजामी जरूरत को पूरा करें। उनकी पैदाइश का वाहिद मक्सद ख़ुदा की इबादत है। इबादत का मतलब अपने आपको ख़ुदा के आगे झुकाना है, अपने आपको पूरी तरह ख़ुदा का परस्तार बना देना है।

इस इबादत का ख़ुलासा मअरफत है। चुनांचे इब्ने जुरैह ने इल्ला लियअबुदून की तशरीह इल्लालि यअरिफून से की है (तफ्सीर इब्ने कसीर)। यानी इंसान से यह मत्लूब है कि वह ख़ुदा को बतौर दरयाफ्त के पाए। वह बिना देखे ख़ुदा को पहचाने। इसी का नाम मअरफत है। इस

मअरफत के नतीजे में आदमी की जो जिंदगी बनती है उसी को इबादत व बंदगी कहा जाता है।

पानी का डोल भरने के बाद डूब जाता है इसी तरह आदमी की मोहलते अमल पूरी होने के बाद फौरन उसकी मौत आ जाती है। जो शख़्स डोल भरने से पहले अपनी इस्लाह (सुधार) कर ले उसने अपने आपको बचाया। और जो शख़्स आख़िर वक्त तक ग़ाफिल रहा वह हलाक हो गया।

जालिम लोग अगर पकड़े न जा रहे हों तो उन्हें यह न समझना चाहिए कि वे छोड़ दिए गए हैं। वे इसलिए आजाद हैं कि ख़ुदा का तरीका जल्दी पकड़ने का तरीका नहीं, न इसलिए कि ख़ुदा उन्हें पकड़ने वाला नहीं।

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ ۞ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۞

وَالطُّورِ ۝١ وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ ۝٢ فِي رَقٍّ مَنْشُورٍ ۝٣ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝٤ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝٥ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝٦ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧ مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ۝٨ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝٩ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠ فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝١١ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝١٢ يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝١٤ أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝١٥ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝١٦

आयतें-49 सूरह-52. अत-तूर रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है तूर की। और लिखी हुई किताब की, कुशादा वरक में। और आबाद घर की। और ऊंची छत की। और उबलते हुए समुद्र की। बेशक तुम्हारे रब का अजाब वाकेअ होकर रहेगा। उसे कोई टालने वाला नहीं। जिस दिन आसमान डगमगाएगा और पहाड़ चलने लगेंगे। पस ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए जो बातें बनाते हैं खेलते हुए। जिस दिन वे जहन्नम की आग की तरफ धकेले जाएंगे। यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे। क्या यह जादू है या तुम्हें नजर नहीं आता। इसमें दाख़िल हो जाओ। फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो। तुम्हारे लिए यकसां (समान) है। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (1-16)

तूर सहराए सीना का वह पहाड़ है जहां हजरत मूसा को पैग़म्बरी दी गई। किताबे मस्तूर

से मुराद तौरात है। बैत मअमूर से मुराद जमीन और सक़्फ़ मरफ़ूअ से मुराद आसमान है। बहर मस्जूर से मुराद मौजें मारता हुआ समुद्र है। ये चीजें शाहिद (साक्ष्य) हैं कि ख़ुदा की पकड़ का दिन यकीनन आने वाला है। अल्लाह तआला यही ख़बर पैग़म्बरों के जरिए देता रहा है। कदीम आसमानी किताबों में यही बात दर्ज है। जमीन व आसमान अपनी ख़ामोश जबान में इसका एलान कर रहे हैं। समुद्र की मौजें हर सुनने वाले को उसकी कहानी सुना रही हैं।

इंसान को अपने अमल का नतीजा भुगतना होगा, यह बात आज पेशगी इत्तिलाअ की सूरत में बताई जा रही है। जो लोग पेशगी इत्तिलाअ से होश में न आएं उन पर उनकी ग़फ़लत और सरकशी कल के दिन एक दर्दनाक अजाब की सूरत में आ पकड़ेगी और फिर वे उससे भागना चाहेंगे मगर वे उससे भाग कर कहीं न जा सकेंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝

बेशक मुत्तकी (ईश-परायण) लोग बाग़ों और नेमतों में होंगे। वे ख़ुशदिल होंगे उन चीजों से जो उनके रब ने उन्हें दी होंगी, और उनके रब ने उन्हें दोजख़ के अजाब से बचा लिया। खाओ और पियो मजे के साथ अपने आमाल के बदले में। तकिया लगाए हुए सफ़-ब-सफ़ तख़्तों के ऊपर। और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें उनसे ब्याह देंगे। (17-20)

इंसान का सबसे बड़ा जुर्म हक को झुठलाना है। इसी से बकिया तमाम जराइम पैदा होते हैं। इसी तरह इंसान की सबसे बड़ी नेकी हक का एतराफ है, तमाम दूसरी नेकियां इसी से बतौर नतीजा जाहिर होती हैं।

हक को मानने से आदमी की बड़ाई टूटती है। यह किसी इंसान के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल काम है। इस पर वही लोग पूरे उतरते हैं जिन्हें अल्लाह के डर ने आख़िरी हद तक संजीदा बना दिया हो। जो लोग इस सबसे बड़ी नेकी का सुबूत दें वे इसी के मुस्तहिक हैं कि उनके लिए जन्नत की अबदी नेमतों के दरवाजे खोल दिए जाएं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝ وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ۝ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَكْنُونٌ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا كُنَّا

قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ۝ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝

और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी उनकी राह पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज कम नहीं करेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है। और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त उन्हें बराबर देते रहेंगे। उनके दर्मियान शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे जो लग़वियत (बेहूदगी) और गुनाह से पाक होगी। और उनकी ख़िदमत में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे। गोया कि वे हिफाजत से रखे हुए मोती हैं। वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। वे कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर वालों में डरते रहते थे। पस अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फरमाया और हमें लू के अजाब से बचा लिया। हम इससे पहले उसी को पुकारते थे, बेशक वह नेक सुलूक वाला, महरबान है। (21-28)

आख़िरत में ऐसा नहीं होगा कि एक शख़्स का गुनाह दूसरे शख़्स के ऊपर डाल दिया जाए। और न कोई शख़्स ईमान व अमल के बग़ैर जन्नत में दाख़िला पा सकेगा। अलबत्ता अहले जन्नत के साथ एक ख़ास फ़ज़्ल का मामला यह होगा कि वालिदैन अगर जन्नत के बुलन्द दर्जे में हों और उनकी औलाद किसी और दर्जे में हों तो औलाद को भी उनके वालिदैन के साथ मिला दिया जाएगा ताकि उन्हें मजीद ख़ुशी हासिल हो सके।

जन्नत की लतीफ दुनिया में दाख़िले का मुस्तहिक सिर्फ वह शख़्स होगा जिसका हाल यह था कि अपने बीवी बच्चों के दर्मियान रहते हुए भी उसे अल्लाह का ख़ौफ तड़पाए हुए था, और जिसने अपनी उम्मीदों और अपने अंदेशों को सिर्फ एक अल्लाह के साथ वाबस्ता कर रखा था।

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ۝ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ۝ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَٰذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ۝

पस तुम नसीहत करते रहो, अपने रब के फ़ज़्ल से तुम न काहिन (भविष्यवक्ता) हो और न मजनून। क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है, हम इस पर गर्दिशे जमाना (काल-चक्र) के मुंतजिर हैं। कहो कि इंतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हूं। क्या उनकी अक्लें उन्हें यही सिखाती हैं या ये सरकश लोग हैं। क्या वे कहते हैं कि यह कुरआन को ख़ुद

बना लाया है। बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते। पस वे इसके मानिंद कोई कलाम ले आएं, अगर वे सच्चे हैं। (29-34)

जब आदमी एक दावत के मुकाबले में अपने आपको बेदलील पाए, इसके बावजूद वह उसे मानना न चाहे तो वह यह करता है कि दाई की जात में ऐब लगाना शुरू कर देता है। वह कलाम के बजाए मुतकल्लिम (कहने वाला) को अपना निशाना बनाता है। यही वह नफ्सियात थी जिसके तहत पैग़म्बर के मुख़ातबीन ने आपको शायर और मजनून कहना शुरू किया। वे आपकी दावत को दलील से रद्द नहीं कर सकते थे, इसलिए वे आपके बारे में ऐसी बातें कहने लगे जिनसे आपकी शख़्सियत मुशतबह (संदिग्ध) हो जाए।

मगर पैग़म्बर ख़ुदा से लेकर बोलता है। और जो इंसान ख़ुदा से लेकर बोले उसका कलाम इतना मुमताज तौर पर दूसरों के कलाम से मुख़्तलिफ होता है कि उसके मिस्ल कलाम पेश करना किसी के लिए मुमकिन नहीं होता। और यह वाकया इस बात का सबसे बड़ा सुबूत होता है कि उसका कलाम ख़ुदाई कलाम है, वह आम मअनों में महज इंसानी कलाम नहीं।

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۝ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۝

क्या वे किसी ख़ालिक (सृष्टा) के बग़ैर पैदा हो गए या वे ख़ुद ही ख़ालिक हैं। क्या जमीन व आसमान को उन्होंने पैदा किया है, बल्कि वे यकीन नहीं रखते। क्या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं या वे दारोग़ा (संरक्षक) हैं। क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर वे बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई खुली दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे। (35-39)

ख़ुदा की तरफ से जिन सदाकतों का एलान हुआ है वे सब पूरी तरह माकूल (तर्कपूर्ण) हैं। आदमी अगर ध्यान दे तो वह बाआसानी उन्हें समझ सकता है। फिर भी लोग क्यों उनका इंकार करते हैं। इसकी वजह आख़िरत के बारे में लोगों की बेयकीनी है। लोगों को जिंदा यकीन नहीं कि आख़िरत में उनसे हिसाब लिया जाएगा। इसलिए वे इन उमूर (मामलों) में संजीदा नहीं, और इसीलिए वे उन्हें समझ भी नहीं सकते। अगर जजाए आमाल का यकीन हो तो आदमी फौरन उन बातों को समझ जाए जिन्हें समझना उसके लिए निहायत मुश्किल हो रहा है।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे तावान (अधिभार) के बोझ से दबे जा रहे हैं। क्या उनके पास ग़ैब है कि वे लिख लेते हैं। क्या वे कोई तदबीर करना चाहते हैं, पस इंकार करने वाले ख़ुद ही उस तदबीर में गिरफ्तार होंगे। क्या अल्लाह के सिवा उनका और कोई माबूद (पूज्य) है। अल्लाह पाक है उनके शरीक बनाने से। (40-43)

मदऊ गिरोह हमेशा माद्दापरस्ती की सतह पर होता है। ऐसी हालत में मदऊ को अगर यह एहसास हो कि दाई उससे उसकी कोई माद्दी चीज लेना चाहता है तो वह फौरन उसकी तरफ से मुतवह्हिश (भयभीत) हो जाएगा। यही वजह है कि पैग़म्बर अपने और मुख़ातबीन के दर्मियान किसी किस्म के माद्दी मुतालबे की बात कभी नहीं आने देता। वह अपने और मुख़ातबीन के दर्मियान आख़िर वक्त तक बेग़र्जी की फजा बाकी रखता है। चाहे इसके लिए उसे यकतरफा तौर पर माद्दी नुक्सान बर्दाश्त करना पड़े।

दाई जब अपनी दावत के हक में इस हद तक संजीदगी का सुबूत दे दे तो इसके बाद वह ख़ुदा की उस नुसरत का मुस्तहिक हो जाता है कि मुंकिरीन की हर तदबीर उनके ऊपर उल्टी पड़े। वे किसी भी तरह दाई को मग़लूब (परास्त) करने में कामयाब न हों।

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ۝ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह-ब-तह बादल है। पस उन्हें छोड़ो, यहां तक कि वे अपने उस दिन से दो चार हों जिसमें उनके होश जाते रहेंगे। जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ काम न आएंगी और न उन्हें कोई मदद मिलेगी। और उन जालिमों के लिए इसके सिवा भी अजाब है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (44-47)

कदीम मक्का के लोगों का यह हाल क्यों था कि अगर वे आसमान से कोई अजाब का टुकड़ा गिरते हुए देखें तो कह दें कि यह बादल है। इसकी वजह यह न थी कि वे ख़ुदा को या ख़ुदाई ताकतों को मानते न थे। इसकी अस्ल वजह यह थी कि उन्हें पैग़म्बर के पैग़म्बर होने में शक था। उन्हें यकीन न था कि उनके सामने बजाहिर उन्हीं जैसा जो एक शख़्स है, उसका इंकार करना ऐसा जुर्म है कि इसकी वजह से हलाकत का पहाड़ गिर पड़ेगा।

पैग़म्बरे इस्लाम की शख़्सियत अपने जमाने में लोगों के लिए एक निजाई (विवादित) शख़्सियत थी। वह इस तरह एक साबितशुदा शख़्सियत न थी जिस तरह आज वह लोगों को नजर आती है। मगर इस दुनिया में आदमी का इम्तेहान यही है कि वह शुबहात के पर्दे को फाड़कर हक़ीक़त को देखे। वह बजाहिर एक निजाई शख़्सियत को साबितशुदा शख़्सियत के रूप में दरयाफ़्त करे।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾

और तुम सब्र के साथ अपने रब के फैसले का इंतिजार करो। बेशक तुम हमारी निगाह में हो। और अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ, जिस वक्त तुम उठते हो। और रात को भी उसकी तस्बीह करो, और सितारों के पीछे हटने के वक्त भी। (48-49)

'ख़ुदा का फ़ैसला आने तक सब्र करो' का मतलब यह है कि मुख़ातब की तरफ से हर किस्म की नागवार बातों के पेश आने के बावजूद दावत (आह्वान) का काम उस वक्त तक जारी रखो जब तक ख़ुद ख़ुदा के नजदीक उसकी हद न आ जाए। जब यह हद आती है तो उस वक्त ख़ुदा का फैसला जाहिर होकर हक और नाहक के फर्क को अमली तौर पर जाहिर कर देता है जिसे इससे पहले सिर्फ नजरी (वैचारिक) तौर पर जाहिर करने की कोशिश की जा रही थी। इस पूरी मुद्दत में दाओ मुकम्मल तौर पर ख़ुदा की हिफाजत में होता है। दाओ का काम यह है कि वह अल्लाह की तरफ मुतवज्जह रहे। और यह यकीन रखे कि अल्लाह उसे हर आन अपनी हिफाज़त में लिए हुए है।

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى ﴿٩﴾ فَأَوْحٰى إِلٰى عَبْدِهٖ مَا أَوْحٰى ﴿١٠﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأٰى ﴿١١﴾ أَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً أُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوٰى ﴿١٥﴾ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَأٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

सूरह-53. अन-नज्म

आयतें-62 रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है सितारे की जबकि वह ग़ुरूब (अस्त) हो। तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है। और वह अपने जी से नहीं बोलता। यह एक 'वही' (ईश्वरीयवाणी) है जो उस पर भेजी जाती है। उसे जबरदस्त कुव्वत वाले ने तालीम दी है, आकिल (प्रबुद्ध) व दाना (विवेकशील) ने। फिर वह नमूदार हुआ और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। फिर वह नजदीक हुआ, पस वह उतर आया। फिर दो कमानों के बराबर या इससे भी कम फासला रह गया। फिर अल्लाह ने 'वही' की अपने बंदों की तरफ जो 'वही' (प्रकाशना) की। झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा। अब क्या तुम उस चीज पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है। और उसने एक बार और भी उसे सिदरतुल मुंतहा के पास उतरते देखा है। उसके पास ही बहिश्त है आराम से रहने की, जबकि सिदरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था। निगाह बहकी नहीं और न हद से बढ़ी। उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (1-18)

सितारों का ग़ुरूब (अस्त) एक अलामती लफ्ज है जिसके जरिए सितारों की गर्दिश के मोहकम निजाम की तरफ इशारा किया गया है। माद्दी दुनिया में सितारों का निजाम एक बेख़ता (अचूक) निजाम है, यह इस बात का करीना है कि 'वही' व नुबुव्वत की सूरत में ख़ुदा ने जो रूहानी निजाम क़ायम किया है वह भी एक बेख़ता निजाम हो।

फरिश्ता और 'वही' की सूरत में रसूल का तजर्बा हकीकी तजर्बा है, इसके सुबूत के लिए क़ुरआन का बयान काफी है। क़ुरआन का मोजिज़ाना कलाम क़ुरआन को ख़ुदा की किताब साबित करता है। और जिस किताब का ख़ुदा की किताब होना साबित हो जाए उसका हर बयान ख़ुद क़ुरआन के जोर पर मुस्तनद (प्रमाणिक) तस्लीम किया जाएगा।

أَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرٰى ﴿٢٠﴾ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوْهَا أَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْأُوْلٰى ﴿٢٥﴾

भला तुमने लात और उज्जा पर ग़ौर किया है। और तीसरे एक और मनात पर। क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और ख़ुदा के लिए बेटियां। यह तो बहुत बेढंगी तक्सीम हुई। ये महज नाम हैं जो

तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं अल्लाह ने इनके हक में कोई दलील नहीं उतारी। वे महज गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और नफ्स की ख़्वाहिश की। हालांकि उनके पास उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है। क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे। पस अल्लाह के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। (19-25)

लात और उज्ज़ा और मनात क़दीम अरब के बुत थे। लात ताइफ में था। उज्ज़ा मक्का के क़रीब नख़्ला में और मनात मदीना के क़रीब कुदैद में। ये तीनों उनके अक़ीदे के मुताबिक ख़ुदा की बेटियां थीं और वे उन्हें पूजते थे। इस किस्म का अकीदा बिलाशुबह एक बेबुनियाद मफरूज़ा (कल्पना) है। मगर इसी के साथ वह ख़ुद अपनी तरदीद (खंडन) आप है। उन मुश्रिकीन का हाल यह था कि वे बेटियों को अपने लिए ज़िल्लत की चीज समझते थे। फरमाया कि ग़ौर करो, ख़ुदा जो बेटा और बेटी दोनों का ख़ालिक है, वह अपने लिए औलाद बनाता तो बेटियां बनाता।

'क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे' इसकी तशरीह करते हुए शाह अब्दुल कादिर देहलवी लिखते हैं 'यानी बुत पूजे से क्या मिलता है। मिले वह जो अल्लाह दे।'

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا اِلَّا مِنْ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ۝ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۝

और आसमानों में कितने फरिश्ते हैं जिनकी सिफारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती। मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाजत दे जिसे वह चाहे और पसंद करे। बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वे फरिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं। हालांकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं। वे महज गुमान पर चल रहे हैं। और गुमान हक़ बात में जरा भी मुफ़ीद नहीं। पस तुम ऐसे शख़्स से एराज (उपेक्षा) करो जो हमारी नसीहत से मुंह मोड़े। और वह दुनिया की जिंदगी के सिवा और कुछ न चाहे। उनकी समझ बस यहीं तक पहुंची है। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है। और वह उसे भी ख़ूब जानता है जो राहेरास्त (सन्मार्ग) पर है। (26-30)

पत्थर के बुत बनाकर उन्हें पूजना, फरिश्तों को ख़ुदा की बेटी बताना, सिफारिशों की बुनियाद पर जन्नत की उम्मीद रखना ये सब ग़ैर संजीदा अकीदे हैं। और ग़ैर संजीदा अकीदे हमेशा उस जेहन में पैदा होते हैं जो पकड़ का ख़ौफ न रखता हो। ख़ौफ लायअनी (निरर्थक) कलाम का कातिल है। और जो शख़्स बेख़ौफ हो उसका दिमाग़ लायअनी कलाम का कारख़ाना बन जाएगा।

जो लोग बेख़ौफी की नफ्सियात में मुब्तिला हों उनसे बहस करने का कोई फायदा नहीं। ऐसे लोग दलील और माकूलियत पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे अम्रे हक को मानने के लिए भी तैयार नहीं होते। उनसे मुकाबला करने की एक ही मुमकिन तदबीर है। वह यह कि उनसे एराज किया जाए। ताहम अल्लाह तआला हर शख़्स की अंदरूनी हालत को जानता है और वह उसके मुताबिक हर शख़्स से मामला फरमाएगा।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۝ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से। जो कि बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं मगर कुछ आलूदगी (छोटी बुराई)। बेशक तुम्हारे रब की बख़्शिश की बड़ी समाई है। वह तुम्हें ख़ूब जानता है जबकि उसने तुम्हें जमीन से पैदा किया। और जब तुम अपनी मांओं के पेट में जनीन (भ्रूण) की शक्ल में थे। तो तुम अपने को मुकद्दस (पवित्र) न समझो। वह तकवा (ईश-भय) वालों को ख़ूब जानता है। (31-32)

कायनात अपने हददर्जा मोहकम (सुदृढ़) निजाम के साथ बता रही है कि उसका ख़ालिक व मालिक बेहद ताकतवर है। यही वाक्या यह समझने के लिए काफी है कि वह इंसान को पकड़ेगा और जब वह इंसान को पकड़ेगा तो किसी भी शख़्स के लिए उसकी पकड़ से बचना मुमकिन न होगा।

इंसान को बशरी (इंसानी) कमजोरियों के साथ पैदा किया गया है। इसलिए इंसान से फरिश्तों जैसी पाकीजगी का मुतालबा नहीं किया गया। अल्लाह तआला ने इंसान को पूरी तरह बता दिया है कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है। ताहम इंसान के लिए 'लमम' की माफी है। यानी वक्ती जज्बे के तहत किसी बुराई में पड़ जाना, बशर्ते कि आदमी फौरन बाद ही उसे महसूस करे और शर्मिंदा होकर अपने रब से माफी मांगे।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾ أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾ وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾

भला तुमने उस शख़्स को देखा जिसने एराज (उपेक्षा) किया। थोड़ा सा दिया और रुक गया। क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है। पस वह देख रहा है। क्या उसे ख़बर नहीं पहुंची उस बात की जो मूसा के सहीफों (ग्रंथों) में है, और इब्राहीम के, जिसने अपना कौल पूरा कर दिया। कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि इंसान के लिए वही है जो उसने कमाया। और यह कि उसकी कमाई अनकरीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा। और यह कि सबको तुम्हारे रब तक पहुंचना है। (33-42)

बहुत से लोग हैं जो थोड़ा सा हक की तरफ राग़िब होते हैं। फिर उनके मफादात (स्वार्थ) उन पर ग़ालिब आते हैं और वे दुबारा अपनी पिछली हालत की तरफ लौट जाते हैं। ऐसे लोग अपनी ग़लत रविश की तावील (औचित्य) के लिए तरह-तरह के ख़ूबसूरत अकीदे बना लेते हैं। मगर यह सिर्फ उनके जुर्म को बढ़ाता है, क्योंकि यह ग़लती पर सरकशी के इजाफे के हममअना है।

पैग़म्बरों के जरिए अल्लाह तआला ने जो हकीकत खोली है उसका ख़ुलासा यह है कि हर आदमी को लाजिमन अपने अमल का बदला पाना है। न कोई शख़्स अपने अमल के अंजाम से बच सकता और न कोई दूसरा शख़्स किसी को बचाने वाला बन सकता। जो लोग इस पैग़म्बराना चेतावनी से मुतनब्बह (सतर्क) न हों उनसे बड़ा नादान ख़ुदा की इस दुनिया में कोई नहीं।

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾ مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾ وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾ وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ﴿٤٩﴾

और बेशक वही हंसाता है और रुलाता है। और वही मारता है और जिलाता है। और उसी ने दोनों किस्म, नर और मादा को पैदा किया, एक बूंद से जबकि वह टपकाई जाए। और उसी के जिम्मे है दूसरी बार उठाना। और उसी ने दौलत दी और सरमायादार बनाया। और वही शिअरा (नाम के तारे) का रब है। (43-49)

दुनिया के हर वाकये का तअल्लुक ऐसे मावराई असबाब (आलौकिक कारकों) से होता है कि ख़ुदा के सिवा कोई और उसके ज़ुहूर पर कादिर नहीं हो सकता। ख़ुशी और ग़म, मौत व हयात, तख़्लीकी निजाम, अमीरी और ग़रीबी, सब एक बुलन्द व बरतर ताकत का करिश्मा हैं। कदीम इंसान सितारों को सबबे हयात (जीवन का कारक) समझता था, मौजूदा जमाने में कानूने फितरत (प्रकृति के नियम) को सबबे हयात समझ लिया गया है। मगर हकीकत यह है कि इन असबाब के ऊपर भी एक सबब है और वह ख़ुदाए रब्बुल आलमीन है। फिर उसके सिवा किसी और को मर्कजे तवज्जोह बनाना इंसान के लिए किस तरह जाइज हो सकता है।

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾ وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٥٣﴾ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٥٥﴾

और अल्लाह ही ने हलाक किया आदे अव्वल को और समूद को। फिर किसी को बाकी न छोड़ा। और कौमे नूह को उससे पहले, बेशक वे निहायत जालिम और सरकश थे। और उलटी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। पस उन्हें ढांक लिया जिस चीज ने ढांक लिया। पस तुम अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुठलाओगे। (50-55)

एक कौम तरक्की करती है। वह दूसरी कौमों से ऊपर उठ जाती है। बजाहिर नामुमकिन नजर आने लगता है कि कोई उसे मग़लूब (परास्त) कर सके। इसके बाद ऐसे असबाब होते हैं कि वह कौम हलाक हो जाती है या तनज़्ज़ुल (पतन) का शिकार होकर तारीख़े गुज़िश्ता (बीते इतिहास) का मौजूअ बन जाती है। यह वाकया जाहिर करता है कि इंसानों के ऊपर भी कोई ताकत है जो कौमों के मुस्तकबिल का फैसला करती है। तारीख़ के ये वाज़ेह वाकेयात भी अगर इंसान को सबक न दें तो वह कौन सा वाकया होगा जिससे इंसान अपने लिए सबक ले।

هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ﴿٦٢﴾

यह एक डराने वाला है पहले डराने वालों की तरह। करीब आने वाली करीब आ गई। अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं। क्या तुम्हें इस बात से तअज्जुब होता है। और तुम हंसते हो और तुम रोते नहीं। और तुम तकब्बुर करते हो। पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी की इबादत करो। (56-62)

पैग़म्बरों की तारीख़ जो क़ुरआन में बताई गई है, उससे जाहिर होता है कि हक का इंकार और उसका बुरा अंजाम दोनों हाथ की दो उंगलियों की तरह एक दूसरे से करीब हैं। आदमी के अंदर अगर एहसास हो तो वह इंकार और सरकशी का रवैया इख़्तियार करते ही ख़ुदा की पकड़ को अपनी तरफ आता हुआ देखने लगे, और सरकशी का तरीका छोड़कर इताअत का तरीक़ा इख़्तियार कर ले। मगर इंसान इतना ज्यादा मदहोश है कि अपने सामने की चीज भी उसे नजर नहीं आती।

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ① وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ② وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ③ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ④ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ⑤ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ⑥ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ⑦ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑧

आयतें-55 **सूरह-54. अल-क़मर** रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कियामत करीब आ गई और चांद फट गया। और वे कोई भी निशानी देखें तो वे एराज (उपेक्षा) ही करेंगे। और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है। और उन्होंने झुठला दिया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक्त मुकर्रर है। और उन्हें वे ख़बरें पहुंच चुकी हैं जिसमें काफी इबरत (सीख) है। निहायत दर्जे की हिक्मत (तत्वदर्शिता) मगर तंबीहात (चेतावनियां) उन्हें फायदा नहीं देतीं। पस उनसे एराज करो, जिस दिन पुकारने वाला एक नागवार चीज की तरफ पुकारेगा। आंखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे। गोया कि वे बिखरी हुई टिड्डियां हैं, भागते हुए पुकारने वाले की तरफ, मुंकिर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है। (1-8)

ख़ुदा मौजूदा दुनिया में ऐसे वाकेयात बरपा करता है जो कियामत को पेशगी तौर पर क़ाबिलेफ़हम बनाने वाले हों। इसी क़िस्म का एक वाक़्या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में हिजरत से चन्द साल पहले पेश आया। जबकि लोगों ने देखा कि चांद फटकर दो टुकड़े हो गया। उस वक्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों

से कहा कि देखो, जिस तरह चांद टूटा है इसी तरह पूरी दुनिया टूटेगी और फिर नई दुनिया बनाई जाएगी।

इस तरह के वाक़ेयात में बिलाशुबह सबक है। मगर इन वाक़ेयात से सबक लेना उसी वक्त मुमकिन है जबकि आदमी अपनी अक्ल से उसके बारे में सोचे। जिन लोगों के ऊपर उनकी ख़्वाहिशात ग़ालिब आ गई हों वे उन्हें देखकर कह देंगे कि 'यह जादू है।' वे वाकेयात की तौजीह अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक करके उन्हें अपने लिए ग़ैर मुअस्सिर (अप्रभावी) बना लेंगे। ऐसे लोगों के लिए बड़ी से बड़ी दलील भी बेमअना है। वे उसी वक्त होश में आएंगे जबकि कियामत की चिंघाड़ जाहिर हो और उनसे होश में आने का मौका छीन ले।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ⑨ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ⑩ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ⑪ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ⑫ وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ⑬ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ⑭ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑮ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ⑯ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑰

उनसे पहले नूह की कौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तक्जीब की (झुठलाया) और कहा कि दीवाना है और झिड़क दिया। पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब (दबाव-ग्रस्त) हूं, तू बदला ले। पस हमने आसमान के दरवाजे मूसलाधार बारिश से खोल दिए। और जमीन से चशमे (स्रोत) बहा दिए। पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुकद्दर हो चुका था। और हमने उसे एक तख़्तों और कीलों वाली पर उठा लिया, वह हमारी आंखों के सामने चलती रही। उस शख़्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाकद्री की गई थी। और उसे हमने निशानी के लिए छोड़ दिया। फिर कोई है सोचने वाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (9-17)

हजरत नूह की कौम के अकाबिर (बड़े) अपनी झूठी अज़्मतों में गुम थे। वे हजरत नूह का एतराफ करने के लिए तैयार न हो सके। इसका नतीजा यह हुआ कि वे अजाबे इलाही की जद में आ गए। उन पर यह अजाब हौलनाक सैलाब की सूरत में आया। सारी कौम अपनी आबादियों सहित उसमें ग़र्क हो गई। अलबत्ता हजरत नूह और उनके साथी ख़ुदा के हुक्म से एक कश्ती में सवार हो गए। यह कश्ती चलती हुई अरारात पहाड़ पर ठहर गई।

अरारात टर्की में वाकेअ है। वह वहां का सबसे ऊंचा पहाड़ है। उसकी चोटी 16853 फिट ऊंची है। कुछ हवाबाजों का कहना है कि उन्होंने अरारात की बरफ़ानी चोटी के ऊपर से उड़ते हुए वहां कश्ती जैसी एक चीज बर्फ में धंसी हुई देखी है। अगर यह सही हो तो इसका मतलब यह है कि फ़िरऔने मूसा की लाश जिस तरह अहराम के अंदर दफ़न थी और उन्नीसवीं सदी के आख़िर में बरामद होकर ख़ुदा की निशानी (यूनुस 92) बन गई, इसी तरह शायद किसी वक्त कश्ती नूह भी दरयाफ्त हो और वह लोगों के लिए ख़ुदा की निशानी बन जाए।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ۝ تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝

आद ने झुठलाया तो कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक सख़्त हवा भेजी मुसलसल नहूसत के दिन में। वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वे उखड़े हुए खजूरों के तने हों। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (18-22)

कौमे आद जब ख़ुदा के अजाब की मुस्तहिक हो गई तो ख़ुदा ने उन पर ऐसी तेज आंधी भेजी जिसमें लोगों का जमीन पर ठहरना मुश्किल हो गया। आंधी उन्हें इस तरह उठा-उठाकर फेंक रही थी कि कोई दीवार से जाकर टकराता था और कोई दरख़्त से। किसी की छत उसके सर पर गिर पड़ी। यह इस बात का मुजाहिरा था कि इंसान बिल्कुल बेबस है, ख़ुदा के मुकाबले में उसे किसी किस्म का इख़्तियार हासिल नहीं।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوا أَبَشَرًا مِنَّا وَاحِدًا نَتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝

समूद ने डर सुनाने को झुठलाया। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने ही अंदर के एक आदमी के कहे पर चलेंगे, इस सूरत में तो हम ग़लती और जुनून में पड़ जाएंगे। क्या हम सब में से उसी पर नसीहत उतरी है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला। अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला। हम ऊंटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए आजमाइश बनाकर, पस तुम उनका इंतिजार करो। और सब्र करो। और उन्हें आगाह कर दो कि पानी उन में बांट दिया गया है, हर एक बारी पर हाजिर हो। फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊंटनी को काट डाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रौंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गए। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (23-32)

पैग़म्बर हमेशा आम इंसान के रूप में आता है, इसलिए इंसान उसे पहचान नहीं पाता। इसी तरह ख़ुदा की ऊंटनी भी बजाहिर आम ऊंटनी की तरह थी। इसलिए समूद के लोग उसे पहचान न सके। और उसे मार डाला। मौजूदा दुनिया इसी बात का इम्तेहान है। यहां लोगों को बजाहिर एक आम आदमी में ख़ुदा के नुमाइंदे को देखना है। बजाहिर एक आम ऊंटनी में ख़ुदा की ऊंटनी को पहचान लेना है। जो लोग इस इम्तेहान में नाकाम रहें वे कभी हिदायत के रास्ते को नहीं पा सकते।

कुरआन अगरचे गहरे मआनी की किताब है। मगर उसके अंदर बयान में हददर्जा वुज़ूह (Clarity) है। इस वुज़ूह (सुस्पष्टता) की बिना पर कुरआन का समझना हर आदमी के लिए आसान हो गया है, चाहे वह एक आम आदमी हो या एक आला तालीमयाफ़्ता आदमी।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۝ نِعْمَةً مِنْ عِنْدِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝

लूत की कौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ लूत के घर वाले उससे बचे, उन्हें हमने बचा लिया सहर (भोर) के वक्त। अपनी जानिब से फज़्ल करके। हम इसी तरह बदला देते हैं उसे जो शुक्र करे। और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। और वे उसके मेहमानों को उससे लेने लगे। पस हमने उनकी आंखें मिटा दीं। अब चखो मेरा अजाब और मेरा डराना। और

सुबह सवेरे उन पर अज़ाब आ पड़ा जो ठहर चुका था। अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (33-40)

हजरत लूत अलैहि० की दावत उठी तो कुछ लोगों ने उसका एतराफ कर लिया, वे हक को बड़ा मान कर अपने आपको उसके मुकाबले में छोटा करने पर राजी हो गए। मगर अक्सर अफराद ने ऐसा नहीं किया। वे दलाइल का एतराफ करने के बजाए उसे रद्द करने के लिए झूठी बहसें निकालते रहे। हक की दावत के मुकाबले में इस किस्म की रविश बहुत बड़ा जुर्म है, चुनांचे एतराफ करने वालों को छोड़कर इंकार करने वाले पकड़ लिए गए। यह एक मिसाल है कि इस दुनिया में हक का इंकार करने वालों के लिए हलाकत है और हक का एतराफ करने वालों के लिए नजात।

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

और फिरऔन वालों के पास पहुंचे डराने वाले। उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उन्हें एक ग़ालिब (प्रभावशाली) और कुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा। (41-42)

फिरऔन अपने वक्त का इंतिहाई ताकतवर बादशाह था। मगर हक का इंकार करने के बाद वह अल्लाह की नजर में बेकीमत हो गया। इसके बाद वह एक आजिज इंसान की तरह हलाक कर दिया गया। इस दुनिया में हक के साथ खड़ा होने वाला आदमी जोरआवर है और हक के ख़िलाफ खड़ा होने वाला आदमी बेजोर।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ۝ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ۗ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝

क्या तुम्हारे मुंकिर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में माफी लिख दी गई है। क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी जमाअत हैं जो ग़ालिब रहेंगे। अनकरीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेगी। बल्कि कियामत उनके वादे का वक्त है और कियामत बड़ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज है। बेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअक्ली में हैं। जिस दिन वे मुंह के बल आग में घसीटे जाएंगे। चखो मजा आग का। (43-48)

पिछले पैग़म्बरों का इंकार करने वालों के साथ जो वाकेयात पेश आए उनमें पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार करने वालों के लिए नसीहत थी। मगर उन्होंने इससे नसीहत न ली। यही तमाम कौमों का हाल है। खुली निशानियों के बावजूद हर कौम अपने आपको महफूज और मुस्तसना (अपवाद) कौम समझ लेती है। हर कौम दुबारा वही सरकशी करती है जो पिछली कौमों ने की और उसके नतीजे में वह ख़ुदाई अजाब की मुस्तहिक हो गईं।

اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَىْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝ فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

हमने हर चीज को पैदा किया है अंदाजे से। और हमारा हुक्म बस यकबारगी आ जाएगा जैसे आंख का झपकना। और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, फिर क्या कोई है सोचने वाला। और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है। और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। बेशक डरने वाले बाग़ों में और नहरों में होंगे। बैठे सच्ची बैठक में, कुदरत वाले बादशाह के पास। (49-55)

दुनिया की हर चीज का एक मुकर्रर जाब्ता (नियम) है। यही उसूल इंसान के मामले में भी है। इंसान को एक मुकर्रर जाब्ते के तहत मौजूदा दुनिया में अमल का मौका दिया गया है। और मुकर्रर जाब्ते ही के तहत उसे अमल के मकाम से हटाकर अंजाम के मकाम में पहुंचा दिया जाता है। ख़ालिक की कुदरत जो मौजूदा कायनात में जाहिर हुई है वह यह यकीन दिलाने के लिए काफी है कि यह मामला ऐन अपने वक्त पर बिलाताख़ीर (अविलंब) पेश आएगा। इसी तरह मौजूदा दुनिया में रिकॉर्डिंग का निजाम इस हकीकत का पेशगी एलान है कि हर एक के साथ ऐन वही मामला किया जाएगा जो उसके अमल के मुताबिक हो। ताहम ये बातें उसी शख़्स की समझ में आएंगी जो अपने अंदर यह मिजाज रखता हो कि वह वाकेयात पर ग़ौर करे। और जाहिर से गुजर कर बातिन में छुपी हुई हकीकतों को देख सके।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां हर एक को पूरी आजादी हासिल है। इसलिए मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि आदमी 'झूठी नशिस्त (बैठक)' पर भी बैठकर नुमायां हो सके। वह झूठ की जमीन पर इज्जत और मर्तबे का मकाम हासिल कर ले। मगर आख़िरत में किसी के लिए ऐसा मुमकिन न होगा। आख़िरत में इज्जत और कामयाबी सिर्फ उन लोगों को मिलेगी जो सच्ची नशिस्त पर बैठने वाले हों। जिन्होंने फिलवाकअ अपने आपको सच की जमीन पर खड़ा किया हो। आख़िरत में ख़ुदा की कुदरते कामिल का जुहूर

इस बात की जमानत बन जाएगा कि वहां सच्ची नशिस्त के सिवा किसी और नशिस्त पर बैठना किसी के कुछ काम न आ सके।

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَسَبْعُوْنَ اٰيَةً ثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ﴿۵﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾

आयतें-78 **सूरह-55. अर-रहमान** रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

रहमान ने, कुरआन की तालीम दी। उसने इंसान को पैदा किया। उसे बोलना सिखाया। सूरज और चांद के लिए एक हिसाब है। और सितारे और दरख़्त सज्दा करते हैं। और उसने आसमान को ऊंचा किया और उसने तराज़ू रख दी। कि तुम तोलने में ज्यादती न करो। और इंसाफ के साथ सीधी तराज़ू तोलो और तोल में न घटाओ। (1-9)

अल्लाह तआला ने इंसान को बनाया। उसे नुत्क़ (बोलने) की अनोखी सलाहियत दी जो सारी मालूम कायनात में किसी को हासिल नहीं। फिर इंसान से जो आदिलाना (न्यायपूर्ण) रविश मत्लूब थी उसका अमली नमूना उसने कायनात में कायम कर दिया। इंसान के गिर्द व पेश की पूरी दुनिया ऐन उसी उसूले अद्ल पर कायम है जो इंसान से अल्लाह तआला को मत्लूब है और कुरआन में इसी अद्ल (न्याय) को लफ्ज़ी तौर पर बयान कर दिया गया है। कुरआन ख़ुदाई अद्ल का लफ़्ज़ी इज़्हार है और कायनात ख़ुदाई अद्ल का अमली इज़्हार। बंदों के लिए जरूरी है कि वह अपने कौल व अमल को इसी तराज़ू से नापते रहें। वे न लेने में बेइंसाफी करें और न देने में।

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ﴿۱۰﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖ﴿۱۱﴾ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ﴿۱۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ﴿۱۴﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ﴿۱۵﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۶﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ﴿۱۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ﴿۱۹﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۚ﴿۲۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ﴿۲۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ﴿۲۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾

और जमीन को उसने ख़ल्क (प्राणियों) के लिए रख दिया। उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर ग़िलाफ होता है। और भुस वाले अनाज भी हैं और ख़ुशबूदार फूल भी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने पैदा किया इंसान को ठीकरे की तरह खंखनाती मिट्टी से और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वह मालिक है दोनों मश्रिक (पूर्व) का और दोनों मग़्रिब का (पश्चिम)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने चलाए दो दरिया, मिलकर चलने वाले। दोनों के दर्मियान एक पर्दा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उन दोनों से मोती और मूंगा निकलता है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। और उसी के हैं जहाज समुद्र में ऊंचे खड़े हुए जैसे पहाड़, फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (10-25)

इस दुनिया का बेशतर हिस्सा सितारों पर मुशतमिल है जो सरापा आग हैं। जिन्नात उसी आग के माद्दा से बनाए गए हैं। मगर इंसान के साथ अल्लाह तआला का यह ख़ुसूसी मामला है कि उसे 'मिट्टी' से बनाया गया है जो वसीअ कायनात में इंतिहाई नादिर चीज है।

जमीन सारी कायनात में एक अनोखा इस्तिसना (अपवाद) है। यहां वे तमाम असबाब हददर्जा तवाज़ुन (संतुलन) और तनासुब (अनुपात) के साथ मुहय्या किए गए हैं जिनके जरिए इंसान जैसी मख़्लूक के लिए रहना और तमद्दुन (सभ्यता) की तामीर करना मुमकिन हो सके। इन्हीं इंतिजामात में से एक इंतिजाम जमीन में मश्रिकैन और मग़्रिबैन का होना है। जाड़े के मौसम में सूरज के तुलूअ व गुरूब के मकामात दूसरे होते हैं। और गर्मी के मौसम में दूसरे। इस लिहाज से उसके मश्रिक व मग़्रिब कई हो जाते हैं। यह मौसमी फर्क़ फ़ज़ा में जमीन के महवरी झुकाव (Axial tilt) की वजह से पैदा होता है। यह झुकाव कायनात का एक इंतिहाई अनोखा वाकया है। और इससे बेशुमार तमद्दुनी फायदे इंसान को हासिल होते हैं।

नाक़ाबिले क़यास हद तक वसीअ कायनात में इंसान और जमीन का यह इस्तिसना ख़ुदा की नेमत व कुदरत का ऐसा अजीम मामला है कि इंसान किसी भी तरह उसका शुक्र अदा करने पर क़ादिर नहीं।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ﴿۲۶﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۚ﴿۲۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ ۚ﴿۲۹﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

जो भी जमीन पर है वह फ़ना होने वाला है। और तेरे रब की जात बाकी रहेगी, अज़्मत वाली और इज्जत वाली। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसी से मांगते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। हर रोज उसका एक काम है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (26-30)

दुनिया का मुतालआ बताता है कि हर चीज फ़नापज़ीर (पतनशील) है। अशया (चीजों) का फ़नापज़ीरी के बावजूद मौजूद होना यह साबित करता है कि उनका ख़ालिक और मुंतज़िम ग़ैर फ़ानी है। अगर वह ग़ैर फ़ानी न होता तो अशया का वजूद ही न होता। या अगर होता तो अब तक उनका वजूद मिट चुका होता।

दुनिया का मुतालआ यह भी बताता है कि दुनिया की किसी चीज के अंदर तख़्लीक (सृजन) की ताकत नहीं। इसका मतलब यह है कि अशया अपनी बका (अस्तित्व) के लिए जिन चीजों की मोहताज हैं वे उनकी अपनी पैदाकरदा नहीं हैं। यह वाक्या दुबारा ख़ालिक के बेपायां कुदरत को बताता है। ये हकीकतें इतनी वाज़ेह हैं कि किसी संजीदा आदमी की लिए इनका इंकार मुमकिन नहीं।

ख़ुदा की निशानियां इस दुनिया में इतनी ज्यादा हैं कि एक संजीदा इंसान के लिए उन्हें नजरअंदाज करना किसी तरह मुमकिन नहीं। मगर इंसान इतना जालिम है कि वह निशानियों के हुजूम में भी निशानियों का इंकार करता है।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا ۚ لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

हम जल्द ही फ़ारिग़ होने वाले हैं तुम्हारी तरफ से, ऐ दो भारी काफ़िलो। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह, अगर तुमसे हो सके कि तुम आसमानों और जमीन की हदों से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुवां तो तुम बचाव न कर सकोगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (31-36)

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। जब तक इम्तेहान की दुनिया ख़त्म नहीं होती हर शख़्स सरकशी करने के लिए आजाद है। मगर कामिल आजादी के बावजूद कोई जिन्न व इंस इस पर कादिर नहीं कि वह कायनात की हुदूद से बाहर चला जाए। यही वाकया यह साबित करने के लिए काफी है कि इंसान पूरी तरह ख़ुदा की गिरफ्त में है। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होने पर जब वह लोगों को पकड़ेगा तो किसी के लिए मुमकिन न होगा कि उससे अपने आपको बचा सके।

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۝ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुर्ख़ हो जाएगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। पस उस दिन किसी इंसान या जिन्न से उसके गुनाह की बाबत पूछ न होगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नमतों को झुठलाओगे। मुजरिम पहचान लिए जाएंगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पांव से। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। यह जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूठ बताते थे। वे फिरेंगे उसके दर्मियान और खौलते पानी के दर्मियान। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (37-45)

इंकार और सरकशी की वजह हमेशा बेख़ौफी होती है। कियामत का हौलनाक लम्हा जब सामने आएगा तो मुजरिम अपनी सरकशी भूल जाएंगे। मौजूदा दुनिया में जिस हक को वे ताकतवर दलाइल के बावजूद मानने के लिए तैयार न होते थे, कियामत में उसे बिला बहस मान लेंगे। मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा। अल्लाह की कुदरतों को ग़ैब में मानना मोतबर है न कि उसके जाहिर हो जाने के बाद।

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا مِن كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ

فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾

और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे उसके लिए दो बाग़ हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बहुत शाख़ों वाले। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनके अंदर दो चशमे (स्रोत) जारी होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बाग़ों में हर फल की दो किस्में। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे तकिया लगाए ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज (गाढ़े) रेशम के होंगे। और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें नीची निगाह वाली औरतें होंगी। जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुवा होगा न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे ऐसी होंगी जैसे कि याकूत (लालमणि) और मरजान (मूंगा)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (46-61)

वसीअ तक्सीम के एतबार से जन्नत के दो बड़े दर्जे हैं। इन आयात में दो बाग़ों वाली जिस जन्नत का जिक्र है वह पहले दर्जे वाली जन्नत है। उस जन्नत में शाहाना दर्जे की नेमतें मुहय्या होंगी। ये आला नेमतें उन लोगों को मिलेंगी जिन पर अल्लाह का फ़िक्र इतना ग़ालिब हुआ कि मौजूदा दुनिया में ही उन्होंने अपने आपको अल्लाह के सामने खड़ा कर लिया। उन्होंने एहसान (उच्चतम) के दर्जे में अल्लाह से तअल्लुक का सुबूत दिया।

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِىٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

और उनके सिवा दो बाग़ और हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों गहरे सब्ज स्याही मायल। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें फल और खजूर और अनार होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें ख़ूबसीरत (सुशील), ख़ूबसूरत औरतें होंगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। हूरें ख़ेमों में रहने वालियां। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनसे पहले उन्हें न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तकिया लगाए सब्ज मस्नदों (हरित आसनों) पर और कीमती नफीस बिछौने पर। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बड़ा बाबरकत है तेरे रब का नाम बड़ाई वाला और अज़्मत वाला। (62-78)

इन आयात में दूसरी जन्नत का जिक्र है। वह भी पहली जन्नत की तरह दो बाग़ों वाली होगी। यह जन्नत आम अहले तकवा के लिए होगी। मौजूदा दुनिया की नेमतों के एतबार से इस जन्नत की नेमतें भी अगरचे नाक़ाबिले क्यास हद तक ज्यादा होंगी मगर पहली जन्नत के मुकाबले में वह दूसरे दर्जे की जन्नत है। ये जन्नतें उस ख़ालिक व मालिक के शायाने शान होंगी जिसकी अज़्मतों और कुदरतों के नमूने मौजूदा दुनिया में जाहिर हुए हैं और जिन्हें देखने वाले आज ही देख रहे हैं।

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِىَ سِتٌّ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾

आयतें-96 सूरह-56. अल-वाकिअह रुकूअ-3

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाकेअ (घटित) होने वाली वाकेअ हो जाएगी। उसके वाकेअ होने में कुछ झूठ नहीं। वह

पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली होगी। जबकि जमीन हिला डाली जाएगी। और पहाड़ टूट कर रेजा-रेजा हो जाएंगे। फिर वे परागंदा ग़ुबार (मलिन धुंध) बन जाएंगे। और तुम लोग तीन किस्म के हो जाओगे। (1-7)

मौजूदा दुनिया में आदमी देखता है कि उसे आजादी हासिल है कि जो चाहे करे। इसलिए आख़िरत की पकड़ की बात उसके जेहन में नहीं बैठती। मगर अगली दुनिया का बनना इतना ही मुमकिन है जितना मौजूदा दुनिया का बनना। जब वह वक्त आएगा तो सारा निजाम पलट हो जाएगा। ऊपर के लोग नीचे हो जाएंगे। और नीचे के लोग ऊपर दिखाई देंगे। उस वक्त इंसान अपने-अपने अमल के एतबार से तीन गिरोहों में तक्सीम हो जाएंगे। अससाबिकून (आगे वाले), असहाबुलयमीन (दाईं तरफ वाले) और असहाबुश्शिमाल (बाईं तरफ वाले)।

فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿٩﴾ وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ﴿١٠﴾ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ﴿١٦﴾ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿١٨﴾ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾

फिर दाएं वाले, पस क्या ख़ूब हैं दाएं वाले। और बाएं वाले कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले। और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं। वे मुकर्रब लोग हैं। नेमत के बाग़ों में। उनकी बड़ी तादाद अगलों में से होगी। और थोड़े पिछलों में से होंगे। जड़ाऊ तख़्तों पर। तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे। फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले। आबख़ोरे और कूजे लिए हुए और प्याला साफ शराब का। उससे न सर दर्द होगा और न अक्ल में फ़ुतूर आएगा। और मेवे कि जो चाहें चुन लें। और परिंदों का गोश्त जो उन्हें मरग़ूब (पसंद) हो। और बड़ी आंखों वाली हूरें। जैसे मोती के दाने अपने ग़िलाफ के अंदर। बदला उन कामों का जो वे करते थे। उसमें वे कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे। मगर सिर्फ सलाम-सलाम का बोल। (8-26)

अससाबिकून (आगे वाले) वे लोग हैं जो हक के सामने आते ही फ़ौरन उसे क़ुबूल कर लें। वे बिला ताख़ीर (अविलंब) अपने आपको हक के हवाले कर दें। हजरत आइशा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : क्या तुम जानते हो कि कियामत के दिन कौन लोग अल्लाह के साये में सबसे पहले जगह पाएंगे। लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा बेहतर जानते हैं। आपने फरमाया कि वे लोग कि जब उनके सामने हक आया तो उन्होंने उसे क़ुबूल कर लिया। और जब उनसे हक मांगा गया तो उन्होंने उसे दिया। और दूसरों के मामले में उन्होंने वही फैसला किया जो फैसला उनका ख़ुद अपने बारे में था। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

दावत के दौरे अव्वल में जो अफराद आगे बढ़कर इस्लाम क़ुबूल करते हैं उनके लिए इस्लाम एक दरयाफ्त होता है। इसके बाद उनकी जो नस्लें हैं वे इस्लाम को विरासत के तौर पर पाती हैं। दरयाफ्त और विरासत का यही फ़र्क है जो पहले गिरोह का मर्तबा दूसरे गिरोह से बुलन्द कर देता है। कुदरती तौर पर दूसरा गिरोह तादाद में ज्यादा होता है और पहला गिरोह कम। आख़िरत में दूसरे गिरोह के लिए अगर आम इनामात हैं तो पहले गिरोह के लिए शाहाना इनामात।

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَمَاءٍ مَسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَفُرُشٍ مَرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾

और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिने वाले। बेरी के दरख़्तों में जिनमें कांटा नहीं। और केले तह-ब-तह। और फैले हुए साये। और बहता हुआ पानी। और कसरत (बहुलता) से मेवे। जो न ख़त्म होंगे और न कोई रोकटोक होगी। और ऊंचे बिछौने। हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है। फिर उन्हें कुंवारी रखा है। दिलरुबा और हमउम्र। दाहिने वालों के लिए। अगलों में से एक बड़ा गिरोह होगा और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह। (27-40)

असहाबुलयमीन (दाईं तरफ वाले) से मुराद आम अहले जन्नत हैं। इसमें वे तमाम लोग शामिल हैं जो अपने अकीदे और किरदार के एतबार से सालेह थे। उन्हें ईमानी एतबार से अगरचे आला शुऊरी दर्जा हासिल न था ताहम वे ख़ुदा व रसूल के लिए मुख़्लिस थे और अपनी जिंदगी में इंसाफ और ख़ुदातरसी के रास्ते पर कायम रहे। इस गिरोह में दौरे अव्वल के भी काफी लोग होंगे और दौरे सानी के भी काफी लोग।

وَاَصۡحٰبُ الشِّمَالِ ۙ۬ مَاۤ اَصۡحٰبُ الشِّمَالِ ؕ فِیۡ سَمُوۡمٍ وَّ حَمِیۡمٍ ۙ وَّ ظِلٍّ مِّنۡ
یَّحۡمُوۡمٍ ۙ لَّا بَارِدٍ وَّ لَا کَرِیۡمٍ اِنَّہُمۡ کَانُوۡا قَبۡلَ ذٰلِکَ مُتۡرَفِیۡنَ ۚۖ وَ کَانُوۡا
یُصِرُّوۡنَ عَلَی الۡحِنۡثِ الۡعَظِیۡمِ ۚ وَ کَانُوۡا یَقُوۡلُوۡنَ ۬ۙ اَئِذَا مِتۡنَا وَ کُنَّا
تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ ۙ اَوَ اٰبَآؤُنَا الۡاَوَّلُوۡنَ قُلۡ اِنَّ الۡاَوَّلِیۡنَ
وَ الۡاٰخِرِیۡنَ ۙ لَمَجۡمُوۡعُوۡنَ ۬ۙ اِلٰی مِیۡقَاتِ یَوۡمٍ مَّعۡلُوۡمٍ ثُمَّ اِنَّکُمۡ اَیُّہَا
الضَّآلُّوۡنَ الۡمُکَذِّبُوۡنَ ۙ لَاٰکِلُوۡنَ مِنۡ شَجَرٍ مِّنۡ زَقُّوۡمٍ ۙ فَمَالِـُٔوۡنَ مِنۡہَا الۡبُطُوۡنَ ۚ
فَشٰرِبُوۡنَ عَلَیۡہِ مِنَ الۡحَمِیۡمِ ۚ فَشٰرِبُوۡنَ شُرۡبَ الۡہِیۡمِ ؕ ہٰذَا نُزُلُہُمۡ
یَوۡمَ الدِّیۡنِ ؕ

और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं बाएं वाले। आग में और खौलते हुए पानी में। और स्याह धुवें के साये में। न ठंडा और न इज्जत का। ये लोग इससे पहले ख़ुशहाल थे। और भारी गुनाह पर इसरार करते रहे। और वे कहते थे, क्या जब हम मर जाएंगे। और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि अगले और पिछले सब, जमा किए जाएंगे। एक मुक़र्रर दिन के वक्त पर। फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुठलाने वाले। जक्कूम के दरख़्त में से खाओगे। फिर उससे अपना पेट भरोगे। फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे। फिर प्यासे ऊंटों की तरह पियोगे। यह उनकी मेहमानी होगी इंसाफ के दिन। (41-56)

असहाबुश्शिमाल (बाईं तरफ वाले) से मुराद वे लोग हैं जिनके लिए अजाब का फैसला किया जाएगा। दुनिया में उन्हें जो चीजें मिली थीं उन्होंने उन्हें धोखे में डाल दिया। वे अल्लाह के सिवा दूसरी चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाए रहे। जो इस दुनिया में किसी इंसान का सबसे बड़ा जुर्म है। वे आख़िरत को इस तरह भूले रहे गोया कि वह आने वाली ही नहीं। ऐसे लोग फैसले के दिन सख़्त अजाब के मुस्तहिक क़रार दिए जाएंगे।

نَحۡنُ خَلَقۡنٰکُمۡ فَلَوۡ لَا تُصَدِّقُوۡنَ اَفَرَءَیۡتُمۡ مَّا تُمۡنُوۡنَ ؕ ءَاَنۡتُمۡ تَخۡلُقُوۡنَہٗۤ
اَمۡ نَحۡنُ الۡخٰلِقُوۡنَ نَحۡنُ قَدَّرۡنَا بَیۡنَکُمُ الۡمَوۡتَ وَ مَا نَحۡنُ بِمَسۡبُوۡقِیۡنَ ۙ
عَلٰۤی اَنۡ نُّبَدِّلَ اَمۡثَالَکُمۡ وَ نُنۡشِئَکُمۡ فِیۡ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ وَ لَقَدۡ عَلِمۡتُمُ

النَّشۡاَۃَ الۡاُوۡلٰی فَلَوۡ لَا تَذَکَّرُوۡنَ اَفَرَءَیۡتُمۡ مَّا تَحۡرُثُوۡنَ ؕ ءَاَنۡتُمۡ تَزۡرَعُوۡنَہٗۤ اَمۡ
نَحۡنُ الزّٰرِعُوۡنَ لَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنٰہُ حُطَامًا فَظَلۡتُمۡ تَفَکَّہُوۡنَ اِنَّا لَمُغۡرَمُوۡنَ ۙ
بَلۡ نَحۡنُ مَحۡرُوۡمُوۡنَ اَفَرَءَیۡتُمُ الۡمَآءَ الَّذِیۡ تَشۡرَبُوۡنَ ؕ ءَاَنۡتُمۡ اَنۡزَلۡتُمُوۡہُ مِنَ
الۡمُزۡنِ اَمۡ نَحۡنُ الۡمُنۡزِلُوۡنَ لَوۡ نَشَآءُ جَعَلۡنٰہُ اُجَاجًا فَلَوۡ لَا تَشۡکُرُوۡنَ
اَفَرَءَیۡتُمُ النَّارَ الَّتِیۡ تُوۡرُوۡنَ ؕ ءَاَنۡتُمۡ اَنۡشَاۡتُمۡ شَجَرَتَہَاۤ اَمۡ نَحۡنُ الۡمُنۡشِـُٔوۡنَ
نَحۡنُ جَعَلۡنٰہَا تَذۡکِرَۃً وَّ مَتَاعًا لِّلۡمُقۡوِیۡنَ ۚ فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّکَ الۡعَظِیۡمِ

हमने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम तस्दीक (पुष्टि) क्यों नहीं करते। क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज पर जो तुम टपकाते हो। क्या तुम उसे बनाते हो या हम हैं बनाने वाले। हमने तुम्हारे दर्मियान मौत मुक़द्दर की है और हम इससे आजिज नहीं कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी सूरत में बना दें जिन्हें तुम जानते नहीं। और तुम पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक नहीं लेते। क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज पर जो तुम बोते हो। क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगाने वाले। अगर हम चाहें तो उसे रेजा-रेजा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। हम तो तावान (दंढ) में पड़ गए। बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए। क्या तुमने ग़ौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो। क्या तुमने उसे बादल से उतारा है। या हम हैं उतारने वाले। अगर हम चाहें तो उसे सख़्त खारी बना दें। फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते। क्या तुमने ग़ौर किया उस आग पर जिसे तुम जलाते हो। क्या तुमने पैदा किया है उसके दरख़्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले। हमने उसे याददिहानी बनाया है। और मुसाफिरों के लिए फायदे की चीज। पस तुम अपने अजीम (महान) रब के नाम की तस्बीह करो। (57-74)

मां के पेट से इंसान का पैदा होना, जमीन से खेती का उगना, बारिश से पानी का बरसना, ईंधन से आग का हासिल होना, ये सब चीजें बराहेरास्त ख़ुदा की तरफ से हैं। आदमी को उनके मिलने पर ख़ुदा का शुक्रगुजार होना चाहिए। उन्हें ख़ुदा का अतिया समझना चाहिए न कि अपने अमल का नतीजा।

इन वाकेयात में ग़ौर करने वाले के लिए बेशुमार नसीहतें हैं। इनमें मौजूदा जिंदगी के बाद दूसरी जिंदगी का सुबूत है। इसी तरह इनमें यह निशानी है कि जिसने उन्हें दिया है वह उन्हें छीन भी सकता है। फिर इसी का एक नमूना पानी का मामला है। पानी का जख़ीरा समुद्रों की शक्ल में है जो कि ज्यादातर खारी हैं। पानी का तकरीबन 98 फीसद

हिस्सा समुद्र में है। और समुद्र के पानी का 1/10 हिस्सा नमक होता है। यह ख़ुदा के कानून का करिश्मा है कि समुद्र से जब पानी के बुख़ारात (वाष्प) उठते हैं तो ख़ालिस पानी ऊपर उड़ जाता है और नमक नीचे रह जाता है। हकीक़त यह है कि बारिश का अमल इज़ालए नमक (Desalination) का एक अज़ीम आफ़ाक़ी (नैसर्गिक) अमल है। अगर यह क़ुदरती एहतिमाम न हो तो सारा का सारा पानी वैसा ही खारी हो जाए जैसा समुद्र का पानी होता है। पहाड़ों पर जमी हुई बर्फ और दरियाओं में बहने वाला पानी सबके सब सख़्त खारी हों, जमीन पर पानी के अथाह ज़ख़ीरे के बावजूद मीठे पानी का हुसूल इंसानियत के लिए सख़्त नाक़ाबिले हल मसला बन जाए। आदमी अगर इसे सोचे तो उसका सीना हम्दे ख़ुदावंदी (ईश-प्रशंसा) के जज़्बे से भर जाएगा।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾

पस नहीं, मैं कसम खाता हूं सितारों के मवाकेअ (स्थितियों) की। और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी कसम है। बेशक यह एक इज़्ज़त वाला क़ुरआन है। एक महफ़ूज़ किताब में। इसे वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं। उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ से। फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बेएतनाई (बेपरवाही) बरतते हो। और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम उसे झुठलाते हो। (75-82)

मवाकेअ का लफ़्ज़ मौक़ेअ का बहुवचन है। इसके मअना है गिरने की जगह। चुनांचे बारिश होने की जगह को मवाकिउलक़तर कहा जाता है। यहां सितारों के मवाकेअ से मुराद ग़ालिबन सितारों के मदार (Orbits) हैं। कायनात में बेशुमार निहायत बड़े-बड़े सितारे हैं। वे हददर्जा सेहत के साथ अपने अपने मदार (कक्ष) पर घूम रहे हैं।

यह वाक़्या दहशतनाक हद तक अज़ीम है। जो शख़्स इस ख़लाई निज़ाम पर ग़ौर करेगा वह यह मानने पर मजबूर होगा कि इस कायनात का ख़ालिक नाक़ाबिले क़यास हद तक अज़ीम है। फिर ऐसे ख़ालिक की तरफ से जो किताब आए वह भी यक़ीनन अज़ीम होगी। और क़ुरआन बिलाशुबह ऐसी ही एक अज़ीम किताब है।

क़ुरआन जिस तरह लौहे महफ़ूज़ में था, ठीक उसी तरह वह फ़रिश्तों के ज़रिए पैग़म्बर तक पहुंचा। और आज तक वह उसी तरह महफ़ूज़ है। क़दीम ज़माने में कोई भी दूसरी किताब नहीं जो इस तरह कामिल तौर पर महफ़ूज़ हो। यह वाक़्या ख़ुद इस किताब की अज़्मत (महानता) का सुबूत है। ऐसी एक किताब से जो शख़्स हिदायत हासिल न करे उसकी महरूमी का कोई ठिकाना नहीं।

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

फिर क्यों नहीं, जबकि जान हलक में पहुंचती है। और तुम उस वक्त देख रहे होते हो। और हम तुमसे ज्यादा उस शख़्स से करीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते। फिर क्यों नहीं, अगर तुम महकूम (अधीन) नहीं हो तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वह मुकर्रबीन (निकटवर्तियों) में से हो तो राहत है और उम्दा रोजी है और नेमत का बाग़ है। और अगर वह असहाबुलयमीन (दाईं तरफ वाले) में से हो तो तुम्हारे लिए सलामती, तू असहाबुलयमीन में से है। और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो। तो गर्म पानी की ज़ियाफ़त (सत्कार) है, जहन्नम में दाख़िल होना। बेशक यह क़तई हक़ है। पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तस्बीह करो। (83-96)

मौत का वाक़्या इस बात का आख़िरी सुबूत है कि इंसान ख़ुदाई ताक़तों के आगे बिल्कुल बेबस है। हर आदमी लाज़िमन एक मुकर्ररह वक्त पर मर जाएगा, और कोई नहीं जो उसे मौत के फ़रिश्ते से बचा सके। ऐसी हालत में आदमी को सबसे ज्यादा मौत के बाद के मसले के बारे में फ़िक्रमंद हो जाना चाहिए। मौत से पहले की ज़िंदगी में जिन लोगों ने जन्नत वाले आमाल किए हैं उन्हें मौत के बाद की ज़िंदगी में जन्नत मिलेगी। इसके बरअक्स, जो लोग दुनिया में ख़ुदा से दूर थे वे आख़िरत में भी ख़ुदा की रहमतों से दूर रखे जाएंगे। उनकी ज़ियाफ़त (सत्कार) की लिए वहां गर्म पानी है और उनके रहने के लिए वहां आग की दुनिया।

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ

أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾

आयतें-29 **सूरह-57. अल-हदीद** रुकूअ-4

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है। वह जिलाता है और मारता है और वह हर चीज पर कादिर है। वही अव्वल भी है और आख़िर भी और जाहिर (व्यक्त) भी है और बातिन (अव्यक्त) भी। और वह हर चीज का जानने वाला है। वही है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामले। वह रात को दिन में दाख़िल करता हे और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह दिल की बातों को जानता है। (1-6)

कायनात जबाने हाल (वस्तुस्थिति) से अपने ख़ालिक की जिन सिफ़ात (गुणों) की ख़बर दे रही है, कुरआन में उन्हीं सिफ़ात को अल्फ़ाज की सूरत दे दी गई है। यहां जब एक चीज जाहिर होती है तो वह अमल की जबान में कह रही होती है कि कोई उसका जाहिर करने वाला है। और जब वह चीज ख़त्म होती है तो वह इस बात का अमली एलान कर रही होती है कि कोई उसका ख़त्म करने वाला है। इसी तरह दूसरी तमाम सिफ्तें। हकीकत यह है कि कायनात अगर ख़ुदा की अमली तस्बीह है तो कुरआन ख़ुदा की लफ्जी तस्बीह।

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨﴾ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ

آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٩﴾ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٠﴾

ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और ख़र्च करो उसमें से जिसमें उसने तुम्हें अमीन (साधिकार) बनाया है। पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और ख़र्च करें उनके लिए बड़ा अज्र है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे अहद (वचन) ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो। वही है जो अपने बंदे पर वाजेह आयतें उतारता है ताकि तुम्हें तारीकियों से रोशनी की तरफ ले आए और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नर्मी करने वाला है, महरबान है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते हालांकि सब आसमान और जमीन आख़िर में अल्लाह ही का रह जाएगा। तुम में से जो लोग फतह के बाद ख़र्च करें और लड़ें वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फतह से पहले ख़र्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (7-10)

इस्लाम की दावत जब उठती है तो वह अपने इब्तिदाई मरहले में 'आयात बय्यिनात' (सुस्पष्ट तर्को) के ऊपर खड़ी होती है। दूसरा दौर वह है जबकि उसे माहौल में 'फतह' हासिल हो जाए। पहले दौर में सिर्फ वे लोग इस्लाम के लिए कुर्बानी देने का हौसला करते हैं जो दलादल की सतह पर किसी चीज की अज्मत को देखने की सलाहियत रखते हों। मगर जब इस्लाम को फतह व ग़लबा हासिल हो जाए तो हर आदमी उसकी अज्मत को देख लेता है। और हर आदमी आगे बढ़कर उसके लिए जान व माल पेश करने में फख़्र महसूस करता है।

इब्तिदाई दौर में इस्लाम के लिए ख़र्च करने वाले को यकतरफा तौर पर ख़र्च करना पड़ता है। जबकि दूसरे दौर में यह हाल हो जाता है कि आदमी जितना ख़र्च करता है उससे ज्यादा वह मुख़्तलिफ शक्लों में उसका इनाम इसी दुनिया में पा लेता है। यही वजह है कि दोनों का दर्जा अल्लाह के यहां यकसां (एक जैसा) नहीं।

مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوَاكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

कौन है जो अल्लाह को कर्ज दे, अच्छा कर्ज, कि वह उसे उसके लिए बढ़ाए, और उसके लिए बाइज्जत अज्र है। जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी। आज के दिन तुम्हें ख़ुशख़बरी है बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। जिस दिन मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौक़ा दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फायदा उठा लें। कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ। फिर रोशनी तलाश करो। फिर उनके दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा। उसके अंदर की तरफ रहमत होगी। और उसके बाहर की तरफ अज़ाब होगा। वे उन्हें पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। वे कहेंगे कि हां, मगर तुमने अपने आपको फितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ गया और धोखेबाज ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा दिया। पस आज न तुमसे कोई फ़िदया (मुक्ति-मुआवज़ा) क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ्र किया। तुम्हारा ठिकाना आग है। वही तुम्हारी रफ़ीक़ (साथी) है। और वह बुरा ठिकाना है। (11-15)

सच्चा इस्लाम जब माहौल में अजनबी हो, उस वक्त सच्चे इस्लाम की तरफ बढ़ना अपने आपको आजमाइश में डालने के हममअना होता है। उस वक्त इस्लाम की हक़ीक़त पर शुबहात के पर्दे पड़े होते हैं। उस वक्त इस्लाम की राह में ख़र्च करना ऐसा होता है गोया उम्मीदे मौहूम (अनिश्चितता) पर किसी को कर्ज देना। शक और तरद्दुद (असमंजस) की फिज़ा हर तरफ लोगों को घेरे हुए होती है। ख़ुदा के वादों के मुक़ाबले में लोगों को अपने सामने के फ़ायदे ज़्यादा यक़ीनी मालूम होते हैं। ऐसे वक्त में अपनी जान व माल को इस्लाम के हवाले करना जबरदस्त क़ुव्वते फ़ैसला चाहता है। ऐसे वक्त में वही शख़्स आगे बढ़ने की हिम्मत करता है जो अक्ल व बसीरत (सूझबूझ) की ताक़त से चीज़ों को पहचानने की सलाहियत रखता हो।

जो लोग दुनिया में इस बसीरत का सुबूत दें उनकी बसीरत कियामत के दिन उनके लिए रोशनी बन जाएगी जिसमें वे वहां के मुश्किल मराहिल में अपना सफर तै कर सकें। जो बसीरत दुनिया में उनकी रहनुमा बनी थी वही बसीरत आख़िरत में भी अल्लाह की मदद से उनके लिए रहनुमा का काम अंजाम देगी।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَن تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿١٦﴾ اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾

क्या ईमान वालों के लिए वह वक्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं। और उस हक के आगे जो नाजिल हो चुका है। और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुजर गई तो उनके दिल सख़्त हो गए। और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। जान लो कि अल्लाह जमीन को जिंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (16-17)

ये आयतें जिस वक्त नाज़िल हुईं उस वक्त इस्लाम अगरचे माद्दी क़ुव्वत (भौतिक शक्ति) नहीं बना था। मगर दलाइल और तंबीहात का जोर उस वक्त भी पूरी तरह उसकी पुश्त पर मौजूद था। ऐसी हालत में जो शख़्स दलाइल का जोर महसूस न करे और ख़ुदाई तंबीहात जिसे हिलाने वाली न बन सकें वह अपने इस अमल से सिर्फ यह सुबूत दे रहा है कि वह बेहिसी के मरज में मुब्तिला है। मिट्टी में पानी मिलने के बाद तरोताजगी पैदा हो जाती है। फिर इंसान अगर खुले-खुले दलाइल सुनकर भी न जागे तो यह कैसी अजीब बात होगी।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ وَالشُّهَدَاءُ عِندَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١٩﴾

बेशक सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को कर्ज दिया, अच्छा कर्ज वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बाइज्जत अज्र (प्रतिफल) है। और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। वही लोग अपने

रब के नजदीक सिद्दीक (सच्चे) और शहीद (सत्य के साक्षी) हैं, उनके लिए उनका अज्र और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोजख़ के लोग हैं। (18-19)

अल्लाह की रिजा के लिए दूसरों को माल देना और दीन की जरूरतों पर ख़र्च करना बहुत बड़ा अमल है। जो मर्द और औरत इस तरह ख़र्च करें वही वे लोग हैं जिन्होंने अपने ईमान का सुबूत दिया। उन्होंने हक के ख़िलाफ शुबहात के माहौल में हक को देखा। इसलिए उनका यह अमल आख़िरत में उनके लिए रोशनी बन जाएगा। वे ख़ुदा की निशानियों को मानने वाले करार पाएंगे। उन्हें अल्लाह के गवाह का दर्जा दिया जाएगा, यानी आख़िरत की अदालत में लोगों के अहवाल बताने वाला।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

जान लो कि दुनिया की जिंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है और जीनत (साज-सज्जा) और बाहमी (आपसी) फख़्र और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करना है। जैसे कि बारिश की उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती है। फिर वह ख़ुश्क हो जाती है। फिर तू उसे जर्द देखता है, फिर वह रेजा-रेजा हो जाती है। और आख़िरत में सख़्त अजाब है और अल्लाह की तरफ से माफी और रिजामंदी भी। और दुनिया की जिंदगी धोखे की पूंजी के सिवा और कुछ नहीं। दौड़ो अपने रब की माफी की तरफ और ऐसी जन्नत की तरफ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और जमीन की वुस्अत के बराबर है। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, यह अल्लाह का फज्ल (अनुग्रह) है। वह उसे देता है जिसे वह चाहता है और अल्लाह बड़ा फज्ल वाला है। (20-21)

दुनिया में अल्लाह ने आख़िरत (परलोक) की मिसालें कायम कर दी हैं। उनमें से एक मिसाल खेती की है। खेती जब पानी पाकर तैयार होती है तो थोड़े दिनों के लिए उसकी सरसब्जी निहायत पुरकशिश मालूम होती है। मगर बहुत जल्द गर्म हवाएं चलती हैं। सारी सरसब्जी

अचानक ख़त्म हो जाती है। और फिर उसे काट कर उसे चूरा-चूरा कर दिया जाता है।

इसी तरह मौजूदा दुनिया की रौनक भी चन्द रोजा है। आदमी उसे पाकर धोखे में मुब्तिला हो जाता है। वह उसी को सब कुछ समझ लेता है। मगर इसके बाद जब वह ख़ुदा की तरफ लौटाया जाएगा तो उस पर खुलेगा कि दुनिया की रौनकों की कोई हकीकत न थी।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

कोई मुसीबत न जमीन में आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है इससे पहले कि हम उन्हें पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुमसे खोया गया। और न उस चीज पर फख़्र करो जो उसने तुम्हें दिया, और अल्लाह इतराने वाले फख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता जो कि बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम देते हैं। और जो शख़्स एराज (उपेक्षा) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है। (22-24)

दुनिया में किसी चीज का मिलना या किसी चीज का छिनना दोनों इम्तेहान के लिए हैं। अल्लाह तआला ने पेशगी तौर पर मुकर्रर फरमा दिया है कि किस शख़्स को उसके इम्तेहान का पर्चा किन-किन सूरतों में दिया जाएगा। आदमी को अस्लन जिस चीज पर तवज्जोह देना चाहिए वह यह नहीं कि उसे क्या मिला और उससे क्या छीना गया बल्कि यह कि उसने किस मौके पर किस किस्म का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश किया। सही और मत्लूब रद्देअमल यह है कि आदमी से खोया जाए तो वह दिलबरदाश्ता (हताश) न हो और जब उसे मिले तो वह उसकी बिना पर फख़्र व ग़ुरूर में मुब्तिला न हो जाए।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

हमने अपने रसूलों को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराजू, ताकि लोग इंसाफ पर कायम हों। और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी कुव्वत है और लोगों के लिए फायदे

हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बिना देखे, बेशक अल्लाह ताकत वाला, जबरदस्त है। (25)

दीन में दो चीजें मत्लूब हैं। एक दीन की पैरवी, और दूसरी दीन की हिमायत। तराजू गोया दीन की पैरवी की अलामती तमसील है। जिस तरह तराजू पर किसी चीज का कम व बेश होना मालूम होता है। उसी तरह ख़ुदा की किताब भी हक की तराजू है। लोगों को चाहिए कि अपने आमाल ख़ुदा की किताब पर जांच कर देखते रहें कि वे किसी हद तक दुरुस्त हैं और किस हद तक दुरुस्त नहीं।

इसी तरह लोहा गोया हिमायते दीन की अलामती मिसाल है। जब भी दीन का कोई मामला पड़े तो वहां आदमी को लोहे की तरह मजबूत साबित होना चाहिए। उसे फौलादी कुव्वत के साथ दीन का दिफ़ाअ करना चाहिए।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَٰهِيمَ وَجَعَلْنَا فِى ذُرِّيَّتِهِمَا ٱلنُّبُوَّةَ وَٱلْكِتَٰبَ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِى قُلُوبِ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ٱبْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَٰهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ٱبْتِغَآءَ رِضْوَٰنِ ٱللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَـَٔاتَيْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٢٧﴾

और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा। और उनकी औलाद में हमने पैग़म्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से कोई राह पर है और उनमें से बहुत से नाफरमान हैं। फिर उन्हीं के नक्शेकदम पर हमने अपने रसूल भेजे और उन्हीं के नक्शेकदम पर ईसा बिन मरयम को भेजा और हमने उसे इंजील दी। और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में शफकत (करुणा) और रहमत (दया) रख दी। और रहबानियत (सन्यास) को उन्होंने ख़ुद ईजाद किया है। हमने उसे उन पर नहीं लिखा था। मगर उन्होंने अल्लाह की रिजामंदी के लिए उसे इख़्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रिआयत (निर्वाह) न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उन्हें हमने उनका अज्र (प्रतिफल) दिया, और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। (26-27)

अल्लाह की तरफ से जितने पैग़म्बर आए सब एक ही दीन लेकर आए। मगर बाद के जमाने में लोगों ने पैग़म्बर के नाम पर बिदअतें ईजाद कर लीं। इसकी एक मिसाल हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के पैरोकार हैं। हजरत मसीह के जिम्मे सिर्फ दावत का काम था। आपकी पैग़म्बराना जिम्मेदारी में किताल (जंग) शामिल न था। चुनांचे आपने सबसे ज्यादा दाजियाना

अख़्लाक पर जोर दिया। और दाजियाना अख़्लाक सरासर राफ्त व रहमत पर मबनी होता है। आपने अपने पैरोकारों से कहा कि वे लोगों के मुक़ाबले में यकतरफ़ा तौर पर राफ्त व रहमत का तरीक़ा इख़्तियार करें। मगर हजरत मसीह के बाद आपके पैरोकार इस मस्लेहत को समझ न सके। उनका यह मिजाज उन्हें रहबानियत (सन्यास) की तरफ बहा ले गया। दुनिया से एराज़ (उपेक्षा) की जो तालीम उन्हें दावत के मक्सद से दी गई थी उसे उन्होंने मजीद मुबालग़े (अतिरंजना) के साथ तर्के दुनिया (संसार त्याग) के लिए इख़्तियार करना शुरू कर दिया।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَءَامِنُوا۟ بِرَسُولِهِۦ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِۦ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِۦ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّن فَضْلِ ٱللَّهِ وَأَنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा। और तुम्हें रोशनी अता करेगा जिसे लेकर तुम चलोगे। और तुम्हें बख़्श देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ताकि अहले किताब जान लें कि वे अल्लाह के फज्ल (अनुग्रह) में से किसी चीज पर इख़्तियार नहीं रखते और यह कि फज्ल अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है अता फरमाता है। और अल्लाह बड़े फज्ल वाला है। (28-29)

'ऐ ईमान लाने वालो' से मुराद हजरत मसीह पर ईमान लाने वाले हैं। जो लोग पिछले पैगम्बर को मानते हों, और अब वे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सदाकत को दरयाफ्त करके उन पर ईमान लाएं तो उनके लिए दोहरा अज्र है। इसी तरह जो लोग नस्ली तौर पर मुसलमान हैं वे दुबारा इस्लाम का मुतालआ करें और अपने अंदर इस्लामी शुऊर पैदा करके नए सिरे से मोमिन व मुस्लिम बनें तो वे भी अल्लाह के यहां दोहरे अज्र के मुस्तहिक क़रार पाएंगे।

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قَدْ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوْلَ ٱلَّتِى تُجَٰدِلُكَ فِى زَوْجِهَا وَتَشْتَكِىٓ إِلَى ٱللَّهِ وَٱللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَآ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌۢ بَصِيرٌ ﴿١﴾

आयतें-22 **सूरह-58. अल-मुजादलह** रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

इस्लाम से पहले अरब में रवाज था कि कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि 'तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी मां की पीठ' तो वह औरत हमेशा के लिए उस मर्द पर हराम हो जाती। इसे जिहार कहा जाता था। मदीना के एक मुसलमान औस बिन सामित अंसारी ने अपनी बीवी ख़ौला बिन्त सालबा को एक बार यही लफ्ज कह दिया। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आईं और वाकया बताया। आपने कदीम रवाज के एतबार से फरमा दिया कि मैं ख़्याल करता हूं कि तुम उस पर हराम हो गई हो। ख़ौला को परेशानी हुई कि मेरे घर और मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। वह फरयाद व जारी (विलाप) करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं और बताया गया कि जिहार के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है।

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنكُم مِّن نِّسَائِهِم مَّا هُنَّ أُمَّهَاتِهِمْ ۖ إِنْ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا اللَّائِي وَلَدْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٢﴾ وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِن نِّسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۚ ذَٰلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (ग़ुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर

जो शख़्स न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शख़्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

इस्लाम में सूरत और हकीक्त के दर्मियान फर्क किया गया है। यही वजह है कि इस्लाम ने इस कदीम रवाज को तस्लीम नहीं किया कि जो औरत हकीकी मां न हो वह महज मां का लफ्ज बोल देने से किसी की मां बन जाए। इस किस्म का फेअल एक लग्व (निरर्थक) बात तो जरूर है मगर इसकी वजह से फितरत के कवानीन (नियम) बदल नहीं सकते।

कुरआन में बताया गया कि महज जिहार से किसी आदमी की बीवी पर तलाक नहीं पड़ेगी। अलबत्ता उस आदमी पर लाजिम किया गया कि वह पहले कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे। इसके बाद वह दुबारा अपनी बीवी के पास जाए। किसी ग़लती के बाद जब आदमी इस तरह कफ्फ़ारा अदा करता है तो वह दुबारा अपने यकीन को जिंदा करता है। वह इस उसूल में अपने अकीदे को नए सिरे से मुस्तहकम (सुदृढ़) बनाता है जिसे वह ग़फलत या नादानी से छोड़ बैठा था।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٦﴾

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

हक की मुख़ालिफत करना ख़ुदा की मुख़ालिफत करना है। और ख़ुदा की मुख़ालिफत करना उस हस्ती की मुख़ालिफत करना है जिससे मुख़ालिफत करके आदमी ख़ुद अपना नुक्सान करता है। ख़ुदा से आदमी न अपनी किसी चीज को छुपा सकता और न किसी के लिए यह मुमकिन है कि वह ख़ुदा की पकड़ से अपने आपको बचा सके।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِن

نَجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى
مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑦ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ
نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۡ وَاِذَا جَاۗءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ
يَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۭ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ
يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑧

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वार्ता) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

कायनात अपने इंतिहाई पेचीदा निजाम के साथ यह गवाही दे रही है कि वह हर आन किसी बालातर (उच्चतर) ताकत की निगरानी में है। कायनात में निगरानी की शहादत यह साबित करती है कि इंसान भी मुसलसल तौर पर अपने ख़ालिक की निगरानी में है। ऐसी हालत में हक के ख़िलाफ ख़ुफिया सरगर्मियां दिखाना सिर्फ ऐसे अंधे लोगों का काम हो सकता है जो ख़ुदा की सिफ्तों को न बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मल्फूज (शाब्दिक) कुरआन में पढ़ सकें और न बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर ग़ैर मल्फूज कायनात में।

कुछ यहूद और मुनाफिकीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में आते तो वे अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो) कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम (आप पर मौत आए) कहते। यह हमेशा से सतही (निम्न स्तरीय) इंसानों का तरीका रहा है।

सतही लोग एक सच्चे इंसान को बेकद्र करके अपने जेहन में ख़ुश होते हैं। वे भूल जाते हैं कि सारी फैली हुई ख़ुदाई ऐन उस वक्त भी उस सच्चे इंसान का एतराफ कर रही होती है जबकि अपने महदूद जेहन के मुताबिक वे उसकी तहकीर (अनादर) व तरदीद के लिए अपना आख़िरी लफ्ज़ इस्तेमाल कर चुके हों।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ⑨ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ
بِضَاۗرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑩

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वार्ता) करो तो गुनाह और ज्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

ख़ुफिया सरगोशियां करना आम हालात में एक नापसंदीदा फेअल (कृत्य) है। ताहम कभी कारेख़ैर के लिए भी ख़ुफिया सरगोशी की जरूरत होती है। इस सिलसिले में अस्ल फैसलाकुन चीज नियत है। ख़ुफिया सरगोशी अगर अच्छी नियत से की जाए तो जाइज है और अगर वह बुरी नियत से की जाए तो नाजाइज।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ
اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑪

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मज्लिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (11)

मज्लिस के आदाब के तहत कभी ऐसा होता है कि एक शख़्स को पीछे करके दूसरे शख़्स को आगे बिठाया जाता है। इसी तरह कभी ऐसा होता है कि लोगों को उम्मीद के ख़िलाफ

कह दिया जाता है कि अब आप लोग तशरीफ ले जाएं। ऐसी बातों को इज्जत का सवाल बनाना शुऊरी पस्ती का सुबूत है। और जो शख़्स इन बातों को इज्जत का सवाल न बनाए उसने यह सुबूत दिया कि शुऊरी एतबार से वह बुलन्द दर्जे को पहुंचा हुआ है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَٰجَيْتُمُ ٱلرَّسُولَ فَقَدِّمُوا۟ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ ءَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا۟ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ صَدَقَٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا۟ وَتَابَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

ऐ ईमान वालो, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीजा है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

अल्लाह तआला को यह मत्लूब था कि रसूल से सिर्फ वही लोग मिलें जो फिलवाकअ संजीदा मक्सद के तहत आपसे मिलना चाहते हैं। ग़ैर जरूरी किस्म के लोग छांट दिए जाएं जो अपनी बेफायदा बातों से सिर्फ वक्त जाया करने का सबब बनते हैं। इसलिए यह उसूल मुकर्रर किया गया कि जब रसूल से मिलने का इरादा करो तो पहले अल्लाह के नाम पर कुछ सदका करो। और अगर इसकी कुदरत न हो तो कोई दूसरी नेकी करो।

यह हुक्म अगरचे अस्लन रसूल के लिए मत्लूब था। मगर रसूल के बाद भी उम्मत के रहनुमाओं के हक में वह हालात के एतबार से दर्जा-ब-दर्जा मत्लूब होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ تَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مَّا هُم مِّنكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى ٱلْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ ٱتَّخَذُوٓا۟ أَيْمَٰنَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़जब हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

मदीना के मुनाफिकीन इस्लाम की जमाअत में शामिल थे। इसी के साथ वे यहूद से भी मिले हुए थे। यही हमेशा उन लोगों का हाल होता है जो हक को पूरी यकसूई (एकाग्रता) के साथ इख़्तियार न कर सकें। ऐसे लोग बजाहिर सबसे मिले हुए होते हैं मगर हकीकतन वे सिर्फ अपने मफाद (स्वार्थ) के वफादार होते हैं। चाहे वे कसमें खाकर अपने हकपरस्त होने का यकीन दिला रहे हों।

لَّن تُغْنِىَ عَنْهُمْ أَمْوَٰلُهُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُهُم مِّنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُۥ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَىْءٍ ۚ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ ٱلْكَٰذِبُونَ ﴿١٨﴾ ٱسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ ٱلشَّيْطَٰنُ فَأَنسَىٰهُمْ ذِكْرَ ٱللَّهِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ حِزْبُ ٱلشَّيْطَٰنِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ ٱلشَّيْطَٰنِ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحَآدُّونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُو۟لَٰٓئِكَ فِى ٱلْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِىٓ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِىٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोजख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

मफ़ादपरस्त आदमी जब हक की दावत की मुख़ालिफत करता है तो वह समझता है कि इस तरह वह अपने आपको महफूज़ कर रहा है। मगर उस वक्त वह दहशतज़दा होकर रह जाएगा जब आख़िरत में वह देखेगा कि जिन चीजों पर उसने भरोसा कर रखा था वे फैसले के उस वक्त में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

मुनाफ़िक (पाखंडी) आदमी अपने मौकिफ़ को सही साबित करने के लिए बढ़-बढ़कर बातें करता है। यहां तक कि वह कसमें खाकर अपने इख़्लास (निष्ठा) का यकीन दिलाता है। ये सब करके वह समझता है कि 'वह किसी चीज पर है।' उसने अपने हक में कोई वाकई बुनियाद फ़राहम कर ली है। मगर क़ियामत का धमाका जब हक़ीक़तों को खोलेगा उस वक्त वह जान लेगा कि यह महज शैतान के सिखाए हुए झूठे अल्फ़ाज थे जिन्हें वह अपने बेक़ुसूर होने का यकीनी सुबूत समझता रहा।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۭ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फैज से कुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

इस दुनिया में कामयाबी हिज़्बुल्लाह के लिए है। हिज़्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान सबसे बड़ी हकीक़त के तौर पर रासिख़ (घनीभूत) हो गया हो। जिन्हें अल्लाह से इतनी गहरी निस्बत हासिल हो कि उन्हें अल्लाह की तरफ से रूहानी फैज़ पहुंचने लगे। फिर यह कि ख़ुदाई हकीक़तों से उनकी वाबस्तगी इतनी गहरी हो कि उसी की बुनियाद पर उनकी दोस्तियां और दुश्मनियां कायम हों। वे सबसे ज्यादा उन लोगों से क़रीब हों जो ख़ुदाई सदाकत (सच्चाई) को अपनाए हुए हैं। और जो लोग ख़ुदाई सदाकत से दूर

हैं वे भी उनसे दूर हो जाएं, चाहे वे उनके अपने अजीज और रिश्तेदार क्यों न हों।

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۭ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۤ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۤ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝

आयतें-24 **सूरह-59. अल-हश्र** रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीजें जो आसमानों और जमीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

मदीना के मश्रिक में यहूदी कबीला बनू नजीर की आबादी थी। उनके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह का मुआहिदा था। मगर उन्होंने बार-बार अहदशिकनी की। आख़िरकार 4 हि० में अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा किए कि मुसलमानों ने उन्हें मदीना से निकलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद वे ख़ैबर और अजरिआत में जाकर आबाद हो गए। मगर उनकी साजिशी सरगर्मियां जारी रहीं। यहां तक कि हज़रत उमर फारूक की ख़िलाफ़त की जमाने में वे और दूसरे यहूदी कबाइल जजीरा अरब से निकलने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद वे लोग शाम में जाकर आबाद हो गए।

'अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां उन्हें गुमान भी न था' की तशरीह अगले फिकरे में मौजूद है। यानी अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उन्होंने बेरूनी (वाह्य) तौर पर हर किस्म की तैयारियां कीं। मगर जब मुसलमानों की फौज ने उनकी आबादी को घेर लिया

तो सारी ताकत के बावजूद उन पर ऐसी दहशत तारी हुई कि उन्होंने लड़ने का हौसला खो दिया। और बिला मुकाबले हथियार डाल दिया।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④ مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ⑤

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश-निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत की। और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफत करता है तो अल्लाह सख़्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख़्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

यहूद को जो सजा दी गई, वह अल्लाह के कानून के तहत थी। यह सजा उन लोगों के लिए मुकद्दर है जो पैग़म्बर के मुख़ालिफ बनकर खड़े हों। बनू नजीर के मुहासिरे (घेराव) के वक्त उनके बाग़ात के कुछ दरख़्त जंगी मस्लेहत के तहत काटे गए थे। यह भी बराहेरास्त ख़ुदा के हुक्म से हुआ। ताहम यह कोई आम उसूल नहीं। यह एक इस्तिसनाई (अपवाद स्वरूप) मामला है जो पैग़म्बर के बराहेरास्त मुख़ातबीन के साथ एक या दूसरी शक्ल में इख़्तियार किया जाता है।

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥ مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑦ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ⑧

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। उन मुफ्लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं। वे अल्लाह का फज़्ल और रिजामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

दुश्मन का जो माल लड़ाई के बाद मिले वह ग़नीमत है और जो माल लड़ाई के बग़ैर हाथ लगे वह फई है। ग़नीमत में पांचवां हिस्सा निकालने के बाद बकिया सब लश्कर का है। और फई सबका सब इस्लामी हुकूमत की मिल्कियत है जो मसालेहे आम्मा (जन-हित) के लिए ख़र्च किया जाएगा।

इस्लाम चाहता है कि माल किसी एक तबके में महदूद होकर न रह जाए। बल्कि वह हर तबके के दर्मियान पहुंचे। इस्लाम में मआशी (आर्थिक) जब्र नहीं है। ताहम उसके मआशी कवानीन इस तरह बनाए गए हैं कि दौलत मुरतकिज (केन्द्रित) न होने पाए। वह हर तबके के लोगों में गर्दिश करती रहे।

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑨ وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ⑩

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और ईमान अस्तवार किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुकद्दम रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फाका हो। और जो शख़्स अपने जी के

लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफ़ीक (करुणामय) और महरबान है। (9-10)

हिजरत के बाद जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर मदीना पहुंचे, उनका मदीना आना मदीने के बाशिंदों (अंसार) पर एक बोझ था। मगर उन्होंने निहायत ख़ुशदिली के साथ उनका इस्तकबाल किया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब अमवाल (धन-सम्पत्ति) आए तो आपने उनका हिस्सा मुहाजिरीन के दर्मियान तक्सीम किया। इस पर भी अंसारे मदीना के अंदर उनके लिए कोई रंजिश पैदा न हुई। इसके बाद भी वे उनके इतने कद्रदान रहे कि उनके हक में उनके दिल से बेहतरीन दुआएं निकलती रहीं। यही वह आली हौसलगी है जो किसी गिरोह को तारीख़साज (इतिहास-निर्माता) गिरोह बनाती है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफाक (पाखंड) में मुब्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ़्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नजीर की जलावतनी (देश निकाला) का एलान किया तो मुनाफ़िकीन उनकी हिमायत पर आ गए। उन्होंने बनू नजीर से कहा कि तुम अपनी जगह जमे रहो, हम हर तरह तुम्हारी मदद करेंगे। मगर मुनाफ़िकीन की ये बातें महज उन्हें मुसलमानों के ख़िलाफ उकसाने के लिए थीं। वे इस पेशकश में हरगिज मुख़्लिस न थे। चुनांचे जब मुसलमानों ने बनू नजीर को घेर लिया तो मुनाफ़िकीन में से कोई भी उनकी मदद पर न आया। मफ़ादपरस्त (स्वार्थी) गिरोह का हर जमाने में यही किरदार रहा है।

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख़्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

ख़ुदा की ताकत बजाहिर दिखाई नहीं देती। मगर इंसानों की ताकत खुली आंख से नजर आती है। इस बिना पर जाहिरपरस्त लोगों का हाल यह होता है कि वे अल्लाह से तो बेख़ौफ रहते हैं मगर इंसानों में अगर कोई जोरआवर दिखाई दे तो वे फौरन उससे डरने की जरूरत महसूस करने लगते हैं। ख़ुदा के बारे में उनकी बेशुऊरी उन्हें उनकी दुनिया के बारे में भी बेशुऊर बना देती है।

ऐसे लोग जिन्हें सिर्फ मंफ़ी (नकारात्मक) मक्सद ने मुत्तहिद किया हो वे ज्यादा देर तक अपना इत्तिहाद बाकी नहीं रख पाते। क्योंकि देरपा इत्तहाद के लिए मुस्बत (सकारात्मक) बुनियाद दरकार है और वह उनके पास मौजूद ही नहीं।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोजख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

मदीना के मुनाफ़िक़ीन बनू नजीर को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभार रहे थे। उन्होंने उस वाक़ये से सबक़ नहीं लिया कि जल्द ही पहले क़ुरैश और क़बीला बनू क़ैनुक़ाअ उनके ख़िलाफ़ उठे। मगर उन्हें जबरदस्त शिकस्त हुई। जो लोग शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाएं उनका हाल हमेशा यही होता है। वे वाकेयात से नसीहत नहीं लेते। पहले वे जोश व ख़रोश के साथ लोगों को मुजरिमाना अफ़आल पर उभारते हैं। फिर जब उसका भयानक अंजाम सामने आता है तो वे तरह-तरह के अल्फ़ाज बोलकर यह चाहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी से अपने आपको बरी कर लें। मगर इस किस्म की कोशिशें ऐसे लोगों को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं हो सकतीं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۗ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शख़्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें ख़ुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

इंसानी जिंदगी को 'आज' और 'कल' के दर्मियान तक़्सीम किया गया है। मौजूदा दुनिया इंसान का आज है और आख़िरत की दुनिया उसका कल है। इंसान मौजूदा दुनिया में जो कुछ करेगा उसका लाजिमी अंजाम उसे आने वाली तवीलतर (दीर्घतर) जिंदगी में भुगतना पड़ेगा।

यही अस्ल हक़ीक़त है और इसी हक़ीक़त का दूसरा नाम इस्लाम है। इंसान की कामयाबी इसमें है कि वह इस हक़ीक़ते वाक़ई को जेहन में रखे। जो शख़्स इस हक़ीक़ते वाकई से ग़ाफ़िल हो जाए उसकी पूरी जिंदगी ग़लत होकर रह जाएगी। इस मामले में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई फ़र्क़ नहीं। मुसलमानों को इसका फ़ायदा उसी वक़्त मिलेगा जबकि वाक़ेयतन वे उस पर कायम हों। मुसलमान अगर ग़फ़लत में पड़ जाएं तो उनका अंजाम भी वही होगा जो इससे पहले ग़फ़लत में पड़ने वाले यहूद का हुआ।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۗ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह ख़ुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज़्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज जो आसमानों और जमीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

क़ुरआन इस अजीम हक़ीक़त का एलान है कि इंसान आजाद नहीं है बल्कि उसे अपने तमाम आमाल की जवाबदेही अल्लाह के सामने करनी है जो इंतिहाई ताकतवर है। और हर एक के आमाल को बजातेख़ुद पूरी तरह देख रहा है। यह ख़बर इतनी संगीन है कि पहाड़ तक को लरजा देने के लिए काफ़ी है। मगर इंसान इतना ग़ाफ़िल और बेहिस है कि वह इस हौलनाक ख़बर को सुनकर भी नहीं तड़पता।

अल्लाह के नाम जो यहां बयान किए गए हैं वे एक तरफ़ अल्लाह की जात का तआरुफ़ (परिचय) हैं। दूसरी तरफ़ वे बताते हैं कि वह हस्ती कैसी अजीम हस्ती है जो इंसानों की ख़ालिक है और उनके ऊपर उनकी निगरानी कर रही है। अगर आदमी को वाक़येतन इसका एहसास हो जाए तो वह अल्लाह की हम्द व तस्बीह में सरापा ग़र्क हो जाएगा।

कायनात अपनी तख़्लीक़ी मअनवियत की सूरत में ख़ुदा की सिफ़ात का आइना है। वह ख़ुद हम्द व तस्बीह में मसरूफ़ होकर इंसान को भी हम्द व तस्बीह का सबक़ देती है।

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۗ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ۗ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ① اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ② لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③

आयतें-13 **सूरह-60. अल-मुमतहिनह** रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इज्हार करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वासित) करते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो। और मैं जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शख़्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जबान से तुम्हें आजार (पीड़ा) पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का की तरफ इक्दाम करने

का फैसला किया तो आपने उसका पूरा मंसूबा निहायत ख़ामोशी के साथ बनाया ताकि मक्का वाले मुकाबले की तैयारी न कर सकें। उस वक्त एक बद्री सहाबी हातिब बिन अबी बलतआ ने इस मंसूबे को एक ख़त में लिखा और उसे ख़ुफिया तौर पर मक्का वालों के नाम रवाना कर दिया। ताकि मक्का वाले उनसे ख़ुश हो जाएं और उनके अहल व अयाल (परिवारजनों) को न सताएं जो मक्का में मुकीम हैं। मगर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए इसकी इत्तिला हो गई और कासिद को रास्ते ही में पकड़ लिया गया। इस किस्म का हर फेअल ईमानी तकाजे के खिलाफ है।

जब यह सूरतेहाल हो कि इस्लाम और ग़ैर इस्लाम के अलग-अलग महाज बन जाएं तो उस वक्त अहले इस्लाम की जिम्मेदारी होती है कि वे ग़ैर इस्लामी महाज से दिलचस्पी का तअल्लुक तोड़ लें। चाहे ग़ैर इस्लामी महाज में उनके अजीज और रिश्तेदार ही क्यों न हों। हक को मानना और हक का इंकार करने वालों से क़ल्बी तअल्लुक रखना दो मुतजाद (परस्पर विरोधी) चीजें हैं जो एक साथ जमा नहीं हो सकतीं।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ④ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑤ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ⑥ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۗ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑦

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत (बैर) और बेजारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे

रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे, बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख़्स रूगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (4-7)

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तिदा में ख़ैरख़्वाहाना अंदाज में अपने ख़ानदान को तौहीद का पैग़ाम दिया। जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद वे लोग मुंकिर बने रहे तो आप उनसे बिल्कुल जुदा हो गए। मगर यह बड़ा सख़्त मरहला था। क्योंकि एलाने बरा-त (विरक्ति) का मतलब मुंकिरीने हक को यह दावत देना था कि वे हर मुमकिन तरीके से अहले ईमान को सताएं। दलील के मैदान में शिकस्त खाने के बाद ताकत के मैदान में अहले ईमान को जलील करें। यही वजह है कि इसके बाद हजरत इब्राहीम ने जो दुआ कि उसमें ख़ास तौर से फरमाया कि ऐ हमारे रब हमें इन जालिमों के जुल्म का तख़्ताए मश्क (निशाना) न बना।

अजीजों और रिश्तेदारों से एलाने बरा-त आम मअनों में एलाने अदावत नहीं है। यह दाई की तरफ से अपने यकीन का आख़िरी इज्हार है। इस एतबार से उसमें भी एक दावती क़द्र (Value) शामिल हो जाती है। चुनांचे कभी ऐसा होता है कि जो शख़्स 'पैग़ाम' की जबान से मुतअस्सिर नहीं हुआ था 'यकीन' की जबान उसे जीतने में कामयाब हो जाती है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۤىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे

दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

जहां तक अद्ल व इंसाफ का तअल्लुक है वह हर एक से किया जाएगा, चाहे फरीक सानी (प्रतिपक्षी) दुश्मन हो या ग़ैर दुश्मन। मगर दोस्ती का तअल्लुक हर एक से दुरुस्त नहीं। दोस्ती सिर्फ उसी के साथ जाइज है जो अल्लाह का दोस्त हो या कम से कम यह कि वह अल्लाह का दुश्मन न हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۤءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۗ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۗ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۗ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۗ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۗ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۗ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝١١

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आएं तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने ख़र्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

यहां सुलह हुदैबिया के बाद पैदाशुदा हालात की रोशनी में इस्लाम के कुछ उन कानूनों

को बताया गया है जिनका तअल्लुक दारुल हरब और दारुल इस्लाम के दर्मियान पेश अपने वाले आइली (पारिवारिक) मसाइल से है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारूफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (12)

इस आयत में वे शर्ते बताई गई हैं जिनका इकरार लेकर किसी औरत को इस्लाम में दाख़िल किया जाता है। इन शर्तों में दो शर्त की हैसियत बुनियादी है। यानी शिर्क न करना और रसूल की नाफ़रमानी न करना। बाकी तमाम मज्कूर (उल्लिखित) औशरमकूरतकोज अपने आप इन दो शर्तों में शामिल हो जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़जब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह कब्रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

आसमानी किताब को मानने वाले यहूद और उसे न मानने वाले मुंकिर आख़िरत के एतबार से एक सतह पर हैं। खुले हुए मुंकिरों को उम्मीद नहीं होती कि कोई शख़्स दुबारा अपनी कब्र से उठेगा। यही हाल उन लोगों का भी होता है जो यहूद की तरह ईमान लाने के बाद ग़फ़लत और बेहिसी में मुब्तिला हो गए हों। आख़िरत का लफ़्जी इक़रार करने के बावजूद उनकी अमली जिंदगी वैसी ही हो जाती है जैसी खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी।

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ ﴿٤﴾

आयतें-14 **सूरह-61. अस-सफ्फ** रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्वदर्शी) है। ऐ ईमान वालो, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

इंसान के सिवा जो कायनात है उसमें कहीं तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। इस दुनिया में लकड़ी हमेशा लकड़ी रहती है। और जो चीज अपने आपको लोहा और पत्थर के रूप में जाहिर करे वह हकीकी तजर्बे में भी लोहा और पत्थर ही साबित होती है। इंसान को भी ऐसा ही बनना चाहिए। इंसान के कहने और करने में मुताबिकत होनी चाहिए। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि आदमी को अपने कहने की यह कीमत देनी पड़े कि हर किस्म की दुश्वारियों के बावजूद वह सब्र का पहाड़ बन जाए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٥﴾

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के दर्मियान आए। बनी इस्राईल उस वक्त एक जवालयाफ्ता कौम थे। उनके अंदर यह हौसला बाकी नहीं रहा था कि जो कहें वही करें। और करें वही कहें। चुनांचे उनका हाल यह था कि वे हजरत मूसा के हाथ पर ईमान का इकरार भी करते थे और इसी के साथ हर किस्म की बदअहदी और नाफरमानी में भी मुब्तिला रहते थे। यहां तक कि हजरत मूसा के साथ अपने बुरे सुलूक को जाइज साबित करने के लिए वे खुद हजरत मूसा पर झूठे-झूठे इल्जाम लगाते थे। बाइबल में खुरूज और गिनती के अबवाब (अध्यायों) में इसकी तफ्सील देखी जा सकती है।

अहद करने के बाद अहद की ख़िलाफ़वर्ज़ी आदमी को पहले से भी ज्यादा हक से दूर कर देती है।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٦﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٧﴾ يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٨﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के मोजिजात इस बात का सुबूत थे कि आप ख़ुदा के पैग़म्बर

हैं। मगर यहूद ने उन मोजिजात को जादू का करिश्मा कहकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। इसी तरह कदीम आसमानी किताबों में वाजेह तौर पर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशगी ख़बर मौजूद थी। मगर जब आप आए तो यहूद और नसारा दोनों ने आपका इंकार कर दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह खुली-खुली हकीकतों का एतराफ करने के लिए भी तैयार नहीं होता।

इस आयत में ग़लबे से मुराद फिक्री ग़लबा (वैचारिक वर्चस्व) है। यानी ख़ुदा और मजहब के बारे में जितने ग़ैर मुवह्हिदाना (ग़ैर-एकेश्वरवादी) अकाइद दुनिया में हैं उन्हें जेर करके तौहीद (एकेश्वरवाद) के अकीदे को गालिब फिक्र की हैसियत दे दी जाए। बकिया तमाम अकाइद हमेशा के लिए फिक्री तौर पर मग़लूब होकर रह जाएं। क़ुरआन में यह पेशीनगोई इंतिहाई नामुवाफिक हालात में सन् 3 हि० में नाजिल हुई थी। मगर बाद को वह हर्फ-ब-हर्फ पूरी हुई।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾ وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

ऐ ईमान वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

तिजारत में आदमी पहले देता है, इसके बाद उसे वापस मिलता है। दीन की जद्दोजहद में भी आदमी को अपनी कुव्वत और अपना माल देना पड़ता है। इस एतबार से यह भी एक किस्म की तिजारत है। अलबत्ता दुनियावी तिजारत का नफा सिर्फ दुनिया में मिलता है और दीन की तिजारत का नफा मजीद इजाफे के साथ दुनिया में भी मिलता है और आख़िरत में भी। फिर इसी 'तिजारत' से ग़लबा की राह भी खुलती है जो मौजूदा दुनिया में किसी गिरोह को बाइज्जत जिंदगी हासिल करने का सबसे बड़ा जरिया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَتْ طَائِفَةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

यहूद की अक्सरियत ने अगरचे हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को रद्द कर दिया मगर उनमें से कुछ लोग (हवारिय्यीन) ऐसे थे जिन्होंने पूरे इख़्लास और वफादारी के साथ आपका साथ दिया। और आपके पैग़म्बराना मिशन को आगे बढ़ाया। यही चन्द लोग अल्लाह की नजर में मोमिन करार पाए और बकिया तमाम यहूद पिछले पैग़म्बरों को मानने के बावजूद मुंकिर करार पा गए।

यहां जिस ग़लबे का जिक्र है वह फिल जुमला (वस्तुतः) मोमिनीने मसीह का फिल जुमला मुंकिरीने मसीह पर ग़लबा है। हजरत मसीह के बाद रूमी शहंशाह कुस्तुंतीन दोम (272-337 ई०) ने नसरानियत (ईसाइयत) कुबूल कर ली जिसकी सल्तनत शाम और फिलिस्तीन तक फैली हुई थी। इसके बाद रूमी रिआया बहुत बड़ी तादाद में ईसाई हो गई। चुनांचे यहूद उनके महकूम (शासनाधीन) हो गए। मौजूदा जमाने में भी यहूदियों की हुकूमते इस्राईल हर एतबार से ईसाइयों के मातहत है।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢﴾ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ

يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤﴾

आयतें-11 **सूरह-62. अल-जुमुअह** रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो जमीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मियों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फज़्ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फज़्ल (अनुग्रह) वाला है। (1-4)

इंसान की हिदायत के लिए रसूल भेजना ख़ुदा की उन्हीं सिफात (गुणों) का इंसानी सतह पर जुहूर है जिन सिफात का जुहूर माद्दी एतबार से कायनात की सतह पर हुआ है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इसी तरह दूसरे पैग़म्बरों का काम ख़ास तौर पर दो रहा है। एक, ख़ुदा की 'वही' को लोगों तक पहुंचाना। दूसरे, लोगों के शुऊर को बेदार करना ताकि वे ख़ुदाई बातों को समझें और अपनी हकीकी जिंदगी के साथ उन्हें मरबूत कर सकें। यही दो काम आइंदा भी दावत व इस्लाह की जद्दोजहद में मत्लूब रहेंगे। यानी तालीमे कुरआन और जेहनी तर्बियत।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٧﴾ قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी

मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियो, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

ख़ुदा की किताब जब किसी कौम को दी जाती है तो इसलिए दी जाती है कि वह उसे अपने अंदर उतारे और उसे अपनी जिंदगी में अपनाए। मगर जो कौम इस मअना में किताबे आसमानी की हामिल (धारक) न बन सके उसकी मिसाल उस गधे की सी होगी जिसके ऊपर इल्मी किताबें लदी हुई हों और उसे कुछ ख़बर न हो कि उसके ऊपर क्या है।

यहूद ने अगरचे अमली तौर पर ख़ुदा के दीन को छोड़ रखा था, इसके बावजूद उसे अपने कौमी फख़्र का निशान बनाए हुए थे। मगर इस किस्म का फख़्र किसी के कुछ काम आने वाला नहीं। ऐसा फख़्र हमेशा झूठा फख़्र होता है। और इसका एक सुबूत यह है कि आदमी जिस दीन को अपने फख़्र का सामान बनाए हुए होता है उसके लिए वह कुर्बानी देने को तैयार नहीं होता। ताहम जब मौत आएगी तो ऐसे लोग जान लेंगे कि दुनिया में वे जिस फख़्र पर जी रहे थे वह आख़िरत में उन्हें ज़िल्लत के सिवा और कुछ देने वाला नहीं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نُودِىَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوْمِ ٱلْجُمُعَةِ فَٱسْعَوْا۟ إِلَىٰ ذِكْرِ ٱللَّهِ وَذَرُوا۟ ٱلْبَيْعَ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٩ فَإِذَا قُضِيَتِ ٱلصَّلَوٰةُ فَٱنتَشِرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَٱبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِ ٱللَّهِ وَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝١٠ وَإِذَا رَأَوْا۟ تِجَٰرَةً أَوْ لَهْوًا ٱنفَضُّوٓا۟ إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَآئِمًا ۚ قُلْ مَا عِندَ ٱللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ ٱللَّهْوِ وَمِنَ ٱلتِّجَٰرَةِ ۚ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ۝١١

ऐ ईमान वालो, जब जुमा के दिन की नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और ख़रीद व फरोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क देने वाला है। (9-11)

दुनिया में आदमी बयकवक्त दो तकाज़ों के दर्मियान होता है। एक मआश (जीविका) का तकाज़ा, और दूसरे दीन का तकाज़ा। इनमें से हर तकाज़ा ज़रूरी है। अलबत्ता उनके दर्मियान इस तरह तक्सीम होनी चाहिए कि मआशी सरगर्मियां दीनी तकाज़े के मातहत हों। आदमी को इजाज़त है कि वह जाइज़ हुदूद में मआश के लिए दौड़ धूप करे। मगर यह ज़रूरी है कि उसे जो मआशी कामयाबी हासिल हो उसे वह सरासर अल्लाह का फ़ज़्ल समझे। नीज़ मआशी सरगर्मी के दौरान बराबर अल्लाह को याद करता रहे। इसी के साथ उसे हमेशा तैयार रहना चाहिए कि जब भी दीन के किसी तकाज़े के लिए पुकारा जाए तो उस वक्त वह हर दूसरे काम को छोड़कर दीन के काम की तरफ दौड़ पड़े।

मदीना में एक बार ऐन जुमा के ख़ुत्बे के वक्त कुछ लोग उठकर बाज़ार चले गए। इस पर मज़्कूरा आयतें उतरीं। इस हुक्म का तअल्लुक अगरचे बराहेरास्त तौर पर जुमा से है मगर बिलवास्ता तौर पर हर दीनी काम से है। जब भी किसी ख़ास दीनी मक्सद के लिए लोगों को जमा किया जाए तो अमीर की इजाज़त के बग़ैर उठकर चले जाना सख़्त महरूमी की बात है।

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا جَآءَكَ ٱلْمُنَٰفِقُونَ قَالُوا۟ نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُۥ وَٱللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ لَكَٰذِبُونَ ۝١ ٱتَّخَذُوٓا۟ أَيْمَٰنَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝٢ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ ءَامَنُوا۟ ثُمَّ كَفَرُوا۟ فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝٣

आयतें-11 **सूरह-63. अल-मुनाफ़िकून** रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब मुनाफ़िक (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ़्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

यह किसी आदमी के निफाक (पाखंड) की अलामत है कि वह बड़ी-बड़ी बातें करे। और कसम खाकर अपनी बात का यकीन दिलाए। मुख़्लिस (निष्ठावान) आदमी अल्लाह के ख़ौफ से दबा हुआ होता है। वह जबान से ज्यादा दिल से बोलता है। मुनाफ़िक़ आदमी सिर्फ इंसान को अपनी आवाज सुनाने का मुशताक होता है। और मुख़्लिस आदमी ख़ुदा को सुनाने का।

जब एक शख़्स ईमान लाता है तो वह एक संजीदा अहद (प्रण) करता है। इसके बाद जिंदगी के अमली मवाकेअ आते हैं, जहां जरूरत होती है कि वह उस अहद के मुताबिक अमल करे। अब जो शख़्स ऐसे मौकों पर अपने दिल की आवाज को सुनकर अहद के तकाजे पूरे करेगा। उसने अपने अहदे ईमान को पुख़्ता किया। इसके बरअक्स जिसका यह हाल हो कि उसके दिल ने आवाज दी मगर उसने दिल की आवाज को नजरअंदाज करके अहद के ख़िलाफ अमल किया तो इसका नतीजा यह होगा कि वह धीरे-धीरे अपने अहदे ईमान के मामले में बेहिस हो जाएगा। यही मतलब है दिल पर मुहर करने का।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٤﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٥﴾ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٦﴾

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़फार (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकब्बुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं। उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उनके लिए मग्फिरत (माफी) की दुआ करो या मग्फिरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

मुनाफ़िक़ आदमी मस्लेहतपरस्ती के जरिए अपने मफ़ादात (हितों) को महफूज रखता है। वह हक नाहक की बहस में नहीं पड़ता, इसलिए हर एक से उसका बनाव रहता है। उसकी जिंदगी ग़म से ख़ाली होती है। ये चीजें उसके जिस्म को फरबा (मोटा) बना देती हैं। वे लोगों

के मिजाज की रिआयत करके बोलता है। इसलिए उसकी बातों में हर एक अपने लिए दिलचस्पी का सामान पा लेता है। मगर ये बजाहिर हरे भरे दरख़्त हकीकतन सिर्फ सूखी लकड़ियां होते हैं जिनमें कोई जिंदगी न हो। वे अंदर से बुजदिल होते हैं। उनके नजदीक उनका दुनियावी मफाद हर दीनी मफाद से ज्यादा अहम होता है। ऐसे लोग ईमान के बुलन्दबांग मुद्दई (ऊंचे दावेदार) होने के बावजूद ख़ुदा की हिदायत से यकसर महरूम हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٧﴾ يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के ख़जाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज्जत वाला वहां से जिल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज्जत अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

कदीम मदीना में दो किस्म के मुसलमान थे। एक मुहाजिर दूसरे अंसार। मुहाजिरीन मक्का से बेवतन होकर आए थे। उनका सबसे बड़ा जाहिरी सहारा मकामी मुसलमान (अंसार) थे। इस बिना पर दुनियापरस्त लोगों को मुहाजिर बेइज्जत दिखाई देते थे और अंसार उनकी नजर में बाइज्जत लोग थे। यहां तक कि एक मौके पर अब्दुल्लाह बिन उबइ ने साफ तौर पर कह दिया कि इन मुहाजिरीन की हकीकत क्या है। अगर हम इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दें तो दुनिया में कहीं इन्हें ठिकाना न मिले।

इस किस्म के अल्फाज उसी शख़्स की जबान से निकल सकते हैं जो इस हकीकत से बेख़बर हो कि इस दुनिया में जो कुछ है सब अल्लाह का है। वही जिसे चाहे दे और वही जिससे चाहे छीन ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩﴾ وَأَنفِقُوا مِن مَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠﴾ وَلَن يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ

وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑪

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

हर आदमी के लिए सबसे बड़ा मसला आख़िरत का मसला है। मगर माल और औलाद इंसान को इस सबसे बड़े मसले से ग़ाफ़िल कर देते हैं। इंसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक्सद नहीं बल्कि जरिया हैं। वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए। वह उन्हें अपनी आख़िरत बनाने में इस्तेमाल करे। मगर नादान आदमी उन्हें बजाते ख़ुद मक्सूद (लक्ष्य) समझ लेता है। ऐसे लोग जब अपने आख़िरी अंजाम को पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए हसरत व अफसोस के सिवा और कुछ न होगा।

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ① هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④

आयतें-18 **सूरह-64. अत-तग़ाबुन** रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन

में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

'कायनात अल्लाह की तस्बीह कर रही है' का मतलब यह है कि अल्लाह ने जिस हकीकत को कुरआन में खोला है, कायनात सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बनी हुई है, वह जबानेहाल से हम्द व सताइश (प्रशस्ति) की हद तक इसकी ताईद कर रही है। इस दोतरफा एलान के बावजूद जो लोग मोमिन न बनें उन्हें इसके बाद तीसरे एलान का इंतिजार करना चाहिए जबकि तमाम लोग ख़ुदा के यहां जमा किए जाएंगे ताकि ख़ुद मालिके कायनात की जबान से अपने बारे में आख़िरी फ़ैसले को सुनें।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑤ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑥

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

कदीम जमाने में रसूलों के जरिए जो तारीख़ बनी वह इंसानों के लिए मुस्तकिल इबरत (सीख) का नमूना है। मसलन आद और समूद और अहले मदयन और कौमे लूत वग़ैरह के दर्मियान पैग़म्बर आए। इन पैग़म्बरों के पास अपनी सदाकत बताने के लिए कोई ग़ैर बशरी (इंसानी) कमाल न था, बल्कि सिर्फ दलील थी। दलील की सतह पर इंकार ने उन कौमों को अजाब का मुस्तहिक बना दिया। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह दलील की सतह पर हक को पहचाने। जो शख़्स दलील की सतह पर हक को पहचानने में नाकाम रहे वह हमेशा के लिए हक से महरूम होकर रह जाएगा।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٠﴾

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे रब की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

लोग दुनिया को हार जीत (तग़ाबुन) की जगह समझते हैं। किसी शख़्स को यहां कामयाबी मिल जाए तो वह ख़ुश होता है। और जो शख़्स यहां नाकामी से दो चार हो वह लोगों की नजर में हक़ीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। मगर हक़ीक़त यह है कि इस दुनिया की हार भी बेक़ीमत है और यहां की जीत भी बेक़ीमत।

हार जीत का अस्ल मकाम आख़िरत (परलोक) है। हारने वाला वह है जो आख़िरत में हारे और जीतने वाला वह है जो आख़िरत में जीते। और वहां की हार जीत का मेयार बिल्कुल मुख़्तलिफ है। दुनिया में हार जीत जाहिरी माद्दियात (पदार्थों) की बुनियाद पर होती है। और आख़िरत की हार जीत ख़ुदाई अख़्लाकियात की बुनियाद पर होगी। उस वक़्त देखने वाले यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि यहां सारा मामला बिल्कुल बदल गया है। जिस पाने को लोग पाना समझ रहे थे वह दरअस्ल खोना था, और जिस खोने को लोगों ने खोना समझ रखा था वही दरअस्ल वह चीज थी जिसे पाना कहा जाए। उसी दिन की हार, हार है और उसी दिन की जीत, जीत।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٢﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज़्न (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ़-साफ़ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

कोई मुसीबत अपने आप नहीं आती, हर मुसीबत ख़ुदा की तरफ से आती है। और इसलिए आती है कि उसके जरिए से इंसान को हिदायत अता की जाए। मुसीबत आदमी के दिल को नर्म करती है। और उसकी सोई हुई नफ़्सियात में हलचल पैदा करती है। मुसीबत के झटके आदमी के जेहन को जगाने का काम करते हैं। अगर आदमी अपने आपको मंफ़ी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचाए तो मुसीबत उसके लिए बेहतरीन रब्बानी मुअल्लिम (शिक्षक) बन जाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٦﴾ إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ कर दो और दरगुजर करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और ख़र्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख़्स दिल की तंगी से महफ़ूज रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम

अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह कद्रदां है, बुर्दबार (उदार) है। ग़ायब और हाजिर को जानने वाला है, जबरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

इंसान को सबसे ज्यादा तअल्लुक अपनी औलाद से होता है। आदमी हर दूसरे मामले में उसूल की बातें करता है मगर जब अपनी औलाद का मामला आता है तो वह बेउसूल बन जाता है। इसीलिए हदीस में इर्शाद हुआ है कि औलाद किसी आदमी को बुजदिली और बुख़्ल (कंजूसी) पर मजबूर करने वाले हैं। इसी तरह एक और हदीस में इर्शाद हुआ है कि कियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा, फिर कहा जाएगा कि इसके बीवी बच्चे इसकी नेकियां खा गए।

इंसान अपने बच्चों की ख़ातिर अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करता। हालांकि अगर वह अल्लाह की राह में ख़र्च करे तो मुख़्तलिफ शक्लों में अल्लाह उसकी तरफ उससे बहुत ज्यादा लौटाएगा जितना उसने अल्लाह की राह में दिया था।

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اِثْنَا عَشَرَةَ اٰيَةً

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ﴿۱﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾

आयतें-12 **सूरह-65. अत्त्तलाक** रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्दत पर तलाक दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके

घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हदों से तजावुज करेगा तो उसने अपने ऊपर जुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारूफ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारूफ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिज्क देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज के लिए एक अंदाजा ठहरा रखा है। (1-3)

इस्लाम में अपरिहार्य हालात के तौर पर तलाक की इजाजत दी गई है। ताहम इसका एक तरीकेकार मुकर्रर किया गया है जो ख़ास वक्फे के दर्मियान पूरा होता है। इस तरह तलाक के अमल को कुछ हदों का पाबंद कर दिया गया है। इन हदों का मक्सद यह है कि दोनों पक्षों के दर्मियान आख़िर वक्त तक वापसी का मौका बाकी रहे। और तलाक का वाकया किसी किस्म के ख़ानदानी या समाजी फसाद का जरिया न बने। वही तलाक इस्लामी तलाक है जिसके पूरे अमल के दौरान ख़ुदा के ख़ौफ की रूह जारी व सारी रहे।

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿۴﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ﴿۵﴾

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ उतारा है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज्र देगा। (4-5)

शरीअत ने तलाक और दूसरे मामलात में इंसान को कुछ जवाबित (नियमों) का पाबंद किया है। ये जवाबित बजाहिर इंसान की आजादाना तबीअत के लिए रुकावट हैं। मगर

हकीकत के एतबार से ये नेमत हैं। इन जवाबित का यह फायदा है कि आदमी बहुत से ग़ैर जरूरी नुक्सानात से बच जाता है। मजीद यह कि इस दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि यहां हर नुक्सान की तलाफी (क्षतिपूर्ति) किसी न किसी तरह की जाती है। ताहम यह तलाफी सिर्फ उस शख़्स के हिस्से में आती है जो फित्रत के दायरे से बाहर न जाए।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ⑥ لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ⑦

तुम उन औरतों को अपनी वुस्अत (हैसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालियां हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक ख़र्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख़्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है। (6-7)

इस्लाम में यह मत्लूब है कि आदमी मामलात में फरीके सानी (दूसरे पक्ष) के साथ फराख़दिली का तरीका इख़्तियार करे। वह सब्र के साथ ख़िलाफे मिजाज बातों को सहे। नागवारियों के बावजूद दूसरे का हक अदा करे। जब आदमी ऐसा करता है तो वह सिर्फ फरीके सानी के लिए अच्छा नहीं करता बल्कि वह ख़ुद अपने लिए भी अच्छा करता है। इस तरह वह अपने अंदर हकीकतपसंदी का मिजाज पैदा करता है और हकीकतपसंदी का मिजाज बिलाशुबह इस दुनिया में कामयाबी का सबसे बड़ा जीना है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا

شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ⑧ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ⑨ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑩ رَّسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ⑪

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सख़्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वालो जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोजी दी। (8-11)

ताकि अहले ईमान को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले आए। इस मौके पर यह बात आइली (पारिवारिक) कानून के बारे में है। कदीम जमाने में सारी दुनिया में तवह्हुमात (अंधविश्वास) का ग़लबा था। तरह-तरह के तवह्हुमाती अकाइद ने मर्द और औरत के तअल्लुकात को ग़ैर फित्री बुनियादों पर कायम कर रखा था। कुरआन ने इन तवह्हुमातों को ख़त्म किया और दुबारा मर्द और औरत के तअल्लुकात को फित्रत की बुनियाद पर कायम किया। इस इंतिजाम के बाद भी जो लोग इस्लाही रास्ते को इख़्तियार न करें उनके लिए ख़ुदा की दुनिया में घाटे के सिवा और कुछ नहीं।

'अक्ल वालो अल्लाह से डरो' का फिक्रा बताता है कि तक्वे का सरचश्मा (मूल स्रोत) अक्ल है। आदमी अपने अक्ल व शुऊर को काम में लाकर ही उस दर्जे को हासिल करता है जिसे शरीअत में तक्वा (परहेजगारी, ख़ौफे ख़ुदा) कहा गया है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ⑫

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

'व मिनल अरजि मिस-ल हुन्न०' से मुराद अगर सात जमीनें हैं तो इल्मुल अफलाक (आकाशीय विज्ञान) अभी तक इस तादाद को दरयाफ्त नहीं कर सका है। इंसानी मालूमात के मुताबिक, इस तहरीर (लेखन) के वक़्त तक मौजूदा जमीन सारी कायनात में एक इस्तिसना (अपवाद) है। इसलिए यह अल्लाह को मालूम है कि इस आयत का वाकई मतलब क्या है।

'ताकि तुम जानो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है।' इससे मालूम होता है अल्लाह को इंसान से अस्लन जो चीज मत्लूब है वह 'इल्म' है, यानी जाते ख़ुदावंदी का शुऊर। कायनात का अजीम कारख़ाना इसलिए बनाया गया है कि इंसान उसके जरिए ख़ालिक को पहचाने, वह उसके जरिए ख़ुदा की बेपायां (असीम) कुदरत की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल करे।

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً فِيْهَا رُكُوْعَانِ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

आयतें-12 | **सूरह-66. अत-तहरीम** | रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी बीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुकर्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

बीवियों के पैदा करदा कुछ अंदरूनी मसाइल की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर में यह कसम खा ली कि मैं शहद नहीं खाऊंगा। मगर पैग़म्बर का अमल उसकी उम्मत के लिए नमूना बन जाता है, इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप शरई तरीके के मुताबिक कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करके अपनी कसम को तोड़ दें। और शहद न खाने के अहद से अपने आपको आजाद कर लें। ताकि ऐसा न हो कि आइंदा आपके उम्मती इसे तकवे का मेयार समझ कर शहद खाने से परहेज करने लगें।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुकाबले में कार्रवाइयां करोगी तो उसका रफीक (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फरिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

मज्कूरा मामले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ अजवाज (पत्नियों) ने आपके घर में जो पेचीदगी पैदा की थी, उस पर मुतनब्बह करने के लिए आपकी अजवाज से अल्टीमेटम के अंदाज में कलाम किया गया। इससे जिंदगी के मामलात में औरतों की अहमियत मालूम होती है। हकीकत यह है कि औरतें अगर सही मअनों में अपने शोहरों की मआविनत (सहयोग) करें तो वे उनका 'आधा बेहतर' बन जाती हैं। और अगर वे सच्ची रफीक साबित न हों तो वे एक बामक्सद इंसान के पूरे मंसूबे को ख़ाक में मिला सकती हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۗ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंदख़ू (कठोर) और जबरदस्त फरिश्ते मुक़र्रर हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

मौजूदा दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी एक चीज को हक समझता है। मगर बीवी बच्चों से बढ़ा हुआ तअल्लुक उसे मजबूर करता है कि वह हक के तरीके को छोड़ दे और वही करे जो उसके बीवी-बच्चे चाहते हैं। मगर यह जबरदस्त भूल है। इंसान को याद रखना चाहिए कि आज जिन बच्चों की रिआयत करने में वह इस हद तक जाता है कि हक की रिआयत करना भूल जाता है, वे बच्चे अपनी इस रविश के नतीजे में कल ऐसे जहन्नमी कारिंदों के हवाले किए जाएंगे जो मशीनी इंसान (Robot) की तरह बेरहम होंगे और उनके साथ किसी किस्म की कोई रिआयत नहीं करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मग्फिरत फरमा, बेशक तू हर चीज पर कादिर है। (8)

मौजूदा दुनिया में इंसान को आजमाइशी हालात में रखा गया है। इसलिए इंसान से ग़लतियां भी होती हैं। उसकी तलाफी के लिए तौबा है। यानी अल्लाह की तरफ रुजूअ करना। तौबा की अस्ल हकीकत शर्मिंदगी है। आदमी को अगर वाकेयतन अपनी ग़लती का एहसास हो तो वह सख़्त शर्मिंदा होगा और उसकी शर्मिंदगी उसे मजबूर करेगी कि वह आइंदा ऐसा फेअल न करे। चुनांचे हदीस में आया है कि शर्मिंदगी ही तौबा है। एक सहाबी ने कहा है कि सच्ची तौबा यह है कि आदमी रुजूअ करे और फिर उस फेअल को न दोहराए।

तौबा वह है जो सच्ची तौबा (तौबतुन नसूह) हो। महज अल्फ़ाज दोहरा देने का नाम

तौबा नहीं। हजरत अली ने एक शख़्स को देखा कि वह अपनी किसी ग़लती के बाद जबान से तौबा तौबा कह रहा है। आपने फरमाया कि यह झूठे लोगों की तौबा है। सच्ची तौबा आख़िरत की रोशनी है और झूठी तौबा आख़िरत का अंधेरा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوحٍ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّاخِلِينَ ﴿١٠﴾

ऐ नबी मुंकिरों और मुनाफिकों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुंकिरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीवी की और लूत की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (9-10)

'मुनाफिक़ीन के साथ जिहाद करो' का मतलब यह है कि मुनाफिक़ीन का सख़्त अहतसाब करो। यह एक दाइमी हुक्म है। मुआशिरे के बड़ों और जिम्मेदारों को चाहिए कि वे मुआशिरे के अफराद पर मुस्तकिल नजर रखें। और जब भी कोई मुसलमान ग़लत रविश इख़्तियार करे तो उसे रोकने की वे हर मुमकिन कोशिश करें जो उनके इम्कान में है।

ख़ुदा के यहां आदमी का सिर्फ अपना अमल काम आएगा यहां तक कि बुजुर्गों से निस्बत या सालिहीन से रिश्तेदारी भी वहां किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। हजरत नूह और हजरत लूत ख़ुदा के पैग़म्बर थे। मगर उनकी बीवियां दुश्मनाने हक से भी क़ल्बी तअल्लुक का रिश्ता कायम किए हुए थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि पैग़म्बर की बीवी होने के बावजूद वे दोज़ख़ की मुस्तहिक क़रार पाईं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِ وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ ﴿١٢﴾

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फिरऔन की बीवी की,

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम क़ौम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) की हिफ़ाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक़ की, और वह फ़रमांबरदारों में से थी। (11-12)

फ़िरऔन एक मुंकिर और जालिम शख़्स था। मगर उसकी बीवी आसिया बिन्त मुजाहिम ईमानदार और बाअमल ख़ातून थी। बीवी ने जब अपने आपको सही रविश पर क़ायम रखा तो शोहर की ग़लत रविश उसे कुछ नुक्सान न पहुंचा सकी। शोहर जहन्नम में दाख़िल किया गया और बीवी को जन्नत के बाग़ों में जगह मिली।

अहसनत फरजहा दरअस्ल किनाया (संकेत) है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने अपनी अस्मत (सतीत्व) को महफ़ूज रखा। बचपन से जवानी तक वह पूरी तरह बेदाग़ रहीं। चुनांचे अल्लाह ने उन्हें मोजिजाती पैग़म्बर की पैदाइश के लिए चुना। कुछ रिवायात के मुताबिक़, जिब्रील फ़रिश्ते ने उनके गिरेबान में फूंक मारी, जिससे इस्तक़रारे हमल (गर्भ का ठहरना) हुआ और फिर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۝١ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝٢ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝٤

आयतें-30 **सूरह-67. अल-मुल्क** रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज पर क़ादिर है। जिसने मौत और जिंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले,

तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ़ वापस आ जाएगी। (1-4)

जब एक शख़्स मौजूदा दुनिया का मुतालआ करता है तो उसे यहां एक तजाद (असंगति) नजर आता है। इंसान के सिवा जो बक़िया कायनात है वह इंतिहाई हद तक मुनज़्ज़म और कामिल है। उसमें कहीं कोई नक्स नजर नहीं आता। इसके बरअक्स इंसानी जिंदगी में जुल्म व फ़साद नजर आता है। इसकी वजह इंसान की अलाहदा (पृथक) नौइयत है। इंसान इस दुनिया में हालते इम्तेहान में है। इम्तेहान लाजिमी तौर पर अमल की आजादी चाहता है। इसी अमल की आजादी ने इंसान को यह मौक़ा दिया है कि वह दुनिया में जुल्म व फ़साद कर सके।

इंसानी दुनिया का जुल्म इंसानी आजादी की क़ीमत है। अगर ये हालात न हों तो उन क़ीमती इंसानों का इंतख़ाब कैसे किया जाएगा जिन्होंने जुल्म के मौक़े पाते हुए जुल्म नहीं किया। जिन्होंने सरकशी की ताक़त रखने के बावुजूद अपने आपको सरकशी से बचाया।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٧ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝٩ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١٠ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١

और हमने क़रीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोज़ख़ का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह ग़ुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोग़ा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इक़रार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर। (5-11)

आयतें-22 **सूरह-58. अल-मुजादलह** रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

इस्लाम से पहले अरब में रवाज था कि कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि 'तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी मां की पीठ' तो वह औरत हमेशा के लिए उस मर्द पर हराम हो जाती। इसे जिहार कहा जाता था। मदीना के एक मुसलमान औस बिन सामित अंसारी ने अपनी बीवी ख़ौला बिन्त सालबा को एक बार यही लफ्ज कह दिया। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आईं और वाकया बताया। आपने कदीम रवाज के एतबार से फरमा दिया कि मैं ख़्याल करता हूं कि तुम उस पर हराम हो गई हो। ख़ौला को परेशानी हुई कि मेरे घर और मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। वह फरयाद व जारी (विलाप) करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं और बताया गया कि जिहार के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है।

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ أُمَّهٰتِهِمْ ۖ إِنْ أُمَّهٰتُهُمْ إِلَّا الّٰٓـِٔىْ وَلَدْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٢﴾ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ ذٰلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهٖ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّتَمَآسَّا ۖ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهٖ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللّٰهِ ۗ وَلِلْكٰفِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (ग़ुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर

जो शख़्स न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शख़्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

इस्लाम में सूरत और हकीकत के दर्मियान फर्क किया गया है। यही वजह है कि इस्लाम ने इस कदीम रवाज को तस्लीम नहीं किया कि जो औरत हकीकी मां न हो वह महज मां का लफ्ज बोल देने से किसी की मां बन जाए। इस किस्म का फेअल एक लग्व (निरर्थक) बात तो जरूर है मगर इसकी वजह से फितरत के कवानीन (नियम) बदल नहीं सकते।

कुरआन में बताया गया कि महज जिहार से किसी आदमी की बीवी पर तलाक नहीं पड़ेगी। अलबत्ता उस आदमी पर लाजिम किया गया कि वह पहले कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे। इसके बाद वह दुबारा अपनी बीवी के पास जाए। किसी ग़लती के बाद जब आदमी इस तरह कफ्फ़ारा अदा करता है तो वह दुबारा अपने यकीन को जिंदा करता है। वह इस उसूल में अपने अकीदे को नए सिरे से मुस्तहकम (सुदृढ़) बनाता है जिसे वह ग़फलत या नादानी से छोड़ बैठा था।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَلِلْكٰفِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٦﴾ ع

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

हक की मुख़ालिफत करना ख़ुदा की मुख़ालिफत करना है। और ख़ुदा की मुख़ालिफत करना उस हस्ती की मुख़ालिफत करना है जिससे मुख़ालिफत करके आदमी ख़ुद अपना नुक्सान करता है। ख़ुदा से आदमी न अपनी किसी चीज को छुपा सकता और न किसी के लिए यह मुमकिन है कि वह ख़ुदा की पकड़ से अपने आपको बचा सके।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِنْ

نَجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۡ وَاِذَا جَاۗءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۭ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वार्ता) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

कायनात अपने इंतिहाई पेचीदा निजाम के साथ यह गवाही दे रही है कि वह हर आन किसी बालातर (उच्चतर) ताकत की निगरानी में है। कायनात में निगरानी की शहादत यह साबित करती है कि इंसान भी मुसलसल तौर पर अपने ख़ालिक की निगरानी में है। ऐसी हालत में हक के ख़िलाफ ख़ुफिया सरगर्मियां दिखाना सिर्फ ऐसे अंधे लोगों का काम हो सकता है जो ख़ुदा की सिफ्तों को न बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मल्फूज (शाब्दिक) कुरआन में पढ़ सकें और न बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर ग़ैर मल्फूज कायनात में।

कुछ यहूद और मुनाफिकीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में आते तो वे अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो) कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम (आप पर मौत आए) कहते। यह हमेशा से सतही (निम्न स्तरीय) इंसानों का तरीका रहा है।

सतही लोग एक सच्चे इंसान को बेकद्र करके अपने जेहन में ख़ुश होते हैं। वे भूल जाते हैं कि सारी फैली हुई ख़ुदाई ऐन उस वक्त भी उस सच्चे इंसान का एतराफ कर रही होती है जबकि अपने महदूद जेहन के मुताबिक वे उसकी तहकीर (अनादर) व तरदीद के लिए अपना आख़िरी लफ़्ज इस्तेमाल कर चुके हों।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَاۗرِّهِمْ شَيْـــًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वार्ता) करो तो गुनाह और ज्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

ख़ुफिया सरगोशियां करना आम हालात में एक नापसंदीदा फेअल (कृत्य) है। ताहम कभी कारेख़ैर के लिए भी ख़ुफिया सरगोशी की जरूरत होती है। इस सिलसिले में अस्ल फैसलाकुन चीज नियत है। ख़ुफिया सरगोशी अगर अच्छी नियत से की जाए तो जाइज है और अगर वह बुरी नियत से की जाए तो नाजाइज।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मज्लिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (11)

मज्लिस के आदाब के तहत कभी ऐसा होता है कि एक शख़्स को पीछे करके दूसरे शख़्स को आगे बिठाया जाता है। इसी तरह कभी ऐसा होता है कि लोगों को उम्मीद के ख़िलाफ

कह दिया जाता है कि अब आप लोग तशरीफ ले जाएं। ऐसी बातों को इज्जत का सवाल बनाना शुऊरी पस्ती का सुबूत है। और जो शख़्स इन बातों को इज्जत का सवाल न बनाए उसने यह सुबूत दिया कि शुऊरी एतबार से वह बुलन्द दर्जे को पहुंचा हुआ है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳﴾

ऐ ईमान वालो, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीजा है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

अल्लाह तआला को यह मत्लूब था कि रसूल से सिर्फ वही लोग मिलें जो फिलवाकअ संजीदा मक्सद के तहत आपसे मिलना चाहते हैं। ग़ैर जरूरी क़िस्म के लोग छांट दिए जाएं जो अपनी बेफ़ायदा बातों से सिर्फ वक्त जाया करने का सबब बनते हैं। इसलिए यह उसूल मुकर्रर किया गया कि जब रसूल से मिलने का इरादा करो तो पहले अल्लाह के नाम पर कुछ सदका करो। और अगर इसकी कुदरत न हो तो कोई दूसरी नेकी करो।

यह हुक्म अगरचे अस्लन रसूल के लिए मत्लूब था। मगर रसूल के बाद भी उम्मत के रहनुमाओं के हक में वह हालात के एतबार से दर्जा-ब-दर्जा मत्लूब होगा।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۶﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़जब हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

मदीना के मुनाफिकीन इस्लाम की जमाअत में शामिल थे। इसी के साथ वे यहूद से भी मिले हुए थे। यही हमेशा उन लोगों का हाल होता है जो हक को पूरी यकसूई (एकाग्रता) के साथ इख़्तियार न कर सकें। ऐसे लोग बजाहिर सबसे मिले हुए होते हैं मगर हकीकतन वे सिर्फ अपने मफ़ाद (स्वार्थ) के वफ़ादार होते हैं। चाहे वे कसमें खाकर अपने हक़परस्त होने का यकीन दिला रहे हों।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۷﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۸﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿۲۰﴾ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۱﴾

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोज़ख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

मफ़ादपरस्त आदमी जब हक की दावत की मुख़ालिफ़त करता है तो वह समझता है कि इस तरह वह अपने आपको महफ़ूज कर रहा है। मगर उस वक्त वह दहशतजदा होकर रह जाएगा जब आख़िरत में वह देखेगा कि जिन चीजों पर उसने भरोसा कर रखा था वे फ़ैसले के उस वक्त में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

मुनाफ़िक (पाखंडी) आदमी अपने मौकिफ़ को सही साबित करने के लिए बढ़-बढ़कर बातें करता है। यहां तक कि वह कसमें खाकर अपने इख़्लास (निष्ठा) का यकीन दिलाता है। ये सब करके वह समझता है कि 'वह किसी चीज पर है।' उसने अपने हक में कोई वाकई बुनियाद फ़राहम कर ली है। मगर कियामत का धमाका जब हकीक़तों को खोलेगा उस वक्त वह जान लेगा कि यह महज शैतान के सिखाए हुए झूठे अल्फ़ाज थे जिन्हें वह अपने बेकुसूर होने का यकीनी सुबूत समझता रहा।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फैज से कुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

इस दुनिया में कामयाबी हिज़्बुल्लाह के लिए है। हिज़्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान सबसे बड़ी हकीक़त के तौर पर रासिख़ (घनीभूत) हो गया हो। जिन्हें अल्लाह से इतनी गहरी निस्बत हासिल हो कि उन्हें अल्लाह की तरफ से रूहानी फैज़ पहुंचने लगे। फिर यह कि ख़ुदाई हकीक़तों से उनकी वाबस्तगी इतनी गहरी हो कि उसी की बुनियाद पर उनकी दोस्तियां और दुश्मनियां कायम हों। वे सबसे ज्यादा उन लोगों से करीब हों जो ख़ुदाई सदाकत (सच्चाई) को अपनाए हुए हैं। और जो लोग ख़ुदाई सदाकत से दूर

हैं वे भी उनसे दूर हो जाएं, चाहे वे उनके अपने अजीज और रिश्तेदार क्यों न हों।

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۚ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٢﴾

आयतें-24 सूरह-59. अल-हश्र रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीजें जो आसमानों और जमीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

मदीना के मश्रिक में यहूदी कबीला बनू नजीर की आबादी थी। उनके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह का मुआहिदा था। मगर उन्होंने बार-बार अहदशिकनी की। आख़िरकार 4 हि० में अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा किए कि मुसलमानों ने उन्हें मदीना से निकलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद वे ख़ैबर और अजरिआत में जाकर आबाद हो गए। मगर उनकी साजिशी सरगर्मियां जारी रहीं। यहां तक कि हजरत उमर फारूक की ख़िलाफ़त की जमाने में वे और दूसरे यहूदी कबाइल जजीरा अरब से निकलने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद वे लोग शाम में जाकर आबाद हो गए।

'अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां उन्हें गुमान भी न था' की तशरीह अगले फिकरे में मौजूद है। यानी अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उन्होंने बेरूनी (वाह्य) तौर पर हर किस्म की तैयारियां कीं। मगर जब मुसलमानों की फौज ने उनकी आबादी को घेर लिया

तो सारी ताकत के बावजूद उन पर ऐसी दहशत तारी हुई कि उन्होंने लड़ने का हौसला खो दिया। और बिला मुकाबले हथियार डाल दिया।

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِى الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٥﴾

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश-निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत की। और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफत करता है तो अल्लाह सख़्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख़्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

यहूद को जो सजा दी गई, वह अल्लाह के क़ानून के तहत थी। यह सजा उन लोगों के लिए मुक़द्दर है जो पैग़म्बर के मुख़ालिफ बनकर खड़े हों। बनू नजीर के मुहासिरे (घेराव) के वक्त उनके बाग़ात के कुछ दरख़्त जंगी मस्लेहत के तहत काटे गए थे। यह भी बराहेरास्त ख़ुदा के हुक्म से हुआ। ताहम यह कोई आम उसूल नहीं। यह एक इस्तिसनाई (अपवाद स्वरूप) मामला है जो पैग़म्बर के बराहेरास्त मुख़ातबीन के साथ एक या दूसरी शक्ल में इख़्तियार किया जाता है।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَىْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۗ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿٨﴾

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। उन मुफ्लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं। वे अल्लाह का फज़्ल और रिजामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

दुश्मन का जो माल लड़ाई के बाद मिले वह ग़नीमत है और जो माल लड़ाई के बग़ैर हाथ लगे वह फई है। ग़नीमत में पांचवां हिस्सा निकालने के बाद बकिया सब लश्कर का है। और फई सबका सब इस्लामी हुकूमत की मिल्कियत है जो मसालेहे आम्मा (जन-हित) के लिए ख़र्च किया जाएगा।

इस्लाम चाहता है कि माल किसी एक तबके में महदूद होकर न रह जाए। बल्कि वह हर तबके के दर्मियान पहुंचे। इस्लाम में मआशी (आर्थिक) जब्र नहीं है। ताहम उसके मआशी कवानीन इस तरह बनाए गए हैं कि दौलत मुरतकिज (केन्द्रित) न होने पाए। वह हर तबके के लोगों में गर्दिश करती रहे।

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِىْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٩﴾ وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِىْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और ईमान अस्तवार किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुक़द्दम रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फाका हो। और जो शख़्स अपने जी के

लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफीक (करुणामय) और महरबान है। (9-10)

हिजरत के बाद जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर मदीना पहुंचे, उनका मदीना आना मदीने के बाशिंदों (अंसार) पर एक बोझ था। मगर उन्होंने निहायत ख़ुशदिली के साथ उनका इस्तकबाल किया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब अमवाल (धन-सम्पत्ति) आए तो आपने उनका हिस्सा मुहाजिरीन के दर्मियान तक्सीम किया। इस पर भी अंसारे मदीना के अंदर उनके लिए कोई रंजिश पैदा न हुई। इसके बाद भी वे उनके इतने कद्रदान रहे कि उनके हक में उनके दिल से बेहतरीन दुआएं निकलती रहीं। यही वह आली हौसलगी है जो किसी गिरोह को तारीख़साज (इतिहास-निर्माता) गिरोह बनाती है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफाक (पाखंड) में मुब्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नजीर की जलावतनी (देश निकाला) का एलान किया तो मुनाफिकीन उनकी हिमायत पर आ गए। उन्होंने बनू नजीर से कहा कि तुम अपनी जगह जमे रहो, हम हर तरह तुम्हारी मदद करेंगे। मगर मुनाफिकीन की ये बातें महज उन्हें मुसलमानों के ख़िलाफ उकसाने के लिए थीं। वे इस पेशकश में हरगिज मुख़्लिस न थे। चुनांचे जब मुसलमानों ने बनू नजीर को घेर लिया तो मुनाफिकीन में से कोई भी उनकी मदद पर न आया। मफादपरस्त (स्वार्थी) गिरोह का हर जमाने में यही किरदार रहा है।

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख़्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

ख़ुदा की ताकत बजाहिर दिखाई नहीं देती। मगर इंसानों की ताकत खुली आंख से नजर आती है। इस बिना पर जाहिरपरस्त लोगों का हाल यह होता है कि वे अल्लाह से तो बेख़ौफ रहते हैं मगर इंसानों में अगर कोई जोरआवर दिखाई दे तो वे फौरन उससे डरने की जरूरत महसूस करने लगते हैं। ख़ुदा के बारे में उनकी बेशुऊरी उन्हें उनकी दुनिया के बारे में भी बेशुऊर बना देती है।

ऐसे लोग जिन्हें सिर्फ मंफी (नकारात्मक) मक्सद ने मुत्तहिद किया हो वे ज्यादा देर तक अपना इत्तिहाद बाकी नहीं रख पाते। क्योंकि देरपा इत्तहाद के लिए मुस्बत (सकारात्मक) बुनियाद दरकार है और वह उनके पास मौजूद ही नहीं।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

मदीना के मुनाफ़िक़ीन बनू नजीर को मुसलमानों के ख़िलाफ उभार रहे थे। उन्होंने उस वाक्ये से सबक नहीं लिया कि जल्द ही पहले कुरैश और कबीला बनू कैनुकाअ उनके ख़िलाफ उठे। मगर उन्हें जबरदस्त शिकस्त हुई। जो लोग शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाएं उनका हाल हमेशा यही होता है। वे वाकेयात से नसीहत नहीं लेते। पहले वे जोश व ख़रोश के साथ लोगों को मुजरिमाना अफआल पर उभारते हैं। फिर जब उसका भयानक अंजाम सामने आता है तो वे तरह-तरह के अल्फाज बोलकर यह चाहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी से अपने आपको बरी कर लें। मगर इस किस्म की कोशिशें ऐसे लोगों को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं हो सकतीं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शख़्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें ख़ुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफरमान हैं। दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

इंसानी जिंदगी को 'आज' और 'कल' के दर्मियान तक्सीम किया गया है। मौजूदा दुनिया इंसान का आज है और आख़िरत की दुनिया उसका कल है। इंसान मौजूदा दुनिया में जो कुछ करेगा उसका लाजिमी अंजाम उसे आने वाली तवीलतर (दीर्घतर) जिंदगी में भुगतना पड़ेगा।

यही अस्ल हकीकत है और इसी हकीकत का दूसरा नाम इस्लाम है। इंसान की कामयाबी इसमें है कि वह इस हकीकते वाकई को जेहन में रखे। जो शख़्स इस हकीकते वाकई से ग़ाफ़िल हो जाए उसकी पूरी जिंदगी ग़लत होकर रह जाएगी। इस मामले में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई फर्क नहीं। मुसलमानों को इसका फायदा उसी वक्त मिलेगा जबकि वाकेयतन वे उस पर कायम हों। मुसलमान अगर ग़फ़लत में पड़ जाएं तो उनका अंजाम भी वही होगा जो इससे पहले ग़फ़लत में पड़ने वाले यहूद का हुआ।

لَوْ أَنْزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अगर हम इस कुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह ख़ुदा के ख़ौफ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज जो आसमानों और जमीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

कुरआन इस अजीम हकीकत का एलान है कि इंसान आजाद नहीं है बल्कि उसे अपने तमाम आमाल की जवाबदेही अल्लाह के सामने करनी है जो इंतिहाई ताकतवर है। और हर एक के आमाल को बजातेख़ुद पूरी तरह देख रहा है। यह ख़बर इतनी संगीन है कि पहाड़ तक को लरजा देने के लिए काफी है। मगर इंसान इतना गाफिल और बेहिस है कि वह इस हौलनाक ख़बर को सुनकर भी नहीं तड़पता।

अल्लाह के नाम जो यहां बयान किए गए हैं वे एक तरफ अल्लाह की जात का तआरुफ (परिचय) हैं। दूसरी तरफ वे बताते हैं कि वह हस्ती कैसी अजीम हस्ती है जो इंसानों की ख़ालिक है और उनके ऊपर उनकी निगरानी कर रही है। अगर आदमी को वाकयेतन इसका एहसास हो जाए तो वह अल्लाह की हम्द व तस्बीह में सरापा ग़र्क हो जाएगा।

कायनात अपनी तख़्लीकी मअनवियत की सूरत में ख़ुदा की सिफात का आइना है। वह ख़ुद हम्द व तस्बीह में मसरूफ होकर इंसान को भी हम्द व तस्बीह का सबक देती है।

سورة الممتحنة مكية وهي ثلث عشرة اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

يايها الذين امنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم اولياء تلقون اليهم بالمودة وقد كفروا بما جاءكم من الحق يخرجون الرسول واياكم ان تؤمنوا بالله ربكم ان كنتم خرجتم جهادا في سبيلي وابتغاء مرضاتي تسرون اليهم بالمودة وانا اعلم بما اخفيتم وما اعلنتم ومن يفعله منكم فقد ضل سواء السبيل ① ان يثقفوكم يكونوا لكم اعداء ويبسطوا اليكم ايديهم والسنتهم بالسوء وودوا لو تكفرون ② لن تنفعكم ارحامكم ولا اولادكم يوم القيمة يفصل بينكم والله بما تعملون بصير ③

आयतें-13 सूरह-60. अल-मुमतहिनह रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इज्हार करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वासित) करते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो। और मैं जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शख़्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जबान से तुम्हें आजार (पीड़ा) पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का की तरफ इक्दाम करने

का फैसला किया तो आपने उसका पूरा मंसूबा निहायत ख़ामोशी के साथ बनाया ताकि मक्का वाले मुकाबले की तैयारी न कर सकें। उस वक्त एक बद्री सहाबी हातिब बिन अबी बलतआ ने इस मंसूबे को एक ख़त में लिखा और उसे ख़ुफिया तौर पर मक्का वालों के नाम रवाना कर दिया। ताकि मक्का वाले उनसे ख़ुश हो जाएं और उनके अहल व अयाल (परिवारजनों) को न सताएं जो मक्का में मुकीम हैं। मगर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए इसकी इत्तिला हो गई और कासिद को रास्ते ही में पकड़ लिया गया। इस किस्म का हर फेअल ईमानी तक़ाज़े के ख़िलाफ़ है।

जब यह सूरतेहाल हो कि इस्लाम और ग़ैर इस्लाम के अलग-अलग महाज बन जाएं तो उस वक्त अहले इस्लाम की जिम्मेदारी होती है कि वे ग़ैर इस्लामी महाज से दिलचस्पी का तअल्लुक तोड़ लें। चाहे ग़ैर इस्लामी महाज में उनके अजीज और रिश्तेदार ही क्यों न हों। हक को मानना और हक का इंकार करने वालों से क़ल्बी तअल्लुक रखना दो मुतजाद (परस्पर विरोधी) चीजें हैं जो एक साथ जमा नहीं हो सकतीं।

قد كانت لكم اسوة حسنة في ابرهيم والذين معه اذ قالوا لقومهم انا برءؤا منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء ابدا حتى تؤمنوا بالله وحده الا قول ابرهيم لابيه لاستغفرن لك وما املك لك من الله من شيء ربنا عليك توكلنا واليك انبنا واليك المصير ④ ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا ربنا انك انت العزيز الحكيم ⑤ لقد كان لكم فيهم اسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الاخر ومن يتول فان الله هو الغني الحميد ⑥ عسى الله ان يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة والله قدير والله غفور رحيم ⑦

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत (बैर) और बेजारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे

रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे, बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख़्स रूगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (4-7)

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तिदा में ख़ैरख़्वाहाना अंदाज में अपने ख़ानदान को तौहीद का पैग़ाम दिया। जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद वे लोग मुंकिर बने रहे तो आप उनसे बिल्कुल जुदा हो गए। मगर यह बड़ा सख़्त मरहला था। क्योंकि एलाने बरा-त (विरक्ति) का मतलब मुंकिरीने हक को यह दावत देना था कि वे हर मुमकिन तरीके से अहले ईमान को सताएं। दलील के मैदान में शिकस्त खाने के बाद ताकत के मैदान में अहले ईमान को जलील करें। यही वजह है कि इसके बाद हजरत इब्राहीम ने जो दुआ कि उसमें ख़ास तौर से फरमाया कि ऐ हमारे रब हमें इन जालिमों के ज़ुल्म का तख़्ताए मश्क (निशाना) न बना।

अजीजों और रिश्तेदारों से एलाने बरा-त आम मअनों में एलाने अदावत नहीं है। यह दाओ की तरफ से अपने यकीन का आख़िरी इज़्हार है। इस एतबार से उसमें भी एक दावती क्र (Value) शामिल हो जाती है। चुनांचे कभी ऐसा होता है कि जो शख़्स 'पैग़ाम' की जबान से मुतअस्सिर नहीं हुआ था 'यकीन' की जबान उसे जीतने में कामयाब हो जाती है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ
يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓي اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे

दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

जहां तक अद्ल व इंसाफ का तअल्लुक है वह हर एक से किया जाएगा, चाहे फरीक सानी (प्रतिपक्षी) दुश्मन हो या ग़ैर दुश्मन। मगर दोस्ती का तअल्लुक हर एक से दुरुस्त नहीं। दोस्ती सिर्फ उसी के साथ जाइज है जो अल्लाह का दोस्त हो या कम से कम यह कि वह अल्लाह का दुश्मन न हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ
بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ
الْكَوَافِرِ وَسْـَٔــلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْــَٔـلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى
الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आएं तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने ख़र्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

यहां सुलह हुदैबिया के बाद पैदाशुदा हालात की रोशनी में इस्लाम के कुछ उन कानूनों

को बताया गया है जिनका तअल्लुक दारुल हरब और दारुल इस्लाम के दर्मियान पेश अपने वाले आइली (पारिवारिक) मसाइल से है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿12﴾

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारूफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (12)

इस आयत में वे शर्तें बताई गई हैं जिनका इकरार लेकर किसी औरत को इस्लाम में दाख़िल किया जाता है। इन शर्तों में दो शर्त की हैसियत बुनियादी है। यानी शिर्क न करना और रसूल की नाफरमानी न करना। बाकी तमाम मज्कूर (उल्लिखित) औरशमकूरतजो अपने आप इन दो शर्तों में शामिल हो जाते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿13﴾

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह कब्रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

आसमानी किताब को मानने वाले यहूद और उसे न मानने वाले मुंकिर आख़िरत के एतबार से एक सतह पर हैं। खुले हुए मुंकिरों को उम्मीद नहीं होती कि कोई शख़्स दुबारा अपनी कब्र से उठेगा। यही हाल उन लोगों का भी होता है जो यहूद की तरह ईमान लाने के बाद ग़फ़लत और बेहिसी में मुब्तिला हो गए हों। आख़िरत का लफ़्ज़ी इकरार करने के बावजूद उनकी अमली जिंदगी वैसी ही हो जाती है जैसी खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी।

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿1﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿2﴾ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿3﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿4﴾

आयतें-14 सूरह-61. अस-सफ्फ रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्वदर्शी) है। ऐ ईमान वालो, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

इंसान के सिवा जो कायनात है उसमें कहीं तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। इस दुनिया में लकड़ी हमेशा लकड़ी रहती है। और जो चीज अपने आपको लोहा और पत्थर के रूप में जाहिर करे वह हकीकी तजर्बे में भी लोहा और पत्थर ही साबित होती है। इंसान को भी ऐसा ही बनना चाहिए। इंसान के कहने और करने में मुताबिकत होनी चाहिए। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि आदमी को अपने कहने की यह कीमत देनी पड़े कि हर किस्म की दुश्वारियों के बावजूद वह सब्र का पहाड़ बन जाए।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۭ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿5﴾

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के दर्मियान आए। बनी इस्राईल उस वक्त एक जवालयाफ्ता कौम थे। उनके अंदर यह हौसला बाकी नहीं रहा था कि जो कहें वही करें। और करें वही कहें। चुनांचे उनका हाल यह था कि वे हजरत मूसा के हाथ पर ईमान का इकरार भी करते थे और इसी के साथ हर किस्म की बदअहदी और नाफरमानी में भी मुब्तिला रहते थे। यहां तक कि हजरत मूसा के साथ अपने बुरे सुलूक को जाइज साबित करने के लिए वे खुद हजरत मूसा पर झूठे-झूठे इल्जाम लगाते थे। बाइबल में ख़ुरूज और गिनती के अबवाब (अध्यायों) में इसकी तफ्सील देखी जा सकती है।

अहद करने के बाद अहद की ख़िलाफवर्जी आदमी को पहले से भी ज्यादा हक से दूर कर देती है।

وَ اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के मोजिजात इस बात का सुबूत थे कि आप ख़ुदा के पैग़म्बर

हैं। मगर यहूद ने उन मोजिजात को जादू का करिश्मा कहकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। इसी तरह कदीम आसमानी किताबों में वाजेह तौर पर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशगी ख़बर मौजूद थी। मगर जब आप आए तो यहूद और नसारा दोनों ने आपका इंकार कर दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह खुली-खुली हकीकतों का एतराफ करने के लिए भी तैयार नहीं होता।

इस आयत में ग़लबे से मुराद फिक्री ग़लबा (वैचारिक वर्चस्व) है। यानी ख़ुदा और मजहब के बारे में जितने ग़ैर मुवह्हिदाना (ग़ैर-एकेश्वरवादी) अकाइद दुनिया में हैं उन्हें जेर करके तौहीद (एकेश्वरवाद) के अकीदे को गालिब फिक्र की हैसियत दे दी जाए। बकिया तमाम अकाइद हमेशा के लिए फिक्री तौर पर मग़लूब होकर रह जाएं। क़ुरआन में यह पेशीनगोई इंतिहाई नामुवाफिक हालात में सन् 3 हि० में नाजिल हुई थी। मगर बाद को वह हर्फ-ब-हर्फ पूरी हुई।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣

ऐ ईमान वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

तिजारत में आदमी पहले देता है, इसके बाद उसे वापस मिलता है। दीन की जद्दोजहद में भी आदमी को अपनी कुव्वत और अपना माल देना पड़ता है। इस एतबार से यह भी एक किस्म की तिजारत है। अलबत्ता दुनियावी तिजारत का नफा सिर्फ दुनिया में मिलता है और दीन की तिजारत का नफा मजीद इजाफे के साथ दुनिया में भी मिलता है और आख़िरत में भी। फिर इसी 'तिजारत' से ग़लबा की राह भी खुलती है जो मौजूदा दुनिया में किसी गिरोह को बाइज्जत जिंदगी हासिल करने का सबसे बड़ा जरिया है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُونُوٓا۟ أَنصَارَ ٱللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّـۧنَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ قَالَ ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ۖ فَـَٔامَنَت طَّآئِفَةٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَكَفَرَت طَّآئِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا۟ ظَٰهِرِينَ ﴿١٤﴾

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

यहूद की अक्सरियत ने अगरचे हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को रद्द कर दिया मगर उनमें से कुछ लोग (हवारिय्यीन) ऐसे थे जिन्होंने पूरे इख़्लास और वफादारी के साथ आपका साथ दिया। और आपके पैग़म्बराना मिशन को आगे बढ़ाया। यही चन्द लोग अल्लाह की नजर में मोमिन करार पाए और बकिया तमाम यहूद पिछले पैग़म्बरों को मानने के बावजूद मुंकिर करार पा गए।

यहां जिस ग़लबे का जिक्र है वह फिल जुमला (वस्तुतः) मोमिनीने मसीह का फिल जुमला मुंकिरीने मसीह पर ग़लबा है। हजरत मसीह के बाद रूमी शहंशाह कुस्तुंतीन दोम (272-337 ई०) ने नसरानियत (ईसाइयत) कुबूल कर ली जिसकी सल्तनत शाम और फिलिस्तीन तक फैली हुई थी। इसके बाद रूमी रिआया बहुत बड़ी तादाद में ईसाई हो गई। चुनांचे यहूद उनके महकूम (शासनाधीन) हो गए। मौजूदा जमाने में भी यहूदियों की हुकूमते इस्राईल हर एतबार से ईसाइयों के मातहत है।

سُورَةُ ٱلْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِىَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ٱلْمَلِكِ ٱلْقُدُّوسِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ ٱلَّذِى بَعَثَ فِى ٱلْأُمِّيِّـۧنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلُ لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾ وَءَاخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا۟ بِهِمْ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذَٰلِكَ فَضْلُ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن

يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٤﴾

आयतें-11 **सूरह-62. अल-जुमुअह** रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो जमीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मियों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फज़्ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फज़्ल (अनुग्रह) वाला है। (1-4)

इंसान की हिदायत के लिए रसूल भेजना ख़ुदा की उन्हीं सिफात (गुणों) का इंसानी सतह पर जुहूर है जिन सिफात का जुहूर माद्दी एतबार से कायनात की सतह पर हुआ है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इसी तरह दूसरे पैग़म्बरों का काम ख़ास तौर पर दो रहा है। एक, ख़ुदा की 'वही' को लोगों तक पहुंचाना। दूसरे, लोगों के शुऊर को बेदार करना ताकि वे ख़ुदाई बातों को समझें और अपनी हकीकी जिंदगी के साथ उन्हें मरबूत कर सकें। यही दो काम आइंदा भी दावत व इस्लाह की जद्दोजहद में मत्लूब रहेंगे। यानी तालीमे कुरआन और जेहनी तर्बियत।

مَثَلُ ٱلَّذِينَ حُمِّلُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ ٱلْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًۢا ۚ بِئْسَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥﴾ قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ هَادُوٓا۟ إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلَّهِ مِن دُونِ ٱلنَّاسِ فَتَمَنَّوُا۟ ٱلْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُۥٓ أَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٧﴾ قُلْ إِنَّ ٱلْمَوْتَ ٱلَّذِى تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُۥ مُلَٰقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी

मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियो, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह जालिमों को ख़ूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और जाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

ख़ुदा की किताब जब किसी कौम को दी जाती है तो इसलिए दी जाती है कि वह उसे अपने अंदर उतारे और उसे अपनी जिंदगी में अपनाए। मगर जो कौम इस मअना में किताबे आसमानी की हामिल (धारक) न बन सके उसकी मिसाल उस गधे की सी होगी जिसके ऊपर इल्मी किताबें लदी हुई हों और उसे कुछ ख़बर न हो कि उसके ऊपर क्या है।

यहूद ने अगरचे अमली तौर पर ख़ुदा के दीन को छोड़ रखा था, इसके बावजूद उसे अपने कौमी फख़्र का निशान बनाए हुए थे। मगर इस किस्म का फख़्र किसी के कुछ काम आने वाला नहीं। ऐसा फख़्र हमेशा झूठा फख़्र होता है। और इसका एक सुबूत यह है कि आदमी जिस दीन को अपने फख़्र का सामान बनाए हुए होता है उसके लिए वह कुर्बानी देने को तैयार नहीं होता। ताहम जब मौत आएगी तो ऐसे लोग जान लेंगे कि दुनिया में वे जिस फख़्र पर जी रहे थे वह आख़िरत में उन्हें जिल्लत के सिवा और कुछ देने वाला नहीं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾

ऐ ईमान वालो, जब जुमा के दिन की नमाज के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और ख़रीद व फरोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज पूरी हो जाए तो जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फज़्ल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क देने वाला है। (9-11)

दुनिया में आदमी बयकवक्त दो तकाज़ों के दर्मियान होता है। एक मआश (जीविका) का तकाज़, और दूसरे दीन का तकाज़। इनमें से हर तकाज़ जरूरी है। अलबत्ता उनके दर्मियान इस तरह तक्सीम होनी चाहिए कि मआशी सरगर्मियां दीनी तकाजे के मातहत हों। आदमी को इजाजत है कि वह जाइज हुदूद में मआश के लिए दौड़ धूप करे। मगर यह जरूरी है कि उसे जो मआशी कामयाबी हासिल हो उसे वह सरासर अल्लाह का फज़्ल समझे। नीज मआशी सरगर्मी के दौरान बराबर अल्लाह को याद करता रहे। इसी के साथ उसे हमेशा तैयार रहना चाहिए कि जब भी दीन के किसी तकाजे के लिए पुकारा जाए तो उस वक्त वह हर दूसरे काम को छोड़कर दीन के काम की तरफ दौड़ पड़े।

मदीना में एक बार ऐन जुमा के ख़ुत्बे के वक्त कुछ लोग उठकर बाजार चले गए। इस पर मज़्कूरा आयतें उतरीं। इस हुक्म का तअल्लुक अगरचे बराहेरास्त तौर पर जुमा से है मगर बिलवास्ता तौर पर हर दीनी काम से है। जब भी किसी ख़ास दीनी मक्सद के लिए लोगों को जमा किया जाए तो अमीर की इजाजत के बग़ैर उठकर चले जाना सख़्त महरूमी की बात है।

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾

आयतें-11 **सूरह-63. अल-मुनाफिकून** रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब मुनाफिक (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफिकीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

यह किसी आदमी के निफाक (पाखंड) की अलामत है कि वह बड़ी-बड़ी बातें करे। और कसम खाकर अपनी बात का यकीन दिलाए। मुख़्लिस (निष्ठावान) आदमी अल्लाह के ख़ौफ से दबा हुआ होता है। वह जबान से ज्यादा दिल से बोलता है। मुनाफ़िक़ आदमी सिर्फ इंसान को अपनी आवाज सुनाने का मुशताक होता है। और मुख़्लिस आदमी ख़ुदा को सुनाने का।

जब एक शख़्स ईमान लाता है तो वह एक संजीदा अहद (प्रण) करता है। इसके बाद जिंदगी के अमली मवाकेअ आते हैं, जहां जरूरत होती है कि वह उस अहद के मुताबिक अमल करे। अब जो शख़्स ऐसे मौकों पर अपने दिल की आवाज को सुनकर अहद के तकाज़े पूरे करेगा। उसने अपने अहदे ईमान को पुख़्ता किया। इसके बरअक्स जिसका यह हाल हो कि उसके दिल ने आवाज दी मगर उसने दिल की आवाज को नजरअंदाज करके अहद के ख़िलाफ अमल किया तो इसका नतीजा यह होगा कि वह धीरे-धीरे अपने अहदे ईमान के मामले में बेहिस हो जाएगा। यही मतलब है दिल पर मुहर करने का।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝٤ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ۝٥ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝٦

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़फार (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकब्बुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं। उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उनके लिए मग्फिरत (माफी) की दुआ करो या मग्फिरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

मुनाफ़िक़ आदमी मस्लेहतपरस्ती के जरिए अपने मफ़ादात (हितों) को महफूज रखता है। वह हक नाहक की बहस में नहीं पड़ता, इसलिए हर एक से उसका बनाव रहता है। उसकी जिंदगी ग़म से ख़ाली होती है। ये चीजें उसके जिस्म को फरबा (मोटा) बना देती हैं। वे लोगों

के मिजाज की रिआयत करके बोलता है। इसलिए उसकी बातों में हर एक अपने लिए दिलचस्पी का सामान पा लेता है। मगर ये बजाहिर हरे भरे दरख़्त हकीकतन सिर्फ सूखी लकड़ियां होते हैं जिनमें कोई जिंदगी न हो। वे अंदर से बुजदिल होते हैं। उनके नजदीक उनका दुनियावी मफ़ाद हर दीनी मफ़ाद से ज्यादा अहम होता है। ऐसे लोग ईमान के बुलन्दबांग मुद्दई (ऊंचे दावेदार) होने के बावजूद ख़ुदा की हिदायत से यकसर महरूम हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝٧ يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝٨

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज्जत वाला वहां से जिल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज्जत अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

कदीम मदीना में दो किस्म के मुसलमान थे। एक मुहाजिर दूसरे अंसार। मुहाजिरीन मक्का से बेवतन होकर आए थे। उनका सबसे बड़ा जाहिरी सहारा मकामी मुसलमान (अंसार) थे। इस बिना पर दुनियापरस्त लोगों को मुहाजिर बेइज्जत दिखाई देते थे और अंसार उनकी नजर में बाइज्जत लोग थे। यहां तक कि एक मौके पर अब्दुल्लाह बिन उबइ ने साफ तौर पर कह दिया कि इन मुहाजिरीन की हकीकत क्या है। अगर हम इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दें तो दुनिया में कहीं इन्हें ठिकाना न मिले।

इस किस्म के अल्फाज उसी शख़्स की जबान से निकल सकते हैं जो इस हकीकत से बेख़बर हो कि इस दुनिया में जो कुछ है सब अल्लाह का है। वही जिसे चाहे दे और वही जिससे चाहे छीन ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝٩ وَأَنفِقُوا مِن مَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝١٠ وَلَن يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا

وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफिल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

हर आदमी के लिए सबसे बड़ा मसला आख़िरत का मसला है। मगर माल और औलाद इंसान को इस सबसे बड़े मसले से ग़ाफिल कर देते हैं। इंसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक्सद नहीं बल्कि जरिया हैं। वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए। वह उन्हें अपनी आख़िरत बनाने में इस्तेमाल करे। मगर नादान आदमी उन्हें बजाते ख़ुद मक्सूद (लक्ष्य) समझ लेता है। ऐसे लोग जब अपने आख़िरी अंजाम को पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए हसरत व अफसोस के सिवा और कुछ न होगा।

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۳﴾ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴﴾

आयतें-18 **सूरह-64. अत-तग़ाबुन** रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन

में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

'कायनात अल्लाह की तस्बीह कर रही है' का मतलब यह है कि अल्लाह ने जिस हकीकत को कुरआन में खोला है, कायनात सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बनी हुई है, वह जबानेहाल से हम्द व सताइश (प्रशस्ति) की हद तक इसकी ताईद कर रही है। इस दोतरफा एलान के बावजूद जो लोग मोमिन न बनें उन्हें इसके बाद तीसरे एलान का इंतिजार करना चाहिए जबकि तमाम लोग ख़ुदा के यहां जमा किए जाएंगे ताकि ख़ुद मालिके कायनात की जबान से अपने बारे में आख़िरी फ़ैसले को सुनें।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۶﴾

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

कदीम जमाने में रसूलों के जरिए जो तारीख़ बनी वह इंसानों के लिए मुस्तकिल इबरत (सीख) का नमूना है। मसलन आद और समूद और अहले मदयन और कौमे लूत वग़ैरह के दर्मियान पैग़म्बर आए। इन पैग़म्बरों के पास अपनी सदाकत बताने के लिए कोई ग़ैर बशरी (इंसानी) कमाल न था, बल्कि सिर्फ दलील थी। दलील की सतह पर इंकार ने उन कौमों को अजाब का मुस्तहिक बना दिया। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह दलील की सतह पर हक को पहचाने। जो शख़्स दलील की सतह पर हक को पहचानने में नाकाम रहे वह हमेशा के लिए हक से महरूम होकर रह जाएगा।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٠﴾

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे रब की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

लोग दुनिया को हार जीत (तग़ाबुन) की जगह समझते हैं। किसी शख़्स को यहां कामयाबी मिल जाए तो वह ख़ुश होता है। और जो शख़्स यहां नाकामी से दो चार हो वह लोगों की नजर में हक़ीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। मगर हक़ीक़त यह है कि इस दुनिया की हार भी बेक़ीमत है और यहां की जीत भी बेक़ीमत।

हार जीत का अस्ल मकाम आख़िरत (परलोक) है। हारने वाला वह है जो आख़िरत में हारे और जीतने वाला वह है जो आख़िरत में जीते। और वहां की हार जीत का मेयार बिल्कुल मुख़्तलिफ है। दुनिया में हार जीत जाहिरी माद्दियात (पदार्थों) की बुनियाद पर होती है। और आख़िरत की हार जीत ख़ुदाई अख़्लाकियात की बुनियाद पर होगी। उस वक्त देखने वाले यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि यहां सारा मामला बिल्कुल बदल गया है। जिस पाने को लोग पाना समझ रहे थे वह दरअस्ल खोना था, और जिस खोने को लोगों ने खोना समझ रखा था वही दरअस्ल वह चीज थी जिसे पाना कहा जाए। उसी दिन की हार, हार है और उसी दिन की जीत, जीत।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٢﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज्न (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ-साफ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

कोई मुसीबत अपने आप नहीं आती, हर मुसीबत ख़ुदा की तरफ से आती है। और इसलिए आती है कि उसके जरिए से इंसान को हिदायत अता की जाए। मुसीबत आदमी के दिल को नर्म करती है। और उसकी सोई हुई नफ्सियात में हलचल पैदा करती है। मुसीबत के झटके आदमी के जेहन को जगाने का काम करते हैं। अगर आदमी अपने आपको मंफी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचाए तो मुसीबत उसके लिए बेहतरीन रब्बानी मुअल्लिम (शिक्षक) बन जाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٦﴾ إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ कर दो और दरगुजर करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और ख़र्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख़्स दिल की तंगी से महफूज रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम

अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह कद्रदां है, बुर्दबार (उदार) है। ग़ायब और हाजिर को जानने वाला है, जबरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

इंसान को सबसे ज्यादा तअल्लुक़ अपनी औलाद से होता है। आदमी हर दूसरे मामले में उसूल की बातें करता है मगर जब अपनी औलाद का मामला आता है तो वह बेउसूल बन जाता है। इसीलिए हदीस में इर्शाद हुआ है कि औलाद किसी आदमी को बुजदिली और बुख़्ल (कंजूसी) पर मजबूर करने वाले हैं। इसी तरह एक और हदीस में इर्शाद हुआ है कि कियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा, फिर कहा जाएगा कि इसके बीवी बच्चे इसकी नेकियां खा गए।

इंसान अपने बच्चों की ख़ातिर अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करता। हालांकि अगर वह अल्लाह की राह में ख़र्च करे तो मुख़्तलिफ शक्लों में अल्लाह उसकी तरफ उससे बहुत ज्यादा लौटाएगा जितना उसने अल्लाह की राह में दिया था।

سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اثْنَا عَشَرَةَ آيَةً وَفِيْهَا رُكُوعَانِ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝١ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝٣

आयतें-12 **सूरह-65. अत्त-तलाक** रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्दत पर तलाक दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके

घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हदों से तजावुज करेगा तो उसने अपने ऊपर जुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारूफ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारूफ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिज़्क देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज के लिए एक अंदाजा ठहरा रखा है। (1-3)

इस्लाम में अपरिहार्य हालात के तौर पर तलाक की इजाजत दी गई है। ताहम इसका एक तरीक़ेकार मुकर्रर किया गया है जो ख़ास वक्फे के दर्मियान पूरा होता है। इस तरह तलाक के अमल को कुछ हदों का पाबंद कर दिया गया है। इन हदों का मक्सद यह है कि दोनों पक्षों के दर्मियान आख़िर वक्त तक वापसी का मौक़ा बाकी रहे। और तलाक का वाक़्या किसी क़िस्म के ख़ानदानी या समाजी फसाद का जरिया न बने। वही तलाक इस्लामी तलाक है जिसके पूरे अमल के दौरान ख़ुदा के ख़ौफ की रूह जारी व सारी रहे।

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٤ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝٥

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ उतारा है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज्र देगा। (4-5)

शरीअत ने तलाक और दूसरे मामलात में इंसान को कुछ जवाबित (नियमों) का पाबंद किया है। ये जवाबित बजाहिर इंसान की आजादाना तबीअत के लिए रुकावट हैं। मगर

हकीकत के एतबार से ये नेमत हैं। इन जवाबित का यह फायदा है कि आदमी बहुत से ग़ैर जरूरी नुक्सानात से बच जाता है। मजीद यह कि इस दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि यहां हर नुक्सान की तलाफी (क्षतिपूर्ति) किसी न किसी तरह की जाती है। ताहम यह तलाफी सिर्फ उस शख़्स के हिस्से में आती है जो फित्रत के दायरे से बाहर न जाए।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ﴿٦﴾ لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿٧﴾

तुम उन औरतों को अपनी वुस्अत (हैसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालियां हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक ख़र्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख़्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है। (6-7)

इस्लाम में यह मत्लूब है कि आदमी मामलात में फरीके सानी (दूसरे पक्ष) के साथ फराख़दिली का तरीका इख़्तियार करे। वह सब्र के साथ ख़िलाफे मिजाज बातों को सहे। नागवारियों के बावजूद दूसरे का हक अदा करे। जब आदमी ऐसा करता है तो वह सिर्फ फरीके सानी के लिए अच्छा नहीं करता बल्कि वह ख़ुद अपने लिए भी अच्छा करता है। इस तरह वह अपने अंदर हकीकतपसंदी का मिजाज पैदा करता है और हकीकतपसंदी का मिजाज बिलाशुबह इस दुनिया में कामयाबी का सबसे बड़ा जीना है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا

شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾ رَّسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ﴿١١﴾

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सख़्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वालो जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोजी दी। (8-11)

ताकि अहले ईमान को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले आए। इस मौके पर यह बात आइली (पारिवारिक) कानून के बारे में है। कदीम जमाने में सारी दुनिया में तवह्हुमात (अंधविश्वास) का ग़लबा था। तरह-तरह के तवह्हुमाती अकाइद ने मर्द और औरत के तअल्लुकात को ग़ैर फित्री बुनियादों पर कायम कर रखा था। कुरआन ने इन तवह्हुमातों को ख़त्म किया और दुबारा मर्द और औरत के तअल्लुकात को फित्रत की बुनियाद पर कायम किया। इस इंतिजाम के बाद भी जो लोग इस्लाही रास्ते को इख़्तियार न करें उनके लिए ख़ुदा की दुनिया में घाटे के सिवा और कुछ नहीं।

'अक्ल वालो अल्लाह से डरो' का फिक्रा बताता है कि तक्वे का सरचश्मा (मूल स्रोत) अक्ल है। आदमी अपने अक्ल व शुऊर को काम में लाकर ही उस दर्जे को हासिल करता है जिसे शरीअत में तक्वा (परहेजगारी, ख़ौफे ख़ुदा) कहा गया है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

'व मिनल अरजि मिस-ल हुन्न०' से मुराद अगर सात जमीनें हैं तो इल्मुल अफलाक (आकाशीय विज्ञान) अभी तक इस तादाद को दरयाफ्त नहीं कर सका है। इंसानी मालूमात के मुताबिक, इस तहरीर (लेखन) के वक़्त तक मौजूदा जमीन सारी कायनात में एक इस्तिसना (अपवाद) है। इसलिए यह अल्लाह को मालूम है कि इस आयत का वाकई मतलब क्या है।

'ताकि तुम जानो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है।' इससे मालूम होता है अल्लाह को इंसान से अस्लन जो चीज मत्लूब है वह 'इल्म' है, यानी जाते ख़ुदावंदी का शुऊर। कायनात का अजीम कारख़ाना इसलिए बनाया गया है कि इंसान उसके जरिए ख़ालिक को पहचाने, वह उसके जरिए ख़ुदा की बेपायां (असीम) कुदरत की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल करे।

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اٰيَاتُهَا ١٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

आयतें-12 **सूरह-66. अत-तहरीम** **रुकूअ-2**

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी बीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुकर्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

बीवियों के पैदा करदा कुछ अंदरूनी मसाइल की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर में यह कसम खा ली कि मैं शहद नहीं खाऊंगा। मगर पैग़म्बर का अमल उसकी उम्मत के लिए नमूना बन जाता है, इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप शरई तरीकेके मुताबिक कफ्फारा (प्रायश्चित) अदा करके अपनी कसम को तोड़ दें। और शहद न खाने के अहद से अपने आपको आजाद कर लें। ताकि ऐसा न हो कि आइंदा आपके उम्मती इसे तकवे का मेयार समझ कर शहद खाने से परहेज करने लगें।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुकाबले में कार्रवाइयां करोगी तो उसका रफीक (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फरिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

मज्कूरा मामले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ अजवाज (पत्नियों) ने आपके घर में जो पेचीदगी पैदा की थी, उस पर मुतनब्बह करने के लिए आपकी अजवाज से अल्टीमेटम के अंदाज में कलाम किया गया। इससे जिंदगी के मामलात में औरतों की अहमियत मालूम होती है। हकीकत यह है कि औरतें अगर सही मअनों में अपने शोहरों की रफाकत (सहयोग) करें तो वे उनका 'आधा बेहतर' बन जाती हैं। और अगर वे सच्ची रफीक साबित न हों तो वे एक बामक्सद इंसान के पूरे मंसूबे को ख़ाक में मिला सकती हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۗ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंदख़ू (कठोर) और ज़बरदस्त फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफ़रमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

मौजूदा दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी एक चीज को हक समझता है। मगर बीवी बच्चों से बढ़ा हुआ तअल्लुक उसे मजबूर करता है कि वह हक के तरीके को छोड़ दे और वही करे जो उसके बीवी-बच्चे चाहते हैं। मगर यह जबरदस्त भूल है। इंसान को याद रखना चाहिए कि आज जिन बच्चों की रिआयत करने में वह इस हद तक जाता है कि हक की रिआयत करना भूल जाता है, वे बच्चे अपनी इस रविश के नतीजे में कल ऐसे जहन्नमी कारिंदों के हवाले किए जाएंगे जो मशीनी इंसान (Robot) की तरह बेरहम होंगे और उनके साथ किसी किस्म की कोई रिआयत नहीं करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑧

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फरमा, बेशक तू हर चीज पर क़ादिर है। (8)

मौजूदा दुनिया में इंसान को आजमाइशी हालात में रखा गया है। इसलिए इंसान से ग़लतियां भी होती हैं। उसकी तलाफी के लिए तौबा है। यानी अल्लाह की तरफ रुजूअ करना। तौबा की अस्ल हकीकत शर्मिंदगी है। आदमी को अगर वाकेयतन अपनी ग़लती का एहसास हो तो वह सख़्त शर्मिंदा होगा और उसकी शर्मिंदगी उसे मजबूर करेगी कि वह आइंदा ऐसा फेअल न करे। चुनांचे हदीस में आया है कि शर्मिंदगी ही तौबा है। एक सहाबी ने कहा है कि सच्ची तौबा यह है कि आदमी रुजूअ करे और फिर उस फेअल को न दोहराए।

तौबा वह है जो सच्ची तौबा (तौबतुन नसूह) हो। महज अल्फ़ाज दोहरा देने का नाम

तौबा नहीं। हजरत अली ने एक शख़्स को देखा कि वह अपनी किसी ग़लती के बाद जबान से तौबा तौबा कह रहा है। आपने फरमाया कि यह झूठे लोगों की तौबा है। सच्ची तौबा आख़िरत की रोशनी है और झूठी तौबा आख़िरत का अंधेरा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑨ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوحٍ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّاخِلِينَ ⑩

ऐ नबी मुंकिरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुंकिरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीवी की और लूत की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (9-10)

'मुनाफ़िक़ीन के साथ जिहाद करो' का मतलब यह है कि मुनाफ़िक़ीन का सख़्त अहतसाब करो। यह एक दाइमी हुक्म है। मुआशिरे के बड़ों और जिम्मेदारों को चाहिए कि वे मुआशिरे के अफराद पर मुस्तकिल नजर रखें। और जब भी कोई मुसलमान ग़लत रविश इख़्तियार करे तो उसे रोकने की वे हर मुमकिन कोशिश करें जो उनके इम्कान में है।

ख़ुदा के यहां आदमी का सिर्फ अपना अमल काम आएगा यहां तक कि बुज़ुर्गों से निस्बत या सालिहीन से रिश्तेदारी भी वहां किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। हजरत नूह और हजरत लूत ख़ुदा के पैग़म्बर थे। मगर उनकी बीवियां दुश्मनाने हक से भी क़ल्बी तअल्लुक का रिश्ता कायम किए हुए थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि पैग़म्बर की बीवी होने के बावजूद वे दोज़ख़ की मुस्तहिक़ करार पाईं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ⑪ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِ وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ ⑫

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फ़िरऔन की बीवी की,

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम क़ौम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) की हिफ़ाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक की, और वह फ़रमांबरदारों में से थी। (11-12)

फ़िरऔन एक मुंकिर और जालिम शख़्स था। मगर उसकी बीवी आसिया बिन्त मुजाहिम ईमानदार और बाअमल ख़ातून थी। बीवी ने जब अपने आपको सही रविश पर कायम रखा तो शोहर की ग़लत रविश उसे कुछ नुक्सान न पहुंचा सकी। शोहर जहन्नम में दाख़िल किया गया और बीवी को जन्नत के बाग़ों में जगह मिली।

अहसनत फरजहा दरअस्ल किनाया (संकेत) है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने अपनी अस्मत (सतीत्व) को महफ़ूज रखा। बचपन से जवानी तक वह पूरी तरह बेदाग़ रहीं। चुनांचे अल्लाह ने उन्हें मोजिजाती पैग़म्बर की पैदाइश के लिए चुना। कुछ रिवायात के मुताबिक, जिब्रील फरिश्ते ने उनके गिरेबान में फूंक मारी, जिससे इस्तकरारे हमल (गर्भ का ठहरना) हुआ और फिर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴿۴﴾

आयतें-30 **सूरह-67. अल-मुल्क** रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज पर कादिर है। जिसने मौत और जिंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले,

तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ़ वापस आ जाएगी। (1-4)

जब एक शख़्स मौजूदा दुनिया का मुतालआ करता है तो उसे यहां एक तजाद (असंगति) नजर आता है। इंसान के सिवा जो बकिया कायनात है वह इंतिहाई हद तक मुनज़्ज़म और कामिल है। उसमें कहीं कोई नक्स नजर नहीं आता। इसके बरअक्स इंसानी जिंदगी में जुल्म व फ़साद नजर आता है। इसकी वजह इंसान की अलाहदा (पृथक) नौइयत है। इंसान इस दुनिया में हालते इम्तेहान में है। इम्तेहान लाजिमी तौर पर अमल की आजादी चाहता है। इसी अमल की आजादी ने इंसान को यह मौक़ा दिया है कि वह दुनिया में ज़ुल्म व फ़साद कर सके।

इंसानी दुनिया का ज़ुल्म इंसानी आजादी की कीमत है। अगर ये हालात न हों तो उन कीमती इंसानों का इंतख़ाब कैसे किया जाएगा जिन्होंने ज़ुल्म के मौक़े पाते हुए ज़ुल्म नहीं किया। जिन्होंने सरकशी की ताकत रखने के बावुजूद अपने आपको सरकशी से बचाया।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ﴿۵﴾ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۶﴾ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۙ﴿۷﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۭ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ﴿۸﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَاۗءَنَا نَذِيْرٌ ڏ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ښ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿۹﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۱۰﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۱۱﴾

और हमने करीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोज़ख़ का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह ग़ुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोग़ा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इकरार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर। (5-11)

कुरआन में जगह-जगह जहन्नम का नक्शा खींचा गया है। यह जहन्नम अगरचे आज इंसान के लिए नाकाबिले मुशाहिदा (अ-अवलोकनीय) है। मगर वह कायनात की मअनवियत में बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर नजर आती है। हकीकत यह है कि अगर आख़िरत में बुरे लोगों की पकड़ न होने वाली हो तो मौजूदा कायनात की सारी मअनवियत नाकाबिले तौजीह (औचित्यहीन) होकर रह जाएगी।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾ وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾

जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग़्फिरत (क्षमा) और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और तुम अपनी बात छुपाकर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को जानता है। क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। (12-14)

आख़िरत के अजाब का मौजूदा दुनिया में नाकाबिले मुशाहिदा (अ-अवलोकनीय) होना ऐन ख़ुदाई मंसूबे के मुताबिक है। ख़ुदा को उन इंसानों का इंतख़ाब करना है जो बिना देखे उसकी अज्मत को मानें, जो बिना देखे उसके फरमांबरदार बन जाएं। और ऐसे लोगों का अंदाजा इसके बग़ैर नहीं हो सकता कि लोगों के उख़रवी (परलोक के) अंजाम को उनकी निगाहों से ओझल रखा जाए, ताकि आदमी जो कुछ करे अपने आजाद इरादे के तहत करे न कि मजबूराना हुक्म के तहत।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾ أَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾ أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾

वही है जिसने जमीन को तुम्हारे लिए पस्त वशीभूत कर दिया तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसके रिज़्क में से खाओ और उसी की तरफ है उठना। क्या तुम उससे बेख़ौफ हो गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें जमीन में धंसा दे, फिर वह लरजने लगे। क्या तुम उससे जो आसमान में है बेख़ौफ हो गए कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना। और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे। तो कैसा हुआ मेरा इंकार। (15-18)

जमीन पर हर चीज निहायत तवाज़ुन (संतुलन) की हालत में है। इसी तवाज़ुन ने जमीन को इंसान के लिए काबिले रिहाइश बना रखा है। इस तवाज़ुन में अगर मामूली सा भी फर्क पड़ जाए तो इंसान की जिंदगी बर्बाद होकर रह जाए। जो मुतवाज़ुन (संतुलित) दुनिया हमें हासिल है उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना, और तवाज़ुन टूटने की सूरत में जो तबाहकुन हालात पैदा हो सकते हैं उसके लिए अल्लाह से पनाह मांगना, यही वह चीज है जो इंसान से अल्लाह तआला को मत्लूब है।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

क्या वे परिंदों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उन्हें समेट भी लेते हैं। रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो, बेशक वह हर चीज को देख रहा है। आख़िर कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान के मुकाबले में तुम्हारी मदद कर सके, इंकार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं। आख़िर कौन है जो तुम्हें रोजी दे अगर अल्लाह अपनी रोजी रोक ले, बल्कि वे सरशकी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं। (19-21)

परिंदों का फज़ा में उड़ना, रिज़्क का जमीन से निकलना और इस तरह के दूसरे वाकेयात इंतिहाई हैरतअंगेज हैं। आदमी इन वाकेयात पर ग़ौर करे तो वह ख़ुदाई एहसास में गुम हो जाए। मगर इंसान इतना ग़ाफिल है कि वह एक ऐसी दुनिया में ख़ुदा से सरकशी करता है जहां उसके चारों तरफ फैली हुई चीजें उसे सिर्फ ख़ुदा की इताअत का सबक दे रही हैं।

أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

क्या जो शख़्स औंधे मुंह चल रहा है वह ज्यादा सही राह पाने वाला है या वह शख़्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है। कहो कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो। कहो कि वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया और तुम उसी की तरफ इकट्ठा

किए जाओगे। (22-24)

इंसान को सुनने और देखने और सोचने की सलाहियतें दी गई हैं। अब कोई इंसान वह है कि जो कुछ सुना उसी पर चल पड़ा, जो देखा उसे बस उसके जाहिर के एतबार से मान लिया। जो बात एक बार जेहन में आ गई उसी पर जम गया। यह इंसान वह है जो जानवर की तरह सर झुकाए हुए बस एक डगर पर चला जा रहा है।

दूसरा इंसान वह है जो सुनी हुई बात की तहकीक करे। जो देखी हुई बात को मजीद ज्यादा सेहत के साथ जानने की कोशिश करे। जो अपने जाती ख़ोल से बाहर निकल कर सच्चाई को दरयाफ्त करे। यह दूसरा इंसान वह है जो सीधा होकर एक हमवार रास्ते पर चला जा रहा है। समअ व बसर व फुवाद (सुनना, देखना, सोचना) की सलाहियत आदमी को इसलिए दी गई है कि वह हक को पहचाने, न यह कि वह अंधे बहरे की तरह उससे बेख़बर रहे।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि यह इल्म अल्लाह के पास है और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जब वे उसे करीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इंकार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज जिसे तुम मांगा करते थे। कहो कि अगर अल्लाह मुझे हलाक कर दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, या हम पर रहम फरमाए तो मुंकिरों को दर्दनाक अजाब से कौन बचाएगा। कहो, वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया। पस अनकरीब तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है। कहो कि बताओ, अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ पानी ले आए। (25-30)

मुख़ातब जब दलील से न माने तो दाओ यकीन का कलिमा बोलकर उसके अंदरून को झिंझोड़ता है। ये आयतें गोया इसी किस्म के यकीन के कलिमात हैं। आदमी के अंदर अगर

कुछ भी एहसास जिंदा हो तो यह आख़िरी कलिमात उसे तड़पा देते हैं। मगर जिस शख़्स का एहसास बिल्कुल बुझ चुका हो वह किसी तदबीर से भी नहीं जागता। वह 'पानी' की कीमत को सिर्फ उस वक्त तस्लीम करता है जबकि उसे पानी से महरूम करके सहरा (रेगिस्तान) में डाल दिया गया हो।

سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

ن ۚ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾ مَا أَنتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ﴿٢﴾ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ﴿٣﴾ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ﴿٥﴾ بِأَييِّكُمُ الْمَفْتُونُ ﴿٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾

आयतें-52 **सूरह-68. अल-कलम** रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नून०। कसम है कलम की और जो कुछ लोग लिखते हैं। तुम अपने रब के फज्ल से दीवाने नहीं हो। और बेशक तुम्हारे लिए अज्र (प्रतिफल) है कभी ख़त्म न होने वाला। और बेशक तुम एक आला अख़्लाक (उच्च चरित्र-आचरण) पर हो। पस अनकरीब तुम देखोगे और वे भी देखेंगे, कि तुम में से किसे जुनून था। तुम्हारा रब ही ख़ूब जानता है, जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (1-7)

आला अख़्लाक से मुराद वह अख़्लाक है जबकि आदमी दूसरों के रवैये से बुलन्द होकर अमल करे। उसका तरीका यह न हो कि बुराई करने वालों के साथ बुराई और भलाई करने वालों के साथ भलाई, बल्कि वह हर एक के साथ भलाई करे, चाहे दूसरे उसके साथ बुराई ही क्यों न कर रहे हों। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अख़्लाक यही दूसरा अख़्लाक था। इस किस्म का अख़्लाक साबित करता है कि आप एक बाउसूल इंसान थे। आपकी शख़्सियत हालात की पैदावार न थी। बल्कि ख़ुद अपने आला उसूलों की पैदावार थी। आपका यह आला अख़्लाक आपके इस दावे के ऐन मुताबिक है कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं।

वल कल-मि वमा यसतुरून० से मुराद तारीख़ी रिकॉर्ड है। तारीख़ की शक्ल में इंसानी याददाश्त का जो रिकॉर्ड जमा हुआ है उसमें कुरआन एक इस्तसनाई (अद्वितीय) किताब है। और साहिबे कुरआन एक इस्तसनाई शख़्सियत। इस इस्तसना की इसके सिवा और कोई तौजीह नहीं की जा सकती कि कुरआन को ख़ुदा की किताब माना जाए। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुदा का पैग़म्बर।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾ مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾

पस तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो। वे चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ जाओ तो वे भी नर्म पड़ जाएं। और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जो बहुत कसमें खाने वाला हो, बेवक़अत (हीन) हो, ताना देने वाला हो, चुग़ली लगाता फिरता हो, नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुजर जाने वाला हो, हक़ मारने वाला हो, संगदिल हो, साथ ही बेनस्ब (अधम) हो। इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला है। जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं। अनक़रीब हम उसकी नाक पर दाग़ लगाएंगे। (8-16)

'झुठलाने वालों का कहना न मानो' का मतलब यह है कि झुठलाने वाले इस काबिल नहीं कि उनका कहना माना जाए। एक तरफ हक का अलमबरदार (ध्वजावाहक) है जो दलील पर खड़ा हुआ है, जिसके क़ौल व फेअल में कोई तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। दूसरी तरफ उसके मुख़ालिफीन हैं जिनके पास झूठी बातों और पस्त किरदार के सिवा और कोई सरमाया नहीं। दाओए हक का एतमाद सदाकत पर है और उसके मुख़ालिफीन का एतमाद अपनी माद्दी हैसियत पर। हक का दाओ उसूल का पाबंद है। इसके बरअक्स उसके मुख़ालिफीन के सामने कोई उसूल नहीं। वे कभी एक बात कहते हैं और कभी दूसरी बात। अगर किसी शख़्स के अंदर अक्ल हो तो यही फर्क यह बताने के लिए काफी है कि कौन शख़्स हक पर है और कौन शख़्स नाहक पर।

إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾ أَنْ لَا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾ قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾

قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾ عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ﴿٣٢﴾ كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

हमने उन्हें आजमाइश (परीक्षा) में डाला है जिस तरह हमने बाग़ वालों को आजमाइश में डाला था। जबकि उन्होंने कसम खाई कि वे सुबह सवेरे जरूर उसका फल तोड़ लेंगे। और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। पस उस बाग़ पर तेरे रब की तरफ से एक फिरने वाला फिर गया और वे सो रहे थे। फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फस्ल। पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है। फिर वे चल पड़े और वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे थे। कि आज कोई मोहताज तुम्हारे बाग़ में न आने पाए। और वे अपने को न देने पर क़ादिर समझ कर चले। फिर जब बाग़ को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गए। बल्कि हम महरूम (वंचित) हो गए। उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग तस्बीह क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है। बेशक हम जालिम थे। फिर वे आपस में एक दूसरे को इल्जाम देने लगे। उन्होंने कहा, अफसोस है हम पर, बेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे। शायद हमारा रब हमें इससे अच्छा बाग़ इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ रुजूअ होते हैं। इसी तरह आता है अजाब, और आख़िरत का अजाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (17-33)

इस दुनिया में आदमी जो कुछ कमाता है वह बजाहिर खेत से या और किसी चीज से मिलता हुआ नजर आता है। मगर हकीकतन वह ख़ुदा का दिया हुआ होता है। जो शख़्स उसे ख़ुदा का अतिया समझे और उसमें दूसरे बंदगाने ख़ुदा का हिस्सा निकाले उसकी कमाई में अल्लाह तआला बरकत अता फरमाएगा। और जो शख़्स अपनी कमाई को अपनी लियाकत का नतीजा समझे और दूसरों का हक उन्हें देने पर राजी न हो, उसकी कमाई उसे फायदा न दे सकेगी। यह ख़ुदा का अटल कानून है। कभी वह किसी के लिए दुनिया में भी जाहिर हो जाता है और आख़िरत में तो लाजिमन वह हर एक के हक में जाहिर होगा।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ أَيُّهُمْ بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

बेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के बाग़ हैं। क्या हम फरमांबरदारों (आज्ञाकारियों) को नाफरमानों के बराबर कर देंगे। तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा फैसला करते हो। क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो। उसमें तुम्हारे लिए वह है जिसे तुम पसंद करते हो। क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर कसमें हैं कियामत तक बाकी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फैसला करो। उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका जिम्मेदार है। क्या उनके कुछ शरीक हैं, तो वे अपने शरीकों को लाएं अगर वे सच्चे हैं। (34-41)

ख़ुदा से न डरने वाला आदमी सिर्फ सामने की चीजों को अहमियत देता है। इसके मुक़ाबले में ख़ुदा से डरने वाला वह है जो ग़ैबी हकीक्त (अप्रकट यथार्थ) के बारे में संजीदा हो जाए। ये दो बिल्कुल अलग-अलग किरदार हैं और दोनों का अंजाम यकीनी तौर पर यकसां नहीं हो सकता।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَالِمُونَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهَٰذَا الْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٤٥﴾

जिस दिन हकीक्त से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे तो वे न कर सकेंगे। उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर जिल्लत छाई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे और सही सालिम थे। पस छोड़ो मुझे और उन्हें जो इस कलाम को झुठलाते हैं, हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता ला रहे हैं जहां से वे नहीं जानते। और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी तदबीर मजबूत है। (42-45)

कियामत में जब ख़ुदा अयानन (प्रत्यक्षतः) सामने आ जाएगा तो तमाम ईमान वाले लोग अपने रब के सामने सज्दे में गिर जाएंगे जिस तरह वे पिछली जिंदगी में उसके आगे सज्दे में गिरे हुए थे। मगर ज़ुहूरे ख़ुदावंदी के वक्त सज्दे की यह तौफ़ीक़ सिर्फ सच्चे मोमिनीन को हासिल होगी। जो लोग दुनिया में झूठा सज्दा करते थे उनकी कमर उस वक्त अकड़ जाएगी जिस तरह बाएतबार हकीकत वह दुनिया में अकड़ी हुई थी। ऐसे लोग सज्दा करना चाहेंगे मगर वे सज्दा न कर सकेंगे। यह मुख़्लिस अहले ईमान की सबसे बड़ी क़द्रदानी होगी कि ख़ुदा ख़ुद जाहिर होकर उनका सज्दा क़ुबूल करे। इसके मुक़ाबले में ईमान का झूठा दावा करने वालों के लिए यह सबसे ज्यादा रुसवाई का लम्हा होगा कि उनका ख़ालिक व मालिक उनके सामने है और वे उसके सामने अपनी बंदगी का इकरार करने पर क़ादिर नहीं।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾ لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे उसके तावान से दबे जा रहे हैं। या उनके पास ग़ैब है पस वे लिख रहे हैं। पस अपने रब के फैसले तक सब्र करो और मछली वाले की तरह न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। अगर उसके रब की महरबानी उसके शामिलेहाल न होती तो वह मज्मूम (निंदित) होकर चटयल मैदान में फेंक दिया जाता। फिर उसके रब ने उसे नवाजा, पस उसे नेकों में शामिल कर दिया। और ये मुंकिर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं गोया अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह जरूर दीवाना है। और वह आलम वालों के लिए सिर्फ एक नसीहत है। (46-52)

दाऔ (आह्वानकर्ता) और मदऊ का रिश्ता बेहद नाजुक रिश्ता है। दाऔ को यकतरफा तौर पर अपने आपको हुस्ने अख़्लाक का पाबंद बनाना पड़ता है। मदऊ बेदलील बातें करे, वह दाऔ को हकीर (तुच्छ) समझे, वह दाऔ पर झूठा इल्जाम लगाए। वह चाहे कुछ भी करे। दाऔ को हर हाल में अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफ्सियात से बचाना है। दाऔ की कामयाबी का राज दो चीजों में छुपा हुआ है मदऊ की ज्यादतियों पर सब्र और मदऊ से कोई माद्दी ग़र्ज न रखना।

سُورَةُ الْحَاقَّةِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَاقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرَىٰ لَهُمْ مِنْ

بَاقِيَةٍ ۝ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُوْلَ
رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝
لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝

आयतें-52 **सूरह-69. अल-हाक्कह** रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

वह होने वाली। क्या है वह होनी वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने वाली। समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज को झुठलाया। पस समूद, तो वे एक सख़्त हादसे से हलाक कर दिए गए। और आद, तो वे एक तेज व तुंद हवा से हलाक किए गए। उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उन पर मुसल्लत रखा, पस तुम देखते हो कि वहां वे इस तरह गिरे हुए पड़े हैं गोया कि वे खजूरों के खोखले तने हों। तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नजर आता है। और फिरऔन और उससे पहले वालों और उल्टी हुई बस्तियों ने जुर्म किया। उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफरमानी की तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सख़्त पकड़ा। और जब पानी हद से गुजर गया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कराया। ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। (1-12)

कुछ लोग खुले तौर पर आख़िरत का इंकार करते हैं। कुछ लोग वे हैं जो जबान से आख़िरत का इंकार नहीं करते मगर उनके दिल में सारी अहमियत बस इसी दुनिया की होती है। चुनांचे उनकी जिंदगी में और खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी में कोई फर्क नहीं होता। ये दोनों गिरोह ब-एतबारे हकीकत एक हैं। और दोनों ही अल्लाह के नजदीक आख़िरत को झुठलाने वाले हैं। एक गिरोह अगर जबानी तौर पर उसे झुठला रहा है तो दूसरा गिरोह अमली तौर पर।

ऐसे तमाम लोग ख़ुदा के कानून के मुताबिक हलाकत में पड़ने वाले हैं। पैग़म्बरों के जमाने में यह हलाकत मौजूदा दुनिया में सामने आ गई और बाद के लोगों के लिए वह आख़िरत में सामने आएगी।

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا
دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ
وَّاهِيَةٌ ۝ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ
ثَمٰنِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

पस जब सूर में यकबारगी फूंक मारी जाएगी। और जमीन और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। तो उस दिन वाकेअ (घटित) होने वाली वाकेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा तो वह उस रोज बिल्कुल बोदा होगा। और फरिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और तेरे रब के अर्श को उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे। उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा (छुपी) न होगी। (13-18)

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की मस्लेहत के मुताबिक बनाई गई है। जब इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी तो यह दुनिया तोड़कर नई दुनिया नए तक़ाज़ों के मुताबिक बनाई जाएगी। ख़ुदा का जलाल आज बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर जाहिर हो रहा है, उस वक्त ख़ुदा का जलाल बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर जाहिर हो जाएगा।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝ اِنِّيْ ظَنَنْتُ
اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ قُطُوْفُهَا
دَانِيَةٌ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ وَاَمَّا
مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۝ وَلَمْ اَدْرِ مَا
حِسَابِيَهْ ۝ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ
عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۝ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ
ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۝
وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۝ وَّلَا
طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۝ لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ۝

पस जिस शख़्स को उसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ लो। मैंने गुमान रखा था कि मुझे मेरा हिसाब पेश आने वाला है। पस वह एक पसंदीदा ऐश में होगा। ऊंचे बाग़ में उसके फल झुके पड़ रहे होंगे। खाओ और पियो मजे के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुजरे दिनों में किए हैं। और जिस शख़्स का आमालनामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा आमालनामा मुझे न दिया जाता। और मैं न जानता

कि मेरा हिसाब क्या है। काश वही मौत फैसलाकुन होती। मेरा माल मेरे काम न आया। मेरा इक्तेदार (सत्ता-अधिकार) ख़त्म हो गया। इस शख़्स को पकड़ो, फिर इसे तौक पहनाओ। फिर इसे जहन्नम में दाख़िल कर दो। फिर एक जंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर हाथ है इसे जकड़ दो। यह शख़्स ख़ुदाए अजीम पर ईमान न रखता था। और वह ग़रीबों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था। पस आज यहां इसका कोई हमदर्द नहीं। और जख़्मों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं। उसे गुनाहगारों के सिवा कोई और न खाएगा। (19-37)

आख़िरत की दुनिया में कामयाबी उस शख़्स के लिए है जो मौजूदा दुनिया में ख़ुदा से डरकर जिंदगी गुजारे। और जो शख़्स मौजूदा दुनिया में निडर होकर रहे और बंदों के मुकाबले में सरकशी करे वह आख़िरत में सख़्ततरीन अजाब में फंसकर रह जाएगा।

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ إِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَإِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَإِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

पस नहीं, मैं कसम खाता हूं उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो, और जिन्हें तुम नहीं देखते हो। बेशक यह एक बाइज्जत रसूल का कलाम है। और वह किसी शायर का कलाम नहीं। तुम बहुत कम ईमान लाते हो। और यह किसी काहिन (भविष्य वक्ता) का कलाम नहीं, तुम बहुम कम ग़ौर करते हो। ख़ुदावंद आलम की तरफ से उतारा हुआ है। और अगर वह कोई बात गढ़कर हमारे ऊपर लगाता तो हम उसका दायां हाथ पकड़ते। फिर हम उसकी रगे दिल काट देते। फिर तुम में से कोई इससे हमें रोकने वाला न होता। और बिलाशुबह यह याददिहानी है डरने वालों के लिए। और हम जानते हैं कि तुम में इसके झुठलाने वाले हैं और वह मुंकिरों के लिए पछतावा है। और यह यकीनी हक है। पस तुम अपने अजीम रब के नाम की तस्बीह करो। (38-52)

जो कुछ तुम देखते हो और जो कुछ तुम नहीं देखते सब इस कलाम की सदाकत पर गवाह है। इसका मतलब यह है कि नुजूले कुरआन के वक्त जो मालूमात इंसान की दस्तरस

में आ चुकी थीं और जो बाद के जमाने में उसकी दस्तरस में आने वाली थीं, दोनों इस कलाम की हक्कानियत साबित करने वाली हैं। इस कलाम के बरहक होने की तरदीद (खंडन) न हाल का इल्म कर रहा है और न मुस्तकबिल का इल्म इसकी तरदीद कर सकेगा। इसके बावजूद जो लोग इसे न मानें वे अपने बारे में सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि वे हक और नाहक के मामले में संजीदा नहीं।

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ أَرْبَعٌ وَّأَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَأَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ إِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ﴿٦﴾ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ﴿١٠﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۚ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ﴿١١﴾ وَصَاحِبَتِهٖ وَأَخِيْهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٣﴾ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿١٤﴾

आयतें-44 **सूरह-70. अल-मआरिज** रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। मांगने वाले ने अजाब मांगा वाकेअ (घटित) होने वाला, मुंकिरों के लिए कोई उसे हटाने वाला नहीं। अल्लाह की तरफ से जो सीढ़ियों का मालिक है। उसकी तरफ फरिश्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक्दार पचास हजार साल है। पस तुम सब्र करो, भली तरह का सब्र। वे उसे दूर देखते हैं, और हम उसे करीब देख रहे हैं। जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जाएगा। और पहाड़ धुने हुए ऊन की तरह। और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। वे उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम चाहेगा कि काश उस दिन के अजाब से बचने के लिए अपने बेटों और अपनी बीवी और अपने भाई और अपने कुंबे को जो उसे पनाह देने वाला था और तमाम अहले जमीन को फिदये (मुक्ति मुआवजा) में देकर अपने को बचा ले। (1-14)

कियामत के मनाजिर को मौजूदा दुनिया में हकीकी तौर पर खोला नहीं जा सकता।

ताहम कुरआन में जगह-जगह उन्हें इशारा या तमसील में बताया गया है ताकि आदमी उनका मुजमल (संक्षिप्त) एहसास कर सके। कियामत जब आएगी तो वह इतनी हौलनाक होगी कि आदमी अपने उन रिश्तों और मफादात (हितों) को भूल जाएगा जिन्हें आज वह इतना अहम समझे हुए है कि उनकी ख़ातिर वह हक को नजरअंदाज कर देता है।

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾ تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾ إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

हरगिज नहीं। वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो खाल उतार देगी। वह हर उस शख़्स को बुलाएगी जिसने पीठ फेरी और एराज (उपेक्षा) किया। जमा किया और सेंत कर रखा। बेशक इंसान कमहिम्मत पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह घबरा उठता है। और जब उसे फारिग़ुलबाली (सम्पन्नता) होती है तो वह बुख़्ल (कंजूसी) करने लगता है। मगर वे नमाजी जो अपनी नमाज की पाबंदी करते हैं। और जिनके मालों में साइल (मांगने वाले) और महरूम (वंचित) का मुअय्यन हक है। और जो इंसाफ के दिन पर यकीन रखते हैं। और जो अपने रब के अजाब से डरते हैं। बेशक उनके रब के अजाब से किसी को निडर न होना चाहिए। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं मगर अपनी बीवियों से या अपनी ममलूका (अधीन) औरतों से, पस इन पर उन्हें कोई मलामत नहीं, फिर जो शख़्स इसके अलावा कुछ और चाहे तो वही लोग हद से तजावुज (उल्लंघन) करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहदों की निभाते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर कायम रहते हैं। और जो अपनी नमाज की हिफाजत करते हैं। यही लोग जन्नतों में इज्जत के साथ होंगे। (15-25)

इन आयात में मुख़्तसर तौर पर दोनों किस्म के इंसानों की सिफात बयान कर दी गई हैं। उन लोगों की भी जो जन्नत में दाख़िल किए जाने के मुस्तहिक करार पाएंगे और उन लोगों की भी जिनके आमाल उन्हें कियामत के दिन जहन्नम में गिराने का सबब बनेंगे।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

फिर इन मुंकिरों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी तरफ दौड़े चले आ रहे हैं, दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। क्या उनमें से हर शख़्स यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग़ में दाख़िल कर लिया जाएगा। हरगिज नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज से जिसे वे जानते हैं। (36-39)

जो लोग नाहक पर खड़े हुए हों वे उस वक्त अपनी हैसियत को ख़त्म होता हुआ महसूस करते हैं जबकि उनके सामने हक की खुली-खुली दावत पेश कर दी जाए। वे ऐसी दावत को जेर करने के लिए उस पर टूट पड़ते हैं। उनकी नामाकूल रविश उन्हें जहन्नम की तरफ ले जा रही होती है। मगर अपनी झूठी ख़ुशफहमी के तहत वे यही समझते रहते हैं कि वे जन्नत की तरफ अपना तेज रफ्तार सफर तै कर रहे हैं।

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ﴿٤٠﴾ عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

पस नहीं मैं कसम खाता हूं मश्रिकों (पूर्वों) और मग़रिबों (पश्चिमों) के रब की, हम इस पर कादिर हैं कि बदल कर उनसे बेहतर ले आएं, और हम आजिज नहीं हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनाएं और खेल करें। यहां तक कि अपने उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। जिस दिन कब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए। जैसे वे किसी निशाने की तरफ भाग रहे हों। उनकी निगाहें झुकी होंगी। उन पर

जिल्लत छाई होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा था। (40-44)

जमीन पर बारम्बार मश्रिक (पूर्व) और मग़रिब (पश्चिम) का बदलना जमीन की उस अनोखी खुसूसियत की बिना पर होता है जिसे महवरी झुकाव (Axial tilt) कहते हैं। और जिसकी वजह से जमीन पर मुख़्तलिफ किस्म के मौसम पैदा होते हैं। सूरज की निस्बत से अगर जमीन में यह झुकाव न होता तो जमीन इंसान के लिए बहुत कम मुफीद होती। इस झुकाव ने जमीन को इंसान के लिए बहुत ज्यादा मुफीद बना दिया।

जिस दुनिया में कम बेहतर को ज्यादा बेहतर बनाने की ऐसी मिसाल मौजूद हो उस दुनिया में इसी नौइयत के दूसरे वाकेयात का जुहूर में आना कुछ भी बईद (असंभव) नहीं। इन खुली-खुली निशानियों के बावजूद जो लोग नसीहत न पकड़ें वे बिलाशुबह ग़ैर संजीदा लोग हैं। और ग़ैर संजीदा लोग सिर्फ उस वक्त नसीहत पकड़ते हैं जबकि वे उसके लिए मजबूर कर दिए गए हों।

سُوْرَةُ نُوْحٍ مَكِّيَّةٌ ۞ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (1) قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (2) أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَأَطِيْعُوْنِ (3) يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (4)

आयतें-28 **सूरह-71. नूह** रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उसकी कौम की तरफ रसूल बनाकर भेजा कि अपनी कौम के लोगों को ख़बरदार कर दो इससे पहले कि उन पर एक दर्दनाक अजाब आ जाए। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूं कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तुम्हारे गुनाहों से दरगुज़र करेगा और तुम्हें एक मुअय्यन वक्त तक बाकी रखेगा। बेशक जब अल्लाह का मुकर्रर किया हुआ वक्त आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता। काश कि तुम उसे जानते। (1-4)

हजरत नूह ग़ालिबन हजरत आदम के बाद सबसे पहले पैग़म्बर हैं। उस वक्त के बिगड़े हुए इंसानों को उन्होंने जो पैग़ाम दिया उसे यहां तीन लफ्ज में बयान किया गया है इबादत, तकवा, इताअते रसूल। यानी ग़ैर-अल्लाह की परस्तिश छोड़कर एक अल्लाह की परस्तिश करना, दुनिया में अल्लाह से डरकर जिंदगी गुजारना, और हर मामले में अल्लाह के रसूल को अपने लिए काबिले तक्लीद (अनुकरणीय) नमूना समझना। यही हर जमाने में तमाम पैग़म्बरों की अस्ल दावत रही है। और यही ख़ुद कुरआन की अस्ल दावत है।

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا (5) فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ إِلَّا فِرَارًا (6) وَإِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا (7) ثُمَّ إِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا (8) ثُمَّ إِنِّيْٓ أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا (9) فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ إِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا (10) يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا (11) وَّيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهٰرًا (12) مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا (13) وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا (14) أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا (15) وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا (16) وَاللّٰهُ أَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا (17) ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا (18) وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا (19) لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا (20)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी कौम को शब व रोज पुकारा। मगर मेरी पुकार ने उनकी दूरी ही में इजाफा किया। और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें माफ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियां डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और जिद पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया। फिर मैंने उन्हें बरमला (खुलकर) पुकारा। फिर मैंने उन्हें खुली तब्लीग़ की और उन्हें चुपके से समझाया। मैंने कहा कि अपने रब से माफी मांगो, बेशक वह बड़ा माफ करने वाला है। वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक्की देगा। और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा। और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए अज़्मत (महानता) की उम्मीद नहीं रखते। हालांकि उसने तुम्हें तरह-तरह से बनाया। क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह-ब-तह बनाए। और उनमें चांद को नूर और सूरज को चराग़ बनाया। और अल्लाह

ने तुम्हें जमीन से ख़ास एहतिमाम से उगाया। फिर वह तुम्हें जमीन में वापस ले जाएगा। और फिर उससे तुम्हें बाहर ले जाएगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जमीन को हमवार (समतल) बनाया ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो। (5-20)

हजरत नूह की इस तक़रीर से वाज़ेह होता है कि उनका अंदाजे दावत भी ऐन वही था जो क़ुरआन में लोगों को दावत देने के लिए इख़्तियार किया गया है। हजरत नूह ने कायनाती वाकेयात से इस्तदलाल करते हुए अपनी दावत पेश की। उन्होंने इज्तिमाई (सामूहिक) ख़िताब भी किया और इंफ़िरादी (व्यक्तिगत) गुफ़्तगुएं भी कीं। लोगों को इस्लाह (सुधार) पर लाने के लिए उन्होंने अपनी सारी कोशिश सर्फ कर डाली। मगर कौम आपकी बात मानने पर राजी न हुई।

'मालकुम ला तरजू-न लिल्ला-हि वकारा०' की तफ़्सीर अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने इन अल्फ़ाज में की है : 'तुम अल्लाह की अज्मत उस तरह नहीं मानते जिस तरह उसकी अज्मत मानना चाहिए' इससे मालूम हुआ कि हजरत नूह की कौम अल्लाह का इकरार करती थी मगर उस पर अल्लाह की अज्मत का एहसास उस तरह छाया हुआ न था जिस तरह किसी इंसान पर छाया हुआ होना चाहिए। हकीकत यह है कि यही ख़ुदापरस्ती का अस्ल मेयार है। जो शख़्स ख़ुदा की अज्मत में जी रहा हो वह ख़ुदापरस्त है। और जिसका दिल ख़ुदा की अज्मत के एहसास में डूबा हुआ न हो वह ख़ुदापरस्त नहीं।

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ﴿٢٥﴾

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे आदमियों की पैरवी की जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही में इजाफा किया। और उन्होंने बड़ी तदबीरें कीं। और उन्होंने कहा कि तुम अपने माबूदों (पूज्यों) की हरगिज न छोड़ना। और तुम हरगिज न छोड़ना वद को और सुवाअ को और यग़ूस को और यऊक और नस्र को। और उन्होंने बहुत लोगों को बहका दिया। और अब तू उन गुमराहों की गुमराही में ही इजाफ़ा कर। अपने गुनाहों के सबब से वे ग़र्क किए गए। फिर वे आग में दाख़िल कर दिए गए। पस उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार न पाया। (21-25)

हजरत नूह की दावत का लोगों ने क्यों इंकार किया, इसकी वजह यह थी कि लोगों को हजरत नूह के मुक़ाबले में उन लोगों की बातें ज्यादा काबिले लिहाज नजर आईं जो दुनियावी लिहाज से बड़ाई का दर्जा हासिल किए हुए थे। वक्त के बड़ों ने अपनी बड़ाई के घमंड में हक की दावत का इंकार किया। और जो छोटे थे उन्होंने इसलिए इंकार किया कि उनके बड़े उसके मुंकिर बने हुए थे।

हजरत नूह के मुख़ालिफ़ीन ने हजरत नूह के ख़िलाफ बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं। उनमें से एक ख़ास तदबीर यह थी कि उन्होंने कहा कि नूह हमारे अकाबिर (वद और सुवाअ और यग़ूस और यऊक और नस्र) के ख़िलाफ हैं। ये पांचों क़दीम जमाने के सालेह (नेक) अफ़राद थे। बाद को वे धीरे-धीरे लोगों की नजर में मुक़द्दस बन गए। यहां तक कि लोगों ने उन्हें पूजना शुरू कर दिया। उनके नाम पर लोगों को हजरत नूह के ख़िलाफ भड़काना आसान था, चुनांचे उन्होंने यह कहकर आपको लोगों की नजर में मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया कि आप बुजुर्गों के रास्ते को छोड़कर नए रास्ते पर चल रहे हैं।

وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

और नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, तू इन मुंकिरों में से कोई जमीन पर बसने वाला न छोड़। अगर तूने इन्हें छोड़ दिया तो ये तेरे बंदों को गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल से जो भी पैदा होगा बदकार और सख़्त मुंकिर ही होगा। ऐ मेरे रब, मेरी मग़्फ़िरत (क्षमा) फ़रमा। और मेरे मां बाप की मग़्फ़िरत फ़रमा। और जो मेरे घर में मोमिन होकर दाख़िल हो तू उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा। और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ फ़रमा दे और जालिमों के लिए हलाकत (नाश) के सिवा किसी चीज में इजाफ़ा न कर। (26-28)

हजरत नूह की दुआ से मालूम होता है कि उनके जमाने में बिगाड़ अपनी आख़िरी हद तक पहुंच चुका था। पूरे मआशरे में गुमराह अकाइद (कुआस्थाएं) व ख़्यालात इस तरह छा गए थे कि जो बच्चा उस मआशरे में पैदा होकर उठता वह गुमराही के ख़्यालात लेकर उठता। जब मआशरा (समाज) इस दर्जे को पहुंच जाए तो इसके बाद उसके लिए इसके सिवा कुछ और मुक़द्दर नहीं होता कि तूफ़ाने नूह के जरिए उसका ख़ात्मा कर दिया जाए।

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ ۞ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۞ وَهِيَ ثَمَانٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ﴿١﴾ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ﴿٢﴾ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿٥﴾ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ﴿٧﴾

आयतें-28 | सूरह-72. अल-जिन्न | रुकूअ-2

सूरह-72. अल-जिन्न

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि जिन्नात की एक जमाअत ने क़ुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है जो हिदायत की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे। और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है। उसने न कोई बीवी बनाई है और न औलाद। और यह कि हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफ़े हक़ बातें कहता था। और हमने गुमान किया था कि इंसान और जिन्न ख़ुदा की शान में कभी झूठ बात न कहेंगे। और यह कि इंसानों में कुछ ऐसे थे जो जिन्नात में से कुछ की पनाह लेते थे, तो उन्होंने जिन्नों का ग़ुरूर (अभिमान) और बढ़ा दिया। और यह कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा तुम्हारा गुमान था कि अल्लाह किसी को न उठाएगा। (1-7)

यहां इंसान के सिवा एक और मख़्लूक़ आबाद है जिसे जिन्न कहते हैं। इंसान उसे नहीं देखता। क़ुरआन में एक से ज्यादा मक़ाम पर उनका ज़िक्र किया गया है। सूरह जिन्न की इन आयात से मालूम होता है कि जिन्नों में भी गुमराह और हिदायतयाब दोनों किस्म के होते हैं। इंसानों में जिस तरह नादान रहनुमा अवाम को बहकाते हैं। इसी तरह जिन्नों में भी नादान रहनुमा हैं। और वे पुरफ़रेब (भटकाने वाले) अल्फ़ाज बोलकर उन्हें रास्ते से भटकाते रहते हैं।

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ﴿٨﴾ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾ وَأَنَّا لَا نَدْرِي

أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾ وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ﴿١٢﴾ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾ وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

और हमने आसमान का जायजा लिया तो हमने पाया कि वह सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ है। और हम उसके कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे सो अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। और हम नहीं जानते कि यह जमीन वालों के लिए कोई बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादा किया है। और यह कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के। हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं। और यह कि हमने समझ लिया कि हम जमीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते। और न भाग कर उसे हरा सकते हैं। और यह कि हमने जब हिदायत की बात सुनी तो हम उस पर ईमान लाए, पस जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाएगा तो उसे न किसी कमी का अंदेशा होगा और न ज्यादती का। और यह कि हम में कुछ फरमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं और हम में कुछ बेराह हैं, पस जिसने फरमांबरदारी की तो उन्होंने भलाई का रास्ता ढूंढ लिया। और जो लोग बेराह हैं तो वे दोज़ख़ के ईंधन होंगे। (8-15)

क़ुरआन सुनने वाले जिन्नों ने क़ुरआन को सुनकर न सिर्फ़ फ़ौरन उसे मान लिया बल्कि इसी के साथ वे उसके मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन गए। इससे मालूम हुआ कि सच्चा कलाम जब जिंदा लोगों के कानों तक पहुंचता है तो वह बयकवक्त दो किस्म के असरात पैदा करता है उसकी सच्चाई का खुले दिल से एतराफ़, और उसकी तब्लीग़े आम (प्रचार-प्रसार)।

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾ وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴿١٨﴾ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا

رَشَدًا ۝٢١ قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۙ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝٢٢ إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝٢٣

और मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि ये लोग अगर रास्ते पर कायम हो जाते तो हम उन्हें ख़ूब सैराब (तृप्त) करते। ताकि इसमें उन्हें आजमाएं, और जो शख़्स अपने रब की याद से एराज (उपेक्षा) करेगा तो वह उसे सख़्त अजाब में मुब्तिला करेगा। और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए। कहो कि मैं सिर्फ अपने रब को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। कहो कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुक्सान का इख़्तियार रखता हूं और न किसी भलाई का। कहो कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता। और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूं। पस अल्लाह ही की तरफ से पहुंचा देना और उसके पैग़ामों की अदायगी है और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (16-23)

मौजूदा दुनिया का निजाम इम्तेहान की मस्लेहत के तहत बनाया गया है। इसीलिए सच्चाई यहां सिर्फ पैगामरसानी (संदेश पहुंचाने) की हद तक सामने लाई जाती है। अगर इम्तेहान की मस्लेहत न हो और ग़ैब का पर्दा हटा दिया जाए तो लोग देखेंगे कि फरिश्तों से लेकर जिन्नात के सालिहीन (सज्जन) तक सब ख़ुदा की ख़ुदाई का एतराफ कर रहे हैं और सारी कायनात सरापा इसकी तस्दीक बनी हुई है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝٢٤ قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝٢٥ عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۝٢٦ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝٢٧ لِّيَعْلَمَ أَن قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝٢٨

यहां तक कि जब वे देखेंगे उस चीज को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान लेंगे कि किसके मददगार कमजोर हैं और कौन तादाद में कम है। कहो कि मैं

नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह करीब है या मेरे रब ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुकर्रर कर रखी है। ग़ैब का जानने वाला वही है। वह अपने ग़ैब पर किसी को मुतलअ (प्रकट) नहीं करता। सिवा उस रसूल के जिसे उसने पसंद किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफिज लगा देता है। ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता (आच्छादन) किए हुए है और उसने हर चीज को गिन रखा है। (24-28)

हक का दाऊी (आह्वानकर्ता) बजाहिर एक आम इंसान होता है। इसलिए वे लोग उस पर टूट पड़ते हैं जिनके ऊपर उसकी दावत (आह्वान) की जद पड़ रही हो। वे भूल जाते हैं कि हक के दाऊी के ख़िलाफ कार्रवाई ख़ुद ख़ुदा के ख़िलाफ कार्रवाई है, और कौन है जो ख़ुदा के ख़िलाफ कार्रवाई करके कामयाब हो।

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ عِشْرُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝١ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ۝٢ نِّصْفَهُ أَوِ انقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۝٣ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝٤ إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝٥

आयतें-20 **सूरह-73. अल-मुज़्ज़म्मिल** रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, रात में कियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) कर मगर थोड़ा हिस्सा। आधी रात या उससे कुछ कम कर दो। या उससे कुछ बढ़ा दो, और कुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ो। हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। (1-5)

'ठहर-ठहर कर पढ़ो' का मतलब यह है कि मफ़हूम (भावार्थ) पर ध्यान देते हुए पढ़ो। जब आदमी ऐसा करे तो कारी (पढ़ने वाला) और कुरआन के दर्मियान एक दोतरफ़ा अमल शुरू हो जाता है। कुरआन उसके लिए एक इलाही ख़िताब (सुधारक संबोधन) होता है और उसका दिल हर आयत पर इस ख़िताब का जवाब देता चला जाता है। जब कुरआन में अल्लाह की बड़ाई का जिक्र आता है तो कारी का पूरा वजूद उसकी बड़ाई के एहसास से दब जाता है। जब कुरआन में ख़ुदा के एहसानात बताए जाते हैं तो उसे सोचकर कारी का दिल ख़ुदा के शुक्र से भर जाता है। जब कुरआन में ख़ुदा की पकड़ का बयान होता है तो कारी उसे पढ़कर कांप उठता है। जब कुरआन में कोई हुक्म बताया जाता है तो कारी के अंदर यह जज्बा मुस्तहकम होता है कि वह उस हुक्म को इख़्तियार करके अपने रब का फरमांबरदार बने।

'भारी कौल' से मुराद इंजार (आगाह करने) का वह हुक्म है जो अगली सूरह में आ रहा

है। (क़ुम फअंजिर, अल-मुद्दस्सिर-2) यानी आख़िरत के मसले से लोगों को आगाह कर दे। यह काम बिलाशुबह इस दुनिया का मुश्किलतरीन काम है। इसके लिए दाओी को बेआमेज (विशुद्ध) हक पर खड़ा होना पड़ता है, चाहे वह तमाम लोगों के दर्मियान अजनबी बन जाए। उसे लोगों की ईजाओं (उत्पीड़न) को बर्दाश्त करना पड़ता है ताकि उसके और मुख़ातबीन के दर्मियान दाओी और मदऊ का रिश्ता आख़िर वक्त तक बाकी रहे। उसे यकतरफ़ा तौर पर अपने आपको सब्र और एराज (संयम) का पाबंद करना पड़ता है। ताकि किसी भी हाल में उसकी दाअियाना हैसियत मजरूह न होने पाए।

إِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ﴿٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ﴿٩﴾ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ﴿١١﴾ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ﴿١٢﴾ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا ﴿١٤﴾

बेशक रात का उठना सख़्त रौंदता है और बात ठीक निकलती है। बेशक तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है। और अपने रब का नाम याद करो और उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाओ सबसे अलग होकर। वह मश्रिक (पूर्व) और मग़्रिब (पश्चिम) का मालिक है, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, पस तुम उसे अपना कारसाज बना लो। और लोग जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो। और भली तरह उनसे अलग हो जाओ और झुठलाने वाले ख़ुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी ढील दे दो। हमारे पास बेड़ियां हैं और दोजख़ है। और गले में फंस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अजाब है। जिस दिन जमीन और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के फिसलते हुए तोदे (ढेर) हो जाएंगे। (6-14)

बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठना मुश्किलतरीन मुहिम के लिए उठना है। ऐसा शख़्स पूरे माहौल में एक ग़ैर मत्लूब (अवांछित) शख़्स बन जाता है। ऐसी हालत में हक का दाओी जिस वाहिद हस्ती को अपना मूनिस (हमदर्द साथी) और कारसाज (कार्य साधक) पाता है वह उसका ख़ुदा है। वह न सिर्फ दिल में अपने ख़ुदा को याद करता रहता है बल्कि वह रात के वक्तों में भी उसके सामने खड़ा होता है। रात का वक्त फ़राग़त का वक्त है। रात के सन्नाटे में इसका ज्यादा मौक़ा होता है कि आदमी पूरी यकसूई के साथ ख़ुदा की तरफ

मुतवज्जह हो सके। हक की दावत के कठिन रास्ते में दाओी का अस्ल हथियार यही है।

सच्चे दाओी का यह तरीक़ा है कि उसे मदऊ की तरफ से तकलीफ पहुंचती है तो वह मदऊ से नहीं उलझता बल्कि वह ख़ुदा की तरफ दौड़ता है। वह आख़िरी हद तक अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफ़्सियात से बचाता है। और रद्देअमल की नफ़्सियात से बुलन्द होकर काम करना ही वह वाहिद (एक मात्र) लाजिमी शर्त है जो किसी शख़्स को हक़ीक़ी मअनों में हक का दाओी बनाती है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾ إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

हमने तुम्हारी तरफ एक रसूल भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस तरह हमने फिरऔन की तरफ एक रसूल भेजा। फिर फिरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हमने उसे पकड़ा सख़्त पकड़ना। पस अगर तुमने इंकार किया तो तुम उस दिन के अजाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वादा पूरा होकर रहेगा। यह एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ राह इख़्तियार कर ले। (15-19)

पैग़म्बर का आना हक (सत्य) और बातिल (असत्य) के दर्मियान फैसला करने के लिए होता है। यही फैसला पहले मूसा अलैहि० और फिरऔन के दर्मियान हुआ था। फिर यही फैसला पैग़म्बरे इस्लाम और क़ुरैश के दर्मियान हुआ। जो लोग दुनिया में ख़ुदा के दाओी के आगे न झुकें वे अपने लिए यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि आख़िरत में उन्हें ख़ुदा के अजाब के आगे झुकना पड़े।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَرْضَىٰ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا

الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٠

बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम दो तिहाई रात के करीब या आधी रात या एक तिहाई रात क़ियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) करते हो, और एक गिरोह तुम्हारे साथियों में से भी। और अल्लाह ही रात और दिन का अंदाजा ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसे पूरा न कर सकोगे पस उसने तुम पर महरबानी फरमाई, अब कुरआन से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, उसने जाना कि तुम में बीमार होंगे और कितने लोग अल्लाह के फज़्ल की तलाश में ज़मीन में सफर करेंगे। और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उसमें से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, और नमाज कायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह को कर्ज़ दो अच्छा कर्ज़। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे, वह बेहतर है और सवाब में ज्यादा, और अल्लाह से माफी मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (20)

दीन में जो फर्ज (अनिवार्य) आमाल हैं वे आम इंसान की इस्तताअत (सामर्थ्य) को मल्हूज़ रखते हुए मुक़र्रर किए गए हैं। मगर ये फ़राइज सिर्फ लाज़िमी हुदूद को बताते हैं। इस लाज़िमी हद के आगे भी मत्लूब आमाल हैं मगर वे नवाफ़िल (ऐच्छिक) हैं। मसलन पंजवक्ता नमाजों के बाद तहज्जुद, ज़कात के बाद मजीद इंफ़ाक (अल्लाह की राह में ख़र्च) वग़ैरह। यह आदमी के अपने हौसले का इम्तेहान है कि वह कितना ज्यादा अमल करता है और आख़िरत में कितना ज्यादा इनाम का मुस्तहिक़ बनता है।

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝١ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

आयतें-56 सूरह-74. अल-मुद्दस्सिर रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, उठ और लोगों को डरा। और अपने रब की बड़ाई बयान कर। और अपने कपड़े को पाक रख। और गंदगी को छोड़ दे। और ऐसा न करो कि एहसान

करो और बहुत बदला चाहो और अपने रब के लिए सब्र करो। (1-7)

इस दुनिया में अस्ल पैग़म्बराना काम इंज़ार है। यानी आख़िरत में पेश आने वाले संगीन मसले से लोगों को आगाह करना। यह काम वही शख़्स कर सकता है जिसका दिल अल्लाह की बड़ाई से लबरेज हो। जो अच्छे अख़्लाक का मालिक हो। जो हर किस्म की बुराई से दूर हो। जो बदले की उम्मीद के बग़ैर नेकी करे। जो दूसरों की तरफ से पेश आने वाली तकलीफों पर यकतरफ़ा सब्र कर सके।

فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ ۝٨ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝٩ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝١٠ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝١١ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝١٢ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۝١٣ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۝١٤ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۝١٥ كَلَّا ۗ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝١٦ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۝١٧

फिर जब सूर फूंका जाएगा तो वह बड़ा सख़्त दिन होगा। मुंकिरों पर आसान न होगा। छोड़ दो मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने पैदा किया अकेला। और उसे बहुत सा माल दिया और पास रहने वाले बेटे। और सब तरह का सामान उसके लिए मुहय्या कर दिया। फिर वह तमअ (लालच) रखता है कि मैं उसे और ज्यादा दूं। हरगिज नहीं, वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ (विरोधी) है। अनकरीब मैं उसे एक सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊंगा। (8-17)

जो आदमी अपने आपको इस हाल में पाता है कि उसके पास माल भी है और साथियों की फौज भी, उसके अंदर झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझने लगता है कि मौजूदा दुनिया में जिस तरह मेरे अहवाल दुरुस्त हैं इसी तरह वे आख़िरत में भी दुरुस्त रहेंगे। मगर कियामत के आते ही सारी सूरतेहाल बदल जाएगी। वह शख़्स जो दुनिया में हर तरफ आसानियां देख रहा था, वह कियामत के दिन अपने आपको असहनीय दुश्वारियों के दर्मियान घिरा हुआ पाएगा।

اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠ ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝٢٢ ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝٢٣ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۝٢٤ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝٢٥

उसने सोचा और बात बनाई। पस वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई। फिर वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई, फिर उसने देखा। फिर उसने त्योरी चढ़ाई और मुंह

बनाया। फिर पीठ फेरी और तकब्बुर (घमंड) किया। फिर बोला यह तो महज एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है। यह तो बस आदमी का कलाम है। (18-25)

हक को मानने में सबसे बड़ी रुकावट तकब्बुर (घमंड) है। जो लोग माहौल में बड़ाई का दर्जा हासिल कर लें वे हक का एतराफ इसलिए नहीं करते कि उसका एतराफ करने से उनकी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी। अपने इस एतराफ न करने को छुपाने के लिए वे मजीद यह करते हैं कि दाओ (आह्वानकर्ता) के कलाम में ऐब निकालते हैं। वे दाओ पर इल्जाम लगाकर उसकी हैसियत को घटाने की कोशिश करते हैं।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

मैं उसे अनकरीब दोज़ख़ में दाख़िल करूंगा। और तुम क्या जानो कि क्या है दोज़ख़। न बाकी रहने देगी और न छोड़ेगी। खाल झुलसा देने वाली। उस पर 19 फरिश्ते हैं। और हमने दोज़ख़ के कारकुन सिर्फ फरिश्ते बनाए हैं। और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह सिर्फ मुंकिरों को जांचने के लिए ताकि यकीन हासिल करें वे लोग जिन्हें किताब अता हुई। और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएं और अहले किताब (पूर्ववर्ती ग्रंथों के धारक) और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में मर्ज है और मुंकिर लोग कहें कि इससे अल्लाह की क्या मुराद है। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है, और तेरे रब के लश्कर को सिर्फ वही जानता है, और यह तो सिर्फ समझाना है लोगों के वास्ते। (26-31)

जहन्नम के अहवाल जो कुरआन में बताए गए हैं वे सब अदेखी दुनिया से तअल्लुक रखते हैं। जहन्नम में 19 फरिश्तों का होना भी इसी नौइयत की चीज है। आदमी अगर मूशिगाफी (कुतर्क) करे तो ये चीजें उसके शुबहात में इजाफा करेंगी। लेकिन अगर सार्थक ईमान का तरीका इख़्तियार किया जाए तो इस किस्म की बातों से आदमी के ख़ौफे आख़िरत

में इजाफा होगा।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴿٣٩﴾ فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٦﴾ حَتَّىٰ أَتَانَا الْيَقِينُ ﴿٤٧﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ﴿٤٨﴾

हरगिज नहीं, कसम है चांद की। और रात की जबकि वह जाने लगे। और सुबह की जब वह रोशन हो जाए, वह दोज़ख़ बड़ी चीजों में से है, इंसान के लिए डरावा, उनके लिए जो तुम में से आगे की तरफ बढ़े या पीछे की तरफ हटे। हर शख़्स अपने आमाल के बदले में रहन (गिरवी) है, दाएं वालों के सिवा, वे बाग़ों में होंगे, पूछते होंगे, मुजरिमों से, तुम्हें क्या चीज दोज़ख़ में ले गई। वे कहेंगे, हम नमाज पढ़ने वालों में से न थे। और हम ग़रीबों को खाना नहीं खिलाते थे। और हम बहस करने वालों के साथ बहस करते थे। और हम इंसाफ के दिन को झुठलाते थे। यहां तक कि वह यकीनी बात हम पर आ गई तो उन्हें शफाअत (सिफारिश) करने वालों की शफाअत कुछ फायदा न देगी। (32-48)

इस दुनिया में गर्दिश (गति) का निजाम है। इसी की वजह से चांद की तारीख़ें बदलती हैं और जमीन पर बारी-बारी रात और दिन आते हैं। यह गर्दिश और तब्दीली का निजाम गोया एक इशारा है कि इसी तरह मौजूदा दौर बदल कर आख़िरत का दौर आएगा। जो लोग इस निजाम पर ग़ौर करें वे चाहेंगे कि 'रात' के आने से पहले अपने 'दिन' को इस्तेमाल कर लें। वे जहन्नम वाले आमाल से भागेंगे और जन्नत वाले आमाल को इख़्तियार करेंगे।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ۖ بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

फिर उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से रूगर्दानी (अवहेलना) करते हैं। गोया कि वे वहशी गधे हैं जो शेर से भागे जा रहे हैं। बल्कि उनमें से हर शख़्स यह चाहता है कि उसे खुली हुई किताबें दी जाएं। हरगिज नहीं, बल्कि ये लोग आख़िरत (परलोक) से नहीं डरते। हरगिज नहीं, यह तो एक नसीहत है। पस जिसका जी चाहे, इससे नसीहत हासिल करे। और वे इससे नसीहत हासिल नहीं करेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है जिससे डरना चाहिए और वही है बख़्शने के लायक। (49-56)

नसीहत चाहे कितनी ही मुदल्लल (तार्किक) हो, सुनने वाले के लिए वह उसी वक्त मुअस्सिर (प्रभावी) बनती है जबकि वह उसके बारे में संजीदा हो। अगर सुनने वाला संजीदा न हो तो नसीहत उसके दिल में नहीं उतरेगी। जो दलील एक संजीदा इंसान को तड़पा देती है वह सिर्फ उसकी लायानी (निरर्थक) बहसों में इजाफ़ा करने का सबब बनेगी।

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اٰيَاتُهَا ٤٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ﴿٥﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿٦﴾ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ﴿١٤﴾ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿١٥﴾

आयतें-40 — सूरह-75. अल-क़ियामह — रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं कसम खाता हूं कियामत के दिन की। और नहीं, मैं कसम खाता हूं मलामत करने वाले नफ्स की। क्या इंसान ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा न करेंगे। क्यों नहीं, हम इस पर कादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें। बल्कि इंसान चाहता है कि ढिठाई करे उसके सामने। वह पूछता है कि कियामत का दिन कब आएगा। पस जब आंखें ख़ीरह (चौंधिया जाना) हो जाएंगी। और चांद बेनूर हो जाएगा। और सूरज और चांद इकट्ठा कर दिए जाएंगे। उस दिन इंसान कहेगा कि कहां भागूं। हरगिज नहीं, कहीं पनाह नहीं। उस दिन तेरे रब ही के पास ठिकाना है। उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या

आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। बल्कि इंसान ख़ुद अपने आपको जानता है, चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे। (1-15)

इंसान के अंदर पैदाइशी तौर पर यह शुऊर मौजूद है कि वह बुराई और भलाई में तमीज करता है। वह ऐन अपनी फ़ितरत के तहत यह चाहता है कि बुराई करने वाले को सजा मिले और भलाई करने वाले को इनाम दिया जाए। यही वह शुऊर है जिसे कुरआन में नफ़्से लव्वामा कहा गया है। यह नफ़्से लव्वामा आलमे आख़िरत के हकीकी होने की एक नफ़्सियाती शहादत (गवाही) है। इस दाख़िली (अंदरूनी) शहादत के बाद जो शख़्स उसके तकाजे पूरे न करे वह गोया अपनी ही मानी हुई बात का इंकार कर रहा है।

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾

तुम उसके पढ़ने पर अपनी जबान न चलाओ ताकि तुम उसे जल्दी सीख लो। हमारे ऊपर है उसे जमा करना और उसे सुनाना। पस जब हम उसे सुनाएं तो तुम उस सुनाने की पैरवी करो। फिर हमारे ऊपर है उसे बयान कर देना। (16-19)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) उतरती तो आप उसे लेने में जल्दी फरमाते। इससे आपको मना कर दिया गया। इस सिलसिले में मजीद फरमाया कि कुरआन का जो हिस्सा उतर चुका है और जो तुम्हें मुख़ातब बना रहा है, उस पर सारी तवज्जोह सर्फ करो न कि कुरआन के उस बकिया हिस्से पर जो अभी उतरा नहीं और जिसने अभी तुम्हें मुख़ातब नहीं बनाया। इससे यह मालूम हुआ कि जिस वक्त जिस कुरआन के हिस्से का एक शख़्स मुकल्लफ है उसी पर उसे सबसे ज्यादा तवज्जोह देना चाहिए। जिस कुरआन के हिस्से का एक शख़्स मुकल्लफ न हो उसके पीछे दौड़ना 'उजलत' (जल्दी) है जो कुरआनी हिक्मत के सरासर ख़िलाफ है।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾ وَقِيْلَ مَنْ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾

हरगिज नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो जल्द आए। और तुम छोड़ते हो जो देर में आए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक होंगे। अपने रब की तरफ देख रहे होंगे। और कुछ चेहरे

उस दिन उदास होंगे। गुमान कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा। हरगिज नहीं, जब जान हलक तक पहुंच जाएगी। और कहा जाएगा कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला। और वह गुमान करेगा कि यह जुदाई का वक्त है। और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी। वह दिन होगा तेरे रब की तरफ जाने का। (20-30)

आख़िरत की तरफ से ग़फ़लत की वजह हमेशा सिर्फ एक होता है, और वह हुब्बे आजिला है। यानी अपने अमल का फौरी नतीजा चाहना। आख़िरत के लिए अमल का नतीजा देर में मिलता है। इसलिए आदमी उसे नजरअंदाज कर देता है। और दुनिया के लिए अमल का नतीजा फौरन मिलता हुआ नजर आता है। इसलिए आदमी उसकी तरफ दौड़ पड़ता है। लोग देखते हैं कि हर आदमी पर आख़िरकार मौत तारी होती है और वह उसकी तमाम कामयाबियों को बातिल कर देती है। मगर कोई शख़्स उससे सबक नहीं लेता। यहां तक कि ख़ुद उसकी मौत का लम्हा आ जाए और वह उससे सबक लेने की मोहलत छीन ले।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۝ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۝

तो उसने न सच माना और न नमाज पढ़ी। बल्कि झुठलाया और मुंह मोड़ा। फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ चला गया। अफसोस है तुझ पर अफसोस है। फिर अफसोस है तुझ पर अफसोस है। क्या इंसान ख़्याल करता है कि वह बस यूं ही छोड़ दिया जाएगा। क्या वह टपकाई हुई मनी (वीर्य) की एक बूंद न था। फिर वह अलका (जोंक की तरह) हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर आजा (शरीरांग) दुरुस्त किए। फिर उसकी दो किस्में कर दीं, मर्द और औरत। क्या वह इस पर कादिर नहीं कि मुर्दों को जिंदा कर दे। (31-40)

इंसान इब्तिदाअन अपनी मां के पेट में एक बूंद की मानिंद (तरह) दाख़िल होता है। फिर वह बढ़कर अलका (जोंक) की मानिंद हो जाता है। फिर मजीद तरक्की होती है और उसके आजा (शरीरांग) और नुकूश बनते हैं। फिर वह मर्द या औरत बनकर बाहर आता है। ये तमाम हैरतनाक तसर्रुफ़ात (प्रक्रियाएं) इंसान की कोशिश के बग़ैर होते हैं। फिर कुदरत का

जो निज़ाम रोज़ाना ये अजाइब (आश्चर्यजनक प्रक्रियाएं) जुहूर में ला रहा है, उसके लिए मौजूदा दुनिया के बाद एक और दुनिया बना देना क्या मुश्किल है। हकीकत यह है कि सच्चाई को मानने में जो चीज़ रुकावट बनती है वह लोगों की अनानियत (अहंकार) है न कि दलाइल व कराइन (संकेतों) की कमी।

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ وَثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝

आयतें-31 **सूरह-76. अद-दहर** रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कभी इंसान पर जमाने में एक वक्त गुज़रा है कि वह कोई काबिले ज़िक्र चीज न था। हमने इंसान को एक मख़्लूत (मिश्रित) बूंद से पैदा किया, हम उसे पलटते रहे। फिर हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। हमने उसे राह समझाई, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या इंकार करने वाला। (1-3)

कुरआन सातवीं सदी ईसवी में उतरा। उस वक्त सारी दुनिया में किसी को यह मालूम न था कि रहमे मादर (गर्भाशय) में इंसान का आग़ाज एक मख़्लूत नुत्फे से होता है। यह सिर्फ बीसवीं सदी की बात है कि इंसान ने यह जाना कि इंसान और (हैवान) का इब्तिदाई नुत्फा दोअज्जा (अवययों) से मिलकर बनता है एक औरत का बैजा (Ovum) और दूसरे मर्द का जुर्सूमा (Sperm)। ये दोनों ख़ुर्दबीनी (अत्यंत सूक्ष्म) अज्जा जब आपस में मिल जाते हैं उस वक्त रहमे मादर में वह चीज बनना शुरू होती है जो बिलआख़िर इंसान की सूरत इख़्तियार करती है। ढेड़ हजार साल पहले कुरआन में नुत्फए अमशाज (मख़्लूत नुत्फा) का लफ्ज आना इस बात का सुबूत है कि कुरआन ख़ुदा की किताब है।

कुरआन में इस तरह की बहुत सी मिसालें हैं। ये इस्तसनाई (विलक्षण) मिसालें वाज़ेह तौर पर कुरआन को ख़ुदा की किताब साबित करती हैं। और जब यह बात साबित हो जाए कि कुरआन ख़ुदा की किताब है तो इसके बाद कुरआन का हर बयान सिर्फ कुरआन का बयान होने की बुनियाद पर दुरुस्त मानना पड़ेगा।

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ

كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ﴿٦﴾ يُوفُونَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ
مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا
شُكُورًا ﴿٩﴾ إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ﴿١٠﴾ فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ﴿١١﴾ وَجَزَاهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ﴿١٢﴾ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا
عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَ
ذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ﴿١٤﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ
قَوَارِيرَا ﴿١٥﴾ قَوَارِيرَ مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٦﴾

हमने मुंकिरों के लिए जंजीरें और तौक और भड़कती आग तैयार कर रखी है। नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें काफ़ूर की आमेजिश होगी। उस चशमे (स्रोत) से अल्लाह के बंदे पियेंगे। वे उसकी शाख़ें निकालेंगे। वे लोग वाजिबात (दायित्वों) को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आम होगी। और उसकी मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को और यतीम को और कैदी को। हम जो तुम्हें खिलाते हैं तो अल्लाह की ख़ुशी चाहने के लिए। हम न तुमसे बदला चाहते और न शुक्रगुजारी। हम अपने रब की तरफ से एक सख़्त और तल्ख़ (कटु) दिन का अंदेशा रखते हैं। पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लिया। और उन्हें ताजगी और ख़ुशी अता फरमाई और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता किया। टेक लगाए होंगे उसमें तख़्तों पर, उसमें न वे गर्मी से दो चार होंगे और न सर्दी से। जन्नत के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके बस में होंगे। और उनके आगे चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे। शीशे चांदी के होंगे, जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा। (4-16)

दुनिया में इंसान को आज़ाद पैदा किया गया, और फिर उसे राह दिखा दी गई। नाशुक्री की राह और शुक्रगुज़ार ज़िंदगी की राह। अब यह इंसान के अपने ऊपर है कि वह दोनों में से कौन सी राह इख़्तियार करता है। जो शख़्स नाशुक्री का तरीका इख़्तियार करे उसके लिए आख़िरत में दोज़ख का अज़ाब है। और जो शख़्स शुक्रगुज़ारी का तरीका इख़्तियार करे उसके लिए जन्नत की नेमतें।

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ﴿١٨﴾ وَيَطُوفُ
عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ﴿١٩﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ
رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾ عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا
أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً
وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾

और वहां उन्हें एक और जाम पियाला जाएगा जिसमें सौंठ की आमेज़िश होगी। यह उसमें एक चश्मा (स्रोत) है जिसे सलसबील कहा जाता है। और उनके पास फिर रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं। और तुम जहां देखोगे वहीं अज़ीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखोगे। उनके ऊपर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सब्ज़ कपड़े भी, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। और उनका रब उन्हें पाकीज़ा मशरूब (पेय) पिलाएगा। बेशक यह तुम्हारा सिला (प्रतिफल) है और तुम्हारी कोशिश मकबूल (माननीय) हुई। (17-22)

यह बरतर जन्नत का बयान है जहां ज्यादा बरतर ईमान का सुबूत देने वाले लोग बसाए जाएंगे। उस जन्नत के बाशिंदों को शाहाना नेमतें हासिल होंगी।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾
نَّحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾ إِنَّ
هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ
اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾ يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

हमने तुम पर कुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। पस तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो और उनमें से किसी गुनाहगार या नाशुक्र की बात न मानो। और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो। और रात को भी उसे सज्दा करो। और उसकी तस्बीह

करो रात के लंबे हिस्से में। ये लोग जल्दी मिलने वाली चीज को चाहते हैं और उन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन को। हम ही ने उन्हें पैदा किया और हमने उनके जोड़बंद मजबूत किए, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल लाएंगे। यह एक नसीहत है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब की तरफ रास्ता इख़्तियार कर ले। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और जालिमों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (23-31)

हक की दावत को न मानने के दो ख़ास सबब होते हैं। या तो आदमी के सामने दुनिया का मफाद होता है और मफाद (हित) से महरूमी का अंदेशा उसे हक की तरफ बढ़ने नहीं देता। दूसरा सबब यह है कि आदमी तकब्बुर (घमंड) की नफ्सियात में मुब्तिला हो और उसका तकब्बुर इसमें रुकावट बन जाए कि वह अपने से बाहर किसी की बड़ाई को तस्लीम करे। ये दोनों किस्म के लोग हक की दावत की राह में तरह-तरह की रुकावटें डालते हैं। मगर हक के दाओ को हुक्म है कि वह उनका लिहाज किए बग़ैर अपना काम सब्र के साथ जारी रखे।

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝١ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝٢ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝٣ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝٤ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝٥ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝٦ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝٧

आयतें-50 सूरह-77. अल-मुरसलात रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं। फिर वे तूफ़ानी रफ्तार से चलती हैं। और बादलों को उठाकर फैलाती हैं। फिर मामले को जुदा करती हैं। फिर याददिहानी डालती हैं। उज़्र के तौर पर या डरावे के तौर पर। जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह जरूर वाके (घटित) होने वाला है। (1-7)

समुद्र से भाप उठकर फजा में जाती हैं और बादल बन जाती हैं। इन बादलों को हवाएं उड़ाकर एक तरफ से दूसरी तरफ ले जाती हैं। वे एक इलाके मे बारिश बरसाकर सरसब्जी का सामान करती हैं और दूसरे इलाके को ख़ुश्क छोड़ देती हैं। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया का निजाम एक और दूसरे के दर्मियान फर्क करने के उसूल पर कायम है। मौजूदा दुनिया में इस उसूल का इज़्हार जुज़ई (आंशिक) सूरत में हो रहा है और आख़िरत में इस उसूल का इज़्हार अपनी कामिल (पूर्ण) सूरत में होगा।

हवाओं की यह नौइयत आदमी के लिए याददिहानी है। उनका किसी के लिए रहमत और किसी के लिए ज़हमत बनना इस हकीकत की याददिहानी है कि मौजूदा दुनिया में जब दो मुख़्तलिफ किस्म के इंसान हैं तो उनके लिए ख़ुदा का फैसला दो अलग-अलग सूरतों में जाहिर होगा। फिर हवाओं की यह नौइयत ख़ुदा की तरफ से इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) भी है। इस मुज़ाहिरे के बाद किसी के लिए मअज़रत (विवशता जताने) की कोई गुंजाइश नहीं।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝٨ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝٩ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝١٠ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۝١١ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۝١٢ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝١٣ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝١٤ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٥ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٦ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٧ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝١٨ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٩

पस जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ रेजा-रेजा कर दिए जाएंगे। और जब पैग़म्बर मुअय्यन (निश्चित) वक़्त पर जमा किए जाएंगे। किस दिन के लिए वे टाले गए हैं। फैसले के दिन के लिए। और तुम्हें क्या ख़बर कि फैसले का दिन क्या है। तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया। फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को। हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (8-19)

जब कियामत आएगी तो दुनिया का मौजूदा निजाम दरहम बरहम हो जाएगा। जो लोग मौजूदा दुनिया में अपने आपको जोरआवर समझते हैं और इस बिना पर हक की दावत (सत्य के आह्वान) को नजरअंदाज करते हैं, वे उस दिन अपने आपको इस हाल में पाएंगे कि उनसे ज्यादा बेज़ोर और कोई नहीं।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٢٠ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝٢١ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢٢ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ۝٢٣ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٤ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝٢٥ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝٢٦ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ۝٢٧ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٨

क्या हमने तुम्हें एक हकीर (तुच्छ) पानी से पैदा नहीं किया। फिर उसे एक महफूज जगह रखा, एक मुकर्रर मुद्दत तक। फिर हमने एक अंदाजा ठहराया, हम कैसा अच्छा अंदाजा ठहराने वाले हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। क्या हमने

जमीन को समेटने वाला नहीं बनाया, जिंदों के लिए और मुर्दों के लिए। और हमने उसमें ऊंचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया। उस रोज ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। (20-28)

मौजूदा दुनिया का निजाम इस तरह बनाया गया है कि उस पर ग़ौर करने वाला उसके आइने में आख़िरत को देख लेता है। इसके बावजूद जो लोग हक (सत्य) को झुठलाते है उनसे बड़ा मुजरिम और कोई नहीं।

انْطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ انْطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَأَنَّهُ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾ هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

चलो उस चीज की तरफ जिसे तुम झुठलाते थे। चलो तीन शाख़ों वाले साये की तरफ। जिसमें न साया है और न वह गर्मी से बचाता है। वह अंगारे बरसाएगा जैसे कि ऊंचा महल, जर्द ऊंटों की मानिंद, उस दिन ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे। और न उन्हें इजाजत होगी कि वे उज़्र पेश करें। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। यह फैसले का दिन है। हमने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर लिया। पस अगर कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (29-40)

आख़िरत की हौलनाकियां जब सामने आएंगी तो इंसान उनके मुकाबले में अपने आपको बिल्कुल बेबस पाएगा। उस वक्त उन लोगों का बोलना बंद हो जाएगा जो दुनिया में इस तरह बोलते थे जैसे कि उनके अल्फ़ाज का ज़ख़ीरा कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلٰلٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ

لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

बेशक डरने वाले साये में और चशमों (स्रोतों) में होंगे, और फलों में जो वे चाहें। मजे के साथ खाओ और पियो। उस अमल के बदले में जो तुम करते थे। हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। खाओ ओर बरत लो थोड़े दिन, बेशक तुम गुनाहगार हो। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। और जब उनसे कहा जाता है कि झुको तो वे नहीं झुकते। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। अब इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। (41-50)

मौजूदा दुनिया में ख़ुदा की नेमतें वक़्ती तौर पर इम्तेहान की ग़रज से रखी गई हैं। आख़िरत में ख़ुदा की नेमतें अबदी (चिरस्थाई) तौर पर ज्यादा कामिल सूरत में ज़ाहिर होंगी। आज इन नेमतों में हर एक हिस्सा पा रहा है। मगर आख़िरत की आला नेमतें सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होंगी जिन्होंने आज़ादी के हालात में इताअत की। जो उस वक़्त झुके जबकि वे झुकने के लिए मजबूर न थे। जो लोग कौल (कथन) पर झुकें उनके लिए जन्नत है और जो लोग वैल (दुख) को देखकर झुकें उनके लिए जहन्नम।

سُورَةُ النَّبَإِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ ﴿٢﴾ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَخَلَقْنٰكُمْ أَزْوَاجًا ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَاءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَجَنّٰتٍ أَلْفَافًا ﴿١٦﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾

आयतें-40

सूरह-78. अन-नबा

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं। उस बड़ी ख़बर के बारे में, जिसमें वे लोग मुख़्तलिफ हैं। हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे। हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे। क्या हमने ज़मीन को फर्श नहीं बनाया, और पहाड़ों को मेख़ें। और तुम्हें हमने बनाया जोड़े जोड़े, और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए। और हमने रात को पर्दा बनाया, और हमने दिन को मआश (जीविका) का वक्त बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हमने उसमें एक चकमता हुआ चिराग़ रख दिया। और हमने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया, ताकि हम उसके ज़रिए से उगाएं ग़ल्ला और सब्ज़ी और घने बाग़। बेशक फैसले का दिन एक मुक़र्रर वक्त है। (1-17)

अरब के लोग आख़िरत के मुंकिर न थे अलबत्ता वे आख़िरत की उस नौइयत के मुंकिर थे जिसकी उन्हें क़ुरआन में ख़बर दी जा रही थी। यानी उन्हें इस बाब में शुबह था कि 'मुहम्मद' को न मानने से वे आख़िरत के आलम में ज़लील व ख़्वार हो जाएंगे।

मौजूदा दुनिया में जो तबीई (भौतिक) वाक़ेयात हैं वे आख़िरत के दिन की तरफ इशारा करने वाले हैं। हमारी दुनिया का हाल तकाज़ा करता है कि उसी के मुताबिक उसका एक मुस्तक़बिल हो। इस पहलू से ग़ौर किया जाए तो यह मानना पड़ता है कि इस अज़ीम आग़ाज का एक अज़ीम अंजाम आने वाला है। यह दुनिया यूं ही बेअंजाम ख़त्म हो जाने वाली नहीं।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾
وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطَّاغِينَ مَآبًا ﴿٢٢﴾
لَّابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾
جَزَاءً وِفَاقًا ﴿٢٦﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَ
كُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٢٩﴾ فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम फौज दर फौज आओगे। और आसमान खोल दिया जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चला दिए जाएंगे तो वे रेत की तरह हो जाएंगे। बेशक जहन्नम घात में है, सरकशों का ठिकाना, उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे। उसमें वे न किसी ठंडक को चखेंगे और न पीने की चीज़, मगर गर्म पानी और

पीप, बदला उनके अमल के मुवाफ़िक़। वे हिसाब का अंदेशा नहीं रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों को बिल्कुल झुठला दिया। और हमने हर चीज़ को लिखकर शुमार कर रखा है। पस चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएंगे। (18-30)

दुनिया में सरकशी इंसान को बहुत लज़ीज़ मालूम होती है क्योंकि वह उसकी अना (अहंकार) को तस्कीन देती है। मगर इंसान की सरकशी जब आख़िरत में अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से ज़ाहिर होगी तो सूरतेहाल बिल्कुल मुख़्तलिफ हो जाएगी। जिस चीज़ से आदमी दुनिया में लज़्ज़त लिया करता था, अब वह उसके लिए एक भयानक अज़ाब बन जाएगा।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَكَأْسًا
دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ﴿٣٥﴾ جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ
الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ
صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ﴿٣٩﴾ إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ
عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ
تُرَابًا ﴿٤٠﴾

बेशक डरने वालों के लिए कामयाबी है। बाग़ और अंगूर। और नौख़ेज़ हमसिन लड़कियां। और भरे हुए जाम। वहां वे लग़्व (घटिया, निरर्थक) और झूठी बात न सुनेंगे। बदला तेरे रब की तरफ से होगा, उनके अमल के हिसाब से रहमान की तरफ से जो आसमानों और ज़मीन और उनके दर्मियान की चीज़ों का रब है, कोई कुदरत नहीं रखता कि उससे बात करे। जिस दिन रूह और फरिश्ते सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे, कोई न बोलेगा मगर जिसे रहमान इजाज़त दे, और वह ठीक बात कहेगा। यह दिन बरहक़ है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ ठिकाना बना ले। हमने तुम्हें करीब आ जाने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और मुंकिर कहेगा, काश मैं मिट्टी होता। (31-40)

जन्नत का माहौल लग़्व और झूठी बातों से पाक होगा। इसलिए जन्नत की लतीफ व नफीस दुनिया में बसाने के लिए सिर्फ वही लोग चुने जाएंगे जिन्होंने मौजूदा दुनिया में इस अहलियत का सुबूत दिया हो कि वे लग़्व और झूठ से दूर रहकर ज़िंदगी गुज़ारने का ज़ौक रखते हैं।

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ؕ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ

आयतें-46 | सूरह-79. अन-नाज़िआत | रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की। और कसम है आहिस्ता चलने वाली हवाओं की। और कसम है तैरने वाले बादलों की। फिर सबकत (अग्रसरता) करके बढ़ने वालों की। फिर मामले की तदबीर करने वालों की। जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी। उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी। कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे। उनकी आंखें झुक रही होंगी। वे कहते हैं क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे। क्या जब हम बोसीदा हड्डियां हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी। वह तो बस एक डांट होगी, फिर यकायक वे मैदान में मौजूद होंगे। (1-14)

हर साल दुनिया में यह मंज़र दिखाई देता है कि बज़ाहिर हर तरफ सुकून होता है। इसके बाद तेज़ हवाएं चलती हैं। वे बादलों को उड़ाना शुरू करती हैं। फिर वे बारिश बरसाती हैं। जल्द ही बाद लोग देखते हैं कि जहां ख़ाली ज़मीन थी वहां एक नई दुनिया निकल कर खड़ी हो गई। फ़ितरत का यह वाक्या आख़िरत के इम्कान को बताता है। यह तमसील की ज़बान में बता रहा है कि मौजूदा दुनिया के अंदर से आख़िरत की दुनिया का बरामद होना इतना ही मुमकिन है जितना ख़ाली ज़मीन से सरसब्ज़ ज़मीन का ज़ुहूर में आना।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰۤى اَنْ تَزَكّٰى ۙ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۚ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۖ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۖ فَحَشَرَ

فَنَادٰى ۖ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۖ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ؕ

क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसके रब ने उसे तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में पुकारा। फ़िरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। फिर उससे कहो क्या तुझे इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए। और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊं फिर तू डरे। पस मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखाई। फिर उसने झुठलाया और न माना। फिर वह पलटा कोशिश करते हुए। फिर उसने जमा किया, फिर उसने पुकारा। पस उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं। पस अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा। बेशक इसमें नसीहत है हर उस शख़्स के लिए जो डरे। (15-26)

फ़िरऔन और इस तरह के दूसरे मुंकिरीन की ज़िंदगी इस बात का सुबूत है कि जो शख़्स हकीक़ते वाक्या का इंकार करे वह लाज़िमन उसकी सज़ा पाकर रहता है। ये तारीख़ी मिसालें आदमी की इबरत (सीख) के लिए काफी हैं। मगर कोई इबरत की बात सिर्फ उस शख़्स के लिए इबरत का ज़रिया बनती हैं जो अंदेशा की नफ्सियात रखता हो। जो किसी अमल को उसके अंजाम के एतबार से देखे न कि सिर्फ उसके आग़ाज़ के एतबार से।

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰىهَا ۙ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۙ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۙ وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ؕ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۙ وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۙ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ؕ

क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया। उसकी छत को बुलन्द किया फिर उसे दुरुस्त बनाया। और उसकी रात को तारीक (अंधकारमय) बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया। और ज़मीन को इसके बाद फैलाया। उससे उसका पानी और चारा निकाला। और पहाड़ों को कायम कर दिया, सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए। (27-33)

कायनात की सूरत में जो वाकया हमारे सामने मौजूद है वह इतना ज़्यादा बड़ा है कि इसके बाद हर दूसरा वाक्या इससे छोटा हो जाता है। फिर जिस दुनिया में बड़े वाक्ये का ज़ुहूर मुमकिन हो वहां छोटे वाक्ये का ज़ुहूर क्यों मुमकिन न होगा। ऐसी हालत में क़ुरआन की यह ख़बर कि इंसान को दुबारा पैदा होना है एक ऐसी ख़बर है जिसे काबिलेफहम बनाने के लिए पहले ही से बहुत बड़े पैमाने पर मालूम असबाब मौजूद हैं।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾ فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ﴿٣٧﴾ وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾ فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ﴿٤٤﴾ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾

फिर जब वह बड़ा हंगामा आएगा। जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा। और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी। पस जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी, तो दोज़ख़ उसका ठिकाना होगा और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका, तो जन्नत उसका ठिकाना होगा। वे कियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब खड़ी होगी। तुम्हें क्या काम उसके ज़िक्र से। यह मामला तेरे रब के हवाले है। तुम तो बस डराने वाले हो उस शख़्स को जो डरे। जिस रोज़ ये उसे देखेंगे तो गोया वे दुनिया में नहीं ठहरे मगर एक शाम या उसकी सुबह। (34-46)

आदमी दो चीज़ों के दर्मियान है। एक मौजूदा दुनिया जो सामने है। और दूसरे आख़िरत की दुनिया जो ग़ैब (अप्रकट) में है। आदमी का अस्ल इम्तेहान यह है कि वह मौजूदा दुनिया के मुकाबले में आख़िरत को तरजीह दे। मगर यह काम सिर्फ वही लोग कर सकते हैं जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों पर कंट्रोल करने का हौसला रखते हों।

سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَأَرْبَعُونَ آيَةً فِيهَا رُكُوعٌ وَاحِدٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١﴾ أَن جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰ ﴿٣﴾ أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٤﴾ أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ﴿٥﴾ فَأَنتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشَىٰ ﴿٩﴾ فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ﴿١٠﴾ كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿١٢﴾ فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

आयतें-42 सूरह-80. अबस रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

उसने त्यौरी चढ़ाई हुआ और बेरुख़ी बरती इस बात पर कि अंधा उसके पास आया। और तुम्हें क्या ख़बर कि वह सुधर जाए या नसीहत को सुने तो नसीहत उसके काम आए। जो शख़्स बेपरवाही बरतता है, तुम उसकी फ़िक्र में पड़ते हो। हालांकि तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं अगर वह न सुधरे। और जो शख़्स तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है और वह डरता है, तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो। हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है, पस जो चाहे याददिहानी हासिल करे। वह ऐसे सहीफ़ों (ग्रंथों) में है जो मुकर्रम हैं, बुलन्द मर्तबा हैं, पाकीज़ा हैं, मुअज़्ज़ज़, नेक कातिबों के हाथों में। (1-16)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मक्का में कुरैश के सरदारों से दावती गुफ्तगू कर रहे थे। इतने में एक नाबीना मुसलमान अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम वहां आ गए। उन्होंने कहा : 'ऐ अल्लाह के रसूल, अल्लाह ने जो कुछ आपको सिखाया है उसमें से मुझे सिखाइए।' अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे मौके पर एक अंधे शख़्स का आना नागवार गुज़रा, इस पर ये आयतें उतरीं। इन आयात में बज़ाहिर ख़िताब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से है मगर हकीकत में इस वाकये के हवाले से बताया गया है कि अल्लाह की नज़र में उन बड़ों की कोई कीमत नहीं जो दीन से फिरे हुए हों। अल्लाह के नज़दीक कीमती इंसान सिर्फ वह है जिसके अंदर ख़शिय्यत (ख़ौफ) वाली रूह हो, चाहे बज़ाहिर वह एक अंधा आदमी दिखाई देता हो।

قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ﴿١٧﴾ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ﴿١٨﴾ مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ﴿٢١﴾ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ﴿٢٤﴾ أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾

बुरा हो आदमी का, वह कैसा नाशुक्र है। उसे किस चीज़ से पैदा किया है, एक बूंद से। उसे पैदा किया। फिर उसके लिए अंदाज़ा ठहराया। फिर उसके लिए राह आसान कर दी। फिर उसे मौत दी, फिर उसे कब्र में ले गया। फिर जब वह चाहेगा उसे दुबारा

ज़िंदा कर देगा। हरगिज़ नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। पस इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे। हमने पानी बरसाया अच्छी तरह, फिर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा। फिर उगाए उसमें ग़ल्ले और अंगूर और तरकारियां और ज़ैतून और खजूर और घने बाग़ और फल और सब्ज़ा, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर (17-32)

इंसान से जो ख़ुदापरस्ती मत्लूब है उसका मुहर्रिक (प्रेरक) अस्लन शुक्र है। इंसान अपनी तख़्लीक को सोचे और अपने गिर्द व पेश के क़ुदरती इंतिज़ामात पर ग़ौर करे तो लाज़िमन उसके अंदर अपने रब के बारे में शुक्र का जज़्बा पैदा होगा। इस शुक्र और एहसानमंदी के जज़्बे के तहत जिस अमल का ज़ुहूर होता है उसी का नाम ख़ुदारपरस्ती है।

فَإِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝٣٣ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝٣٤ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝٣٥ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝٣٦ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝٣٧ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝٣٨ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝٣٩ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝٤٠ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝٤١ أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝٤٢

पस जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा। जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, और अपनी मां से और अपने बाप से, और अपनी बीवी से और अपने बेटों से। उनमें से हर शख़्स को उस दिन ऐसा फ़िक्र लगा होगा जो उसे किसी और तरफ मुतवज्जह न होने देगा। कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, हंसते हुए, ख़ुशी करते हुए। और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी, उन पर स्याही छाई हुई होगी। यही लोग मुंकिर हैं, ढीठ हैं। (33-42)

सच्चाई को न मानना और उसके मुकाबले में सरकशी दिखाना सबसे बड़ा जुर्म है, ऐसे लोग आख़िरत में बिल्कुल बेक़ीमत होकर रह जाएंगे। और जो लोग सच्चाई का एतराफ करें और उसके आगे अपने आपको झुका दें वही आख़िरत में बाक़ीमत इंसान ठहरेंगे। आख़िरत की इज़्ज़तें और कामयाबियां सिर्फ ऐसे ही लोगों का हिस्सा होंगी।

سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ۝٢ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧ وَإِذَا الْمَوْءُۥدَةُ سُئِلَتْ ۝٨ بِأَيِّ ذَنۢبٍ قُتِلَتْ ۝٩ وَإِذَا

الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠ وَإِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝١١ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝١٣ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ أَحْضَرَتْ ۝١٤

आयतें-29 **सूरह-81. अत-तकवीर** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट दिया जाएगा। और जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब पहाड़ चलाए जाएंगे। और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां आवारा फिरेंगी। और जब वहशी जानवर इकट्ठा हो जाएंगे। और जब समुद्र भड़का दिए जाएंगे। और जब एक-एक किस्म के लोग इकट्ठा किए जाएंगे। और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस क़ुसूर में मारी गई। और जब आमालनामे (कर्म-पत्र) खोले जाएंगे। और जब आसमान खुल जाएगा। और दोज़ख़ भड़काई जाएगी। और जब जन्नत करीब लाई जाएगी। हर शख़्स जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। (1-14)

क़ुरआन में जगह-जगह क़ियामत की मंज़रकशी की गई है। क़ियामत जब आएगी तो दुनिया का मौजूदा तवाज़ुन (संतुलन) टूट जाएगा। उस वक्त इंसान अपने आपको बिल्कुल बेबस महसूस करेगा। उस दिन नेकी के सिवा दूसरी तमाम चीज़ें अपना वज़न खो देंगी। मज़्लूम को हक होगा कि वह ज़ालिम से अपने ज़ुल्म का जो बदला लेना चाहे ले सके।

فَلَآ أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦ وَالَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝١٧ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨ إِنَّهُۥ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝١٩ ذِى قُوَّةٍ عِندَ ذِى الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝٢٠ مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝٢١ وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ۝٢٢ وَلَقَدْ رَءَاهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝٢٣ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝٢٤ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ۝٢٥ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝٢٦ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ۝٢٧ لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ۝٢٨ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَٰلَمِينَ ۝٢٩

पस नहीं, मैं कसम खाता हूं पीछे हटने वाले, चलने वाले और छुप जाने वाले सितारों की। और रात की जब वह जाने लगे। और सुबह की जब वह आने लगे कि यह एक बाइज़्ज़त रसूल का लाया हुआ कलाम है। कुव्वत वाला, अर्श वाले के नज़दीक बुलन्द मर्तबा है। उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है। और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं। और उसने उसे खुले उफ़ुक़ (क्षितिज) में देखा है। और वह ग़ैब की बातों का हरीस (हिर्स रखने

वाला) नहीं। और वह शैतान मरदूद का कौल नहीं। फिर तुम किधर जा रहे हो। यह तो बस आलम (संसार) वालों के लिए एक नसीहत है, उसके लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह है कि अल्लाह रब्बुल आलमीन चाहे। (15-29)

ज़मीन पर रात दिन का आना और इंसान के मुशाहिदे (अवलोकन) में सितारों के मकामात का बदलना ज़मीन की महवरी (धुरीय) गर्दिश की बिना पर होता है। इस एतबार से इन अल्फाज़ का मतलब यह होगा कि ज़मीन की महवरी गर्दिश का निज़ाम इस बात पर गवाह है कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं और कुरआन ख़ुदा का कलाम है जो फरिश्ते के ज़रिए उन पर उतरा है।

ज़मीन की महवरी गर्दिश इस कायनात का इंतिहाई नादिर और इंतिहाई अज़ीम वाकया है। यह वाकया गोया एक मॉडल है जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के मामले को हमारे लिए काबिलेफहम बनाता है। अगर यह तसव्वुर कीजिए कि ज़मीन अपने महवर (धुरी) पर गर्दिश करती हुई वसीअ ख़ला (अंतरिक्ष) में सूरज के गिर्द घूम रही है तो ऐसा महसूस होगा गोया रिमोट कंट्रोल का कोई ताकतवर निज़ाम है जो इसे इंतिहाई सेहत के साथ कंट्रोल कर रहा है। फरिश्ते के ज़रिए एक इंसान और ख़ुदा के दर्मियान रब्त (संपर्क) कायम होना भी इसी किस्म का एक वाक्या है। पहला वाक्या तमसील के रूप में दूसरे वाक्ये को समझने में मदद देता है।

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ (1) وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ (2) وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ (3) وَإِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ (4) عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ (5) يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ (6) الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ (7) فِيْٓ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ (8) كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ (9) وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ (10) كِرَامًا كَاتِبِيْنَ (11) يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ (12) اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ (13) وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ (14) يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ (15) وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ (16) وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ (17) ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ (18) يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ (19)

आयतें-19 सूरह-82. अल-इनफ़ितार रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और जब सितारे बिखर जाएंगे। और जब समुद्र बह पड़ेंगे। और जब कब्रें खोल दी जाएंगी। हर शख़्स जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। ऐ इंसान तुझे किस चीज़ ने अपने रब्बे करीम की तरफ से धोखे में डाल रखा है। जिसने तुझे पैदा किया। फिर तेरे आज़ा (शरीरांग) को दुरुस्त किया, फिर तुझे मुतनासिब (संतुलित) बनाया। जिस सूरत में चाहा तुम्हें तर्तीब दे दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम इंसाफ के दिन को झुठलाते हो। हालांकि तुम पर निगहबान मुकर्रर हैं। मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले। वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। बेशक नेक लोग ऐश में होंगे। और बेशक गुनाहगार दोज़ख़ में। इंसाफ के दिन वे उसमें डाले जाएंगे। वे उससे जुदा होने वाले नहीं। और तुम्हें क्या ख़बर कि इंसाफ का दिन क्या है। फिर तुम्हें क्या ख़बर इंसाफ का दिन क्या है। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी। और मामला उस दिन अल्लाह ही के इख़्तियार में होगा। (1-19)

कुरआन में यह ख़बर दी गई है कि बिलआख़िर इंसाफ का एक दिन आने वाला है जबकि तमाम इंसानों को जमा करके उनके अमल के मुताबिक उन्हें सज़ा या इनाम दिया जाएगा। यह ख़बर दुनिया की मौजूदा सूरतेहाल के ऐन मुताबिक है। इंसान की बामअना (अर्थपूर्ण) तख़्लीक इस ख़बर में अपनी तौजीह (तर्क) पा लेती है। इसी तरह इंसान के कौल व अमल की रिकॉर्डिंग का निज़ाम जो मौजूदा दुनिया में पाया जाता है वह इस ख़बर के बाद पूरी तरह काबिलेफहम बन जाता है। (कौल व अमल की रिकॉर्डिंग की तफ़्सील इन पंक्तियों के लेखक की किताब 'मज़हब और जदीद चैलेन्ज' (God Arises) में मुलाहिज़ा फरमाएं)

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ سِتٌّ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ (1) الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ (2) وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ (3) اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ (4) لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ (5) يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (6) كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ (7) وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ (8) كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ (9) وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (10) الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ (11) وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ (12) اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (13) كَلَّا بَلْ سكتة رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (14) كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ (15) ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ (16) ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ (17)

आयतें-36 **सूरह-83. अल-मुतफ्फिफीन** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की। जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें। और जब उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए जिस दिन तमाम लोग ख़ुदावंदे आलम के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं, बेशक गुनाहगारों का आमालनामा (कर्म-पत्र) सिज्जीन में होगा। और तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है। वह एक लिखा हुआ दफ्तर है। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। जो इंसाफ के दिन को झुठलाते हैं। और उसे वही शख़्स झुठलाता है जो हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहगार हो। जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये अगलों की कहानियां है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल का ज़ंग चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उस दिन वे अपने रब से ओट में रखे जाएंगे। फिर वे दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसे तुम झुठलाते थे। (1-17)

हर आदमी यह चाहता है कि वह दूसरों में अपना पूरा हक वुसूल करे। मगर आला इंसानी किरदार यह है कि आदमी दूसरों को भी उनका पूरा-पूरा हक अदा करे। वह दूसरों के लिए वही कुछ पसंद करे जो वह अपने लिए पसंद कर रहा है। जो लोग ख़ुद पूरा लें और दूसरों को कम दें वे आख़िरत में इस हाल में पहुंचेंगे कि वहां वे बर्बाद होकर रह जाएंगे।

जो अपने लिए पूरा वुसूल कर रहा है वह गोया इस बात को जानता है कि आदमी को उसका पूरा हक मिलना चाहिए। ऐसी हालत में जब वह दूसरों को देने के वक्त उन्हें कम देता है तो वह दूसरों के हुकूक के बारे में अपनी हस्सासियत (संवेदनशीलता) को घटाता है। जो शख़्स बार-बार इस तरह का अमल करे उस पर बिलआख़िर वह वक्त आएगा जबकि दूसरों के हुकूक के बारे में उसकी हस्सासियत बिल्कुल ख़त्म हो जाए। उसके दिल के ऊपर पूरी तरह उसके अमल का ज़ंग लग जाए।

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ ٱلْأَبْرَارِ لَفِى عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾ كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾
يَشْهَدُهُ ٱلْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ لَفِى نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى ٱلْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾
تَعْرِفُ فِى وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ ٱلنَّعِيمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾ خِتَٰمُهُۥ
مِسْكٌ ۚ وَفِى ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ ٱلْمُتَنَٰفِسُونَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهُۥ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا
يَشْرَبُ بِهَا ٱلْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ كَانُوا۟ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟

يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا۟ بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا ٱنقَلَبُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَهْلِهِمُ ٱنقَلَبُوا۟
فَكِهِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّونَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ أُرْسِلُوا۟ عَلَيْهِمْ
حَٰفِظِينَ ﴿٣٣﴾ فَٱلْيَوْمَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنَ ٱلْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَى ٱلْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ﴿٣٥﴾
هَلْ ثُوِّبَ ٱلْكُفَّارُ مَا كَانُوا۟ يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में होगा। और तुम क्या जानो इल्लिय्यीन क्या है। लिखा हुआ दफ्तर है, मुक़र्रब फ़रिश्तों की निगरानी में। बेशक नेक लोग आराम में होंगे। तख़्तों पा बैठे देखते होंगे। उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे। उन्हें शराबे ख़ालिस मुहर लगी हुई पिलाई जाएगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और यह चीज़ है जिसकी हिर्स करने वालों को हिर्स करना चाहिए। और उस शराब मे तस्नीम की आमेज़िश होगी। एक ऐसा चशमा (स्रोत) जिससे मुक़र्रब लोग पियेंगे। बेशक जो लोग मुजरिम थे वे ईमान वालों पर हंसते थे। और जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आंखों में इशारे करते थे। और जब वे अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते। और जब वे उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं। हालांकि वे उन पर निगरां बनाकर नहीं भेजे गए। पस आज ईमान वाले मुंकिरों पर हंसते होंगे, तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। वाकई मुंकिरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (18-36)

मौजूदा दुनिया में अक्सर लोग इस बात के हरीस नहीं होते कि वे दूसरों को उनका पूरा हक अदा करें। उनकी सारी दिलचस्पी इसमें होती है कि वे दूसरों से अपना हक भरपूर वुसूल कर सकें। ऐसे लोग आख़िरत में महरूम होकर रह जाएंगे। अक्लमंद लोग वे हैं जो सबसे ज़्यादा इस बात के हरीस बनें कि वे दूसरों को भरपूर तौर पर उनका हक अदा करें। क्योंकि यही वे लोग हैं जो आख़िरत में भरपूर तौर पर ख़ुदा की नेमतों के मुस्तहिक करार पाएंगे।

जो शख़्स आख़िरत की ख़ातिर अपनी दुनियावी मस्लेहतों को नज़रअंदाज़ कर दे वह दुनियापरस्तों की नज़र में हकीर (तुच्छ) बन जाता है। मगर जब आख़िरत आएगी तो मालूम होगा कि वही लोग होशियार थे जिनको दुनिया में नादान समझ लिया गया था।

سُورَةُ الانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ هِيَ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ آيَةً

إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا ٱلْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْإِنسَٰنُ إِنَّكَ كَادِحٌ
إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَٰقِيهِ ﴿٦﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ﴿٧﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ

حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿١٥﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

आयतें-25 सूरह-84. अल-इनशिकाक रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक है। और जब ज़मीन फैला दी जाएगी। और वह अपने अंदर की चीज़ों को उगल देगी और ख़ाली हो जाएगी। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक है। ऐ इंसान तू कशां-कशां (सश्रम) अपने रब की तरफ जा रहा है। फिर उससे मिलने वाला है। तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा। उससे आसान हिसाब लिया जाएगा। और वह अपने लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा। और जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और जहन्नम में दाख़िल होगा। वह अपने लोगों में बेग़म रहता था। उसने ख़्याल किया था कि उसे लौटना नहीं है। क्यों नहीं। उसका रब उसे देख रहा था। पस नहीं, मैं कसम खाता हूं शफक (सांध्य-लालिमा) की। और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें वह समेट लेती है। और चांद की जब वह पूरा हो जाए। कि तुम्हें ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुंचना है। तो उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते। और जब उनके सामने कुरआन पढ़ा जाता है तो वे ख़ुदा की तरफ नहीं झुकते। बल्कि मुंकिरीन झुठला रहें हैं। और अल्लाह जानता है जो कुछ वे जमा कर रहे हैं। पस उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अज्र है। (1-25)

यहां कियामत के मुताल्लिक जो बात कही गई है वह बज़ाहिर नामालूम दुनिया के बारे में एक ख़बर की हैसियत रखती है। ताहम ऐसे शवाहिद (प्रमाण) मौजूद हैं जो उसकी सदाकत (सच्चाई)

का करीना (संकेत) पैदा करते हैं। इसकी एक मिसाल मौजूदा दुनिया है। एक दुनिया की मौजूदगी ख़ुद इस बात का सुबूत है कि दूसरी ऐसी ही या इससे मुख़्तलिफ दुनिया वुजूद में आ सकती है। दूसरे, कुरआन में ऐसे ग़ैर मामूली पहलुओं का मौजूद होना जो यह साबित करते हैं कि वह ख़ुदा की किताब है। (तफ्सील के लिए मुलाहिज़ा हो, अज़्मते कुरआन)

इन वाज़ेह कराइन (संकेतों) के बाद जो लोग आख़िरत पर यकीन न करें और आख़िरत फरामोशी में ज़िंदगी गुज़ारें वे यकीनन ऐसा जुर्म कर रहे हैं जिसकी सज़ा वही हो सकती है जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ।

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ آيَةً

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ﴿٥﴾ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ﴿٦﴾ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٨﴾ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿٢٠﴾ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

आयतें-22 सूरह-85. अल-बुरूज रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है बुर्जों वाले आसमान की। और वादा किए हुए दिन की। और देखने वाले की और देखी हुई की। हलाक हुए खन्दक वाले, जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग थी। जबकि वे उस पर बैठे हुए थे। और जो कुछ वे ईमान वालों के साथ कर रहे

थे उसे देख रहे थे। और उनसे उनकी दुश्मनी इसके सिवा किसी वजह से न थी कि वे ईमान लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ वाला है। उसी की बादशाही आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया, फिर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और उनके लिए जलने का अज़ाब है। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। वही आग़ाज़ करता है और वही लौटाएगा। और वह बख़्शने वाला है, मुहब्बत करने वाला है, अर्शवरीं का मालिक, कर डालने वाला जो चाहे। क्या तुम्हें लश्करों की ख़बर पहुंची है, फिरऔन और समूद की। बल्कि ये मुंकिर झुठलाने पर लगे हुए हैं। और अल्लाह उन्हें हर तरह से घेरे हुए है। बल्कि वह एक बाअज़्मत (गौरवशाली) कुरआन है, लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ। (1-22)

कायनात का निज़ाम तकाज़ा करता है कि आख़िरी फ़ैसले का एक दिन आए। उसी दिन की ख़बर तमाम पैग़म्बर और उनके सच्चे नायब देते रहे हैं। इसके बावजूद जो लोग हक का एतराफ न करें बल्कि हक के दाअियों के दुश्मन बन जाएं वे ऐसी सरकशी करते हैं जिसके हौलनाक अंजाम से वे किसी तरह बच नहीं सकते। ताहम जो लोग हर किस्म की मुश्किलात के बावजूद सदाकत की आवाज़ पर लब्बैक कहें वे ख़ुदाए महरबान की तरफ से ऐसा इनाम पाएंगे जिससे बड़ा इनाम और कोई नहीं।

आसमानी किताबों में कुरआन इस्तसनाई (अद्वितीय) तौर पर एक महफ़ूज़ किताब है। यह इस बात की अलामत है कि कुरआन को ख़ुदा की ख़ुसूसी मदद हासिल है, इसे ज़ेर करना किसी के लिए मुमकिन नहीं यहां तक कि कियामत आ जाए।

سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ سَبْعَ عَشْرَةَ آيَةً

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ
لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾ يَخْرُجُ
مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾
فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾
فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

आयतें-17 | सूरह-86. अत-तारिक | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है आसमान की और रात को नुमूदार (प्रकट) होने वाले की। और तुम क्या जानो कि वह रात को नुमूदार होने वाला क्या है, चमकता हुआ तारा। कोई जान ऐसी नहीं है जिसके ऊपर निगहबान न हो। तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है। जो निकलता है पीठ और सीने के दर्मियान से। बेशक वह उसे दुबारा पैदा करने पर कादिर है। जिस दिन छुपी बातें परखी जाएंगी। उस वक्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार। कसम है आसमान चक्कर मारने वाले की। और फूट निकलने वाली ज़मीन की। बेशक यह दोटूक बात है और वह हंसी की बात नहीं। वे तदबीर (युक्ति) करने में लगे हुए हैं। और मैं भी तदबीर करने में लगा हुआ हूं। पस मुंकिरों को ढील दे, उन्हें ढील दे थोड़े दिनों। (1-17)

इंसान के ऊपर तारे का चमकना तमसील (उपमा) की ज़बान में इस वाकये की यावदिहानी है कि कोई देखने वाला उसे देख रहा है। यह देखने वाला इंसान के आमाल को रिकॉर्ड कर रहा है। वह मौत के बाद दुबारा इंसान को पैदा करेगा। और उससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लेगा। यह सिर्फ इम्तेहान की मोहलत है जो इंसान के दर्मियान और उस वक्त के दर्मियान हदे फ़ासिल (सीमा-रेखा) बनी हुई है। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही उसका वह अंजाम सामने आएगा जिससे आज वह बज़ाहिर बहुत दूर नज़र आता है।

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢﴾ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿٣﴾
وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسَىٰ ﴿٦﴾ إِلَّا مَا شَاءَ
اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ
الذِّكْرَىٰ ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَخْشَىٰ ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ
الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ
رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٧﴾ إِنَّ
هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

आयतें-19 **सूरह-87. अल-आला** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अपने रब के नाम की पाकी बयान कर जो सबसे ऊपर है। जिसने बनाया फिर ठीक किया। और जिसने ठहराया, फिर राह बताई। और जिसने चारा निकाला। फिर उसे स्याह कूड़ा बना दिया। हम तुम्हें पढ़ाएंगे फिर तुम नहीं भूलोगे। मगर जो अल्लाह चाहे, वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छुपा हुआ है। और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान राह। पस नसीहत करो अगर नसीहत फायदा पहुंचाए। वह शख़्स नसीहत कुबूल करेगा जो डरता है। और उससे गुरेज़ (विमुखता) करेगा वह जो बदबख़्त होगा। वह पड़ेगा बड़ी आग में। फिर न उसमें मरेगा और न जिएगा। कामयाब हुआ जिसने अपने को पाक किया। और अपने रब का नाम लिया। फिर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम दुनियावी ज़िंदगी को मुकद्दम रखते हो। और आख़िरत बेहतर है और पाएदार है। यही अगले सहीफ़ों (ग्रंथों) में भी है, मूसा और इब्राहीम के सहीफ़ों में। (1-19)

इंसान की और दुनिया की तख़्लीक में वाज़ेह तौर पर एक मंसूबाबंदी है। यह मंसूबाबंदी तकाज़ा करती है कि इस तख़्लीक का कोई मक्सद हो। यही वह मक्सद है जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के ज़रिए इंसान के ऊपर खोला गया है। ताहम 'वही' से वही शख़्स नसीहत कुबूल करेगा जिसके अंदर सोचने और असर लेने का मिज़ाज हो। ऐसे लोग खुदा के अबदी (चिरस्थाई) इनामात में दाख़िल किए जाएंगे। और जिन लोगों की सरकशी उनके लिए नसीहत कुबूल करने में रुकावट बन जाए, उनका अंजाम सिर्फ यह है कि वे हमेशा के लिए आग में जलते रहें।

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ سِتٌّ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

आयतें-26 **सूरह-88. अल-ग़ाशियह** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की ख़बर पहुंची है। कुछ चेहरे उस दिन ज़लील होंगे, मेहनत करने वाले थके हुए। वे दहकती आग में पड़ेंगे। खौलते हुए चशमे (स्रोत) से पानी पिलाए जाएंगे। उनके लिए कांटों वाले झाड़ के सिवा और कोई खाना न होगा, जो न मोटा करे और न भूख मिटाए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक होंगे। अपनी कमाई पर खुश होंगे। ऊंचे बाग़ में। उसमें कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) बात नहीं सुनेंगे। उसमें बहते हुए चशमे होंगे। उसमें तख़्त होंगे ऊंचे बिछे हुए। और आबख़ोरे सामने चुने हुए। और बराबर बिछे हुए गद्दे। और कालीन हर तरफ पड़े हुए। तो क्या वे ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया। और आसमान को कि वह किस तरह बुलन्द किया गया। और पहाड़ों को कि वह किस तरह खड़ा किया गया। और ज़मीन को कि वह किस तरह बिछाई गई। पस तुम याददिहानी कर दो, तुम बस याददिहानी करने वाले हो। तुम उन पर दारोग़ा नहीं। मगर जिसने रूगर्दानी (अवहेलना) की और इंकार किया, तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा। हमारी ही तरफ उनकी वापसी है। फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना। (1-26)

आदमी देखता है कि ऊंट जैसा अजीबुल ख़िलकत (विचित्र) जानवर उसका मुतीअ (आज्ञापालक) है। आसमान अपनी सारी अज़्मतों के बावजूद उसके लिए मुसख़्ख़र है। ज़मीन हमारी किसी कोशिश के बग़ैर हमारे लिए हद-दर्जा मुवाफिक बनी हुई है। ये वाकेयात सोचने वाले को खुदा और आख़िरत की याददिहानी कराते हैं। जो लोग दुनिया के इस निज़ाम से याददिहानी की ग़िज़ा लें उन्होंने अपने लिए खुदा की अबदी (चिरस्थाई) नेमतों का इस्तहकाक (अधिकार) साबित किया। और जो लोग ग़फलत में पड़ें रहें उन्होंने यह साबित किया कि वे सिर्फ इस काबिल हैं कि उन्हें हर किस्म की नेमतों से हमेशा के लिए महरूम कर दिया जाए।

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾ وَفِرْعَوْنَ

ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾ وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَمًّا ﴿١٩﴾ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

आयतें-30 — **सूरह-89. अल-फज्र** — रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है फज्र (उषाकाल) की। और दस रातों की। और जुफ्त (सम) और ताक (विषम) की। और रात की जब वह चलने लगे। क्यों, इसमें अक्लमंद के लिए काफी कसम है। तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया, सुतूनों (स्तंभों) वाले इरम के साथ। जिनके बराबर कोई कौम मुल्कों में पैदा नहीं की गई। और समूद के साथ जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशीं। और मेख़ों वाले फिरऔन के साथ, जिन्होंने मुल्कों में सरकशी की। फिर उनमें बहुत फसाद फैलाया। तो तुम्हारे रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। बेशक तुम्हारा रब घात में है। पस इंसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसे आज़माता है और उसे इज़्ज़त और नेमत देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। और जब वह उसे आज़माता है और उसका रिज़्क उस पर तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और तुम मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। और तुम विरासत को समेटकर खा जाते हो। और तुम माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते हो। हरगिज़

नहीं, जब ज़मीन को तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। और तुम्हारा रब आएगा और फरिश्ते आएंगे कतार (पंक्ति) दर कतार। और उस दिन जहन्नम लाई जाएगी, उस दिन इंसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौका कहां। वह कहेगा, काश मैं अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे भेजता। पस उस दिन न तो ख़ुदा के बराबर कोई अज़ाब देगा, और न उसके बांधने के बराबर कोई बांधेगा। ऐ नफ्से मुतमइन (संतुष्ट आत्मा) चल अपने रब की तरफ। तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी। फिर शामिल हो मेरे बंदों में और दाख़िल हो मेरी जन्नत में। (1-30)

दुनिया में आदमी को दो किस्म के अहवाल पेश आते हैं। कभी पाना और कभी महरूम हो जाना। ये दोनों हालतें इम्तेहान के लिए हैं। वे इस जांच के लिए हैं कि आदमी किस हाल में कौन सा रद्देअमल पेश करता है। जिस शख़्स का मामला यह हो कि जब उसे कुछ मिले तो वह फख़्र करने लगे और जब उससे छीना जाए तो वह मंफी (नकारात्मक) नफ्सियात में मुब्तिला हो जाए, ऐसा शख़्स इम्तेहान में नाकाम हो गया।

दूसरा इंसान वह है कि जब उसे मिला तो उसने ख़ुदा के सामने झुक कर उसका शुक्र अदा किया, और जब उससे छीना गया तो दुबारा उसने ख़ुदा के आगे झुक कर अपने इज्ज़ (निर्बलता) का इकरार किया। यही दूसरा इंसान है जिसे यहां नफ्से मुतमइन कहा गया है, यानी मुतमइन रूह (संतुष्ट आत्मा)।

नफ्से मुतमइन का मकाम उस शख़्स को मिलता है जो कायनात में ख़ुदा की निशानियों पर ग़ौर करे। जो तारीख़ के वाकेयात से इबरत (सीख) व नसीहत की ग़िज़ा ले सके। जो इस बात का सुबूत दे कि जब उसकी ज़ात में और हक में टकराव होगा तो वह अपनी ज़ात को नज़रअंदाज़ कर देगा और हक को कुबूल कर लेगा। जो एक बार हक को मान लेने के बाद फिर उसे कभी न छोड़े, चाहे उसकी ख़ातिर उसे अपने आपको कुचलना पड़े, और चाहे उसके नतीजे में उसकी ज़िंदगी वीरान हो जाए।

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ — وَهِيَ عِشْرُونَ آيَةً

لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾ أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ﴿٦﴾ أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

आयतें-20 **सूरह-90. अल-बलद** रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं कसम खाता हूं इस शहर (मक्का) की। और तुम इसमें मुक़ीम (रह रहे) हो। और कसम है बाप की और उसकी औलाद की। हमने इंसान को मशक्कत (सश्रम स्थिति) में पैदा किया है। क्या वह ख़्याल करता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं। कहता है कि मैंने बहुत सा माल ख़र्च कर दिया। क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा। क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं। और एक ज़बान और दो होंट। और हमने उसे दोनों रास्ते बता दिए। फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा। और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी। गर्दन को छुड़ाना। या भूख के ज़माने में खिलाना, कराबतदार यतीम को, या ख़ाकनशीं (धूल-धूसरित) मोहताज को। फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और एक दूसरे को सब्र की और हमदर्दी की नसीहत की। यही लोग नसीब वाले हैं। और जो हमारी आयतों के मुंकिर हुए वे बदबख़्ती (दुर्भाग्य) वाले हैं। उन पर आग छाई हुई होगी। (1-20)

इंसान किसी हाल में अपने आपको मशक्कतों से आज़ाद नहीं कर पाता। इससे मालूम हुआ कि इंसान किसी बालातर कुव्वत (उच्चतर शक्ति) के मातहत है। इसी तरह इंसान की आंखें बताती हैं कि कोई बरतर आंख भी है जो उसे देख रही है। इंसान की कुव्वते नुत्क (वाक शक्ति) इशारा करती है कि उसके ऊपर भी एक साहिबे नुत्क है जिसने उसे नुत्क (बोलने) की सलाहियत दी। और उसे हिदायत का रास्ता दिखाया। आदमी अगर हकीकी मअनों में अपने आपको पहचान ले तो यकीनन वह ख़ुदा को भी पहचान लेगा।

ख़ुदा ने इंसान को दो किस्म की बुलन्दियों पर चढ़ने का हुक्म दिया है। एक इंसान के साथ मुंसिफाना सुलूक और इंसान की ज़रूरतों में उसके काम आना। दूसरी चीज़ अल्लाह पर ईमान और यकीन है। यह ईमान और यकीन जब आदमी के अंदर गहराई के साथ उतरता है तो वह आदमी की अपनी ज़ात तक महदूद नहीं रहता बल्कि मुतअद्दी (प्रसारक) बन जाता है। ऐसा इंसान दूसरों को भी उसी हक पर लाने की कोशिश करने लगता है जिसे वह ख़ुद इख़्तियार किए हुए है।

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ فِي خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ﴿٥﴾ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ﴿٦﴾ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ﴿٧﴾ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ﴿٨﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ﴿٩﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ﴿١٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ﴿١١﴾ إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوَّاهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ﴿١٥﴾

आयतें-15 **सूरह-91. अश-शम्स** रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की। और चांद की जबकि वह सूरज के पीछे आए। और दिन की जबकि वह उसे रोशन कर दे। और रात की जब वह उसे छुपा ले। और आसमान की और जैसा कि उसे बनाया। और ज़मीन की और जैसा कि उसे फैलाया। और जान की जैसा कि उसे ठीक किया। फिर उसे समझ दी, उसकी बदी की और उसकी नेकी की। कामयाब हुआ जिसने उसे पाक शुद्ध किया और नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा (अशुद्ध) किया। समूद ने अपनी सरकशी की बिना पर झुठलाया। जबकि उठ खड़ा हुआ उनका सबसे बड़ा बदबख़्त। तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उसके पानी पीने से ख़बरदार। तो उन्होंने उसे झुठलाया। फिर ऊंटनी को मार डाला। फिर उनके रब ने उन पर हलाकत नाज़िल की। फिर सबको बराबर कर दिया। वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा। (1-15)

इंसान की हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने सहगाना (बहुमुखी) इंतिज़ाम किया है। एक तरफ कायनात इस तरह बनाई गई है कि वह ख़ुदा की मर्ज़ी का अमली इज़्हार बन गई है। दूसरी तरफ इंसान के अंदर नेकी और बदी का वजदानी शुऊर (आन्तरिक चेतना) रख दिया गया है। इसके बाद मज़ीद एहतिमाम यह फरमाया कि पैग़म्बरों के ज़रिए हक व बातिल और ज़ुल्म व इंसाफ को लोगों की काबिलेफ़हम (सहज) ज़बान में खोलकर बता दिया गया। इसके बाद भी जो लोग राहेरास्त पर न आएं वे बिलाशुबह ज़ालिम हैं।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी एक एतबार से इस बात की अलामत थी कि हकदार का एहतराम करो और उसका हक अदा करो, चाहे वह बेबस और कमज़ोर क्यों न हो। एक वजूद जो बज़ाहिर महज़ 'ऊंटनी' नज़र आ रहा है, ऐन मुमकिन है कि वह ख़ुदा का निशान हो जो लोगों की जांच के लिए मुकर्रर किया गया हो।

سُوْرَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ... بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ... اِحْدٰى وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۙ﴿۱﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿۲﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۙ﴿۳﴾ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ؕ﴿۴﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۙ﴿۵﴾ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۶﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ؕ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ﴿۸﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۹﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ﴿۱۰﴾ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ؕ﴿۱۱﴾ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۫ۖ﴿۱۲﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿۱۳﴾ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ﴿۱۴﴾ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۙ﴿۱۵﴾ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿۱۶﴾ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۙ﴿۱۷﴾ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۚ﴿۱۸﴾ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۙ﴿۱۹﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ﴿۲۰﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۧ﴿۲۱﴾

आयतें-21 | सूरह-92. अल-लइल | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है रात की जबकि वह छा जाए। और दिन की जबकि वह रोशन हो और उसकी जो उसने पैदा किए नर और मादा। कि तुम्हारी कोशिशें अलग-अलग हैं। पस जिसने दिया और वह डरा और उसने भलाई को सच माना। तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और जिसने बुख़्ल (कंजूसी) किया और बेपरवाह रहा, और भलाई को झुठलाया, तो हम उसे सख़्त रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और उसका माल उसके काम न आएगा जब वह गढ़े में गिरेगा। बेशक हमारे ज़िम्मे है राह बताना। और बेशक हमारे इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। पस मैंने तुम्हें डरा दिया भड़कती हुई आग से। उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त है। जिसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। और हम उससे बचा देंगे ज़्यादा डरने वाले को। जो अपना माल देता है पाकी हासिल करने के लिए और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो। मगर सिर्फ अपने ख़ुदाए बरतर की ख़ुशनूदी के लिए।

और अनकरीब वह ख़ुश हो जाएगा। (1-21)

दुनिया में तमाम चीज़ें जोड़े-जोड़े हैं। नर और मादा, रात और दिन, मुस्बत (धनात्मक) ज़र्रह और मंफी (ऋणात्मक) ज़र्रह, मेटर (Matter) और एंटी मेटर। इस दुनिया की हर चीज़ अपने जोड़े के साथ मिलकर अपने मक्सद को पूरा करती है। यह वाज़ेह तौर पर इस बात का सबूत है कि इस कायनात में मक्सदियत (उद्देश्यपरकता) है। ऐसी बामक्सद कायनात में यह नामुमकिन है कि यहां अच्छा अमल और बुरा अमल दोनों बिल्कुल यकसां (समान) अंजाम पर ख़त्म हो। कायनात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ करा रही है उससे यह बात मुताबिकत नहीं रखती।

अल्लाह का ताल्लुक अपने बंदों से सिर्फ हाकिम का नहीं, बल्कि मददगार का भी है। वह अपने उन बंदों का रास्ता हमवार करता है जो उसकी तरफ चलना चाहें। इसके बरअक्स जो लोग सरकशी का रास्ता इख़्तियार करें वह उन्हें सरकशी के रास्ते पर दौड़ने के लिए छोड़ देता है।

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ... بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ... اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

وَالضُّحٰى ۙ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ﴿۳﴾ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ﴿۵﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪﴿۶﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪﴿۷﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ﴿۸﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ؕ﴿۹﴾ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ؕ﴿۱۰﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۧ﴿۱۱﴾

आयतें-11 | सूरह-93. अज़-जुहा | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है रोज़े रोशन (चढ़ते दिन) की। और रात की जब वह छा जाए। तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा। और न वह तुमसे बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ। और यकीनन आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है। और अनकरीब अल्लाह तुझे देगा। फिर तू राज़ी हो जाएगा। क्या अल्लाह ने तुम्हें यतीम (अनाथ) नहीं पाया फिर ठिकाना दिया। और तुम्हें मुतलाशी पाया तो राह दिखाई। और तुम्हें नादार (निर्धन) पाया तो तुम्हें ग़नी (समृद्ध) कर दिया। पस तुम यतीम पर सख़्ती न करो। और तुम साइल (मांगने वाले) को न झिड़को। और तुम अपने रब की नेमत बयान करो। (1-11)

इस दुनिया का निज़ाम इस तरह बना है कि यहां दिन भी आता है और रात भी। दोनों के मिलने से यहां का निज़ाम मुकम्मल होता है। इसी तरह इंसान के इरतका (उत्थान) के लिए

भी सख़्ती और नर्मी दोनों का पेश आना ज़रूरी है। इस दुनिया में एक बंदए ख़ुदा के साथ सख़्ती के हालात इसलिए पेश आते हैं कि उसकी छुपी हुई सलाहियतें बेदार हों। उसकी राह में रुकावटें इसलिए डाली जाती हैं ताकि उसका मुस्तकबिल (भविष्य) उसके हाल (वर्तमान) के ज़्यादा बेहतर हो सके।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यतीम पैदा हुए, फिर अल्लाह ने आपको बेहतरीन सरपरस्त अता फरमाया। आप तलाशे हक में सरगरदां (प्रयत्नशील) थे, फिर अल्लाह ने आपके लिए हक का दरवाज़ा खोल दिया। आप बज़ाहिर बेमाल थे, फिर अल्लाह ने आपको आपकी पत्नी (हज़रत ख़दीज़ा रज़ि०) के ज़रिए साहिबे माल बना दिया। यह एक तारीख़ी मिसाल है जो बताती है कि अल्लाह तआला किस तरह अपने बंदों की मदद फरमाता है।

इंसान को चाहिए कि वह कमज़ोरों की मदद करे ताकि वह अल्लाह की मदद का मुस्तहिक बने। उसका कलाम नेमते ख़ुदावंदी के इज़्हार का कलाम हो ताकि अल्लाह उस पर अपनी नेमतों का इतमाम फरमाए।

سُورَةُ الْإِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ (1) وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ (2) الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ (3) وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ (4) فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (5) إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (6) فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ (7) وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ (8)

आयतें-8 **सूरह-94. अल-इनशिराह** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया। और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द किया। पस मुश्किल के साथ आसानी है। बेशक मुश्किल के साथ आसानी है। फिर जब तुम फारिग़ हो जाओ तो मेहनत करो। और अपने रब की तरफ तवज्जोह रखो। (1-8)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हकीकत जानने के लिए तड़प रहे थे। अल्लाह तआला ने आपको हकीकत का इल्म देकर आपकी तलाश को मअरफत (अन्तर्ज्ञान) मेंतब्दील कर दिया। हकाइक (यथार्थ, सत्य) की मअरफत के लिए आपका सीना खुल गया। फिर आपने मक्का में तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत शुरू की तो बज़ाहिर सख़्त मुख़ालिफतों का सामना पेश आया। मगर इन्हीं मुख़ालिफतों के ज़रिए यह हुआ कि आपका चर्चा सारे मुल्क में फैल गया।

यही मौजूदा दुनिया के लिए अल्लाह का कानून है। यहां इब्तिदा में इंसान के साथ उस्र (मुश्किल) के हालात पेश आते है लेकिन अगर वह सब्र के साथ उन पर जमा रहे यह उस्र उसके लिए नए युस्र (आसानी) तक पहुंचाने का ज़ीना बन जाता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह हमेशा अल्लाह की तरफ देखे, वह अपनी इस्तताअत के बक्द्र (यथासामर्थ्य) अपनी जद्दोजहद को बराबर जारी रखे।

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ (1) وَطُورِ سِينِينَ (2) وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ (3) لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ (4) ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ (5) إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ (6) فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ (7) أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ (8)

आयतें-8 **सूरह-95. अत-तीन** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है तीन की और ज़ैतून की। और तूरे सीना की। और इस अम्न वाले शहर की। हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त (संरचना) पर पैदा किया। फिर उसे सबसे नीचे फेंक दिया। लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए कभी ख़त्म न होने वाला अज्र (प्रतिफल) है। तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुठलाते हो। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं। (1-8)

'तीन' और 'ज़ैतून' दो पहाड़ों के नाम हैं जिसके करीब बैतुल मक्दिस वाकेअ है, यानी हज़रत मसीह का मकामे अमल। 'तूरिसीनीन' से मुराद वह पहाड़ है जहां हज़रत मूसा पर ख़ुदा ने 'वही' (प्रकाशना) फरमाई। 'बलद अमीन' से मुराद मक्का है जहां पैग़म्बरे इस्लाम मबऊस (प्रस्थापित) हुए।

अल्लाह तआला ने इंसान को बेहतरीन सलाहियतों (क्षमताओं) के साथ पैदा किया है। ये सलाहियतें इसलिए हैं कि इंसान पैग़म्बरों के ज़रिए ज़ाहिर किए जाने वाले हक को पहचाने और अपनी ज़िंदगी को उसके मुताबिक बनाए। जो लोग ऐसा करें वे इज़्ज़त और बुलन्दी का अबदी मकाम पाएंगे। इसके बरअक्स जो लोग अपनी ख़ुदादाद सलाहियतों को ख़ुदा की मर्ज़ी के ताबेअ न करें, उनसे मौजूदा नेमतें भी छीन ली जाएंगी और कामिल महरूमी के सिवा कोई जगह न होगी जहां उन्हें ठिकाना मिल सके। पैग़म्बरों की बेअसत (प्रस्थापना) और पैग़म्बरों के ज़रिए ज़ाहिर होने वाले नताइज इसकी सदाकत की गवाही देते हैं।

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿٣﴾ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ﴿٦﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿٧﴾ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿٨﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ﴿٩﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ﴿١٠﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ﴿١١﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿١٢﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿١٧﴾ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ۭ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

आयतें-19 | **सूरह-96. अल-अलक** | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को अलक (ख़ून के लोथड़े) से। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने इल्म सिखाया कलम से। इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह जानता न था। हरगिज़ नहीं, इंसान सरकशी करता है। इस बिना पर कि वह अपने को आत्मनिर्भर देखता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ लौटना है। क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो मना करता है, एक बंदे को जब वह नमाज़ अदा करता हो तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर वह हिदायत पर हो। या डर की बात सिखाता हो। तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर उसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है। हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम पेशानी के बाल पकड़कर उसे खींचेंगे। उस पेशानी को जो झूठी गुनाहगार है। अब वह बुला ले अपने हामियों को। हम भी दोज़ख़ के फरिश्तों को बुलाएंगे। हरगिज़ नहीं, उसकी बात न मान और सज्दा कर और करीब हो जा। (1-19)

इस सूरह की इब्तिदाई पांच आयतें वे हैं जो पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर सबसे पहले नाज़िल हुईं। इंसान को अल्लाह तआला ने मामूली माद्दी अज्ज़ा (भौतिक तत्वों) से पैदा किया। फिर उसे यह नादिर (विलक्षण) सलाहियत दी कि वह पढ़े और अल्फाज़ के

ज़रिए मआनी का इदराक कर सके। फिर इंसान को यह मज़ीद सलाहियत दी गई है कि वह कलम को इस्तेमाल करे और इस तरह अपने इल्म को मुदव्वन (संग्रहित) और महफूज़ कर सके। क़िरत (पाठ) की सलाहियत अगर आदमी को खुद पढ़ने के काबिल बनाती है तो कलम उसे इस काबिल बनाता है कि वह अपने इल्म को वसीअ पैमाने पर दूसरों तक पहुंचा सके।

जो लोग हक के मुक़ाबले में सरकशी करें और हक का रास्ता इख़्तियार करने वालों की राह में रुकावटें डालें उनका अंजाम बहुत बुरा है। ऐसे हालात में हक के दाओ (आह्वानकर्ता) का अस्ल सहारा यह है कि वह अल्लाह की इबादत करे। वह लोगों से महरूम होकर ख़ुदा से पाए, वह लोगों से दूर होकर (लोगों के) ख़ुदा से क़रीब हो जाए।

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۥ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

आयतें-5 | **सूरह-97. अल-कद्र** | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
हमने इसे उतारा है शबे कद्र (गौरवपूर्ण रात) में। और तुम क्या जानो कि शबे कद्र क्या है। शबे कद्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फरिश्ते और रूह उसमें अपने रब की इजाज़त से उतरते हैं। हर हुक्म लेकर। वह रात सरासर सलामती है, सुबह निकलने तक। (1-5)

साल की एक ख़ास रात (ग़ालिबन माहे रमज़ान के आख़िरी अशरे की कोई रात) अल्लाह तआला के यहां फैसले की रात है। दुनिया के इंतिज़ाम के मुतअल्लिक जो काम उस साल में मुक़द्दर हैं उनके निफाज़ (लागू करने) के तअय्युन के लिए उस रात को फरिश्ते उतरते हैं। इसी किस्म की एक ख़ास रात में कुरआन का नुज़ूल (अवतरण) शुरू हुआ।

बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि इस रात को ज़मीन पर फरिश्तों की कसरत होती है। इससे ज़मीन पर ख़ास तरह का रूहानी माहौल पैदा होता है। अब जो लोग अपने अंदर रूहानियत बेदार किए हुए हों वे उससे मुतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं और इसके नतीजे में उनके अंदर ग़ैर मामूली रूहानी तासीर पैदा हो जाती है जो उनके दीनी अमल की कद्र व कीमत आम हालात से बहुत ज़्यादा बढ़ा देती है।

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَمَانِ اٰيٰتٍ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ﴿٨﴾

आयतें-8 **सूरह-98. अल-बय्यिनह** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अहले किताब (पूर्ववर्ती-ग्रंथ धारक) और मुश्रिकीन (बहुदेववादी) में से जिन लोगों ने इंकार किया वे बाज़ आने वाले नहीं जब तक उनके पास वाज़ेह दलील न आ जाए। अल्लाह की तरफ से एक रसूल जो पाक सहीफे (ग्रंथ) पढ़कर सुनाए। जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। और जो लोग अहले किताब थे वे वाज़ेह दलील आ जाने के बाद ही मुख़्तलिफ हो गए। हालांकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत करें। उसके लिए दीन को ख़ालिस कर दें, यकसू (एकाग्रचित्त) होकर और नमाज़ कायम करें और ज़कात दें, और यही दुरुस्त दीन है। बेशक अहले किताब और मुश्रिकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, हमेशा उसमें रहेंगे, ये लोग बदतरीन ख़लाइक (निकृष्ट प्राणी) है। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, वे लोग बेहतरीन ख़लाइक (सर्वोत्तम प्राणी) हैं। उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे उससे राज़ी, यह उस शख़्स के लिए है जो अपने रब से डरे। (1-8)

अरब के मुश्रिकीन और अहले किताब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते थे कि आप कोई मोजिज़ा (दिव्य चमत्कार) दिखाएं। या फरिश्ता आसमान से आकर हमसे कलाम करे तब हम आपकी रिसालत (ईशदूतत्व) मानेंगे। मगर इस क़िस्म का मुतालबा करने वाले हमेशा ग़ैर संजीदा होते हैं। चुनांचे पिछले लोगों ने इस तरह के मुतालबे किए, मगर मुतालबा पूरा होने के बावजूद वे मोमिन न बन सके। ख़ुदा का दीने कय्यिम (सहज सही धर्म) यह है कि आदमी एक अल्लाह की इबादत करे। वह दिल से उसका चाहने वाला बन जाए। वह नमाज़ कायम करे और ज़कात अदा करे। यही ख़ुदा की तरफ से आने वाला अस्ल दीन है। सबसे अच्छे लोग वे हैं जो इस दीने कय्यिम को इख़्तियार करें। और सबसे बुरे लोग वे हैं जो इस दीने कय्यिम को इख़्तियार न करें या इसके सिवा कोई और दीन वज़अ (गठित) करें और उस ख़ुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को दीने कय्यिम का नाम दे दें।

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَمَانِ اٰيٰتٍ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ﴿٢﴾ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿٧﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾

आयतें-8 **सूरह-99. अज़्-ज़िलज़ाल** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन शिद्दत से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। और इंसान कहेगा कि इसे क्या हुआ। उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी। क्योंकि तुम्हारे रब का उसे यही हुक्म होगा। उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाए जाएं। पस जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर बदी की होगी वह उसे देख लेगा। (1-8)

कियामत का ज़लज़ला मुद्दते इम्तेहान के ख़त्म होने का एलान होगा। इसका मतलब यह होगा कि अब लोगों से वह आज़ादी छिन गई जो इम्तेहान की मस्लेहत की बिना पर उन्हें हासिल थी। अब वह वक्त आ गया जब लोगों को उनके अमल का बदला दिया जाए। आज ख़ुदा की दुनिया बज़ाहिर ख़ामोश है मगर जब हालात बदलेंगे तो यहां की हर चीज़ बोलने

लगेगी। मौजूदा ज़माने की ईजादात (आविष्कारों) ने साबित किया है कि बेजान चीज़ें भी 'बोलने' की सलाहियत रखती हैं। स्टूडियो में किए हुए अमल को फिल्म और रिकॉर्ड पूरी तरह दोहरा देते हैं। इसी तरह मौजूदा दुनिया गोया बहुत बड़ा खुदाई स्टूडियो है। इसके अन्दर इंसान जो कुछ करता है या जो कुछ बोलता है वह सब हर लम्हा महफूज़ हो रहा है। और जब वक्त आएगा तो हर एक की कहानी को यह दुनिया इस तरह दोहरा देगी कि उसकी कोई भी बात उससे बची हुई न होगी, चाहे वह छोटी हो या बड़ी।

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿۷﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۭ﴿۸﴾ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۙ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ﴿۱۰﴾ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَىِٕذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

आयतें-11 | सूरह-100. अल-आदियात | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं। फिर टाप मारकर चिंगारी निकालने वाले। फिर सुबह के वक्त छापा मारने वाले। फिर उसमें गुबार उड़ाने वाले। फिर उस वक्त फौज में घुस जाने वाले। बेशक इंसान अपने रब का नाशुक्र है। और वह खुद इस पर गवाह है। और वह माल की मुहब्बत में बहुत शदीद है। क्या वह उस वक्त को नहीं जानता जब वह कब्रों से निकाला जाएगा। और निकाला जाएगा जो कुछ दिलों में है। बेशक उस दिन उनका रब उनसे ख़ूब बाख़बर होगा। (1-11)

घोड़ा एक निहायत वफादार जानवर है। वह अपने मालिक के लिए अपने आपको आख़िरी हद तक कुर्बान कर देता है, यहां तक कि जंग के मैदान में भी वह अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ता। यह गोया एक अलामती (सांकेतिक) मिसाल है जो इंसान को बताती है कि उसे कैसा बनना चाहिए। इंसान को भी अपने रब का उसी तरह वफादार बनना चाहिए जैसा कि घोड़ा इंसान का वफादार होता है। मगर अमलन ऐसा नहीं।

इस दुनिया में जानवर अपने मालिक का शुक्रगुज़ार है मगर इंसान अपने रब का शुक्रगुज़ार नहीं। यहां जानवर अपने मालिक का हक पहचानता है मगर इंसान अपने रब का हक नहीं पहचानता। यहां जानवर अपने मालिक की इताअत (आज्ञापालन) में सरगर्म है मगर इंसान अपने रब की इताअत में सरगर्म नहीं।

इंसान उसी जानवर की कद्र करता है जो उसका वफादार हो। फिर कैसे मुमकिन है कि वह इस राज़ को न जाने कि खुदा के यहां वही इंसान काबिले कद्र ठहरेगा जो खुदा की नज़र में उसका वफादार साबित हो। मगर माल की मुहब्बत उसे अंधा बना देती है। वह एक ऐसी हकीकत को जानने से महरूम रहता है जिसका वह खुद अपने करीबी हालात में तजर्बा कर चुका है।

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۭ﴿۳﴾ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿۴﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۭ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۶﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۭ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۭ﴿۹﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۭ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿۱۱﴾

आयतें-11 | सूरह-101. अल-कारिअह | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली। जिस दिन लोग पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे। और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा वह दिलपसंद आराम में होगा। और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा तो उसका ठिकाना गढ़ा है। और तुम क्या जानो कि वह क्या है, भड़कती हुई आग। (1-11)

कियामत का भूचाल हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगा। लोगों के तमाम इस्तहकामात (दृढ़ चीजें) दरहम बरहम हो जाएंगे। इसके बाद एक नया आलम बनेगा जहां सारा वज़न सिर्फ हक में होगा, बकिया तमाम चीज़ें अपना वज़न खो देंगी। मौजूदा दुनिया में इंसानों की पसंद का रवाज है। यहां इंसानों की निस्बत से चीज़ों का वज़न कायम होता है। आख़िरत की दुनिया खुदा की दुनिया है। वहां खुदा की पसंद के एतबार से एक चीज़ वज़नदार होगी और दूसरी चीज़ बिल्कुल बेवज़न होकर रह जाएगी।

दुनिया में आमाल का वज़न ज़ाहिर के एतबार से होता है, आख़िरत में आमाल का वज़न उनकी अंदरूनी हकीकत के एतबार से होगा। जिस आदमी के अमल में जितना ज़्यादा इख़्लास (निष्ठा) होगा उतना ही ज़्यादा वह वज़नी करार पाएगा। जो अमल इख़्लास से ख़ाली

हो वह आख़िरत में बिल्कुल बेवज़न होकर रह जाएगा, चाहे मौजूदा दुनिया में ज़ाहिरबीनों को वह कितना ही ज़्यादा बावज़न दिखाई देता रहा हो।

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَمَانِ اٰيَاتٍ

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ① حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ② كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ③ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ④ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ⑤ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ⑥ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ⑦ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ⑧

आयतें-8 **सूरह-102. अत-तकासुर** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बोहतात (विपुलता) की हिर्स ने तुम्हें ग़फलत में रखा। यहां तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुंचे। हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। फिर हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। हरगिज़ नहीं, अगर तुम यकीन के साथ जानते, कि तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। फिर तुम उसे यकीन की आंख से देखोगे। फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा। (1-8)

आदमी चाहता है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा कमाए, वह ज़्यादा से ज़्यादा साज़ोसामान अपने पास जमा करे। वह इसी धुन में लगा रहता है। यहां तक कि उसकी मौत आ जाती है। उस वक्त उसे मालूम होता है कि जमा करने की चीज़ तो दूसरी थी और मैं किसी और चीज़ को जमा करने में मसरूफ रहा।

दुनिया की चीज़ों का इज़ाफा सिर्फ आदमी की मस्ऊलियत (जवाबदेही) को बढ़ाता है। और आदमी अपनी नादानी से यह समझता है कि वह अपनी कामयाबी में इज़ाफा कर रहा है।

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

وَالْعَصْرِ ① اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ② اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ③

आयतें-3 **सूरह-103. अल-अस्र** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है ज़माने की। बेशक इंसान घाटे में है। मगर जो लोग कि ईमान लाए और नेक

अमल किया और एक दूसरे को हक की नसीहत की और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की। (1-3)

आदमी हर लम्हा अपनी मौत की तरफ जा रहा है। इसका मतलब यह है कि आदमी अगर अपनी मोहलते उम्र को इस्तेमाल न करे तो आख़िरकार उसके हिस्से में जो चीज़ आएगी वह सिर्फ हलाकत है। कामयाब होने के लिए आदमी को खुद अमल करना है। जबकि नाकामी के लिए किसी अमल की ज़रूरत नहीं। वह अपने आप उसकी तरफ भागी चली आ रही है।

एक बुज़ुर्ग ने कहा कि सूरह अस्र का मतलब मैंने एक बर्फ बेचने वाले से समझा जो बाज़ार में आवाज़ लगा रहा था कि लोगो, उस शख़्स पर रहम करो जिसका असासा (धन-सम्पत्ति) घुल रहा है, लोगो, उस शख़्स पर रहम करो जिसका असासा घुल रहा है। इस पुकार को सुनकर मैंने अपने दिल में कहा कि जिस तरह बर्फ पिघलकर कम होती रहती है इसी तरह इंसान को मिली हुई उम्र भी तेज़ी से गुज़र रही है। उम्र का मौका अगर बेअमली में या बुरे कामों में खो दिया जाए तो यही इंसान का घाटा है। (तफ्सीर कबीर, इमाम राज़ी)

अपने वक्त को सही इस्तेमाल करने वाला वह है जो मौजूदा दुनिया में तीन बातों का सुबूत दे। एक ईमान, यानी हकीक्त का शुऊर और उसका एतराफ। दूसरे अमले सालेह, यानी वही करना जो करना चाहिए और वह न करना जो नहीं करना चाहिए। तीसरे हक व सब्र की तल्क़ीन, यानी हक़ीक़त का इतना गहरा इदराक (भान) कि आदमी उसका दाओ (आह्वानकर्ता) और मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन जाए।

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ① الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ② يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ③ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ④ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ⑤ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ⑥ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ⑦ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ⑧ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ⑨

आयतें-9 **सूरह-104. अल-हु-म-ज़ह** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तबाही है हर ताना देने वाले, ऐब निकालने वाले की। जिसने माल को समेटा और गिन-गिन कर रखा। वह ख़्याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा।

हरगिज़ नहीं, वह फेंका जाएगा रौंदने वाली जगह में। और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या है। अल्लाह की भड़काई हुई आग जो दिलों तक पहुंचेगी। वह उन पर बंद कर दी जाएगी, ऊंचे-ऊंचे सुतूनों (स्तंभों) में। (1-9)

किसी से इख़्तेलाफ हो तो आदमी उसे दलील से रद्द कर सकता है। मगर यह दुरुस्त नहीं कि आदमी उस पर ऐब लगाए। उसे बदनाम करे। उसे इल्ज़ामतराशी (दोषारोपण) का निशाना बनाए। पहली बात जाइज़ है मगर दूसरी बात सरासर नाजाइज़।

जो लोग ऐसा करते हैं वे इसलिए ऐसा करते हैं कि वे देखते हैं कि उनकी दुनियावी हैसियत महफूज़ व मुस्तहकम है। वे समझते हैं कि दूसरे शख़्स पर बेबुनियाद इल्ज़ाम लगाने से उनका अपना कुछ बिगड़ने वाला नहीं। मगर यह सिर्फ नादानी है। हकीक़त यह है कि ऐसा करना आग के गढ़े में छलांग लगाना है। ऐसा आग का गढ़ा जिससे निकलने की कोई सबील उनके लिए न होगी।

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

आयतें-5 **सूरह-105. अल-फ़ील** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। क्या उसने उसकी तदबीर को अकारत नहीं कर दिया। और उन पर चिड़ियां भेजीं झुंड की झुंड। जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकती थीं। फिर अल्लाह ने उन्हें खाए हुए भुस की तरह कर दिया। (1-5)

अबरहा छटी सदी ईसवी में जुनूबी अरब का एक मसीही हब्शी हुक्मरां था। उसने मज़हबी जुनून के तहत 570 ई० में मक्का पर हमला किया ताकि काबा को ढाकर ख़त्म कर दे। उसके साथ साठ हज़ार आदमियों का लश्कर था जिसमें तकरीबन एक दर्जन हाथी भी शामिल थे। इसी बिना पर वे लोग असहाबे फील (हाथी वाले) कहे गए। जब ये लोग मक्का के करीब पहुंचे तो हाथियों ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। इसी के साथ परिंदों के झुंड आए जिनकी चौंचों और पंजों में कंकरियां थीं। उन्होंने ये कंकरियां अबरहा के लश्कर पर गिराईं तो सारा लश्कर अजीबोग़रीब किस्म की बीमारी में मुब्तिला हो गया और घबराकर

वापस भागा। मगर अबरहा सहित उसके बेशतर अफराद रास्ते ही में हलाक हो गए।

यह वाकया ऐन उस साल पेश आया जिस साल अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश हुई। यह अल्लाह की तरफ से एक मुज़ाहिरा था कि पैग़म्बरे इस्लाम को ग़लबे की निस्बत दी गई है। आपके साथ या आपके दीन के साथ जो भी टकराएगा वह लाज़िमन मग़लूब (परास्त) होकर रहेगा।

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

आयतें-4 **सूरह-106. कुरैश** रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

इस वास्ते कि कुरैश मानूस (अभ्यस्त) हुए, जाड़े और गर्मी के सफर से मानूस। तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और ख़ौफ से उन्हें अम्न दिया। (1-4)

कुरैश एक तिजारती कौम थे। गर्मी के ज़माने में उनके तिजारती काफिले शाम और फिलस्तीन की तरफ जाते थे। और सर्दियों के ज़माने में वे यमन की तरफ तिजारती सफर करते थे। इन्हीं तिजारतों पर उनकी मआशियात (जीविका) का इंहिसार था। कदीम ज़माने में जबकि ताजिरों को लूटना आम था, कुरैश के काफिले रास्ते में लूटे नहीं जाते थे। इसकी वजह काबा से उनका ताल्लुक था। कुरैश काबा के ख़ादिम और मुतवल्ली (संरक्षक) थे और लोगों के ज़ेहनों पर चूंकि काबा का बहुत ज़्यादा एहतराम था। वे काबा के ख़ादिमों और मुतवल्लियों का भी एहतराम करते थे और इस बिना पर वे उन्हें नहीं लूटते थे।

यहां हिक्मते दावत के तहत कुरैश को यह वाक्या याद दिलाते हुए इस्लाम की तरफ बुलाया गया है। और कहा गया है कि यह बड़ी नाशुक्री की बात होगी कि तुम बैतुल्लाह के दुनियावी फायदे तो हासिल करो, और उससे वाबस्ता होने की जो ज़िम्मेदारियां हैं उन्हें पूरा न करो। जो ख़ुदा इंसान को माद्दी (भौतिक) फायदा पहुंचाता है उसी ख़ुदा की उसे इबादत भी करना चाहिए।

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى

طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ﴿٤﴾ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿٧﴾

आयतें-7 **सूरह-107. अल-माऊन** **रुकूअ-1**

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो इंसाफ के दिन को झुठलाता है। वही है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। और मिस्कीन का खाना देने पर नहीं उभरता। पस तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़ाफिल हैं। वे जो दिखलावा करते हैं। और मामूली ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं देते। (1-7)

आख़िरत की पकड़ का यकीन आदमी को नेक अमल बनाता है। जिस आदमी के अंदर आख़िरत की पकड़ का यकीन न रहे वह नेकी की हर बात से ख़ाली रहेगा। वह अल्लाह की इबातगुज़ारी से ग़ाफिल हो जाएगा। वह बेज़ोर आदमी को धक्का देने में भी नहीं शरमाएगा। वह ग़रीबों के हुकूक अदा करने की ज़रूरत नहीं समझेगा। यहां तक कि वह लोगों को ऐसी चीज़ देने का भी रवादार न होगा जिसके देने में उसका कोई हकीकी नुक़्सान नहीं, चाहे वह दियासलाई की एक डिबिया हो या किसी के हक में ख़ैरख़्वाही का एक बोल।

سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿٣﴾

आयतें-3 **सूरह-108. अल-कौसर** **रुकूअ-1**

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने तुम्हें कौसर दे दिया। पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (1-3)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेआमेज़ (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठे थे। इस किस्म का काम मौजूदा दुनिया का सबसे ज़्यादा मुश्किल काम है। चुनांचे आपको इस दावत की राह में अपनी हर चीज़ खो देनी पड़ी। आप अपनी कौम से कट गए। आपकी मआशी (आर्थिक) ज़िंदगी बर्बाद हो गई। आपकी औलाद का मुस्तकबिल तारीक हो

गया। थोड़े लोगों के सिवा किसी ने आपका साथ नहीं दिया। मगर इन्हीं हौसलाशिकन हालात में अल्लाह की तरफ से यह ख़बर उतरी कि तुम्हें हमने कौसर (ख़ैरे कसीर) दे दिया। यानी हर किस्म की आलातरीन कामयाबी। कुरआन की यह पेशीनगोई बाद के सालों में कामिल तौर पर पूरी हुई।

यही वादा दर्जा-ब-दर्जा पैग़म्बरे इस्लाम के उम्मतियों से भी है। उनके लिए भी 'ख़ैरे कसीर' (परम सफलता) है बशर्ते कि वे उस ख़ालिस दीन को लेकर उठें जिस पैग़म्बरे इस्लाम और आपके असहाब (साथी) लेकर उठे थे। इस ख़ैरे कसीर का तअल्लुक दुनिया से लेकर आख़िरत तक है, वह कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ سِتُّ آيَاتٍ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾ وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ﴿٤﴾ وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٦﴾

आयतें-6 **सूरह-109. अल-काफिरून** **रुकूअ-1**

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि ऐ मुंकिरो, मैं उनकी इबादत नहीं करूंगा जिनकी इबादत तुम करते हो। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। और मैं उनकी इबादत करने वाला नहीं जिनकी इबादत तुमने की है। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन। (1-6)

यह सूरह मक्का के आख़िरी ज़माने में उतरी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इब्तिदा में एक अर्से तक 'ऐ मेरी कौम' के लफ़्ज़ से लोगों को पुकारते रहे। मगर जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद उन्होंने न माना तो आपने 'अय्युहल काफिरून' (ऐ इंकार करने वालो) के लफ़्ज़ से ख़िताब फरमाया। इस मरहले में यह फिक़रा (वाक्य) दरअस्ल कलिमा-ए बरा-त (विरक्ति, असंबद्धता) है न कि कलिमा-ए-दावत (आह्वान)।

मेरे लिए मेरा दीन, तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन यह दूसरों के दीन की तस्दीक नहीं। यह एक तरफ अपने हक पर जमे रहने का आख़िरी इज़्हार है। और दूसरी तरफ वह मुख़ातब की उस हालत का एलान है कि तुम अब ज़िद की उस आख़िरी हद पर आ गए हो जहां से कोई शख़्स कभी नहीं पलटता।

سُوۡرَةُ النَّصۡرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيٰتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۝١ وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۝٢
فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

आयतें-3 | **सूरह-110. अन-नस्र** | रुकूअ-1

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब अल्लाह की मदद आ जाए और फतह। और तुम देखो कि लोग ख़ुदा के दीन में दाख़िल हो रहे हैं फौज दर फौज। तो अपने रब की तस्बीह (गुणगान) करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ और उससे बख़्शिश (क्षमा) मांगो, बेशक वह माफ करने वाला है। (1-3)

अल्लाह की वह मदद जिसका नाम फतह है, वह हमेशा दावत (आह्वान) की राह से आती है। लोगों का गिरोह दर गिरोह दीने ख़ुदा के दायरे में दाख़िल किया जाना, यही अल्लाह की सबसे बड़ी मदद है। और इसी राह से अहले दीन फतह व ग़लबे की मंजिल तक पहुंचते हैं। चुनांचे अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आख़िरी जमाने (9-10 हि०) में वे हालात पैदा हुए जबकि लोग बहुत बड़ी तादाद में ख़ुदा के दीन में दाख़िल हो गए। और इसके जरिए से फ़्तूहात (विजयों) का दरवाजा खुल गया।

मेमिन की फ़्तह उसके एहसासे इज्ज (विनय) में इजाफा करती है। वह अपने बजाहिर सही काम पर भी ख़ुदा से माफी मांगता है। वह बजाहिर अपनी कोशिशों से मिलने वाली कामयाबी को भी ख़ुदा के ख़ाने में डाल देता है।

سُوۡرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ وَهِيَ خَمۡسُ اٰيٰتٍ

تَبَّتۡ يَدَاۤ اَبِىۡ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢ سَيَصۡلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۝٤ فِىۡ جِيۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ۝٥

आयतें-5 | **सूरह-111. अल-लहब** | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूट जाएं और वह बर्बाद हो जाए। न उसका माल उसके काम आया और न वह जो उसने कमाया। वह अनकरीब भड़कती आग में पड़ेगा। और उसकी बीवी भी जो ईंधन लिए फिरती हैसिर पर। उसकी गर्दन में रस्सी है बटी हुई। (1-5)

'अबू लहब' एक एतबार से एक शख़्स का नाम है। और दूसरे एतबार से वह एक किरदार है। अबू लहब हक की दावत के उस मुख़ालिफ की तारीख़ी अलामत है जो कमीनापन की हद तक उसका दुश्मन बन जाए। इस किरदार से जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साबिका पेश आया, इसी तरह आपकी उम्मत के दूसरे दाअियों को भी इससे साबिका पेश आ सकता है। ताहम अगर दाअी हकीकी मअनों में अल्लाह के लिए उठा है तो अल्लाह की मदद उसका साथ देगी। अबू लहब जैसे लोगों की मुआनिदाना (प्रतिरोधी) कोशिशें अल्लाह की मदद से बेअसर हो जाएंगी। अपने तमाम जराए और वसाइल के बावजूद वह बर्बाद होकर रहेगा। वह अपने इनाद (द्वेष) में ख़ुद जलेगा, वह ख़ुदा के दाअी को जिस बुरे अंजाम तक पहुंचाना चाहता था वहीं वह ख़ुद अबदी तौर पर पहुंचा दिया जाएगा।

سُوۡرَةُ الۡاِخۡلَاصِ مَكِّيَّةٌ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ وَهِيَ اَرۡبَعُ اٰيٰتٍ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۝٣ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

आयतें-4 | **सूरह-112. अल-इख़्लास** | रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और कोई उसके बराबर का नहीं। (1-4)

यह सूरह तौहीद (एकेश्वरवाद) की सूरह है। इसमें ख़ुदा के तसव्वुर को उन तमाम आमेज़िशों (मिलावटों) से अलग करके पेश किया गया है जिसमें हर जमाने का इंसान मुब्तिला रहा है ख़ुदा कई नहीं, ख़ुदा सिर्फ एक है। सब उसके मोहताज हैं, वह किसी का मोहताज नहीं, वह बजाते ख़ुद हर चीज पर कादिर है। वह इससे बुलन्द है कि इंसानों की तरह वह किसी की औलाद हो या उसकी कोई औलाद हो। वह ऐसी यकता (One and only) है जिसका किसी भी एतबार से कोई मिस्ल (सदृश) और बराबर नहीं।

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

आयतें-5 **सूरह-113. अल-फलक़** रुकूअ-1

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूं सुबह के रब की। हर चीज के शर (बुराई) से जो उसने पैदा की। और तारीकी (अंधकार) के शर से जबकि वह छा जाए। और गिरहों (गांठों) में फूंक मारने वालों के शर से और हासिद (ईर्ष्यालु) के शर से जबकि वह हसद करे। (1-5)

अल्लाह वह है जो रात की तारीकी को फाड़कर उसके अंदर से सुबह की रोशनी निकालता है। यही ख़ुदा ऐसा कर सकता है कि वह आफतों के स्याह बादल को इंसान से हटाए और उसे आफियत के उजाले में ले आए।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की मस्लेहत के तहत बनाई गई है। इसलिए यहां ख़ैर के साथ शर भी शामिल है। इस शर से बचने की तदबीर सिर्फ यह है कि आदमी उसके मुकाबले में अल्लाह की पनाह हासिल करे। ये शर बहुत किस्म के हैं। मसलन वह शर जो बदबातिन (दुष्ट) लोग रात की तारीकी में करते हैं। जादू करने वाले जो अक्सर गिरहों (गांठों) में फूंक मारकर जादू का अमल करते हैं। इसी तरह वे लोग जो किसी को अच्छे हाल में देखकर जलन में मुब्तिला हो जाएं और उसे अपनी हासिदाना कार्रवाइयों का शिकार बनाएं। मोमिन को ऐसे तमाम लोगों से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए। और बिलाशुबह अल्लाह ही यह ताकत रखता है कि शर की तमाम किस्मों से इंसान को पनाह दे सके।

سُوْرَةُ النَّاسِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ڏ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

आयतें-6 **सूरह-114. अन-नास** रुकूअ-1

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद (पूज्य) की। उसके शर (बुराई) से जो वसवसा डाले और छुप जाए। जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, जिन्न में से और इंसान में से। (1-6)

इंसान एक आजिज (निर्बल) मख़्लूक है। उसे लाजिमी तौर पर पनाह की जरूरत है। यह पनाह उसे एक ख़ुदा के सिवा कोई और नहीं दे सकता। ख़ुदा ही तमाम इंसानों का रब है, वही लोगों का बादशाह है, वही लोगों का माबूद है। फिर उसके सिवा कौन है जो शर और फित्ने के मुकाबले में लोगों का सहारा बने।

सबसे ज्यादा ख़तरनाक फित्ना जिससे इंसान को ख़ुदा की पनाह मांगनी चाहिए वह शैतान है। वह सबसे ज्यादा ख़तरनाक इसलिए है कि वह हमेशा अपनी अस्ल हैसियत को छुपाता है। और पुरफरेब तदबीरों से इंसान को बहकाता है। इसलिए शैतान के फित्नों से वही शख़्स बच सकता है जो बहुत ज्यादा बाहोश हो, जिसे अल्लाह ने वह समझ दी हो जिसके जरिए वह हक और नाहक में तमीज कर सके, वह समझ सके कि कौन सी बात हकीकी बात है और कौन सी बात वह है जो हकीकी बात नहीं। यह वसवसाअंदाजी करने वाले सिर्फ मअरूफ शयातीन ही नहीं हैं। इंसानों में भी ऐसे शैताननुमा लोग हैं जो मस्नूई (बनावटी) रूप में सामने आते हैं और पुरफरेब अल्फाज के जरिए आदमी के जेहन को फेरकर उसे गुमराही के रास्ते पर डाल देते हैं।

हजरत अबूजर रजि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। आप उस वक्त मस्जिद में थे। मैं बैठ गया। आपने फरमाया, ऐ अबूजर क्या तुमने नमाज पढ़ी। मैंने कहा कि नहीं। आपने फरमाया कि उठो और नमाज पढ़ो। वह कहते हैं कि मैं उठा और नमाज पढ़ी और फिर मैं आकर बैठ गया। आपने फरमाया कि ऐ अबूजर, जिन्न व इंसानों के शैतानों के शर से अल्लाह की पनाह मांगो। मैंने कहा कि ऐ ख़ुदा के रसूल, क्या इंसानों में भी शैतान होते हैं। आपने फरमाया हां। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

फित्नों से ख़ुदा की पनाह मांगना दोतरफा अमल है। एक तरफ वह ख़ुदा की इनायत को अपने साथ शामिल करना है। और दूसरी तरफ इसका मक्सद यह है कि फित्नों के मुकाबले में अपने शुऊर को बेदार किया जाए ताकि आदमी ज्यादा बाहोश तौर पर उसका मुकाबला करने के काबिल हो सके।

(दिल्ली, 19 जुलाई 1986)